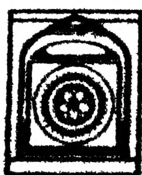
पृथ्वीराजरासो



नागरीप्रचारिणी सभा वाराणसी



सभा शताब्दी योजना के अंतर्गत प्रकाशित

पृथ्वीराजरासो

भाग - १

संपादक
मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या
श्यामसुन्दर दास बी०ए०
सहायक संपादक
कुंवर कन्हैया जू



नागरीप्रचारिणी सभा
वाराणसी • नई दिल्ली

पृथ्वीराजरासो

प्रथम भाग



नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

मूल्य रु० २००-०० मात्र



वीरशिरोमणि महाराज पृथ्वीराज



महाकवि चंदवरदायी

Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4-7.

THE PRITHVIRAJ RASO

OF

CHAND BARDAI.

EDITED

BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krsna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XXIV and XXV.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

सर्ग २४ और २५

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA BENARES

1906

मूल्य (?) Issued 31st October 1906 [मिसिल नं० १.

सभा द्वारा पूर्व में प्रकाशित पृथ्वीराज रासो का मुख पृष्ठ

प्रकाशिका

हिंदी की रासो परंपरा में अन्यतम विस्तृत महान काव्य **पृथ्वीराज रासो** है। अत्यधिक उलझा हुआ विवादास्पद ग्रन्थ है। इसके प्रकाशन की कहानी भी उतनी ही उलझी हुई एवं शापित है। एशियाटिक सोसायटी बंगाल ने इसका प्रकाशन १९वीं शताब्दी के अंतिम दशक मे प्रारंभ किया किन्तु विद्वानो ने ऐतिहासिक दृष्टि से इसके अप्रामाणिक होने के सम्बन्ध में इतना व्यापक और प्रभावशाली विस्तृत आन्दोलन किया कि कुछ खण्डों के प्रकाशन के उपरान्त इसके शेष खण्ड प्रकाशित करना सोसायटी ने उचित नही समझा।

नागरीप्रचारिणी सभा का विशेषकर बाबू श्यामसुन्दर दास और राधाकृष्ण दास का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ। सन् १९०१ मे नागरीप्रचारिणी पत्रिका के ५वें भाग में मुंशी देवी प्रसाद का एक लेख 'पृथ्वीराज रासो' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इस लेख मे बताया गया था कि सबसे पहले एशियाटिक सोसाइटी बंगाल में इसके छपने का प्रबन्ध हुआ था परन्तु दो तीन अंकों मे अधिक नही निकले। फिर पंड्या मोहनलाल जी ने उद्योग किया, यह भी पूरा नहीं हुआ'। पीछे सुना था कि अजमेर के छापेखाने मे छपा, परन्तु यह बात झूठी ही निकली। कहीं से भी सुनने मे नहीं आता कि इसके छापने का उद्योग हो रहा है। ......नागरीप्रचारिणी सभा पंड्या जी से १०० ग्रन्थ लेना चाहती है तो भी पूरी आशा छपने की नही होती क्योंकि बड़े खर्च और परिश्रम का काम है। उन्होने आगे यह भी लिखा है 'कविराज श्यामलदास जी ने रासो का एक खण्डन छापा था---यह रासो इतिहास विषय में तो कुछ भी उपयोगी नहीं है, हाँ काव्य तो कुछ अनुपम है और वीररस से भरा पड़ा है।"

नागरीप्रचारिणी पत्रिका में इसी अंक मे 'हिन्दी का आदि कवि' शीर्षक से श्यामसुन्दर दास जी का एक लेख प्रकाशित है जिसमे उन्होंने लिखा है "चन्द ने निज रासो में जो सब संवत् दिए है वे अशुद्ध नहीं हैं बरन् वे उस अब्द से ठीक मिलते हैं जो उस समय दरबार के कागजातों में प्रचलित था जो प्रचलित विक्रम संवत् से ९०-९१ वर्ष पूर्व था। इसी अब्द से हम यह बात स्पष्ट सिद्ध कर सकते हैं कि शिलालेख और परवाने तथा पट्टे दोनों सत्य हैं। फिर - जो कुछ ऊपर लिखा जा चुका है उससे स्पष्ट है कि—चंद के संवत् मनोकल्पित और असत्य नहीं हैं और रासो में जो बातें हैं वे निरी गप्प नहीं हैं, यह भी सिद्ध कर दिया गया है।

"अब यह स्वतः सिद्ध है कि चन्द का रासो वास्तविक सत्य घटनाओं से पूरित ग्रंथ है जैसे कि उस काल के ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रायः सब देशों में मिलते हैं और इसे झूठा सिद्ध करने का उद्योग केवल निरर्थक निष्प्रयोजनीय और द्वेषपूर्ण माना जायेगा। इसमें सन्देह नहीं है कि यह ग्रन्थ सहस्रों मनुष्यों के हाथों में गया है और सैकड़ों ने इसे लिखा है। इससे यदि आज हमको इसके पाठ में दोष या कहीं-कहीं गड़बड़ मिले तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? इससे उस ग्रन्थ के गुण और अनादर में किसी प्रकार की क्षति न होनी चाहिए।"

"अन्त में अब मुझे केवल इतना ही कहना है कि यदि पंडित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या जी अपने कर्त्तव्य पालन से पराङ्मुख न होते, यदि पृथ्वीराज रासो अब तक छप कर प्रकाशित हो गया होता तो आज मुझे लिखने तथा अन्य लोगों को व्यर्थ आक्षेप करने का अवसर प्राप्त न होता। आशा है कि अब वे इस अमूल्य रत्न को चिथड़ों में न लपेट कर आसन पर इसे सुशोभित करेंगे जिसके यह योग्य है और जो अब तक इसे मिलना उचित था। यदि पण्डित मोहनलाल जी अब भी मौन साधे बैठ रहें तो हमें केवल देश का दुर्भाग्य मानने के और कोई चारा नहीं है।"

इस लेख को हम परिशिष्ट (१) में इसी खण्ड में दे रहे हैं और परिशिष्ट (२) में मुंशी देवीप्रसाद के लेख को ताकि लोगों को उस युग की पृष्ठभूमि से साक्षात्कार हो जाय।

मुन्शी देवीलाल या वह वर्ग भी जो इसे इतिहास की दृष्टि से जाली समझता था वह मानता रहा है कि पृथ्वीराज रासो में काव्य की गुणनिधि है। इसकी साहित्यिक महत्ता सभी वर्ग के लोगों को स्वीकार है। किंतु कवि चन्द के जीवन की भांति पृथ्वीराज रासो भी शापित ग्रंथ है जिस पर चर्चाएँ तो खूब होती हैं किंतु उस अनुपात में उसके गंभीर अध्ययन का कार्य नहीं होता।

पृथ्वीराज रासो पर जिन विद्वानों ने काम किया है उनमें इतिहास के विश्रुत विद्वान तो हैं ही साहित्य और भाषा के विशिष्ट आचार्य भी सम्मिलित हैं। कर्नल टाड ने इनल्स एण्ड एंटिक्विटीज ऑव् राजस्थान, डा० बूलर, डा० मारीशन, मुंशी देवीप्रसाद, पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, बाबू श्यामसुन्दर दास, डा० दशरथ शर्मा, मोतीलाल मिनारिया, हजारीप्रसाद द्विवेदी, माताप्रसाद गुप्त, डा० विपिनबिहारी त्रिवेदी आदि ने काफी महत्वपूर्ण कार्य पृथ्वीराज रासो के अध्ययन के संबंध में किया है। साथ ही साथ डा० बीम्स, हार्डले, ग्रियर्सन, डा० तेस्सीतोरी, डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० सुनीति कुमार चटर्जी, डा० नरोत्तम स्वामी, मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, मथुरा प्रसाद दीक्षित, अगरचन्द नाहटा और कविराव मोहन सिंह के प्रयत्न विशेष महत्वपूर्ण हैं।

सबने उस संस्करण की चर्चा अवश्य की है जो विस्तृत संस्करण माना जाता है और जिसका प्रकाशन नागरीप्रचारिणी सभा से हुआ। जो इसे जाली समझते हैं और जो इसे अप्रामाणिक मानते हैं वे भी यह कहते हैं कि इसके संक्षिप्त संस्करण इसी प्रति पर आश्रित हैं। बाबू श्यामसुन्दर दास अपने निश्चय के दृढ़व्रती व्यक्ति थे और हिन्दी के साहित्यकारों में सबसे पहले उन्होंने ही मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या के इस दिशा में किए गए प्रयास को मूर्त रूप देने का बीड़ा उठाया जब कि उनके दो दो विद्वान मित्र डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा और मुन्शी देवीप्रसाद इसे इतिहास की दृष्टि से अप्रामाणिक मानते थे।

अपने उक्त लेख में जो परिशिष्ट (१) में दिया गया है श्याममुंदर दास जी मानते थे कि यदि मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या का यह ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ तो हिन्दी का दुर्भाग्य है। हिन्दी के दुर्भाग्य को श्यामसुन्दर दास के इस दृढ़व्रत ने सौभाग्य में परिवर्तन सभा से पृथ्वीराज रासो का प्रकाशन कर किया।

पहले भाग के संपादक थे मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्ण दास और बाबू श्यामसुन्दर दास। यह सन् १९०४ में प्रकाशित हुआ और इसमें पर्व १ से ११ तक था। दूसरे भाग का प्रकाशन पर्व १२ से २८ तक में हुआ जो सन् १९०६ में प्रकाशित हुआ। तीसरे भाग का प्रकाशन पर्व २९ से ५४ तक सन् १९०७ में हुआ और अब इसके संपादक मात्र पंड्या जी और श्यामसुन्दर दास रह गए। संपादन कार्य में सहायता कुंवर कन्हैया जी ने की। चौथा भाग १९१० में प्रकाशित हुआ जिसमें पर्व ५५ से ६१ तक दिया गया है। पांचवां भाग सन् १९१२ में प्रकाशित हुआ जिसमें पर्व ६२ से ६९ तक है। सभा के सन् १९१३ और १४ की वार्षिक रिपोर्ट में पृथ्वीराज रासो के सम्बन्ध में निम्नलिखित टिप्पणी महत्वपूर्ण है:—

"पृथ्वीराज रासो—इस वर्ष में इस ग्रन्थ की २२वीं तथा अंतिम संख्या छप कर प्रकाशित हो गई। इस ग्रन्थ की भूमिका लिखने का भार पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या जी ने लिया था परन्तु उनका परलोकवास हो जाने के कारण भूमिका के लिये जो कुछ सामग्री इकट्ठी की गई थी वह भी लुप्त हो गई। बाबू श्यामसुन्दर दास ने भूमिका लिखने का भार अपने ऊपर लिया है पर पहले अस्वस्थ रहने और फिर कार्य की अधिकता के कारण वे अभी इस संबंध में कुछ नही कर सके हैं। सभा को इस बात का आनन्द है कि इस ग्रन्थ का मूल भाग और सारांश कई वर्षों के निरंतर उद्योग के अनंतर छप कर तैयार हो गया है और उसका हिन्दी के प्रेमियों में उचित आदर हो रहा है।

यह ग्रन्थ प्राय: तभी से अनुपलब्ध था और समय-समय पर प्रयत्न किया जाता रहा कि इसे प्रकाशित किया जाय। किन्तु एकाध अंश कहीं-कहीं छप-छपा गए पर पृथ्वीराज रासो का यह संस्करण पूर्ण रूप से दोबारा नहीं हो सका। इसका

संशोधित संस्करण भी सभा प्रकाशित करना चाहती थी और इस कार्य का भार बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर, श्यामसुंदर दास और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को सौंपा गया था किन्तु वह एक संकल्प मात्र रह गया था। श्यामसुन्दर दास को भूमिका लिखनी थी, वह कार्य भी अभी तक नहीं हुआ।"

यद्यपि डा० श्यामसुन्दर दास जी के नागरीप्रचारिणी पत्रिका में अनेक शोधपरक निबन्ध पृथ्वीराज रासो के सम्बन्ध में प्रकाशित हुए पर यह ग्रंथ मूल रूप मे सभा पुन: प्रकाशित नहीं कर सकी।

जिस रूप में यह पहले छपा था सर्वथा उसी रूप में इसे प्रकाशित किया जा रहा है। अंतर केवल इतना है कि पहले संस्करण का आकार रायल अठपेजी का था और यह संस्करण डबलडिमाई १६ पेजी का है।

इस ग्रन्थ का यह दुर्भाग्य या सौभाग्य रहा है कि हिन्दी के बहुत थोड़े विद्वानों ने इसे देखा है और उनमें से स्वल्प ने ही इसे पढ़ा है। जो इसे अप्रामाणिक मानते हैं वे भी सर्वथा इसके आधार पर आश्रित अन्य संस्करणों को मानते हैं और जो अन्य परम्परा की उपलब्ध लघु रासो को प्रामाणिक मानते हैं वे भी इसके बिना चलना पसंद नहीं करते।

इस ग्रन्थ की दूसरी विशेषता यह है कि केवल यह आधार ग्रन्थ ही नहीं है, इसमें पाठांतर, टिप्पणियाँ और आलोचना इतनी अधिक स्थान-स्थान पर बिखरी हुई हैं कि यदि उसका ठीक से अध्ययन कर लिया जाय तो रासो से संबंद्ध भाषा, छन्द तथा अन्य सभी विषयों में ऐसी ज्ञान मंडित सामग्री संमुख आएगी जो प्राय: लुप्तप्राय है। जो कुछ भी पृथ्वीराज रासो के संबंध में कहा जाता है वह सबका सब पाद-टिप्पणियों में है और भ्रमनिवारण का सार्थक यत्न भी है। पृथ्वीराज रासो पर हिन्दी मे जितना काम होना चाहिए, नहीं हुआ और आज तो ऐसा लग रहा है कि इस ओर अध्ययन करने वालों का ध्यान न के बराबर है।

प्राचीन भाषा की अलघ्य दीवार, बिना श्रम के विद्या लाभ की कामना और बिना साधना के श्रेय प्राप्ति की परिपाटी इसमें बाधक हो रही है। साथ ही इस ग्रंथ का उपलब्ध न होना भी इसका कारण है। जिन विद्वानों ने इस संबंध में इस वृहद् संस्करण से इतर जो कुछ भी प्रस्तुत किया है उसे या तो छाया मान लिया गया या उसकी प्रामाणिकता भी संदेह के घेरे में है। कहीं-कहीं तो ऐसा लगता है कि कुछ विद्वानों ने मूल को पढ़े बिना ही विद्वानों की बातों को आधार मानकर अपना मंतव्य स्थिर किया है।

जो कुछ हो, आवश्यकता इस बात की है कि पृथ्वीराज रासो पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाय क्योंकि अब सामग्री पहले की अपेक्षा अधिक उपलब्ध है।

रासो का यह वृहद् संस्करण सभा की ओर से हिन्दी जगत को ८० वर्ष के बाद संस्थापित किया जा रहा है। सभा शताब्दी वर्ष में यह उपहार हिन्दी जगत को है। इसमें सारी की सारी सामग्री ज्यों की त्यों है। श्री विपिन बिहारी त्रिवेदी के ग्रन्थ में प्रकाशित चंदबरदायी का चित्र इसमें बढ़ा दिया गया है। जिस रूप में यह उस समय छपता था, उसकी झांकी मिल सके, इसलिए इसका उस समय का कवर पेज भी दे दिया गया है।

जो कुछ भी हो सभा द्वारा प्रस्तुत पृथ्वीराज रासो इस क्षेत्र में अध्ययन अध्यापन के लिए नया द्वार खोलेगा और भाषा वैज्ञानिकों को यह प्रेरणा देगा कि पृथ्वीराज रासो की भाषा पर वे शोधपरक कार्य करें।

सुधाकर पाण्डेय
प्रधानमंत्री
नागरीप्रचारिणी सभा
वाराणसी

विषय-सूची

[समय १] आदि पर्व लिख्यते

[पृष्ठ १-१९७]

प्रत्युत्तर दे कहना कि वह भूमि बड़ी रम्य है ३८, और वहां आगे वाल्मीकि ऋषित्व को प्राप्त हुए हैं ३९, हिमालय के मध्यम पुत्र नंद का वशिष्ठ के साथ आना स्वीकार करना ४०, वशिष्ठ का अर्बुद नाग से कहना कि जो तू नन्द गिरि को उठा ले चले तो हमारा कार्य सिद्ध हो ४०, अर्बुद नाग का कहना कि जो मेरे नाम से तीर्थ प्रसिद्ध हो तो मैं नंदगिरि को उठा ले चलूं ४०, अर्बुद नाग का नंदगिरि को उठा लाकर बिल मे रख देना ४१, बिल का पुर आना और पुष्पवृष्टि सहित जयजयकार होना ४१, नग का हिलना ४१, नग के हिलने से वशिष्ठ चिंता कर ईश आराधन करने लगे ४२, वशिष्ठ ऋषि ने महादेव का यह आराधन किया ४२, वशिष्ठ के वचन सुन महादेव का प्रत्यक्ष हो वर मांगने को कहना ४३, ईस का स्वरूप देख ऋषि का मुदित होना ४३, वशिष्ठ ऋषि का महादेव को नमस्कार करना ४३, प्रमथाधिपति ने आनन्दित होकर वर मांगने को कहा ४४, वशिष्ठ ऋषि का नंदगिरि को अचल करने का वर मांगना ४४, महादेव का पर्वत को अचल कर उस मे अचल नाम से विराजना ४४, आबू को अचल देख कर वशिष्ठ का प्रसन्न होना और अन्य ऋषियों को वहां यज्ञ के लिये बुलाय जप तप और वास करना ४५, यज्ञ का अनुष्ठान सुन कर राक्षसो का एकत्र हो आना ४६, ऋषियों का अनलकुंड चरन कर ब्रह्म कर्म प्रारंभ करना ४६, दैत्यों का ऋषियो के यज्ञ में विघ्न करना ४७, ऋषियो का संतापित होकर वशिष्ठ के पास जाय पुकारना ४७, जिस पर वशिष्ठ का प्रतिहार चालुक्य और पंवार को प्रगट करना ४८, तथापि राक्षसो का उपद्रव शमन न होना ४८, तब वशिष्ठ का स्वयं कुंड रचन कर यथार्थ बैठना और चिंतवन करना ४८, वशिष्ठ का चाहुवानजी को उत्पन्न करना ४९ क्षत्रियो के छत्तीस वंशो की नामावली ५२, चारों अग्निकुल क्षत्रियो ने वशिष्ठ का यज्ञ निर्विघ्न किया ५३, जिन्होंने द्विजों की रक्षा की उनके वंश मे पृथ्वीराज हैं ५३, चाहुवानजी से माणिकराजजी पहिले तक तेरह पीढ़ी का वर्णन ५४, महिसिंह जी से धर्म्माधिराज जी तक का वर्णन ५४, बीसलदेव जी का वर्णन ५६, ढुंढा दानव की उत्पत्ति और उसका अजमेर के बन में रहना ५७, सारंगदेवजी की राणी गौरीजी का अनलगर्भ सहित रणथंभ पधारना ५८, आना राजा का जन्म होना और उनका बालपन ५९, आना का बालापन व्यतीत होना और वीरत्व को प्राप्त हो माता से पूछना ६०, आना की माता का उसको सर नर और अपर विद्या का उपदेश करना ६०, आना का माता से पूछना कि मैं किस वंश में उत्पन्न हुआ हूं ६०, गौरी माता का कहना कि यह बात न पूछो उनके कहते मुझे भय और करुणा होती है ६१, आना का माता से अपने वंश की कथा हठ करके पूछना ६१, आना की माता का उसे कथा प्रगट न करने को कहना और हठ करके संक्षेप में कहना ६१, अन्य उपलक्ष्यों के द्वारा आना का संभरि

की पूर्व कथा सँभारना ६१, आना का माता से पूछना कि नर अर्थात् बीसलदेव दानव कैसे हुआ ६२, आना की मां का कहना कि दानव की कथा न सुन चित्त भंग होगा ६३, आना का उत्तर दे कहना कि ऐसे मुझे क्यों डराती है ६३, आना की मां का कहना कि जिस से कार्य सिद्ध न हो उसका कहना व्यर्थ है ६३, आना का प्रत्युत्तर देना कि आगे कितने नर, ऋषि और राइ दानव हुए हैं कथा सुनने से क्या होता है ६३, बीसलदेवजी का जन्म होना ६४, बीसल देवजी का पाट बैठना ६४, बीसलदेवजी का अंत समय तक विजय करने को व्रत धारण करना ६७, बीसलदेवजी पाट बैठकर कैसे राज करते थे ६७, बीसलदेवजी का अपने पुत्र सारंगदेवजी को उपदेश करके सांभर भेजना कि जो अपनी धा-बैन के पति के विनाश से दुखित हो गए थे ६८, बीसलदेवजी का मृगया से बहुरना, एक तालाव बनाने की आज्ञा देना और दरबार करना ७०, बीसलदेवजी का रणवास में पधार कर विश्राम करना और उनकी एक अप्रिय रानी का उनको नपुंसक करना ७१, बीसलदेवजी का पुरुषत्व नाश होने से दुखित हो गोकर्णेश्वर की यात्रा करने को गुजरात जाना ७२, बीसलदेवजी का गोकर्णेश्वर महादेव की स्तुति करना ७४, बीसलदेवजी से गोकर्णेश्वर के सिद्ध का उनका नाम ग्रामादि पूछना ७६, बीसलदेवजी का अपना नाम ग्राम आदि बताना ७७, सिद्ध का गोकर्णेश्वर के तीर्थ की महिमा वर्णन करना ७७, बीसलदेवजी का तीन दिन निराहार उपवास कर जोगाभ्यास करना और महादेव का अछरा को उन्हें उठाने भेजना ७७, अछरा का बीसलदेवजी से महादेव के प्रसन्न होने और मन की कामना पूर्ण होने की बात कहना ७८, बीसलदेवजी का अपने में पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त होना देखकर वहां बीसलपुर बसा कर महादेव का मन्दिर बनाने का हुक्म देना ७८, बीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और सब कथा प्रसंग पवांर जी राणी से कहना ८०, सब काम-लुब्धाओं को सोच होना कि शंभू ने ऐसा क्या वर दिया ८१, बीसलदेवजी का कामान्ध हो अकर्तव्य काम करना ८१, बीसलदेवजी के दुराचरण से दुःखी होकर नगर के लोगों का प्रधान के पास पुकारने जाना ८२, सबका आपस में सलाह करके बीसलदेवजी को राजधर्म अरज करना ८२, बीसलदेवजी ने उत्तर दे कहा कि यह सब मैं जानता हूं पर काम-ज्वाला के बस से लाचार हूं, अब तुम जो कहो वह करूंगा ८२, इस पर बीसलदेवजी का किराल को बुलाना और उसका आना ८३, बीसलदेवजी का किराल से कहना कि नरवारि को पृथ्वी है तो हम नव खंड की पड्ग खोसने को पड्ग बांधते हैं, तुम खजाना संग ले बीसल सरवर पर डेरा करो ८३, बीसल सरवर पर बीसलदेवजी के अधीन तथा सहायक इष्ट मित्र राजाओं का उनके दिग्विजय का अटन के लिये एकत्र होना और गुजरात के चालुक्क राजा का वहां न आना अतएव बीसलदेवजी का उस पर चढ़ाई करना और बालुका राय का यह सुनकर सामना

कहना कि मनुष्यों को ढूंढ ढूंढ कर खाने से ढूंढा नाम पड़ा और उसने रम्य अजमेर को वेराम कर दिया १००, आना का माता से कहना कि अभी जाकर मैं उसे मार आऊं १००, गवरी का आना को अमंत्र मंत्र कहकर शिक्षा करना १००, आना का माता से कहना कि या तो मैं सिर समर्पूंगा या छत्र धरूंगा १०, आना का माता से कहना कि सेवा ऐसी है कि जिस से सब कार्यसिद्धि होती है १०१, आना की माता का तो उसे शत्रु न सेवने को कहना किन्तु उसका अजमेर जाना १०२, ढुंढा दानव का अजमेर वन में बहुत दिनों तक मस्तु होकर रहना १०२, अजमेर की नष्ट भ्रष्ट दशा और आना का खड्ग लेकर प्रेत के पास जाना १०२, आना का अपने मन मे विचार कर कहना १०२, आना का दानव को कंदरा मे देखना और उसके खड्ग मांगने पर दानव का गाजना १०२; इस पर दानव का आना से उसके मा बाप आदि के नाम पूछना १०४, ढुंढा दानव का आना के सिर पर हाथ धर गल्ह पूछना १०४, आना का मन में चिंता करना कि जो ढुंढा मुझे निगलेगा तो मैं उसका पेट चीरकर निकलूंगा १०५, आना का उत्तर देना कि जिससे बीसलदेवजी का मन मैन हो गया १०५, दानव का आना से पूछना कि तू क्यो राज अरत्त है १०६, आना का बीसलदेवजी दानव को उत्तर दे कहना १०६, ढूढा दानव का प्रसन्न होकर आना को अजमेर का राज देना १०६, ढूंढा का नेम ऋषि के उपदेश से गंगा की ओर जाते हुए दिल्ली पहुंचना १०७, ढूढा का हारिफ ऋषि से मिलना, अपनी पूर्व कथा कहना और तीन सौ अस्सी वर्ष महातप करके ऋषि उपदेश ग्रहण करना १०७, अनंगपाल राजा का दिल्ली बसाना १०९, अनंगपाल की सुता का निगमबोध कालिंदी तट पर गौरी पूजने जाना १०९, अनंगपाल की सुता का ढूंढा को पूजना और उसका कारण पूछना १०९, अनंगपाल की सुता का ढूढा को वर चाहने को पूजने का कहना ११०, ढूढा का राज-त्रियों की सेवा से संतुष्ट होना ११०, ढूढा का वर देकर काशी को उड़ जाना ११०, ढूढा का फिर जन्म लेना और उसका वृत्तान्त चंद का वर्णन करना ११०। ढूढा का वर देना और काशी मे यज्ञकर तन त्यागना ११०, ढूंढा के दानव शरीर का मान और स्वरूप वर्णन ११०, ढूंढा का दिल्ली में पाषाण रूप हो जाना और स्त्रियों का उसे पूजना १११, ढूढा का अनंगपाल की सुता को वीर पुत्र होने का वर देना १११, ढूंढा का वर देकर काशी जाना, वहां दानव-योनि से मुक्त हो अवतार लेना-सोमेसर के परिग्रह के प्रबंध के लिये क्षत्रियों का उत्पन्न होना-जिनमें से बीस अजमेर में और अन्य अन्यत्र हुए सोमेस के पुत्र पृथ्वीराज हुए ११२, पृथ्वीराजजी के परिग्रह के सामंतों के नाम और जन्म स्थानादि का वर्णन ११२, आना राजा का उजड़ी हुई अजमेर को फिर बसाकर राज करना ११६, जैसिंहजी का गद्दी पर विराज राज करना ११६, आनन्दमेवजी का राज करना ११६, सोमेश्वरजी का सिंहासन

की आदि से अंत तक कीर्त्ति वर्णन करने के लिये चंद से कहना १५४, चंद की स्त्री का उससे पूछना कि कौन दानव, मानव और नृप कीर्त्ति करने योग्य है १५४, चंद का अपनी स्त्री को गूढ़ उपलक्षों के द्वारा उत्तर दे कहना कि केवल हरि की कीर्त्ति करने योग्य है क्योंकि उसकी भक्ति के बिना मुक्ति नहीं है १५४, चंद की स्त्री का उससे कहना कि चित्रनेवाले को चित्र कि जिससे तू दुस्तर के पार उतरे-चहुवनकी कीर्त्ति चित्रने से वह क्या रंगेगा १५५, चंद का अपनी स्त्री से कहना कि मैं चहुआन का ऋण उतारता हूं १५५, चंद की स्त्री का कहना कि राजा को ऋण देना है तो गोविन्द को क्यो नहीं सुमरता १५५, चंद का उत्तर देना कि मैं कमलासन को देखकर अकुलाया हूं, केवल भक्ति विलय करनेवाली है १५६, तथा चंद का कहना कि संसार मे जो कुछ और सर्वव्यापी है वह कमलासन ही है उसी की उपमा कर मैं पृथ्वीराजजी की कीर्त्ति वर्णन करता हूं १५६, चंद की स्त्री उसे कहती है कि ब्रह्म को ब्रह्म में देख जो उसे देखता है उसे वह भिन्न है, नर की कीर्त्ति मत गा, क्योंकि उससे और कोई बलवंत नहीं है १५६, चंद का अपनी स्त्री को उत्तर दे कहना कि अंग अंग मे हरि-रूप-रस है १५७, चंद की स्त्री का उससे कहना कि अङ्ग अङ्ग मे ... का रस वर्णन कर दिखाओ १५७, चंद का उत्तर दे कहना कि कान दे सुन मैं वर्णन कर दिखाता हूं १५९, उपसंहारिणी टिप्पणी १५०-१८० ।

[समय २] अथ दसम लिख्यते

[पृष्ठ १८१-२५८]

... का मंगलाचरण १८१, दशावतार का नाम स्मरण १८१, दशावतार की स्तुति १८१, मच्छावतार की कथा १८६, कच्छावतार की कथा १८९, वाराह अवतार की कथा १९४, नृसिंह अवतार की कथा १९७, वामनावतार की कथा २०५, परशुरामावतार की कथा २०८, रामावतार की कथा २१४, कृष्णावतार की कथा २२२, बौद्धावतार की कथा २५६, कल्कि अवतार की कथा २५७, उपसंहार का कथन २५८ ।

[समय ३] अथ दिल्ली किल्ली कथा लिख्यते

[पृष्ठ २५९-२७८]

चंद की अपनी स्त्री के प्रति उक्ति कि विधना ने दिल्ली सोमेसरनन्द के बसने को निर्माण की दी २५९, चंद का अपनी स्त्री को कहना कि अनंगपाल की पुत्री को पुत्र उत्पन्न होने से दिल्ली की पूर्व्व कथा का प्रसंग प्राप्त हुआ है

२५९, बालकपन में पृथ्वीराज का दिल्ली प्राप्त करने का स्वप्न देखना २५९, पृथ्वीराज की माता का उससे स्वप्न का वृत्तान्त पूछना २६०, पृथ्वीराज का माता का उत्तर दे स्वप्न का वृत्तान्त कहना २६०, पृथ्वीराज की माता का स्वप्न का वृत्तान्त सुन अद्भुत रस में रंजित होना २६१, उसका ज्योतिषियों को बुला स्वप्न का सत्यफल पूछना २६१, ज्योतिषियो का उत्तर दे कहना कि पृथ्वीराज दिल्ली का राजा होगा २६१, ज्योतिषियों को विदा कर माता और पुत्र का एक गृह मे जा बैठना २६१, अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र के आगे दिल्ली की पहिली किल्ली की पूर्वकथा का कहना और राजा कल्हन का वनक्रीडा करते सुसा और स्वान के चरित्र से भूमि का वीरत्व देखना २६१, उस वीरभूमि मे व्यास का कीली गाड़ना २६२, वहा कल्हन का कल्हनपुर बसा कर राज करना और फिर उसके कितनीक पीढी पीछे अनगपाल का होना २६२, इतनी कथा सुनकर राव (पृथ्वीराज) के मन मे अचरज हुआ २६२, विपरीत समय का आना देखकर सकल सभा का शंकित होना २६२, अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र (पृथ्वीराज) के आगे अपने पिता के फिर से दिल्ली बसाने के लिए पाषाण और किल्ली गाड़ने की कथा का कहना २६२, व्यास का कहना कि पाच घडी तक पाषाण को हाथ न लगाने से वह शेष के सिर पर दृढ हो जायगा परन्तु राजा का इसे अनर्थ कर मानना २६३, साठ अगुल की कीली गाड़ना अर्थात् शंकुपात कर्म्म करना २६३, सब के वरजने पर भी उस कीली को उखाड डालना २६४, पाषाण के उखाड़तेही रुधिर की धार चलना और आश्चर्य होना २६४, पाषाण का उखाड़ लेना सुन व्यास का दुःखित हो राजा के पास आना २६४, अनगपाल का पश्चाताप करना और व्यास का आगम कहना २६४, व्यास का अनगपाल को खेद न करने का उपदेश करना २६५, अनगपाल के पीछे जो जो राजा दिल्ली मे होगे उनके विषय में व्यास का भविष्य कथन करना २६६, तुंअरो का नाश और चौहानों का राज्य होना २६६, चौहानो के पीछ मुसल्मान और उनके पीछे फिर हिन्दुओं का राज्य होगा २६६, फिर मेवातपति सं० १६७७ में दिल्ली जीत लेंगे २६६, व्यास का कहा हुआ भविष्य नहीं टरेगा २६७, माता का दान और होम करना २६७, मातुल का अपने मन मे मोह करना २६८, पृथ्वीराजका स्वप्नफल सुन आनन्द में फूला न समाना २६८, स्वप्नफल सुनकर पृथ्वीराज की सर्वस्व वृद्धि कैसे होने लगी २६९, पृथ्वीराज का अजित अवतार होना २७०, लोहाना का गोख में से कूदना और अजानबाहु नाम और जागीर पाना २७०, दिल्ली किल्ली कथा का उपसंहार २७१, उपसंहारिणी टिप्पण २७२-२७८ ।

[समय ४] अथ लोहानो आजान बाहु समय लिख्यते

[पृष्ठ २७९-२८३]

पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को बत्तीस हाथ ऊंची गोप से कूदने की उत्तेजना देना २७९, लोहाने के कूदने की प्रशंसा २८०, पृथ्वीराज का दौड़ कर लोहाना के पास आना और उसे हिये लगाना २८०, उसे आप उठाकर अपने घर ले जाना और इलाज करना २८०, हकीमों का लोहाना को दवा के लिये ले जाना और नवें दिन उसका अच्छा हो कर पृथ्वीराज के पास आना २८०, पृथ्वीराज का प्रसन्न हो कर लोहाना को ग्वालियर, रणथम्भोर, उड़छा आदि पाच हजार गांव देना २८०, आजानुबाहु का आना और पृथ्वीराज का हाथी घोड़े आदि देना २८१, लोहाना के वीरत्व का वर्णन २८२, लोहाना का पांच हजार सेना लेकर ओडछा के राजा जसवन्त पर चढ़ाई करना २८२, ओडछा पर चढ़ाई की शोभा का वर्णन २८२, ओडछा के राजा जसवन्त का सामना करने के लिये प्रस्तुत होना २८२, लड़ाई होना और लोहाना का जीतना २८३, लोहाना का गढ़ पर अधिकार कर लेना २८३

[समय ५] अथ कन्हपट्टी समय लिख्यते

[पृष्ठ २८४-३००]

पृथ्वीराज के भोरा भीमग से वैर होने का कारण २८४, पृथ्वीराज के कुंअरपन का तपतेज वर्णन २८५, गुजरात के राजा भोरा भीम का तपतेज वर्णन २८५, उसके काका और चचेरे भाइयों की वीरता का वर्णन २८६, पाट बैठने पर प्रतापसी को गर्व होना २८६, प्रतापसी के देश उजाड़ने की पुकार भीमंग के पास होना २८६, भोरा भीम की लड़ाई २८७, उन सातों भाइयों का चलचित्त होना २८८, पृथ्वीराज का उन चलचित्त सातों भाइयों को जागीर और सिरोपाव देना २८८, पृथ्वीराज का दर्बार करके बैठना-उसमें प्रतापसी का आना और उसे मूछ मरोडने पर कन्ह का मारना २८९, भाई के मारे जाने पर अरिसिंह का क्रोध करना और कन्ह चोहान पर बार करना २९०, पृथ्वीराज का महल में जाना और अरि सिंहादि की लड़ाई का होना २९०, हरसिंह का युद्ध २९१, नरसिंह का युद्ध २९१, कैमास का युद्ध २९१, माधव खवास का युद्ध २९२, कन्ह का युद्ध २९२, चालुकों के मारे जाने से दरबार में कोलाहल होना २९२, सांझ हो गई परन्तु लड़ाई न रुकी २९५, कान्ह चोहान का युद्ध जीतना २९६, प्रतापसिंह आद के मारे जाने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का अप्रसन्न होना २९६, पृथ्वीराज की अप्रसन्नता सुनकर कन्ह चोहान का घर बैठ रहना, तीन दिन तक अजमेर में हरताल पड़ना २९७, सात दिन तक कन्ह के न आने पर

पृथ्वीराज का उनके घर मनाने को जाना और कहना कि संसार में यह बुराई हुई कि घर बुलाकर चालुक्य को मार डाला २९७, कन्ह का कहना कि मेरे सामने दूसरा कौन सभा मे बैठकर मोछ पर ताव रख सकता है २९७, पृथ्वीराज का कहना कि तो आप आंख मे पट्टी बांधे रहा कीजिए २९८, पृथ्वीराज का जड़ाऊ पट्टी बनवाकर अपने हाथ से कन्ह के आंख मे बांध देना २९८, पट्टी रात दिन बँधी रहती थी २९८, कन्ह चौहान की प्रशंसा २९९, चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयो के मारे जाने का समाचार सुन कर बहुत दुखी होना २९९, भीम का पृथ्वीराज से भाइयो के पलटे मे लड़ाई मागना ३००, पृथ्वीराज का उत्तर देना कि हम तयार है जब चाहे आओ ३००, भीम का चढ़ाई के लिये तय्यार होना पर सरदारो के कहने से वर्षा ऋतु भर ठहर जाना ३००, उपसंहार का कथन ३०० ।

[समय ६] अथ आखेटक वीर बरदान वर्णन समय लिख्यते

[पृष्ठ ३०१-३२३]

पृथ्वीराज के कुमारपने के लपनेज का वर्णन ३०१ पृथ्वीराज की दिन चर्या का वर्णन ३०२, पृथ्वीराज का आखेट के लिये निकलना ३०२, अकेले कवि चन्द का वन मे भटक जाना ३०३ एक आम के पेड़ के नीचे एक ऋषि से उसकी भेंट होना ३०३ कविचन्द का ऋषि के पास जाकर पूछना कि आप कौन है ३०४, ऋषि का पूछना कि तुम कौन हो इस बीहड़ मे वन मे कैसे आए ३०४, चन्द का अपना परिचय देना ३०४, ऋषी का प्रसन्न होकर एक मंत्र बतलाना जिसके वश मे बावन बीर है ३०४, चन्द का मंत्र की परीक्षा करना और बीरो का प्रगट होना ३०५, बीरो के रूप आदि का वर्णन ३०६, चन्द का बीरो को देख कर प्रसन्न होना ३०७, चन्द का बीरो की पूजा करना ३०८, चन्द का पृथ्वीराज के लिये शत्रुशमन मंत्र ग्रहण करना ३०८, क्षेत्रपालो (बीरो) का पूछना कि हम लोगों को क्यो बुलाया है ३०८, चन्द का यह उत्तर देना कि हमने पृथ्वीराज की सहायता के लिये आप लोगो को बुलाया है ३०८ चन्द का प्रार्थना करना कि जैसे आप राम रावण आदि की लड़ाई मे रक्षा करने आए ऐसे ही पृथ्वीराज को भी करना ३०९, बीरो का प्रसन्न होकर कहना कि गाढ़ पड़े तब स्मरण करना ३०९, भैरव का एक वीर को आज्ञा देना कि सब बीरों का नाम बतला कर चन्द को पहिचनवा दो ३०९, सब बीरो का नाम गुण कथन ३०९, चंद का बावनो बीर को पहिचान कर प्रणाम करके विदा करना और आप पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे बढ़ना ३१२, चन्द का उस जङ्गल का वर्णन करना जहां पृथ्वीराज आखेट खेलता है ३१२, पृथ्वीराज के शिकार का प्रशंसा ३१४, कन्ह

चौहान आदि सब सरदारों का आकर पृथ्वीराज से मिलना और कहना कि आज यही शिकार हो ३१६, पृथ्वीराज का शिकार से घर की ओर लौटना ३१६, गोठ (भोजन) के स्थान पर ठहरना ३१६, चन्द बरदाई का आकर पृथ्वीराज से मिलना और पिछला सब वृत्तान्त एकान्त मे ले जाकर कहना ३१७, पृथ्वीराज का भोजन करना और फिर आगे बढ़ना ३१७, सब सरदारो को एक एक घोडा बांट दिया उसी पर सब चढ कर चले ३१७, कविचन्द को एक हाथी देना जो महा बलवान था ३१७, कवि चद का पृथ्वीराज की स्तुति करना ३१८, सब लोगो को अपने अपने घर विदा करना ३१८, वीरो के मिलने के समाचार से पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ३१९, पृथ्वीराज की प्रशंसा ३१९, दूसरे दिन सबेरे पृथ्वीराज का उठना और नित्य कृत्य करना ३१९, नहाकर दस गोदान, दस तोला सोना और बहुत सा अन्न दान देना ३१९ महल मे पृथ्वीराज का बिराजना और सरदारो का आना ३२०, वीरो के वश होने की बात मे पृथ्वीराज का पेट फूलता है पर किसी से कह नही सकता ३२०, कैमास का हाथ जोडकर पूछना कि आपके मुख पर कुछ उत्साह दिखाई देता है पर आप खुलकर कहते क्यो नही ३२०, पृथ्वीराज का चन्द के वीरो को वश करने के समाचार कहना ३२१, सरदारो का उपहास करके कहना कि भाट, नट, चारन ये सब आरत है इनकी बात सत्य नही माननी चाहिए ३२१, कैमास ने कहा कि चन्द को देवी ने वरदान दिया है वह सचमुच कोई अद्भुत है ३२१, कन्ह ने कहा कि चन्द छूट गया था यह बात सच है इसी पर उसने यह बात प्रसन्न करने के लिये गढी है ३२१ पृथ्वीराज के मन मे सन्देह हो जाना ३२२, इतने मे चन्द का आकर आसीस देना ३२२, पृथ्वीराज का चन्द को पास बुलाकर वीरो की बात छेडना ३२२ पृथ्वीराज का चन्द की बडाई करके कहना कि हम लोगो की बडी अभिलाषा है सो आज वीरो का दर्शन करवाओ ३२२, कवि चन्द का मत्र जपना और होम करना ३२२, वीरो का प्रगट होना ३२ , वीरो के शब्द से सामंतो का डरकर सोचना कि बिना काम इनको बुलाना ठीक नही हुआ ३२३, दो मस्त हाथी दर्बार के बाहर बाधे थे वह वीरो का भयानक शब्द सुनकर चौंके ३२३, दोनो हाथियो का तुडाकर लड जाना और दर्बार मे खलबली मचना ३२४, सरदारो का बहुत उपाय करना पर हाथियो का वश मे न आना ३२४, चन्द का बावन वीरो से प्रार्थना करना कि आप लोग इन हाथियो को छुडाकर बाध दीजिए ३२४, भैरव की आज्ञा से वीरो का हाथियो को जजीर मे बांध देना ३२५, यह कौतुक देखकर सरदारो का आश्चर्य मे होना और सबका दर्बार मे आकर बैठना ३२५, पृथ्वीराज का सब वीरो को प्रणाम करना, चन्द का नाम ले लेकर सब वीरों को पहिचनवाना ३२५, चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि बिना कारण इनको बुलाया है इससे इनकी बलि दो पृथ्वीराज का

बावन घड़ा मदिरा बावन बकरे मंगाकर बलि देना और भैरव आदि की पूजा करना ३२५, बीरों का प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहना कि बर मांगे सो हम दें और अब हमको बिदा करो ३२६, पृथ्वीराज की ओर से चन्द का कहना कि लड़ाई के समय हमारी सहायता कीजिएगा ३२६, भैरव का चन्द को बुलाकर कहना कि जब तुम्हे टेढ़ा समय आवे तब हमको याद करना ३२६, बचन देकर बीरों का बिदा होना, सरदारों का चन्द की बात पर प्रतीत करना और पृथ्वीराज का चन्द पर अधिक प्रेम बढ़ना ३२७, पृथ्वीराज का चन्द से कहना कि सब सरदारों को मन्त्र बतला दो, चन्द का सबको मन्त्र बतलाना ३२७, चन्द को बीस गाँव और एक घोडा पृथ्वीराज ने दिया ३२७।

[समय ७] अथ नाहर राय कथा वर्णन लिख्यते

[पृष्ठ ३२८-३५१]

सोमेश्वर देव का शिवरात्रि का व्रत जागरण करके सोने की तुला दान करना और उसे बांट देना ३२८, शिव जी की स्तुति करना ३२९, शिवजी की स्तुति करके सोमेश्वर देव का अपने कुमार के विवाह के लिये नाहर राय के पास दूत भेजना ३३०, शामदामादि मे निपुण दूत का पत्र दरसाना ३३०, कवि का मनोचरी दृष्टि के योग पर से भविष्य में बैर दोष होने का कथन करना ३३०, कवि का कहना कि स्त्री के कारण से बैर दोष आगे रामादि बड़े बड़ों को हो चुका है ३३०, कामधेनु का चरित्र ३३१, प्रात समय जगते ही दूत का पत्र पढ़ना ३३१, उस पत्र मे बीर रूप देवस्थान हिंगुलाज के प्रभाव मे पृथ्वीराज के बलवान होने और नाहरराय के बल प्रताप का वर्णन था ३३१, पट्टन में चौलुक्य भीमदेव, आबू पर जैत (सलख ?) पंवार, मेवाड में समरसिंह, दिल्ली में अनङ्गपाल जैसे बलवानों में मण्डोवर मे नाहरराय के राज्य करने का वर्णन ३३२, पृथ्वीराज का आठ वर्ष की अवस्था मे दिल्ली ननिहाल में आना, दिल्लीश अनंगपाल के अधीन राजाओ का वर्णन ३३३, मंडोवर के नाहर राय का दिल्लीश्वर की भेंट को दिल्ली आना, पृथ्वीराज का रूप देखकर प्रसन्न होना और माला पहिरा कर कहना कि जब पृथ्वीराज सोलह वर्ष का होगा तब मैं अपनी कन्या इसको विवाह दूंगा ३३३, नाहर राय का मत पलट जाना अर्थात् कन्या देना अस्वीकार करना ३३३, नाहर राय का उत्तर लिखना कि तुम्हारा कुल आदि हमारे योग्य नहीं है ३३४, दूत का यह पत्र लाकर पृथ्वीराज के हाथ में देना ३३४, पृथ्वीराज का क्रोध करना, सोमेश्वरदेव का समझना ३३४, सरदारों का पत्र सुनकर क्रोध करना ३३५, पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये सजना ३३५, सेना का वर्णन ३३५, पिता की आज्ञा लेकर अष्टमी को पृथ्वीराज का

[समय ८] अथ मेवाती मुगल कथा लिख्यते

[पृष्ठ ३६२-३७४]

सोमेश्वर के मंडोवर जीतने और लूट को सरदारों में बांट कर प्रबल प्रताप के साथ राज्य करने का वर्णन ३६२, सोमेश्वर के गुणों और उसकी गुणग्राहकता का वर्णन ३६२, सोमेश्वर का मेवात के राजा (मुद्गलराय) के पास कर लेने के लिये दूत भेजना ३६२, मुद्गल का गर्व पत्र पाकर क्रोध प्रगट करके देना और सोमेश्वर का पत्रोत्तर पाकर क्रोध करना और उस पर लड़ाई करने की आज्ञा देना ३६३, ज्योतिषियों से मुहूर्त दिखाकर पुष्य नक्षत्र मे लड़ाई के लिये निकलना ३६४, यात्रा के समय अच्छे शगुन मिले ३६४, पृथ्वीराज को राज्य मे छोड़कर सोमेश्वर का मेवात पर चढ़ाई करना और उसकी सूचना पत्र द्वारा मुद्गलराय को दे कहना कि लड़ो या दंड दे आधीन हो ३६४, मुद्गलराय का पत्रोत्तर देकर सोमेश्वर और पृथ्वीराज दोनों से लड़ाई मांगना ३६५, सोमेश्वर का अपने लड़के के वध के विषय में संशय करना ३६५, और पृथ्वीराज के पास मुद्गलराय के पत्र का सदेशा भेजना और उसका रोष में आकर पिता के पास रण में आ मिलना ३६५, पृथ्वीराज का पिता के पास पहुंच कर शत्रु सेना को सोते हुए पाना और सोमेश का उससे न बोलना ३६६, उसका पिता को निद्रा से शत्रु की सेना को देखभाल कर उत्तेजित होना ३६६, और उसका शत्रु की सेना पर झपटना ३६६, पृथ्वीराज और मुद्गलराय का युद्ध ३६७, ऐसे पृथ्वीराज के अन्य मुगल के योद्धाओं से लड़े ३६७, कन्ह का मेवातियों से युद्ध ३६७, कैमास का पठान गाजीदखा से युद्ध ३६८, कुरंभ से राम गूजर का युद्ध ३६८, इतने मे पृथ्वीराज का रण के बीच अचानक आ पहुंचना और घोर युद्ध का होना ३६८, मुद्गलराय की फौज का तितर बितर होना और उसका पकड़ा जाना ३६९, कवि का सोमेश्वर की सेना और घोड़े हाथी आदि की यथादि अनेक उपमाओं के साथ प्रशंसा करना ३६९, रण में मरे और घायल कैसे पड़े दीखते और कौन कौन योद्धा किस किस से घायल हुए और मारे गए ३७१, जय जयकार का उपमाओं के सहित वर्णन ३७३, पृथ्वीराज की विजय ३७४।

[समय ९] अथ हुसेन कथा लिख्यते

[पृष्ठ ३७५-४०९]

संभरिनरेश (पृथ्वीराज) और गजनी के शाह (शाहबुद्दीन) से कैसे बैर हुआ इसका वर्णन ३७५, शहाबुद्दीन के भाई मीर हुसेन के गुणों और उसकी वीरता की प्रशंसा ३७५, शहाबुद्दीन की पातुर चित्ररेखा की प्रशंसा, शहाबुद्दीन

का उस पर प्रेम, मीर हुसैन का भी उस पर आसक्त होना और चित्ररेखा का भी मीर को चाहना ३७१, शाह का यह समाचार सुनकर क्रोध करना ३७६, हुसैन का शाह की बात न मानना और शाह का आज्ञा देना कि या तो मेरा राज्य छोड़ दो नहीं तो मारे जाओगे ३७६, मीर हुसैन का देश छोड़कर परिवार आदि के साथ नागौर की ओर आना ३७६, मीर हुसैन का पृथ्वीराज के यहां आना ३७७, मीर हुसैन को आदर के साथ पृथ्वीराज का बुलाना, और मीर का आकर सलाम करना ३७७, पृथ्वीराज का सिंहासन बैठना और मीर हुसैन का सुन्दरदास को पृथ्वीराज के पास भेजना ३७७, सुन्दर छाया का स्थान देखकर मीर का डेरा डालना, ३७८, हरम (स्त्रियों) का डेरा पीछे की ओर होना ३७८, सुन्दरदास का पृथ्वीराज के पास जाना, पृथ्वीराज का मीर का कुशल-समाचार पूछना और उसका सब हाल कहना ३७८, मंत्री, कैमास, चंद, पुंडीर आदि को बुलाकर पृथ्वीराज का पूछना कि क्या करें क्योंकि दोनों तरह विपत्ति है-एक शाह का भय, दूसरे, शरण आए को न रखना धर्मविरुद्ध है ३७८, चन्द का सलाह देना कि जैसे शरणागत होने पर विष्णु ने ... मच्छ का रूप धर पृथ्वी को अपनी पीठ पर रक्खा था वैसे ही आप भी कीजिए ३७८, जैसे शिव ने गले में विष धारण किए हैं वैसे ही मीर को आप भी रखिए यह चन्द ने कहा ३७९, सुन्दरदास से पूछना कि अब सब सिपाही तो सुख में हैं और शाह से झगड़ा होने की बात क्या सच है ३७९, सुन्दरदास का कहना कि हरम की स्त्री एक पातुर शहाबुद्दीन के पास थी उसको लेकर हुसैन यहां चौहान की शरण में आया है ३७९, चन्द का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना कि जैसे मोरध्वज के यहां अर्जुन ब्राह्मण बन कर शरण गया, भगवान ने सिंह बन कर मांस मांगा, शरणागता द्रौपदी का चीर बढ़ाया, वैसे ही तुमने शरणागत को रखकर क्षत्रिय धर्म की रक्षा की, तुम्हारे माता पिता धन्य हैं ३७९, शाहहुसैन का पृथ्वीराज से मिलना, पृथ्वीराज का आदर देना ३८०, हुसैन को दक्षिण की ओर नागौर की जागीर देना ३८०, पृथ्वीराज का हुसैन को घोड़े हाथी आदि देना और दोनों का परस्पर प्रेम बढ़ना ३८०, शहाबुद्दीन का चर दूत अजमेर भेजना ३८१, पृथ्वीराज का हुसैन को कैथल, हांसी, हिसार का परगना देना और शिकार में साथ रखना, यह सब समाचार दूतों का शहाबुद्दीन से कहना ३८१, शहाबुद्दीन का क्रोध करना और अरब खां को पृथ्वीराज के पास भेजना कि भला चाहो तो हुसैन को निकाल दो ३८१, अरब खां से कहना कि पहले हुसैन के पास जाना, जो वह पातुर को दे दे तो हम क्षमा कर देंगे, जो वह गर्व करके न माने तो पृथ्वीराज के पास जाकर हमारा पत्र देकर समझाना ३८२, अरब खां का हुसैन से मिलकर समझाना, हुसैन का न मानना ३८२, अरब खां का पृथ्वीराज के पास जाना ३८२ पृथ्वीराज का सुलतान की कुशल पूछना ३८३, अरब खां का कहना कि हुसैन खां को निकाल देने के लिये सुलतान ने कहा है ३८३, शहाबुद्दीन

का संदेसा सुनकर पृथ्वीराज का मुख लाल हो गया, भौहें चढ़ गईं ३८३, कैमास ने डपट कर कहा कि आर्य लोगों का धर्म सुलतान नहीं जानता इससे ऐसा कहता है, हुसैन पृथ्वीराज के शरणागत है, क्षत्री का धर्म उसे छोड़ने का नहीं है ३८३, कन्ह चौहान, सूरसिंह, गोयंदराज, चन्द, पुंडीर आदि का भी यही कहना और सुलतान से लड़ने को हम प्रस्तुत हैं यह कहना ३८४, अरब खां का अपना निरादर होता देख उठ आना और गजनी को कूच करना तथा शहाबुद्दीन से सब समाचार कहना ३८४, दरबार करके शहाबुद्दीन का तातार खां, अरब खां, मीर जमाम कमाम खुरासा खां रहन महन खां, रुस्तम खां, हाजी खा, गाजी खां जम्मन खा, गजनी खां, मुहब्बत खां, मीर खां, आदि सरदारों को बुला कर सलाह करना ३८४, तातार खां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज पर चढ़ाई करनी चाहिए ३८५, खुरासान खा का तातार खां से कहना कि उसके बल को भी विचार लो, जल्दी न करो ३८५, अरब खां का कहना कि उसका बल अतुल है, तुम लोगो ने देखा नहीं है इससे ऐसा कहते हो ३८५, शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना ३८५, अरब खा का पृथ्वीराज के बल की प्रशंसा करना ३८६, तातार खां का अरब खां की बात को हँसी मे उड़ा देना, अरब खा का कहना कि अपनी आंख से न देखने से ऐसा कहते हो ३८६, शाह का क्रोध करके तातार खां को चढ़ाई के लिये प्रस्तुत होने की आज्ञा देना ३८६, शाह के जी मे रात दिन चौहान की चिन्ता लगी रहना ३८७, सेना के साथ चढ़ाई के लिये शाह का तैयार होना ३८७, अशकुन होना ३८७, अरब खा का कहना कि आज ठहर जाइए, शकुन अच्छा नहीं है ३८७, सुलतान का कहना कि काफिर चौहान को जीतना कौन बड़ी बात है जो इतना विचार करते हो ३८७, शाह का चौहान की ओर जाना और दूतों का यह समाचार नागौर मे हुसैन को देना ३८८, पृथ्वीराज का चढ़ाई का समाचार सुनकर सरदारों को बुलाकर सिंघ तक शाह के पहुँचने का हाल कहना ३८८, लड़ने के लिये प्रस्तुत होने का सब का मत होना ३८८, युद्ध की तैयारी होना ३८९, गुरुराम ब्राह्मण का आकर आशीर्वाद देना, बहुत कुछ दान कराना और वेद मंत्र से तिलक करना ३८९, भगवान का स्मरण कर यात्रा करना ३८९, हुसैन का भी अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज से आ मिलना ३९०, दस कोस पर डेरा देना ३९०, दूतों का सुलतान को पृथ्वीराज के चढ़ आने का समाचार देना ३९०, सुलतान का चढ़ाई के लिये धूमधाम से चलना ३९०, सुलतान की चढ़ाई का वर्णन ३९०, सारुंड अचलपुर में सुलतान का डेरा डालना ३९१, कैमास का यह समाचार घड़ी रात रहे पृथ्वीराज को देना ३९१, पृथ्वीराज का उसी समय चढ़ाई करने को तैयार होना ३९२, चढ़ाई की तैयारी, भगवत् स्मरण तथा दानदेना ३९२, पृथ्वीराज का सवार होना ३९२, पृथ्वीराज का मीरहुसैन के डेरे में आना,

मीरहुसैन का अपने साथियों के साथ तैयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ३९३, पृथ्वीराज और मीरहुसैन के मिलकर चलने का वर्णन ३९३, मुलतान के चरों का सुलतान को जाकर समाचार देना कि शत्रु की सेना एक योजन पर आ गई ३९४, मुलतान की सेना की तैयारी का वर्णन ३९४, मारू'ड़े का बाईं ओर सजकर सुलतान का खड़ा होना ३९५, मुलतान की सेना देखकर पृथ्वीराज का मीर हुसैन की ओर देखना, हुसैन का अपने सरदारों के साथ तैयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ३९५, मीर हुसैन का कहना कि आपने हमारे लिये कष्ट उठाया है तो हमारा सिर भी आपके लिये तैयार है, देखिए कैसी लड़ाई लड़ता हूं। पृथ्वीराज का कहना कि इसमें आश्चर्य क्या है मैं भी आज तुम्हें गजनी का सुलतान बनाता हूं ३९६, मीर हुसैन का सलाम करके बाईं ओर सेना सजना, पृथ्वीराज का अपने सरदारों को आज्ञा देना कि तुम लोग मीर हुसैन की सहायता करो और सामंतों का आज्ञापालन करना ३९६, कैमास आदि सामंतों का चार सहस्र सेना के साथ पृथ्वीराज के दक्षिण ओर सेना सजना ३९७, पृथ्वीराज के आगे की ओर गोइन्दराय आदि सरदारों का पांच सहस्र सेना के साथ खड़े होना ३९७, दोनों सेनाओं का सामना होना और निशान बज उठना ३९७, हुसैन और तातार खां की सेनाओं की लड़ाई होना अंत को तातार खां की फौज का भागना ३९८, खुरासान खां का आगे बढ़कर लड़ना ३९९, खुरासान खां की फौज का भागकर सुलतान की फौज के साथ मिलना और कैमास का चढ़ाई करना ४००, बाईं ओर जमात, दाहिनी ओर से कैमास और सामने से पृथ्वीराज का चढ़ना ४००, युद्ध का वर्णन ४०१, पृथ्वीराज की सेना का बढ़ना और मंडलीक का मारा जाना ४०२, शहाबुद्दीन की सेना का भड़कना और पृथ्वीराज की सेना का पीछा करना ४०३, घोर युद्ध का वर्णन ४०३, पृथ्वीराज के सामंतों का शहाबुद्दीन का पीछा करना ४०४, सुलतान का पकड़ा जाना, उसकी सेना का भागना और पृथ्वीराज की विजय ४०४, सूर्योदय से एक घड़ी पांच पल की लड़ाई आरम्भ हुई और चार घड़ी दिन रहे सुलतान पकड़ा गया, बीस हजार मीर और सात हजार हाथी घोड़े मारे गए, हिन्दू तेरह सौ मरे. तीन कोस मे लड़ाई हुई, सुलतान को अपने डेरे में लाए ४०५, रणक्षेत्र में ढूंढकर पृथ्वीराज का मीर हुसैन की लाश निकलवाना ४०५, पातुरि का जीते जी हुसैन के साथ कब्र में गड़ जाना ४०५, पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को पांच दिन आदर के साथ रखकर तीन बेर सलाम कराके मीर हुसैन के बेटे गाजी को उसको सौंप कर यह प्रण कराके कि अब हिन्दुओं पर न चढूंगा, छोड़ना, शाह का गाजी को लेकर कुशल से गजनी पहुंचना ४०६, अमीरों का सुलतान के जीते जागते लौटने पर बधाई देना और कुशल पूछना ४०६, उपसंहारिणी टिप्पणी ४०२–४०९।

[समय १०] अथ आषेटक चूक वर्णन लिख्यते

[पृष्ठ ४१०-४२०]

एक वर्ष बीत गया, परन्तु शहाबुद्दीन के हृदय में पृथ्वीराज का बैर सालता रहा ४१०, एक महीना पांच दिन गजनी में रह कर फिर हुसैन का पृथ्वीराज के पास आप जाना ४१०, फिर पृथ्वीराज का आषेटक माड़ना और शहाबुद्दीन का चूक करने को आना ४१०, नीतिराव क्षत्रिय का शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज के आषेट का समाचार देना ४१०, आषेट का अच्छा अवसर पा कर शहाबुद्दीन का भेद लेने को दूत भेजना, दूत का समाचार देना, शाह का सरदारों को आज्ञा देना कि छिप कर पृथ्वीराज पर चढाई करो ४११, हाजी खां आदि का तयारी करना ४११, शहाबुद्दीन का आज्ञा देना कि इस बात का भेद लो कि कितनी सेना चौहान के साथ है क्योंकि बिना भेद कुछ काम नहीं बनता ४११, सब सरदारों का मत होना कि बिना धोखा दिए चौहानों को जीतना कठिन है ४१२, पृथ्वीराज का वेखटके आनन्द से आषेट खेलना ४१३, पृथ्वीराज के आषेट का वर्णन ४१३, आठ हजार सेना और सरदारों के साथ शहाबुद्दीन का षट्टू वन में छिपकर पहुंचना ४१३, सबेरे के समय चढाई करने का विचार करना ४१४, पांच सरदारों को साथ लेकर आषेट को पृथ्वीराज का निकलना ४१४, कवि चन्द का कहना कि हमे शहाबुद्दीन के आने का सन्देह है और खोज करने पर चारों ओर यवनों को पाना ४१४, शाह की ओर से आक्रमण आरम्भ होना ४१५, युद्धारम्भ युद्ध का वर्णन ४१५, पांच सरदारों का पृथ्वीराज की रक्षा में चारों ओर हो जाना और इन सभों का यवनों के बीच में घिर कर युद्ध करना ४१५, पृथ्वीराज का कमान सँभाल कर यवन सरदारों को गिरना ४१६, पृथ्वीराज का तलवार लेकर यवनों का विनाश करना ४१६, सुलतान की ७५५ सेना का कट कर आगे गिरना ४१६, चालुका का घोर युद्ध करके वीरता के साथ मारा जाना ४१६, क्रोध करके पृथ्वीराज का तलवार से युद्ध करना, पृथ्वीराज की सब सेना का इकट्ठा हो जाना ४१७, सुलतान का बढ़कर लड़ना, दो घड़ी युद्ध होना ४१७, यवन सरदारों का मारा जाना पृथ्वीराज की विजय ४१८, हारकर शहाबुद्दीन का गज़नी की ओर लौट जाना ४१८, चौहान की विजय पर चन्द कवि का जै जैकार करना ४१८, उपसंहारिणी टिप्पण ४१९-४२० ।

[समय ११] अथ चित्ररेखा समयो लिख्यते

[पृष्ठ ४२१-४२६]

चित्ररेखा की उत्पत्ति पूछना ४२१, शहाबुद्दीन का अरब खां पर चढ़ाई करने की इच्छा कर सरदारों से पूछना ४२१, अरब खां नवता नही है इसलिये उस पर

चढ़ाई होनी चाहिए यह आज्ञा दी ४२२, चढ़ाई की सेना की संख्या ४२२, सेना की धूम का वर्णन ४२२, शाह का निसुरति खां को अरब खां के पास भेजना कि चित्ररेखा को देकर पैर पर गिरैं तो हम क्षमा कर दें ४२३, अरब खां का सादर आज्ञा मानना और चित्ररेखा को देना स्वीकार करना ४२३, निसुरति खां का अरब खां को शाबसी दे कहना कि तुमने शाह के वचन माने और हिन्दु धर्म को न मान कर म्लेच्छ कुल कर्म को धारण किया सो ठीक किया ४२३, शहाबुद्दीन का सेना समेत सजकर चलना ४२३, चलते समय शाह का चित्त चित्ररेखा में मत्त गयंद की भांति लगा हुआ था ४२४, सेना की शोभा का वर्णन ४२४, शाह की सेना की प्रबलता देखकर अरब का अपना बल भंग होना कहना ४२५, अरब खां का आज्ञा मानकर चित्ररेखा को भेंट में देना ४२५, चित्ररेखा वेश्या के रूप का वर्णन ४२५, बिना युद्ध चित्ररेषा को लेकर गोरी का लौट आना ४२६, चित्ररेषा के साथ शाह के आदर और प्रेम का वर्णन ४२६, चित्ररेषा के सुलतान को वश करने का वर्णन ४२६, चित्ररेषा की कथा सुन कर कवि का आनंदित होना ४२६ ।

[समय १२] अथ भोलाराय समय लिखते

[पृष्ठ ४२७–४८४]

भोलाराय भीमदेव का बल कथन और राजा सलष को संभरि-राज (सोमेश्वर) की सहायता का वर्णन ४२७, शुकी का शुक से इंच्छिनी के विवाह की सविस्तर कथा पूछना ४२७, इधर चौहान तपता था उधर आबू का राजा सलष पंवार बड़ा प्रतापी था उसका वर्णन ४२७, सलष को एक बेटा जैत नाम का और मंदोदरी और इंच्छिनी नाम की दो बेटियां थी ४२७, बड़ी मंदोदरी का विवाह भीमदेव के साथ होना ४२८, भोरा भीमदेव के दल पराक्रम का वर्णन ४२८, भीमदेव के मंत्री अमर सिंह सेवरा का वर्णन ४२८, मंत्र बल से अमर सिंह का अमावस को चन्द्रमा उगाना, ब्राह्मणों का सिर मुंडा देना, दक्षिण और पश्चिम दिशा को जीतना ४२८, इंच्छिनी के रूप की बड़ाई सुन भीम का उसपर आसक्त होना ४२९, आबू की ओर से आनेवालों के मुंह से इंच्छिनी की बड़ाई सुन-सुन जैन धर्मी भीमदेव भीतर ही भीतर कामातुर हो व्याकुल हुआ ४२९, देखने सुनने और स्वप्न में मिलने से कामान्ध होकर भीमदेव रात दिन इंच्छिनी के ध्यान में पागल सा हो गया ४२९, भीमदेव का राजा सलष के पास अपने प्रधान को पत्र देकर भेजना कि इंच्छिनी का विवाह मेरे साथ कर दो और जो पूर्व वाग्दान के अनुसार चौहान को दोगे तो तुम्हारा भला न होगा ४ ०, सलष के बेटे जैतसी की वीरता का वर्णन, भीमदेव के दूत का आबू पहुंच कर राजा का

रात के समय कूच करना ४३९, सलष और भीम की सेना से घोर युद्ध ४४०, सलष का मारा जाना, उसकी वीरता की बड़ाई ४४०, भीमदेव का आबूगढ़ पर अधिकार करना ४४१, एक महीना पांच दिन आबू मे रह कर भीमदेव का अपने राज्य को लौटना ४४१, अपने राज्य मे आकर भीमदेव ने शहाबुद्दीन को पत्र लिखा कि आप मारकू आइए हम आप मिलकर पृथ्वीराज को जीतें, पत्र देकर मकवान को भेजना ४४१, मकवान से भीमदेव का कहना कि केवल इंछिनी के ही कारण से मैंने सलष को सकुटुंब स्वर्ग लोक को भेजा है ४४१, और मेरे मन का दुःख तब दूर होगा जब चौहान पर चढ़ाई करूं, सुलतान मुझ मे मिलजाय, और दिल्ली का राज्य अपने हाथ से नष्ट करूं ४४२, भीमदेव के कागद के समाचारों का सारांश ४४२, घोड़े, चमर, पशमीना आदि भेंट देकर शहाबुद्दीन के यहां भीमदेव का दूत भेजना ४४२, पत्र पढ़कर सुलतान ने कमान खींचकर कहा कि या तो मैं म्लेच्छों को मारूंगा या खुरसान रहूंगा ४४२, सुलतान ने कहा कि दान, खड्ग, विद्या और सम्पत्ति ये साझे मे नहीं होते ४४२, पृथ्वी वीरभोग्या है भीमदेव मुझ से क्या शेखी मारता है मैं उसे भी मारूंगा ४४३, यह सुनकर सारंगदेव मकवाना का क्रोध करके भीमदेव की बड़ाई करना ४४३, शहाबुद्दीन का फिर कहना कि पहिले चौहान को मारूंगा पीछे भीमदेव चालुक को ४४३, मकवाना सुलतान की बात सुन बोला कि चालुक का दल जब चलता है तो काल कांपता है ४४३, चालुक्य के आगे जालंधर, बंग, तिलंगी, कोंकन, कच्छ, पगोट मरहट्ठे आदि कोई नहीं ठहर सकते ४४४, जिस भीमदेव ने बघेलों को जीता, आबू को तोड़ा और जादवों को हराया उसको जीतना सहज नहीं उसे ब्रह्मा ने अपने हाथ से बनाया है ४४४, सुनकर सुलतान की आंखें क्रोध से लाल हो गई और वह उसको मारने पर उद्यत हुआ ४४४, वजीर ने समझाया कि दूत नहीं मारा जाता, इसमे बड़ा अयश होगा ४४५, शहाबुद्दीन को महा क्रोध हुआ, एक सामंत ने वजीर से कहा कि तुम ठीक कहते हो पर यह कैसी गंवारों सी बात करता है ४४५, यह सुन मकवाना को क्रोध आ गया, उसने सामंत को एक हाथ मारा कि सिर जुदा हो गया ४४५, इस पर ऐसा हाहाकार मच गया ४४५, मकवान का अपने चित्त मे सुलतान के संदेसा न मानने पर विचार ४४६, इधर चालुक्य राय का अपनी सेना सजना ४४६, उधर शहाबुद्दीन ने तो अपने सामंत के मरने पर क्रोध कर मकवान को एक तीर मारा और मकवान ने हैजम हुसाब के सिर में एक तेग ऐसी मारी कि दोनों गिर गए ४४६, भीमदेव ने अपने दूत का मारा जाना सुन बड़ा क्रोध किया और गजनी पर चढ़ाई के लिये वह सेना सजने लगा ४४७, सेना सजने पर आग लगने से अशकुन होना ४४७, भीमदेव का प्रतिज्ञा करना कि जो खुरासान के

राज्य पर शहाबुद्दीन रहे तो मेरा नाम नहीं ४४८, उधर शहाबुद्दीन ने अपनी सेना सजी ४४८, मुलतान और चालुक के अपनी-अपनी सेना सजाने पर चहुवान का भी दिल्ली और नागौरादि में अपनी सेना सजाना ४४८, कैमास का मति उपजाना कि ऐसे में अपने दोनों शत्रुओं से लड़ने का अच्छा अवसर है ४४८, कैमास की उपजाई मति के निश्चय के लिए नगौर में मता मंडना अर्थात् सब सामंतों की सभा होना उसमे कैमासादि का अपना विचार प्रकाश करना ४४९, उसमें चामंड राव और जैत राव की प्रतिज्ञा ४४९, वागरी अर्थात् देव राव बग्गरी का कथन ४५०, राव बड़ गुज्जर का कथन ४५०, लोहाना का आगे होना और सेना ले जहां चाहुवान सेना फेरता था वहां जा मिलना ४५०, सामंतो का मत हो जाने पर चाहुवान ने अपनी सेना के दो भाग किए, एक चामुंड राव जैतसी के साथ सुल्तान पर चढ़ा एक और दूसरा चालुक्क भीम देव पर ४५०, दुओरी चढाइयो की सेना की शोभा का वर्णन ४५१, इधर सुरतान का मुख अर्थात् मुहाना रोक और उधर भीम से लड़ने के लिऐ चोहान का नागोर जाना ४५२, सब सामंतो का गुर्जर नरेश से कहना ४५३, फिर निशान का बजना और अमरसीह का दाहिम को बाधने का पापड करना ४५४, अमर सिंह सेवरा के मन्त्रबल से कैमास को वश मे करने का निश्चय करना ४५४, चालुक्य राज की सेना की चढ़ाई और अमर सिंह का मन्त्र आरम्भ करना ४५५, अमर सिंह के मन्त्रबल की प्रशंसा ४५५, कैमास के यहां सन्धि का पत्र लेकर वहां का भाट भेजा गया उसने चालुक्य की बड़ाई करके पत्र दिया ४५६, चालुक्य राज का पत्र ४५६, अपनी बड़ाई लिखकर एक स्त्री का चित्र लिखा कि यह स्त्री लो और कई ग्राम और धन देंगे तुम आनन्द करो, चित्र देखकर कैमास का मोहित हो जाना ४५७, दूत ने लाले नामक एक खत्री की रूपवती लड़की के द्वारा वश करने का मंत्र आरम्भ किया ४५७, दूत समय जान उस स्त्री को साम्हने लाया ४५८, उस स्त्री के रूप का वर्णन ४५८, आश्चर्य है कि कैमास ऐसा मन्त्री बालचरित्र के वश पड़ जाता है ४६०, अमर सिंह के मंत्र के बस में कैमास ऐसा प्रबल स्वामिभक्त मंत्री फँस गया ४६०, कैमास ऐसा मन्त्रमुग्ध हुआ कि पृथ्वीराज को भूलकर चालुक्यराज के वशवर्ती हो गया ४६१, कैमास के वश होने से नागौर में भीमराय चालुक्य की आन गिर गई ४६१, चन्द बरदाई को स्वप्न में इस समाचार की सूचना हो गई ४६१, यह जानकर चन्द ने देवी का आह्वान और उसकी स्तुति की ४६१, चन्द स्वयं कैमास के पास नागौर की ओर चला ४६२, नागौर पहुँच कर चन्द ने सब बात प्रत्यक्ष देखा और घर घर यह चरचा सुनी ४६२, यह देख कर चन्द ने बड़े क्रोध से भैरो तथा देवी का अनुष्ठान आरम्भ किया ४६२, चन्द का देवी की स्तुति करना ४६३, चन्द का देवी से वर मांगना कि जैन की माया को जीतें ४६४, समाचार पाकर चन्द का

मंत्र व्यर्थ करने के लिये अमर सिंह का मंत्र प्रयोग करना और घट स्थापन करना ४६५, एक घड़ी तक चन्द का भ्रम में पड़ जाना फिर संभल कर अपना अनुष्ठान करना देवता आदि का आश्चर्य के साथ दोनों का बल देखना ४६५, चन्द ने अमर सिंह की माया काटने के लिये योगिनियों के जगाने का मन्त्र आरम्भ किया ४६६, अमर सिंह का बहुत पाखण्ड फैलाना ४६६, चन्द का पाखण्ड भंजन में सफल होना ४६६; चालुक्य राज का मन्त्र नष्ट होना ४६७, चन्द का अमर सिंह को बाद मे जीतना ४६७, चन्द की सेना का युद्ध करके शत्रुओ को भगाकर कैमास के पास जाना ४६८, कैमास का लज्जित होना ४६९, चन्द का कैमास को आश्वासन देना ४६९, कैमास को लेकर पृथ्वीराज के सामंतो का चालुक्य राज पर चढ़ने को प्रस्तुत होना ४६९, चालुक्य राजा का सेना प्रस्तुत करना ४७०, चालुक्य की सेना का वर्णन ४७१, चालुक्य राज का धोखा करना ४७१, युद्ध का वर्णन ४७१, सप्तमी को घोर युद्ध का आरम्भ होना ४७२, युद्ध की तयारी का वर्णन, सरदारों का सेना समेत प्रस्तुत होना ४७३, युद्ध आरम्भ होना ४७४, वाजिद खाँ का लड़ना और वीरता से मारा जाना ४७५, अष्टमी के युद्ध का वर्णन ४७५, चावंडराय के युद्ध का वर्णन ४७६, यह युद्ध संवत् ११४४ मे हुआ ४७६, उन सरदारों का नाम कथन जो लड़ते थे ४७७, युद्ध का वर्णन ४७८, स्वय भोराराय के युद्ध का वर्णन ४७९, भोला राय को लिए हुए हाथी का गिरना और मरना ४८०, पृथ्वी पर गिरने से भीमराय का महाक्रोध करके कैमास पर टूटना ४८०, कैमास पर भीड़ देख कर चामंड राय का सहायता पर पहुँचना ४८१, घोर युद्ध का वर्णन ४८१, भोलाराय की सेना का भागना ४८२, पृथ्वीराज का राज्य स्थापन होना ४८३, आबू का राज्य जैतसी को सौंपना ४८४।

[समय १३] अथ सलष जुद्ध समयो लिख्यते

[पृष्ठ ४८५-५०३]

उधर भोला भीमदेव से सरदारों की लड़ाई ठनी इधर शहाबुद्दीन की खबर लाने दूत गया, उसका लौटना और पृथ्वीराज से विनय करना ४८५, दूत का आकर पृथ्वीराज को खबर देना कि तीन लाख सेना के साथ शहाबुद्दीन आता है, ४८६, दूत का ब्योरे के साथ शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन करना ४८६, शहाबुद्दीन की चढ़ाई का समाचार सुन कर पृथ्वीराज का क्रोध करना ४८७, लोहाना का क्रोध करके शाहगोरी के नाश करने की प्रतिज्ञा करना ४८७, पुरोहित गुरु राम का आशीर्वाद देना ४८८, थोड़ी सी सेना के साथ शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये पृथ्वीराज का निकलना ४८८, पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये मारूंडे पर चढ़ाई करना ४८८, लोहाना आजान बाहु का पांच सौ सेना के साथ आगे बढ़ना ४८९, तातार खां का सुलतान से चौहान की सेना पहुंचने का समाचार कहना ४८९, सुलतान का अपनी सेना को तैयार करना ४८९, सुलतान का उमराओं से कहना कि अब की अवश्य जीतना चाहिए ४८९, खुरासान खां तातार खां

आदि सरदारो का बादशाह की बात सुन आक्रोश मे आना ४८९, सब सरदारों का सज कर धावा करना ४८९, सेना की चढाई का आरम्भ होना ४९०, चौहान की सेना का पूर्व और पश्चिम दोनो ओर से चढ कर मिलना ४९१, खुरामानियों का चौहानो पर टूट पडना ४९१, शाह की सेना का युद्ध वर्णन ४९१, दोनों सेनाओ का मुठभेड होना, सलष राज का भी आकर मिलना ४९१, सलष की प्रशंसा ४९२, आजानबाहु लोहाना का मार कर भागना ४९२, सलष राज की वीरता का वर्णन ४९२, बड गुज्जर और तातार खाँ का युद्ध वर्णन ४९३, दोनों सेनाओ का एक घडी तक एकमेक हो जाना और घोर युद्ध होना, आकाश न सूझना ४९३, कैमास का साथ छोड कन्ह चौहान का भी साह्के मे आ जाना ४९४, कान्ह का बडी वीरता से धावा करना ४९४, दोनो ओर के सरदारो का महा क्रोध कर करके युद्ध करना ४९४, आकाश मे देवांगनाओ का वीरो को वरन करना ४९५, गुरु राम का एक मन्त्र लिख कर म्लेच्छों की सेना पर डालना ४९५, मत्र के बल से शाह की सेना का माया मे मोहित हो जाना, इधर से काजी खा का मंत्र बल करना और युद्ध होना ४९६, मारफ खाँ का शाह से कहना कि अब बडी भीड पडी जिन काजी खा पर खुरामान का दार मदार था उन्होने तसबीह छोड दी, हिम्मत हार दी ४९६, खुरासान खाँ आदि सरदारो का फिर एकत्र होना और लडने को तयार होना ४९६, अपनी सेना के बीच मे पृथ्वीराज की शोभा वर्णन पृथ्वीराज का विजय पाना, शहाबुद्दीन का बाधा जाना ४९९, इस युद्ध मे सलष राज की वीरता का वर्णन ४९९, मजपराज का घार युद्ध करना, उनकी वीरता की बडाई ५००, पृथ्वीराज का सलष की सहायता करना ५००, पृथ्वीराज की वीरता की प्रशसा ५००, मलष राज के युद्ध की धारता का वर्णन ५००, म्लेच्छों की सेना का मुँह मोडना, सुलतान का हाथी छोड घाडे पर चढ कर भागना ५०१, म्लेच्छ सेना और सुलतान की भगेड का वर्णन ५०१ इस युद्ध मे सलष राज के यश पाने का वर्णन सुलतान का बंधा जाना ५०१, सुलतान का जीत कर मलषराज का लूट मचाना ५०१, सुलतान की सेना का भागना चौहान का पीछा करना पृथ्वीराज की दोहाई फिरना ५०२, पृथ्वीराज के जीत की जय जय कार मचना ५०२, पृथ्वीराज के सरदारो की वीरता की प्रशसा ५०२, पृथ्वीराज का जीतना तेरह खाँ सरदारो का पकडा आना सारण्ड का टूटना ५०२, इधर शहाबुद्दीन को दण्ड देने उधर कैमास का चालुक्यो को जीतने का वर्णन ५०२, शाह के बाँधने भीमदेव के जीतने और इन्छिनी के व्याह की प्रशसा ५०२, सं० ११३६ के माघ सुदी मे सुलतान का बाँधना माघ ब० ३ को इच्छनी का पाणि-ग्रहण करना, दण्ड लेकर सुलतान को छोड़ना और फिर खट्टूवन मे शिकार को जाना ५०३, शुकी से शुक ने जो कथा चालुक्यो के जीतने की कही उसे साटके मे कवि चन्द ने वर्णन किया ५०३ ।

[समय १४] अथ इंछिनी ब्याह कथा लिख्यते

[पृष्ठ ५०४-५२३]

शुकी के प्रश्न पर शुक का चालुक्य के जीतने, शहाबुद्दीन के बांधने और इच्छिनी के ब्याह का वर्णन करने लगा ५०४; शाह को दंड देकर छोड़ने पर राजा सलष ने पृथ्वीराज के यहां लग्न भेजा ५०४, पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इंछिनी का रूप नाम आदि पूछना ५०४, पृथ्वीराज का ब्याहने के लिये यात्रा करना ५०५, पृथ्वीराज के साथ सामंतों का वर्णन ५०६, पृथ्वीराज की बारात की शोभा वर्णन ५०६, पृथ्वीराज को आते हुए सुनकर सलषराज का धूमधाम से अगवानी करना ५०६, दोनों राजाओं की सेना के मिलने की शोभा का वर्णन ५०७, सलषराज की प्रशंसा ५०७, तोरन आदि बांधकर, कलस धरकर, मोती के अक्षत छिड़क कर मंगलाचार होना ५०७, नगर में स्त्रियों का बारात की शोभा देखना ५०७; सुहासिनी स्त्रियों का कलश लेकर द्वार पर आरती उतारना ५०८, सलष की रानी दूलह की शोभा देख प्रसन्न होना ५०८, स्त्रियों का महल में जाना और बारात का जनवांसे आना ५०८, जनवांसे की तयारी का वर्णन ५०८, जनवांसे में भोजन का नेवता देकर सलषराज का लौटना ५१०, ब्राह्मण लोग विवाह की विधि करने लगे ५११, पृथ्वीराज के रहने को जो बाग सजा गया था उसकी शोभा का वर्णन ५१२, ब्राह्मणों का मंडप स्थापन करना ५१३, दूलह का मंडप में आना ५१३, स्त्रियों का दूलह की शोभा देख मग्न होना ५१३, स्त्रियों का मंगल गीत और गाली गाना ५१३, दूलह दुलहिन का पट्टे पर बैठकर गंठ जोड़ा होकर गणेश पूजन करना ५१४, नवग्रह, कुलदेवता, अग्नि, ब्राह्मण की पूजा कर शाखोच्चार होना ५१४, ब्राह्मणों का आशीर्वाद के मंत्र पढ़ना ५१४, सलषराज का कन्या दान देकर विनय करना ५१४, कान्ह चौहान का कहना कि जैसे शिव के साथ गौरी है वैसे ही यह होगी ५१४, लग्न साधकर तब राजा का ज्योनार करना ५१४, ज्योनार के पकवानों का वर्णन ५१४, पृथ्वीराज के विवाह का वर्णन कविचन्द अपनी सामर्थ्य से बाहर बतलाता है ५१५, नव दुलहिन की शोभा का वर्णन ५१५, प्रथम समागम का वर्णन ५१६, दुलहिन को लेकर दूलह का जनवांसे में आना और हाथी घोड़े धन आदि लुटाना ५१६, दहेज में सलषराज का बहुत कुछ देकर भी संकुचित होना ५१७, पांच दिन तक सब जातियों को भोजन कराया गया ५१७, बारात की विदाई का वर्णन ५१८, बारात का बिदा होकर अजमेर की ओर चलना ५१८, बारात के अजमेर पहुंचने पर मंगलाचार होना ५१९, शुकी पूछने पर शुक का इच्छिनी के नखशिख का वर्णन करना ५१९, शोभा कहते कहते रात बीत गई ५२३ ।

[समय १५] अथ मुगलजुद्ध प्रस्ताव लिष्यते

[पृष्ठ ५२४–५२८]

इंछिनी को ब्याह कर लाने पर मेवात के राजा मुदगल का पूर्व वैर निकालने का विचार ५२४, मेवात राजा का विचारना कि रास्ते में पृथ्वीराज को मारना चाहिए ५२४, पृथ्वीराज के डेरे में कैमास को छोड़ सब का सो जाना कैमास का उल्लू की बोली सुनना ५२४, कैमास का बाईं ओर देवी को देखना ५२५, देवी की बोली सुनकर कैमास का गुरुराम पुरोहित से सगुन पूछना, पुरोहित का कहना कि इसका सगुन चन्द से पूछिए ५२५, चंद का पृथ्वीराज के वंश की पूर्व कथा वर्णन कर मेवातियों के साथ वैर का कारण कहना ५२५, सवेरे उठकर पृथ्वीराज का अपने सामंतों के साथ शिकार को निकलना ५२६, मुगलराज का आकर रास्ता रोकना ५२६, तुरंत पृथ्वीराज का शत्रुओं के बीच में घुसना, मानों बड़वानल समुद्र पीने के लिये घुसा हो ५२६, पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन ५२७, युद्ध का वर्णन ५२७, मुगलराज को चारो ओर से घेर कर बांध लेना ५२८, मुगल को कैद करके इंछिनी को साथ लिये पृथ्वीराज आनंद से घर आए ५२८।

[समय १६] अथ पुंडीर दाहिमी विवाह नाम प्रस्ताव लिष्यते

[पृष्ठ ५२९–५३१]

राजा सलष की बेटी के ब्याह के वर्ष दिन बडे सुख के साथ बीते ५२९, चंद पुंडीर की कन्या का रूप गुण सुनकर पृथ्वीराज का उस पर प्रेम होना ५२९, चंद पुंडीर की कन्या का रूप वर्णन ५२९, पुंडीर का कन्या का देना स्वीकार करना ५२९, शुभ लग्न विचार कर चंद पुंडीर का कन्या विवाह देना ५३०, पुंडीर दाहिमी की कन्या के साथ पृथ्वीराज के आनंद विलास का वर्णन ५३०, विवाह का वर्णन ५३०, विवाह का फेरा फिरना ५३०, दहेज में आठ सखी, तिरसठ दासी, बहुत से घोड़े हाथी देना ५३१, पृथ्वीराज और पुंडीरनी की जोड़ी की शोभा का वर्णन ५३१।

[समय १७] अथ भूमि सुपन प्रस्ताव लिष्यते

[पृष्ठ ५३२–५४१]

पृथ्वीराज का कुँअरपन में शिकार खेलना ५३२, हाथी घोडे आदि का इतना कोलाहल होना कि शब्द सुनाई नही पड़ता ५३२, सिंह का क्रोधित होना ५३२, सिंह का महा क्रुद्ध होना ५३२, सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज

का तलवार से सिंह को मारना ५३३, पृथ्वीराज के शिकार की धूम धाम का वर्णन, पृथ्वीराज का एक पेड़ की छाया मे अपने सरदारों के साथ बैठना ५३४ संजम राय के बेटे का वीरता दिखलाना ५३ , पृथ्वीराज का प्रसन्न होना और उसकी पीठ ठोंकना ५३५, सब लोगो का आगे बढना, एक शकुन मिलना ५३५, शकुन को देख कर सब को आश्चर्य होना ५३५, एक सर्प को नाचते हुए देखना ५३६, पृथ्वीराज का इस सर्प की देवी के शकुन का फल पूछना ५:६, ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से आपको बहुत धन मिलैगा ५३६, पृथ्वीराज का देखना कि सर्प आधा बिल मे है और आधा बाहर, उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारो ओर नाचती है और राजा पर प्रसन्नता दिखलाती है ५३७, देवी का इतने मे उडकर आम की डार पर बैठना और साग गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना ५३७, इस शुभ शकुन का फल वर्णन ५३७, शिकार बंद करके बन मे पृथ्वीराज का डेरा डालना ५३८, डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वीराज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना, सब का ठढा होना, भोजन की तयारी ५३८' सब लोगो के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना ५३९, पृथ्वीराज का घर पहुंच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को स्वप्न मे देखना ५३९, भूमि देवी के रूप सौन्दर्य का वर्णन ५३९, पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस समय यहा क्यो आई हो ५४०, भूमि देवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूँ, मेरे लिये सुर असुर सब शंकित रहते हैं पर जो सच्चा वीर मिलै तो मैं बहुत रस श्रवती हूं ५४०, राजा का विचार मे मग्न होना ५४०, पृथ्वीराज से भूमि का कहना कि षट्टू बन मे अगानित धन है ५४०, अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वापर में था, उसने वहां असंख्य धन रक्खा हैं ५४०, ।

[समय १८] अथ दिल्ली दान प्रस्ताव लिष्यते

[पृष्ठ ५४२–५५१]

अनंगपाल के दूत का कैमास के हाथ में पत्र देना ५४२, पत्र मे अनंगपाल का अपनी बेटी के बेटे पृथ्वीराज को लिखना कि मैं बूढा हुआ, बद्रिकाश्रम जाता हूं मेरा जो कुछ है सब तुम्हें समर्पण करता हूँ ५४२, पत्र पढकर सब का विचार करना कि क्या करना चाहिए ५४२, कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिए, कोई कहता पहिले पृथा कुंआरि का ब्याह रावल समर सिंह के साथ करना चाहिए ५४२, राजा सोमेश्वर सब सामंतों को एकत्र कर परामर्श करता है कि क्या कर्तव्य है पुण्डीर राय ने सलाह दी कि आता हुआ राज्य न छोड़ना चाहिए ५४२, चन्द बरदाई का मत पूछना ५४३, चंद ने ध्यान करके देवी का आह्वान किया और देवी की आज्ञा से कहा ५४३, व्यास ने जो भविष्यत बानी कही थी वह सुनाकर

चंद का कहना कि आप का राज्य खूब तपैगा ३४३, दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना को वैराग्य क्यो हुआ ५४३, दूत का अनंगपाल की प्रशंसा ५४३, अनंगपाल का प्रताप कथन ५४३, अनंगपाल के राज्य मे दिल्ली की शोभा वर्णन ५४४, अनंगपाल का वृद्धावस्था में सपना देखना कि सब तोअर लोग दक्षिण दिशा को जा रहे है ५४४, स्वप्न से जाग कर अनंगपाल का हरि स्मरण करना ५४४, दो घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक सिंह जमुनाजी के किनारे आया है, दूसरा उस पार से तैरकर आया दोनो सिंह आमने सामने बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे, इतने में नीद खुल गई सवेरा हो गया ५४४, अनंगपाल का व्यास जगजोति को बुला कर स्वप्न का प्रष्ण करना ५४५, व्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चौहान का राज्य होगा जैसे सिंह आया था सो तुम भला चाहो तो अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो ५४५, इस भविष्यबानी को सोचकर विचार करना कि दिल्ली का राज्य अपने दौहित्र चौहान को देना चाहिए ५४५, अनंगपाल का मन में यही निश्चय कर लेना कि पृथ्वीराज को राज्य देकर बनवास करना चाहिए ५४५, अनंगपाल का मन्त्रियो को बुलाकर मत पूछना ५४५, मन्त्रियो का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनता से होता है इसे न छोड़ना चाहिए ५४६, मंत्रियों की बात न मानकर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना ५४६, कवि चंद का मत सुनकर पृथ्वीराज का दिल्ली जाना निश्चय करना ५४६, कैमास का भी यही मत होना ५४६, दूत ने आकर समाचार दिया पृथ्वीराज का धूम धाम से दिल्ली की ओर यात्रा करना ५४७, अनंगपाल ने दौहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा दिन दिखा कर दिल्ली का राज्य लिख दिया ५४७, पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का वर्णन ५४७, शुभ लग्न दिखा कर बड़ी तयारी और विधि के साथ अनंगपाल का पृथ्वीराज को पाट बैठाकर अपने हाथ से राज्य का तिलक करना ५४८, दिल्ली के सब सर्दारों का आकर पृथ्वीराज को जुहार करना ५५०, बड़ी तयारी के साथ सजकर पृथ्वीराज की सवारी निकलना ५५०, पृथ्वीराज का रनिवास मे आना रानियो का मंगलाचार करना ५५१, दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थवास के लिये जाना ५५१, यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का प्रसन्न होना ५५१, पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ५५१, आशीर्वाद ५५१।

[समय १९] अथ माधो भाट कथा लिख्यते

[पृष्ठ ५५२-५७८]

पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना ५५२, शहाबुद्दीन के कवि माधो भाट का गुण वर्णन ५५२, माधो भाट का दिल्ली आना और यहां की शोभा पर मोहना ५५२, पृथ्वीराज के इन्द्र के समान राज्य करने का वर्णन ५५२, माधो भाट

का पृथ्वीराज के दर्बार में भेद लेने को आना और अपने गुणों से लोगों को रिझाना ५५३, धमाइन कायस्थ का माधो भाट को सब भेद देना ५५३, पृथ्वीराज का माधो भाट को बहुत कुछ इनाम देना ५५३, बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माधो भाट को दिल्ली में रखना ५५४, बहुत सा दान (जितना कभी नहीं पाया था) लेकर माधो भाट का गजनी लौट आना ५५४, माधो भाट का शहाबुद्दीन के दर्बार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने आदि का वर्णन करना ५५४, अनंगपाल के बनवास का वर्णन ५५४, यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होना ५५५, शहाबुद्दीन क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिए चलना, फौज की शोभा वर्णन ५५५, शहाबुद्दीन का तातार खां आदि सरदारों को इकट्ठा करके सलाह पूछना ५५५, शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के दिल्ली पाने का समाचार कहकर उसके जोर तोड़ने का मत पूछना ५५६, तातार खां का सलाह देना कि दिल्ली पर चढ़ाई करना चाहिए ५५६, तातारखां की बात का सब लोगों का सकारना रुस्तम खां का मंत्र देना कि जब तक सेना तयार हो तब तक एक दूत दिल्ली जाय सब समाचार हिंदुओं के ले आवै ५५६, माधव भाट की बात पर विश्वास न करके शाह का दूत भेजना ५५८, दूतों के लक्षण का वर्णन ५५८, दूत भेज कर अपनी सेना की तयारी करना ५५९, शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की ओर जाना ५६०, दूत को दिल्ली पहुँच कर अनंगपाल के बनवास और पृथ्वीराज के न्याय राज का समाचार विदित होना ५६०, धमान कायस्थ का सब समाचार लिख कर भेजना ५६०, सब समाचार लेकर दूत का लौटना ५६०, दूत ने छ महीने रहकर जो बातें देखी थी सब शाह को जा सुनाईं ५६१, शहाबुद्दीन का लड़ाई के लिए प्रस्तुत होना उमरावों की तयारी का वर्णन ५६१, दूत का ब्योरेवार दिल्ली का समाचार कहना ५६२, संवत् ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना ५६३, दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना शाह का खुरासान खां आदि से मत पूछना ५६३, तातार खां का दिल्ली पर चढ़ाई करने का सलाह देना ५६३, ततार खां का मत मान कर सुलतान का सेना सजने के लिए आज्ञा देना ५६४, शाह की सेना का धूम धाम से कूच करना ५६४, शाह की दो लाख सेना का सिंधु के पार उतरना ५६५, पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर अपने सरदारों से परामर्श करना ५६५, कैमास का मत देना कि हम लोग आगे से बढ़ कर रोकें ५६६, इस मत को सब का मानना ५६६, पृथ्वीराज का सबेरे उठ कर कूच करना ५६६, पृथ्वीराज की सेना का वर्णन ५६७, युद्धारम्भ होना ५६७, युद्ध वर्णन ५६७, घोर युद्ध होना सुलतान की सेना का भागना ५६९, फौज को भागते देख कर सुलतान का क्रोध करना ५७०, सेना को ललकार शाह का फिर जोर बांधना ५७०, तातार खां का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना पृथ्वीराज की विजय ५७०, पृथ्वीराज का सुलतान की सेना का पीछा करना

५७२, चामंडराय का सुलतान को पकड़ कर पृथ्वीराज के हाथ समर्पण करना ५७४, सुलतान को एक महीना दिल्ली में रख कर छोड़ देना ५७४, इस विजय पर दिल्ली में आनन्द मनाया जाना, बहुत कुछ दान दिया जाना ५७४।

[समय २०] अथ पद्मावती समय लिख्यते

[पृष्ठ ५७५-५८३]

पूर्व दिशा में समुद्र शिषर गढ के यादवराजा विजयपाल का वर्णन ५७५, विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटी का वर्णन ५७५, कुंअर पद्मसेन की बेटी पद्मावती के रूप गुण आदि का वर्णन ५७५, पद्मावती एक दिन खेलते समय एक सुग्गे को देख कर मोहित हो गई और उसने उसे पकड़ लिया और महल में पिंजरे मे रखा ५७५, पद्मावती कीर के प्रेम में खेल कूद भूल कर सदा उसी को पढ़ाया करती ५७६, पद्मावती के रूप को देख कर सुग्गे का मन में विचार करना कि इसको पृथ्वीराज पति मिले तो ठीक है ५७६, पद्मावती का सुग्गे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है ५७६, सुग्गे का उत्तर देना कि मैं दिल्ली का हूँ वहां का राजा पृथ्वीराज मानों इन्द्र का अवतार है ५७६, पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना ५७६, पृथ्वीराज का रूप, गुण सुनकर पद्मावती का मोहित हो जाना ५७७, कुंवरी के स्यानी होने पर विवाह करने के लिये मा बाप का चिंतित होना ५७७, राजा का वर ढूंढने के लिये पुरोहित को देश देशांतर भेजना ५७७, पुरोहित का कमाऊँ के राजा कुमोदमनि के यहाँ पहुँचना ५७७, पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर कमोदमनि को लग्न चढ़ा दिया ५७७, कुमोदमनि का बड़ी धूम से ब्याह के लिये बारात लाना, पद्मावती का दुखित हो कर सुग्गे को पृथ्वीराज के पास भेजना ५७८, सुग्गे से संदेसा कहलाना और चिट्ठी देना कि रुक्मिन की तरह मेरा उद्धार कीजिए ५७८, शिव पूजन के समय हरन करने का संकेत लिखना ५७८, सुग्गे का पत्र पृथ्वीराज को देना और पृथ्वीराज का चलने के लिये प्रस्तुत होना ५७८, चामंड राय को दिल्ली में रख कर और सरदारो को साथ लेकर उसी समय पृथ्वीराज का यात्रा करना ५७९, जिस दिन समुद्र शिषर गढ में बारात पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी पहुँच गया और उसी दिन गजनी मे शहाबुद्दीन को भी समाचार मिला ५७९, यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज का रास्ता आगे बढ़ कर रोका और इधर इसकी सूचना चंद ने पृथ्वीराज को दी ५७९, बारात का निकलना, नगर की स्त्रियो का गोष आदि से बारात देखना, पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना ५७९, सुग्गे का आकर पद्मावती को समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर शृंगार करना और सखियों के साथ शिव जी की पूजा को जाना वहां पृथ्वीराज का उसे उठाकर अपने पीछे घोड़े पर बैठाकर

दिल्ली की ओर रवाना होना, नगर में यह समाचार पहुँचना, राजा की सेना का पीछा करना, पृथ्वीराज के साथ घोर युद्ध होना ५७९, पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना ५८०, पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का समाचार मिलना ५८०, अवसर जान कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को पकड़ने के विचार से सेना सजना ५८०, शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन, पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लेना ५८१, पृथ्वीराज को तेग संभाल शत्रुओं पर टूटना ५८१, दिन रात घोर युद्ध हुआ, पर किसी तरह जीत न हुई ५८१, युद्ध का वर्णन ५८१, पृथ्वीराज की बीरता का वर्णन, शहाबुद्दीन को कमान डाल पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना ५८१, पृथ्वीराज का जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना ५८२, पद्मावती को वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के निकट चत्रभुजा के स्थान में पृथ्वीराज का पहुँचना ५८२, लग्न साध कर धूम धाम से विवाह करना ५८२, पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुलहिन के साथ अपने महल में आना ५८२।

[समय २१] अथ प्रिया व्याह वर्णनं लिख्यते

[पृष्ठ ५८४–६०६]

चित्तौर के रावल समर के साथ सोमेश्वर की बेटी के विवाह की सूचना ५८४, सोमेश्वर का अपनी कन्या समर सिंह को देने का विचार करके पत्र भेजना ५८४, समर सिंह के गुणों का वर्णन ५८४, पत्र लेकर गुरुराम पुरोहित और कन्ह चौहान का जाना ५८५, पृथा कुँअरि के रूप का वर्णन ५८५, पृथा कुँअरि और समर सिंह के उपयुक्त दम्पति होने का वर्णन ५८५, लग्न का शोधा जाना ५८५, कबि चंद का कहना है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं सकता पर जहां तक बनेगा उठा न रक्खूंगा ५८६, स्त्रियों के शरीर की उपमाओं का वर्णन ५८६, पृथा कुँअरि के रूप तथा नव यौवनावस्था का वर्णन ५८६, रावल समर सिंह का गुण वर्णन ५८७, श्रीफल देकर पुरोहित को तिलक चढ़ाने को भेजना और इस सम्बन्ध से अपने को बड़भागी मानना ५८७, पुरोहित का चित्तौर में पहुँच कर बसन्त पंचमी को तिलक देना ५८७, पृथ्वीराज के विवाह की तयारी करने का वर्णन ५८७, पृथ्वीराज ने ऐसी तयारी की मानो इन्द्रपुरी है ५८८, पृथ्वीराज का चारो दिशा में निमन्त्रण भेजना घर घर में तयारी होना ५८९, हाथी घोड़े सेना आदि की तयारी का वर्णन। पृथ्वीराज के सामंतों की तयारी का वर्णन ५९०, रावल समर सिंह का ब्याह के लिये पहुँचना रावल की शोभा वर्णन ५९०, नगर नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा बर्णन ५९०. समर सिंह के पहुंचने पर मङ्गलाचार होना ५९१, शृंगार का वर्णन ५९१, पांच सौ वैदिक पंडित:

दो सहस्र कोविद, एक सहस्र मागध आदि गुण गाते हुए, ऐसी धूमधाम से रावल समर सिंह का मण्डप में आना ५९३, विवाह मण्डप की शोभा का वर्णन ५९३, कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहां विवाह मण्डप में इन्द्रादिक देवता जय जय कर रहे हैं और लग्न का समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है ५९४, सामंतों और राजाओं ने जो जो दहेज दिया उसका वर्णन ५९४, पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है दोनों की प्रशंसा ५९६, पृथ्वीराज और पृथा बाई के नाना अनंगपाल का वर्णन ५९७, विवाह का वेद विधि से होना बहुत सा दान दहेज देना ५९७, ब्याह के पीछे दर्बार में आना ५९८, पृथ्वीराज की प्रशंसा ५९८, रावल का रनिवास में जाना ५९८, तिलक होना और भांवरी फिरना ५९९, ऋषीकेश वैद्य और चन्द के बेटे जल्ह आदि को दिया तब रावल फेरा फिरे ५९९, प्रत्येक भावरी मे बहुत कुछ दान देना ५९९, रावल समर सिंह के पुरुषों को चित्तौर मिलने का इतिहास वर्णन ६००, विवाह की शोभा का वर्णन ६०१' पृथ्वीराज के दान दहेज देने का वर्णन ६०२, रावल का बारह सामंतो ने अपने यहां नेवता किया ६०३, बारह दिन तक रह कर रावल का कूच की तयारी करना ६०३, बरात लौटने की शोभा का वर्णन ६०३, अनंगपाल का बहुत कुछ दान देना ६०४, व्यास जगजोति की भविष्यवाणी ६०५, सभों का अपने अपने घर लौटना ६०५, शाह गोरी का रावल का दहेज देना ६०६, पृथा ब्याह की फल स्तुति ६०६ ।

[समय २२] अथ होली कथा लिख्यते

(पृष्ठ ६०७–६०९)

पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा और छोटे बड़े का विचार छोड़ कर अबोल बकते है इसका वृत्तान्त कहो ६०७, चन्द का कहना कि चौहान वंश का ढुंढा नामक एक राक्षस था उसकी छोटी बहिन ढूंढिका थी ६०७, ढुंढा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया यह सुन ढुंढिका भी भाई के पास गई ढुंढा भस्म हो गया तो भी ढुंढिका बैठी रही उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते बीता ६०७, तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुंढिका से कहा कि मैं प्रसन्न हूं वर मांग ६०८, ढुंढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकूं ६०८, गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिका की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सके ६०८, शिवजी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली बकें गदहे पर चढ़ें तरह तरह के स्वांग बनावें उनको छोड़ और जिसको पावै वह भक्षण करै ६०८, ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते पागल से बने, गाते, बजाते, आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया ६०८,

इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर में आनन्द हो गया ६०९, जाड़ा बीतने और बसन्त के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुंढिका की स्तुति करते हैं ६०९ ।

[समय २३] अथ दीपमालिका कथा लिख्यते

[पृष्ठ ६१०–६१३]

पृथ्वीराज ने फिर चंद से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो ६१०, चंद का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ६१०, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे ६१०, उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग लगे थे वहां एक वैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ६१०, स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करे ६१०, सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया ६११, सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया का प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है ६११, तीन वर्ष तीन महीना तीन घडी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए ६११, ऋषि सिद्धि से क्या होता है ६११, ब्राह्मण की बुद्धि मे प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है ६१०, ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग ६१२, ब्राह्मण ने दीपदान वर मांगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जलै ६१२, राजा ने कहा कि तुमने क्या मांगा ब्राह्मणो की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गांव मांगना था, अस्तु अब घर जाओ ६१२, ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल और सवा सेर रुई मंगाई ६१२, कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए ६१२, राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले ६१२, लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अंधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देखकर वहीं आई और विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए ६१२, लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म मैं तेरे घर बसूंगी ६१३, तब दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूं । ६१३, दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस नगर में न आऊंगा ६१३, उसी घडी से उसके यहां आनन्द हो गया, हाथी घोड़े झूमने लगे, उसी दिन से यह दीपमालिका चली ६१३, चारो दिशा में दीप मालिका का मान्य है, यह कथा कवि चंद ने कह सुनाई ६१३ ।

[समय २४] अथ धन कथा लिख्यते

[पृष्ठ ६१४-६७७]

खट्टू बन मे शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी के कैद करने की सूचना ६१४, पृथ्वीराज का कैंमास की वीरता, बुद्धिमत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना ६१४, पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इसके अर्थ करने में सब भटकते हैं, सो तुम इसका अर्थ करो ६१४, पुतली के सिर का लेख 'सिर कटने से धन मिलै सिर रहने से धन जाय' ६१५, पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैंमास से परामर्श करना ६१५, पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि बीर बाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीडक था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्बंश मरैगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है ६१५, कैंमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर के रावल समरसिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचंद, शहाबुद्दीन भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं ६१६; पृथ्वीराज का कैंमास की इस सलाह को मानकर उसको सिरोपाव देना और उसकी बड़ाई करना ६१६, पृथ्वीराज का चंद पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समरसिंह के पास भेजना ६१६, रावल की भेट को घोड़े हाथी आदि भेजना ६१६, चंद पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारो ओर है ६१७, रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशंसा ६१७, पत्र पढ़कर समरसिंह ने हंसकर चन्द पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह दैव गति है ६१७, चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा रखते हैं सो चलिए ६१७, शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुओं का सामना है इस लिये सहायता मे आपको चलना चाहिए ६१८, रावल समरसिंह का सेना आदि सजकर चलना सेना की तैयारी का वर्णन ६१८, परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के पास नागौर को चले ६१९, धर्मायन कायस्थ ने यह समाचार चुपचाप दूत भेजकर शहाबुद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चितौरपति धन निकालने नागौर आए हैं ६१९; समरसिंह का दिल्ली के पास पहुंचना और दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना ६१९, पृथ्वीराज का आध कोस आगे से बढ़कर आगवानी करना ६१९, समरसिंह का बनकूपाल के घर में डेरा देना, दो दिन रहकर सब सामतों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन निकालने का क्या उपाय करना चाहिए ६१९, कैंमास ने कहा कि मेरी सम्मति है कि शहाबुद्दीन के आने के रास्ते पर दिल्लीपति रोकें

और भीमदेव चालुक्य का मुहाना रावल समरसिंह रोकें और तब घन निकाल लिया जाय ६२०, रावल समरसिंह का इस मत को पसंद करना और मंत्री की प्रशंसा करना ६२०, नागौर के पास सब का पहुंचना, सुलतान के दल पर पृथ्वीराज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना ६२०, दो दो कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा देना ६२१, दूत का शाह को समाचार देना कि नागौर में घन निकालने के लिये दिल्लीपति आ गए ६२१, नागौर के समाचार पाकर सुलतान का उमरा खां के साथ डङ्का निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना ६२१, शाह का चक्रव्यूह रचना करके चलना, सेना की सजावट का वर्णन ६२१ पृथ्वीराज को बाईं ओर से बचाता सुलतान धूमधाम से चला शेषनाग को कंपाता पृथ्वी को धमाता रात दिन चलकर नागौर से आध कोस पर जा पहुंचा ६२१, यह समाचार सुन समरसिंह का धन पर मंत्री कैमास को रखकर आप सुलतान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना ६२२, जैसे समुद्र में कमल फूले हों इस प्रकार से सुलतान की सेना ने डेरा दिया ६२२, सवेरे उठते ही समरसिंह आगे सुलतान के दल की ओर बढ़ा, उसकी सेना के चलने से धूल उड़ने लगी ६२२, धूल उड़ने से सब दिशा धूंधरी हो गई, दोनों दलों का हथियार सज सज कर लड़ने के लिये तैयार हो जाना ६२२, लड़ाई का आरम्भ होना ६२२, युद्ध का वर्णन ६२३, रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन ६२५, पृथ्वीराज की विजय, शहाबुद्दीन की सेना का भागना ६२७, सूर्यास्त होना ६२७, रात होना। सेना का डेरे में आना ६२७, चामंडराय आदि सरदारों का रात भर जागकर चौकसी करना ६२७, शहाबुद्दीन के सरदारों का रात को चौकी देना ६२८, पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन ६२८, शहाबुद्दीन के सेना का वर्णन ६२८, सुलतान के सरदारों के क्रम से सजकर खड़े होने का वर्णन ६२९, घड़ी दिन चढ़े सुलतान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का आगे बढ़ना, दोनों सेना का सामना होना ६२९, प्रातःकाल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन ६२९, रावल समरसिंह का सब सरदारों से पूछना कि क्या हाल है कौन दृढ़ है और डरता है। सभों का उत्साह पूर्ण वीरता का उत्तर देना ६३०, रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़कर स्वामी का साथ देता है वही सच्चा वीर है ६३०, दोनो सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना ६३०, पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना ६३०, सुलतान का रणसज्जा से सजकर सवार होना ६३१, हिन्दुओं के तेज के आगे भीरों का धीर छूटना ६३१, एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर से रावल समरसिंह का शत्रुओं पर टूटना ६३१, युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन, अरब खां का मारा जाना ६३१, पांच घड़ी दिन चढ़े वीरता के साथ लड़ कर अरब खां का मारा जाना ६३२, खुमान खां का क्रोध करके लड़ने को आना ६३२, युद्ध का वर्णन ६३२, ग्यारह दिन

युद्ध होने पर सुलतान की सेना का निर्बल होना। रावल समरसिंह का तिरछी ओर से शत्रु सेना पर टूटना ६३२, युद्ध वर्णन ६३३, खुरासान का घोर युद्ध करना ६३३, समरसिंह की वीरता का वर्णन ६३३, बड़े बड़े बीरों का मारा जाना, ६३४, गष्बर खां और तातार खां दोनों का मारा जाना ६३४, याकूब खां का घोर युद्ध वर्णन ६३४, जब आधी घड़ी दिन रह गया तो निसरत खां और तातार खां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया ६३४, घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार लेकर टूट पड़ना ६३५, रावल की बीरता का वर्णन ६३५, शाह का प्रबल पराक्रम करना हिन्दू सेना का घबड़ाना ६३५, रावल का क्रोध कर स्वय सिंह के समान टूट पड़ना ६३५, दोनों सेनाओं का लथ्थ पथ्थ होकर घोर युद्ध करना ६३६, रावल के क्रोध कर लड़ने का वर्णन ६३६, युद्ध की शोभा का वर्णन ६३६, रावल का शत्रु सेना को इतना काट कर गिराना कि सुलतान और उसके सेनानियों का घबड़ा जाना ६३७, पृथ्वीराज का अपनी कमान संभाल कर शत्रुओं का नाश करना ६३८, सुलतान का अपनी सेना को ललकारना कि प्राण के लोभ से जिसको भागना हो तो भाग जाओ मैं तो यही प्राण दूंगा ६३८. सब लोगो का सुलतान की बात सुन बड़ाई करना ६३८, सुलतान का तातार खां से कहना कि संसार मे सब स्वार्थी हैं मरने पर कोई किसी के काम नहीं आते ६३८, शाह का कहना कि सच्चा सेवक, मित्र, स्त्री वही है जो स्वामी के गाढ़े समय मुंह न मोड़ै ६३९, सुलतान की सेना का फिर तमक कर लौट पड़ना और लड़ाई करना पांच खां और पांच खवासों का घोर युद्ध मचाना ६३९, युद्ध का वर्णन ६४०, कन्ह का खुरासान खा को मारना ६४१, खुरासान खा के गिरते हिन्दुओं की सेना का फिर तेज होना ६४१, पृथ्वीराज का ललकारना कि सुलतान जाने न पावै इसको पकड़ो सब सरदारों का टूट पड़ना ६४१, घोर युद्ध होना, साह और पृथ्वीराज का सम्मुख युद्ध ६४२, शहाबुद्दीन का तलवार से और पृथ्वीराज का कमान से लड़ना ६४२, दोनों नरेशों का युद्ध वर्णन ६४२, घोर युद्ध वर्णन शाह की सेना का भागना ६४३, शाह की सेना का भागना और शाह का पकड़ा जाना ६४४, सुल्तान की सेना के भगेड का वर्णन ६४४, रविवार चतुर्दशी को समर सिंह का यह युद्ध जीतना और धन निकालने को चलना ६४५, पृथ्वीराज के सुल्तान को पकड़ने पर जय जयकार होना ६४५, इस विजय पर चारों ओर आनन्द ध्वनि होना ६४५' राजगुरु का कहना कि अब विजय कर के एक बेर दिल्ली चलिए फिर मुहूर्त बदल कर आइएगा ६४५, राजा का पूछना कि पीछे लौटने की क्यों कहते हो इसका कारण कहो ६४५, उनका उत्तर देना कि इस विजय का उत्सव घर पर चल कर करना चाहिए ६४६, यहां राव दाहिम के साथ सेना चन्द भट्ट और सामंतों को छोड़ कर शुभ काम कीजिए ६४६, वहां से लौट कर तब धन

निकालना चाहिए ६४६, पृथ्वीराज का दाहिम का मत मानकर दिल्ली चलना स्वीकार करना ६४६, फागुन सुदी तेरस को दिल्ली यात्रा करना ६४६, रावल के साथ दहिम आदि सरदारों और सेना को छोड़ कर और कुछ सामंतों और सेना को लेकर दिल्ली यात्रा करना ६४६, राव पज्जून कन्ह आदि राजा के साथ चले ६४६, शत्रु को जीत कर होलिका पूजन के निकट राजा चले ६४७, होलिका की पूजा विधि से करके शाह को लिए घर की ओर चले ६४७, कुमार का पैनल आध कोष आगे बढ़ कर मिलना ६४७, राजा का कुमार को सवार होने की आज्ञा देना ६४७, चैत बदी सप्तमी को महलों में पहुंचे ६४७, महल में सब स्त्रियों ने आकर निछावर किया ६४७, स्त्रियाँ अपने अपने घर गईं राजा ने विश्राम किया और वे नाना भोग विलास कर सुखी हुए ६४७, शहाबुद्दीन की डोली मंगाकर उसे भोजन कराया और आज्ञा दी कि इन्हें सुख से रक्खा जाय ६४७, शाह के पकड़े जाने और दिल्ली पहुँचने का समाचार पाकर उनके अनुचरों का आतुर होना ६४८, एक बीर ने दौड़ आकर यह समाचार तातार खां को दिया ६४८, ततार खाँ ने खत्री को तुरन्त पत्र देकर दिल्ली भेजा कि आप बड़े भारी राजा हैं अब कृपा कर शाह को छोड़ दीजिए ६४८, खत्री का पाँच सौ सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना ६४८, खत्री शकुनों का विचार करता बारह कोस नित्य चलता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा ६४८, खत्री लोरक का दिल्ली के पास पहुँचना ६४८, लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में ठहरना और वहीं भोजन करना ६४९, दो घड़ी दिन रहे दिल्ली मे प्रवेश किया ६४८, नगर में घुसते ही फूल की डाली लिए मालिन मिली यह शुभ शकुन हुआ ६४९, खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुँचना ६४९, ड्योढ़ी पर से समाचार भिजवाया कि तातार खाँ का भेजा वकील आया है राजा ने तुरन्त साम्हने लाने की आज्ञा दी लोरक ने दर्बार में आकर सलाम किया ६४९, सभा में बैठे सामंतों का वर्णन राजा की आज्ञा से लोरक का सलाम कर बैठना ६४९, लोरक ने तीन सलाम करके तातार खां की अर्जी राजा को दी ६५०, मद्धु शाह प्रधान को पत्र दिया कि पढ़ो ६५०, तत्तार खां की अर्जी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना ६५०, राजा ने अर्जी सुनकर हँस दिया और खत्री को विदा किया ६५०, दूसरे दिन लोरक फिर दर्बार में आया ६५०, लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह को छोड़ने की प्रार्थना करना पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी नाम क्यों पड़ा? ६५०, लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन बैठा वह बड़ा कामी था पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान न हुआ तब शाह निजाम की टहल करने लगा ६५१, शेख निजामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशिर्वाद दिया कि तुम्हें ऐसा प्रतापी बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं को

जीत दिल्ली पर तपैगा ६५१, शाह घर आया चित्त मे चिन्ता हुई कि जो यह लड़का ऐसा प्रतापी होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा। इतने में ही बेगम के गर्भ रहने का समाचार मिला। शाह ने सिर ठोंका और उस बेगम को निकाल दिया पांच वर्ष बीते शाह मर गया वजीर लोग सोच में पड़े किसे गद्दी पर बैठावें एक शेख ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर बालक को दिखलाया ६५१, उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया ६५२, ज्योतिषी को बुला कर जन्म पत्र बनवाया उसने कहा कि यह जलालुद्दीन से भी बढ़कर प्रतापी होगा इस की जाति गोरी है यह हिन्दुस्तान पर राज्य करैगा ६५२, लोरक ने शाह की पूर्व कथा इस प्रकार कह सुनाई ६५२, पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान शृङ्गारहार नाम का हाथी है उसको शाह बहुत चाहता है उसको और तीस हजार उत्तम घोड़े दो तो शाह छूटै ६५२, खत्री ने कहा कि जो आप मांगेंगे वही दूंगा पर शाह छूटना चाहिए ६५३, पत्र लिख कर दूत को दिया कि जो इकरार हुआ है वह भेजो ६५३, पत्र पाते तातार खां ने हाथी घोड़े भेज दिये जो दस दिन मे रात दिन चल कर पहुंचे ६५३, दण्ड पाने पर सुलतान को छोड़ देना ६५३, सुलतान का गजनी पहुंच कर अपने उमराओं से मिलना ६५३, शाह के महल मे आने पर तातार खां खुरासान खां का बड़ा आनन्द मनाना ६५३, पृथ्वीराज का शृङ्गारहार को सामने रखना हाथी को बड़ाई और राजा की सवारी की शोभा का वर्णन ६५३, हाथी के रूप और गुणो का वर्णन ६५४, सब सामंतो को साथ ले एक दिन शिकार के लिए राजा का जाना वहां कन्ह चौहान का आना ६५४, एक अनुचर का आकर एक सूअर के निकलने का समाचार देना ६५ , राजा का आज्ञा देना कि उसे रोको भागने न पावै ६५४, चारो ओर मे नाका रोक कर सूअर को खदेरना और उसके निकलने पर राजा का तीर मारना ६५४, सूअर का मरना सरदार का राजा की बड़ाई करना ६५५, बड़े आनन्द से राजा राज को लौटता था कि एक पारधी ने एक शेर निकलने का समाचार दिया ६५५, एक नदी के किनारे वृषभ को मार कर सिंह खाता था राजा ने पारधी को आज्ञा दी कि तुम उसको हांको ६५५, राजा का शृङ्गारहार गज पर चढ़कर सिंह को मारने चलना और सिंह को हंकारने की आज्ञा देना ६५५, कोलाहल सुन सिंह का क्रोधकर निकलना। राजा का तीर मारना और तीर का पार हो जाना। कूरम्भ का बढ़ कर तलवार से दो टूक कर डालना। सब का प्रशंसा करना ६५५, राजा के शिकार करने पर बाजे बजने लगे ६५६, सब सरदारो मे शिकार बँटवा दिया ६५६, राजा का दिल्ली लौटना, कवि चन्द का आकर फूलो को वर्षा करना ६५६, राजा का गुरु से धन निकालने चलने का मुहूर्त पूछना ६५७, राजगुरु का बैसाख सुदी तीज को मुहूर्त निकालना ६५७, पृथ्वीराज का मुहूर्त पर धूमधाम से यात्रा

करना ६५७, एक वेश्या का शृङ्गार किए मिलना। राजा का शुभ शकुन मानना ६५७ रात दिन कूच करते हुए राजा का चलना ६५७, रावल और सामंतों तथा सेना का आगे बढ़कर राजा से मिलना ६५७, सब सरदारों और रावल के मिलने से बड़ी प्रसन्नता का होना ६५७, रावल से मिलकर राजा का प्रेम पूर्वक शिकार और शाह के दण्ड का समाचार कहना ६५८, शाह के पकड़ने और दण्ड देकर छोड़ने आदि का सविस्तार समाचार कहने पर बड़ा आनन्द उत्साह होना ६५८, राजा का गुरु से लक्ष्मी निकालने के विषय में अरिष्टों का प्रश्न करना ६५८, धन निकालने के विषय में राजा ने कैमास को बुलाकर परामर्श किया। कैमास ने कहा कि मैं चौहानों की पूर्व कथा सब जानता हूं, आप को देवी का वर है यह निश्चय जानिए। इस धन के निकलने के समय देव प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे ६५९, पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू बन मे चले, वहां एक पत्थर का शिलालेख कैमास को दिखलाई दिया ६५९, उस शिलालेख को देखकर सब प्रसन्न हुए और आशा बंधी ६५९, कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा ६५९, उसे पढ़कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया ६६०, दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे ६६०, चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जगजोति कह गए हैं कि पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर करके नगर बन के धन को पावेंगे ६६०, राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूं ६६०, तब चन्द को बुलाया, उसने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है ६६०, रात को सब सामंतों को रखकर रखवाली करो ६६१, कुछ सरदार साथ रहे कुछ सोए। सवेरे वह स्थान खोदा गया, वहां एक पुरुष की मूर्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उनको कैमास ने पढ़ा ६६१, उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देखकर तुम न डरो तो पाखान को देखो ६६१, सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे ६६१, शुभ मुहूर्त आते ही कमान की मूठ में ताली थी वह देखो ६६१, उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे ६६१, विक्रम संवत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीराज ने असंख्य धन पाया ६६१, चन्द ने मन्त्र से कीलकर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे ६६१, चन्द की बात मानकर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए ६६१, राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काटकर धन निकालो ६६१, शिला काटकर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी कांपने लगी ६६२, शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊंचा खोदा तब खजाने का मुंह खुल गया ६६२, बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला ६६२, उस राक्षस ने माया करके लड़ना आरम्भ किया ६६३, जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति

की कि मां अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले ६६३, देवी की स्तुति ६६३, देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया ६६४, बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारा गया ६६४, चन्द ने स्तुति करके इस राक्षस और धन की पूर्व कथा पूछी ६६४, देवी ने कहा कि जी लगाकर तू इसकी पूर्व कथा सुन ६६४, सतयुग मे मंत्र, त्रेता मे सत्य, द्वापर में पूजा और कलयुग में वीरता प्रधान है ६६४, रघुवंश में आनन्द नामक एक राजा हुआ है उसी कथा कहती हूँ ६६५, वह राजा बड़ा अन्यायी था धर्म विरुद्ध काम करता था ६६५, यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कर्मों को देख ऋषियों ने शाप दिया कि जा तू राक्षस हो जा ६६५, उसका शरीर भस्म हो गया और वह दैत्य होकर यहीं रहने लगा ६६५, इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई ६६६, तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब धन निकालने मे दैत्य दुख न दे ६६६, इष्ट मंत्र का साधन करते यज्ञ करते हुए खोदकर लक्ष्मी निकालना आरम्भ किया ६६६, देव ने चन्द से कहा मेरे पिता रघुवंशी धर्माधिराज थे मैं उनका बेटा आनन्दचन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने न्याय से संसार को जीता, इस लिये शाप से मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम वीर पड़ा ६६६, वीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैंने ही यहा रक्खा था। दैवगति से इसी को लेकर मेरी यह गति हुई ६६९, बीर का अपने पिता रघुवंश राज की प्रशंसा करना ६६७, चारो युगो के धर्म का वर्णन ६६७, बीर का अपने बल का वर्णन करके अपने सामने धन निकालने को कहना ६६७। चन्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने से अब राजा धन निकालेंगे ६६७, चन्द की सुंदर बानी सुनकर वीर ने प्रसन्न होकर धन निकालने की आज्ञा दी ६६८, बीर की बात सुनकर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि शुभ कर्म कराओ और आनन्द से धन निकालो ६६८, चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रसन्नता के लिये जो कहो वही करैं ६६८, वीर का कहना कि मेरी प्रसन्नता के लिये पंडित से जप कराओ और महिष का बलि देकर धन निकालो ६६८, दानव यह कहकर स्वर्ग गया। चन्द का राजा से कहना कि शाह को तो तुम बांध चुके अब रावल के साथ धन निकालो ६६८, राजा ने रावल को बुलाकर ज्योतिषी पंडित को बुलाया, पंडित ने होम की सामग्री मंगाकर वेदी आदि बनवाकर शुभ अनुष्ठान का प्रारम्भ किया ६६०, छ. प्रधानो को पास रखकर राजा ने पत्थर खोदकर हटवाया ६६९, वह स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला, उसमें एक सोने के हीराजटित हिंडोले पर सोने की पुतली सोने की वीणा बजाती और नाचती हुई निकली, उसका नाच देखकर आश्चर्य होने लगा ६६९, पुतली को देख गुरुराम का आश्चर्य करना ६७०, चन्द का कहना कि यह मायारूपी है ६७१, रावल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुतली किसका अवतार

है ६७०, चन्द ने कहा कि ठहरिए तब कहूँगा और उसने बीर को स्मरण करके पुतली का भेद पूछा ६ ०, देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि रानी है ६७०, यह ऋद्धि साक्षात लक्ष्मी का रूप है इसे तुम बे खटके भोग सकते हो। यह देव बानी सुनकर चन्द प्रसन्न हुआ और रावल का संशय मिटा ६७०, इस हिंडोले को पूजन में रखना यह कहकर देव अन्तर्ध्यान हो गए। राजा फिर धन निकालने लगे ६७१, कुबेर के से भण्डार मे धन निकलना, सब को आश्चर्य होना और तब सुरँग को देखना ६७१, पुतली का बिना कुछ बोले चन्द और रावल की ओर तीक्ष्ण कटाक्ष से देखना ६७१, चन्द और रावल का मूर्छित होकर गिरना। कुछ देर मे सँभल कर उठना ६७१, उठने पर राज गुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन निकला अब क्या आज्ञा है ६७२, धन के कलश आदि का वर्णन। रावल और पृथ्वीराज का एक सिंहासन पर बैठना ६७२, एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और रावल आए ६७२, पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुण का वर्णन ६७२, देव मंत्र से दोनों राजाओं के लिये पूजा की और दस महिष बलि चढ़ाया। चतुःषष्टि देवि ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया ६७३, राजा ने सिंहासन हाथ मे लेकर देवी की स्तुति की देवी ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया ६७३, देवी पृथ्वीराज को आशीर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गई ६७३, पृथ्वीराज ने सिंहासन और लक्ष्मी मँगाकर रावल के साम्हने रक्खी। रावल ने कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई है तुम्हारी है। पाटन के यादव राजा की कुवँरि समित्रता की सगाई का विचार ६७३, रावल समरसिंह का धन लेने से इन्कार और कहना कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्ही लो ६८४, पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात मे रावल को क्रोध आ गया तब उन्होने अनुचरों को धन ले लेने को कहा ६७४, पृथ्वीराज से रावल का घर जाने के लिये सीख मांगना पृथ्वीराज का कहना कि दस दिन और ठहरिए शिकार खेलिए। रावल का आग्रह करना ६७४, प्रेमाश्रु भरकर रावल ने विदा मांगी, पृथ्वीराज उठकर गले से गले मिले ६७४, पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा सदा ही स्नेह बनाए रहिएगा ६७४, रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो देह हैं, हमको तुम से बढ़कर कोई प्रिय नही है ६७५, रावल समरसिंह गदगद हो विदा हुए और अपने देश की ओर चले ६७५, रावल को विदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया और रावल के यहा हाथी आदि भेट भेजा ६७५, रावल ने चन्द को मोती की माला देकर विदा किया और आर चित्तौर को कूच किया ६७५, कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का दिल्ली चलना ६७५, कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया। राजा खट्टू वन में शिकार खेलता चला ६७५, पृथ्वीराज ने बहुत से धन को बराबर भाग करके सब सामंतों को बांट दिया

सरदारों का बांट का वर्णन ६७६, बड़ी धूमधाम से दिल्ली के पास पहुंचे, राजकुमार ने आगे से आकर दण्डवत किया। बड़ा आनन्द उत्सव हुआ ६७६, जेठी सुदी तेरस रविवार को राजा दिल्ली आए ६७६, महल में आने पर रानियों ने मुजरा किया ६७६, दाहिमा, आदि रानियां न्योछावर कर राजा की सीख पा अपने महल में गईं ६७६, रात को राजा पुण्डीरी के महल में रहे। सबेरे बाहर आए, मन में शाह के दण्ड का विचार उठा ६७७, बादशाह से जो घोड़े आदि दण्ड लिया था सब सरदारों में बांट दिया। अपने पास केवल यश रक्खा ६७७।

[समय २५] अथ शशिवृतावर्णनं नाम प्रस्ताव

[पृष्ठ ६७८–७६३]

शशिव्रता की आदि कथा वर्णन की सूचना ६७८, ग्रीष्म में पृथ्वीराज का विहार करना ६७८, ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आरम्भ होना ६७८, राजा सभा में बैठे थे कि एक नट आया, राजा ने आदर कर उसका परिचय पूछा ६७८, नट को गुण दिखलाने की आज्ञा देना ६७८, नट का कहना कि मैं नाटक आदि सब गुण जानता हूँ और देखिए सब दिखाता हूँ ६७९, देवी की वन्दना करके नृत्य आरम्भ करना ६७९, नट का नाच के आठ भेद बतलाना ६७९, आठो भेदों के नाम ६७९, नृत्य देख कर बैठने का हुक्म देना ६७९, राजा का नट से उसके निवास स्थान का नाम पूछना ६७९, नट का कहना कि देवगिरि में मैं रहता हूं वहां का राजा सोमवंशी जादव बड़ा प्रतापी है। राजा की बड़ाई ६७९, मैं उनका नट हूँ आपका नाम सुन यहां आया ६८०, राजा का पूछना कि उनकी कन्या का विवाह किसके साथ निश्चय हुआ है ६८०, नट का कहना कि उज्जैन के कमधज्ज राजा के यहां सगाई ठहरी है ६८०, यादव राजा ने सगाई के लिये ब्राह्मण उज्जैन भेजा है पर लड़की को यह सम्बन्ध नहीं भाया ६८०, नट का शशिव्रता के रूप की बड़ाई करना ६८०, सभा उठने पर राजा का नट को एकान्त में बुलाना ६८१, नट का शशिव्रता का रूप वर्णन करना ६८१, उसका रूप सुन राजा का आसक्त हो जाना और नट से पूछना कि इसकी सगाई मुझसे कैसे हो ६८१, नट का कहना कि इसका उत्तर पीछे दूंगा मुझसे इस में जो हो सकेगा उठा न रक्खूंगा ६८१, राजा का नट को इनाम देकर विदा करना, नट का कुरुक्षेत्र की ओर जाना ६८१, ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आगमन हुआ, राजा का मन शशिव्रता की ओर लगा रहा ६८१, राजा का शिव जी की पूजा करना, शिव जी का प्रसन्न होकर आधी रात के समय दर्शन देना ६८२, शिव जी का मनोरथ सिद्ध होने का बर देना ६८२, राजा का स्वप्न में बर पाकर प्रसन्न होना और किसी तरह वर्षा ऋतु काटना ६८२, वर्षा

की शोभा का वर्णन राजा का शशिव्रता के विरह में व्याकुल होना ६८२, वर्षा वर्णन-राजा का विरह वर्णन ६८२, वर्षा बीत कर शरद का आगमन ६८३, शरदागमन-शरद वर्णन ६८३, राजा का अपने सरदारों के साथ शिकार के लिये तय्यारी करना ६८३, राजा का शिकार के लिये सवार होना ६८४, माघ बदी मङ्गलवार को शिकार के लिये निकलना ६८४, राजा की धूमधाम का वर्णन ६८४, बन में जानवरों का वर्णन ६८४, शिकार का वर्णन ६८४, शिकार पर जानवरों का छोड़ा जाना ६८५, भालू, सूअर आदि का आगे होकर निकलना ६८५, राजा के बन मे घुमने पर कोलाहल होने से शूकरों का भागना ६८५, सब सरदारों का भी वहां पहुंचना, एक वधिक का आकर शूकर का पता देकर राजा से पैदल चलने का निवेदन करना ६८५, राजा का तुरन्त घोड़ा छोड़ तुवक कन्धे पर रख बाराह की खोज मे चलना ६८५, सूअर को राजा ने मार कर बधिक को इनाम देकर सुन्दर बारी मे विश्राम किया, समय होने पर भोजन की तय्यारी होना ६८६, चारों ओर राजा के शिकार की बड़ाई होना ६८६, राजा का अकेले बधिक के साथ शिकार के पीछे चलना और सरदारों का राजा के पीछे चलना ६८६, शुकी का शुक से पूछना कि दिल्ली के राजा के गन्धर्व विवाह का समाचार कहो शुक ने कहा कि जादव राजा ने नारियल देकर ब्राह्मण को भेजा ६८७, ब्राह्मण का जैचन्द के यहाँ जाकर उसके भतीजे वीरचन्द से सशिव्रता की सगाई का संदेसा देना। एक गन्धर्व यह सुनता था वह तुरन्त देवगिरि की ओर चला ६८७, गन्धर्व का शशिव्रता के पास आना, वह बन में विचर रही थी ६८७, सोने के हंस का रूप धरकर गन्धर्व का दिखलाई देना, शशिव्रता का उसको पकडना और पूछना कि तुम कौन हो। हंस का कहना कि मैं गन्धर्व हूँ देवराज के काम को आया हूँ ६८७, शशिव्रता का पूछना कि हम पहिले कौन थी और हमारा पति कौन होगा? हंस का कहना कि तू चित्ररेखा नाम की अप्सरा थी, अपने रूप और गान के गर्व मे इन्द्र से लड़ गई इससे दक्षिण के राजा की बेटी हुई ६८८, हंस ने कहा कि पङ्ग अर्थात् कन्यकुब्ज नरेश के भतीजा वीरचन्द्र के साथ तुम्हारे मा बाप ने सगाई की है वह तुम्हारे योग्य बर नही है ६८८, उसकी आयु एक ही वर्ष है, इस लिये दया करके राजा इन्द्र ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है ६८८, शशिव्रता ने कहा कि तुमने मां बाप के समान स्नेह किया सो तुम जिससे कहो उसी से मैं ब्याह करूं ६८८, हंस का कहना कि दिल्लीपति चौहान तुम्हारे योग्य बर है ६८८, उसके सौ सरदार हैं, उसने गजनीपति को पकड़कर दण्ड लेकर छोड़ दिया ६८८, महाबली चालुक्य भीमदेव को जीता है यह सुन शशिव्रता का प्रसन्न होकर कहना कि तुम जाओ और उन्हें लाओ जो वह न आवैंगे तो मैं शरीर छोड़ दूंगी ६८८, हंस वहां से उड़कर दिल्ली आया ६८८, बन

में शिकार के समय हंस का आना उसे देख कर आश्चर्य में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना ६८९, बन में शिकार के समय हंस का आना उसे देखकर आश्चर्य में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना ६८९, संध्या को हंस रूपी दूत का सबको हटा कर राजा को पत्र देना दूत का कहना कि एकान्त में कहने की बात है इतना कह कर चुप हो जाना ६८९, हंस का कहना कि शशिव्रता का गुण कहने को शारदा भी समर्थ नहीं है ६९०, चन्द्र और सूर्य के बीच मे शशिव्रता ऐसी सुशोभित है मानों शृङ्गार का सुमेर हो ६९०, शशिव्रता के रूप का वर्णन ६९०, पृथ्वीराज का शशिव्रता का रूप सुनकर उसके मिलने की चिन्ता में रात दिन लगे रहना सबेरे उठते ही राजा के दूत से पूछना ६९१, हंस का राजा देवगिरि का जैचन्द के यहां सगाई भेजने और शशिव्रता के पण ठानने का वृतान्त कहना ६९१, शशिव्रता की विरह जल्पना का वर्णन ६९१, शशिव्रता का चित्ररेखा के अवतार होने तथा पृथ्वीराज के पाने के लिये रात दिन शिव जी की पूजा करने का वर्णन ६९२, वह आप अब मिल गए देर न कीजिए चलिए ६९२, मै महादेव जी की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूं ६९२, शशिव्रता के रूप गुण का वर्णन ६९३, पृथ्वीराज का पूछना कि तुम सब शास्त्र जानते हो सो चार प्रकार की स्त्रियों के गुणादि का वर्णन करो ६९३, हंस को देर होने के भय से कोई बात अच्छी नही लगती ६९३, हंस कहता है कि स्त्रियो की बहुत जाति हैं पर शशिव्रता पद्मिनी है ६९३, राजा का उत्तम स्त्रियो का लक्षण पूछना ६९३, हंस का पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी, और संखिनी इन चारो का नाम गिनाना ६९३, राजा का चारो के लक्षण पूछना ६९३, हंस का लक्षण वर्णन करना ६९३, स्त्रियो के उत्तम गुणों का वर्णन ६९४, पद्मिनी का वणन ६९४, हस्तिनी का बर्णन ६९४ चित्रनी का वर्णन ६९४, संखिनी का वर्णन ६९४, शशिव्रता के रूप तथा नखशिख शोभा का वर्णन ६९५, राजा का पूछना कि अप्सरा का अवतार क्यों हुआ ६९६, हंस का विवरण कहना ६९६, इन्द्र और चित्ररेखा के झगडा तथा शाप का वर्णन ६९६, पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप इन्द्र का देना ६९६, अनेक स्तुति करने पर शिव जी का प्रसन्न होना ६९७, शिवजी का प्रसन्न होकर वर देना कि तेरा जन्म राजकुल में होगा और ब्याह भी छत्रधारी से होगा पर तेरा हरन होगा और तेरे कारण घोर युद्ध होगा। शिव की उसी बानी के अनुसार वह अपने समान पति चाहती है ६९७, दिन पूरा होने पर उत्तम पति पाकर फिर अप्सरा मृत्युलोक मे गिरी वही जादव राज की कन्या शशिव्रता है और तुम्हे उसने पति वरन किया है ६९७, हंस कहता है कि इस अप्सरा का अवतार तुम्हारे लिए हुआ है ६९८, हंस कहता है कि राजा जादव ने शशिव्रता को कान्यकुब्जेश्वर को ब्याहना बिचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें मन अर्पण कर शिव की आराधना की। शिव की आज्ञा से मैं हंस रूप धर तुम्हारे पास आया

हूं शीघ्र चलो राजा का प्रस्तुत होना। दस सहस्र सेना सजना ६९८, राजा का कहना कि जादव राजा के गुणों का वर्णन करो ६९८, हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना ६९९, उनके बेटे और बेटी के रूप गुण का वर्णन ६९९, एक आनन्दचन्द खत्री था उसकी बहिन चन्द्रिका कोट में ब्याही थी वह विधवा हो गई और भाई उसको अपने यहां ले आया ६९९, वह गान आदि विद्या में बड़ी प्रवीणा थी ६९९, उसके पास शशिव्रता विद्या पढ़ती थी उसी के मुख से आपकी प्रशंसा सुन कर वह आप पर मोहित हो गई है ७००, यों ही दो वर्ष बीत गए बाल्यावस्था बीतने पर काम की चटपटी लगी ७००, तभी से नित्य शिव को पूजा करके वह तुम्हें मिलने की प्रार्थना करती रही ७००, शिव पार्वती का प्रसन्न हो कर सपने में वर देना ७००, प्रसन्न होकर शिव पार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि जयचन्द ब्याहने आवेगा सो तुम रुक्मिणी हरण की भांति इसे हरण करो ७०१, राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों ब्याह रचा और क्यों प्रोहित भेजा ७०१, हंस का कहना कि राजा ने बहुत ढूंढा पर दैव की इच्छा उसे जयचन्द ही जंचा वहां श्रीफल ले प्रोहित को भेजा ७०१, प्रोहित ने जयचन्द को जाकर श्रीफल और वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया ७०१, टीका देकर प्रोहित ने कहा कि साहे को दिन थोड़ा है सो शीघ्र चलिए ७०२, प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तयारी और उत्सव करने की आज्ञा देना ७०२, हंस कहता है कि वह पचास सहस्र सेना और सात सहस्र हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो पृथ्वीराज ने दस सहस्र सेना लेकर चलना विचारा ७०२, पृथ्वीराज का शशिव्रता से मिलने के लिये संकेत स्थान पूछना ७०३, ब्राह्मण का संकेत स्थान बतलाना ७०३, राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊंगा ७०३, हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहां अवश्य पहुंचिए ७०३, इतनी वार्ता करके हंस का उड जाना ७०३, दस हजार सेना सहित पृथ्वीराज का तैयारी करना ७०३, राजा का सब सामंतों को हाथी घोडे इत्यादि वाहन देना ७०३, माघ बदी पंचमी शुक्रवार को पृथ्वीराज का यात्रा करना ७०५, चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना ७०५, चलने के समय राजा को भय दिलाने वाले शकुनों का होना ७०६, राजा का इन शकुनों का फल चन्द से पूछना ७०६, चन्द का कहना कि इस शकुन का फल यह होगा कि या तो कोई झगड़ा होगा या ग्रहविच्छेद ७०६, चन्द ने राजा को जैचन्द के पूर्व वैर स्मरण दिला कर कहा कि इस काम में हाथ देना मानों बैठे बैठाए भारी शत्रु को जगाना है ७०६, वय, पराक्रम, राज और काम मद से मत्त राजा ने कुछ ध्यान न दिया और दक्षिण की ओर शीघ्रता से वह चला ७०६, पृथ्वीराज से पहिले जैचन्द का देवगिरि पहुंचना ७०७, जैचन्द के साथ एक लाख दस हजार सेना का वर्णन जैचन्द का आना सुन शशिवृता का दुखी होना ७०७, शशिवृता मन ही मन

देवताओं को मनाती है कि मेरा धर्म न जाय और उसका प्राण देने को प्रस्तुत होना ७०७, सखी का समझाना कि व्यर्थ प्राण न दे देख ईश्वर क्या करता है ईश्वरी लीला कोई नही जानता सखियो का श्री रामचन्द्र, पाण्डव आदि के प्राचीन इतिहास सुना कर धीरज धराना ७०७, राजा का पृथ्वीराज के आने और शशिव्रता के प्रेम का समाचार जानकर हमीर समीर (?) से मत पूछने लगा ७०८, हमीर समीर का मत देना कि वीर चन्द को कन्यादान दीजिए ७०८, कन्या के प्राण देने के विचार और शकुन विचार से राजा भानु ने चुपचाप पृथ्वीराज के पास दूत भेजा ७०८, राजा ने पत्र मे लिखा कि शिव पूजा के बहाने शिवाले मे तुम को शशिव्रता मिलेगी ७०९, इधर पृथ्वीराज के सरदारो का उत्साहित होना ७०९, कवि कहता है गन्धर्व ब्याह शूरवीर ही करते है ७०९, पृथ्वीराज का आना सुनकर मन ही मन राजा भान का प्रसन्न होना, परन्तु वीरचन्द का सशंकित होना ७०९, पृथ्वीराज का नगर मे होकर निकलना स्त्रियो का झरोखो मे देखना शशिव्रता का प्रसन्न होना ७१०, राजा भान के हृदय मे पृथ्वीराज का आना सुनकर हर्ष शोक साथ ही उदय हुआ ७१०, पृथ्वीराज की सेना का उमङ्ग के साथ नगर मे घूमना ७११, देवालय मे शिव पूजा के लिये शशिव्रता का जाना पृथ्वीराज का वहाँ पहुँचना ७११, पृथ्वीराज की प्रशंसा ७११, सखी का शशिव्रता से कहना कि तू जिसका ध्यान करती थी वह आ गया देख ७११, शशिव्रता का आँख उठा कर देखना दोनों की आँखें मिलना ७११, मारे लाज के कुछ बोल न सकी पर नैन की सैन से बात हो गई ७१२, नैन श्रवण का संवाद ७१२, हंस ने पहुच कर शशिव्रता से कहा कि ले पृथ्वीराज शिवालय मे तुझ से मिलने आ गया ७१२, माता पिता की आज्ञा ले शशिव्रता का देवालय मे जाना ७१२, शशिव्रता के रूप का वर्णन ७१३, दस दासियो के साथ शशिव्रता का शिवालय मे आना ७१३, शशिव्रता का रूप वर्णन ७१३, शशिव्रता का चडोल पर चढ कर देवी की पूजा को आना ७१५, तेरह चडोलो को चारो ओर से घेरकर राजा भानु की सेना का चलना ७१५, सूर्योदय के समय पूजा के लिये आना राजा की सेना का वर्णन ७१५, मन्दिर के पास पहुँच कर शशिव्रता का पैदल चलना ७१५, शशिव्रताके उस समय की शोभा का वर्णन ७१५, कान्यकुब्जेश्वर को देख कर शशिव्रता का दुखी होना और मन मे चिन्ता करना ७१६, एक ओर कान्यकुब्जेश्वर की सेना का जमाव होना और दूसरी ओर पृथ्वीराज की सेना का घेरना ७१६, पृथ्वीराज की सेना का चारो ओर से घेरना ७१६, जैचन्द और पृथ्वीराज की सेना की तुलना ७१७, दोनों सेनाएं तलवार लिए तैयार है। जिसने द्रोपदी का पण रक्खा वही शशिव्रता का पण रक्खेगा ७१७, मठ को देख कर शशिव्रता के मन मे काम उत्पन्न हुआ और उसने मन ही मन शिव को प्रणाम किया ७१७, सीस

डोलियों के बीच में शशिवृता का चौंडोल था जिसको ५०० दासी घेरे हुई थीं। ५००० सवार और ५०००० पैदल सिपाही साथ में थे ७१७, शशिवृता ने चौंडोल से उतर कर पृथ्वीराज के कुशल की प्रार्थना की ७१८, बाजों का शब्द सुनकर सामंतों का चित्त पलट जाना ७१८, सेना मे वीर रस का जागृत होना ७१८, देवालय के पास सब लोगों का चित्र लिखे से खड़े रह जाना ७१८, सखियों का जैचंद के भाई को शशिवृता का वर कहना जो उसे विष सा लगा ७१ , अपनी सेना सहित वह भी शिवपूजन के लिए वहाँ आया ७१९; तब तक पृथ्वीराज के भी ३००० सैनिक हथियार बन्द कपट भेष धारण किए हुए भीड़ में घुस पड़े ७१९, शशिवृता ने चौंडोल मे उतर कर शिव की परिक्रमा की और पृथ्वीराज से मिलन होने की प्रार्थना की ७१९, शशिवृता का शिव जी की स्तुति करना ७१९, पृथ्वीराज सात हजार कपट वेषधारी काम-रथी वीरों के साथ देवी के मन्दिर में घुस पड़े ७२०, पृथ्वीराज और शशिवृता की चार आँखें होते ही लज्जा मे शशिवृता की नजर नीची हो गई और पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ लिया ७२१, पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने गुरुजनों की खबर आ गई और इससे आंख में आंसू आने लगे पर उन्हें अशुभ जान कर उसने छिपा लिया ७२१, जिस समय पृथ्वीराज ने शशिवृता का हाथ पकड़ा पृथ्वीराज के हृदय मे रुद्र, शशिवृता के हृदय में करुणा और उन शशि के शत्रुओं के हृदय मे वीभत्स रस का संचार हुआ ७२१, वरिवृत से एक घरी ठहर कर पृथ्वीराज शशिवृता को साथ ले कर चल दिए ७२२, शशिवृता के पिता ने कन्या के बैर कमधज्ज ने स्त्री के बैर से लड़ाई का विचार किया और सेना साजी ७२२, शशिवृता के पिता का कमधज्ज के साथ मिलकर पांच घरी दिन रहे मकट व्यूह रचना ७२२, कमधज्ज की सेना का वर्णन ७२२, घरियाल के बजते ही सब सेना जुट गई ७२३, चहुआन और कमधज्ज शस्त्र लेकर मिले ७२३, शत्रुता का भाव उच्चारण करके दोनों ने अपने अपने हथियार कसे ७२३, दोनो सेनाओं के युद्ध का वर्णन ७ ३, युद्ध के समय शूरवीरों की शोभा वर्णन ७२४, कमधज्ज की शोभा वर्णन ७२५, शशिवृता का चहुआन के प्रति सच्चा अनुराग था ७२५, पृथ्वीराज की श्री शेषजी से उपमा वर्णन ७२६, उस युद्ध में वीरों को आनन्द होना और कायर डरते थे ७२६, कवि का पृथ्वीराज को कलि में वीरों का सिरताज कहना ७२७, पृथ्वीराज और कमधज्ज का मुकाबला होना ७२७, धन्य है उन शूरवीरों को जो स्वामिकार्य्य के लिये प्राणों का मोह नहीं करते ७२७, पृथ्वीराज और कमधज्ज का युद्ध २७, घोर युद्ध वर्णन ६२७, युद्ध की यज्ञ से उपमा वर्णन ७२८, कमधज्ज का सर्पव्यूह रचना ७२८, पृथ्वीराज का मयूरव्यूह रचना ७२९, वीररस में शृंगाररस का वर्णन ६२९, पृथ्वीराज

की आज्ञा पाकर कन्ह का क्रुद्ध होकर झपटना ७३०, कन्ह का युद्ध वर्णन ७३०, पृथ्वीराज के बीर सामंतों का प्रशंसा ७३१, इस युद्ध को देखकर देवताओं का प्रसन्न हो कर पुष्पवृष्टि करना ७३२, सांस हो गई परन्तु कमधज्ज की अनी न मुड़ी ७३२, कमधज्ज का अपने बीरों को उत्साहित करना ७३२, सब रन भूमि में तीन हाथ ऊँची लाशें पड़ गईं ७३३, तीन घड़ी रात्रि हो जाने पर युद्ध बंद हुआ ७३३, पृथ्वीराज की सेना की समुद्र से उपमा वर्णन ७३३, युद्ध में नव रस वर्णन करना ७३३, राम रघुवंश का कहना कि जिस वीर ने युद्धरूपी काशी क्षेत्र में शरीर त्याग करके इस लोक में यश और अंत में ब्रह्म पद न पाया उसका जीवन वृथा है ७३४, गुरुराम का पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच देना ७३४, कमधज्ज और जद्दव की मृत फौज की शोभा वर्णन ७३४, किन किन बीरों का मुकाला हुआ ७३४, रात्रि व्यतीत हुई और प्रात.काल हुआ ७३५, प्रात.काल होते ही घोड़ों ने ठी लाई, शूरवीरों ने तयारी की और दोनों तरफ के फौजी निशान उठे ७३५, शूरबीरों के पराक्रम से और सूर्य से उपमा वर्णन ७३५, उस पंजर में यह गुण था कि हजार शस्त्र प्रहार होने पर भी शस्त्र नहीं लगता था ७३६, बैकुंठ वासी विष्णु भगवान पृथ्वीराज की रक्षा पर थे ७३६, इधर से पृथ्वीराज उधर से कमधज्ज की सेना की तयारी होना ७३६, आगे यादवराय की सेना तिस पीछे कमधज्ज की सेना, तिस के पीछे हाथियों की कतार देकर रूमी और अरबी, का सेना सज कर युद्ध के लिये चलना ७३६, सेना की सजावट की शोभा वर्णन और उसे देख कर भूत वेताल योगिनी आदि का प्रसन्न हो कर नाचना ७३७, सुसज्जित सेना से पावस की उपमा वर्णन ७३८, अंकुस लगा कर हाथी बढ़ाए गए और शस्त्र निकाल कर शूरवीर लोग आगे बढ़े ७३८, कमधज्ज के शीश पर छत्र उठा उसकी शोभा ७३८, घोड़ों की टापों से आकाश में धूल छा गई ७३८, चहुआन का घोड़े पर सवार होना ७३९, उस दिन तिथि दसमी को युद्ध के समय के तिथि योग नक्षत्रादि का वर्णन ७३९, युद्ध वर्णन ७३९, घायल सामंतों की शोभा ७३९, शूरवीरों का क्रोध में आकर युद्ध करना ७३९, कवि का कथन कि उन सामंतों की जहाँ तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है ७४०, कमधज्ज के बीर खवास का युद्ध और पराक्रम वर्णन ७४१, खवास तो मारा गया परन्तु उसका अखंड यश युगान युग चलेगा ७४२, खवास के मरने से कमधज्ज को बड़ा दुख हुआ और उसने अपने मंत्रियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिए ७४२, मंत्रियों का कहना कि समय पड़ने पर सुग्रीव, दुर्योधन, श्री रामचन्द्र, पांडव, अर्जुन इत्यादि सब ने अपनी अपनी स्त्रियों को छोड़ दिया ७४२, कमधज्ज के मंत्रियों के मंत्र देने के विषय में कवि की उक्ति ७४२, मंत्रियों के मंत्र के अनुसार कमधज्ज ने अपनी अनी मोड़ली ७४३, कमधज्ज की सेना के फिरने से सामंतों का दिल

बढा ७४३, जिस कुल मे चामुंड है उसको दाग नही लग सकता ७४३, दुपहर के समय कमधज्ज की फौज फिर से लौट पडी ७४४, कमधज्ज और चहुआन खड्ग लेकर क्षत्री धर्म में प्रवृत्त हुए ७४४, शूरबीर हाथियो के दांत पकड पकड कर पछाडने लगे ७४४, महाभारत मे अर्जुन के अग्निबाण के युद्ध से इस युद्ध की उपमा देना ७४४, घोर संग्राम का वर्णन ७४४, प्रातःकाल से युद्ध होते सन्ध्या हो गई और कमधज्ज की सेना मुड गई परन्तु चौहान की सेना का बल न घटा ७४६, दोनो सेनाओं के बीर युद्ध से सन्तुष्ट न हुए तब इधर से भीमराय और उधर से मृत पत्राम के भाई ने क्रुद्ध होकर धावा किया ७४६, स्वामिकार्य्य के लिये जो शरीर का मूल्य नही करता वही सच्चा स्वामिभक्त सेवक है ७४७, छत्रिवृत्ति का ब्याह धन्य है जिसमे अनन्त वीरो को मुक्ति मिली ७४७, कमधज्ज के दस बड़े बड़े शूरबीर थे वे दसों इस युद्ध मे काम आये ७४७, कमधज्ज के जो वीर मारे गये उनके नाम ७४७ शूरवीरो की प्रशंसा ७४८, कमधज्ज का श्वेत छत्र देख चामुंड राय का उसे काट देना और सब सेना का आश्चर्य और कमधज्ज की सेना मे हाय हाय मच जाना ७४९, कमधज्ज का छत्र गिरने से शूरवीरो को भय न हुआ ७५०, स्त्रियो की प्रशंसा ७५०, रात्रि का कुछ अंश बीतने पर चन्द्रमा का उदय हो गया और दोनो सेनाओ के बीर विश्राम के लिए रण से मुक्त हुए ७५१, सूर्योदय से प्रथम चकवा चकई और शूरबीरो को आनन्द होना है ७५१, रात्रि को सयोगिनी स्त्री और रण मे श्रमित सेना विश्राम करती है पर कुमोदिनी और वियोगिनी को कल नही पडती ७५१, सहस्त्रो सेना मे भी छिपा हुआ चहुआन का शत्रु बच नही सकता ७५२, चहुआन के सामंत स्वामिकार्य के लिये प्राण को कुछ वस्तु नही समझते और यह स्वभाव चहुआन का स्वयं भी है ७५२, सामंतों का पृथ्वीराज से कहना कि आप दिल्ली को जाय हम लडाई करेंगे ७५२, पृथ्वीराज का कहना कि सूर्य्य बिना चंद्र तथा तारागण से कार्य नही हो सकता, हनुमान के समुद्र लांघने पर भी रामचंद्र जी के बिना कार्य नही हो सका। मैं तुम्हे छोड कर नही जा सकता ७५२, तुम्हे रण मे छोड कर मैं दिल्ली मे जाकर आनन्द करूं यह मैंने नही पढा है ७५३. राजा का उत्तर सब को बुरा लगा परंतु किसी ने राजा की बात का उत्तर न दिया ७५३, यही उत्तर दिया कि शत्रु के साम्हने से भागने वाले क्षत्री को धिक्कार है, मै प्राण ... भारत मचाऊंगा ७५३, सब का यह मत होना कि सूर्योदय से प्रथम ही युद्ध आरंभ हो जाय ७५३, सूर्योदय से प्रथम ही फौज का तैयार हो जाना ७५३, रण मदमाते निड्डर का घोड़े पर सवार होना और साठ योधाओ को लेकर हेरावल मे बढना ७५४, शूरबीर लोग माया मोह को छोड़ कर आगे बढे ७५४, तीसरे दिवस का युद्ध वर्णन ७५४, युद्ध करते हुए बीरों की प्रशंसा ७५४, शूरबीर सामंतों का रणमत्त होकर विचित्र कौशल से शस्त्राघात

करते हुए युद्ध करना ७५५, शूरवीर स्वामिकार्य साधन करने के लिये वीरता से रण में प्राण दे कर पूर्व कर्मों की संधि को लांघ कर स्वर्ग पाते हैं ७५६, स्वामिकार्य में जो वीर रण में मारे जाते हैं उन का शिर श्री महादेव जी की माला (हार) में गुहा जाता है ७५६, तीसरे दिन एकादशी सोमवार को युद्ध होते होते पांच घड़ी चढ़ आई शूरवीर मार मार कर हाथियों की कला कला की पछेलते जाते थे ७५६, इधर पृथ्वीराज ने शशिवृता की उत्कंठा पूर्ण की ७५६, सम्मिलन के प्रारंभ में पृथ्वीराज ने प्रण किया कि मैं तुझे तीनों पन में एक सा धारण किए रहूंगा ७५७, यह वर पाने के लिये कवि का शशिवृता को धन्य कहना ७५७, पृथ्वीराज का अटल प्रेम देख कर पैर पकड़ कर शशिवृता का कहना कि दिल्ली चलिए ७५७, उक्त विषय पर पृथ्वीराज का विचार में पड़ जाना कि क्या करना चाहिए ७५७, यह देख शशिवृता का कहना कि मेरी लज्जा रखिए ७५७, राजा का कहना कि तेरी सब बातें रस कसूम (अफीम के शर्बत) के समान मेरे जीवन भर मेरे साथ हैं ७५७, शशिवृता का कहना कि मैं भी क्षण क्षण आपकी प्रसन्नता का यत्न करती रहूंगी ७५८, पृथ्वीराज का कहना कि चहुआन का धर्म ही लज्जा का रखना है ७५८, तू अपने धर्म अनुसार सत्य कहती है ७५८, इस प्रकार शशिवृता और पृथ्वीराज का परामर्श होता रहा, पृथ्वीराज रूप रस में मत्त था और उसके स्वामिधर्म में रत सामंत उस तक कोई बाधा न पहुंचने देते थे ७५८, यद्यपि सामंत बड़े बलवान थे किन्तु तब भी पृथ्वीराज का मन युद्ध ही की ओर लगा था ७५८, शशिवृता की आशा पूजी, शिवजी की मुंडमाल पूरी हुई और भगवती रुधिर से तृप्त हुई ७५९, शूरवीरों के शौर्य और बल की प्रशंसा ७५९, शशिवृता के ब्याह की देवासुर संग्राम से उपमा वर्णन ७५९, शूरवीरों का कहना कि हमारी जय तो हुई किन्तु जयचंद का भाई कमधज्ज क्यों जीवित जाने पावे ७५९, राजा का कहना कि उसे मार कर क्या करोगे ७६०, आतातायी का कहना कि उसे युद्ध में खंड खंड कर ही दूंगा ७६०, इसी प्रकार गुरुराम की आज्ञा होने से घोर युद्ध का होना ७६०, रण में अगनित सेन को मरा देख कर निडुर का कमधज्ज से कहना कि अब तू किस के भरोसे युद्ध करता है। पृथ्वीराज तो शशिवृता को लेकर चला गया ७६१, पृथ्वीराज शशिवृता को लेकर आध कोस आगे जाकर खड़ा हुआ ७६१, अपनी और कमधज्ज की सब सेना मरी देखकर यदुदव का हार मानना और सब डोलीं पृथ्वीराज को सौंप देना ७६१, पृथ्वीराज नें तेंतालसी डोलियों सहित बीच में शशिवृता को लेकर दिल्ली को कूच किया ७६२, शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज तेरस को दिल्ली पहुँचे ७६२, पृथ्वीराज की प्रशंसा वर्णन ७६२, चामुंडराय की प्रशंसा ७६२, युद्ध में कमधज्ज और यादव को जीत कर शशिवृता को लेकर पृथ्वीराज दिल्ली जा पहुंचे ७६२, शशिवृता के साथ विलास करते हुए सब सामंतों सहित पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करने लगे ७६२, इस जय के प्राप्त होने से

चहुआन का यश और बादशाह से बैर बढ़ा ७६३, पृथ्वीराज शत्रुओं को पराजय कर के अदंड बादशाह को दँड दे कर नीति पूर्वक दिल्ली का राज्य करता था ७६३।

[समय २६] अथ देवगिरि समयो लिख्यते

[पृष्ठ ७६४-७७७]

जयचन्द की सेना ने देवगिरि गढ को घेर रक्खा ७६४, राजा जयचन्द के भाई ने कन्नौज को और देवगिरि के राजा ने पृथ्वीराज के पास सब समाचार भेजा ७६४, दूत ने लज्जा के साथ जयचन्द को पत्र दिया। जयचन्द के पूछने पर दूत ने युद्ध और पराजय का हाल कहा ७६४, जयचन्द की महा क्रोध से कहना कि पृथ्वीराज की कितनी सेना है। उसे मेरा एक मीर बन्दा जीत कर बांध सकता है ७६५, जयचन्द ने मन्त्रियों से मत करके स्नेही राजाओं को सेना सहित आने को पत्र भेजा ७६६, पत्र भेज कर अपनी सवारी की आज्ञा दी। सवारी के लिये घोड़ा तय्यार कराया ७६६, घोड़े की प्रशंसा वर्णन ७६६, जयचन्द घोड़े पर चढा तीन हजार डंका निशान और तीस लाख पैदल सजकर झट से तय्यार हुआ ७६७, जयचन्द ने प्रतिज्ञा की कि जादव और चौहान दोनों को मार कर तब मैं राजसूय यज्ञ करूँगा ७६७, सेना की शोभा वर्णन ७६७, जयचन्द की स्त्री का विरह वर्णन ७६८, जयचन्द की चढाई का वर्णन ७६९, जयचन्द का दक्षिण की ओर चढ़ चलना ७७०, हाथियों की शोभा वर्णन ७७०, राजा भान का यह समाचार पृथ्वीराज को लिखना ७७०, उक्त समाचार पाकर काम क्रीडा प्रवृत्त पृथ्वीराज का वीरता के जोम मे आ जाना ७७०, इधर शहाबुद्दीन की चढाई, उधर जयचन्द की राजा भान ने लड़ाई देखकर पृथ्वीराज ने चितौर के रावल समर सिंहजी को सब वृत्तान्त लिखकर सहायता चाही और सम्मति पूछी ७७१, समर सिंह ने पत्र पढकर कहा इस समय पृथ्वीराज को दिल्ली मे अकेले न छोडना चाहिए। मेरे साथ अपने सावन्त और अपनी सेना दें मैं पंग से लड लूंगा ७७१, समरसिंह की सलाह मान पृथ्वीराज ने अपने सावंत चामुंडराय और रामराय बडगूजर के साथ अपनी सेना रवाना की ७७१, रावल समरसिंह ने अपने भाई अमर सिंह को साथ लिया। ये लोग देवगिरि की ओर चले ७७२, जयचन्द को गढ घेरे देख चामुंडराय ने चढाई की। इधर राजा भान मिला ७७२, राजा भान और चामंडराय की सेना का वर्णन ७७२, राजा भान का मिलना देखकर जयचन्द का क्रोध करना ७७२, अमरसिंह ने जयचन्द के हाथी को मार गिराया ७७३, हाथी के मारे जाने पर जयचन्द का क्रोध करना और स्वयं टूट पड़ना ७७३, लड़ाई खतम होने पर जयचन्द का अपने घायलों को उठवाना ७७४, इस युद्ध में मारे गये सूर सामंतों के नाम ७७४,

रणभूमि में जयचन्द के घोड़े की चंचलता और तेजी का वर्णन ७७४, देवगिरि के किले की नाप और जंगी तैयारी का वर्णन ७७४, जयचन्द का राजा भान को मिलाने का प्रबंध करना ७७४, इधर अमरसिंह का घोर युद्ध करना ७७५, जयचन्द का किले पर सुरंग लगाना ७७५, जयचन्द का कीर्तिपाल नामक भाट को भीमदेव और चामंड के पास संधि का संदेसा लेकर भेजना ७७५, राजा भान को समझा कर जयचन्द के दूत का वश कर लेना ७७६, जयचन्द का विचारना कि वह धन छोड़ कर यदि यह धरती मिली भी तो किस काम की ७७६, इसके परणाम मे चहुआन और राजा भान को यश मिला और जयचन्द नवमी को कन्नौज को फिर गया ७७७।

[समय २७] अथ रेवा तट समयो लिख्यते

[पृष्ठ ७७८-७९९]

देवगिरि से विजय कर चामंडराय का आना ७७८, चामंडराय का पृथ्वीराज से रेवा तट के बन की प्रशंसा करके वहां शिकार के लिये चलने की सलाह देना ७७८, उन बन के हाथियो की उत्पत्ति और शोभा वर्णन ७७८, राजा का चन्द से पूछना कि मुख्य चार जाति मे से यह किस जाति के हाथी है और स्वर्ग से इस लोक मे क्यो आए ७७८, चन्द का वर्णन करना कि हेमाचल पर एक वृक्ष था जिसकी शाखें सौ सौ योजन तक फैली हुई थी मतवाले हाथियो ने उन्हे तोड़ दिया। इस पर क्रोध करके मुनिवर ने शाप दिया कि तुम मनुष्यो की सवारी के लिये पृथ्वी पर जन्म लो ७७८, अंग देश के पूर्व एक सुन्दर वनखंड है वही वह गजयूथ विहार करता था। वहां पालकाव्य नामक एक थोड़ी अवस्था का ऋषीश्वर रहता था उसे इन सभों मे बड़ा स्नेह हो गया था परन्तु राजा रोमपाद फंदा डालकर हाथियो को चंपापुरी मे पकड़ ले गया ७७९, पालकाव्य मारे बिरह के मरकर हाथी के रूप में जनमा ७७९, उधर ब्रह्मा के तप को भंग करने के लिये इन्द्र ने रंभा को भेजा था उसे शापवश हथिनी होना पड़ा वह भी वही आई ७७९, पालकाव्य उसके साथ विरह करने लगा ७७९, चन्द ने उस बन और जन्तुओ की प्रशंसा करके कहा कि आप अवश्य वहां चलकर शिकार खेलिए ७८०, एक तो जयचन्द पर जलन हो रही थी दूसरे अच्छा रमणीय स्थान सुन पृथ्वीराज से न रहा गया ७८१, पृथ्वीराज धूम से चला रास्ते के राजा संग हो गए, स्वयं रेवानरेश भी साथ हुआ इस समय मुलतान के भेदुए (नीतिराय) ने लाहौर से यह समाचार गजनी भेजा ७८०, मारूफ खां और तत्तार खां ने दिल्ली पर आक्रमण करने का बीड़ा उठाया। तातार खां आदि सभों ने कुरान हाथ में लेकर शपथ करके प्रस्थान किया ७८१, एक दिन दिल्ली के लूंना ७८१, चन्द पुण्डीर ने पृथ्वीराज को समाचार लिखा। पृथ्वीराज

का छः कोस लौट कर कूच का मुकाम करना ७८१, पृथ्वीराज का पंजाब तक सीधे शहाबुद्दीन की सेना के रूख पर जाना और उधर शहाबुद्दीन की सेना का आना ७८१, पृथ्वीराज का रेवा तट आना सुनकर सुल्तान का सेना सजकर चलना ७८१, पृथ्वीराज का कहना कि बहुत बड़े शत्रुरूपी मृगों का समूह शिकार करने को मिला ७८०, राज्य मन्त्रियों ने यह सम्मति दी कि आगे आप झगड़ा मोल लेना उचित नहीं किसी नीति द्वारा काम लेना ठीक है ७८२, यह बात सुन कर सामन्तों का मुसका कर कहना कि भारथ का वचन है कि रण मे मरने से ही वीर का कल्याण है ७८२, पज्जूनराय का कहना कि मैंने सब शत्रुओं को पराजित किया और शहाबुद्दीन को भी पकड़ा अब भी उस से नहीं डरना ७८२, जैत राव का कहना कि शहाबुद्दीन की सेना से मिलान होना लाहौर के पास अनुमान किया जाता है अतएव अपनी सब तैयारी कर लेनी उचित है आगे जो आप की इच्छा हो ७८३, रघुवंस राम का कहना कि हम सामंत लोग मंत्र क्या जानें केवल मरना जानते हैं, पहिले शाह को पकड़ा था अब भी पकड़ेंगे ७८३, कविचन्द का कहना कि हे गुज्जर गँवारी बातें न कहो इन्हीं बातों से राज्य का नाश होता है हम सब के मरने पर राजा क्या करेगा ७८३, पृथ्वीराज का कहना कि जो बात आगे आई है उसके लिये युद्ध का सामना करो ७८३, पृथ्वीराज के घोड़ों की शोभा वर्णन ७८४, आधी रात को दूत पृथ्वीराज के पास पहुंचा और समाचार दिया कि अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख सेना के साथ सुलतान लाहौर से चौदह कोस पर आ पहुंचा ७८४, पृथ्वीराज ने दूत से पत्र लेकर पढ़ा-हिन्दुओं के दल मे शोर मच गया ७८४, दूत का दरबार मे आकर पृथ्वीराज से कहना कि मुसलमान सेना चिनाब के पार आ गई चन्द पुंडीर ने उसका रास्ता बाध कर मुझे इधर भेजा है ७८५, सुल्तान का अपने सामन्तों के साथ युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ७८५, शाहजादे का सरदारों के साथ सेना हरवल रचना और सेना के मुख्य सरदारों के नाम स्थान और उनका पराक्रम वर्णन ७८५, शहाबुद्दीन का इस पार तीस दूतों को रख कर चिनाब पार करना ७८६, यह सुन कर पृथ्वीराज का क्रोध करना और दूत का कहना पुण्डीर उसे रोके हुए है ७८६, जहा पर सुल्तान चिनाव उतरने वाला था वहीं पुण्डीर ने रास्ता रोका। घोर युद्ध हुआ। चन्द पुण्डीर घायल हो कर गिरा। सुलतान चिनाब पार होने लगा ७८६, सुलतान का चिनाब उतरना और चन्द पुण्डीर का गिरना देख कर दूत ने बढ़ कर पृथ्वीराज को समाचार दिया ७८६, पृथ्वीराज ने क्रोध के साथ प्रतिज्ञा की कि तब मैं सोमेश्वर का बेटा जो फिर सुलतान को कैद करूँ पृथ्वीराज ने चन्द्र व्यूह की रचना करके चढ़ाई की ७८७, पञ्चमी मङ्गलवार को पृथ्वीराज ने चढ़ाई की (कवि ने उस दिन के ग्रह स्थिति योग आदि का वर्णन किया है) ७८७, जिस प्रकार चक्रवाक,

साधु, रोगी, निर्धन, विरह वियोगी लोग रात्रि के अवसान और सूर्योदय की इच्छा करते हैं उसी प्रकार पृथ्वीराज भी सूर्योदय को चाहता था ७८७, पृथ्वीराज की सेना तथा चढ़ाई का वर्णन ७८७, दोनों ओर की सेनाओ के चमकते हुए अस्त्र शस्त्र और निशानों का वर्णन ७८८, जब दोनों सेनाएं साम्हने हुई तब मेवारपति रावल समरसिंह ने आगे बढ़कर युद्ध आरम्भ किया ७८८, रावल, जैत पंवार, चामण्ड राय और हुसैन षां का क्रमानुसार हराबल मे आक्रमण करना पीठि सेना का पीछे से बढ़ना ७७९, हिन्दू सेना की चन्द्र व्यूह रचना ७८९, दो पहर के समय चंद पुंडीर का तिरछा रुख दे कर शत्रु सेना को दबाना ७८९, पृथ्वी राज और शहाबुद्दीन का सन्मुख घोर युद्ध होना योगिनी भैरव आदि का आनन्द से नाचना ७९०, सुलतान का घबराना तातार खा का धैर्य दिलाना ७९०, उक्त युद्ध की वसन्त ऋतु से उपमा वर्णन ७९०, सोलंकी माधव राय मे खिलजी खां से तलवार का युद्ध होने लगा। माधव राव की तलवार टूट गई तब वह कटार से लड़ने लगा शत्रुओं ने अधर्म युद्ध से उसे मार गिराया ७९१, वीर गति से मरने पर मोक्ष पद पाने की प्रशंसा ७९२, जै सिंह की वीरता और उसकी वीर मृत्यु की प्रशसा ७९२, वीर पुण्डीर के भाई की वीरता और उसके कमंध का खड़ा होना ७९२, पज्जून राय के भाई पल्हान राय का खुरसान खां के हाथ से मारा जाना ७९२, जै सिंह के भाई का मारा जाना ७९२, गोइन्द राय का तत्तार खां के हाथी और फीलवान को मार गिराना ७९३, नरसिंह राय के सिर मे घाव लगने से उसके गिर जाने पर चामुंडराय का उसकी रक्षा करना ७९३, रात हो गई दूसरे दिन सवेरे फिर पृथ्वीराज ने शत्रुओं को आ घेरा ७९३, जैत राय के भाई लक्ष्मण राय के मरते समय अप्सराओं का उसके पाने की इच्छा करना परन्तु उसका सूर्य्य लोक भेद कर मोक्ष पाना ७९३, महादेव का लक्ष्मण का सिर अपनी माला के लिये लेना ७९४, पहर दिन चढ़े जंघा योगी ने त्रिशूल लेकर घोर युद्ध मचाया लंगरी राय की बीरता की प्रशंसा ७९४, लोहाने की वीरता का वर्णन चौसठ खांओं का मारा जाना ७९५, चौसठ खान मारे गये और तेरह हिन्दू सरदार मारे गये हिन्दू सरदारों के नाम तथा उनका किससे युद्ध हुआ इसका वर्णन ७९५, दूसरे दिन तत्तार खाँ का शहाबुद्दीन को विकट व्यूह के मध्य में रख कर युद्ध करना और सामंतों का क्रोध कर के शाह की तरफ बढ़ना ७९६, खुरासान खाँ का मुलतान के बचन पर तैश मे आकर घोर युद्ध मचाना ७९७, रघुवंशी के घोर युद्ध का वर्णन ७९७, लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तू उदास क्यों है ? उसने उत्तर दिया कि आज किसी को वरन करने का अवसर नही मिला ७९७, रम्भा ने कहा कि इन वीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या ये सूर्य में जा समाए ७९८, हुसैन खाँ घोड़े से गिर पड़ा उजबक खाँ खेत रहा मारूफ खाँ तातार खाँ सब पस्त हो गए तब दूसरे दिन सबेरे सुलतान स्वयं तलवार निकाल कर लड़ने

लगा ७९८, सुलतान ने एक बान से रघुवंस गुसाईं को मारा दूसरे से भीम भट्टी को तीसरा बान हाथ का हाथ ही में रहा कि पृथ्वीराज ने इसे कमान डाल कर पकड़ लिया ७९८, सुलतान को पकड़ कर और हुसैन खां तातार खां आदि को विजय करके पृथ्वीराज दिल्ली गए चारों ओर जै जैकार हो गया ७९९, एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया ७९९, एक महीना तीन दिन कैद रखकर नौ हजार घोड़े और बहुत से माणिक्य मोती आदि लेकर सुलतान को गजनी भेज दिया ७९९ ।

[समय २८] अथ अनंगपाल समयो लिख्यते

[पृष्ठ ८००–८२१]

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप करने चला गया था परन्तु उसने पृथ्वीराज से फिर विग्रह क्यों किया, इस कथा का वर्णन ८००, अनंगपाल के बद्रिकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली निर्द्वंद शासन करना ८००, यह समाचार देश देशान्तर में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली में निर्द्वन्द राज्य करता हुआ स्वजनो को मान देता है और उपकार को न मान कर अनङ्गपाल की प्रजा को बड़ा दुख देता है ८००, अग्नि, पाहुना, विप्र, तस्कर आदि परदुख नहीं जानते । पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनङ्गपाल पराए की भांति तप करता है ८००, सोमेश्वर अजमेर में राज्य करता है और पृथ्वीराज को दिल्ली मिली यह सुन कर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा ८०१, मालवापति ने चारों ओर के राजाओं को पत्र लिख कर बुलाया गक्खर, गुण्ड, भदोड़ और सोरपुर के राजा आए । सलाह हुई कि पहिले सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय ८०१, मालवपति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना सहित चंबल नदी पार होना ८०१, शत्रुओं के आने का समाचार सुनकर सोमेश्वर अपने सामंतों को इकट्ठा करके बोला कि पृथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर शत्रु चढ़े है ऐसा न हो कि कायरता का धब्बा लगे और नाम पर हंसा जाय ८०१, सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल है इससे इनको रात के समय छल करके जीतना चाहिए । सोमेश्वर ने कहा कि तुम ने नीति ठीक कहा पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी ८०२, सामंतों ने कहा कि सेतु बांधने में श्रीराम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप के मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस के मारने में छल किया, इसमें कोई दूषण नहीं है ८०२, सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तयारी करना ८०३, पट्टन के यादव राजा ने आकर डेरा डाला अजमेर जीतने का उत्साह जी में भरा था ८०३, चारों ओर खलबली मच गई रुद्रगण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे ८०३, योद्धाओं की तयारी तथा उनके उत्साह का वर्णन ८०४, सोमेश्वर ने पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पैर

उखड़ गये ८०४, संसार में एक मात्र कवि कथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है ८०५, यादव राजा ऐसा घायल होकर गिरा कि मुंह से बोल न सकता था। सोमेश्वर उसे उठा लाया बड़ा यत्न किया। एक महीना बीस दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया सोमेश्वर ने बहुत दान दिया ८०५, पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना। उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात पाऊंगा शत्रुओं को मजा चखाऊँगा ८०५, इधर दिल्ली की प्रजा ने बद्रिकाश्रम में अनङ्गपाल के पास जाकर पुकारा कि महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए ८०५, अनङ्गपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मन्त्री को बुलाकर समाचार कहा। मन्त्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए ८०५, राज्य प्राप्त करने के लिए गत ऐतिहासिक घटनाओ का वर्णन ८०६, तूंअर वंश ने सर्वदा भूत्र की पहले किल्ली को उखाडा फिर आपने पृथ्वीराज को राज्य दिला दिया ८०६, राजा हाथी घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परन्तु राज्य की सर्प मणि के समान रक्षा करे ८०६, अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मन्त्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला ८०६, पृथ्वीराज से मिल कर मन्त्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रसन्न हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो ८०६, इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना ८०७, बसीठ का कहना कि जिसका राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं ८०७, पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते है ८०७, मन्त्री का यह सुनकर उदास मन हो चला आना ८०७, मन्त्री ने अनङ्गपाल से आकर कहा कि मैंने तो पहिले ही कहा था, यह दैत्यवंशी चौहान कभी राज्य न लौटायेगा पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए ८०७, अनङ्गपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया पृथ्वीराज नाना की मर्यादा को सोचने लगा और उसने कैमास को बुला कर पूछा कि मेरी सांप छछून्दर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए ८०८, जो लड़ाई करता हूं तो अपनी मां के पिता (नाना) से लड़ता हूँ और जो छोड़ देता हूँ तो अपनी हीनता प्रगट होती है सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो ८०८, कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिये, इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानैं यहीं आकर भिड़ें तो फिर लड़ना चाहिए ८०८, अनङ्गपाल ने धूमधाम से युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लड़ाई हुई अन्त में अनङ्गपाल की हार हुई ८०८, हार कर अनङ्गपाल का बद्रीनाथ लौट जाना ८०८, आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड़ कर अनङ्गपाल लौट गया ८०९, मन्त्री सुमन्त की सलाह से अनङ्गपाल ने माधो भाट को मुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा ८०९, माधो भाट जाकर मुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ चला ८०९, नीतिराव खत्री ने

अनङ्गपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया ८०९, पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आप को पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैलाकर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते है ? ८०९, जैसे बादल से बून्द गिर कर, हवा से पेड़ के पत्ते गिर कर, आकाश मे तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसे ही हमे पृथ्वी देकर इस जन्म मे आप उलटी नही पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए ८१०, आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए, उसे तो हमने कई बार बांध बांध कर छोड़ दिया है ८१०, हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। सदेसा सुनते ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा ८१०, अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिखकर दूत को गजनी की ओर भेजा। पत्र मे लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए हम और आप मिलकर दिल्ली को विजय करें ८१०, दूत ने आकर अनंगपाल के राज्य-दान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनंगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सुनाया सुलतान सुनते ही चढ़ चला ८११, सुलतान शाहबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सरदारों का वर्णन ८११, सिन्धु पार उतरकर, बीस हजार सेना साथ देकर सुलतान ने ततार खां को अनंगपाल को लाने के लिए हरिद्वार भेजा। तातार खां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष से उससे मिला ८११, अनंगपाल ने बहुत से घोड़े मोल लिये और सेना भरती करके लड़ाई क तैयारी की ८१२, तीन सौ वीर जो अनंगपाल के साथ बैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने के लिये तयार हुए ८१२, तातार खा ने रात भर रहकर सवेरे ही अनंगपाल के साथ कूच किया। अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर आगे से बढ़कर उसने सुलतान को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे ८१२, अनंगपाल ने सब वृत्तान्त सुनाया, दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप आकर हाजिर हो जाय तो उसे जीव दान करना चाहिए। सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बडा अनुचित करते हो जो राजा को राज नही सौंप देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो। पृथ्वीराज ने कहा कि ऐसी कोटि चढाई क्यों न करें अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता ८१२, पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट लगा कर सब सरदारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला ८१३, दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सुलतान से कहा। जो सब सरदार विरक्त हो गए थे वे भी स्वामि के काम के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए ८१३, सुलतान ने दूत से समाचार सुन कर चढ़ाई का हुक्म दिया ८१४, पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा ८१४, धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला, जब दोनों सेनाएं एक दूसरे से दो कोस पर रह

गई तब पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट दी ८१४, पृथ्वीराज के पहुँचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया ८१५, आगे तातार खां को रक्खा, मारूफ खां को बांई ओर और खुरासान खां को दाहिनी ओर अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया ८१५, पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूहरचना की। आगे कैमास को और पीछे चावंडराय को कर दिया ८१५, अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं, जीते ही पकड़ना चाहिए ८१५, दोनों दलों का सामना हुआ, कैमास ने युद्धारम्भ किया ८१५, दोनों दल का सामना होते ही घमसान युद्ध होने लगा ८१५, कैमास ने शस्त्र संभाल कर युद्धारम्भ किया। युद्ध का वर्णन ८१५, शहाबुद्दीन को चावंड राय ने पकड लिया, पृथ्वीराज की जय हुई, सात हजार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए ८१७, पृथ्वीराज का सुलतान को कैद मे भेज कर अनंगपाल को आदर सहित दरबार मे बुला कर उनके पैर पड़ना ८१७, दाहिम राव को हुक्म देकर सुलतान को दरबार मे बुलाना, उसके आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बड़े बुद्धिमान हैं आप इस शाह के बहकाने में क्यों आ गए ८१७, सरदार गहलोत ने कहा इसमें महाराज अनंगपाल का दोष नहीं है यह सब प्रपंच दीवान का रचा हुआ है ८१८, चामुंड राय का कहना कि कुसंग का यही फल होता है ८१८, सामंतों ने जितनी बातें कहीं, सब अनङ्गपाल सिर नीचा किये सुनता रहा, कुछ न बोला ८१८, पृथ्वीराज का शाह को एक घोड़ा और सिरोपाव (खिल्लत) देकर छोड देना ८१८, शहाबुद्दीन का घोड़े हाथी और दो लाख मुद्रा दण्ड देना और पृथ्वीराज का उसे सामंतों में बांट देना ८१८, म्लेच्छ को जीत कर पृथ्वीराज दिल्ली आया ८१८, राजा से राव पज्जून गोयन्द राय आदि सामंत आकर मिले ८१९, अनङ्गपाल का मंत्री से पूछना कि अब मुझे क्या करना उचित है ८१९, मंत्री ने कहा कि महाराज आप अब बूढ़े हुए मृत्यु समय निकट है और पृथ्वीराज को दिल्ली आप दे चुके हैं अब इसका मोह छोड कर धर्म कर्म कीजिये ८१९, मंत्री का कहना कि संसार के सब पदार्थ नाशमान हैं इसकी चिन्ता न कीजिए ८१९, रानी का सलाह देना कि पृथ्वीराज से आधा पंजाब का राज्य ले लो अथवा जो व्यास जी कहैं सो करो ८१९, व्यास जी का कहना कि बलवान पृथ्वीराज को दिल्ली का राज करने दीजिए आप गुरु का ध्यान करके तप कीजिए ८२०, राज्य धन सम्मान मांगने से नहीं मिलता न बल से स्नेह होता है ८२०, मेरा मन मानो कि बद्रीनाथ जी की शरण में जाकर कन्दमूल फल खाकर तप करो ८२०, पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल की बड़ी सेवा की जब तेरह महीने बीत गए तब अनङ्गपाल ने दौहित्र (पृथ्वीराज) से कहा कि अब मुझे बद्रीनाथ पहुँचा दो वहां बैठा कर तप और भगवान का भजन करूं पृथ्वीराज ने कहा कि आप यहीं बैठकर तप भजन कर सकते हैं ८२०, पृथ्वी-

राज ने बहुत समझाया पर अनङ्गपाल ने एक न माना उसे बद्रीनाथ जाने की लौ लगी रही तब पृथ्वीराज ने बड़े आदर के साथ दस लाख रुपया सात नौकर और दस ब्राह्मण साथ देकर उन्हें बद्रीनाथ पहुँचा दिया अनङ्गपाल वहाँ जाकर तपस्या करने लगा ८२१, पृथ्वीराज की सहानुभूति दयालुता और वीरता की प्रशंसा ८२१ ।

[समय २६] अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ८२२–८३२]

पृथ्वीराज साठ हजार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार गज़नी में पहुँचा ८२२, दूतों ने जाकर गज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है । शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्तचर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर गज़नी में जाहिर किया ८२२, सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा ८२३, खुरासान, रूम, हबश और बलख आदि देशों मे सुलतान का सहायता के लिए पत्र भेजना ८२३, पाँच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना ८२३, चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घघ्घर नदी पहुँचा ८२३, शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन ८२४, सेना का वर्णन ८२४, मुसलमान सेना का व्यूहबद्ध होकर नदी पार करना ८२४, पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना सज्जित कर चामंडराव को आगे किया ८२५, पृथ्वीराज ने अपनी सेना को गरुड़व्यूहाकार रचना की ८२५, दोनो सेनाओं का साम्हना होना । एक हजार मीरो का कैमास को घेरना ८२५, तत्तार खाँ का घायल होना । मीरो की वीरता ८२५, कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना ८२५, चावंडराव ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुलतान की सेना मे कहर मच गया ८२६, जैतराव के युद्ध का वर्णन ८२६, युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव और खुरासान खाँ का तुमुल युद्ध हुआ ८२६, घोर युद्ध हुआ । निसुरत खाँ मारा गया । दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई ८२७, एक लाख कालंजरो का धावा, कान्ह चौहान के आँख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना ८२७, कालञ्जर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना । कन्ह चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना ८२७, पज्जूनराव का मीरो को काट काट कर ढेर कर देना । कन्ह का सुलतान को पकड़कर अपने घर ले आना ८२८ कन्ह का सुलतान को अजमेर ले जाना और उसे वहाँ किले मे रखना ८२८, पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की

संख्या ८२८, पृथ्वीराज को सब सामंतो का सलाह देना कि अबकी बार शहाबुद्दीन को प्राण दण्ड दिया जाय ८२८, कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश लेकर इसे छोड़ दिया जाय ८२९, पृथ्वीराज का कन्ह की बात मान कर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ दे कर शाह को घर भेज देना ८२९, कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना। शाह का कन्ह एक मणि और राजा को अपनी तलवार नजर देकर घर जाना ८२९, सुलतान का कुरान बीच में देकर कसम खाना कि अब कभी आप से विग्रह न करूंगा ८२९, सुलतान के अटक पार पहुँचने पर उधर से ततार खाँ का आदर मिलना ८३०, रयमल को दूतों का समाचार देना उसका सेना ले कर अटक उतर रास्ते में रोकना ८३०, लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयमल का मुकाबला करना ८३०, सबेरा होते ही रयमल्ल आ पहुँचा लोहाना से युद्ध होने लगा ८३१, रयमल्ल का मारा जाना, सुलतान का निर्भय गज़नी पहुँचना ८३१, तातार खाँ खुरासान खाँ आदि मुसाहबों का सेना सहित सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना ८३१, दस दिन लोहाना वहाँ रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिये और पृथ्वीराज का दण्ड दिया लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी ८३१, चन्द कवि ने चित्तौर में आकर सब सेना आदि रावल को भेंट की, रावल ने चंद का बड़ा सम्मान किया।

[समय ३०] अथ करनाटी पात्र समयो लिख्यते

[पृष्ठ ८३३-८३९]

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचन्द से जाकर कहना ८३३, यदुवंश की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना। करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेश्या का पृथ्वीराज को नजर करके संधि करना ८३३, करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना ८३३, संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यन्त विद्वान कन्हर नायक को सौंप देना ८३३, करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंसा सुनकर पृथ्वीराज का उसके लिए कामातुर होना ८३४, पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन ८३४, पृथ्वीराज के सभामण्डप की प्रशंसा वर्णन ८३४, पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम ८३५, कन्हन नट का करनाटी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना ८३५, कविचन्द का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिसमें निड्डुरराय प्रसन्न हों ८३५, नाइक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं ८३६, कवि चन्द का निड्डुरराय का इतिहास कहना ८३६, निड्डुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान

पुत्र सारंग के बगीचे मे गोठ रचना ८३६, यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहाँ आकर निढ्ढुर के रंग मे भंग करना ८३६, निढ्ढुर का जैचन्द से सारंग की बुराई करना और जैचन्द का सारंग का पक्ष करना ८३७, यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसा ही नाट्य कौशल करूँगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो ८३७, राजाओं के स्वाभाविक गुणो का वर्णन ८३७, राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना ८३८, कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना नाटक का क्रम वर्णन ८३८, कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न होकर राजा का नाइक से मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आप से क्या मोल कहूँ ८३८, पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर वेश्या को महलो मे रखना ८३९, पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीडा करना और रात दिन सैकडो दासियो का उसके पहरे पर रहना ८३९।

[समय ३१] अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ८४०–८४८]

प्रातःकाल होते ही पृथ्वीराज का और चामुण्ड राय आदि सामन्तो का अपने अपने स्थानो पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना ८४०, सभा में आने पर राज्यकार्य्य के विषय मे वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना ८४०, पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन मे कीर्ति ही सार है ८४१, राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिए राजा दधीच ने अपने अस्थि देवताओ को दी। दुर्योधन ने कीर्ति के लिए ही प्राण दिए ८४१, राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामन्तो का सिरोधार्य करना ८४१, सभा मे उपस्थित सब सामन्तो का बल पराक्रम वर्णन ८४१, पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना ८४३, सामंतो का राजाज्ञा मानना ८४४, जैचन्द के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना ८४४ कमधज्ज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति सामन्तो के नाम और सेना की तैयारी वर्णन ८४४, उन छः सामन्तो के नाम जो सामंतो मे सबसे अधिक मान्य थे ८४५, उक्त छः सामन्तो का पराक्रम वर्णन ८४५, सामन्तो का जैचन्द पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिए कहना ८४५, प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था ८४५, पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवको का एक ही मत्र ठहरा ८४६, चढ़ाई के लिए वैसाख सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सबका अपने अपने घर जाना ८४६, मरने के लिए मुहूर्त साध कर सब वीरो का आनन्द मे मतवाला होना ८४६, प्रातःकाल सामन्तों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना ८४६, पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन ८४६, सामंतों की सर्प से उपमा वर्णन

८४७, सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन ८४७, शूरवीर सामंतों का उत्साह वर्णन ८४७, फौज की शोभा वर्णन ८४८, पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीबद्ध करना ८४८, सामंतों की वीरता का वर्णन ८४८, युद्ध के लिए प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित निढ्ढुर का बीर मत वर्णन ८४९, घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन ८९१, राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना। ८५०, घोड़ों की शोभा वर्णन ८५०, शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा ८५०, शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना ८५०, राजा की आज्ञा बिना चावण्डराय का आगे बढ़ जाना ८५१, चामंडराय जैतसी कोहाना आजानबाहु का पांच कोस आगे बढ कर तत्तार खां खुरसान खां पर आक्रमण करना ८५१, उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुस्लमानो का कमान पर बाण चढ़ाकर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना ८५१, पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जयचन्द की सहायता के कर शहाबुद्दीन का राह छेकना ८५२, मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है ८५२. पृथ्वीराज का राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन ८५२, युद्ध आरंभ होना ८५२, स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पाव देने को उद्यत थे ८५३, दोनों ओर के शूर बीर सामंतो का पराक्रम और बल वर्णन ८५३, कन्ह गोइन्दराय लंगरी राय और अतत्ताई की वीरता और उनके पराकम मे मुस्लमानो की फौज का विचलाना, हामब खा खुरसान खा का मारा जाना ८५३, शूरवीरों का रणरंग से मत्त होना शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना ८५३, युद्ध की पावस से उपमा वर्णन ८५४, घोर युद्ध वर्णन ८५४, चालुक्य की प्रशंसा वर्णन ८५४, जापदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रशसा वर्णन ८५५, पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना ८५५, न्याजी खा, तत्तार खा और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पडिहार) नरिंद का हरावल सम्हालना ८५५, युद्ध होते होते रात्रि हो जाना ८५६, छः हजार दीपक जलाकर भारत की भांति युद्ध होना ८५६, आधी रात हो जाने पर तोंअर और पडिहार का शहाबुद्दीन पर आक्रमण करना और मुसल्मान फौज का पैर उखड़ना ८५६, पीप पडिहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ संकल्प करना ८५६, प्रसंगराय खीची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अतताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना ८५६, शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना ८५७, पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन ८५७, सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन ८५८।

[समय ३२] अथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ८५९-८७२]

पृथ्वीराज का मालव (देश) मे शिकार खेलने को जाना ८५९, पृथ्वीराज का ६४ सामन्तों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहा के राजा भीम प्रमार को जीत लेना ८५९, इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना ८५९, इन्द्रावती की छवि वर्णन ८५९, पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना ८५९, पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय मे प्रश्न करना ८६०, ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना ८६०, ब्राह्मण के वचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना ८६०, इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनो का वर्णन ८६०, उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना ८६१, पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना ८६१, पृथ्वीराज का पज्जून राव को अपना खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना ८६४, ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन ८६२, पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और उधर मे रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछनी ८६२, प्रधान का उत्तर देना ८६३, पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुडते ही परास्त करूंगा ८६३, पृथ्वीराज का आगे बढना ८६३, रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ८६३, चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन ८६४, पृथ्वीराज की सेना की पारधि से उपमा वर्णन ८६४, चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना ८६४' दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारम होना ८६४, इधर मे पृथ्वीराज उधर से रावल समर जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ८६५, पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज व्यूह रचना ८६५, युद्ध वर्णन, ८६५, चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर सग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना ८६६, दूसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना ८६६, भोराराय का नदी उतर कर लडाई करना ८६६, घमासान युद्ध वर्णन ८६६, समय पाकर रावल समरसिंह जी का तिरछा रूख देकर धावा करना ८६६, युद्ध लीला कथन ८६७, सामन्तो का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना ८६७, भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उन का नाम ग्राम कथन ८६७, आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज व हुसैन खां का चालुक्य पर आक्रमण करना ८६८, एक दिन रात्रि और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना ८६८ गुरजर राय भीम देव का भागना ८६८, कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई ८६८, पृथ्वीराज की कीर्ति

का उज्जल भेष धारण कर स्वप्न मे पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना ८६८, कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन ८६९, प्रात काल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना ८६९, गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये का परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी ८६९, रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना ८६९, रात का युद्ध वर्णन ८७०, पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान बीर काम आए, उनके नाम ८७०, दोनो तरफ के डेढ़ हजार सैनिको का मारा जाना ८७० पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना ८७० प्रभात होते ही युद्ध आरभ होना ८७०, दोनो सेनाओ का जी छोड़ कर लड़ना ८७१, दो पहर दिन चढ़ने-चढ़ते ५ हजार सैनिको का मारा जाना ८७१, पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना ८७२, चालुक की सब सेना का मारा जाना ८७२, पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुढवा कर घायलो को उठवाना और मृतको की दाह क्रिया करवाना ८७२, पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना ८७२, इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को ब्याहना ८७२ ।

[समय ३३] अथ इन्द्रावती ब्याह

[पृष्ठ ८७३–८८८]

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा ८७३, कविचंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया ८७३, भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ८७३, यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना ८७४, सखियो का इन्द्रावती को समझाना ८७४, इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन कदापि पलट नही सकता ८७४, भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहा फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नही जानते ८७४, कविचंद का कहना कि समय देख कर कार्य करना ही बुद्धिमत्ता है ८७४, भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हे बादशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और शूरवीर ही नही जानते ८७५, जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो ८७५, भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है ८७५, गुरुराम का ऐतिहासिक घटनाओ के प्रमाण सहित उत्तर देना ८७५ भीम का गुरुराम को मूर्ख बनाकर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ ८७५, कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना ८७६, भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना ८७६, मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को ब्याह दीजिए पर भीम का इस बात को मानकर क्रोध करना ८७६, सामंतो का परस्पर विचार बांधना ८७६, रघुवंस रामपवार का

बचना ८७६, चहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर पट्टनपुर में खलभल पड़ना ८७७, चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम का उसका साम्हना करना ८७७, भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना ८७७, रघुवंस राय का नाका बाँधना और पूज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हाँकना ८७८, जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन ८७८, युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि ८७८, सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना ८७९, दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुन. सामंतों का पान-व्यूह रच कर युद्ध करना ८७९, युद्ध वर्णन ८७९, युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना और इन्द्रावती का चहुआन के साथ ब्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना ८८०, भीम का सब सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके घायलों को औषधि करना ८८०, इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने विवाह स्वीकार कर लिया है ८८१, इन्द्रावती का शृंगार वर्णन ८८१, इन्द्रावती का मण्डप में सखियों सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठबन्धन होना ८८१, भीम का चहुआन को भांवरी दान वर्णन ८८२, गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा ८८२, पृथ्वीराज का वन्दियों को दान देना ८८२, सामंतों की प्रशंसा वर्णन ८८२, विवाह के समय उज्जैन की शोभा बर्णन ८८२, दहेज वर्णन ८८२, शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना ८८३, उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना ८८३, लोहाना का कहना कि सुरतान दण्ड देने से फिर कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है ८८३, पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुँचा कर युद्ध की तैयारी करना ८८३, इन्द्रावती का रहाइस ८८३, सुहाग स्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना ८८३, इन्द्रावती का लज्जामय मन्द चाल का वर्णन ८८४, सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना ८८४।

[समय ३४] अथ जैतराव युद्ध सम्यो लिख्यते

[पृष्ठ ८८५-८९३]

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना ८८५, ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्टू बन में शिकार खेलने का जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना ८८५. पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जंतुओं की गणना और षट्टू बन में शहाबुद्दीन के दूत का आना ८८५, पृथ्वीराज का सामंतों से सलाह लेना ८८६, शहाबुद्दीन के दूत का बचन ८८६, पृथ्वीराज का कहना कि ऐ ढीठ बसीठ तू नहीं जानता कि अभी कौन जीता और कौन हारा

राज्य सुख के लिये कर्तव्य छोड़ना परे है ८८६, कहां गजनी है और कहां दिल्ली और कै बार मैंने उसे बन्दी किया ८८६, दोनों ओर की सेनाओं की सजावट की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ८८७, शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ८८७, इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना ८८७, शहाबुद्दीन का सिन्ध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना ८८८, पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ८८८, चहुआन सेना में शूरबीरों का उत्साह करना और कायरों का भयभीत होना ८८८, चलते समय सेना का आतंक वर्णन ८८८, शाही सेन की सजावट की वर्णन ८८८, शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को सत्कर्प देना कि अब की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय ८८९, प्रातःकाल होते ही जममोज खां और नवरोज खां का युद्ध के लिये सेना तैयार करना ८९०, चहुआन का सेना तैयार करना ८९०, दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना ८९०, युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन, दोनो सेनाओ मे रन वाद्य बजना और उससे सूर बीर लोगों तथा घोड़े इत्यादि का भी प्रसन्न होकर सिंहनाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना ८९१, लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ८९१, पृथ्वीराज का अपनी वीरता से शत्रु सेना को बिड़ार देना ८९१, इस युद्ध में दोनो ओर से मृत सरदारों के नाम ८९२, सूर्योदय के समय की शोभा वर्णन ८९२, दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनो सेनाओ की तैयारी होना ८९२, दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन ८९२, शहाबुद्दीन का हाथी पर में गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना ८९३, शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना ८९३, जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना ८९३।

[समय ३५] अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ८९४–९०१]

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूँ और आप इसका वचन भी दे चुके हैं ८९४, पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना ८९४, दूत का वचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ८९४, दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना ८९४, इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना ८९५, युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना ८९५, युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना ८९५,

पृथ्वीराज का जय पाना ८९५, सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना राजा भान का शोक वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का कहना कि मैं होनहार नही मेट सकती ८९६, सवेरा होते ही भोटी राजा का मन्त्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना ८९६, प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिन्ता न करें मैं शत्रु का मान मर्दन करूंगा ८९६, भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना ८९६, पृथ्वीराज का रघुवंस राय और हाहुली राय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना ८९७, हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा ८९७, कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उनके विकटपन का वर्णन ८९७, उक्त दोनो वीरो का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां को सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना ८९८, नारेन और नीति राव का घोडों पर सवार होकर चढ़ाई करना ८९८ कंगुर दुर्ग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन ८९८, नारेन (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना ८९८, सेना का हल्ला करके क्रोध से धावा करना ८९९, युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन ८९९, अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना ९००, सब सामन्तों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना ९००, सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवंश का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री ब्याहना ९००, नियत तिथि पर ब्याह होना ९००, भोटी राज का कन्या के रूप गुण का वर्णन ९००, भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली मे आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना ९०१ ।

[समय ३६] अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ९०२–९३३]

पृथ्वीराज का शिकार के लिये पट्टनपुर जाना ९०२, रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुन्दर कन्या थी और चँदेरी मे शिशुपाल वंशी पंचाइन नाम राजा राज करता था ९०२, हंसावती की शोभा वर्णन ९०२, चँदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ को दूत भेजना ९०२, चँदेरी का रणथंभ में जाकर पत्र देना ९०३, रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चंदेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुडकने से नही डरता ९०३, चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना ९०३, चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के

पास मदद के लिये ९०३, स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया ९०३, जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं ९०४, भानुराय यद्धव का बसीठ की बात न मानना ९०४, बसीठ का लौट कर चँदेरीपति की फौज मे जा पहुंचना ९०४, पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखा हुजाबखां आदि सरदारों का आना ९०४, दोनो घनघोर सेनाओ सहित चंदेरी के राजा का आगे बढ़ना ९०४, चँदेरी राज की चढाई का वर्णन ९०४, रनथभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना ९०५, भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना ९०५, उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समरसिहजी के पास कन्ह को भेजना ९०५, कन्ह का समरसिह के पास पहुँच कर समाचार कहना ९०५, समरसिह जी का सेना तैयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे ९०५, तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम से आगे जा पहुँचेंगे ९०६, कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले है और राजा भानपर बड़ी विपत्ति है ९०६, समरसिह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नही है कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें ९०६, समरसिह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना ९०६, कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध वर्णन ९०६, दसमी सोमवार को समरसिह जी की यात्रा की मुहूर्त होगा ९०६, यात्रा के समय समरसिह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन ९०७, सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ के बाएं ओर पृथ्वीराज और दहिने ओर मे समरसिह जी का आना ९०७, पूर्व मे पृथ्वीराज और पश्चिम मे समर सिह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी ९०८, किले और आस पास की रणभूमि को पक्षी से उपमा वर्णन ९०८, उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन ९०८, चँदेरी की सेना और रुस्तमा खा के बीच मे रावल समर सिह जी का घिर जाना ९०९, पृथ्वीराज का रावल की मदद करना ९०९, रनथंभ के राजा भान का समर सिह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना ९०९, समर सिह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ९१०, चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनो सेना के वीरो का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन ९१०, युद्ध मे मारे गए सैनिक वीरो की गणना ९१०, पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना ९११, युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप ९११, हंसावती की घरयार से और दोनो सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन ९११, सेना के बीच में समर सिह की शोभा वर्णन ९११, प्रातःकाल होते ही समर सिह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना ९११, समरसिह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन ९१२, युद्ध वर्णन ९१२, समरसिह की युद्ध

चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे दल पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना ९१२, चंदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना ९१२, रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का द्वन्द्व युद्ध और चंदेरी के राजा (बीर पंचाइन) का मारा जाना ९१२, युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना। हुसैन खां और कन्हराय का घायल होना ९१३, पृथ्वीराज का स्वप्न मे एक चन्द्रवदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना ९१३, पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी भविष्य स्त्री हंसावती है कहिये तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूं ९१३, हंसावती के स्वरूप गुण और उसकी वयःसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन ९१४, पृथ्वीराज उन बातों को सुन ही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना ९१४, और उक्त रनथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन ९१५, लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का बारू बन को शिकार खेलने के लिये जाना ९१५, पृथ्वीराज के बारू बन मे शिकार करते समय सारंग राय सोलंकी का पितृबैर लेने का विचार करना ९१५, सारंगदेव का कहना कि पितृबैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है ९१५, सारंग राय का नागौद के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट मत में बांधना ९१६, सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योता भेजना ९१६, यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट-चक्र रचना ९१७, हाड़ा राव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर शिष्टाचार करना ९१७, कवि का हाड़ा राव पर कटाक्ष ९१७, पृथ्वीराज को नगर में पैठते ही अशकुन होना ९१७. ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना ९१७, इसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ ९१७, सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के सामंतों का उनका साम्हना करना ९१८, रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध ९१८, पृथ्वीराज का नागफनी से शत्रुओं को मारना ९१८, घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना ९१८, रामराय बड़ गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना ९१९, कविचन्द द्वारा ",युद्ध" एवं सारंग देव के कुकृत्य का परिणाम कथन ९१९, पज्जून राय के पुत्र कूरंम राय का बडी वीरता के साथ मारा जाना ९१९, इस युद्ध में एक राजा तीन राव सोलह रावत और पंद्रह भारी योद्धा काम आये ९२०, रेन पवार (सामंत) की प्रशंसा ९२०, रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र भाव से पेश आना ९२०, तेरह तोमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आये ९२०, हुसेन खां का अमर सिंह की बाहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना ९२१, रावल अमर सिंहजी की प्रशंसा और अमर सिंह का उनको अपनी बहिन ब्याह देना ९२१.

आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है ९२१, घुमान और "प्रसंगराय" खीची का रणथंभ की रक्षा के लिए जाना ९२१, पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना ९२२, पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन ९२२, पृथ्वीराज का आगवन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का झरोखे से झाकना ९२२, गौख मे से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन ९२२, हंसावती के शृंगार की तय्यारी ९२३, हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन ९२३, हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य वर्णन ९२३, नेत्रों की शोभा वर्णन ९२३, हंसावती के स्नान समय की शोभा ९२३, हंसावती के शरीर मे सुगंधादि लेपन होकर सोलहो शृंगार और बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन ९२४, हंसावती के वस्त्र आभूषणो की शोभा वर्णन ९२५, हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन ९२६, पृथ्वीराज का विवाह मण्डप मे प्रवेश ९२६, पृथ्वीराज के रत्नजटित मौर (ब्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन ९२६, हंसावती का सखियो सहित मडप मे आना ९२६, पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य देख कर प्रफुल्लित होना ९२७, पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना ९२७, हंसावती के अंग प्रत्यंग मे काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन ९२७, इसी समय दिल्ली पर मुसल्मान सेना का आक्रमण करना और ५० सामन्तो का उस आक्रमण को रोकना ९२७, पृथ्वीराज के सामन्तो और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन ९२७, दूसरे दिवस प्रातःकाल सुरतान खां का आक्रमण करना ९२८, हिन्दू मुसल्मान दोनो सेनाओ की चढाई के समय की शोभा वर्णन ९२८, तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना ९२८, थोडी देर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड गये ९२८, युद्ध के अन्त मे लूट मे एक लाख का असबाब हाथ लगना और पीरोज खां का मारा जाना ९२९, पृथ्वीराज का सब सामन्तो को हृदय मे लगा कर कहना कि मैं आपका बहुत ही अनुगृहीत हू ९२९, पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुमा जी को समर की जागीर का पट्टा लिखना ९२९, समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना ९२९, समर सिंह का चित्तौर जाना ९३०, पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम मे मस्त हो जाना ९३०, हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन ९३०, मुग्धा हंसावती की कोक कला मे पृथ्वीराज का मुग्ध होकर कामान्ध वृषभ की नांई मस्त होना ९३०, हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम मे निर्म्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना ९३१, शनैः शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना ९३१, हंसावती के बढते हुए प्रेम रूपी चन्द्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना ९३१, दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये ९३१, पावस का अन्त होने पर शरद का आगमन और शीत का बढ़ना ९३२, शीत काल की बढ़ती हुई

रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना ९३२, हंसावती पृथ्वीराज की ओर पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहिर्निसि मस्त रहते थे। इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन ९३३, समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन ९३३।

[समय ३७] अथ पहाड़राय सम्यो लिख्यते

[पृष्ठ ९३४-९८८]

कविचंद की स्त्री का पूछना कि पहाड़राय तोंअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा ९३४, शहाबुद्दीन का ततार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है ९३४, ततार खां का उत्तर देना ९३४, शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने की सलाह करना ९३४. दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना ९३५, समस्त सेना का दस कोस पूर्व्व को बढ़ कर पड़ाव डालना ९३५, शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सरस्य योद्धाओं के नाम ९३६, सभा में ततार खां का नियमित कार्य के लि[illegible] करना ९३६, विनण्ड खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना ९३६, खुरमान खां का राजनीति कथन ९३६, बादशाह का (लोरक राय) खत्री को पत्र देकर धर्म्मायन के पास दिल्ली भेजना ९३७, दूत का दिल्ली जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना ९३६, दूत का दिल्ली पहुँचना ९३७, दूत का धर्म्मायन से मिलना ९३८, धर्म्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मन पर शोक करना ९३८, धर्म्मायन का दरबार में जा कर यह पत्री कैमास को देना ९३८, शहाबुद्दीन की पत्री का लेख ९३८, धर्म्मायन का कैमास के हाथ म पत्र देना ९३८, कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना ९३८, पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना ९३८, पृथीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना ९३९, सामंतों का उत्तर देना ९३९, पृथ्वीराज का पचीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना ९३९, कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन ९३९, पृथ्वीराज का पड़ाव डालना ९३९, अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना ९४० हिन्दू और मुस्लमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ९४०, शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना ९४०, सूर्य्योदय होते-होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना ९४०, दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना ९४०, दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन ९४०, हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उसके अनी भाग और व्यूह बद्ध होने का वर्णन ९४१, दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना ९४१, युद्ध का दृश्य वर्णन ९४२, सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना ९४२, प्रातःकाल होते ही इधर से कैमास और उधर शहाबुद्दीन का अपनी-अपनी सेना को सम्हालना ९४२. सूर्य्योदय होते ही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना

और अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना ९४२, दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करना ९४३, दोनों सेनाओं का एक दूसरे मे पैठ कर शस्त्रों की मार करना ९४३, युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन। योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना शूरवीरों का वीरता के साथ प्राण देना ९४३, युद्ध रूपी समूद्र मंथन को उक्ति वर्णन ९४४, इस युद्ध मे जो जो वीर सरदार मारे गये उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन ९४४, युद्ध होते होते रात्रि हो गई ९४५, उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोमर का हरावल में होकर स्वय सेनापति होना ९४५, पहाड़राय तोमर का बल और पराक्रम वर्णन ९४५, दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्धका अवसान होना ९४६ तृतीया को दोनों सेनाओ मे शान्ति रही और चतुर्थी को पुन: युद्धारंभ हुआ ९४६, चतुर्थी के युद्ध मे वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन ९४६, मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी पर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना ९४७, मुसलमान सेना का घबरा कर भाग उठना ९४७, अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना ९४७, मुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दंड लेकर उसे छोड़ देना ९४८।

[समय ३८] अथ बरुण कथा लिख्यते

[पृष्ठ ९४९-९५६]

"सोमेश्वर" सांसारिक सम्पूर्ण सुखो का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे ९८९, चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना ९४९, सोमेश्वर जी के साथ मे जाने वाले योद्धाओ के नाम और पराक्रम वर्णन ९४९, उक्त समय पर पूर्णमा की शोभा वर्णन ९४९, अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सबका यमुना किनारे पर जाना ९५०, बरुण के वीरों का जागृत होना ९५०, इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अक्षत आदि लिए हुए खडे थे ९५१, वीरों का गहरे जल मे शब्द करना ९५१, जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन ९५१, सामंतों का ग्राव पर चला जाना ९५१, जलवीरो के उछारने के वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन ९५१, जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामंतों का भयभीत न होना ९५२, वीरो को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामंतों का भय दिखाना ९५२, वीरों का राजा सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना ९५२, सामंतों का वीरों से

यथाशक्ति युद्ध करना ९५२, इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख बीरों का बल कम होना और सामंतों का जोर बढ़ना ९५३, प्रात:काल के बाल सूर्य्य की प्रतिभा वर्णन ९५३, सूर्योदय होते ही बीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर सहित सब सामंतों का मूर्छित होना ९५३, सब मूर्छित पड़े हुए थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर जाना ९५३, निज पिता एवं सब सामंतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना ९५४, यमुना के सम्मुख हाथ बांधकर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना ९५४, यमुना जी की स्तुति ९५४, स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना ९५५, सोमेश की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुन. ब्रह्मज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना ९५५, इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यन्त्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना ९५५, पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना ९५६, सोमेश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना ९५६ ।

[समय ३६] अथ सोमबध सम्यो लिख्यते

[पृष्ठ ९५७–९७८]

भीम देव की इच्छा ९५७। भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ९५७, सब सरदारो का कहना कि वैर का बदला आवश्य लेना चाहिए ९५८, भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा ९५८, भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना ९५८, भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य ९५८, भोलाराय भीम का साम दाम दंड और भेद स्वरूप अपने चारों मन्त्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना ९५९, मन्त्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए ९६०, राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतिहासिक उदाहरण ९६०, पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना ९६०, भोलाराय का सेनासज कर तय्यारी करना ९६०, सेना के जुड़ाव का वर्णन ९६०, कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते है परन्तु वे होनहार को नही जानते ९६१, सेना का श्रेणीवद्ध खड़ा होना ९६१, सेना समूह का क्रम वर्णन ९६१, उक्त सेना समूह की सजावट के आतंक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ९६१, इसी अवसर मे मुख्य सामंतों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों को पंक्ति सेना की तरफ आने की आज्ञा देना ९६२, पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का भी चला जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था ९६२, उसी समय पूर्व बैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़ आना, प्रात:काल की उसकी तयारी का वर्णन ९६२, इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर

का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तैयार होना ९६२, सोमेश्वर की सेना की तैयारी वर्णन ९६३, सैनिकों का उत्साह सोमेश्वर की वीरता और कन्हराय का बल वर्णन ९६३, युद्ध आरंभ होना ९६३, कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति उसका व्याख्यान ९६४, कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना ९६४, दोनों हिंदू सेनाओं की परस्पर ओजस्विता का वर्णन ९६४, कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन ९६४, कन्ह राय का कोप ९६५, अपनी सेना को छितर बितर देख कर भीम देव का रोष में आकर स्वयं युद्ध करना ९६५, कन्ह और भीम देव का परस्पर घोर युद्ध होना ९६६, कवि की उक्ति ९६६, युद्ध स्थल की उपमा वर्णन कन्हराय का भीमदेव के हाथी को मार गिराना ९६६, दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध ९६७, जामराय यद्दव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मनवाले हाथियों से उपमा वर्णन ९६७, उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैल से उपमा वर्णन ९६८, इन वीरों का युद्ध देखकर देवताओं का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना ९६८, सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन ९६८, भीमदेव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे बढ़ना ९६८, भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना ९६ , उस समय चहुआन वीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना ९६९, सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना ९६९, भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना ९६९, अपना मरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना ९७०, सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एवं रावत सामंतों संख्या कथन ९७०, सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना ९७१, सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली ९७१, पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्युकर्म करना ९७१, पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और प्रण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बांधूंगा न घी खाऊंगा ९७१, पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना ९७२, पृथ्वीराज का राज्याभिषेक ९७२, पृथ्वीराज का दरबार में बैठना और विप्रों का स्वस्त्ययन पढ़ कर तिलक करना ९७२, पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरबार में नृत्य गान होना ९७३, दर्बार में सब सामंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन ९७३, ईकड़नी से गठबन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचार संबन्धी पूजन विधान करना ९७४, पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामंतों का टीका करना ९७४, पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन ९७४, ।

[समय ४०] अथ पज्जून छौंगा नाम प्रस्ताव लिष्यते

[पृष्ठ १७५-१७७]

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना १७५, पज्जून राय कछवाहे की पट्टन के संग्राम मे वीरता वर्णन १७५, पृथ्वीराज का पज्जून राय के सिर पर छौगा बांध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना १७५, दूत का समाचार देना कि भोलाराय इस समय मोनिगर के किले मे हैं और यहां पर पज्जूनराय का चढ़ाई करना १७५, पज्जून राय की चढ़ाई की शोभा वर्णन १७६, पज्जूनराय का घेरा डालना मलय सिंह का मुकाबला करना १७६, भू पज्जू राय का चाबुक भूल जाना औ [illegible] कर चाबुक ले जाना १७६, चाबुक [illegible] का पीछा करना और पज्जूनराय का उस परास्त करना १७७, छौगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय सिंह और पज्जूनराय की कीर्ति का स्थापित होना १७७ पज्जून राय का पृथ्वीराज को छौगा नजर करना १७७, पृथ्वीराज का पज्जून राय को ही छौगा दे देना और [illegible] घोड़ा और देना १७७, चन्द कवि की उक्ति मे पज्जून राय के वीरनिरामणि होने की प्रशंसा १७७।

[समय ४१] अथ पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते

[पृष्ठ १७८-१८२]

जैचन्द के उभाड़ने से बालुका राय सोलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना १७८, दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना १७८, पृथ्वीराज का विचार करना की पज्जून राय से यह कार्य्य होना सम्भव है १७८, पृथ्वीराज का पज्जूनराय को बुलाना १७८, पृथ्वीराज का सभा मे बीड़ा रखना और किसी का बीड़ा न उठाना, सबका पज्जूनराय की प्रशंसा करना १७८, पज्जूनराय का भरी सभा मे बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओ का ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना १७९, मुलतान और कमधुज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊंट से उपमा वर्णन १७९ पज्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा मे आनन्द ध्वनि होना १७९, पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोड़ा देना १७९, चढ़ाई के लिये तय्यार होकर पज्जूनराय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पांचो भाइयों का साथ होना १७९, पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन १८०, पज्जूनराय के युद्ध की तिथि वर्णन १८०, पज्जूनराय का कुल गोरनाओ का वर्णन १८०, पज्जूनराय की चढ़ाई का आतंक वर्णन १८०, पज्जूनराय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुंचना १८०, कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जूनराय का साम्हना होना १८१, दोनो प्रतिपक्षी सेनाओं का आतंक वर्णन १८१, पज्जून सेना के व्यूहबद्ध होने का स्पष्टीकरण १८१, युद्ध की विधि १८१, पज्जूनराय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना

९८२, इस युद्ध में पज्जूनराय के भाइयों का मारा जाना पज्जूनराय की जीत होना और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना ९८२, पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा ९८२, पज्जूनराय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना ९८२।

[समय ४२] अथ चंद द्वारका समयो लिख्यते

[पृष्ठ ९८३–९९२]

कविचन्द का द्वारिका को जाना ९८३, कविचन्द का यात्रा समय का साज समान और उसके साथियों का वर्णन ९८३, चंद का चित्तौर के पास पहुँचना ९८३, चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन ९८३, चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा ९८४, उक्त मोरी का गोमुख कुंड बनवाना ९८४, एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना ९८४, सिंहनी की पूर्व कथा ९८४, कविचन्द का आना सुन कर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना ९८५, कवि का चित्तौर जाना ९८५, कवि का किले में भोजन करने जाना पृथा का उसे भोजन परोसना ९८५, कन्ह अमरसिंहादि सामंतों का पृथा कुमारी को उपहार देना ९८६, चंद का चित्तौर से चलना ९८६, द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना ९८६, कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति ९८६, देवी की स्तुति ९८७, कवि का होम करके ब्राह्मण भोजनादि कराना ९८७, द्वारिकापुरी में छाप लगवाने का महात्म्य ९८७, द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना ९८८, पट्टनपुर के नगर एवं धान्य की शोभा वर्णन ९८८, पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहां की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन ९८९, राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना ९८९, भीमदेव का कविचंद के पास अपने भाट जगदेव को भेजना ९८९, जगदेव का कविचन्द से मिलना ९९०, जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना ९९०, कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना ९९०, जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ ९९१, भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना ९९१, कविचन्द का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना ९९१, कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना ९९१, कविचन्द और अमरसिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना ९९२, भीमदेव का अपने महल को लौट जाना ९९२, कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना ९९२।

पृथ्वीराज रासो

भाग १

पृथ्वीराजरासो

आदि पर्व लिख्यते

(पहिला समय)

आदिदेव गुरु, वाणी, लक्ष्मीश, सुरनाथ और सर्वेश का मंगलाचरण ॥

टक ॐ आदी देव प्रनम्य नम्य गुरयं, वानीय वंदे पयं ।
सिष्टं धारन धारयं वसुमती, लच्छीस चर्नाश्रयं ॥
तं गुं तिष्टति ईस दुष्ट दहनं, सुर्नाथ सिद्धिश्रयं ।
थिर्चंजगम जीव चंद नमयं, सर्वेस वर्दामयं ॥छंद॥१॥रूपक॥१॥

---

१ यह मंगलाचरण जिस छंद में चंद कवि ने कहा है उसका नाम उसने साटक
ाग किया है और इस नाम से यह छंद आज कल जो छंद ग्रंथ प्राय उपलब्ध हैं,
ाम नहीं मिलता । यद्यपि उसकी परीक्षा करने से वह निःसंदेह शार्दूलविक्रीडित्
मक छंद मालूम होता है परंतु जबतक उसका लक्षण अथवा नामान्तर होने का
ई प्रमाण नहीं दिखलाया जाय तब तक पुरातत्त्ववेत्ता विद्वान् संतुष्ट नहीं हो
ते । अतएव बहुत खोज करने से गुजराती भाषा के काव्यों में इस नाम का छंद
ला और The Revd Joseph Van S Taylor साहब अपने गुजराती भाषा
करण के पद्यखण्ड अथवा छंदविन्यास नामक प्रकरण के पृष्ठ २२३ में उसका
टक नाम से कुल ३८ अक्षरों की दो तुक का छंद होना लिखते हैं कि जिसकी
येक तुक में १२ + ७ = १९ अक्षर होते हैं । इसके सिवाय प्राकृतभाषा के किसी
ग्रंथ से अनुवादित होकर सं० १७७६ में जो एक रूपदीप पिंगल नामक छंद ग्रंथ
ा है उसमें केवल ५२ छंदों के लक्षण कहे हैं । उसमें भी साटक का यह लक्षण
ला है

साटक छंद लक्षण

कर्मै द्वादश अंक आद संज्ञा, माथा मिथो सागरे ।
दुज्जी श्री करिके कलाष्ट दस श्री, अर्को विरामाधिक ॥ १ ॥
अंते गुर्व निहार धार सबके, औरो कछू भेद ना ।
तीसो सत्त उनीस अंक धरले, सेसो भणी साटिकं ॥

हम इस साटक छंद को पिंगल छंद सूत्रम् नामक ग्रंथ में कहे शार्दूलविक्रीडित छंद का समानान्तर होना मानते है और उसका लक्षण बहुत प्राचीन अमर और भरत-कृत छंद ग्रंथों में अवश्य होना अनुमान करते हैं क्योंकि चंद कवि ने भी अपने इसी ग्रंथ के आदि पर्व के रूपक ३७ मे जो कुछ कहा है उससे स्पष्ट मालूम होता है कि उसने अपने इस महाकाव्य की रचना मे पिंगल अमर और भरत के छंद ग्रंथों का आश्रय लिया है ।।

इस छंद के लक्षण का पता लगाकर अब हम इस रूपक के पाठ को शोधते हैं। उस की पहिली पंक्ति का पाठ A S B की छपी हुई पुस्तक की Fasciculus I जिसको Mr. John Beames साहब ने शोध कर छपाया है उसमें "आदि प्रनम्य नम्य गुरयं वानीय वंदे पयं" ऐसा पाठ है और जो Mr F S Growse, C S M.A ने रासो के प्रारंभ के छंदो का अनुवाद करने में पाठ लिखा है वह भी ऐसा ही है। निदान साटक के लक्षण के अनुसार इस तुक मे १२ + ७ - १९ अक्षर होने चाहिए परंतु उसमें १० + ७ = १७ अक्षर हैं। अब यह अत्यावश्यक है कि घटते हुए दो अक्षरों का पता लगाया जाय। यह कल्पना करनी कि चंद कवि अथवा उसके नाम से कोई यह जाली ग्रंथ बनानेवाला छंद ग्रंथो मे भले प्रकार व्युत्पन्न न होने के कारण मूल में ही भूल गया है, सर्वरीत्या अयोग्य और आश्चर्य दायक बात है। क्योंकि वर्तमान पृथ्वीराजरासो का बिगडा हुआ काव्य भी अपने कर्ता का एक बडा व्युत्पन्न कवि होना स्वयम् स्पष्ट प्रकाश करता है अतएव उसका ऐसी भूलो का करना निर्मल प्रज्ञावाले विद्वानो के ध्यान मे सर्वथा असंभव है।

इस प्रथम तुक मे जो दो अक्षर घटते हैं वे पंक्ति भर मे किस स्थान मे लेखक अथवा शोधक की भूल मे लोप हो गए है इस बात की शोध लेने के लिये यह एक बड़ी सरल युक्ति है कि हम इस तुक के अर्थ का ध्यान मे लेकर उसके वाक्यखंडो को पृथक-पृथक कर दे कि जिस मे अपूर्ण वाक्यखण्ड अपने आप हमको घटते हुए बतला देवें; जैसे कि वानीय वंदे पयं और नम्य गुरयं और आदि प्रनम्य ऐसा करने से हमको मालूम हो गया कि आदि प्रनम्य वाक्य खंड अपूर्ण है और उसमें कोई संज्ञावाचक शब्द घटता है। अब विचारना चाहिए कि वह संज्ञावाचक शब्द आदि शब्द के पहिले घटता है अथवा पीछे। जो हम आदि शब्द के पहले उसीका होना मानें तो "आदि: पदान्ते गण सूचक." मे दोष प्राप्त होकर हमारी कल्पना अन्यथा हो जाती है अतएव मानना चाहिए कि आदि शब्द के पीछे कोई संज्ञावाचक शब्द है; क्योंकि ऐसा मानने में आदि शब्द उस शब्द के साथ मिलकर हमको कर्म्मधारय समास का होना स्पष्ट विदित करता है। जब कि यह निश्चय हो गया कि आदि शब्द के पीछे अर्थात् आदि और प्रनम्य के बीच में कोई संज्ञावाचक शब्द रह गया है तब हमको फिर सूक्ष्म विचार में निमग्न होना चाहिए कि वह संज्ञावाचक शब्द कौन सा है कि जिसको चंद कवि ने प्रयोग किया था। हम

संदेह कल्पना करते है कि यहां देव शब्द था अर्थात् आदी देव ऐसा पाठ चंद
प्रयोग किया था, क्योंकि प्रथम तो "आदिः कारण स च देवश्चेति
ःमधारयः" तथा जगदुपादानादि गुणवान नारायण.", दूसरे, आदि देव
द हमारी संस्कृत भाषा के प्रामाणिक ग्रंथो के मंगलाचरणों तथा ईश्वर की
ति तथा ईश्वर के ध्यान के वाक्यो मे बहुधा प्रयोग किया गया है कि हम उदा-
ण के लिये केवल दोही प्रमाण यहां दिखाते हैं, जैसे —"परं ब्रह्म परं धाम ।
त्रं परं भवान् ॥ पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमज विभु" तथा "त्वमा-
देव: पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधान"॥ तीसरे, चंद कवि ने
र इस महाकाव्य मे इस आदि देव शब्द का प्रयोग अनेक स्थानो मे किया है
। कि "प्रनम्य प्रथम मम आदि देव ऊंकार शब्द जिन करि अछेव", चौथे
तुक मे प्रथम मगण होने के कारण तीनो अक्षर दीर्घ होने चाहिए अतएव कवि
आदी देव ऐसा पाठ कहा है। आदि शब्द संस्कृत मे इकारान्त है परन्तु उस
। ने यहां मगण होने के कारण के अतिरिक्त गानविद्या संबंधी दोष दूर करने के
प्राय से भी ईकारान्त किया है, क्योंकि चंद गानविद्या मे भी निपुण था और
र के गाने मे तुक की पहली तीनो मात्रा पर ताल आता है। यद्यपि हमारी
[illegible] रहे है परन्तु जब हमने इस ग्रंथ का कुछ भाग कोटा राज्य के विद्वान
[illegible] श्री चंडीदानजी से पढ़ा था तब उन्होने यह बतलाया था कि आदि के
ओ३म् शब्द का प्रयोग कवि चंद ने किया था और उसका अर्थ आदि ओ३म्
म्य अर्थात् पहिले ओंकार को नमन करके किया था। यद्यपि यह प्रयोग भी
[illegible] जाता है और ठीक सा मालूम होता है और जितनी पुस्तके हमारी हमारे
न मे आई है उनमे प्रायः ऐसा ही पाठ मिलता है परन्तु हम उसकी अपेक्षा
नी कल्पना को अधिक बलवान और युक्त मानते है और आशा करते है कि यदि
[illegible] विद्यमान होते तो हमारी इस कल्पना को प्रसन्नतापूर्वक मान लेते। यदि
ओ३म् आदि प्रनम्य ऐसा भी पाठ माने तथापि कुछ हानि नहीं है। और जब
कि किसी बहुत प्राचीन पुस्तक मे हमारे इस मानने के विरुद्ध कोई अन्य पाठ
मत आवे तब तक हम इस को मानना अयोग्य नहीं समझते है॥

अब दूसरी पंक्ति का पाठ "मिष्ट धारन धारय वसुमती लच्छीस
नाश्रय' है। इसमें १२+८ २० अक्षर है कि यहां चरनाश्रय शब्द को
चर्नाश्रय किया है क्योंकि कोई छंद गान से खाली नहीं है और नाटक की
रीत के अनुसार उच्चारण मे यहां रकार स्वररहित हो जाता है और जैसा
चारण और गान में रूप हो वैसा काव्य मे लिखने मे भी कोई दोष नहीं है। जो
गान के नियमों से अपरिचित है उनके काव्य मे ऐसे स्थलो मे अनेक दोष रह
है क्योंकि गान छंद के लिये एक कसौटी है और ऐसे ही मौकों को कवि का
धिकार अर्थात् Poetical License कहते हैं। कोई कोई विद्वान कवि के अधिकार

की छूट अर्थात् Poetical License को दोष मानते हैं परंतु वह एक भ्रम है, क्योंकि सस्वर अक्षर का खोडा कर देना और खोडे को सस्वर कर देना व्याकरणादि भिन्न शास्त्रों मे दोष समझना चाहिए परंतु छद रचना और गान मे तो यह दोष नहीं कहाता है। देखो, चंद के इन वचनो के भीतरी आशयो मे भी हम यही अनुमान कर सकते है --

लहु गुर मंडित खंडियहि। पिंगल अमर भरत्थ ॥ ३७ ॥ १
चरन नीम अच्छिर सुरंग। पाटलहु गुरु विधि मंडिय ॥
सुर विकास जारी सु सुष। उक्ति रम गौरव नि छंडिय ॥ ४० ॥ १

तीसरी पंक्ति के पाठ तम गुन तिष्टति ईस दुष्ट दहनं। सुरनाथ सिद्धिश्रयं में १४+८=२२ अक्षर हैं। इनमें ऊपर कही हुई युक्तियो के सिवाय थोड़ा सा और ध्यान देने से ज्ञात हो सकता है कि ग्रंथकर्त्ता ने तम गुन और सुरनाथ पाठ नहीं प्रयोग किए थे किंतु जैसे हम ने अनुमान कर शुद्ध किये है तं गुं और सुर्नाथ; क्योंकि प्रथम तो इस साटक छंद में मगण होने के कारण तं और गुं ही होने चाहिए और दूसरे चंद के ऐसे प्रयोग इस काव्य में बहुत से स्थलो पर देख पड़ेंगे। यह भी हमारे देखने मे आवेगा कि त्वम् और अहम् के स्थान में तं और हं जैसे प्रयोग चंद ने किए हैं। इसमें हम को कुछ भी आश्चर्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि चंद के इस नीचे लिखे वाक्य से हम अच्छी तरह समझ सकते है कि उसने अपने इस महाकाव्य की भाषा में षट भाषा और पुरान की भाषा का आश्रय लिया है -

श्लोक॥ उक्ति धर्म विशालस्य। राजनीति नव रसं।
षट भाषा पुराणं च। कुरानं कथितं मया॥ १ ॥

अब शेष चौथी पंक्ति का पाठ "थिर चर जंगम जीव चंद नमयं सर्वेस बरदा मयं" मे १४+८=२२ अक्षर हैं। इसके स्थान में जो यह पाठ "थिर्चर्जंगम जीव चंद नमयं सर्वेस वर्दामयं" शुद्ध किया गया है उसके लिए ऊपर कही हुई युक्तियों से ही हमारा शोधन करना ठीक मालूम हो सकता है। इसमें इतना और भी आवश्यक है कि सोसाइटी की मुद्रित की हुई पुस्तक में जो चंदनमयं पदच्छेद किया है वह अयुक्त है और मस्टर एफ० ग्राऊज साहब ने जो चंद और नमयं पदच्छेद किए हैं वे ठीक हैं और हम भी मिस्टर ग्राऊज के पदच्छेद से सम्मत हैं॥

जो पाठ हमने जिस रीति से इस रूपक में शुद्ध किए हैं वे अथवा वैसे ही पाठ जो कहीं आगे इस ग्रंथ भर में आवेंगे तो हम उन पर सर्वत्र टिप्पण नहीं करेंगे किंतु वहां का मूल पाठ हमारे यहा पर वर्णन किए शोधन के प्रकार के अनुसार शुद्ध रहेगा। पाठक महाशय इन ही नियमों से उन पाठों को सिद्ध कर समझ लें अर्थात् जिस नियम को एक स्थान पर टिप्पण में वर्णन कर देंगे वह अन्यत्र नहीं कहा जावेगा। किंतु जहां कोई नवीन प्रयोग आवेगा वहां उसका वर्णन कर दिखावेगे॥

जैसे चंद के प्रयोग किए हुए छंदों के नाम और उनके लक्षणों के शोध करने में पुरातत्ववेत्ताओं को परिश्रम पड़ता है वैसे ही उसके इस महाकाव्य के अर्थ लगाने में भी अनेक प्रकार की अड़चनें उपस्थित होती है । यद्यपि हमारा मुख्य काम इस ग्रंथ के मुद्रित करने में केवल इतना ही है कि उसके मूलपाठ को सार्थक शोध दें परंतु यह महाकाव्य वर्तमान समय में ऐसी बिगड़ी हुई दशा मे उपस्थित है कि उस पर इतना परिश्रम न किया जाय कि जितना हम यह करते है तो हमारा किया हुआ शोधन पुरातत्ववेत्ता विद्वानों को भली भांति संतुष्ट नही कर सकता । अतएव हम चंद के काव्य की अर्थ संबन्धी कठिनता को दिखलाने के लिये केवल इस मंगला-चरण के रूपक का अर्थ उदाहरण के लिये करते है कि जिससे हमारे पाठकों को मालूम हो कि मूल पाठ का शुद्ध होना अर्थ पर दृष्टि दिए बिना असंभव है । महाकवि चंद अपने इस महाकाव्य के आरंभ में इस मंगलाचरण के रूपक में आदि-देव, गुरू, वाणी, लक्ष्मीश, सुरनाथ और सर्वेश को नमस्कार करता है । वह कहता है कि "आदिदेव को नमन कर के और गुरु को नमस्कार करके, वाणी के पदों को वंदन, स्वर्ग, पाताल (और) पृथ्वी के स्रष्टा लक्ष्मीश के चरणों का आश्रय, दुष्टो के दहन करने को नम गुण (जिस) ईश मे रहता है [उस] सुरनाथ की पादुका का सेवन [और] थिर, चर, जंगम, [और] जीव के वरदामय सर्वेश को [मैं] चंद नमन करता हूँ"

हमारे किए इस अर्थ के विचार से विद्वानो को मालूम हो सकेगा कि यद्यपि इस के अनेक प्रकार के अर्थ हो सकते है परंतु यह अर्थ चंद के व्याकरण शास्त्र संबंधी जो नियम उसके इस ग्रंथ से मालूम होते हैं उनके अनुसार सरल और कवि की युक्ति के अनुकूल है । इसमें कितनेक शब्द ऐसे भी है कि जो अर्थ करनेवाले को चमका और भड़का देते हैं, परंतु हम इस रूपक के सब शब्दों के विषय में अर्थात् जिसके विषय में जितना कहना आवश्यक है कहते हैं —

आदिदेव — [सं. पु. आदिदेवः । आदौ दीव्यति स्वयं राजते] नारायण । इस शब्द के विषय मे हमने ऊपर कहा है अतएव यहां विशेष नही कहते, किन्तु उसके प्रयोग के दो प्रमाण और भी यहां देते हैं—सहस्रात्मा मयायोव आदिदेव उदाहृतः ॥ या. स्मृ. ॥ वासुदेवो बृहद्भानुरादि देवः पुरंदर. ॥ वि. सहस्रनाम ॥

प्रनम्य — (सं. प्रणम्य) नमन करके अथवा प्रणाम कर के ॥

नम्य —(सं. अ. नमः अथवा नम् = नमना) नमस्कार करके । इस शब्द के भी म्य पर साटक की ध्वनि के अनुसार ताल है अर्थात् यहां भी स्वर उदात्त है ॥

गुरुयं —गुरू को । यह चंद की हिन्दी के पुलिंग गुरू शब्द की द्वितीया का निज प्रयोग है । चंद के ऐसे निज प्रयोगों को देख कर हमको आश्चर्य के वस न हो जाना चाहिए किन्तु इस बात की खोज करनी चाहिए कि चंद की हिन्दी के व्याकरण संबंधी नियम क्या और कैसे हैं । और ऐसे अनुस्वार सहित शब्दों को

देख कर यह अनुमान भी नहीं करना चाहिए कि रासो का ग्रंथकर्त्ता ऐसा निर्बोध था कि उसको अनुस्वार और विसर्ग तक का ज्ञान नही था। ये हमारे अन्वेषण ध्यान मे लाने योग्य है कि प्रथमत चद की हिन्दी तीन प्रकार की है—षट भाषा और पुरान की भाषा की योनिवाली १ षट-भाषा और पुरान की भाषा के सम २ और देशी प्रसिद्ध३। दूसरे, साम्प्रत हिंदी मे तो नपुसकलिग नही है परतु चद की हिंदी मे तीनो लिंग है। तीसरे, जितनी सज्ञा अनुस्वार सहित उसमे प्रयोग हुई है वे पुल्लिग अथवा नपुसकलिग ही है। देखो, यहा नम्य गुरुय वाक्य खड मे कवि के अर्थ को ध्यान मे लाने मे गुरुय शब्द पुल्लिग मे प्रयोग किया गया मालूम होता है और पाचवे रूपक की इस तुक गुर सव्व कव्वी लहू चद कव्वी जिन दर्सिय गेवि साअग हव्वी मे गुर शब्द चद ने अपनी हिन्दी के नपुसकलिग की प्रथमा मे प्रयोग किया है। और जहा क्रिया शब्दो मे अनुस्वार है, जैसे इसी प्रमाण मे प्रवेश की गई तुक मे दसिय शब्द है वह सस्कृत दर्शित मे है। बहुत से शब्दो पर लेखको ने अपने अव्युत्पन्न होने के कारण जो अनुस्वार लगा दिये है उनका सूक्ष्म विचार करने से विद्वान स्पष्ट जान सकते है कि यहा कवि ने अनुस्वार का प्रयोग नही किया था किन्तु लेखको ने अपनी अज्ञानता से लगा दिए है और कही-कही उन्होने कवि के प्रयोग किए हुए अनुस्वारो को उड़ा दिया है जैसे पाचवे रूपक के भुजगप्रयात छद की पहिली तुक मे चद ने ऐसा प्रयोग किया था कि प्रथम भुजगी सुधारी ग्रहन जिनै नाम एक अनेक कहन ॥ उसके स्थान मे एसियाटिक सोसाइटी की छापी हुई पुस्तक १ के पत्र ३ मे देखो कि जिस लिखित पुस्तक मे वह छापी गई है उसके लेखक ने प्रथम भुजगी सुधारी ग्रहन जिनै नाम एक अनेक कहन पाठ कर दिया है। इसके अतिरिक्त चद के अनुस्वार सहित शब्दो के प्रयोग करने के और भी अनेक कारण है परतु वह जब अपने सकलित किये हुए चद के व्याकरण सबधी नियम हम कुछ समय मे प्रकाश करेंगे तब स्पष्ट रीति से हमारे पाठको को हमारे बडे परिश्रम से सिद्ध किये हुए अन्वेषण मालूम हो जायगे ॥

वानीय—(स स्त्री वाणि = सरस्वत्याम्) सरस्वती के। यह चद की हिंदी मे षष्ठी के एक वचन का रूप है और जैसे सस्कृत मे श्री शब्द के रूप मे षष्टी का श्रिय होता है उसी तरह चद ने अपनी हिन्दी मे वानीय किया है।

बंदे—वदन करता हूं ॥ चेत रखना चाहिए कि हम ऊपर गुरुय शब्द की व्याख्या मे चद की हिन्दी तीन प्रकार की होना बतला आए है उसमे से यहा यह वदे सस्कृत-सम के रूप का प्रयोग चद ने किया है ॥

पयं (सं० पय = गतौ) चरणो को ।। यह चंद की हिन्दी के पुल्लिग की द्वितीया का रूप है । कोई-कोई कवि जो पय शब्द को पैर का वाचक होना बिलकुल नही बताते और उसका अर्थ यहा "दूध जैसी श्वेत अथवा जल जैसी निर्मल सरस्वती को वदन करता हू" करते है, वे भूलते हैं । पय शब्द पैर का वाचक सामत हिन्दी मे भी रात्रिदिन बोलचाल मे आता है जैसे पयलगी, पैलगी, पालागन, पाय और पयदल, इत्यादि । और सस्कृत मे भी पय = गतौ है । ग्राऊज साहब ने जो इस शब्द को पैर का वाचक अपने अंग्रेजी अनुवाद मे माना है वह बहुत ठीक है और हम उनसे इस विषय मे सम्मत है ।।

सिष्ट (स० त्रि० सृष्ट निर्मिते । रचिते) सृजनेवाला । चद की हिन्दी मे स० सृष्ट सृजनेवाले का नपुसकलिंग की प्रथमा का एकवचन है । इसको शिष्ट अथवा श्रष्ठ आदि शब्दो का अपभ्रश मानना अयुक्त है किन्तु वह चद की हिन्दी मे स० त्रि० सृष्ट का सिष्ट बना है । इसी तरह स० भृष्ट, भ्रष्ट, धृष्ट दृष्ट, के अपभ्रश रूप हिन्दी मे भिष्ट घिष्ट, दिष्ट होते है ।।

धारण [स० पु० धारण स्वर्लोके] स्वर्गलोक ।। **धारय** [स० त्रि० धारय = धारके । नाग देशे ।। धार्य्यै कुसुमोम्मणाम् । भट्टि] पाताल लोक ।। **वसुमती** [स० स्त्री भूलोक । स्पष्टम्] भूलोक यहा थोडा सूक्ष्म विचार कर हमारे किए अर्थ की सत्यता जाचने का काम है क्योकि सिष्ट धारण धारयं वसुमती लच्छीस चर्नाश्रय का अर्थ अनेक कवि अनेक प्रकार का करते हैं परन्तु हम उनको चद के अभिप्राय के अनुकूल नही समझते । इन शब्दो के पृथक् पृथक् अर्थ तो हमने सस्कृत कोशो मे लेकर वर्णन कर ही दिए है । इसके सिवाय लच्छीस शब्द जो विष्णु का वाचक है वह हमको यह अर्थ करने की स्पष्ट लक्षणा कराता है कि धारण स्वर्गलोक । धारय पाताल-लोक ।। और वसुमती भूलोक का सिष्ट सृजनेवाला [जो] लच्छीस = विष्णु [उसके] चर्नाश्रय = चरणो का सेवन [करता हू] यही बहुत ठीक अर्थ है क्योकि यहा तत्पुरुष समास है और लक्ष्मीश का अर्थ विष्णु शास्त्रो मे नीचे लिखे प्रमाण से स्पष्ट है । उससे भी हमारा किया हुआ अर्थ अच्छी तरह पुष्ट होता है

> यस्मात् विश्वमिद सर्वं तस्य शक्त्या महात्मन ।
> तस्मात् देवोच्यते विष्णु विशधातो प्रवेशनात् ।।
> ज्योतीषि विष्णुर्भुवनानि विष्णुर्वनानि विष्णुर्गिरयो दिशश्च ।
> नद्य समुद्राश्च स एव सर्वो यदस्ति यन्नास्ति च विप्रवर्येति ।।
> अनादि निधन विष्णु । सर्वलोक महेश्वर ।
> लोकाध्यक्ष स्तुव नित्य । सर्व दु खाति गो भवेत् ।। ९ ।।
> लोकनाथं महद्भूतं । सर्वभूतभवोद्भवं ।। १० ।।

लोकाध्यक्षः सुरध्यक्षां । धर्माध्यक्षः कृतः कृतः ॥ ३१ ॥
लक्ष्मीवान् समिर्तिं जयः ॥ ५६ ॥ श्रीमाल्लोक चयाश्रयः ॥ ८२ ॥
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः । केशवः केशिहा हरिः ॥ ८६ ॥
लोकस्वामी त्रिलोक धृत् ॥ ८० ॥ लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥ ११२ ॥
त्रीन् लोकान् व्याप्य भूतात्मा । भुंक्ते विश्व भुगव्ययः ॥ १४४ ॥
वामनाद्वासुदेवस्यः । वासितं भुंवन चयं ॥ १५३ ॥

चर्नाश्रयं—(सं० चरण + आश्रयं =) चरणों का सेवन ॥ यह अनुस्वार सहित शब्द भी चंद की हिन्दी का संस्कृत–सम नपुंमकलिंग है।

तं । गुं [सं० न० तम. और पु० गुणः] तम । गुण । चंद की हिन्दी के नपुंसकलिंग ॥ प्राकृत—भाषा सम का प्रयोग ॥

तिष्ठति—(सं० तिष्ठति) रहता है। चंद की हिन्दी के संस्कृत–समभेद का रूप है ॥

ईस—(सं० पु० ईश = महादेव) सदाशिव ॥

दुष्ट—(सं० न० दुष्ट = अधमो वंचके) दुष्ट दहनं = दुष्टों का दहन करने के लिये अथवा दुष्टों के दहनार्थ ॥

दहनं—(स० पु० दहनः = दाहे। भस्मी करणे।) दहन के लिये चंद की हिन्दी का नपुं० है ॥

सुर्नाथ—(सं० पु० सुर + नाथ = रुद्र) महादेव को ॥

सिद्धि—(सं० स्त्री० = सिद्धिः = पादुकायाम्) पादुका का ॥

श्रयं—(सं० पु० श्रयः = श्रयणे। श्राये ॥ श्रिञ् = सेवायाम्) सेवन ॥ सिद्धि श्रयं = पादुका का सेवन ॥

थिर—(सं० पु० स्थिरः = स्थिर पदार्थाः) स्थिर वस्तु; जैसे—पर्वत और पृथ्वी आदि ॥

चर—(सं० पु० चरः = चले) चर वस्तु अथवा पदार्थ, जैसे. वस्तु और जलादि।

जंगम—(सं० त्रि० जंगमः = पशुपक्षी) कीट पतंगादि ॥

जीव—(सं० पु० जीवः = प्राणिनि) मनुष्यादि ॥ ध्यान में लेने की बात है कि पंडितों ने सब पदार्थों को स्थावर और जंगम नामक दो भेदों में ही विशेष करके विभक्त किया है। परन्तु चंद ने सब पदार्थों के चार भेद माने हैं। प्रथम स्थिर, जो सदैव स्थिर रहते हैं; जैसे पर्वतादि; दूसरे चर, जो सदैव स्थिर नहीं रहते; जैसे स्थानादि; तीसरे जंगम जो जीव दूध नहीं पीते; जैसे कीट पतंगादि; और चौथे जीव, जो दूध पीते हैं; जैसे मनुष्यादि। हम ने किसी किसी कवि को इन चारों शब्दों के प्रयोग करने के कारण चंद कवि का दोष देते हुए सुना है परन्तु यह उनकी भूल है, क्योंकि उन्होंने कवि के सूक्ष्म आशय को ध्यान देकर नहीं समझा है ॥

धर्म-स्तुति

बथूआ—प्रथम सुमंगल मूल श्रतबिय। स्मृति सत्य जल सिंचिय।
सुतरु एक घर ध्रम्म उभ्यौ ॥
चिषट साष रम्मिय त्रिपुर। बरन पत्त मुख पत्त सुभ्यौ ॥
कुसुम रंग भारह सुफल। उकति अलंब अमीर ॥
रस दरसन पारस रमिय। आम असन कवि कीर ॥
॥छं० २॥ रू० २॥

चंद बरदई—इस महाकाव्य का ग्रंथकर्त्ता कि जो हिन्दुओ के अंतिम बादशाह पृथ्वीराज जी चौहान का लंगोटिया मित्र और उनके दरबार का कविराज था। वह भट्ट जाति जो आज कल राव करके कहलाती है, उसके जगात नामक गोत्र का था और उसके पूर्वा पजाब देश के लाहौर नगर के रहनेवाले थे और उनकी यजमानी अजमेर के चौहानो की थी। उसकी जैसी शूरवीरता इस काव्य मे विदित होती है उसका मुख्य कारण यही है कि वह पजाब देश की अद्यावधि प्रसिद्ध वीरभूमि के तत्वो मे उत्पन्न हुआ था और राजपूताने के हृदयरूपी अजमेर नगर मे बड़ा हुआ था। वह षट-भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य छद शास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, मत्रशास्त्र, पुराण, नाटक, और गान आदि विद्याओ में अच्छा व्युत्पन्न पडित था। उसके पिता का नाम वेण और विद्यागुरु का नाम गुरुप्रसाद था। उसकी दो स्त्रियो के नाम कमला अर्थात् मेवा और गौरी अर्थात् राजोरा और एक लडकी का नाम राजबाई और दस लडकों के नाम सूर १ सुन्दर २ सुजान ३ जल्ह ४ बल्ह ५ बलिभद्र ६ केहरि ७ वीरचंद ८ अवधूत अर्थात् योगराज ९ और गुनराज १० थे। इस महाकाव्य के विषयों को वैसे तो उसने समय-समय पर बनाकर कठ कर रक्खा था परन्तु उनको ग्रंथाकार में उस ने ६० ॥ दिन मे रचा था और अत को उसने रासो की पुस्तक अपने लडके जल्ह को दी थी। इस रासो के अतिरिक्त उस के रचे और भी कई एक ग्रंथ सुनने में आते है परन्तु उन में सब से बड़ा ग्रंथ यही है और अन्य सब ग्रंथ अब बिलकुल नही मिलते है। उसका सविस्तर जीवनचरित और वंशावली जहां तक हमारे जानने मे ख्यातादि से आई है वह हम इस ग्रंथ के समाप्त होने पर छाप कर प्रसिद्ध करेंगे ॥

नमयं—नमस्कार अथवा नमन करता है अथवा करता हूँ ॥

सर्वेस—(सं० सर्वेशः = ब्रह्मा) ब्रह्मा ॥

वर्दामयं—वरद—स्वरूप ॥

२ इस रूपक के छंद का बथुआ नाम चंद कवि ने तो अपने समय का प्रसिद्ध ही लिखा है परन्तु वह सांप्रत काल में पुरातत्ववेत्ता और कविराजाओं को भी पूरा

परिश्रम देनेवाला एक छद है। हमने इस छद के लक्षण के लिये अपने अंग्रेजी भरत-खड के कवियो के अतिरिक्त राजपूताने के कवियो से भी पूछा और सब ने आज कल के उपलब्ध छदग्रथो मे भी उसे ढूंढा परन्तु जो कवि पक्षपातरहित और सज्जन है उन्हो ने तो स्पष्ट कह दिया कि इस नाम का कोई छद हमारे जानने मे नही आया है किन्तु चदकृत इमी महाकाव्य मेइस छद का नाम देखने मे आता है, परन्तु जो कवि ऐसे है कि अपनी हठ-उक्ति के आगे और कुछ ध्यान मे नही लाते उनमें से किमी ने आर्य्या का एक भेद और किसी ने कहा कि इनमे लेखक और शोधक कवि के दोष से काव्य छद मे अथवा उगाहा मे दोहा मिल गया है परन्तु किमी का भी कहना पुरातत्त्ववेत्ताओं का सन्तोष देनेवाला नही हो सकता है। इस छद के विषय मे हमारा कहना यह है कि जो आज अमर और भरतकृत छद ग्रथ उपलब्ध होते कि जिनका आश्रय चद ने लिया है ता उसके शोध मे कुछ कठिनता नही पडती। हम इस छद को रूपदीप पिगल म वर्णन किये हुए रिड्डक का नामान्तर होना नि सदेह मान कर उसका शोधन करते है। देखो रूपदीप पिगल मे रिड्डक छद मे ही रिड्डक का यह लक्षण कहा है

रिड्डक नाम छद लक्षण।

कीजे कला प्रथम तिथ मान, दश एको दूसरे,
तीजे गिन दश पाचरिये ॥
फिर चोथे दस एकं। परख्यन मे पाच मे करिये ॥
रोडा सठ मत मन है। कीनो मेम बखान।
तामे फिर दोहा मिले। रिड्डु छद पहिचान ॥

इससे मालूम होगा कि यह बथुआ छद कैसा एक विचित्र छद है कि जिसकी पहिली तुक मे दो यति होने के कारण १५ + ११ + १५ = ४१ मात्राए होती हैं और दूसरी मे एक यति होने से ११ + १५ = २६ मात्राएँ और सब मिलकर ६०। इन दो तुको के पीछे एक दोहा होता है। जो इसमे दोहा न लगावें तो जहां तक ६० मात्राएँ होती हैं वहा तक का रोडा नामक छद होता है।

इस छद की प्रथम तुक की गति के प्रथम टुकडे मे बीय पाठ अशुद्ध है, उसके स्थान में हमने बिय किया है। और दूसरी यति के दूसरे टुकडे मे मिंचियइं के स्थान मे मिंचिय और ध्रम्म के स्थान ध्रम्म और यत के स्थान मे पत्त, भारहै को भारह, और परस को पारस शुद्ध किया है और ये शोधन ऐसे साधारण हैं कि जिनके लिये कोई तर्क लिखने की आवश्यकता नही है ॥

कर्म-स्तुति

कविता— प्रथम मंगल प्रमान। निगम संपजय वेद धुर ॥
त्रिगुन साख चिहूं चक्क। वरन लग्गो सु पत्त छूर ॥
त्वचा ध्रम्म उड्वरिय। सत्त फूल्यौ चावद्दिसि ॥
क्रम्म सुफल उदयत्त। अम्रत सुम्रत मध्य वसि ॥
डुलै न वाय नृप नीति धति। स्वाद अमृत जीवन करिय ॥
कलि जाय न लगै कलंक इहि। मत्ति मत्ति आढति धरिण ॥
॥छं० ३॥ रू० ३॥

---

३ इस रूपक में ग्रंथकर्ता वृक्ष के रूपकालंकार में धर्म की स्तुति करता है ॥

कवि ने इस रूपक के छंद को कवित्त संज्ञा दी है। सांप्रत काल में यह छप्पय, छप्पै षटपद, षटपदी आदिक नामों से प्रसिद्ध है, परन्तु सत्रहवीं शताब्दी के पहिले यह कवित्त नाम से ही प्रसिद्ध था। रूपदीप पिंगलवाले ने भी जो नीचे लिखा छप्पय का लक्षण कहा है उसमें उसने भी यह कहा है कि—"सुन गरुड पंख पिंगल कहै छप्पै छंद कवित्त यह" इससे सिद्ध होता है कि इस ग्रंथ के बनने के समय तक छप्पै का नामान्तर कवित्त करके प्रसिद्ध था।

छप्पै

लघु दीरघ नहिं नेम। मत्त चौबीस करीजे॥
ग्यारै ही तुक सार। धार तुक चार भरीजे॥
नाम रसावल होय। और वस्तु कवि जानहु॥
उल्लाला को विरत। करि तिथि तेरह आनहु॥
द्वै तुक्क बनाओ अंत की। यत यत में अठ बीस गहु॥
सुन गरुड पंख पिंगल कहै। छप्पै छंद कवित्त यह॥

इसके अतिरिक्त मंछ कवि-कृत रघुनाथ-रूपक में भी उसने छप्पै छंदों को कवित्त करके ही लिखा है।

इसके पाठ को शोधन करने में ध्यान में लेने जैसी बात है कि **प्रथम** और **मंगल** शब्दों के बीच में जो बहुत सी पुस्तकों में **किय** शब्द है वह अधिक होने से अशुद्ध है, क्योंकि उस पाद में कुल ११ मात्राएं होनी चाहिए। बेदलेवाली पुस्तक में **संपजप** शब्द है और एशियाटिक सोसाइटी की छापी हुई पुस्तक में जो **संपूजय** किया गया है, इसमें मेरी सम्मति यह है कि पाठ में तो **संपजय** ही रखना चाहिये परंतु अर्थ करने में **संपूजय** समझना चाहिए, क्योंकि **संपूजय** पाठ करने से छंद टूटता है। गुजराती भाषा में ऐसे शब्द बहुत आते है, जैसे मुकुन्दराम का मकन्दराम, तुलसी का तलशी, और शिव का शव। ऐसे मुख-दोष के कारण से बिगड़े हुए शब्दों के रूपों के लिये एक यह श्लोक भी प्रसिद्ध है--

गुर्ज्जरो मुखदोषेण। शिवोपि शवतां गतः ॥
तुलसी तलशी जाता। मुकुन्दोपि मकन्दतां ॥

मुक्ति-स्तुति

कवित्त—भुगति भूमि किय क्यार। वेद सिंचिय जल पूरन ॥
बीय सुवय लय मध्य। ग्यांन अंकू रस जूरन ॥
त्रिगुन साख संग्रहिय। नाम बहु पत्त रत्त छिति ॥
सुक्रम सुमन फुल्लयौ। मुगति पक्की द्रव संगति ॥
दुज सुमन डसिय बुध पक्व रस। वट विलास गुन पिस्तरिय।
तरु इक्क साख त्रयलोक महि। अजय-विजय गुन विस्तरिय ॥
॥छं० ४॥ रू० ४॥

पूर्व कवियों की स्तुति और उच्छिष्ट संज्ञा कथन

भुजंगप्रयात ॥

प्रथंमं भुजंगी सुधारी ग्रहंनं। जिनें नाम एक अनेक कहूंनं ॥

इसके अतिरिक्त चंद की हिन्दी मे ऐसे प्रयोग बहुत से आवेंगे, जैसे "बिन्दलालाट प्रसेद कियो" यहा प्रस्वेद का प्रसेद हुआ है। चिहुं के स्थान मे चिहुँ किया है, क्योकि यहा अर्ध अनुस्वार प्राप्त है। लगो के स्थान मे लग्गो, उदयत के स्थान मे उदयत्त। लग्गौ के स्थान मे लगै और सति मति के स्थान मे सत्ति मत्ति सुधारे है, क्योकि ऐसे पाठ सुधारने मे छद के टूटने का दोष हम को स्वयम् सचेत करना है ॥

४ इस रूपक मे भी चद कवि रूपकालकार से कर्म की स्तुति करना है ॥

इसके पाठ मे एशियाटिक सोसाइटी आदि की पुस्तको मे जो अंकूर सजूरन पाठ हैं वे, एक बालक भी जान सकता है कि, बडे ही अशुद्ध है, किन्तु दृष्टि देने से हमारे किए पदच्छेद मे सार्थक पाठ हो जाते है अर्थात् अकू रस जूरन। हमने रत के स्थान में रत्त, छित्ति के स्थान मे छित पाठ किए हैं। हमारे डसिय पाठ के स्थान मे आगरा कालेज और बेदले आदि की पुस्तको मे झसिय पाठ है, परतु वह अशुद्ध है। मालूम होता है कि उनके लेखको ने ड को ऐसा झ समझकर अशुद्ध पाठ लिख दिया है और अर्थ पर दृष्टि देकर प्रतिलिपि नही की है ॥

५ स्मरण मे रखना चाहिए कि इस रूपक में कवि रूपकालंकार से मुक्ति की स्तुति करता है अर्थात् चंद ने दूसरे, तीसरे और इस चौथे रूपको मे क्रम से धर्म्मेश्वर, कर्म्मेश्वर और मुक्तेश्वर नामक ईश्वरों के मंगलाचरण किए हैं ॥

इस भुजंगप्रयात नामक छंद का लक्षण चंद कवि के माने हुए छंद ग्रंथों में से पिंगलमुनि यह लिखते हैं कि 'भुजं प्रयातं य: ॥ ३८ ॥ अर्थात् जिसके पाद में चार यकार (यगण) हों वह भुजंगप्रयात नामक छंद कहाता है।

इस पांचवें रूपक के जो पाठ एशियाटिक सोसाइटी की और अन्य पुस्तकों में बहुत अशुद्ध हैं वे ये हैं:—प्रथम। ग्रहूनं। कहूनं। लबूभयं। भारथ। उत-

दुती लभायं देवतं जीवतेसं। जिनें विश्व राख्यौ वली मंच सेसं ॥
चवं वेद बंभं हरी किर्त्ति भाखी। जिनें ध्रम्म साध्रम्म संसार साखी ॥
तृती भारती व्यास भारत्थ भाख्यौ। जिनें उत्त पारथ्थ सारथ्थ साख्यौ ॥
चवं सुक्खदेवं परीखित्त पायं। जिनें उड्यौ श्रब्ब कुर्वं सरायं ॥
नरं रूप पंचम्म श्रीहर्ष सारं। नलैराय कंठं दिने पद्व हारं ॥
कूटं कालिदासं सुभाषा सुबद्वं। जिनें वागवानी सुबानी सुवद्दं ॥
कियो कालिका मुक्ख वासं सुमुद्दं। जिनें सेत बंध्योति भोज प्रबंधं ॥
सतं डंडमाली उलाली कवित्तं। जिनें बुद्धि तारंग गंगा मसित्तं ॥
जयदेव अट्ठं कवी कब्बिरायं। जिनें केवलं किर्त्ति गोविंद गायं ॥
गुरुं सब्ब कब्बी लहू चंद कब्बी। जिनें दर्सियं देवि सा अंग हब्बी ॥
कवी किर्त्ति कित्ती उकत्ती सुदिख्खी। तिनें की उचिष्टी कवी चंद भख्खी॥
॥छं० १० ॥ रू० ५ ॥

पारथ। सारथ। सुखदेव। परीषत। उद्धयौं श्रव। कुरुवंस षद्ध। कालिदास। मुष्य। सुसुद्ध। बंध्यौ। तिभोजन। बुद्धितारंग। गंगासरित्त जयदेव। अठं। केवल। दरसिय। उकति। तिन। कवि और भर्ष्या। इनमें से प्रत्येक को सिद्ध करने के लिये जो हम मनके विवेचना करें तो बहुत स्थान चाहिए, परंतु आशा करता हूं कि पुरातत्त्ववेत्ता इनको हमारे शुद्ध पाठों से मिलाकर और जो कुछ चंद कवि की हिन्दी के नियम हमने संक्षेप पहिले प्रकाश किए हैं उनसे विचार कर सिद्ध कर लेंगे।

इस रूपक में चंद कवि अपने से पहिले हुए मुख्य मुख्य कवियों की स्तुति करके अंत की दो तुकों में उनको अपने गुरु मान कर और आप निरभिमान होकर अपने काव्य को उनके कहे काव्य की उच्छिष्टी होने की संज्ञा देता है : जैसे कि इस महाकाव्य के किसी किसी रूपक में चंद के समय के पीछे बरते हुए वृत्त लिखे प्राप्त होते हैं और उनपर से इस ग्रंथ की प्रामाणिकता में संदेह किया जाता है, वैसे ही यह रूपक क्या इस ग्रंथ की प्रमाणिकता को सिद्ध करनेवाला एक प्रमाण रूप नहीं है ? और अन्य कवि जैसे श्रीहर्ष और जयदेवादि का समय निश्चय और निर्णय करने में पुरातत्त्ववेत्ताओं का सहायक और उपकारी नहीं हो सकता है ?

इसके अतिरिक्त इस छंद की तीसरी तुक मे जो एक बंभं शब्द चंद कवि ने प्रयोग किया है उसको देखकर चारण राव और भाट जाति के अच्छे अच्छे कवियों को हमने आश्चर्य करते हुए देखा है और वे उसका अर्थ अंड बंड करते हैं। कोई उसको ब्रह्म शब्द का अपभ्रंश बतलाता है और कोई चारों वेदों के ग्रंथों का वाचक बतलाता है और कोई कहता है कि महादेव की मूर्ति के आगे जो गाल बजा के बंबं शब्द मुख से कहते हैं और ऐसा करने से महादेव प्रसन्न हो जाते हैं उसका

चंद की स्त्री अपने पति के उच्छिष्ट संज्ञा कथन में शंका करती है।

दूहा—उचिष्ट चंद छंदह बयन। सुनत सु जंपिय नारि॥
तनु पवित्र पावन कविय। उकति अनूठ उधारि॥
छं० ॥ ११ ॥ रू० २ ॥ ६ ॥

कवित्त—कहैं कंति सम कंत। टंत पावन बड़ कब्बिय॥
तंत मंत उच्चार। गेवि दरसिय मझि हब्बिय॥

वाचक है, परन्तु हम शब्द का पता लगाकर बताते हैं कि यह बभं चंद की हिंदी का भूतकालिक क्रियावाचक शब्द है और संस्कृत भाषा में यङ्लुगन्त प्रक्रिया के प्रयोगों मे जो बंभणीत बभंति प्रयोग प्रसिद्ध होता है उससे बना है और उसका यहां फिर फिर बार बार पढ़ा वा भणाका अर्थ है। क्योंकि "चवं वेद बभं हरी कित्ति भाख्वी" इस तुक का अर्थ यह है कि इस "जीवतेस ने चारो वेदों को बार बार पढ़ा वा भणा और हरी की कीर्ति को भाखा"। जो मनुष्य संस्कृत भाषा में अच्छा व्युत्पन्न और पक्षपात और हठ जैसे दोषों से विमुक्त और सत्य का दृढ़ अवलंबन करनेवाला है वह, हम आशा करते हैं कि, ऐसे प्रयोगों को देख कर कदापि यह नहीं कहेगा कि इस महाकाव्य का ग्रंथकर्ता चंद संस्कृत भाषा में अव्युत्पन्न था।

इस रूपक मे चंद कवि आठ कवियों को अपना गुरु मान कर उनकी स्तुति और उनकी काव्य-रचना-शक्ति का वर्णन करता है। वह सबसे पहले भुजंगी नाम से परमेश्वर को कवि ग्रहण करता है क्योंकि वेदादिक मे उसका कवि नाम कहा है; यथा

"होता वा दैव्या कवी०" यजु 'प्रथम वरज भेषज कविम्०' यजु
"कविर्मनीषी परिभू स्वयम्भू" ईशोपनिषत्
"कवि क्रान्तदर्शी सर्वज्ञः नान्यतोऽस्ति द्रष्टा" इत्यादि ॥ शा० भा०
"कविं पुराणमनुशासितारम्०" गीता ॥

दूसरे जीवनेश से प्राणनाथ अर्थात् ब्रह्मा कि जो आदि कवि कहाता है जैसे भागवत में कहा है कि "तेने ब्रह्महृदा य आदि कविये मुह्यन्ति यत् सूरय" ॥

बाकी सब कवियों के विषय मे कुछ विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सर्व साधारण लोग व्यासादि के नाम से भले प्रकार विज्ञ है ॥

६–७ कवि चंद ने जो पहिले रूपक मे अपने काव्य को अपने से पहिले हुए कवियों के काव्य का उच्छिष्ट होना कहा है उस सुनकर उसकी स्त्री उच्छिष्ट संज्ञा में आश्चर्य के साथ शंका और अपने पति के गुणों का वर्णन करती है अर्थात् इन रूपकों में कवि चंद ने अपनी स्त्री के प्रश्नोत्तर के प्रसंग से अपने काव्य की उच्छिष्ट संज्ञा के हेतु और अपने गुण प्रकाश किए हैं। इनमें सम, कांति और कंत

तंत वीर उग्रत । रंग राजन सुख दाइय ॥
बाल केल प्रत्यंग । सुरनि उड्वरि कविताइय ॥
अवलंब उकति उच्चार करि ॥ जिहित मोहि कोविद रहै ॥
सम ब्रह्मरूप या सब्द कहुँ । क्यों उचिष्ट कवियन कहै ॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ७ ॥

चद अपनी स्त्री की शंका का समाधान करता है ॥

कवित्त —सम बनिता बर बदि । चंद जपिय कोमल कल ॥
सबद ब्रह्म इह सत्ति । अपर पावन कहि निर्मल ॥
जिहित सबद नहि रूप । रेख आकार ब्रन्न नहिँ ॥
अकल अगाध अपार । पार पावन त्रयपुर महिँ ।
तिहिं सबद ब्रह्म रचना करें । गुरु प्रसाद सरसै प्रसन ॥
जद्यपि सु उकति चूको जुगति । तौ कमल बदनि कवितह हँसन ॥
छं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ ८ ॥

चद की स्त्री पुनश्च शका करती है ॥

कवित्त तुम बानी बरबद । नाग देखन विमल मति ॥
छद भग गन रहित । कठ कौमार काव्य कृत ॥

शब्दों के प्रयोग विद्वानो की दृष्टि म रहने योग्य है । सम (स० अ० सम सगे - सबन्धे, समच्चये,) को अथवा प्रति और सम ब्रह्मरूप मे सम तुल्य के अर्थ मे कवि ने प्रयोग किया है, कति (स० स्त्री कम ति) पत्नी अथवा स्त्री और कत (स० पु० कम् + त) पुरुष अथवा पति, यह तीनो चद की हिन्दी के सस्कृत-सम प्रयोग है । और तत और मत शब्दो के प्रयोग भी दृष्टि देने जैसे है तत पावन मे तत = तत्त्व और तत मत मे तत तत्र और मत मत्र के वाचक कवि ने प्रयोग किए हैं ।

अन्य पुस्तको मे यह अशुद्ध पाठ है -सु, जपिय, कवि, सुख, दाईय, कबिता-ईय, को, विद, समब्रह्मरूप, कहु कविय और न ॥

८ चद इस रूपक मे अपनी शका का उत्तर देकर समाधान करता है ॥ शब्दब्रह्म (स० शब्दात्मक ब्रह्म) शब्द का प्रयोग चद के व्याकरण और वेदान्त दिशा के ज्ञान का द्योतक है । गुरुप्रसाद शब्द यहा श्लेषार्थ मे कवि ने प्रयोग किया है क्योकि ख्यातियो के अनुसार चद के विद्या-गुरु का नाम गुरुप्रसाद था । यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नही मिलते तथापि यह गुरु प्रसाद नामक पजाब देश का रहनेवाला एक बडा पडित हुआ है । कवितह चद की हिन्दी का निज प्रयोग है और उसका अर्थ कवित्त अर्थात् काव्य रखनेवाले कवि का है । किसी किसी पुस्तक मे जो बरबदि, अमल, त्रयपूर, महि, तिहि, और प्रसन्न पाठ है वे अशुद्ध है ॥

बुधि तरंग सम गंग । उकति उच्चार अमिय कल ॥
सुरन सुनत विहसंत । मंत जनु वस्यकरन बल ॥
अवतार भूप प्रिथिराज पहु । राज सुख तिन सम लहहि ॥
बीगधि वीर सामंत । सब तिन सु गल्ह कच्छी कहहि ॥
छ० ॥ १४ ॥ रू० ॥ ९ ॥

चद अपनी स्त्री की शका का पुनश्च समाधान करता है ॥

कवित्त गज गवनी प्रति चद । छद कोमल उच्चारिय ॥
मनहरनी रस बेलि । सुरन सागर रस धारिय ॥
बक नयन बय बाल । प्रानवल्लभ सुखदाइय ॥
अगुन निगुन गुरु ग्रहनि । गवरि पूजा फल पाइय ॥
भए आदि अत कविता जिने । तिन अनत गति मति कहिय ॥
अनेक ग्रंथ तिन बरनबन । यौ उचिष्ट मनि मै लहिय ॥
छ० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १० ॥

चंद अपनी स्त्री के आगे ईश्वर के ऐश्वर्य का वर्णन करना ॥

॥ प्रहर ॥

प्रनम्भ प्रथम मम आदिदेव । उंकार शब्द जिन करि अछेव ॥
निरकार मध्य साकार कीन । मनसा बिलास सह फल फलीन ॥१६॥
त्रयगुनह तेज त्रयपुर निवास । सुर सुरग भूमि नर नाग भास ॥
फुनि ब्रह्मरूप ब्रह्मा उचार । कथि चतुरवेद प्रभु तत्त सारि ॥ १७ ॥

---

९ जिन पुस्तको मे ये पाठ हैं—अमीय, सुनर और ममल्हहि, वे अशुद्ध हैं । इसमे दूसरी तुक का दूसरा पाद "कठ कौमार काव्य कृत" विद्वानो के ध्यान देने योग्य है । इसका आशय यह है कि चंद की स्त्री अपने पति से कहती कि तुम कंठ कौमार काव्य कृत हो अर्थात् तुम को कौमार काव्य कंठ है । क्या यह भी चंद के संस्कृत भाषा मे व्युत्पन्न होने का एक अच्छा प्रमाण नही है ?

१० अन्य पुस्तकों मे ये पाठ अशुद्ध हैं—बेली सुखदाईय, जिनै, बरन, बन और में । इस रूपक मे गवरि शब्द श्लेषार्थ मे कवि ने प्रयोग किया है क्योकि ख्यातियों में चंद की स्त्री का नाम गौरी करके प्रसिद्ध है ॥

११ इस रूपक के छद का नाम पद्धरा है और उसका लक्षण यह है—

दस करो प्रथम फिर षट मिलाय । गिन षोडश मत्ता पाय पाय ॥
इम जगन अंत मे धरत सोय । भमि रोग पद्धरी छंद होय ॥ [illegible]

इस रूपक मे चद अपनी स्त्री को ईश्वर का ऐश्वर्य वर्णन कर बताता है और पहिली तुक मे प्रनम्य पाठ नही ग्रहण करना चाहिए किन्तु प्रनम्म पाठ ठीक है । अर्थात् चद अपनी स्त्री को कहता है कि तू प्रथम मेरे आदिदेव को प्रनमन कर कि

बरनयौ आदि करता अलेख। गुन रहित गुननि नह रूप रेख॥
जिहि रचे सुरग भू सत पताल। जम ब्रह्म इन्द्र रिषि लोकपाल॥ १८॥
पवन अग्गि जल धर अकास। सरिता समुद्द तिथि गिर निवास॥
असि लक्ख चार रच जीव जंत। बरनंत ते नहीं लहों अंत॥ १९॥
अठ्ठार बन्न बेली सु कीन। नाना प्रकार सब गुन अधीन॥
करि सकै न कोइ अग्याहि भंग। धरि हुकुम सीस दुख सहै अंग॥ २०॥
दिनमान देव रवि रजनि भोर। उग्गैइ बनै प्रभु हुकम जोर॥
ससि सदा राति अग्या अधीन। उग्गैं अकास होय कला हीन॥ २१॥
द्रिगपाल दाबि रहै सबरि भूमि। चमकें न कार रहै चांपि चूमि॥
परिमान पवन करि गवन गाह। घटि बढि अंग मंडै उछाह॥ २२॥
इन्द्र सुर्ग मेघ अग्या अकास। बरखा सु बरख रक्खे इलाम॥
धर रहि अचल होय प्रभु प्रताप। हलि चलि न निमख सक्कै स ताप॥ २३॥
उठ्ठंत लहरि लग्गी अकास। तठ ममुद मत्त नहिं खोज तास॥
परिमान अप्प लंघै न कोइ। करै सोइ कम प्रभु हुकम जोइ॥ २४॥
अग्यान मेटि को सकै ताहि। भूत न भविष्य को ब्रन माहि॥
बग्नयौ वेद ब्रह्मा अछेह। जल थलह पूरि रह्यौ देह देह॥ २५॥
पुनि कहे व्यास दसअठ पुरान। अवतार रचित नाना निधान॥
बरनयौ विमल मति देव देव। सब रहै सोधि नह लह्यौ भेव॥ २६॥
फुनि मालमीक रामावतार। शत कोटि ग्रथ कथि तत्त सार॥
विध्वंसि सीय कज देव दाद। प्राक्रंम रीछ कपि दयित वाद॥ २७॥
पुनी पंच काव्य कवितान कीन। अग्यान नरन उर दीप दीन॥
कित्तीक बात मो मति प्रकास। करि सकों ग्रंब्ब तो होइ हास॥
॥ छ० २८॥ रू० ११॥

जिसने ऐसा ऐसा किया है। हमारा यह कहना अर्थ पर दृष्टि देने से बहुत ठीक प्रतीत हो सकता है। अन्य पुस्तकों में जो ये मिलते हैं वे अशुद्ध हैं जैसे—प्रनम्य, मन, ब्रह्माड, चार, सत्त, पाताल, पवनह, अरु, अस्मि, च्यार, कोई, सबर, कोर; बढी, मंतार, महिं, व्रत्तमां, हि, कहै, न, हलह्यौ, सीयक, जदेप, प्राक्रम और अब्ब॥

इस रूपक के छंद २३ की पहिली तुक के पहिले पाद में जो हमारे सबरि पाठ के स्थान में एशियाटिक सोसाइटी की छापी हुई पुस्तक में सबर पाठ है और उसको मिस्टर जान बीम्स साहब ने जो अरबी सब्र शब्द होना अनुमान किया है वह अयुक्त है, क्योंकि अरबी सब्र शब्द का अर्थ यहाँ सर्वरीत्या अघटित है, किन्तु मानना चाहिए कि चंद ने हिन्दी सबरि शब्द का छंद टूटने के कारण

चंद की स्त्री अपने पति से अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका पूछती है।

दूहा—सुनत काव्य कवि चंद को। चित आनन्दी नारि॥
तुम बानी बानो प्रसन। हसन हुवंत निवारि॥
॥ छं० २९ ॥ रू० १२ ॥

कवित्त—कहै कंति मतिवंत। तंत रसना रस सागर॥
तुम गुन श्रवन सुहंत। जानि चमकंत कलाधर॥
तुम देवी वरदान। दान दीजै मुहि कब्बिय॥
अष्टादसह पुरान। नाम परिमानह सब्बिय॥
तुम कथन कथन आनन्द मुहि। अग्ग पच्छ भर सुड्वरै॥
अग्यान तिमर नठ्ठय सुनत। अब्व कमल हिय उड्वरै॥
॥ छं० ३० ॥ रू० १३ ॥

चंद अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका का कथन करता है॥

पड्वरी - ब्रह्मन्यदेव सम वासुदेव। अष्टदस पुरान तिन कहि सुभेव॥
तिन कहों नाम परिमान अन्न। जिन सुनत सुड्व भत्र होत तन्न॥ ३१॥
व्रह्मह पुरान दम सहम जुट्टि। जिहि पढत सुनत तन तप्प छुट्टि॥
पच्चाम पंच हज्जार गन्नि। पद्मह पुरान तिन कह्यौ ब्रन्नि॥ ३२॥
तेतीम सहम से चारि जानि। विष्णू पुरान विष्णू समानि॥
चौवीस सहम कहि शिव पुरान। तिहि पढ़त सुनत सम अमिय पान॥ ३३॥
अठ्ठारह सहस भाग्वत्त भेव। कहि पार परिक्खत सुक्कदेव॥
नारद पुरान कहि पाव लाख। तहं मुक्ति मोद आनन्द भाख॥ ३४॥

सबरी प्रयोग किया है और रासो की किसी किसी पुस्तक मे ऐसा पाठ भी मिलता है। जो इस शब्द को रकार और बकार के उलट पुलट लिखे जाने से बरस शब्द होना भी हम माने तथापि यह कुछ असंगत नही है॥

१२ इसमें प्रसन्न शब्द का पाठ किसी किसी पुस्तक में मिलता है, परंतु यहां छंद टूटने के कारण कवि ने प्रसन करके प्रयोग किया है॥

१३ इस कवित्तके भिन्न भिन्न पुस्तकों में जो पाठ मिलते हैं; जैसे—कहे, बरदानि, पछू, नट्ठ, य, अंब्वक और मल॥

१३ इस रूपक के अशुद्ध पाठान्तर अन्य पुस्तकों में ये हैं—अष्टादस, कहै, सभेव, बन्निहो, तन्ननि, तप्य, पंचास, पंचह, च्यारि, तिष्णु, अठार, भागवत, तहां, तेईस, दुख, संपूर, अग्नि, पठि इग्यार, अछ, प छ, कूरभ, मछ, भक्ति हरांन, सहंस, और नंम॥

इस रूपक के ४१वें छंद की एक तुक भाषा के कवि घटती बताकर चंद पर दोषारोपण करते हैं, परंतु यह उनकी भूल है; क्योंकि चंद ने इस छंद को एक

मारकंड नाम तेइस हजार। पौरान पवित्र मो दुख जार॥
पंद्रह हजार संख्या सनूर। अग्नी पूरान पढ़ि पाप दूर॥ ३५॥
चवदै हजार मैं पांच पड्डि। भविषित पुरान मो पाप जड्डि॥
ब्रह्मवैव्रत सहसं अठार। केवल गिनान कथि भक्ति सार॥ ३६॥
रुद्रह हजार लिंगह पुरान। आनन्द अर्थ आगम गुरान॥
चौबीस सहस बाराह भक्ति। पौरव पुरान तिन अमित सक्ति॥ ३७॥
हजार इक्यासी कहि विवेक। स्कंदह पुरान भव भक्ति एक॥
ग्यारह सहस बावन सु अच्छ। पौरान सुनत सुधि अग्ग पच्छ॥ ३८॥
सत्रह हजार कूरंम पुरान। भाषा विनोद प्राक्रम पुरान॥
विद्या हजार मित मच्छ देव। विधि संख उड्वरे सेव भेव॥ ३९॥
उनईस सहस गरुड़ह पुरान। श्रोतान वक्त भक्ती उरान॥
ब्रह्मांड पुरान बारह सहस्स। करि व्यास भक्ति प्रभु कंस नस्स॥ ४०॥
पंद्रह हजार अरु चार लाख। मम ब्रह्म व्यास कहि चंद भाख॥
॥ छं० ४१॥ रू० १४॥

चंद अपनी लघुता वर्णन करता है॥

दूहा-कूलि किति चहुआन की। जुगनि जुग निवास॥
अप्प मन्ति गरमे मवल। मनी करे हवि हास॥
॥ छं० ४२॥ रू० १५॥

गाहा---पय सक्करी सुभत्तौ। एकत्तौ कनय राय भोयगी॥
कर कंमी गुज्जरीय। रब्बरिय नैव जीवति॥
॥ छं० ४३॥ रू० १६॥

सत्त खनै आवासं। महिलानं मद्द सद्द नूपरया॥
सतफल बज्जुन पयमा। पब्बरिय नैव चालति॥
॥ छं० ४४॥ रू० १७॥

ही तुक में कहा है और श्लोकार्ध कहने और लिखने की रीति संस्कृत भाषा के काव्यों में प्रचलित है। चंद की यह संस्कृत-काव्य-सम शैली इस महाकाव्य में बहुत स्थानों पर देखने में आवेगी अतएव हमको इस पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए। ऐसे उदाहरण पुराणों में बहुत मिलेंगे, परन्तु जिनके पढ़ने में माघ काव्य भी आया होगा वे जानते होंगे कि माघ ने पहिले सर्ग के दूसरे श्लोक के साथ नीचे लिखा अर्द्धश्लोक कहा है—

"द्विधा कृतात्मा किमयं दिवाकरो। विधूम रोचिः किमयं हुताशनः॥
गतं तिरश्चीनमनूरु सारथेः। प्रसिद्धमूर्ध्व ज्वलनं हविर्भुजः॥ २॥
पतत्यधोधाम विसारि सर्वतः। किमेतदित्याकुल भीक्षितं जनैः॥

१५ इसमें अशुद्ध पाठान्तर ये हैं :—अप्य और मति॥

रब्बरियं रस मंदं। क्यू पुज्जति साध अमियेन ।
उकति जुकत्तिय ग्रंथं । नथि कत्थ कवि कत्थिय तेन ॥
॥ छ० ४५ ॥ रू० १८ ॥

याते वसंत मासे । कोकिल झंकार अंब बन करयं ॥
बर बब्बूर विष्यं । कपोतय नैव कलयंति ॥
॥ छं० ४६ ॥ रू० १९ ॥

सहसं किरन सुभाउ । उगि आदित्य गमय अंधरं ॥
अय्यं उमा न सारो । भोडलयं नैव झलकति ॥
॥ छ० ४७ ॥ रू० २० ॥

कज्जल महि कस्तूरी । रानी रेहत नयन श्रगार ॥
कां मसि घसि कुंभारी । कि नयने नैव अजति ॥
॥ छं० ४८ ॥ रू० २१ ॥

ईस सीस अममान । सुर मुरी मलिल निष्ट नित्यान ॥
पुनि गलती पूजारा । गडुवा नैव ढाल्कति ॥
॥ छ० ४९ ॥ रू० २२ ॥

चंद उत्तापित होकर अपने को पूर्व कवियों का दास होना, उनकी उक्ति को कहना और अपनी को बकना कहता है ॥

दूहा—कहां लगि लघुता बरनवो । कविन दास कवि चद ॥
उन कहि ते जो उब्बरी । मो बकहो करि छद ॥
॥ छ० ५० ॥ रू० २३ ॥

१६-२२ गाहा छद का लक्षण यह है —

गाहा पहिले बारह । दूजे अठारहै कला गाजै ॥
तीजै बारह धारहु । पद्रह चौथे तहा छाजै ॥

इन गाहा छदो में अशुद्ध पाठान्तर ये है—मनफल, क्यू राने, बड़ू, रवि, रष्यं नगय, सुरीस लिल्ल, और फुनि ।

बाइसवें गाहा के "ईम मीम आममान" मे जो आममान शब्द है उसको जो मिस्टर जान बीम्म साहब फारमी आसमान होना अनुमान करने है उससे हम बिलकुल असम्मत है । हम इसको म० असमान, त्रि० (नास्ति समानो यस्य ।) अतुल्यं, विजातीय, सजातियभिन्नं का वाचक समझते हैं अर्थात् ईस=परमेश्वर का सीस=शिर, आसमान =अतुल्य है ।

२३-२५ इनमे जो किमी किमी पुस्तक मे तेजो पाठ है वह अशुद्ध । कवि चंद ने अपनी लघुता वर्णन करते करते अन को उत्तापित होकर जो य दो दोहे (२४।५२॥ +२५-५३) कहे हैं वे इस महाकाव्य के पाठकों और खंडन करनेवालों के ध्यान मे रहने योग्य हैं ॥

चंद खलों का स्वभाव वर्णन करके सुजनों के निमित्त अपना काव्य-रचन करना चाहता है ।।

दूहा—सरस काव्य रचना रचौं । खल जन सुनि न हसंत ।।
जैसे सिंधुर देखि मग । स्वान सुभाव भुसंत ।।
।। छं० ५१ ।। रू० २४ ।।

तौ पनि निमित्त सुजन गुन । रचिये तन मन फूल ।।
जूका भय जिय जानिकैं । क्यौं डारियै दुकूल ।।
।। छं० ५२ ।। रू० २५ ।।

सरस्वती की स्तुति ।।

साटक—मुक्ताहार बिहार सार सुबुधा, अबधा बुधा गोपिनी ।।
सेतं चौर सरीर नीर गहिरा, गौरी गिरा जोगनी ।।
बीना पानि सुबानि जानि दधिजा, हंसा रसा आसिनी ।।
लंबोजा चिहुरार भार जघना, बिघ्ना घना नासिनी ।।
।। छं० ५३ ।। रू० २६ ।।

गणेश की स्तुति ।।

छत्रंजा मद गंध राग रुचयं, अलिभूराछादिता ।।
गुंजा हार अथार सार गुनजा, झंझा पया भासिता ।।
अग्रेजा श्रुति कुंडलं करि कर, स्तुद्दीर उद्दारयं ।।
सोयं पातु गनेस सेम सफलं, पृथ्राज काव्यं कृतं ।।
।। छं० ५४ ।। रू० २७ ।।

गणपति की उत्पत्ति कथा ।।

विराज—रतं रत्न भारी । करुना विचारी ।।
लियो मात नक्खं । बियो संख लक्खं ।। ५५ ।।

२६-२७ इन रूपकों मे यह अशुद्ध पाठान्तर है—गोपनी, गिराजोगनी, सुबानी, दधि, जाहं मरसा, लंबी, जा, विघना, छत्र, मदं, जा, करः, स्तु, दीर, पृथिराज, काव्य और कृते । इनमे एक पृथीराज शब्द के स्थान मे जो हमने पृथ्राज पाठ रक्खा है वह एक रासो की पुस्तक में है और चंद का ऐसा प्रयोग देखकर राजपुताने और बृज की ग्रामीण भाषाओं से परिचित विद्वानों को कुछ आश्चर्य न होगा, क्योकि उन्होने ऐसे ही गजराज के स्थान मे गज्राज बोलते और खेलते लोगों को देखा और सुना होगा । यह चद की हिंदी के देशी प्रसिद्ध नामक भेद का उदाहरण है ।।

२८ अन्य पुस्तकों में पाठान्तर ये है - करुना, मात, नष्ष, दिये, रिषि, अवल्लाइ, कल्ली, पुरुष, डोर, धर्यो, तुहि, दद्ध, दैहै, देह, भगतं, लछी, लच्छी,

मिले एक दीहं । रमै काम सीहं ॥
इकं रिष्ष आयौ । दियौ काम चायौ ॥ ५६ ॥
खिज्यौ रिष्षि भारी । दियौ काम डारी ॥
भयौ पुत्र तब्बं । धजा मोद सब्बं ॥ ५७ ॥
सिरो मालधारी । गनेसं बिचारी ॥
खिजे तब्ब ईसं । भयौ रोम बीसं ॥ ५८ ॥
अबल्ला इकल्ली । वियौ पुर्ष भिल्ली ॥
डके डोर नद्दं । हन्या पुत्र बद्दं ॥ ५९ ॥
खिजी मात भारी । सरायं बिचारी ॥
करी जाकु ईसं । धरयौ पुत्र सीसं ॥ ६० ॥
सबै कज्ज अग्गै । तुही नाम लग्गै ॥
कलानंद रूपं । गनेसं सभूपं ॥ ६१ ॥
इकं दन्त दन्ती । विराजंत कंती ॥
सुभै दंत ऐसै । कबिंदं प्रसंसै ॥ ६२ ॥
मनो भूमि धारी । बाराहं उपारी ॥
इमी नठ्ठ तेज । कला सोम केजं ॥ ६३ ॥
नमो देव कद्दं । प्रजा ईस मद्दं ॥
भखै भूत प्रेतं । तिजारी न हेतं ॥ ६४ ॥
इकं दोह एकं । दुती दोह मेकं ॥
भगन्नं मुचक्री । दियो लच्छि वक्री ॥ ६५ ॥
इकं चोख अथ्थं । करै नाक नथ्थं ॥
सुभत्ती सुमत्ती । जल्ल माहि पत्ती ॥ ६६ ॥
धरै आक मीसं । त्रिलोकेस ईसं ॥
त्रयं वेद जक्की ॥ प्रियं चंद भक्की ॥ छं० ६७ ॥ रू० २८ ॥

शंकर की स्तुति ॥

दूहा —नमस्कार संकर कियो । मरसैं बुधि कवि चंद ॥
सति लंपट लंपट नवा अबुधि मंच सिमु इंद ॥
॥ छं० ६८ ॥ रू० २९ ॥

अथं, नथं, समती, पती, धरे, त्रिलोक और ईसा । इस रूपक के छंद का नाम चंद ने विराज कहा है परंतु उस का नामान्तर सखा नारी और उस का लक्षण यह है—

छई वर्ण धारो । यगन्नं दुधारो ॥
रचो पाव चारी । करो संखनारी ॥ श्रीधर कवि-कृत पिंगल ॥

साधन भोग संयोग रजि । मंडन आव अखूट ॥
नमो उमा उर आभरन । जय बंधन जट जूट ॥
॥ छं० ६९ ॥ रू० ३० ॥

विराज - जटा जूट बंदं । लिलाटंत चंदं ॥
बिराजंत छंदं । भुजंगी गलिंदं ॥ ७० ॥
शिरो माल इंदं । गिरीजा अनंदं ॥
सिरै सिंघि नद्दं । रनै बीर मद्दं ॥ ७१ ॥
करी चर्म सद्दं । करं काल खद्दं ॥
उनै गंग हद्दं । चखी अग्गि दद्द ॥ ७२ ॥
प्रलै जानि जद्दं । जयो जोग सद्दं ॥
घटा जानि भद्दं । जरै काम तद्दं ॥ ७३ ॥
हरै त्राहि बद्द । रचै मोह कद्दं ॥
बचै दूरि दद्द । नटे भेख रद्दं ॥ ७४ ॥
नमो ईश इंदं । बदै भद्द चंदं ॥ छं० ७५ ॥ रू० ३१ ॥

दूहा - करिये भक्ति कवि चंद हर । हरि जंपिय इह भाइ ॥
ईम स्याम जू जू कहै । नरक परंतह जाइ ॥
॥ छं० ७६ ॥ रू० ३२ ॥

श्लोक - परात्परतरं यानि । नारायण परयाणं ॥
न ते तत्र गमिष्यंनि । ये दुष्यंति महेश्वरं ॥
॥ छं० ७७ ॥ रू० ३३ ॥

साटक - गगाया भ्रगुलत्त वमन्न ममन, लच्छी उमा दोवरं ॥
संखं भूत कपाल माल अमितं, वैजंति माला हरी ॥
चर्मे मध्य विभूनि भूतिक युगं, विब्भूति माया क्रमं ॥
पापं विहरति मुक्ति अप्पन वियं, वीयं वरं देवयं ॥
॥ छं० ७८ ॥ रू० ३४ ॥

---

३० पाठान्तर - मग्गै । सनी । मजोग ॥

३१ पाठान्तर - गिरिजा । रनै । वीर । मद्ध । गंगहद्दं । हद्दं ॥ मद्दं ॥ इस इस रूपक का छंद ७५ चंद की संस्कृत काव्य-सम श्लोकार्द्ध शैली का दूसरा उदाहरण है । देखो टिप्पण १४ को ॥

३२ पाठान्तर - करिये ।

३३ पाठान्तर—यांति । यह श्लोक चंद के शुद्ध संस्कृत काव्य-रचन का प्रथम उदाहरण है ॥

३४ पाठान्तर - प्रगुलत्त । वसनमसनं । लछी । कपालमाल । चमभूनिकियुगं । मायात्र मं मुक्ति । वरदेवयं ॥

कवि की आशा का स्वरूप वर्णन ॥

गाहा—आमा महीव कब्बो । नव नव कित्तीय संग्रहं ग्रंथं ॥
सागर सरिस तरंगी । वोहथ्थयं उक्तिय चलयं ॥
॥ छं० ७९ ॥ रू० ३५ ॥

चंद का काव्य समुद्र कैसा है ॥

दूहा—काव्य समुद्र कवि चंद कृत । मुगति समप्पन ग्यान ॥
राजनीति बोहिथ सुफल । पार उतारन यान ॥
॥ छं० ८० ॥ रू० ३६ ॥

छंद प्रवध कवित्त जति । साटक गाह दुहथ्थ ॥
लहु गुर मडित खडिय हि । पिगल अमर भरथ्थ ॥
॥ छं० ८१ ॥ रू० ३७ ॥

कोई अशुद्ध पढ़ने वाला चंद को काव्य-संबंधी दोष न दे ॥

कवित्त अति ढक्यौ न उघार । सलिल जिमि सिष्ष सिवालह ॥
वरन वरन सोभंत । हार चतुरंग विसालह ॥
विमल अमल वानी विसाल । बयन बानी वर ब्रनन ॥
उक्तिन वयन विनोद । मोद श्रोतन मन हर्नन ॥
युत अयुत जुक्ति विचार विधि । वयन छद छुट्यौ न कह ॥
घटि बढ्ढ मति कोई पढइ । तौ चंद दोस दिज्जो न वह ॥
॥ छं० ८२ ॥ रू० ३८ ॥

इस ग्रंथ में चंद ने क्या क्या कथन किया है ॥

श्लोक उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नव रसं ॥
षट् भापा पुराणं च । कुरान कथिन मया ॥
॥ छं० ८३ ॥ रू० ३९ ॥

---

३५ पाडान्तर —किन्नी ॥

३६ पाठान्तर —ग्यान । यान ।

३७ पाठान्तर -भरथ्थ ।

३८ पाठान्तर —सिष्षि । विशाल्ल । विच्चार । पढई । दिज्जो । दिज्जे ।

३९ —कवि का यह संस्कृत श्लोक हमारे पाठको के सदा ध्यान मे रखने योग्य है । इस के सूक्ष्म विचार से हम सकते हैं । कि षटभाषा और कुरान की भाषा के जो जो शब्द इस महाकाव्य मे प्रयोग हुए हम देखते है वह कवि ने जान कर प्रयोग किए है और कुरान की भाषा शब्दो के प्रयोग का विषय कोई आश्चर्यदायक भी नही है क्योकि मुसलमानो का प्रवेश भारतखड मे शहाबुद्दीन गोरी के बहुत ही पहिले हो गया था । इस के अतिरिक्त हम को यह भी निश्चय मानना चाहिए

रासो को रसिया सरस उच्चारें ॥

कवित्त - चरन नीम अच्छिर सुरंग । पाट लहु गुरु विधि मंडिय ॥
सुर विकास जारी सु मुष्ष । उक्ति रस गौरवनि छंडिय ॥
जुगति छोह विस्तरिय । सीढियन घाट सु बद्दिय ॥
महि मंडन मेधान । याहि मंडन जस मद्दिय ॥
घन तर्क उतर्क वितर्क जति । चित्र रंग करि अनुसरिय ॥
विश्वकर्म कवि निर्मइय । रसियं सरस उच्चरिय ॥
॥ छं ८४ ॥ रू० ४० ॥

रासो का तत्वज्ञान कैसे होगा ॥

अरिल -तर्क वितर्क उतर्क मु जत्तिय । राज सभा सुभ भामन भत्तिय ॥
कवि आदर मादर बुध चाहौ । पडि करि गुन रासौ निर्वाहौ ॥
॥ छं० ८५ ॥ रू० ४१ ॥
धर्म्म अधर्म्म न बुद्धि बिचारौ । नयन नारि निय नेह निहारौ ॥
कोक कला कल केलि प्रकासौ । अरथ करौ गुन रासौ भासौ ॥
॥ छं० ८६ ॥ रू० ४२ ॥
परासर जो पुत्त विहामह । मतवंती ग्रम्भं गुर भासह ॥
प्रब्ब अठार मवा लष लष्पै । तौ भारथ गुर नत्त विमष्पै ॥
छं० ८७ ॥ रू० ४३ ॥

कि चद मस्कृत भाषा मे निपुण था और षट्भाषा और कुरान की भाषा मे भी अपरिचित नही था और जो जो छद इस महाकाव्य म सस्कृत भाषा मे लिखे हमारे दृष्टि आते है वे उसकी सस्कृत-काव्य-रचनशक्ति के उदाहरण रूप है । यह श्लोक चंद के माने हुए पिगल छदसूत्रम् के अनुसार लौकिक अनुष्टुप अर्थात् अष्टाक्षर पद छद है । इस रूपक के विशेष पाठान्तर अन्य पुस्तको मे दृष्टि नही आते किंतु केवल विशाल के स्थान मे विसाल और पुराण के स्थान मे पुरान पाट है ॥

४० पाठान्तर अछिर । सुरग । ममुष्प । मुष्प । गौषिन । सीढियन । मेधान । याहि । नित्ररग । विश्वकर्म कर्म । उच्चारिय ।

४१-४३ इस रूपक के छद का नाम कवि ने अरिल्ल प्रयोग किया है कि जिस का लक्षण यह है—

अरिल्ल —लघु दीरघ को नेम न कीजै । ऐसे ही तुक चार भरीजै ॥
षोडश कला कली बिच धारै । छद अरिल्ला शेष उच्चारै ॥

पाठान्तर —सुजत्तिय । मतिय । पढि शब्द के पहले तौ शब्द का पाठ पुस्तकान्तर मे विशेष है । पटि । नारिनिय । कौक । कलाकल । अरथ शब्द के पहिले तौ शब्द किसी किसी पुस्तक मे विशेष है । ग्रभ । लष्प लष्पै । नारथ ।

जो रासो को सुगुरु से पढ़ता है वह कुमति नहीं बरसाता ॥

कवित्त—रासौ बर बुद्धि सिद्धि। सुद्धि सो सब्ब प्रमानिय ॥
राजनीति पाइयै। ग्यान पाइयै सु जानिय ॥
उकति जुगति पाइयै। अरय घटि बढ़ि उन मानिय ॥
या समान गुन आप। देव नर नाग बखानिय ॥
भविछत भूत ब्रतह गुनित। गुन त्रिकाल सरसइय ॥
जो पढ़य तत्त रासौ सुगुर। कुमति मति नहि दरसाइय ॥
॥ छं० ८८ ॥ रू० ४४ ॥

रासो किसको अच्छा और किसको बुरा प्रतीत होता है ॥

दूहा—कुमति मति दरसत तिहिं। बिधि विना न श्रब्बान ॥
तिहिं रासौ जु पवित्र गुन। सरसौ ब्रन्न रसान ॥
॥ छं० ८९ ॥ रू० ४५ ॥

इस ग्रंथ के काव्य की संख्या का कथन ॥

दूहा—सत सहस नष सिष सरस। सकल आदि मुनि दिष्य ॥
घट बढ मत कोऊ पढौ। मोहि दूसन न वसिष्य ॥ छं० ९० ॥ रू० ४६ ॥

रासो के ढंके हुए अर्थ के विषय में कवि का कथन ॥

गाहा—अरथं ढंकिन सहसा। उघारै बनथ्यि एकलया ॥
मज्झं मज्झ प्रमानं। चतुर स्त्री हारयं जेमं ॥ छं० ९१ ॥ रू० ४७ ॥

इस ग्रंथ के विषय का संक्षेप कथन ॥

कवित्त—दानव कुल छत्रीय। नाम ढूंढा रुष्षम बर ॥
तिहिं सुजोत प्रथिराज। सूर सामंत अस्ति भर ॥
जीह जोति कवि चंद। रूप संजोगि भोगि भ्रम ॥
इक्क दीह ऊपन्न। इक्क दीहै समाय क्रम ॥

४४ पाठान्तर—राज। नीति। पाई। उक्ति। पाइयै। उन मानिय। व्रतह। सरस इय शब्द के पहिले किसी किसी पुस्तक में मध्य शब्द का विशेष पाठ है। सरसईय। दरसईय।

४५ पाठान्तर—दर्सन। तिहि। तिहि। रसान ॥

४६ पाठान्तर—कोऊ ॥ इस में "सत सहस" से कवि एक लाख की ग्रंथ संख्या बताता है और यह भी कहता है कि घट बढ पढ करके मुझे दोष मत देना। कोई कोई कवि जो यहां सत शब्द से सात का अर्थ अनुमान करते हैं वह हमारी सम्मति में अयुक्त प्रतीत होता है ॥

४७ पाठान्तर—ढकिन। नवथ्यि। मझ। मझ।

४८–५० पाठान्तर—रुष्षम। तिहिं। जिह। संजोगी। भोगी। उपन्ने।

जथ कथ्थ होइ निर्मंये । जोग भोग राजन लहिय ॥
बज्र ंग बाहु अरि दल मलन । तासु कित्ति चंदह कहिय ॥
॥ छं० ९३ ॥ रू० ४८ ॥

अरिल्ल—प्रथम राज चहुवांन पिथ्थ वर । राजधान रंजे जंगल धर ॥
मुष सू भट्ट सूर सामंत दर । जिहि बंध्यो सुरतांन प्रान भर ॥
॥ छं० ९३ ॥ रू० ४९ ॥

अरिल्ल—हं कवि कंद मित्त सेवह पर । अरु सुहित सामंत सूर बर ॥
बंधौं कित्ति प्रसार सार सह । अष्षों बरनि भंति थिति थह ॥
॥ छं० ९४ ॥ रू० ५० ॥

राजा परीक्षित को तक्षक वंशन और जन्मेजय की सर्पसत्र कथा ॥

हनुफाल - इति हनूफालय छंद । कल बरनि बरनि सुकंद ॥
नहि नाल पिंगल जोर । दुज हूँतो दुजनिय भोर ॥ ९५ ॥
संसार बंधन दोय । इक पढ्यौ विद्य समोय ॥
तन देइ अच्छर एक । नहि पिंग पिंगल मेक ॥ ९६ ॥
किहि काल मरन सुविप्प । लहि नाग रूप सु अप्प ॥
हरि हरचो बाहन आइ । तिहिं कह्यौ पिंगल चाइ ॥ ९७ ॥
दै विद्य रूप सु अद्ध । सो गयौ छल करि मद्ध ॥
सो तच्छ बीर प्रमान । जुग जुगनि निश्चल ध्यान ॥ ९८ ॥
इक हुतो सिंगिय रिष्य । तप करै बाल विसिष्य ॥
नृप गयो बर आखेट । दिषि श्रप्प मृतक बेट ॥ ९९ ॥
बाराह रूप प्रमान । लग्यौ सु ब्रह्म धियान ॥
दह बार बुझ्यौ राज । दुज दिय न उत्तर काज ॥ १०० ॥
लखि चित्त चित्र सपूत । यों भयो रिष अवधूत ॥
भयो ताम तामस राज । लियौ गोन मंच बिराज ॥ १०१ ॥

जोगराज । नालहिय । वज्रङ्गवाहु । अरि दल मलन । कुन्नी । चंद ॥ ४७ ॥ सुर ॥ ४८ ॥ मित । बंधो । किन्ति । अष्यो । निथि ॥ ४९ ॥

५० दृष्टि में रखने की बात है, जैसे महाभारतादि महा पुराणों में समग्र ग्रंथ के आशय का सार एक अथवा दो अथवा तीन अथवा चार श्लोकों में वर्णन किया गया है, वैसे ही चंद ने भी अपने इस महाकाव्य का सार इन (४८ से ५० तक) तीन रूपकों में वर्णन किया गया है ॥

५१ पाठान्तर —हनु फाल । हनूफाल । विद्यम । मोय । न । न । अछर । हयों । तिहिं । चायि । दे । तछा । जुगिनि । हुंतो । रीष्ष । बालवि । सिष्य ।

कम्मान कोनक संधि । नृपराज दुज गलबंधि ॥
फिरि गयो ग्रह प्रमान । आयो सु बालक थान ॥ १०२ ॥
खिजि कह्यौ नैन भरीव । तप्त ताम रूप सरीव ॥
पै जुन्न बालक बुल्लि । गलि गर्भ क्यौं न बितुल्लि ॥ १०३ ॥
तिहि तजिय तात हमान । धरि कोप अंग निधान ॥
करि क्रोध अंखि सुरत्त । हविजानि लग्गिय लत्त ॥ १०४ ॥
जिति जियत गुत्रह अप्य । को तात लभ्भय दप्य ॥
रिस करौं जोव प्रमान । जरै तीन लोक अमान ॥ १०५ ॥
रिस तेज कंपत बाल । दिष्यौ सु तात विसाल ॥
वह लग्गि ब्रह्म धियान । भयौ कोटि तामस नाम ॥ १०६ ॥
अति ना रत्न दिखि रिखि लोइ । दिक्या सु तात समोइ ॥
॥ छं० १०७ ॥ रू० ५१ ॥

कवित्त —जोरि हथ्थ थुति मंत्र । फिरयौ पर दच्छि लग्गि पय ॥
रुधिर नयन आरक्त । कंठ लग्ग्यौ सु मुक्कि भय ॥
भूत हार वोभार । गाजि आये सुत मग्गं ॥
भर भर भर उच्चार । रोस दावानल लग्गं ॥
जिहि हह्यो श्रप्प सो तात गर । गनिव सत्त दिन में प्रमति ॥
जो हत्यो श्रप्प तक्षक सुब्रत । कै काया अव्रत सुगति ॥
॥ छं० १०८ ॥ रू० ५२ ॥

साटक —धंन्यो धंन्य सु बाल तापन तपं । बाऊं बलं विव्हलं ॥
मोयं पुत्र कि सोम दोम त्रिविधं । बानीय गद् गद् गलं ॥

बुभयौ । दियऊ । चित्र । चित्रम । कोनक । नत्रि । तुल्लि । तिहि । अति लोल दिष्षि गिषि लोइ । लोई । ममोई ॥

हमारे पाठकों को ध्यान मे रखना चाहिए कि चद कवि ने इस कथा को महाभारत के आदि पर्व के अध्याय ४९ मे ५८ तक और भागवत मे पहिले स्कंध के अध्याय १८ और १९ और दूसरे स्कंध के पहिले १ अध्याय मे उद्धृत और संक्षिप्त करके वर्णन किया है। यदि कोई इस कथा और चंद के काव्य को उक्त भारत और भागवत से मिलाकर सूक्ष्म विचार कर देवे तो वह निःसंदेह यह अनुमान कर सकता है कि चंद संस्कृत भाषा अच्छी जानता था और ये बड़े बड़े ग्रंथ भी उसके पढ़े हुए थे, क्योंकि चंद के कोई कोई छंद उक्त ग्रंथों के श्लोकों के ठीक अनुवाद प्रतीत होते हैं। इस हनूफाल छंद के चारों पाद बारह बारह मात्रा के होते हैं॥

५२ पाठान्तर - फियौं । लग्यौ । विभार । जाजि । आइय । आईय । हृत्यो । प्रमत्ति । प्रमित्त कैकाया । सुग्रति ॥

५३ पाठान्तर —धन्यो धन्य । तनं । बाल । भरनं । तेजंन । विचोर । विघन ॥

एनं भूप विसाल भूमि भरतं । धम्मं धरा राजनं ॥
तं तेजं नवि चोर व्याघ्र विघनं । नैवापि सतापयं ॥
॥ छ० १०९ ॥ रू० ५३ ॥

दत्वा श्राप मिदं श्रुतं गुरु वरं । मृत्यं च राजा नय ॥
सत्यं सप्त दिनानि पानि पवरं । नैवं चलंते पयं ॥
त्वं श्राप त्रय लोक जालति बरं । भुल्ले बग तुत्रयं ॥
एकं दोह सुतप्प प्रापति पद । त्रैलोकय त्रासयं ॥
॥ छं० ११० ॥ रू० ५४ ॥

दूहा सब रिखि मे मो पुत्र तू । बय दिक्खौ परमान ॥
मानहु डम्बर मे उदै । बढति कला वर भान ॥
॥ छ० १११ ॥ रू० ५५ ॥

कवित्त पुत्र छडि रिखिराज । जाइ नृप थान सु वत्ता ॥
पंथ कुलह सग्रह्यो । रिष्षि श्रापान विरत्ता ॥
अति सु दीन ।सर नीच । ऊच नहि भाल उचाइय ॥
दिष्टि दिष्ट राजन चरित । मगन नृव आइय ॥
एकग एक जोगिन्द्र वर । धातु न बधे हथ्थ पर ॥
करि काज रिष्षि आयौ घरहि । उरह धरड्वर लग्ग डर ॥
॥ छ० ११२ ॥ रू० ५६ ॥

गाहा जो जप्यो रिष पुत्त । प्रलय होइ सत्तिय काल ॥
ज भावइ त ध्रम्म । सो किज्जै राजन बलय ॥
॥ छ० ११३ ॥ रू० ५७ ॥

त्रोटक—नृप छडि प्रजक प्रजंक पला । मुहु मुदिरु भानक मोद कला ॥
नृप दीन हल्यौ बहु चिन्त चितं । मुहल्या जनु पोनय पीप पत ॥
॥ छं० ११४ ॥

पतन गुर जानि चरन्न लग्यौ । बहुस्या रिषिराज सु प्रान दग्यौ ॥
॥ छं० ११५ ॥ रू० ५८ ॥

५४ पाठान्तर—म्रतच । म्रत्यच । पानिपवर । पय । श्राप ह्वालति । तैलाकय ॥

५५ पाठान्तर -मै । मे । तु । परसान । सवत् १६४७ की पुस्तक मे हमारा लिखा पाठ है और इतर पुस्तको मे "मानहु इदी वर उदै" है ॥

५६ पाठान्तर – जाय । सपत्तो । श्रापन । ऊच । नह । नहि । द्रिष्ट । नृप । जोगिन्द । हथ । किहि । घरह । उर । घर । अद्धर । लग्गि ॥

५७ पाठान्तर—जो । जंप्यो । पुत्र । भावै । भाव । इत । जो । कीजै ॥

५८ पाठान्तर—न्रिप । नृप । फला । इला । मुहुमदिरु । भान । कमोद । नृप । बहुचित । जुनु । योनय । बहुयौ । किसी पुस्तक मे सु शब्द नही है ॥

गाहा— मनो रिषि हथ्थं प्रानं । वल्लीकं जीवनं गुरयं ॥
जो फल लग्यौ पच्छ । तौ कालं रिष सो बरयं ॥
॥ छं० ११६ ॥ रू० ५९ ॥

दूहा—इय चिंतय रिषि राज गुर । पुच्छिय अन रिष राज ॥
क्यौं उधार होई श्राप बर । करो कृपा करि आज ॥
॥ छं० ११७ ॥ रू० ६० ॥

कवित्त— मद भंडी इक पुरुष । निसा भइव अध रत्ती ॥
वरगना अंगने । डस्यौ अहि परत धरत्ती ॥
सुरापान आमिष्ष । गयौ करहुं तब छुट्टिय ॥
उच्चारत हा राम । जाय वैकुंठ सु ठट्टिय ॥
परताप नाम सद् गति भइय । कीर कहत परिषत सम ॥
भागवत्त मुनहि जो इक्क चित । तौ सराप छुट्टय अक्रम ॥
॥ छं० ११८ ॥ रू० ६१ ॥

ज दिन श्राप तुहि भयौ । न दिन परसोक घर ध्घर ॥
पसु पषि जल छडि मुनिवर समाधि उर ॥
छडि चक्र हरि रष्षि । कूप तूं मात परिष्यत ॥
पडव वम प्रतप्प । नषन ध्रम धारी दिष्पत ॥
अचग्जिज कहा तुम उद्धरन । होइ प्रसन सुकदेव कहि ॥
दिन सत्त अवधि अंतर बहुत । हरि सु उड्वरै छिनक महि ॥
॥ छं० ११९ ॥ रू० ६२ ॥

धरनि रूप करि धेन । ध्रम्म बछरा संग लीयैं ॥
झारषंड महि चरत । देषि कल्युग कुपि हीयैं ॥
चरन तीन भज्जंन । प्रजा सब आय पुकारिय ॥
चढि करि तें नृपराज । वध्थ परि ताहि बछारिय ॥

---

५९ पाठान्तर - प्रान । वलीक । लगौ । पछ् । पछ । तो । इस के छंद का नाम सं० १६४७ की पुस्तक में गाथा है ॥

६० पाठान्तर चिंतन । रिषिराज । पुछिय । होय । आप ॥

६१-६३ ये तीन रूपक सं० १७३० और सं० १६४७ की पुस्तकों के अतिरिक्त उनसे पीछे की जितनी पुस्तकें अब तक हमारे देखने मे आई हैं उन सब में हैं, परन्तु जब तक उन से भी पहिले की पुस्तकें न प्राप्त हो तब तक इन रूपको को हम निश्चय रूप से क्षेपक नही कह सकते । इनके पाठान्तर ये हैं— अधरत्ती । बारंगन । अंग । ने । काहुं । भगवत्त । जोइ क्कचित ॥ ६१ ॥ जदि । स । तदि ।

किहि कीर अंग लग्गौ परस । तिहि कारन इह उपज्जिय ॥
आषेट जाय पन्नग मृतक । सिगी, गर घतिय, षिज्जिय ॥
॥ छं० १२० ॥ रू० ६३ ॥

त्रोटक—इति त्रोटक छंद सुमंत गुरं । दिन सात पढ्यौ हरि गंग कुरं ॥
त्रितकाल विकालह चित्त धरं । क्रित पत्त छिमा पिबु लाइ भरं ॥
॥ छं० १२१ ॥

नृपराज परीछत तत्त गुरं । धरि ध्यान कह्यौ बदलीष धरं ॥
इन काल सु तप्पय देव नरं । नृप ग्यान सुन्यौ बपु व्याम वरं ॥
॥ छं० १२२ ॥ रू० ६४ ॥

साटक —या विद्या बदलीत राजन गुर । श्रापो रिषं तारय ॥
शून्य राज सु इन्द्र धारन धर । विद्या अमारा पुरं ॥
ग्रम्भोयं मुघन तु मातुल इय । मोह हरित्तारयं ॥
सो ध्यानं रिषिराज राजन वर । पापापहार पर ॥
॥ छं० १२३ ॥ रू० ६५ ॥

चौपाई अति किसलय सुम कोमल अग । जानु कि मुक्किय देहिय अंग ॥
किष्ण दिपायन दीपन व्याम । कोपिन एकिन मडल त्रास ॥
॥ छं० १२४ ॥ रू० ६६ ॥

दूहा- किसनदीप दीपायनह । कही रिषी सब बत्त ॥
जु कछु मराप सु उच्चया । परनराज गुरु गत्त ॥
॥ छं० १२५ ॥ रू० ६७ ॥

कवित्त तितै आय बर ब्रह्म । अप्प रिषि रिषि सु पुकार ॥
कै तच्छक नृप हतहु । न तरु तच्छक मर धार ॥
उभय चित्त चितयौ । भइय श्री नाग सु मान ॥
नृप न हतो तौ मरन । अहित नृप रिष्ष निधानं ॥

न । परिसोक । घर । रषि । परीषत । प्रतप्य । प्रतषि । प्रमन्न । धम । सग । लियै । हियै । बप्य । परिताहि । घतिय ॥ ६३ ॥

६४ पाठान्तर - तोटछद । किल । पिबुलाइ । त्रितकाल । नत । नृन ।

६५ पाठान्तर - गुरु । ग्रम्भोयं । मुधन । मातुल । तारय । ध्यान । राज ॥

६६ पाठान्तर —सु । सकोमल । देहीय । अय॰ ' किम्वा । दीपायन । चन्द्रायना ॥

६७ पाठान्तर —रषी । वत । जु । उधर्यो । आगत्त ।

६८ पाठान्तर—तछक । हतहु । तजक । भई । भइय । मान । तो । निधान । धरि । चित । ध्यान ।

दुअ भंति चित्त चिंता सुचित । धरिय ध्यान चित जान जिय ॥
सत विप्प आइ लिय बोर बर । आय हथ्थ राजन सु दिय ॥
॥ छं० १२६ ॥ रू० ६८ ॥

कवित्त दिय हथ्थं मधि कीट । सुफल लेइ राजन धारिय ॥
क्रल लंछन लागंत । निकरि कीटं क्रित कारिय ॥
क्रिकनक मधि बाढंत । भए फुनि पंचनि नारिय ॥
नृपय हुकम मुष दियौ । कतौ सो काम करारिय ॥
फिरि आय राय दिष्टह बचिय । क्रम्म महि उसनह फनिय ॥
जं जाह जोह कलि हंस कृत । भइय देह ब्रन श्रप्यनिय ॥
॥ छं० १२८ ॥ रू० ६९ ॥

तब जनमेजय पुत्त । दिहा दच्छिन जन मुक्किय ॥
तहां धन अंतर वेद । दरक चढ़ि लेन सु तक्किय ॥
करिय षेद चलि अप्प । सहम चेला मंग धारिय ॥
आस्तीक जु धुर नाग । तब सु तच्छक विच्चारिय ॥
छल तक्कि रूप लकुटी भइय । ग्रहिय गुरु पुठ्ठें डसिय ॥
भष काज सिष्ष सिप्यां दइय । विप्र रूप तच्छक हँसिय ॥
॥ छं० १२७ ॥ रू० ७० ॥

दूहा—आस्तीक जु गूर वैर कजि । पढ़ि विद्या ग्रह नाग ॥
जनमेजय न्रिप सों मिलिय । मंड्या श्रप्पन जाग ॥
॥ छं० १२९ ॥ रू० ७१ ॥

कवित्त— ति ह्रित वैर सिहु बरन । सपत विप बोल मु चारव ॥
नृप जनमेजय नाम । भयौ तामम उत गारव ॥
तात वैर सिसु दष्षि । जियन सोइ लोइ विचारै ॥
जानिहु वातन हृरिय । मच्छ बंध्यौ जनु जारै ॥
होमंत सक्ति तच्छक सु नग । इन्द्र सरन पत्तौ तबै ॥
सुनि कन्न राज तामस भयौ । करहु मंत्त साधन सबै ॥
॥ छं० १३० ॥ रू० ७२ ॥

---

६९ पाठान्तर— भरा । किसी किसी पुस्तक में सो शब्द का पाठ नहीं है । आई राइ । दिष्ट । भईय । भईये ॥

७० पाठान्तर—दछिन । जनमु । किय । धन । अंतरवेद । सुत । किय । तिछक । छलन । कि । भईय । युद्धे । सिष्य । सिष्या । दरहू । तछक ।

७१ पाठान्तर—निहित । बदस । यत । विप्यं । मचारत्र । रांष्य । आनलु । बात । नृहरिय । मछ । होम । मंत । तछक । पतौ । कनी । मंत्र ॥

७२ पाठान्तर— करि । अस्तुति । स्वाहा । सारन । तिन । सह ॥ इस

भुजंगी —करी अस्तुती यं स्वहा इंद्र जोगं । तहा इंद्र आयो सुरं नाग भोगं ॥
इतं देव सादेव सारन्न आयौं । तिन काटि दीयंत सो पाप पायै ॥
॥ छ० १३१ ॥ रू० ७३ ॥

कवित्त अभय दान आतुरह । अनं उग्राह पान दत ॥
मरन रष्षि भय नरन । कढ्ढि मुक हित्त छडि मत ॥
तय लगि कग्ग कराल । स्वान मसन ऊ बामै ॥
रुधिर चरम अरु असति । वस्त वस्तन ऊ नासै ॥
जो इय जोइ जग उच्चरै । जननि जाय ग्रम्भह गरै ॥
तिन काज राज प्रारथ्थिये । जियन तछक तन उब्बरै ॥
॥ छ० १३२ ॥ रू० ७ ॥

दूहा -नृप चिंता बहु लग्गि मन । ज्यौ जुथ वाय त्रिकाल ॥
यौ नृप गजत राज कुल । पुनर जनम दुप ज्वाल ॥
॥ छ० १३३ । ।रू० ७५ ॥

वर्तमान आबू पर्वत के उद्धार की कथा ॥

उस तक्षक का आबू पर अपना अर्बुद नाम धर रहना ॥

कवित्त स तछ आबू प्रमान । मडीयौ सू अचल कर ॥
गरब गरुर ते बिडुरि । सुडरु रष्यौं जु मत धुर ॥
अचल ईस प्रति ताम । अचल आचित्त अचल धर ॥
देव देव प्रारथ्थि । इन्द्र मुक्किय छड्डिय धर ॥
अरबुद नाम धर जुत्तिया । दूर तषित थहराइया ॥
कलपान पुहप अरु बस्त गुरु । छाह गुरू गुर छाइया ॥
॥ छं० १३३ ॥ रू० ७६ ॥

रूपक के छद का नाम हम ने शोध करके भुजगी रक्खा है और स० १६४७ की तथा स० १७७० की पुस्तको मे भी यही नाम लिखा है किंतु इतर पुस्तकों में चंद्रायना नाम लिखा है वह अशुद्ध है ॥

७३ पाठान्तर—आतुर है । अन । कढि । मु । कहित । तुय उ । उं । जोइयै । सभइ । कारज । प्राथिय । उबरै ॥

७५ पाठान्तर— त्रिम । पुनरजनम ॥

७६ पाठान्तर—सो । तक्षक । आ । चित । बर । नुकिय । छडीय । जुतिय । तष्यित । छाईया । स=वह का वाचक और तछ=सर्प=तक्षक का वाचक, जैसे, रू० है ५१ की ८ तुक में तच्छ प्रयोग हुआ हैं ॥

गालव ऋषि के शिष्य उत्तङ्क का उपाख्यान

दूहा—सो आबू उद्धार विधि। कहों कथा * परबंध ॥
ज्यौं अनादिआ रिष्य मुष। सुनी सु गुर समबंध ॥
॥ छं० १३४ ॥ रू० ७७ ॥

गुरु गालब उत्तंग सिष। बहु विद्या पढ़ि जाम ॥
पय लग्गौ गुर राज कें। कहौ दछछना कम ॥
॥ छं० १३५ ॥ रू० ७८ ॥

वाघा—गालव रिषि सिष्य उत्तंग। दिय विद्या बुध क्रम क्रम अंग ॥
गुर दष्षिन कज्जै गुर जच्चै। गुर पतनी तब मंगि बिरच्चै ॥ १३६ ॥
कुंडल जच्चि षित्रिया कानं। अप्यौ जासु दष्षिना दानं ॥
दिवस अठ्ठमो ब्रत अषंडै। चरचों दान विप्र श्रुत मंडै ॥ १३७ ॥
चल्यौ रिष्षि चमंके ताम। गुर गुरनी कों करै प्रनाम ॥
चिंतत इष्ट चल्यौ बर राहं। संपत्तौ यौं सद नृप टाहं ॥ १३८ ॥
जच्च कुंडल षित्रिय पासं। सोइ समप्पै बिधि वर तासं ॥
विप्र प्रसंसै समपे कुंडल। कहि डर तच्छक बीच नीच षल ॥ १३९ ॥
लै कुंडल चल्यौ हरषे मन। श्राप्यौ राज विप्र अन्यो अन ॥
क्रम्यौ विप्र राह चंचल चर। छलि तच्छक लीनें कुंडल वर ॥ १४० ॥
क्रमयौ बिप्र पुठ्ठि अति चंचल। धरि अहि रूप सु गयौ रसातल ॥
बिल इच्छै ठढ्ढौ रिषि तामं। दुमन चिंत भय विहत विरामं ॥ १४१ ॥
अस्तुति इन्द्र करन लग्गौ रिषि। नंप्यौ वासव पिनक वज्र सिषि ॥
ब्रित अग्निन दीयौ आषंडल। धर रिषि तक्कि षात बिल मंडल ॥ १४२ ॥

---

७७ पाठान्तर—रिष्य ॥

७८ पाठान्तर—उतंग। जाम कै। दछना ॥

* हमारे पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए कि चंद अर्बुद के उद्धार की कथा अर्बुद खण्ड अर्थात् आबू माहात्म्य नामक संस्कृत ग्रंथों में संग्रह करके वर्णन करता है। जिन पाठकों के पढ़ने में अथवा सुनने में ये ग्रंथ आए हैं वे जान सकते हैं कि कवि ने थोड़े में बहुत ही आशय लिया है और उत्तङ्क का उपाख्यान महाभारत के आदि पर्व के पौष्यपर्वाध्याय नामक द्वितीय अध्याय में से भी कवि ने संगृहीत किया है ॥

७९ पाठान्तर—उत्तंग। दछिन। गुरपतनी। दक्षिना। अषंडे। मंडे। करे। संपतो। निप। प्रसंसे। समप्पै। तच्छक। बीच। रषै। अंचल। इषै। इषे। ठढौ। ताम बिराम। वज्ज। आग्रत। दियौ। रिकि। पैठो। बैठो। धोमं। ठांम। बिराम। फेरै। वाहु। जो। तामं। बे। हुय। वे। ईस। मकामं। बेइम। सठि।

पैठो बिप्र नागपुर ठामं । धोम प्रगट्टै मंत्र विरामं ॥
इष्षौ पुरुष एक षट आरं । फेर चक्र तास फिरि तारं ॥ १४३ ॥
इष्षौ बाह् बाह् सत बारं । उंच तेज आजेज अपारं ॥
यौं नर नारि अषै बर नामं । वे अह् हथ्थ वेई सम कामं ॥ १४४ ।
त्रिसत सट्ठि तां तंति ठायं । अद्ध सेत्त स्यामं अध तायं ॥
अहि धुत्तेन उपाइ सुवाहं । फुंकत पुंछ सधुम्म सराहं ॥ १४५ ॥
पुंकत पुंछ धार धुस चल्ली । लग्गै नाग अंग सह् थल्ली ॥
प्रगटे अंसू पलक उघ धत्ति । अप्यौ कुंडल नाग मान हति ॥ १४६ ॥
ग्रिह कुंडल अप्पे गुर वामं । गुर विद्या अप्यी अभिरामं ॥
दुज वर बज्र पैठ जेहा धर । बिल्ल अभ्रित तिह थांन मंडि थिर ॥
॥ छं० १४७ ॥ रू० ७९ ॥

दूहा —बिल अथाह निहि थान भय । बहु संवछर वित्त ॥
पृथुल कराल कराल भो । जिम जिम काल बितित्त ॥
॥ छं० १४८ ॥ रू० ८० ॥

वशिष्ठ ऋषि का आबू पर तप करना और उनकी नंदनी गौ का अथाव बिल में गिरना ॥

पद्धरी-किहि समय ताम वाचिष्ट रिष्षि । धर अटन करन सम आइ सिष्ष ॥
सिवपुरि सु सोभ तारन्न व्रन्न । सुभ थान इष्ष आमोद मन्न ॥ १४९ ॥
बर इष्षि ठाम विश्राम ताम । अनेक रिष्षि किय तह विश्राम ॥
तिहि समय चरनिय होम धेन । सामीप समंपी बिलह तेन ॥ १५० ॥
अध इष्षि इष्षि भ्रमेव गाव । मुछेव परिय मझि बिल्ल अथाव ॥
हुअ होम काल आवी न धेन । चिन्नै सु रिष्षि कारन्न केन ॥ १५१ ॥
वल जंप लह्यौ गो पात थान । तहां गयौ रिष्षि सिष्पह समान ॥
उतकंठ बिलह ठढ्ढो सु रिष्षि । नंदिनिय नाम कहि सदिनि सिष्षि॥१५२॥
क्रन्दन्न गाव संपत्त वच्च । हंभार कियौ सुर उच्च तच्च ॥
सुन्ने वचन्न सावच्छ भ्रम्म । चित्ते सु रिष्षि निक्कास क्रम ॥ १५३ ॥
॥ छं० १५३ ॥ रू० ८१ ॥

ता । तति । ठाय । उपाय । स्याम । धुत्तंन । फूकत । सधुम । धुन लगे । गली । अंशू । कुंड । अप्यौ । हित्ति । मनि । यही । राम । पेठि । आभ्रेन । अभ्रित ।

८० पाठान्तर —वित । प्रिथुल । प्रथार विवित ॥

८१ पाठान्तर —वासिष्ठ । सिव । पुरिस । सपन्न । इषि । भ्रमेव । सपतीय । । परित । हबिल । आवीत । ध्रीन । चितै । गोपात । सिष्पहि । उतकंठ । । सदति । क्रन्नेन । व्रन्नेन । क्रनेव । संभार । रंभार । ऊंच वचन । सावछ । । चितै । रष्षि । निरक्कास । क्रम ॥

वशिष्ठ ने अपनी गाय निकालने को गंगा का आह्वान किया ॥

दूहा—चिंत अनेकह बिधि विवर। विल नंदिनी निकास ॥
मंत्र रूप गंगा तवन। लगो करन रिष तास ॥
॥ छं० १५४ ॥ रू० ८२ ॥

भुजंगी—नमो देवि गंगे जयो मात गंगे। द्रवै रूपका मंडलं ब्रह्म संगे ॥
त्रयं पथ्थ त्रेयं गुनं ते निवासं। वसं वृंद वृंदारका सेव जासं ॥ १५५ ॥
हिमं सैल भेदे सु भेदे धरायं। सजै रूप कायं सुरायं नरायं ॥
मधू छेदनं पाय प्रावेस कारी। सतं मुष्ष सामुष्ष सामुद्र धारी ॥ १५६ ॥
हली सेत झल्ली जलद्धी समुद्दं। अवै सेष षीरं सु मानौ समुद्दं ॥
धराचल्लि भागीरथी विश्व भागं। मिटै अघ्घ ओघं तनं दुष्ष दागं ॥१५७॥
सुभं उच्च अंदोल बीचं बिराजं। मनो स्तुग्ग आरोह सोपान साजं ॥
नरं नीच नीरं तटं श्रोन प्रम्मं। तवै श्रग्ग देवं गुनं श्रब्ब श्रम्मं ॥१५८ ॥
परै मझ्झ कल्लेवरं धंषि छुट्टी। भषी कावलं गिद्धि गोमाय लुट्टी ॥
तटं श्रोन झल्लै थलं वारि हल्लै। षिनं मझ्झि अंदोल बीचं वहल्लै॥१५९॥
तिनं आतमं देह आनूप धारै। वरं उर्वसी चामरं बिम्ब नारै ॥
धरै ध्यान भावं तिनं दुक्ख दब्बै। मिटै मज्जनं अघ्घ साजंम सब्बै ॥१६०॥
झलक्कंत गंगा तनं तेज सोहै। मनौ दाहनं दाह दाहंस्र जो है ॥
सुयं गंग गंगे सु गंगा प्रकारं। हरै नाम गंगा जमं किं करारं ॥ १६१ ॥
त्रिपथ्थी त्रिगामी विराजंत गंगा। महा स्वग्ग लोकं नरं नारि अँगा ॥
रहट्टं घरी ज्यौं फिरै तीन लोकं। महा दिव्य धुन्नी तवं निग्म लोकं॥१६२॥
कलाली गुहीरं गुफा फारि नागं। प्रगट्टीय मातंगि मानुष्य भागं ॥
रही नष्ष अष्षी सुयं ताप भंजै। महा वद्दराजं दिवं दुर्ग रंजै ॥ १६३ ॥
भयं भीषमं मात बहु पाप षडं। जमं ज्वाल ज्वालं तमं तेज चंडै ॥
रहं रोह रंगो हरं सीस गंगे। महा मोहनी मात दुग्गा उतंगे ॥ १६४ ॥
बरं काल काला जलं स्वेत रूपं। तहां उप्पनी मात आभंग नूपं ॥
भई गाम सद्दं सु हामुद्द मेतं। डस्यो नाम गंगा उतंगा विहेतं ॥ १६५ ॥
हरद्वार द्वारं कलां तूं प्रगट्टी। करी मुक्ति मग्गं महा पाप मट्टी ॥
तिनं नाम लीनैं कियं तोय पीजै। कियं संभ्रनं देव संज्यान कीजै ॥ १६६ ॥

---

८२ पाठान्तर—अनेक। ह। निकामी लगो।

८३ पाठान्तर—देव। द्रवे। रूषका। पृथ। गुनंत्रै। निकाम। व्रंद। व्रंदारका। मुष। सामुष। जलधी। समद्दं। मामुनो। धरा। वल्ली। नीर नीचं। स्रग। कलेवरं। मधि। बीचिव। मंजने हल्लै। अप सा। जम। दाहनं। जोहै। त्रिपंथी। नाग। घटा ताम। मंगा। महादिव्य। नवं। निगम। महावद्दराजं। वदिव दुर्गं। भीषम। ज्वालं। महामोहनी। अनूपं। धर्यौ। समरनं मंस्या। मोछ। मोक्ष। दुपस्र ॥

कियौ गाहि तें पंथ उग्गाहि राजं । तुंही तारिनी तेज तूं तेज राजं ॥
तुंही मध्य वारानसी मोक्ष देनी । कली काल दुष्षं कठन्नं क्रपैनी ॥
॥ छं० १६७ ॥ रू० ८३ ॥

दूहा -जब लगि रज तन मात की । रहै अंग सो लाइ ॥
तब लगि काल न संपजै । क्रम्म पाप सब जाइ ॥
॥ छं० १६८ ॥ रू० ८४ ॥

गाथा -क्रम्मं अघं सब भंजै । दिव्यं करै देह सा रूपं ॥
सुरगं करै सु गामी । अद्धं नाम रसन उच्चारं ॥
॥ छं० १६९ ॥ रू० ८५ ॥

मंदाकिनी गंगा का उभरना और गौ का निकलना ॥

दूहा -सुनि गंगा सुवयन्न रिष । उभरी आय प्रमान ॥
ताहि तिरंनह नंदिनी । आई तट बिल थान ॥
॥ छं० १७० ॥ रू० ८६ ॥

रिष्ष सिष्ष ध.ये सु सब । सब घर कड्ढी तेंह गाव ॥
सो कड्ढवि मंदाकिनी । गइ पयाल फिरि ठाव ॥
॥ छं० १७१ ॥ रू० ८७ ॥

विल अथाह दिष्यो सु रिष । चित चिंता पर पत्त ॥
को निकसै या माधिगत । गात भयानक षत्त ॥
॥ छं० १७२ ॥ रू० ८८ ॥

वशिष्ठ ऋषि का उस अथाह बिल बूरने को हिमालय के पास एक पुत्र मांगने जाना ॥

बिअष्षरी-चिंते रिष्षि देखि बिल दुक्रित । उर लग्गी अति चिंत मज्झि हित ॥
पूछवि रिष्ष सिष्ष क्रत कामं । लहै न कोइ बुद्धि बल तामं ॥ १७३ ॥
चिंते ध्यान अप्प रिष्षि राजं । याहि सपूरन को थिर काजं ॥
चिंतत रिष्षि ध्यान उर भासं । है सत पुत्र हेम गिरि जासं ॥ १७४ ॥
एक पुत्र जाचों तिन पासं । बिल पूरै पूरै उस आसं ॥
क्रम्यौ राज रिषी दिसि उत्तर । देषी मन आनंद दिव्य धर ॥ १७५ ॥

---

८४ पाठान्तर -सोलाइ ।

८५ पाठान्तर -क्रम । सारूपं । सुगाभी ॥

८६ पाठान्तर -सुनयन । तिरत ॥ ८६ ॥ धाए । कढी । तहां । कढवि । गई । ठांव ॥ ८७ ॥ परयत । मधि । षत ॥ ८८ ॥

८९ पाठान्तर -चिंते इक्रन । कोई । संपूरन । नासं । हेमगिरि । पुत्र एक । पू । पूरं । रिषि । उत्तर । मान । रिषिराज । गिरि राजं । इच्छे । मेना । पय । आगे ॥

गो रिषि राज पास गिर राजं । इष्ष अग्ग पति आसन साजं ॥
मैंना सहित आप पग लग्गे । अरघ पाद करि अचवन लग्गे ॥
॥ छं० १७६ ॥ रू० ८९ ॥

दूहा सुनि सुवचन गिरि राज कौ । कहि रिषि कारन षात ॥
पुत्र एक जच्चं तुमहि । गरित सपूरन गात ॥
॥ छं० १७७ ॥ रू० ९० ॥

हिमालय का अपने सब पुत्रों से ऋषि का अभिप्राय कहना ॥

कवित्त- तव सुचिंत गिर ईस । पुत्र सद्दे निज सब्बं ॥
कहि कारन षिति षात । अप्प रष्षौ कुल अब्बं ॥
इह सुरिष्षि सुत ब्रह्म । नाम वाचिष्ट महामति ॥
धर्म पार तप पार । पार श्रुत कर्म परम गति ॥
जच्चे सु सोइ तुम एक कहुँ । चिंतिय चत कारज्ज रिषि ॥
मंव सो वास विल्ल उद्धरौ । पद पामौ परमुच्च अषि ॥
॥ छं० १७८ ॥ रू० ९१ ॥

हिमालय के बड़े पुत्र का उत्तर देना।

कवित्त- तब अष्षहि अग्र पुत्त । सुनहु गिरि राज चिंत चित ॥
पिना वाच रिष काज । कोइ छंडहि सुक्रम्म हित ॥
उह सु भूमि निषेद । थान जानहु तुम सब्बं ॥
ध्रंम क्रंम अरु देव । सेव जाजन नहि अब्बं ॥
कुच्छित्त देम कारन विक्रम । तहँ मु केम किज्जै गमन ॥
अप्पियै प्रान मांगै जो रिषि । पै दुष्ट थन थप्पहिँ न तन ॥
॥ छं० १७९ ॥ रू० ९२ ॥

वशिष्ठ का प्रत्युत्तर दे कहना कि वह भूमि बड़ी रम्य है

कवित्त—तव जपे सुत ब्रह्म । सुनौ गिरि राज पुत्र सम ॥
इहि सु भौमि बिल थान । रम्य मंडहि सु तप्प हम ॥
मबै देव इहि वास । तिथ्थ सब्बै रिषि सब्बं ॥
विप्र ब्रक्ष बर वल्लि । सु गुनि गध्रव सब कब्बं ॥

---

९० पाठान्तर—गिरिराज । संपूरन ।

९१ पाठान्तर—ईसं । रष्यो महामति । परमगति । कहु । संव । संवसौ : परमुच ।

९२ पाठान्तर—गिरिराज । मुक्रम । हब्ब । अब्ब । तहा । कहहां । पै ॥

९३ पाठान्तर—जंपे । सुअ । गिरिराज । तिथ । गंध्रर्व । मूर्तिमाम । सज्बै । बिसर । धाम । महि ॥

किन्नरंह क्रंम सुत धर्म धर । मुरति मान सज्जैति सिर ॥
हरि ब्रह्म ईस संवास सह । जो आश्रम हि एक्क गिर ॥
॥ छं० १८० ॥ रू० ९३ ॥

और वहां आगे वाल्मीकि ऋषित्व को प्राप्त हुए हैं

पद्धरि--रमनीक ठाम वाचिष्ट राज । तहां बसहि देव देवह बिराज ॥
इहि थान पुव्व क्रत युग प्रमान । रिषि कियो तप्प ज्जर्जित विधान ॥१८१॥
बाल्मीक वीर एक वधिक रूप । अति पाप क्रंम आघात कूप ॥
भंजै सु मग्ग तिन ध्रम्म थान । पायौ सु हरिय दरसन विधान ॥ १८२ ॥
चित संष चक्र गद पदम बाहु । तन स्याम सुभित पीतह प्रवाहु ॥
दिष्ष्यौ सु लछो तन रूप भील । कीनी नह तन तिन निमष ढील ॥ १८३ ॥
आयौ सु दिट्ठ गोबिन्द वीर । जानी न पुव्व ध्रम्मह सरीर ॥
छिति दिष्षि दिट्ठ कामह करूर । बिद्यो सु पाप मथ्थां समूर ॥ १८४ ॥
तब आय रिष्ष उपदेस दीन । किहि काज इहां यह क्रंम कीन ॥
भग्नी रु वंध निय मात पुत्त । बंटहि कि पाप पापह सजुत्त ॥ १८५ ॥
तिहि जाई कह्यौ वर भील मान । बंट्यौ न पाप किन अंग थान ॥
लग्यौ चरन्न कर धनुष तोरि । आघात घात बानी सजोरि ॥ १८६ ॥
व्याघात नाम सों व्रधिक थान । भ्रम भ्रम्यौ इक्क वृछ्छह निधान ॥ *
॥ छं० १८७ ॥ रू० ९४ ॥

गाथा यों कहियं रिषि राजं । तुम कोइ दिवस भ्रमन करि अथ्थं ॥
फुनि हम दरसन प्रायं । सथ्थं गुर मंच दे कानं ॥
॥ छं० १८८ ॥ रू० ९५ ॥

मरां मरां यह कहिं । गहियं भगताय अंगयं नेहं ॥
भिद्दे तु चक्रम मंटी । दट्टी निय श्रब यो देहं ॥
॥ छं० १८९ ॥ रू० ९६ ॥

दूहा -बांबी फिर अंगह वली । अंग उदैही जाम ॥
झीन सवद मुष निक्कसे । धीर धीर कै राम ॥
॥ छं० १९० ॥ रू० ९७ ॥

९४ पाठान्तर - जु । धर्म । दर्सन । लछि । वीर । धर्मह । धरमह । विद्ध्यौ । मथांम । भूर । रिषि । इह्यां । रह्यां । क्रम । त्रिय । पुत । संजुत । चरन । तोरी । भ्रम्यो । इक । वृछ ।

* यह पंक्ति कर्नेल टाड साहब वाली पुस्तक में नहीं है ॥

९५ पाठान्तर --कोई । प्रमं । समथ्थ । मरा । मरा । गहिय । भद्दे । अब । अबयो ॥

९६ पाठान्तर—बांकी । निकसी । कै ॥ ९७ पाठान्तर—दिषि । रिषि ॥

तब धरि मधि कढ्यो सु रिषि । दिष्षि प्रबल तप पार ॥
बालमीक रिषि सो भयो । सुनि गिरि सुअन बिचार ॥
॥ छं० १९१ ॥ रू० ९८ ॥

हिमालय के मध्यम पुत्र नंद का वशिष्ठ के साथ
आना स्वीकार करना ॥

कवित्त— सुनि सु वचन गिरि सुअन । सर्व बिधि राम बाच रहि ॥
मध्य पुत्र गिरि नंद । सोय उच्चयो वाच सहि ॥
हौं सु पंग बिन पाय । क्रंम्मि सक्कों न राह दुर ॥
जाय परौं षित षात । करो उद्धार वाच धुर ॥
पित बाच राम सज्यौ सु बन । बाच मु हरिचंद्र अव्व वहि ॥
सोइ बाच तात क्रत कज्ज रिषि । कोइ सचुक्कहि मुष्ष महि ॥
॥ छं० १९२ ॥ रू० ९९ ॥

वशिष्ठ का अबूर्द नाग से कहना कि जो तू नन्द गिरि को
उठा ले चले तो हमारा कार्य सिद्ध हो ॥

पद्धरी अर्बुदा अचल अर्बुदति नाम । क्रित काम पयह षोरो सु काम ॥
धर नंद नंद नंदन प्रमान । उच्चार सार लै जाहु थान ॥ १९३ ॥
रुंधी सु गाय वन व्याघ्र क्रोध । आयौ मु राज राजन समोध ॥
कुरु लाय करिय करुना मु धेन । छंडाय राज राजन बलेन ॥१९४॥
तन धरिग कर्यो जज्जर सरीर । दिष्ष्यो न सिघ तहां निमप तीर ॥
सु प्रसन्न गाय धेनक सु रिष्षि । कीनौ जु अंग द्रप्पक विसिष्ष ॥ १९५ ॥
थन थान दिष्षि अर्बुदा राज । रिष कहै जोग हो चलन साज ॥
॥ छं० १९६ ॥ रू० १०० ॥

अर्बुद नाग का कहना कि जो मेरे नाम से तीर्थ प्रसिद्ध
हो तो मैं नंदगिरि को उठा ले चलूं ॥

कवित्त तब तवि अर्बुद नाग । मित्र गिर नंद हित्त हिय ॥
हौं उद्धरी लै जाउं । तिथ्थ मो नाम नाम दिय ॥

---

९८ पाठान्तर —गिगिरं । मोइ । हो । उच्चर्यो । गाइ । क्रमि । क्रंमि । सकों । सक्कों । मक्कै । परों । करों । कोई । चुकहि । मुख ॥ इस रूपक की पांचवी तुक के बाच और सज्ज्यौ शब्दों के बीच में राम शब्द किसी किसी पुस्तक में लेखक ने लिखना छोड दिया है । तथा इसी तुक के दूसरे पाद का पाठ हमारे पाठ के सिवाय किसी किसी पुस्तक में "पिता वाच सिर अबु वहि" करके भी है ॥

१०० पाठान्तर —इस की पहिली तुक के पहिले पाद का पाठ हमने स० १६४७ की पुस्तक से रक्खा है । सोसाइटी की छापी हुई तथा अन्य पुस्तकों में "अर्बुदा सकल अर्बुद्द नाम" करके पाठ है । क्रत । पोरौ । गाव । बिन । कुरुना । कर्यो । सीह । तिहां । कितौ । द्रपक । द्रप्यक । जो । गहूं ॥

तब नंदी उच्चरयौ। होहि तो नाम तिथ्थ हित ॥
सु रिष्षि कज्ज सुद्धरहि। सु रिन उद्धरहि वाच पित ॥
थप्पी सुबत्त अर्बु उरग। सु रनि सीस नंषे सु मन ॥
पय परसि मात पित बंध अग। सुअ सुहेम कीनों गमन ॥
॥ छं० १९७ ॥ रू० १०१ ॥

अर्बुद नाग का नंदगिरि को उठा लाकर बिल में रख देना ॥

कवित्त -तब नियं अर्बुद नाग। कंध उद्धरयौ नंदि नग ॥
मग्ग अग्ग गिरि राज। रिष्षि संचरयौ सथ्थ अग ॥
साध सिद्ध सुर सुरह। सुमन नंषे उच्चरि सह ॥
रिषि अग्ग गिरि पच्छ। आय संपत्त तथ्थ षह ॥
प्रविस कियो गारत्त गिरि। जय जय वचन सरीर हुअ ॥
भौ मगन सुतन सव्वै सु गिरि। उबरयौ नाक सुनाग धुअ ॥
॥ छं० १९८ ॥ रू० १०२ ॥

बिल का पुर आना और पुष्पवृष्टि सहित जयजयकार होना ॥

दूहा -उबरयौ नाक सु नाग धुअ। दिव अस्तुति परमान ॥
पुहप वृष्टि हथ्थां करिय। जयजय बंध्यौ तान ॥
॥ छं० १९९ ॥ रू० १०३ ॥

नग का हिलना ॥

दूहा -गात सकल गिरि जात को। सब बूड्यो सम नाग ॥
उबरि नास सैलह तहां। सो हलही बिन लाग ॥
॥ छं० २०० ॥ रू० १०४ ॥

---

१०१ पाठान्तर -हित। तिथ। उच्चयौं। हो। हितो। सुरसि। सुद्ध। रहि। उद्ध। रहि। वत। अरवुद। धय। इस रूपक की दूसरी तुक का दूसरा पाद और तीसरी तुक जो वेदले वाली पुस्तक सोसाइटी में है उस में लेखक की भूल से नहीं है; अन्य सब में हमारा लिखा पाठ है ॥

१०२ पाठान्तर -उद्धयौं। नन्दिग। अग्गा। गिरिराज। रिषि। संचयौं। अग्ग। सिद्ध। उचरि। अग्गै। पछ। संपन। तय ॥ इस की अंत की तुक का पाठ किसी किसी पुस्तक में "भू मग सुतन सवै सुगिरि। उव्रयौ नाक सु नाक धुअ" है ॥

१०३ पाठान्तर -उबयौं नाक। हथां ॥

१०४ पाठान्तर -यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है और जब तक कि वह इस से भी प्राचीन पुस्तक में नहीं मिले तब तक उस को क्षेपक नहीं कह सकते। सोह। लही। बुड्यौ ॥

नग के हिलने से वशिष्ठ चिंता कर ईश आराधान करने लगे ।।

दूहा — नास सुहल हल्यौ सुनग । उर अति चिंता जग्ग ।।
अति आतुर वाचिष्ट रिषि । ईस अराधन लग्ग ।।
।। छं० २०१ ।। रू० १०५ ।।

वाचिष्ठ ऋषि ने महादेव का यह आराधन किया ।।

साटक — ईसंजा गिरिजानने वगरचं । उच्छंग मातंगिनी ।।
चर्मेजा वइजामवं जलजं । बुंदं तयं उज्जलं ।।
रच्यं जारति कर्न कामति मलं । दलयंति तीयं पुरं ।।
त्रिपुरारि तन तुग तारन गुरं । जैजै हरं ईमयं ।।
।। छं० २०२ ।। रू० १०६ ।।

भुजंगी — नमो आदि नाथं स्वयंभू सनाथं । नहीं मात तातं न को मंगि वातं ।
जटा जूठयं सेषरं चंद्र भालं । उरं हार उद्दारयं रुंड मालं ।। २०३ ।।
अनीलं असन्नं उपव्बीत राजं । कलं काल कुटं करं सूल साजं ।।
वरं अंग ओधून विभ्भूत ओपं । प्रलै कोटि उग्रंसि कालं अनोपं ।।२०४।।
करी चर्म कंधं हरी परिधानं । वृषं वाहनं वास कैलास थानं ।।
उमा अंग वामं सु काल पुरष्षं । सिरं गंग नेत्रं त्रयं पंच मुष्षं ।।२०५।।
नमः संभवायं सरव्वाय पायं । नमो रुद्रयायं वरद्दाय सायं ।।
पसूपत्तए नित्तए मुग्गयाए । कपर्द्दी महादेव भीमं भवाए ।।२०६।।
मषघ्नाय ईमानए त्रबकाए । नमो ध्रम्मए धातए अद्धकाए ।।
कुमारो गुरब्वे नमो नील ग्रीवे । नमो व्याधए बाधए दिच्छ जीबे ।।२०७।।
नमो लोहिते नील मिष्षंडण तं । नमो शूल्लिने चक्षुषे दिव्याए तं ।।
बसूरेतषे स्रव्वदेवम्नुतेव । नमो पिंग जटिल्लए देव देवं ।।२०८।।
नमो तप्प मानाय व्रष्षं धुजाए । नमो ब्रह्मचारी त्रयंब्रह्मकाए ।।
सिवं चातमे गातगे श्वर्गचाए । नमो विश्वमावित्तए विश्वराए ।।२०९।।

---

१०५ पाठान्तर — नाग । वाशिष्ठ । आराधन । लय ।।

१०६ पाठान्तर — उछंग । चलजं । जलदं । रिष । करन । दलयंति ।।

१०७ पाठान्तर — स्वंभू । ममाथं । नही । मंगी । चंदमालं । उर । रुंडमालं । असनं । उपंवीत । कलंकालकूटं । विभूत । सिकालं । अलोपं । करि । बधं । वृषवाहनं । वासं । थानं । दामं । कुरष्षं । गंगा । नेंनं । उद्रायं । सरवाय । बरदाय । पसू । पत्त । ए । नित । ए । मुग्ग । जाए । कपद्दी । कर्पद्दी । मषंघ्नाय । ईसं । नप । ध्रम्म । ए । धात । ए । गुर्व्वें । नल । व्याध । ए । बाध । ए । द्रिच्छ । सिष्षंड । एतं । दिव्य । एतं । बसूदेवते के स्रवदेवं । स्तुतेवं । व्रषंध । जाये । त्रयब्रह्म । काए । स्वर्ग । चाये । विश्वमा । वित्तए । नमस । ते नमस । ते । सीत । काए । साहस्र । एनीत । एसं । सहस्र । नैन । सहस्र । आसंष । कर्नें । हिरण्य । संभा

नमस्ते नमस्ते नमो सीतताए । नमो सर्ववक्तायने संकराए ।।
नमो ब्रह्मवक्ताय भूतं पिताए । नमो वाचपे विश्वपे भूतपाए ।।२१०।।
नमो सीससाहस्रए नीतएसं । सहस्रं भुजा नैंन साहस्र तेसं ।।
नमो पादसाहस्र आसंखकर्नें । नमो वन्हि हीरन्य हीरन्यवर्नें ।।२११।।
नमो भक्ति आकंपनं संभु देवं । थिरं रिद्धि दाता मनं वच्च सेवं ।।
प्रसन्नो भवो ईस तब्बै न कब्बै । तनं ताप विन्नासए चित्त तब्बै ।।
।। छं० २१२ ।। रू० १०७ ।।

वशिष्ठ के वचन सुन महादेव का प्रत्यक्ष हो वर मांगने को कहना

चौपाई- सुनि मुनि वचन मोद मन ईसं । आय परो ग्ह्यौ उद्धरि सीसं ।।
बर ! बर ! बानि जानि मन मंग्गहु । जंपहि ईस आस जिहि जग्गहु ।।
।। छं० २१३ ।। रू० १०८ ।।

मंगहु मुनि सज्जन गुन गुन बर । चलै कित्ति जित्ती जिहि धुर धर ।।
ता कित्ती मुकत्ती[?] मों लिज्जै । ब्रह्मासन आसन डोलिज्जै ।।
।। छं० २१४ ।। रू० १०९ ।।

ईस का स्वरूप देख ऋषि का मुदित होना ।।

चौपाई – देषि सरूप ईस मन उम्मदि । जै भै जीह धन्य बानी बदि ।।
गौर कपूर तेज नन उद्दित । रिषि रोमंचित ब मन मुद्दित ।।
।। छं० २१५ ।। रू० ११० ।।

मुद्दित मन उद्दित तन भारी । हरि वैकुंठ ईस मनचारी ।।
अबुंद गिरि धरि ध्यान सु ईसं । करैं काल तिहि काल जगीसं ।।
।। छं० २१६ ।। रू० १११ ।।

वशिष्ठ ऋषि का महादेव को नमस्कार करना ।।

साटक - त्रैनैनं त्रिजटेव सीस त्रितयं । त्रैरूप त्रीसूलयं ।।
त्रदेवं त्रिदिसा त्रिभू त्रिगुनयं । त्रीसंधि वेदत्रयं ।।
त्रैरग्निं त्रयलच्छि काल त्रितयं । ग्रामं त्रयं त्रैववं ।।
गंगा त्रै त्रिपुरारि भासित तनूं । सोयं नमः संभवे ।।
।। छं० २१७ ।। रू० ११२ ।।

विनास । ए चित ।। सं० १६४७ की पुस्तक मे इस छंद की ८वी तुक में का उत्तर खण्ड नहीं है ।।

१०८–१०९ पाठान्तर – मंगहुं । जग्गहुं ।। चलै और कित्ति शब्दों के बीच में "ई" शब्द पाठ सं० १६४७ की पुस्तक में नही है और इधर के समय की लिखित पुस्तकों में है । धुर धुर । किती । मुक्तीह ।।

११०–१११ पाठान्तर—उंमदि । गौरक । पूर ।।

११२ पाठान्तर—त्रिजटेवसीस । त्रयलछिकाल । त्रितयंग्राम ।।

प्रमथाधिपति ने आनन्दित होकर वर मांगने को कहा

दूहा —आनंद्यौ प्रथमाधिपति। बर! बर! बंद्यौ बानि ॥
रिषि मंगहु उतकंठ मन। सोइ समप्पौं आनि ॥
॥ छं० २१८ ॥ रू० ११३ ॥

वशिष्ठ ऋषि का नंदगिरि को अचल करने का वर मांगना ॥

दूहा —फिरि रिषि जंप्यो संभु सों। जो तुट्ठौ मुझ भास ॥
नग्ग चलंतौ अचल करि। फुनि सज्जो सिर बास ॥
॥ छं० २१९ ॥ रू० ११४ ॥

सो आबू गिरि राज गुरु। सुर गिर सम सैलास ॥
त्रिपथ ताम मुनि देव का। बसि रु कियो कैलास ॥
॥ छं० २२० ॥ रू० ११५ ॥

महादेव का पर्वत को अचल कर उस में अचल नाम से विराजना ॥

कवित्त तब सु ईस मन मुदित। पानि चंप्यौ गिर गौरव ॥
अचल अचल कहि अचल। भयौ अचलेस नाम तब ॥
सुथिर भयौ नग नंदि। अप्प सिर वास सु सज्यौ ॥
उभय आय तिहि थान। सगन प्रमथाधिप रज्यौ ॥
गिरि नंद नाम हेमह सुतन। अबुद नाग सु मित्र मन ॥
तिहि नाम त्रिविध भय तिथ्थ हर। पारस अप्पन अर्थ तन ॥
॥ छं० २२१ ॥ रू० ११६ ॥

कवित्त --अचल नाम कहि अचल। अचल विद्या अभ्यासिय ॥
अर्बुद गिरि थिर धस्यौ। बियौ बानारम बासिय ॥
उहित नाम इक बरष। मुत्ति लब्भेति जगत गुर ॥
इहत नाम इक दीह। करैं उपबास सोइ नर ॥
बाना रमंति बारानसिय। आबू अर्बुद उद्धरिय ॥
जट विकट जाल बिम्भूति रंग। मुरग मुकति ढिग ढिग फिरिय ॥
॥ छं० २२२ ॥ रू० ११७ ॥

११३-११५ पाठान्तर --प्रथमाधिपति। बानी। समप्पौं। ११३ ॥ सों। भग्ग घास ॥ ११४ ॥ गुरं। सं० १६४७ कीप्रतिमें "सुदगिरि सम सैलास" और सं० १७७० की प्रति में "सुर गिर सम सैलास" और सं० १८५९ में "मेर समक सैलास" पाठ है ॥ त्रिपथा। ताप। मुनि बसि। रुकियौ ॥ ११५ ॥

११६ पाठान्तर --अच। प्रथमाधिपं। रंज्यौ। नम। तिथ। अधि ॥

११७ पाठान्तर --धर्यौ। बोयो। लभ्यौ। तिजगत। बानार। बसि। बानारसीय। उद्दरीय। मुति ॥

आबू को अचल देख कर वशिष्ठ का प्रसन्न होना और अन्य ऋषियों को वहां यज्ञ के लिये बुलाय जप तप और वास करना

पद्धरी-अग अचल दिष्षि वाशिष्ट रिष्ष। मन मुदित भयौ सम आय सिष्ष।।
हर वासदेव सब गुन समान। आवरन रिद्धि चित चिंत थान।।२२३।।
आभासि रिष्ष गौतमह तथ्थ। आचरयौ बास अनि रिष्ष सथ्थ।।
आभासि रिष्ष अनेक तान। संबोध बोलि प्रथू प्रिथुक नाम।।२२४।।
देवलह असित अंबावि सूअ। सौमित्र सर्प्प माली विभूव।।
मह महन सनक जैनेय पैल। दालभ्य बक्क सुमंत अैल।।२२५।।
दीपाय किस्र थूलंसि राय। तैतरिय जअवक्री सुताय।।
जैमनिय ध्रव्व वैसंपायन। हर्षनह लोम असुहोत्र जान।।२२६।।
मंडव्य अरति कौसिक्क दाम। उप्णीष त्रिवन पर्णाद बाम।।
घटजात सुबल मोजायनेय। बलव'क परासर वायवेय।।२२७।।
मच्चिवाक जात क्रन क्रन्न माल। सनिवाक क्रिताश्रम सुच्चि पाल।।
सिषि वांनमु पर्वत पारिजात। अगस्ति मा'कंडे सुभाति।।२२८।।
पावित्र पानि सर्वन्य रभ्य। किरनाषकेत भ्रगु मेप मभ्य।।
जंघाव भालकी कोप वेग। गालम हरीय ब्रह्म भ्रगेग।।२२९।।
कौडिन्न बंध माली मनक्क। सानंद सनातन कक्ष वक्क।।
सांडिल करक वाराह पंग। कौमार अश्व हय घोष मंग।।२३०।।
वेनीय जघन जघ नासकेत। कन्हं कलाप वक्रीव सेत।।
अष्टाहवक्र उद्दालकेय। च्यवनह कपिल मानंग जेय।।२३१।।
माधव्व गरग अनेक रिष्ष। आए सु अन्य तहां समह सिष्ष।।
आहवान मंत्र वल तप्प सथ्थ। सब देव रिप्षिआए सु तथ्थ।।२३२।।
कालिंद्र गंग सरसत्ति आय। अनुसरिय वद्ध सब सीय ताय।।
ऊषधी स्रब्ब मनि सब्ब धात। बर वृष्ष लता फल पुहप पात।।२३३।।
जाजन्य जजन अधियन अध्याय। लग्गेमु करन रुचि रिष्ष आय।।
आहवान बान उचान जाप। लग्गे सु करन रुचि इष्ट ताप।।२३४।।
जप होम मंत्र धारना ध्यान। आरंभ रिष्ष लग्गे सु ग्यान।।

---

११८ पाठान्तर—दिषि। वाचिष्ठ। सिष। आय।। प्रिथक। अंकवा। विसूअ। सप्प। ध्रुव। हरष। नह। मंडप। कौसिक। उष्णीक। पनदिवाम। घट। जात। वाल। वाक। वालजाक। वाय। वेय। सचि माक। क्रन्न। क्रनमाल। सनि। वाक। क्रिताश्री। सिषि। वांनस। पर्वत। भाल। की। गालं। महि। रिय। कौंडिन। सांडिल्ल। बेनी। जय। घन। घना। सकेत। कन्ह। वसेत अष्टाह।

आराधि सकति आभासि ताम। संचास कीन गिर उंच धाम ॥२३५॥
आदरस रिष्ष संक्रास कीन। आश्रम्म श्रब्व क्रम काज चिन्ह ॥
जगनह जाप अध्याप होम। आराध उंच आयास धोम ॥२३६॥
प्रीनंत दे सुब्वास आय। सब मिले वृंद वृंदार काय ॥
वीसेष मंत्र जंत्रं गुरेन। बंधे जु मंत्र कर आप देन ॥२३७॥
करि भसम देव देवल लहीव। विस्माह अमृत पावै सु पीव ॥
अति ध्रम्म क्रम्म इष्षे अनंद। आए सु निसाचर छलन मंद ॥२३८॥
भररंत रिष्ष मंगिय करूर। तिन समत भूमि षह नग्ग नूर ॥
चित अचित पंच आभासि देह। रस दुग्ध सही षुद्धा अछेह ॥२३९॥
के भषैं वाय के ध्यान देव। जल दूध कंद मूलह सु केव ॥
॥ छं० २४० ॥ रू० ११८ ॥

गाहा कंदं फलानि फच्यं। कद्धंतं मुनिय काल बेकालं ॥
एकोपि धार धरयं। संतोषं सर्वं निधानं ॥
॥ छं० २४१ ॥ रू० ११९ ॥

संतोषं विना न लब्भै। कलपंतं राजनं सुष्षं ॥
जो संतोषं देहं। तौ सुष इय मूल काम लया ॥
॥ छं० २४२ ॥ रू० १२० ॥

यज्ञ का अनुष्ठान सुन कर राक्षसों का एकत्र हो आना

दूहा जंत्रकेन दानव दुमह। अरु रप्पम ध्रुमकेन ॥
अप्प मथ्थ लीने सकल। आए दुग्गह हंत ॥
॥ छं० २४३ ॥ रू० १२१ ॥

ऋषियों का अनलकुंड चरन कर ब्रह्म कर्म प्रारंभ करना

कवित्त -आव्रू करि रिषि जग्य। मत्र कारन सु मत्र जपु ॥
पंड हत्थ नग उंड। अष्ट अगुल उर्द्ध वपु ॥
हथ्थ तीन अरु अद्ध। मंडि चवकून समा मम ॥
स्रप्प समति सम कियौ। फनति वचयौ देव क्रम ॥

वक्र। उद्दाल। केय। व्यत्र। नह। मानग। जेय। नहा। नथा। मथ। देवगिष्य।
कल्द्रि। मरमनि। ऊपची। स्रव। अधनय। अध्याय। लगे। आय। लगे। धारना
ध्यान आदर। मग्गिय। क्रम। अध्याय। मु बाम मिले विसेष। गत्र अन्नन। इष्ये।
भषैं। कंध। सकेव ॥

११९-१२० पाठान्तर —कद्धतं। कालवेकाल। ए कोपि। सतोस। सब्ब।
तिहाणं ॥ ११९ ॥ संतोसन। विण। लभइ। कल पतं। स तोस। तो ॥ १२० ॥

१२१ पाठान्तर —यंत्रकेत। रायेम। ध्रुम्रकेत। अप। मथ। अहेत ॥

१२२ पाठान्तर —आब्बू। रिष्षि। नष। हथ। वर। उग्द्ध। वप। अद्धे।

अगिनेव थान अगिनेव धर। बाय कुंड दष्षिन दिसा ॥
नैरत निवर्तं धज मंडि कैं। ब्रह्म क्रम्म लग्गे रिसा ॥
॥ छं० २४४ ॥ रू० १२२ ॥

दैत्यों का ऋषियों के यज्ञ में विघ्न करना

कवित्त पंच पर्व्व जग्योपवीत। पंच पर्व्वी अधिकारिय ॥
देवो मुनि दुजराज। वैश्य शूद्रह चितकारिय ॥
चर बिडाल पशु म्लेछ। क्रंम चंडाल षंड करि ॥
इह प्रमान दस विधि * सुक्रम। जग्ग मंडे सुमंडि हरि ॥
दानव सु दुष्ट दुष्टंसु क्रम। दुष्ट भूत्र वरिषा करै ॥
पसु मंम रुधिर नंषै सु जल। क्रंम विप्र संमुह डरै ॥
॥ छं० २४५ ॥ रू० १२३ ॥

चौ बेदी चौ विप्र। गीत गायत्र मंत्र जप ॥
ता मंद्धौ घन विघन। करै आरिप्ट असुर कुप ॥
कबक भूमि हल्लवै। कबक पर्वत हल्लावै ॥
अग्नि वृष्टि कव करै। कवक बुल्लै बुल्लावै ॥
मोहनी रूप कबहुक करै। कवक सिंघ नद्दह करै ॥
तुष्णीक रहै गावै कबहु। बे हथ्थो तालह धरै ॥
॥ छं० २४६ ॥ रू० १२४ ॥

ऋषियों का संतापित होकर वशिष्ठ के पास जाय पुकारना

दूहा—दिष्षि रिष्ष मंडी सु रिध। जग्गिन होमह जाप ॥
ताहि विगारन मन मुदित। लगे सकल संताप ॥
॥ छं० २४७ ॥ रू० १२५ ॥

संमति। स्रप। कीयो। बंधयो। अग्गिनेव। आगे। नेव नांथ। अगि। नेव। वाह। क्रुंड। दषिन। किमा रसा।

१२३ पाठान्तर—जग्गोपवीत। जुग्यौपवीत। सं० १६४७ और १७७० की पुस्तकों में यह पाठ है "इह विधि प्रमान दस विधि सुक्रम"। जंग। जग। सुमंडि। सुदुष्ट। दुष्ट। सुक्रम। वसु। मंमु। सुजल। कर्म। समुह॥ * विधि विशेष है॥

१२४ पाठान्तर—गाइत्र। मंड्ध। मंडे। पर्वत हलाव। मोहनी। रूप कबहिक धरै। नद्दहि। कबक। वै। "वै हथिन तालि न धरै" भी सं० १६४७ की प्रति में पाठ है। हथ्थें।

१२५ पाठान्तर—दिष्वी दिष्षि। दिष दिष। दिषि। दिष। लग्गे। संताप। संताप॥

पद्धरी— रज वृष्टि उपल त्रिन नंषि थान। त्रासना बार पहु लगि भयान ॥
रिष गये सब्ब वाचिष्ट पास। रष्षसन कह्यौ मंड्यो विनास ॥२४८॥
रिष राज दुष्ट बध चिंत आय। छंड्यो जजन्न बल मंत्र भाय ॥
॥ छं० २४९ ॥ रू० १२६ ॥

जिस पर वशिष्ठ का प्रतिहार चालुक्य और पंवार को प्रगट करना ॥

कवित्त— तब सु रिष्ष वाचिष्ठ। कुंड रोचन रचि रचि तामहु ॥
धरिय ध्यान जजि होम। मध्य वेदी सुर सामहु ॥
तब प्रगट्यौ प्रतिहार। राज तिन ठौर सुधारिय ॥
फुनि प्रगट्यौ चालुक्य। ब्रह्मचारी व्रत धारिय ॥
पांवार प्रगट्या बीर बर। कह्यौ रिष्ष परमार धन ॥
त्रय पुरष जुद्ध कीनौ अतुल। मह रष्षस षुट्टंत तन ॥
॥ छं० २५० ॥ रू० १२७ ॥

तथापि राक्षसों का उपद्रव शमन न होना

मलया— कारयं जग्य बंभान निमानयं। रच्चियं कुंड षंडं थिरं थानयं ॥
आमनं दिव्य देवान आह्वानयं। आसुरं कीन उच्चिष्ट ऊथानयं ॥
॥ छं० २५१ ॥ रू० १२८ ॥

तब वशिष्ठ का स्वयं कुंड रचन कर यथार्थ बैठना और चितवन करना

दूहा— जब वाचिष्टह जग्य कजि। सजि कुंडह सुभ थान ॥
तव असुर अन संक से। किय उचिष्ट उतान ॥
॥ छं० २५२ ॥ रू० १२९ ॥

---

१२६ पाठान्तर—लग्नि। यान। सब। सर्व। राष्यसन। राषिमन। वध। चिंति। जजन। बलं ॥

१२७ पाठान्तर—रिषि। वासिष्ठ। राचेता। तहि। ध्यान। मध्यवदी। सरसा। महि। प्रिगटयौ। परिहार। राहु। चालुक। सं० १६४७ में "ब्रह्म विन चाल सुमारिय", सं० १८५९ की में "ब्रह्म तिन चाल सुमारिय" पाठ हैं। रष। रष। पंमार। घनु। धनु। रषस। तनु ॥

१२८ इस रूपक के छंद का नाम जो चंद ने मलाया प्रयोग किया है वह स्रग्वणी नामक चार रगण का छंद है ॥

पाठान्तर—बंभाननि। मानयं। रच्चियं। आहुवानयं। उचिष्ट।

१२९ पाठान्तर—वाशिष्ठ सुथांन। अर्न।

कवित्त – तब चिंतिय वाचिष्ट । एक आसुर अविचारिय ॥
जग्य जीह उच्चिष्ट । करैं कातर क्रत हारिय ॥
सुरन अंम संग्रहे । हवै नह हव्य हुआवह ॥
सो उपाव संचियै । जो * याहि सवरै असुर सह ॥
निंम्यौ मु मूर सग्राम भर । अरि अलंघ पंडन मु षल ॥
सम धरहि जग्य कारन सकल । विमल सिष्ट सोभै सयल ॥
॥ छ० २५३ ॥ रू० १३० ॥

अरिल्ल -अघट घाट रिषिइष्षि निमाचर । परिमि च्यार धरि ध्यान ग्यान बर॥
चिंतिय ब्रह्म करम किहि कामह । भयौ रूप रिषि ब्रह्म मुतामह ॥
॥ छ० २५४ ॥ रू० १३१ ॥

वशिष्ठ का चाहुवानजी को उत्पन्न करना

कवित्त – अनल कुंड किय अनल । सज्जि उपगार सार सुर ।
कमलासन आमनह । मंडि जग्योपवीत जुरि ॥
चतुरानन स्तुति सद्द । मंत्र उच्चार सार किय ॥
सु करि कमंडल बारि । जुजित आह्वान थान दिय ॥
जा जन्नि पानि ध्रव अहुति जजि । भजि सु दुष्ट आह्वान करि ॥
उप्पज्यौ अनल चहुवान तब । चव सु बाहु असि बाह धरि ॥
॥ छं० २५५ ॥ रू० १३२ ॥

दूहा – भुज प्रचंड चव च्यार मुष । रत्त व्रन्न तन तुंग ॥
अनल कुंड उपज्यौ अनल । आहुवान चतुरंग ॥
॥ छं० २५६ ॥ रू० १३३ ॥

---

१३० पाठान्तर—चितिय । जिष्ट । जिह । करै । हवै न हव्यहु आवह । संयाम । षंडं । समं । सोभै ॥ (जो *) विशेष है ॥

१३१ पाठान्तर—ईषि । निमाचरं । वरं । ब्रह्मकरम ॥ सं० १७७० की पुस्तक मे "ग्यान" शब्द नही है ॥

१३२ पाठान्तर—अनलकुंड सजि । जग्योपवीत । आहवान । जाजाने । आवहान । उपज्यौ । चहुआन ॥ पुरातत्त्ववेत्ताओ के स्मरण मे रहै कि प्रायः यह कहा जाता है कि अग्निकुलों की कब उत्पत्ति आबू पर हुई उसका कोई पौराणिक प्रमाण भी नही मिलता । अतएव हम एक यह प्रमाण विदित करते हैं कि कालिंदिका प्रकाश नामक ग्रंथ में पुराणोक्त यह श्लोक लिखा है-

श्लोक – दूषयिष्यन्ति यवना स्सहस्राब्दे गते कलौ ।
तदा रक्षां करिष्यति याज्ञिकाः क्षत्रियर्षभाः ॥

१३३ पाठान्तर—रत । व्रन । बन्न ।

ऋषियों का चाहुवानजी का स्वरूप देख कर उन को चाहुवान कहना। उनको राक्षसों से युद्ध करने की शक्ति देने को आशापूरा देवी का स्मरण करना। देवी का प्रत्यक्ष होकर चाहुवानजी को राक्षसों से युद्ध करने में सहायता देना। राक्षसों का रसातल को जाना। देवी का चाहुवान जी को अपनी कुलदेवी मानने की आज्ञा करना और उनका अपने वंश भर की कुलदेवी मानना स्वीकार करना। देवी का उनको वर देकर पधारना। वशिष्ठ का चाहुवानजी को आशीर्वाद देकर अन्य अनलों का वर्णन करना और दुर्वासा को शाप देकर पठाना ॥

बाघा -उपज्यौ अनल अनूपम रूपं। नहि आकृति अवर नर दूपं॥
ब्रंन अभूत सु उन्नत जिष्टं। वंदन भर कि बद्ध मनु पिष्टं॥ छं० २५७॥
स्याम रोम कपोल विसालं। उन्नित कंध छतिय दूमालं॥
लाल माल सोभं उर सोभं। मथु प्राकृष्ट दिच्छ कर दोभं॥छं० २५८॥
नयन प्रथुज भ्रकुटी सु करूरं। मुख आकृत्ति बाल हर नूरं॥
कवच त्रोन उर त्रान मरीसं। दल आकृत्ति भयानक दीसं॥छं० २५९॥
तोन पूरि सर बद्धि मु कासं। धरिय पांन सरबी रबि रासं॥
षेटक पग्ग उनंगी धारं। चाहिवान दिष्यो रिष सारं॥छं० २६०॥
चाहि आइ रिषि आइ ममंगे। चहुआन कहि सद सुरंगे॥
समरी सकनि रिष्पि गिर वामी। दिय माहाय युद्ध कजि तामी॥छं०२६१॥
आई सकति सिंघ आरोही। द्वादस भुजा सु आयुद्ध सोही॥
षेटक षग्ग बरद्दह पासं। घंटा बान क्रती सिर आसं॥छं० २६२॥
षप्पर सकति शूल मद पात्रं। देषे रूप क्रंम क्रम छात्रं॥
आसा पूरि कहै रिषि राजं। चाहुवान मंडी क्रत काजं॥छं० २६३॥
चाली सकति सहाई अनलं। छल्ले सूर सबै कसि बल्लं॥
सब आए छढि रष्षस ठानं। मंड्यो जुद्ध सबै असमानं॥छं० २६४॥

---

१३४ इस रूपक के छंद २५७ के पाठ मे बड़ी गड़बड़ है। एशियाटिक सोसाइटी की छापी हुई पुस्तक मे "उपज्यौ अनल अनूपम रूप। नहि आकृति अवरन रूपं॥ व्रन अभ्रन सू उंनन जिष्ट। वदन भर कि बद्धम नुपिष्ट"॥ और सं० १७७० की पुस्तक में 'उपज्यौ अनल अनोपम स्नपं। महि आकृति अवरम रूपं। चंन अभून अमु उनमा जिष्टं। वंदन भार कि बद्ध मन मिष्टं" और संवत् १७४७ की में "उपज्यौ अनल अनूपम रूपं। नहि आकृति अवरम् स्तूपं। व्रत अबूत अमु उन्नत जिष्टं। वंदन भरा के बद्ध मन पिष्ट"॥ किन्तु हमारा पाठ कर्नल टाडा साहब के गुरु बारहट कृष्णसिंहजी ने जिस सं० १८५९ की पुस्तक से रासो पढ़ा था उसके अनुसार है॥ इसमें "दूपं" शब्द हमारे पाठकों को अर्थ करते समय परिश्रम देगा जिस संस्कृत शब्द "दूप" का यह अपभ्रंश हिन्दी है वह संस्कृत के

बाहै आवधि सकती सारं। धड आवद्दि पडै धर भारं ॥
सद्धे धुमरकेत सकतीयं। जंत्रकेन चहुआन सु * हतीयं ॥छं० २६५॥
अद्ध सु रष्षस दानव सद्धे। गण रसानल नठ्ठे अद्ध ॥
देवी आइ अनल्लह पासं। जंपी तथ्थ प्रमन्नी तासं ॥छं० २६६॥
आसापूर कहै मो नामं। पुज्ज पुत्र पौत्र परिनामं ॥
कुलह गोत्र झुझ थप्पै नामं। अप्पों रिद्धि अचल्लह तामं ॥छं० २६७॥
धास्यौ सिर लै कर चहुवानं। ब्रद्धहु बंस अम जम मानं ॥
जीती अप्प देवी चहुवानं। दिय बर दान गई अममानं ॥छं० २६८॥
गइ असमान कियौ सद भारी। धुं! धु! कार जै! जया मारी ॥
है! है! करि हं! हं! चहुवानं। अनल कुंड उपजे परिमानं॥छं० २६९॥
चौ मुष्यौ चौ वेद प्रकारं। अैसो मुष देष्यौ अधिकारं॥
वेदं स्यांम अथर्बन रूपं। रिगु जिजु वेद देव गुन नूपं ॥छं० २७०॥
चित चमकार चिहूं दिमि लग्गिय। पढत ताहि ब्रह्मंड सु जग्गिय।
वानी धुनि मुनि हरषि वमीमं। वर बचिष्ट तहां दई अमीसं॥छं० २७१॥
तोहि वंस होइ कुंडल धारी। जनु कि अर्क राका विस्तारी।
थुनि करि सेव देव तिहि पानं। जै जै नष्प जिने चहुवानं ॥छं० २७२॥
परहरि वीर वीर नर केकं। तिहि चालुक्क भयौ गुन मेकं ॥
परिहरि वर पावार ति वारं। क्रोध रूप जाजुल्य निधारं ॥छं० २७३॥
जाजुल्लति परिहार न दिष्ष्यो। षिजि करि विप्र पौरि तह रष्ष्यौ ॥
तिन कारन वाचिष्ट रिषीसं। अबुद नाम गिरि नंद जगीसं ॥छं० २७४॥
ता ऊपर दुरवासा आए। दै सराप वाचिष्ट पठाए ॥
अब वे दानव दुष्ट सु दाषै। तो रष्या चव कुली मु राषै ॥छं० २७५॥
बंस छत्तीस गनीजे भारी। च्यार कुली कुल तिन अधिकारी ॥
सब सु जात जोनी मग दिष्षिय। ए ब्रह्मा अविसेष विसिष्षिय ॥
॥ छं० २७६ रू० १३४ ॥

अच्छे विद्वानों के पढ़ने में भी उसका बहुधा प्रयोग न होने के कारण बहुत ही कम आया होगा और वह वाचस्पत्यबृहद्भिधान और शब्दार्थ चिन्तामणि जैसे बड़े कोशों मे भी नही मिलेगा परन्तु प्रोफेसर बिलसन साहब के कोश में मिलेगा। वे इसको त्रिलिंग में Strong अर्थात् बलवान अथवा पुष्ट का वाचक लिखते हैं॥

पाठान्तर —उनित। उंनित। उन्नत। दुसालं। प्राकुष्ट। दिछ। आकृति। बालहर। आकृति। सरि वीर विरासं। उनंगी। चाहि। बान। गिरवासी। ह। कर्ता। क्रम। मंडौ। सहाई। ठानं। आबटि। धुंमकेत। सकतिय सहुतिय। । पास। तास। तछ्थ्य। पसंनिय। थप्पे। नाम। ताम। संवत् १६४७ और

क्षत्रियों के छत्तीस वंशों की नामावली

कवित्त—रवि ससि जादव वंस। ककुस्थ परमार सदावर ॥
चाहुवान चालुक्क। छंद सिलार आभीयर ॥
दोय मत्त मकवांन। गरुअ गोहिल गोहिल पुत ॥
चापोत्कट परिहार। राव राठौर रोस जुत ॥
देवरा टांक सैंधव अनिग। योतिक प्रतिहार दधिषट् ॥
कारट्टपाल कोटपाल हुल। हरितट गोर कलाप मट ॥
॥ छं० २७७ ॥ रू० १३५ ॥

दूहा—धन्यपालक निकुंभ वर। राजपाल कविनीस ॥
काल छुरक्कें आदि दै। बरने वंस छत्तीस ॥
॥ छं० २७८ ॥ रू० १३६ ॥

संवत् १७७० की मे "धान्यो कर मिर लै चहुवानं" पाठ है। धर्यौ। चाहुवान। ब्रघहु। वंम। मान। चहुवान। अममान। गई। हे है। चहुवानं। उपज्जि। चिहू। पद्य। हरपिध्र। सीसं। वशिष्ट। रामा। नप। नरकेकं। तिवारं। पारहारन। तहं। उपर। रुप्य। छत्तीम। गनि। जै। जेत्ती। (मु०) विशेष है।

१३५-३६ पाठान्तर—यादव। परमार-र। तोवर। चालुक। छिद्र। छंदक। आभीवर। गुरुअ गोह। गही भुत। राठोर। सिंधव। अनग। अनंग। योतिक। प्रतिहा। दध्रीषट। करेटपाल। हुन। हरीनट। गोरक। भाड। जट ॥ १३५ ॥ ध्यानपालक। ध्यान पालकनि। कुंभ। कविनीम। दे। छत्तीम ॥

कवि चंद के समय मे जो छत्तीम कुल क्षत्रियों के प्रसिद्ध थे उनके नाम उसने वर्णन किए हैं अर्थात् रवि = सूर्यवंशी १ ममि = चंद्रवंशी २ यादव = यदुवंशी ३ ककुस्थ = कछवाहे ४ परमार ५ सदावर = तोवर ६ चौहान ७ चलुक = सोलंकी ८ छंद = गंदल ९ सिलार १० आभीयर ११ दोयमत्त = दाहिमा १२ मकवान १३ गोहिल १४ गहिलोत १५ चापोत्कट = चावडा १६ परिहार = पढियार १७ राठौर १८ देवडा १९ टाक २० सैंधव = सिंधव २१ अनिग = अनग २२ योतिक २३ प्रतिहार २४ दधिषट २५ कारट्टपाल = काठी २६ कोटपाल २७ हुल = हुन, हुण २८ हरितट = हाडा २९ गोर = गोड ३० कमाप = कमाड, जेठवा ३१ मट = जट ३२ ध्यानपालक वा ध्यानपालव ३३ निकुंभ ३४ राजपाल ३५ कलछुरक्कें = काछछर ३६। इनके विषय मे कवि दलपत रामजी अपने जाति निबंध नामक ग्रंथ में लिखते हैं कि रत्नकोश नामक संस्कृत ग्रंथ की टीका में लिखा है कि क्षत्रिय कुल का आदि पुरुष मनु उसके वंश मे से ये छत्तीम हुए हैं।

सं० १६४७ और सं० १७७० की पुस्तकों में इन रूपकों के स्थान में रूपक १३७ और उसके स्थान में इनको लिखा है अर्थात् उलट पुलट हैं। हमने उसका

चारों अग्निकुल क्षत्रियों ने वशिष्ठ का यज्ञ निर्विघ्न किया ॥

कवित्त—पढ़न मंत्र रिष जाय। च्यार षित्री उप्पाए ॥
कुचिल दीन परिहार। पौरि रष्षु सत भाए ॥
चतुर बीर चहुवान। च्यार मुष्षौ चौबाहं ॥
अष्ट अअ आरिष्ट। देव चारिष्ट मु स्राहं ॥
पंमार वाह धन धन करह। कह्यौ रिष्प परमार धन ॥
चालुक्क वाह चालुक्क दुज। कुमित कुमन मंडित तन ॥
॥ छं० २७९ ॥ रू० १३७ ॥

अनल कुंड आभंग। उपजि चौहान अनिल थल ॥
सुकर संठि करि वार। धनुष संग्रह्यौ बान बल ॥
तिन रष्षिस परिवार। धार मुष धरनि नि धट्टिय ॥
षल जुषित्त संमुहे। तिनह सिर सरअन तुट्टिय ॥
बंभान जग्य निर विघन किय। पुहप वृष्टि सुर सीम रजि ॥
रष्षि सु धरनि षग भुज्ज वर। रिष्ट निवारिय इष्ट भजि ॥
॥ छं० २८० ॥ रू० १३८ ॥

जिन्होंने द्विजों की रक्षा की उनके वंश में पृथ्वीराज हैं ॥

दूहा—तिन रक्षा कीनी सु दुज। तिहि सु वंस प्रथिराज ॥
सो सिरपत पर वादनह। किय रासो जुविराज ॥
॥ छं० २८१ ॥ रू० १३९ ॥

चाहूवानजी के वंश के राजाओं की कथा ॥

चाहुवानजी से माणिकराजजी पहिले तक तेरह पीढ़ी का वर्णन ॥

पद्धरी—ब्रह्मान जग्य उतपन्न सूर। चहुवान अनल अरि मलन सूर ॥
उत्तंग अंग प्रच्चंड बाह। पहुमीस इंद अरि गिलन राह ॥छं० २८२॥
प्रतिपाल धरनि अंगह सु धम्म। श्रुत मान कीन उत्तंग क्रम्म ॥
रत्तो सु जोग भव भोग रास। पुर अमर नाग नर कित्ति जास ॥छं० २८३॥

क्रम इसलिये ग्रहण नही किया है कि रूपक १३८ के छंद २७६ की पहिली तुक का अर्थ उसके पीछे इन रूपकों का ही होना प्रकाश करता है ॥

१३७-१३८ पाठान्तर—जाय कुलिल। चहुवान। मुषो। सुसाहं। वाह। रिषि। पंमार। मंडि। ततन ॥ १३७ ॥ कुंद। चौहांन। र[illegible]। सपरिवार। मुष। निषट्टिय। जुषित। निरविघन। भुज्जवर ॥ १३८ ॥

१३९ पाठान्तर—रक्ष्या। निहिं। पृथ्वीराज। पृथिराज। प्रवादनह ॥

१४० पाठान्तर—ब्रह्मान। उत्पन्न। चहुवांन। मल। मसूर। उतंग। पहुबीसु। इंद्द अरिगिलन। धरनी। अंग। श्रुतमान। उतंग। रतो। सुजोग।

ता सुअन सूर सामंतदेव । अरिमंत मत्त मत्ता जु रेव ॥
महदेव सुअन मोहंत तास । सु प्रसन्न ईस सेवंत जास ॥छं० २८४॥
बर अजयसिंह सिंघह सु राम । नर बीरसिंह संग्राम ताम ॥
सुअ बिंदसूर उद्दारहार । आसोक श्रोय संकाविडार ॥छं० २८५॥
सुअ बैरसिंघ वैरी विहंड । ध्रुव बोरसिंघ अरि बीर डंड ॥
अरिमंत सकल कलि कलनचूर । मानिक्क राव चहुआन सूर ॥छं० २८६॥

महिसिंह जी से धर्म्मधिराजजी तक का वर्णन

राजन्त * मुअन ता सहम मथ्थ । महसिंघ सिंघ संग्रम 'थ्थ * ॥
सुअ चंद्रगुपन सम चंद्ररूप । प्रतापसिघ आरेन दूप ॥छं० २८७॥
मुत मोह सिंघ बर मोह रूप । भूतह भयंक रन रत्त भूत ॥
सुत सेनराइ वह सेन वंत । संप्रत्ति राइ सुभ तत्त मंत ॥छं० २८८॥

मास । किति । तासू । अन । सु । अन । मोहत । संका । विण्डार । मानिक । राजत । सु । अन । माह । भूत । भयंकर । रत । नूप । तत । पूर । बालन । प्रथम । जग्ग । दुप । पहु । मंह । रत । कोडी । किये । चल्यौ । प्रमान । मांन । थान । चल्यौ । मुकजो । मुकमौ । निगम । मुक्कयो । निगम । मुक्कयो । जिन । किनि । चौसठि । चिन । पायौ । जम । विप । जम । कदंम । कदम । दानेवमल । थान । स । आनि । बग्गन । उगान । उनंग । पुकस्या । जरन जाहुजाहु । जाह जाह । इन्द । सं० १७७० और १६८७ मे 'नैंग पुर रुद्र डरि हक बजि । मानि । अर्जरी । जज्जरीय । पानि । लगे । इके । सुरूप । मृग । मर्प । श्रप्प । श्रप । रद । पुज ॥

* * पक्षपातरहित वृद्ध और विद्वान कवि कहते है कि यहा अर्थात् छंद २८६ और २८७ के बीच मे कितनेक छंद लोप हो गए हैं किन्तु चंद कवि ने तो मूल पुरुष श्री चाहुवान जी से लेकर पृथ्वीराजजी तक पीढ़ावली वर्णन की थी जिनको सब ऐतिहासिक ग्रंथ और सर्वसाधारण मनुष्य हिन्दुओं का अन्तिम बादशाह होना प्रकाश करने और मानते हैं और क्वचित् चंद का नाम विध्वंस करने वाले यह कहते है कि ग्रंथकर्ता ने अपने अज्ञान होने के कारण स्वकल्पित वंशावली वर्णन की है। इन दोनों सम्मतियों में से हम पहिली से सम्मत है क्योकि प्रथम तो चंद कवि अपनी वंश परम्परा से इस राजकुल का मुख्य कवि और ख्यात वर्णन करने वाला था और यह कदापि संभव नहीं है कि आज हम चौहान वंश की शुद्ध अथवा अशुद्ध पीढ़ावली जान सकें और हम से सात सौ वर्ष पहिले जो उक्त राजकुल का निज कवि हुआ वह न जानता हो और न वर्णन करे। दूसरे चाहुवान वंश की पीढ़ावली जो श्रीमान श्री बूंदी राव राजा जी महोदय ने निश्चय कराया है और जो

सुअ नागहस्त सम नाग राज । अस्थूल नंद आनंद राज ॥
गिर लोहधीर सुत धम्मसार । सुअ वीरसिंघ संकाबिडार ॥छं० २८९॥
सुअ बिबुधसिंघ सम जोगसूर । जस चंदराय वर अजस दूर ॥
सुत किस्नराज जस किस्न चित । हरहरहराइ नर बुद्धिमंत ॥छं० २९०॥
बालन्न राइ बलि अंग तास । सुअ प्रथव राइ पहुमी प्रहास ॥
तिन अनुज अंग राजत अनेय । कलि अलप आउ कित्ती अछेय ॥छं० २९१॥
धर्माधिराज रति जोग भोग । षट षुंट पित्ति षग्गह सु भोग ॥

एक चाहुवान वंश मात्र की पीढ़ावली हम भी सन् १८७३ में सिद्ध कर रहे हैं और वह बूंदीवाली से विशेषांश में मिलती हुई है । उन दोनों के अनुसार श्री चाहुवानजी से पृथ्वीराजजी एक सौ सतत्तरवीं १७७ पीढ़ी में हुए सिद्ध होते हैं । अब यहां सूक्ष्म बुद्धि से विचार कर देखने की बात है कि छंद २८२ से २८६ तक म जो तेरह १३ नाम क्रम से कवि ने कहे हैं वे उक्त दोनों वंशावलियों में बराबर मिलते हैं और "राजत सुग्रन त: ग.. । मध्य" का अर्थ इन प्रथम माणिक्यराजजी के विषय में घट नहीं सकता क्योंकि इतना वंश यहां तक बढ़ नहीं सकता । इसके सिवाय जो पाठक चाहुवान वंश की इस परम प्रसिद्ध कथा को मानते होंगे कि तीसरी पीढ़ी में महादेवजी (जिनका उपनाम परभंजनजी भी है) के हाथ से अनजाने प्रमति ऋषि की एक गाय मर गई थी कि जिस पर ऋषि ने शाप दिया था कि "तुमारा वंश नाश हो" तदनन्तर ऋषि को मनाने पर उन्होंने अपराध क्षमा करके कहा कि कितनीक पीढ़ियों तक तो तुम्हारे वंश में एक ही पुत्र होता रहेगा, फिर वंश बढ़ेगा । इससे भी इस तुक का अर्थ माणिकराजजी में नहीं घट सकता ।

तथा उक्त दोनों पीढ़ावलियों को इस रूपक के साथ मिलाने से यह भी ज्ञात होता है कि छंद २८७ में अर्थात् उसमें कहे महिसिंहजी एक सौ अड़तालीसवीं पीढ़ी में हुए और उन से फिर सब नाम बराबर क्रम से एक सौ सतत्तरवें पृथ्वीराजजी तक मिलते है । क्या अब जो चौदहवीं पीढ़ी से एक सौ सैंतालीसवीं पीढ़ी तक के बीच के नाम वह भी क्रम से चंद कवि बिल्कुल ही नहीं जानता था अथवा क्या वह उनको निगल कर परलोक में जा बैठा है जो कि हमारी वृत्ति सदैव प्रत्येक विषय के अनुकूल अनुमान करने और उसके साधर्म्य को मान्य करने की है इसलिए प्रतिकूल अनुमान ही क्यों करें और वैधर्म्य की ओर क्यों दृष्टि डालें । क्योंकि जो आज विद्वान लोग अन्य बड़े-बड़े प्रसिद्ध ग्रंथों के विषय में ऐसे ही प्रतिकूल ही अनुमान करने लग जायं और वैधर्म्य का ही आश्रय कर लें तो बड़ा अनर्थ हो जाय । अब हम चौदहवीं पीढ़ी से एक सौ सैंतालीसवीं पीढ़ी तक के नाम अपने तथा बूंदी राज्य के शोध किए हुए हमारे पाठकों के जानने के लिए यहां लिखते है । पुष्करजी (विजयपालजी) १४ असमंजसजी १५ प्रेमपूरजी १६ भानुराजजी १७ मानसिंहजी

वीसल देव जी का वर्णन ॥

जग दुष्ष वीसल नरिंद । बहु पापरत्त द्रव्यान अंध ।।छं० २९२।।
क्रत अक्रित काम क्रित्तह सु कीन । जिन असुर घोर षनि द्रव्य लीन ।।
संमार थागि फुनि द्रव्य काज । उपजाइ मत्ति अजमेर राज ।।छं०२९३।।
कौडी सु मोल गज कियौ एक । लीयो न तिनह फिरि महर नेक ।।
कामंध अंध सुझयौ न काल । हक अहक जोर गिरि इक्क माल।।छं०२९४।।
सुझ्यौ न राजनीतह प्रमान । आनीत बंधि नृप थान थान ।।
सुझ्यौ न ध्रम्म चाल्यौ प्रमान । मुकजौ निगम्म करि आगममान।।छं०२९५।।
अबलोह छोह छंडिय सु कित्ति । मुक्कयौ ध्रम्म आध्रम्म जित्ति ।।
दरबार अतिथ दीसै न कोइ । अप्प मुह कित्ति संभरै लोइ ।।छं० २९६।।
चौसठ्ठि बरस बर राज कीन । पायौ न पुत्र फल सुष्ष हीन ।।
बल अबल चित्त चित्यौ सुकाल । पायौ न सुकृत कछु करन साल।।छं० २९७।।

---

१८ हनुमानजी (धर्म्मपाल) १९ चित्रसेनजी २० शम्भूजी २१ महासेनजी (ऋद्धीश जी) २२ सुरथजी २३ रुद्रदत्तजी (कर्णपालजी) २४ हेमरथजी (रोमपालजी) २५ चित्रांगदजी २६ चन्द्रसेनजी (चित्ररथजी) २७ बाल्मीकजी (वसनराजजी) २८ धृष्टद्युम्नजी (वरुणजी) २९ उत्तमजी ३० सुनीकजी ३१ सुबाहुजी (मोहनजी) ३२ सुरथजी ३३ भरथजी (भद्रसेनजी) ३४ मन्यकीजी (मान्यकजी और सत्विकजी) ३५ शत्रुजितजी (केसरीदेवजी) ३६ विक्रमजी ३७ महदेवजी (इन को जीतकर कुरुवंशी राजा ने दिल्ली ले ली) ३८ वीरदेवजी (भीमसेनजी) ३९ बसुदेवजी ४० वासुदेवजी ४१ रणधीरजी ४२ शत्रुघ्नजी ४३ सुमेरजी (शालिवाहनजी) ४४ कृतवर्म्माजी ४५ सुवर्म्माजी ४६ दिव्यवर्म्माजी ४७ यौवनाश्वजी ४८ हरियश्वजी ४९ अजैपालजी (अजमेर बसाने वाले) ५० भठदलनजी ५१ अनगराजजी ५२ भीमजी ५३ गोगाजी ५४ शुभकरणजी ५५ उदयकरणजी ५६ जगकरणजी ५७ हरीकरणजी ५८ कीर्तीसिंजी ५९ बालकृष्णजी ६० हरिकृष्णजी ६१ रामकृष्णजी ६२ बलदेवजी ६३ हरदेवजी ६४ भीमजी ६५ महदेवजी ६६ रामदेवजी ६७ वसुदेवजी ६८ श्याम-देवजी ६९ हरिदासजी ७० महीधरजी ७१ वामदेवजी ७२ श्रीधरजी ७३ गंगाधरजी ७४ महादेवजी ७५ शारंगधरजी ७६ मानसिंहजी ७७ चक्रधरजी ७८ शत्रुजितजी ७९ हलधरजी ८० महाधनुजी ८१ देवदत्तजी ८२ दामोदरजी ८३ काशीनाथजी ८४ लीलाधरजी ८५ धरणीधरजी ८६ रमणेशजी ८७ भगवतदासजी ८८ कृष्णदास जी ८९ शिवदासजी ९० हरिपूर्णजी ९१ देवीदासजी ९२ कर्मचन्द्रजी ९३ रामदासजी ९४ महानन्दजी ९५ विष्णुदासजी ९६ महारामजी ९७ रेवादासजी ९८ अमरसिंहजी ९९ गंगादासजी १०० मानसिंहजी १०१ विश्वंभरजी १०२ मथुरादासजी १०३ द्वारिकादासजी १०४ माधवजी १०५ सुदामजी १०६ वीरभद्रजी १०७ गोपालजी १०८ गोविन्ददासजी १०९ माणिक्यराजजी दूसरे (इनके दो पुत्र बड़े हनुमानजी

गति अंत सुमति सो होइ बीर। पावै सु जन्म जज्जर सरीर ॥
द्रवि गयौ सुमन बीसल नरिंद। उप्पनौ बीर छिति बीप्प कंद॥छं०२९८॥
धन मदन सदन भरि स्रब्ब जन्म। तिह परत उठ्ठि क्रत्या कदम्म ॥

ढुंढा दानव की उत्पत्ति और उसका अजमेर के बन में रहना ॥

क्रत्या कदम्म उर असुर रज्जि। धर ढुंढ नाम दानव उपज्जि॥छं०२९९॥
जगि जोग नयर जुगनीय थान। पुज्जै सु आय उग्गति विहान ॥
रथ च्यार त्रक्र उत्तंग वाह। असि असिय हथ्थ मुष अग्ग दाह॥छं०३००॥
संभरिय धरा धरनीय ठाह। पुक्करचौ नरनि र जाहु जाहु ॥
सिर कोपि रीस धुनि दमन बज्जि। उभरे पग्ग जनु इन्द्र गज्जि॥छं०३०१॥
प्राहार पाय धुकि धरनि ध्रुज्जि। पुर नयररुद्र उर हक्कि वज्जि ॥
कंपी सु भूमि नव षंड मान। जज्जरिय नाव ज्यौं भाय पान॥छं०३०२॥

और छोटे सुग्रीवजी जिन मे पाटवीं हनुमानजी सांभर का राज्य अपनी प्रसन्नता से सुग्रीवजी को देकर आप पन्ना जीत वहां के राजा हुए कि जिन के वंश में इकतीस ३१ प्रकार के पूर्बिये चौहान हुए) ११० सुग्रीवजी (सांभर के राजा हुए) १११ अंगदजी ११२ केसरीजी ११३ जयंतजी ११४ जगदीशजी ११५ जयरामजी ११६ विजयराम जी ११७ कृष्णजी ११८ जीतयुद्धजी ११९ गोवर्द्धनजी १२० मोहनजी १२१ गिरिधरजी १२२ उदयरामजी (उद्यमजी) १२३ भारथजी १२४ अर्जुनजी १२५ शत्रुजीतजी १२६ सोमदत्तजी १२७ दुखनजी १२८ भीमजी १२९ लक्ष्मणजी १३० परशुरामजी १३१ रघुरामजी (मारोठ के राजा से सात दिन लड़कर सांभर छोड़ बुरहानपुर अपने सुसरे के यहां भाग गए और वहीं मरे) १३२ समरसिंहजी १३३ माणिक्यराजजी तोमरे (सांभर इन्हीं ने पीछे विजय कर लिया १३४ महुकर्मजी (दामोदरजी) १३५ रामचंद्रजी १३६ संग्रामसिंहजी १३७ शिवदत्तजी (श्यामदत्तजी) १३८ भोगादत्तजी १३९ शिवदत्तजी १४० रुद्रदत्तजी १४१ ईश्वरजी १४२ उमादत्तजी १४३ चतुरजी १४४ सोमेश्वरजी पहिले (पहिले के दो लड़के भरथजी १ और उरथजी २ उनमे से भरथजी पाठवी के वंश में पृथ्वीराजजी हुए और उरथजी के वंश मे बूंदी और कोटा आदि के हाडा चौहान हुए हैं) १४५ भरथजी १४६ युद्धेष्टजी ॥

इसके छन्द २२८ की पहिली तुक के पहिले पाद "सुत मोहसिंह बर मोह रूप।" में कवि का गूढ़ आशय यह समझना आवश्यक है कि वह उसमें तीन नाम वर्णन करता है मोहसिंह (सिंहदेवजी) सिंहबर और मोहनरूप कि जिसके सिंघ शब्द का अर्थ करने के समय मोह शब्द के साथ और बर के साथ दोबार लगाने से पृथक दो नाम सिद्ध हो जाते हैं अतएव हमने सिंघ शब्द के नीचे दो लकीरे करी हैं। और इसी तरह छन्द २९१ की पहिली तुक के दूसरे पाद में "प्रथम" शब्द से

लग्गै न पलक द्रग देवचच्छि । डक्कै डकार द्रगपाल गच्छि ॥
दिष्षौ सरूप दानव उतंग । बैराट रूप हरि धन्यौ अंग ॥छं० ३०३॥
पंषीरू म्रग्ग नर स्रप्त भाजि । आघात सद्द दानव सु गाजि ॥
चित चिंत चित्त जुग्गिनि प्रधान । पुज्जै सु आनिउग्गति विहान॥छं०३०४॥
चहुआन रूप दानव प्रमान । भज्या सु पुत्र आबू सथान ॥
॥ छं० ३० ॥ रू० १४० ॥

दूहा– सो दानव अजमेर बन । रहि तह दिन घन अंत ॥
सून्य दिसान जीव कौ । थिर थावर द्रिगमंत ॥
॥ छं० ३०६ ॥ रू० १४१ ॥

मुरिल्ल संभरि स्रोर नरिदह मभरि । पथ प्रजा पमरै रन जंगर ॥
रम्य अरम्य करी मु धरन्निय । रहें मठ कोट अफोट करन्निय ॥
॥ छ० ३०७ ॥ रू० १४२ ॥

सारंगदेवजी की राणी गौरीजी का अनलगर्भ सहित रणथंभ पधारना

दूहा गौरां चलि रनथंभ गिरि । सारंग सच्चौ राह ॥
प्रजा पुलंदी महिम धरि । ग्रभ्भ अनल गौराह ॥
॥ छं० ३०८ ॥ रू० १४३ ॥

पृथ्वीराज नाम का निःसन्देह ग्रहण षट् भाषा मे व्युत्पन्न विद्वान कर सकते । तदनन्तर वीसल्लदेवजी के जो वृत्त चंद ने जैसे के तैसे उत्थापित होकर लिखे हैं–उनको मनन करने से विद्वान पाठक सहज ही मे यह अनुमान कर सकते हैं कि यद्यपि चंद उनके कुल का वंशपरंपरा से राज-कवि था पर वह निःसंदेह बड़ा ही स्पष्ट वक्ता और पक्षपातरहित पुरुष था, क्योंकि आज इस उन्नीसवीं शताब्दी मे भी जब कि स्वतंत्रता और सभ्यता का सूर्य पूर्ण प्रकाशित हो रहा है तब भी कोई राज कवि ऐसा स्पष्ट वक्ता और पक्षपात रहित अपने यजमान की दुर्नीतियों को उसकी भावी संतानों के शिक्षणार्थ निडर होकर प्रकाश करने वाला प्राय किसी की दृष्टि मे न आया होगा । इस के साथ भाषाओं के शोध करने वाले विद्वानों को चंद का वह वाक्यखंड "हक अहक" भी ध्यान देकर समझने योग्य है कि "हक अथवा "हक्क" जो हिंदी भाषा मे प्रयोग होता है वह अरबी तथा फारसी नहीं है किंतु संस्कृत स्वक शब्द से है और "अहक" शब्द स्वतः इस बात की स्पष्ट साक्षी देता है । इसी रूपक के छन्द १९९ मे ढुंढा राक्षस की उत्पत्ति चंद कवि वर्णन करता है ॥

१४१ पाठान्तर--रहितह । रहतह । दिसानन । जीवनयै । द्रिग । मंत ॥

१४२ पाठान्तर–पसरी । अवन्निय । रहै ॥

१४३-१४४ पाठान्तर—सारंग । ग्रभ । गोराम । शुभ । रिनथंभ । राजदव । पति ॥

अनल प्रभ्भ घरि गौरि सिसु । गय रनथंभ दिसान ॥
राजद्व राबत पती । मातुल पष चहुवान ॥
॥ छं० ३०९ ॥ रू० १४४ ॥

आना राजा का जन्म होना और उनका बालपन ॥

भुजंगी --धरै गौर जन्न'म आनल्ल राजं । बसे देव गामं दुनी छत्र लाजं ॥
नवं वृत्त नित्तं नवं वृत्त सिष्षै । नरं तार तारं नवं भृत्त भिष्षै॥छं० ३१०॥
चरं संभरी बात पुच्छंत मित्तं । धरै ध्यान दिष्षै अजम्मेर चित्तं ॥
कला स्रब्ब सिष्षिं महा मल्लवीरं । गिनै मग्ग ओमं पढै मंत्र धीरं॥छं०३११॥
दिनं सीह अब्बीह आषेट षिल्लै । ननं नेह निद्रा मुरं सिद्ध मिल्लै ॥
करं पाइकं बिद्ध साइक्क नष्षै । भर भै अभैनं सुयं सब्ब रष्षै ॥छं०३१२॥
वधै काम कामं अलीहो न भष्षै । सुभै राजसं तामसं सत्त चष्षै ॥
रमै जम्म सेना ग्रहै जम्म भारी । सुई संभरी वात दिष्षै कगारी॥छं०३१३॥
कहै काल कालं अकालंति बंधै । इतं जोर मा वित्त सौं चित संधै ॥
दुअं बाह परचंड दुर्ग्गं सरूपं । इसो दिष्षियै राज आना अनूपं ॥
॥ छं० ३१४ ॥ रू० १४५ ॥

इन रूपको के पढने के पहिले हमारे पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि वीसलदेवजी ने अपने लडके सारंग देव जी को अपने हाथ मे मार डाला था कि जिस के पीछे वे आप भी सांप के काटने से मर गये और अजमेर अर्थात् संभर का राज्य बिना राजा के रह गया और अजमेर के वन में ढुंढा नामक दानव रहने लगा किंतु बीसलदेवजी के लड़के सारंगदेवजी की रानी गौरी के गर्भ था। रानी जी राज्य की यह दशा देखकर अपने पिता रणथंभ के राजा के यहां चली गई और वहां सारंगदेवजी के अनल अर्थात् आना राजा उत्पन्न हुए। यह सब कथा आगे के रूपकों में जब आना राजा की माता से अपने पिता का नाम और सब वृत्तांत पूछेगे तब कवि माता और पुत्र के संवाद में बीसलदेवजी की कथा सविस्तार वर्णन करेगा। इन रूपकों में अभी गौरी रानीजी का सगर्भा रणथंभ जाना ही कवि ने वर्णन किया है ॥

१४५ पाठान्तर- आनल । वृत । नितं । वृन । भृत । बान । पुछंत । सेत । चितं । सब । सिषि । सिषं । महामल्ल । गिनी मंगि आमं । औमं । अवीह । सिद्धं । पायकं । साइकं । नंष्वै । भरंभे । अभैन सोई सब्ब रष्वै । भरं भेअ भैनं सोई सब्ब रष्वै । भरं भेअ भैनं सोयं सब्ब रष्वै । वधे । अली । होन । .तं । वषै । जम । ग्रहे । जम । सोई । साई । सोइ । संभरि । तिवंधै । जो रामावित्त । सों । दुर्ग्गा । दिषियै । अनूप ॥

इस रूपक से कवि ने आना राजा के जन्मादि की कथा वर्णन करनी प्रारंभ की है ॥

कवित्त – अति बल बंड प्रचंड। हिंड आषेटक षिल्लै ॥
हिरन रोज वाराह। बंधि बागुर वर मिल्लै ॥
वन परवत्त झिरना। निवान राइ* राजन संग हिंडै ॥
राग रंग भाषा* कव्वित्त। दिव्य वानी चित मंडै ॥
हय हथ्थि देय संकै न मन। षग्ग मग्ग षूनी वहै ॥
चहुआन वंस अवतंस इम। रँग अनेक आना रहै ॥
॥ छं० ३१५ ॥ रू० १४६ ॥

आना का बालापन व्यतीत होना और वीरत्व को प्राप्त हो माता से पूछना

दूहा – तन मंडी महि अप्पनी। छंडी बालक बुद्धि ॥
रोम रम्यौ अरि अंग में। तब पुछि मातह सुद्धि ॥
॥ छं० ३१६ ॥ रू० १४७ ॥

आना की माता का उसको सर तर और अषषर विद्या का उपदेश करना ॥

गाहा – सर तर अष्षर विद्या। साविद्या अन्य सारमी नथ्थी ॥
सो आना अन भंगं। मंत्रनं प्रिय यो सष्षि ॥
॥ छं० ३१७ ॥ रू० १४८ ॥

जा सिसु वीरं पननी। बीरं होइ बीर भज्जायं ॥
नवं तीन वत्त तरंगं। मा माल वीरया पुत्तं ॥
॥ छं० ३१८ ॥ रू० १४९ ॥

आना का माता से पूछना कि मैं किस वंश में उत्पन्न हुआ हूँ

दूहा – वीर पुत्त मानुल सुमति। गवरि सपन्नो जाइ ॥
को किहि बंसहि ऊपज्यौ। तूं मुझ जंपहि माइ ॥
॥ छं० ३१९ ॥ रू० १५० ॥

---

१४६ पाठान्तर-गाद। अंग। हिंडै। कवित। मपै। रग। गाइ * भाषा * विशेष हैं ॥

१४७ पाठान्तर –पन। मही। बुधि। पुछिय।

१४८ पाठान्तर-अरकर। मंत्रनं। अनभंग। साम्ने ॥ १४९ ॥ वीर। भजाई। नवनी नवन नरंगं। नव नीन वन नरंगं। नवनी नव तत रंगं ॥ यह तीन प्रकार के पदच्छेद कोई कोई कवि कहते हैं ॥

१५० पाठान्तर-पुनि। मंपन्नो। जाई। जाइं। किहि। ऊपनी। माइ माइ ॥

गौरी माता का कहना कि यह बात न पूछो उसके कहते मुझे भय और करुणा होती है

दूहा—गौरि मात कहै पुत्र सौं। पुत्त न पुव्वछहु बत्त ॥
जिहि भय जल लोचन भरहि। बर पूछन पर तत्त ॥
॥ छं० ३२० ॥ रू० १५१ ॥

आना का माता से अपने वंश की कथा हठ करके पूछना

पद्धरी—उच्चयो मात सों पुत्र सच्चि। जानों न वंस मो पिता वच्चि ॥
मो तात नाम बंदो न लेहि। नन करों श्राद्ध कवहू न गेह ॥छं० ३२१॥
अप्पौ न अंब अंजुलिय तात। उप्पनो वेद हूं किन सु गात ॥
के नाम लेय मातुलह वंस। पित बैर लेउं बर बीर हंस ॥छं० ३२२॥
छंडौं कि प्रान मुक्कूं व देह। संसार भार अप्पौं कि छेह ॥
आना नरिंद यह कहिय बात। सुनि श्रवण अप्प धर परिय मात ॥
॥ छं० ३२३ ॥ रू० १५२ ॥

आना की माता का उसे कथा प्रगट न करने को कहना और ढंक करके संक्षेप में कहना

दूहा पुअ प्रगट्ट न कीजिये। मो तिय इय अंदेह ॥
आदि हुते दानव प्रबल। धर धुंमी असुरेह ॥
॥ छं० ३२४ ॥ रू० १५३ ॥

भिरन कहत दानव सरिस। मानव मनुषी देह ॥
मो गंधारि निहारि मुष। पुत बिलासनि गेह ॥
॥ छं० ३२५ ॥ रू० १५४ ॥

अरिल्ल—इह मातुल बंस प्रधानह मान। भये दम पुत्र सु मानिक थान ॥
विचारि करयौ तहा संभरि ग्राम। वस्यो अजमेर सुमंत विश्राप ॥
॥ छं० ३२६ ॥ रू० १५५ ॥

अन्य उपलक्ष्यों के द्वारा आना का संभरि की पूर्व कथा संभारना

कवित्त—धर मुक्किवलि राय। मात लभ्यौ न कित्त रिस ॥
धर मुक्किय सुअ पंड। सुष्ष मुक्यो सु दुष्ष बसि ॥

---

१५१ पाठान्तर—गौरी। सो। पुन। पुछहु। जिन। भरहिं। पूछत। परमत।

१५२ पाठान्तर—उचयौ। उचरयो। रूच्च। जानौ। मझ। वच्च। लेंहि। करयौ। सु। वेदहु। किनसु। कै। लेइ। लैऊं। लेऊ। छंडो। कै प्रानं। मुक्को। व अछेह। आनां। इह। इम। कहीय। अप। बरिय ॥

१५३-५५ पाठान्तर—पुत्र। पुत्त। प्रगठ। कीजीइ। जिय। अंदेस। हुंते। असुरेस ॥ १५३ ॥ विलासन। विलास। न ॥ १५४ ॥ प्रधांनह। मांन। मांकिन। थांन। ग्राम। सुमंत्र। विश्राम ॥ १५५ ॥

धर मुक्किय श्रीराम। सिया षोइय बल गोइय ॥
धर मुक्की नल राय। मिरहि कालंकित ज्योइय ॥
धर मुक्कि वीर हर चंद नृप। नीच घरह घट जल भरयौ ॥
ढंकन सु इला नृप जानियै। नृप ढंकन इलचर कयौ ॥
॥ छं० ३२७ ॥ रू० १५६ ॥

नृप ढंकन इल होइ। इलह ढंकन सु राज भर ॥
षह ढंकन वर देव। देव ढंकन वर अंबर ॥
अपजस ढंकन कित्ति। कित्ति ढंकन जस धारिय ॥
औगुन ढंकन विद्य। सुगुन विद्या उच्चारिय ॥
ढंकनह काल वर ध्रंमको। ध्रंम काल ढंकन करिय ॥
मावत्ति गुरू ढंकै जु सिसु। सिसु ढंकन पित उच्चरिय ॥
॥ छं० ३२८ ॥ रू० १५७ ॥

अरिल्ल -इहि विधि आनल वत्त उचारिय। पुब्ब कथा संभरि संभारिय ॥
किहि विधि रापस ढुंढ उपन्ना। मारंगदे कैसे जुद्ध किन्ना ॥
॥ छं० ३२९ ॥ रू० १५८ ॥

आना का माता से पूछना कि नर अर्थात् वीसलदेव दानव कैसे हुआ

दूहा—एक वत्त तुम सम कहौं। मात कथा समझाई ॥
नर किहि विधि दानव भयौ। इह अचिरज मो आइ ॥
॥ छं० ३३० ॥ रू० १५९ ॥

दूहा—जो मोसों सांच न कहौ। तौ हौ छंडों देह।
इह अप्पनि जिय जांनि जहु। नव निहचे निज अेह ॥
॥ छं० ३३१ ॥ रू० १६० ॥

गाहा -कथि मा कांनन कथयं। जो मो ऊपर पुत्र हितायं ॥
जीवन वृथा परंनी। आना नह आंन उपायं ॥
॥ छं० ३३२ ॥ रू० १६१ ॥

१५६-१५७ पाठान्तर-वल। राइ। लिन्यो। ग्मि। मुकीष श्री। मुष। दुष। मुकीय। सीया। पोईय। गोईय। मुक्किय। सिरां। मिरह। कालंक। तज्यो। जोइय। मुंकि। घरहि। भयौ। इल। भूमि। इल वर। कयौ। अप। जस। किति। किति। धारीय। औगन। सगुन। उचारीय। कों। मा। विन ॥ १५७ ॥ वत। उचारीय। किहि। अपन्नो। कीनो ॥

१५८-१५९ पाठान्तर -वन। सों। समझाय। अचरिज ॥ १५९ ॥ जो। सो। हूं। जानियो। नव निहचै नि संदेह ॥

१६१ पाठान्तर-१६४७ में ॥ कषि कथावत कथियं। जो उपर पुत हितायं ॥

आना की मा का कहना कि दानव की कथा न सुन चित्त भंग होगा

दूहा -पुत्र नि मुनि दानव कथा। श्रवन सुनन होइ भंग॥
इह अरिष्ट अँग उप्पजै। पित परिपिता प्रसंग॥
॥ छं० ३३३ ॥ रू० १६२ ॥

आना का उत्तर दे कहना कि ऐसे मुझे क्यों डराती है

मुरिल -ऐसी कहि मो कहु डरपावहु। मेरे कछु इह दाय न आवहु॥
रामाइन भारथ की बाता। मो हौ सवै सुनत हौ माता॥
॥ छं० ३३४ ॥ रू० १६३ ॥

आना की मा का कहना कि जिस से कार्य सिद्ध न हो उसका कहना व्यर्थ है

कवित्त -जिहि पुर गवन न होइ। ताहि कोइ पंथ न बुझ्झै॥
जिहां दिष्ट नह भिदै। तहां कैसे करि सुझ्झै॥
जो श्रवन न नह सुनी। सु* कहौ कैसी परि कहियै॥
जाकै देह न होइ। ताहि कैसे कै गहियै॥
इह कथा असम अद्भुत अति। हठ निग्रह सुत जिन करै॥
सुनत ही श्रवन दुप उप्पजै। सिद्ध न कोइ करिज सरै॥
॥ छं० ३३५ ॥ रू० १६४ ॥

आना का प्रत्युत्तर देना कि आगे कितने नर, ऋषि और राइ दानव हुए हैं कथा सुनने से क्या होता है

कवित्त मात सुन हु मुझ बात। कथा सुनतें कहा लग्गै॥
केते नर रिष राइ। भए सुर दानव अग्गै॥
तिन की कथा प्रसंग। सुनहि सब को समुझावहि॥
तिन को जुद्ध विरुद्ध। लोक वेदन में गावहि॥
इह जानि मात श्रवननि सुनौं। कहतें कछु लग्गै नहै॥
जेजे निमांन विधि निम्मए। तेते निहचै निब्बहै॥
॥ छं० ३३६ ॥ रू० १६५ ॥

---

१६२ पाठान्तर—पुत्रहि। होय। अग। उप्पज्यो। उपज्यो॥

१६३ पाठान्तर—कू। क्यू। पावहि। मेरे। कछूई। आवहि। वातं। हूं। हूँ। हों। हो मातं॥

१६४ पाठान्तर—गमन। तासु। को। बूजै। जहा। कैसै। सूझै। अवनहु। नहु। न। कहु। कहीर। कैसैं। गहियै। उपजै। कोय॥ सु * विशेष है॥

१६५ पाठान्तर-बात। सुनतें। सुनि। कोइ। वेदनि। जानि। कहतें। कहे। तैं। जै जै। नृमान। नृमए। निृमए। निरवहै॥

आना की माता का बीसलदेवजी की सविस्तार कथा कहना ॥

बीसलदेवजी का जन्म होना

मुरिल - पुत्त सुनहु इह बत्त पुरानी । कहत्तै होइ गद गद बानी ॥
अनल कुंड आबू रिषि कीनौ । राज उपाइ राज सिर दीनौ ॥
॥ छं० ३३७ ॥ रू० १६६ ॥

दूहा - ताके कुल तें उप्पनौ । महाराज ध्रंमाधि ॥
ताके बीसल देव नृप । सब्बै राज आराधि ॥
॥ छं० ३३८ ॥ रू० १६७ ॥

बीसल देवजी का पाठ बंठना

कवित्त - आठ सैं रु इक ईस । बैठि बीसल सु पाट ब्रष ॥
सुक्रवार प्रतिपदा । मास वैसाष सेत पष ॥

---

१६६ पाठान्तर — वत । पुरानी । गहेतें । कहे । ते । वांनी । रिष । ॥ १६६ तें । ऊपनौ । ध्रम्माधि । ताकै । नृप ॥

१६७ पाठान्तर-बमल । पाठ । वर । प्रनिपादा । प्रनिपद्दी । मारै । उचारै । उच्चरै । अंगबर । ध्रम । नरै ॥

१६८ हमारे पाठकों को भले प्रकार ज्ञात है कि कुछ दिनों से कोई कोई विद्वान इस ग्रन्थ को आदि से अंत पर्यंत जाली बना हुआ अनुमान धरते है और जितना तर्क वे अपने अनुमान को सिद्ध करने को लाते हैं उनमें सब से बड़ा तर्क कि जिस पर दूसरे तर्कों का भी सर्वरीत्या आधार है वह यह है कि इस ग्रंथ में लिखे हुए संवत् संप्रति शोध हुए और मुसलमानी तवारीखों में लिखे हुए संवतों से नहीं मिलते। अतएव इस संवत् विषयक झगड़े का प्रारंभ इस रूपक १६८ और छन्द ३३९ से समझना चाहिये, क्योंकि रासो के जितने छन्दों में संवत् मिति कहे गए हैं उनमें से प्रथम छन्द यही है। इससे हमको विदित होता है कि संवत् ८२१ वैशाख सुदी १ शुक्रवार को बीसलदेवीजी राज-गद्दी पर विराजे, किन्तु इसी आदि पर्व में इस रूपक से थोड़े ही और आगे बढ़कर हम को बीसलदेवजी के पट्टन विजय करने के संवत् सूचन करने वाले नीचे लिखे रूपक मिलेंगे —

(संवत १८५९ की पुस्तक में)

दूहा—सो संवत् नव सत अद्ध । बरस तीस छह अग्ग ॥
पुर पट्टन बीसल नृपति । राजत सयल्लह जग्ग ॥

कवित्त—संवत् नव सत अद्ध । बरस दस * तीय सत्त अग्ग ॥
पुर प्रविष्ट बीसल नरिंद । राज्यव सयल जग्ग ॥

आये बंस छतीस। विप्र बंदी जन सारे॥
दियौ छत्र सिर तिलक। वेद मंत्रह उच्चारे॥

(सवत १७७० की पुस्तक मे)

दोहा—सो संवत् नव सत्त अथ। बरस तीस छह अग्गि॥
पुर पट्टन वीसल नृपत्ति। राजत सयलह जग्गि॥

कवित्त—सर संवत् नव सत्त। बरस दस * पच सत्त अग॥
पुर प्रविष्ट वीसाल। नृपत्ति राजत समल जग॥

(गुजरात देश की पुस्तक मे)

दोहा—सो संवत् नव सत अधिक। वर्ष तीस छह अग्ग॥
पुर प्रतिष्ठ विशल नृपत्ति। राजत सकले जग्ग॥

जितनी पुस्तकें हम इस टिप्पण के लिखने समय देख सके उन सब में ऊपर लिखे पाठ पाए अर्थात् किसी मे हमारी स० १८१९ की पुस्तक का पाठ मिलता है तो किसी में सवत् १७७० वाली का। शोक की बात है कि हमारी १६३१ तथा १६३२ वाली पुस्तक में तो यह पर्व्व ही नही है और संवत् १६८७ वाली मे यह पृष्ठ नही है कि जिसमें इन छन्दो का होना संभव है। यह तो जानने मे ही है कि पिछले रूपक १८० मे चंद कह आया है कि 'चौसट्टि बरस बर राज कीन" चौंसठ बरस बीसलदेवजी ने राज्य किया। अब विद्वानो के विचार देखने जैसी बात है कि इस रूपक के संवत् को इसी प्रकरण के दूसरे रूपको मे कहे सवतो से मिलाने से एक सौ वर्ष का फरक पडता है और जो ९१ वर्ष का एकसा अंतर रासो मे लिखे सब संवतों को संप्रति शोध मे मिलाने और जो परवाने हमने पृथ्वीराजजी के शोध किये है उनमें पडता है वह इस मे सिवाय है। जगत का एक यह सर्वसाधारण नियम है और उसका भार सब पक्षपातरहित विद्वानो पर है कि प्रत्येक समय के विद्यमान बडे-बडे विद्वान सब परम पद-प्राप्त ग्रन्थकर्ताओ के ऊपर जो कोई व्यर्थ आक्षेप करे उसको खण्डन करके छिन्न-भिन्न कर दे, क्योंकि यदि यह भार विद्वानों पर स्वत सिद्ध न रहा होता तो सब कीट क्रिकिट सब अमूल्य ग्रन्थो को काट कर

---

* हिन्दी भाषा के ऐसे काव्यो मे चद जैसे महाकवियो की गूढ बातो को खोलने की कुंजियो मे से हम एक का यहा प्रकाश करते है कि दश दस और दशि दसि शब्दो का अर्थ, जहाँ वे कुछ संख्या प्रकाश करने को प्रयुक्त हुए हो वहा सूक्ष्मता रखते है, अर्थात् दश अथवा दस=१० का वाचक और दशि अथवा दसि=शून्य० अर्थात् केवल दहाई का वाचक होता है और जहाँ लेखक के दोष से इन शब्दो के लिखने में गड़बड़ हो जाती है वहा सख्या मे भी गडबड पड जाती है इस के उदाहरण इस महाकाव्य में यहां से लेकर अनेक स्थलो मे आवेंगे॥

आनंद अग्गवर इन्द्र सम। ध्रंम नंद जस उद्धरै॥
अजमेर नयर अरि जेर करि। विमल राज बीसल करै॥
॥ छं० ३३९॥ रू० १६८॥

खा जांय और बड़े-बड़े कवियों के नामों पर पोता फेर दें। अतएव ऐसी जिम्मेदारी को शुद्ध अन्तःकरण से समझने वाला कोई विद्वान क्या यह कहेगा कि भिन्न-भिन्न पुस्तकों में यह भिन्न-भिन्न अशुद्ध पाठ चंद कवि जैसा महाकवि बीसलदेवजी की तरह दानव होकर लिख गया है? क्या इन भूलों का अपराधी चंद है? नहीं-नहीं कभी नहीं। हम क्या एक छोटा सा बालक भी कह सकता है कि यह सब भूलें अयोग्य लेखक और कवियों ने जान कर अथवा अनजानें की हैं। अब हमारी सम्मति इस विषय में चंद की शैली और ख्यातियों की पुस्तकों में लिखें सं० ९३१ को देखते हुए ऐसी है कि यहां ऐसा पाठ था कि "नौ सें अरु इकतीस" और इस हमारे अनुमान की पट्टन-विजय करने के संवत वाले रूपक पुष्टि करते हैं। देखो —

बीसलदेवजी का पाठ बैठना	९३१ वर्ष
उनका राज्य करना जोड़ो	६४ वर्ष
रासो के संवतों और विक्रम में जो सर्वत्र एकसा अन्तर है वह जोड़ो–	९१ वर्ष
	विक्रमी सवत १०८६

रासो के रूपकों के जो मूल पाठ अशुद्ध हैं उनको अभी हम जैसे लिखित पुस्तकों में हैं वैसे ही रक्खेंगे क्योंकि जब तक सब विद्वान एक मत न हो जांय तब तक उनको हम पुरातत्त्व विद्या के नियमों के अनुसार बदल नहीं सकते हैं। इसके अतिरिक्त हम पुरातत्त्ववेत्ताओं को चेत कराते हैं कि फीरोजशाह की लाट पर की प्रशस्तियों को अब एक बार प्रथम बीसलदेवजी के और पृथ्वीराजजी के चरित्रों को भले प्रकार ग्रंथान्तरों में पढ़कर उन आशयों के सहारे से फिर विचारें तो उनको मालूम हो सकेगा कि पहिली प्रशस्ति जिसमें का नीचे का लिखा अनुवाद है उसको बीसलदेवजी की नहीं समझना चाहिये किन्तु पृथ्वीराजजी की समझना उचित है और केवल यही विशेष समझना होगा कि बीसलदेवजी के उपलक्ष का संबंध उसमें इतना ही है कि जिस मिती को वह प्रशस्ति निर्माण हुई है वह मिती बीसलदेवजी के पाठ बैठने की है अर्थात् वैशाख सुदी १ और पृथ्वीराजजी को बीसलदेवजी का अवतार होना लोग मानते हैं अतएव इन प्रशस्तियों के लिखने वालों ने अपने इस गूढ़ भाव को प्रकाश करने में उन दोनों का सादृश्य दिखाया है कि जिससे निर्णय करने में यह झगड़ा पड़ जाता है कि अमुक प्रशस्ति पृथ्वीराजजी की है अथवा बीसलदेवजी की। हमारे पास इन प्रशस्तियों संबंधी सब संज प्रस्तुत नहीं हैं और न इतना अवकाश है, नहीं तो हम ही परिश्रम करके कुछ विशेष सारांश प्रकाश करते। इसके अतिरिक्त जो सं० १२२० जैसी प्रशस्तियों को बीसलदेवजी की मानें तो फिर पृथ्वीराजजी को

बीसलदेवजी का अंत समय पट्टन विजय करने को छत्र धारण करना

दूहा –बर पट्टन अट्टन अमित। ममित वेद फुनि राज ॥
समय अंत बीसल मिरह। धरयौ छत्र सम साज ॥
॥ छं० ३४० ॥ रू० १६९ ॥

पद्धरी –सिर धारि छत्र बीसल नरिंद। आसनह मिघ बर बरन इंद ॥
भूदेव मंडि वेदी बिसाल। रम पंच मेधि मेलै नि काल ॥छं० ३४१॥
बर बढी ज्वाल खंडन विभाग। जमि रहे जमल पुट पलति लाग ॥
मष समुष दिष्ष परसपर बैन। तिनपुटह बीच तन धूग अैन ॥छं० ३४२॥
जानीत वेद मुख रहै मौन। मुभ ममय अमुभ उच्चार कौन ॥
संपूर वेद किन्नो भिषेक। दुज दइय वदि आसिष असेष ॥छं० ३४३॥
विधि अैन राज दिय मु लप माल। जै जया सबद बीसल मुआल ॥
॥ छं० ३४४ ॥ रू० १७० ॥

बीसलदेवजी पाठ बैठकर कैसे राज करते थे

दूहा –लमय पाट बीसल नृपति। विकल इच्छ घन मार ॥
पंडन त्रिय दंडन करै। बिन अपराध अतार ॥
॥ छं० ३४५ ॥ रू० १७१ ॥

तेरहवें शतक मे मानना पडेगा, उस दशा में भी पृथ्वीराजजी चित्तौड की ओर आबू की प्रशस्तियो के अनुमार रावल समरसीजी के ममकालीन होंगे और मुमलमानी तवारिखों के मन झूठे ठहर कर मप्रति प्रसूत हुए तर्क के अनुसार मुसल्मानी तारीख जाली मिद्ध होगी ॥

OM

In the year 1230, on the first day of the bright half of the month Vaishakh (a monument) of the Fortunate - Visal –Deva son of–the–Fortunate--Amilla –Deva – King - of—Sacumbhari,

Popular Ed. of the Asiatic Researches, page 315

पाठान्तर - पाठ। बर। वर। प्रतिपादा। प्रतीपट्टी। छत्तीम। मारै। दीयो। उच्चारै। नैर।

१६९ पाठान्तर—पुनि। समैं। मरह। धर्यौ। जास ॥

१७० पाठान्तर –मंडि। छत्रधारि। वंबरन। इंद्र। मधि। मेले। मले। मेलिय। वढिय। वटी। दिषि। बेन। पुट। हवी। चतन। अन। रहे। मले मोंन। शुभ। अशुभ। कोंन कीनो। बंध। बंधि। एन। शद्द। मूवाल ॥

१७१ यह रूपक संवत् १७७० और १६ ७की पुस्तकों में तो नहीं है किंतु सं० १८५९ तथा सोसाइटी की छपी हुई पुस्तकों में है जब तक कि इमसे भी बहुत पुरानी पुस्तकों में यह न मिले तब तक उसको क्षपक संज्ञा हम नहीं दे सकते। यहां यह भी

कवित्त—इसो बीर बीसल्ल। नरिंद अजमेर नैर पर ॥
रचि रचना पुर दिव्य। मनों विसक्रम्म कीय कर ॥
अध्रम ध्रंम उप्परें। क्रंम दुक्रित मन इच्छै ॥
हक्क द्रव्य संग्रहै। विना हक लोभन वंछै ॥
चव वरन सरन चहुआन कै। वंस छतिस सेवंत ही ॥
बीसल नरिंद ध्रंमाधिधरि। देव कला देवत्त ही ॥
॥ छं० ३४६ ॥ रू० १७२ ॥

बीसलदेवजी का अपने पुत्र सारंगदेवजी को उपदेश करके सांभर भेजना कि जो अपनी धा-बंन के पति के विनाश से दुखित हो गए थे

कवित्त—पट रागिनि परिहार। प्रम्भ सारंग उपन्नौ ॥
पुत्र होत भइ मृत्य। बाल बानिक कौं दिन्नौ ॥
ता वानिक नंदिनिय। नाम गौरी सारंग सन * ॥
इक्क थान पय पान। इक्क सिज्या इक आसन ॥
नव बरस लग्गि कन्या रही। ब्याह राज बीसल कियो ॥
वीबाह हुअे बर वन गयौ। तहां सिंघ वर विनसयो ॥
॥ छं० ३४७॥ रू० १७३ ॥

दूहा—सिंघ विनस्यौ वनिक सुत। कन्या किया अंदोह ॥
वृत्त धर्यौं ब्रह्मचर्य कौ। तप पहुकर तजि मोह ॥
॥ छं० ३४८ ॥ रू० १७४ ॥

समझ लेने योग्य बात है कि १६९ रूपक से १७० रूपक तक बीसलदेवजी की पाटन की चढ़ाई के लिये छत्र धारण करने का वर्णन है। प्राचीन समय में जब कि राजा किसी पर चढ़ाई करते छत्र धारण विधि का वैदिक कर्म करके प्रस्थान करते थे। पाठकों को यह भी बीसलदेवजी की कथा बहुत सावधानता से पढ़नी चाहिये क्योंकि इसके बीच-बीच में उनके लड़के सारंगदेवजी आदि के भी वृत्त आते जाते हैं परन्तु उन सब को कवि ने बीसलदेवजी के वृत्तों में मिलाकर वर्णन किया है ॥

पाठान्तर—इछ।

१७२ पाठान्तर - वीसल्ल। नेर। मनौं। विश्वक्रम्म। विसक्रम्म। विसकर्म्म। करि। अधंम। ध्रम। उपरें। क्रम। दुक्रित। नन। इछै। विना। हक्क। लोभ। न। चछौव। चहुवांन। छतीस। ध्रमाधिधार। देव। नाही ॥

१७३ पाठान्तर पाठ। रानि। प्रम। उप्पनो। भय। मृत्ति। कों। दीनों। वनिक। दिनी। सम। रै। इक्क। लगें। कीयो। वीगा। हुवे। गये। विनस्सयो।

* यह पाठ हमने सं० १६४७ तथा १६६० की पुस्तकों में रक्खा है। इधर की सब पुस्तकों में स्नम पाठ है। मनोतिपणुदाने तथा त्रि० अखाण्डते ॥ अथवा सं० सून वा सूनु का अपभ्रंश है।

१७४ पाठान्तर—कन्या। कीयो। वृत धर्यो। पुहुकर ॥

पद्धरी—अति दुचित भयौ सारंग देव। नित प्रत्ति करै अरहंत सेव ॥
बुध धम्म लियौ बंधै न तेग †। सुनि श्रवन राज मन भौ उदेग ॥छं० ३४९॥
बुल्लाइ कुंअर सनमान कीन। किहि काज तुम्म इह धम्म लीन ॥
तुम छडि सरम हम कहौ बत्त। बांनिक्क पुत्र हुन तै दुचित्त ॥छं० ३५०॥
इह नष्ट ग्यान मुनियै न कान। पुरषातन भज्जे किति हान ॥
तुम राज वंस राजनह संग। मृगया मग षेलौ वन दुरंग ॥छं० ३५१॥
परमोध तजो बोधक पुरान। रामाइन सुन भारथ निदान ॥
अभिमान दान रिन सरन धम्म। चारचौ प्रकार सुनि राज क्रम्म ॥छं० ३५२॥
परमोध मानि राजन कुमार। तत काल मंगि बधे हथ्यार ॥
भय प्रसन राज कीनौ पसाव। संभरि रजधानी करहु जाव ॥छं० ३५३॥
गजराज पाट है वर उतंग। सिघासन दीनो जटित नंग ॥
तुम जाहु कुअर संभरिय थान। किरपाल करिय कायथ प्रधान ॥छं० ३५४॥
प्रोहित मुकंद ‡ सारंग चुहान। माचौर धनी नरसिंघ भान ॥
पधार लार बहवल संकोच। दिय बहुत द्रसम कीयौ न सोच ॥छं० ३५५॥
अनेक जाति उमराव सथ्थ। है गै नर वाहन सुतर हथ्थ ॥
तिहि बार धाय बानिक बुलाय। जिन जाहु कुंअर की मथ्य काय ॥छं० ३५६॥
तुम कियौ पुत्र सौ सेक मुड। पिक्षि वैन कह्यौ कहा देहुं दंड ॥
अजमेर मंन्हि संभरि दिमान। जो जाहु तब्ब पडौ परान ॥छं० ३५७॥
इतनी कथ्थि नृप चल्यौ सथ्थ। रथ च्यार भरे तिन वार अथ्थ ॥
जोजनह एक कीनौ मिलान। अनेक भष्ष तहा षान पान ॥छं० ३५८॥
भय प्रात प्रसन पग लग्गि पुत्त। चलि सीष मगि समरि पहुत्त ॥
सर जाय पहूचिय संभ राय। मन वच्च सुद्ध करि क्रम नाय ॥छं० ३५९॥
दस महिष भंजि तहा बली सु दीन। जज होम धोम सुर प्रसन कीन ॥
कीनौ प्रवेस सुर महिम मौलि। तोरन कलस बंधि राज पौलि ॥
॥ छं० ३६० ॥ रू० १७५ ॥

---

† हिं० तेग from Sk (तैग्म्य (तिग to assail. to seek, to injure, to attempt, to kill) or तिग्म = sharp as a weapon) इसी तरह हिं० तेज is note from the A. Tayz, or P Tez, but from the Sk तेज m. Sharpness, pungency, sharpness of a weapon brilliancy, spirit.

‡ यह नागर जाति का ब्रह्मण था ॥

१७५ पाठान्तर - प्रति। धम। कीयौ। वधे। स्रवन। भय। वुलाय। कुवर। तुम। ध्रम। धर्म। वृत। वानिक। तें। दुचित्त। ग्यांन। सुनिये। सुनीयै। कांन। भजैं। छित्ति। षोलो। सुनहु। रिण। ध्रम। चार्‍यो क्रम। कूंआर। वंधे। हथ्यार। हुव। प्रसन्न। रजधान। सभरिय करहु जव। हैं। कुमर।

कवित्त – किय प्रवेश सारंग। देव संभारिय थान थिर॥
आयेह वैस्य षित्रिय। अनेक पग लग्गि नम्मि नर॥
तब कायथ किरपाल। सबन कौं आया दीनी॥
सस्त्र वस्त्र दत चित्त। देय दिल्लासा कीनी॥
जद्दवनि गौरि आइय जबहि। पाइ लगी परमार कैं॥
नव सगुन भए सगुनी कह्यौ। कुँअर होइ कुमार कैं॥
॥ छं० ३६१ ॥ रू० १७६ ॥

दूहा – देवराज रावत सुता। देवत्तनि जद्दौंन॥
गौरि नाम सारंग वर। मनरति मूरति जौन॥
छं० ॥ ३६२ ॥ रू० १७७ ॥

बीसलदेव जी का मृगया से बहुरना, एक तालाब बनाने की आज्ञा देना और दरबार करना

दूहा तव वाहुरि बीसल नृपति। मृगया षेलत बन्न॥
देषि थान सर*उद्धरन। मतो उपायो मन्न॥ छं० ३६३ ॥रू० १७८॥

पद्धरी – तब देखि नरिन्द अनूप ठाम। निर्झर गिरिन्द बन अभिराम॥
बुल्लाय लिए मंत्री प्रधान। सर* रचौ इहां पहुकर समान ॥छं०३६४॥

थांन। करीय। प्रधान। मारंग। चुहांन। चैहान। धनीय। भांन। दिये। हसंम। कियो। वानिक। बुलाई। मय मो। मूढ। वन। कह्यो। दिमन। खगांन। कथ। सब मध्य। मथि। जोजन। भ्ररक। लगि। पहुंत वच। नाइ भांज। बाली। प्रसन्न। नोरंन कलम बधौति पोल॥

१७६ पाठान्तर– थांन। भाय। आइ। षिंमि। को। अग्या। ममत्र। शस्त्र। चित्त। दिलामा। किनी। जदवनि। पाय। कुंअर। कुमार॥

१७७ पाठान्तर – देवतनि। जदौन। मनो। रनि। मनोरनि॥

१७८ पाठान्तर --नृपनि। वन। थन। मतो। मन॥

* यह बीसल का तालाब अब तक अजमेर के पास विद्यमान है उसके किनारे पर जहांगीर बादशाह ने एक महल बनाया था जिसमें उसने इंगिलस्तान के पादशाह जेम्स पहिले के एलची से मुलाकात की थी। इस टिप्पणी को हमने इस तालाब के किनारे पर खड़े होकर लिखा है। यदि कोई पुरातत्ववेत्ता इस तडाग की वर्तमान दशा अपनी आंख से देखे तो उसको बड़ा शोक तथा आश्चर्य होगा कि अंग्रेज सरकार के राज्य में ऐसे प्राचीन स्थलों का जीर्णोद्धार राज-कोश के द्रव्य से होता है परंतु रेलवाले अपनी रेल इस पर दौड़ा-दौड़ा कर उसको नष्ट भ्रष्ट किए डालते हैं कि पांच वर्ष पीछे वह समूल नष्ट हो जायेगा। हमारी सम्मति में यह विषय पुरातत्ववेत्ता विद्वानों और समस्त भारतीय प्रजा को सरकार हिन्द की सेवा में मिमोरियल करने योग्य है जिससे यह एतिहासिक चिह्न यथास्थान बना रहे।

फुरमाय † काम अप आय गेह । आनंद अग उपज्यौ अछेह ॥
बैठो सिंघासन धम्म नंद । बीसल नरिन्द नग्लोक इंद ॥ छ० ३६५॥

सिर छत्र पाम दुय चमर ढार । अनि रूप जानि अस्विनि कुमार ॥
आईय मु कुलि छत्तीस नाम । पावासर नोवर गोर राक ॥छं० ३६६॥

हजूर लए राजन बुलाइ । तबोलि दियो सनमुष्य चाइ ॥
पढि बंदि छद बोले विरद्द । मुस्काय सीम नायौ नरिन्द ॥छ० ३६७॥

सब सभा पूरि जैमे नछित्त । चहुआन बाच्च जनु चद रत्त ॥
सनमान करे सब दय सीष । फिर बदी जन दीनी असीष ॥छ० ३६८॥

निसि गई पच पल एक जाम । राजन्न महल ‡ प्राप्तिम ताम ॥
करपूर अगर मृगमद सु बाम । मौ र छिरकि उनिम अवास ॥
॥ छ० ३६९ ॥ रू० १७९ ॥

बीसलदेवजी का रणवास मे पधारकर विश्राम करना और
उनकी रू पप्रिय रानी का उनको नपुंसक करना

कवित्त सुरँग धाम अभिराम । तहा विश्राम राज किय ॥
राग रग नाटक । विनोद सुष महल बोल लिय ॥
पट रागिनि पावार । रूप रभा गुन जुब्बन ॥
प्रमुदा प्रान समान । नही विसरत्त इक्क छिन ॥
रति भोग सुरति तिन सौ सदा । कबहु आन न दिच्छ त्रिय ॥
षिझि सौति सकल एकत्र भय । पुरषातन तिन बध किय ॥
॥ छ० ३७० ॥ रू० १८० ॥

---

† यह भी हिंदी शब्द है सस्कृत स्फुरितम अथवा स्फर्नि=स्फरणे, ननमः कल्पनायाम् स ॥

‡ यह भी हिंदी है । सस्कृत महल्ल=अत पुर inner apartments palace. और महल्लिक=अन पुर रक्षक मे ॥

१७८ पाठान्तर नृपति । वन । थन । मनो । मन ॥

१७९ पाठान्तर नरिंद । निक्षर । नगरन । गिरद । अभिराय । बुलाय । लये । रचो । समान । बैठो । सुसिंघासन । ध्रम । नरिंद । ससीर । दोय । जानि । अश्विनि । आइय । कुली । छतीस । ताम । पावासिर । तूवर । दीयौ । सनमुख । चाहि । चाय । छद । वदि । विरद । नाम्यो । जैम । चाहु न । सनमान । दईय । जाम । राजन । वाम । कर्पूर । सोधे । छिरकि । उनम ॥

१८० पाठान्तर—सुरग । सुष ताम । विश्राम । सुष । पवार । जुवन । प्रान । समान । इक । स्यें । नि । दरम । सौकि । भई ॥

पद्धरी तब सकल भइय एकत्र नारि। पुरुषातन तिन बंध्यौ विचार ॥
प्रचार सहर दूतिका च्यार। लै षवरि सहर पहुची मझार ॥३७१॥
प्रसताव भाव तिन कहि उचार। जोगिनिय बोल आदीतवार ॥
पहराइ वेस बदलाय भेस। इम कियो राजद्वारह प्रवेस ॥३७२॥
लै अथ्थ दई दरवान हथ्थ। इम किय प्रवेस सहचरिय मध्थ ॥
जोगिनिय गई रागिनी मद्धि। सब बोलि कह्यो है सिद्ध सिद्ध ॥३७३॥
आदेस कियौ सब पाइ लग्गि। आमन्न जोरि कर उभ्भ अग्ग ॥
किहि काज आज हू बोलि लीन। किहि नार तुमहि इह सीष दीन॥३७४॥
सब सौति कह्यो दुष सुनहु तुम्म। राजन्न तनय हम सौ न क्रम्म ॥
को जानि मात विंझनी पीर। सौति कौसाल साले सरीर ॥३७५॥
तुम कहौ करूं जीव तै बद्ध। तुम कहौ करौ नारी विरुद्ध ॥
तुम कहौ करौं काम तै भंग। ज्यौ नारि अंग त्यौ पुरुष अंग ॥३७६॥
सब चित्त वसी इह सौति बात। अब ही इह कारज करो मात ॥
मंगाय अगिनि तब कियौ होम। पर स्वान मांस प्रति वास धोम ॥३७७॥
उच्चरयौ मंत्र आराधि इष्ट। तत काल भयौ काम तै नष्ट ॥
दस दिसा लग्गि इह करी विद्धि। गत भौ पुरुषातन रहि न सिद्ध ॥३७८॥
दै द्रव्य कहौ माता सिधाव। इह सहर छडि अनि सहर जाव ॥

बीसलदेवजी का पुरुषत्व नाश होने से दुचित्त हो गोकर्णेश्वर की यात्रा करने को गुजरात जाना।

अनि दुचित राज भय काम नास। ब्रह्मचर्य नेम लियौ चतुर मास ॥३७९॥
कातक्क करन पहुकर सनान। गोक्रन्न * महातम सुनत कान ॥

---

* इन गोकर्णेश्वर महादेव की उत्पत्ति-कथा स्कंध पुराणान्तर्गत जो नागर ब्राह्मणों का एक परम पूज्य संस्कृत भाषा में २८००० श्लोक की संख्या का नागरखंड नामक ग्रंथ है उसके १६ वें अध्याय मे लिखी है। यह सम्पूर्ण ग्रंथ मेरे पुस्तकालय मे है ॥

आज जो बडनगर और बीसल नगर नामक नगर गुजरात मे प्रसिद्ध हैं उनका प्राचीन नाम चमत्कारपुर था, उसकी सीमा का प्रमाण उक्त ग्रंथ के १६ वें अध्याय में लिखा है अर्थात् इन गोकर्णेश्वर को उसकी दक्षिणोत्तर सीमा पर होना प्रकाश किया है —

ऋषय ऊचु. —चमत्कारपुरोत्पत्तिः श्रुतास्वत्तो महामते।
तत्क्षेत्रस्य प्रमाणं यत्तदस्माकं प्रकीर्तय ॥ १ ॥
यानि तत्र च पुण्यानि तीर्थान्याय तनानि च।
सहितानि प्रभावेन तानि सर्वाणि कीर्तय ॥ २ ॥

बुल्लाय जैतसिय गोलवाल। तुम भूमि पास नागरहं†चाल ।।३८०।।
तुम देस कहीजै गोउक्रन्न। परवत्त सरोवर नदी रन्न ।।

महाराज उहां महादेव थान। वानास नदी कौमारि कान ।।३८१।।
गिरवर उतंग इक तीन कोस। निझरना झरत मन आवे जोस ।।

केतीक दूर अजमेर हूत। दिन दोय मंझ नीके पहूंत ।।३८२।।
चढ़ि चल्यौ राज गोकव दिसान। मैं मंत गुग्यि घ्रमत निसान ।।
आवाजि पहूंचिय दस दिसान। अरि भ्रमैं वन्न तजि थान थान ।।

।। छं० ३८३ ।। रू० १८१ ।।

सूत उवाच -पंचक्रोश प्रमाणेन क्षेत्र ब्राह्मण सतभा।
आयामव्याम तश्चैव चमत्कारपुरोद्भवं ।। ३ ।।

प्राच्या सम्यां गयाशीर्षं पश्चिमेन हरेः पदं।
दक्षिणोत्तरयोश्चैव गोकर्णेश्वर सज्ञिकं ।। ४ ।।

हाटकेश्वर संज्ञ तू पूर्वमामी द्विजोत्तमाः।
तत्क्षेत्र प्रथित लोके सर्वपातकनाशनं ।। ५ ।।

यतः प्रभृति विप्रेभ्यो दत तेन महात्मना।
चमत्कारेण तत्स्थानं नाम्ना ख्याति ततो गतं ।।

† नागरह -- उक्त नागरखंड जिसके भले प्रकार पढ़ने मे आया होगा वह कह सकता है कि अनर्त देश मे हाटकेश्वर क्षेत्र है, उसमें जो आज वड नगर नाम से प्रख्यात है वह नगर यही है। इसके सतयुग मे आनन्दपुर, त्रेता मे चमत्कारपुर; द्वापर मे मानपुर अर्थात् मनीपुर, और कलि मे नगर अर्थात् बडनगर नाम प्रसिद्ध हुए है। इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान मे रखने योग्य बात है कि नागर ब्राह्मणों मे जो आज बीसननगरा नामक नागर ब्राह्मण प्रसिद्ध है वे वड़नगरों मे से इन्हीं बीसलदेवजी के समय मे उनके दान देने से पृथक हुए है और बीसननगर नामक जो नगर आज गुजरात में प्रसिद्ध है वह इस समय इन ही बीसलदेवजी का प्रदान किया हुआ है। नगरखंड से यह भी ज्ञात होगा कि बीसलदेवजी के समय में जिन नागर ब्राह्मणों को दान दिया गया है उनमें से कुछ उस समय पुष्कर में भी रहते थे और येही लोग बीसलदेवजी को पुनश्च पुंसत्व प्राप्त कराने को गोकर्णेश्वर की यात्रा कराने जिसका वर्णन यहां कवि ने किया है, ले गए थे और अजमेर के चाहुवान राज्य के पुरोहित भी येही नागर ब्राह्मण थे। उनमें से एक पुरोहित मुकुन्द का नाम १७५ रूपक में आ चुका है। नागरों की पुरोहिताई छुटने पर अन्य ब्राह्मण चौहानों के पुरोहित हुए हैं।

दूहा—अरि उद्यान प्रमि थान तजि। बजि पर षंड अवाज * ॥
तच्छितपुर † गोक्रन्न दिसि। पहुंच्यौ बीसल राज ॥
॥छं० ३८४॥ रू० १८२॥

कवित्त—गिरि उतग सलिता। विहंग उद्यान थान हर॥
सघन छांन पषी। असषि रहि लता झुमि तर॥
बरन बरन्न पल्लव। पहुप द्रुम बेलि केलि फ[illegible]॥
कीर पिक्क चक्कोर। मोर कोकिल कौतूहल॥
वाराह सिंघ मृग जथ जहा। दिष्षिराज अचरिज भयौ॥
अनूप ठाम आराम अनि। सिव परमत सब सुष भयौ॥
॥ छं० ३८५॥ रू० १८३॥

---

* यह संस्कृत अ[illegible] वाज तथा [illegible] बाज अथवा अवाज तथा आवाद से है॥

† गो[illegible] मे गुजरात प्रान्त मे बडनगर कहलाता है उसी का नाम है। नागरखंड के पढ़ने से उसके [illegible] अन्य नाम भी ज्ञात होंगे जैसे, वृद्धपुर, [illegible] नगर आदि। उक्त ग्रन्थ मे यह भी पढ़ने में आवेगा कि इस स्थान में एक समय सर्पों का बड़ा उपद्रव हुआ था और वह महादेवजी के त्रिजात ब्राह्मण को 'नगरम् नगरम्" मंत्र प्रदान करने से दूर हुआ इसी से वह नगर कहलाया। इस नगर के रहने वाले नागर ब्राह्मण अब तक प्रसिद्ध हैं। यह कथा नागरखंड के ११३ वे अध्याय में सविस्तार लिखी है॥

पाठान्तर—मई। बघन। प्रच्यार। महम। प्रस्तार उच्यार। जोगनीय। अथि। चहुआन। कीय। सहचरा। मथ। जोगिनी। आदिम। कीयौ। आसन्न। उम्भ कर जोगि अग्ग। [illegible]हि। हम। नाम। काम। जानै। बामनी। को। माल। सानै। कहो। कौ ते। सो। करो। अगनि। उचरयौ। आराध। तें। लगि। विद्ध। रहित। कातिग। करन मानाना। सुनहु। कान। पामल। पास कल। कहीजै। गोकन्न। परवत। महाराज। वन्नाम। कामालिकान। निझरना। मम। नीकै। मैं घुम्मन। दिसान। थान॥

१८२ पाठान्तर उद्यान। थान। तछितपुर। गोक्रन। पहुँच्यौ॥

१८३ पाठान्तर उध्यान। उद्यान। छाह। असष्य। झुम। बरन। पहुप्प। कीक। चकोर। च्चकोर। सारस। दिषि। अनूप। ठाम। आराम। फरमत॥ इस रूपक की पहिली दो तुकों की पहिली दो यतियों मे दस दस मात्राए है और दूसरी मे चौदह चौदह। यह कोई ऐसा दोष नहीं कि जिस के लिये हम ग्रंथकर्ता को दोष दें। ऐसे उदाहरण अन्य बड़े बड़े कवियों के काव्यों मे भी देखने मे आते है अतएव इस को कवियों की एक शैली मानना चाहिये। ऐसे स्थलो मे प्राय शुष्क-कवि आपस में बहुत वादविवाद कर सिर फोड़ा करते हैं अतएव हम एक और भी सूक्ष्म

कवित्त—परवत में कंदरा । तहां किन्नर सु विराजै ॥
वारि बूंद सिर झरै । पास सिंघ जूथ समाजै ॥
आनि अचानिक राज । पाइ लगो करि प्रन्न पति ॥
ॐ नमो सिव सकल । नमो अकलेस अकल मति ॥
फल पहुप द्रव्य पंचा अमृत । धूप दीप अग्गें धरिय ॥
अस्नान दान चहुवान करि । तब अस्तुति सेवा करिय ॥
॥ छ० ३८६ ॥ रू० १८४ ॥

बीसलदेवजी का गोकर्णेश्वर महादेव की स्तुति करना

भुजंगी नमो वाय भूताय थानं भयानं । जटा माहि गंगा अलक्कं प्रमान ॥
त्रय नेत्र ज्वाला जलं चंद्र भालं । विष कंठ माला गलै रुंड मालं ॥३८७॥
महा आदि मुद्रा नप सिंगि नादं । सिध देव देव कथ साध साधं ॥
धरा धूरि धूम विभूतं घमते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥३८८॥
गज चर्म आछादितं भ्रम नाम । रहै वीर भैरो गन आम पास ॥
पदम्मासनं पुष्टि नदी प्रचंडी । चवं वेद आमोद चौमट्ठि चंडी ॥३८९॥
बजै डक्क डौरू डमकं तडक्कं । धकै मेरु धुज्जै हकै गेन हक्कं ॥
धनूकं पिनाकं धरै बाम हस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥३९०॥

कारण बनाते हैं कि चंद और सूर जैसे आदि-कवि गान विद्या मे पारंगत होने के कारण जहाँ एक ही यति मे अनेक स्वर स्वरित हो गये हो वहा वो एक दो मात्रा को दूसरी यति मे मिला देते हैं कि जिस मे स्वर न बिगडे । देखो यहा उतंग के तं और सलिता के ता पर स्वर स्वरित हो गये हैं ॥

१८४ पाठान्तर -प्रबत । किनर । बुंदि । नपै । सिघ । पाय । प्रन्ति । उ । द्रवि । पचै । दान । चहुवान ।

१८५ पाठान्तर - झनकै । वंदे । मध । द्वरि । द्रुम । भैरू । आमा । पाम । पदमासनं । ष्ठी । कोद । चौमठि । डक । डैरू । तडकै । मेरे । धूजै । धनुंक । घरें । वाम । सूलपांणी । साधेंति । ज्यंनी । ग्रधव । जखं । अछदी । दिख । सनकादिकं । सपत रिषी । सप्त रिषी । प्रथी वायगेंनाय तेज । भांन । मिटै । नाम । तो । महा आदि । पुरिषं । पुरुष । तवो । कोन । नो । नपातिग । अरधंग । कयलास ॥

हमारे जो पाठक ऐसे है कि जिनको न तो कभी यह शंका हुई न अब है और न आगे होगी कि हिंदी भाषा का यह अति प्राचीन महाकाव्य आदि से अंत पर्यंत जाली बना है उन को उचित है कि यूरोप देश निवासी मिस्टर ग्रौस, डाक्टर हौर्नले, मिस्टर बीम्स और भरतखंड निवासी डाक्टर राजेन्द्र लालजी मित्र जैसे महाशयों को अनेक धन्यवाद दें कि उनके शोध और अनेक लेखो के कारण से यह महाकाव्य सर्वसाधारण लोगों के जानने मे आ गया नही तो कुछ समय और व्यतीत होने पर

सिधं साध आराधयं शूलपानी । सिवा ध्रंम साधेति के साध जानी ॥
नरं किनरं ग्रंध्रवं नग्ग जष्षं । सुरं आसुरं अच्छरी हूर रष्षं ॥३९१॥
सनक्कादिक सप्तर्षी बाल कालं । प्रथीवायुगेनाय तेजंस लालं ॥
नमो भान चंद्रं नवं ग्रह समस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥
मिटै संकटं वाट घाटं विघट्टं । तटै नाम तो कोटि काटै कसट्टं ॥
षरं षेचरं भूचरं जंत्र मंत्रं । जपै व्याधि आमाधि भाजै अनंतं ॥३९३॥
महादी पुरूषं महीमा मुरारी । नव कौन तो सौ निपातिक परारी ॥
गिरा गौरि अर्धंग कैलास वस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥
॥ छं० ३९४ ॥ रू० १८५ ॥

बीसलदेवजी से गोकर्णेश्वर के सिद्ध का उनका नाम ग्रामादि पूछना

दूहा - इति अस्तुति राजन मषह । पढि पुज्जिव पग बंदि ॥
देषि सिद्ध चक्रित भयौ । भाजन बुद्धि नरिंद ॥
॥ छं० ३९५ ॥ रू० १८६ ॥ *

कोई मनुष्य जैसे कि तर्क वितर्कों से अब दोष देते हैं वैसे ही इस रूपक में "नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते" का पाठ देख करके कदाचित यह अनुमान कर लेवे कि इस को स्वामी श्री दयानन्द सरस्वतीजी के सिद्धांतानुयायी किसी कवि ने झूठा बना दिया है क्योंकि नमस्ते शब्द का प्रचार या तो वैदिक समय में था अथवा इन दिनों में आर्य समाजस्थों में है और आदि के चार रूपकों से चंद का धर्म संबधी वैदिक समय के से प्रतीत होते हैं। यद्यपि आज यह महाकाव्य इतना प्रसिद्ध हो गया है परन्तु भावी दोष देने वाले के लिये वह कुछ बाधक नहीं हो सकता, क्योंकि जो कुछ प्रमाण इस समय की प्रसिद्धि के उसको उस समय में मिलेंगे उन सबको वह निःशंक होकर वर्तमान समय के दोष देने वाले की भांति जाली कह सकता है जैसे कि इस समय में सब राजपूताने के राज्यों के प्राचीन संवत इस रासे के ९१ वर्ष के अंतर के संवत के अनुसार मिलते हैं और उन सबको इसी रासो ने अशुद्ध कर दिया यह कहा जाता है, इसी तरह वह भी कह सकता है कि इस समय में जाल ही जाल फैल गया था क्योंकि जैसे आज चंद स्वयम् साक्षी नहीं दे सकता वैसे हम लोग भी उस समय में न होंगे। सारांश यह है कि एक नम्रता सौ दुःख हरता है और थोथे हठ के आगे किसी की कुछ नहीं चलती ॥

१८६ पाठान्तर—भौ।

* यह रूपक सं० १६४७ और १७७० की लिखी पुस्तकों में नहीं है जो इनसे भी पुरानी पुस्तकों में यह न मिले तो इसको क्षेपक मानना चाहिये। किन्तु अभी तो हम इसको क्षेपक संज्ञा प्रदान नहीं कर सकते ॥

कहत सिद्ध किहि पुरहुं तैं। कौन गोत किहि नाम ॥
इति तीरथ आये हुते। कै अगैं कोइ काम ॥
॥ छं० ३९६ ॥ रू० १८७ ॥

बीसलदेवजी का अपना नाम गाम आदि बताना

दूहा पुर अजमेर सु वास हम। गोत ग्याति चहुआन ॥
बीसल दे मो नाम सिध। अयो करन मनान ॥
॥ छं० ३९७ ॥ रू० १८८ ॥

सिद्ध का गोकर्णेश्वर के तीर्थ की महिमा वर्णन करना

अरिल्ल सिद्ध कहत सुन राजन वत्तिय। जो तू तजि अयौ निज धत्तिय ॥
इह गोपेमुर थान अपूरब। नित प्रति निमा उतरै सो रंभ ॥
॥ छं० ३९८ ॥ रू० १८९ ॥

इन थानक चारन बर पाए। तिनके नाम कहि रु समझाए ॥
भसमाकर रावन मधु कीटक। तिन उपास निराहर षट टक ॥
॥ छं० ३९९ ॥ रू० १९० ॥

इहै तिथ की महिमा गाए। धेनु दुग्धतै आनि न्हवाए ॥
जैसै ध्याए तैसै पाए। इतनी कहि सिध ऊठि सिधाए ॥छं०४००॥रू०१९१॥

बीसलदेवजी का तीन दिन निराहार उपवास कर गोदानादि करना और महादेव का अपछरा को उन्हें उठाने भेजना

दूहा राजन मन चक्रित भयौ। सुनि थानक की बिद्धि ॥
जो तो अभि अंतर * बसन। कहि ते तौ सिध सिद्ध ॥
॥ छं० ४०१ ॥ रू० १९२ ॥

---

१८७ पाठान्तर परहु। ते। क्योन। नाम। आगे। काम ॥

१८८ पाठान्तर —नाम। मनान ॥ बीसल दे शब्द मे जो दे है वह देव शब्द का सक्षिप्त रूप है इसी तरह ममरसी मे सी सिंघ वा सिंह का सक्षिप्त है ॥

१८९ से १९१ पाठान्तर—वत्तीय। इह। धरत्तीय। इहा। गामेसद। थान। प्रतै। थांनक। च्यारन वर। च्यार नर। नाम। उपवास। टक ॥ ए हे। धेनु। ते। आनि। जैसें। तैमे ॥

* चंद की भाषा का व्याकरण तो हम कुछ समय मे बनाकर प्रकाश करेगे परन्तु एक सूत्र उसका यह स्मरण रखना चाहिये कि उसमे षट-भाषा-वत् सधि। विकल्प करके होती है, इसके होने के उदाहरण बहुत आवेगे परन्तु न होने के कारण उदाहरण यह अभि+अंतर और पंचा+अमृत हैं ॥

१९२ पाठान्तर—बिधि। जि। तोक। तो। सिद्ध। सिध ॥

अरिल्ल –सहसं गौ मंगाह सवच्छिय । देह द्रव्य लै अच्छी अच्छिय ॥
सहस घट्ट सिव ऊपर कीनौ । तीन उपास नेम तब लीनौ ॥
॥ छं० ४०२ ॥ रू० १९३ ॥

तीन दिवस रहै राव निराहर । जल कल तज्यौ पवन कौ आहर ॥
एक निसा इक अपछर आई । सब अपछरा न्रत्ति करि गाई ॥
॥ छं० ४०३ ॥ रू० १९४ ॥

बहुत बेर पीछैं बोल्यौ हर । अपछर जाइ उठेउ वहै नर ॥
मो अपछर नर देषन आई । देषति न्रपति बसि नीदा माही ॥
॥ छं० ४०४ ॥ रू० १९५ ॥

अपछरा का बीसलदेवजी से महादेव के प्रसन्न होने और मन की कामना पूरण होने की बात कहना

दूहा –तुम कौ सिव सु प्रसन्न भय । कह्यौ मोहनि वर मोहि ॥
जाहु थान हरि थान तजि । तूठे संभर तोहि ॥
॥ छं० ४०५ ॥ रू० १९६ ॥

तेरे मन की कामना । ऊपर शिव कौ पाइ ॥
इतनी कहि करि मोहनी । दियौ सु न्रपति उठाइ ॥
॥ छं० ४०६ ॥ रू० १९७ ॥

बीसलदेवजी का अपने में पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त होना देखकर वहां बीसलपुर बसा कर महादेव का मन्दिर बनाने का हुकम देना

कवित्त - पहुर रात पछिली । राज आए डेरा मधि ॥
बढ़िर काम कामना । भई पुरियानन की सिधि ॥
प्रातकाल करि न्हान । धेन विप्रन कौ दीनी ॥
पंचा अम्रत धूप । दीप सिव सेवा कीनी ॥
तिहि बार हुकम * देवल्ल करन । पुर † बसाइ बीसल्ल † घरुह ॥

१९३ से १९५ पाठान्तर –सहस । गऊ । मंगाय सवछिय । देय । ले । अछीय । घट । शिव । तिन । द्योस । रहै । निशा । एक आईय । अपछर । नृतत । गाईय । पीछे । बोले । उठाउ । वहे । आइय । देषि नृपति वसि । नीद असाइय ॥

१९६-९७ पाठान्तर –तो । मों । शिव । हुव । थान । संभू । को पाय । दीयो । नृपति । उठाय ॥

* यह हिंदी शब्द हुकम अथवा हुक्कम संस्कृत शब्द सूक्ष्म से बना है ॥

† चाहुवान वंश की ख्यातियों में बीसलदेवजी का उपनाम पुष्पक होना लिखा है और जो आज-कल गुजरात में विशल्ल नगर अथवा विसल नगर करके प्रख्यात है यही यह बीसलपुर बीसलदेवजी का बसाया हुआ है और उसी दिन से बड़ नगरे नागरों में से कुछ नागरों की विसल नगरा नामक संज्ञा पड़ी है । हमारे इस अनुमान

मंगाइ हस्ति असवार * हुइ । फिरयो राज घर आतुरह ॥
॥ छं० ४०७ ॥ रू० १९८ ॥

की कविराज श्री दलपत रामजी सी० आई० ई० अपने जाति-निबन्ध नामक ग्रंथ मे नीचे लिखे प्रमाण से पुष्टि करते है---

जे रीते औदिच्यप्रकाश तथा श्रीमाली महात्म्य स्कंध पुराण मां छे। तेमज नागर ब्राह्मणोंनी उत्पत्ति नो ग्रंथ "नागरखंड" नामे घणो मोटो छे, ते पण स्कन्ध पुराण मां छे। ते नगरो नी उत्पत्ति गुजरात मां बड़नगर गाम मां थई। पण ते क्यारे थई, तेनो संवत काई अे पुस्तक मां लख्यो नथी तेनूं कारण अेज जाणवूं के संवत लखवा थी तथा बना वनार नूं नाम लखवा थी ग्रंथ जूनो केयेवाय नही पण नागर ब्राह्मणो नो प्रवराध्याय नामे ग्रंथ मां जोयो छे तेमां लखे छे के,

श्लोक--श्रीमदानंदपुर महास्थानीय पंचदशशतगोत्राणा।
संवत् २८३ पूर्वनिष्टमान गोत्राणां समानप्रवरस्य निबंधः॥

अर्थ --शोभायमान अेवा आनंदपुर मोटास्थानवाला पदरसे गोत्रो मांथी संवत् २८३ थी पेहेला रहेला गोत्रोना अेकज सरखा नामीच नो निबंध लखूं छूं॥

अे उपर थी आशरे मालम पड़े छे के अे बखत मां नगरो नी नात वधाई छे। अने त्यार पछी तेमां थी विमलनगरा नी नात जुदी पड़ी तेनूं कारण केहे छे के बिसलदेव राजाअे विमल नगर वसावीने त्यां जग्न कीधो हतो। त्यारे बडनगर थी केटलाअेक नागरो त्यां जेधा गया हता। त्यारे राजाअे तेओ ने दक्षणा आपवा मांडी। त्यारे अे नागर ब्राह्मणे अे कह्यूं के अमे कोई नी दक्षणा लेता नथी। त्यारे राजाअें कह्यूं के तमने पाननां बीडा आपी शूं। अेम कहीने पानना बीड़ा मां गाम नां नाम लखी नें अे नागर ब्राह्मणों ने आप्यां। त्यारे ते ब्राह्मणों जे पानना बीडू लीधा। तेमां जोयूं त्यारे गामनां नाम लख्या हतां। तेथी पछीनो अे गाम लेवा कबूल कर्या। अे बात बड़नगरना नागरोअे जाणी त्यारे तेओ अे कह्यूं के अेणे राजा नूं दान लीधूं वास्तें अेओ आपणी नातथी बाहर छे। ते दिवस थी विमलनगरानी नात जूदी थई। कोई केहे छे के तेज राजाअे तेज बखतमां साठोद गाम नूं नाम पान मां लखी ने जेने आप्पूं हतूं ने साठोदरा नागर थया। चित्रोड़ लखी ने जेने आप्पूं त चित्रोड़ा नगर थया। तेमज प्रश्नोरा तथा कृष्णोरा पण थया। ६ प्रकार ना नगरो ना नाम। बड़नगरा नागर १, विमल नगरा नागर २, सठोदरा नागर ३, चित्रौडा नागर ४, प्रश्नोरा नागर ५, कृष्णोरा नागर ६॥ हवे विचार करो के विसल देने विसल नगर सं० ९३६ वी साल मां वसाव्यूं अे प्रथिराजरासा मां चंद कविये लखेलूं छे॥ दोहा॥ सो संवत नव शत अधिक। वर्ष तीस छह अग्ग॥ पुर प्रतिष्ठ वीसल नृपति। राजत सकले जग्ग॥ १॥ त्यार पछी विसलनगरानी नात बंध ई छे। तेथी साफ जणाय छे के परमेश्वरे काई नातो बांधी नथी। फकत माणसोअे जुदा जुदा वाडा बांध्या छे। त्यारे ते वंधाया थी हालमां जे हरकतो थती होय ते बंध करवा चहाय तो करी शके खरा। विसल नगराओ राज नूं दान लेवा थी जो बटल्या

बीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और सब कथा प्रसंग पवांर जी राणी से कहना

दूहा—दो दिन के मग एक दिन। आए बीसल गेह ॥
किय प्रवेस न्रप सहर में *। मुचित भए ग्रह मेह ॥
॥ छ० ४०८ ॥ रू० १९९ ॥

होय तो हाल मा बड़नगराओं मुसलमाननी सेवा करे छे तेओ अेनाथी पण वटल्या कहेतेवाय। वास्ते अेवो जूठो वेहेम छोड़ी देवो जोइये। अने जरूर समजवूं के तेओ अेक बीज थी काइ वट-ाशे नही। इत्यादि ॥ ज्ञाति निबन्ध पृष्ठ ४३ से ४५ तक ॥

नागरखंडना अध्याय २३ पछे तेमा १०८ मा अध्याय थी ४ था अध्याय मां लखे छे के आनर्त देशना राजाअे चमत्कारनामे शेहेर वसावी ते ७२ गोत्र ना ब्राह्मणो ने आपवा माडया तेम ८ गोत्र नाअे लीधा नही ने ६४ गोत्रनाअे लीधा। पछी त्या काई कारण थी नागनी उत्पत्ति घणी थई तेओअे घणा मणसोने करडी खाघा तेथी केटला ब्राह्मणो नाशी छुटया। पछी अेक अपमान करेले ब्राह्मणे (त्रिजातकें) मन्त्र नो उपाय कर्यो तथा अे मऊ ब्राह्मणो अे मलाने लाकडी पथरा वगेरे थी हजारो नागने मारी नाख्या त्यारे अे शेहेरनूं नाम नागर (झेर विनान्) ठर्यूं ने ते ब्राह्मणो नागर कहेवाया। एछी १५८ मा अध्याय मा लखे छे के अेक पुष्पक नामने पुरुषे पर स्त्रीनो सग घणा वर्ष कर्यो, ते पछी पस्तावो करीने तेनू प्रायश्चित करवा बडनगर मा आव्यो त्यारे सऊ नगरो अे कह्यूं के अे पाप मटवानो उपाय नथी। त्यारे अेक चडशर्मा नामने नागरे काई प्रायश्चित कराव्यूं, तेथी नागरोअे चडशर्माने नात वाहर मुक्यो तेथी ब्राह्म नगरानी नात जुदी बन्धाई ॥

पृथ्वीराजरासा मा ऊर्ख्यूं छेके बीसलनगर वसावनार बीसलदेव राजाअे पुष्कर क्षेत्रमा परस्त्रीनो सङ्ग कर्यो हतो, तेथी ते स्त्रीअे श्राप दीधो हतो जे तू असुर थईश। पछी अे पाप मटवानो उपाय बीसलदेव शोधतो हतो। मा टे पुष्पक नामनो पुरुष नगर खण्ड मा लख्यो छे ते बीसलदव सम्भवे छे। ने वाह्म नगरा जे लख्या छे ते बीसलनगरा, साठोदरा वगेरे सम्भवे छे इत्यादि० ज्ञाति निबध पृष्ठ ७५-७६ ॥

* यह हिंदी शब्द सस्कृत अश्ववर अथवा अश्व+अर अथवा अश्व+आर से बना है अरबी अथवा फारसी से अनुमान करना व्यर्थ है ॥

१९८ पाठान्तर—पहुर। कामन। हुई। न्हान। विप्र। को। वमाय। धीमर पुरह। मगाय। हांइ ॥

* हिन्दी महर अथवा महरि शब्द अरबी अथवा फारसी से नहीं है किन्तु सस्कृत स+हलि से ॥ SK स+हलि = Agriculture, furrows Hence a place where agricul turists reside. Dwelling &c Habitation &c The Hindi हर is also from the SK हल A plough, the earth In the Same manner नगर a town is from नग a tree, a mountain & कर aff.

ऊंच धाम विसराम किय । रंग साल चतुरंग ।।
प्रौढा महल पवार सों । कहिय सु कथा प्रसंग ।।
।। छं० ४०९ ।। रू० २०० ।।

सब काम-लुब्धाओं को सोच होना कि शंभू ने ऐसा क्या वर दिया ?

चौपाई – काम लुबध बोली सब कामनि । च्यार जाम गई जागत जामिन ।।
सब नारिन कौ सोच उपन्नौ । अैसौ कहा संभु वर दिन्नौ ।।
।। छं० ४१० ।। रू० २०१ ।।

बीसलदेवजी का कामान्ध हो अकर्तव्य काम करना

कवित्त – राति दिवस एकसी । काम कामना सु बढ्ढिय ।।
प्रौढ मुगध वय वृद्ध । सबै थर हरि त्रिय गढ्ढिय ।।
पर घरनी लै बोलि । धरी नह विलँब लगावै ।।
जो विलंब करि रहै । ताहि हनिवे कौं आवै ।।
भै भीत काम विसराम विन । नाम सुनत औदिक परै ।।
अजमेर नैर वासल न्रपति । प्रमुदा देषत प्रज्जरै ।।
।। छं० ४११ ।। रू० २०२ ।।

दूहा – पट्टन धनकनि देह दुष । ग्रेह कटन ग्रह हथ्थ ।।
धरैं धन्न निज कोस मधि । इहै वानि समरथ्थ ।।
।। छं० ४१२ ।। रू० २०३ ।।

कवित्त – जिते जाइ इह मान । काम कामना सु बढ्ढिय ।।
अवर ताहि उप्परह । बयन मूरष पर चढ्ढिय ।।

१९९-२०० पाठान्तर—कै । कं । सेवा ।। घाम । महिल९ । वारि । को ।

२०१ पाठान्तर -- कांम । याम गय । जाम । को उपंनौ । अैसौ । सिभु । दीनौ ।।

२०२ पाठान्तर—कांम । कामना । बढिय तस । सर्वे । हरत नारी जस । कौं । विल्लंब । ताहि के पहिले तो विशेष है । भय । काम । विसदांम । नहि । नाम उन्दकि मरै । नृपति । प्रजरै ।।

२०३ पाठान्तर – धनकन । मुष । ग्रिह । कट्टन । हथ । निसि । वांनि । समरथ ।

२०४ पाठान्तर-मांन । कांम । कांमना । बढ्ढय । उपहर । चढिय । दिषत । पुरुष । संग । काऊ कांणि । रषहि । त्रीय । बईस । किहि । इहै । लहैं । निसि ।।

हमारे पाठकों में से जो ऐसे हैं कि वे Political officers रहे हैं अथवा जिन्होंने बीसल देवजी की जैसी अनीतियों के वृत्त गोप्य Political Reports में

तिन दिष्षत बर बस्त । मंगि अप्पन मुष अष्षहि ।।
अवला सँग उल्हास । काहु की कानि न रष्षहि ।।
दुज षत्रि वैस सूद्रह बरन । तजै न किह तक्कत नयन ।।
बीसल नरिंद इह भय अकलि । लहै न लहु निस दिन चयन ।।
।। छं० ४१३ ।। रू० २०४ ।।

बीसलदेवजी के दुराचरणों से दुःखी होकर नगर के लोगों का प्रधान के पास पुकारने जाना

दूहा—दीरघ जन मिल नयर के । गए द्वार परधान ।।
बढि अचैन नर नारि सब । नहीं रहै रजधान ।।
।। छं० ४१४ ।। रू० २०५ ।।

सबका आपस में सलाह करके बीसलदेवजी को राजधर्म अरज करना

कवित्त—तिन मति तिहिं पुर होइ । लोइ मति समथ समंडव ।।
बहुत भूमि भूमियां । चढवि तिन धर पुर षडव ।।
इह सु ध्रम्म राजेन्द्र । दुप्ट ककट सिर कट्ट ।।
अनड अनड सहरै । धरा रष्षन धर अट्टै ।।
इह करयौ मत्र तिन मंत्रियन । अरु सब महर सु पच जन ।।
इह कथिय त्रन न्रिप सम तिनह । दबरि विसेपक भूमि यन ।।
।। छं० ४१५ ।। रू० २०६ ।।

बीसलदेवजी ने उत्तर दे कहा कि यह सब मैं जानता हूँ पर कम-ज्वाला के बढ़ने से लाचार हूँ, अब तुम जो कहोगे वह करूंगा

कवित्त -दुज्जर काय मु कहन । राज मन माहि समझ्झौ ।।
काम ज्वाल मो बढिय । तुम हि निन कै दुष दझ्झौ ।।

पढ़े हैं अथवा जो Mysteries of the Native Courts के ज्ञाता है अथवा जिन्होंने वाजिदअली शाह की मायवी का पूरा ज्ञान उपार्जन किया है वे चन्द के लिखे बीसल देवजी के वृत्तान्त पर अविश्वास नहीं करेंगे और उसे अत्यन्ताभाव का समझेंगे, किन्तु कवि के स्पष्ट वक्तृत्व की प्रशंसा करेंगे । इतिहास लिखनेवाले का यह मुख्य काम है कि वह चालचलन के विषय मे स्पष्ट वृत्त लिखे कि जिससे उसकी भावी संतान शिक्षा ग्रहण करे । हमारे इस देश मे हम लोग इस बात को फांसी लगने जैसा अपराध समझते हैं और रात्रि दिन ऐसी ही अनीतियों मे लगे रहते है अतएव पुरुषार्थ का बड़ा टोटा हमारे यहा आ गया है ।।

२०५ पाठान्तर—मिलि । कै । परधान । बढि । अचेन । नही । रहसि । रजधांन । रिमान ।।

२०६ पाठान्तर --मतिह । समथ्थ । मंडव । भूमिया । ध्रंम । कहे । अनउ अनड । रषन । कह्यि । तिनहि । विशेषक । भुंमियन ।।

हौं इह जानौं सबै। पै मुहि मन वसि न होई॥
सदा पहर जिम छाह। रहै कूई की कूई॥
तुम कहौ सु हौं करि हौं अवसि। बोलि लेहि किरपाल हौं॥
जहँ जहां दिसा तुम संचरौ। तहँ तहँ आऊं चढ्ढि हौ॥
॥ छं० ४१६ ॥ रू० २०७ ॥

इस पर बीसलदेवजी का किरपाल को बुलाना और उसका आना

दूहा —दै फुरमान * प्रधान तब। बुल्लाये किरपाल॥
संभरि मौं आयौ सहर। लियै अनूप रसाल॥
॥ छं० ४१७ ॥ रू० २०८ ॥

बीसलदेवजी का किरपाल से कहना कि तरवारि की पृथ्वी है सो हम नव खंड की षड्ग खोसने को षड्ग बांधते हैं, तुम खजाना संग ले बीसल सरवर पर डेरा करो

कवित्त -आय तबै किरपाल। पाइ राजन कैं लग्गौ॥
मुह अग्गैं दुअ पग्ग। धरै नग जरित उनग्गौ॥

---

२०७ पाठान्तर -दुजर वेत। ममझी। काम। वढीय। कैं। दझो। ह्ो। जानो। मवे। पं। मोहि। छाह्। हों। कू। नहा नहा। चढि। हूँ॥

* यह हिन्दी शब्द मम्कृत म्फुर+मान से है जैसे कि म्फूर्तिमान, म्फूर्त्तमना और स्फूर्तिमत् इत्यादि। इम फुरमान अथवा फुरमाना आदि शब्दो का प्रचार राजस्थानी अथवा वडे प्रतिष्ठित लोगो की मडली मे आज भी बहुत है। वास्तव मे यह उम कहने अथवा आज्ञा के अर्थ मे प्रयोग होता है जो किमी के द्वारा कहा जाय अथवा आदेश किया जाय। जैसे हमारे रजवाडो मे जहा अभी प्राचीन देशी रीति प्रचलित है वहा राजा स्वयम् नही बोलते। राजाजी तो किमी अन्य पुरुष को कहते जाते है और वह पुरुष इष्ट मनुष्य को कहता जाता है। तथा किमी अपने से छोटे अथवा अधीन को कागद पत्र के द्वारा कहा अथवा आदेश किया उमको फुरमान व फुरमाना कहते है।

२०८ पाठान्तर —फुरमान। प्रधान। बिल्लाये। बुलाये। मो। अमूप॥

२०९ पाठान्तर -पाय। आगे। दुय। धरे। नग्गो। मगुन। कथिय। दानं। नेम पग की इह पृथ्वीय। इह सगुन अबै हमकों भए। सो ब्रह्म मड मंड। कयो। दड्डी॥

* हिन्दी में खजाना और उससे बने शब्द आते हैं उसका वाचक यह प्राचीन हिन्दी शब्द सबके ध्यान में रहने योग्य है। यह संस्कृत खज्जुर रौप्ये Silver का अपभ्रंश है। इन शब्दों को अरबी और फारसी के अपभ्रंश अनुमान करना व्यर्थ है। देखो, सं० खज शब्द भी युद्ध और स्वार्थ के अर्थों मे प्रयोग होता है। और वह भी इतने प्राचीन समय से कि ऋग्वेद ८। १७ मे "अर्लपि युष्म खजकृत पुरन्दर०" कहा है।

बंधिय तेग विचार । सु गुन राजन इह कथ्थिय ॥
जिम जिम विद्या दान । तिमह तिम षगकी प्रथ्थिय ॥
इहै सगुन हम कौं भयौ । षग षोसौं नव खंड धर ॥
ब्रह्मांड मंड सब बसि करौं । भंडौ मेर सुमेर धर ॥
॥ छं० ४१८ ॥ रू० २०९ ॥

दूहा—सुनि क्रिपाल मो मुष वचन । कढि षजीन सँग लेहु ॥
बीसल सरवर ऊपरै । ध्रुव दिसि डेरा देहु ॥
॥ छं० ४१९ ॥ रू० २१० ॥

बीसल सरवर पर बीसलदेवजी के अधीन तथा सहायक इष्ट मित्र राजाओं का उनके दिग्विजयार्थ अटन के लिये एकत्र होना और गुजरात के चालुक्क राजा का वहाँ न आना अतएव बीसलदेवजी का उस पर चढ़ाई करना और वालुका राय का यह सुनकर सामना करने को आना

पद्धरी - भरि चले सुनर*रथ एक राह । बीसल्ल तडाग दिय वारि गाह ॥
फुरमान दए लिपि दस दिसान । सब आय मिले अजमेर थान॥छं०४२०॥
परिहार महनसी मिल्यौ आय । मंडोवर के नर लगे पाय ॥
गहिलौत मिले सब सभा मोर । पावासर तोंवर राम गौर ॥छं० ४२१॥

---

२१० पाठान्तर—किपाल । संग उपरें द्रू । दिशि ॥

* इस रूपक के कई एक शब्द भाषा के शोधक विद्वानो के ध्यान मे लेने योग्य हैं; जैसे-हिं० सुनर (SK. सु+नर or नरि नरु), जेर (SK. जूर) or जूरी to reduce, to injure, to hurt to decay. to grow old, to wound or kill) जोर (SK. जुड to bind, to join, as in making or mending, to direct, to grind or pound &c, or जुर speed. velocity, motion in general). तरवार (SK. तरवारि) दर (SK. दृ to divide, cut or break, to preserve, &c, and aff अप्) कूंच or कूच (SK कुञ्च to go, to go to or towards.)

इसके अतिरिक्त यह भी पाठकों को ज्ञात हो कि इस प्रसंग में कही चालुक और कही बालुक पाठ है सो जहां जैसा पुस्तकों में मिला वैसा रक्खा गया है, किन्तु जितनी पुस्तक जातियो की लिखी हुई हैं उनमें च और ब में बहुत ही कम फरक देखने में आया है जिससे मैं अनुमान करता हूं कि लेखकों ने धोका खाकर चालुक का बालुक पाठ न लिख दिया हो ॥

* हिं० निशान अथवा निसान (SK. नि+शाण i. e. नि before and शाण coarse cloth, sack cloth, Canvas A Small tent or screen used

मेवात धनी आए महेस। मोहिल्ल दुनांपुर दिए पेस ॥
बलोच मिले सब पाइ बंधि। बांभन्या नृपति तजि गए संधि ॥छं०४२२॥
भटनेर राय की आइ भेट। मुलतांन नाल बँध थटा थेट ॥
फुरमान गए जैसलहमेर। भेम्या सब भाटी भए जेर * ॥छं० ४२३ ॥
जादौं रु बघेला मल्हवास। मोरी बड गूजर आइ पास ॥
अंतरहबेध कूरंभ आइ। सब मेर जेर ह्वय लगे पाइ ॥छं० ४२४ ॥
आप सपाइ चढि जैतसींह। तच्छिनपुर के नर संग लीह ॥
आये सु चढ्ढि उदया पवार। निरवान डोड चढि चले लार ॥छं०४२५॥
चंदेल दाहिमा चरन लग्गि। बसि किये भूमिया धूनि षग्ग ॥
चालुक्क कोइ आयौ न पाइ। रहे मुकरि जोर*तरवार*माहि॥छं०४२६॥
सुनि बोल जैतसो गोलवास। घर बार नगर को रष्षपाल ॥
सौं पौं सु तुमहि अजमेर थान। बालुक्क किनक पावै न जान॥छं०४२७॥
दर * कूच-कूच * चढि चल्यौ बीर। गिरि मग्ग होइ सर सुक्कि नीर ॥
सोझति सोलकी पहिलि चोट। सै लोट किये धर पारि कोट ॥छं०४२८॥
जारौर भंजि गढ और पार। अरि भाजि गए गिरि बन मझार ॥
आबू चढि भेज्यो अच्चलेस। तत्काल लियौ गिरिनारि देस ॥छं०४२९॥
वागरि सोरठ छपरा सुद्ध। दंड मानि मिले नह मिले जुद्ध ॥
गुजरात देस छिनर हजार। बालुका राइ चालुक झुझार ॥छं० ४३०॥
सुनि बत्त चढ्यो अहंकार बंध। सिव सकति पूजि धरि कुंत कंध ॥
असवार लार हज्जार तीस। मद झरत नाग पचास बीस ॥छं० ४३१॥
जोजनह एक पर करि मिलान। आवाज सुनिय तब चाहुवान ॥
॥ छं० ४३२ ॥ रू० २११ ॥

---

especially as a retiring room for actors and tumblers, &c) Hence a standard, an ensingn, flag, banner & colours, &c इस निशान शब्द का प्राचीन देशी राज्यों मे अभी तक प्रचार है और troop और Company के अर्थ मे भी प्रयोग होता है जैसे अमुक राजा ने अपने अमुक सरदार पर दो निशान चढा दिये। अमुक अमुक निशानो म झगडा वा लडाई हो गई। मैं अमुक निशान का हूँ और वह अमुक का ॥

२११ पाठान्तर—दीय। फुरमान। दिसान। थान। आई। गहिलोत। पावांमर। तूअर। मोहिल। वलोच। बंभन्या। सिंध। आय। बध। फुरमान। जेसलहमेर। जदो। मल्हनवास। आय। अंतरहवंध। आय। पाय। सपाय। जैतसिंह। तछितपु। साथ। सथ। सध्धा। लीय। चढि। पवार। निरवांन। भूमिया। मुसकरि। रषवाल। सोगोस। थान। कहांक। किनहु। जांन। कूच कुच। मग्गि। से। भंति। सोझति। सोलंक। में। जालोर। पारि। मझारि। लियौ। छपंन। डंड। सतरि। राय। कूंत। पचास। जोजन। मिलान। चाहुवांन ॥

बालुकराव का आना सुनकर बीसलदेवजी का सेना ले चढ़ना

दूहा—सुनि अवाज बीसल नृपति। आयौ बालुक राव ॥
राज मंगि है वर चढ्यौ। दियौ निसान * निघाव ॥
॥ छं० ४३३ ॥ रू० २१२ ॥

पद्धरी-दल चढ्यौ साजि बीसल सु राज। बढ्ढिय सु जंनि अरि पुर अवाज ॥
सित्तर हजार सेना सु वाज। झिगरि सलूर पावस निगाज॥छं०४३४॥
ढलकंत ढाल झलकंत कुंत। बिकसंत सूर सकसंत जंत ॥
हल हलत सिंधु वर चल अनूप। झल मलत सिष्ष पष्षर सनूप॥छं०४३५॥
वर विजय बढ्ढि चालुक्क देश। बहु मिल्लत भूमियां लेय पेस ॥*
अरि गहत गाढ तिन धरनि षंड। इहि रीत राज वसु विजय मड ॥छं०४३६॥
करि अग्ग मद्द गल सहस इष्ष। वर माघ मास उज्वलौ पष्ष ॥
दस कोस जाय मुक्काम†कीन। बिच गाम नगर पुर लूट लीन ॥
॥ छं० ४३७ ॥ रू० २१३ ॥

बीसलदेवजी की खबर सुन बालुका राव का जलभुन जाना

दूहा—सुनिय षबरि ‡ बालुक तवै। तमकि सु ऊठ्यौ ताम ॥
मानों प्राजारिय अगिन। नर निरधूम बिराम ॥
॥ छं० ४३८ ॥ रू० २१४ ॥

---

२१२ पाठान्तर—आवाज। मंग। हैवर। चढ्यौ। दीयो। निसान। न। घाव।

२१३ पाठान्तर—जान। सत्तरि। बाजी। झिगर। कि गाज। ढलकंति कूंत। जुत। जंतु। सिष। पष्यर। गदि। भूमिया। मंडि। सं० १६४७ और १७७० में "करि अगम गम्य दल अट्ठल रक" है। जव। ऊजलौ। ऊज्जलौ। पक्क। मुकाम । मुक्काम। गाम।

* हिं० पेम (SK. प्रैष्य m A servant, a slave n Service, servitude. Hence a tribute or present such as is only presented to conquerors,princes, great men and superiors)

हिं० पेश अथवा पेम + कशी अथवा कसी (SK. प्रैष्य and कृष् = to draw, to draw out or off, to attract, to raise, to draw up, &c)

† हिं० मुक्काम or मुकाम (SK. मुक्त + काम = परिश्रम labour). Hence a halt, a stop in a marsh &c, Some think it from the SK मकुष्ट mfn, going lazily, slowly, &c. or SK. मक or मकि or मुक्क to go, to move &c. & अमनि a road or SK. मुक्त + आम to go.

‡ हिं० खबरि or खबर (SK. ख्या to relate, to recount, to say or tell celebrate, to make known &c.

२१४ पाठान्तर—षब्बरि। जमि। तांम। सं० १८५९ की में "मनों प्रजारिय अगनि बन" ॥ बिराम ॥

बीसलदेवजी की खबर सुन बालुका राव का जलभुन जाना

दूहा—सुनिय षबरि बालुक तबै। तमकि सु ऊठ्यो ताम ॥
मानो प्राजारिय अगिन। नर निरधूम बिराम ॥
॥छं ४३८ ॥ रू० २१४॥

बालुका राव का नित्य नेम करके लड़ने को तयार होना

पद्धरी बाल्हुका राइ चालुक्क वीर। मंगाइ नीर मंज्यो सरीर ॥
हरि चरन अंब अंजुली कीन। परि कंठ विष्ष धारिय कुलीन॥छं०४३९॥
जुध आज करौं कहि कहा कालि। जो जाउं भज्जि तौ गोत गालि ॥
इतनी भूमि षित्री न कोह। अड्डौ न फिरचौ मिल्लि लेय लोह॥छं०४४०॥
पषरैत तुरिय पषरैत गज्ज। नर कम्मे वगतर सिल्लह सज्जि ॥
अवसर भये तब षवरि दीय। बाल्हुका राइ अयौ अबीह ॥छं० ४४१॥

बालुका राव का बीसलदेवजी के पास श्रीकंठ भट्ट को भेज संदेसा कहना

श्रीकंठ भट्ट चहुवान पास। तुम जाय कहौ इहि विधि प्रकास ॥
श्रीकंठ भट्ट गय अरि सु थान। बीसलदे भेटचौ चाहुवान ॥छं०४४२॥
आसीस दई उम्भारि हथ्थ बाल्हुका राइ की कही कथ्थ ॥
जितनें नृपति सौं मुदै काम। तितनें रयति मौं कौंन काम॥छं०४४३॥
तुम बुरी करी करि रयति बंदि। अैसी न करै हिंदू नरिंद ॥
अव छंडि रयति फिरि जाहु धाम। अजमेर सहर मंडौ विश्राम॥छं०४४४॥
हौं वह्म राय जुध करन जोग। जुध भाजि जाउ तौ परै सोग ॥
हम मरन दिवस है मंगलीक। मो पास जितेनृप सुद्ध लीक ॥छं०४४५॥
हम तुम्म नहीं कवहू विरुद्ध। इह जानि जाहु फिरि तजौ जुद्ध ॥
हम तुम्म काम इहि षेत आज। को रहै षेत को जाइ भाजि॥छं०४४६॥

यह सुनते ही बीसलदेवजी का लड़ने को आज्ञा देना

इतनी जु सुनत ही चाहुवान। तिहि वार हुकम करि द्यौ निसान ॥
पषरेत किये है वर मतंग। संनाह पहरि सब नरनि अंग ॥छं०४४७॥
दोउ फौज निजर दिठाल मिल्लि। उपट्टै सिंधु जनु लहरि जल्लि ॥
॥ छं० ४४८ ॥ रू० २१५ ॥

---

२१५ पाठान्तर— व। चाल्हुक। मंगाय। भयो। अजुलि। धारीय। जुद्ध। करो। कालिह। काल्ह। जो। जाउं। जाऊ। गजि। गोतमालि। काय। अड्डो। फिर। पषर। पषरैत। गज। कमे। सजि भए। जाहुँ। कहो। थांन। सं १७७० में "भेटचौ बीसलदे चाहुवान"। दीन। दइ। उभारि। हथ। राय। कथ। जितनें। सों। कांम। तितनें। सों। कोंम। कांम। बुरीय। करी। करै। हिंदू। धांम। विश्रांम। हों। बह्म वंस। भागि। जाऊं। पासि। शुद्ध। तुम।

बीसलदेवजी का चक्रव्यूह और बालुकराय का अहिव्यूह रचना

दूहा —चक्रव्यूह चहुवान किय । अहि मन बालुक राइ ॥
कै भेदै कै मधि रहै । दई करय निरवाह ॥
॥ छं० ४४९ ॥ रू० २१६ ॥

बीसलदेवजी और बालुकराय की फौजों का परस्पर युद्ध करना

भुजंगी - मिले प्रात कालं दुअं दिष्ट फौजं । मनो देषिअै जानि सामुद्र मौजं॥
गजं आय झूमे भले साव रोटं । षई पंड सुंडं करे श्रप्प चोटं॥छं०४५०॥
भई तीरकारी छुटे बाल बानं । परी सोर की धुंध सुझ्झे न भानं ॥
भले सूर बीरं धरे कुंत कंद्धं । उपारं तुरी दो दिसा फौज मद्धं ॥छं०४५१॥
निसंकं तुरी थप्पि पषरेत नष्षै । मनो बुंद सिंधं परै कौन दिष्षै ॥
भए एकमेकं परे भार भारे । तनं तेग तुट्टै बहै फूल धारै ॥छं०४५२॥
भई फौज चलुक्क की पच्छ पायं । तबै बालुका राइ कीनी सहायं ॥
जपै भाय भायं करै मार मारं । लरै दोय जोधा कटै सार सारं॥छं०४५३॥
उपट्टै घटें गाबरं तुंड तुट्टै । वहै संग छुट्टी फिरी अंग फुट्टै ॥
चपे चक्रव्यूहं नृपं श्रप्प चल्लै । फिरै मुष्ष परिहार गहिलोत मिल्लै।छं०४५४।
चल्यौ भज्जि गहिलोत तूंबर दिसानं । फटे चक्रव्यूहं भए एक थानं ॥
तिनं बार स्याबासि पावासु रान । सनं मुष्ष धाए मनोसिंघ जानं॥छं०४५५॥
परी भूमि लोथं मिले हथ्थ वथ्थं । करै जोर जोधा अकथ्थं सु कथ्थं ॥
तिनं बार पंधार पेल्लेवलोच । जुरे आय संमुष्ष कीयौ न सोच॥छं ४५६॥
भभक्क भकं हस्ति बोले भमुंडं । परे पंड पडं रनं रुंड मुंडं ॥
बने लाल बागे लिले लोह मिल्लै । दुहू ओर जोधा मनौ फाग पिल्लै॥छं०४५७॥
गजं श्रोन चल्लै रजं आम पासं । मनो माधुरी मास फूले पलासं ॥
मिली दिष्ट वालुक्क बीसल नरिंदं । मनौ सूर ऊंगे भये चंद्र मंदं ॥छं०४५८॥
तुरी चढ्ढि चालुक्क हस्ती चुहानं । भयौ राज सौ जुद्ध भारी भयानं ॥
उनें बाजिनष्यौ इनें गज्ज पेल्यो । दिए दंतपायं दुअं लोह मिल्यौ॥छं०४५९॥
फिर्यौ गज्जराजं उनें वाजि फेर्यौ । दुअं बीर वाचा भई पेत हेर्यौ ॥
॥ छं० ४६०॥ रू० २१७ ॥

सुंम । नही । बिरुध । तुंम । काम । जाय । चाहुवान । निसान । हैवर । हैबार । दोऊ ।

२१६ पाठान्तर -चाहुआन । वालुका । राय । दइ ।

२१७ पाठान्तर दुयं । दिठ । देषियै । अैन । जांनि । झूभे । रोठं । रोट्टं । सर्षं । मोटं । मोट्टं । धुंधु । सुझै । भांन । श्रूर । धरे । कंधं । उपारै । थंप्रं । थप्परै । कंध नषे । नष्यैं । परैं । कोंन । भइ । पछ पाई । पछ । राय । सहाई । जपे । भाई भाई । जोद्धा । कटै । घटं । तुब । करी । चंपे । श्रप । चलं । फिरै । मुदय । मिलं । भजि । तोंवर । फटै । मुष । पुहवि । पहुमि । हथ बथं । करे ।

चालुक का कहना कि रात को युद्ध नहीं करना, प्रात होने पर युद्ध करेंगे

दूहा राज सुनौ चालुक कहै। है थप्परि इह कंध ॥
राति परी जुध नहि करै। प्रात करैं फिर जुद्ध ॥

॥ छं० ४६१ ॥ रू० २१८ ॥

दोनों योद्धाओं का अपने अपने डेरों पर आना और चालुक के मंत्रियों का एक झूठी पत्री बनाना

अरिल्ल -अपने अपने डेरा आए। सब घायल के घाव बँधाए॥
मिले सकल चालुक के मंत्रिय। झूठी एक बनाई पत्रिय॥

॥ छं० ४६२॥ रू० २१९ ॥

चालुक के मंत्रियों का उसे एक झूठी पत्री देकर घर भेज देना

अरिल्ल सो कर ज.इ राज कै दिन्निय। तुम घर जाहु कहा वक थन्निय ॥
डोली करि चालुक्क चलाए। सब मंत्री मिलबे कौं आए॥

॥ छं० ४६३ ॥ रू० २२० ॥

चालुक के मंत्रियों का बीसलदेवजी के मंत्रियों से मिल संधि कर लेना

अरिल्ल सब मत्री परधान थान पर। बोलि लए पावासर तोंअर ॥*
हम सु तुम्हारैं पाइन आए। कपट निपट करि राव चलाए ॥

॥ छं० ४६४ ॥ रू० २२१ ।

इह सु बोल गज तोल चलावौ। राज कहै सो माल मँगावौ ॥

॥ छं० ४६५ ॥ रू० २२२ ॥

अकथं। कथं। पेल्यो। सनमुष। भभकंत ह ती सु बोलै भुसुंड। मंड। मुडं। मिले। दुहुं। मनों। मिले। चल्ले। रजे। मनो। बालुक। मनो। टगे। हुवं। षंद। चढि। चालुकं। करी। चाहुवानं। चौहानं। सो। नष्यो। गज। दए। दुवं। गजराजं। दुहूं। भयं ॥

२१८ पाठान्तर —करें। करै। भो। करै।

२१९-२२ पाठान्तर —अपनें २। घाउं। बंधाए। मंत्री। पत्री ॥ २१९ ॥ जाय। दीनीय। थनिय। चालुक। करी। कों। कूं। आये ॥ २२० ॥ परधांन। थांन। तुम्हारे। पायन ॥ २२१ ॥ इहां। सोल। चलायो। मंगायो। तहं ॥२२२॥

* यह तुक सं० १६४७ और १७७० की पुस्तकों में नहीं है।

पावासुर का बीसलदेवजी से संधि कर लेने के समाचार कहना

अरिल्ल—राजन पास गए पावासुर। तहाँ बोलि किरपाल लए नर ॥
चालुक के मंत्री आये मिल। मंगो माल धरै प्रभु पग तल ॥
॥ छं० ४६६ ॥ रू० २२३ ॥

बीसलदेवजी का संधि स्वीकार कर वहां महल बनाने और नगर बसाने को कहना

अरिल्ल—फिर राजन्न कही तुम जानौ। मेरो इहाँ महल हु थानौ ॥
एक मास में नगर बसावौ। इतनी कहि अस पाइन आवौ ॥
॥ छं० ४६७ ॥ रू० २२४ ॥

माल मँगाकर बीसलपुर बसाना और वहां से पीछे फिरना

दूहा—पावामर तोंअर कहे। भरें कोरि कौ भाग ॥
जव ही माल मगाइ करि। नगर बसावन लाग ॥
॥ छं० ४६८ ॥ रू० २२५ ॥

जीति षेत चहुआन नृप। चालुक धाय अघाय ॥
फिरि बाहुरि बीसल चल्यौ। बीसल नगर बसाय ॥
॥ छं० ४६९ ॥ रू० २२६ ॥

सो संवत् नव मत्त अध। बरस तीस छह अग्ग ॥
पुर पट्टन बीसल नृपति। राजत सयलह जग्ग।*
॥ छं० ४६० ॥ रू० २२७ ॥

२२३-२२४ पाठान्तर--कें। कै। पाइन। ताले। २२३ ॥ राजन। राजंन्न। जानो। इहं। मेल्हिहु। हो। मैं। वमायो। वमाउ। पायना। आयो ॥२४॥

२२५-२२७ पाठान्तर—कहै। भरे। भरै। मंगाय। वसाउन। ॥ २२५ ॥ जीतो। चहुआंन। चहुवान। नृप। घाय। फिरि ॥ २२६ ॥ सत। अध। अग्गि। जग्गि ॥ २२७।

* इस रूपक में कहे संवत् के विषय मे हमारा टिप्पण १६८ पढो और विचार करो। इस ग्रंथ के रूपक १६८ मे बीसलदेवजी के पाट बैठने का सवत् ८२१ कहा है परंतु ख्यातियो में सं० ९३१ भी मिलता है। उनके राज्य करने के वर्ष ६४ कवि ने बता ही दिए है अतएव यह रूपक पाठ बैठने के रूपक १६८ में आठ सै के स्थान में नौ सै अथवा नव सै का पाठ होना स्वयम् सिद्ध करता है, क्योंकि जो ऐसा न माने तो ११८ वर्ष का राज्य समय होगा। ख्याति मे लिखे बीसलदेवजी के पाट बैठने के संवत् के अनुसार जो लेखा लगाकर हमने टिप्पण १६८ में संवत् १०८६ सिद्ध किया है वही कर्नेल टाड साहब भी नीचे लिखे प्रमाण से अनुमान करते हैं—

एक दूती का बीसलदेवजी को एक बहुत सुन्दर बनिकसुता की खबर देना

दूहा - बनिक सुता कौमारिका । एक अनूप नरिंद ॥
कामलता दूती कहै । मनों सरद को चंद ॥
॥ छ० ४७१ ॥ रू० २२८ ॥

बीसलदेवजी का बीसलपुर में प्रविष्ट होना

कवित्त सवत नव सत अद्ध । बरष दस तीय सत्त अग ॥
पुर प्रविष्ट बीसल नरिंद । राजत सयल जग ॥
तिहि पट्टन इक बनिक । मडि ग्रह राज विवाहति ।
रचित्र देव नप सबद । दिष्षि तिय देव इवाहति ॥
जै जै सबद बदिन चवहि । मागध पुत्र पवित्र मति ॥
अन धन प्रवाह बहु पुहवि परि । वरण्यौ जेम पुरद गति ॥
॥ छ० ४७२ ॥ रू० २२९ ॥

'Mahmood's final retreat from India by Sindh to avoid the armies collected 'by Byramdeo and the prince of Ajmere," to oppose him, was in A H 417, A D 1026, or S 1082, nearly the same date as that assigned by Chand S 1086," Vol II **Page** 419.

इसके सिवाय पाठको को यह भी विचार करना होगा कि इस समय गुजरात देश के पट्टन का चालुक राजा कौन था कि जिससे बीसलदेवजी का यह युद्ध हुआ । अतएव हम जैन ग्रथ प्रबध-चिन्तामणि और कुमारपाल-चरित्र आदिक के अनुसार शोध हुए सवत् मूलराजजी सोलकी से लेकर करण तक के नीचे लिखते हैं—

१ मूलराज	=	सवत् ९९८ से	५५	वर्ष राज किया
२ चामुडराय	=	,, १०५३ से	१३	वर्ष ,, ,,
३ वल्लभराज	=	,, १०६६ से	११॥	मास ६ दिन राज किया
४ दुल्लभराज	=	,, १०६६ से	११॥	वर्ष राज किया
५ भीम		,, १०७८ से	५०	वर्ष ,, ,,
६ करण		,, ११२८ से	३२	वर्ष ,, ,,

२२८ पाठान्तर - कोमारिका । कहै । मनहुत ।

२२९ पाठान्तर - स० १७७० की पुस्तक मे "सर सवत् नव सत्त । वरष दस पंच सत्त अग" पाठ है । बीसल्ल । नृपति । राज्यत । तिन । पट्टन । ग्रह । दिषि । तीय । इवाहि । पुत्त । पहु । पुहमि । पद । पुरिंद ।

उस रूपक के संवत् के विषय मे टिप्पणी १ ८ और २२५-२८ और बीसल नगर अथवा बीसलपुर के विषय मे टिप्पण १८० और १८२ अवलोकन करो ॥

बीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और वहां उनका हास होना

दूहा – इह विधि मंड्यो राज वरि । जग्य बनिक अजमेर ॥
वरष त्रयोदस मद्धि वय । भयौ हास सव नैर ॥
॥ छं० ४७३ ॥ रू० २३० ॥

बनिकसुता गौरी का पुष्कर में जप करना और बीसलदेवजी का उस पर मोहित होना

पद्धरी – आषाढ मास उज्जास पष्ष । दिन तीय सोम बंदन सरुष्ष ॥
मटिवाय गज्जि नीसांन गेन । अति उंचि मडिन्रिप अवधि अेन॥छं०४७४॥
किलकंत उषल आकाल अभ्भ । विथुऱ्यौ महि जल पहुमि गभ्भ ॥
बिलसंत राज तिय देव साय । निकसै बार कहु एक भाय ॥ छं०४७५ ॥
चिहुं कोद घूमि घन पुब्ब पूर । दिन पाच आनि दरसाइ सूर ॥
रस वार सोम वीरंम दिन्न । ते वंम सेव जन बंद किन्न ॥ छं० ४७६ ॥
मो षंड माम लगि रत म मान । घर हरे धुंम जल महिर आन ॥
॥ छं० ४७७ ॥ रू० २३१ ॥

साटक – स्यामग रवरंग अंग रवनी । अन्वी सु रगेसवे ॥
माहसं मक पाइ राइ मुगता । जुग्ता सरित्तारए ॥
नीलं वास वनूर वंध विधना । हरि हार् धारा तनं ॥
भूमि मंकि स्वधीन पुन्य ननयं । देवा रहस्यं मनं ॥
॥ छं० ४७८ ॥ रू० २३२ ॥

कवित्त – धरनिय हरि उर वास । वाम धर उर तिय धारिय ॥
दिग कज्जल लगि धार । धार कज्जल दिग धारिय ॥
रच्यौ हार हिय मद्धि । मद्धि हिय हार सु रमिय ॥
नूपुर पय सो श्रवत । श्रवन नूपुर पय अगिय ॥
अविमय न पुहप घन वन रमिय । रमय त्रनी घन पुष्फ सम ॥
भू इंद रहमि रमि वमि रमिय । बीसल रस भू इद रम ॥
॥ छं० ४७९ ॥ रू० २३३ ॥

२३० पाठान्तर – वरि । मधि ॥

२३१ पाठान्तर – उजास । पष । सरुप । मरुप । मिटिवाय । गज । नीसांन । गेंन । उच । वेंन । उपित्र । अभ । वियुऱ्यौ । मधि । पुहमि । गभ । निकसै । विहुं । घूंमि । पुत्र । रस । दरसाई । विरम । दिन । नें । बध । किन । स नाभ । आभ ।

२३२ पाठान्तर – स्यामाग । अवनी । पाय । जुगता । मरितारए । विधिना । हार । भूमि ॥

२३३ पाठान्तर – धरनिय उर । धारि । मधि । हिय । रगिय । नूपर । सा । पुहुप । पहुप । रहस्सि ॥

पुष्कर की तपस्विनी की बीसलदेवजी के प्रति अरदासि

दूहा - हौं राजन मंगों यहै। इह मेरी अरदासि ॥
पुहकर की कहै तपमनी। रूप रंग की रासि ॥
॥ छं० ४८० ॥ रू० २३४ ॥

अरिल्ल पित्र मनेह सपूत सबानिय। देवनि भूमिन सब्ब समानिय ॥
मो रति मान थटे घन डबर। असय मद्धि निज उज्जल अबर ॥
॥ छं ४८१ ॥ रू० २३५ ॥

दूहा — उज्जल पष दसमी दिवस। अरु दशरथ के नंद ॥
नयर बंद्ध अर कंघ दम। रचिकें किए निकंद ॥
॥ छं० ४८२ ॥ रू० २३६ ॥

दीप माल दीपै सुरग। ग्रह ग्रह महल अवास ॥
हरिपुर हर मानत मनह चितवत चिंतत वास ॥
॥ छं० ४८३ ॥ रू० २३७ ॥

बीसलदेवजी का पुष्कर में बनिकसुता गौरी का सतीत्व भ्रष्ट करना और उसका उनको दावन होने का शाप देना

कवित्त - एकादसमा दिवस। देव नर नाग सब्ब मिल ॥
सुर सक्रव तजि वास। आनि पुहकर प्रसाद षिल ॥
तहा बनिक नदिनी। पुत्रि गवरी तप मड्यौ ॥
दिष्षि ताहि बीसल नरिद। बढि मार प्रचड्यौ ॥
द्वादसो दिवस दिन अस्त करि। असद सद्द कीनी नृपति ॥
जित्त तिनह दिष्पि तिहि मन दुचित। न हिय राज कहु छिन त्रिपति ॥
॥ छं० ४८४ ॥ रू० २३८ ॥

पद्धरी-बर विमल लोक पुहकर प्रकास। सुर नर सु नाग रिषि मुनि अवास॥
धर धरम करम सुभ परम पाइ। जय सुर चवत गुन अगम गाइ ॥छं० ४८५॥
तिथि अगनवार दिन कर प्रकास। गय द्वार तपनि करि कपट पास ॥
तन रचित नीर उर ध्यान देव। न्रप मानि रहस करि वर अपेव ॥छं० ४८६॥

२३४-३७ पाठान्तर — हो। इहै। अरदास। दै। तपशनी ॥ २३४ ॥ सुरिल्ल। सवानिय। सवानीय। सवानीय। सब। समानिय। मांन। मधि। उजल ॥ २३५ ॥ नैर। बध। अरि। निकंत ॥२३६॥ सुरंग। चिंतवत्त ॥ २३७ ॥

२३८ पाठान्तर — एकादशमी। दाव। मिलि। पास। आनि। षिलि। देषि। द्वादशी। असू सद। तितहिं। दिषिति। तहु। मंन। कहुं ॥

२३९ पाठान्तर — वर। प्रकाश। रिष। करकम। पाय। गाय। अनग। दिन कर। ध्यांन। ज्वाल। नैंन। कुश। सकुच। दय। बैंन। बेंन। हुरत। पिट्टि।

बढि विकल झाल तम धूम नैन । गाहि कुस सकुथ्थ दइ दुसिष बैंन ॥
धर हरति अंग जल धार भार । हथ पटकि गंग जट समुष पार ॥छं० ४८७॥
धरि ध्यान ध्यान तिन अगनि ईस । षंडे सु जग्गि तंफे जगीस ॥
रवि पदम पाय सासन सरूढ । उर धरे देव तिन देव गूढ ॥ छं० ४८८ ॥
जुग पानि नाभि ताली लगाय । रमि द्रिष्टि द्रिष्टि गिरि बभ राय ॥
तिर पुटिय भाल शिल कमलमूर । इह भाति ताव तप तपनि जूर॥छं०४८९॥
तप त्रवल मुक्कि किय विरथ काम । कर मंझि राज मुझ श्राप नाम ॥
॥ छं० ४९० ॥ रू० २३९ ॥

दूहा – पुत्री बनिक सराप दिय । भर पुहकर नर लोइ ॥
असुर होई बीसल नृपति । नर पलचारी सोइ ॥
॥ छं० ४९१ ॥ रू० २४० ॥

गौरी का बीसलदेवजी को भयभीत देखकर कहना कि तुम्हारा पोता तुम्हारी सुकीर्ति करेगा

दूहा— दिप्पि राज भय भीत नन । तन मन धूजत तथ्थ ॥
मो उद्धारन पय गहन । कथ कुमुमन वर कथ्थ ॥
॥ छं० ४९२ ॥ रू० २४१ ॥

दूहा— तो सुअ सुत्त उदार मति । गति तिन देव प्रकाम ॥
घर मडन इडन भरन । सो तुम करहु सुवाम ॥
॥ छं० ४९३ ॥ रू० २४२ ॥

तपस्विनी के कोप से बीसलदेवजी का सांप के काटने से अलोप होना

कवित्त —सपत दिवम अनुसिप्प । मृप्प मधि दिग्ग प्रजारिय ॥
अमि त्रिप वर्द्धन अंग । अगनि गन दनुज उदारिय ॥
सहस अद्ध तन वद्ध । झार मुष चार विकारिनि ॥
सर्व असन करि अमम । सैन छिन चैन निकारनि ॥

ध्यान ध्यान । जगि । तडे । तझे । मृरूट, । पाने । नाभा । द्रष्टि । द्रष्टि । राइ । तरपटीय शील शिलकमल मूल । नानि । नप प्रवल मुनि किगय त्रिरथ बम । सराय । नाम ॥

२४०-४१ पाठान्तर —वणिक । नृपति । नर भष्पन करे तोय ॥ २४० ॥ दिषि । तथ । कथ । कुमुम । वर । कथ ॥ २४१ ॥

२४२ पाठान्तर —सुत सुत । उद्दार । मड ॥

२४३ पाठान्तर —अनुसिष । मुष । दिग । उद भष्पिय । वार । विकारनि । सैंन । चैंन । आहुठ । साहुठ । ग्गान । गलह । आरंन ॥

आहुट्ठ दीह साहुट्ठ मधि । पलप पदम बिन कदम बिन ॥
गुर गवरि ग्यान गन गन्हृ करि । रम्य राज्य आरम्न छिन ॥
॥ छं० ४९४ ॥ रू० २४३ ॥

दूहा—भय दिवाह आहुठ्ठ दुति । तपसरनी को कोप ॥
जल बेली बिहु बाग व्रिष । ते जिन भये अलोप ॥
॥ छं० ४९५ ॥ रू० २४४ ॥

जिस तपस्विनी के शाप से वीसलदेवजी असुर हुए उसके
तप का आना की मा सविस्तर वर्णन करती है

दूहा—सुनहु पुत्र तिन तपनि तप । भिन्न भिन्न परिमान ॥
जिहि दुसिष्ष न्रप असुर हुअ । रच्या सवर वरमान ॥
॥ छं० ४९६ ॥ रू० २४५ ॥

बनिक पुत्र मन इम धरिय । मो पति ताप अपार ॥
जो तप्पह मंडौं प्रबल । तौ छुट्टौं संसार ॥
॥ छं० ४९७ ॥ रू० २४६ ॥

कवित्त—धन अप्पिय सब ब्रह्म । उअर । तिय ध्यान सु धारिय ॥
चितवि पुहकर तिथ्थ । रिन्तु ग्रीषम अति चारिय ॥
पंत्र अगनि वर सीस । मेघ धारा धर मंडिय ॥
बरषा काल पचंड । मीम जल मद्धि सु बुड्डिय ॥
छंडिय सु वाम संसार सुष । जोति निरंजन उर सचिय ॥
इम कंक नालि मंडिय गगन । पीयै वाम दछिन मुचिय ॥
॥ छं० ४९८ ॥ रू० २४७ ॥

पद्धरी—पहु समय तिथ्थ वर सजर किन्न । उर नयर धारि तिन भुवन चिन्न ॥
रुष च्यार देव पद भेटि ठौर । मन धरयौ ध्यान सब तिथ्थ मौर ॥छं० ४९९॥
वढि व्राह् मास तिन पान कीन । सिर अद्ध उद्ध दिग वरन दीन ॥
सचिवेद अर्ध्र हवि पंच मंडि । दहि दर्प्प दर्प मन मयन षंडि ॥छं० ५००॥

२४४-४६ पाठान्तर—भये । भए । आहुठ । को कोपु । बिहुं । वृष । भए ॥ २४४ ॥ भिन । भिन । परिमांन । जिहि । दुसिष । नृप । भए । वरमान । ॥ २४५ ॥ धरीय । मो तन पाप अपार । मो पित ताप अपार । जो तप मंडौ निय प्रवल ॥ २४६ ॥

२४७ पाठान्तर—ब्रह्म । ताय । ध्यांन । तिथ । रतु । चारीय । शीस । मंडय । शीत । मधि । बुडय । साव । ज्योति । बंक । वांम । दषिन ॥

२४८ पाठान्तर—तिथ । किन । धार । चिन्ह । ध्यांन । तिथ । पांन । कीन । संचि । दर्प्प । मेन । बिहसित । बिहसीत । नगन । माध । अभ्य । अभ । धर । भूम । लूंबि झूंमि । मूर्द्ध । बिंद । महराव । बाव । दह । दिसा । इंद ।

विहसित्त रगर नन प्रसध साध । सिर द्रवत उदक विप प्रातमाघ ॥
चव वरष अभ्भ घर धार भूमि । गिरि गुरनि गिरनि गन लूम झूमि।छं०५०१।
परि मुर्द्ध उर्द्ध उषलंत बिन्द । गहराय बाय दह दिसनि इन्द ॥
धर हरत अंग जल धार धार । हर थटिय गंग जट मुकट पार ॥छं०५०२॥
धरि ध्यांन ग्यांन तिन अग्र ईस । षंड्यौ स जग्य मंड जगीस ॥
उर धरे देव तिन अंग गूढ । रचि पदम पाय सासन सरूढ ॥छं० ५०३॥
जुग पानि नाभि ताली बनाय । रमि दिष्ट सिष्ट गिरवान राय ॥
तरपटी साल सिल कमल मूर । इहि भांति भाव तप तपनि जूर ॥
॥ छं० ५०४ ॥ रू० २४८ ॥

कवित्त- देव चरित रमि धाइ । इक्क कर हीय मद्धि धरि ॥
सु रचि तिथ्थ अडसठ्ठि । मान पहुकर प्रकास करि ॥
दिग अंबर उर धारि । तारि तारी तप तारनि ॥
मन सुर भाग समान । लाई राष्षै परि पारनि ॥
वर तर्प चंद अन दर्प करि । तामस द्रिग विकराल मन ॥
सम गवरि अंग अंग सिष उसिष । नृपति समंतन असुर बन ॥
॥ छं० ५०५ ॥ रू० २४९ ॥

भार । मुमुष । ध्यांन । ग्यान । मंरूढ । पानि । शिष्ट । गिरवरन । राइ । मूल । इहिं ॥

इस रूपक के अंत की पाच तुकों को कवि पिछले रूपक २३९ मे भी कह आया है यह चंद की संस्कृत काव्य— सम शैली का एक उदाहरण है और ऐसे उदाहरण इस महाकाव्य में अनेक आवेंगे । कवियों की ऐसी निज शैलियों को देखकर भाषा के क्षुद्र और अपरिपक्व कवि भट चंद जैसे हिन्दी भाषा के वास्तविक कविराज को दोष देने लग जाते हैं परन्तु संस्कृत भाषा के महाकाव्यादि के पठित विद्वानो को चंद कवि पर तो नही किन्तु इन दोष देनेवालों की कुशाय वृद्धि पर बड़ा आश्चर्य्य होगा क्योंकि संस्कृत काव्यों तथा अन्य बड़े-बड़े ग्रंथो मे प्राय: ऐसे उदाहरण मिलते हैं । देखों माघ के चतुर्थ सर्ग के २१वें श्लोक में महरितालममाननवाशुक: । दो वार प्रयुक्त हुआ है और रघुवंश के दूसरे सर्ग के श्लोक ३१ की अंन की पंक्ति त्रित्रार्पितारम्भद्ववावतस्ये ॥ कुमारसंभव के तीसरे सर्ग के ४२ वें श्लोक में भी महाकवि कालिदासजी ने ऐसाही प्रयोग किया है । तथा रघुवंश के सातवें सर्ग के ६ठे श्लोक से लेकर ग्यारहवें ११ तक के सब श्लोक जैसे के तैसे कुमारसंभव के सातवें सर्ग के सत्तावनवें श्लोक से बासठवें तक महाकवि कालिदासजी ने प्रयोग किये हैं ॥

२४९ पाठान्तर—धार । इक । रहिय । रहीय । मधि । तिथ । अडसठि । मांन । उधारि । समान रषे । पारन तर्प्पं । तर्प्पं । अंग अंग ॥

शाप से विमुक्त होने के विचार से बीसलदेवजी का गोकर्ण की यात्रा के लिये बीसल सरवर पर प्रस्थान करना

दूहा तजि नरिंद अजमेर पुर। चित गोकन्न हर थान।
बीसल सरवर ऊपर। बीसल दिय प्रस्थान ॥
॥ छं० ५०६ ॥ रू० २५० ॥

तपस्विनी के शाप से बीसलदेवजी की बुद्धि का चल विचल होना

दूहा काम कुमत्तौ उप्पनौ। दीय तपसनी स्राप ॥
बीसल दे बुधि चल विचल। प्रगटि पुब्ब कौ पाप ॥
॥ छं० ५०७ ॥ रू० २५१ ॥

बीसलदेवजी को सांप का काटना और उससे उनका मरना

दूहा वार रवी तिथि सत्तमी। [illegible] रथ सुनर मरग ॥
तिहि वेरा आयो कहै। इस माहि पनग ॥
॥ छं० ५०८ ॥ रू० २५२ ॥

कवित्त देखि राज [illegible] क्रुध। बान [illegible] धार [illegible] कर ॥
बेधि पनग फन [illegible]। [illegible] तरफत बनिर ॥
छुट तिहि वेर [illegible]। [illegible] दसनै [illegible] धारा ॥
[illegible] मोजगी [illegible]। पनग [illegible] ॥
फिरि [illegible] आय [illegible]। [illegible] ॥
भवितव्य [illegible] आघात [illegible]। [illegible] राजन [illegible] ॥
॥ छं० ५०९ ॥ रू० २५३ ॥

दूहा ओषद मत्र अनत जप। [illegible] उपाय ॥
ज्यौं ज्यौं [illegible]। त्यौं त्यौं [illegible] गाय ॥
॥ छं० ५१० ॥ रू० २५४ ॥

कवित्त राज [illegible] उपनौ। [illegible] उचरो ॥
[illegible] नागिनि [illegible]। [illegible] ॥

---

२५० ५१ पाठान्तर [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ काम। [illegible]
२५२ पाठान्तर [illegible] मन्दि। पन्न [illegible]।

२५३ पाठान्तर बान। [illegible]। नाग। [illegible]। [illegible] छुट्टौ। स० १७७० और १६४० में "भिडि राजन मोजगीत। को। आगो। मधि। पनग। आनि। आ [illegible] गय।

२५४ पाठान्तर उपद। उपाई। ज्यो ज्यौ। [illegible] त्यौ त्यौ। दुनि गो ॥
२५५ पाठान्तर—ऊपनो। उपनौ। उपनौ। निरमो। कीनो। इम। उचर्यो

तिन मुष इम उचर्यो। होइ जदवनि सपुत्तय ॥
मो असीस इह फुरो। तुम्म भोगवहु धरत्तिय ॥
जिन रथी मद्धि ऊठे असुर। धषै ज्वाल तिन मुप विषय ॥
नर भषय जहा लसकर * सहर। मिलै मनिप ते ते भषय ॥
॥ छ० ५११ ॥ रू० २५५ ॥

बीसलदेवजी के मरण और असुर हो नर भक्षण करने की बात सुनकर सारंगदेवजी का अपनी रानी को रणथंभ भेजना और आप उनसे युद्ध करने को तयार होना

दूहा मुनिय बात तो तात तब। हौं पठई रिनथभ ॥
मत्र वद्दि तिन तेग बल। जुद्ध जुरन आरंभ ॥
॥ छ० ५१२ ॥ रू० २५६ ॥

सारंगदेवजी की रानी गवरी का चिंता करना

दूहा उन गति मो गति इक्क होइ। कै अवगाने मिलन ॥
हाम मिटै दुष को मह। उहय चिन्त मो चिन ॥
॥ छ० ५१३ ॥ रू० २५७ ॥

सारंगदेवजी का सेना लेकर ढुंढा राक्षस से युद्ध करने को अजमेर पहुँचना

दूहा-- एक महम भरि मथ्थ करि। मरन मकर [illegible] फेरि ॥
दै निसान चहुवान चढि। पहुंचिय गढ अजमेर ॥
॥ छ० ५१४ ॥ रू० २५८ ॥

सारंगदेवजी का तीन दिन कोट मे रहना, वहां असुर का न मिलना और अजमेर को भ्रष्ट और भयानक दशा देखकर चिंता करना

कवित्त अति उद्यान गत थान। भये गढ धाम भयानक ॥
दिट्ट देषि सारंग। देव चिंते तब थानक ॥

सपुत्तय। सपुत [illegible] भोगवो। धरत्तय। [illegible] मांझ उठै। भषै। सहर। मिल मनुप भपै।

* [illegible] लसकर। SK [illegible] To be skilful or clever, to do anything skilfully and scientifically or [illegible] To play or sport, to work and कर Who or that does makes or causes) Hence a camp or cantonment &c

५६-५८ पाठान्तर वत्त। हो। मो। [illegible]। वद्दि। वर। जुर। १५६ ॥ इन। इक। कें। अवगति। चित ॥ २५७ ॥ भर। मथ। निसान। चहुआन। चहुवान। पहुंचिय ॥ २५८ ॥

२५९ पाठान्तर --उद्यान। थान। धांम। थानिक थाके। नैनन। रहैन। बसावो। बसावौ। कहीय ॥

ताकै कुल उपनीय। तानि हम को कुल पोयौ॥
तन पुकारे नीर। भरे नैनह घन रोयौ॥
दिन तीन रहन हुअ कोट मधि। अमुर नयन दिष्यौ नहिय॥
तब मुचित भए मारग दे। पुरी बसाऔ इह कहिय॥
॥ छ० ५१५ ॥ रू० २५९ ॥

सारंगदेवजी और उनके पिता ढुंढा दानव का परस्पर युद्ध होकर सारंगदेवजी का मारा जाना

कवित्त एका दसमी दिवस। प्रात दानव पुर आयौ॥
सकल सेन लै सस्त्र। उद्रि लरिबे को धायौ॥
वे बाहै तरवारि। इहै सुप पकरि सु कट्ट॥
ज्यों बेली द्रुप गयन। देषि मरकट फल चट्टै॥

---

२६० पाठान्तर [illegible] दसमी। सेन। [illegible]। ज्यां। चुट्टै। किय [illegible]।

[illegible] महाशयो [illegible] कथा आपको [illegible] फिर दानव [illegible] जो लिखा है। [illegible] प्रतीत [illegible] आगे [illegible] प्रतीत होगा [illegible] क्योंकि अब तक कोई ताला जिसका खुलना [illegible] कठिन होता है और वह ऐसी सरलता से खुल न जाय कि जैसे कि 'एक तिनके की ओट पहाड़' तो वह निःसंदेह अद्भुत ही प्रतीत होगा। खैर अब चंद की इस कठिनता के ताले को इस कुंजि से खोलकर अद्भुत वस्तु को देखिये, कि जो कुछ वृत्त चंद ने बीसलदेवजी की दानव कथा मे लिखे है, वे सब उनके जीवन समय मे बरते अर्थात् वे बाजीकरण की औषधियो के खाने, कुकर्मो के करने और साप के काटने से बहुत ही पागल हो गये थे और उन्होने इस [illegible]लपने मे अपने इकलौते पुत्र सारंगदेवजी तक को अपने हाथ से मार डाला था और राज्य को नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। इस वृत्तान्त को चंद ने अपनी काव्य शास्त्र संबंधी विद्वता दिखाने के लिये अद्भुत रस मे लिखा है। अब आप इस प्रसंग को ध्यान देकर पढ़के समझ लेंगे कि महाकवि चंद ने ठीक अद्भुत रस दिखा दिया

किय पिता पुत्त बुध सम असम । गिर सौ जनु सारँग गिर्‌यौ ॥
मन जानि असुर नर घुमि रहै । सब ढुंढा ढुढत फिर्‌यौ ॥

॥ छ० ५१६ ॥ रू० २६० ॥

आना की मा का उसे कहना कि मनुष्यों को ढूंढ ढूंढ कर खाने से ढूंढा नाम पड़ा और उसने रम्य अजमेर को वेराम कर दिया

दूहा – ढूंढि ढूंढि षाये नरनि । तातैं ढुंढा नाम ॥
देवपुरी अजमेर पुर । रम्य करी वेराम । * ॥

॥ छ० ५१७ ॥ रू० २६१ ॥

आना का माता से कहना कि अभी जाकर मै उसे मार आऊं

दूहा मात सुनौ तपसिन वचन । अरु दिय असिस पवारि ॥
अबहि जाय अजमेर गढ । अरि कौ आऊ मारि ॥

॥ छ० ५१८ ॥ रू० २६२ ॥

गवरी का आना को अमंतन मंत कहकर शिक्षा करना

दूहा गवरि अमंतन मंत कहि । रष्पमि तोहि कुमार ॥
अरि [illegible] भर नगर मे । प्रजा [illegible] सधार ॥

॥ छ० ५१९ ॥ रू० २६३ ॥

कवित्त गवरि मात सिखवै । पुत्र आनल [illegible] सिखिय ॥
मानव [illegible] मानवह । सिरत दानव न [illegible] ॥

है । [illegible] मे
कि जो [illegible]
बड़ा भारी [illegible]
मे लिखा [illegible] महाभारत
मे मे [illegible]
अन्य कथाओं [illegible]
आप विचार [illegible]
सम्मति मे [illegible]
है कि यदि हम [illegible]
देनी पड़ती है [illegible] नहीं
होना न उसे चरित्र [illegible] ॥

* विराम से वेराम बना मालूम होता है ।

२६१–६२ पाठान्तर—ढूढ । पाए । तातें । नाम । वेराम ॥ २६१ ॥ दीय । असीस । अबे । जाई । कूं । को । आऊ ॥ २६२ ॥ मत । करि । रषमि । अहिर रकम भर नगंम ॥ २६३ ॥

बहुत काल बहि गए। भरे जगल धर पूरन॥
मृग मयद पडियहि। छडि पंषिय पनि मूरन॥
ज जीव हनजि मानुल धरह। भजन घट मगन करहि॥
उर धरनि और रप्पम कहन। आनिन रप्पम उर भरहि॥
॥ छ० ५२० ॥ रू० २६४ ॥

दूहा उच्चरि मान ममन इह। जीवन मग्न न मिद्ध॥
दुहु विधि धर बामन करे। आराधन कि विरुद्ध॥
॥ छ० ५२१ ॥ रू० २६५ ॥

पुत्त अमत जु सिप्यौ। मिग्यौ उरह दहत॥
ढुढो नर ढुढै भषन। न सेवनह कहत॥
॥ छ० ५२२ ॥ रू० २६६ ॥

आना का माता से कहना कि या तो मै सिर समपूंगा या छत्र धारूंगा

दूहा तब आनल ऐसी कहिय। मुहि सुझिय यह बत्त॥
कै सिर उनहि समरपि हौ। कै सिर धरिहौ छत्त॥*
॥ छ०५२३ ॥ रू० २६७

आना का माता से कहना कि सेवा ऐसी है कि जिस से सब कार्यसिद्धि होती है

कवित्त सेव देव रजियै। सेव रप्पम बसि मञ्चह॥
सेव सिघ पत्तियै। सेव विष जरै न जल्लह॥
सेव बैर भजियै। सेव रच्च पनि पाहन॥
सेव दहै नह दहन। सेव बहु द्रव्य उपावन॥
जिहि सेव देव रप्पम धरहि। जियन मात नन ताइ नन॥
आमूढ ढुढ धावन भषन। नहि सु देव नहि दानवन॥
॥ छ० ५२४ ॥ रू० २६८ ॥

---

२६४ पाठान्तर -सिषवै। पुन। सिपिय। सो। मानव। दानव। नह। पिषिय। स्रा। पषि। पष जीवनह नजि मानुम परह। रषम। गहंन। आनन। रष्यम। करहि॥

२६५-६६ पाठान्तर -उर्चार। सु मत्र। सिद्धि। दुहु। बर। करो। करौ। २६५ पुन। सिपियौ। सिष्यौ। भवन॥ २६६॥

* यह रूपक स० १६ ३ और १७७० की पुस्तकों मे नहीं है और जब तक वह किसी और प्राचीन लिखित पुस्तक मे न मिले तब तक हम उसे प्रसन्नतापूर्वक क्षेपक संज्ञा नहीं प्रदान कर सकते॥

२६७ पाठान्तर -सुझिय। तत। कै। उनहि। हो॥

२६८ पाठान्तर -रीजै। न सेव सिघ तीरै। जल्ह। भजीरै। रचै। सेवह नह दहन। द्रिव्य। जिहि। नह। सो नह॥

आना की माता का तो उसे शत्रु न सेवने को कहना किन्तु उसका अजमेर जाना

दूहा मात बरज्जत रत्त हुअ । शत्रु न सेव न सेव ॥
आइ अनल अजमेर बन । असुर निरप्पन भेव ॥
॥ छं० ५२५ ॥ रू० २६९ ॥

ढूंढा दानव का अजमेर बन में बहुत दिनों तक मन्तु होकर रहना

सो दानव अजमेर बन । रह्यौ दीह घन अंत ॥
सुन्न दिसानन जीव को । थिर थावर जग मंत* ॥
॥ छं० ५२६ ॥ रू० २७० ॥

अजमेर की नष्ट भ्रष्ट दशा और आना का खड्ग लेकर प्रेतके पास जाना

चोटक तहं सिंघ न म्रग्ग न पषि वनं । दिस्सि सून भई उर जीव घनं ॥
नह मातह मंत अमंत कियं । पिय की धरनी रह तंत लियं ॥छं०५२७॥
तहँ ठाम भयानक सोच तयं । तहं ठाम कला कल सोधि वयं ॥
तिहँठाम मरं नर नारि ननं । तिहँ ठाम न पंथिय पंथ कनं ॥छं०५२८॥
तिहँ ठाम गजं बर बाजि ननं । तिहँ ठाम न सिद्धय साथ कनं ॥
तिहँ ठाम न दारिद द्रव्य गनं । हिय मात न तात न मोह मनं॥छं०५२९॥
लय षग्ग रमक्किय प्रेत दिसं । बर बीर सु मंडिय चित्त रमं ॥
अविलंघ करो सकरं विपनं । रिपु थान सपंत सु भै न मनं ॥छं०५३०॥
नर दिप्प अचंभ कियौ सु हियं । कहि आज विधं भल भप्प दियं ॥
कुछ प्यास रु निदय राज ननं । सु गयौ वर दानव ताप तनं ॥
॥ छं० ५३१ ॥ रू० २७१ ॥

आना का अपने मन में विचार कर कहना

श्लोक– मनमाधार्यं पुंमा स्याद् । विधिश्चिंतति नान्यथा ॥
ब्रह्माज्ञा लंघनेनापि । स्वयंपूरकमाधवः ॥छं० ५३२॥रू० २७२॥

२६९–७० पाठान्तर—वरजन । रत । आय । अंनल । निरपन ॥ २६९ ॥ सून । सुन्ना । हथिर ॥ २७० ॥

* हिं० मंत = सं० मन्तु = राजा से बना है । यहां यह मंत्र का अपभ्रंश नहीं हैं ॥

२७१ पाठान्तर—तहां । तहं । मृग । उर । बनं । मसु । पीयकी । तत । तत्ति । लीयं । तहां । तिहां । ठांम । भयांनक । तहां । ठांम । तिहां । ठांम । तिहां । ठांम । नमं । तिहां रुक्क सु पंथि रु पंथि जनं । तिहां । ठांम । तिहां । ठांम । द्रव । लै । लग । रु । मुकिय । अविलंव । थान । संपत । दिपि । कीयो । कोई । कोई आज भलो इव भप दियं । बुध । न निद्रय । दानव ॥

२७२ पाठान्तर – स्यात् । विधिश्चिंतति । ब्रह्माद्या । माधव ॥

कवित्त सो पूरक माधव्व। जगत ज्ञानन अधिकारिय ॥
थावर जंगम दैन। कठिन चिंता न विचारिय ॥
सरव भूत हूँ जाम। मध्य हरि दैन भुगत्तिय ॥
कि कारन नर झुरे। देइ मन बछिन बत्तिय ॥
सा पुरस चित्त धरकै नही। धरक चित्त कायर करहि ॥
तिहि काज देषि दानव बलिय। दल बलिट पुन उच्चरहि ॥
॥ छं० ५३३ ॥ रू० २७३ ॥

आना का दानव को कंदरा मे देखना और उसके खड्ग मारने पर दानव का गाजना

पद्धरी दिष्षौ सु बीर कदल्ला गेह। मै पच हथ्थ ता हथ्थ देह ॥
असि असी हथ्थ झारहि झनक। मन महग पाइ नो डर पनक॥छं०५३४॥

हमारे पाठकों को ज्ञात होगा कि इस ग्रंथ को कृत्रिम बना हुआ कहनेवालों ने ऐसा अत्यन्ताभाव का वचन भी कहा है कि इस महाकाव्य के बनाने वाले को अनुस्वार और विसर्ग तक का भी ज्ञान न था। परन्तु हमने इसी ग्रंथ में और इसी आदि पर्व में इस रूपक के पहिले आठ दस संस्कृत भाषा के श्लोक आप की दृष्टि के आगे धरे है कि आप विचार कर सकें और ऐसे श्लोक आगे इस ग्रंथ में बहुत आवेंगे क्योंकि हमने इस महाकाव्य को कई आवृत्ति करके पढा है। वैसे ही इस श्लोक को भी आप पढकर देखे कि पढने मे तो यह कैसा सरल है और अभिप्राय मे कैसा विद्वानों के विचारने योग्य है। साधारण संस्कृत जाननेवाले से यह श्लोक लगना कठिन है अतएव हम उसका अन्वय नीचे संस्कृत भाषा में भी लिखते है

अन्वय पुंसा मनसा आधार्यं यत् स्यात् तत् स्वयपूरक=माधव विधिः ब्रह्माज्ञालंघने नापि चिन्तति अन्यथा न चिन्तति ॥

अर्थ पुरुष करके मन से धार के जो काम हो सकता है उसको स्वय पूरा करने वाला परमेश्वर (विधि) दैव विधान व कर्म ब्रह्मा की आज्ञा को उल्लघन करके भी सोचता है अन्यथा अर्थात् उससे उल्टा नही सोचता ॥

साराश यह है कि उद्योग के ही फल दैव भी देता है चाहे प्रारब्ध उससे उलटी भी हो। इससे केवल उद्योग की प्रधानता कही है ॥

हे पाठको ! क्या आप के अपक्षपात से विभूषित हृदय मे यह दोष कुछ भी जच सकता है कि इस महाकाव्य का कर्त्ता चाहे कोई भी हो ऐसा निर्बोध था कि जिसको अनुस्वार और विसर्ग तक का बोध न था ?

२७३ पाठान्तर —में। माधव। जानन। अधिकारीय। देन। दैन। विचारीय। सर्ब। जाम। दन। देन। भुगतिय। दैव। नही। तिहि। दानव। उचरहि ॥

अग्रोष्ट उद्ध ऊठिय भनंक । उठतै सु रोमनि सनंक ॥
बुल्यौ सु बैन निय सत्त मान । देपन चप्प बालक विनान ॥छं० ५३५॥
अति सुषम वचन मधु मधुर कंन । दिप्पौ सु अम राजन सुभंत ॥
जंभाई बीर दमनं लहक्क । उद्यौ सु रोम रोमह पहक्क ॥ छं० ५३६ ॥
उर चंपि षग्ग सिर नाइ राज । गहगाय इंद्र दानव सु गाज ॥
॥ छं० ५३७ ॥ रू० २७४ ॥

इस पर दानव का आना से उसके मा बाप आदि के नाम पूछना

कवित्त भेद वचन तन षेद । सुतन पडुर चढि आइय ॥
उर्ध धरद्धर कपि । सुतन प्राक्रम जभाइय ॥
चग्न सु थिर मन लीन । जीव धर धर धर कांनिय ॥
कौन भाव कवि चद । बलिय मान्वक रस भानिय ॥
पुच्छन सु बाल बुल्यौ बलिय । करि सु चित अतित चित ॥
को मात तात कहि नाम को । को माई साधक सु मति ॥
॥ छं० ५३८ ॥ २७५ ॥*

ढुंढ दानव का आना के सिर पर हाथ धर गल्ह पूछना

दूहा स्वग्ग हथेली वाम पर । ढुंढै मेरि अनल्ह ॥
करुना करि सिर हथ्थ धरि । पूछि विवर सब गल्ह ॥
॥ छं० ५३९ ॥ रू० २७६ ॥*

गाथा असुर हथेली चद । विसनार कहीं यह थवा उस ॥
मुकता फल परिमान । ता मध्ये मोहीयं आना ॥
॥ छं० ५४० ॥ रू० २७७॥†

---

२७४ पाठान्तर कदग्ग यह । हय । थ । पाय । दाहर उठिय । रोमह । बैंन । सत । मान । चपु । विनान । सूषम । व नन । कर्नि । गाज राजन । जंभाय । हमन । लहक । नाट । गहगा इन्द्र द्र दानव सि माज ॥

२७५ पाठान्तर - द्धर द्धर । कप । प्राकप । प्राकम । धग धर । कानीव । कोन । भाइ । भानीय । पुछन । बुल्यौ । चित अत्यन्त । नित । सुमति ॥

* इसके आगे के अर्थात् रूपक २७६ से २७८ तक सं० १६४० और १७७० की लिखित पुस्तकों में नहीं हैं किन्तु इधर की लिखी पुस्तकों में मिलते हैं । जब तक इनसे भी पुरानी पुस्तकों में ये रूपक न मिलें तब तक उनको हम क्षेपक कहना योग्य नहीं समझते है ।

२७६ पाठान्तर – स्वग । कर । गह । थेली । मौंहू । अनल्ह । हथ ॥

२७८ पाठान्तर ढुंढा । निकसो । बिहारी ॥

† यह आज कल सोरठा छंद कहलाता है किन्तु प्राचीन समय में हिंदी भाषा के कवि इसको दोहा भी कहते थे क्योंकि दोहे से जितने भेद के छंद ग्रंथों में लिखे

आना का मन में चिंता करना कि जो ढुंढा मुझे निगलेगा तो मैं उसका पेट चीरकर निकलूंगा

दूहा आने चितिय गेम । जो मुहि ढढा निगलिहै ॥
इंद्र व्रनासुर जेम । निकसौ उदर बिदारि पग ॥
॥ छं० ५४१ ॥ रू० २७८ ॥†

आना का उत्तर देना कि जिससे बीसलदेवजी का मन मैन हो गया

दूहा गवरि मात उर उद्धओ । पिन बीसल मन मैंन ॥
इत आवन मन तरमयौ । सूअ तन देपन नैन ॥
॥ छं० ५४२ ॥ रू० २७९ ॥

साटक कि दारिद्र मृ दुष्ट कुष्ट तनय । कि भूमि मत्र हर ॥
कि वनिता च वियोग दैव विपदा । निर्वासितं कि नर ॥
कि जन मानम रुष्ट जुष्ट जुगना । कि आपित सद्गुर ॥
कि मातु भ्रिन रग भग मरसा । आलगता सुदरी ॥
॥ छं० ५४३ ॥ रू० २८० ॥

साटक नो दारिद्र न कुष्ट दुष्टन तन । मत्र धग नो हर ।
नो वनिता च वियोग दैव विपदा । निर्वासितो नो नर ॥
नो सन्मानस रुष्ट जुष्ट जगना । नो श्रापिता सत् गुर ॥
मातुर्नोभ्रित रग भग मरमा । ना लिंगिवा सुदरी ॥
॥ छं० ५४४ ॥ रू० २८१ ॥

दूहा ना दारिद्र न कुष्ट तन । ना मुगधा रम भेव ॥
नानुरत्त समार सुष । नो पग रत्तो सेव ॥छं५४५ ॥ रू०२८२॥

साटक नैवा दुष्ष न सुष्ष साहस रने । नैवान काल कृत ॥
नैवा मात प्ता न चैव धनय । नैवान किती रत ॥

है उनमे सोरठा भी है अतएव चद का इसे दूहा सज्ञा देना कुछ आश्चर्यदायक नही है ॥

२७९ पाठान्तर बल । मन । आवनम । तुम । नेंन ॥

२८० पाठान्तर मत्र । दैवविपदा । निर्वासितं । मानम । जुगता । जगता । सतगुर । मरमा । आलिगिता ।

यह भी ध्यान मे रहने योग्य बात है कि पुरानी हिन्दी भाषा की लिखित पुस्तको मे मृत और नृप जैसे शब्द म्रित और निृप लिखे देखने मे आते है ॥

२८१ पाठान्तर नां । धरा नं । ना । विनता । ना । ना । ना । सन्मानम । श्रापितो । गुरुं । मातुर्नोभ्रित ॥

२८२ पाठान्तर—न । न मुगद्ध । नानुरत । नरतु तुअ पग रतो सेव ॥

नैवांनं हित्त मित्त साजन रमं । नैवांन कि रुष्टयं ॥
त्वं देवं तुअ सेव देव मरनं । तोयं जयं राजयं ॥
॥ छं० ५४६ ॥ रू० २८३ ॥

दूहा - तव लगि कुष्ट दरिद्र तन । तब लगि लघ मुहि गात ॥
जब लगि हौ आयौ नही । तो पाइन सेवात ॥
॥ छं० ५४७ ॥ रू० २८४ ॥

दानव का आना से पूछना कि तू क्यों राज अरत्त है

दूहा आलिंगन दै हथ्थ धरि । अरु पुच्छिय इह वत्त ॥
जा जीवन रत्तौ जगत । तू क्यौ राज अरत्त ॥
॥ छं० ५४८ ॥ रू० २८५ ॥

आना का बीसलदेवजी दानव को उत्तर दे कहना

दूहा जिय न रत नह धन तुव । भूमि न घर मुझ देव ॥
तिन उचाट निउँ कै मरौ । तुम पय रत्तौ सेव ॥
॥ छं० ५४९ ॥ रू० २८६ ॥

दूहा राजा ज दिन बुलाई हौ । मुह मुज्झै इह मत्त ॥
कै सिर तुम हि समप्पि हौ । कै सिर धरि हौ छत्त ॥
॥ छं० ५५० ॥ रू० २८७ ॥

इह धरनी मुझ पित प्रपित । आदि अनादि सु देव ॥
सो मगन तुम पाय हौ । आयौ आतुर सेव ॥
॥ छं० ५५१ ॥ रू० २८८ ॥

ढूंढा दानव का प्रसन्न होकर आना को अजमेर का राज देना

त्रोटक सु प्रसन्नह देषित ईत ततं । नर रूप धरन्न कियौ सु मनं ।
तुअ पुत्रह पौत्र वध्र उरनं । जन मानस राज करो धरनं ॥ छं० ५५२॥
असि हथ्थ लियै अपमान गयौ । पग टोडर कदल ही जु ठयौ ॥
तब पुज्जन कौ रविवार कह्यौ । चहुआन सु आनल राज दयौ ॥
॥ छं० ५५३ ॥ रू० २८९ ॥

---

२८३ पाठान्तर दुग । मुप । रम । मित । मित । गजन । तु । तुय ॥

२८४-८५पाठान्तर तब । ? । नहीं । तो । २८४ ॥ दै । हथ । पुछिय । रत्तौ । मो तू कैम अरत्ति । २८५ ॥

२८६ पाठान्तर रत । तहि । भूमिन । निहि । जीऊ । जिऊ । कि । मरौं । पें । रत्तौ ॥

२८७-८८ पाठान्तर - जा । दिन । मुहि । मुझै । ममि । कैं । हौं । कैं । हूं । हौं । छत्र ॥ २८७ ॥ प्रमित । हौं । २८८ ॥

२८९ पाठान्तर -प्रसंन्नह । धरत । कीयौ । मांनस । करै । हथ । अपमांन । कूं । पूजन । कौं । चहुआन । चाहुवान । आंनल ॥

ढूंढा का नेम ऋषि के उपदेश से गंगा की ओर जाते हुए दिल्ली पहुँचना

पद्धरी- नव द्वार रुक्कि तन पवन जोर ।.आयौ सु नेम रिष तथ्थ ठौर ।।
दिषि रिष्ष लग्गि निसचर सु पाय । कहि रिष्ष कवन तो काय।।छं०५५५।।
बीसल्लह राज कथि पुब्ब कथ्थ । जरौ ताप उधर्गौ केम नथ्थ ।।
तुअ षित्रि कौन इह ठांउ धारि । कामी सु जाइ लै तिथ्थ धार।।छं०५५६।।
तें पाप कीन आनन्न मर्म । तिहि ठौर म्बब्ब छुट्टै सु कर्म ।।
मुनि श्रवन उड्यौ रापिस अकाम । आयौ सुपंथ क्रमि दिल्ली वास।।छं०५५७।।
सुर थान निगम बोधह सुरंग । जल जमन आइ रापिस स्रमंग ।।
कालिन्द्र दह सु अति गहर वारि । पावन्न परम सीतल सु चारि ।।
।। छं० ५५८ ।। रू० २९१ ।।

ढूंढा का हारिफ ऋषि से मिलना, अपनी पूर्व कथा कहना और तीन सौ अस्सी वर्ष महातप करके ऋषि उपदेश ग्रहण करना

कवित्त सीतल वारि सु चंग । तहां गय चल्लि निसाचर ।।
लगि पिपास स्रम अंग । वारि पिन्नौ अंदोल्लि वर ।।
भो सीतल सब अंग । करै अति वारि विहारह ।।
रिष हारिफ गुह वगै । सोर मुनि आय निहारह ।।
दिषि प्रबल रिष्षि पूछ्यौ प्रसन । कवन रूप कीलै सु जल ।।
निसि मद्धि अद्ध रापिस वचहि । पाइ परम पुब्बह सकल ।।
।। छं० ५५९ ।। रू० २९२ ।।

दूहा— ढिग जुग्गिनिपुर सरित तट । अचवन उदक सु आय ।।
तह इक तापस तप तपत । बीली ब्रह्म लगाय ।।
।। छं० ५६० ।। रू० २९३ ।।

---

२९० पाठान्तर दीयो । आनल्हु । कीय ।।

२९१ पाठान्तर नेम । तथ । नथ । ठार । रिष । लग्गि । पाइ । रिषि । बीसलह कथ कथि राज कथ । जोगे । उद्धरौ । नथ । तुव । कोन । इहि । ठाउ । जाउं । त्यौ । तिथ । आनंत । आनत । अध्रम्म । तिहि । ठोरि । सब । ति । क्रम्म । उड्यो । दिलि । सुर सुर । थान । आय । रापिश्रमंग कालिंद । पावन । परंम । सू सारि ।।

२९२ पाठान्तर -तिहां । चलि सु निसाचर । श्रम । पीनो । अंदोलि । रुज । सब्ब । देह । करै । रिषि । पुछयौ । क्रीलौ । मद्ध । चवहि । पाय परसि गध अप्प सकल ।।

२९३ पाठान्तर— तहां । आइ । लगाई । लगाइ ।।

कवित्त   ताली षुल्लिय ब्रह्म । दिष्षि इक अमुर अदभ्भुत ॥
दिघ्घ देह चष सीस । मुष्ष करुना जम जप्पत ॥
तिन रिषि पूछिय ताहि । कवन कारन इत अगम ॥
कवन थान तुम नाम । कवन दिमि करिब सु जंगम ॥
मो नाम ढुंढ बीमल न्रपति । साप देह लभ्भिय दयत ॥
छुट्टन सु तेह गंगा दरम । तजन देह जन मंत कृत ॥
॥ छं० ५६१ ॥ रू० २९४ ॥

दूहा तजन देह जन मंत कृत । सजन अजैपुर राज ॥
नियं तन अमि वर षंडि हौ । मधि गंगा रिषराज ॥
॥ छं० ५६२ ॥ रू० २९५ ॥

तन सु पाप तापह तपन । किम उधार मो होइ ॥
तुम रिषिराज वचिष्ट वर । द्यौ उपदेसह मोइ ॥
॥ छं० ५६३ ॥ रू० २९६ ॥

तव मुनि वर हसि यो कहिय । विन तप लहिय न राज ॥
अन धन सुन दारा मुदित । लहौ सबै सुष साज ॥
॥ छं० ५६४ ॥ रू० २९७ ॥

तव सु तहा उपदेस लिय । लगि धारन हरि ध्यान ॥
तपन तप्प तिन रिषि गुहा । अंग उपज्यौ ग्यान ॥
॥ छं० ५६५ ॥ रू० २९८ ॥

रिष सु उठि तीरथ गयौ । दरी सु दानव छंडि ॥
जौ लौ जाऊ निथ्थ करि । तौ लौ तू तप मंडि ॥
॥ छं० ५६६ ॥ रू० २९९ ॥

गाथा —तपन निसाचर तप्पं । वीते बरस तीन सै असीयं ॥
भय वाधा विण अंगं । लग्गौ राम धारना ध्यान ॥
॥ छं० ५६७ ॥ रू० ३०० ॥

---

२९४ पाठान्तर षोल्लिय । ब्रह्म । दिषि । अद्भुत । दिग्घ । चषु । रस जंपत । पुछिग । थान । नाम । करीय । नांम । नृपति । श्राप । लभीय दइत । तजन । क्रन ॥

२९५-९६ पाठान्तर -क्रन । हो । हों ॥ २९५ ॥ मोहि । मोइ ॥ २९६ ॥ यो । लहों । मवै ॥ २९७ ॥ उहा ध्यान । तप तपै । अंग अग उपज्यो ग्यांन । अंग उपज्या ग्यांन ॥ २९८ ॥ ऊठि । दांनव । लों । अऊं । निष तू ॥ ॥

३०० पाठान्तर -पनिचर । नाा । में । भो । वादक मत्र अग । लग्गो । ध्यान ॥

दूहा - ढुंढा रिषि उपदेस लिय । तिहि ढिग दरिय उधोर ॥
वरष तीन सत असिअ लगि । महा प्रबल तप घोर ॥
॥ छं० ५६८ ॥ रू० ३०१ ॥

अनंगपाल राजा का दिल्ली बसाना

दूहा पंडव बंस अनंग न्रप । पति हथिनापुर ठाम ॥
एक समै जमुना तटह । वसिय राज तहं गाम ॥
॥ छं० ५६९ ॥ रू० ३०२ ॥

अनंग पाल तूंअर तहां । दिल्ली वसाई आनि ॥
राज प्रजा नर नारि सब । बसे सकल मन मानि ॥
॥ छं० ५७० ॥ रू० ३०३ ॥

अनंगपाल की सुता का निगमबोध कालिंदी तट पर गौरी पूजने जाना

कवित्त अनंग पाल तुंअर । नरिंद धम्माधि राइ गुर ॥
सुता नाम अति सुभग । वरष अट्ठह सरूप वर ॥
सषी सु आनि समानि । सील गुन वर अट्ठह तर ॥
सावन भावन मास । गवरि नित करै पुज्ज उर ॥
निगम-बोध कालिंदि तट । गई सकल पुजन कुवरि ॥
तिहि काल मेघ अपघट प्रबल । * भई लगि भीजन कुँअरि ॥
॥ छं० ५७१ ॥ रू० ३०४ ॥

अनंगपाल की सुता का ढूंढा को पूजना और उसका कारण पूछना

कवित्त अनगपाल नृप सुता । संग सुखी दि पंच तिन ॥
प्रोहित पुत्री एक । पुत्रि सा चंदि सेन तिन ॥
सब मिलि जमुना तीर । गई अस्नान सवारिय ॥
दिषि देवल ध्रुन सिद्ध । तेह ढुंढा सम धारिय ॥
सब मिलि गृह लागि पुज्जा करिय । जगत पंच दुख मास दिन ॥
दिन अवधि दहन पुच्छिय तिनह । को तुम कारन काम तिन ॥
॥ छं० ५७२ ॥ रू० ३०५ ॥

---

३०१ पाठान्तर [illegible]

३०२-३ पाठान्तर ठाम । जमुना । तहां । गाम । तोअर । दिल्लि आनि । प्रज । बसे सकल नर आनि । मानि ॥

* भई लगि भीजन = यह प्राचीन हिन्दी का वाग्रीति अर्थात् मुहावरा है ।

३०४ पाठान्तर - तूवर । राय । अठह । सषी आनि समांग । आनि । समांनि । सीत । अठोतर । सावन । स पुज वर । निगमोध । कालिंदि । गइ । वरषि । लगि भीजन । कुवरि ॥

अनंगपाल की सुता का ढूंढा को वर चाहने को पूजने का कहना

गाहा इह सुनि अनग नरिंद । पुत्री सित पंच अवर दुज राज ॥
बर चाहन तुम पास । ए वर बीर वास इक ठाम ॥
॥ छं० ५७३ ॥ रू० ३०६ ॥

ढूंढा का राज-त्रियों की सेवा से संतुष्ट होना

दूहा दिल्ली ढिग गहरिय गुफा । ढुंढा तहां बयट्ठ ॥
अठ्ठोत्तर सौ राज त्रिय । सेवा करत सु तुट्ठ । छं० ५७४ ॥ रू०३०७॥

ढूंढ़ा का वर देकर काशी को उड़ जाना

पद्धरी दिय बाच बाल दानव सु राज । गज्ज्यौ सु अप्प नर बचन साज ॥
उडि चल्यौ अप्प कासी समग्ग । आयौ सु गंग तट कज्ज जग्ग ॥ ५७५॥
सत अट्ठ षड करि अग अग्नि । होमे सु अप्प वर मद्धि हग्नि ॥
मग्यो सु ईस पहि वर पसाय । मन अद्ध पु [illegible] अवतरन काय ॥ ५७६ ॥
तन रह्यो जोति मय देव थान । मिल्हि ताहि अछ्छरिय करत गान ॥
॥ छं० ५७७ ॥ रू० ३०८ ॥

ढूंढा का फिर जन्म लेना और उसका वृत्तान्त चंद का वर्णन करना

दूहा उस आतम उद्धार हरि । जनम लियो [illegible] ।
सो [illegible] कवि चंद [illegible] । बरन्यो कवित बना [illegible] ॥ [illegible] ॥ रू० ३०९॥

ढूंढा का वर देना और काशी में यज्ञ [illegible]

दूहा [illegible] वर दान दिय । सुनि [illegible] ॥
कासी [illegible] जग्य किय । [illegible] ॥ छं० ५७९ ॥ रू० ३१० ॥

ढूंढा के दानव शरीर का मान और स्वरूप वर्णन

कवित्त अगह मान प्रमान । पत्र मै [illegible] उने कह ॥
[illegible] उची उनमान । विनय उर्द्धलिनह [illegible] ॥

---

३०५ पाठान्तर [illegible] पुत्री सु [illegible] । [illegible] । [illegible] ।
ता सइ । भाइ । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । वागीय । पूजा ।
करीय । दय । देन । पुज्यो । [illegible] ॥

३०६ पाठान्तर —अगग । पुत्री [illegible] । [illegible] वास ॥

३०७ पाठान्तर —[illegible] । गुफा । ढुंढा । बयठ । अठोत्तर । [illegible] । तुठ ॥

३०८ पाठान्तर —दीय । दानव [illegible] । स । [illegible] । [illegible] । [illegible] सग समग ।
कज जग । अठ अग्नि । स । मधि । हग्नि । [illegible] । स । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।
अठ । अवतार । काइ । ज्योति । थान । अछ्छरीय । [illegible] ॥

३०९-१० पाठान्तर —उधार लीया । भूअ । आइ । वृतान । बरनें ।
बरन्यौ सकल बनाय ॥ ३०९ ॥ ढूंढ़ै । बरदान । अठ । कीय । सत्त । कीय ॥३१०॥

हथ्थ षडग विकराल । मुष्य ज्वालंघन मद्दह ।।
आनल दिन्नो राज । गयो राषिम तन मद्दह ।।
जोगिनिय गुफा बोधह निगम । तप आदर किन्नो सु तन ।।
साधत पवन तप उग्र करि । इम गयौ उद्दार मन ।।

।। छ० ५८० ।। रू० ३११ ।।

ढूंढा का दिल्ली में पाषाण रूप हो जाना और स्त्रियों का उसे पूजना

कवित्त अमी बरस मन तीन । गुफा किन्नौ तप भाग्यि ।।
वैस वंस पित्रिअ ध्रम । भरै जमुना जल नाग्यि ।।
सारंग वज्ज्यौ वाउ । घटा बंध जल वुट्ठौ ।।
दौरी सब गृह मज्झ । रूप पाषान सु दिट्ठौ ।।
मिलि नारि सवन अचरिज्ज करि । जल धोए उज्जल कर्यौ ।।
गावंत नारि दीपह चरित्त । तिन मन सिद्धौ आचर्यौ ।।

।। छ० ५८१ ।। रू० ३१२ ।।

ढूंढा का अनंगपाल की सुता को वीर पुत्र होने का वर देना

कवित्त दिय वीसल वरदान । कुष्य उपजे नाग भर ।।
वीरग रस उतान । मृत नहि न लोर नर ।।
वीर जोति अवतार । भद्र जिह्वा तन भारिय ।।
नयन जोति संजोगि । पत्ति कुल तिन संघारिय ।।
दिषय सु नयन मृत नारि प्रसिद्ध । कियौ पार तन छ्रव करि ।।
उप्पजै नारि अति रूप तिन । तेन लिप्त जायै सुधर ।।

।। छं० ५८२ ।। रू० ३१३ ।।

---

३११ पाठान्तर रहित । मान । प्रमान । । तन । । हथ । मुष । आनल । दीनों । जो गिनी । कीनों । पवन । गयौ ।।

३१२ पाठान्तर अशी । बरष । शन । कीनौ । भागीय । पनी अध्रम । षित्रीय । अध्रम । पित्रिग अध्रम । भरे । जमना । भारीय । नारीय । सारंग । बज्यो । बज्या । वाय । बन्ने । वुठो । दोरो । मझ । गुद्धिठो । दीठो । अरिज । धोय । उजल । तन मनि सुधि आवर्यो । तन मन सुधि आचर्यौ ।

३१३ पाठान्तर –दीय । वीसल । वरदानि । कुष । कुष्य । उपजे । महा । रश । उतांन । ज्योति ।। जीट्का । भारीय । पति । संघारिय । संघारीय । देषे । प्रसिद्ध । कीयौ । द्रूब । उपजजी नारी । उपनी । तेल लिन जाइ सुधिर । तेन लित जासै सुधर ।। *

ढूंढा का वर देकर काशी जाना, वहां दानव-योनि से मुक्त हो अवतार लेना-सोमेसर के परिग्रह के प्रबंध के लिये क्षत्रियों का उत्पन्न होना-जिनमें से बीस अजमेर में और अन्य अन्यत्र हुए-सोमेस के पुत्र पृथ्वीराज हुए

कवित्त बर दिनो ढूढा नरिन्द। जाय कासी तट सिद्धो॥
अस्त लियो अवतार। भट्ट रसना रस पिद्धो॥
सोमेसर परिगह। प्रबंध सित उपने षित्रि नर॥
हुए बीस अजमेर। विए उप्पने अवर धर॥
सोमेस बीर सुत पिथ्थ हुअ। ठौर ठौर ऊपजि वलिय॥
विधि विधि विनान अवलोक गति। अवर सूर आए मिलिय॥
॥ छं० ५८३ ॥ रू० ३१४ ॥

पृथ्वीराजजी के परिग्रह के सामंतों के नाम और जन्म स्थानादि का वर्णन

कवित्त-हुअ निझ्झर कनवज्ज। जैत मलष अबूगढ॥
मंडोवर परिहार। करषि कंगुर हाहुलि दिढ॥
बलि भद्र सु नागौर। चंद उप्पजि लाहौरह॥
दिल्लिय अन्ना नाड। त्रिया धर गामन [illegible]॥

---

३१४ पाठान्तर दीना। दीनो। सिधा। सिधो। [illegible] रसा। सोमसर। परिग्रह। त्रित। सन। उपन। षित्र। [illegible] बीस। उपने। अवर। पिथ। उपजि। विनान। आय मिलिय।

* पाठकों को इस स्थल को फिर सावधान होकर पढ़ना चाहिये [illegible] कवि इस स्थल में पृथ्वीराजजी के [illegible] की भूमिका [illegible] वर्णन करता है॥

३१५ पाठान्तर निझर। निझर। [illegible] उपजि। अना नाय। [illegible] आठ। गढ। [illegible] प्रिथीराज। परिग्रह॥

इस [illegible] में कवि ने पृथ्वीराजजी के सामन्तों के नाम और उनकी उत्पत्ति के स्थानादि का वर्णन करना प्रारम्भ किया है। यह विषय पुरातत्ववेत्ताओं के ऐतिहासिक शोधों में बहुत उपयोगी होने जैसा है, किन्तु इस ग्रन्थ के अकृत्रिम होने में भी एक प्रमाण रूप हो सकता है और यह भी भले प्रकार ध्यान में [illegible] जैसी बात है कि यहाँ चंद अपनी उत्पत्ति लाहौर की अर्थात् "चंद्र उप्पजि लाहौरह" कहता है। इस महाकाव्य में बहुत से पंजाबी भाषा के शब्द मिलने से पुरातत्व-वेत्ता विद्वान चंद की जन्मभूमि के विषय में पंजाब देश का अनुमान किया करते थे और

राम दे राव जालौर धर । गोईद गढ्ढ धामनि ग्रगै ॥
दाहिम्म बयानै उप्पनौ । प्रिथिराज परिघह वसै ॥
॥ छं० ५८४ ॥ रू० ३१५ ॥

पंजाबी अति वृद्ध गृहस्थ भी अपने देश के महाकवि चंद का नाम वंशपरंपरा से आज तक सुनते चले आते हैं परंतु अब हमको इस बात का निश्चय हो गया और पंजाब देश हिन्दी भाषा के काव्यों की अनुक्रमणिका में पहिली संख्या पर जा स्थापित हुआ क्योंकि अब तक इस महाकाव्य से प्राचीन कोई अन्य काव्य नहीं उपलब्ध हुआ है। कोई कोई विद्वान जो यह कहते हैं कि चंद कवि का होना केवल इसी महाकाव्य से विदित होता है, उनका अजमेर नगर के कैसरगंज में चांद बावड़ी अपने नेत्रों से देखनी चाहिये और चंद के पुरुषाओं का बनाया हुआ भाटाबाव भी उसी नगर में तारागढ़ को जाते हुए दृष्टि गोचर करना उचित है जो अजमेर के भाटो के कबजे से निकलकर बहुत समय तक टोंक के नव्वाब साहब के अधिकार में रह हैं। फिर उन्होंने एक मोची को चांद बावड़ी दे दी थी। अब म्युनिसीपैल कमैटी ने उस की चारो ओर की दीवार बना दी है और इस बावडी के चारों ओर एक बागीचा भी था जिसका हांसल कुछ थोड़े दिनों तक म्यूनिसीपैलीटी में जमा होता रहा है और अब वह बागीचा काटकर वहां बस्ती बसा दी गई है। चांद बावड़ी में नीचे उतरने दाहिने हाथ की दीवार में प्रशस्ति का स्थान बना है जिसके पाषाण लेख को एक ८३ वर्ष का मुसल्मान फकीर कर्नेल टाड साहब का ले जाना कहता है। इसके महाबरदान द्वार के दोनों ओर एक एक पत्थर के फूल खुदे हुए है कि जिसको अंग्रेजी मे lotus अर्थात् कमल की जाति का फूल कहते हैं। यह फूल शिल्पशास्त्र के सिद्धान्तों में विज्ञ विद्वानों को बावडी की अति प्राचीनता सूचन करने वाला दृष्टि आवेगा। चंद के विषय मे कुछ और भी प्रमाण हमारी रचित पृथ्वीराज रासे की प्रथम संरक्षा मे पाठक देख लें। इस महाकाव्य मे प्रायः फारसी शब्द भी प्रयुक्त हुए है। उनके विषय में हमने अन्यत्र कई एक प्रमाण प्रकाशित किये है, परंतु यह भी विशेष करके हमारे पाठकों के ध्यान मे रहने जैसी बात है कि चंद जिस समय लाहौर मे उत्पन्न हुआ था उसके १०० वर्ष पहिले से वहां महमूदी सन्तान का राज्य था। फिर क्या कोई यह अनुमान कर सकता है कि उस समय की हिंदी मे एक फारसी भाषा का शब्द नही मिल सकता था ! इन रूपको में जिन जिन सामंतों के नाम आये है उनका पूरा पूरा वर्णन हम ग्रंथ के पूरे छप जाने पर लिखेंगे क्योंकि अभी हमारा काम केवल मूल पाठ शोधकर प्रकाशित करने का है ॥

पद्धरी — उतपत्ति वास सामंत चंद। पाधरी छंद ब्रन्नँ सु बंद ॥
दस तीन हुए दिल्ली प्रमान। हरिसिं- बसै गढ्ढह बयान ॥छं० ५८५ ॥
जैसलहमेर अचलेस भान। पज्जून वसै चँतोर थान ॥
कलि कुंड हुऔ जंघार भीम। चहुआन आन रप्षैत सीम ॥छं० ५८६ ॥
बड भ्रात छोरि लग्गो सु पाइ। चहुवान सु वर सामंत राइ ॥
समियांन गढ्ढ नरसिंघ राइ। पित मात छोरि आए सु भाइ ॥छं०५८७॥
देवरा धीर रिनधीर सथ्थ। पछिवान देस प्रिथिराज तथ्थ ॥
जंघार भीम गढ जून वास। किन्नो सु जुद्ध भीमंग आस ॥छं० ५८८ ॥
लग्गौ सु लोह लिन्नौ दिलेस। सारंग राइ मोरी नरेस ॥
बारडह राइ सहमौ करन्न। असिर वसै गढ आसमन्न ॥छं० ५८९ ॥
जुध करैं जित्त कन्हाति राइ। चहुआन सूर उप्पारि घाइ ॥
सेवक्क कीन अप्पै सु जोर। तेजल्ल डोड वासी जुनोर ॥ छं० ५९० ॥
कैमास गढ्ढि बलवन वीर। लग्गो सु साइ चहुआन धीर ॥
तारन्न सूर भटनेर वास। प्रिथिराज पाइ कीनी सु आस ॥ छं० ५९१ ॥
भौहा चदेल गजनीय सेव। लग्गो सु घाव झ ंत तेव ॥
उप्पारि लियौ सामंत राव। कीनी सु सेव अप्पह सु भाव ॥छं० ५९२ ॥
अमरी चदेल मार्यौ सकज्ज। भौ हा चदेल दीनो सरज्ज ॥
पानीय पथ उत्तन्न देस। दीनौ सु फेरि दिल्ली नरेस ॥ छं० ५९३ ॥
कनवज्ज राइ झुझंत नाम। रप्यौ सु अप्प व लि जुग्ग नाम ॥
चालुक्क पाट भोरा भुअंग। रप्यै सु कचरा पि थ रग ॥छं० ५९४ ॥

---

३१६ पाठान्तर -उतपति। उतपान। वास। बरनैंति। चद बरनैंति। बंध। दस। हूए। प्रमान। गढह। बयान। जेसलह। जेसल्लह। भान। पाजुन पूजन। वसै। थांन। कुंड। हूवे। हुओ। चहुआन। आंन। रपेनि। आनर रषैनि। भ्रान्ट। लग्गा। सू। पाय। चहुवा न राई राय। समीयांन। गढ। राय। छारि। भाय। निरधीर। रनधीर। पछिवान। देश। प्रिथीराज। पृथीराज। तथ। जूंन। वाश। कीनो। सु लिन्मो। दिलेश। राय। नरेश। राय। सह। मो। करंन। आसमंन। करे। जित। कन्हानराय। चहुंवान। उपार। उप्पार। सेवक। क्कीन। अपै। ते जल। जुनोर। गढ्ढ। लग्गा। पाय। चहुंवान। चहुंवान। तरंन। वाश। प्रिथीराज। पाय। सू। भोहा। भौंहा। गनीय। बूंदी राज्य के पुस्तकालय की पुस्तक लिखी सं० १९५४ मे लग्गो तेव के स्थान में "इम अप्प अप्पह सु भेव" करके पाठ है। और छंद ५९१ पिछली तुक उसमें है ही नहीं। लग्गा। झुझंत। उपारि। लीयो। किन्नी। चंदेल। सकज। भोहा। भौंहा। चंदल। सूरज। सुरज्ज। पांनीय। उतन। उतंन। देश। सू। नरेश। कनवज राज झुझंत तांम। जुग। फर्ग। नांम। चालूक्क।

जावलो जल्ह दष्षिनी देस। प्रिथिराज राइ किन्नौ प्रवेस ॥
सतनंज नगर दीनौ उतन्न। पूरन्न माल प्रिथिराज तन्न ॥छं० ५९५॥
सूरत्ति वाम चहुआन राइ। कढयौ मु भ्रात रष्यौ मु दाइ ॥
बडगुज्जरहराम अल्ली नरेस। दिन प्रत्ति पनि भंजे सदेस ॥छं० ५९६॥
मुक्कले दूत प्रिथिराज तथ्थ। सेवा मु पाइ उप्पर जु हथ्थ ॥
प्रिथिराज ताहि दो देस दिद्ध। मारुत्त षांन अल्ली प्रसिद्ध ॥छं० ५९७॥
करि वास तब्ब गुज्जर निसंक। मार्यौ षांन आलील बंक ॥
हड्डा हमीर नैन वारिद्ध। लगे सु पाइ दइ देस दिद्ध ॥छं० ५९८॥
षेता षंगार है भ्रात राइ। परयौ दु काल देस सु भाइ ॥
दिल्लीय देस गुड्डा सु मंडि। रष्षै सु वास भट सुभट छंडि ॥छं०५९९॥
परमार कनक जैचंद वास। किन्नौ सु पत्त इक पात्रि दास ॥
लिय पात्र ग्रह्यौ प्रिथिराज देस। लग्यौ सु पाइ आयौ नरेस ॥छं०६००॥
सापुली सहसमल्ल मान पष्प। नष करत अनंगह गयौ रष्प ॥
लग्यौ सु पाइ प्रिथीराज आइ। दीनौ सु देस षटूय माइ ॥छं०६०१॥
अवतार लियो दिल्ली नरेस। तब हुए सत्त सामंत भेस ॥
॥ छं० ६०२ ॥ रू० ३१६ ॥

कवित्त ॥ ढुंढा नाम दानव उतंग। दियो फल अव विसाल ॥
बंदि लंन नृप राज। आप फिर गेह सु चाल ॥
सत्त भाग छह अग्ग। बटि दिय भ्रत्त समानं ॥
तिनह सूर सामंत। किन्नि रष्षन चहुवान ॥
रजमेल चंद फल अमिय प्रथु। सबर साहि मोषन सु गहु ॥
इक्कदस समंत पंचह समै *। भए थान पंचम सु पहु ॥
॥ छं० ६०३ ॥ रू० ३१७ ॥

रष्प। पिथ। रष्यै सुकचरापिथ रग। जावल्ले जल्ह दिषिनीय। देश। दषनीय। प्रिथीराज। राय। कीनो। दिनन्नौ। उतंन। पूरन माल। प्रथीराज। तंन। पूरति। भ्रात। बडगुज्जर रांय। अली। नरेश। सुदेश। मुकले। पृथीराज। तव। पाय। सु। प्रिथीराज। देश। दिध। अली। प्रसीद्ध। तब। गुजर। मारीयो। हाडा। हामा। दमीर। नेन। लगे। पाय। षेतल षंगर। परियौ। देसां। भय। बिलिय। दलीय। देश। गूढा। भट्ट। जैंद। पात्रदास ग्रहौ। प्रथीराज। देश। आये। मानि। पषि। करित। रिषि। प्रथीराज। आय। कीनौ। षठूच। लीयौ। दिली। सित्त ॥

३१७ पाठान्तर—ढुंढु (नाम * विशेष है) उतग। विसालं। गेहे। बालं। अग्र। भृत। समांन। चहुंवांन। अति प्रथम। अमिय प्रकाल। सगह। इक। सवंत। सवत्र संवत ॥

आना राजा का उजड़ी हुई अजमेर को फिर बसाकर राज करना

दूहा—अनल आनि मातह मिल्यौ। कहि सब बत्त सुनाइ ॥
लोग महाजन संग लै। भूमि बसाई जाइ ॥
॥ छं० ६०४ ॥ रू० ३१८ ॥

पद्धरी—आना नरिंद अजमेर वास। संभरीय कीन सोव्रन्न रास ॥
नियनाम कह्या आना नरिंद। अरि धरनि बीर मंड्यौ सु दंद॥छं०६०५॥
ग्रामान ग्राम तोरन उतंग। बन बद्दि्ढ कद्दि्ढ निधि निधि पुरंग ॥
पसु पंषि सद श्रुत मंडलेस। जल न्हान दान ब्रह्मन सु देस ॥छं०६०६॥
हारम्य रम्य फिरि मंडि लोइ। दाबिद्र दीन दोसै न कोइ ॥
चौघट्टि*सत्त बरष प्रमान। आना नरिंद तपि चाहुवान ॥छं०६०७॥

जैसिंह जी का गद्दी पर विराज राज करना

षग ध्रम्म देस दिय पुत्र हथ्थ। जैसिंघदेव तपि राज तथ्थ ॥
छिति छत्र सीस जैसिंघदेव। निधि लई बीर बीसल पनेव ॥छं० ६०८॥
बिंटु लीय बीर आना नरिंद। बीसल तडाग मधि द्रव्य कंद ॥
पायौ न बीर तिन द्रव्य छेह। कंचनह काम मंडाय गेह ॥छं० ६०९॥
सब द्रव्य दीन तिन विप्र हस्त। भंडार धरिय धन ध्रम्म वस्त ॥
श्रुति सुनहि श्रवन जंपत पुरान। माधरम करम चल्लि चाहुवान॥छं० ६१०॥
कलि नीनि गरुअ गहि मुक्कि। कुल रीनि चित्त रचक न चुक्कि ॥
सों बरस अट्ठ तप राज कीन। आनद मेव सिर छत्र दीन ॥छं०६११॥

आनन्दमेवजी का राज करना

तहां तप्पि तेज आनन्द मेव। बराह रूप दिष्यौ सु देव ॥
धरनी विहार आयास माद। मंड्यौ सु राज पहुकर प्रसाद ॥छं०६१२।
सो*वरष राज तप अंत कीन। सिर छत्र सोम पुत्रह सु दीन ॥

सोमेश्वरजी का सिंहासन पर विराज राज करना ॥

सोमेस सूर गुज्जर नरेम। मालवी राज सब पग्ग पेम ॥ छं० ६१३॥

---

* यह पाठ हमने सं० १८५९ की पुस्तक का रक्खा है किन्तु सं० १६४३, सं० १७७० और सं० १८४० की प्रति मे "इक दम सवत पंचह समै" है। इनमें से जिसको विद्वान ठीक समझें उसे ग्रहण करे ॥

३१८ पाठान्तर अनिल। अनलि। सुनाय। लोग। बसाईय। बसाइय। जाय।

३१९ पाठान्तर—आना। नरिंद। नरद। संभरीय। सोव्रन। रासि। नाम। आनां। मंड्यौ तोरन। बद्दि। कद्दि पुरंगं। पष। सदस्तुत। मंडलेस। न्हान। दान। हारंम्य। मंड। लोई। लोय। दारिद्र। दीन दीन। दोसे। कोई। चौ घट्टी। सत। प्रमांन। नरिंदं। चहुंवांन। ध्रम हथ। हथ्थ। तथ। छत्रसीस।

मारू बजाइ भट्टीन थान । घन भोमि लई बल चाहुवान ॥
दिल्लेस ब्याह तोंवर घरेम । निह ग्रभ्भ भयो पीथल नरेम ॥छं०६१४॥
आनन्द राज नंदन सु सोम । मोरिया दलनि तिन कियौ होस ॥
निय पुर सु नयर सुर लगि धोम । आनन्द केलि अजमेर भोम ॥
॥ छं० ६१५ ॥ रू० ३१९ ॥

सोमेश्वर जी की शूरता का संक्षिप्त वर्णन

कवित्त जिहि सोमेसर सूर । सूर जित्त पुरमानी ॥
जिहि सोमेसर सूर । चढ़िवि गुज्जर धर भानी ॥
जिहि सोमेसर सूर । लियौ नाहर परिहारिय ॥
बल उप्पम कवि चंद । चंद राहा जिम मारिय ॥
बर वीर धीर धारह धनी । संभरि बैरिन भंजयो ॥
इक दौरि गौर राजौर वह । पां बड गुज्जर गंजयो ॥
॥ छं० ६१६ ॥ रू० ३२०॥

जैमिह । निय । वीर मठ । पनैय । वंदुणीय । विटणीय । नरिंद छैह । देह । काम । येह । गेह । दिन । भंडारि । धरन गुनहि । जपन । पुरांन । चाहुवांन । गरुव । गरुव मुकि । ऊगि । गीन । चिन । रचक । चुकि सो । अठ । तिहां । नगि । रूप । देख्यो । नह । प्रगट । सो । सोम । सोमेस । श्रूर। गुजर । घग । थैम । मारू । बजाय । भट्टी । थान । लइ । बल । चाहुवान । दिलेस । दिल्लेस । तुंवर । घरेश । गर्भ । ग्रभ । पिथल । पीथ्थल । नरेश । मोरीया । दल । दलह । कीयो । नेर । लगि । कल ॥

* चौघट्टि सत्त-इसके विरुद्ध कोई दूसरा पाठ हमारे पास की पुस्तकों में नहीं मिलता किन्तु कोई कोई वृद्ध कवि चौसट्टि सत्त करके मूल में पाठ होना कहते है और उससे ६४+७=७१ वर्ष की संख्या निकालते हैं और कोई १०० वर्ष और चार घड़ा और कोई ७ वर्ष और चार घड़ी का वाचक पाठ कहते हैं किन्तु ऐसे सब स्थल पक्षपातरहित विद्वानों के सूक्ष्म विचार करने योग्य हैं ।

* इस सो शब्द का पाठ किसी किसी पुस्तक में सौ भी है जिससे वर्ष की संख्या के समझने में बड़ी गड़बड हो जाती है । यह स्थल भी विद्वानों की बुद्धि को श्रम कर देने जैसा है । यदि कोई शुद्ध अंतःकरण से पूर्वापर का लेखा लगा देखेगा तो वह चंद कवि की संवत संबंधी कठिनता को जानकर बहुत प्रसन्न होगा ॥

३२० पाठान्तर—जिहिं । सोमेस्पर । जिने । पुरसांनी । चढै । चढे । भांनी । भांती । लीयो । परिहारि । परिहारीय । बलि । उपम । राहां । सारी । मारीय । बैरन । दोरि । राजोर । बर । पां । मड । गुजर । गूजर । गजयौ ॥

दिल्ली के राजा अनंगपाल जी पर कमधज्ज का चढ़ना

कवित्त – ढिल्लीवै आनंग । राज राजंग अभगं ॥
ता उप्पर कमधज्ज । सेन मज्जी चतुरग ॥
अग आतस आभूत । पुट्ठि बंधे गज पत्त ॥
ता पुट्टै विजपाल* । सुभर सज्जै रन मत्त ॥
धजनेज मोज नीसान ढल । मनु बसत रज्जिय विपन ॥
करि कूच कूच उप्पर धरा । बेध अतर सपन ॥
॥ छ० ६१७ ॥ रू० ३२१ ॥

कमधज्ज की चढ़ाई सुन अनंग का कालिंदी उत्तर मुकाम करना

कवित्त मुनी बत्त आनग । अग लग्गो रम बीरह ॥
भ्रकुटि वक्र रत द्रिग्ग । चित्त जुध रत्त सरीरह ॥
बोलि भ्रित्त अप्पान । कहिय सू बान मत गुन ॥
चढत राइ दिल्लेस । करिय नीसान बीर धुन ॥
गज बाजि रथ्थ पइ भर गहर । सजिय सेन सनमुष चलिय ॥
उत्तरि कलिंद्रि मुक्काम किय । दस दिसान बत्ती सलिय ॥
॥ छ० ६१८ ॥ रू० ३२२ ॥

कमधज्ज की चढ़ाई सुन सोमेस का अनंग की सहायता को दिल्ली जाना और वहां पहुँच अनंगपालजी से एकान्त में मंत्रणा करना

पद्धरी मंभरिय बत्त मंभरि नरेस । आभासि भ्रित्त अप्पा असेस ॥
कमधज्ज राज तोवर नरिंद । मत्तो सु दुनै आवद्ध दद ॥छ०६१९॥

---

* स्मरण मे रखने की बात है कि साम्प्रत शोधो के अनुसार भी कन्नौज के राजा विज पाल जी, दिल्ली के राजा अनगपालजी और अजमेर के राजा सोमेश्वर जी परस्पर समकालीन थे ॥

३२१ पाठान्तर—ढिली । ढिल्लावै । राजग । अभगम । कनवज । सजा । चत्रुरंगम । अंग । अग्र । पुठि । पुठि । बंधे । पंन । पंत । पुठे । पुठि । विजेपाल । सजे । मंतं । मत । नीसान । ढल्ल । मनो । चमन । रजय । विपन । कुच २ । उपरि । धरहि । धरहि । आइ । वेध । सपन ॥

३२२ पाठान्तर -मुनिग । सूनिग । वत । लगो । लग्गे । दश । भृगुटि । चक्र । द्रिग रत । चित । मृत । अप्पान । श्रवान । म बांन । दिलेश । निसांन । धूंनि । रथ । पय । मन मुष । ममुष । उतरि । कलिंद्रि । मुकांम । दश । दशांन । वती । हलीय ॥

* यह छंद सं० १६४७ । १७७० और १८४५ की पुस्तको में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी में है ॥

अप्पन महाय सज्जां सपूर। बैठन्न ग्रेम नह धम्म सूर ॥
करिकैं मु जीति आवें अपान। कै मजें वाम कैलाम थान॥छं०६२०॥
मन्नेव सूर भर मंत वाम। घुम्मरे नद्द नीमान नाम ॥
चढि चल्या मेन मजि चाहुवान। उप्पटे जानि मन मिंधु पान॥छं०६२१॥
अग्गे मु मोभ दिल्ली महाय। अग्गेव विष्ण हर कंठ लाय ॥
अग्गेव मती लक्ष्मी फुनिंद। अग्गेव मग्द निमि उग्गि चंद ॥छं० ६२२॥
अग्गे मु चक्र विभौ गुविंद। अग्गै मु वज्र कर चली इंद ॥
बिहु बाह सूर मज्जे ममंन। बेनै बिग्द बंधे अनंत ॥छं०६२३॥*
अग्गै मुदंति पनिय विम्भर। पल्कंत अद्द मद झग्त भूर ॥
धजनेज चमर बंबर बिनान। मन हू कि पत्र पल्लव क्रिमान॥छं०६२४॥
धमकंत धरनि अहि मिर निहाय। हल हल्लिय द्रिग्ग उद्रिग्ग थाय ॥
पुरधूरि पूरि जुट्टिन भमित्ति। दिमि व दिगि राज पमरंत कित्ति ॥छं०६२५॥

इस छंद की अंत की तुक मे "बेनै बिरद्द बंध अनंत' है जिसका अर्थ यह होता है कि बेन ने अनेक बिरद बांधे अर्थात् कहे। यह बेन कवि इस महा काव्य के रचने वाले चंद का पिता था और यह सोमेश्वरजी के इस समय साथ था। अब तक चंद से पहिले का कोई काव्य किसी भी कवि का किसी के जानने में नहीं है किन्तु हमने जो एक चंद छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक सं० १६२९ मे लिखी शोध की है उसके पीछे मेवाड राज के महाराणाजी श्री उदयसिंहजी के महाराज कुमार श्री भग सिंहजी के पंडित विष्णुदासजी ने अकबर बदशाह के भाट गंगजी से अजमेर में पटोलवाय के मुकाम पर चंद के बाप कवि राव बेन का नीचे लिखा छिप्पय अर्थात् कवित्त लिखा था वह हम प्रकाश करते हैं। छप्पय में बेन ने पृथ्वीराजजी के पिता सोमेश्वरीजी को आसीस दी थी—

छप्पय अटल ठाट महि पाट। अटल तारागढ थान ।
अटल नग्र अजमेर। अटल हिंदव अस्थानं ॥
अटल तेज परताप। अटल लंका गढ डंडिव ॥
अटल आप चहुवान। अटल भूमि जस मंडिव ॥
सभरी भूप सोमेस नृप। अटल छत्र ओपै सु सर।
कवि राव बेन आसीस दैं। अटल जुगा रजेस कर ॥ १ ॥

इसीके साथ उसी पुस्तक मे चंद के नागारवकरणा का कहा हुआ यह नीचे लिखा दोहा भी है—

दोहा—ले कूंजा नृप पीथुला, सांमत चमूं समंद ॥
बेन नंदन कनवज गमन, चंद करन कइ दंद ॥

३२३ पाठान्तर -संभरीय। नरेन्न। अभापि चित आपां। अपा। अशेश। कमधज। राव। तूंवर। नरिंद। दुन्हैं। आवद्द। दुंद। सज्जो। वैवन्न। ग्रेह।

रह षरहि सोम पर चाड कज्जि । मन हू कि दुलह बर व्याह रज्जि ॥
संपत्त जाय दिल्लिय पुरेस । आनंग राज मिल्ल असेस ॥छं०६२६॥
ग्रह बत्त कुसल पूछिय असेत । रस हास पेम बढ्ढे सु हेत ॥
विधि विद्धि भोज भोजंत राय । रुचि सु चित षट रस्स भाइ ॥छं०६२७॥
आहार पान घन सार पूर । बैठे सु आइ एकंत सूर ॥
सब कहिग बिद्धि कमधज दिमान । सुद्धरें बत्त सो करहु पान ॥
॥ छं० ६२८ ॥ रू० ३२३ ॥

अनंग की बात सुन सोमेस का रोस में आकर लड़ने को तैयार होना

कवित्त सुनिय वत्त जपि सोम । रोम उब्भार झार अमि ॥
रमन दमन दब्बंत । रत्त द्रिग जुच्छ हृथ्य कमि ॥
इह कमंध आमंध । राज मम जंग विचारिय ॥
सजौ सेन अप्पनी । भिरौ भंजौ अरि भारिय ॥
चहुआन राय आनन्द सुअ । अति उमाह भारथ मनह ॥
अह मग्ग लग्गि झंपौ दलह । बात चक्र मानहु तिनह ॥
॥ छं० ६२९ ॥ रू० ३२४ ॥

दोनों राजाओं का डेरों पर जाना और पिछला रात को युद्धारंभ होना ।

दूहा इह परिट्ठि * राजन उठे । गय अप्पाने ठाव ॥
निसा जाम रहि पाछली । भयौ निसान निघाव ॥
॥ छं० ६३० ॥ रू० ३२५ ॥

धम । कैमग जोन आना नरिंद । आनिग । अपान । थान । कै मजे थान कैलास इंद । मनेव । मंन्नैव मंन भर सूर ठाम । घघुमरेद्व नीसान ताम । मनेव । घुमरे । चाहुवान । उठे । जानि । सिधु । पानि । पानि । अग्गै अग्गे । अग्रै । अगेंव । अंगेव । अग्रंव । विप । लाइ । अगेंव । अग्रेव । अगैव । मन्नि । मंत्र । लभी । फूंनिद । अगैव । अगेंव । रन अग्गें । अगै । बेन । बानै । अग्नै मदंन । पंडूर । पंडूर । झरन । बनान । मन हूं । पत्र । कमान । सर । हलीय । दुग । अद्दुग । दूग । अद्रग । पुरि धूंरि रिपुरि मुदिन भमित्त पुररि पूरि धरि मुदिन तगित्त । वि । पमरंनि । षडइ । षडहू । कल । मान हू । मानहु । रज । संपत । दिलिय पुरेश । राय । मिले । गृह । कुशल । पुछिय । अशेत् । रश हाश । वड्ढे विधि विधि । चित । रश । पांन । आय । सब्ब । विधि । कमद्धंज । दिमांन । सुद्धरहि । बत । हूं । पांन ॥

३२४ पाठान्तर -वत । चत । जप । रोश । उभार । झारि । बुतिवंत । मुछ । हथ । विचारिय । अप्पांन । आनीय । अचि । भारीय । चाहुआन । चहुवान । झंपौ । दलां । मांनहुं ॥

* हि० परिट्ठि (सं० स्त्री० परीष्टि = Inquiry, research &c) से है ॥

सोमेस की सहायता से अनंग की विजयपालजी के साथ लड़ाई

भुजंगी--रही जाम एकं निसा पच्छि यांनं । बजे नद्द नीमान बीमान जानं ॥
चढ्यौ राज आनंग सोमं समेनं । बढे हास रासं चितं प्रीति हेतं ॥छं०६३१॥

सुभै सेत छत्रं धजा नेज माही । मनों बद्दलं मज्झ रज्जै सु राही ॥
सजे पक्खर बाज दंनी मनेनं । मनाहूंत भ्रीतं चितं जुद्ध जेतं ॥छं०६३२॥

इतै आनि दूतं कही बत्त साज । सजे सेन आयौ विजैपाल राजं ॥
स्त्रपं व्यूह आकार गज्जे सभारं । दहं फन्न पुंछंग चे भ्रित्त सारं ॥छं०६३३॥

सु। बत्त आनंग चित्त विचारी । कही सोम सीषी बधौ बंध भारी ॥
सजो सेन अप्पान व्यूहं गरूरं । गिलै अप्पनामंहुवैजित्ति सूर ॥छं०६३४॥

सज्यौ चंच ग्रीवा सु सोमेस राय । तिनं संभरी लाज राजं सहायं ॥
दिसा दाहिनी पच्छ चौरंग बीरं । कुलं चाहुवानं जयं युद्ध भीरं ॥छं०६३५॥

बियं पच्छ बीरम बीरंग देवं । धरा धार उद्धार धारं सु नेव ॥
पगं पंड आनंग राजग पालं । पंड पंडं भुजं लज्ज झालं ॥छ०६३६॥

गजे पुछ्छ कोरंभ जैसिंघ नामं । जिनें जितिया जुद्ध अन्नेक ठाम ॥
सजे अग्ग पंती मदं मोषनग्गं । तिनं अग्ग आतम्म झारं उनंगं ॥छं०६३७॥

दुवे सेन मिल्ली उडी रेन पूर । कँपे कायर सूर बड्ढे सनूरं ॥
धजा नेज ढालं पनाषी दिसानं । बजे सिंधु आनद्द गज्जे निसानं ॥
॥ छं० ६३८ ॥ रू० ३२६ ॥

---

३२५ पाठान्तर [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । जाम । [illegible] ।
निसांन । नषाय ॥

३२६ पाठान्तर नाम । इक्क । इक्क । पछिनं । बजै । नीसांन ।
वरमान । सोमे । समेंत । चढे । हाश । गम । राग । चित । सुभे । छेत्र । नेन ।
मांही । मनौ । बदत । बदल्ल । मझ । रचे । रच्च्ये । पषरं । मनेनं । मनाहूति
भ्रितं । चित । जुद्ध । जैन इते । इतें । आंनि । आय । सझे । आयो । विजिपाल
विजेपाल । श्रपं । स्त्रा । राजे । सु भार । दढं । फन । फन्न । भृत्ति । भ्रित
सुनै श्रवन बैनं । वतं विचारी । सिरकं । सिषं । बधो । सजो । अपान । करूरं
गिले । श्रप । जिनि । चंचुं । राय । तिन । राजं । पिछ । गोरंग । तयं जुद्ध । जय
उधीर । पिछ । धरा धार उधार वीरं सु नेवं । पंड पिंड । षंड षंड । लज
सेजे । सजे । पुछ । पथ्य । कूरंभ । जिने । जित्तीया । उनेक । अग्र । नंगं । तिन
अग । आतस । झारे । दुयं । गेनं । उडै । कंपे । बढे । झंडा । दिषानं । बजै
अन्नद्द । आनंद्द । अंनद्द । गजे । निसानं ।

कवित्त बज्जि गहर नीसान । अग्गि अग बान बिछुट्टिय ॥
* दरिया दधि किय मथन । † भोम फटिय षह तुट्टिय ॥
करषि मुट्ठि कम्मान । तानि क्रन बान छनं किय ॥
मनहुं चिल्ह दिसि सदल । ‡ भोरं बागं नमनं किय ॥
रुधि मग्ग मिच षह मद्दयौ । सुभर मोम मत्तौ गहन ॥
सर सार सार उप्पर सिलह । मनु मेघ बुंद मही महन ॥
॥ छं० ६९९ ॥ रू० ३२७ ॥

विराज चुरंगी सु बीर । जुटे जुद्ध भीर ॥
छुटे मोप बानं । मुट्ठे आसमानं ॥ छं० ६४० ॥
परे बप्प धायं । करै कूह कायं ।
उभारंन सेल्लं । हुवं सेल्ल भेल्लं ॥ छं० ६४१ ॥
तनं छिद्र काल्लं । रुधिजा प्रनाल ॥
वहै धार पग्गं । निनारंध रग्गं ॥ छं० ६४२ ॥
तुटे दंत जारी । करै गै विहारी ॥
परे भूमि थानं । कलं कूट जानं ॥ छं०६४३ ॥
हयं षंड षंडं । धरं रुंड मुंडं ॥
लुथं लुथ्थ मत्तं । कटं बंन भत्तं ॥ छं० ६४४ ॥
चुरंगी सु तन्नं । बरं सिंघ उन्नं ॥
मिल्यौ बथ्थ आनं । दुअं मल्ल जानं ॥ छं० ६४५ ॥
झिलै जंम दढ्ढं । गल लग्गि बढ्ढं ॥
बरं सिंघ षेतं । परे बंध नेतं ॥ छं० ६४६ ॥
मयं पंच भीरं । कटे पास बीरं ॥
भगे दढ्ढ वानं । जिने चाहुवांन ॥छं० ६४७ ॥ रू० ३२८॥

---

३२७ पाठान्तर नीमान । अंग अगिवान निछुटीय । *कि । दीया । कीय । मथम । † कि । फट्टाय । तुट्टीय । मुख । क्रमांन । कम्मान। क्रंम । क्रिन । वान । छनंकिय । मनहुं । चिल्हि । ‡ कि । भीर । भौर । मोर । वाम । नभनं । मग । मुदयो । सुभर भोम । मना मेघ बुंदह महन । मनौं मेघ बुंद मह महन । महि ॥

३२८ पाठान्तर -चौरंगीश । जुटैं । जुठे । भारं । छुटैं । छूटे । स्नानं । सुदे । बप । घायं । करे । क्हु । हुए । सैल । तिनं । छद्र । रुधिज्जा । रुधिजा । बहे । बग्गां । डग्गां । रंगं । त्रुटैं । तुटैं । दन । करगै करेंगे । चिहारी । परैं । परे । थानं । कल कोट जांरी । कोट । हय । घरे । रुड । लुलं लोथ मत्तं । कटै बंधन मयत्तं । कटे । भंतं । चौरंगी । वरसिघ । वरंसिंघ वथ । दुअ । मल । जम । दुढं । बढं । बरसिंह । बरसिंघ । षितं । परै । बधि । नैतं पच । भीर । कटै । भगी । दढि । जितै ।

गाथा   भग्गो दल नर सिंघं । जंगं जित्ताइं राइ चौरंगी ॥
बाई दिसि बर बीरं । लग्गे जुद्धाइं पग्ग मग्गाय ॥
॥ छं० ६४८ ॥ रू० ६२९ ॥

रसावला   * पग्ग गाहि नगा । सेन मेन अगा ॥
मार धारं मगा । कूह कूहं बगा ॥ छं० ६४९ ॥
धाय यों ठनकी आहिरं घंनकी ॥
कंठ गीरं मता । बारुनी पी मता ॥ छं० ६५० ॥
बीर लुथ्थं लुथं । मिल्ल बथ्थं बथं ॥
तुट्टितं अती । गज्जनीयं दंती ॥ छं० ६५१ ॥
नालि ज्यो कढ्ढती । सूर यों बिढ्ढती ॥
उड्डि लोहं लुहं । मिल्ल जोहं जुहं ॥ छं० ६५२ ॥ रू० ३३० ॥

कवित्त- बढन बीर बीरम्म । बीर कमधज सों जुठ्यो ॥
ता उप्पर गजराज । आइ मद मोष उपठ्यो ॥
इह्नि संग उभ्भारि । बिरचि बाही गज मथ्थह ॥
जाइ ठनंकिय घंट । कंठ सोभा सुभि तथ्थह ॥
गहि संग सूर लीनी हवकि । जै जै सुर आकास कहि ॥
रुधि धार छुट्टि संमुह चली । मनो मेर सरसत्ति बहि* ।
॥ छं० ६५३ ॥ रू० ३३१ ॥

---

३२९ पाठान्तर भगो । बरसिंघ । बरसिंह । जग । जिताइ । राय । चवरंगी । बाइ । दीसि । लगे । मग्गई । मगाइ ॥

* इस छंद का नामान्तर बिमोह अर्थात् विमोहा भी है और यह दो दो रगण का होता है ॥

३३० पाठान्तर- पगं । मग । साहि । माहं । नगा । मुजे सेन अगा । सजे मेन अंगा । मारं धार । कूह कूह बमा । धिघायं ठनकी । अहीरन घनंकी । अहिन्न धमकी । कटगी रमता । कटंगी रमता । वारुणी पिमत्ता । वारुणि पिमंता । परी लुथ लुथं । परी लुथा लुथ्थ । मिलै बथ बथ्थ । बथं । तुटीतंन अती । तुटी तंति अंती । गरजंन दंती । नालि ज्यो कढंती । सूग्यो बढंती । सूर ज्यों बढती । उडे लोह लोहं । उडे लोह लोहं । मिलें जोह जोहं । मिले जोह जोहं ॥

इस रूपक के पाठान्तरो को विचारने से पाठकों को ज्ञात होगा कि वे कैसे-कैसे अद्भुत और विद्वानों को भी भुला देनेवाले हैं ॥

* ये तुकें बूंदी राज के पुस्तकालय की पुस्तक सं० १८४१ की में नही है ॥

३३१ पाठान्तर -बीरंम । कमधज्ज । सों । सु । उपर । गजराजं । आय । इहत । उभारि । बाहि । मथह । जाय । कंति । तथह । संगि । समुह । संमुंह हेडरिय । चलिय । मनहु मति । विहि ॥

भंजि मुष्ष गजराज । अप्प सेना उर धारिय † ॥
ता मध्ये सै तीन । फिरग संमुष है डारिय †
ता मध्ये बाघेल । राइ रिपु सल्ल महा भर ॥
घरी एक रन रंग । तुट्टि धर धार गही धर ॥
जितौ सु जंग धारह धनिय । बिभछ बीर†बित्तौ जहां ॥
भजि और भ्रन छंडे रिनह । गे राज विजपाल तहा ॥
॥ छं० ६५४ ॥ रू० ३३२ ॥

दूहा –बीर देव सम बीर लरि । भग्गि सेन कमधज्ज ॥
ता पच्छे सोमेस पर । उड्डि सार बजरज्ज ॥छं० ६५५ ॥ रू० ३३३ ॥

कवित्त—परी भीर सोमेस । सोम बंसी सहाय भय ॥
मार मार उचरंत । सेन चतुरंग हयग्गय ॥
गजदंता बिछुरंग । वीर मेरी झननंकत ॥
टोप टूक बिछुरंत । षग्ग भागत रननं कत ॥
रस रास बीर कमधज्ज भय । संमुह वीर निहाइया ॥
संभरी राव संभारि छल । लग्गो लोह उचाइया ॥
॥ छं० ६५६ ॥ रू० ३३४ ॥

पद्धरी-उच्चाय लोह लगि व्योम थान । मानों कि हरिय बल छलन वान ॥
जुट्टौ सु अरिन दल मज्झ जाइ । मांनों कि सिंघ गज जूथ पाइ ॥छं०६५७॥

---

† पाठको ! हम बीसलदेवजी की दानव कथा को अद्भुत रस मे कवि का लिखाना टिप्पण २६० मे कह आये । उसी तरह इस दिल्ली के अनंगपाल जी और कनौज के राजा कमधज्ज विजैपालजी की लड़ाई का वर्णन वीभत्स और वीर रसों में कविने लिखा है इस बात की वह हम की युक्ति से सूचना अपने "विभक्ष बीर बित्तौ जहां" वाक्य मे करता है । यह महा काव्य कवि ने नव रसों में लिखा है अतएव जहां हम आप को सचेत न भी करें वहां आप विचार कर रस को समझ लीजिएगा ॥

३३२ पाठान्तर—मुप । मेनह । धारीय । मध । संमुंह हे । संमुह हुई डारिय । मधे । बघेल । बघ्येल । राय । मल । तुदि । गइ । गई । जितो । स । धनीय । जिहा । बोर । ओर । भत्न । भ्रित्न । छड़ै । रनह । गाइय । गयै । विजैपाल तिहां ॥

३३३—पाठान्तर—दोहा वीर । बीर । भग्ग । कमधज । पिछै । पिछे । सौमेस उड़ी । रज ॥

३३४ पाठान्तर—परी । सोमेस । बंसी । हय गय । गजदंता झननकंत: । टौक । बिछूरंत । षग । भगंत । रननंकित । रननंकंत । रस सुर वीर । समुंह वीर । निहाइया । निहाईया । संभरी । लग्गै । लग्गों । उचाईया उचारिया ॥

इन बिद्ध सोम मिल लोह पूर । आवद्ध रीठ मत्ती करूर ॥
छन नंकि बान बजि गोम धंक । कायर पुलंत सूरा निसंक ॥ छं० ६५८ ॥
हल मिलग सेन बे बाह बीर । बरसे अनंग ग्रज्जंत धीर ॥
माचंत कूह बजि लोह सार । जुट्टंत सूर रिन करि पहार ॥ छं० ६५९ ॥
राजंत राग सिंधू * कराल । बाजंत बज्ज जनु मेघ काल ॥
हलकंत घाव वाहंत धीर । किलकंत नद्द नारद्द बीर ॥ छं० ६६० ॥
डहकंत डक्क डाइन डरान । गहकंत गिद्धि सिद्धनिय थान ॥
नाचंत देव महकंत फूल । लहकंत दुथ्थ मन मथ्थ हूलि ॥ छं० ६६१ ॥
उररीय सेन सजि अनगपाल । भर हरी भीर कमधज विसाल ॥
सत पैंड जाइ फिर लग्गि घाय । आतार रीठ मत्तौ उराय ॥ छं० ६६२ ॥
तिन मुष्ष गोम मिल चाहुवान । मांनो कि रिष्षि दरिया ग्रमान ॥
तिन सीस वज्जि धारा निहाय । घरियार वज्जि मनु वज्र घाय॥छं६६३॥
परि सोम सूर अरि बधिय जंग । चौसट्ठि घाय वेध्यौ सु अंग ॥
तिन अग्ग परिग पहु मान वीर । छिन भिन्न होय धारा सरीर॥छं०६६४॥
सत पंच परिग है गै करूर । सैं पंच दून परि पित्त सूर ॥
सहसं च पंच कमधज्ज सेन । जीतौ अनंद सुत वीर सेन ॥ छं० ६६५ ॥
भाजंत सेन बर विजैराज । है गै बीर रिन छोरि लाज ॥
पलकंत श्रोन धर चलिग पाल । कौतिग्ग देव हर रुंड माल ॥छं० ६६६॥
पल चरन चार बर रंभ कीन । जै जया सद्द बंदीनदीन ॥६६७॥रू०३३५॥

---

* संगीत शास्त्रवेत्ता और अन्य सब को स्मरण मे रखने की बात है कि संगीत के आचार्य भरत जो सिंधू राग को वीर रस मे मानते हैं उसका प्रचार इस समय तक पाया जाता है अर्थात् लडाई मे सिन्धु राग गाया और बजाया जाता था और व्यूह रच के लडना भी पृथ्वीराजजी के समय तक प्रचलित रहा है ॥

३३५ पाठान्तर - उचाय । लोह । ग्योम । योम । थांन । माने । मनों । हरि । हरी वलि बलन बानं । हरीय । बांन । जुंदो । जुटो । जुटो । मज्ञ । जाग । मांनौं । मांनो । जुथ । पाय । इनि बिध । विधि । मौम । मिलि । लोह । पुर । रीद्ध । मती । बांन । श्रूरा । हलि । मिलिग । वै वाह । बरसै यजंठ । मांवत । जुटन । सिदुं । मेंघ । घातय । घायु । वहंत । नद । नारद्र । डक । डरांन । सिद्धनीय । थांन । फूल । दुत्थ । मथ । फूल । मैन अनंगपाल । हरय । रीय । पेड । पैंड जाय । फिरि । मतौ मुष । सौम । मिलि । चाहुबांन । मांनो । रिषि । दरयाग्रमांन । घरीयार मनुं । मनो । घरीयार मनो । वज्जि । वज्जं । सौम । जग । चौसठि । वैध्यो । श्रग । परिम । पहु मांन । होइ । शरीर । गैं । गरूर । से । सुर । सहसच । परिकमध । जीतो सु जंग सुत वीर सैन । जीतो सु जंभ सुत बीर सेन । हय । गय । कौनिग । चारु । वरं । जे जे जु सद्द । जै जै जु सद्द ॥

सोमेश्वरजी का दिल्ली में बड़ा साहस करना

कवित्त दिल्ली वै सोमेस। कियौ साहस चहुवानं ॥
सो कमधज्ज नरिंद। बीर विजपाल भगानं ॥
अजरा परि अजमेर। मान बंधव परि चढ्ढुं ॥
अस्त बस्त अरु चर्म। टंक लभ्भै नन हड्डुं ॥
रघुबंस बीर दिष्यौ निजरि। पहु पषिनिय रडाइयां * ॥
अप मंम अप्प करि कट्टि कै। चीन्हां हंकि उडाइयां * ॥
॥ छं० ६६८ ॥ रू० ३३६ ॥

कमधज्ज का पराजित हो घर जाना और सोमेश का अजमेर को चलना

दूहा जित्ति भत्ति भारथ्थ भो। गो फिरि ग्रह कमधज्ज ॥
उप्पारे अजमेर पट्ट। डोला पंच गरज्ज ॥ छं० ६६९ ॥ रू० ३३७ ॥

अनंगपाल जी का सोमेश्वर जी को कन्यादान करना

कवित्त - अनग तूंअर नरिंद। धम्म मंड्यो उछंग वर ॥
सुभ सोमेस नरिंद। ग्रहन पानिग मडि कर ॥
हेम हय गयग भार। दासि दीनि सु पंच सय ॥
गन हथ्थी है सहस। अथ्थ आप्यौ सु देस लय ॥
हिसार को पच्चर विहर। मुत्ती माल सुरंग घन ॥
चल्यौ नरिंद अजमेर दिसि। बलि नरिंद इक बध मन ॥
॥ छं० ६७० ॥ रू० ३३८ ॥

---

* ऐसे प्रयोगों को देखकर के राजपूताने के कवियों को भ्रम के वश न हो जाना चाहिये क्योंकि वे कवि की मातृभाषा पंजाबी होने के कारण प्रयुक्त हुए हैं और राजपूताने की भाषा में बहुत से पंजाबी शब्द भी मिले हुए हैं तथा राजपूताने की भाषा कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं है किन्तु भील और मेर आदि और जो जो क्षत्री और कवि आदि जिस जिस प्रान्त से इस देश में आकर बसे हैं उन सब की भाषाओं से मिलकर बनी हुई एक खिचड़ी है ॥

३३६ पाठान्तर - दिल्ली। ढिल्ली। वे सोमेस। चहुवान। कंमधिज्ज। नरेंद। विजैपाल। मान। परचंड्ड। परंचड्डं। अस्ति। वस्ति। अरु-चर्म्म:। चर्म्म। विर। पषीनिय। षषिनि। अप्प। मम। कठि। कै। कें। चिन्हां हंकि। हंकि ॥

३३७ पाठान्तर जिति। भिति। भारथ। भय। गय। ग्रिह। कम धज। डोला मुरज ॥

३३८ पाठान्तर -अनंगपाल। तुंवर। शुभ। सोमेस। पानिग। मडि। हैन हय गय। ज। सिस। हथी। हय। हय। सुं देशमलय। कोट। पच्चर। पषर विहार। मुत्ति। मुत्तिय। दिशि। बल ॥

सोमेश्वरजी का अजमेर आना और वहां बड़ा उत्सव होना

कवित्त शृंगारिय गजराज। आय ग्रिह जीनिव जानय ॥
पहिरावन परिवार। जानि रिति माधव मानिय ॥
बाल वृद्ध जुब्बनह। मुष गावत अति मंगल ॥
रुचि रुचि विविध बचन्न। परसपर जानि मुष्प गल ॥
तरु अंब गोष तारुन त्रिविध। मपिय गोष उभिय सरस ॥
प्रतिबिंब मुष्प राका दरस। मुह गावत चहुआन जस ॥
॥ छं० ६७१ ॥ रू० ३३९ ॥

पृथ्वीराजजी की कथा का आरम्भ करना

पद्धरी अब कहौं कथ्थ चहुआन राइ। जिम लई भूमि पल पग्ग धाई ॥
जिम अनग राज दिल्ली दान। बपनंत बलिय कुल चाहुवान ॥ छं० ६७२॥
जिम अगम द्रुग्ग गढ लए कुटि। जिहि किति जिति समार षुटि ॥
जिम मेछ्छ सेन पर भार पंडि। कै बार गाहि जिन बंधि छंडि॥छं० ६७३॥
जिम कमध सेन घर धरिय कीन। बिध्वंगि जग्ग संयोगि लीन ॥
अब्बुआ राव गण्यौ बलेस। चालुक्क भंजि पट्टन नरेस ॥छं० ६७४॥
परिहार सिंघ जिम जेर कीन। बरनी बिवाहि रस बगि अधीन ॥
देवगिरद्रग्ग है पुरनि गाहि। बाल्का जीति दे जग्ग धाहि ॥ छं० ६७५ ॥
निरथंभ द्रुग्ग जद्दव नरेस। कंन्या विवाहि तिन रषि देस ॥
भंजे मै वास वहु भील कंक। भर बीर ग्रेह तिन कढ्ढि बंक ॥ छं० ६७६ ॥
अनमी मसंद तिन नाम वारि। जुगवंत जीव मूरष गवार ॥
अवतार अप्प करतार होइ। हूओ न और ह्वैहै न कोइ ॥ छं० ६७७ ॥

---

३३९ पाठान्तर -श्रगारीय। ग्रिह। गृह। जीनिव। पारिवार। जानि। मानिय। बुद्धि। जुंवनह। मुष गावत। मुष्पि गावत। विविधि चवन्न। जानि। सु मिगल। तारुनि। त्रिविधि। मषीप। गोषि। उभीय। प्रति बिब मुष्क राका दरसन। प्रतिब्यंब। मुष नहुवांन। चहुवान। चहुआंन ॥

३४० पाठान्तर - कहों। कहौ। कथ। चहुवांन राय। लइ। पगा। षग। धाय। अनंग। दिलि दां दांत। वषतंत। बपनोंत। चाहुवांन। दुर्ग। द्रुगा। जुठ्ठि। जिहि। किति। जिति। लुट्टि। लुंटि। जिन। मेछ। मेछ। षिड। के। जिन। कमंध। सैन। घर धरीय। किन्मं। घरधरी। धीर। कोन्न। जिग्य। जिग्य। मंजोगि। लिन्न। लीन्न। अवुंआ। आंबुआ। जिन। जैर। किन। देवगिरि। हे। ग्गाहि। दे। धाह। थाम। द्रुग। दुंग। जदेव। कन्यां। रषि। भंजै। मेवास। मिवास। भरें। ग्रैह। कढि। नांम। जुंगवत। किरतार। सोइ। हूंओ। हूउन। ह्वै हे। ह्वै हैं। कीय। दुग। द्रुंग। नृप। सोंम। षरन। दिलिय। दिल्लीय।

अजमेर दुग्ग नृप सोम राइ। अद्‌भूत तेज अरि धरन लाइ ॥
दिल्लिय अनंग तौअर नरिंद । अनसंक कंक पहुमीस इंद ॥ छं० ६७८ ॥
तिह सुत्त नांहि ग्रह पुत्ति दोय । किय व्याह कमध चहुआन सोई ।

॥ छं० ६७९ ॥ रू० ३४० ॥

सोमेश्वरजी का तेजबल से तपना

कवित्त तपै तेज चहुकान । सूर सोमेस अप्प बल ॥
तिन सु तेज तरवारि । मुछछ अरु सुछ्छ मुष जल ॥
सुभट भाट मंग थान । चित्र चारन चतुरंगन ॥
जहँ तहँ लछ्छि निवास । सु बसि विलसत सुरगम ॥
सुनियै न पर श्रवन चक्र भय । सुजस सकल जपै जगत ॥
मानिक्क राइ कुल उद्धरन । सीम पलनि जहँ तहँ षगत ॥

॥ छं० ६८० ॥ रू० ३४१ ॥

अनंगपालजी का अपनी दो पुत्रियों में से सुन्दरी विजैपालजी को और कमला सोमेश्वर जी को प्रदान करना

दूहा - अनग पाल पुची उभय । इक दीनी विजपाल ॥
इक दीनी सोमेस कौं । बीज ववन कलि काल* ॥

॥ छं० ६८१ ॥ रू० ३४२ ॥

एक नाम सुर सुंदरी । अनि वर कमला नाम ॥
दरसन सुर नर दुल्लही । मनों सु कलिका काम ॥

॥ छं० ६८२ ॥ रू० ३४३ ॥

तुंवर । पहुवीस । पुहवीस । तिहि । सुत । ग्रिह । गृह । पुत्री । चहुवान । चहुआन । सोय ॥

३४१ पाठान्तर तपे । चहुआन । चहुवान । मुछ । मछ । अछ । मुछ । सुभट भाट मग । भाट चित्र चोरन चतुरगम । जहां तहां । जिहा तिहा । जह । तह । लछि । वसि । सुनीयै । जपे । मानिक । कुल । पलन । जिहां । जह । तह ॥

३४२-४३ पाठान्तर --अनंगपाल । दिनी । विजैपाल । विजैचंद । सोमेस । त्रिप वपुन । चाल । दद ॥ ३४२ ॥ नाम । सूर सुदरी । सुदरी । बीअ कहेला वर नाम । वै । अनि वर मलया नाम । दुल । मनों । सु काम ॥ ३४३ ॥

* चंद कवि का यह वाक्य "बीज ववन कलि काल" हमारे पाठकों के ध्यान देकर समझने योग्य है कि यद्यपि चंद्र सोमेश्वर जी के घर का कविराज था परन्तु वह कैसा यथार्थ वक्ता था। क्या आज भी कोई कवि अथवा कविराज ऐसा स्पष्ट कह अथवा लिख सकता है ?

जिस दिन सोमेस का विवाह हुआ उस दिन क्या क्या हुआ

कवित्त ज दिन व्याहि गोमेस । त दिन अमरन मन उद्दित ।।
त दिन बीर बेताल । काल कल्हागम कुद्दिन ।।
न दिन अवनि उमहीय । पुत्र इहि भार उतारै ।।
छत्र तेज छिन छज्जि । देव दानव पु नारै ।।
ता दिन सु सार सज्या ममह । भ्रम अतर कायर कपे ।।
मानिक्क राइ अनगेस घर । रानि ग्रहन ज दिन थपे ।।

।। छ० ६८३ ।। रू० ३४४ ।।

सोमेश्वरजी की रानी के गर्भ रहना और उसका प्रतिदिन बढ़ना

कवित्त कितिक दिवस अंतरह । रहिय आधान रानि उर ।।
दिन दिन कला बढंत । मेघ ज्यो बढ़न भद्द धुर ।।
चद्र कला सित पष्प । जेम बाढन दिन दिन ।।
मुगधा जोवन चढत । मिलत भरतार पिनपिन
उद्दि ।ान सुभ गातनह । जेम जलधि पुन्निम वटहि ।
हुलसंत हीय जे प्रोय त्रिय ।। जिम सु जोनि जनिना चढहि ।।

।। छ० ६८४ ।। रू० ३४५ ।।

सोमेश्वरजी की तुंअरि रानी का पृथ्वीराजजी को जनना

दूहा - मोमेसर तोअर घरनि । अनगपाल पुत्रीय ।।
तिन सु पिथ्थ गर्भ धरिय । दानव कुल छत्रीय ।।

।। छ० ६८५ ।। रू० ३४६ ।।

सोमेसजी के प्रथम पुत्र का ढुंढा के वर से होना स्मरण कर गंधर्वादि का प्रसन्न होना और उत्सव मानना

कवित्त प्रथम पुत्र सोमेस । गंधपुंर ढुंढा गड्ढिय ।।
भई सुद्धि गंध्रवन । पुहप मंगल दुज पड्ढिय ।।

---

३४४ पाठान्तर - व्याह । सोमेम । ता । अमग्न । अमरन । उदित । काम । कल्हागम कुदित । उमहि । उमहिर । नाथ मोहि भार उतारै । तेज । छिनि । छाज दिव दानव्वि पुं तारै । सो । दीन वहु दवि पुनारै । कपीय । मानिक । राय । अनगेस । ज दिन । थपिय । थपीय । थपै ।

३४५ पाठान्तर किलक । आधान । रानि । ज्यो मे बढत भद्द धुर । ज्यों । ज्यो मेघ बढ्ढत भद्द धुर । पष । पषि । जैम । यौवन । पिन पिन । पिनि षन । गदित अधान सुभगतनह । जैम । पूनिम । पुनिम । हुलसत । जै । त्रीय । ज्योति ।

३४६ पाठान्तर – सोमेशर । तुंअर । ग्रम्भ पिथ । पिथ्थ छित्रीय ।।

अद्ध रैनि अनु जानि । लियौ बालुक सिर सिद्धिय ॥
गयन बयन घन सद्द । युद्ध जीवन जय दिद्धिय ॥
सित सुभट सूर छह सथ्थ चलि । चंद भट्ट कीरति करन ॥
संजोगि जोति तप राषि सतर । वरष तीस दसह बरन ॥
॥ छं० ६८६ ॥ रू० ३४७ ॥

कवित्त –बल तापस तप तपिय । श्राप बीसल सिर धारिय ॥
बरस असी तीन सै । गुहा ढिल्ली ढिग तारिय ॥ †
सित अंजर रजनीय । पुरनि गंध्रव पग धारिय ॥ †
*   *   *   *   *   *
अवतार लियौ प्रिथिराज पहु । ता दिन दान अनंत दिय ॥
कनवज्ज देस गज्जन पटन । किलकिलंत कालंकनिय ॥
॥ छं० ६८७ ॥ रू० ३४८ ॥

जिस दिन पृथ्वीराजजी का जन्म हुआ उस दिन देशान्तरों में क्या क्या हुआ

कवित्त –ज दिन जनम प्रिथिराज । षरिग बत्तह कनवज्जह ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन गज्जन पुर भज्जह ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन पट्टन वै सद्धिय ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन मन कालन पद्धिय ॥
ज दिन जनम प्रथिराज भौ । त दिन भार घर उत्तरिय ॥
वनरीय मंस अंसन ब्रह्म । रही जुगें जुग बत्तरिय ॥
॥ छं० ६८८ ॥ रू० ३४९ ॥

---

३४७ पाठान्तर –मोमैम । गणपुर । हुहा धारीय । भट्ट मुद्धि गंध्रवन । गंध्रूवन । पढिय । रैन । रैनि । जांनि । लयौ । बालिक । बालक । गुर । मद्धिय । बैन बैंन । घमद । गैंन । वेंन घन मद । मुद्ध जीगीन जय दिद्धीय । मतं । मुर । जोति । मन ॥

† ये दोनों तुक सं० १८४५ की पुस्तक में नहीं हैं ॥

* यह तुक हमारे पास की किसी भी पुस्तक में नहीं है ॥

३४८ पाठान्तर –वलि । मिल । धारीय । रंजनिय । गंधृव । लीयौ । प्रथीराज । दांन । कनवज । देसं । गजन । पठन । पट्टन । शिलकंलं । कालक नीय ॥

३४९ पाठान्तर –दिनि । जनमि । प्रिथीराज । परिग वत्तह कनवज्जह । जनमी । गंजन पुर भंजन । गजन पुर भजह । जा । ता । वे । सद्धीय । जनमी । ता । जनिमि । भय । जद्दिन । जनंम प्रथिराज भुम । भुय । ता । उतरिय । अवतरिय । अवतरीय । जुगे । जुग । वतरीय ॥

अनंगपालजी का अपनी पुत्री के पुत्र को देखना और उत्सव करना

कवित्त अनग पुहवै नरेस व्याम जग जोत बुलाइय ॥
लगन लिद्धि अनुजा सुत । नाम चिहु चक्क चलाइय ॥
पुप्फ पानि धरि धूप । पिथ्थ पाइन दो अंमह ॥
कलि अवतार कुलाह । अंसपति पारन कंसह ॥
बहु जुद्ध रुद्ध कलि जुग्ग बर । भिन्न भिन्न दैतन भिरन ॥
कवि चंद दिली थह कारने । इह अपुब्ब अवतार लिन ॥
॥ छं० ६८९ ॥ रू० ३५० ॥

पुत्री पुत्र उछाह । दान मानह घन दिद्धिय ॥
धाम २ * गावत धमारि । मनहु अहि वन मनि लिद्धिय ॥
कनवज जैचंद मात । भयो संभरि बहनी सुत ॥
तिन पवंत दुज पठिय । थार जर चीर थपिय थुन ॥
पहिराइ परीघह दान दुज । किय ममाप सब्बन विवरि ॥
दस दिवस रष्षि अप्पन अवर । अति उछाह आनंद करि ॥
॥ छं० ६९० ॥ रू० ३५१ ॥

पृथ्वीराजजी का जन्म होना सुन कर सोमेसजी का उत्सव करना

दूहा सुनि सोमेस बधाइ दिय । है गै चीर गुराव ॥
अति उछाह अनंद भरि । न्रप मुष चढ़िय आव ॥
॥ छं० ६९१ ॥ रू० ३५२ ॥

---

* इस को कोई नई बात नहीं समझना चाहिये किन्तु बहुत पुरानी रीति है कि वाक्य में जहां शब्द का दो बार प्रयोग होता है और दो बार उन का पृथक् पृथक् प्रयोग करने से छंद टूटता हो तो उस को एक बार लिख कर उसके आगे २ का अंक कर देते हैं और उस से अभिप्राय यह रहता है कि उसको गद्य में करने के समय अथवा उसका अर्थ करते समय उस शब्द का दो बार प्रयोग कर लेना कि उसके गौरव का नाश न हो जाय। ऐसे प्रयोग प्राचीन कवियों के काव्यों में आते हैं परन्तु अब लोगों ने उनके स्थानों में नये पाठ भर दिये हैं और इस सूक्ष्म कारण पर ध्यान नहीं दिया है। किन्तु गद्य में तो अब तक यह रीति भले प्रकार प्रचलित है ॥

३५०-५१ पाठान्तर -अनंगपाल । पुहवी । योति । बुलाईय । लिद्ध । दिद्ध । सु । तनि । नाम चिहुं चक चलाईय । पुष्फ पानि । पिथ । पायन । दो । असह । कुलाह । असपति बहु जुद्ध । जुग्गा । जुग । भ्यन । भिन्न मित । देवन । भिरिय । करत इह अपूरब अवतार लीय । अपुव ॥ ३५० ॥ दान । मांन दिद्धीय । धाम धाम । धमारि । मनहुं अवि वंत मनि लद्धीय । कनवजह । कनवज्जह । जैचद । जैचंद । पिता बहिनी सुतनी सुत । तिम । पवंग । दुजि । पठीय । थपीय । थुति । श्रुति । पहिराय । परिगाह । परिगह । दांन । कीय । ज्येमाष । समाष । सवन । विवर । दिस । रिषि । आन ॥

३५२ पाठान्तर—दीय । हे । गे । वीर । भर । मुंष । चढ़िय । आव ॥

सोमेसजी का पृथ्वीराजजी को अपने घर लाने को कहना

दूहा - तब बुलाय सोमेस बर। लौहानौ अरु चंद ॥
लै आवहुँ अजमेर घर। पहौतै घरह सु इंद ॥
॥ छं० ६९२ ॥ रू० ३५३ ॥

सोमेसजी का पृथ्वीराजजी को अजमेर ले आना

दूहा करि आनौ * उछ्छाह किय। चल्यि राज अजमेर ॥
सहस बाजि है सुभर बर। मन सषी मनि मेर ॥
॥ छं० ६९३ ॥ रू० ३५४ ॥

पृथ्वीराजजी का जन्म संवत् और उनके प्राकट्य का हेतु

दूहा एकादस सै पंच दह। विक्रम साक अनंद ॥
तिहि रिपु जय पुर हरन कौ। भय प्रिथिराज नरिंद ॥
॥ छं० ६९४ ॥ रू० ३५५ ॥

पृथ्वीराजजी के शक की संज्ञा का सूत्ररूप कवि का वाक्य

दूहा एकादस सै पंच दह † विक्रम जिम ध्रमसुत्त ॥
त्रतिय साक प्रथिराज कौ। लि षौ विप्र गुन गुप्त ॥
॥ छं० ६९५ ॥ रू० ३५६ ॥

---

३५३ पाठान्तर- बुलाय। सोमस। लोहनो। पुर गजब अनि आमनह। सहन नथ कवि चद पुर गज्जन अनि हरि आमनह। सुहन नथ कवि चद। आवहु। घर।

* स्त्री को उसका पति अथवा पति के सगे सबधी आदि उसके पिता के घर से अपने घर लाते है वह आना अथवा आनो कहलाता है ॥

३५४ पाठान्तर –उछाह। कीय। चलीय। है। वर मन। मनि। मैर ॥

३५५ पाठान्तर - एकादस। से। से। साक। तिह रिपु पुर जय हरन कौ। हुअ। हुय। भे। पृथ्वीराज। बूंदीवाली स० १८४५ की पुस्तक मे इसके स्थान मे ३५६ रूपक है और उस के स्थान मे यह है ॥

† इसकी पहिली आधी तुक का पाठ हमारे पास की सब पुस्तको मे "एकादस समयै सु कृत" करके है किन्तु जो हमने रक्खा है वह बूंदी राज की पुस्तक से उद्धृत किया है।

३५६ पाठान्तर एकादस। समअै। समयै। ध्रम। सुन। त्रीयति। त्रीयनि। साक। पृथीराज। प्रिथीराज। कौ ॥

इन रूपक ३५५ और ३५६ पर हम यह टिप्पण अत्यन्त नम्रता के साथ लिखकर हिन्दी भाषा के महा कवि चद बरदाई की संवत् सबन्धी बड़ी कठिनता के इस शोध को पुरातत्ववेत्ताओ की सेवा में भले प्रकार विचार करने को उपस्थित करते हैं। यद्यपि हमारे ज्योतिष शास्त्रादि के अच्छे अच्छे विद्वान इष्ट मित्रो में से

कितनेक महाशय जिनको यह शोध विदित हो गया, है हमको First discovery प्रथम शोध करने का मान देते हैं किन्तु हम उनकी परम प्रीति और न्याय बुद्धि के साथ गुणग्राहकता के लिये अत्यन्त आभारी होकर यह कहते हैं कि जब अन्य पुरातत्ववेत्ता विद्वान् भी हमारे इस शोध को उसके गुण दोषों का अन्वेषण करके स्वीकार करेंगे तब हम अपने को सर्वंगीण्या कृत कृत्य समझेंगे।

अब आप चंद की सवत् सम्बन्धी कठिनता को इस प्रकार से समझने का प्रयत्न करें कि प्रथम तो [illegible] ३५५ का बहुत ध्यान देकर पढ़े। तदनन्तर उसका अन्वय करके यह अर्थ करें कि [एकादस से पचदह] ग्यारह से पदरह [अनन्द विक्रम साक अथवा विक्रम अनन्द साक] अनन्द विक्रम का साक अथवा विक्रम का आनन्द साक [तिहि] कि जिसमे [रिपुजय] शत्रुओ को विजय करने [पुरहरन] और नगर अथवा देश देशान्तरो को हरन करने [भौ] को [प्रिथिराज नरिंद] पृथ्वीराज नामक नरेन्द्र [भय] उत्पन्न हुए॥

तदनन्तर इसके प्रत्येक शब्द और वाक्यखंड पर सूक्ष्म दृष्टि देकर अन्वेषण करें कि उसमे चद की (Archaic style) प्राचीन गूढ भाषा होने के कारण संवत् सम्बन्धी कठिनता कहां और क्या घुसी हुई है। कवि के प्रतिकूल नहीं किन्तु अनुकूल विचार करने पर आपकी न्याय बुद्धि जड़ खोज कर पकड़ लावेगी कि विक्रम साक अनन्द वाक्यखंड में -और उसमे भी अनन्द शब्द मे हम लोगो को इतने वर्षो से गड़बड़ा कर भ्रमा [illegible] चद की [illegible] भरी हुई है। इतनी जड़ हाथ में आ जाने पर अनन्द शब्द के अर्थ की गहराई को ध्यान मे लेकर पक्षपातरहित विचार से निश्चय कीजिये कि यहां चद ने उसका क्या अर्थ माना है। निदान आपको समझ पड़ेगा कि अनन्द शब्द का अर्थ यहां चद ने केवल नव-संख्या-रहित का रक्खा है अर्थात् अ = रहित और नन्द = नव ९। अब विक्रम साक अनन्द को क्रम से अनन्द विक्रम साक अथव विक्रम अनन्द साक करके उसका अर्थ करो कि नव -रहित विक्रम का शक अथवा विक्रम का नव -रहित शक अर्थात् १००-९= ९०। ९१ अर्थात् विक्रम का वह शक कि जो उसके राज्य के वर्ष ९०। ९१ से प्रारंभ हुआ है। यही थोड़ी सी और उत्पेक्षा करके यह भी समझ लीजिये कि हमारे देश के ज्योतिषी लोग जो सैकडों वर्षो से यह कहते चले आते हैं और आज भी वृद्ध लोग कहते हैं कि विक्रम के दो संवत् थे जिनमें से एक तो अब तक प्रचलित है और दूसरा कुछ समय तक प्रचलित रहकर अब अप्रचलित हो गया है। और हमने भी जो कुछ इस के विषय की विशेष दंतकथा कोटा राज्य के विद्वान कविराज श्रीचंडीदानजी से सुनी थी वह इस महाकाव्य की संरक्षा में जैसी की तैसी लिख दी है। अतएव विदित हो कि विक्रम के दो संवत् हैं। एक तो सनन्द जो आज कल प्रचलित है और दूसरा अनन्द जो इस महाकाव्य में प्रयोग में आया है। इसी के साथ इतना यहां का यहां और भी अन्वेषण कर लीजिये कि हमारे शोध के अनुसार

जो ९० । ९१ वर्ष अंतर उक्त दोनों संवतों का प्रत्यक्ष हुआ है उसके अनुसार इस महाकाव्य के संवत् मिलते है कि नहीं। पाठकों को विशेष श्रम न पड़े अतएव हम स्वयम् नीचे के कोष्टक में कुछ संवतों को सिद्ध कर दिखते है—

पृथ्वीराजरासो के अनन्द संवतों का कोष्टक

पृथ्वीराजजी का	रासो में लिखे अनन्द संवत्में	सनन्द और अनन्द संवतो का अंतर जोड़ो	यह सनन्द संवत् हुआ उम में	पृथ्वीराजजी की शेष वय जोडो	परीक्षा के लिये अंतिम लड़ाई का सिद्ध संवत
जन्म	११११५	९० । ९१	१२०५ । ६	४३	१२४८ । ९
दिल्ली गोद जाना	११२२*	९० । ९१	१२१२ । ३	३६	१२४८ । ९
कैमास जुद्ध	११४०	९० । ९१	१२३० । १	१८	१२४८ । ९
कन्नौज जाना	११५१	९० । ९१	१२४१ । २	७	१२४८ । ९
अंतिम लड़ाई	११५८	९० । ९१	१२४८ । ९	०	१२४८ । ९

जो कुछ हमने यहां तक कहा है उससे और सब बातें तो हमारे पाठको के मन में बैठ गई होंगी किन्तु ३५५ रूपक में जो अनन्द शब्द का प्रयोग हुआ है उसमें किसी-किसी को कुछ संदेह रहेगा, अतएव हम फिर उसके विषय में कुछ अधिक कहते हैं। देखो संशय करना कोई बुरी बात नहीं है किन्तु वह सिद्धान्त का मूल है। हमारे गौतम ऋषि ने अपने न्यायदर्शन मे प्रमाण और प्रमेय के पीछे संशय को एक पदार्थ माना है और उसके दूर करने के लिये ही मानो सब न्यायशास्त्र रचा गया है। यदि आनन्द का नव-संख्या-रहित का अर्थ किसी की सम्मति में ठीक नहीं जंचता हो तो उससे इस स्थल में बहुत अच्छी तरह घटता हुआ कोई दूसरा अर्थ बतलाना चाहिये। परन्तु बात तब है कि वह सर्वतंत्र सिद्धान्त (universally true) से उसी तरह सिद्ध हो सकता हो कि जैसे हमने यहां अपना विचार सिद्ध कर दिखाया है। सब लोग जानते हैं कि हमारे इस शोध के पहिले तक युवा और मध्य वय के कोई-कोई कवि इस अनन्द संज्ञा वाचक शब्द का गुण अर्थ शुभ

* यह संवत् हमने पृथ्वीराजजी के जो परवाने हमको मिले हैं उनकी छाप में लिखा हुआ है उनसे ग्रहण किया है किन्तु रासो की अब तक प्राप्त हुई पुस्तकों में तो किसी में ११२८ और किसी में ११३८ लिखा मिलता है॥

(auspicious) का करते रहे है और चारण जाति के महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदासजी ने भी अपने इस महाकाव्य के खंडन-ग्रंथ मे यही अर्थ माना है। परन्तु विद्वानों के विचारने और न्याय करने का स्थल है कि इस दोहे मे आनन्द पाठ नही है और न छंद के लक्षण के अनुसार वह बन सकता है किन्तु स्पष्ट अनन्द पाठ है। यदि वहा संज्ञा वाचक आनन्द पाठ भी होता तो भी उसका गुण वाचक शुभका अर्थ नही हो सकता था परन्तु संस्कृत भाषा का थोडासा ज्ञान रखनेवाला भी यह जान सकता है अथवा जिनके पास संस्कृत भाषा के कोशो की पुस्तकें है वे उनके बल मे भी जान सकते है कि वाचस्पत्य बृहत् संस्कृताभिधान के पृष्ठ १४९ और शब्दार्थचिंतामणि के पृष्ठ ६९ मे स्पष्ट अनन्द के यह अर्थ लिखे हैं "त्रि० न नन्दयति नन्द, आनन्दायतृभिन्ने, अनानन्दे असुखे" इत्यादि। देखो जब अनन्द शब्द का सत्य अर्थ दुःख का है तो फिर क्या सुख और शुभ का अर्थ करना अयोग्य नही है। यदि कवि लोग जैसे अलंकार और नायका भेद की सूक्ष्मता जान लेने के लिये परिश्रम करते है वैसे ही जो सूक्ष्म दृष्टि देकर देखते तो झट जान लेते कि यहा कवि गूढार्थ मे सवत् का भेद बता रहा है और सुख अथवा दुःख और शुभ अथवा अशुभ के स्थूल अर्थो को प्रयोग मे नही लेता है। व्याकरण शास्त्र की रीति से भी आनन्द और अनन्द शब्दो की प्रयोग सिद्धि मे अन्तर है। अब हमारे अर्थ की पुष्टि मे विचार कीजिये -

१. प्रथम तो विचार करने के पहिले ऐसे-ऐसे दुराग्रहो से अपने-अपने हृदय को अपवित्र नही कर रखना चाहिये कि चन्द ऐसा मूर्ख था कि उसे अनुस्वार और विसर्ग तक का ज्ञान न था और न वह संस्कृतादि किसी भाषा मे व्युत्पन्न पंडित था और जितनी भूल इस महाकाव्य मे मिलती है वह सब उसने ही की है ॥

२ दूसरे, देखो कि कवि यहा विक्रम के शक की संख्या के विशेषण मे अनन्द शब्द का प्रयोग करता है और वहा संख्या-वाचक अर्थ का ही प्रसंग है। और इस बात की भी कुछ अत्यावश्यकता नही है कि हम यहा अनन्द को आनन्द का अपभ्रंश आदि समझकर शुभ का ही अर्थ करें क्योकि कवि इसके साथ ही रूपक ३५६ मे स्पष्ट "तृतीय साक पृथिराज को लिख्यो" कहता है। और संज्ञावाचक आनन्द का अपभ्रंश रूप अनन्द कि जो तथापि संज्ञावाचक ही होगा, उसका गुणवाचक अर्थ शुभ (auspicious) कदापि नही बन सकता ।।

३. तीसरे, इस स्थल के प्रसंग से अनन्द शब्द को अ+नन्द से बना मानना चाहिये और अ का यहा रहित अर्थ करने के लिये इस श्लोक को प्रमाण मे लेना चाहिये :-तत्सादृश्यमभावश्च, तदन्यत्वं तदल्पता। अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाषट प्रकीर्तिताः" ॥ और नन्द के नव संख्यावाचक अर्थ के ग्रहण करने को वैसे ही समझें तो ऋषि शब्द ७ सात के वाचक की भांति 'नव नन्दा-

भविष्यन्ति चाणक्योयान् हनिष्यति' स्कं पु. । तथा श्रीधर स्वामी -कृत भागवत की टीका में तेषां सपुत्राणां नव संख्यत्वेन तत्तुल्य संख्या" के अर्थ स्पष्ट ही है अतएव अधिक प्रमाण नहीं लिखते हैं ॥

४ चौथे, चंद का अनन्द शब्द प्रयोग करने से उसका यह आन्तरीय अभिप्राय होना ज्ञात होता है कि विक्रम का जो प्रचलित संवत् है उसकी मूल संख्या में संकर राजा नन्द का कुछ समय मिला हुआ है अर्थात् वह संवत जिस गणित के अनुसार है वह उक्त नन्द के समय सहित था और चन्द ने जिस प्रकार से काल निरूपण किया है वह नन्द के समय रहित है अथात् चन्द का लिखा विक्रमी संवत् शुद्ध विक्रमी है। इसी लिये हमने इन दोनो संवतो को अनन्द और सनन्द नामों से इस टिप्पण भर में ग्रहण किया है। यदि कोई मनुष्य यह हठ कर बैठे कि हमको चन्द का अनन्द संवत् केवल प्रत्यक्ष प्रमाणों से ही सिद्ध कर दिखाओ तो क्या यह हमारा उसको उत्तर देना अन्यथा होगा कि जिस प्रमाण रूप प्रचलित विक्रमी संवत की अपेक्षा से तुम चन्द के लिखे अनन्द संवत रूपी प्रमेय को सिद्ध करना चाहते हो तो प्रथम तुम अपने प्रमाण को वैसे ही प्रत्यक्ष प्रमाणों से निर्दोष सिद्ध कर दिखाओ तो फिर हम उसको प्रमाण रूप मानकर चन्द के अनन्द संवत रूपी प्रमेय को सिद्ध कर उसकी अशुद्धता समझ ले, क्योंकि यह दावा तुम्हारा है कि चन्द का लिखा संवत अशुद्ध है। अतएव वादी के करने का काम हम ही करके प्रचलित विक्रमी संवत की मान्यता की परीक्षा करते है। परीक्षा करने के पहिले एक यह सिद्ध हुई बात स्मरण कर लेनी चाहिये कि आज तक सर विलियम जोन्स मिस्टर सैम्युएल इर्विन, कोलब्रुक, बैण्टली, टाड, लैसन, डाक्टर भाऊ दाजी बुल्हर, ह्विटनी, अल्बीरूनी डाकुर हार और डाक्टर कर्ण आदि ने जो जो शोध बड़े बड़े परिश्रम से विक्रमादित्यजी का ठीक समय निश्चय करने के लिए कई एक प्रकारो से अर्थात् विक्रमादित्यजी के समकालीन राजा और ग्रंथकर्त्ता आदि ने समयादि का भी विवरण करके किये हैं उनके सिवाय इस प्रकार से सिद्धान्त कर लेने के कि वर्तमान विक्रमी मे से १३५ वर्ष घटाने से शालिवाहन का शक और ५६ वा ५७ घटाने मे ईस्वी सन् और इसी प्रकार से अन्य संवत भी और इसी हिसाब से ईसा ससीह के ५६ वा ५७ वर्ष पहिले कोई विक्रम नाम का राजा हुआ था कि जिसका यह संवत प्रचलित है, न तो कोई और फल निकला है और न कोई वैसा प्रामाणिक प्रत्यक्ष प्रमाण किसी को मिला है और न कोई आज दे सकता है कि जैसा विचारे स्वर्गवासी चंद कवि के लिखे संवतों को सिद्ध को करने के लिए बड़ी धूमधाम से हम चाहते हैं। क्या यह न्याय है कि विक्रम के प्रचलित संवत को सिद्ध करने के समय तो हम गोलमाल कर जावें और चंद के संवत को सिद्ध करने के लिये दूसरे से प्रत्यक्ष प्रमाण मांगे ? फिर विचार कीजिए कि संस्कृत भाषा के कोषादि में जो यह तत्र शककारकस्य

विक्रमादित्यस्य हननात शालिवाहनस्य शकर्तृत्वम" लिखा प्राप्त होता है और आईन अकबरी के ग्रन्थकर्ता ने भी यही आशय ग्रहण किया है। इससे विक्रमादित्यजी का मरण तो १३५ में होना निश्चित ही है तथा १३५ वर्ष तक राज्य करना भी स्वतः सिद्ध है। अब रहा यह कि विक्रम के संवत का प्रारम्भ उनके जन्म से अथवा गद्दी पर बैठने के दिन से अथवा गद्दी पर बैठने पीछे किसी बड़े कार्य के करने के दिन से हुआ है। यदि ज्योतिर्विदाभरण को कदाचित् सत्य होने की अपेक्षा असत्य ही मानें और उसे किसी भी समय में बना क्यों न ग्रहण करें तथापि उसके अतिरिक्त कोई अन्य प्रमाण दृष्टि में नहीं आता कि जिसके इस "निहन्ति यो भूतलमण्डले शकान्। सपञ्चकोटिघनजदलप्रमान् कलौ॥ स राजपुत्र शककारको भवेत्। नृपाधिराज्य ह्यनुशासकर्तृ हा॥" वाक्य के अनुसार पचपन करोड़ शकों को अथवा किसी शक कर्ता को मारने से विक्रमी संवत् का प्रारम्भ होना ही अति सम्भावित प्रतीत होता है। तदनन्तर यह अनुमान करना भी अनुचित नहीं है कि विक्रम ने कुछ अपने बालकपन में तो ऐसा बड़ा साका किया ही न होगा किन्तु उस समय उनकी कम से कम २५ वर्ष की वय तो भी होगी कि जिससे १३५ + २५ = १६० एक सौ साठ वर्ष की सब वय सिद्ध होती है। निदान उसका हम पृथ्वीराजजी और समरसीजी के ९० वर्ष तक न जी [illegible] अनुमान तो अपेक्षा [illegible] समझा सकते हैं। सारांश यही है कि [illegible] विक्रम की १३५ वर्ष की [illegible] जो अपने हिसाब [illegible] अनन्द [illegible] नहीं है और प्रचलित विक्रमी संवत् [illegible] दशमव [illegible] नन्द का समय मिला हुआ है और [illegible] निर्दोष [illegible] नहीं है। अर्थात् प्रचलित विक्रमी संवत् [illegible] प्रकार सिद्ध [illegible] प्रमाण नहीं दे सकता था यह जिस प्रकार से आज माना जाता। उसी प्रकार पृथ्वीराजरासा के संवत् ९० । ९१ वर्ष के अन्तर के मान जाने में भी कुछ हानि दृष्टि नहीं आती। हमको एक बड़ा शोक इस बात का है कि यदि विद्वानों ने रूपक ३५५ और ३५६ को एक दूसरे की संगति लगाकर विचारा होता और रूपक ३५६ को बिल्कुल ही न छोड़ दिया होता तो रासो के संवतों के विषय में संदेह ही नहीं हुआ होता क्योंकि वे दोनों रूपक मानो खड़े हुए पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि हमारे आशय ये है।

५. पाचवें चंद के नवे नन्द के समय को नहीं ग्रहण करने का एक यह भी प्रबल कारण सब के ध्यान में आ सकने जैसा है कि महानन्द को नौ पुत्र थे, आठ तो विवाहिता रानियों से और एक चंद्रगुप्त नामक मुरा नाम की नाइन उपस्त्री से। हमारी इस बात को भी स्मरण में रखना चाहिये कि मुरा नाम की नाइन से उत्पन्न होने के कारण चंद्रगुप्त और उसके वंशज मौर्य कहलाये हैं।

अन्य देश देशान्तर के मनुष्यों की अपेक्षा हमारे स्वदेशीय बन्धुओं के समीप कुलीन और अकुलीनों में परस्पर डाह वैर का होना कोई आश्चर्यदायक बात नहीं है क्योंकि यह व्यवहार सदा से बना आया है और आज भी सब छोटे बड़ों मे विद्यमान है अर्थात् कोई अकुलीन चाहे जितनी उन्नति की दशा को क्यों न प्राप्त हो जाय और कोई कुलीन चाहे कैसा दरिद्र भी क्यों न हो जाय किन्तु वह कुलीन उस अकुलीन को संकर ही समझेगा। और इससे सदा दोनों से परस्पर द्वेष रह कर जो जब प्रबल होगा तब वह उस निर्बल को अवश्य नाश कर देगा और वे दोनो अपनी वंशावली मे अपने अपने वैरी का नाम तक नहीं गिनेंगे। इसी कारण से हमारे आर्य काल निरूपकों (The Arya Chronologists) की भी यह शैली हो गई है कि जो स्वयम् कुलीन है अथवा कुलीनो के पक्षपाती है वे उस अकुलीन राजा के नाम और समय को अपनी सपादित ख्यात में नहीं लिखते हैं और उसके समय आदिक को या तो उसके आगे पीछे के किसी कुलीन राजा मे मिला देते हैं अथवा ऐसे स्थलो मे यह लिख देते है कि इतने समय तक "कटार अथवा तरवारि ने राज किया इत्यादि"। इसके अनेक उदाहरण राजपूतों की वंशावलियों मे मिल सकते हैं परन्तु एक ऐसा आधुनिक उदाहरण है कि जिस को सर्व साधारण जानते है वह मेवाड राज की वंशावली मे बनवीर का है उससे ही विचार देखिये। क्या मेवाड देश के परम कुलीन महाराणाजी साहब और क्या और कुलीन उमराव सरदार और पासवानादि लोग और क्या हम जो कदाचित् मेवाड की ख्यात (Chronicles) लिखें तो बनवीर का नाम और उस का समय अपनी कुलीन अवली मे न तो किसी ने मिलाया है और न हम मिलावेंगे किन्तु उसका वृत्त सब के जानने के लिये हम एक पृथक टिप्पण मे लिख देंगे कि जिसस हम को पुरातत्ववेत्ता ग्रन्थ का चोर न ठहरावें और जो कोई कदाचित् हम को ऐसा करने के कारण मुतअस्सिब अर्थात् दुराग्रही भी कहेंगे तो हम उसका अपनी एक अति प्रिय पदवी समझकर उस पर अभिमान करेंगे। इसी लिये कुलीन क्षत्रियों के अभिमानी चंद बरदाई ने विक्रमादित्यजी के समय मे से अकुलीन मौर्य्य समय ९० । ९१ वर्ष का ह्रास करके शुद्ध क्षत्रिय समय ग्रहण किया है और उसका नाम विक्रम का अनन्द संवत् अर्थात् पृथ्वीराजजी का तृतीय शक रक्खा है। हम यह यहां तक भी मान कर कह सकते हैं कि यदि आज इस विषय को समर्थन करने को कोई भी प्रमाण न मिले तथापि चंद की निज-काल-निरूपण शैली तो स्वयम् सिद्ध ही है।

६. छठे, चंद के प्रयोग किये हुए विक्रम के अनन्द संवत् का प्रचार बारहवें शतक तक की राजकीय व्यवहार की लिखावटों में भी हमको प्राप्त हुआ है अर्थात् हम को शोध करते करते अपने स्वदेशी अंतिम बादशाह पृथ्वीराजजी और रावल समरसीजी और महाराणी पृथाबाईजी के कुछ पट्टे परवाने मिले हैं कि उनके संवत्

भी इस महाकाव्य में लिखे संवतों से ठीक-ठीक मिलते हैं और पृथ्वीराजजी के परवानों में जो मुहर अर्थात् छाप है उसमें उनके राज्याभिषेक का सं० ११२२ लिखा है। इन परवानों के प्रतिरूप अर्थात् Photo हमने अपनी ओर से एशियाटिक सोसाईटी बंगाल को भेट करने के लिये अपने स्वदेशी परम प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता डाक्टर राय बहादुर राजा राजेन्द्रलाल जी मित्र एल०एल० डी० सी० आई० ई० के पास भेजे हैं और उनके अकृत्रिम होने के विषय में उनसे बहुत कुछ पत्रव्यवहार हुआ है। यदि हमारे राजा साहब अकस्मात् रोगग्रस्त न हो गये होते तो उन्होंने हमारे इस बड़े परिश्रम से प्राप्त किये हुए प्राचीन लेखों को अपने विचार सहित पुरातत्त्ववेत्ताओं की मंडली में उपस्थित किया होता। इन परवानों के अतिरिक्त हम को और भी कई एक प्रमाण प्राप्त होने की दृढ़ाशा है कि जिनको हम उस समय विद्वत् मंडली में उपस्थित करेंगे कि जब कोई विद्वान् उनको कृत्रिम होने का दोष देगा। देखिए जोधपुर राज्य के काल- निरूपक राजा जयचंदजी को सं० ११३२ में और शिवजी और सैनरामजी को सं० ११६८ में और जयपुर राज्यवाले पज्जूनजी को सं० ११२७ में होना आज तक निःसंदेह मानते हैं और ये संवत् भी हमारे अन्वेषण किये हुए ९१ वर्ष के अन्तर के जोड़ने से अनन्द विक्रमी होकर सांप्रत काल के शोधे हुए समय से मिल जाते हैं इसके अतिरिक्त रावल समरसीजी की जिन प्रशस्तियों को हमारे मित्र महामहोपाध्याय कविराज श्यामलदासजी ने अपने अनुमान को सिद्ध करने को प्रमाण में माना है वे भी एक अन्तरीय हिसाब से (indirectly) हमारे शोधे किये इस अनन्द संवत् को और उसके प्रचार को पुष्ट और सिद्ध करती हैं। देखिए और इन दो ध्रुवों को अपने ध्यान में रख लीजिए कि प्रथम तो रावल बापाजी के नाम पर सब ख्यात की पुस्तकों में सदैव से सं० १९१ लिखा चला आता है जिसका कर्नल टाड साहब ने तो बल्लभी के नाश से चीतोड़ प्राप्त होने तक का समय माना है और मेवाड़ के छोटे छोटे लड़के तक इतना अवश्य जानते हैं कि बापाजी सं० १९१ में हुए और उन्होंने १०१ वर्ष राज्य किया अथवा उनकी वय १०१ वर्ष की हुई और ऐसे आज तक के इस बड़े निश्चय के साथ सर्वसाधारण के मानने को महामहोपाध्याय कविराजजी भी कदापि अस्वीकार नहीं कर सकते हैं। दूसरे, रावल समरसीजी के नाम पर भी उसी तरह सर्वसाधारण के दृढ़ निश्चय के साथ ११०६ का संवत् ख्यातियों में लिखा हुआ बराबर चला आता है। अब हमारे पाठक उक्त सब प्रशस्तियों के सब संवत् अर्थात् १३३२, १३३५, १३४२, और १३४४ में से बापा जी के पूर्व का समय १९१ घटाकर देखें तो ११४१; ११४४, ११५१ और ११५३ पावेंगे जो हमारे अनन्द विक्रमी से मिल जाते हैं। क्या ये प्रशस्तियां भी हमारे अनन्द विक्रमी संवतों से आंतरीय हिसाब से नहीं मिल जाती हैं? ये क्यों मिल जाती है इस बात के भेद को हम अपनी समझ के अनुसार जानते हुए भी अभी प्रकाश नहीं करते हैं किन्तु किसी उचित

सभा पर उसे शास्त्रार्थ के साथ प्रकाश करके अपने मेवाड़ राज की वंशावली को शुद्ध और प्रतिपादन कर मेवाड़ देश की एक अमूल्य सेवा करेंगे ॥

सातवें यदि कोई यह तर्क करे कि राजा नन्द के विक्रमादित्यजी से पहिले अथवा पीछे होने का मतान्तर प्राचीन समय के विद्वानो में होना कुछ भी सिद्ध हो जाय तब हम यह अनुमान कर सकते हैं कि अनन्द और सनन्द मतो के भेद अवश्य हो सकते है । अतएव हमारा कहना यह है कि जिस किसी को इस विषय का कुछ मतान्तर हो वह एशियाटिक सोसाइटी बंगाल के स्थापन—करनेवाले सर विलियम् जोन्स साहिब (Sir William Jones) लिखित (The Chronology of the Hindus) हिन्दुओं का काल निरूपण नामक विषय के अंतिम दो तीन लेख खंड अर्थात् फिकरे पढ़कर समझ ले (देखो एशियाटिक रिसर्चेज पुस्तक २) परन्तु स्मरण रहे कि हम राजा नन्द का विक्रम से पहिले होना अपने देशी शास्त्रो के अनुसार मानते है ॥

पाठको ! रूपक ३५६ भी पुरातत्व विद्या मे बड़ा उपयोगी है । उस से आपको मालूम होगा कि चंद यह तात्पर्य्य वर्णन करता है कि जिस ११०० अथवा १११ में पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए हैं वह सम्वत् कैसी है कि उसी ११०० अर्थात् १११५ मे धर्म-सुत हुए थे तथा उसी ११०० अथवा १११५ से विक्रमादित्यजी भी हुए थे और उसी से अर्थात् विक्रम से ११०० अथवा १११५ वर्ष पीछे पृथ्वीराज जी हुए हैं कि जिनका यह तृतीय शक मैं ने विप्रगुप्त [ब्रह्मगुप्त] की गुन कर लिखा है । (क्यो विप्र गुन गुप्त) क्या चंद यह अमूल्य पुरातत्व इस रूपक मे नहीं कहता है ? नही, वह हमको निःसंदेह यही कहता हुआ दृष्टि आता है !! यदि यहां धर्मसुत का अर्थ युधिष्ठिर का ग्रहण हो सकता है तो हमारे इसी मत कि का विक्रम से युधिष्ठिर तक का ११०० अथवा १११५ वर्ष का अन्तर मानना मिस्टर बैन्टली साहब के अनुमान १ १३ के से बहुत मिलता हुआ है अर्थात् उस मे केवल २३ अथवा ८ वर्ष का ही अन्तर है । और यह हमारे स्वदेशी कालनिरूपको की गणना से भी मिलता हुआ है, क्योकि ११०० अथवा १११५ युधिष्ठिर से क्षेमक तक तथा उससे विक्रम तक ११०० अथवा १११५ और विक्रम से पृथ्वीराजजी तक ११०० अथवा १११५ और इस गणना के अनुसार ८१४ कलिगत मे युधिष्ठिर हुए । तथा चंद के कहे विप्रगुप्त कि जिसको हम ब्रह्मगुप्त होना अनुमान करते हैं उसके विषय में मिस्टर बैन्टजी साहब यह कहते हैं कि वह विक्रमी ५८३ तदनुसार ५२७ ई० में हुआ था । उसने ब्रह्म-कल्प की गणना का प्रकार स्थापन और प्रकाश किया था कि जिस पर आधुनिक ज्योतिष का आधार है और ऐतिहासिक संवत् भी उसी के अनुसार परिवर्तन हुए हैं (देखो एशियाटिक रिसर्चेज पुस्तक ८ पृष्ठ २३६—७) इस ब्रह्मगुप्त की गणित में और अन्य ज्योतिषाचार्यों के सिद्धान्तों में कुछ अन्तर है जिसके लिये अन्य कोई कोई इस ब्रह्मगुप्त को दोष देते हैं । इस का

सोमेश्वरजी के अपूर्व तप से पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए

श्लोक सोमेश्वर महाबाहो। तस्यापूर्व तपो गुणै ॥
तेने पुण्यं जगज्जेता। गर्भान्ते पृथुराडयम् ॥
॥ छं० ६९६ ॥ रू० ३५७ ॥

सोमेश्वरजी का राव (वेन) को बधाई देना

पद्धरी अनगेस पुत्रि हुअ पुत्र जन्म। बिज्जल चमकि जनु मेघ घन्म ॥
वद्धाइ राव * सोमेस दीन। इक सहस हेम हय हुकम कीन ॥छं० ६९७॥
दिय ग्राम एक हय इक्क हथ्थ। परिग्रह प्रमाद मह कीन तथ्थ ॥
नीसान बाजि दरबार जोर। घन गज्जं जान दरिया हिलोर ॥छं० ६९८॥
पधाराइ राइ सुष दरस कीन। फिन ब्रम्म पुन्य फल मान लीन ॥
करि ज्ञान ब्रम्म मनि ग्रंथ सोधि। वेदोक्त विप्र वर बुद्धि बोधि ॥छं०६९९॥
मंगल उच्चार करि नृत्य गान। अछ्छरि अलाप सुर भुवन जान ॥
॥ छं० ७०० ॥ रू० ३५८ ॥

कुछ विवरण Mr. Samuel Davis लिखित हिन्दुओं की ज्योतिष विद्या The Astronomical Computations of the Hindus नामक लेख के पढ़ने से ज्ञान हो सकता है (देखो एशियाटिक रिसर्चेज पुस्तक २)

इस संवत् सम्बन्धी प्रसङ्ग में हमारा अंतिम निवेदन यह है कि यह पुरातत्वविद्या ऐसी बड़ी सूक्ष्म और अथाह गहरी है कि जो विद्वान इसमें कदाचित् थोडा सा भी चूक जाय तो वह उसमें बह जाता है और इसके खारे पानी के समुद्र में तिरना बहुत कठिन है और उस में पड़ी हुई किसी वस्तु को वही गोताखोर अर्थात् शोधक निकाल सकता है कि जिसे धर्मरूपी प्राण को शुद्ध अन्तःकरण में स्थिर करके गोता मारने का अभ्यास होता है।

३५७ पाठान्तर सोमेसर। सोमेस्वर। तस्या। पुत्र। तय। गुन। गुणे पुन्य। जगज्जेता गर्भान्ति पथिराजय गर्भान। प्रिथीराजयो ॥

इस रूपक के शुद्ध और अशुद्ध पाठों को सूक्ष्म दृष्टि से देखने से ज्ञात हो सकता है कि दुष्ट लेखकों ने उनको कैसे कैसे भ्रष्ट कर दिया है कि जिसके लिये स्वर्गवासी बिचारे चंद को हम लोगों के दिये अनेक दोष सहने पड़ते हैं ॥

* देखो, मालूम होता है कि चंद यहां अपने बाप का स्पष्ट नाम नहीं लेकर महाराजे से राव शब्द प्रयोग कर राव वेन का निर्देश करता है ॥

३५८ पाठान्तर अनगेस। हुव। बिजल। रि ल्लि। चमक। जुनु। मेघ। जन्म। बद्धाय। राज। सोमेस। दीय। ग्राम। इक। इक। हथः। हथ। परिगह। परीग्रह। कीन। तथ। बज्जिय। गजि। जानि। पधराय। राय। सुष। सरसन। हरष। कर्म। पुव। मानि। क्रंम्म। मनि॥ वेदेक्त। विप्र। बुधि। प्रमोधि। गांम। ग्यांन। अछिर। अछर। सुरं। भूवन। जांनि।

पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुणों का वर्णन

साटक --जन्मोतरि गुन जन्म राजन् वरं, चालीस वर्षं व्रती ॥
सा भोगं धर लछ्छि टिलति वरं, पंजाब पंचौ पथं ॥
इंन्द्रप्रस्थय संभरी ववरयं, सोमेसजा जोतयं ॥
भुंक्तं मुक्तय बंधि गज्जन वरं, जन्मं करं मुक्तयं ॥छं०७०१॥रू०३५९॥

सोमेसजी को पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुण सुनकर हर्ष और शोक होना

कवित्त -सोम वत्त सुनि श्रवन । हर्ष अरु सोक उपन्नो ॥
दैव काल संजोग । तपै ढिल्ली धर थन्नो ॥
कहै व्याम संभरी । क्रम्र इह बत्त प्रमानं ॥
कि जानै कि होइ । घरी इक घट्टन जानं ॥
निम्मान मान संभर धनी । सुनी कित्ति अनगेस बर ॥
मंत्री प्रमान सब इष्ट गुरु । कहै राज पृथ्वीराज बर ॥छं० ७०२॥रू०३६०॥

विक्रम के सदृश पृथ्वीराजजी हुए कि जिन की बुद्धि का वर्णन चंद करता है

दूहा -विक्रम राज सरीस भो । बुधि ब्रंनन कवि चंद ॥
भूत भविष्यत व्रत्तमन । कहत अनूपम छंद ॥छं० ७०३ ॥ रू०३६१ ॥

पृथ्वीराजजी के जन्मसमय के ग्रहों की स्थिति

दूहा --ग्रह स पंच चव हंम हथ । लगन मृ अष्टम मंद ॥
दुनिया गुरु मेषह नरनि । चिवह जनम नरिंद ॥छं० ७०४ ॥ रू० ३६२॥

सोमेश्वरजी का दरबार में बैठ ज्योतिषियों से पृथ्वीराजजी की जन्मपत्री का फल पूछना और पंडितों का फल वर्णन करना

पद्धरी दरबार बैठि सोमेस राइ । लीने हजूर जोतिग बुलाइ ॥
कहौ जन्म कर्म बालक विनोद । सुभ लगन महूरत सुनत मोद ॥छं० ७०५॥

---

३५९ पाठान्तर --जमोतरि । राजन्म । वर । चालीस । वंर । घटी । सोभाग्यं । सौभाग्यं । लछि । दिलित । दिल्लित । वर । पचं । पंच । इंद्रप्रस्थ । बवरय । जोतियं । भुक्त । वर । जन्य ॥

३६० पाठान्तर --सोम । वती । उपनो । उप्पनो । देव । संजोग । ढिली । धर । थंनो । क्रम । वत । जाने । होय । यक । घटिन । जांन नृमांन । संभरि । सुतिकिन्ती । प्रमान । प्रिथीराज । पृथीराज ॥

† यह रूपक हमारे पास की और सब पुस्तकों मे तो है किन्तु सं० १७७० वाली में नहीं है ।

३६१ पाठान्तर --सरीर । बुद्धि । ब्रनन । वर्त्तमन ॥

३६२ पाठान्तर --हंम सह । लेग्न । थले । गुर । तरणि जन्म । नरिंद । नरिंद: । भरिंद ।

संवत्त इक्क दस पंच अग्ग। वैसाष मास पष कृष्ण लग्ग॥
गुर सिद्धि जोग चित्रा निषत्र। गर नाम करन सिसु परम हित्त॥छं० ३०६॥
ऊगा प्रकास इक घरिय राय। पल तीस अस त्रय बाल जाति॥
गुरु बुद्ध सुक्र परि दसै थान। अष्टमै वार शनि फल विनान॥छं० ३०७॥
पत्र दुअ थान परि सोम भोम। ग्यारमै गह पल करन होम॥छं० ३०८॥
बारमै सूर मो करन रग। अनमी नमाइ तिन करै भंग॥
बिन पेम सेत्र रहि है न कोइ। भजै मित्राम गुन न दिन होइ॥छं० ३०९॥
प्रथिराज नाम बल हरै छत्र। दिल्लीय तपत मडै सु छत्र॥
चालीस तीन तिन वर्ष साज। कलि पुहमि इद्र उद्धार काज॥छं० ३१०॥
पर लहै द्रव्य पर हरै भूमि। सुत्र लहै अग जब होइ झूमि॥
बरनीय अष्ट दुय लेय व्याह। दुर्गं तात थपि अप्प वाहि॥ छं० ३११॥

---

३६३ पाठान्तर —तीन। राय। हजुर। पाडत। बुधाय। कम्म। बालक। महरत। सवत्। सवतह। ईस दस। दह इक। दश पच अग्र। पच अग्र। वैशाख। तिथि। पष। कृ॰ ण। सिद्धि। सिधि। जोग। योग। निषत्र। नक्षत्र। गुरु। गुरु। सिसु। घरी। जाति। गुरु। दसम। दशम। थान। अष्टमे थान। शनि। विनान। दुअ। थान। सोम भोम। होम। बारमे। करण। करै। सैव। है कोई। राय। भजे। मेत्राम। सुग। त। होइ। नाम। हरै। स्तुत्र। शत्र। दिल्लिय। दिल्लिय। मडे। बदौवाली में= चालीस वर्ष तिन राज साज। कलिस। पुहमि। हरे। भूम। सुत। भूम। बरनीय। बरनीज। अष्ट व्याह। लेइ। व्याहि। दंगग। दंग। तीय। चाहि। विरद। उचार। सको। जपि। सी। सुनि। गा। गान। हय। गाय। द्रव्यान। ब्रह्माम। भगार। झूट। नवाल कुल। कल। उच्च। अहित। गोचन। गोतन। कुरग। जाय। मधि। ग्रेह। नेह। गय। मगध। नाशा। अघाय। निगमन। छत्तीस। कदुलाय। यदन।

जैसे कवि चद रूपक ३६० और ३६६ मे अपनी प्राचीन गूढ भाषा के गूढार्थ मे पृथ्वीराजजी का जन्म सवत् वर्णन कर आया है वैसे ही यहां भी वह इन रूपक ३६२ और ३६३ मे उनकी जन्मपत्री तथा उसके ग्रहो का फलादेश वर्णन करता है। इन दोनो रूपको के पाठ जहा तक हमारे पास की पुस्तको से शुद्ध हो सके वहा तक हमने शोध दिये है उनके इतने ही शुधने पर जो कई एक शका अब तक लोग करते थे वह दूर हो गई। और जो इसी तरह और भी कुछ प्राचीन पुस्तकें मिल जावें और उनसे यह रूपक फिर शोध दिये जावे तो आशा है कि इन रूपको मे लिखी ज्योतिष शास्त्र सबधी सब बात मिल जावे और विद्वानो की जो जो शंकाएं अब भी बाकी रहती हैं उनका भी निवारण हो जाय। इसके अतिरिक्त हमारे पाठक यह अच्छी तरह जानते हैं कि इस रासो जैसी भ्रष्ट लिखित प्राचीन पुस्तकों मे अथवा वैसे ही कोई कोई बडे प्रतापी मनुष्यो की जन्म-

संषेप विरद उच्चार कीन । क्यौं सकौं जंपि मो बुद्धि हीन ॥
सुनि रइ दान मंड्यौ अपार । है गै सुवस्त्र द्रव्या न पार ॥छं० ७१२॥
सब सहर नारि शृंगार कीन । अप अप्प झुंड मिलि चलि नवीन ॥
थपि कनक थार भरि द्रव्य दूब । पट कूल जरफ जर कसी ऊब ॥छं० ७१३॥
अछ्छित अनूप रोचन सुरंग । मृदु कमल हास लोइन कुरंग ॥
इक जात मद्धि इक फिरत गेह । पहिराइ परम पर बढत नेह ॥ छं० ७१४ ॥
दरबार भी बरनी न जाइ । मृगध वास नासा अगाइ ॥
विगसंत बदन छतीस बंस । जदुनाथ जन्म जनु जदुन वंस ॥
॥ छं० ७१५ ॥ रू० ३६३ ॥

पत्री अथवा ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिसका कुछ अन्वेषण किया जाय ऐसा कुछ विषय हम को वर्त्तमान समय में कहीं लिखा हुआ प्राप्त होता है उसको यथा-योग्य रीति शोध लेना कैसा कठिन है । उसमें भी चंद की जैसी गढ़ार्थ की कठिनता और ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तियों के मतान्तर पर दृष्टि दी जावे तो प्रत्येक सज्जन मनुष्य सुखपूर्वक कह सकता है कि यह कार्य बहुतही कठिन है और जो कदाचित् ऐसी कठिनता का कुछ पता लगा सके तो हमारे स्वदेशी जगत विख्यात ज्योतिष शास्त्राचार्य पंडितवर श्री बापूदेवजी शास्त्री अथवा उन के शिष्य वर्ग में से भी कोई लगा सकते है, किन्तु अन्य के वश का यह काय नहीं है । इस जन्मपत्री को शोधने के लिये हमने बड़ा परिश्रम कर रखा है अर्थात् जितने पाठान्तर रासो की भिन्न भिन्न पुस्तकों में से मिलते जाते है और जितनी भिन्न भिन्न प्रकार की पृथ्वीराज जी की जन्मपत्रियां भरतखंड में से मिलती है वे भी एकत्र की जाती है और ब्रह्मगुप्त रचित ज्योतिषशास्त्र की पुस्तक भी प्राप्त करने का उद्योग कर रहे है जिसका चंद का आश्रय करना उसकी शैली से अनुमान होता है । इस प्रकार से शोध होने पर हम इस जन्मपत्री के विषय में जिस विद्वान के गणित के अनुसार जो बात निश्चय होगी वह प्रकाश करेंगे । किन्तु अभी हम कुछ उन शंकाओं के विषय में भी कहते है कि जो इस विषय में महामहोपाध्याय कविराज श्री श्यामल-दासजी ने कवि का सरल और स्पष्ट अर्थ न समझकर केवल प्रतिकूल अनुमानजन्य भ्रम के वश हो अपने खंडन ग्रंथ में की हैं -

१. प्रथम कविराजजी ने पृथ्वीराजजी के जन्म संवत् के प्रकाश करनेवाले रूपक ३५५ के साथ का रूपक ३५६ जैसे अपने खंडन-ग्रंथ में छोड़ दिया है, वैसे ही यहां भी उन्होंने रूपक ३६२ को छोड़ कर केवल रूपक ३६३ के आधार पर जन्मपत्री के संबन्धित दोष दिये हैं । इन दोनों स्थलों को हमारे विद्वान पाठक विचार कर समझ सकते हैं कि रूपक ३५६ और ३६२ को छोड़ देना उचित था कि नहीं और उनका रूपक ३५५ और ३६३ के साथ पूर्ण संबन्ध है कि नहीं । यदि पूर्ण संबन्ध

है तो निर्णय करने के समय उनका त्याग देना किसी वास्तविक पुरातत्ववेत्ता के लिये कैसा अनुचित कर्म है ॥

२, दूसरे जो कुछ दोष इस विषय मे दिये गये है वे मालूम होते है किसी एक पुस्तक के पाठ पर से ही दिये गये है । किन्तु मै आशा करता हूँ कि डाक्टर होर्नेली साहब कि जिन्होने अपने हाथ मे रासो के कुछ भाग को बडी सूक्ष्म दृष्टि देकर शोधा है वे भले प्रकार साक्षी दे सकते है कि इस ग्रंथ के पाठान्तर, अपपाठ, विशेष पाठ और न्यून पाठ आदिक की क्या दशा है और क्या किसी एक पुस्तक के पाठ पर ही किसी बात का निर्णय होना उचित है ॥

३ तीसरे यदि रूपक ३६२ न छोड दिया गया होता और पुरातत्ववेत्ताओं के निर्णय करने की रीति मे ध्यान दिया गया होता तो कविराजजी अपनी कितनीक शंकाओं के समाधान स्वयम इन रूपको और भिन्न भिन्न पाठान्तरो से जान सकते थे, जैसे कि---

(क) रूपक ३[illegible] मे पृथ्वीराजजी के [illegible] की [illegible] ज्ञात होती है । यदि तिथि की [illegible] भी [illegible] कवि ने वह चित्रा नक्षत्र [illegible] अनुमान [illegible] ने पहला [illegible] की [illegible] है [illegible] । हम ज्योतिष शास्त्र [illegible] प्राचीन प्रणाली चली आती है कि [illegible] को भी [illegible] वेदाङ्गो मे [illegible] गुरु [illegible] करते है । उनके अनुसार हम यह कह सकते है कि हमारे आर्य मासो के नाम नक्षत्रो पर से पडे है और प्रत्येक महीने का नक्षत्र सुदी १४ किंवा पूनम अथवा वदी प्रतिपदा के दिवस मे होना है अतएव इस रूपक के स्थान मे कोई ऐसी तिथि थी जो भ्रष्ट हो गई है देखो, कविराजजी ने 'वैशाख तृतीय पक्ष कृष्ण लग्ग" पाठ लिखा है उसके स्थान मे हमारा स० १६४३ । १८३० और १[illegible] की पुस्तको मे "[illegible] वैसाख मास पष कृष्ण लग्ग वा अग्ग" पाठ [illegible] लिखा है और यह एक प्रकार मे ठीक भी दीखता है क्योकि रूपक ३६२ मे रवि तिथि [illegible] आया है अतएव अब वह यहा शेष मास और पक्ष कहता है । चित्रा नक्षत्र के विषय मे कुछ गोलमाल किसी प्रकार से दृष्टि नही आता और वैशाख के विषय मे कुछ गडबड सी दीखती है अतएव जो कोई चित्रा से चैत्र मास का होना अनुमान करे तो हमारी सम्मति मे ता वह कोई आश्चर्यदायक बात नही है ।

(ख) कविराजजी ने कवि के कहे 'बारमै सूर सो करन रग' पर ही विशेष दोष दिया है और उसका बारहवें घर मे होना असभव माना है । तथा इतनी ही बात पर दोष देकर अन्य ग्रहो को कुछ शोध नही किया है । परतु जो वे

रूपक ३६२ के तीसरे चरण पर कुछ थोड़ी सी भी दृष्टि देते तो उनको मालूम हो जाता कि चंद कवि मेष का सूर्य होना स्वयम् कहता है जो सभव भी है "दुतिया गुरु मेषह तरनि" इससे यह भी समझ सकते थे कि जब मेष के सूर्य का बारहवें घर में होना कवि कहता है तब वृष लग्न भी है और "ऊषा प्रकाश इक घरिय रात" से कवि का गूढार्थ भी यह है कि पृथ्वीराजजी का सूर्योदय के पश्चात् जन्म होने से ऊषा एक घड़ी थी अर्थात् ऊषा के एक घड़ी पीछे उनका जन्म हुआ ॥

(ग) कविराजी के खंडन ग्रंथ में "गुरु सिद्ध जोग चित्रा नखत्त" पाठ से सिद्ध योग ग्रहण किया है कि जिसका चित्रा नक्षत्र के साथ वा पास आना असंभव है, परन्तु थोड़ी सी भी सूक्ष्म दृष्टि देकर देखते अथवा पुस्तकान्तर में पाठ देखते तो कितनीक पुस्तकों में सिद्ध पाठ जैसे हमको मिल गया वैसे मिल जाता ॥

(घ) कविराजजी ने अपने खंडन ग्रंथ में बड़ी बड़ी सूक्ष्म युक्तियों से सूक्ष्मतर अनुमान किये हैं, परंतु इस स्थान पर वे बड़ी ही बेतरह चूक गये हैं, उन्होने "गुरु नाम करन सिसु परम हित्त" का गुरु पाठ से धोखा खाकर यह अर्थ किया है कि "गुरु ने बड़े प्रेम से बालक का नाम रक्खा" किन्तु यह अर्थ बिलकुल ही असत्य है। यद्यपि इस गुरु पाठ का पुस्तकान्तर में गर पाठ स्पष्ट मिलता है परंतु वह न भी मिले तथापि पुरातत्ववेत्ता विद्वान इस छंद की प्रत्येक तुक की एक दूसरी से सगति मिलाकर भले प्रकार जान सकते है कि कवि "तिथि वारं च नक्षत्रं योगं करणमेव च" के अनुसार यहां यह कहता है कि "गर नामक करण शिशु को परम हितकारी है" न कि यह कि–गुरु ने बड़े प्रेम से बालक का नाम रक्खा'। हमारे हे सज्जन पाठकों ! आप सोचो, विचारो, न्याय करो, और सत्य सत्य कहो कि यह महाअनर्थ करने वाली भूल है कि नहीं और जो हम इतना परिश्रम केवल स्वदेशवत्सलता से उत्तेजित होकर न करते तो हमारे देश की हिन्दी भाषा और ऐतिहासिक विद्याओं की कितनी हानि संभव थी। राजपूताने के कितनेक कवि लोग अपने को हिन्दी भाषा के काव्यों में ऐसा उत्कृष्ट समझते हैं कि मानो अन्यदेशीय उनके आगे कुछ माल ही नही है, परंतु इस अवसर पर हमको मिस्टर जोन बीम्स साहब का यह कहना स्मरण आता है कि "The pandits of Rajputana even do not understand Chand beyond the general drift of the poem" राजपूताना के पंडित भी चंद के काव्य को उसके एक साधारण भावार्थ के सिवाय नही समझते है" ॥

(ङ) कविराजजी के लिखे पाठ से "पंचमें थानपरि सोम भाम" है और हमको पुस्तकान्तर से "पंच दुअ थान परि सोम भोम" पाठ मिला है। क्या इससे जन्मकुंडली के ग्रहों मे कुछ अंतर नही पड़ जाता है ? और क्या जब तक कि

पृथ्वीराजजी के जन्म होने पर क्या क्या आश्चर्यदायक बातें हुईं

कवित्त भयौ जनम पृथिराज। द्रुग्ग पर हरिय मिपर गुर ॥
भयो भूमि भूचाल। धममि धम धम्म अरिनि पुर ॥
गढन कोट से लोट। नीर सरितन बहु वढ्ढिय ॥
भै चक्र भय भूमिया। चमक चक्रित चित चढ्ढिय ॥
पुरसान थान षल भल परिय। ग्रम्भ पात भय ग्रभ्भनिय ॥
बेताल बीर बिकसे मनह। हुंकारत षह देवनिय ॥
॥ छ० ७१६ ॥ रू० ३६४ ॥

अनेक प्राचीन पुस्तकों से इन रूपकों का पाठ मिलाकर के शुद्ध न किया जावे तब तक जन्मपत्रों को अशुद्ध कह देना मानो सहसा सिद्धान्त कर लेना नहीं है? यदि कोई कोई विद्यमान पुरातत्ववेत्ता अपने सहसा सिद्धान्त कर लेने को अच्छा समझ लेना अयोग्य नहीं समझेंगे और वे इस प्रचार को एक कमल बंद नहीं कर देंगे तो पुरातत्वविद्या को निःसीम हानि पहुंचनी संभव है। यहां कन्या का चंद्रमा और पृथ्वीराजजी का पृथ्वीराज नाम होने के कारण उनकी कन्या राशि का होना स्पष्ट है और ज्योतिष शास्त्र के एक अचल ध्रुव के अनुसार यह अनुमान कर लेने का काम भी चंद ने हमारे ऊपर ही छोड़ दिया है कि कन्या के चंद्रमा के साथ केतु भी है क्योंकि राहु और केतु सदा परस्पर साथ रहते हैं ॥

३६४ पाठान्तर-जन्म। प्रिथीराज। पृथीराज। प्रथिराज द्रुग। द्रुग। भूचाक। धम। केरट। सैं। लोट। वहि। वढिय। भैचक्क भय भूमियान। भय चक्रित भूमिया। चमकि। चढिय। पुरसान। थान। परीय। ग्रभ। वैताल। विकसै। नयन। हुकारत। देवनीय ॥

इस रूपक में जो कुछ आश्चर्यदायक बातों के भाव कवि ने कहे हैं वे कोई वास्तविक आश्चर्य नहीं है किन्तु कवि लोग बड़े-बड़े प्रतापी पुरुषों के जन्मादि के वर्णन में अद्भुत रस का आश्रय करके प्रायः ऐसा प्रसंग बांधा करते हैं। देखो, जैसे यहां "धमकि धम धम्म अरिन पुर" अथवा "पुरसान थान षल भल परिय" कवि ने कहा है। वैसे ही तबकात नासरी नामक फारसी तवारीख में देखो कि महमूद गजनी जिस रात्रि को उत्पन्न हुआ था उसी समय सिन्धु नदी के किनारे के एक मंदिर का फट जाना उस में लिखा है। उससे केवल इतना ही समझ लेना चाहिये कि महमूद मंदिरों को भ्रष्ट करने और मूर्तियों को तोड़ फोड़ डालनेवाला हुआ है अतएव कवि ने उसके जन्म समय भी वैसा ही उसके प्रताप का एक चिन्ह वर्णन किया है। इस रूपक में बीर और अद्भुत रस मिले हुए हैं अतएव आक्षेप करनेवाले अथवा किसी कोमल हृदयवाले मनुष्य के कान उस के पढ़ने ही खड़े हो जाते हैं, अर्थात् रस अपना प्रभाव उसको प्रत्यक्ष दिखा देता है।

३६५ पाठान्तर –बधे। पिष। बाधैं। पल पलष। पष्य। पष। लष्षीय। लषीय। चष। मनिगनि। कंठला। सधि। कैहरि। सोहत। वालैं कैस। वारे केस।

पृथ्वीराजजी की बाल अवस्था के चरित्रों का वर्णन ॥

कवित्त—बरष बधै बिय बाल । पिथ्थ बद्धै इक मासह ॥
घरी दीह पल पष्ष । मास लष्षिय अष तासह ॥
मनिगन कँठला कंठ । मद्धि केहरि नष सोहत ॥
घूघर वारे चिहुर । रुचिर बानी मन मोहत ॥ छं० ७२६॥रू० ३६७॥
केसर सु मंडि सुभ भाल छवि । दमन जोति हीरा हरत ॥
नह तलप इक्क थह षिन रहत । हुलसि उठि उठि गिरत ॥
॥ छं० ७१८ ॥ रू० ३६६ ॥

दूहा - रज रंजित अंजित नयन । घूंठन डोलत भूमि ॥
लेत बलैया मात लषि । भरि कपोल मुष चूमि ॥
॥ छं० ७१७ ॥ रू० ३६५ ॥

पद्धरी—अगुरिन लग्गि रगि चलत लाल । मग मद्धि उठत गज हंस बाल ॥
मिलि बाल जाल फबि रहि केलि । बढि रही दुंद जनु बीज बेलि॥छं०७१९॥
जनु रमत कमल ऋत कमल अग्ग । तप तेज बद्दि मुष पित्र नग्ग ॥
सब देव तेज देषन अंग । उछार अंग अदभुत प्रसग ॥ छं० ७२० ॥
सँग बाल बैठि भोजन करंत । परिवार वस्तु लै हठ धरंत ॥
आदर अदब्ब सध्धीन देत । वगसीस करन हिय परम हेत ॥छं० ७२१॥
है हथ्थि चढन बढ्ढन आनद । मन मौज चौज कवि पढत छंद ॥
जिन हृदय कमल विद्यानि हैन । छल छंद भेद निन बुद्धि लेन ॥छं०७२२॥
पाडवार सग कायवक वेलि । धरि धूप हथ्थ बाहन झेलि ॥
गहि बग्ग हथ्थ फेरन तुरंग । नट नृत्य निपुन धावन कुरंग ॥छं०७२३॥
जल केलि करत मिलि मजन संग । अल्लोल कल्लभ जनु सरनि रंग ॥
पकवान पांन सुगंध पूर । मादक सु मोद सुष सुपन नूर ॥ छं० ७२४ ॥
षेलन अषेट सग स्वानडोर । वग्गु बधन पर गोम कोर ॥
सुप घरिय पहर दिन पाप मास । सोमेस सुर चित बढन आस ॥छं०७२५॥
जिम राम कृष्ण सुष नंद गेह । सभरिय राय तिम दसा देह ॥
॥ छं० ७२६ ॥ रू० ३६७ ॥

केसरि सुमंडि सुभ दस्सन । ज्योति [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । स [illegible] ।
परत ॥

२६६ पाठान्तर [illegible] । पुहत । [illegible] । [illegible] । मुष । चुमि ॥

२६७ पाठान्तर [illegible] । लगि लगि । [illegible] । ढैठि । अग्र । बीज । बढि । पत्रिग । पत्रि । पग । तेज । दस्सन । उदार । अदभूत । गुरग । सग । [illegible] अस्तू वस्त । हठि । अदव । सधीन । हीय । हथि । बढन । मौज । चाज । रिदै । सुहेन । विद्या सु । छल । बेदि । भेदि । छदि । बुध्धि पाठक । काहन । कैलि । धोप । धोप । हय । बाहंन । वग हथ । नृत्य नैपुन्य । तुरंग । कैलि । अल्लोल । सरभि । सुगध ।

कवित्त कै दसरथ ग्रह राम । कै * धाम वसुदेव कृष्ण वर ॥
कै कलि कस्यप कूप । जानि उपज्यौ किरनाकर ॥
कृष्ण ग्रेह कै काम । कै * काम अंगज जनु अनुरध ॥
कै * नल कस्यप अवनार । किधौ कौमार इश्व रुध ॥
लषिन वतिस बहुतरि कला । वाल वेस पूरन सगुन ॥
क्रीडन गिलोल जब लाल कर । तब * मार जानि चापक सु मन ॥
॥ छं० ३२१ ॥ रू० ३६८ ॥

दूहा छुटत गिलोला हथ्य तैं । पारन नाट पयल्ल ॥
कमल नयन जनु कामिनी । करन कटाछ छयल्ल ॥
॥ छं० ३२८ ॥ रू० ३६९ ॥

पृथ्वीराजजी का गुरु राम से सब प्रकार की विद्या सीखना

दूहा कोइक दिन गुर राम पै । पढी सु विद्या अप्प ॥
चवदस विद्या चतुर वर लई सीष पट लिप्प ॥
॥ छं० ३२९ ॥ रू० ३७० ॥

गुर । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । पगो[illegible] । कैरि । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । गाम । करणं । गुनि । [illegible] सब [illegible] है ॥

* [illegible] चिह्नित पुस्तकों में बहुत है और [illegible] किसी में [illegible] । उनका कारण हमें, विचार करने से [illegible] होता है कि किसी पंडित ने पढ़ने के समय अर्थ के लगाने की सुगमता के लिए इन सम्बन्ध के सूचन करनेवाले शब्दों को संकेत की भांति लिख लिया होगा और ऐसी पुस्तक से प्रति उतारनेवाले लेखकों ने उनको पाठ मे मिलाकर प्रति कर दी है। इस अपने समाधान की पुष्टि में कई एक ऐसे स्थल हम अपने पास की प्राचीन पुस्तकों में बतला सकते है। अतएव इनको कवि की भूल अथवा Poetical licience नहीं समझना चाहिये॥

३६८ पाठान्तर कैं । ग्रिह । राम । धांम । कै । कश्यप । जांनि । उप्पज्जयौ । किरनांकरि । ग्रैह । कांम । कांम । अनिरुद्ध । कश्यप । किधो । किधौं । कौमार । ईश्व । लषन । लषन । बतीस । बहोतरि । वैस । सुगन । जांनि । चांपक । सुमन ॥

इस रूपक की पहिली चार तुकों के चरण कई एक पुस्तकों में उलट पलट हैं, जैसे कि पहिली तुक के दूसरे चरण के स्थान मे तीसरी तुक का दूसरा चरण; दूसरी तुक के स्थान मे चौथी तुक, तीसरे की दूसरी में पहिले की दूसरी; और चौथे के स्थान में दूसरी तुक है।

३६९ पाठान्तर –हथ । हाथ । तें । पयल । कांमिनी । कटाछि । कटाक्ष ।

३७० पाठान्तर –पंद्रह । पंद्रह । पंद्र कोइक । पै । पैं । सु वउदह । चउदै । लइ सीषि । षट लिप ॥

पद्धरी लिपि सिष्ष कुंअर प्रिथिराज राज । गुरु द्रोन पास सुत धन्म ताज ॥
ॐ नमो सिद्धि प्रथमं पढाय ॥ सब भाव भेद अष्पर बताय ॥छं०७३०॥
दस पंच † दिन्न अध्येन कीन । दस च्यारि सार सब सीष लीन ॥
सीषी सु कला दस अठ्ठ च्यारि । तिन नाम कहत कबि अग्ग सारि ॥छं०७३२॥
गुरु गीत बाद बाजित्र नत्य । सोचक सु वाच्य सविचार बृत्य ॥
मनि मंत्र जंत्र ब स्नक विनोद । नैपथ विलास मुनि तत्त मोद ॥छं० ७३२॥
साकुन्न कला क्रीडन विमार । चित्रन सु जोग कवि चवत चारु ॥
कुसु मेष क ा जुत इंद्र जाल । सुचि क्रम विहार आहार लाल ॥छं० ७३३॥
सौभग प्रयोग सुगंध वस्त । पुनरोक्त छंद वेदोक्त हस्त ॥
बानिज्ज विनय भाषित्त देस । आवद्ध जुद्ध निर्जुद्ध मेस ॥ छं० ७३४ ॥
बरनन समय हस्ती तुरंग । नारी पुरुष्य पंषी विचंग ॥
भृ भू कटाछ मुल्लेप मत्य । वृप छद्म प्रश्ण उत्तर विजत्य ॥छं० ७३५॥
सुभ सास्त्र कहे गनिकह पढन्न । लिषतव्य चित्र कविता वचन्न ॥
व्याकन्न कथा नाटक्क छंद । अविधांन दरस अलंकार बंध ॥छं० ७३६॥
धातक सु कर्म सुभ अर्थ जानि । सुर सर्ग कला बहुतरि बषान ॥
॥ छं० ७३७ ॥ रू० ३७१ ॥

दूहा—कला बहुत्तर करि कुसल । अति निबद्ध जिय जानि ॥
हेत आदि जानन निपुन । चतुरासीत विग्यान ॥
॥ छं० ७३८ ॥ रू० ३७२ ॥

---

† इस दसपंच शब्द को पन्द्रह ही दिन का वाचक नहीं समझना किन्तु कुछ दिन अथवा कुछ समय अथवा थोड़े दिनों का वाचक समझना उचित है, क्योंकि रूपक ३७० में स्पष्ट कोइक दिन पाठ आ गया है।

३७१ पाठान्तर- लिपि । शिष्य । सिषि । कुअर । कुअर प्रिथीराज । गुरं । गुर । द्रोण । पासि । ध्रम । नमः सिद्ध । पढाइ । भेद । अष्यर । बताइ । बताई । अध्ययन । अध्यैन दस पंच विद्या अध्यैन कीन । सीषि । अठ । नांम । कहित । अंग । सार । गुर । नत्य । सोचक । नृत्य । वास्तुन । विनोद । नैपंथ । सुंनि । तत । साकुन । शाकुन । वितार । विचार । सू जोग । कुम । युत । सोभग । प्रयोग । पुनरुक्ति । वैदोक्त वस्त । वांनिज । भाषित आवध । युद्ध । निरयुद्ध । सैस । पुरुष । वचंग । भृं भृ । मुलेप बष । छंद । उतर । विजल्प । कहे । पठन । लिषितं व्याचित्र । लिषितव्य । वचन । व्याकरन । नाटक । नाटिक । दरसन । अलंकार । बुध । जांनि । जांण । वषांनि ।

३७२ पाठान्तर—बहुतरि । जांनि । जांनन । विग्यांन । विग्यांन ।

अरिल्ल चतुरासीत विग्यानन जानन । भर मन मन आसंका भाजन ॥
मनिहा बीर सदा मन मोदन । बहुतरि विचित्र छत्रीस विनोदन ॥छ० ७३९॥
दरगन श्रवन गीत वर वादी । न्रत्य न्रत्य पाठक पुनि आदी ॥
लेषक चित्त बाज चक्रवनि । सस्त्र सास्त्र जुद्धाकर तत्वनि ॥छ० ७४०॥
जुद्ध गनित पषी गज तुरगा । आपेटक द्रुनन जल उरगा ॥
जत्रन मत्र महोछव पत्रन । पुष्फ कला फल कथा सु चित्रन ॥छ० ७४१॥
करन पदारथ आयुद्ध केली । बहतरि सूतह नत्व पहेली॥ छ०७४२॥रू०३७६॥

दूहा कमल वदन रवि तेज वर । लषन मति बत्तीस ॥
कल नित प्रति सोदन कला । आवध धरन छत्तीस ॥
॥ छ० ७४३ ॥ रू० ३७७ ॥

साटक विद्या वस विचार सत्य विनय सौख्य समाधीनता ॥
सन्मान सुस्थान सौष्य विजय सोजन्य सौभाग्यय ॥
सपूर्ण च सरूप रूप प्रसन, चित्र सदा चारनं ॥
सारीत सजोग वाक सकल विस्तार्यते कला ॥
॥ छ० ७४४ ॥ रू० ३७८ ॥

दूहा गुन गरिष्ठ गो विप्र प्रति । पूजा दान वरीस ॥
सबद आदि दै निपुन अति । सास्त्रह सत्तावीस ॥
॥ छ० ७४५ ॥ रू० ३७९ ॥

श्लोक सस्कृत प्राकृत चैव । अपभ्रंश पिशाचिका ॥
मागधी सूरसेनी च । षट् भाषाश्चैव ज्ञायते * ॥छ० ७४६ ॥रू० ३८०॥

पृथ्वीराजजी के बत्तीस लक्षणों का वर्णन

श्लोक विनयी गुरजनज्ञाता । सर्वज्ञ सर्वपालक ॥
शरीर शोभते श्रेष्ठं । द्वात्रिंशतस्य लक्षणाम् * ॥छ० ७४७ ॥रू० ३८१॥

---

३७६ पाठान्तर—चतुरासीत । विग्यानन । जानन । भानन । मोदन । नृत्य २ । चक्रवनि । चक्रवन । सस्त्र । शास्त्र सास्त्र । युद्धा । तत्वन । युद्ध । तुरगा । आम । पाठक । उरगा । जत्रन । महोछव । पुष्फ । किला । करण । कैली । आयुद्ध । पहैली ॥

३७७ पठान्तर तेज । तेय । लछन । लषन । वतीस । सीषत । सोषति । आयुध । आउध । रन ॥

३७८ पाठान्तर सार । सौख्य । समाधीनता । समाधानता । सनमांन । सनमान । सोजन्य । सूरू । चारण संगीत । सयोग । विस्तार्यतै ॥

३७९ पाठान्तर – विप्र । दांन । सबद । दे । सासत्रह ॥

* इन रूपकों के इन चौथे चरणों में नौ अक्षरों को देखकर कुछ आश्चर्य नहीं करना चाहिये, क्योंकि सस्कृत भाषा के ग्रंथों में भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं जैसे कि दुर्गापाठ के अध्याय २ श्लोक १ में "महिषे सुराणामधिपे' ॥

काव्यजाति —अरि तर वर तुंगो । कट्टनार्थे कुहारो ॥
कुल कमल प्रकासो । तेज तप्तो दिनेस ॥
दरसन रस सेवी । कांमिनी काम मूर्ति ॥
पर वर प्रति पंचं । पालनं पार्थवानां ॥छं० ७४८ ॥रू० ३८२॥

अरिल्ल—सूरज ज्यों तप सत्रु कमोदन । फूलन अंग महा मन मोदन ॥
भूपति भूप प्रतापन भारी । हठि करि रावन ज्यों अहंकारी ॥
॥ छं० ७४९ ॥ रू० ३८३ ॥

श्लोक ज्ञानधमर्थिकामं च । बल शत्रु सिंहासनं ॥
सभार भक्तिनेश्चैना । भिधान [illegible] स्मृत ॥छं० ७५० ॥ रू०३८४॥

दूहा पाग [illegible] सीस पर । [illegible] ओनि [illegible] ॥
मनो मेर के सिखर पर । [illegible] आय ॥छं० ७५१॥रू०३८५॥
ता पर तुर्रा सुभत [illegible] । [illegible] सोभ [illegible] नाय ॥
मनु सूरज [illegible] पर । थिपन धर्यो धनु [illegible]॥छं० ७५२॥रू०३८६॥
श्रवन बिराजत [illegible] । [illegible] बने बखान ॥
मनु कमल पर अग्रज रहे । ओस [illegible] आन ।छं० ७५३॥रू०३८७॥

---

३८१ पाठान्तर [illegible]
मांगधी [illegible]
पालक [illegible] ॥

३८२ पाठान्तर [illegible] । दिनैस. । सैवी । मूर्ति । पंच । [illegible] ॥

३८३ पाठान्तर [illegible] । फूलन । सुर । ज्यों ॥

३८४ पाठान्तर—श्लोक । [illegible] । सिंघासन । [illegible] चैव । अभिधान ॥

३८५-८६ पाठान्तर सीस । ज्योंति । कै । सिखर । शिखर । परि । अहूर्यो । अहराय । तुरा । सोभै [illegible] । मनो । सूरिज । मनो सूरज । कै सीस बर । [illegible] । थपन । बिर बिन । बखान । मनो । मनो । अग्रजु । रहे । ओस । पर्योकन । पयोकण । आनि । सोनन्व । सीस । बिसाल । सोभति । मेर । शिखर । बाम । उनत । छिबन । मिसि । निरट । मनो । काम कै । ऊंग । उगै । अर्गन । अकूर ।

३९० पाठान्तर —आनन । उद्दु । दर । उदोत । समानो । मानो । आनन । [illegible] । भौंह । बिराजत । जानो । भांन । शत्रुंन । कै । कांमिनी । कुं । मकरध्वज । मानन ॥

कंठ माल मोतीन की । सोभत सोभ विसाल ॥
मेरु सिषर पारस फिरत । जानि नछित्रन माल ॥ छं० ७५४ ॥ रू० ३८८ ॥
सिस भीने सु मयंक सुष । निपट बिराजत नूर ॥
मनो बीर उर काम के । उगे आनि अंकूर ॥ छं० ७५५ ॥ रू० ३८९ ॥

अरिल्ल आनन इंदु उदोत सु मानो । जानन भोज विचष्षन जानो ॥
रवि ज्यों सत्रन के तन तारन । कामिनि को मकरध्वज मानन ॥
॥ छं० ७५३ ॥ रू० ३९० ॥

अरिल्ल जा सरनागत मानव वंछै । जा सरनागत दानव इंछै ॥
जा सरनागत देव विचारै । सो प्रिथिराज प्रिथीपति सरै ॥
॥ छं० ७५७ ॥ रू० ३९१ ॥

दूहा [illegible]राज पति प्रिथिपति । गिर मनि कुली छतीस ॥
नर [illegible] पर मित लस नजै । [illegible] गुर वरनि वर्नं स ॥ छं० ७५८ ॥ रू० ३९२ ॥
[illegible]तिन सहाय असुरह सुभट । सत नाम [illegible] ॥
तिन सु कित्ति [illegible] । [illegible] पर ॥ छं० ७५९ ॥ रू० ३९३ ॥

कवित्त चहुआन कै वंस । बीर मानिक पुत्र दस ॥
ता सु [illegible] । जनम [illegible] जपन जस ॥
ज्यों [illegible] । आदि [illegible] ज्यों जपा ॥
[illegible] वानी सु प्रमान । [illegible] मगनह [illegible] थप्पो ॥
ज्यों भयो जनम कवि चंद को । भयो जनम सामंत सब ॥
इक थान मरन जनमह सु इक । चंदहि कित्ति ससि लग्गि रव ॥
॥ छं० ७६० ॥ रू० ३९४ ॥

---

३९१ पाठान्तर [illegible] । सरनागति । सो । [illegible]राज । प्रथिराज ॥

३९२ पाठान्तर प्रिथीराज । प्रिथवीय [illegible] प्रथीराज प्रथीवी पति । गिर । कुली । [illegible] । [illegible] । तै । छतीन । छतीस ।

३९३ पाठान्तर असुरह सुरह । [illegible] ॥

३९४ पाठान्तर चहुआनारै । चहुआना कै । बंश । मानिक । मानक । [illegible] । जन्म [illegible] । उगे । ज्यो । [illegible] । भारथ । ज्यो । जप्यो । वानी । प्रमान । लगन लगनह । मगन । थप्पो । जन्म । जैसो । सामत । थान । मरेग । जन्म दिन इक । जनंम । [illegible] । [illegible] । ससी । [illegible] । रवि ॥

पाठान्तर [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥

इस रूपक से अब तक कवि इस आदि पर्व का तो उपसंहार और दशम की कथा का प्रसंग अपनी स्त्री के वार्तालाप के द्वारा बडे गूढार्थ में वर्णन करता है । हम आशा करते हैं कि काव्य के रसिक इस प्रसंग के दोहों और उनके अर्थ के गांभीर्य को अनुभव करके बहुत ही प्रसन्न होंगे ॥

एक दिन रात्रि को चंद की स्त्री का रस में आकर पृथ्वीराजजी की आदि से अंत तक कीर्त्ति वर्णन करने के लिये चंद से कहना ॥

गाथा समयं इक निसि चंदं । वाम वत्त वद्दि रस पाई ॥
दिल्ली ईस गुनेयं । कित्ती कहो आदि अताई ॥छं० ७६१॥ रू०३९५॥

चंद का अपने घर में कथा कहना और उसकी स्त्री का उसे सुनते हुए जो स्मरण आवे वह पूछते जाना

दूहा एक दिवस कवि चंद कथ । कही अप्पनें भोन ॥
जिम जिम श्रवनत सभरि । तिम पुछि मारंग नेन ॥छं०७६२॥रू०३९६॥

चंद की स्त्री का उससे पूछना कि कौन दानव, मानव और नृप कीर्त्ति करने योग्य है

दूहा कह्यौ कंत मो कवि इम । हौ पुछो गुन तोहि ॥
को दानव मानव सु को । को नृप कित्ति क होहि ॥छं०७६३॥रू०३९७॥

चंद का अपनी स्त्री को गूढ़ उपलक्षों के द्वारा उत्तर दे कहना कि केवल हरि की कीर्त्ति करने योग्य है क्योंकि उसकी भक्ति के बिना मुक्ति नहीं है

कवित्त पेट काज चढ़ि बंस । परे फर हरें अवनि पर ॥
पेट काज रिन भौम । मरै मारै सु हूर धर ॥
पेट काज वहि भार । पार प्राहारन पारै ॥
पेट काज तरु तुग । चिन्न परि घर पर ढारै ॥
इति पेट काज पापी पुरुष । बधै बट्ट लछ्छी हरन ॥
नर वर सुक्रम्म कहा नह करै । इहै उदर दुम्भर भरन ॥
॥ छं० ७६४ ॥ रू० ३९८ ॥

कवित्त मेह बिना नहि नेह । नेह बिन गेह अग्म रस ॥
पिय बिन तिय न उमग । अंग शृंगार रूप रस ॥

---

३९६ पाठान्तर सुदिन । वद । कहीय । अप्पनें । भोन । श्रवनन । श्रवनन । श्रवनह । पूछीय । मारंग । नेन ॥

३९७ पाठान्तर कवि । मो । गो मौ । कंन । ईम । हौं । हो । पुछ्यौ । पूछं । गुन । तौहि को । दानव । मांनव को कौं । को नृप । कमि । कहोहि ॥

३९८ पाठान्तर - काजि । बंन । वंश । परयइ फरअकहरें । ररई । फरहरइं । पैठ । काजि । रन । भोमि । मरे । मारे । मरै । मरें । मारें । सुं । ढरे । ढरइं । पैट । काजि । पाहारम । पैट्ट । काजि । तरु । चित्र । त्तिन । त्रिन । पार । परिय । ढारै । इन । इन । काजि । पुरुष । बंधै । बधे । लछी । बर । सुक्रम्म । कह । करहि । इहइ । ईह । भरण ॥

नायक बिन नह मेन। दंत बिन भुक्ति न होई ॥
तेग त्याग तैं रहित। कहै कीरति को लोई ॥
बिन नीर मीन राजत कहूं। छत्री बिन सूर त्तरिन ॥
मन बच्च क्रम्म निम जानि जिय। न है मुक्ति हरि भक्ति विन ॥
॥ छ० ६५ ॥ रू० ३९९ ॥

चंद की स्त्री का उससे कहना कि चित्रनेवाले को चित्र कि जिससे तू दुस्तर के पार उतरे-चहुवानकी कीर्ति चित्रने से वह क्या रंजैगा

दूहा चित्रनहारे चित्रि तूं। रे चतुरंगी नाह ॥
का चहुआन सु किति कवि। मन मनुछय हरि लाह ॥छ० ३६६॥रू०४००॥

कवित्त- तत्त हीन पुत्तरी। पंच बंधी कर नच्चै ॥
आसा नदी सपूर। जीय मनोरथ सच्चै ॥
बहु तरग तिस्नाह। राग बह ग्रह कुरंगी ॥
का चहुआना किति। कत धीरज तिर भंगी ॥
मन मोह मढ विस्तरि रह्यौ। चिता तट घट भजइय ॥
उत्तरहि पार दुतर कवी। या चहुआना रजइय ॥
॥ छ० ३६७ ॥ रू० ४०० ॥

चंद का अपनी स्त्री से कहना कि मै चहुआन का ऋण उतारता हूं

दूहा कहे गुपत गुन तैं भले। मो जिय इय अदेस ॥
रिन अप्पौ चहुआन कौ। पुच्छह पिथ्थ नरेस ॥ छं०३६८ ॥ रू०४०२॥

चंद की स्त्री का कहना कि राजा को ऋण देता है तो गोविन्द को क्यों नहीं सुमरता

दूहा चित्रनहारे हेरि चित। चित्रन हेरि कविंद ॥
जो रिन अप्पै राज कौ। तौ सुमरै न गुविंद ॥छ०३६९॥ रू०४०३॥

---

३९९ पाठान्तर विना। नट। नह। बहु। ... । गैह। पोउ। त्रिय। तीय। श्रिगार। मन। दन्त। बिन। भुक्ति। होइ। तेग। त्याग। तैं। तन। लोइ। जीवन। नग्री। सूर तारिन। सूर तरिन। वच। क्रम। कम। जानि। जीय। सु न। है। नही मुक्ति हरि भक्ति विना ॥

४०० पाठान्तर—चित्रनहारै। त्र। चहुवान। कवि। मनुछ ॥

४०१ पाठान्तर - तत्र। तत। पुतरी। पूतली। बधा। नचै। नच्चै। नंदो। सपूर। जीव। मनोरथ। वहा। सचै। बहुंत। रग। तृस्नाह। बहु। ग्रेह। कुरंगी। कां चहुवान। मोह। मुढ चता। भजईय। उत्तरिहि। दुतर। कट्टी। का। चहुवांन। पंजइय। रंजइइ ॥

४०२ पाठान्तर—कहै। तै। तैं। भलो। भले। मो। ईह अंदेश। रिण। अप्पो। कौ। सुखह पंथ नरेस। पुछह पिथ्थि नरेस ॥

श्रम जल मन मंदान करि। श्रम जल भेष न फेरि ॥
चित्त न अप्प चित्र कौं। चित्रनहारे हेरि ॥ छं० ७७० ॥ रू० ४०४ ॥

चंद का उत्तर देना कि मैं कमलासन को देखकर अकुलाया हूं, केवल भक्ति विलंब करनेवाली है

दूहा कमलासन देषत थक्यौ। भगत त्रिलंबन हार।
क्रोध अग्ग सब जग ग्रसै। ग्रसत न लग्गै वार ॥
॥ छं० ७७१ ॥ रू० ४०५ ॥

तथा चंद का कहना कि संसार में जो कुछ और सर्वव्यापी है वह वह कमलासन ही है उसी की उपमा कर मैं पृथ्वीराजजी की कीर्त्ति वर्णन करता हूं

भुजंगी वही तन त्रैलोक ससार सारं। वही तारनं सत्त भौ सिंध पारं ॥
जगत्तं अधारं निराधार योगी। वही अव्वदा संपदा नित्य मोही ॥छं० ७७२॥
वही भेद मंत्रं गजानंन जोय। वही पूरन ब्रह्म संसार भोय ॥
नवं भत्ति कौ संत ही छत्र धारी। भम्यौ ब्रह्म बुभयौ वही सिद्ध नारी॥७७३॥
जगत्तं पुरत्तं वही है नितारं। वही वासना वासुदेवं प्रकारं ॥
वही भत्त हथ्थं नच्यो कप्पिमान। वही यै वही यै वही यै निधान॥छं० ७७४॥
इकं एक आचिज्ज कीनें गुसांई। चवै चंद जो रंग गोव्यंद पाई ॥
वही की उपम्मा करै चित्ति भासौं। वही सब्ब संसार मज्झै प्रकासौं॥छं० ७७५॥
वही अंतरंगी सुरंगी निनाद। कहै राज राजीव लोचन्न सारं ॥
॥ छं० ७७६ ॥ रू० ४०६ ॥

चंद को स्त्री उसे कहती है कि ब्रह्म को ब्रह्म में देख, जो उसे देखता है उसे वह दीखता है, नर की कीर्त्ति मत गा, क्योंकि उससे और कोई बलवंत नहीं है

दूहा ब्रह्म देषि ब्रह्मान्तरत्र। हरि दिषियन दिष्याइ ॥ ३ ॥
बिज्ज छटा अग्यांन मन। गोपी हरि गो गाइ ॥छं० ७७७॥रू०४०७॥

४०३-४०४ पाठान्तर चित्रनहारे चित्र न। कवि चंद। ज्यौ अप्पौ। अपे। को। नो। समरे। समरि। गोविंद ॥ ३९८ ॥ मंदा करि। भेष न फोरि। चित्रन अप्पौ। अपें। को। चित्रनहारै ॥

४०५ पाठान्तर देषत। क्रोध। सर्प्प। ग्रहै। लगो लगै ॥

४०६ पाठान्तर तन। तारण। भव। सिंधु। जगतं। मोही। ऊंही। ऊही। सरदा। मोही। भैद। मंत्र। गजा मन। लोयं पुरनं। सोयं। भोयं। नव। भांति। शव। भ्रम्यो। जगतं। पुरतं। हेति। हैनि। वासना। वास। देवं। वास देवं। भक्ति। हथं कपिमानं। कपिमानं। नधानं। वही यैं वही यैं निधानं निधानं। इक। अैक। अेक। अचिर्ज। कीनै। कीने। गुसाइ। गुसाई। जो। रंगी। गोविंद। उपमा। करे। भासो। कही। सकल। मझै। प्रकासो। कहै। लोचंन ॥

ब्रह्म ब्रह्म हररात बर । नर जानी न गुविंद ॥
सकल घटं घट हरि रमै । ज्यौं अनेक घट चंद ॥छ०७७८॥रू०४०८॥
जस अपजस लाभिष्ट दोइ । अवगति गति न बुझाइ ॥
गोप ग्वाल बूझे नही । गोपन बूझी गाइ ॥छ०७७९ ॥ रू० ४०९॥

कवित्त कहि महियल बल किन्नौ । एक दट्ठ हरि धारिय ॥
कहि बामिग बल कित्तौ । मु फुनि करी नेत्रा मारिय ॥
सुमुँद किन्नौ गरुअत्त । अप्प भुज जोर हिलोरिय ॥
कित्तोक मबल मेरु गिरि । कमठ होइ पिठ्ठहतोल्लिय ॥
लघु बली सेग बभानवै । मुर असुरायन दिठ्ठ मह ॥
कवि चद अवर बल वैम कहि । वह तौ हरि बल्लवन कह ॥
॥ छ० ७८० ॥ रू० ४१० ॥

चंद का अपनी स्त्री को उत्तर दे कहना कि अंग अंग मे हरि-रूप-रम है

दूहा त्रिय वर ज्यो नर ज्यो मु कवि । नर तिनो नन गाइ ॥
अग अग हरि रूप रम । वन्न दिपाइ मुनाइ ॥ छ०७८१ ॥ रू०४११॥

चंद की स्त्री का उससे कहना कि अङ्ग अङ्ग मे हरि-रूप रस वर्णन कर दिखाओ

दूहा अग अग हरि रूप रम । विविध विबेक बरेन ॥
मुकति ममप्पन कन रम । जुग निनि जोग मरेन ॥
॥ छ० ७८२ ॥ रू० ४१२ ॥

---

४०७ पाठान्तर [illegible]

४०८ पाठान्तर [illegible]

४०९ पाठान्तर [illegible] बुझा । [illegible] गोपन । बुझी । गाय ॥

४१० पाठान्तर [illegible] मारी । समुद । किन्नौ । [illegible] । भुज । जोर । [illegible] । कितक । मेरु । मेर । गिर । [illegible] । दिठ । कह । [illegible] । कहि ॥

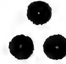
४११ पाठान्तर [illegible] । ग्राय । अग्नि । दिपाई । दिषाय । सुनाई । सुनाय ॥

४१२ पाठान्तर- विविध । बरन्न । मुगति । जुंग । जौग । सरन्न ॥

चंद का उत्तर दे कहना कि कान दे सुन मैं वर्णन कर दिखाता हूं

दूहा · कह्यौ भांमि सौं कंत इम। जो पूछै तत मोहि॥
कान धरौ रसना सरस। ब्रन्नि दिषाऊं तोहि॥छं०७८३॥रू०४१३॥

इति श्री कवि चन्द विरचिते प्रथिराज रासके आदि पर्व नाम
प्रथम प्रस्ताव सम्पूर्णम्



४१३ पाठान्तर—भांमिन। सो। जौ। पुछइ। पुछै। कांन। दिषाऊं तौहि।

उपसंहारिणी टिप्पणी

यद्यपि इस महाकाव्य के महाकवि चंद बरदाई ने इस आदि पर्व्व का उपसंहार अपनी निज काव्य-रचन-शैली के अनुसार ३९० रूपक से लेकर ४१८ तक में बड़े गूढार्थ के साथ वर्णन कर दिया है परन्तु यह भी उचित और अत्यावश्यक है कि हम भी अपनी शैली के अनुसार अपने टिप्पणों के उपसंहारार्थ कुछ थोड़ा सा अपने पाठकों की सेवा में सविनय निवेदन करें कि जिससे सर्व साधारण को हिन्दी भाषा के इस महाकाव्य का कुछ स्वरूप ज्ञान हो।

इस महाकाव्य का नाम **पृथ्वीराजरासो** है और यह दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात **पृथ्वीराज** और **रासो**। इस संज्ञा का अर्थ यह होता है कि "पृथ्वीराज को रासो"। ग्रंथकर्ता ने **पृथ्वीराज** नामक संज्ञा से हमारे उन पृथ्वीराजजी चौहान को अपने इस महाकाव्य का नायकवर्णन किया है जो विक्रम के बारहवें शतक में हमारे स्वदेशी अन्तिम राजराजेश्वर अर्थात् बादशाह हुए हैं, जिनकी शूर-वीरता का अभिमान आज तक प्रत्यक आर्य को है और जिनके नाम का औठा रात्रिन्दिन की बोलचाल में हमारे देश के सर्वसाधारण किया करते हैं। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि व कैसे बड़े बहादुर आर्य और शूरवीर राजा हुए हैं, कि जिन्होंने सुलतान शहाबुद्दीन गोरी को कई बेर घोर युद्ध कर के पराजित किया था। परन्तु होनहार परम बलवान होती है कि जिससे अचिंतित घटना भी झट उपस्थित हो जाती है। देखो, ईश्वर ही की इच्छा हिन्दुओं की बादशाहत स्थिर रखने की न थी, कि दैवयोग से पृथ्वीराजजी चौहान जैसे शूरवीर राजा, सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के हाथ से, अपनी अन्तिम लड़ाई में, अन्त को प्राप्त हुए। वह भी फिर कैसे कि वे हिन्दुओं की बादशाहत के सब ठाठ पाठरूपी सर्वस्व को मानो अपने साथ ही लोकान्तर में ले गये और जगत को यह निर्देश कर गये कि लौकिक में जो प्रायः यह कहा करते हैं कि किसी के अन्त समय उस के साथ कुछ नहीं जाता है वह एक प्रकार से असत्य है। अब रहा हिन्दी **रासो** शब्द, वह संस्कृत **रास** अथवा **रासक** से है और संस्कृत भाषा में **रास** के "शब्द, ध्वनि, क्रीडा, शृंखला विलास, गर्ज्जन, नृत्य और कोलाहल आदि" के अर्थ और **रासक** के काव्य अथवा दृश्यकाव्यादि के अर्थ परम प्रसिद्ध हैं। मालूम होता है कि ग्रंथकार ने संस्कृत **भारत** शब्द के सदृश **रासो** शब्द को भावार्थ से महाकाव्य के अर्थ में ग्रहण कर प्रयोग किया है। यह **रासो** शब्द आज कल की ब्रज भाषा में भी अप्रचलित नहीं है किन्तु अन्वेषण करने से वह काव्य के अर्थ के अतिरिक्त अन्य अनेक अर्थों में भी प्रयोग होता हुआ विद्वानों को दृष्टि आवेगा, जैसे—"हमने चौदे के गदर को एक

रासो जोड्यो है। कल बहादर सिंघजी की बैठक में बदर ने गदर को रासो गायो हो, फिर मैंने भरतपुर के राजा सूरजमल को रासो गायो सो सब देखते ही रह गए। अजी ये कहा रासो है। मैं तो कल्ल एक रासो में फंस गयो या सूं तुमारे बहां नाय आय सक्यो। अजी राम गोपाल बडो दिवारिया है, वाके रासे मे फँस कै रुपैया मत विगाड दीजो। हमनैं आज दिन को रासो निमटाय दीनो है। देखो सब रासो के संग रासो है, बुरी मत मानौ"। तथा लुगाइयाँ भी गाया करती है--

गीत—मत काची तोन्हू रखियो घानी
नान्हू करूंगी अैन रासा
गुर राख, पकावा, मत काचा। इत्यादि ॥ १ ॥
तिय लोगन की राम उठेगी तोन्ह के साक उठावेगा,
हल जोत, नही पछतावेगा। इत्यादि ॥ २ ॥

विषय

२ यद्यपि इस महाकाव्य का केवल नाम सुनते ही इसका विषय यह प्रतीत होने लगता है कि इसमे पृथ्वीराजजी चौहान के जन्म से लेकर मरण तक के ही सब चरित्र वर्णन किये गए है, परन्तु इसके गर्भित वृत्तो की परीक्षा करने से जानने मे आता है कि महाकवि चंद ने इसमे पृथ्वीराजजी के चरित्रो के साथ ही उनके सब समकालीन शूर सामन्त, अधीन राजा, इष्ट मित्र और सगे सबन्धी और महान् यादवादि राजकुलो के भी कुछ न कुछ चरित्र और शौर्य वर्णन किये है। अतएव यह कदापि नही समझा जा सकता कि यह महाकाव्य पृथ्वीराजजी चौहान के नायक होने से केवल चौहानो की ही वार्ता का ग्रंथ है, किन्तु यह वास्तव मे यादवादि राजकुलो का सर्वस्व है। देखो, पृथ्वीराजजी से लेकर जिन जिन शूर वीरो के चरित्र इसमे वर्णन किये गये है उन सब की विद्यमान सन्तान वर्तमान काल की हमारी श्रीमती भारत राजराजेश्वरी विक्टोरिया के सिंहासन के चारो ओर उपस्थित हो कर अपनी अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार तन मन और धन के द्वारा परम राजभक्ति को प्रकाश कर रही है और श्रीमती के प्रस्वेद के साथ मानो अपना रक्त तक बहाने को प्रस्तुत खड़ी है। क्या पृथ्वीराजजी के एक बड़े शूर वीर सामन्त पज्जूनजी के वंश मे श्री महाराज साहब जयपुर और उनके राज वंशीय सरदार नही है? क्या पृथ्वीराजजी के सगे सबन्धी जयचन्दजी के वंशज श्रीमहाराज साहब जोधपुर और कृष्णगढ़ और उनके भाई बेटे नही है? क्या पृथ्वीराजजी के बहनोई और परम शूर वीर महापराक्रमी रावल समरसीजी की कुलीन सन्तान मे श्रीमहाराज साहब नेपाल, श्रीमहाराणाजी साहब उदयपुर, श्रीदरबार डूंगरपुर और प्रतापगढ़ अपने अपने राजवंशी उमराव और सरदारो के सहित नही है? क्या चौहानजी के अनेक वंशज बूंदी, कोटा सिरोही, सीमरणा भदावर बेदला, कोठारिया, और पारसोली आदि के राजा महाराज और सरदारो को आज हम अपनी आंखो से नही देखते है? इसी तरह अन्य सब की विद्यमान सन्तानो को भी हमारे पाठक स्वयम् विचार देखे और इस थोड़े मे ही

बहुत करके समझ लें कि इस महाकाव्य का विषय बारहवे शतक के यावदार्य राजकुलों के संवलित चरित्रों से परम विभूषित है ॥

काव्य

३ इस पृथ्वीराज रासो को जो हम अपने लेखो मे महाकाव्य कर के लिखते हैं यह कुछ अन्यथा और आश्चर्यजनक नही है, किन्तु साहित्यदर्पणमे महाकाव्य का जो नीचे लिखा हुआ लक्षण लिखा है उससे यह विशेषांश मे मिलता हुआ है

सर्गबन्धो महाकाव्य तत्रैको नायक सुर ।
सद्वश: क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वित. ॥
एकवंशभवा. भूपा. कुलजा बहवोऽपि वा ।
शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते ॥
अङ्गानि सर्वेऽपि रसा: सर्वे नाटकसन्धय ।
इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम् ।
चत्वारस्तस्य वर्गा: स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत् ।
आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा ॥
क्वचिन्निन्दा खलादीनां सताञ्च गुणकीर्तनम् ।
एकवृत्तमयै: पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकै. ॥
नातिस्वल्पा नातिदीर्घा: सर्गा अष्टाधिका इह ।
न नावृत्तमया क्वापि सर्ग: कश्चन दृश्यते ॥
सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथाया: सूचनं भवेत् ।
सन्ध्या सूर्य्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासरा: ॥
प्रातर्मध्याह्नमृगयाशैलर्तुवनसागरा: ।
सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वरा: ॥
रणप्रयाणोपयम मन्त्रपुत्रोदयादय ।
वर्णनीया यथायोगं साङ्गोपाङ्गा अमी इह ॥
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा ।
नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्ग नाम तु ॥

सा० द० ५५९ ॥

जब कि यह महाकाव्य के लक्षण के अनुसार वास्तविक एक महाकाव्य है तब फिर उसके रचनेवाले का भी साहित्यशास्त्र में एक अच्छा व्युत्पन्न महाकवि होना क्या अनुमान नही किया जा सकता है? जैसे कि इस महाकाव्य का विषय पृथ्वीराजजी चौहान और उनके समकालीन यावदार्य राजकुलों के चरित्रों से संवलित है वैसे ही उसका काव्य भी भिन्न भिन्न प्रकार के छंदों से विभूषित अनेक प्रकार के काव्यों का एक ऐसा संवलित काव्यात्मक है कि उसको हम किसी एक

प्रकार के काव्य की संज्ञा प्रदान नहीं कर सकते हैं। उसके काव्य को श्राव्य काव्य की संज्ञा देने में हम आशा करते हैं कि किसी विद्वान को भी कुछ शंका न होगी, किन्तु सूक्ष्मतर अन्वेषण करने से ज्ञात होगा कि उसको कोई दृश्य काव्य का अच्छा व्युत्पन्न परीक्षक झट शोधकर जान सकता है। क्या हम यह नहीं विचार सकते कि इस महाकाव्य के छंदो को कवि ने रूपक के क्रम से क्यो गिना है? इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से यहां तक भी स्पष्ट विदित हो सकता है कि महाकवि चंद ने उसको काव्य की अनेक उत्तमताओ के इन तीनो मूलो से भी भले प्रकार विभूषित किया है। प्रथम, तो महाकवि ने अपने वचन को शृंगार, रस, अनुप्रास और अलंकारादिक से परम विचित्र किया है। दूसरे उसने भाव मे चोज रखा है। तीसरे, इस महाकाव्य के सब छंद प्राचीन और नवीन प्रकार की गानविद्या के अनुसार गाये भी जा सकते है। इसके अतिरिक्त महाकवि ने पृथ्वीराजजी और उनके समकालीन यावदार्य राजकुलादि के इतिहास भी जहा तक उससे हो सके हैं भले प्रकार से वर्णन किये हैं। हिन्दी भाषा मे साहित्यशास्त्र और सब पौराणिक अनुवाद विषयक ग्रंथ जो अब तक प्राप्त हो सके है वे बारहवे शतक के अथवा उसके पहले के नहीं हैं किन्तु वे सब इधर के समय के रचित है, अतएव हम को समझना चाहिये कि चंद ने संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथो के आधार से ही यह महाकाव्य रचा है। और जब कि यह बात ऐसी ही है, फिर हमको उसके परम परिश्रम के लिये कितना आभारी होकर उसकी प्रशंसा करनी चाहिये। क्या हमको इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने मे चंद की उक्ति, साहित्यशास्त्र विषयक वर्णन मे, और पौराणिक कथा आदि मे उसका संस्कृत भाषा के अनेक विद्या ग्रंथो का अनुकरण करना नहीं दृष्टि आता है? जहा तक हिन्दी भाषा के ऐसे अनेक ग्रंथ कि जो चंद के पीछे के रचित हैं, हमारे दृष्टिपथ मे आये है, उन सब से यही ज्ञात होता है कि उनके रचनेवाले चंद कवि जैसे संस्कृत भाषा मे भले प्रकार परिज्ञात नहीं थे और उन्होने चंद की शैली का ही निःसंदेह अनुकरण किया है। हमारे कहने का सारांश यह है कि इस महाकाव्य को उसके अति क्लिष्ट और हमारी बुद्धि को चल विचल कर देनेवाला होने के कारण निन्दनीय ठहराना नहीं चाहिये, किन्तु साहित्यशास्त्रादि के संस्कृत भावो के अनेक ग्रंथो को हाथ मे लेकर और अपने हृदय को चारण और भाटादि के वंशपरंपरा के डाह बैर के दुराग्रह से शुद्ध करके सूक्ष्मतर परीक्षा करनी चाहिये उससे हमको निःसंदेह यह ज्ञान हो जायगा कि हमारे स्वदेशी और यूरोपियन बड़े बड़े विद्वान जो इस महाकाव्य की प्रशंसा अब तक करते चले आये हैं वह वास्तव मे वैसा ही अमूल्य महाकाव्य है और वह ऐसा है भी--मानों चंद अपने समय तक के हिन्दी भाषा के सर्व प्रकार के काव्यों का एक अमूल्य संग्रह हमारे लिये प्रस्तुत कर के हमारी हिन्दी भाषा को अति धनाढ्य कर गया है। क्या यह बात पक्षपातरहित विद्वानों को अति आश्चर्य और अट्टाट्टहास करानेवाली नहीं है, कि

हम इस महाकाव्य को अभी तक बहुत ही अच्छी तरह से पढ़ पढ़ा और समझ समझा तो सकते ही नहीं और न इस महाकाव्य में यूनिवर्सिटी (University) की परीक्षा की शैली के अनुसार परीक्षा देकर उत्तीर्ण हो सकते हैं, किन्तु उसको दोष देकर विध्वंस करने को तो हम सबसे आगे आ खड़े होने को प्रसन्नतापूर्वक तैयार हैं ? निदान किसी कवि के कहे अनुसार जो जिसके गुण को नहीं जानता वह उसकी निन्दा निरन्तर करता है —"न वेत्ति, यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निंदा सततं करोति। यथा किराती करिकुंभजाता मुक्ताः परित्यज्य बिभर्ति गुंजा"

भाषा

जैसे इस महाकाव्य का काव्य अनेक प्रकार के काव्यों का एक सर्वांग सुन्दर काव्य है वैसे ही उसकी भाषा भी उसके ग्रंथकर्त्ता के समय तक की अनेक प्रकार की प्राचीन हिन्दी भाषाओं की एक अति सर्वांग सुन्दर हिन्दी भाषा है। यदि किसी को इसमें कुछ सन्देह हो तो वह इस आदि पर्व को ही ध्यान देकर पढ़ देखे कि उसके किसी छन्द की तो कैसी भाषा है और किसी की कैसी। क्या विद्वानों से यह बात छिपी हुई है कि भाषा और काव्य का नित्य संबंध नहीं है ? जब कि उनमें नित्य संबंध का होना यथार्थ है तब फिर क्या प्रबंध काव्य का अनेक प्रकारों से सज्जित होना भी स्वतः सिद्ध नहीं है ? इस महाकाव्य की भाषा के बीच का वे विद्वान अच्छे प्रकार से जान सकते हैं कि जो वर्तमान समय में फिलोलोजिस्ट (Philologists) अर्थात् शब्दोत्पत्तिविद्याज्ञ कहलाते हैं। और वैसे तो हमारे देश में वर्तमान समय के ऐसे ऐसे सहसा सिद्धान्त कर लेनेवाले विद्वानों के भी लेख पाये हैं कि जिन्होंने ऐसा अज्ञानताभाव का वाक्य भी कहा है, कि इस महाकाव्य के समय तक तो अनुस्वार और विसर्ग तक का प्रयोग करने का बोध नहीं था। और विद्वान भले ही ऐसा कहने में सन्मान हो परन्तु हमारे मुख से तो इस महाकाव्य के काव्य को देखते हुए ऐसा सुन कर बारंबार यही निकलता है कि—त्राहि गोविन्द ! त्राहि गोविन्द !! ग्रंथकर्त्ता ने इस ग्रंथ को जिस भाषा में लिखा है वह उसने स्वयम् ही इस आदि पर्व में रूपक ३९ में स्पष्ट कह दिया है और जैसा उसने कहा है वैसी ही भाषा हम इस महाकाव्य की पाते भी हैं। फिर आश्चर्य क्या है ? वह यही है कि न तो हम इस ग्रंथ को आदि से लेकर अन्त पर्यंत पढ़ते हैं, न समझते हैं, न कवि के अभिप्राय को लक्ष में लाते हैं, न यह विचारते हैं कि बड़े बड़े विद्वान जिन के वचन पर अनेक मनुष्य विश्वास करते हैं, उनके सिर पर कुछ सम्मति देते समय बड़ी भारी जिम्मेदारी अर्थात् अनुयोज्यता का बोझ भी रखा हुआ है कि नहीं—किन्तु जो मन में आया वही हम लिख डालते हैं, क्योंकि न तो चंद कवि, न पृथ्वीराजजी चौहान और न रावल समरसीजी हमसे हमारे ऐसा कहने के लिये अब लड़ने को आ सकते हैं, और न किसी क्षीर—नीर का सा न्याय करनेवाले विद्वान का हमको डर है। देखो, हमने अपनी प्रथम टिप्पणी

में ही कह दिया है कि इस महाकाव्य की हिन्दी भाषा तीन प्रकार की है। प्रथम षट-भाषा और कुरान की भाषा की योनिवाली, दूसरे षट भाषा और कुरान की भाषा के सम, और तीसरे देशी प्रसिद्ध। इसके अतिरिक्त विद्वानों को इस महाकाव्य की भाषा की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से ज्ञात होगा कि चंद कवि ने साहित्यदर्पण में लिखे हुए भाषा के प्रयोग के निम्नलिखित नियमों का भी अपने निज विचार और शैली के संस्कारसहित इस महाकाव्य के रचने मे कुछ अनुकरण किया है-

पुरुषाणामनीचानां संस्कृतं स्यात्कृतात्मनाम् ।
शौरसेनीप्रयोक्तव्या तादृशी नाञ्च योषिताम् ॥
आसामेव तु गाथा सु महाराष्ट्री प्रयोजयेत् ।
अत्रोक्ता मागधी भाषा राजान्त पुरचारिणाम् ।
चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठीनां चार्द्धमागधी ।
प्राच्या विदूषकादीना धूर्तानां स्यादवन्तिका ॥
योधनागरिकादीनां दाक्षिणात्या हि दीव्यताम् ।
शकाराणां शकादीनां शाकारी सम्प्रयोजयेत् ॥
वाह्लीकभाषा दिव्यानां द्राविडी द्रविडादिषु ।
आभीरेषु तथाऽभीरीचाण्डाली पुक्कसादिषु ॥
आभीरी शावरी चापि काष्टपत्रोप जीविषु ।
तथैवाङ्गाकारादौ पैशाची स्यात् पिशाचवाक् ॥
चेटीनामप्यनीचानामपि स्यात् शौरसेनिका ।
बालानां षण्डकानाञ्च नीचग्रह विचारिणाम् ॥
उन्मत्तानामातुराणां सैव स्यात् संस्कृतं क्वचित् ।
ऐश्वर्य्येण प्रमत्तस्य दारिद्रोपस्कृतस्य च ॥
भिक्षुबन्ध धरादीनां प्राकृतं सम्प्रयोजयेत् ।
संस्कृतं संप्रयोक्तव्यं लिङ्गिनीषूत्तमासु च ॥
देवीमन्त्रि सुतावेश्या स्वपि कैश्चित्तथोदितम् ।
यद्देशं नीच पात्रन्तु तद्देशं तस्य भाषितम् ॥
कार्यातश्चोत्तमादीनां कार्य्यो भाषाविपर्य. ।
योषित् सखीबालविश्यां कितवाप्सरसां तथा ॥
वैदग्धार्थं प्रदातव्य संस्कृतं चान्तरान्तरा ॥

स० द० ४३२ ॥

इस बात की कुछ परीक्षा हम इस आदि पर्व मे ही कर सकते हैं। देखिये रूपक ३३, ३९, आदि शुद्ध संस्कृत भाषा मे हैं और रूपक १६, २२, ४७, ५७, ५९, इत्यादि मे षट्भाषाओं का सादृश्य और साटकों मे प्रायः संस्कृतादि भाषाओं का सादृश्य है। इसी प्रकार हमारे पाठक इस भाषा सम्बन्धी सब बातों को इस

समय ग्रन्थ मे अन्वेषण कर जाच देखें। यदि इस प्रकार की परीक्षा करने पर सब विद्वानो की सम्मति मे यही तुलेगा कि चद कवि वज्र मूर्ख था तो हम भी उस को बड़ा वज्र मूर्ख कहने लगेंगे, क्योंकि वह हमारा कोई सबन्धी नही है और न हमको अपने कहे का कुछ हठ है वरन हमारा सिद्धान्त यही है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग हो। इस महाकाव्य की भाषा मे दो एक वर्ष मे एक यह भी बडी भारी शका लोगो ने खडी की है कि उसमे आठ या १० दस भाग मे एक भाग फारसी शब्द हैं हैं और फारसी शब्द अकबर बादशाह के समय से हिन्दी भाषा मे मिले हैं, अतएव यह महाकाव्य स० १६४ से १६७० के बीच मे कृत्रिम बना है। हम इस बात से बिलकुल ही असम्मत हैं और ऐसा अनुमान करने वाले को हम समझते है कि उसने न तो यह पृथ्वीराज रासो कभी आदि से अत पर्यंत अच्छी तरह से पढा है और न उसको ऐतिहासिक विद्या का पूरा पूरा बोध है, क्योकि यह अनुमान बिलकुल ही अदृढ और अपरिपक्व है। वरन अब तक के ऐतिहासिक शोधो के अनुसार हमारी सम्मति मे फारसी शब्दो का मेल हमारे भरतखण्ड की बोलचाल की भाषाओ मे सातवें शतक तक पाया जा सकता है। फिर इस बारहवें शतक की हिन्दी भाषा की तो क्या ही कथा कहनी है। टुक विचार कर देखिये कि किसी देश की भाषा मे अन्य देशीय भाषा के शब्दादि का मेल बहुधा करके प्रथम बोलचाल की भाषा मे ही हुआ करता है न कि किसी मृतप्राय भाषा मे और वह विदेशियो के किसी देश मे आने जाने, बसने बसाने, रहने सहने, मिलने मिलाने, वाणिज्य करने कराने, राज्य के बदलने बदलाने, मत के बिगडने बिगाडने आदि कारणो मे ही हुआ करता है। तदनन्तर आप नीचे लिखे कारणो को विचार कर देखिये और निर्णय कीजिये कि चन्द की हिन्दी मे जो फारसी शब्दों के प्रयोग सबन्धी दोष दिये जाते हैं वे वास्तव मे यथार्थ हैं अथवा नही —

१ पृथ्वीराज रासो के किसी भी समय मे आठ या दस भाग मे एक भाग के फारसी शब्द नही हैं और जब प्रत्येक समय मे नही है तब समय ग्रन्थ मे भी न होना स्वत सिद्ध है। यदि किसी को निश्चय करना हो तो इस आदि पर्व से ही गिन कर निश्चय कर लें। हा, ऐसा तो नि सदेह कह सकते हैं कि उसमें अनेक फारसी शब्द हैं किन्तु बिना गिने ऐसी असत्य सख्या स्थिर नही कर सकते हैं॥

२ ग्रन्थकर्त्ता ने रूपक ३० मे स्वयम् कहा है कि उसने कुरान की भाषा का भी आश्रय लिया है।

३ ग्रन्थकर्त्ता महाकवि चद पजाब देश के लाहौर नगर में उत्पन्न हुआ था, जहा कि उसके जन्म होने के १०० वर्ष पहले से ही महमूदी सलतनत का होना और उसका पृथ्वीराजजी के साथ ही साथ नाश होना तबकात नासरी से ही सिद्ध है। फिर क्या कोई विद्वान यह अनुमान कर सकता है कि इस सौ १०० वर्ष के समय

में लाहौर नगर की भाषा में कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का नही मिल सका था और न चंद कवि एक भी फारसी शब्द जानता था और न उसके सुनने में कभी कोई एक भी फारसी शब्द आया था ? क्या महमूदी सलतनत के समय में कोई एक भी हिन्दू मुसलमान नही हुआ था, न कोई मसजिद बनी थी, न कोई नगर आदि मुसलमानी नाम से बसे थे ?

४ क्या पृथ्वीराजजी के राज्य की और महमूदी सलतनत की परस्पर सीमा नहीं मिली हुई थी ? क्या इन दोनों राज्यों के दूत एक दूसरे के राज्य मे आते जाते और नहीं रहते थे ? यदि परस्पर लिखापढ़ी का काम पड़ा था तो क्या वह शुद्ध वैदिक संस्कृत भाषा में लिखापढ़ी हुई थी और क्या महमूदी सलतनत वाले भी संस्कृतादि मृतप्राय भाषाओं में ही अपना राज का काम चलाते थे ?

५ क्या हसन निजामी आदि से हम को यह ज्ञात होता है कि पृथ्वीराजजी के राज्य समय में उनकी सेवा में अथवा उनके राज्य मे न तो कोई फारसी जाननेवाला था न कोई सुलतान की ओर से कभी कुछ संदेसा लेकर पृथ्वीराजजी के पास गया, न कोई मुसलमान सिपाही था, न कोई मुसलमान सौदागर था, मानों पृथ्वीराजजी के राज्य समय की हिन्दी भाषा को मुसलमानी भाषा की किंचित् वायु ही नहीं लगी थी ? क्या चित्ररेखा नाम की सुलतान शहाबुद्दीन गोरी की एक परम प्रिया पासवान को हसन नामक व्यक्ति का उड़ा लाना नवकातनामरी में कुछ भी सिद्ध नहीं होता और क्या यहीं सुभगा पृथ्वीराजजी की शरण में रहकर हमारी हिन्दुओं की बादशाहत को समूल नाश को प्राप्त करानेवालों में नहीं हुई है ?

६ क्या सुलतान शहाबुद्दीन गोरी ने कई बेर पृथ्वीराजजी और लाहौर की महमूदी सलतनत पर चढ़ाईयां नहीं की थी ? क्या इन अवसरों में भी जो फारसी शब्द चन्द ने प्रयोग किये हैं वे चंद और पृथ्वीराजजी की सेना के सुनने और समझने में कभी नही आये थे और न उनमें का कोई एक शब्द भी उनकी भाषा में मिल गया था ? क्या जब शहाबुद्दीन ने लाहौर की महमूदी सलतनत पर चढ़ाइयां कीं तब लाहौरवालों ने पृथ्वीराजजी से कुछ मंत्रणा नहीं की थी और न उनकी कुछ सहायता ली थी ?

७ क्या महमूद ने हांसी पर चढ़ाई नही की थी ? क्या वह लाहौर के एक वाइसराय (Viceroy) के साथ बनारस तक नही आया था और न इसने उस शिवपुरी को लूटा ? क्या इस समय में भी कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का हमारी हिन्दी भाषा में नहीं मिला था ?

८ क्या महमूद गजनवी की १६ वा १७ चढ़ाइयां (सन् ९९६ से १०३० तक) हमारे देश की भाषाओं में कोई एक भी मुसलमानी शब्द नहीं मिला सकी थीं ? क्या हमारे गुजराती बंधुओं को महमूद गजनवी के निजमुख के "बुतशिकन" और

"बुत्फरोश" शब्द सोमनाथ के नाश के दिन से आजतक नही याद रहे ? क्या गुजरात के नागर ब्राह्मणों में से जिन्होने अपने देश की संरक्षा के लिये पुरुषार्थ किया और मुसलमान बादशाहो की सेवा करना अंगीकार किया उनका नाम "सिपाही नागर" नहीं पडा है ? क्या महमूद के समय में कोई भी हिन्दू मुसल्मान नही हुआ था ? क्या मथुरापुरी में उसके लूट में अनेक हिन्दू गुलाम दो दो रुपये पर नही बिके थे ? क्या उसकी एक लाख सवार और बीस हजार पैदल फौज के साथ हमारे स्वदेशी व्यापारियों की बोलचाल देववाणी में होती थी और कोई एक भी मुसलमानी शब्द उसकी फौज हमारे देश के अनेक नगरो मे अपने पीछे अपने स्मारक-चिन्ह की भांति नहीं छोड गई थी ? क्या महमूदाबाद नामक कोई भी नगर महमूद का बसाया हुआ हमारे देश मे नही है ?

९ क्या अब्बुल् असी ने सन् ६०६ ई० के लगभग बंबई के समीप के थाना पर चढाई नही की थी ? क्या ईराक के परम प्रसिद्ध जालिम गवरनर हज्जाज के समय में राजा दाहिर से सिंध विजय नहीं किया गया था ? क्या फिर सन् ७१२ ई० में महम्मद कासिम ने सिंध पर चढाई करके सिंध को नष्ट भ्रष्ट और लूट खसोट नही किया था और दाहिर को न ी मार डाला था ? क्या राजा दाहिर का लडका जयसिंह इस समय कितनेक और छोटे मोटे सिंध के राजा और सरदारों सहित मुसलमान नहीं हो गया था और क्या तब से ही मुसलमानी धर्म्म का आज तक सिंध मे बराबर चला आना ऐतिहासिक शोध नही सिद्ध करते है ? क्या सिंधी मुसलमान पृथ्वीराजजी के पीछे हुए है ? क्या इस दशा मे कोई एक भी अरबी शब्द हमारी देश भाषाओ मे उस समय नहीं मिला है ?

१० क्या ऐतिहासिक शोध हमको यह नही विदित करते है कि पारसी लोग सैसेनियन् वंश की अवनति के समय फारस से भाग कर हमारे देश के बंबई नगर के आसपास आकर बसे है ? क्या इन लोगो ने अपनी मातृभाषा का कोई एक शब्द भी पृथ्वीराजजी के समय तक हमारी देश भाषा मे नही मिलाया था ? क्या उनको हमारे देश के लोग पारसी के बदले अन्य वैदिक शब्द से पुकारते थे ?

११ क्या गुजराती भाषा मे फारसी शब्दो के मिलने का शोध सं० १३५६ तक शास्त्री व्रजलाल कालिदासजी के रचित गुजराती भाषा के इतिहास नामक ग्रंथ से पहुंचना नही विदित होता है ? जो इसी तरह हमको देश भाषा के प्राचीन ग्रन्थादि बराबर मिलते जांय तो क्या हम सातवी सदी तक कोई एक भी मुसलमानी शब्द अपनी देश भाषाओं मे मिला हुआ नही शोध सकते है ?

१२ क्या पुरातत्त्ववेत्ताओं ने यह शोध लिया है कि हिन्दी भाषा का अमुक समय में प्राकट्य हुआ है ? क्या बारहवें शतक के पहले और उसके एक दो शतक पीछे की कोई पुस्तक, ताम्रपत्र, प्रशस्ति, पट्टे, परवाने आदि हमको ऐसे प्राप्त हो गये हैं कि जिनसे हम यह कह सकें कि बारहवें शतक के पहले अथवा उसके कुछ

पीछे के समय तक भी मुसलमानी भाषा के शब्द हिन्दी में नहीं मिले थे ? क्या अब तक के प्राप्त हुए पुरातत्व संस्कृतादि मृतप्राय भाषाओं में नहीं है और उनकी अपेक्षा से हिन्दी भाषा के विषय में कल्पना करना बहुत ही आश्चर्यदायक और अयोग्य नहीं है ?

१३ क्या संस्कृत भाषा के उन ग्रंथों मे जिनको पुरातत्ववेत्ता बारहवें शतक के पहले के बने हुए मानते है, ऐसे ऐसे शब्द हमको प्राप्त नही होते हैं कि उन नाम के देश और मनुष्य यूरोप आदि अन्य खंडो मे आज भी विद्यमान है ? क्या विक्रमादित्यजी की "शाकारि" पदवी साधु संस्कृत भाषा की है ? क्या रावल समरसीजी की आबू की प्रशस्ति के ४५ वे श्लोक में "तुरुष्क" शब्द का प्रयोग नही हुआ है ? क्या व्याकरण महाभाष्य से बहुत से धातुओं का प्रयोग द्वीपान्तरों में होना विदित नही होता है ? क्या महाभारत में पांडवों का यावनी भाषा मे बात करना नहीं लिखा मिलता है ?

१४ क्या वर्तमान समय के अच्छे हिन्दी लिखनेवालों मे से कोई किसी विद्वन्मंडली मे खड़ा होकर यह कह सकता है कि चिट्ठी पत्री से लेकर ग्रन्थतक जो कुछ उसने आजतक हिन्दी भाषा मे लिखा है उन सब की हिन्दी एक सी ही है अर्थात् उसके अनेक लेखो मे से ऐसे उदाहरण बिलकुल नही मिल सकेंगे कि उनके किसी लेख मे तो एक भी फारसी शब्द नहीं आया होगा और किसी मे अनेक फारसी शब्द प्रयुक्त हुए होंगे ? यदि पृथ्वीराज रासो की भांति एक हजार वर्ष के पीछे कोई ऐसे हमारे स्वदेशी बंधुओं के ऐसे लेखों को हाथ मे लेकर वादविवाद करे तो क्या दोनों पक्षकारो को प्रत्येक के अनुकूल तर्क नही मिल सकेंगे ? जब आज ही हम लोगो को यह दशा है कि कभी कैसी हिन्दी लिखते हैं और कभी कैसी, तो फिर प्राचीन समय के ग्रंथकर्ताओं मे से जिसने यह स्पष्ट कह दिया है कि मैं कुरान की भाषा को भी प्रयोग मे लाता हूं, उसको हम क्योंकर दोष दे सकते है ? क्या हम अनुमान नहीं कर सकते कि प्राचीन ग्रंथकारो मे से जिसने जैसी हिन्दी चाही उसने वैसी ही लिखी है ?

१५ क्या आज कल के विद्यमान देशी राजस्थानो मे असम्रत समय से अब तक मुसलमान बादशाह, सिपहसालार, सरदार, सौदागर, मौलवी, मुल्ला और काजी आदि के नाम, अपनी देशभाषा हिन्दी और मृतप्राय भाषा संस्कृतादि के होते हुए भी, फारसी अक्षरों और उसी भाषा मे चिट्ठी पत्री और फरमान खरीते आदि के लिखे जाने का प्रचार नही प्रचलित है ? क्या आज के एकछत्री अंग्रेजी राज्यशासन के समय में भी राजपूताने के अन्तर्गत राज्यों से श्रीमान् वाइसराय और गवरनरजनरल साहब बहादुर के नाम उभय को विदेशी फारसी भाषा और लिपि में खरीते नहीं लिखे जाते है ? बहुत समय के व्यतीत हो जाने पर जब कि वर्त्तमान समय ग्रन्थ पुरातत्व संज्ञा से माने जावेंगे और वे ऐसे ही अलभ्य होंगे जैसे कि आज पृथ्वी-

राजजी के समय के है, तब फिर क्या उस समय के विद्वानों का वैसे ही तर्कों से कि जैसों से आज हम लोग रासो में दोष देते हैं, इन देशी राज्यों की इन फारसी लिपि और भाषा में गवर्नमेंट हिन्द के नाम लिखे हुए खरीतों को भी जाली समझना यथार्थ होगा ? क्या यह व्यवहार भी वर्तमान समय में देशी राजस्थानों में प्रचलित नहीं हैं कि जब गवर्नमेंट हिन्द के नाम खरीता लिखने का काम पड़ता है तब फारसी भाषा के विद्वानों को घेर घार कर, फारसी को ढूंढ ढाढ़ कर, और एकांत में बैठ बाठ कर, कई दिनोतक अति परिश्रम करके वे नही लिखे जाते हैं; उसी तरह जब किसी मंदिर आदि की प्रशस्तिका का काम पड़ता है तब वैसे ही देशी और पंडितों को, चाहे वे राजके नौकर हों अथवा नहीं, घेर घार कर संस्कृत भाषा में प्रशस्तियां नहीं लिखाई जाती हैं और जब किसी राजा की विरदावली का कोई कवित्त बनवाने का काम पड़ता है तब षट भाषाओं की भाषा से बिगड़कर बनी हुई डिंगल भाषा में काव्य नहीं रचवाया जाता है और जब लाटसाहब की पधरावनी का उत्सव किया जाता है तब उस में Address अर्थात् अभिवादन अंग्रेजी भाषा में नहीं दिया जाता है ? क्या ये सब भाषाएं आज प्रचलित हैं और क्या आज मुसलमानों की बादशाहत है ? क्या जो आज हम महाराणाजी श्रीमज्जनसिंहजी के राज्यशासन समय के सर्व प्रकार के राजकीय लेख एकत्र करके देखें तो वे सब एक ही भाषा में हमको लिखे मिलेंगे ? क्योंकि क्या सब राजा साहबों के स्वर्गवास होने पर राज की मोहर, छाप और स्टाम्प और सिक्के आदि मे उसी दिन नवीन राजा साहब का नाम पलट करके वैसे ही हुकुम जारी हो जाते है कि जैसे आज अंग्रेजी राज मे होते हैं कि जिस राजकीय व्यवहार के संस्कार मे विद्यमान पुरातत्ववेत्ता उपलब्ध पुरातत्वों को जांचा करते है ? क्या मेवाड़ राज्य में महाराणा जी श्रीशंभूसिंहजी के नाम का स्टाम्प आज तक नही जारी है ? महाराणाजी श्रीमज्जनसिंहजी के नाम की छाप वर्त्तमान महाराणाजी साहब के राज्यशासन समय में कई वर्षों तक नहीं जारी रही है ? क्या ऐसे स्टाम्प पर लिखि हुई दस्तावेजें और ऐसी छाप लगे पत्र बहुत समय के व्यतीत हो जाने पर जाली समझे जायंगे और जिन जिनके पास ये राजकीय लेखादि उस समय में मिलेंगे वे सब जाल के अपराधी समझे जाकर फांसी लगाये और कालेपानी भेजे जावेंगे ?

सारांश हमारे निवेदन करने का यह है कि हिन्दी भाषा में अन्य देशीय भाषाओं के शब्दादि के मिलने का प्रश्न बड़ा ही सूक्ष्म और कठिन है और जो हमारी तरह विद्वान लोग यह मान लें कि जब जिस अन्य देशीय का आना हमारे भरतखंड में हुआ तबही से उसकी भाषा के शब्दों का भी मेल होना अति संभवति है तो यह प्रश्न बड़ा ही सरल हो जाता है। हमारे सिद्धान्त को माने बिना इस प्रश्न का निर्णय करना बहुत दुस्तर है क्योंकि जो चंद कवि के पहिले अथवा उसके समय की हिन्दी भाषा की पुस्तकादि मिल जांय और उनमें मुसलमानी भाषाओं के

शब्द न मिलें तो हम सुख से यह अनुमान कर सकते हैं कि उनके रचनेवालों ने उनका जानकर प्रयोग नहीं किया और चंद ने रूपक ३९ की प्रतिज्ञा पूर्वक उनका प्रयोग किया है जैसे कि वर्तमान समय मे भी हिन्दी भाषा के अनेक विद्वान अनेक प्रकार की हिन्दी लिखते है।

कविराजजी ने इस महाकाव्य की भाषा के प्रसग मे जैसे मुसलमानी शब्दो के प्रयोग होने का दोष दिया है वैसे ही उन्होने इन सत्त। चावद्दिसि। भारत्थ। पारत्थ। सारत्थ। और चूक शब्दो को भी राजपूताने की कविता के ही शब्द होना समझ कर इस महाकाव्य का मेवाड राज्य मे जाली बनना भी अनुमान किया है। तथा इस ग्रंथ मे बहुत से शब्द अनुस्वार सहित प्रयुक्त हुए है उनके विषय मे भी उन्होंने महाकवि चद पर आक्षेप करके यह कहा है कि "अनुस्वार लगाने से यह स्पष्ट जान पडता है कि यह संस्कृत कुछ भी नही जानता था क्योकि उसको विन्दु विसर्ग का भी ठीक ज्ञान न था।" परन्तु हमारी तुच्छ सम्मति मे महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदास जी महाशय का यह सब कहना विलकुल ही असत्य और निर्मूल है। अब जो प्रमाण अपने इस कहने के समर्थन मे हम आगे दिखावेंगे उनसे यह भी स्पष्ट सिद्ध होगा कि जिन जिन ग्रंथो से हमने उनको उद्धृत किया है वे कविराज जी के पढने मे नही आये होगे, नही तो वे ऐसे अत्यन्ताभाव के अनुमान कदापि नही करते :—

१ यद्यपि सत्त शब्द का आजकल की बोलचाल की ब्रज भाषा मे भी प्रयोग होना हमने अपनी लिखित प्रथम संरक्षा मे इन वाक्यखण्डो के उदाहरणो से सिद्ध कर दिखाया है, जैसे-जैसे वाक् सत चढ आयो, सवै वो सती भई, सत्त हर दत दाता, राम राम सत्त है, दा बार तित है-तथापि एक यह दोहा भी हम कविवचनसुधा से उद्धृत करके प्रमाण मे उपस्थित करते है—"सत्त सुवचन कबीर के, चित देर सुन लेहु। अरु नानक गुरु के बचन, सत्त सत्त करि गेहु"। तथा तुलसीकृत विनयपत्रिका में—"दास्य मोह पद देख हर्ष सर्व सत्त लेख सो दीन रेख मेख मार भाल मन्द के" यह शब्द ऐसा अप्रसिद्ध नही है कि जिसके प्रयोग के विषय में हिन्दी भाषा के विद्वानों को किञ्चित् भी सदेह हो अतएव हम अधिक उदाहरण नही लिखते।

२ श्रीमद्वल्लभ सम्प्रदाय मे जो अष्ट छाप करके प्रसिद्ध है उनमे के एक कुम्भन-दासजी ने "चावद्दिसि हरिकथ रच्यो" अपने एक कीर्त्तन मे कहा है।

३. इन भारत्थ, सारत्थ और पारत्थ शब्दो के प्रयोग के विषय में हमने प्रथम संरक्षा मे बहुत कुछ कहा ही है परन्तु फिर भी हम एक प्रमाण अष्ट-छापवाले छीत स्वामी के एक कीर्त्तन मे से यह बताते हैं "भारथ्य में सारथ्य ह्वै हरिजू कहाये सारथी" और पंडित कन्हैया लालजी-कृत छंदप्रदीप नामक ग्रंथ से वैसे ही अन्य शब्दों के प्रयोगों के उदाहरण भी विदित करते हैं; यथा—(१) करि

गहि भार समत्थ। (२) यश पायो नृप मथ्थ। (३) मत्थन नत करि लज्जित दिग्गज (४) सुसज्जिय भ्रमगति। (५) उत्थिय समुद बढ्ढिय लहरि। (६) रहि तदत्थकि जियसु अरि। (७) लखि दव्वत सब नृपति। (८) सिंहबली समरत्थ हत्थिवर मत्थ बिदारन।

४. अब शेष चूक शब्द के विषय मे भी हमारी लिखित संरक्षा म लिखे के सिवाय हमको यह कहना है कि उसके शब्दार्थ तो वही है कि जो डाक्टर हार्नली साहब ने हिन्दी शब्दों के धातुओ के संग्रह मे वर्णन किये हैं किन्तु यह शब्द जिस विषय के प्रसंग मे प्रयोग होता है वैसा ही उसका भावार्थ हो जाता है जैसे कि छल के अर्थ में अष्ट-छापवाले परमानन्ददास जी ने उसका प्रयोग किया "अहो हरि बलिसौं चूक करी" इसी तरह समझ लेना चाहिये कि जब वह छल से मारने के प्रसंग में प्रयुक्त होता है तब उसका वैसा भावार्थ ग्रहण किया जाता है। राजपूताने के किसी किसी कवि को हमने ऐसा भी कहते हुए सुना है कि यह चूक शब्द राजपूताने की भाषा में ही प्रयोग हुआ मिलता है और हिन्दी भाषा के किसी काव्य में किसी भी अर्थ में यह शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है, परन्तु उनका यह कहना हमारे नीचे लिखे प्रमाणो से बिल्कुल ही असत्य प्रतीत होता है -

वृन्द सतसई

दोहा पिशुन छल्यो नर सुजन सो करत बिसास न चूक।
जैसे दाध्यो दूध को, पीवत छाछहि फूक॥
मूरख गुन समझै नहीं, तौ न गुनी मे चूक।
कहा भयो दिन को बिभौ, देखी जो न उलूक॥

नाथ कवि अर्थात् कवि लोकनाथजी चौबे कृत

कवित्त - सुखद रसाल को निसाल तरु नापै बैठि,
ऐंठि बोल बोलै पिक, मधुर कुहू कुहू॥
कुंज कुंज कारे है कुटिल अलि पुंज पुंज,
गुंज गुंज फूल रस चुहकै चुहू चुहू॥
चूक बिन प्यारी कीन्ह मेरो मन टूक टूक,
कूक सुने हूक परै, करत उहू उहू॥
नाथ दिसि चार अधियार ही जनात मोहि
तातें किल कोकिला, कहत कुहू कुहू॥

सूरसागर

राग काफी

मै अपने कुलकानि डरानी ।
कैसे श्याम अचानक आये मैं मेया नहीं जानी ।।
वहै चूक जिय जानि सखी मुनि मन लै गये चुराई ।।
तन तैं जात नहीं मैं जान्यो लियो श्याम अपनाई ।।
ऐसे ठगत फिरत हरि घर घर भूलि कियो अपराध ।
सूर श्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहों अनुराध ।।

रागबिहागरो--कहा करों गुरजन डर मान्यों ।
आये श्याम कौन हित करिकें मैं अपराधिनि कछु नहिं जान्यो ।।
ठाढ़े श्याम रहे मेरे आंगन तब तें मन उन हाथ बिकान्यों ।
चूक परी मोकों सबही अंग कहा करौं गई भूलि सयान्यों ।।
वे उनही को नए हरष मन मेरी करनी समुझि अयान्यों ।
सूर श्याम संगम उठि लाग्यो मो पर बारं बार रिसान्यों ।। ३७ ।।

बीच कियों कुल लज्जा आई ।
सुन नागरी वक्रम यह मोकों मनमुख आये धाई ।।
चूक परी हरिनें मैं जानी मन लै गये चुराई ।
ठाढ़े रहे सकुच तो आगे राखा बदन दुराई ।।
तुम हो बड़े महर की बेटी काहे गई भुलाई ।
सूर श्याम हैं चोर तुम्हारे छाडि देहु डरपाई ।। ९० ।।

कवि लल्लूलाल कृत

दोहा --धरम राज सौं चूक करि । दुरजोधन लै लीन्ह ।।
राजपाठ अरु बित सब । बनोबस दै दीन्ह ।।
करी चूक प्रहलाद पै । हिरन असुर परचंड ।।
हरि सहाय हित अवतरे । असुरन किये बिखंड ।।

रामायण

छमहु चूक अनजानत केरी । चहिये विप्र उर कृपा घनेरी ।।

स्त्रियाँ गाया करती हैं

मेरा भया चुहान रिसागी । कार करत मैं बर बर चूकूं कुंका जान मई बीरा री ।।

कबीर

काशी का मैं बासी कहिये, करम दशा का हीना ।।
राम भजन में चूक पड़ी, तब पकर जुलाहा कीना ।।

कहावत

आहार चूके वह गये व्योहार चूके वह गये ।
दरबार चूके वह गये सुसराल चूके वह गये ॥

चूरनवाले

है चूरन खट्टा चूक । जिससे नित लगैगी भूख ॥

५ हम अनुस्वार सहित शब्दों के प्रयोग के विषय में जो ऊपर कह आये हैं उसके नीचे लिखे उदाहरणों के अवलोकन करने से आशा है कि हमारे पाठकों को पूर्ण संतोष हो जायेगा

सूरसागर

राग भैरवी भजि श्रीविट चरण सरोजं । [illegible] दर्शित मनोजं ।
इच्छसि यदि सततं सुखसारं [illegible] विषय धृतभारं ॥
यदि वाञ्छसि हरि भक्ति सुरत्नं । कुरु चपल [illegible] यत्नं ॥
प्राप्य सुदुर्लभ नरवर देहं । परिहर तरल निगम संदेहं ॥
मानय हृदय मयोदित वचनं । तदया मिनो चेदनिशय पचनं ॥
वत्सपदं भावय भव जलधिं । अत ममै भवधिन ववधिं ॥
नाथ नबाह मतीरण रावं । पूरय मननमिम मयि भावं ॥
तव गुण गण कथिता सूर गाथे । प्रार्थ्यमिद [illegible] तव रघुनाथे ॥

रामायण

छंद – दै भक्ति रमा निवास त्रास हरण शरण सुखदायकं ॥
सुषधाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ॥ १०४ ॥
सुरवृंद राजन द्वंद भंजन मनुज ततु अतुलित वलं ॥
ब्रह्मादि शकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं ॥ १०५ ॥

तोटक छंद –गुण ज्ञान निधान अमान मजं । नित राम नमामि विभूं विरजं ॥
भुजदंड प्रचंड प्रताप वलं । खलवृंद निकंद महाकुशलं ॥ १०६ ॥
विनु कारण दीन दयालु हितं । छबि धाम नमामि रमा सहितं ॥
भवतारण कारण कार्य परं । मनसं भव कारुण दोष हरं ॥ ९० ॥
शरचाप मनोहर तूणि धरं । जल जारुण लोचन भूप वरं ॥
सुष मंदिर सुंदर श्रीरमणं । मद मार महा ममता शमनं ॥ ९१ ॥

खालशा-कृत विनय पत्रिका

भैरवी –रे मन सत चरण धरु माथं ।
निश वासर जिनके जगनायक वास करत है साथं ॥ १ ॥
तिनको छोड़ विश्व मे भटकै वेश्या को करि नाथं ।
भक्ति सहित सेवा तुम करते वह मारत है लाथं ॥ २ ॥
तथापी कछु लाज न आवत मलत चरण धरि हाथं ।
सिंह मदन गोपाल साधु पद गहु अघहर सम पाथं ॥ ३ ॥

गोस्वामी श्रीलक्ष्मीनाथजी परमहंस-कृत पदावली

नमो नमो गीता हरि वंशं । सुर नर मुनि सज्जन अवतंशं ॥
कोमल पद उपनिष श्रुति अंसं । हरि मुष कथित मंत हिय हंसं ॥
विमल व्यास भाषित गन संशं । देव दनुज मानव अहि वंशं ॥
भक्ति विराग ज्ञान परगाशं । काम क्रोध मद मोह विनाशं ॥
सकल शास्त्र सम्मत निति शोशं । अर्थ धर्म सुखदायक हंसं ।
सुचि सागर तीरथ फल देशं । कलिमल तिमिर प्रकाम दिनेशं ॥
गुण अनन्त कहि गावत सेशं । चतुरानन गण देव महेशं ॥
सुनत सकल मन होत हुलाशं । लछमीपति अति पाप विनाशं ॥

नरहरदास कृत अवतार चरित्र

भुजंगी - सुगन्धं विगन्धं न अस्तूति गारी । विभेदं न सत्रं न मित्रं विचारी ॥
न महिमा न माया न मद्दं न मोहं । न रंगं विरगं न दाया न द्रोहं ॥
न सीतं न तापं न संगं कुसंगं । भावं न भिय्यान अंगं अनंगं ।
सुखं भूमि सज्या न डामं न वाम । गहे वाहँ आनै नतो पंच-ग्रासं ॥
ममं त्रिग्यहू भूमि पंथं म ज्जं । वसन्नं दिगं [illegible] गागं निल्लज्जं ॥
विमोहं विदेहं [illegible] विकारं । अपानै [illegible] निति वानं अहारं ॥
विलेपं न न श्रीषंड आगी विचारं । [illegible] धारं ॥
प्रकामी नु [illegible] मोद राखै । [illegible] आर [illegible] ॥
अलेपं अछेरं [illegible] अप्रकामं । [illegible] निरासं ॥
अनातुर अचव्रन माया अनीतं । अमोह अछोह अद्रोहं अभीतं ॥
अनामं अकामं अठामं अजेयं । अनाधार [illegible] महिमा अमेयं ।
प्रशवृत्ति लीनै भवै [illegible] गानी । विचार प्रचारं विहारं विमानी ॥

यह महाकाव्य आज तक महाकवि चंद का बारहवी शताब्दी का रचा हुआ एक बड़ा प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ करके हमारे देश में प्राचीन काल से चला आता है

अकृत्रिमता

और इसकी यथार्थता मे आज तक क्या तो स्वदेशी और क्या किसी विदेशी विद्वान को कोई वैसी शका नही हुई है कि जैसी हमारे परम प्रिय मित्र महामहोपाध्याय कविराजजी श्रीश्यामलदासजी को बैठ बिठाये हो गई है। यद्यपि हम इस महाकाव्य को अभी तक अनुकूल दृष्टि से ही देखते हैं, किन्तु उसीके साथ हम उसकी परीक्षा करने में प्रतिकूल दृष्टि देकर उसके गुण दोषों को भी देखते जाते हैं, और जब हमको उसमें कोई दोष देने जैसी बात नहीं मिलती तब उसी स्थान पर हम अपनी टिप्पणी में अपना अभिप्राय लिख प्रकाश करते हैं। हमारे पाठकों को यह भली प्रकार समझ रखना चाहिये कि जिस दिन जिस स्थान में जो कुछ हम को कृत्रिम दीखेगा उसे

हम उतने ही बलपूर्वक दोष देकर प्रकाश कर देंगे जैसे हम गुणों को प्रकाश करते हैं और जो कोई बात हमको उसमे दोष देने जैसी मिलेगी ही नही तो फिर हम अशक्त हैं। इस महाकाव्य को कृत्रिम अनुमान करने मे जितने हेतु दिये गये है उनमे से प्रत्येक के विषय में हम निम्नलिखित कुछ निवेदन करते हैं :-

१ इस महाकाव्य मे जो सवत लिखे हुए है वह मुसलमानी तवारीखो म लिखे और माप्रत शोध हुए सवतो से नही मिलते और उनमे ९० वा ९१ वर्ष का अन्तर पडता है अतएव इस बात का निर्णय करने को हमारी टिप्पणी १६८ और ३५५।५६ वादी पढें। उनके पढने और पक्षपात रहित मनन करने से हम आशा करते हैं कि वादी की सवत् अन्तर विषयक शका का निराकरण हो जायेगा।

२ इस ग्रथ मे मुसलमानी भाषादि के शब्द प्रयुक्त हुए दृष्टि आते हैं उनके विषय का समाधान, हमारी इसी उपसहार टिप्पणी का भाषा सबधी चौथा लेख-खड अवलोकन करने से, भले प्रकार हो सकता है।

३ अब तक पृथ्वीराजजी के समकालीनो मे से केवल रावल समरसीजी को ही आक्षेप करनेवाले ने सदेह पक्ष मे ग्रहण किया है कि उसके विषय मे केवल आबू और चित्तोड की पाच चार प्रशस्तियो से ही सशय करनेवाले को सशय होता है अर्थात् सशय का आधार उन ही प्रशस्तियो पर है। यदि उन प्रशस्तियो के सवतों को विद्वान लोग भले प्रकार परीक्षा करके यह निश्चय कर ले कि वे रावल समर-सीजी के ही समय की है और उनके सवत अमुक प्रकार के है और हमको पृथ्वी-राजजी, समरसीजी और पृथाबाईजी के जो परवाने प्राप्त हुए है उनके सवतो को भी उसी प्रकार जाच देखे तो फिर रावल समरसीजी के समकालीन होने मे कुछ झगडा ही न रहेगा, क्योकि झगडा तभी तक रहता है कि जब तक किसी विद्वान को किसी प्रकार पक्षपात होता है और दर्पण लेकर मुख दिखने हुए भी नही दूर होता है। जहा तक हमने रावल समरसीजी के विषय मे शोध किया है वहा तक हमको इस बात मे कुछ सदेह नही है कि वे पृथ्वीराजजी के बहनेऊ और समकालीन थे। आबू और चित्तोड की प्रशस्तियो के सवतो को समझ लेने के लिये एक खोज की बात हमने अपनी टिप्पणी ३५५।५६ मे अति सक्षिप्त रूप से कही है। इसके अतिरिक्त हम एक बडी अद्भुत बात पर विद्वानो का ध्यान दिलाते है कि कविराज-जी ने इस महाकाव्य के सवत् १६४० से १६७७ के भीतर जाली बनने के सिद्ध करने मे नीचे लिखे प्रमाण कहे है: -

"इस किताब मे मेवाड़ के राजाओ की बहुत सी प्रशसा, रावल समरसिहजी के नाम से की है और एक स्थान मे उनको आशीस देने मे ये शब्द लिखे है:—

(१) कलकियां राय केदार।

(२) पापियां राय प्रयाग।

(३) हत्यारां राय बणारसी।

(४) मदवान राय राजान री मंग।
(५) सुलतान ग्रहण मोरवन।
(६) सुलतान मान मलन।

इन पदवियों से मेवाड़ के महाराणा संग्रामसिंहजी (सांगा) की ओर संकेत है''—इत्यादि। जब विद्वानों को रासो के उस रूपक को अवलोकन करके परीक्षा कर समझना चाहिये कि जिसमें यह वाक्य खंड उक्त किया गया है, वह रूपक यह है:—

छंद पद्धरी—सामंत गव्व मनुहार कीन। प्रोहित राम आसीस दीन॥
हरि सिद्धि सिद्ध वरदान भट्ट। उच्चरयो चंद पैपे सु घट्ट॥
दुहु पष्य चवर सिर धरिय छत्र। बरदाइ देन आसी तत्र।
उठियो सिंघ बरदाइ देगि। बोल्लंत बिरद बहु बिधि बिसेषि॥
चीतोर राज काइम्म कीन। पुम्मान पाट पग अचल दीन॥
मेर गिरि सरिस चित्तोर मानि। किरनाल तेज बढ्ढे षुमान॥
जैचंद समह जिन जुद्ध कीन। मानों कि उरग जनु मोर पीन॥
कलंकिया राय केदार राय। कवदेन बिरद मन उमँग चाय।
पापी राय प्राग बड ममान। कप्पन द्ररिद्र करनार जान।
हित्याग राइ कामी अभंग। मदुआंन राइ गंगा उतंग॥
सुल्तान मलन बंधन समोप। हिंदून राइ टालन्न दोप।
उज्जैन राइ बंधन समथ्थ। आचार राइ जुजष्टरह पथ्थ।
भीमंगराइ भंजन सुफेन। जम लयो धवल राजिद जैत॥
रिनथंभ राय सिर दंड कीन। अब्बुआ राइ गढ़ लेइ दीन॥
उथ्थाप राइ थापन समथ्थ। सोंपन सरीर प्रथिराज सथ्थ॥
दष्षनी साह भंजन अलग्ग। चंदेरि लिद्ध किय नाम जग्ग॥ ४१॥

हमारे पाठकों को इस रूपक का तात्पर्य निकालने के पहले यह जान लेना अत्यावश्यक है कि वह रासो के समरसी दिल्ली सहाय नामक समय में का है रासो की किसी पुस्तक में तो यह समय पृथक है और किसी में वह बड़ी लड़ाई नामक समय के आदि में ही मिला हुआ है। इस इस रूपक के अन्तर्गत वृत्त का प्रसंग यह है कि रावल समरसीजी अपनी महाराणीजी पृथाबाईजी सहित अपने साले पृथ्वीराजजी की सहायता करने को चित्तोड़ से दिल्ली पहुंचे और वहां उनका आदर सम्मान वहां के सब राज पुरुषों ने करना प्रारंभ किया कि उसी प्रसंग में महाकवि चंदबरदाई ने भी वैसे ही रावलजी को आशीश दी कि जैसे वर्तमान काल में प्रत्येक देशी राजस्थान में चारण और राव आदि स्तुतिपाठक दिया करते हैं। रावलजी श्री समरसीजी में जो जो मुख्य गुण थे और उन्होंने जो जो बड़े काम अर्थात् शौर्य्य किये थे उन सबको उनकी प्रशंसा में कवि चंद ने प्रयोग करके यह

विरदावली कही है और इसमें यह बात विचारने की है कि कविराजजी ने जो इस रूपक मे के–"कलकिया राय केदार" जैसे विशेषणो का महाराणाजी श्री सग्राम सिंहजी (सागा) की ओर सकेत होना अनुमान करके रासो के जाली बनने के समय के प्रारभ का स० १६४० निश्चय किया है वह इस मूल रूपक के अवलोकन करने से सत्य मालूम होता है कि नही। यदि हम कविराजजी के अनुमान का यथार्थ होना भी मान ले परन्तु इस रूपक मे–"कलकिया रायकेदार" आदि के साथ ही–"जैचद समह जिन जुद्ध कीन" और "सोपन सरीर प्रथिराज सथ्थ" जैसे स्पष्ट विशेषणो को छोड देना और कलकिया राय केदार आदि को ग्रहण कर लेना। यदि कविराजजी ने इन - "कलकिया रायकेदार" आदि को सागाजी पर घटाकर केवल उनही तुको को क्षेपक बताया होता तो भी यह एक प्रकार से कुछ ध्यान मे बैठने जैसी बात होती। हम यह भी नही समझ सकते हैं कि इस रूपक मे स० १३४० कैसे सिद्ध होता है क्योकि महाराणाजी श्रीसागाजी का राज्य समय कविराजजी के मानने के अनुसार स० १५६५ से स० १५८४ तक ही होता है और सवत १६४० का वर्ष महाराणाजी श्री बडे प्रतापसिहजी के राज्य समय स० १६३३ से १६५३ तक मे आता है। रासो की स० १६३ ।३? और १६४? की लिखित पुस्तकें हमारे पास विद्यमान है। तथा अकबर बादशाह ने पृथ्वीराज रासो की कथा अपने दरबारी भाट गगाजी से स० १६२७।२८ मे सुनी थी कि जिसके वृत्तान्त की एक स० १६२९ की लिखी हुई चंद छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक हमको प्राप्त हो चुकी है और उसी के साथ जो समय स० १६४० से १६७० तक का रासो के जाली बनने का अनुमान किया गया है। उस समय मे मेवाड मे एक राणारासो की पुस्तक स० १६७५ की लिखी हुई प्रति से हमने अपने पुस्तकालय के लिए एक प्रति करवाई है और हमारी प्रति मे बहुत से अन्य भद्र पुरुष प्रतिया करवाते हैं। खैर, यह सब बातें तो जाने दीजिये और एक इस छोटी सी बात पर ही ध्यान दीजिये कि रासो की उन सब पुस्तको के अत मे की जो मेवाड राज की एक पुस्तक से प्राप्त हुई है, मूल पुस्तक के लिखने वाले लेखक के लिखे हुए नीचे लिखे छद प्राप्त होते हैं कि जिनमे यत्किंचित वृत्त लिखा हुआ है। ये छद हम आशा करते हैं कि उन पुस्तकों मे भी अवश्य होगे कि जो एशियाटिक सोसाइटी बगाल के पुस्तकालय मे है—

कवित्त —मिली पंकज गन उदधि। करद कागद कातरनी ॥
कोटि कवी काजलह। कमल कटिकर्ते करनी ॥
हितिथि संख्या गुनित। कहै कक्का कवियांने ॥
इन श्रम लेषन हार। भेद भेदै सोइ जानै।
इह कष्ट ग्रन्थ पूरन करय। जन बझ्या दुष ना लहय ॥
पालिये जतन पुस्तक पवित्र। लिषि लेषक विनती करय ॥ १ ॥

गुन मनियन रस पोइ । चंद कविनय करि दिद्धिय ।
छंद गुनीनें तुट्टि । मंद कवि भिन भिन किद्धिय ॥
देस देस बिक्खरिय । मेल गुन पार न पावय ॥
उद्दिम करि मेलवत्त । आस बिन अलस आवय ॥
चित्रकूट रान अमरेस नृप । श्रीमुष आयस दयौ ॥
गुन बीन बीन करुना उदधि । लषि रासौ उद्दिम कियौ ॥

दोहा — लघु दीरघ ओछा अधिक । जो कछु अतर होई ॥
सो कवियन मुष सुद्धतें । कहो आप बुधि सोइ ॥

इन छदों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि किसी कक्का नामक पुरुष ने मेवाड़ राज्य के अधीश बड़े श्रीअमरसिंहजी (चित्रकोट रान अमरेस नृप) के आज्ञानुसार राज के पुस्तकालय के लिये उक्त पुस्तक लिखी थी । इन महाराणाजी का राज्य समय कविराजजी के मानने के अनुसार सं० १६५३ से १-७६ तक का है । जबकि मेवाड़ राज की पुस्तक का उसकी अन्य प्रतियो मे सं० १६५३ से १६७६ के बीच में लिखा जाना अनुमान होता है तो फिर इस समय में जाल बनना भला कोई कैसे मान सकता है । अब रहा स० १६७७ की भविष्य वार्ता का विदित करने वाला दोहा उसके विषय में हमने अपनी सरक्षा के लेख खड २७ मे सविस्तर कह दिया है अतएव यहां कुछ अधिक नहीं वर्णन करते ।

४ यद्यपि इस महाकाव्य के जाली बनने के अनुमान का प्रश्न तो रीति से किया गया है कि इस ग्रंथ मे लिखे पृथ्वीराजजी के समय के मनुष्यो के नाम और वृत उस समय की मुसल्मानी तवारीखों मे लिखे हुओं से नहीं मिलते है परंतु जिस प्रकार से इस प्रश्न का निर्णय किया गया है उससे प्रश्नकर्ता की प्रतिज्ञाहानि और हेत्वाभाष स्वयम्सिद्ध है । हमने इस विषय में अपनी लिखी पृथ्वीराजरासो की संरक्षा की अंग्रेजी पुस्तक के पृष्ट १५ और ३०, लेख खंड ११ और २८ और हिन्दी के पृष्ठ १८ और ३९ और लेख खंड ११ और २८ में बहुत कुछ लिख कर प्रकाश किया है । क्या जितना अंश इस महाकाव्य का मुसल्मानी तवारीखों से मिलता हुआ है वह उसके बनानेवाले ने उन तवारीखों को सोलहवीं सदी में पढ़ करके जाल निर्माण किया है । क्या उस समय की हसन निजामी की तवारीख, तबकात नासरी, और अब्बुल फिदा, आदि नामक तवारीखों में परस्पर कोई ऐसे विरोध नहीं हैं और क्या वे एक दूसरे से सर्व प्रकार से परम सम्मत हैं ? कविराजजी ने स्वयम् यह स्वीकार किया है कि तबकात नासरी ने मनुष्यों के अशुद्ध नाम लिखे हैं और अब्बुल फिदाने सवत् ही नहीं लिखे है फिर उनके दोषों से यह महाकाव्य क्योंकर दूषित हो सकता है ? क्या उक्त मुसल्मानी तवारीखों के कर्ताओं ने सब वृत यथातथ्य लिख कर केवल सत्य ही लिखने और मिथ्या कुछ भी न लिखने का एक झंडा हाथ में लिया है ? देखो, क्या यह शोक की बात नहीं है कि तबकात नासरी ग्रंथाककर्ता बिचारा स्वयं कहता है कि जिस वर्ष में पृथ्वीराजजी की अंतिम

लडाई हुई थी उसमें तो वह उत्पन्न हुआ था और उसके ३५ वर्ष पीछे वह पहले ही पहल हिन्दी मे आया था, उसने जो कुछ इस विषय मे लिखा है वह उसने एक मनुष्य से सुनकर लिखा है। फिर हम नही जानते कि कविराजजी मिनहाज-इ-सिराज जैसे एक भले आदमी को क्यों प्रत्यक्ष प्रमाण की साक्षी मे घेरते हैं। हम पृथ्वीराजरासो और उस समय की सब मुसलमानी तवारीखो को एक दृष्टि से देखकर यह कहते है कि जिस ग्रंथकर्त्ता ने जो, जितना और जैसा, देखा और सुना, वह उसने अपनी इच्छा और शैली के अनुसार लिखा है यदि उनमे से किसी की कोई बात हमको अयथार्थ प्रतीत और सिद्ध हो तो हम उसको अस्वीकार कर सकते हैं, किन्तु हम उनमे से किसी को भी लार्ड हेस्टिंगस के समय में जैसे नन्दकुमार को जाल के अपराध मे फांसी की शिक्षा दी गई है वैसी शिक्षा विद्वानों के हाथ से कदापि नही दिलाना चाहते। निदान हम फिर भी प्रसन्नता और विचारपूर्वक कह सकते हैं कि प्रत्येक ग्रंथकर्त्ता ने अपने अपने ज्ञान के अनुसार ऐतिहासिक वृत्त लिखे है चाहे उसमे कोई बात असत्य भी क्यो न हो परन्तु उस असत्य बात के कारण से आदि से अंत पर्यंत कोई ग्रंथ जाली नहीं हो सकता। इस बात के मान लेने मे हमको कोई लज्जित होने की भी बात नही है कि यह पृथ्वीराजरासो चंद का लिखा हुआ सत्ता है, उसके दो एक समय उसके बडे बेटे जल्ह के लिखे हुए है और उसमे जो कही कही कुछ क्षेपक अश पीछे से किसी ने मिलाया होगा वह विद्वानो की परीक्षा करने मे स्वयम् तरजावेगा। अब तो कोई बात अडचन की रही ही नही है क्योंकि यह आदि पर्व तो हमने यथाशक्ति संशोधित करके अपने पाठको की सेवा मे अर्पण कर ही दिया है, उसीमे हम इस महाकाव्य की अकृत्रिमता की परीक्षा करना प्रारम्भ कर सकते है और प्रति मास मे हम यह भी सिद्धान्त कर सकते हैं कि यहां तक ही कुछ जाली अश है अथवा नही।

इस बात के जानने से हमारे पाठको को बहुत प्रसन्नता होगी कि हमको शोध करने से पृथ्वीराजजी और रावलजी श्रीसमरसीजी और महाराणी पृथाबाईजी के थोडे से खास रुक्के और पट्टे परवाने प्राप्त हुए है कि जिनमे वही अनन्द विक्रमी संवत् है कि जो पृथ्वीराजरासो मे लिखा हुआ मिलता है। इन सब के फोटोग्राफ हमने एशियाटिक सोसाइटी बंगाल को भेंट करने तथा उनकी सत्यता की परीक्षा करने के लिये अपने स्वदेशी परम प्रसिद्ध विद्वान रायबहादुर डाक्टर राजा श्रीराजेन्द्रलाल जी मित्र एल० एल० डी०, सी० आई० ई० की सेवा मे भेजे हैं। उक्त डाक्टर साहब अकस्मात रोगग्रस्त हो गये कि जिससे यह हमारे बडे परिश्रम से शोध किये हुए लेख उक्त विद्वन्मंडली मे उपस्थित नही हो सके है किन्तु हम को आशा है कि राजा साहब के रोग्य होते ही उक्त लेख सोसाइटी में उपस्थित होकर यह विषय विद्वत् मंडली

पृथ्वीराजजी, समरसी जी और पृथा-बाईजी के खास रुक्के पट्टे परवाने आदि

में छिड़ेगा। यह विषय अभी हमारा सौंपा हुआ एक महान पुरातत्ववेत्ता विद्वान के हाथ में है अतएव हम उन लेखो की प्रतियों तथा अपने निज विचारो को प्रकाश नही कर सकते परन्तु इतना तो निःसंदेह कह सकते हैं कि अभी तक हम उनको अकृत्रिम समझते है और ऐसा समझने को सतर्क सिद्ध भी कर सकते है। इसके साथ हमको यह कहने मे कुछ भी लज्जा नही है कि यदि उक्त डाक्टर मित्र, हमारे विद्या गुरु डाक्टर हार्नली साहब, मिस्टर ग्राउस साहब और मिस्टर ग्रियरसन साहब, जैसे पक्षपातरहित और सहसा सिद्धान्त न करनेवाले पुरातत्ववेत्ता विद्वान उनको अप्रामाणिक सिद्ध कर ग्रहण करेंगे तो हम भी उन्ही से सम्मत होंगे क्योकि हमको किसी बात का वास्तव मे दुराग्रह नही है वरन इसमे भी कुछ सदेह नही है कि जो कोई अन्य मनुष्य बिना किसी योग्य कारण के हमारे स्वदेश और उसकी विद्या पुस्तकों को दोष दे तो हम उस दशा मे उनके एक बड़े कट्टर पक्षकार है।

अंत मे हमारा सब विद्वानो से यही सविनय निवेदन है कि वे इस महाकाव्य को उसकी भले प्रकार परीक्षा करके पढ़े और पढावें और जो कही उसमे कुछ हमारा कहना तथा कोई अनुमानादि का करना अयोग्य प्रतीत हो तो हमको क्षमा करें। यही प्रार्थना हम विशेष कर के अपने मित्र महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदासजी की सेवा मे भी करते है क्योकि उनके विचारो और अनुमानो का हमने विशेष करके एक बलिष्ट भाषा मे खंडन कर अपने स्वदेशाभिमान और उसकी हिन्दी विद्या की सरक्षा की है। इसके साथ यह भी वक्तव्य है कि जैसे हमने इस उपसंहारिणी टिप्पणी मे इस महाकाव्य के पांच चार विषयो के विषय मे अपने विचार प्रकाश किये है वैसे ही चंद के व्याकरणादि जैसे शेष विषयो के विषय मे भी हम यथावकाश लिखेंगे। इत्यलम्॥

समाप्ति



अथ दसम* लिख्यते

(दूसरा समय)

हरि रूप का मंगलाचरण

साटक- सो ब्रह्मा सो इन्द्र ईति भजनं, ईपाल ईयं हरं ।।
पिठ्ठे निरुठ कमठ्ठ माइर उरं, जठरागिन वारी वरं ।।
सो भानं विधि भान नेत्र कमलं, बाहौ गिरं ग्रभ्भियं ।।
जंघा अष्ट कुला चलं न ग्रभितं, जै जै हरी रूपयं ।।
।। छं० १ ।। रू० १ ।।

दशावतार का नाम स्मरण

चौपाई-मछ्छ कछ्छ वाराह प्रनम्मिय । नारसिंघ वामन फरसम्मिय ।।
मुअ दसरथ्थ हलद्धर नम्मिय । बुद्ध कलंक नमो दह नम्मिय ।।
।। छं० २ ।। रू० २ ।।

दशावतार की स्तुति

विराज करे मछ्छ रूप । धरेना अनूपं ।। बध्रे संष धूपं । वरे वेद भूपं ।।३।।
★ ★ ★ ★ । ★ ★ ★ ।। ★ ★ । नमो मछ्छ रूपं ।।४।।
धरा पिठ्ठ तिठ्टं । कनंगे गरिठ्ठं ।। जले धार दिठ्ठं । नमं। तो कमठ्ठं ।।५।।
स्वयं दे वराहं । हयग्रीव गाहं ।। रदग्रे इलाहं । उपम्माति चाहं ।।६।।

★ इस समय मे दशावतार की कथा होने के कारण चंद ने उसका नाम दशम रक्खा है ।।

१ पाठान्तर - मो । सो । ईद्र । भजन । इयाल । हारे । हरि । पिठैं । पिठे । निठ । निह । कमठ । कमह । माईर । जरागिन । रर । मो । भान । नैत्र । कमल । बाहौ । गरभितं । ग्रभ्भित । जघा । गभ्भितं । हरि ।।

२ पाठान्तर —मछ । कछ । प्रनम्मियं । नारसिंघ । फरस्सम्मिय । फमरेम्मियं । सुत । सुअ । दरमथ । हलधर । नंमिय । रम्मीय । बुद्ध । कमल । नमो । दद । नम्मीय । रमिय ।।

३ पाठान्तर—करै । मछ । सिरैनारनुपं । बंध्रै । धुर । धरै । वैद । भुपं । नमो । मछ ।। ३-४ ।। पिठ । तिठं । तठं । कणंगो । गरिठं । दिठं नमो तै । कमठं ।। ५ ।। सुव । दैं । हयं । ग्राहं । रदग्रै । इलाहं । उपम्माति । तैंवराहं ।

★ ★ ★ । ★ ★ ★ ॥ ससी सेष राहं । नमो ते वराहं ॥७॥
हिरन्नष्ष वीरं । प्रहल्लाद पीरं ॥ उठे षंभ चीरं । महा बीर बीरं ॥८॥
★ ★ ★ । ★ ★ ★ ॥ बढी पंक नीरं । नमो ध्रम्म धीर ॥९॥
मृगंकस्य ऊरं । नषं तोरि तूरं । बजी दठ्ठ पूरं । थपे जान जूरं ॥१०॥
दया सिंधु मूरं । कुकंपीस भूरं ॥ नटी लछ्छिछनूरं । धवी अंषिधूरं ॥११॥
भयं देव दूरं । नियं भत्ति भूरं ॥ थुती पानि जूरं । नमी सिंघ सूर ॥१२॥
बली राइ अग्गी । छली भूमि मग्गी ॥ लुके बंभ तग्गी । मुषं वेद जग्गी ॥१३॥
निषे गंग लग्गी । सुलोकी सुभग्गी ॥ तिहूं लोक बानी । रिजे देब गानी ॥१४॥
प्रसन्नौ बलिज्जा ।दईभोमि सज्जा ॥त्रिलोकी तिडग्गी ।नमो बाम लग्गी ॥१५॥
पिता बाच मानं । हते ग्रम्भ थानं ॥ सहस्रंभुजानं । रुधिद्राधरानं ॥१६॥
नछत्री छितानं । दई विप्र दानं ॥ सुरानं प्रमानं । नमो पर्सरामं ॥१७॥
हरे राम ग्यानं । सु रामं सुरानं ॥ रघूबीर रायं । दया देह कायं ॥१८॥
सु वैदेहि दायं । सुमित्रै सषायं ॥ विसामित्र सष्षांषरं दूष नष्षं ॥१९॥
सुपर्नी सहायं । तडिक्की निहायं ॥ बटीपंच पत्ते । मृगं चाप हत्ते ॥२०॥
रजं वारि दंती । जमं जाममंती ॥ मत मेघ कंती । ★ ★ ★ ॥२१॥
घनं घार भारी । मरीचं प्रहारी ॥ सुअं सुद्धकारी । हनुम्मान धारी ॥२२॥
गऊतम्म नारी । सिला तुंग तारी ॥ जरी लक चाही । पुरी हेम दाही ॥२३॥
रिछं बानरायं । भए मो सहायं ॥ हनुम्मान ताय । दघी मीस आय ॥२४॥
पषानं तिरायं । सुहिद्रा सहायं ॥ हनूमान रद्दो । समुद्देस बद्दी ॥२५॥

नमो । तै । त ॥ ६-७ । हरंनष्य । हिरनंष । हरिणाष्यदाह । प्रहलाद । प्रहल्लाद । उठै । मनो । ध्रम । उर । नूर । जांनि । दया । दधिपुरं । कुकपिस मूर । लछि । नूरं । धवी । अंष । धुरं । धुर । देव । दुर । भति । भति । भूरं । थूनी । पानि । पांनि । जुरं । नमो । सि ॥ ८-१२ ॥ राप । अग्गी । लछी । छन्ने । भमि । मग्गी । मग्गी । लुके । तग्गी । तगी । मुप । मुषे । बैद । वेद । जग्गें । जगी । नषै । नपे लग्गी । लगी । लाकी । स । मंगो । मगी । तिहों । लोक । बानी । रिझै गिमें । देव ग्यांनी । गांनी प्रसन्नो । बलीजा । दइ । भुमि । सजा । मिज्या । त्रिलोकतेडगो ठगी रुठ ठगो । तडकी । बांमनग्गी ॥ १३-१५ ॥ ता बचमार । ग्रग । थांनं सहस्रं । रूधिजा । रुधिज° । नछित्री । वइ । प्रनामं । नमो परसरामं । पर्शुरामं ॥१६-१७ ॥ हरै । रांम । राम । सुमित्रे । बिश्वामित्र । मष्यं । मष । हरैदुकरिष्यं । सपत्नी । सुपर्णी । सुर्पनी । तडिका । बडी । बठी । पती । मृगै । हतै । हते । रज । जंम जाम मती. । मत । मैघ । मरी । मरीचं । सय संद्धिकारी हनुमांन । गउतम् । गउमंत । सिलाक त्रुंग तारी । चाहा । हेन । हेम । रिछं । बांनरायं । सो हनुमांन । बरदी । रदी । समुदेस । बदी । तिनै । हाप्यं । हुषं । सदैसं ।

तजे बीर हथ्थं। सँदेसं सु कथ्थं। जहां लंक गढ्ढं। तहां बग्ग बढ्ढं ॥२६॥
उहां सीय दिष्षी। हुंती दुष्ष मुष्षी ॥ दियं मुद्रि तांम। सहिन्नानरामं॥२७॥
दमानन्न आदं। गयं मेघनादं। करे कुंभ चूरं। भरे वान भूरं ॥२८॥
सती सीय अंभी। कियं काज बंभी॥ त्रिकूटेस नाथं। बभीषन्न हाथं ॥२९॥
प्रसूनं बिमानं। चढ्ढें वेगियानं॥ अयोध्या सपत्ते। नमो राम मत्ते ॥३०॥
बसुद्देव अैनी। बरी कंस भैंनी॥ बियं पानि बद्धे। पुरानं प्रसिद्धे ॥३१॥
जयं जग्ग धारी। दियं दान भारी॥ रथं आप रूढे। समं कंस मूढे ॥३२॥
अकासे सु बानी। श्रवन्ने गियानी। उवं षग्ग झारे। अनुज्जां प्रहारे ॥३३॥
बरं पानि बद्धे। सुवाले अबद्धे॥ इयं ग्रम्भ पुत्तं। रुके तथ्थ दत्तं ॥३४॥
सतं किस्न दिस्नं। भये राम किस्नं॥ प्रथमं सुभद्दं। तिथी पष्ष अद्धं ॥३५॥
नषत्रं सु रोही। भुजं जन्म सोही॥ चतुर्बाहु चारं। किरीटं सुहारं ॥३६॥
सतं पत्र नेन। क्रने कुंडलेनं॥ नियं मुत्ति नासी। इयं अब्बिनासी ॥३७॥
सदा लछ्छिदासी। वर१ निवासी॥ मुखं मंद हासं। चतुर्वेद भासं ॥३८॥
भ्रगू लत्त गत्तं। प्रभासी प्रभुत्तं॥ मनी नील सीतं। कटी पट्ट पीतं ॥३९॥
स्वयं ब्रह्म देही। नियं नंद गेही॥ विषं पूतनायं। पियं दूध तायं ॥४०॥
सकट्ठं प्रहारैं। ब्रजज्जा विहारैं॥ तिनं व्रत्त तानी। उवं आसमानी ॥४१॥
प्रभू ग्रीव लग्गे। तिनं ताम भग्गे॥ रिषी श्राप आपं। नलं कूब तापं ॥४२॥
दहं देवदारं। ब्रजंजा कुमारं॥ नवं नीत चोरं। दही मट्ठ ढोरं ॥४३॥

सदेसं। कथ्यं। कथं। तहा। गढं। तहा वग बढ। उहा। दष्यी। द्रिषी। हुंती। दुष मुषी। दीयं। सहं। दानरामं। सहंनान। दमानन। आदां। मयं। नाद॑। करे। चुरं। वांनं। भुरं। अभी। किय। बभी। कुंटं। बभीपन। प्रसूत। विमांनं। चढैवेगि। आनं। अज्योध्या संपन्ने। संपन्ने। नमो। राम। मतै ॥ १७-३० ॥ वसुदेवा। अैनी। वसूदेव। भेनी। बीयं पांनि। प्रसिद्धं। प्रसद्धै जगिधारी। सूढं। मुढै। अकासैं। बानी। अवन्मै। गियांनी। ऊवं षग। झारै। अनुजं। प्रहारैं। पानि। बध। बद्धै। बाले। अवद्धै। अवधे। गभ। पुंन। रुकै। तथ। दंतं। दत्तं। किसन दिसनं। किस्मं। प्रथमं सभद्दं। प्रथमं सभदं। परक। गष। पष्य। निषित्री। निपित्रं। रौही। सौही। चत्रुवहु चारू। किसडी सुं हारू। चतुर्बाहि। किरीटी। नेनं। नैनं। क्रंनं। कुनै। कुडलैन। कंडलें मंनं। अयं अयं अविनासी। अपं। अविनासी। लछि। चरंने। चरंने। चतुर। वैद। भृगू। भ्रगूं। प्रभुतं। दैही। ग्रैही। पुतनायं। पीयं। धूत नाये। सकट्ट। सकटं। बजजा। व्रज्जजा। विहारे। तिना। व्रत। प्रभु। ग्रीव। लगै। तांम। भगैः। भग्रे। रिषि आप आपं। दैव दारं। ब्रजजा। कुंमारं। चोरं। मटढोरं। गोप। सौरं। अमोषं। किसौरं गहीदांन पांन। जसोदा रिसांनी। सिसूउंप्य। सोयं।

किय गोप मोर । अनोषं किसोरं ॥ ग्रही दान पानी । जसोदा रिसानी॥०४॥
सिसू उष्ष मद्धे । किहों बंध बधे ॥ मुयं ब्रह्म लेष्यो । अचिज्जंमपेष्यो ॥४५॥
लघू दीर्घ इद । कला की गुविद ॥ ररोष महामी । मुकत्ती निवामी ॥४६॥
मुन जष्ष राज । किय ऊर्द्ध काज ॥ द्रुम गात वीची । परे व्रष्ष सिची ॥४७॥
थुनी बध पान । प्रमिद्धे पुरान ॥ वरून पिवामी । ग्रहे नद ग्रामी ॥४८॥
जिते लोक पाल । व्रज जाल वाल ॥ बधी धेन मारे । प्रलब प्रहारे ॥४९॥
मुषे काल व्याल । सिसू वछ्छ पालं ॥ कली उत्तमंग । कियन्रित्तरग ॥५०॥
व्रजं व रि लोपं । मधू मेघ कोप ॥ परी व्रज्ज धारा । गिरधारिधारा ॥५१॥
नषे मैरु मार । त्रिभगी त्रिमारं ॥ पुरद पुलान । व्रजे वानि सांन ॥५२॥
निमा अध घोर । कियं गोप मोर ॥ धरा नील रैनं । तज्यौ देव सैनं ॥५३॥
कचं वक्र वेंनी । भ्रमी भूरि मेनी ॥ श्रुती कुडलीन । दुती काम लीन ॥५४॥
चप पुडरीक । बा मेघ लीक ॥ नम मुत्ति मारे । निमामेक तारे ॥५५॥
धरो मुद्ध हाम । करे देव बास ॥ रद छद मुद्द । नग कोक नद्द ॥५६॥
ग्रिवा कबु रेष । मुजाक्त्ति सेष ॥ बयज्जन माल । उरे मो विमाल ॥५७॥
लिय वेन सेल्ली । वने जाम केल्ली ॥ जसोदा जगाय । मृगे मिग वाय ॥५८॥
जिने गोर मथ्थ । दही पन हथ्थ ॥ वनेजा विहारी । गऊ वछ्छचारी ॥५९॥
अग कान मुद्दे । दिये हेरि मद्दे । किय ग्रेह चारी । हसे गोपभारी ॥६०॥
सनं पत्र पुन । अविज्ज मुह्नि । निय नाप लाग । हरेवछ्छ भाग ॥६१॥
स्वयं स्याम चिन्त । धर्‍यो ध्यान हिन । निय नद पुन । मन्ना न मजुन ॥६२॥
किय मोक कोप । कहा वछ्छ गोप । हरे ब्रह्म ग्यान । पराप परान ॥६३॥

आचिज्जम । लघु दीघ । जग । उग्ग नद्दे । उर्द्ध । द्रुम । परे नाग । गीवी । सीची । थुनी । प्रामद्धे वितामी । ग्रीहे । ग्रहे । जितै लोक माल । व्रज । बधी धेन सारे । प्रलबे प्रहारे । मुषे । वछ्छ । उतमग । कियनत्रग । नृत्यानृत । व्रित्र । वृत्र । लोप । मधुमेघ कोप । व्रुज । धाए । गिरधारि वाए । नषे मोरमाल । मेल । त्रिभगी त्रिमाल । पुरन्द । व्रजेवा । व्रजेवा निमान । धोर । कीय व्रजमोर । रने । कचवक्र अंनी । अनो । भ्रमी । भमी । भूरि । मैनी । स्रुती कुंडलीनं । कांम । पुडरीक । चप मै लीक । नाम मुनिमारे । निशा । मैक । तारे । सुद्धि । सुधि । करें । रद छद मुद । रद मद मुद । नागे कोक नद । कबु । रैप । सैपं । शेषं । वयजन । उरे । मो । वैन । मैलो । बनै । जांम कैली । जसोदा । मृगेमिगवायं । जितै । गोप मथ । दहीपन हथ । बनेजा । गौवछ्छ चारी । वछ । अग कांन मुदै । दिऐ । सदै । निय गहे चारी । गेह । हसे । हसै । गोप । पत्र पत्रं । अविज मुहिनं । नप । हरे । वछ्छ । स्यांम चित । ध्यांन । हिंतं । निय । मिलानंस । कीयं । सोक । कोप । कहा । वछ्छ । गोपं । हरे । ग्यानं । पुबवं ।

रचे क्रिष्ण सोची । त्रियं अंग रोची । तिनें रंग नेहं । अप्पं अग गेहं ॥६४॥
तनं संष चक्रं । चतुर्बाहु वक्रं । पियं पट्ट बंधे । सहं ग्वाल नंधे ॥६५॥
अविज्जं बिहारी । नले ब्रह्मचारी । भ्रमें लोक पालं । बियापै मुकालं ॥६६॥
★ ★ ★ । ★ ★ ★ । थुती सा मुरारी । सूब्रह्मं विचारी ‡॥
॥ छं० ६१ ॥ रू० ३ ॥
भुजंगी । न रूपं न रेषं न सेषं न माया । न चंद्रं न तारा न भानं न भाषा ।
अविद्या न विद्या न सिद्धं न सादी । तुही ए तुही ए तुही एक आदी ॥६८॥
न अंभं ग रंभं न रुद्रा न पाया । न सेतं न नीलं न पीतं न गाया ॥
न काया न माया न षाया न छाया । तुही देव सद्देव सिद्धे न पाया ॥६९॥
तुही सर्व माया दिषायान माया । तुही सर्व माया तुही घाम छाया †॥
न बंभा न रंभा न रुद्रे न देहं । न मंद्रे न माया न राया न गेहं ॥७०॥
न सैलं न गैलं न तापं न छाया । न गाहा न गीतं न श्रोना न नाया ॥
न प्रव्वी न पालं म्रजाद न मादं । न तारी नवारी न हारी न नादं ॥७१॥
नवे मेष रेष न भूरी न मारी । नवे ध्यान मानं न लग्गे न तारी ॥
न लोकं न सोकं न मोहं न मादं । तुही ए तुही ए तुही एक आद ॥७२॥
नहां पै न तारं न बार न वीरं । नय दठ्ठ मठ्ठं न ध्यानं न धारं ॥
नहं जोति हस्तं न वस्त्रं सरूपं । नहा तू तहां तू नहां तू गुरुपं ॥७३॥
प्रकृत्तं प्रथम त्रय तत्त जोई । नहा नभ्भ नेता सराजं न सोई ।
न माया न काया न हाया न होई । तुही देव मा देव साधा न सोई ॥७४॥
तुही अबुजा अबुकामिन्नि कामं । तुही तत्त कै तत्त रामं न रामं ॥
तुही दीप सूरं सिर नभ्भ तेरे । भुजा इंद्र तुही नभं नाभ फेरे ॥७५॥

रचकिथ्य सोची । अय अव रोचा । अप अ । गेनी । तिनं रग नेहं । अप अग गेहं । तन । चतुर । बंधे । नधे । अविज्जं । नले । भ्रमै । लोक । मारारी ब्रह्म ।
★ पाठ नही मिले । ‡ सं० १८५९ में है अन्य मे नही ॥

४ पाठान्तर—रूवं । रेष । संप । सेषं । शाया । चन्द्र । नरूभान । भाषां । चंद । नरूभान । भाषो । त्रुही । अदी । अम्भ । अंभ । रभं । रुद्धा । सैतं । नील । नं । नकाया । बाया । तुही । दैव । मदैव । सिद्धै । पीया । † यह तक सं० १८५९ की में नही है अन्य मे है । सरव । दिषायान । सरव । तुंही । याम । थंभा । संभा । घंभां । रूद्रा । रुद्रा । मंदै । नया । गैहं । ग्रेहं । शैलं । मगाहा । श्रोत । नं । प्रवीनं । नंपालं । मृजांद । मृजादं । नवारी नवारी हारी । नांद । नवे । मैष । रैषं । भुरी । नवी । ध्यांन । मांन । लगे । लोकं । सोक । शोकं । मोदं । पें । नंय । दरु । मठं । ध्यांन । धारं । तही ज्योति । नहायोति । सरूष । तु । तू । से । सुरुषं । पुरुषं । प्रक्रतं । प्रथमं । त्रयं । तत । जोइ । तोही । तहा । नभ । । सरोजं । सोइ । † सं० १७७० और १८४५ की में नहीं है । तहां । अबुगा ।

सुयं सायरं पेट सा मुष्ष अग्गी। तुही तेज ब्रह्मंड सामीस लग्गी ॥
तुही बाल वृद्धं तुही एक आदी। तुही तंत्र मंत्र कवी चंद वादी ॥७६॥
तुही राग जंत्रं जगत्रं बजावै। तुही सार पंचै सु पंचै चलावै ॥
भगव्वांन जंत्री सु वज्जंति लोई। सुरं राग बंधै बंध्यौ आप सोई ॥७७॥
प्रलै अंभ अंबं तुही हन्य बोधै★। तहामोहि अग्या सु सिष्टं समोधै ॥
॥ छं० ७८ ॥ रू० ४ ॥

साटक—कि सन्मान ससेव देव रजयं, दुष्टान उस्सासयं ॥
कि सुष्षानि दुषानि सेवन फल, आयास भूमी मयं ॥
कि ईसं न सुरेस सेस सनकं, ब्रह्मात ग्यानं लहं ॥
कि रंनं छितया छितं सु कमलं, बंदे सदा विप्पयं ॥छं० ७९॥रू० ५॥

दूहा—नंदकिसोर किसोर मग। निसि पुन्निम ससि अच्छ ॥
ब्रह्म स्तुति ब्रह्मा करिय। गोन मिले गुन बच्छ ॥ छं० ८० ॥ रू० ६ ॥

ब्रह्मोक्ति

दूहा—ब्रह्म कहै सुर सकल सों। गोकल हरि अवतार ॥
नारद सुर पति स्तुति करन। अप आए तिन वार ॥ छं०८१॥रू०७॥
प्रथम कित्ति रवि ससि करी। अहो देव देवेस ॥
तुम गुन बरनत जनम लों। पार न पायो सेस ॥ छं० ८२ ॥ रू० ८॥

मच्छावतार की कथा

वृद्ध नाराच

प्रथम्म मछ्छ रूपयं, सरूप अंग नूपयं।
सु पव्वं रिष्पि तानयं, तमात, मंत भूपयं ॥ ८३ ॥

मनि। तन। नन। राम। सूर। नभ। तै। तग। नरै। तुही। नभ। नाम। फेरै। मोमुप। मामुप। अगी। श्रग। ब्रह्मड। मुमीम। लगी। वृद्ध। तत्र। मंत्र। वाही। रगयत्र। तुही मार पनै चलावै। भगवान। सुवजेति। लोई। बंधे। बध्या। मोही। ★ म० १७७० की मे नहीं है। प्रलै अभ अब तुही। हन्य। वाधै शिष्टं। समोधै। ममोधै ॥

५ पाठान्तर—इसकी पहिली तुक म० १७७० की मे "कि प्रलै अभ अब तुहा हन्य बोधै' है। सन्मान। सेव। देव। दुष्टांन। उम्रासय। उसासयं। सुषनि। दुषांनि। सेवनि: कि। इस। मरैस। सैस। शेस। ब्रह्मान। ब्रह्मपान। ग्यांन। रन। दै मदा विप.। विपय ॥

६ पाठान्तर—नदकिसोर। किसोर। मिशि। पुनिम। यूनिम। शशि। अछ। ब्रह्मस्तुति। ब्रह्मा। ब्रह्मां। गोन। गोंन। मिलै। बछ। बछा ॥

७ पाठान्तर—ब्रह्म। कहे। सो: गोकल। किरन ॥

८ पाठान्तर—किती। करिय। अहो दैव दैवेस। देवेस। तुमि। लों। पावै। पायो। सैश। सैस ॥

ठठ्क्कि एक घट्टवांन, ता निसान बज्ज ही।
अनेक देव रंजए, सुरंभग्यान सज्जही ॥ ८४ ॥
विवान छित्त रंग कित्त जिन्न षंड षंडही।
करन्न एक हेत सेत ता समंद मड्ही ॥ ८५ ॥
सुरंभ हृद्द तब्बिकांन कित्त कथ्थि चंद्दय।
बरन्नवान संकरे, जमात मोद कद्दयं ॥ ८६ ॥
सुचंद सूर नेक भति किति्त जीह जंपही।
कमल्ल केलि वंक मेलि बंधि सिधु चंपही ॥ ८७ ॥
सुदौरि दो दिसांन छोरि तोरि झोरि झंपही।
सुरंज तंज जेज जेत तिष्ष किष्ष रंजही ॥ ८८ ॥
मुरंसुदेह बिद्धहार कित्त कथ्थि चंदय।
सुजोगथान जोगयं सपूरयं निकंदयं ॥ ८९ ॥
सुमालयं न माल देव मालयं सुरज्जयं।
दिसान दिस्स उच्चरं सरूप मछ्छयं जयं ॥ ९० ॥
श्रवंत लोक लोंक पाल फूल माल रंभयं।
सुमंत्र देव सीस रज्जि बंचयं जयं जयं ॥ ९१ ॥
॥ छं० ९१ ॥ रू० ९ ॥

कवित्त—सायर मद्धि सु ठाम। करन त्रिभुअन तन अंजुल ॥
देव सिंगि रषि धरिनि। सिरन चक्री चष झंपल ॥
गैन भुजा ग्रज्जत। रसन दसनं झुकि झांइय ॥

---

९ पाठान्तर—मछ। सुरुपय अनूपय। सुपवं। सुपरव। रिषि। भुपध। ठठ्कि। घंटवान। घट्टवान। निसांन। अनैक। दैव। मज। छिछीह। छित। रंरुग। कित। जित। करन। सैन। हैन। सुरभ। हर। हृद। तविकान। किति। कत। कथि। चंदयं। सु जोग थान। सकरैज। मोद। कंदयं। सु चव। नैक। सुर। नैक। भंति। लीह किति। जपही। भंति जीह कित्ति जपही। कमल। कैलि। मैलि। संधि। सुदौरि बौरि दो निसान दौरि छोरि झपही। दिसाने। छोर। छोरि। सुरंगजतजजनैज तिषकिष रजही। सुरग जतं। जज। तेज। तिष। तिष्य। किष। दैव। विद्ध। किति। कथि। काथै। वंदयं। सुं। जोग। पान। जोगय। संपूरयं। नमाजयं न। माल दैव मालयं सुरजय। दिशान। दिशि। दिर्ि। उचर। उचरं। सुरूप। मछयं। श्रवन। लोकं। पाल आय। रजय। सुमान। दिव। जय जयं ॥

१० पाठान्तर—कवित्त। मद्धि सु मद्धि। मध्य। ठांम। करे। करै। अंजुल। "दैव संगि सठि हय। सिवन चक्रीचष झंझलं" ॥ "देव संगि सटि हय सिर चक्री चष झंझल" ॥ नैन। गैंन। गुरजन। गर्जत। रसंन रसन। झाइयं। झाईय।

एक करन ओढंत । एक पहरत सवाइय ॥
चल चले सपत साइर अधर★ । इंद्र नाग मन कवन कहि ॥
गिर धर चलत पग मल्लनमल । लेन बेद अवतार गहि ॥
॥ छं० ९२ ॥ रू० १० ॥

भुजगी – धरे गेन सीसं चले बेद रीसं । गदा मुदगरं दत पारत चीस ॥
पग पिठ्ठ नठ्ठ कमठ्ठं डरानं । थके वेद ब्रह्मा कमठ्ठं भजान ॥९३॥
भगे जोग जोग छुटे थान थान । छुटे विश्व लोक महा लोक जान ॥
फटे कन्न रानं प्रथी लोक जानं । चिनं रत्त लोकं ध्रमं लोक मान॥९४॥
पुले पित्र लोकं ब्रह्म लोक देव । ★ ★ ★ ★ ॥
सिवं कूट थानं हरं थान लोक । जह्नु रस्त लोक परे सत्य सोक ॥९५॥
परे दिव्य लोकं सुरग सु पाल । ब्रह्म राषिस लोक भग्गेस काल ॥
परे निठ्ठ तठ्ठं कमठ्ठ रहान । चल्ले दैत सष जुटे वेद रान ॥९६॥
ब्रहम्मा भजान न जान कि जान । धरंजा फटानं ग्रह निठ्ठ भानं ॥
परे लोक मोक करे देव कुक्क । डक डक्क बज्जी करै ईस डक्क ॥ ९७ ॥
ग्रहे ब्रह्म लिद्ध धरै वेद मुष्ष । गजे जोग सठ्ठी हुवं दैन दुष्ष ॥
करे मच्छ रूप धरै धार धूप । छिल्ले मत्तय सायर अध्र कूप ॥ ९८ ॥
परे छोनि छक्क विछक्क बरान । करे कुंभ नद्द विहद्द सुनान ॥
नहा मगन पानि मया मुरान । नहीं पाव मग प्रजव बरान ॥ ९९ ॥
धजा ध्रमर अमर अब दज्झी । निन मझ्झ पोठ्ठा ठा अप्प मुझ्झी॥१००॥
धरे गेन रात लगे आवधान । मनो आमुर वामुर मन पान ॥

क्रन । कन्न । उअरन । उदत । त । पहरन । नवाईर । † वडी वाणी में नहीं है । चलं । मग्न । सायर । इद्र । चन्न । पग नल्लन कहि । लेन ग्रहि ॥

११ पाठान्तर – धरे । गेन । चले । मुग्दर । मुद्गर । पग । पिठ । नठ । नठ । कमठं । डरान । थके । ब्रह्मा । कमठ । भगे । जोग जोग । छटे । छुटे । विश्वलोकं । महाल्लोक । थान । जान । फटे । कन्न । प्रिथी । पृथी । जान । चिन । लोक । ध्रमं । लोक । मान । पुलै । लोक । ब्रह्मलोक । ब्रह्म लोक । देव । ★ ★ यह तुक किसी पुस्तक मे नहीं मिली । कूट । थान । लोक । जद्दुरस्त । जहुरस्त । नोकं । परे । सत्यको । सोक । मोक । लोक । सुरग । ब्रह्म । ब्रह्म । लोक । भगे । परै । निठ । तठ । नठं । कमठ । कमठं । रहानं । राहान । चलै । सष । जुटै । वैद । ब्रह्मा । बृह्मा । जांन । फटान । ग्रह । निठ । निठ । ठ । जान । शोकं । कोक । कोकं । डक । बजी । इस । डकं । ग्रहै । लिद्ध । धरै । वद । मुष । गजै । जोगि । सठी । हुवं । हुवं । दुषं मछ । धरे । रूपं । ध्रुपं । छिल्लै । सतय । अध । परै । छोनि । चकं । छकं । विछैकं । विछकं । करै । कुभ । नंद । विहदं । सुरानं । पानि । सुरानं । नहीं । पांव । पंव । प्रजवं । प्रजंव । ध्रुमर । ध्रुमरं । अंबर । अब । दझी । मझ । पीठस ।

करक्कंत मच्छी कटि कट्टि मच्छं । मनों आवधं बज्जि जौ वज्र वछ्छं॥१०१॥
धपे पानि लद्धं फटे पारि छेदं । कढे पेट मझ्झं सुरं वेद वेदं ॥
धरे अप्प पानं चले ब्रह्म थानं । किये जैत बज्ज पुरानं सुरानं ॥१०२॥
करी विष्टि फूलं सुरंसिद्ध देवं । मुअं ब्रह्म जप्यं किय अप्प सेवं ॥
मुषं वेद पिद्धं न लै पानि ब्रह्म । जलै षोलि पानं भजै भ्रंति भ्रमं ॥१०३॥
† दियं चारनं भट्ट वेदं मु पानी । रहे ब्रह्म ग्यानं हरी सिद्धि रानी ॥
श्रपं इद्र शाप भगं कोरि कोरं । किय मछ्छ रूप छुटे वेद रोरं ॥
॥ छं० १०४ ॥ रू० ११ ॥

कच्छावतार की कथा

दूहा मडि गजिन वहु बल उअर । तल कल बल जल जाल ॥
मंदिराचल बल विपुल पुल । थल थरहर हल पाल ॥
॥ छ० १०५ ॥ रू० १२ ॥

कला । मुझी । धरै । गे ' गेम । पान । लरे । आउदान । मनो । मनो । आसुर । ब मुर । सत । मुन । करकन । मछी । कटि । कटि । मछं । मनो । मनों । आउधं । बजि । जनु बज्र वछं । वज्जि । वछ । धपै । पानि । फटै । छेद । रढै । पैट । मझं । मुर वैद । वैदं । धरै । चलै । ग्रप्य । थानं । किए । बजं । बज्ज । पुरान । वृष्टि । वृष्ट । दैव । मुरंब्रह्म । सैव । † बूंदीवाली में इस तुक के दोनो पाठ उलट पुलट है मुंष । वैद । पानि ।

† हमारे पाठकों को यह स्मरण मे रखना योग्य है कि चंद के इस वाक्य "दियं चारन भट्ट वेद मु पानी" मे वास्तव मे चाहे यह ऐसा ही हुआ हो अथवा न हो किंतु ज्ञात होता है कि इन दोनों जाति के मनुष्यो मे जो वर्तमान समय में अनबन दृष्टि आती है वह चंद के समय मे विद्यमान न थी किन्तु कुछ थोड़े ही काल से उस का जन्म हुआ है । यदि हम भी मान लें कि चंद के समय मे इन दोनों जातियो में परस्पर विरोध था, तथापि चंद कवि प्रशंसा करने के योग्य है, क्योकि उसने चारनो का नाम अपने इस ग्रंथ मे कही नही छिपाया है बरुक पहिले उनका नाम उसने प्रयोग करके फिर अपनी जाति का नाम प्रयोग किया है । तथा इन दोनो जाति के मनुष्यों की उत्पत्ति के शोधकों को यह वाक्य बारहवें शतक तक का प्रमाणरूप भी उपलब्ध समझना चाहिये । इस महाकाव्य मे आगे अनेक स्थानों मे ऐसे प्रयोग आवेंगे । इन दोनो जातियों की उत्पत्ति के विषय में अनेक प्रकार के शंका समाधान है । परन्तु इन लोगो की उत्पत्ति का कुछ विषय हमारे पास एकत्र किया हुआ है वह अवकाश मिलने पर यदि कही आवश्यकता हुई तो हम किसी टिप्पणी मे लिख विदित करेंगे ॥

ब्रह्म । जल । जलं । पौलि । षोलि । पांन । भ्नति । भ्रमं । वैदं । पांनी । हरै ब्रह्मम ग्यान हरि सिद्धि रानी । हुंरे । रांनी । श्रयं । इद्र । भगो । भगे । कोर । सौर । कोर । कोडिरं । किय मन रूप छुटै वैद जोर । मछ । छटे ॥

दंडमाली — धरि कच्छ रूप सरूपयं । कुस कूप मंडित भूपयं ॥
धरि मद प्रब्बत पुठ्ठयं । जल जात चाल गरिठ्ठयं ॥ १०६ ॥
दिव वाम मान न छडय । दित अदित बंस प्रचडय ॥
स्तुति चवत सुर नर गुन गन ★ ★ ★ ★ ॥ १०७ ॥
लिय रतन चवदमु वीनीय । बटि बटि निज कर दीनय ॥
वर बिदरि बिहुरि बोरय । कलि कूरम बर इदय ॥
॥ छं० १०९ ॥ रू० १३ ॥

दूहा — कहि सनकादिक इन्द्र सम । किम लिय पाथर तन्न ॥
बहै इन्द्र सनकादिक सौं । सुनौ कहौ करि म्यन्न ॥
॥ छं० ११० ॥ रू० १४ ॥

दैत राज धर प्रबल हुअ । अमर परे सब मद ॥
गए पुकारन मिलि । जहा लछ्छि गोविंद ॥
॥ छं० १११ ॥ रू० १५ ॥

कही ईस इन्द्रादि सौं । सजौ सेन चतुरग ॥
तुम सहाय असहाय अरि । करौ दैत सब भग ॥
॥ छं० ११२ ॥ रू० १६ ॥

लघु नाराज

कियति नद्द भद्दय । लियति रथ्थ बद्दय ॥
चले सु देव इदय । करे सु सेन वृदय ॥
अनेक धानप धर । अनेक चक्र सवर ॥
चले अवद्ध पेदय । परे भगेनि वेदय ॥

---

१२ पाठान्तर -गनि गन । उर । मदिरा । वच ॥

१३ पाठान्तर - छंद दडमाली । कछ । यम । कुप । सुपर । सूपय । प्रवत । पुठयं । गरिडयं । गरिठय । गरिट्टय । वाम । दिन । अदिन । वस । प्रचडय । थुनि । सुनि । अहिगुन । गुनगन ★ यह तुक घटती है । लीय । चउद । सु बीनय । बंटि । बिदुर विदुर । विदुर । चिहुरि वारय । असुर । मोमयं । बवन । कविदय । कबीदयं । वरमं कुउम । चर ॥

१४-१६ पाठान्तर-- पाथो घिर । पार्गेघिर । सनकादि । सो । कहू । कहौं । भिन्न भिन्न ॥ १४ ॥ दैतराज । हुअ । परै । लछि । गोबिंद ॥ १५ ॥ ईश । ईद्रादि । सो । सजो । सहाय दैन्य ॥ १६ ॥

१७ पाठान्तर — नद । भदयं । लियगनि । रथ । बदयं । चलै । इद्र । दैवयं । करै । सैन । एवयं । अनेक । संचरं ॥ । चलै सु बंद्ध पैदयं । परै भरैति बैमयं । वेबयं । पताक । घुमली । सत्थह फौज संमली । ससूह फौज संमली । करै । जोरिये । चलै । चंवलं । मनौ । घुमलं । गिनै । सु रिषि । रिष । ज्यौं । ज्यौं ।

धजा पताष धूमली । समूह मेज † ममली ॥
दईन दूत दौरय । करे मनाह जोरय ॥
चले मु दैत चचल । मनों अषाढ धुमल ॥
मिले जु रिष्षिमानय । जु देवता दधानय ॥
दिय सराप देवता । त्रिलोक मध्य तेवता ॥
श्रवत लछ्छिमी गई । नराधि देवन्त्रिम्मई ॥
न केसवं न दानव । न नागय न भानव ॥
युँ देवता विचारय । नही सनाह भारय ॥
दईत भग्गि दूरयं । यु देव दूत झूरयं ॥
मिले त्रिलोक समिली । बिना पराग विह्वली ॥
कछावतार किद्धयं । लछम्मि जीत लिद्धय ॥
मदाचल महा गिर । धरे सुपिठ्ठ उप्पर ॥
सु नाग नेत किद्धय महा समद मथय ॥
दईत मुष्ष दप्षय । सु पुच्छ देव रष्षयं ॥
विरोलि दद्धि ज्यौं मही । घटातटाकघूनही ॥
लिय प्रथंम लच्छमी । सुकौस्तु भचवछ् छमी ॥
सु पारिजात पानय । सुराधन त मानयं ॥
जु सोम उग्गि सुक्कला । सुधेन गज्ज उज्जला ॥
सुरभ मोहिनी परी । सुसप्त अश्व सुद्धरी ॥
धनुष्ष ईस संपय । विष समेत पप्पय ॥
सुच्यारि दिस्स पचही । दिए सुदेव सचही ॥
दईत बंस दझ्झयं । सुनाग फेन मझ्झय ॥
किनेक सेन कुक्कही । मुएति मान मुक्कही ॥
लियं सुरत्न इदयं । दईत किद्ध दंदय ॥

दैवता । त्रिलोक । तेवना । लछमी । लछिमि । † यह बूंदीवाली पुस्तक मे नही है । कैसव । केशवं । भालय । यो । यो । यों । दइत्त । यो । यो । देव । झुग्य । मिलै । कछावनिर । किद्दय । लछमि । लछमी । जित । गिरि । धरै । पिठ । नैत । भथयं दइत । मुष । दषंय पुछ । दैव । रषयं । विरोलि । घुमही । घूमही । प्रथम । लछिमी । लछमी । लक्षमी । वष्यमी । लक्षमी । स्त्रपारिजात । सोम । उगि । ऊगि । सु कला । सुं कला । सु धेन । गल । उजला । सु रग मोघनी परा । सु रंग मेघनी परी । अस्व । धनुष । समैत । पषयं । दस । दर । दैव । दभयं । फैन मझयं कितैक सैन कुकही । मुए सु । मांन । मुकही । लयंन रन ईदयं । लयं । अमृत । अप । अचरं । अचर । कवरं । कचरं । आथ । अषयं । दानव । दानव । चषय । चषयं ।

अमृत्त अप्प अच्चरं । कियं सु देव कच्चरं ।।
अनाथ नाथ अष्षियं । दईत देव चष्षियं ।।
पवंत दीय पष्षिली । दईत देव रुष्षली ।।
अमृत्त देव पिद्धयं । सुरा सुदैत सिद्धयं ।।
जु सोमनाथ सों कही । रवी सुरा मुदेत ही ।।
हरी सु चक्र सद्धयं । जुदैत बम बद्धयं ।।
।। छ० ११३-१२९ ।। रू० १७ ।।

कवित्त ।। दानव तब गय दौरि । करे इक वंध कटक्कं ।।
हुअ देवासुर जुद्ध । चढे देवता चटक्क ।।
षरे रथ्थ पष्षरे । आइ लग्गे सम धार ।।
रथ सों रथ भंजियहि । कूक लग्गी पुक्कारं ।।
जोगनी जोग माया जगी । नारद तुंवर निहस्सिया ।।
दस एक रुद्र दारिद्र गत । दानव तामर हस्सिया ।।
।। छ० १३० ।। रू० १८ ।।

भुजंगी—इतों चक्रधारी कियो चक्ररूप । उत कुंभनी कुंभ सा दैत्य भूपं ।।
उतो दानवं बोल† बोले करारे । इतो देवना गज्जय मार झारे ।।१३१।।
रिप हथ्थ मादिष्ट दीनी असीस । तिनं वज्रमै कोप दानव्व दीसं ।।
कुकी जोगमाया वकी थान थानं रटै नारद तुंवर ब्रह्मज्ञान ।।१३२।।
कियौ कुंभ कोपं चली संग माया । इतों इन्द्र ब्रह्मादि सव्व देव धाया ।।
षरे देव देवाधि चारथ्थ चूरे । धजा की पताषं लगी धूरि धूरे ।।१३३।।
छुट्यो पट्ट पीनं बरं कट्टि छुट्टी । मनों श्यांम आकाम नों बीज तुट्टी ।।
हुए सिथ्थलं देव दानव्व घांए । करें रूप अन्नेक अन्नेक काए ।।१३[illegible]।।

पावंन । पावन दीय पषली । दानव । रुषली । अमृत । दैव । सुरा ज । सुरा ज । ज्यु । सोमनाथ । रवी सुरा स दौर ही । संधियं । सदय ।।

† इस महाकाव्य मे मुसल्मानी भाषा के शब्द प्रयोग हुए देख कर शंका करने-वालो को जानना और विचारना चाहिये कि किसी पुस्तक मे फौज और किसी मे सेन पाठ मिलते हैं । क्या यह दोनो पाठ चद ने प्रयोग किये है ? ।।

१८ पाठान्तर—गय तब । करै । कटंक । दैवासुर । चढै वना चटक । चढै । चटकं । षरं । रथ । पषरै । पषरे । लगी । सम धार । सुं । सो । लगी । पुकर । पुकारे । जुगिनी । जोग । तुंबर । विहस्सिया । दरिद्र । तामर । हसिया ।।

१९ पाठान्तर—इतै । कियो । उतै । कुंभनि कुंभ । सा दैत । भुपं । उतो । † बूंदीवाली पुस्तक में नही है । बोलो । बोलै । करारै । इतै । देवना । सजिय । झारो । रिष । हुथ । तिसं । मैं । कोप । दानव । जोगमाया । थांभ । थानं । रटै ।

तबें भूत वेताल नच्चैति धाए। धरे षग्ग त्रीशूल अन्नेक धाए ॥
ततथ्थे तत्तथ्थे नचे तार विद्धी। कतथ्थे कतथ्थे कहे देव किद्धी ॥१३५॥
परथ्थे परथ्थे कियं आर पारं। मनथ्थे मनथ्थे कियं देव मारं ॥
असित्ते असित्ते हुए एक सेनं। ग्रसन्ने ग्रसन्ते महादेवमेनं ॥१३६॥
अलुझ्झे अलुझ्झे करी अंतझुझ्झे। हुए देवता दानवं अझ्झदझ्झे ॥
फिरे रथ्थ सा देव कीनं अनूपं। धरे रथ्थ अप्प करे कछ्छ रूपं ॥१३७॥
न लग्गै न लोहं न सांगी न सारं। न अस्त्र न लेप न छेपं न पारं ॥
फिरे चक्रधारी सु राषीस वृंदं। किए एकठे एक एक मुनिंद ॥१३८॥
हुए चक्र अन्नेक अन्नेक भारी। मरे राषिसं वृंद दैत्यान मारी ॥
इमौ एक अज्जेज जुद्धं अनूप। हुअं देव देवा सुर कक रूपं ॥१३९॥
इमं कछ्छपं रूप ओप्यौ अपारं। धरा पिठ्ठ रष्पी सरापं सुधारं ॥
जुगं अंत दानव्व भूमी उपारी। तबै कोल रूप कियौ श्री मुरारी ॥
॥ छं० १४० ॥ रू० १९ ॥

कवित्त – धरि कछ्छप कौ रूप। भूप दानव संहारे ॥
लइ लछ्छि सागर सुमथि। रिष्ष श्रापान सुधारे ॥
राहु सीस किय षंड। मंडि दानव सब भजिय ॥
किय देवासुर जुद्ध। ईस वर करि अरि गजिय ॥
धारी सु धरा हरि पिठ्ठ पर। दिए रतन बटिय सुरनि ॥
कवि चाद दंद मेटन दुनी। श्री कछ्छप तेरे सरनि॥छं०१४१॥रू०२०॥

रहे नारनं। नुबर। ब्रह्मग्यानं। कीयो। कोप। इते। इद्र। सादेव। पर। चग्रथ। घुरे। धुरि घुरै। छुट्यो। यद्र। पीतंवर। कटि। छुटो। मनो। श्याम। नै। हुअँ। मथन्न। मतलं। दैव दानव। करे। अनेक। आये। काये। तबो। भुत। वेताल। नचौत्रि धाइ। नच्चौत्रि धाई। धरे। षग। त्रिमूल। अनेक। अनेक। अघाई। धाई। ततथो। ततथे। नचो। नचें। तारि। विद्धा। कतथो। कतथे। कहे। दैव। किधी। परथो। परथे। मनथो। मनथे। दैव। असितो अमिते। हूए कैक मेन यमिते। यमिन। मनं। अलुझो। अलुझे। झुझे। झुझे। हुअँ। देवता। दानव। दझे। दझो। फिरै रथ। दैव। कान। अनुप। परे। रथ अय। आय। करै कछ। लग्गै। म लोह। मु लोह। मंनं सगी। कुसस्त्र। कुशस्त्र। न लगी। न लगे। न छैव। न छेव। कुशस्त्र न लगी न छेवं न पारं। फिरै। सु राषिम। वृद। कं। मुनींदं। अनेकर। अनैक। मुरै। मरै। मुरे। इमो। अजैज। अजेज अनुप। हुअ। सुर। कछ्यं। ओप्यौ। पिठ। रषी। जुग दान। भुमी उधारी। उपारी। तौषो कोल। कयो॥

वाराह अवतार की कथा

दूहा —हिरनाषह प्रिथवी हरी । धर दानव अवतार ।।
इंद्रादिक नागन सजिय । प्रति अवतार पुकार ।।
।। छं० १४२ ।। रू० २१ ।।

कवित्त—प्रति अवतार पुकार । लीन प्रथवी सर पारिय ।।
जवन जिहां न सु ठाम । धरनि सत साइर गारिय ।।
किन्न रूप वाराह । जोति मन जोति सु कढ्ढिय ।।
बहुल रूप तन दुरद । रिसन वैश्वानर बढ्ढिय ।।
कवि चंद चवत दानव भिरन । धरन धरा रद अग्र बर ।।
सुर राज काज उप्पर करन । कोल रूप जगदीस धर ।।
।। छं० १४३ ।। रू० २२ ।।

कवित्त – बल प्रचंड बल मंड । ज्वाल विकराल काल कल ।।
धर वितंड वाराह । बीर बीरन विदारि पल ।।
हरि हरनछ्छि सु अछ्छि । बछ्छि वर जछ्छि विभावस ।।
विधि विधार वीधार । विदर बिकरार झार असि ।।
उद्धारि धरा रहि अग्र वर । सुर विकास किय चाद वर ।।
जैं जया सब्रद धुनि सुर चवत । जोरि पानि बंदै सु चिर ।।
।। छं० १४४ ।। रू० २३ ।।

वृद्धनाराच

परठ्ठि प्रान मैमुगंनभानिअग्गिभज्जयं ।
कला गुहीरनीर तीर आय दैन गज्जयं ।।
पय पताल सीस स्त्रग्ग अग्ग मुष्प दप्पयं ।
रटंत वेन भुज्ज गॅन रैन नैन रप्पयं ।।

---

१४० पाठान्तर —कवय । को । भुर । दानव । महरि । लई । लछ्छि । सुमरियिथी । सुमथ्थि । रिगि । स्त्रायन । सुधारि । शीश । काय । मीड । दांनव । भजिय । भंजीय । दैवासुर । युद्ध । इमगर वर करि मकिजिय । ईशवर । धारि । पिठ । परं । दए । वट्टिय । सुरन । दट । गैटन । कछप । हीरै । सरण । सरन ।।

१४१ पाठान्तर —हयग्रीवहि प्रियषा हरी । हयग्रीवहि पृथिवी हरी । प्रथमी । सुर । दांनव । ब्रह्मचार । ब्रह्मचार । ब्रह्मचार सुर । इन्द्रादिक । सुर इन्द्रादि ।।

२२ पाठान्तर—नील प्रथी सर पारीय । जब्बन । जिहांन । ठांम सायर । गारीय । कींन । किन्न । जोति मनि । मोनों । जैति मनि प्रगटी । कढ्ढिय । बढ्ढिय । कढ्ढिय । बढिय । चवत । धरनि । ऊपर । कोल ।।

भुजाग्र भाग मेर नाग इंद्र दाग दज्झयं ॥
बरम्न घुम्म, घुम्मरं मुरं पुरं सु घुज्जयं ॥ १४७ ॥
पया पुरं धरा धुरं, नरानरं नरष्षयं ।
इसो अवाह अश्व दाह एक राह दष्षयं ॥ १४८ ॥
जुटे जुरं भरे भरं, सुरे सुरं सु वाहयं ।
चटे चटं नटे नटं लटे लटं सु साहयं ॥ १४९ ॥
करंत कूक मान मूक दैत दुष्ष मानवं ।
पगांनि पानि साहि कांनि लैइ चीरि दानवं ॥१५०॥
करी सु कित्ति दैत देव नीति जीति रष्षयं ।
हयं सु ग्रीव किद्धरी बकट्टि जीव नष्षय ॥१५१॥ ॥
सुरा निसार लिद्ध भार दैत्य मारि धारनं ॥
अये वराह अश्व दाह दैत्य दाह दारुनं ॥
॥ छं० १५२ ॥ रू० २४ ॥

कवित्त - करि निरूप वाराह । धरनि पुर अविगत षिल्लिय ॥
जनु कि मेघ उतकंठ । कला ससि षोडस झल्लिय ॥
असिय मुष्ष दतल्लिय । तरुन निष्षिय आधारिय ॥
मेर चंद मनु बीज । चद्र मनि परह सुधारिय ॥
आरोपिप्रथ्थि अंबर पुरह । सन माइर ससै परिय ॥
कहि चंद द द करि दैन मो । धरनि धार अद्धर धरिय ॥
॥ छं० १५३ ॥ रू० २५ ॥

---

२३ पाठान्तर मडि विनुग । विनुड । हरनडि । अछि चछि । वछि । जछि । जग्गि । बढ़ि विधार विद्वार । विधि विधार विद्वार । विकराल । उद्धरि । धारा । रह । शवद । सुरि । जौरि । पानि ॥

२४ पाठान्तर - परठि प्रन मैघ रान । परठि प्रान मेघ रान । भान । अषि । अंपि । भजयं । नार । आइ देन । गज्जय । गजय । प्रिथी षताल । पृथी पाताल । सृग । मुष । दषय । रटनैतवैनभुजनै । वैन । भुजनेन । रैंन । नैंन । नैन । रषय । मैर । इद्र । दागझ्झय । दझय । वरम्न । वरन । धुंम । धुम । धुंम्म । धुमर । सुर । स । धुवय । पयापुर । रषयं । इसो । दषयं । जुदै । जुदे । सुरै सुर । सूरं । स । वाहय । चटै चट । नटै नट । लटै । अक । कुक्क । मांन । मुक्क । मुक । दैत्य । दुष । साहिकांन । चीरि । वीरि । किति । दैव । नीति रषयं । केद्धरी बकट्टि । नषयं । नंषयं । सुगन सार । सुरा नसार । धारिनं । औराह । धाह दारुन ॥

२५ पाठान्तर —कर । करी । अविगति । षलियं । षिलिय । जजु कि । जनु कैं । षौडस । झलिय । ईसी । इसी । मुष । दंतलीयं । वितलीय । तरुनि ।

भुजंगी—बपू बीर बीरं धूतं धूत्त सारं। दिठं दुष्ट दाने कलं कोल कारं ॥
धरं तुंड तुंगं विसालंत नेंनं। छिनं छीन लोकं जुरे दूत सेनं ॥१५४॥
रुधिं फट्टि वज्रंग वज्जे वित्तूरं। गनं आंन कंतं बजं पंच पूरं ॥
श्रवं सोर भारं भिरे भूर भारी।तिनं मेक मानी अफाली असारी॥१५५॥
घटे घोष छोनी बलं छीन नूरं। धरे सुद्ध उद्धं दिवं संम जूरं ॥
धरे दंत धारा वरं सेष ओपं। मयं कंक लंकं कियं कंठ लोपं ॥१५६॥
जयं जोगधारी महापान पानं। हयं ग्रीव नंषे तिनं तोरि तानं ॥
करे तुंड तुडं वितारंत तारं। तियं लोक सोकं विलोकन्न पारं ॥१५७॥
सुरे सूर कंतं जयं जो करालं। समं गुछ्छ गुछ्छं करं जूल जालं ॥
चवै चंद चंडी नमो वेद चारं। नमो देव कोल वरं रूप सारं ॥
॥ छं० १५८ ॥ रू० २६ ॥

कवित्त कोल रूप जगदीस। हत्यौ हयग्रीव सु दानव ॥
जय जय सबद चवंत। सुमन वरषिय सुर मानव ॥
पद्धारे हरि लोक। सोक मेट्यौ सब्बन सुर ॥
कोइक काल अंतर। हुओ हिरनंकस आसुर ॥
तप ईस उग्र परमन्न हुअ। ब्रह्म मिष्ट नह तौ मरन ॥
कवि चंद कष्ट मेटन कलू। कोल रूप नेरे मरन ॥
॥ छं० १५९ ॥ रू० २७ ॥

तरुन। तिषिय। तिषीय। आधारीय। मैर। मनौ। मनौ। सुधारीय। आरोप। आरोप। पृथी। प्रिथी। गायर। कवि चद दद करि दैन मौ। कवि चद दद करै दैत मो। कहि चद दद कहि दैन सो। धरनि थार ॥

२६ पाठान्तर—वयं। वप। धूत। धूत। दिवं। दानै। कोल्ल। तुग तुड। तुंगं। तुंडं। नैन। छिन। लोक। दूत। सैन। दरुधि। फट्टि। बज्ज। बजे। विनुरं। आंन। पुरं। अव। मोर। भिरै। भुर। मैक। मानी। घटै। घोष। छोनी। छलं। ललं। बीन। नुर। घरै। शुद्ध उद्ध। शुद्धं उद्ध। दिव। समजुरं। समजूरं। घरै। वर। सैष। ओप। कीय। लोपं। जोगधारी। पानं। पान। हयग्रीव। नषै। तोरि। करै। विलोकन। सुरै। कंति। जो। गुछ। अछ। जुर। निमोदैचारं। देव चार। ननो। कोल ॥

२७ पाठान्तर—कोल्ल। हन्यो। जै जै संबद चवत। बरषै। बरषें। पाधारै। पधारे। शोक। सोक। मैट्यो। सबन कोईक। केइक। कल। अंतरै। अतरे। हुओ। भयो। हिरनकुस। इस। ईश। प्रमन। प्रमन्न। तह। तो। मेट्टन। कलु। श्रीकोल रूप्प तेरै सरन। शरन ॥

नृसिंह अवतार की कथा

दूहा - सुबर ईम बरदान दिय । किय सुरपति अनुकाज ॥
अवनि असुर अद्‌भुत तप्यौ । चप्पौ तीनपुर राज ॥
॥ छं० १६० ॥ रू० २८ ॥

जाइ पुकारे सब्ब सुर । जहाँ आप जगदीस ॥
दानव तप त्रैलोक लिय । वर अप्पौ तिन ईस ॥
॥ छं० १६१ ॥ रू० २९ ॥

ब्रह्म सिष्ट सौं ना मरै । सस्त्र अस्त्र नहि जाम ॥
तब हरि नरहर रूप किय । असुर विदारन काम ॥
॥ छं० १६२ ॥ रू० ३० ॥

षरक षंड षंडे अखिल । तिल तिल षल भै भीर ॥
बिद्दरि थंभ सुअंभ बर । उदर डारि डर क्षीर ॥
॥ छं० १६३ ॥ रू० ३१ ॥

विराज-जयं सिंघ रूपं । भयं भीत भूपं॥बजे षग्ग षभं।स्वरूपं स्वयभं॥१६४॥
द्रिगं तेज तामं । हवी जान जामं ॥ मुछं सेत सारं । जयं देव धारं ॥१६५॥
हयं रूप दानं । मृगकस्य भानं ॥ रवरूप पूरं । लवी लोक सूरं ॥१६६॥
तिषी तष्यि चूरं । कनकीक नूरं ॥ दिढ दिट्ठ मूरं । बजी तार तूरं ॥१६७॥
जयं देव दूरं सिरं संम जूरं ॥ दिषे भ्रिष्पनन्दी । भरं भी अनंदी ॥ १६८ ॥
द्रिगं दिट्ठ चक्की।रही मौंन पक्की॥मन जोग जक्की।थलं थूर थक्की ॥१६९॥
प्रहल्लाद तक्की । करं हरि बंकी ॥ दिवं कामअंकी । सुषं लोक जंकी॥१७०॥
बढी बेद वानी।कवित्ता वषानी॥कथं गछ्छ कछ्छी।चवं लोक वछ्छी ॥१७१॥
जयंदेव रछ्छी।बटंबीर मछ्छी।उरंमझ्झ पछ्छी।तिनं तांम अछ्छी ॥ १७२ ॥

२८-३१ पाठान्तर:- सुवर । ईश । बरवान । बरदान । करि । सुर पति । अदभत । चप्पौ ॥ २८ ॥ जाय । पुकोर । मवनि । सव । निबर । । जहां । रानव तप भै लोक लिय । दानव । अप्पो । इम । ईश ॥ २९ ॥ ब्रह्म । शिष्टि । मौं । सुं । षहू जाम । शस्त्र । नहु जाम । नहर । करि । मैछ विदारण काम । मेछि । काम ॥ ३० ॥ पंडन । आपन्न । बिदरं । बिरद । षभ । अब । अंब । भर । वर । उदरि । झार झर झीर । उदर डारि डर डीर ॥ ३१ ॥

३२ पठान्तर: -सिंघ । भुप । बजै । पंभ । स्वरूप । स्वयमं । तैज । जानि । जांमं । सैत । चारं । दैव । मृगकस्य । पुर । लोक । शूर । सूरं । तिषी । तिष्य । चुरं । नुरं । दिठं दिठ नुरं । हिय । दिढ्‌ढ मूरं । त्रुरं । दैव । सिर । सम । जूग । दिषै । त्रिष । वृष्य । भयं भीष नदी । भयं अनदी । दिवाहे छवकी । रही मौन यकी । दिव । दट्ठ । चकी । मौंन । पकी । मन । जोग । जांग । जकी । थुर ।

सुषं सुष्ष सानी । हरी रूपरानी।बजी दिव्य भेरी।श्रियं सिंघ केरी ।। १७३ ।।
कवी चंद चंदं । जयं जै अनंदं ।। ★ ★। ★ ★
।। छं० १७४ । रू० ३२ ।।

कवित्त—बीर हक्क बर बज्जि । यथंभ फट्यौ धर फट्टिय ।।
निडर जोति निब्बरिय । लयौ मृगकस्य दबट्टिय ।।
धरनि धूरि धुंधरिय । तीन भुवनं परि भग्गिय ।।
भयौ मद्द हंकार । जोग माया ते जग्गिय ।।
प्रहलाद थप्पि उथ्यपि अरिन । तीन लोक सुर असुर डरि ।
षिल अषिल षेल षेलन षलन । कहर रूप नरसिंह धरि ।।
।। छं० १७५ ।। रू० ३३ ।।

लघुनाराच

लियत रूप नारसं । बदंत बेद बारसं ।।
अरुन्न तेज उग्गयं । भरक्कि देव भग्गयं ।। १७६ ।।
उचाय धायउंडले हिरन्नकस्य षंडले ।।
छुटंत कट्टि ठुंमरं । उठंत मुछ्छ घुंमरं ।। १७७ ।।
ललंतलट्ट लैलटा । झटा पटाकछूछटा ।।
षटाक षट्ट षल्लरी । कटाकबज्जिगल्हरी ।। १७८ ।।
दटाक बज्जिदोटयं । कला अनेककोटयं ।
नषं बिदारि नष्षयं । भराकिभंजि भष्षयं ।।१७९।।
उरक्त माल अंतयं । भगे भगत्त भ्रतयं ।
नराधिपन्न देवता । न नागयं न मेवता ।।
।। छं० १८० ।। रू० ३४ ।।

थुन । थकी । प्रहिल्लाद तकी । प्रहल्लाद तकी । कर । हूर । काम । ल्लोक । बैंद । बषांना । कबै मछ बछी । ल्लोक । षछी । जय दैव रछी । सटं वीर मछी । मंस । मस । पछी । अछी । सुखी सुख मानी । रानी । भेरी । श्रीयं । सिघ कैरी । कवि । अनद: ।।

३३ पाठान्तर— वीर । हूक । वरज्जि । निडर ज्योति निघरयं । ज्योति । निबरी । लीयौ लीयौ । दबट्टिय । धुरि । भवन । भग्गिय । मद्द । हूंकार । जोग । हैं । थपि । थापि । उथपि लोक । खिपि अषिल षेल षेलन षुलन । खिल अषिल षेल नषचन कहर ।।

३४ पाठान्तर— लीयत । वदत । बैद । बारसं [illegible] । तेज । उगयं । भरकि । दैव । भगयं । उंडलै । हिरन्यकस्य । हिरन्नकस्य । षंडलै । छुटंत । कटि कटि्ठ । तुम्मरं ठुंमरं । उठंत । मुछ । घुमरं । घुंमरं । ललितं । ललित । कट । कै । छू । [illegible] । [illegible] । बिजली । [illegible]री ।

दूहा – मुनिवर नरहर कथ्थ सुनि । भए सकल मन पग ॥
कौंन समैं नरहर असुर । जुटे जुद्ध जोघग ॥ छ० ०८१ ॥ रू० ३५॥

वेली भुजंग★

★ ★ चरन्न सरन्न सुमित्र । प्रभा सूर सेव सु पाव पवित्र ॥
तिहू लोक को सोक मेटन्न काज ।
धरयौ रूप अत्युग्र अद्‌भुत्त राज ॥ १८२ ॥
तिन तेज त त्रास (अति)★ आसूर जारे ॥
सुतो अर्भ भे गर्भ प्रद्दीय डारे ॥
महा मुद्दिनं (अति) ★ तेज ति रत्त नैन ।
प्रलैकाल (रवि)★ कोटी प्रगट्ट त गैन ॥ १८३ ॥
करं कंपितं चंपितं सेस सीस । गल गर्जित तर्ज्जितं ब्रह्म ईसं ॥
डिगे षंभ ब्रह्मंड दिग्‌पाल हल्ली ।
धरा चल्ल भारंतु लाजे मतुल्ली ॥ १८४ ॥
इसो देष रूपं असूरेस धायौ । ग्रहे षग्गता बीरसों षेत आयौ ॥
उयौ सज्जि आवद्ध सन्मुष्ष वर्त्ते । मनों मत्त है जुद्ध त थें निवृत्ते॥१८५॥
गह्यौ धाइ दान भुज बीच गाढो ।
न जुटट्‌यौ विछुट्टयौ भयौ दूरि ठाढो ॥
दिषै इद ब्रह्मा भयौ त्रास हीय ।
गयौ हाथ तें तथ्य आचिज्ज कीय ॥ १८६ ॥

बडाक । दटाकि । बज्जि । दोटय । अनेक । कोटय । नष । नष्यय । भजि । भष्ययं । अरंत्त । आरत्त । आतयं । भगै । भगन । भ्र.य । नरधिपत देवता । सेवता । मनागय न सेवता ॥

३५ पाठान्तर –मुनि । नरहर । कथन । भय । मुनि । कोन । कौन । समे । जुदै । जो.गय ॥

३६ पाठान्तर—चरन । वरन । मरन । सुमित्र । प्रना । सैव । पावन । लोक । सौक । शोकं । मेटंन । मेट' । प्रति उग्र । अदभुत । अदभुत्त । अद्‌भूत । राज । विराजं । तिन् । तैज । तन ★ अधिक पाठ है । असुर । असूर । जार । सुतो । अरभ । भय । भयं । गरभ । अति दीप झारे । अति दिए टार । ★ अधिक पाठ है । तैज । तिन । नैंनं । प्रले । ★ अधिक पाठ । कोट । कोटि । कोट्टि । प्रगटेत । प्रगटत । गेगैनं । कर । कपितं । कंपित । च.पतं । सैस । सीम । गय । गय । गरजित । तरजित । ब्रह्म । ईस । डिगै । षंड । ब्रह्मड । बृह्मड । दिगपाल । हली । षरन । लाजै । मतुली । देषतें । देष सरू रूप । रूप । असुरेस । असुरैस । ग्रहे । ग्रहै । बीर । सौ । षैतं । सजि । आउद्ध । सनमुष । प्रवृत्ते । वरत । मनौ । मव । हय । दुंय । तथै । तथैं । तथे । निवृतै । गृहभो । ग्रहभो । धाय । दांनव ।

भयो जुद्ध तिं बेर तासों। अपारं।
कहा बनियै सेष पावै न पारं ॥
दबट्यौ झबट्यौ उछाऱ्यौ पछाऱ्यौ।
हुतीयुद्ध की आस तातै न माऱ्यौ ॥ १८७ ॥
तबै कोपिकै दुष्ट उछ्छंग लीनौ।
हिदै फारि तत्काल सो डारि दीनौ ॥
गरज्जयौ गुंजाऱ्यौ अरी चंपि ऐसैं।
कहा ब्रन्निकौं रूप तिं बेर तैसैं ॥ १८८ ॥
रही दत बिच्चत सोहृत सारं।
मनौं मेरु गिरशृंग तैं ग ग धारं।
सुभै सीस पै मुछ्छ कौ झौंर ऐसैं।
महाराज सीसं ढुरै चौंर जैसैं ॥ १८९ ॥
जुलित् पावक तेज लोचंन भारी।
सकैं दिष्ट को देव दानं सहारी ॥
तप्यौ हेम ज्यौं देह की क्रंति सोहै।
सुजोती रवी कोटि दिव्यंत मोहै ॥ १९० ॥
तिन तेज ज्वाला जरे दुष्ट तेतं।
रहे संत सरन लहै पुप्ट हेतं ॥
हुतौ दुष्ट दानं अमानं सु हत्यौ।
सुतौ मृत्यु तत्काल सुर्पुर् पहुत्यो ॥ १९१ ॥

दानव। भुज। वीच। बाचि। न जुप्रा। दूर। दिषे। ब्रह्मा। भयो। त्रास। जुथ। ती। तें। तथ। आवरिज। अचिरज। अचिरज्ज। युद्ध। तन। तिन। बीर। तासो। कहां। बरणीयै। बरनीयै। बनिये। सीस। सेस। दपट्यो। झपट्यो। हुंती। हती। युद्ध। तार्थ। तानें। तबें। कौषिक। कोपिकें उछग। रिदै। ततकाल। सौ। दीनौं। गरज्यो। गरज्यौं। गुजारयो। गुंजारयौ। चपि। ऐसै। बैसें। वरनि। वरंनि। कहुं। कहूं। तिम। बैरि। बैर। तैसे। तैसे। चंति। दंत। बिच। बिचि। बिचि। अंत। सोभंन। सोहृंत। सोमंत, मनो। मेर। मेर। गिरि। गिर। श्रंग। तें। ते। पर। पुछ। मुछ। को। ढोंर। जैसे। सीस। ढुरे। ढुरि। चोर। चोंर। जोसे। जैसे। जुलित। ज्वलित। पावक। तेज। लोचन। लोचन। सकै। दिष्टि। को। देव। दानव। संहारी। हेम। ज्यो। देह। क्रांति। महा जोति रवि। जोति। कोटि। मोहै। जो है। तेज। जरै। रहै। संस। सरन। लहे। हेतं। हुंतो। दानव। अमानं। हत्यो। सुतो। मृत्य। तकाल। ततकाल। सुर। पुर। पुहत्यो। पहुतो। सब। सर्वं। सरन।

भई जैत जै सद्द सुर सर्व हर्षे।
सिरं देव नर्सिंघ तैं पुप्फु बर्षे॥
अये देव अस्तूति के काज सोई।
महा रूप को भेद पावै न कोई॥ १९२॥
सबै सोचि आलौ चिहारे निहारे।
जिनं दिष्ट पल्लेक कोई सहारे॥
फुरै बाच काहू न भै भीत सथ्थें।
कह्यो जाइ कैं श्रीय देवं सुतथ्थें॥ १९३॥
तबै लच्छमी आप सोचे बिचार्‍यो।
इसौ रूप गोविन्द कबहू न धार्‍यो॥
इतो तेज आजुल्य कबहू न देष्यौ।
प्रलै पावकं जोति तार्थें बिसेष्यौ॥ १९४॥
धरे रूप जेते तिते सर्व जानों।
लगै वार कहते न तार्थें बषांनों॥
अबै आइ प्रह्लाद जो होइ ठाढो।
जिनं हेत कीनौं इसौ रूप गाढो॥ १९५॥

हरषै: । सिर । देव । नरसिंघ । स्नर्सिंह । पर । फल पुफ । पुष्प । बरषै । बरषे । आए । आय । आए । देव । अस्तुति । के । सोई । को । भेद । पाव । कोई सबै । सोचि । आलो । बिहारे । निहारै । जिन । पल एक । कोइन । कोइ । संहारै । संहारे । काहूं । भर । सथे । सथ्थें । सथै । जाय कर । करि । देवे । देव । तथ्थे । तथै । लछिमी । सोचै ईसो । रूप । गोविंद । कबहून । कबहुन । ईसो । तेज । कबहूंन । देष्यो । दिष्यो । जोति । तायं । विशेष्यो । विसिष्यो । धरे । जैते । तिते तैते । सरब । सर्व्व । जानो । जानों । लगें । बार । कहतै । कहतें । तायं । बषानु । बषानों । अबें । आस । आई । आय । प्रह्लाद । जो । होई । ठठो । ठंढो । तिन । हेन । कीनो । गढो । इहि । इहें । बत । चित्र । के । सुठो । जाय । प्रह्लाद । को । कुं । कहि । ककहि । कह ॥ ★ ★ इस रूपक की पहिली पंक्ति के खाली स्थान में हमारे पास की सब पुस्तकों में–"बंदे बकन हारे"–यह अशुद्ध पाठ है। इसको शोधने को कोई प्रमाणिक आधार हमको अभी नहीं मिला और यही दशा अंत की पंक्ति में भी है अतएव वह खाली प्रकाश कर दियी गई है कि विद्वान लोग विचार कर पाठ को निश्चय करें। हमारी सम्मति में तो इनका पाठ हमारे पास की पुस्तकों से भी पुरानी पुस्तकों के मिलने पर ठीक २ सुधना संभवित है। इस की अंत की तुक भर का पाठ बूंदीवाली पुस्तक में–:'सुनत प्रहलाद इह बात चल्यो। रहे पछ ब्रह्मादि निज थी इकलें' ;–सं० १७७० वाली

इहै बत्त ब्रंह्मादि के चित्त आई।
सुतौ जाइ प्रह्लाद कौं कै सुनाई॥
॥ छं० १९६ ॥ रू० ३६ ॥

दूहा— सुनत बचन प्रह्लाद गय। श्री नरसिंह के पास॥
स्तुति जुति सों ठाढो रह्यौ। फुर्‍यो नहीं कछु सास॥
॥ छं० १९७ ॥ रू० ३७ ॥

सीस नाइ कर जोरि तब। रह्यौ सनंमुख चाहि॥
क्रिपा दृष्टि देख्यो हरि। भगत बछल प्रभु आहि॥
॥ छं० १९८ ॥ रू० ३८ ॥

छंद भुजंग

क्रिपा दिष्ठ दिष्यो सु ठढ्ढो निनारौ।
सु तौ प्रान कै प्रान तें अत्ति प्यारौ॥
लयौ लाइ छाती धर्‍यो जंघ कोसं।
दियौ हथ्थ मथ्थं कियौ दूरि दोसं॥ १९९॥
चुम्यौ मुष्ष नैनं प्रहल्लाद केरौ।
जरा मृत्यु भै दूर दोसं न नेरौ॥
भई बुधि न्रिमंल महा सुद्ध बानी।
तबै अस्तुतं क्रम्मप्रह्लाद ठानी॥ २००॥
अहो देव देवेस देवाधि देवं।
तुही अलष अप्पार पावै न भेवं॥
अभेदं अछेवं तुही सर्ब वेदं।
तुही सर्ब विद्या विनोदं सुभेदं॥ २०१॥

में—"सुनिन हत्ति प्रहलाद इह बात चल्ल्यो॥ दहै पअ ब्रह्मादि निज गो इकलो" ;—सं० १८५९ वाली में—"सुनत हेत प्रहल्हाद इहै बात चल्यो॥ रहे पछ ब्रह्मादि निज गो इकल्ल्यो" ;—और सं० १६४५ वाली में इस का पाठ संबत् १७७० के सदृश ही है॥

३७–३८ पाठान्तर—दोहा। सुनत॥ प्रदलद गो। श्रीनरसिंघ। श्रीनृसिंह। कै। थुत। सौं। ठढो। ठाडा। फुरघो कुरघो॥ सीश। नाई जोरि। सनमुख। चाहि। क्रियादृष्ट। क्रियादृष्ट। कियाद्रिष्टि। दिष्यो। सही॥

३९ पाठान्तर—छंद भुजंगी। प्रयात्। द्रष्टि। दृष्टि। ढढो। ठढो। ठट्टो। प्रान। कै। प्रान ती अति। पियारो। लाय। कौसं। धमर्थ। सर्थ। मथ्थ। कीयो। दोस। चुंम्या। चुम्यो। मुष। नैनं। नैनं। प्रहलाद। कैरो। मृत्य। दूरि। दोस। दोष। नैरो। बूंदीवाली। में—भय भइ बुधि। निमल जमु ही न। नाय बोल महा

तुही ग्यान बिग्यान सोग्यान कर्त्ता ।
तुही बुद्धि कर्त्ता तुही बुद्धि हर्त्ता ॥
तुही धरनि आकास है पौन पानी ।
तुहीं सर्ब में एक अन्नेक बानी ॥ २०२ ॥
तुही जोति संसार सारं सरूपं ।
तुही अध्वकालं अकालं अरूपं ॥
तुही कोटि सूरज्ज में तेज साजै ।
तुही चंद्रमा कोटि सीतं बिराजै ॥ २०३ ॥
तुही कोटि ब्रह्मा महादेव जेते ।
तुही कोटि कंदर्प लावण्य तेते ॥
तुही हेत संतोष आनंद कारी ।
तुही सोक संताप सर्ब प्रहारी ॥ २०४ ॥
तुही जोग जोगेस जोगी सु भोगी ।
तुही भेद अभेद संदेस सोगी ।
तुही मानवं देव दानं सिधानं ।
तुही कोटि ब्रह्मादि अंतस्समानं ॥ २०५ ॥
जिती थावरं जंगमं थांन थान्यौ ।
तिनी आप ही आप तें भेद धान्यौ ॥
करे जे गुसांई अर्गे रूप तेते ।
कहे ब्रम्हि को देव रिषु नाग जेते ॥ २०६ ॥
कियो मच्छ औतार पैलै अनूपं ।
गयो बेद लै दैत्य सागर अलूपं ॥
हते स्वामि संषासुरं बेद लीने ।
सुतो आनि तत्काल ब्रह्मादि दीने ॥ २०७ ॥

शुद्ध बानी–निर्मल । बानी सर्बे । अस्तुत । अस्तुति । अस्तुति करन । प्रहलाद । ठांनी । अहो । देव । देवस । देवाधि देव । तुही । अरूप । अपार । पावे । भेवं । अछेद । अभेद । सरब । बेद । तुही । सरब । बंदा । बिनोदं । सु भेदं । तुही । ग्यान । बिग्यांन । सोग्यांन । करता । तुही । करता । तुही । बुधि । हरता । तुहीं । है । पौन । पांनी । तुही । सरब । मै । ए । अनेक बांनी । तुही : जोति । ज्योति । तोही तुहीं । अधकाले । तुही । तोही कोटि । सुरज । सूरज । मै तेज । तोह । तुहीं । कोटि । सीतल । तुहीं । तोही कोटि ब्रह्मा । महादेव । जेते । तुही । तोही । कोटि । कंदरप । लावन्य । तैते । तोही । संतोष । तोही । तुही । सोक । सोक । सरबे । तो ही । जोग । जोगेसं । जोगीस । जोगी । तुही । तोही । भेव । अभेव । संदेस ।

महापिष्ठ के धार धारी धरत्ती।
करी त्र्ंमलं कस्यपं रूप कत्ती॥
बली बामनं पावनं किति राजै।
पगं नष्ष अग्रं सु गंगा विराजै॥ २०८॥

सबै षंडि षित्री सुतौ बिप्र तामं।
महापुण्य समृक्र सकै फर्सरामं॥
श्रियं राम रघ्वीर लीनौ वतारं।
कियौ रावनं कुंभ कर्नं सहारं॥ २०९॥

वसुद्देव ग्रेहं गह्यो कृष्ण वासं।
हतेदुष्ट सर्वं कियौ कंस नासं॥
करे जग्य लीयं धरा धंम सुद्धं।
प्रगट्यो कली काल अवतार बुद्धं॥ २१०॥

जुगं अंत सो सत्ति ह्वं हैं कलंकी।
इहै बात सांची सदा देव अंकी॥
जिते सैल सुन्हेति सुरपत्ति कीने।
तिते सेस गन्नेस जाअैं न चीने॥ २११॥
सबै दुष्ट भंजे सु सेवक् उगारे।
करे काम निज धाम नरहर पधारे॥

॥ छं० २१२॥ रू० ३९॥

रोगी। तोहीं। तुही। दंव दानव। तोही। तुंही। कोट्टि। ब्रह्मादी। अंतर। समानं। जिजी। षांनि। च्यारो। च्यारों। तिती। आपते आप हों। भेद। धान्यौं। करे। जे। अगै। नै तै। कइ। वराने। को। रिषि। रिगं। जे ते। कीयौ। मछ। अवतार। पहिल्लै। अनुपं। जे। दैत्यं। सागर। अलुंपं। हनै। स्वामि। शंषासुरं। बेद। लीनै। मुनै। मुनो। ततकाल्ल। दीनै। महापिष्ट। कै। भार। धरनी। धरैती। तृमली। रूपकैती। रूपकती। बल्यं। बलि। बामनं। किति। नष। सुरंग। सुरगं। सर्बे। षंड। षिमी। महांपुन्य। सम। करि। सकै। पर्सरामं। फरसरामं। श्रीय। श्रीयं राम रघुबीर। अवतारं क्रियौं। कियो। गवन। कुंभकरण। सहार। संहारं। बसुदेव। बसुदेव। गेह। गेहं। गृह्यो। ग्रह्यो। कृष्णावासं। हतै। सरव। कीयौ। कंश। करै। ध्रम। बुद्धि। बुधं। जुग। सो। सति। वै है। व्है है। यहे यहै। साची। दैव। जितैं। जितै। सीलसुर। सुलसुर। है त। हे त। सुरपति। कीनै। तितै। सैसं। गंनेस। जावै। चिन्है। चीन्है। दुष्ट। भंजै। सैवक। उघारै। करै कांम। धाम। पधारै॥

कवित्त—पधारे निज धाम काम सुर सेव किए सब ॥
जुग जुग सब जन हेत। लिए अवतार तबहि तब ॥
निकसे थंभ विदारि। हने हिरनंकुस दाह्नव ॥
प्रहल्लाद उद्धार। कियो पूरन पद जाह्नव ॥
श्री नृसिंघदेव समरंत जन। कलि कलंक दुष्षन हरन ॥
बलिरूप सरूप अनूप किय। श्रीनृसिंघ तेरे सरन ॥छं०२१३ ॥ रू० ४०॥

वामनावतार की कथा

दूहा - बहुत काल हरि सुष कियो। सब देवादिक रिष्ष ॥
पाछै बलि प्रगटयो बली। किये सत्त जिन मष्ष ॥
॥ छं० २१४ ॥ रू० ४१॥

तब इंद्रासन डग मग्यो। जेम तुलाकी डंड ॥
सुर सुरपति आकंपि भय। जांहि कहां हम छंड ॥
॥ छं० २१५ ॥ रू० ४२ ॥

जाइ जगाए श्रीपति। बलि आसुर अनपार ॥
तब सु पधारे नरहरी। धरि वामन अवतार ॥
॥ छं० २१६ ॥ रू० ४३ ॥

कवित्त --सवा लाष वर विप्र। दियौ इक इक प्रति दानं ॥
दुरद अयुत रथ अयुत। एक हज्जार के कानं ॥
दासि दास दुय सहस। चरचि आभूषण अंबर ॥
साठि सहस मन कनक। अवर बहु भंति अडंबर ॥
अैसै कि जग्य पूरन्न करि। निनानू बलि राय जब ॥
वामन सरूप धरि चंद कहि। अप पधारि गोबिंद तब ॥
॥ छं० २१७ ॥ रू० ४४ ॥

---

४० पाठान्तर---पधारे। पधारैं। धांम कांम। सैव। कीए। युग। युग। हैन। लीए। बहि तब। निकसै। हनै। हिरणंकिम। प्रहल्गादै। प्रहल्गादे। उधारि। कीयो। बूंदीवाली। मे नरहंसूदेव-सं० १७७० में-नरहसु देव-दुषन। रुप। सरू। अनुप। श्रीनृंमिघ। तैर। शरन।

४१-४३ -पाठान्तर -बहत। सुषि। कीयो। सम। ऋषि। रिषि। पाछे। पाछं। बल्ली वल। बुंदीवाली में-वरि कीए सित जित जिमन मख-कीए। सति। मष ॥ ४१ ॥ इद्रासन। जैन। आकंप। जाहि। छडि ॥ ४२ ॥ जाय। पधारैं। नरहीरी ॥ ४३ ॥

४४ पाठान्तर—दानं। दोय। बांमन। धारि ॥

दूहा—बलि लग्गो जुध इन्द्र सम। सुर आसुर मन षेध॥
साहस संकर विष्णु बर। षेद समव्वर वेध्र॥छं०२१८॥ ★०४५॥

गीता मालची †

लग्गेति षेधंवानवेधं, इंद्र वज्र सज्जयं।
छूट्टंत तारं नंषि भारं, काम कामं कज्जयं॥
धमकंत धारं बार पारं, मार मारं मुष्षए।
संधेसि बानं कर कमानं, कान तानं नष्षए॥ २१९॥
विकसंतव्योमं सट्ठिगोमं, भिरे भोमं धुज्जए।
देवकीनंदं अरिंनिकंदं चले गंजन रज्जए॥
बलिराइ बढ्ढिय देव दढ्ढिय, इंद्र कढ्ढिय आसुरे।
मिलि तथ्थ सथ्थं लथ्थ बथ्थं पारि रथ्थं पासुरे॥ २२०॥
देवता मारे घन संघारे, हार भारे बलि जुरं।
डक्कंत डक्कं पारिधक्कं, हारिथक्कं त्रँपुरं॥
छूट्टंत पट्टं बान छुट्टं, तौनषुट्टं चच्चलं,।
बलिरायजग्गं मानभग्गं, भिरेभग्गं अच्चलं॥ २२१॥
चौसट्ठि जोगं करे भोगं, देव सोगं दष्षए।
रुड्डंतं भुडंमुंडि सुंडं हार रुंडं रष्षए॥
लग्गंत बानं भानछानं, इंद्र ठानं चाहए।
भूमी भजानंगरि गुमानं, राहभानं दाहए॥ २२२॥

★ यह रूपक हमारे पास की पुस्तकों में से सं० १९४७ और सं० १७७० और बूंदीवाली में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी हुई में है॥

४५ पाठान्तर—लगो। जुद्ध। ओसूर। मनि। पैध। विष्ण। वैध्र। समर। वैध। समवर॥

† इस रूपक के छंद के निर्णय को सहज में यों समझ लेना चाहिये कि जिस को इन दिनों हरिगीत छंद कहते हैं, वह यह है। उसके नामान्तर इस महाकाव्य के पाठान्तरों से विदित ही हैं तथापि The Revd. Joseph Van. Taylor B.A. साहब ने इस को गीय नाम से लिखा है। इस के चार चरण होते हैं, उनमें से प्रत्येक चरण में दो पति १६+१२ और २८ मात्रा होती हैं, जिन में ९+७+१२ पर विश्राम और ८ ताल होते हैं॥

४६ पाठान्तर—गीता। मालती धुर्य्यः। छंद गीतामालती। छंद माधुर्य्यः। छंद गीत माजती। लग्गेत। लगैत्त। पैदं। वेंध। बांन। बांम! वैधं। इद्रवज्ज। सज्जयं। छुटंत। तार। भार। कांम। काम। धार। बारं। पार। मुषए। सधें। बांनं। नषरा। विहसंत। व्योम। सठि। गौम। भिरै। भौमं। देवकीनंद। चलै। रजए। बलिराय। बढिय। कढिय। दैव। दढिय। आसुरै। मिलितथ संथ लथवथं

बलिराइअग्गी भूमि मग्गी, भूमिषग्गी पारनं ।
वरदान रदृं वेद पढ्ढे, कालकट्टं कारनं ॥
वामनं रूपं धारि धूपं, अैस नूपं इलमझं ।
हुंकार सद्दं कियं नद्दं, वेद बद्दं संमझं ॥ २२३ ॥
धोमंतलग्गं त्रेवदग्गं कियंजग्गं कारनं ।
दिसि दिसिन दौरं कियं सोरं पौरि षौरं धारनं ॥
नषसिष्ष भोरं कथ्यि थोरं, काल कोरं कलकरी ।
आहुट्ठ पेड भोमषंडं छोरिछंडं डरबरी ॥ २२४ ॥
बलिदौरि आयोइंद्रभायौ, बेदगायोबच्छयं ।
मुहमंगिदानंतियपुरानं, मंडिभानंलच्छयं ॥
बाजित्रवायंदेवगायं, बलिसुरायंदिढयं ।
आहुट्ठपग्गंदीनमग्गं, भीरमग्गं सिद्धयं ॥ २२५ ॥
नाषंत बानं गंग तानं, राहु भानं रुक्कयं ।
चालंत धारं सुक्कसारं, रुक्कधारं, सुक्कयं ॥
ढेलंतझारीबारपारी, चष्य चारोमझ्झयं ।
बलिराइ अग्गं भूमिमग्गं, बलसुजग्गं भज्जयं ॥ २२६ ॥
पाताल पग्गं दान मग्गं, सीसत्रग्गं सज्जयं ।
भरि पाउ भारं धरन धारं, षगउभारं मग्गयं ॥
असुरानभज्जं बलियगज्जं, पीठसज्जं श्रग्गयं ।

पारि रयं पामुरे । देवना । मारे । संघारे । भारे । युरं । जुर । ढकहकंतढकं पारि धकहारि थक तैपरं । थथक्कं छुदनै पट्टं तोनपुटं बांन छुट्टं बवन्नं । छटंन पट्टं तीन पट्टं बान छुट्टं चलं । बलिराय जंम मान भंग भिरैमरा अचलं । बलिराय जग्गं भिरे मग्ग अचलं चोमठि । जोगं । करै । भोग । देव । सोग दषए । रुहत । भुडं । मुडि । मुडि । सुडे । रूड । रषए । लगंत । बांन । भांन । छांनं । इढानं । बाहुए । गुमान । मान । दाह । दाहये । बालिराय । आगै । अंग्र । भुमि । मृगै । मग्रे । मुमि । षगै । षगों । गारनं । दरबांन । रटै । बेद । पढै । काल कटे । वामना । रूप । नुपं । इलमझं । हुंकारणदं । षद्दं । कीयं । कीय । सदं । नदं । वैद : वद । वदं । मसमझं । घोमत । लगं । त्रैवग्गं । त्रेवदग । कीय । जमं । षगं । कारणं । दौर । कीयं । सोरं । सिष । भोरं । कथि । थोर । काल कारं । आहुठ । प्राहुठ । पिंड । भौम । षंड । छोरि । छंड । परवरी । बलिदोरि आयो इद्र भयो वछयं रिष । पुरान । मझि । लछयं । वये । दिठयं । आहुठ । आहुठ । पेंडं । मंग । भमे । सद्धयं । नाषंत तान । गंगबान । भांनं । रुकयं । रूकयं । बलंत । सुकतारे । श्रुबकसरि । रुक । मुकयं । ठेलंन । चष । मझये । बलिराय । अंग भूमि । मंग । मगं । बलि । जिग ।

चंपंतपीठं दाझदीठ, दैंतरूठं तापयं ॥ २२७ ॥
★ बंधंन बद्धं बरष अद्धं, देव किद्धं सारयं ।
घर पिट्ठनट्ठं मारि मुट्ठं स्रग्ग दिट्ठं पारयं ॥
रहिअठ्ठपष्षं सष्षिलष्षं घाररष्षं, घारयं ।
चप्पौपयानं नहीं कालं, राजभालं भालयं ॥ २२८ ॥
तुट्ठं सुनाथं रष्षिनाथं, स्रब्बसाथं पालयं ।
असुरान भग्गं षेलषग्गं, इंद्र स्रग्गं वासयं ॥
वामन्न रूपं कला अनुपं, बलिय कूपं त्रांसयं ॥
॥ छं० २२९ ॥ रू० ४६ ॥

नाटक—नारद्दं कहि जाय विष्णु पुरयं, स्यामं छले वायकं ।
जग्यं फल उतपन्न दीन वर्य्यं, पाताल हरनं सदा ॥
वंझावलि बलि त्रीय पास लष्मी, पारष्षिआने हरी ।
चौकी बंधि चौमास पास सरितं, पद्मांरनं सत्तलं ॥
॥ छं० २३० ॥ रू० ४७ ॥★

परशुरामावतार की कथा

दूहा—षिति षित्री अति प्रबल हुअ । महामत्त असरार ।
ताहि हतन षिति दुज दियन । परमराम अवतार ॥
॥ छं० २३१ ॥ रू० ४८ ॥

दुय पुत्रिय राजन सुपति । व्याही षित्री दान ॥
जमदग्निह रिषरेनिका परिनठ्ठिय अरि पान ॥
॥ छं० २३२ ॥ रू० ४९ ॥

जगं । भजयं । पगं । दांन । मगं । श्रग । श्रृगं । सजयं । घरनं । मगयं । असुराण । भजं । बलीय । ज्जं । गंज । पीर । सजं । श्रगयं । श्रृगयं । चपतं । दाव । दाड । रूपठं । रुठं । पारयं । ★ यह तुकसं० १८५९ की लिखी पुस्तक में तो है अन्य किसी में नहीं है । आछे । पय । मंषिन । सष्यं । रषं । चप्पो । पयालं । नही । नहींय । तुस । सनार्थं । रषि । श्रव । मगं भंग । षंगं । पगं । श्रग श्रृगं । वामनं । रूप । नुपं । नूपं । अनूपं वलीय ॥

४७ पाठान्तर—वरयं । लषिमी ॥

★ यह रूप हमारे पास की सं० १८५९ की लिखी पुस्यक के सिवाय और किसी में नहीं है ॥

४८–४९ पाठान्तर—छिति । प्रबलं । हुयं । हुय । हुवं । महामत । हतन । छिति । परसरांम । परसिराम ॥ ४८ ॥ दोय पुत्रि । पुत्री । षत्री । दांन । जमदग्गिह । रेणका । परिनहिय । परनठ्य । अरिपांन ॥

कवित्त - अनुकंपा श्रुत सुबर । दिद्ध षित्रीय अरज्जन ॥
रेनुक ग्यि जमदग्न । षित्रि सहसार्जुन षप्पन ॥
सहस भुजा सिर इक्क । सरित मन हथ्थ सुबाहे ॥
नव षंडन उग्रहै । लोग सहसं तन दाहै ॥
जमदगनि सुतन दुज घर दियन । फरमराम अवतार धर ॥
षित्रियन मारि वृदह वरिय । करी टूक अज सहस कर ॥
॥ छं० २३३ ॥ रू० ५० ॥

भुजंगी पुत्री दोइ राज सुराज विचारी । इकं रूप सारं बिय चत्रु नारी ॥
दई सैस भुज्जं अनुक्कंप ताहं । बियं जम्मदग्नं सुरेनक्क व्याहं ॥ २३४ ॥
ग्रह बंधिरन् मझ्झ रेनक्क रापै । मन मझ्झ बिभ्र मरिप्प सु दापै ॥
तनं जानि त्रैलोक आरुन्न बढ्ढी ।भरे अंव वस्त्र रिपं पाम ठढ्ढी ॥ २३५ ॥
ब्रष अठ्ठदस्सं बनव्वास रह्यं । करुन्ना मुष मझ्क षत्रीन कह्यं ॥
गई तट्ट सम्मुद्द सथ्थें सु भट्टं । सयं अंनु कंपं अमूगान थट्टं ॥ २३६ ॥
धरंनी चकड्डोल अस्मान चल्ली । मिले सथ्थ सुर्थान धर्यान हल्ली ॥
गह्र दुरंदान भद्रान मद्दी । भिली माइर जानि निव्वान नद्दी ॥ २३७ ॥
पुर तीन दद्दीन मग्गं अमग्गं । नहीन त्रिहूं लोग तिन् मम्म षग्गं ॥
॥ छं० २३८ ॥ रू० ५१ ॥

---

५० पाठान्तर -अनकरा । सबर । गित्रि । षित्री । अय्युन । अरजुन । रैनर । रेणुक । यमदग्न । षित्री । सहस्राजुंन । सहसारजुन । षपन । इक । हथ । सुबाहै । लोग । नन । यमदगनि । जिमदगनि । दीयन । फरमराम । अवतारि । धरि । करि । टुक । अजसकर ॥

५१ पाठान्तर—दोई । दोइ । राज । सु राज । इक । सरस । बीयं । चत्रनारी । चतुरनारी । दइ । सहस । भुजं । सु अनुकप । सु अनकंप । बीयं । जमदग्न । सुरेनक । सुरैनक । ग्रिहं । बधि । रिन । मझ । रेनक । रैनक । मझ । मग्गि । जानि । त्रयलोक । अरुनक । अरुनत । बढी । भरै । अवं । ठठढी । वरष । बरषं । अटदस । बनवास । रहि । रहियं । करुन । सुष । मझ । षित्रीन । कहीय कहियं । जाई । आइ । तट । समुद । ममुद्द । सथै । सथें । सथ्थै । सय । अनुकंप । अनुकप । असुरान । असुरांन । धरनि । धरनी । धरंनी । चकडोल । चकडोल्ल । असमान । चली । मिलै । सथ । सुरथान । धरयांन । हली । गहर । गहर । दुर दांन । मदी । मिलै । मायरं । जांविनिनिवाननदी । जांनि । निवान । नदी । पुर । दरदीन । मग । मगं । अमग । अमंग । नहिन । नहिन् । नहिन । त्रहु । लोग । तिन । समन । षंग । षग ॥

दूहा —सत षोहनि पानन सहस । रत हथ्थी सत लष्ष ॥
धवल दुरद सत लष्ष भर । सत लष अस्सित् पष्ष ॥
॥ छं० २३९ ॥ रू० ५२ ॥

मनहु कूर षित्री मरद । पन अप्पान प्रति पार ॥
मनहु सूर ससि डरन डर । भर षित्री भर भार ॥
॥ छं० २४० ॥ रू० ५३ ॥

पुज्जि आव षित्रीन रन । उप्पन्नो रिषि राज ॥
फरसी दीनी विष्णु पुर । कल्हि ब्रह्म स्तुति काज ॥
॥ छं० २४१ ॥ रू० ५४ ॥

भुजंगी —चरी अंनुरूपं सयं मिप्न मिष्पं । धरीयं मनं मझ्झ पत्नी सुरूप्पं ॥
भरी नेह अंबं तिनं वस्त्र भारी । डरी मन्न मझ्झा ग्रहं इप्प नारी ॥ २४२ ॥
अई हथ्थ हथ्थ जोरी मुहं मोरि कह्यं । भरी नेह नीरं मन पीर रह्यं ॥
रिरी मन्न मैंहल्ल भोजन्न कज्जी । किध्रे दस्म ब्रप्प मु आगंम सज्जी ॥२४३॥
अए रिष्पि थानं मु डेरा दिवान । जनौं चद्रि नभ्भं प्रगट्टीय थान ॥
दुपकन्न झुंडं किय झुंड झुडं । जुं सोभीय पंभ इभ इप्प मुडं ॥ २४४ ॥
दई वन्न नीसान न्नौ वज्जि भेरी । मनों इंद्र इंद्रासनं धुज्जि हेरी ॥
स्मरीयं रिषं धेन कैलास थानं । किधों त्रिंट्टियं गज्ज गाहं मुनानं ॥ २४५ ॥
जु आतिथ्थ आकर्षन धेन आई । मुरं आसुर नाग मझ्झै कि भाई ॥
तवै आनि तुट्टी मझै थान थाय । जिहनं जु जो भाव भोइन्न भायं ॥ २४६ ॥
तवै पोहनी अट्ठ भोयन्न भष्पी । कहा पाक मासन आतक दिप्पी ॥
तुरतं भगनीन चिंता चितानी । इन पुज्जिवै कौन अनरु पानी ॥ २४७ ॥

५२-५४ पाठान्तर —मन । पोहुंन । पोहनी । पांनन । हथा । सित । लष । सित । लष । सित । हसत । हसित । पष्ष । पष्ष । पषष ॥ ५२ ॥ मनहु । अपन । मनहु । सुर । शशि । पित्री ॥ ५३ ॥ पुजि । पूजि । उपंनौ । ब्रह्मस्तुति ॥ ५४ ॥

५५ पाठान्तर —भुजंगप्रयात । चरिय । अनुरूपं । सय मिषन । मिषं । धरीय । धरिय । मन । मझ । यत्री मझं । मझ्यं । भरीय । नह् । अंब । अव । तिन । डरी भरिय । डरिय । डरि । मन । मझ । मझ्झ । ग्रह । इपि । इप । आइ । हथ । कर । जोर । जोरि । मह । मौरि । कहियं । कहीयं । भरिय । भरीय । नह । नीर । मन । रहिय । रहियं । रहीय । रिषि । रषिय । मन । महल । महल्ल । भोजन । भोजंन । करी । किद्धि । किद्ध । किध । दस । बरस । आगम । आगंम । सजी । आई । आए । रिषि । रपि । थानं । डैरा । जनूं । जनौ । चदरं । चद्दरं । नभ । नभ्भ । प्रगटीय । दुरयं कनक । दुसंकन । दुरय

हृषीयं अनूकंप धेदंसु दुझ्झी । कही राज अग्गं सु भोजंन गुझ्झी ॥
मुषं दैत बंकं सुरं सक साझै । दियं नैन ते चित्त गानन्न दाझै ॥ २४८ ॥
करी कंक अनूमक ले चल्ल बच्छी । किधों दौरि पित्री सुरं धेन गच्छी ॥
रे रुंड मुंडं सुरं सब्बमारे । जितै लात मारे तितै सर्व तारे ॥ २४९ ॥
तन लोम लोम प्रगट्टी दहानं । मुषं मुग्गलं पुच्छ पछ्छार भानं ॥
रं पुब्बरं रासि भं मिग मिद्धं । लगे लेव आग्ग निनं मुनि लिद्धं ॥ २५० ॥
किय पुत्र ता माय धेनं दहानं । सुने बान पित्री धरे पिट्ठ पानं ॥
मनो भजि कैलास ते आनि धेनं । किधौ चल्लिय राज वौ उड्डि रेनं ॥२५१॥
नं रिष्ष श्रापन्न तापन्न ताप । किधौ पुत्र पारथ्थ रेनंक काप ॥
न पुत्र काज आसिख्य बप्पं । कियं पुत्र नृप्पं दियं श्राप रिप्पं ॥२५२॥
वे फरसरामं फरस्सी उभारी । कियं रिष्ष काम सुमत्तं सुमारी ॥
री पुत्र तंमंगि जो दिद्ध मान । किधौ पावनं पाइ दौर्ट सभ्रान ॥२५३॥

...। ...। ...। ...। ...। सौमीय । ...। ...। ...। इव ।
...। ...। ...। ...। भैरी । मनो । ...। ...। ...। समग्गियं ।
...। ...। ...। ...। ...। ...। ...। ...। ...। अनीन ।
...। ...। आरपंन । धैनै । सुर । असुर । मझै । मझे । आनि ।
...। ...। ...। मझै । ...। ...। ...। ...। ...। जै ।
...। ...। भोजन । भगी । ...। ...। ...। ...। ...। ...।
...। विना । विनानी । दैन । ...। ...। ...। कोन । कोन ।
...। ...। ...। विनानी । पानी । पांनी । ...। दिषी । ...। ...।
...। धैन । सुदुझी । गुझ्झी । करी । अये । भोजनं । गुझी । दैन सुष ।
...। नित गाननं दाझै । दिष ने नित गान न दाझै । दिष नैन चित्त गात न
...। करी । करौ । अनसंक । चलो । बलो चलो । बछी । बछी । किधी ।
...। गछी । परै । रूंड । रुंड । मुंड । मुड । सुर । सब । मारै । जिते । पान
...। लोन । मलोम । प्रगटी । दहनं । दहान । मुग । मुगलं । मुगल । पुछ ।
...। परठाय । भोन । पुर । पुररं । मीग मीग । मिग । लगी लग । ...।
...। मुक्ति । लद्ध । कीयं । तो । तो । ने । धेन दसहनं । दसनं । सुनै ।
...। तान । कान । धरै । रिट । पांनं । मनो । मनो । मनो तें नै । किधौं ।
...। चलिय । व बहु । उ । ड । रैन मनो । मना मन । रिषि । श्रापं ।
...। किधो । पारथ । रैनक । कायं । मनो । मनौ । पुत्र नह । अ मिष ।
...। वाप । विषं । वषं । कीयं । नृप । नृपं । दीय । रिप । रिप ।
...। फरसराम । फरसी । रिषि । सुमंत । तमगि । तंमगि । जब । किधो ।
...। पावन । दोइ । दोह । सहस्राजुँनं । सहसारजुन । कामधैनं । रांम ।

करी पैज सैसार्जुनं काम धेनं । चल्यौ रामफर्सी धरै गज्जि गेनं★ ॥
कहां आइ सैसार्जुनं मुझ्झ अग्गं।★ चल्यौ राम रिष्षं पयं लगि मग्गं ॥२५४॥
दियौ रिष्ष बरदान जा कुद्ध कज्जं । जबै दिग्घियं षित्रियं फर्स भज्जं ॥
मनों अर्क वारं मधं अग्गि लग्गं । भयौ दिट्ठ सैसार्जुनं भीर भग्गं ॥
॥ छं० २५५ ॥ रू० ५५ ॥

दूहा - फरसराम फरसी ग्रही । लग्यौ पत्रियन काल ॥
हुकम रिष्ष दाहन चल्यौ । जगि जोगिनि विकराल ॥
॥ छं० २५६ ॥ रू० ५६ ॥

त्रिभंगी जगि जोगिनि काल, ईस सभालं किद्धा चाल, कंडालं ॥
मिलि भैरव भूत, देविय दूत, चण्ण महत्तं अनालं ॥
मिलि फरस रामं, करुना कामं, भामनि भाम, सुर इंद ।
धर धुज्जे गैनं, उड्डिय रैनं, जग्गिय नैन, जोगिदं ॥ २५७ ॥
परि आयौ रामं, लग्गिय जाम, पत्रिय ठामं, नह लद्धं ।
परि मोटन छोटं, दानव दोटं, जुग्गनि जोटं, लगि जुद्धं ॥
थरथरि थिर थानं, रीठ सुवानं, छाइय भानं, गैनानं ॥
करि पित्री अंतं, मडिय पंतं, पंगुर जंत, हूं हानं ॥ २५८ ॥
वरबान न लग्गै, भीर न भग्गै, फारग्गी बग्गै, कर भान ॥
अवतार अलष्पं, भामिन भष्पं, दैतन दष्पं, ब्रह्मान ॥
करि रूप कुरूपं, जुद्ध सरूप, पुत्र अनूपं, जमदग्नं ।★
नृत्तत अनलष्पै, आप अलष्पै, दानव दष्पै, जम मग्नं ॥ २५९ ॥

फरसी । धरै । गजि । गैन । गैन । गैन । आय । सहसार्जुन । सहसार्ज्जुन ।
सहस्रार्जुनं । मुष । अग्र । ★ यह दोनो बूटीवाली पुस्तक मे नहीं है । रिष । लगि ।
मग्र । सगं । रिषि । वरदान । काजं । जवै । अडब । दिग्घियं । पत्रियं । फरस ।
भज्ज । भज । मनो । मनौ । अरक । अर्क्कं । अगि । लग्र । लग्य दिठ्ठ । दिट्ठ ।
सहसारज्जुन । सहसार्ज्जुन । भग ।।

५६ पाठान्तर — दोहा । फरसराम । ग्रही । पित्रियन । पित्रीयन । रिषि
जग । युगिनि । जोगिन ॥

५७ पाठान्तर — छंदत्रिभंगी । जुग्गिन । काल ईश । संभाल । किधा । कढाल ।
कंडाली । मिल । भैरव । भुत । भून । देवीय । दुन । चंप । चहतं । अंनाल ।
फरसरामं । फरसराम । करना । काम । भामिनि । इंद । धुजे गै । गैनं । उड्डीय ।
रैनं । जग्गीय । नेन । जोगिद । राम । लगिय । जांम । पित्रिय । छोट । दोट ।
लागि । युद्धं । थर । थानं । मुनं । गैनागं । मिलि पित्रयी दंदं । मंडीय । जंत ।
बान । लगै । भगै । वगै । भानं । अलषं । भषं दैत्यन । दर्ष ब्रह्मानं । करूपं ।

गहि ग्रिद्धन गाला, किद्धा चाला, गिषि रंढाला, रिन कालं।
परि कूक सु कूकं, डक्किन डूकं, गिद्ध गहूकं अंतालं ॥
सु छाइय भानं, अरजुन बानं, सहसभुजानं, गंजानं।
मनु बद्दर चंदं, हथ्थ जुगिंदं, कीआ फंदं, दंतानं ॥ २६० ॥
परि लोथ अलोथं, मथ्थन मथ्थं, भरि भरि बथ्थं, भंजानं ॥
षिसि पोहनि अट्ठं, मारक नट्ठं, ना रस तट्ठं, धूकि धानं ॥
भिरि भुज भंजानं, दैतलजानं, फरसिय पानं, रन मानं।
परि अर्जुन पानं, पिमीय पानं, नारद ग्यानं, विजयानं ॥ २६१॥
अवतार सु दिट्ठं, षित्रिय नट्ठं जोगिनि सट्ठं, नाषित्रं।
परि फूल सुगनं, मागि पित्रान, चंद बषान, गावित्रं ॥
॥ छं० † २६२ ॥ रू० ५७ ॥

कवित्त सहस भुजा सिर इक्क। नाम अर्जुन घन सज्जिय ॥
सुर अठ पोहनि मरदि। करे सुर अप्पन कज्जिय ॥
भरि रुद्धि षप्र कुरनीय। ईस मुंडन भर बध्धिय ॥
पलवर रुधि चर पूरि। सक्क करि कारज सध्धिय ॥
दिय दान पानि पृथिवी दुजन। करे रुधिर कुंडन स्नपन ॥
सुर नरन नाग किन्निय उचरि। फरसराम षित्रिय षपन ॥
॥ छं० २६३ ॥ रू० ५८ ॥

★ [illegible] मे पाठ-करि [illegible] पुर अनुर [illegible] जमदग्न-सं० १६४७ और १७३१ [illegible] अनुर जमदग्न। [illegible]। अनुकर्षै। [illegible] पद्ध। गिद्धन। गिद्धंन। [illegible]। [illegible]। [illegible] परिकन। [illegible]। गहूक। डकिन। डूक। गहूक। भान। अरजुन। अर्जुन। बान। भुजान। मनो [illegible]। [illegible]। हथ। जुगिंद। किआ। फंद। [illegible]। [illegible]। अलोथ। अलोथ। [illegible]। मथ्थ। [illegible]। [illegible]। पोहनि। [illegible]। [illegible]। नट्ठ। [illegible]। [illegible]। धूकि। धानं। [illegible]। [illegible]। फरसी। [illegible]। पानं। मानं। अरजुनं। अर्जुन। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। नट्ठ। [illegible]। सट्ठ। पित्रानं। बषान ॥

† [illegible] प्रत्येक चरण मे ३२ मात्रा और [illegible] १०+८+८+६=३२ और [illegible] ८ [illegible] है ॥

५८ [illegible] -इक। नाम। अरजुन। अर्जुन। [illegible]। पोहनि। मरद। करि। सुरै। [illegible]। रुधिर। कुनिनिय। जोगिनिय। [illegible] मुंडन। बध्धिय। पलवर। रुधिवर। सक्क। [illegible]। सध्धिय। दीय। दान। पानि। प्रिथवी। करि कुंडन रुधिर सु स्नान। नग। किन्नीय। विस्रोय ॥

रामावतार की कथा

दूहा— फरसराम छिति पति हते। छिति अप्पी निज वंस॥
रघुवंसी दसरथ्थ घर। श्रीरघुपति अवतंस॥
॥ छं० २६४ ॥ रू० ५९ ॥

रघुवंसन राषिस रमन। भयोराम अवतार॥
वेद भ्रात दसरथ सुतन। नयर अजुध्यासार॥
॥ छं० २६५ ॥ रू० ६० ॥

भय राम लषिमन सुबर। भरथ सत्रुघनभ्रात॥
अरि रावन रप्पम हरिय। तिन बन लिप्पिय तात॥
॥ छं० २६६ ॥ रू० ६१ ॥

कवित्त नरुनि नाम तारिका। ग्यान हरि परसीराम॥
वरि सत्ती धानुग्य। किए सब सुभ्भह काम॥
केकइयै बर मगि। राम बन भरत सुराज॥
तब दसरथ दुष कीन। भयौ धुर काज अकाजं॥
दसरथ्थ पाइ परसे उभय। पंच वटी बंधी कुटिय॥
कहि चंद छद परबध करि। लक कक जिहि विधि जुटिय॥
॥ छं० २६७ ॥ रू० ६२ ॥

सूपनषा रागसी। रहै बन सक्कर ढाली॥
रूप नष्ष चष धुम। रग श्रवन तन काली॥
नाक वक्र नष तिष्व। जाइ षरदूषन दप्पिय॥
दौरि दौरि धरि ढौरि। राम सत्र रापिम भष्पिय॥
हरि सीत नीत रावन गयौ। भयौ चित्त राषिस हरन॥
कहि पवन पूत दूतह चलिय। सुर सुकाज साईं करन॥
छं० २६८ ॥ रू० ६३ ॥

५९–६१ पाठान्तर फरसराम। हतै। अपी। भिज। दशरथ॥ ५९॥ **रषि**। **रवन**। राम। श्रीराम। वैद। दसरथ। सुतन। अयोध्या॥ ६०॥ **भयै**। **भयौ**। राम। लछिमन। लछमन। भरत। सत्रुघन। रप्पमहरिय। बन लषिय। **लिषय**॥ ६१॥

६२–६४ पाठान्तर—नाम। ग्यन। परसीरांम। करी रती। धानुष। **कीए**। **सुभह**। केकइय। केकदयें। राम। भत। दुषि। तिन दसरथ। पाय। व। **बंटी पटबध**। जिहि॥ ६२॥ **सूर्यनषा**। तुर्य्यनषा। सूपनषा। राक्षसी। रापिसी। **मध्य**। **रढाली** सूपनषत्रसं ध्रूम। सूप। नष। श्रवन। प। जाय। **षरदूषण**। **दखिय**। घर। धर। राम। भषिय। हरि। छित पुन। दूतह। सद। **चवलिय**। **साई**॥ ६३॥ गयौ हनू लंकेस। एसं। लंकेश। पाईय। समरीय। संहरीय। **घेर**

गयौ लंक हनुएस । भ्रमत सुधि सीता पाइय ॥
घन उपवन संघरिय । धरे मन राम दुहाइय ॥
वाय चढ्यौ प्राकार । दगन जुद्धह दनु भग्गिय ॥
अपै कुमारन हनिय । दौरि इंद्राजित दग्गिय ॥
नगि पास रास द्रढ बंधयौ । कहि सुमग्ग अवर धरौ ॥
लग्गाय पुच्छ लंका जरिय । कनक पक किन्नौ परौ ॥

॥ छं० २६९ ॥ रू० ६४ ॥

दूहा जलन जलिय रग्गम छरिय । धरिय बाग विपरीत ॥
मनौं अर्क कमलनि दग्ग । सुनि रावन मन भीत ॥

॥ छं० २७० ॥ रू० ६५ ॥

कवित्त -बंधि पाज सागरह । हनूअ आद सुग्रीवह ॥
नील जंबु सु जटाल । बली गहून अरु जीवह ॥
धाम धरनि व गाह । दाट धारन कटि मारन ॥
स्वामि ध्रम्म धुर धवल । उड्डि असमान सुधारन ॥
प्रकार धरनि दसकंध हरि । पवन पून अधधून भर ॥
सर * करन लंक ल्यावन मतौ । थप्पन लंक बभीष बर ॥

॥ छं० २७१ ॥ रू० ६६ ॥

वधि पाज बर वीर । नपि साइर सु अप्प कुल ॥
बय तरंग तपि तथ्थ । भरे जन् अगस्ति (सु) ‡ अंजुल ।
सिर मच्छी ऊछरी । मनौ रचि मनि धर सेस ॥
पिट्ठ राम भर हनुअ । किन्न मन कारन भेसं ॥
चक चकित नाथ दस बेद पुर । छोरि देव सेवन ग्रहय ॥
घर लंक सदा थप्पन सुथिर । अगह् गहन हनुमंत भय ॥

॥ छं० २७२ ॥ रू० ६७ ॥

रांम । दुहाइयं । दुहाईय । चाय चढ़ीय प्रकार । दग्गमनदहदनुभाग्गिय ॥ वाय चढीय प्रकार । जुदह । जुध्ध । भगिग । कुमारनि । हनिय । जिप । जीन । सु । दगिय । नगि । दृढ । बंधौ । मरन । अवर । लगाय । पुछ । पूछ । जग्गिय । किनौ । कीनौ ॥ ६४ ॥

६५ पाठान्तर जलनि । जरिय । रगिस । छरीय । धरीय । बग बिपरीति । मनो । अरक । कमिलनि । दग्गि । सुनी ॥

६६-६९ पाठान्तर बध्धि । सुग्र । बलि । गहून । स्वामि । स्वामि । ध्रंम । धुंम । धुरव । धवलं । उडि । असमांन । प्रकार । पुन । अवधुत । सर । थपन । बर ॥ ६६ ॥ बंधि । बर बीर । सायर । कुलं । कूलं । बिप तुरंत तिप तथ । भरे ।

जब सु राम चढि लंक। तब सु मच्छी गिर तारिय ॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु पथ्थर ज॰ धारिय ॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु चक चक्की चाहिय ॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु लंका पुर दाहिय ॥
जब राम चढे दल बंनरन। भिरन राम रावन परिय ॥
भिर कुंभ मेघ राषिस रमन। गीत काम कारन करिय ॥
॥ छं० २७३ ॥ रू० ६८ ॥

उतरि समुद्द अथाह। धाह लंका धुर धुज्जिय ॥
चल्लिय सेन रघुवंस। जोर सामंत सु सज्जिय ॥
लुट्टि लंक गढ घेरि। फेरि बभ्भीषन थप्पिय ॥
इंद्र जीत असि मज्जि। चढे रभ अप्पन जप्पिय ॥
परि मार धार परि बंनरन। मार मार उचरत मुष ॥
चल चल्लिय सेन लषमन मधर। देव बिभान सु मानि दुष ॥
॥ छं० २७४ ॥ रू० ६९ ॥

दूहा - मेघ नाद नादन कन्यौ। धन्यौ लंक उर धाह ॥
छुट्टि लोग सब भोग नजि। जुट्टं जग उछाह ॥
॥ छं० २७५ ॥ रू० ७० ॥

अंजल। गिर। मच्छी। उबरी। मनो। मनौ। गैम। सम। रिट। राम। कीन। नैसं। चक्रित। बदनपुर। बदपुर। औरि। देवर ग्रसर। गुरुर। धर। थरन। अग्ग मग्ग। हनमन। ॥ ६७ ॥ राम। राम। मछी। गिरि। तारय। तारीय। रांम। लिक। पथर। धारीय। राम। चकी। राम। दाहीय राम। चढै। बदरन। रांम। परीय। सीन ॥ ६८ ॥ उतरि। समुद। धुज्जि। सैन। रघुवंस। जो। समज्जिय। समाजिय। घैरि। बमीषन। बभीषन। थपिय। गजि। बदरन। मुष। चलि सैन। लषिमन। समन। दैव। देबि। बिमांन। ममान ॥ ६९ ॥

★ इस शब्द का किसी पुस्तक मे मग और किसी मे मक पाठ है। मैं इसका फारसी शब्द से हिन्दी का बनना नहीं समझता हूं किन्तु संस्कृत मर: = गनौ। गमने ॥ भेदके। भेदने ॥ अथवा Sk. मक = Thin, Small, minute. Hence conquest, victory, triumph के अर्थ मे कवि का प्रयोग करना मानता हूं। बहुत से संस्कृत और हिन्दी शब्द ऐसे २ है कि जो उच्चारण और अर्थ मे फारसी और अरबी भाषाओ के शब्दो से मिलते जुलते हुवे हैं। क्या उनका अन्य देशीय भाषाओ से ही उत्पन्न होना स्वीकार करना परम प्रशंसनीय है ? । † अधिक पाठ ॥

७० पाठान्तर --"धन्यौ लंक उर धाह" के स्थान मे सं० १७७० की पुस्तक में "लंक उरधाह" मात्र है। भोग। तिन। जुट्ट। उछह ॥

विराज छुटे बान इंदं। घटा जादि भद्दं॥ भिरे बान भानं। करंतं बषानं॥२७६॥
धरे ईस सीसं। फिरे बानरीसं॥ बकी थान थानं। जकी जोग मानं॥२७७॥
वहै रत्त धारा। छुटै भद्द भारा॥ फिकारंत पक्कं। डकारन्त डक्कं॥२७८॥
भये राम रीसं। मनों काल दीसं॥ धग्ग अंग बज्जै। परे रथ्थ भज्जै॥२७९॥
भिरे भ्रात पारं। मनों राम मारं॥ हुई इंद्र जीनं। भए देव भीनं॥२८०॥
करे रूप कोरं। सर्बलोक मोरं। ★ ★। ★ ★॥ छं० २८१॥ रू० ७१॥

कवित्त - धरनि धार धुकि धरनि। भिरन इंद्राजित मरभर॥
मुक्कि बान रुकि भान। परिय सागरन पलच्चर॥
जग्गि बान मोहनिय। परिय लपि मनं पथारिय॥
परि षट दस सामन। मार मोहनिय सुधारिय॥
गजि इंद्र भद्द करि इंद्र रव। गयौ लंक गाढो ग्रह्यौ॥
रघुवंस सेन वानन पऱ्यौ। मार बह्म मोहनि मह्यौ॥
॥ छं० २८२॥ रू० ७२॥

वपु नषन पुप्परिय। किनन किन नाट कुरंगिय॥
गनन गनन गय नंग। छलन छक्किय उछरगिय॥
सनन सोक भिल्लरिय। पनन धर धार पलक्किय॥
गिलन डवक डिल्लरिय। भनन भूभार भलक्किय॥
धरनी धरीय बनरं रषिग। पग्गिय पंति मोहन प्रबल॥
असुरान गंजि लंका नथह। इंद्रजीतिजीतित अतुल॥
॥ छं० २८३॥ रू० ७३॥

कवित्त फिरि गज्जिय रघुवंस। हनूगढ कोट उडायिय॥
मरन छोरि मरजाद। इंद्र जीत न सुधि पाइय॥

---

७१ पाठान्तर छंद विराज। छुट्टै। बान। जादि। भदं। भिरै। बांन। भिग। इस। ईश। सीश। वकी। थांन। जोक। रत। छुट्टै। भद। फिकारंत। फकं। डकं। भय। राम। मनो। मनो। वजै। परै। रथ। भजै। भिरै। भिरै। मनो। मनों। रांम। हू। हुइ। इंद्र। देव। कोर। सर्वे। लोक। मोर॥

७२ पाठान्तर - कवित्त। धरनिर। धरैन। धरन। इंद्रजीत। मरम्भर। मुक्ति। यान। भांन। भान। भानि। सागरह। पलचर। लपि। बांम। मोहिनीय। लगिमन। पथारीय। मोहनीय। सुधारीय। भद्द। रंग। सैन। बांनन। मोहनि॥

७३ पाठान्तर - वपु। नषन। कुरंगीय। छकिय। उछरगिय। सनत। सोंक। भलरिय। भिलरिय। पलकिय। डक। डलरीय। डिलगीर। भलकिय। धरनि। धरय। धरित। बारं। बनर। बनरपिग। रहीय। मोहुन। असुरांन। गजि। इद्रजीति। जितंयं। अतुलं॥

मंत्र होम रथ जग्य । सरन देवी सुष जापं ॥
लषिमन हनु सुग्रीव । लंकपति भीषन थापं ॥
आरूढि रथ्थ अप्पन अवर । धवर पत्ति द्वारह धरिय ॥
छर छरिय बान छकि छंछटिय । भरिय पत्र अभरन भरिय ॥
॥ छं० २८४ ॥ रू० ७४ ॥

धरनि तरनि आकास । वास रथ सासन रुक्किय ॥
दमन अंव लगि वान । धरनि वट सापन धुक्किय ॥
कुक्किय कन बिन कोर । सोर जोरह चौमठ्ठिय ॥
मंत्र जप्प मत्र भुल्ल । करुन कारुन अन दिठ्ठिय ॥
रथ च्यारि चक्र फरि चक्क चव । बान वृष्टि लषमन वलिय ॥
करि कंक मंक आसुरनि डर । कहर बत्त ता दिन कलिय ॥
॥ छं० २८५ ॥ रू० ७५ ॥

साइर मत सोषनह । बान दिन्नौ ता हथ्थं ॥
गुन औगुन संधियहि । कढ्यौ तिन जीवन मथ्थं ॥
कुसुम वृष्टि सुर कीन । भयौ रावन तन भारी ॥
सकल सोक रायिमन । हनूं जब लंक प्रजारी ॥
जैजया सद्द जोगिन जपिय । मंदोदरि कीनौ रुदन ॥
लछिमन्न राम सीता सुग्रहि । तदिन लंक लग्गौ कुदिन ॥
॥ छं० २८६ ॥ रू० ७६ ॥

बसि निद्रा अध्र बरष । धाम अंबर धर धुज्जिय ॥
गौन गज्जि सुर सज्ज । पुध्रा बन चर बर पुज्जिय ॥

---

७४ पाठान्तर - [illegible] । रघुवग । हनु । बोट । उडाइय । मरण । मारन । छौरि । पाईय । होम । जागी । दैवी । लषमन । बभीषन । थांपं । आरुढ । रथ । मधन । अपन । धवर । पति । धारह । छरय । बान । भरय । अभर ॥

७५ पाठान्तर—आकाश । रुक्किय । दमन । अव । वान । धुक्किय । बिन । कौरं । सोर । मोर । चोसठिय । जप । भ्रम । भुल्लि । भोल्ल । करन । अनादीतेय । अनदिठिय । चक । [illegible]ान । लषिमन । बन ॥

७६ पाठान्तर सायर । सो । बांन । दिनो । दीनो । हथ । अवगुन । तिन । मथं । कुसम । मोह । हनु । सबद । शबद । जुगिनी । योगिनि । मदोवरि । किनो । लषमन । मम । स्व । गृह । दिन । लंगो । लक सोकं । दिन ॥

७७ पाठान्तर---धांम । धुजिय । धुजिय । गैन । गैन । गेंन । गज । सज । बन । पुजिय । पुजय । सुप । स्यांम । गिरण । समनुप । आकारिय । अकारिय ।

गोर मुष्ष वपु स्याम । गिरन समनष्य अकारिय ॥
काल ग्राम नामाग्र । तार तारन तप धारिय ॥
मधि कुंड मुंड मगंन बसै । सूर चंद संधन मषिय ॥
करि धूम नास नामन तपिय । अकल जोति कालन भषिय ॥
॥ छं० २८७ ॥ रू० ७७ ॥

कवित्त भरन काल चलि सथ्थ । धाम धामन अरु छट्टिय ॥
महस जप्प भपनीय । मनहु अचल चल्ल बट्टिय ॥
निप्प नप्प अनुचार । झाल रमना झक झाइय ॥
करन काल बदरन । धरे अग्या सिर नाइय ॥
उत्तरिय लंक अगमान सिर । नम्न भार भारन तज्जिय ॥
करि कूह डक्क गिर बदरन । भिरन राम लषमन भज्जिय ॥
॥ छं० २८८ ॥ रू० ७८ ॥

गिन रत्तौ कुम्भक्रन्न । पन्यौ भूपौ वैसन्नर ॥
धर बदर धक धाह । दन्त कटि पट्ठे वभर ॥
पप भप्प वल्लचरिय । नही लद्धे तिहि वारं ॥
सोणि सरित रत धार । पानि लै पिये अपारं ★ ॥
सा हन सिन बदर मुषट ★ । गिरन धार उप्पर पन्यौ ★ ॥
रघुवस नाम रावन कन्यौ ★ ॥ करन पट्टि द हन धन्यौ ★ ॥
॥ छं० २८९ ॥ रू० ७९ ॥

परन भ्रात धर † धरनि पदम अट्ठह दमि पालन ॥
जनु कि मद्द गाइरन । आनि प्रथ्थी जर तारन ॥
परिभष्पन रषिसन । कुइक चीमन मुष सामन ॥
कर मुपिट्ठ मम लिग ‡) कमध । भरत मुष डरिषय भासन ।

ग्राम । नगि । पारीय । मगनन । प्रसै । सधन । मषीउ । धूम । धम । नाम । तपिन । ज्योति । जोति । कलन । भषीय ॥

७८ पाठान्तर मथ । धामन । छटिय । जप । अचल चल । बटिय । निप । नप । रमना । झाईय । झाटैक । धरै । सिर । सार्इन । नाइय । उतरीय । अगमान । कूह । डक । गिरधर । बदन । राम । लषमिन । भिरिय ॥

७६ पाठान्तर— रतौ । कुभक्रन । भपौ वैसनर । बदर । धृ़ै । वधे । भप । पलवरीय । नहि । लधै । लधीत । सोणि । सरतर । पानि । लै पिए । पीय । ★ ये तुकें स० १७७० की पुस्तक मे नही है । सिन । उपर । करन ॥

८० पाठान्तर- † धर शब्द स० १७७० की पुस्तक मे है ही नही । अठ । सह । मद । माईरनि । आनि । प्रिथी । परिभवन । रषिसन । कोइक । कोइक । चीसनि । शासन । मुपिठ । ‡ "मसलिग" अथवा "मतलिग" अधिक पाठ मालूम

करि लंक कंक पंकन पलन । षलन राम हथ्थी दुतिय ॥
धर धरत नारि कंतन क्रसन । कूटि कूटि दारुन छतिय ॥
॥ छं० २९० ॥ रू० ८० ॥

त्रिभंगी गढ लंककनन्दा, अगिग जरंदा, धाह करंदा, मिलि जंदा ॥
कै जंघहिकंदा, सूपरकंदा, डेढकरंदा, मुष गंदा ॥
पल सब्बन पंदा, वध्ध चवंदा, आप अनन्दा, +कुर जंदा [illegible] ।
किलकी कूकंदा, माता मंदा, भारी भंदा, जारंदा ॥२९१॥
परि कुंभ धरंदा, +बान चलंदा, राम कहंदा, मारंदा ।
घर रावन रुंदा, करै तिसंदा, लष्षै जंदा, दीसंदा ॥
घन राषिम वृंदा, रूप अनन्दा, पिठ्ठ द्रगंदा, दाहंदा ।
घन बान चलंदा, भान छदंदा, राम रवंदा, पारंदा ॥२९२॥
भर रावन हंदा, रूप करंदा, तारन चंदा, जानदा ।
सुर वेद चवदा, हूर फुलंदा, बाजन वृंदा, ईसंदा ॥
जनु कीर चलंदा, हाटे हंदा, तरबूजंदा, नापंदा ।
नट सागर हंदा, रावन वृंदा, रूप करंदा, रथ्थंदा ॥२९३॥
नर कोर चवंद, रावन हंदा, स्यारमुनंदा, उसरंदा ।
कर लछिमन हंदा, बान चलंदा, रुड परंदा, धारंदा ॥
परि रथ्थर वृंदा, बानर हंदा, द्रोन ग्रहंदा, नापंदा ।
पति लंक भगंदा, हनु आहंदा, नील निपंदा, किरि जंदा ॥२९४॥
चक चूर करंदा, अभ्र परंदा, राषिस मंदा, पाइंदा ।
रथ इंद अनंदा, बान नपंदा, रथ्थ रहंदा, झारंदा ॥
नहु ईस रहंदा, पूरा हंदा, विरदन वंदा, धायंदा ।
रिषि देव हुनंदा, राषिस रुंदा, बीस भुजंदा, डाहंदा ॥२९५॥

होता है । कबध । मिरन । [illegible] । [illegible] । लरकं । कक [illegible] राम । हथी । दुतीय । कसनं । कूटि । कूट्टि । छतिय ॥

८१ पाठान्तर [illegible] । अगि । के । जघडकदा । सुपरकं । सुपरकंदा । डेढकरंदा । मार [illegible] । रथ । +[illegible] [illegible] बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है । [illegible] । [illegible] । बान । चलंदा । राम । कहा । [illegible] । करै । गद्दा । लषै । लषै । [illegible] । [illegible] । [illegible] । पिठ । द्रुगदा । द्रुगदा । हदा । डाहंदा । बांन । छवंदा । अवंदा । नाम [illegible] । तारन चंदा । वेद । हुर । बजनवृंदा । इसदा । कीर चलदा । हाटे । तरबुजंदा । गावनं । रथदा । कारै । वंदा । उसुरंदा । करि । लछमन । बान । रुड । पथर । बांनरहुंद । द्रौन । गृहंदा । चकचुर । पईदा । [illegible] नपैदा । रथ । झारंदा । इस । पुराहंदा । विरदन । रषि । दैव ।

परि रावन मंदा, भीषन सदा, कात करदा, रामंदा ।
रचि कोट मुरंदा, हाटक हृदा, फूल श्रवदा, माल्हंदा ॥
लै मीत चलदा, लषिमन मदा, सागर बदा, आनदा ॥
॥ छ० २९६ ॥ रू० ८१ ॥

भुजंगी किय षड पद्ध बली मुष्प चार । महाबाहु बाहु बल वेद धार ॥
हनूमान हथ्थ संदेस सुवथ्थ । धरै पिट्ठ तोन ज्यों बीर मथ्थ ॥२९७॥
धनुर्बान साम जर वृष्प कागी । धर पानि ग्राव बर पागि तागी ।
चमू लंक गो गढ्ढ बिहुचौ बिहान । धर धार धर्र्षी [illegible] ॥२९८॥
किय [illegible] धर धार [illegible] [illegible] बधि [illegible] लोप ।
रन रावन [illegible] [illegible] ॥२९९॥
सुर [illegible] ॥
॥ छ० ३०० ॥ रू० ८२ ॥

कवित्त जनक सुता हरि दुष्ट । हरी लंका [illegible] दावन ॥
जीव जगत जगि हरन । हरन रिपु ग्रहन सु गावन ॥
हरन रिद्ध नव निद्ध । सिद्धि हर सागर सिद्धिय ॥
हरन पुत्र इंद्रजित । हरन भीषन ग्रह लिद्धिय ॥
तिन हरिय सीत व्रत देह जरिय । भरिय पत्र पलचर भषन ॥
गढ जारि लंक दसकंध हनि । राम किनि चवदह चवन ॥
॥ छ० ३०१ ॥ रू० ८३ ॥

हसदा । [illegible] । [illegible] । [illegible] भुजिंदा । मदा । भीषन । मदा । रामद । रवि । रिव । कोट्ठि । मुरिंदा । हट्टु । फंल । माल्दा । [illegible] । [illegible] । [illegible] । इस तक के ये टुकड़ सं० १७७० वाली पुस्तक मे नही है ।

८२ पाठान्तर [illegible] भजगी । [illegible] । षड । मुष । बाहु वेद । हनुमान । हथ । मद्देसा । ससदे । सुवथ । धरे । पिठ । तान । रथ । धनरवान । वृन । पानि । वर । चमु । गो । गढ । बिहचौ । बिहान । धर्षी । बर गे । [illegible] ग्रहान । [illegible] । कौ । कोप । बधि । सिध कुसकुप । लोप । रण । आरन । रनि । थपि । थान । सुर । सुष । बद । कोह बर । जै । अनंद ॥

८३ पाठान्तर कवित । जीवन । छरन । रिपु । स । हरिमा । ऋद्धि । रिद्धि । निद्धि । हरसागर । सिधिय । इद्रजित । इद्रजिन । इंद्रजीति । हरल्ल । ग्रह । लद्धिय । हरीय । सीत । व्रत । भरीय । पलचर । दसकंध । रांम । चवदह । चवन ॥

कृष्णावतार की कथा

कवित्त—नमो देव देवाधि । नमो नाभाय कमल बर ।।
नमो माल पंकज प्रमां★) न । नमो वर कलल कमल कर ।।
नमो नैंन बर कमल । नमो चित्तह अधिकारिय ।।
नमो विकट भंजनन (मित†) । नमो संसार सुधारिय ।।
नम नमो (स्तु‡) चंद नंदन नवल । नंद ग्रेह ब्रह्मांड गुर ।।
दिष्षहि जु देव देवाधि तुहिं । मुगति समप्पन तिनह उर ।।
।। छं० ३०२ ।। रू० ८४ ।।

दूहा—प्रति सुंदरि सुंदरतमह सुंदरि सुमति सनेह ।।
सुंदरि त्रिभुवन पुरुष पहुँ, निज आवन तन ग्रेह ।।
।। छं० ३०३ ।। रू० ८५ ।।

पद्धरी जो कमलनाभि द्रिग कमल पानि।कोमल सु मधुर मधु मधुर बानि।।
दुति मेघ पीत अंमर सुनंद । धर धरनि धरत सिर मोर चंद ।।३०४।।
चौ वज्र पद्म धज अंकुसीय । गद संष चक्र भ्रगु लत्त हीय ।।
संग सरै दीह सिसु कर विवाल । आचिज्ज अछ्छबियचरै बाल।।३०५।।
तुहि दिष ध्यान धरि बधु अकाम । व्रत करहि उमा पुज्जन सुभाम।।
।। छं० ३०६ ।। रू० ८६ ।।

कवत्ति ससिर बाल तप करहि । कमल दझ्झय सु बदन अलि ।
हेमवंन बन दहिग । दझ्झि जल्ल सुष सुष्ष मिलि ।।
बर बसंत डुलि पत्र । चित्त डुल्लन अलि रष्पहि ।।
इक्क पाइ तप करहि । पवन चावद्दिसि भष्षहि ।।

---

८४ पाठान्तर नमो । विर । नमो । मल । पकज प्रमान । ★ अधिक पाठ मालूम होता है । नमो । नैन । नमो । चित्तह । अधिकारीय । नमो विकटि । भंजन निमित । † अधिक पाठ मालूम होता है । नमो । सुधारीय । नमो नमो चंद नंद नंदनहि । ‡ अधिक पाठ ज्ञात होता है । गेह । ब्रह मंड । ब्रह्मंड । दिषिहि । ज । गुरज । दैव । त्रुहि । तुहि । मुग्गति । समपन ।।

८५ पाठान्तर—दोहा । सुंदर । सुंदर सुमत । सनेह सुंदर । सुंदर । त्रभुअन । पुरिष । पहु । आवन । ग्रैह ।।

८६ पाठान्तर—जो । पानि । कोमल । मिष्ट बानि । दुती । मैघ । अंबरसु अंबिर । मोरच्चंद । चो वज्जयपदमधज अजमीय । चो वर्ज । ध्वज । भृगु लत पीय । संग । संष । सिसि । करि विलाल । आचिज्ज अर्छ बयचरै बाल । आचज । अब । त्रुहि । दिषि । ध्यांन । ध्रुर । अकांम । पुजन । स भांम ।।

८७ पाठान्तर—कवित । सिसिर । कहि । करीह । कमंल । दझय । दझ्झइ । बदन । हैमवंत । वन । दक्षि जल सुष मिलि । दझिझ । सुष सुष । वर । वसंत ।

बरषा रु सरद लग्गिय करद । मरद मैंन जग्गै सु तन ॥
सुग्गंधि दिव्य मिप्टह पवन । करहि सेव उमया सु मन ॥
॥ छं० ३०७ ॥ रू० ८७ ॥

सीत सु जल उष्णह सु (अग्ग★) । पवन वृष्पह घन झुल्लहि ॥
उमया उर उच्चार । सु डर गुर जन बर भुल्लहि ॥
दधि तंदुल घ्रत षीर । बहुत मिष्टान पान कर ॥
हरि मग्गहि हर नछ्छ । करहि नलपन्न पत्त धर ॥
स्नानं च जम्म भगिनी करहि । सुरति सेव कात्यायनिय ॥
इह कहि रु क्रन कुंडल करहि । गरथि माल पुह्पै घनिय ॥
॥ छं० ३०८ ॥ रू० ८८ ॥

हनुफाल मुहि अप्पि भगवति कन्ह । देवाधि देव सुनंन्ह ।
अति सीय पुहप सुरग । विनि पीन अवर चंग ॥ ३०९ ॥
घन मद्धि तडिता तेज । चमकंत दुति ममकेज ॥
बिय ब्रन्न उप्पम देपि । कचंग कमोटिय रेषि ॥३१०॥
हरि धरत तुरसिय माल । घन पति सुवक विमाल ॥
मंजरिय मुत्तिन माल । सुर चाप सोभ रसाल ॥३११॥
मधु मधुर मिप्ट सुबानि । कल अम्रत सुम्रति जानि ॥
हिंग स्याम कमला लछ्छि । उप्पम गुन कवि अछ्छि ॥३१२॥
तरु स्याम तेज तमाल । चढि हेम बेलि विमाल ॥
सिर मोर मुकुट जु स्याम । नचि मोर गिरवर ताम ॥३१३॥
झलकंत कुंडल कान । कवि कहै उप्पम वान ॥
बर अरक सोम प्रमान । सित पुन्निमा निस थान ॥३१४॥

पन । चिन । डुरुन । रषहि । रषहि । इक । पाय । नावमि । भवहि । बरषा । लगिय । मयन । मैन । जगैं । सुगधि । सुगउ । सुगध । मिष्ठान । पवन । मिष्ठान पन । सैव ॥

८८ पाठान्तर सीतल । शीर । अगि । अग्नि । ★ अधिक पाठ । वृषह । वन । झुलहि । हर । चार । वर भुल्हि । तदुल । घ्रत । मिष्ठांन । पान । हर । मगै । मग्गें । हुरनछ । हरनछि । तलपत । पत । पन । जमु ' जमु । सैव । कात्यायनीय । करहि । गल्य गरुअ । गरुयपहुपें । धनी ।

८९ पाठान्तर छंद हनफाल । मुह । कहु । दैवाधिदैव । सुनन्ह । अति सीम । पहुंप । वनि । पीत । धन । मधि । तैज । कैज ' उपम । दैषि कमोटीय । रैषि । मुरसी । तुरसी । घन पंत । सुक । सोव बांनि । अमृत । सुमृत । जानि । स्यांम । लछि ' उपंम । अछि । अछ । श्याम । स्यांम । तैज । माला हैम बैलि ।

बन सघन सज्जल ताम । उठि इन्द्र चाप सु काम ॥
बर बजति मुरलिय मुष्ष । संसार ह्रति सु दुष्ष ॥३१५॥
इक पाइ तप कर न्याइ । हरि धरै अधर सु धाइ ॥
हरि लियै अंकुस वज्र । कविराज उप्पम सज्ज ॥३१६॥
बर भक्त मत्त करीव । तिन हटक पार नरीव ॥
यौं पाइ धरि इहि भंति । ससि बीय बनि परि कंति ॥३१७॥
हरि चरन कमल सु कोर । जनु मिलन कुमुदिन भोर ॥
नष नमल न्रमल सु कंति । जनु उग्गि तार कपंति ॥३१८॥
नटवत्त भेष त्रिभंग । दुति कोट करत अनंग ॥
मुष कमल दधिक्कन स्याम । नभ फुल्लि माल्लति काम ।३१९॥
सो इकंत अप्पहि मात । अधमान त्रिमल गात ॥
॥ छं० ३२० ॥ रू० ८९ ॥

दूहा - च्यार घटी निसि सुन्दरी । प्रान पपत्तें थान ॥
जल अंदोलित सो भई । उदै होन बर भान ॥छं० ३२१ ॥रू०९०॥
कंस मेर चढि सोम बहु । सकल ह्रत रवि पुब्ब ॥
हंस माल भंजन सकल । सज्यौ चंद मनु सब्ब ॥
॥ छं० ३२२ ॥ रू० ९१ ॥

चौवाई - गावति बिरति अचारे बालं । हेम मंत कष्ट तन सालं ॥
उरमा निसि रविनी रम जामं । हरि निरदोष निहारत काम ।
॥ छं० ३२३ ॥ रू० ९२ ॥

मोर । मुकट । मुगट । युं । स्याम । सु स्याम । नवि । नान । कांन । कहि कहै । बांन । वांन । सोम प्रमान । पुरनिमा । घाम । घान । मजल । नाम । उद्र । नाम । बर । बजनि । मुरलि । मुष । सु दुषु । स दुषु । पाय । करै । न्याय । लियै । अंकुस । वज्ज । कविराय । औपम । सज बर । भुत्त । मत । करीग । हट्टक पाट । मरीय । हटक पाट । यों । पाय । ससी । कोर । जुनु । मिलित । कुंमदन । भोर । भोर । नष । निमल । नृमल । उगि । कंपंति नट्टवन । भेष । दुनि । कोर । कटित । अनंग । स्यांम । फुलि । फूल्लि । माल्लनि । कांम । सो । अपहि । अधमान । निमल ॥

९० पाठान्तर —दुहा । च्यारि । संदरी । प्रान । पयतै । पयते । थान । अदोलित । सो । भइ । होन । बर । भान ॥

९१ पाठान्तर—मैर । सोम । पुब । भजन । चंद । मनौ । मनो । सब सबम ॥

९२ पाठान्तर—छंद अरिल । अरिल्ल । बिरति । अवरि । बालं । हैमवंन । हैमवंत । उरमां । रिविनी । जांम । दैषि । नहारनि । निहारति । काम ॥

दूहा इंद उदंत सरद् उद । मुद आनन्द अनंद ॥
नंदन नंद सु वृंद ब्रज । विह्मिय चंद सु चंद ॥
॥ छं० ३२४ ॥ रू० ९३ ॥

नव रवनी सम्वर सु नित । स्नुति श्रुति रचि रुचि भेद ॥
निरष निमेष बिसेप विधि । अमम मरन मन ★ षेद ॥
॥ छं० ३२५ ॥ रू० ९४ ॥

वृद्ध नाराच

जिने जिनेक धाम धाम कामनी मनं ।
तिने तिने मृग मुरम्म मुत्र भामिनिगनं ॥३२६॥
रते रने धने धने बने बनं बनं चरं ।
त्रिभंग वंस ग्रव्वय, श्रवन्न लग्गए ह्रं ॥३२७॥
मुकट्टयं मयूर चंद्रमीसयं सु लग्गय ।
गुगोपिका सु गोप बालताल्य सु मग्गय ॥३२८॥
पतीव्रतं सु ध्रम्म धाम भामिनी सु भग्गय ।
अपत्तिईमनी मयं सु पात कंसु लग्गय ॥३२९॥
सुमोहम्रग्ग काममग्ग कामिनी बुलन्नियं ।
अमोह मोह मारगे अलोकनक्कजन्नियं ॥३३०॥
अपन्नि मुत्तछडि स्वामिवाम बाममारगे ।
कहंत चद भेदयं अकज्जबप्पु मारगे ॥३३१॥

---

९३ पाठान्तर—ईद । इद । सरद । मुद । अनद । वृद । व्रज । बृज । वंलिय ॥

९४ पाठान्तर— स्तुति सुनि रचि भेद । स्तुनि स्तुनि रचि रचि भेद । निरषि । निमैष । विसैप । विशेष । वुधि । ★ बूदीवाली मे मन शब्द नही है । षैद ।

९५ पाठान्तर—छद वृद्धि नाराच । जिन । जितैक । धाम धाम । कांम । कामि । कांमिनी । तितै तितै । सुरामुरैमु । सुत्र । रतै-रतै । घनै घनै । वनै वनै । वरं । रते रत घने बने बन चर । प्रवय । श्रवन्न । लगए । सुकट्टयं । मुकट्टयं । मयुर । सीशयं । लग्गय । गोपिका । गोपव ल । सुरप्पय । सुसरवय । पतिव्रत । घृत । धाम । भगयं । अपति । इमनी । पातग । लगय । मोह । मृग । म्रिग । काम मृग । कांमृग । कामिनी । हुलतिय । अमोह । मोह । मारगे । अलोका । तरक । जतियं । अपति सुत । स्वाम । स्वाम । वाम । वाम । मागरे । मागरे भेदयं । अकज । बपु । सागरे । तमैव । तमैव । ★ बूंदीवाली मे सुकाम शब्द नही है । तमैव । दैव ।

तमेवधम्म धामयं सुधम्म धामयं सुनं।
तमेवकाम कामयं सुकाम★कामनीगनं ।।३३२।।
तमेव देव देह अंस देह हंस वेदनं।
तमेव स्रब्ब श्रव्वयं सु सर्वदा सु भेदनं ।।३३३।।
तमेव लोक लोक लज्ज भज्जनं सदा हरी।
तमेव सुष दुष्षयं सुमाधवं अहंकरी ।।३३४।।
तमेव दिष्ट इष्ट पुष्ट दुष्टनं प्रतीयते।
तमेव सत्ति सत्ति बाद गोपिका महं गते ।।
।। छं० ३३५ ।। रू० ९५ ।।

गाथा—इथ्थ सु नाम ग्रहनं। नथ्थं यत्तेमि कहन कारन यं ।।
यत्ते पतंग दीवे। हं माधव माधव देवं ।। छं०३३६ ।। रू० ९६।।

कवित्त— मधु माधव वैसाष। रष्षि माधव माधव रित ।।
बन घन तन बनि रम्य। सोभि मारुत मारुत अति ।।
बंसी सुर संभर्यो। हर्यो गोपी मु चित्त सुर ।।
कछुव कर्यो कछु कर्यो। गये सातुक सुभाव गुर ।।
मु मुगति सोह एकंग ग्रहि। अध इषि चषि अजत चली ।।
एक ही वार सभरि सु सुर। कंन चित्त चिता पुली ।।
।। छं० ३३७ ।। रू० ९७ ।।

अस। देह। वेदन। नमेव। श्रव्व। स्रव। श्रवय। श्राद। स्रवदा। भेदन। तमेव। लोक। लोक। लज। भजन। भजन। नमेव। सप। दुपय। नमेव। दुष्टय। प्रतीपते। नमेव। त्पत्तिमार्ति। मत्ति सत्ति। गोपिका। गते।

इस छद का कहीं तो वृद्धि नाराच और कही लघुनाराच और नाम लिखा मिलता है, जैसे कि इसी समय के रूपक ९ और १७ और २४ आदि मे है परन्तु अभी तक कोई वृद्ध और लघु का भेद सूचक छद नही आया है, जहा आवेगा वहां हम उसके विषय मे कहेंगे। अभी यह समझ लेना चाहिए कि यहां तक उनमे प्रमाणिका नामक छद का लक्षण घटता है अर्थात् वह आठ अक्षर और बारह मात्रा = लगुलगुलगुलगु —का होना है कि जो परस्पर नामान्तर है ।।

९६ पाठान्तर —गाहा। इछ। इछं। नाम। गहनं। नथं। पत्तेवि। पत्ते। पंतग। दीवं। प्रतंग दीव। देव। बदे ।।

९७ पाठान्तर—कवित। मधु माध वैशाष। मधु माधव वैसष। रिषि। रषि। रिति। तवनि। सोभ। गौपी। मु चित। स चित। कछु कह्यो कछु कछु कह्यो सातुक सुभाव गुरु। सो। सोहू। ग्रहि। इषि। चषि। अजत। वारं। संभरी। चित चित ।।

गाथा —बाले विभ्रम चरितं । मुक्तं तथ्य चितयं होई ॥
रति कन्हं सम रमनं । छित छित्तं मुक्ति सा बाले ॥
॥ छं० ३३८ ॥ रू० ९८ ॥

दूहा देव देव वसुदेव सुन । नित नित गुन गन पूर ॥
छिन इक नाम लियंत बर । घन अघ उड्डि कपूर ॥
॥ छं० ३३९ ॥ रू० ९९ ॥

कवित्त ध्यान सु प्रति प्रति कन्ह । देव देवाधिदेव वर ॥
मधुर नरम अति बैन । मकर कुंडल चंचल गुर ॥
नाचत चित्त त्रिभंग । बंस बंसीधर राजै ॥
अति उतंग (माया ★) बीभंग । नाम लेयंत मुराजै ॥
देवत्त देव देवाधि वर । नीत न मानत भजि सु वर ॥
कहियंत गोप गोपी सु वर । विधि विधान निरमान नर ॥
॥ छं० ३४० ॥ रू० १०० ॥

दूहा अ[illegible] लोक बज्जन विगम । गन गध्रव्व विमांन ॥
सुर पति मति भूल्यौ रहमि । राम रचित व्रज कांन ॥
॥ छं० ३४१ ॥ रू० १०१ ॥

तोटक —तथे तथे तथे सुरयं । तत थुग मृदग धुनि द्धरयं ॥
उघटें त्रिघटी हरि विक्क्रमयं । भ्रमरी रस रीति अनुक्क्रमयं ॥३४२॥
व्रज बालिन आलिन आलिनयं । इक इक्कनि कन्ह विचं व्रजयं ॥
निज नित्तन बित्तत कि नमनं । द्रिग पाल मिले कोनिगनं ॥३४३॥
पहु यंजुलि अंजु सुरंग बनं । वर वज्जति छद विन धुनिनं ॥
निसि निर्मल चंद मयूषनयं । घन घटिक नूपुर झंभनयं ॥३४४॥

---

९८ पाठान्तर —गाहा । बालै । भ्रक । तथ । चितयं । चित्त । होइ । कन्ह । स्मरमन । बालै ॥

९९ पाठान्तर दोहा । देवदेव । वसुदेव । सुरि । छिनक । नाम । लीयन । बर । अघाकुंडि । उडीय । कपुर ॥

१०० पाठान्तर —कविता । ध्यान । कन्हं । देवदेवाधिदेव । बर । मरम । बैन । बेंन । गुरु । बंसीधरा (माया ★) अधिक पाठ । विभंग । देवत्त । देव । देवाधि । बर । मांनत । भंजि । बर । कहीयंत । गोर । गोपी । विधांन निरमांन ॥

१०१ पाठान्तर —दोहा । लोक । बजत । वज्जत । विगम । गंध्रव । गध्रर्व । विमांन । सुररि । मत्ति । भुल्यो । भुल्यै । बृज ॥

१०२ पाठान्तर —तथनैनतथै सुरयं । ततथंग । म्रदंग । धुन । धरयं । उघटै । उघटं । विक्रमयं । भृमरी । अनुक्रमयं । बज । बालिन । इकति । विच । वृजयं । नरतति । नतित् । बरत्तिक । बर्तिक । कि । क्यं । नमयं । दृगपाल । मिलै । मिल ।

धरनीधर म्रियत दिद्धरयं । नव नाग कुली कुल सुम्मरियं ।।
षट मास निसानिसि नृत्य कियं । तब गोविंद अंतर ध्यान हुयं ।।३४५।।
सब गोप वधू मिलि ढुंढतियं ।। छं० ३४६ ।। रू० १०२ ।।

कवित्त– गोपति अंतर (सु ★) ध्यान । भये भ्रम भ्रंम उपंनिय ।।
विरह वान भय दीन । प्रान छुट्टिय वरतनिय ।।
ज्यों तर वर बिन पत्त । आस तर वर बन करई ।।
ज्यों सुद्धि भई मुष बाल । बहुरि चिंता नन धरई ।।
सांवरी स्याम मूरति सुबर । अतिस पहुप संमान बर ।
सिर मोरपिच्छ सोभत वसन । तरुन बाल पुच्छै सुतर ।।
।। छं० ३४७ ।। रू० १०३ ।।

कवित्त किरण बिरह गोपिका । भई व्याकुल सु बिकल मन ।।
बर गहबर बन भ्रमै । कै इक गढ्ढी ग्रिथल तन ।।
बिषम वाय जिम लता । मोरि मारुत झंझोरै ।।
कै चित्र लिपी पुत्तरी । जोरि जोरंत निहोरे ।।
कै पाषान गढि केक मग । भ्रमत माल मुछ्छत फिरिय ।।
कविचंद चवत हरि दरस बिन । दोय कपोतह बिछ्छुरिय ।।
।। छं० ३४८ ।। रू० १०४ ।।

मिलै । कोतिगयं । कौतिगयं । कौतिगन । पुह । पजुलि । रजु । वयं । वर । बजन । बज्जत । बिन । बिन । धूंनय । धुनय । निशि । निमलि । मयुषनयं । नृपुर । नृतति । नृत्यत । निद्धरयं । कुली । कुल । मुभरियं । सुमरियं । निसानिस । निसानिस । कीयं । कायं । गोव्यद । गोवींद । ध्यान । हुअ । गोप । वधु । तयं । तीयं ।

१०३ पाठान्तर—कवित ।। गोपी । गोपी । अंतर । सु ★ अधिक पाठ । ध्यांन । भयों । भयै । भ्रंम भ्रम । भ्रम भ्रम । उपतिय बांम । भयं । दान । प्रांन । छुटीय । छुटिय । छुट्टीय । बरतनिय । जो । बिन । पत्र । बिन । बिन । जो । सुधि । भइ । चिता । धरइ । स्यावरी । स्यांम । मुरति । सुवर । पिछ सोभन । तहुन । पछै । पुछै । पुछै ।।

१०४ पाठान्तर– बिरह । गोपिका । भई व्याकुलबिकलं मन । बन गहबर बन भ्रमै । के । गढिय । गढी । ग्रथलं । मोरि । झझौरै । के चित्र लिपी । पुतरी । जोरि । जोरितं । निहोरे । कं । के । पषांन । कंक । भ्रमत । बाल । मुछत । फिरीय । बिनु । दोय । कपोतकि । बिछुरिय । बिछुरीय ।।

स्याम रंग पिष्पहिन । घटा घनघोर गरज्जत ॥
कोइल मधुकर बयन । श्रवन संभरै बरज्जत ॥
कालिंदी न्हावहि न । नयन अजै न अगंमद ॥
कुचा अग्र परसै न । नील दल कवल तारि मद ॥
पर पीर अहीर न जानि मन । व्रज बनिता मिलि कहत सब ॥
जिहि मग्ग कन्ह बन संचरिय । तिहि मग जल पीवहि न अब ॥
॥ छ० ३४९ ॥ रू० १०५ ॥

दूहा -सुनत दुष्ष अति बाल ससि । भयौ पूरन बिन मंत ॥
तिम मुष घटि दुष्षह दरस । भोर भौर उड़ि जंत ॥
॥ छं० ३५० ॥ रू० १०६ ॥

भयो सु उडगन गात वर । पूरन ससिय अकास ॥
सुवर बाल वड्ढयौनि दुष । सिंधु उलट्ट्यो भास ॥
॥ छ० ३५१ ॥ रू० १०७ ॥

गाथा राधापतीनमार । राधा भई भुजगय बैन ॥
राधावल्लभ बंसी । बरनं षत सु भोअनं जान ॥

कवित्त राम बाल हरि बाल । बाल आई न बाल हरि ॥
सघन कुज घन कुसुम । सज्जि सुष मैन चैन करि ॥
कंध चढत व्रषभान । धाय मुक्की निन बेरह ॥
कोइ लभै नह सुद्धि । बिरह सभर्यौ घने रह ॥
पावै न बाल पुछ्छन सुबछ । दै देवाधि देवाधि कह ॥
आरति चरित्र बहु कन्ह कौ । को जपन जानन कलह ॥
॥ छं० ३५३ ॥ रू० १०९ ॥

---

१०५ पाठान्तर—स्याम । पिष्पहिम । घोर । कोइलम । बरज्जन । कालंदी । परसे । भील । तोरि । जानि । वनिता । मग । कन्ह । वन । व्रज ।

★ यह श्लोक स० १६४७ और १७३० की पुस्तकों मे नहीं है ॥

१०६ पाठान्तर —दोहा । सुनत । दुष । पूरन । तिम सुषट्टि दुषह दरस । सरस । ज्यौ भौर भौर उड़ि जन ॥

१०७ पाठान्तर -भयो । उर । ससिय । शसिय । सुवर । बढ्योनि । उलटयो ॥

१०८ पाठान्तर -राधापतिन । राधापतित । राधासपीन । भार । बैनी । बैनो । बैन । राधावल्लभ । वसी । बरन । षंत । भोअन । जानं ॥

१०९ पाठान्तर —कवित्त । आईय । आइय । सजि । मैंन । चैन । बैंन । कं । वृषभांन । धीय । मुकी । मुक्ती । बेरह । कोइ । लबै । सुधि । बिरह । घनेरह । पावे । पुछ्छत । पुछनि । बिछ । दइ । दैवाधि । आरत । कन्हु । कै । कौ ॥

दूहा— बग्ग मग्ग गोपिक गमन । कंध अरोहन मग्ग ॥
द्रुम द्रुम बल्लिन अलिन अलि । हरि पुच्छन अछि लग्ग ॥
॥ छं० ३५४ ॥ रू० ११० ॥

मोतीदाम सुनं कैरी कदंम कयथ्थ करील । कमोदनि कुदह केतकि बील ॥
कनैर कसोंदिय कैबर कोह । करों दिन कान्ह कहां कहु मोह ॥३५५॥
सुनी मुनि सोक समीर सुगंध । सकुंजन कुज निरष्षत रंध ॥
कहूं बल बंधि बिजोरनि जांनि । कहू वट हस दिषावत आनि॥३५६॥
सुनौ तुम चंप कदंम चकोर । कहौ कहूं स्याम सुने षग मोर ॥
लही ललिता बन लोचन चंग । कहौ कहुँ कान्ह जुहे तुम सग॥३५७॥
हुँमान कियौ उन मानह भंग । सह्यौ नहि प्रब्ब तज्यौ हम संग ॥
दुरे अब ही तजि कुंजनमांह । गए कर ही कर छाडहि बाह ॥३५८॥
चली मिल पंछिनि पुच्छत भीर । कुरं कुर रंगिन कोकिल कीर ॥
परी धर मुछिछि गहै कर एक । तिनं लगि सास उड्यौ उडि केक ॥३५९॥
चले असु धार तरंगिनि बाढि । गहे दह सासनि प्रानन काढि ॥
मगें डग चालि गिरैं धर धाइ । गहे कर साहसि लेइ उठाइ ॥३६०॥
गई जमुना जमुजानिन तीर करैं सव कामिन स्याम सरीर ॥
जु पूतनि रूप धरै तन आप । ग्रहै द्रह कन्हर कालिय साप ॥३६१॥
धरैं कर पब्बय गोप सहाय । परैं जल धार तडित्त निहाय ॥
धरैं त्रिय ध्यान न लग्गइ नैन । परैं पतिपत्त सुनै सुन बैन ॥३६२॥
कहंत क्रिपा निधि भक्त सहाय । भए तव आनि प्रगट्ट दिषाय ॥
कियौ फिरि रास जु सुंदर स्याम।बिचं बिच कन्ह विचं बिच वाम॥३६३॥
भए श्रम अंग कलिंद्रिय तीर । छिरवकत स्याम गहे भुज भीर ॥

---

११० पाठान्तर —दोहा । व्रग मग्गोपिय । मनह । अगेहन । मग । मगि । द्रुं । बैलिन । बेलिन । मिल्लि । पुछन । पूछन । लग ॥

१११ पाठान्तर— छंद मोतीदाम । सुनि । कोरि । कद्रंम । कयथ । कमोदनि । कैतकि । कसैदिय । कसोटीय । कैंबर । कोह । कमोदिन । कान्ह । कदा । कहा । कहो । मोह । सुनि सूनि । मुनि सुनि । मोक । नरपत्त । निरपत्त । कहुं । बंध्र । बिजोरनि । जानि कहुं । दिपावहु । आनि । सुनो । कदम । चकोर । कहो । कहौ । स्याम । सनै । मोर । वन । लोचन । कह । कहु । कान्ह । है । मै । मै । बांन । कीयो । प्रब । दुर्द ' तिजि । माहि । छडि । छाडि । के । के । बाहि । बाह । चलि । मिलि । पुछत । कुरंग । कुरंनि । कोकिल । मुछि । गहे । गहैं । कैक । चली । अंसुधार । चढि । गहै । दहसनि । प्रांनन । काटि । कढि । डगी डग । मगै मग । गिरैं । गहैं । गहैं । साहस लेइ । लेई । गइ । यमुना । यमुनान । यमुनानि । कैं ।

करी जल केलि चरित्त सुजानि। लियौ दधि दूध त्रियानि सुं दान॥ ३६४॥
युं राम विलास अकास प्रमून। अनंदिय अंमर अंबुज सून॥
॥ छं० ३६५ ॥ रू० १११ ॥

दूहा कहिरु बाल पत्तिय जमुन। रमन केलि जल बाल॥
मानहु मदन महीप गुन। कट्टन फदन काल॥ छं० ३६६ ॥ रू० ११२॥

पद्धरी क्रीडंन जमुन सुदरि बिसाल। प्रापन्न षट्ट सत बरष बाल॥
पौगंड छडि किस्मोर पीय। जोति सु सिसर अति तोर जीय॥ ३६७॥
अप्पौ सु अरघ रवि पानि जोरि। मनु प्रफुल्लि कुमुद ममि चित्त चोरि॥
तजि बाल वस्त्र क्रीडन वारि। प्रति धरे अंबरह मिलन धारि॥ ३६८॥
आधिक्क बचन व्रत रपन वाम। हरि बगन कदम चढ़ि कोटि काम॥
तजि बाल वस्त्र भावरि सु देस। निकरीय लपट वडवान लेस॥ ३६९॥
नव कमल धनुक जनु कनक बल्लि। तिरि चलिय जमुन जनु कदमकेलि॥
लटकै सु बाल बेनिय सुरग। सोभे सु दुत्ति विच जल तरंग॥ ३७०॥
जानै कि सदन नृप रहसि जोर। जवनिका ओट नच्चै चकोर॥
मानो कि दुत्ति द्रप्पनह व्योम। निच्चोल स्याम मधि हसिय सोम॥ ३७१॥
मुष केस पास बिटिय बिमाल। बध्यौ कि सोम सोभा सिवाल॥
गहि पानि वारि रवि अरघ देहि। उपमा चंद बरनैति नेहि॥ ३७२॥

के। करे। कामनि। स्याम। पूरना। ज दुग्ना। धरै। धरे। पबय। गोप। तड़ित। धरें। अन। ध्यान। लगहि। लगोइ। लागैड। नैन। परे। पितपता। सुने। सुत। बेन। कृपानिधी। भत्ति। दई। आन। प्रगट दिपाइ। स्याम। बिचि। वाम। भई। कलद्रीय सिरवन। कैलि। चरित। जानि। लियो। पें। दूद। पें दान। यो। यौं। अनदिय। अमर।

यह मोतीदाम नामक छंद च र लगुरु का होता है उसमे बारह वर्ण और सोलह मात्रा होती हैं।

११२ पाठान्तर दोह। बालि बाल। पतिय। यमुन। कैल। मानहुं। ज्येनहु। दमन। कटन। कहना॥

११३ पाठान्तर छंद। पद्धरी। क्राडत यमुन। सुदरि। प्रापत। सत षट। सत षट्ट। वरष। वाल। किसोर। किसोर। जोती। जु। ससिर। तोरि। अरिन धरि। पानि। जौरि। मन। सिसि। चित। चोरि। धरे। धरै। अबर। मिलैत। मिलित। धार। अधिक। टूति। वृति। वाम। वसन। चहि। कोट्टि। कांम। वाल। भावरि। देंस। निकरिय। पट्ट। लैस। कौमल। कनक। वेलि। वलिय। कंदम। केलि। लटकै। लटके। बाल। बैनिय। सोहै। सोभै दुति। विच। बिचि। जानै। रहस। औरु। जवनिका। उट। उद। नचै चकोर मानो। मानो। दुति।

सैसवमु पानि जुब्बन सु अर्घ । मनु देहि मनंमथ मिलन स्वर्ग ॥
जल कनक बुंद मुष पर विसाल । पुज्यौ कि कंद मनों मुत्तिमाल ॥३७३॥
कुंकुम सु नीर छुटि लग्यौ चारु । नग रतन धरे मनु हेम थारु ॥
उर बीच रोमराजीव रेष । गुरु राह मेर मधि चल्यौ भेष ॥
॥ छं० ३७४ ॥ रू०११३ ॥

दूहा जहां पनवर कृष्ण गुरु । चर्म नमाल हरि वस्त्र ॥
मानहु सुंदरि अंग वर । करत सुमित्त पवित्र ॥छं०३७५ ॥ रू०११४ ॥

कवित्त पीत वस्त्र सु निकंत । जलालंबन तन दुति दुरि ॥
दीपक करि पुंडरिक । द्रिग्ग लगि गुंज सुत्ति हरि ॥
क्रिसन त्रिभगी तन्न । धर्‍यौ किस्सोरनि रूपं ॥
दिष्ट वाम भौ कोटि । मोह माया तन ओपं ॥
आनंद कंद जुग चंद वद । वृंदाबन वासी बिहर ॥
दै वसन रमन सुट्टनन करि । देहि गारि निय नंद पर ॥
॥ छं० ३७६ ॥ रू० ११५ ॥

कुंडलिया धुनि वंमी सुनि मुनि श्रवन । चक चक्रित चित पाहि ॥
मन माया की पुत्तरी । रही स्वामि तन चाहि ॥
रही स्वामि तन चाहि । मदन दावानल बढ्ढी ॥
मीन नन तन फिरै । अन्नल व्याकुल भइ गढ्ढी ॥
चित जल रजि पग परै । जलमार्यो मु महप मुनि ॥
निगम प्रमोद मृणाल (हरि★) । मो भइ बंसी बैन धनि ॥
॥ छं० ३७७ ॥ रू० ११६ ॥

द्रपनहु । स्याम । निचोल । निचोल । स्याम । हलिय । मोम । कैम । विटीय । विमाल । विडरो । वडरो । मोन । गोभा । विमाल । पानि । अरघ । दैंहि । दौहि । ओपमा । उरमा । बरनौंन । वरनैनि । नैहि नेह । सेमबगु । पानि । जुवन । अरघ । मन्यें । मनो । दैहि । मिलन । स्वरग । जग कनक । वृद । पुज्यो । मनो । मनो । मुक्तिमल । कुंकम । कुकम । छुट्यो यु चारु । रत । घरै । मनो । हैम । उर वीच । वठीम । गोमराजीव । रैव । मैर । भैष ॥

११४ पाठान्तर –दोहा । तहां । पनैवर । चटि । मांनहुं । सुंदर । वरत । सुमित । पविन ॥

११५ पाठान्तर –कविन । कविन: । जलालंवन । करी । पुडरीक । द्रिगा-सुत्ति । हरि: । सुत्ति हरि । क्रिमल । तनं । किसोकिरनि । किसोरनि । दिष्टि । वाम । कोटिवौ । मोह । ओपं उरं । वद । विहर । सुट्टनिम । दैहि । दैंहि ॥

११६ पाठान्तर –कुडलिया । वंमी चकं । पाइ । पाय । मनि कुमरी । कुमरी । स्वामि । रही । निर्नतन । फिरै । अवल । भई । हुई । गढ । लग ।

दूहा--बरषि कदम्म सु बस्त्र चढि । लज्जित बहु वर बाल ॥
हथ्थ जोरि सम सो भई । प्रभु बुल्ले बछपाल ॥
॥ छं० ३७८ ॥ रू० ११७ ॥

दूहा चढि कदम्म बुल्ले सु प्रभु । मधु रिन मिष्टत बानि ॥
बचि बसन कर कन्ह वर । लेहु न सुदरि आनि ॥
॥ छं० ३७९ ॥ रू० ११८ ॥

ब्रजपति ब्रजलालनि कही । रमं रमन इक काल ॥
काम अरथ करि सुदरी । धेनन मुक्के बाल ॥
॥ छं० ३८० ॥ रू० ११९ ॥

दूहा थुति पानी जुग जोरि करि । फिर लग्गी चिहुँ पनि ॥
मानो गहे बघनहु । सोमहि पारस कनि ॥
॥ छं० ३८१ ॥ रू० १२० ॥

दूहा इह कलिंदी कदम चढि । लैन चीर सब नारि ॥
प्रभु बैठ पातन पनन । मानहु ग्रह पति मारि ॥
॥ छं० ३८२ ॥ रू० १२१ ॥

दूहा तट कीन्हे पीले बसन । रतन छनन छँटि छित्त ॥
इल अपछर सग्वर रवन । भई भ्रम्म मन मित्त ॥
॥ छं० ३८३ ॥ रू० १२२ ॥

कवित्त अरध्र बिब जल अरध । नहिन वस्त्र छिनि कारिय ॥
मनो पभ अहि क्रील । किद्ध छिनन व्रन धारिय ॥

लज्जति । परें । अन सु ईन बार सुनि । प्रमोद निान । सृाल । ★ अधिक पाठ । सो । बसी । बैनि । बैन ॥

११७ पाठान्तर –दोहा । बरषि । कमोद । भवन । लज्जित । बर । इर । जोरि । सो । भइ । बुल्यो । भूजै । भूजे । छपाल । बछपाल ॥

११८ पाठान्तर –बुलै । स । मध । बानि । बानि । बसन । कन्हु । बर । लैहु । आनि ॥

११९ पाठान्तर बृजलालनि रमै । काम । करी मुक्कै । मुकै । बाल ॥

१२० पाठान्तर –थुति । पानि । जुग । जोरे । कर । फिरि । लगी । चिहु । मनो । मानो । राहु । जु । सोम कि । सोम कि । पारस पनि ॥

१२१ पाठान्तर –कलिंदि । कालिंद्री । कदम । लैन । बैठो । पातन । पवन । मांनहु ॥

१२२ पाठान्तर –कीनै । पीनै । छटि । छित । सुपन । भईय । भ्रम । मित ॥

कितक जोरि कर जुग्ग । कितक नग्गी तन तारुन ॥
कितक कूह मुहु कीन । कितक लन म थ सु वारुन ॥
तरु पत्त गत्त निय वमन करि । सुनि ब्रह्मा सकर हस्यौ ॥
तिन टेर वेर बसी वजिय । राम क्रील माधव रस्यौ ॥
॥ छ० ३८४ ॥ रू० १२३ ॥

कवित्त तरु उप्पर हरि चढ्यौ । सबै सषियन मन सध्यौ ॥
कंम त्राम नग पर्‍यौ । इन्द्र आसन मन बंध्यौ ॥
ब्रह्मा मन उल्हस्यौ । रुद्र रुद्रामन रष्यौ ॥
ममि काल्ह पल भन्यौ । दैन दारुन वल दिग्यौ ।
सुर सज्जि बज्जि गोपह सरस । अति आकर्ष नवेस सुर ॥
रत्ति रूप भद् तरु अद अली । मनि दामिनि गोपिय सु हर ॥
॥ छ० ३८५ ॥ रू० १२४ ॥

दूहा – चढ्यौ राह कैलास पर । फिरि राका चिहुँ चक्क ॥
मुरत सध्थ अहि परत तव । चढि कदम रस रक्क ॥
॥ छं० ३८६ ॥ रू० १२५ ॥

दूहा - फिरि गोपीं चिहुँ मग्ग हरि । करन रास रस रंग ॥
इक इक कन्ह अनंग दल । विच बिच सुंदरि अंग ॥
॥ छं० ३८७ ॥ रू० १२६ ॥

कवित्त – अप्पि वस्त्र कहि रमन । रास मंडल अधिकारिय ॥
एक एक बिच गोप । कृष्ण एकह बिच्चारिय ॥
थुत्ति पत्ति वर वंध । मंत्र चावद्दिमि जोरहि ॥
मनो इक्क घन मद्ध । व्रिज्ज कुंडलि मकोरहि ॥

---

१२३ पाठान्तर - कवित । छित । कारीय । मनो । छितन । वृत । धारीय । जोरि । युग । जुग । तारन । मनमथ । यत । गन । शकरि । तिन बेर टेर । बसि । बजिय । भाव ॥

१२४ पाठान्तर—तर । ऊपर । हर । सबे । सषीयन । इद्र । इल्हसो । उलस्यौ । शशि । रमयो । देत । सजि । बजि । आकरषनवैस । भद । अलि । मन । दामिन । सुं । हरि ॥

१२५ पाठान्तर—दोहा । रीहु । चिहु । चहु । चक । सथ । परन । नव । रकि । रक्कि । रक ।

१२६ पाठान्तर—गोपी । चिहु । मग । हरी । करत । बिचि । विचि । सुदरि ॥

१२७ पाठान्तर—कविता । अधिकारीय । बिचि । गोप । बिचारीय । थुति ।

बर फिरति सुबर दंपति दिपति । दंपति कुंडलि मंडि करि ॥
सुझ्झै न अंग बिय अंषि कैं । ठौर नही इक अंषि भरि ॥
॥ छं० ३८८ ॥ रू० १२७ ॥

दूहा पावस रितु बित्तीत हुअ । सरद संपती आइ ॥
दिन आयौ सुंदरि रमन । सुवच सुबंसी गाइ ॥
॥ छं० ३८९ ॥ रू० १२८ ॥

दूहा सरद राति मालति सघन । फूलि रही बन बाम ॥
दीपक माला काम की । हरि भय मुक्किय स्राम ॥
॥ छं० ३९० ॥ रू० १२९ ॥

पद्धरी उग्गिय मयंक कदर्प रूप । दूरि गयौ तम बिन किति भूप ॥
द्रुम द्रुमति भार फुल्लि लता साज । जनु भार नमि गुर गज लाज॥३९१॥
उज्जास बध्यौ धवलन छेह । सुझ्झै न हंस हंसनिय देह ॥
कुरलन सुनत धावै न पाइ । अप अप्प तेज सहजै समाइ ॥
पावै न पुप्फु अलि इहै बास । ज्यौ अंधत्रीय चाहन भास ॥
अप धरिय वस्त्र पाईन जाइ । ढूंढन्त इला पावै सु पाइ ॥
नव बधू सजन भूषन सँवारि । ससि बढी किरन अति तेज तारि ॥
म्रगतिह्न भई उर मुत्ति माल । भुल्लै चकोर ससि नैन चाल ॥३९४॥
कुरलंत हंस चुन लहिन मार । सुझ्झै न नैन गहरत्त माल★ ॥
नाछित्र छिपिग ससि क्रन प्रताप । उज्जास आप घन मार चाप॥३९५॥
सुझ्झै न दंत गज इन्द्र धार । कामिन कटाछ बल बुद्धि नार ॥
नागिनी भद्र गुन गरुअ अंग । दिष्षै न पत्ति मन भञ्य पंग ॥३९६॥
गजराज इंद्र दिष्षै न तथ्थ । मीडंत मष्षिका जेम हथ्थ ॥
भए गुनित गाव अनि सेन चार । नव बधू मुष्ष इष्षै कुमार ॥३९७॥

पति । चावदिसि । जौराहि । मनो । इक । घन । मथि । घि । बिजहि । कुंडल । सवोरहि । बर । फिरन । सुझै । कै । ठोर । वौरि । नही । अप । करि ॥

१२८ पाठान्तर दोहा । ऋतु । रित । बितीत । भय । आय । आप्पो । सुवच । गाय ॥

१२९ पाठान्तर फुलि । फुल्लि । बन वाम । हर । मुकिय ॥

१३० पाठान्तर –रद्ध । गयो । तम । भूप । गुर । उजास । बंध्यो । छेह । सुझै । हंसह । हंसिनीय । हंसनी । कुरलंत । धोवै । पाय । अप्प अप्प । अप अप । तैज । समाय । पुफ । लहै । ज्यो । ज्यो । अधत्रीय । धरीय । वस्तु । जाय । ढुंढत । पाय । बंधु । बधू । भुषन । संवार । संवारि । बढि । किराने । तैज । मृगत्रिष्ण । मृगतृष्ण । भइ । मुत्ति । मुति । भजै । भुजै । चकोर । नैन । कुरलत । कुरलंत ।

बाला प्रताप मुष सुभत बार। सो भई गंग धारान धार॥
हारीति रास करि आस पूर। मन वंछि त्रियन दीनो हजूर ★॥
॥ छं० ३९८॥ रू० १३०॥

दूहा—सो बंसी बज्जी बिषम। सौरस बंसी पाय॥
ब्रह्मादिक सनकादि सिव। रस तन वज्जै गाय॥
॥ छं० ३९९॥ रू० १३१॥

मोतीदाम—सुने सुर बाल बिलासत सद्द। तजे ग्रिह काम पियार समद्द॥
परे घन भेद सु वच्च प्रमान। चितै कुइ आन कहै कुइ आन॥ ४००॥
चले मनु ते त्रिय भुल्लिय देह। सती मत जानि चले तव नेह॥
छिनं छिन अंगन तापन जाय। मनो सब की तडिता चमकाय॥४०१॥
भयौ तन स्वेद प्रकंपि जंभाति। ठगी मनु मूरि ठगोरि सिषाति॥
तजे ग्रह काम मनौ ग्रसि काल। रही बिरहानल के बसि बाल॥
॥ छं० ४०२॥ रू० १३२॥

स्हिर। मुनै। नैर। गहरर। ★ सं० १७७० में "मुझें न दंन गहरन माल" पाठ है। नाषित्र। हर। उजार। आरि। वार। मुझै। मुझै। कामिनि। कांमिन। कटाछि। बुधि। विचार। नरिनीर। गुरुश्र। दिये। परि। भईय। इंद। दिषै। नथ। मषिका। जैर। हथ। भइ। गुनीत। स्याह। सैन। वधु। इष्टै। मुष। ईषे। प्रतांम। वार। सो। भइ। राम। पुर: पूर। वंछिय। हजुर॥

★ इस "हजूर" शब्द को यहां कवि ने गोपियों के परम प्राण वल्लभ प्रेमधृ श्रीकृष्ण के लिये प्रयोग किया है। उस को मुसल्मानी भाषा के पक्षपाती लोग अरबी "हजूर" शब्द का भ्रंश होना अनुमान करेंगे किन्तु मैं उसको संस्कृत "मजुष्" से बना हुआ हिन्दी भाषा का शब्द मानता हूं। इस के संस्कृत-योनि-वाला होने के विषय में मैं इस दसम समय की उपसंहारिणी टिप्पण में अपनी सविस्तर और सतर्क सम्मति प्रकाश करूंगा अतएव पाठक इस के विषय में अधिक वहां अवलोकन करें॥

१३१ पाठान्तर—दोहा। सो। वंसी। वजी सोरस। पाई। सिवं। रसतन। वजै। गाई॥

१३२ पाठान्तर—मोतीदाम। सुनै। बिमालत। तजै। गृह। कांम समद। परै। भैद। सवचन। प्रमांन। चितैं। कोई। कौई। कोई आंन। कोइ। कोइ। आंन। चलै। मनौं। त्रीयन। भुलीय। भूलीय। देह। जांनि। चैल। नैह। छिन। छिन। अंग अंगन। जाइ। अप्रकाई। स्वैद। जंभाति ठंगी। मनो। मनौं। मूर। मूर। ठगौरी। सियाति। गृह। कांम। मनौं। मनो। तौ। कैं। बसि।॥

दूहा कै स्यामा किस्सोर कै। कै पौगंड प्रमान ॥
रमै रसिक रस रमन को। चलि बंसी धुनि काम ॥
॥ छं० ४०३ ॥ रू० १३३ ॥

दूहा सुत पति गुरजन बचि वर। तजि ग्रिह काम प्रमान ॥
धुनि बंसी सभरि श्रवन। चलि सुंदरि तजि प्रान ॥
॥ छं० ४०४ ॥ रू० १३४ ॥

दूहा सजि सिंगार नग नग उदित। सुदि मऊष ससि हीन ॥
मुदित दीप राका दिवस। काम कामना कीन ॥
॥ छं० ४०५ ॥ रू० १३५ ॥

दूहा चंद दरस गोपी बदन। गयौ समीप सु सज्ज ॥
धरक हीन तन छीन भौ। कला षोडसी भज्ज ★ ॥
॥ छं० ४०६ ॥ रू० १३६ ॥

चौपाई फिरि फिरि चंद चद विच्चारै। अंन गैन उद्दम बल हारै ॥
धाऽ बढि पच दिसा फिरि आयौ। कवि सुप तौ सामित्त करायौ ॥
॥ छं० ४०७ ॥ रू० १३७ ॥

कवित्त नगनि जोत उद्योत। बहुत सोहै बालं तन ॥
त्रिंद म्रगमद रज्जि। तिलक चिल्लकै भाल घन ॥
अंग अंग की क्रति। बाल ससि जोति प्रगासी ॥
कामी म्रग मारने। तिलक कैसार हगासी ॥
जग जोति जुवति जौवन बनिय। कनिय ओर कामिनि कहिय ॥
व्रजनाथ साथ गोपी मिलिय। राग रग बसी लहिय ॥
॥ छं० ४०८ ॥ रू० १३८ ॥

---

१३३ पाठान्तर दोहा। के। स्याम। किसोर। किसोर। के। के। पगाउ। पेगाऊ। प्रनाम। कौ। कौं। बसी। कान ॥

१३४ पाठान्तर - बवि। वर। गृह। प्रमान। बसी। श्रवन। सुदर। पान ॥

१३५ पाठान्तर तजि। सिंगार। मयष। शशि। मुदित। काम ॥

१३६ पाठान्तर दरसि। सज्जि। भज्जि। सजि भजि ॥

★ यह रूपक बृंदावली पुस्तक मे नही है।

१३७ पाठान्तर अरिल्ल। अरिल्ल। चद वद। विचारै। अंन। गैन। अेन। गैन। उदम। हारे बढि। सामित। कहायो ॥

१३८ पाठान्तर - कवत। कवित:। यौति। जोति। उद्योत। सोहै। बाल-पन। बिन। बिन। मृग। मृगद। रजि। तलक। तालकि। बाल सजि। जौति। प्रकासी। प्रगासी। कामि। मारने। हगास। जोति। युवति। जोवन। बनिक। ओर। व्रजनाथ। गोपी। राम। बसी। बंसीय ॥

चन्द्रायना

कमलति चंपत चारु, फूल सब बिद्धि फल ।
सरद रित्त ससि सीस, मरुत्तत्रिबद्धचल ॥
भमर टोल झंकार, उडगन छिप्प छिप ।
ललित त्रीभंगी मद्धि, सबै लहि दीप अप ॥
॥ छं० ४०९ ॥ रू० १३९ ॥

जगतपत्ति रतिपत्ति प्रगट्टय मध्य मन ।
गोरि असोकति कंगुर कंचन पंति जन ॥
बाल मष्ष कविचंद कि कंगुर चंद बनि ।
कंन्ह बिराजत बीच, सुमेर सुचंद तन ॥
॥ छं० ४१० ॥ रू० १४० ॥

दूहा – दै कपाट रुक्की अबल । भइ बिह्वल उडि हंस ॥
सहिय गोपि सुंदरि सकल । रस लुट्टै बर बंस ॥
॥ छं० ४११ ॥ रू० १४१ ॥

कवित्त जदपि मु पति धन हीन । दीन जीनेरु रोग वसि ॥
त्रिद्ध कुष्ट बिन रूप । हीन गुन्नेरु काम नमि ॥
गुंगा उध सुर श्रवन । बिकल मति तामस धारी ॥
ब्रह्म हत्यानि समूह । पुरुष गुन तदपि बिचारी ॥
उडगन समूह तप्पत जदपि । तदपि मुक्कि नन पत्ति रहि ॥
जं जोग भोग पति संग त्रर । त्रियन ध्रंम उर गाह रहि ॥
॥ छं० ४१२ ॥ रू० १४२ ॥

---

१३९ पाठान्तर-चद्रायना । चद्रायणाः । चारु । फुल । सबै । विधि । रित । रिति । मरुत । विधि । चलि । भवर । टोल । उडगन । छिप । त्रिभंगी । मधि । सबै । सबैं । अपा ॥ जो आज कल पवंगम नाम से प्रसिद्ध है वह यह चंद्रायना २१ मात्र ५ ताल और ११+१० यति का छंद है ॥

१४० पाठान्तर —जगतपति । रतिपति । प्रगटय । गोपी । गोपी । असोकति । बाल । वनि । कन्ह । विराजत । बीच । मेरु । मेरू । तनि ॥

१४१ पाठान्तर —दोहा । देकपाट । दै किपाट । रुकिय । अबल । भई । विह्वल । गोपि । गोप । लुंट्टै । लुट्टै । बर । बंस ॥

१४२ पाठान्तर —कवित । कवित्तः । यद्यपि सुत पति धन हीन । जुनेरु । रोग । वसि । वमि । वृद्ध । वृध । कुंष्ठ । बिन । गुण मठि । गुन सठ । कांम । बिकल । समुह । गुण । बिचारी । समुह । तदपि । मुकि । पति भोग । भाग । बर । धुम । धुंम ॥

कवित्त—पति मुक्कै सुनि पत्ति । बाल मुक्कै लछि्छय बर ॥
पति हित जो त्रिय क्रित्त । मान मुक्कै सु मोह धर ॥
जीव हित्त सुष हित्त । देषि जीति धर मुक्कै ॥
लाज जीति गुरजन (सम्★) ह । मोह माया चित रुक्कै ॥
सा अद्ध काम कह कह करै । ध्रंम अध्रंमन दिष्षई ॥
चाहंत सब्ब बंसीय सुर । अंध काम नन बिष्षई ॥
॥ छं० ४१३ ॥ रू० १४३ ॥

चौपाई जिन आराध्यौ काम बिनामं । गली गली वामा सुध नामं ॥
वनी रमंत रूप रम रंग । अकुरि वर केली मद नगं ॥
॥ छं० ४१४ ॥ रू० १४४ ॥

वृद्ध नाराज

रमंत केलि कंन्हवाम चंपियं छतीमयं ।
बिरीज कंन्ह हथ्थवाम लिज्जियं दुतीजयं ॥
चमकिता तडित्त मेघमद्धि ज ति टाहरी ।
दुति उप्पम चंद की कलां†कलंकताहरी ॥
विराज प्रीत पीत वस्त्र दंपती सु नैंन यो ।
तडित्त मेघमध्य मौज इंद्रको धनुन्नयो ।
॥ छं० ४१५ ॥ रू० १४५ ॥

गाथा ग्रब्ब आदि लघु प्रेम । जं जं चित्तम्मि प्रेम अनुमग्गिय ॥
अप्पानं ऊ महिनं । मानं कीअ हित्त ऊ पुरुष ॥
॥ छं० ४१६ ॥ रू० १४६ ॥

---

१४३ पाठान्तर मुकै । पति । मुकै । लछिय । जो । त्रीय । मान । मुकै । स । मोह । हित । मुष । हित । जिती । मुकै । अधिक पाठ । मुह । मोह । रुकै । ध्रम । अध्रम । दिषइ । दिषई । सब । बंसीय । काम । बिषई । बिषइ ॥

१४४ पाठान्तर अरिल । छद । काम । बिनाम । बिणास । गलिय । वासं । वनि । बनि । रंमत । रगं । रगं । अकुर । वर । कैलि । मदमंगं । मगं ॥

१४५ पाठान्तर—छद वृद्धनाराच: । कैलि । कन्ह । वांम । चरीय । च रीयं । चंपीयं । बी । बि । रीयु । कुन्ह । हथ । वांम । लिग्नयं । लीज्जिय । हुनी । चमक्तिा । तडित । तडित । मेघ । मधि । जोति । विराजि प्रीति । त्रीत । प्रीत । दपति । नैंन । यो । यो । तडित । मेघ । मधि । कौं । धनु । नयो । नयो ।

† इस शब्द का प्रयोग विदित करता है कि कवि संस्कृत पढ़ा था और भागवत के "जगौ कलं वाम दृशा मनोहरम्" स्क० १० । २९ । ३ के अर्थ और भाव में उसने उसे यहां प्रयोग किया है ।

दूहा - रही रही हौं कंन्ह ढिग । चल्लो चलन नह जाइ ॥
मो इच्छो प्रिय प्रेम बर । लै चलि कंध चढ़ाइ ॥
॥ छं० ४१७ ॥ रू० १४७ ॥

गाथा बाला रत्त सुजानं । ता चित्तं करन लोपनं नथ्थी ॥
रत्तं बाल सुजानं । अप्पानं दाहए अग्गी ॥छं० ४१८॥ रू० १४८॥
बष्षे गुन गाहानं । जं गुनप्पि मांइ बंधए चित्तं ॥
हीन सूर कमोढ । ओगुनं जुता इकं ताई ॥छं० ४१९ ॥ रू० १४९॥

गाथा दुद्धं सक्कर जुत्तं । बिनै सहितं तूरूव साधिक्कं ॥
पंथं निगम सु ध्रंमं । ते बाला देव मुकंदं ॥छं० ४२० ॥ रू० १५० ॥

दूहा - चित्त स्वामि तन वाम तन । जड़ भो मन गुन जड्ड ॥
गोबरधनधारी सुमन । अरु गोबरधन चड्ड ॥
॥ छं० ४२१ ॥ रू० १५१ ॥

---

१४६ पाठान्तर--गाह् । प्रव । प्रय । ल्हृ । चित्तमि । प्रेम । अनुमरीयं । अप्पान । अप्पानं । उं । उ । मान । हिन । उ । उँ ।

इम रूपक के छंद के विषय मे मर्वत्र यह ध्यान मे रखना चाहिए कि कहीं तो इम को गाथा और कही गाहा नाम मे वर्णन किया है । वास्तव मे यह छद वह कहाता है कि जिम को मस्कृत मे आर्य्या कहते है । इम के अनेक भेद है किन्तु विशेष करके मात्रिक छंद आठ ताल और १२ + १७ = २९ मत्रा अथवा १२ + १५ = २७ मात्रा का होता है । चद कवि के इम महाकाव्य मे इम छद मे विषमता के भेद भी दृष्टि पड़ते हैं अर्थात् कही कही उस के दूमरे और चौथे चरण १५ वा १८ वा १६ । १७ आदि मात्रा के विषम भी होते हैं ॥

१४७ पाठान्तर – दोहा । दूहाः । हो । हो । जाय । मो । इछो । इछो । प्रिय । पेम । "तो बूंदीवाली मे अधिक पाठ है । लें । चढाय ॥

१४८ पाठान्तर — गाहा । रत्त । रत । चित्त । करै । न । लोपन । नथि । रत्तं । सुं जांन अपानं । दाहयै । अग्गि ॥

१४९ पाठान्तर — चषै । चषे । गुण । गुर्णाप । गुनपि । माइं । माई । मांइ । बंधए । ओगुण । ओगुन । जुत्तां । जिता । ताइ ॥

१५० पाठान्तर -- दुद्धं । दुरद्ध । सकर । युतं । विनय । सरुव । साधिकं । पंथ । ध्रम । बाला । मुकंद ॥

१५१ पाठान्तर — दोहा । चित्त । स्वांमि । तवाम । भो । जड । जडः । गोबरधनधारी । गोवरद्धन । चड ॥

संषेपक जपी मु कथ । माधव माननि मझ्झ ॥
जो चित हित्त बिलंबियो । (सो ★) हरि हर विद्धन सुझ्झ ॥
॥ छ० ४२२ ॥ रू० १५२ ॥

त्रोटक★ तन मीथल च्र मन पग बल । जमभाति प्रस्वेद प्रकंप ढल ॥
फिरि बैठि वधूवर रग मिल । जँपयौ सु कह्यौ व अनग बल ॥
॥ छ० ४२३ ॥ रू० १५३ ॥

कवित्त--माग मुत्ति गग निलक । त्रय सु नेत्रह जट्टालट ॥
मिन दुकूल विभ्भूत । नीलकठी नग नारट ॥
मुष भवि चद ल्लिलाट । अमित । वर माल माल मुनि ॥
सेत सिपर आभ्रन्न । मब्ब मम दिष्षि मम्म दुति ॥
तह ईम हरिय हरनछ्छि अछि । आवद्ध जानि अद्धीक रिपु ॥
इहि बिधि अबल्ल बर मुकनि बर । पुरुष अवल मोरन्न अपु ॥
॥ छ० ४२४ ॥ रू० १५४ ॥

दूहा अतर दुष अतर सुपन । जिय मन सजि गोपीय ॥
दग्म देवि व्रजपति मु वर । दिषि आनन प्रिय कीय ॥
॥ छ० ४२५ ॥ रू० १५५ ॥

कवित्त -मोरपष तन जलद । प्रीनि को मेव देव उर ॥
गुजहार नुलमी मु मार । उभयै सोभित चद कर ॥

---

१५२ पाठान्तर सषैपक । जपिय । जपीय । माननि । मझ । जो । चित्त । हित । विलविगो । (मो ★) बदीवाली और म० १-३० की पुस्तकों मे अधिक पाठ है अन्य मे नही । विधिन । सुझ ॥

१५३ पाठान्तर ★ चौपाई । त्रोट्टक । मिथल । चरन । चरण । मण । जभानि । सुस्वेद । प्रस्वैद । टल । वधूवर । बधूवर । जप्यो । चरणग । बरनग ॥

१५४ पाठान्तर - कवित । मुत्ती । गग । मैत्रह । जटा । सुत । दुकूल । दुकूल । विभूत । विभुत । नय्ये । नग्ट । भलि । माल । मुत्ति । सैत । आभ्रन । मव । दिषि । संम । सम । नह । इम । नछि । अलि । आवध । जानि । जा । अधिक । अद्दिक । रिष । विधि । अबल । अबल्ल । वर । मुकति । बल । मोरंन्न । मोरन । अष । अप ॥

१५५ पाठान्तर - दोहा । मुयत । सुयनि । गोपिय । दरसन । दैव । ब्रजपति । मु बर । आनन प्राय ॥

१५६ पाठान्तर --कवित । कवित्त । मोरपष । पीन । को । जुगहार । तुरमी । उभै सुभित । सौभित । जलदं । बीच । बीचि । भ्रगं । भ्रग । रसं । मडति ।

जलद बीच सुक पंति । भ्रंग रस दंडति लंबी ॥
मुरली सुर नट बाद । त्रिभग उर आयत लंबी ॥
नैव्रत आय गोपी हरी । नैन मुदित चामोद चर ॥
चर चारु चारु चर बर चक्रित । सो ओपम्म उचार कर ॥
॥ छं० ४२६ ॥ रू० १५६ ॥

दूहा -बंसीबट विश्राम किय । सुरभी गोप सहाइ ॥
मन वंछित दीनो त्रियन । सुर सुंदरि सच पाइ ॥
॥ छं० ४२७ ॥ रू० १५७ ॥

दूहा मुक्कि रास मंडल सुचिर । बर अक्रूर सुजान ॥
मानहु मदन बसंत रितु । करि उछ्छव सुस्थान ॥
॥ छं० ४२८ ॥ रू० १५८ ॥

विराज

मषं विप्प भत्तं । सुयं स्याम पत्तं ॥
लियं ग्वाल सथ्थं । मधुन्नीर रथ्थं ॥ ४२९ ॥
सुनी जोषि कथ्थं । गही नथ्थ बथ्थं ॥
परो भूमि तथ्थं । मिली कृष्ण सथ्थं ॥ ४३० ॥
अचिज्जं सुकथ्थं । ★★★★ ॥
ब्रजं ध्रंम धारी । सपत्त विहारी ॥ ४३१ ॥
मुझे संझ ओपं । व्रषं भेस रूपं ॥
कियं कंस मद्दं । सुनी कंम नद्दं ॥ ४३२ ॥
मतं मत्त साधी । मुषं चाप आधी ॥
सुअं माल मंडी । प्रजापाल दंडी ॥ ४३३ ॥

दंडति । मुरली । सुरवर । त्रिभंग । आयो । नैवृत । गोपी । नैंन । चारु । बर । सो । ओपम । उंपम ॥

१५७ पाठान्तर —दोहा । बंसीवट । विश्राम । गोप । सहाय । नृयन । सुंदर । सचि । पाय ।

१५८ पाठान्तर —मुकि । अंक्रूर । सुजांनि । मांनहु । मानु । मांनो । रित । उछव । सुस्थांन ॥

१५९ पाठान्तर —मंष । प्प । भतं । श्याम । स्यांम । पत्तं । सथं । मधु । मधू । नीर । रथं । सुणी । जोषि । कथं । नथ । बथं । भुमि । तथं । क्रिष्ण । सथं । अचिजं । असिजं । कथं । बृजं । ध्रूम । संपते । सपंते । संपत्तें । मुषे । ओपं । उपं । रूपं । वृष । वृषोमम । भैम । कीयं । कंम । मदं । नदं । मत । साधीः । मुषं माल । डंडी । गय । पुतं । अंकुर । अंकुरं । पाविते । कय । कन्हु । लंग । लगं ॥

गयं दीस पुत्तं । अक्रूरं पवित्तं ॥
कयं कन्ह लग्गं । अहो मात भग्गं ॥ ४३४ ॥
रथं हेम सज्जं । चयं चक्र गज्जं ॥
सिरं कीट मंड्यो । उरं माल षंड्यो ॥४३५॥
न्रपं वाच मानं । इहं जीव ठानं ॥
व्रजे नंद्र रानं ★ । तहा जाइ आनं ॥ ४३६ ॥
बिय पुत्त चैनं । वासुदेव ऐनं ॥
सिता स्याम गत्तं । तहां देव पत्त ॥ ४३७ ॥
व्रजं ग्राम तातं । अजं देव आनं ॥
हृदै जग्य सद्धं । लियं उच्च बुद्धं ॥ ४३८ ॥
तुमं रूप चायं । करौ अज्ज भायं ॥
रथं जीति जायं । चितं चित्त ताय ॥ ४३९ ॥
भले भाग मातं । हुवै चित्त रात ॥
व्रजे बज्ज मग्गं । अयं क्रूर लग्गं ॥ ४४० ॥
बने ब्रंद पथ्थं । पथे पथ्थ हथ्थं ॥
चितकिन्न क्रिष्णं । मृगे तिष्ण दिष्णं ॥४४१॥
तज्यो रथ्थ भूमी । सिरं रेन झूमि★ ॥
बने बल्लि बल्ली । विचित्रं मुरल्ली ॥४४२॥
घने दीह अज्जं । घने ब्रज्ज मज्ज ॥
घने बज्ज धारी । घने एक सारी ॥४४३॥
घने गोप लछ्छी । मुरारी सुरछ्छी ॥
उडी रेन संझं । वुजं देव मंझ ॥४४४॥

अहो । भंग । लग । सज । चक्रं । गज्र । काट । नृप । बाच । इहावृजें । ★ यह बूंदीवाली पुस्तक में नही है । जाय । पुन । चेनी । वसुदेव । ऐनी । श्याम । स्याम । गतं । पत्तं । आजं । ★ यह सं० १६४७, १७७० और बूंदीवाली में नही है । रिदै । जिग । मद्ध । उंच । बूंद्धं । करौं । करो । अज । जोति वित । चित । भलै । रिदे । बृजे । बृजे । बज । वृज । मंगं । मग्गं । लग्ग । लग्गं । विनं । वनं । वृदं । पथं । पथै । पथ । हथं चिन । कीन । किन्न । कृष्णं । तिष्ण । मृगै । दिष्ण दिष्णं । रथ । भूमि । रैंन । मूमि । ★ बूंदीवाली मे नही है । वनै । [illegible] । वली । वचित्रं । मुरली । घनै । अजं । घनै । ब्रज । मंझं । घनै । वज्जं । घनै एक्क । घनै । गोष । छली । सुरछी । नै । सझं । दैव । वृषं । वृष । भान । दोदुहनी । वीर । तनम । भीर । दोहा । निकटं । मसोही । करं । श्याम । सैनी । गर्ष । मैली । दिठि । दिठ । घतकंठ । भगी । निघ । बज । वृज । चरं । निस्य । मंड । मनों । हैम । काइ ।

व्रषभ्भान पुत्ती । गवं दोदुहत्ती ॥
कुसं भीय चीरं । तनं हेम भीरं ॥४४५॥
करं हेम दोही । निकद्दं ससोही ॥
सिरं स्याम सेली । गव दोह मेली ॥४४६॥
दिठी दिठ्ठ लग्गी । उतक्कंठ भग्गी ॥
निधंरंक रासी । लही व्रज्ज भासी ॥४४७॥
चरं नस्य मंडं । मनो हेम डंडं ॥
उठे कंठ लाई । मधू माध पाई ॥४४८॥
चले नंद गेहं । जसोमत्त जेहं ॥
कहे दुष्ष सुष्षं । जदूनंद रुष्षं ॥४४९॥
अमूधार नदं । चरंनस्य वंदं ॥
जहे कम गेहं । मह ध्रंम छेहं ॥४५०॥
उतप्पात पत्तं । व्रज लोक जत्तं ॥
भई कंस मुज्ज । करे भोग भुज्जं ॥३५१॥
रथ चार दप्यो । गनै गोप सप्यो ॥
विलप्यो मुमुष्षं । दम्यो देह दुष्षं ॥४४२॥
निमा जग्ग छंडी । उठ चंड चडी ॥
रथं जोनि जंनं । बियं बंध मंनं ॥४५३॥
दधी ग्वाल गल्ली । ममं नंद कल्ली ॥
कियो ग्रीव लत्ती । मनो चंद पत्ती ॥४५४॥
करेवा विचारं । निरत्ती निहारं † निहारं ॥
★ ★ । ★ ★ ॥ छं० ४५५ ॥ रू० १५९ ॥

दूहा —अभिनव विरह विलाप त्रिय । दिष्षन नंद कुमार ॥
निरगुन गुन बंध्यो मकल । मनु पछिय परिहार ॥

॥ छं० ४५६ ॥ रू० १६० ॥

मधु । मधु । पाइ । चलै । ग्रेहं । ग्रैह । जसोमति । जसोमति ॥ जेहं । कहे । सुख दूषं । यदूनंद । रुषं । अंमुधार । नद । चरनस्य । वद । कहै । ग्रेहं । ग्रैहं । सहधम । छैहं । उतपात । पतै । व्रज । वृजं । लोक । जनै । भट । मंच । मुजं । करे । भोजभुंज दिप्यौ दारौ । गने । सापै । मापो । मुष्यो । मषं । दम्यौ । दैह । सप्पौ । दुषं । अग । उव । जौनि । बिय । मन । गल्ली । मम । काली । कीयो । लनी । ल्लती । मनो । पुती । करैव । निरती ॥ † किसी मे भी पाठ नहीं है ॥

१६० पाठान्तर—दोहा । अभिनिव । विरह । विलाप । दिषन । नद । निरगुण । गुण । मनु । मनं ॥

दूहा -टगमग नयम सु मग्ग मग । विमग सु भुल्लिय भंग ॥
रथ हित सु हित सु स्याम हित । चित्त लिए मनु संग ॥
॥ छं० ४५७ ॥ रू० १६१ ॥

दूहा -ब्रज हिम कुमलनि कुमल हुअ । जमु तन कुमलिन काम ॥
बिछुरन नंद कुमार चिर । मत्र भये धामनि धाम ॥छं०४५८॥ रू० १६२॥

विराज-ब्रजब्राभिनेनी।चित चार चैनी॥जनुनेम कं तेग्रहंत्राम भूले ॥४५९॥
अयं कूर ध्यानं । रथगं त्रिगान ॥ विन चिन बड्डी ।इयं बाल पद्धी ॥४६०॥
बधेरानकंसं । लगे दोष बंसं ॥ रहे जोति साई । सु लच्छी सुहाई ॥४६१॥
हसे दिषिष मुष्षं । हुओ हीय सुष्षं ॥ भए भेषथाइ ।सिरं मेष साई★ ॥४६२॥
जलं केलि न्यानं । दिठे क्रिष्ण ध्यानं ॥चतुर्बाह चारं।किरीटी मुहारं ॥४६३॥
पियं पट्ट कट्टी । गदा चक्र तुट्टी ॥ नियं पानि कंज्रं । मयं सेन अंज्रं ॥ ४६४॥
अहो धीर जट्टो । धरंक्रूर मट्टौ ॥ कला कंम केही । नियं ब्रह्म देही ॥४६५॥
गई चित्त बीरं । रथं पानि तीर ॥ चले क्रूर संगं । हरेराम रंगं ॥ ४६६ ॥
मधूरी सु दिष्टी । सुषं स्याम इष्टी ॥ ★ ★ । ★ ★ ॥
॥ छं० ४६७ ॥ रू० १६३ ॥

दूहा - वारी विद्रुम मद्रुम द्रिग । लगि जगि नंद कुमार ॥
मनु विगास फुल्लिय कुसुम । इय कबि चंद उचार ॥
॥ छं० ४६८ ॥ रू० १६४ ॥

---

१६१ पाठान्तर -टग टग । सु । गम मग । मग टग । भुल्लिय स्याम । चित । लयै मनो । मनों ॥

१६२ पाठान्तर - व्रज । हीय । कुशलन । कुशल । कमल । हुय । कुशलन । काम । धांमन । धाम ॥

१६३ पाठान्तर —व्रजं । नेनो । चौनी । चैन । जमुनैम । जमुनेम । गृह भुले । अयक्रूर । ध्यानं । रथग । विग्रान । विन । बड्डी । इय । वाल । पड्डी । बंध्रे कंमी । लगै । लगी । दाषै बंमी । र । जोनिमाई । जोतिमाइ । लछी । सुहाइ हसै । दिषि । मुष । हूंओ । मुषं । भैषथाइ । मिरमै । मांई । जल । कंलि । न्यांनं कृष्ण । किष्ण । ध्यानं । चत्रु । बांहु । कीरीटी । मुंहारं । पीय । पट । कटी गहा । तुटी । पांने । पानी । मैन । अहो जट्टौ । धरो । धरं । मट्टौ । कैद्दी निय । दैही । गए । चित । वीरं । पार । चलै । क्रूर । संग । रंग । मधुनैर । मधूरं विष्टं । तिष्टं ॥

★ किसी किसी पुस्तक मे यह छंद ४६४ के आगे है ।

१६४ पाठान्तर —दोहा । वारी । विद्रुम । कुंमार । मनौ । विग्गास । कुंलिय । फुलिय । कसम । कुसम ॥

भुजंगी— कहूं अंब विद्रुम सीतल्ल छाया। कहू वृष्ष वट्ट निहट्ट सिलाया ॥
कहूंकीर कोकिल्ल नादं सुलीनं। कहू केलि कप्पोत से बोल झीनं॥४६९॥
कहूं बीय बिज्जौर पीयूष भारं। जुटी भूमि लुट्टी मनों हेम तारं॥
कहूं दाडिमं चूव चिचन्नचंपी। मनो लाल★मानिक्कपीरोज†थप्पी॥४७०॥
कहू सेव देवं करनं कलापं। कहू पष पारेव सारो अलापं॥
कहू नीवनाली अकेली षजूरी। पुले काम झडे सुहल्लै हजुरी‡ ॥४७१॥
कहूं ताल तुगे सुचगे सुचारं। कहूं काम लष्षे सुदष्षे विहारं॥
कहूं चप चपी सु कपीय वातं। कहू जबू जंभीर गंभीर गातं॥ ४७२ ॥
कहूं नागवेली निवेली निवेसं। कबू मालची घेरि भौर सुवेसं॥
कहू पाडरी डार पाछै विहारं। कहू सेव तीसेव झंनी सुझारं॥ ४७३ ॥
कहू अष्परोटे निहट्टे तिवेली। कहू बील विद्दाम कादम केली‡॥
कहू केतकी फूल दल्ली विगस्से। कहू वंस विश्राम गठी निकस्से॥४७४॥
कहू वेर बद्रीव पंषी पुकारं। कहू। मीर टेरी मुझेरी विहारं॥
कहू सार संसार सारन्न सोरं★। मनों पावसी बुट्टि दादुल्ल रोरं॥४७६॥
कहू सेंसिषंडी सुपंडान फुल्ली। कहूं लुब्भि लोगी रही बेलि फुल्ली§॥

---

१६५ पाठान्तर – कहूं। अव। विद्रुम। सीतल। कहो। ब्रिष। वटान। हट। हट्टं। कहों। कहु। सं० १७७० की मे कहू केलि कोकिल सोहिल हीन। कहू कोइल बोल सोहलं झीनं॥ सं० १८५९ की मे— कहो केलि कोयल्ल सो जल्ल मीन। कहू कोइल बोलि सोहिल्ल झीनं॥ कहो बिजौर। बिजौर। पीयुष। जुटी। भुम्मि। लुटी। म नो। कहो। चुअ। चूअ। चिचिण। मनो। माणिक। मानिक। पीरोज। थपी। कहो। सेव। देव। करणं। कहो। प रै। वमारो। अलाप कहो। नीबं अकेली। षजुरी षुलं। झडै। सुहड हजुरी। कहो। मुंगे। कहो। कौमि। काम। लषै। दये। दषै। कहो। वात। कहो। जंबु। जभीरं। कहो। नागवंली। निवली। निवेसं। कहो। कहो। घेर। घेर। भोर। भोरं। सुदेस। कहो पड्डी। पडरी। पडरी। पंडुरी। छाषै। पछै। विहारं।

★ हिं० लाल (सं० लल् वा लड्) लालरंग का वाचक राधालालजी ने अपने हिन्दी शब्द कोष मे माना है अत एव लालरंगवाले रत्न का वाचक भी अनेक प्राचीन कवियो ने प्रयोग किया है॥

† हिं० पीरोज (सं० पिरोज तथा पेरोज तथा। पेरोजं=उपरत्न विशेषः) उपरत्न पिरोजा॥

‡ हिं० हजूरी (स० सजू वा सजुस्=स with जुस to please) Associated an associate or comparon with together with

§ ये तीन पाद बूंदीवाली पुस्तक में नहीं हैं। अष्परोटे। निहट्टैत। विश्राम। कहो। केतकी। केलि। केली। दली। दिगसी। विगस। बिमसे। कहो। वंस।

हसे स्याम बलभद्द अक्कूर कुल्ली । जहा कूबरी रूप पेषत भुल्ली ।।४७७।।
दई मालिया आनि सोदाम दान । भय रजक मब्ब सु हाल्ल कान ।।
रची मंडली गोप व्रजलोक वासी । गए जग्गमाला तहा धनुष त्रासी ।।
।। छं० ४७८ ।। रू० १६५ ।।

दूहा धनुष भग कीनो सु प्रभु । त्रग वजि गब्ब हनीम ।।
विमल लोक मधु पुरि परिय । विहसत स्वामि मदीम ।।
।। छं० ४७९ ।। रू० १६६ ।।

रग भग मडप उथपि । अरु धनुक्क तिन थान ।।
मानो धान कपाव की । लीला हीं हनि आन ।।
।। छं० ४८० ।। रू० १६७ ।।

मधुरिपु मधुरिन मधुर मुष । मधु ममत मधु गोप ।।
मधुरित मधुपुर महिल मुष । मधुरित नयन म ओप ।।
।। छं० ४८१ ।। रू० १६८ ।।

गोप निरष्पत सुभ त्रिय । रूप सरूप रसाल ।।
भगति भाव हित चित्त धरि । हिये हरष्पहि बाल ।।
।। छं० ४८२ ।। रू० १६९ ।।

दूहा गोषनि गोष गवष्य गुरु । गोधन गो विस्तार ।।
गोरुचि गोपति गुपनि मन । रुचि रोचन भार थार ।।
।। छं० ४८३ ।। रू० १७० ।।

विश्राम । निक्सै । निक्से । वैर । वेरि । बेर बद्दीव । पुकारै । कहौं । मोर । टेरं सुहेर । विहारै । कहौं । मोर । मारान । मारोन । मोर । मनौं । पायसौ । बुठि बुठि । दादुल्ल । रोर । कहो । मै । सुथान । सूथान । सुफुल्ली । सुफु ी । कहौं भुल्लि । लोगी । वेलि । झुल्ली । वनो । अप । आसौर । तै । ते । मोक । दिपै रूपतासंतआक । कहो । पिड षजूर षज्जुर । षजुर । झूली । कहो । स्मल्ल । मल्ल मार । भौर । मुल्ली । झुल्ली । हस्यै । स्याम । वलिभद्र । वल्भद्र । अक्रूर । कुली कूबरी । पैषन । भुल्ली । दइ । मोल्यिा । आनि । सोदाम । रजक । भूह्राल । मैंहाल सब । सुनी । सुनिय । गोपी । वैमलोक । जिग । जग । जग्य ।

★ हिं० सोरं (sound, noise, tone, tune)

१६६–१७० पाठान्तर: दोहा । धनषं . विस्रोम । वर । भांज । गढ । १६६ । अरु । धनष । धनुक । थान । मानो । बयाचि को । आनि । १६७ । रित्र । समंत । गोप मधपुर । नैन । मउप । १६८ निरषत । सुभि । हितु । चित । हियै हरषहि । १६९ । गोधन । गोष । निर । गवष । गुरु । गो । गोरचि । गोपति । रोचन । थाल । १७० ।।

त्रोटक ततथाल तिथाल तिथाप तियं । पहु पजुलि अंजुलि लै मुतियं ॥
निज नेह सुनेह जनेह लियं । अरि अभ्रति सुभ्रति संजतियं ॥ ४८४ ॥
परक्रत्ति पराक्रम पथ नियं । निज नथ्थन मेषनि कुंज नियं ॥
व्रिदबद्ध सुबद्ध सु पुब्ब जिय । गुरु मात पिना भय नां लजियं ॥४८५॥
नृप चदन ब्रदन बद तियं । असु नंदन नंद सुनद तियं ॥
किल किंचित कज मनोहरिय। मथुर मनि माथर मो हरियं ॥ ४८६॥
द्रिग दासित कसति श्री षंडयं । रथ अप्पति श्री लषि मडनयं ॥
ग्रह ग्रेह निग्रेह सु बद्दियं । बसुदेव सुतेव सुकुंज तियं ॥
॥ छं० ४८७ ॥ रू० १७१ ॥

दूहा—प्रति सुंदरि सुन्दर तनह । सुदर सुभति सनेह ॥
सुंदर त्रिभुवन पुरष पहुं । निज आवन तुअ ग्रेह ॥
॥ छं० ४८८ ॥ रू० १७२ ॥

सकल लोक व्रजवासि जहँ । तहँ मिलि नंद कुमार ॥
दधि तंदुल मंजुल मुषह । किय त्रिय बंध अहार ॥
॥ छं० ४८९ ॥ रू० १७३ ॥

प्राची रवि रत्तल दिसह । बजि दुंदुभि तिय नंच ॥
अषिल अषार अषंड लिय । रुचि सुभ मंजुल मंच ॥
॥ छं० ४९० ॥ रू० १७४ ॥

प्रजा पसंमत भेट दधि । अरु सिर परसत पग्ग ॥
षट गुन प्रभु बलिभद्र सम । हरि मिलि गोचर लग्ग ॥
॥ छं० ४९१ ॥ रू० १७५ ॥

---

१७१ पाठान्तर —त्रोटिका । त्रोटक. । नियाल । निथं । पहूं । पयुलि । मंजुलि । निजु । नेह । सुनेह । जुनेह । अभित । सुभित । परक्रति । निजु । निथिन । नथ । निमेषन । कुंज । सपुब । पिना । जलिये । त्रपि । नृनि । चंद । अशु । त्रियं । कलकिंचनि । किलकिंचन । मनोहरीय । कंम । मन । मो । दृग । दासीय । कंपति । षंडयं । मंडनय । ग्रेह । न ग्रहामबद । बसुदेव । सुतेव । सकुंज ।

१७२–१७६ पाठान्तर - दोहा सुन्दर । सुन्दरः । सुदरि । सुभति । सनेह । पुरिष । पहुं । आवनतुउ । तृहि । गेह । १७२ । लोक । जिहां । तहां । तहा । सहां । त्रिय । बंध । १७३ । प्राची । रतल । दुंदुभि । असार । अषंड । रवि । १७४ प्रज्जा । प्रसंमत । भेंट । दधि । सत । पंग । षट्ट । गोचर । लग । १७५ । राजुन । राजन । मातुलह । मतु । कुंवलय । गजु । मुदता । विदती । १७६ । विनि । बिहसि । गभ । रोहिनि । रोहित । रोदित । लगो । अभ । १७७ । बुज । संगे ।

राज सुराजत मानुलह । मत लहि अतुल प्रहार ॥
कुवलय गज मुह लय मुदित । विदित वली दरवार * ॥
॥ छं० ४९२ ॥ रू० १७६ ॥

दिठि बल दिन बालक बिहमि । कुमलिय कुमदिव गम्भ ॥
मृन रोहिन रोहिन रिमह । दिठ दिग लग्यो अम्भ ॥
॥ छं० ४९३ ॥ रू० १७७ ॥

ब्रज सरनागत बमत ब्रज । ब्रज कहि मगै मग्ग ॥
हम गज दिट्ठ निरप्पयो । निमष उमारहु पग्ग ॥
॥ छं० ४९४ ॥ रू० १७८ ॥

रिस लोचन रन रत्त किय । रत्तंमर ब्रजपाल ॥
रति रत कंस उदंमि मिप । क्रिम पंचित निय काल ॥
॥ छं० ४९५ ॥ रू० १७९ ॥

भुजंगी मदं मारि भूरंग रूरं गरज्जं । अहो बाल बाल तिवारं बरज्जं ॥
अयं बाद बद्दं पयं पीलवानं । ठिल्ले ठट्ट नट्टे जुध्र जूं जुं आनं ॥४९६॥
कटि पट्ट पीनं मिरं स्याम सेली । मिता नील वसनाय दसनाय केली ॥
धरै मोरछल्लं मुवज्जन फूलं । हमै बिक्कमे मुप्प गेनं गहूलं ॥४९७॥
गही सुंड मुडीलपडी अषारं । नटी जानि बंसी सुचुक्की विहारं ॥
पयं पात भूमि मुझमि जु आनं । दिठी कंम लग्गी मुबज्जे निसानं॥४९८॥
हतं हंत हन हहत्तं सुरष्षं । प्रसिद्धे पुरानं प्रसादं पुरुष्षं ॥
दुवं वैर पुव्व दनं देव पछ्छी । मदं जे हिदं ने हिदै जानि लछ्छी॥४९९॥

मग । हमज । दिठन । नरषगो । उमारहु । पग । १७८ । लोचन । रत्तनकियै । तकिक्ये । रत्तंवर । उदंम । क्रिम । १७९ ।

★ हि दरबार (म. दर or दरि A natural or artificial excavation in a mountain a cave cavern a grotto &c and बार A door way, a gate.) Hence at door way or gate. अर्थात द्वार पर ॥

१७८ पाठान्तर भूरग । रजं । अहो बलं । बरजं । अय । बद । पयं पीलबानं । ठिल्ले । ठिल्के । ठट । बट्ट । नटै । नट्टे । जबरं । जूंज् । जुजु । कट । कटे । पट । सरं । स्याम । सैली । वसनाय । कैली । धरा । मोरमभंन । वाजन । कूरं । हसे । विकमै । विकसे । मुप । गेंनं । गहूर । गरू । आसरं जांनि बंसी । सुचुकी । पय । भुमी । मुझंमी । लगी । मुवज्जै । निसानं । हन । हहतं सुरषं । प्रसिद्धं । पुसुषं । बैर । पुवं पूंब । दनु । दनुं । पछी । जै । ह्र । हदे । । जांनि । लछी । हरनांछि । मगोर । बिरंनषि । बैरी । जदों । कोरं । रमै तैजनेजंरपैता बिषंडी । तपेता । हुंअ । हुहु । हकं । सुंमाषं । सुंवारी । अहो । मांझ । अधुनं । किसोरं ।

हरग्रछिछहारी विहारी सुगोपं । विरंनरिष वैरी जदों जावि कोपं ॥
रमे रास किष्णं गजं केलि मंडी । तमं तेज तेजं तपंता त्रिषडी ॥५००॥
हुअं हूअ हक्कं मुभाषं सुचारी । अहो साधुमाधं अजुत्तं निहारी ॥
किशोरं किसावर्त गातं सुक्रीसं । वपं एस वल्लं मदोमत्त दीसं ॥५०१॥
छुटे पट्ट पीतं कियं किष्ण रोसं । बलीभद्र भद्रं अनूंजा नितोसं ॥
तुअं बालबुद्धं न सुद्धं सु देहं । गही पट्ट षचै सु अछ्छै सनेहं ॥५०२॥
मनो मंकला हेम तें सिधु छुट्टं।गही सिधु बल्ली [भद्र] धपी धाम पुट्ठं ॥
गही पुछ फेरे सिर तीन वारं । उड्यौ हंस हंसीन भूमी प्रहार ॥ ५०३ ॥
दुवं बंध दन धरे कड्ढि कध्रं । लगी श्रोनि छिछ मनों गुज बध्रं ॥
हते गज्ज गज्जे दुव मल्ल मल्लं । परी गैरि पोर प्रमार बिहल्लं ॥५०४॥
मिले रंग भूमी बलराम किस्नं । नव रग दिप्टी तन तेस तिस्न ॥
बदी बाय चानूर मामल्ल जुद्धं । रन राज अग्या सु मेटो विरुद्ध ॥५०४॥
समं डोरि बंध्यौ निबंध्यो निबध्यो । हमं जोति तेजा मिल मुत्ति सध्यो ॥
॥ छं० ५०६ ॥ रू० १८० ॥

दोहा हम बनचर बालक सुव्रज । तुम जुध मल्लनि मल्ल ॥
अपनि जुद्ध तुम प्रति करहि । बिहतन होइ न बल्ल ॥छं०५०७रू०१८१॥
प्रथम मत्त गजराज दर । दम सहस्र बल ताहि ॥
सो अग्या बल छीन भो । लीला ही हति ताहि ॥छं० ५०८ ॥रू० १८२॥
हति रूपति गजराज भो । मंच सुमडिय कंस ॥
चानूरह मुप्टिकं बलिय । मुकति समप्पन अम ॥छं० ५०९ ॥ रू० १८३॥

कूंसावरत । बलं । मदोमत । छूटें । पट । क्रिष्ण । कृष्ण । अनुजा । नितोसं । तुअं । बट । षंचे । अछे । सनेह । मनो । मनो । हमते । सिध । सिध । छुट । सिध । बली । ★ अधिक पाठ है । धपि धम । पुट्टं । पुठ । पुछ । फेरे । दुय । बध । कढि । कट्टि । कटि श्रोन । छछं । मनो । गुज । हतें । हते । गज राजे । गजगज्जे । दुअ । मल । मल । प्रमाद । बिहल । मिले । भूमी । बलय । बल बिष्ण । तिन । तेज । तिष्ण । तिन । तेज । निरणं । चाप । पाय । चानुर । मामल । जुरू । रण । मेटो । मेटी । विरुद्ध । डोरि । निबध्या निबंध्या । जोति । तेज । मुति ॥

† हि० पीलवानं (सं० पील, An elephant and, वान, going moving or driving Hence an elephant driver.

१८१ १८३ पाठान्तर—दोहा । बनवर । बचनचर । बालिक । व्रज । जुध । युध । मल्लन । मल्ल । अपनि । युद्ध । युध । होइ नवल । १८१ ॥ मत । सहस्र । सो छान ताही ॥ १८२ ॥ रुपति । फिर । जहां । मच । कस । चानुरह । मुष्टक । बलियं ॥ १८३ ॥

कवित्त स्त्री निकेत तन स्याम। पीत को सेव देय दुति ॥
धूमकेत बर जल्द। काम उद्दित मु कोट रति ॥
नयन उदय पुडरिक। प्रमन अमरीय मुराजै ॥
गुंजहार जर्जरित। तडित बद्दरि मु विराजै ॥
नहि बाल वृद्ध किस्मोर तुअ। ध्रुअ ममान पै डिड्यरो ॥
पावै न जोग जोगी जुगति। किन गुन तुम गुन त्रिस्तरो ॥
॥ छ० ५१० ॥ रू० १८४ ॥

साटक किवा जोग महस्र कोटिन गुना, आवै न ध्यानं उर ॥
नैवान मनकादि शिष्य बहु ल. नो ब्रह्म कर्म्म गुर ॥
किं किं जै बर गोकलेस हरि मो, कष्ट घन अद्भुत ॥
किं निर्माय मु बाल्य अभिनव, नी नोय वानी बद ॥
॥ छ० ५११ ॥ रू० १८५ ॥

दूहा पुब्ब स्राप सम दिट्ठ करि। वचन ति लच्छिय काज ॥
दर दर बानी देव गुरु। गोकि देव सिर ताज ॥
॥ छ० ५१२ । रू० १८६॥

कवित्त एक ममै र्हकि लच्छि। रोहितह ब्रह्म ब्रह्म सिसु।
सनक मनद रु मनत। मकल रुक्केमु पवरि उसि ॥
तिन स्राप भयौ पतन। वैर भावह हरि किन्नौ ॥
हरनकस्स हरनच्छि। इक्क अवतारह लिन्नौ ॥
अवतार एक सिसुपाल भय। दैतवक्र रुकमनिवयर ॥
रावन्न कुंभकरनह बलिय। त्रिय अवतार सुमत भर ॥
॥ छ० ५१३ ॥ रू० १८७ ॥

---

१८४ पाठान्तर निकेत। नकेत। स्येन। स्याम। को। मेव,। रति। धुमकेत। काम। उदित। कोट। जडगीत। बदरी। नहि। किसोर। तुव। ध्रुअं। समान। पै डिढ। डट। जोग। जोगी। युगति। गुण ॥

१८५ पाठान्तर - सट्टक। किवा। जोग। कोटित। गुणा। ध्या। रिष। नो। ब्रह्मं। करम। कर्म। कि। कि। गोकलेस। सो। घन। अदंदुद। अदबुदं। निरम्माय। नै। तोयं। बानी ॥

१८६ पाठान्तर दोहा पुव। स्राप। दिस्ट। वचनति। बचनति। देव। गुरु। ककि। देव ॥

१८७ पाठान्तर– कवित। इक। रोहितह। ब्रह्म ब्रह्म। रु। रुकेमु। तन। भये। कीनो। हरणकसप। हरणकस्य। हरनछि। ईक। लीनौं इक। भयं। दंत-बत। रुकमनि। वयर। रावन। कुंभकरमह। त्रिना। त्रितय।

श्लोक पूर्वशापं मनंदृष्ट्वा स्वामिवचन प्रीतये।
क्रोधमुक्तश्चाविनाशी पीडितो गजराडयम्॥
॥ छं० ५१४ ॥ रू० १८८ ॥

गीतामालची गजराज दनिय भ्रमति कतिय मद्द मंतिय कीजयं।
बल कन्ह अग्गै करिन भग्गै रोस रंगै नीलयं॥
फहरत पीनं बल अभीतं भीम भीतं संजुरे।
गहि दंत पंतिय कंध कंतिय रोस मतिय उब्भरे॥
भ्रियषट प्रमानं बल बलानं सेन मान दुस्तरे।
दिषि कंस सैनं काल ऐनं हृथ्थ गैनं भब्भरे॥
॥ छं० ५१७ ॥ रू० १८९ ॥

भुजंगी-न बालं न बालं किसोरं न तोही। न वृद्धं जुवान न व्रम्न न जोही॥
हनं हंन हंनं विषं बीर बुल्ली। धरे कंध दंतं रने नेत्र पुल्ली॥५१८॥
बलं तो वल्हिद्दी बजानं न देवं। न व्रम्न न देहं न सेसं न एवं॥
महा भाग भागं जुरं जष्पकेवं। दिवं दिष्ट मल्लं सुमुष्टीक एवं॥
॥ छं० ५१९ ॥ रू० १९० ॥

त्रिभंगी - रन रंगे थालं, जेहा कालं, तेहा मालं, चानूरं।
तोसल त्रिमूलं, मुष्टिक थूल, हस्त बिहूल, धूसल्ल॥
रन रंग गनानं, मेलि मिलानं, अंग समान, झमकने।
धव धूसर दंने, मन हर धंते, रज बिलवंते, बलवंते॥
चव गज्ज सतानं, जम सम पानं, बलि बलवान, बोलते।
रन रन बैनं, बहु बल मैनं, कन्ह मर्मैनं उचरंते॥
आवर्त्तनि हल्ल, मं रप गल्ल, बज्जन मल्लं, झूझल्ल॥
धर धर थल हल्लं, पीपर पल्लं अंमर हल्लं, भू भल्लं॥

---

१८८ पाठान्तर --पुर्व। पुब्ब। श्राप। दिष्टा। स्वामी। मृ। प्रीतयं। मुक्तं। अविनासी। गजराज।

१८९ पाठान्तर --दंनीय। भ्रमन। मद मंनीय। उभरे। नैनं। हत। गैने। उभरे॥

१९० पाठान्तर---बालं। बजानं। व्रन। मूठी। देहं। वर्गी। शसं। जरका। स॥

१९१ पाठान्तर --चानूरं। तोषल। त्रिशूलं। त्रिकूल। मधूलं। समानं। गजं। बलमानं। मैनं। केन्हु। ममैनं। हूलं गल्लं बजर। मूझलं। मल्लं। पीपरि। पलं। अंबर। हूलं। भ्रलं। बजिय। भूलें। गैनै। गनानं। षतानं। बषानं।

बज्जियते भूलं, हस्त विकूलं, गैने हूलं, गैतूलं ।
गैगर गत्तानं, घन वतानं, परि बथ्थानं, मल्लानं ।
धम धम लत्तानं, बहु गत्तानं बजिबिन्नानं, उब्भानं ॥
सक्के घन बल्ले, छति धूमल्ले, कीन विहल्ले, झूझल्ले ।
अन रोम रिसल्ले, रंग रिझल्ले, जिन बल झल्ले, धरहल्ले ॥
कसि डोरिय मेवं, हूल धर भेवं, हवि बत भेवं, है वीरं ।
चानूरं सक्कं, धरि मुष्टिक्कं, तन गुर बक्कं, बल नीरं ॥
कटि थान परंसं, पोषित कंसं, जानि जुगंसं, गिरदंते ॥
अन पग्ग पुलंते, मास उल्लंते, मन दम पंते अनपंते ॥
तरवर संतज्जे, आयन वज्जे, घायै गज्जे, भैभानं ।
दोऊ तन बीरं, जम्म सरीरं, बधि गुनितीर, विधि भानं ॥
गुरु जन त्रिरुझानं, बहु अगमानं, धर धर थान, बजिपानं ॥
उप्पारे पग्गं, ब्रह्मंड लग्गं, फिरि फिरि जग्गं, सिर भग्गं ॥
फिरि करं दिप्पिय, आत्रिज लप्पिय, जग महु भप्पिय, नपितानं ।
आतम गुरु पानं, नजि उब्भानं, चंपिय कान, सिर भानं ॥
उच्चारहि बीरं, बहु व्रत नीरं, जम्म सरीरं, जुग भीरं ।
कसि कसि उत्तमं, डोरिय दंमं, करि रिपुनंमं, बिनुहीरं ॥
॥ छं० ५३३ ॥ रू० १९१ ॥

दूहा - हहकारत मनल्ल सुभर । अति बल दिन बल बीर ॥
सुर नर नाग निबद्ध नर । भई कुलाहल भीर ॥
॥ छं० ५३४ ॥ रू० १९२ ॥

रसावला—उत्तमल्लंभरी । अथि धारं धरी ॥
जांनि मत्ते करी । होइ हायं परी ॥५३५॥
घाय बज्जे घरी । गज्जि भट्टों भरी ॥
मच्छ फल्लं टरी । धम्म धम्मं धरी ॥५३६॥
मल्ल झु झ्झे हरी । वारि स्भेदंझरी ॥
मेघ लग्गं गिरी । हेम कंपं ठरी ॥५३७॥

मलानं । लतानं । बहुर । बिनानं । उभानं । सकैं । धन । बल्लैं । धुसल्ले । धूमलै । भूभलैं । दिसल्लै । रिझल्लै । झलै । हल्लै । गोरीय । चाणूरं । सक । धर । मुष्टिकं । बकं । पयंसं । गिरिदम । अनं अमपंते । नरवर । संतजे । बजै । गजे । जम्म । बंधि । विधि । त्रिरु । ब्रह्म । उपारे । पगं । ब्रह्मंअ । जंग । दिप्पिय । लषिय । भषिय । उभानं । चंपय । उछ्छारहि । डोरीय । विन हंमं ।

१९२ पाठान्तर - हहकारति । मलनि ।

हीय ता कित्तरी । प्रान पछ्छैलरी ॥
जानि धक्कै धरी । उन्न उन्नं हरी ॥५३८॥
धूरि भूमी भरी । डोर लग्गी ढरी ॥
श्रोन मुष्षं झरी । द्रोन द्रुग्गं षरी ॥५३९॥
मुठ्ठ चुक्कं परी । राम काम रुरी ॥
मल्ल भूमं परी । कंस त्रामं डरी ॥५४०॥
मंच मुक्की मुरी । धाय जद्दों धरी ॥
केम षंचै करी । ★ ★ ॥
॥ छं० ५४१ ॥ रू० १९३ ॥

दूहा -सत्तपुत्त बंधव सपत । लष्ष असी गनि भृत्त ॥
काम आय बलिभद्र कर । कन्ह कंम नव हुत्त ★ ॥
॥ छं० ५४२ ॥ रू० १९४॥

कवित्त -राति कस सुपनंत । कंध्र दिष्षौ न कंध पर ॥
वर ग्रिद्धव उच्चार । षोज लभ्भै न अग उर ॥
चिन्ह हीन तन चित्त । बीर जग्यौ भ्रम षंडे ॥
मुकति बंम मनि हीन । रंग मडप फिरि मंडे ॥
चानूर बीर मुष्टक बलिय । नीमल्लह रन रग मजि ॥
कलि काल म कलि काल गति । कलिय काल भजन सुगजि ॥
॥ छं० ५४३ ॥ रू० १९५ ॥

दूहा जमुन सपन्नो कंम हृति । विस्व विराजन माथ ॥
बर ब्रिश्राम विश्राम घट । धनि जदुनाथ सुहाय॥छं०५४४॥रू०१९६॥

अरिल्ल मलन मारि पछारति कंसह । बंधव के रिपु केरि पुनंसह ॥
सूरसेन पुत्तिय सुत छंडिय । उग्रसेन सिर छत्रह मंडिय ॥५४५॥
जनम धाम वसुदेव देवकिय । किय बरपान प्रसन्न अंसु किय ॥
विप्रदान ग्रहगान सुमडिय । कवि कविचंद इद सुष बंदिय ॥
॥ छं० ५४६ ॥ रू० १९७ ॥

---

१९३ पाठान्तर मलं । अति । अग्नि । द्रुगी । करी । मुरी । मञ्ज । मल । मुभी कितरो प्रांन । पछे । जानि । धकै । ऊन । उन । द्रुगं । मुठ । चुकं । झरी । भरी । मुकी । यद्दो । ★ ★ मेरे पास की किसी पुस्तक मे पाठ नहीं है ॥

१९४ पाठान्तर—मत । पुन । भृग । कांम हुन ।

★ यह रूपक स० १६४७ की लिखित पुस्तक मे नही है और उसके पीछे की सं० १८५८ वाली मे है ।

१९५ पाठान्तर—गृधव । उचार । मुगति । चाणूर । मुष्टिक । तोसलह ॥

१९६ पाठान्तर संपनो । विश्व । विश्रांम ।

१९७ पाठान्तर -मालन । जरासिंध । पुतिय । धांम । देवकीय । पांन । बंसु । गृह गाम ॥

दूहा – हत्यो कंस केसी हत्यौ। काल ग्रहति जिन मात ॥
नंद कह्यो नन्दादि सौं। जाहु ग्रेह अब तात ॥छं० ५४७॥

जननि जसोदा सौं कह्यो। राम किस्न संदेस ॥
ह्वां दधि मांषन चोरते। ह्यां हत कंस नरेस ॥छं० ५४८॥

गोधन गोपी ग्वाल सब। सुष रहियो ब्रजवास ॥
दिन दस पाछें आय हौं। मात जसोदा पास ॥छं० ५४९॥

बंसी बेत बषान बन। गेंद हींगुरी जोरि ॥
धरियो सबै दुराय कै। लेई न राधा चोरि ॥छं० ५५०॥

अंसुधार अंसुरार मुष। परत नंद सब गोप ॥
जो छांडे अब दीन करि। कत राषे जल कोप ॥छं० ५५१॥

अघ बक धेनक त्रास तें। अरु दावानल पान ॥
कत राषे इन विघन तें। जमला अरजुन ढान ॥छं० ५५२॥

इह कहि सब अंकन मिले। नंद गोप सब साथ ॥
पगन परत ब्रज जात मग। कहत सुनाथ अनाथ ॥छं० ५५३॥

डग मगि पग पेंडन चले। फिरि चितवै गोपाल ॥
का जाइ जसोदा कहैं। बिना संग ब्रजलाल ॥छं० ५५४॥

जाइ जसोदा सों कह्यो। रहे राम बलबीर ॥
सुनत जसोदा यों टरी। ज्यों तरु काटे नीर ॥छं० ५५५॥

गोपी गोप गोपाल बिन। यों दीषत दीनंग ॥
कहूं न मन माने निमष। ज्यों मनि बिना भुयंग ॥छं० ५५६॥

सद माषन साटो दही। धर्यो रहै मनमंद ॥
षाइन बिन गोपाल को। दुषित जसोदा नंद ॥छं० ५५७॥

प्रभुमाया फेरी प्रबल। सब लागे ग्रिह दंद ॥
पलन सुहाई राधिका। बिन बृंदावन चंद ॥छं० ५५८॥

घर अंगन गायन षिरकि। जमुना जल बन कुंज ॥
फिरत उचाटी सी भई। बिन बृंदावन चंद ॥छं० ५५९॥

---

१६८ पाठान्तर –सौ ॥ ५४७ ॥ सुं। मान्यौ ॥ ५४८ ॥ रहीयो। पाछे। आइहौं ॥ ५४९ ॥ वठ। गिंद। हिंगुरी। हिंगूरी ॥ ५५० ॥ असुरार। छांडै। ॥ ५५१ ॥ पांन। ढांन ॥ ५५२ ॥ कह्या। कहै। विना ॥ ५४३ ॥ सौं। यौं। ॥ ५५५ ॥ विन। दिषत। हीनंग। निमष। विना ॥ ५५६ ॥ मांषन। विन।

वंसीवट बन बीथिकनि । दधि रोकन की ठौर ।।
नैकु न माने कहु न मन । कहों कहां लों और ।।छं० ५६०।।

लीला ललित मुरार की । सुक मुनि कही अपार ।।
ते बड भागी देव नर । जपत रहत नित्यार ।।छं० ५६१।।

नद तात पत्तो सु ग्रह । सिसु बसुदेव प्रमान ।।
कोइ कला मथुरा सु बसि । चली द्वारिका निधान ।।छं० ५६२।।

मधु मंडित मधु पुरित मधु । मधु माधुर सु अजोग ।।
कवि बरनिय सुर स्वामि को । कहन दसम सभोग ।।

।। छं० ५६३ ।। रू० १९८ ।।

जुतिचाल बाले जसोदा मनिर्लाले । कस काले सुकाले ।।
जमोमनि नंदो गोप बंदो । कदो गुट्ठिगो बाल चदो ।।
दीन बंदो न बदो । जयो बासुदेव नन्दा ।।

।। छं० ५६४ ।। रू० १९९ ।।

बौद्धावतार की कथा

दूहा उतपन कैकट ★ देस कलि । असुर जग्य जय हारि ।।
जय जय बुद्ध सरूप सजि । है सुर सिद्धि सुधार ।।

।। छं० ५६५ ।। रू० २०० ।।

विराज—जयो बुद्ध रूपं । धरंनं अनूपं ।। हुगी बेद नदे । दया देह बदे ।।
परूहंन रष्षे । कियं भष्षभष्षे ।। जय जग्य जोगं । कियं दक्ष भोप ।।
म्रिगया विहारं । सुरष्षे दायरं । असूरं सुगत्ती । षहं रष्षिपत्ती ।।
कला भंजि कालं । दया ध्रंम पालं ।। सूरं ग्यान मत्तं । प्रवत्ते सुजनं ।।
धरे ध्यान नूपं । नमो बुद्ध रूपं ।। ।। छं० ५७० ।। रू० २०१ ।।

।। ५५७ ।। फिर । बृंदाबन ।। ५५८ ।। परकि । वन ।। ५५९ ।। नैकुं । लो ।।५६०।। निन्यार ।। ५६१ ।। पत्तौ । प्रमाण । निधांन ।। ५६२ ।। स्वामि । को ।। ६६३ ।।

२०० पाठान्तर –ककट ।।

★ श्रीमद्भागवत पुराण में बुद्ध की उत्पत्ति "कीकट" में होनी लिखी है-

ततः कलौ संप्रवृत्ते संमोहाय सुरद्विषाम् । बुद्धो नाम्ना ऽजिनसुतः कीकटेषु भविष्यति १ । ३ । २४ ।।

२०१ पाठान्तर –रष्षै । मष्षै । ध्यांन ।।

कल्कि अवतार की कथा

दूहा कलि कलिंग उतपन असुर। हती ध्रंम धर भूप ॥
कलि कलिमल सों हरन हरि। कियौं कलंक सरूप ॥
॥ छं० ५७१ ॥ रू० २०२ ॥

विराज भय भूप लिंग। अनीत उपगं ॥
बिपंनी दयारं। अधर्न विचार ॥
कलकं सुकालं। बिया पुच्छ आलं ॥
धरा धम्म लोपं। चवं एक गोपं ॥
वध्रे मेच्छ मत्तं। चिन काल रत्त ॥
जुगं वेद हारी। न ग्यानं बिचारी ॥
नयं दान ध्यानं। सुपं जानि मान ॥
नहो मन्न पूजा। न मोच अनूजा ॥
न जग्यं न जापं। सबै आप आपं ॥
न देवं न मेवं। अहं मेव मेवं ॥
न गाहा न गीय। न पन्य सुग्रीय ॥
न ग्रथ न पुरानं। धरायन्न जान ॥
धरे ध्यान माम। किय ग्यान नाम ॥
कल्की सरूप। धरन अनूप ॥
हय स्याम रोहं। किरीटी ससोहं ॥
जुगं बाहु चार। मनीजोनि तारं ॥
कटी पीत पट्टं। महा बिप्प भट्टं ॥
करे पग्ग धार। विकट्टं करार ॥
मुठी हेम सेतं। मजो धूमकेत ॥
करे खग्ग धारं। असूरं प्रहारं ॥
कियं षंड षंड। धरा पूर रुड ॥
धरं धम्म चारं। पवित्र विहारं ॥
कियं श्रब्ब मत्त। सुषौनी पवित्रं ॥
सुरं पुप्फ विष्टं। सुचारं सुतिष्टं ॥

---

२०२ पाठान्तर--हति। सों॥

२०३ पाठान्तर—कलिगं। पुछ। मेछ। ग्यांन। ध्यान। मानं सामं। तांमं। स्यामं। कटि। धूमं। किरवार। ध्रम्मचार। सुष्षौनी। पुप्फ। सत्यं॥

रचे सत्त जुगं। कलीकाल भग्गं॥
कृत सत्य नूपं। जयो ता सरूपं॥

॥ छं० ५८४ ॥ रू० २०३ ॥

उपसंहार का कथन

दूहा –राम किसन कित्ती सरस। कहृत लगै बहु बार॥
छुच्छ आव कविचद की। सिर चहुआना भार॥

॥ छं० ५८५ ॥ रू० २०४ ॥

कवित्त सिर चहुआना भार। राम लीला छिग गाइय॥
सनक सनद सनत्त। कही सुकदेव न जाइय॥
बालमीक रिषराज। किसन दीपायन धारिय॥
कोटि जनम सभवै। तोय हरि नाम अपारिय॥
मानुच्छ मद मति मद तन। पुब्बभार चहुआन सिर॥
ज कह्यौ सलप मति सुलप करि। सुहरि चित्त चित्यौ सुथिर॥

॥ छं० ५८६ ॥ रू० २०५ ॥

इति श्रीकविचंद विरचते प्रथीराजरासके दसावतार बर्णनं नाम द्वितीय प्रस्ताव संपूर्णम् ॥२॥



---

२०४ पाठान्तर -राम। छुछ। चहुआनां॥

२०५ पाठान्तर –चहुवानं। रांम। मुनव। नांम। मांनुछ। चहुंआनं॥

अथ दिल्ली किल्ली कथा लिख्यते

(तृतीय समय)

मंगलाचरण

चंद की अपनी स्त्री के प्रति उक्ति कि विधना ने दिल्ली सोमेसरनन्द के बसने को निर्माण की वं ।।

साटक -राज जा अजमेर केलि कलय, वंद व्रत सभरी ।
जुद्धारा भर भीर मीर वहनो, दहनो दुरगी अरी ।।
सो सोमेसरनंद दद गहिला, वहिला वन ★ वामन ।
निम्मान विधना सुजान कविना, दिल्लीपुर वासन ।।छ० १ ।।रू० १।।

चंद का अपनी स्त्री को कहना कि अनंगपाल की पुत्री को पुत्र उत्पन्न होने से दिल्ली की पूर्व्व कथा का प्रसंग प्राप्त हुआ है ।

कवित्त अनगपाल पुतीय सुरंग †, पुन इच्छा फल दिन्नो ।
नालिकेर फल सुफल, मन आरभन किन्नो ।।
तब प्रसाद उप्पनो, पुब्ब सडी कथ भारिय ।
बर बीमल वै बस, कह्यो वर द्रुग विचारिय ।।
प्रथिराज जोनि बरनीह कवि, अग्निमन सामत भर ।
चदानि वदनि सुनि चदमनि भयौ दानवी वसउर ।।छ०२।।रू०२।।

बालकपन में पृथ्वीराज का दिल्ली प्राप्त करने का स्वप्न देखना

दूहा बालप्पन प्रथिराज ने, इह सुपनन्तर चिन्ह ।
लै जुग्गिनि जुग्गिनि पुरह ★, तिलक हथ्थ करि दिन्ह।।छ०३।।रू०३।।

---

१ पाठान्तर बहिला । वामन । सुजान । बामन ।।

विदित रहे कि यहा कवि ने किसी देवता का मगलाचरण न कर के पदार्थ-निर्देशवत् मगलाचरण किया है ।।

★ जहा दिल्ली बसी है उस बन का पुराना नाम है

२ पाठान्तर †अधिक पाठ है । पुत्र । [illegible] । दीनो । कीनो । प्रसाद । ऊपनो । चारिय । वै । दुग्ग । विचारीय । प्रथीराज । अरामत । दानव ।।

ध्यान मे रहे कि यहा से सब कथा चद और उसकी स्त्री के सवाद मे है और उस सवाद के अंतर्गत अन्य सब सवाद वर्णन किए गए है, अतएव छदो का लगाना कुछ गूढ सा हो गया है । निदान हमारे दिए शीर्षको के बल से अर्थ सुगमता से लग सकता है ।।

कछु सोवत कछु जागते, निसि सुपनन्तर पाय।
अद्ध रयन के अंतरै, सुष सुत्तह सुभदाय॥ छं० ४॥ रू० ४॥
अभयदायिनी नाम तिहिं, जुग्गिनि जग आधार।
सुपनंतर सुभदायिनी, आयै आप पधार॥ छं० ५॥ रू० ५॥
कनक कंति दुति अंग की, निरषि सु पातग जात।
परमानन्दप्रदायिनी, पार करन जग मात॥ छं० ६॥ रू० ६॥
नष सिष प्रभा प्रकास दुति, चष मुँष कमल सुफूल।
व्रन्न ब्रन्न नग जोति जग, जर कस कन्नि दुकूल॥ छं० ७॥ रू० ७॥

पृथ्वीराज की माता का उससे स्वप्न का वृत्तान्त पूछना॥

दूहा सुपन पुच्छि माता तबै, कह्यौ पुत्र सब भाय।
जो दिष्षिय तुम अर्द्ध निसि, सो कारन समझाय॥ छं०८॥रू०८॥

पृथ्वीराज का माता को उत्तर दे स्वप्न का वृत्तान्त कहना॥

कवित्त करि जुग्गिनि रत भेस, सुरंग सिंगार अभासिय।
चंद पत्ति तारक्क, चरन परि त्रिटि प्रहासिय॥
अंबर दिय उच्चार दिव्य बानी धुनि मंडिय।
सुपनंतर चहुवान, जाय जुग्गिनिपुर मंडिय॥
जाग्रत मात दिष्षो सुपन, प्रक्रति न काय निज थान रहि।
भय प्राय मात पुच्छिय प्रगट, सो सुपनंतर अरथ कहि॥
॥ छं० ९॥ रू० ९॥

३-७ पाठान्तर— बालापन। पृथ्वीराज। निसि। जुग्गिनि। जुगनिपुरह। हुष॥ ३॥ निशि। पाइ। अध। रयनिकैं। सुभ सुत्तै सुषदाइ। ४॥ अभैदायिनी। तिहि। जुगिन। सुभ दायिनी। आवै॥ ५॥ अगमह। पातक॥ ६॥ सफूल। सुफूलि। वरन बरन नग। जर्कस॥ ७॥

इन मे स० १६४३ की लिखित पुस्तक के अनुसार दोहा ६ और ७ का पाठ है, परन्तु उसके इधर की लिखी नवीन पुस्तको मे उनके पहिले पाद तो ऐसे ही हैं, किन्तु शेष तीन पाठ ६ के ७ मे और ७ के ६ मे लिखे मिलते है॥ ★जुग्गिनिपुरह—दिल्ली का एक पुराना नाम है॥

८ पाठान्तर —सुपिन। पुछि। कहौ। कह्या। समभाय। सबभाइ। दिषिय। दिष्यविदि। समुझाइ॥

९ पाठान्तर— कवित्त षट्पद। जुगिनि। सुरग। सिङ्गार। अभ्यासिय। तारक (कं) अधिक पाठ है। भान। प्रहासीय। उचार। बानी। मंडीय। चहुवांन। चहुआंन। जाइ। जोगिनपुर। छंडिय। जाग्रत। मंत। दिष्यो। सुपन। प्रकृत। कोइ। पुछि। सुपनंतर। अर्थ॥

पृथ्वीराज की माता का स्वप्न का वृत्तान्त सुन
अद्भुत रस में रंजित होना ॥

अरिल-सुनि मुनि बचन मात नव बुल्लिय, सुभ अद्भुत चित्तरस झुल्लिय॥
सुष दुष द्रिग भरी जल्ल आंइय. मन भो हास करुन फुनि आइय ॥
॥ छं० १० ॥ रू० १० ॥

उसका ज्योतिषियों को बुला स्वप्न का सत्यफल पूछना ॥

दूहा तब बुलाय सब जोतगी, कही सुपनफल सत्य ।
दिवस पंत के अंतरे, होय सु दिल्लीपत्ति ॥ छं० ११ ॥ रू० ११ ॥

गाथा ढिल्ली वै स्वप्न न, प्रात कहिय ★ प्रगट त्रिप्पायं ।
जोतिग गनिक गुनीस, गुनियं सो सत्ति मत्ताय ॥छं० १२ ॥ रू० १२॥

ज्योतिषियों का उत्तर दे कहना कि पृथ्वीराज दिल्ली का राजा होगा ॥

दूहा न इह बात जोतिग घटै, मनस ध्रुअ थिरताव ।
जोग नेर † जोतिग कहै. प्रभु सु होय प्रथराव ॥ छं० १३ ॥ रू० १३ ॥

ज्योतिषियों को बिदा कर माता और पुत्र का एक गृह में जा बैठना ॥

दूहा न इह कथ्य दुजराज कथि प्रनमि करी सु बिदाय ।
मात पुत्र दो इक्क गृह बरमति बैठे आय ॥ छं० १४ ॥ रू० १४ ॥

अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र के आगे दिल्ली की पहिली
किल्ली की पूर्व्वकथा का कहना और राजा कल्हन का वनक्रीडा
करते सुसा और स्वान के चरित्र से भूमि का वीरत्व देखना ॥

कवित्त तब अनगानी पुत्ति, कहै सुनि पुत्त सु बत्तह ।
पुव्व कथा ज्यो भई, सुनो त्यों कहूं अपुब्बह ॥

---

१० पाठान्तर -बचन । चित । झुल्लिय । द्रिग । भरि । भए ॥

११ पाठान्तर—बुलाय । बुलाइ । जोतषी । कहि । कहै । सति । कहै । होइ । दिल्ली । पति ॥

१२ पठान्तर -कहीय । ★ यहां "अग्ग" पाठ सं० १८५९ की पुस्तक में अधिक हैं । विप्रायं । मति । मता ॥

१३ पाठान्तर -नह । बात । मनिसु । ध्रुअ । जोगनयर । जोतिषि । होइ । पृथुराज ॥

† दिल्ली का पुराना नाम ॥

१४ पाठान्तर -नह । कथ । विदाय । पुत । दोइ । इक । ग्रह । बैठ । आइ ॥

१५ पाठान्तर -पुत्रि । कैह । पुत्रि । पुत्र । बतह । ज्यों । सुनौ । त्यूं । कहौं । पित । पुत्रि । किल्हन । स्वांन । सबील ति । अश्वीलत । सनुष । होय । होइ ।

हम पितु पुरिषा पुब्ब, नृपति कल्हन ★ वन क्रीलत।
सुसा छंडि ता पुट्ठ, स्वान संचग्यि सचीलत।
सिसु संमुष हुइ बैठी सु तहां, भग्गि स्वान भैभीत हुअ।
सब सथ्थ तथ्थ आच्चिज भय, करि पारस टढ्ढे सुभय।।छं०१५।।रू० १५।।

उस वीरभूमि में व्यास का कीली गाड़ना ।।

दूहा व्यास जोति † जगजोति तहँ, सिद्ध महूरत नाव।
दैव जोग सेसह सिरह, किल किल्लित सु ग्राव ।।छं० १६ ।। रू० १६ ।।

वहां कल्हन का कल्हनपुर बसा कर राज करना और फिर उसके कितनीक पीढी पीछे अनंगपाल का होना ।।

दूहा कल्हनपुर ★ कल्हन नृपति, बासी नृप निज साज।
कितक पाट अंतर नृपति, अनगपाल भय राज ।।छं० १७ ।। रू० १७।।

इतनी कथा सुनकर राव (पृथ्वीराज) के मन में अचरज हुआ ।।

दूहा- सुनत राव इह कथ्थ फुनि, उपजिय अचरज अंग।
सिथल अंग धीरज रहित, भयो दुमति मति पंग ।।छं० १८ ।। रू० १८।।

विपरीत समय का आना देखकर सकल सभा का शंकित होना ।।

दूहा- सकल सभा संकित भई, व्यास वयन वर वेद।
क्रमय समय विपरीत भय, उपज्यो अंतर पेद ।।छं० १९ ।। रू० १९।।

दूसरी किल्ली की कथा

अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र (पृथ्वीराज) के आगे अपने पिता के फिर से दिल्ली बसाने के लिए पाषाण और किल्ली गाड़ने की कथा का कहना ।।

कवित्त— अनगपाल पुत्तीय, फेरि बुल्ली सुत सम्मह।
एक बत्त आचिज्ज, उपजि सो पित्त सु तब्बह ।।

बैठीज। स्वांन। श्वान। भय। होइ। मथ। तथ। आजिज टट्टे ।। ★ कल्हन चन्द्र का वाचक होने से राजा चन्द्र। उपसंहारणी टिप्पण देखो ।।

१६ पाठान्तर— दैवयोग। सिरनि। कील। कलित ।।

† व्यास राजगुरु का वाचक है। तँवर राजपूतो के पाडववंशीय गिने जाने से उनके राजगुरु व्यास कहाते थे। यह वह व्यास था जो कल्हन राजा के समय में राजगुरु था ।।

१७ पाठान्तर— किल्हनपुर। किल्हन। अनंगपाल। भयो ।।

★ कल्हन राजा के दिल्ली बसाने के समय का दिल्ली का पुराना नाम कल्हनपुर है ।।

१८ पाठान्तर—कथ। अचरिज ।।

१९ पाठान्तर—बयन। बिपरीति ।।

पुच्छि व्यास † जग जोति रोज मंद्यो उच्छव घन ‡ ।
ग्राम नाम अप्पियै, कुसल जिन होय ग्रेह धन ॥
चिंतयो चित्त दुजराज तव, अगम निगम करि कढ्ढयो ।
सुभ घरी महूरत सधि कं, फिरि पाषान सु गड्डयो ★॥
॥ छं० २० ॥ रू० २० ॥

व्यास का कहना कि पांच घड़ी तक पाषाण को हाथ न लगाने से वह शेष के सिर पर दृढ़ हो जायगा परन्तु राजा का इसे अनर्थ कर मानना ॥

कवित्त कहै व्यास जग जोति, सुनहि तूवर नरिंद तुअ ।
एह सेस सिर ग्राव, अचल निहचल सुरग ध्रुअ ॥
मोहि अरथ पल एह, छेह अप्प नह राजन ।
पंच घरी इह सुक्कि, राज रहियो इन काजन ॥
इतनो जु कह्यौ वर व्यास तहँ इन अनथ्थ का मानयो ।
भवछित्त बत्त मिटै न को, क्रत्त क्रम्म नह जानयो ॥छं० २१ ॥ रू० २१॥

साठ अंगुल की कीली गाड़ना अर्थात् शंकुपात कर्म्म करना ॥

अरिल्ल सुनी वत्त इह तत्त प्रमान व्यास वर्गी किल्ली पुर § थान ।
साठि सु अगुल लोहय किल्लिय सुकर सेस नागन सिर मिल्लिय ॥
॥ छं० २२ ॥ रू० २२ ॥

† ध्यान में रहे कि कन्हन के पीछे कई पीढ़ी तक तंवर कन्हनपुर में सुख से राज करते रहे और रूपक १८ और १९ कवि ने दूसरी किल्ली की कथा का प्रसंग मिलाने के लिये कहे हैं ताकि जो कुछ विपरीत हुआ है वह दूसरी किल्ली के पीछे हुआ है ॥

२० पाठान्तर –अनगपाल । पुत्रीय । बोली । ससह । बन । अचिज । पित । तवह । बुद्धि । व्यास । उछल । नाम । कुशल । मद्धि । रढ्यो ॥ † अनगपाल के समय का राजगुरू ॥

‡ इससे स्पष्ट है कि अनंगपाल ने दूसरी बार दिल्ली बसाने का प्रदान संतान की कामना से किया था । इसी लिये कवि ने–ग्राम नाम अप्पिये, कुसल जिन होय ग्रेह धन–कहा है । और "धन" शब्द यहां सन्तान का वाचक है ॥

★ "फिर पाषान सुगढ्ढयो" अर्थात् वास्तुशास्त्रानुसार शिलान्यास कर्म्म किया ॥

२१ पाठान्तर– तूं अर । देष । फिर । निश्चल । ध्रुय । इक । सुकि । सु । तहां । अनथ । मांनयौ । कौं । मिट्टै । क्रत । क्रम । जानयौ ॥

२२ पाठान्तर—बत्त । प्रमांनं । किलीपुर । किल्लीय । मिलिय ॥

§ अनंगपाल के समय का दिल्ली का नाम "किल्लीपुर" ॥

सब के बरजने पर भी उस कीली को उखाड़ डालना

अरिल्ल मुंध लोइ आचिज्ज मु मान्यौ. भावी गति सो व्यास न जान्यौ।
बरजे सह परिगह परिमान. उप्पारी किल्ली भू थान ॥छ० २३ ॥रू०२३॥

पाषाण के उखाड़तेही रुधिर की धार चलना और आश्चर्य्य होना ॥

कवित्त अनगपाल पृथ्वी, नरेस आचिज्ज मु मान्यौ।
भवसि बत्त जो होय, सोय ब्रह्मान न जान्यौ ॥
आराधत वर व्यान, सोइ ससार मुषास्यो।
देवक्रम्भ करि जोग सोइ पाषान. उपास्चौ ॥
रुधि छल्ल छुट्टि ममुह चल्लिय, अति अद्भुत्त मु दिष्षियौ ॥
परिगह पवास मत्री नृपति, इन आचिज्ज मु लष्षियौ ॥
॥ छ० २४ ॥ रू० २४ ॥

पाषाण का उखाड लेना सुन व्यास का दुखित हो राजा के पास आना ॥

दूहा मुनि आयौ वर व्याम तह, दुष पायौ मन मझ्झ।
का जप्यौ मुष नृपति सौं. इह मति मूढ अवुझ्झ ॥
॥ छ० २५ ॥ रू० २५ ॥

अनंगपाल का पश्चाताप करना और व्यास का आगम कहना ॥

कवित्त अनगपाल छक्कवै, बुद्धि जो इमी उकिल्लिय।
भयौ तुअंर मति हीन, करी किल्लीय ते ढिल्लिय ॥
कहै व्यास जग जोति, अगम आगम हौ जानों।
तूअर ते चहुआन, अत ल्है है तुरकानों ॥
तूअर मु अवट्टि मडव घरह, इक्क राय बलि बिक्कवै ॥
नव सत्त अत मेवान पति, इक्क छत्त महि चक्कवै ॥
॥ छं० २६ ॥ रू० २६ ॥

---

२३ पाठान्तर --लोय। अचरिज। मान्यो। जान्यो। बरजै। मब उपारिय। किल्लीय ॥

२४ पाठान्तर --अनंगपाल। प्रथवी। अचरिज। बत। मोइ। मोइ। जान्यौ। ब्यान। मोय। भोइ। चलीय। अदभूत। दिषियौ। परिगृह। नृपति। आचिज। लिषियौ ॥

२५ पाठान्तर --तहां। नह मंझ। नृपति। सो। मूढ मति अममंझ ॥

२६ पाठान्तर --अनंगपाल। यमी। उक्कलिय। मय। तौअर। तें। ढिल्लीय। किल्ली। हुं। जानौ। तोअर। तें। चहुवांन। लहै। होइ है। तुरक। इक। राइ। बिकवै। अंति। मनि। इक। चकवै ॥

व्यास का अनंगपाल को खेद न करने का उपदेश करना ॥

पद्धरी उच्चरयौ व्यास जग जोति बीर। मृत सुर्ग लोक पाताल नीर।
त्रयकाल दरस दरसिय सु देव। व्यासह समान जोतिगिय तेव ॥ छ० २७॥
ससार सार अस्सार कीन। वर व्यास बुद्धि कोविद प्रवीन ॥
सड्यो सु राज सौं क्रोध नृप वरज्यो सुकिष्ण व्यासह सरूप ॥ छ० २८॥
जनमेंज राज तम मत्त मान। आनी न चित्त तिन निमष ग्यान ॥
षिति राज सरिस रिष राइ बोलि। कीनीय बत्त तुम गत्त षोलि★॥छ०२९॥
हू गड्डि गयौ किल्ली सजीव। हल्लाय करी ढिल्ली सईव ॥
तुंअर अवद्दि सडव सुथान। भोगवै भूमि सुरतान पान ॥ छ० ३०॥
सो मत्ति जानि तुंअर त्रिनेन। मनि करै रोम राजन सुहेत ॥
जान्यौ सु कह्यौ वर व्यास रूप। अटी सुवत्त वरजित भप ॥ छ० ३१॥
हिन्दून † जानि पडव सु वस। तिन भयौ अस पारथ्थ नस ॥
तिहि वस भीम अरु धम्म सुन। तिहि वस वल्ली अनगेस तुत्त ॥ छं० ३२॥
मति करहु सोच सम मत्र मानि। इअ राज काज वर चाहुवान ॥
वर वस सुमति अति सत्ति प्रताप। दिनक्किनक तपै चहुवान आप ॥छ० ३३॥
फिरि व्यास कहै सुनि अनग राइ। भवतव्य बात मेटी न जाय ॥
रघनाथ हाथ त्रैलोक देव। ते कनक म्रग्ग लागे पछेव ॥ छ० ३४॥
मारीच अप्प आयौ छरन्न। इइ होनहार सीता हरन्न ॥
पडवन जाग आरभ कीन। वरज्यो सु व्यास पंडित प्रवीन ॥ छ० ३५॥
दुरवास द्वारिका दिषन आइ। जदुवन बाल मन्यौ उपाइ॥
करि पुरुष नारि रचि गर्भ हास। कह देव गात्रि उरजे सु आस ॥ छ० ३६॥
षिजी कही विप्र नस उदर जोइ। जदुवन वंस नष्पै सु षोइ ॥
बरजे सुधम्म सुन रमन जूप। देषंत अप ते परे कूप ॥ छ० ३७॥
केतेक कहौं सुनि अनग राइ। जानति जान कीनौ उपाय ॥
भवतव्य वात उतपात मोटि। मिट्टै न बुद्धि कोइ करो कोटि ॥ छ० ३८॥
जिन करौ षेद उपदेस मोहि। हौं जानि ग्यान इह कहौं तोहि ॥
करि धरा धम्म उद्धारि देह। संसार अनित छंडो सनेह ॥ छं० ३९॥
त्रैलोक जीत्ति जिन जेर कीन। ते गये अंत हुइ आपु हीन ॥
इक गल्ह अमर संसार सार। रष्षै न पहुमि ते अड़ गमार ॥
॥ छं० ४० ॥ रू० २७ ॥

---

२७ पाठान्तर —उचर्यो। म्रत। स्वर्ग। समांन। जोतगी। असार। बुधि। सो॥

अनंगपाल के पीछे जो जो राजा दिल्ली में होंगे उनके विषय में व्यास का भविष्य कथन करना ।।

तुंअरों का नाश और चौहानों का राज्य होना ।।

कवित्त सुनि अनगेस नरेस, मोहि इह आगम बुझ्झै ।।
अंत राज चहुआन, मोहि इह बेगो सुझ्झै ।।
सब तूंअर षग मग्ग, भिरिग मंडप आहुट्टै ।
मार धार धर धूमि, भुगति पै बधन छुट्टै ।।
इह दोष राज दिज्जै नहीं, मैं बहु बार वरज्जयो ।
भवतव्य बात मिट्टै न को, होइ सु ब्रह्म सिरज्जयो ।।

।। छं० ४१ ।। रू० २८ ।।

चौहानों के पीछे मुसल्मान और उनके पीछे फिर हिन्दुओं का राज्य होगा ।।

कवित्त - ता पच्छै सुनि राज, राज भज्जै चहुआनिय ।
बहुत काल अन्तरै, तपै पुहमी तुरकानिय ।।
मेछ्छ अवनि तप अहुटि, प्रलै हुइ है तिन बसह ।
बहुरि जोर हिन्दून, राह हुइहै इक असह ।।
संघारि सकल दानव कुलह, धम्म राह सह विस्तरै ।।
जितै जगत तप प्रबल करि, आनि दिसा विदिसा फिरै ।।

।। छं० ४२ ।। रू० २९ ।।

फिर मेवातपति सं० १६७७ में दिल्ली जीत लेंगे★ ।।

कवित्त नव सत्त वर अंत, बहुरि ढिल्ली पति होई ।
धग्ग षोद पुरमान, पहुमि चक्कवै सु जोई ।
महि मेवात महीप, दीप दीपनि दल मंडे ।
किक्क रहे पय आप, इक्क पल षंड निषंडे ।।
मडै सु पहुमि प्रथिराज जिम, सत्त वात जोतिक जपिय ।
मानी सु सत्ति करि सवनि इह, व्यास वचन व्यासह थपिय ।।

।। छं० ४३ ।। रू० ३० ।।

---

२८ पाठान्तर --जनमेज । मन । मान । आनी । ग्यांन ।।

★ ये दोनो पाद सं० १६४७ की लिखित पुस्तक मे नही है और उसके इधर की संवत १८५९ की मे है ।। २९ ।। हुं । किलि । किली । गढि । हलाप । ढिली । इव । तुंअर । अवटि । सुथांन । सुरतानं । पांन ।। ३० ।। मति । जांनि । तोंअर । जान्यौं । झूठी । स बरबत्ति ।। ३१ ।। आनि । षारब । भुम्म सुत । वसं । वली । सुव ।।

दूहा सोरै सै सत्योतरै, विक्रम साक वदीत ।
दिल्ली धर मेवातपति, लेहि पग्ग बल जीत ॥
॥ छ० ४४ ॥ रू० ३१ ॥

व्यास का कहा हुआ भविष्य नहीं टरेगा ॥

कवित्त तिहि जथ वत्त प्रमान, मुनहि दिठ तुच्छ मुअंनं ।
बर म्लेच्छनि मत घटइ, ध्रम्म पारम रम रंनं ॥
हुइ नव मत्त प्रमान, धूअ टरइ रवि टरइ ।
टरै न व्याम वचन्न, मान जम तें अजु टरई ॥
ए सब अजान मता जु ही, परी इलूछ मछ्छी मुही ।
परि प्रै प्रमन्न परनीत करि, नव काढन ग्रावह जुही ॥
॥ छ० ४५ ॥ रू० ३२ ॥

माता का दान और होम करना ॥

मुरिल्ल -सनि श्रोतान भए चहुआनं कही मात मति तत्त सुजानं ।
बहुरि पुछ्छि दुजराजन आनं, कियौ होमदै दान प्रमानं ॥
॥ छं० ४६ ॥ रू० ३३ ॥

३२ पाठान्तर मानि । हुर । चाहुआन । चाहुआन ॥ ३३ राम मृग । लगे ॥ ३४ ।

† इस महाकाव्य मे "हिन्दू" शब्द यहा पर आया है । उसकी व्युत्पत्ति वाचस्पत्य बृहत्संस्कृताभिधानकर्त्ता और शब्दकल्पद्रुमवाले ने पुल्लिंग मे यह की है—

"हीनं दूषयतीति । दुष + ड. पृषोदरादित्वात् साधु जातिभेदे । जातिविशेषः ॥ और उसका प्रयोग मेरुतंत्र मे यह दिखाया है -

पश्चिमाम्नायमंत्रास्तु प्रोक्ता. पारस्य भाषया ।
अष्टोत्तरशताशीतिर्येषा संसाधनात् कलौ ॥
पंच खाना. सप्तमीरा नव शाहा महाबला: ।
हिन्दुधर्म्मप्रलोप्तारो जायन्ते चक्रवर्त्तिन. ॥
हीनं च दूषयत्येव हिन्दुरित्युच्यते प्रिये ! मेरुतन्त्रे २३ प्र० ॥

और भविष्यपुराण के प्रतिसर्गपर्व्व के तृतीय खंड के दूसरे अध्याय मे लिखा है कि विक्रमादित्य के पौत्र शालिवाहन ने पितृराज्य पाने पर शकादि को जीत कर आर्य्यदेश और म्लेछ देश की सीमा इस प्रकार से स्थापित की —

एतस्मिनन्तरे तत्र शालिवाहन भूपतिः ॥ १७ ॥
विक्रमादित्यपौत्रश्च पितराज्यं गृहीतवान् ॥
जित्वा शकान्दुराधर्षां श्चीनतै, त्तिरिदेशजान् ॥ १८ ॥

मातुल का अपने मन में मोह करना ॥

दूहा --सुनत सुपन सोमेस सुअ, बज्जाए बर बाज ।
गिन्यौ सु मातुल मोह मन, और अवन्निय काज ॥
॥ छं० ४७ ॥ रू० ३४ ॥

पृथ्वीराजका स्वप्नफल सुन आनन्द में फूला न समाना ॥

पद्धरी सुनि सुपन मात फल कहै राइ । दरिया तरंग मन मोज पाइ ॥
ज्यों मोर मेह आगम अनंद । राका चकोर ज्यो सुष्ष चंद ॥ ४८ ॥
चंदनह बन्न ज्यो पाय चिल्ल । तिह नाह पिष्ष ज्यौं सुभग सिल्ल ॥
संग्राम भूमि ज्यो सुभट पिष्ष । गुरु विद्यवन ज्यो पाय सिष्ष ॥ ४९ ॥
घत्तार घत्त ज्यौ इष्ष चोट । दातार पाइ जाचिक्क टोट ।
पडित पाइ ज्यौं गुनियग्राह । व्यापार पाइ ज्यौ साह लाह ॥ ५० ॥
परि विन्न पेषि ज्यौं षेल ज्वारि । छूल छैल पाइ लंपट्ट नारि ॥
आनंद सु यौ प्रथिराज पाइ । फुल्ल्यौं सु अंग अंगह न माइ ॥ ५१ ॥
वज्जे अनंत वज्जहि अनंद । दिय दान विदुष दुज भट्ट बृंद ॥
दिन दिन नरिंद तन दसा बड्ढ । चढ्ढंत दीह जो दसा चढ्ढि ॥
॥ छं० ५२ ॥ रू० ३५ ॥

वाह्लीका कामरूपाश्च रोमजाः खुरजास्तथा ।
तेषां कोषा गृहीतास्तु दण्डयोग्यानकारयत् ॥ १९ ॥
स्थापिता तेन मर्यादा म्लेच्छार्याणां पृथक् पृथक् ॥
सिन्धुस्थानमिति ज्ञेयं राष्ट्रमार्यस्य चोत्तमम् ॥ २० ॥
म्लेच्छस्थानं परं सिन्धोः कृतं तेन महात्मना ॥ २१ ॥

यदि यह माननीय है तो स्पष्ट है कि "हिन्दु" शब्द तो "सिंधु" का और "हिन्दुस्थान" शब्द "सिन्धुस्थान" का अपभ्रंश है अर्थात् वह यावनी नहीं है। यदि उनको यावनी भी मानें तो भी आजकल हमारे देश में बड़ी ही प्रबलता से यह माना जाता है कि संसार भर की सब भाषा हमारी संस्कृत से ही निकली हैं। अतएव फिर हमको बतलाना पड़ेगा कि यावनी "हिन्दु" शब्द किस संस्कृत शब्द का अपभ्रंश है? और जब वह संस्कृत का अपभ्रंश है तो फिर उससे घृणा क्यों करनी चाहिये ?

तथा हमारे दिये इस प्रमाण से पुरातत्ववेत्ता विद्वानों के विचारार्थ एक यह प्रश्न भी उपस्थित होता है कि इससे तो शालिवाहन का विक्रम पोता होना विदित होता है और अन्य शोधों के अनुसार प्रचलित शालिवाहन शककर्ता कनिष्क नामक सिदियन राजा माना जाता है। हमारी देशी साक्षी से विक्रम और उसके पोते शालिवाहन का '१३५ वर्ष का अंतर असंभव होना प्रतीत नहीं होता है। इस के

स्वप्नफल सुनकर पृथ्वीराज की सर्वस्व वृद्धि कैसे होने लगी।

कवित्त चढत नदी जिम, मेह नेह नवला जुबनागम।
सिद्धदाह दिन चढत, सु गुरु सिष्यक विद्या क्रम ॥
सस्त्र ओप ज्यों भरनि, लच्छि व्यापारह बढ्ढत।
बढन भट्ट गज बम, बेलि द्रुम सीसह चढ्ढत ॥
जिम सरद रयनि सुद पष्ष तिथि, बढन कला मांस तम गमत।
चहुआन सूर सोमेस सुअ, इम सुदसा दिन दिन जमत ।
॥ छ० ५३ ॥ रू० ३६ ॥

कविन बढन पटन उमगाव, बढन साहन तुरियन दल।
बढन भंडारन दाम, बढन कोठार अन्नबल ॥
जमदर पानान वस्त्र, बढन दानन दिन ही दिन।
हट्ट मस नरवारि, बढन सस्त्रन्न पिन हि पिन ॥
बढ्ढंत किन्ति दिन दिन अमल, प्रथीराज सोमेस सुअ।
दस दिसा जोनि दिन दिन बढन, महा निसा पह जानि धुअ ॥
॥ छ० ५४ ॥ रू० ३७ ॥

अतिरिक्त शालिवाहन का बौद्ध हो जाना भी कहा जाता है और शक भी बौद्ध धर्म्मावलम्बी माने जाते है क्या आश्चर्य है कि यह शालिवाहन ही शक धर्म्मावलबी होकर कनिष्क नामक राजा हो गया हो और हमारे यहा उसके पहिले नाम से ही शक प्रख्यात चला आया हो ?

पाठान्तर अर। होइ। होय होनहार। जाय । ३० ॥ दिपिन। आय। जदबन। उपाय। कहो। ॥ ३६ ॥ जदवन। नपिय। अन ॥ ३७ ॥ कहो। मनगराइ। जानंत। जानि। जान। कीनसु। मोट। मिटै। बुधि। को। कोट ॥ ३८। उपदेश। हू। जानि। धर्म्म। उद्धारि। छंडो ॥ ३९ ॥ जोर। तेउ। गए। होइ। रचै। पहमि। गवार ॥ ४० ॥

२८ पाठान्तर—चहुआन। बेषो। सूझै। तोअर मग। मे बरजयो। मेटै। होय। मिरथा।

२९ पाठान्तर - पछै। चहुआनिय। चहुआनीय। तुरकानीय। मेछ। मेछि। हबै है। हिंदून। हू। दानव। आनं। दिशा। फिर ॥

★ यह ३० और ३१ दोनो रूपक पुरानी पुस्तक स० १६४७ की लिखी मे वास्तव मे तो नही हैं। परंतु उसके पत्रे के किनारे पर किसी अन्य ने पीछे से इन दोनो को लिख दिया है और उसके पीछे की नवीन पुस्तको मे इन दोनो के पाठ है। संवत् १८३८ की मे तो "मेवातपति" पाठ है और सं० १६४७ की प्रति मे "मेवारपति" पाठ है। वैसे ही पहिली मे १५७७ और दूसरी के मे १७७७ पाठ हैं।

पृथ्वीराज का अजित अवतार होना ।।

कवित्त सहरि गहंमह सूर, नूर नवलन नवला मुष ।।
चार बरन चिर आव, गेह बिलसत महा सुष ।।
पदत मेवासन धाह, दाह दिज्जन दुज्जन घर ।
अडटनि उटन सुदंड, थप्पि थिर करत अप्प वर ।।
चिहु चक्क हक्क धर थर हरत, पिसुन पिंजि किज्जय नरम ।
अबतार अजित दानव मनुष, उपजि सूर सोमह करम ।।
।। छ० ५५ ।। रू० ३८ ।।

लोहाना का गोख में से कूदना और अजानबाहु नाम और जागीर पाना ।।

कवित्त - षोडस गज उरद्ध, राज ऊभो गवष्ष नम ।
सझ समय चीनार, पत्र कीनो पेमकम ।।

निदान ये दोनो तो स्पष्ट रूप से क्षपक है । तथा हमारे पाठको के ध्यान मे रहे कि उदयपुर वाले स्वर्गवासी कविराज श्यामलदासजी ने जो इस महाकाव्य का आद्योपान्त जाली बनना सवत् १६४० से १६७० तक के भीतर माना है उसका आधार इन क्षेपक रूपको मे से रूपक ३१ पर रक्खा है । उसके जाली बनने के समय के विषय मे हमने आदि पर्व की उपसहारणी टिप्पणी" पृ० १५५-१७८ तक वाक्य ३ और "पृथ्वीराजरासे की प्रथम सरक्षा' के पृष्ठ ३८ से ३७ तक वाक्य १७ मे सविस्तर कथन किया है अतएव यहा अधिक नही कहते हैं ।।

३० पाठान्तर -सतै । डिल्ली । पग । पोदि । नकवि । मेवाद । किक आइ रहि पाइ । मनि । जपित्र । थपीय ।।

३१ पाठान्तर - मोरे । मतरिसे । मिस्योतरि । विक्रम । शाक । दिल्ली । मेवारपति । लद्द । पग ।।

३२ पाठान्तर -अथ । बन । प्रमांन । तुछ । म्लेछनि । होय । मन । प्रमांन मान अजांन । इछ । मछी । घरी इछ मछी मही । परियें । प्रमन ।।

३३ पाठान्तर --कद वाघा । चहुआनं । सुजानं । पुछि । दुजराजनि ।।

३४ पाठान्तर—अवनिय ।।

३५ पाठान्तर –राय । दरीयाव । पाय । मुष । पाइ । चिन्ह । पषि । सील । पिषि । विद्या बंत । मिषि । इषि । जाचिग । पढित । गुनयग्राह । लंपट । पाय । माय । दान । चढंन । दशा । चढि ।

३६ पाठान्तर –लछ । बढन । चहुआन ।।

३७ पाठान्तर –मंडारन । दांम । नरवार । वढंन ।।

३८ पाठान्तर –सहरि । च्यारि । दुजन । अदटन । दटन । थपि । अप । चिहु । चक । रज । किजय ।।

देषत संभरीनाथ, हथ्थ छूटन हय मारक ॥
तीर कि गोरि बिछुट्टि, तुट्टि असमान की तारक ॥
अधबीच नीच परते पहिल, लोहाने लीनो झरपि ।
नट कला पेलि जनु फेरि उठि, आनि हथ्थ पिथ्थह अरपि ॥
॥ छं० ५६ ॥ रू० ३९ ॥★

गाथा हरषि राज प्रथिराजं, कीन सूर सामंतं ।
बगसि ग्राम गजबाजं, अजानबाहू दीनयं नामं ॥
॥ छं० ५७ ॥ रू० ४० ॥

दिल्ली किल्ली कथा का उपसंहार ॥

दूहा सुपन सुफल दिल्ली कथा, कही चंदबरदाय ।
अब अग्गे करि उच्चरौं, पिथ्थ अकुंर गुन चाय ॥
॥ छं० ५८ ॥ रू० ४१ ॥

इति श्रीकविचंदविरचिते पृथ्वीराजरासके
दिल्ली किल्ली कथा वर्णन नाम त्रतीय
प्रस्ताव संपूर्णम् ॥



---

३९ पाठान्तर- गवष । चित्रकार । हय । असमान आनि ॥

★ ये ३९ । ४० दो रूपक सं० १६४७ की पुरानी पुस्तक में नहीं हैं और इधर की सं० १८२९ में हैं ॥

४० पाठान्तर—ग्रांम । वाज । अजानं ॥

४१ पाठान्तर—दिल्लीय । वरदाय । अगें । उचरौं । पिय । कूंअर । गुनचार ॥

उपसंहारिणी टिप्पण

जो कुछ हमने प्रथम और द्वितीय समय की टिप्पणी और उपसंहारणी टिप्पण में कहा है वह हमारे पाठकों के ध्यान मे होगा औ जो अब निवेदन किया जाता है वह भी उसी के साथ सदैव स्मरण मे रहेगा। क्योंकि वह सब इस महाकाव्य के विषयक अनेक वाद विवादो के विचार और निर्णय करने के समय बहुत ही उपयोगी होगा ॥

अब इस तीसरे समय - दिल्ली किल्ली कथा—का मूल लेख हमारे पाठकों की सेवा मे उपस्थित है। और जो कुछ उन्होने अब तक इस महाकाव्य के नाम से अनेक दंत कथा और वृत्तान्त पुस्तकादि मे पढ़े और सुने है वे भी उन्हे ज्ञात हैं। अतएव अब यह एक बहुत ही अच्छा अवसर है कि हम उन दोनो का मिलान कर के देखें कि क्या आज कल के ग्रन्थकर्त्ताओ ने भी अपने लिखे वृत्तान्त ठीक ठीक इस महाकाव्य के वृत्तान्त के अनुकूल ही लिखे है, अथवा उनको बदल कर उनमे कुछ और अपनी मनमानी गढ़न्त भी करी है? यदि उनमे परिवर्त्तन किया गया है तो क्या उनका ऐसा करना ठीक है? मूल मे मिला हुआ अगला क्षेपकांश तो अब निश्चित होना कैसा कठिन हो रहा है, जिस पर भी क्या आधुनिक ग्रन्थकर्त्ताओं का मूल से विरुद्ध कथन करना मानो नवीन क्षेपक मिलाना नही हो सकता है? आश्चर्य यह है कि आज कल के ग्रन्थकर्त्ता प्रतिज्ञा तो पृथ्वीराजरासो वा कवि चंद के कथनानुसार अपने कथन करने की करते है और जब उनको ऐसे मूल से मिलान कर के परीक्षा की जाती है तब उनके वृत्तों मे रात्रि दिन का सा अन्तर दीख पडता है। इसके केवल दो तीन ही उदाहरण हम यहां पर दिखाते है, अन्यो का विचार हमारे पाठक स्वयं कर लेंगे—

(क) हिन्दी रीडर नंबर ५ अर्थात् हिन्दी शिक्षावली भाग पंचम नामक पुस्तक जो पाठशालाओं मे पढाई जाती है और जिससे बालकपन से ही हमारे बालकों के हृदय पर संस्कार होता है उसमे कवि चंद के नाम से यह कहा हुआ है—

"चंद कवि लिखता है कि तोमर वंश के १६ वें राजा अनंगपाल ने पृथिवीराज के जन्म के उत्सव के लिये व्यास नामक एक ब्राह्मण से मुहूर्त्त पूछा। ब्राह्मण ने कुछ सोच कर उत्तर दिया कि यही शुभ समय है, इस कीली को गाड़िये और यह शेषनाग के सिर मे जा लगेगी और फिर तुम्हारा राज्य अचल हो जायगा। यह कह कीली को धरती में गाड़ दी। परंतु राजा को विश्वास न हुआ। निदान उसने उस कीली को निकलवा डाला वो निकालने पर लोहू से भरी मिली। तब ब्राह्मण ने राजा से कहा कि तुम्हारा राज्य कीली के समान अस्थिर हो जायगा और तोमर वंश के बाद चौहान वंश के राजा राज्य करेंगे और उनके बाद मुसलमानों का राज्य

होगा। राजा ने क्रुद्ध होकर उस ब्राह्मण को देश से निकाल दिया परन्तु वह अजमेर मे चला गया जहां कि उसका मान अधिक हुआ ॥

(देखो हिन्दी [illegible] प्रथम भाग पृष्ठ [illegible]) ॥

(ख) तथा उसी पुस्तक मे शाहजहां के समय मे हुए खड्गराय कवि के लिखे इस वृत्तान्त को भी पढ़िये

"व्यास ब्राह्मण ने तोमर वंश के प्रथम राजा अनंगपाल को एक पच्चीस अंगुल लम्बी कीली दी और उससे कहा कि इसको धरती मे गाड़िये। शुभ संवत् [illegible] अथवा इसवी सन् [illegible] मे वैशाख वदी त्रयोदशी को राजा ने इस कीली को पृथिवी मे गाड़ दिया। तब व्यास ने राजा से कहा कि अब तुम्हारा राज्य अचल हो गया क्योंकि यह कीली शेषनाग के माथे में गड़ी है। जब ब्राह्मण चला गया तब राजा ने उस की बात का विश्वास न कर कीली को उखाड़ दिया [illegible] लोहू मे भरी पाया। [illegible] ब्राह्मण [illegible] कीली को फिर गाड़ने की आज्ञा दी। परन्तु कीली [illegible] पृथिवी मे [illegible] और ढीली रही तब ब्राह्मण [illegible] कि तुम्हारा [illegible] और उन्नीसवी पीढ़ी के बाद चौहानो के हाथ [illegible]। और उनके [illegible] मुसल्मान राज्य करेंगे"।

([illegible]) ॥

तदनन्तर "पृथ्वीराज चरित्र [illegible] भूमिका मे [illegible] विश्वास [illegible] या है—

"प्रगट है कि [illegible] (राजपूताना) [illegible] अन्तिम महाराजाधिराज पृथ्वीराज चौहान [illegible] बनाया है।

'मैने [illegible] है [illegible] मे कथारूप [illegible] उनके वे भूमिका में [illegible]।

तथापि ऐतिहासिक विषय मे [illegible] गया है।"

मैने जो यह आशय गद्य मे किया वह उदयपुर राज्य के विक्टोरिया हाल के पुस्तकालय मे रासे की एक लिखित पुस्तक से लिया है।

और अपनी इस प्रतिज्ञा के अनुसार उसने इस महाकाव्य के मूल पद्य का यह गद्य किया है ।

"यमुना तट पर हस्तिनापुर नामी नग्र प्राचीन काल से विख्यात है जहां पांडववंशी राजा अनंगपाल तंवर राज्य करता था । राजा की सुनीति और धर्माचरण से सर्व प्रजा सुखी और राज्यकार्य आनन्द पूर्वक चलता था । इस राजा ने अपने भुज बल से कई भूपालों का गर्व गंजन कर अपनी प्रभुता के सूर्य का प्रकाश दूर दूर तक फैला दिया था सहस्रों सामन्त देश देशान्तर से आकर इस की सेवा करते थे । राजा के दो कन्या थी बड़ी का नाम सुरसुन्दरी और छोटी का नाम कमला । सुरसुन्दरी का विवाह कन्नोज के राठोड़ राजा विजयपाल से हुआ था और कमला जो रूप मे रति को भी लज्जित करती थी अपनी बालक्रीडा से माता पिता के हृदय को हुल्सानी हुई शुक्लपक्ष की चन्द्रकला के तुल्य सुन्दरता सुघड़ाई और यौवन मे वृद्धि को प्राप्त होती थी ॥

एक दिन राजा अनंगपाल अपने सुभट सामन्तो सहित हस्तिनापुर से कुछ दूर आखेट के वास्ते वन मे गया । अपनी हिनहिनाहट से वज्र के तुल्य हृदय को भी कंपाने और टापो के प्रताप मे शेष के सीस तक धरा को धुजाने का अभिमान रखने वाले चंचल तुरंगो पर कई बांके शूरवीर शिकारी पोशाक पहने तेज हाथ मे लिये चलते थे काली रात्रि के तुल्य कई मदोन्मत्त हस्तियो के झुंड साथ थे जिन के गंडस्थल मे से झरनेवाले सुगन्धित मद के पान करने को आये हुए भ्रमरो का गुंजार शब्द ऐसा प्रतीत होता था कि मानो कई वन्दीजन मधुर वाणी मे महाराज का यश गाते हो । रेशमी डोरियो मे बन्धे हुए कई कुत्ते अपने रक्षको को ताने लिये जाते थे मानो सूअर सांभर कुरंग आदि पशुओ का गंध पाकर उनके रुधिर मे अपनी पिपासा बुझाने को आतुर हो रहे हो । पायदलो के ठट्ट ने चारो ओर बिखर कर बन को घेर लिया और भेरी नफीरी आदि कई वादित्र बजा कर पशुओ को डराने और उनका स्थान छुड़ाने लगे राजा और उसके साथी सामन्तो ने सेल संभाले सूअरो के पीछे घोड़े छोड़े और बात की बात मे कई बड़े बड़े वराहो को भूमि पर गिरा दिया । बन मे चारो ओर धूम मच रही थी बिचारे पशु प्राण भय से इधर उधर भागते फिरते थे कि कंवल कली को प्रफुल्लित करने वाले सूर्यदेव ने सिर पर आकर मानो इस हिंसा से शिकारियो को निवारण करने के लिये क्रोध दृष्टि धारण की हो, प्रचंड ताप से पृथ्वी को तपा दिया सूर सामन्त व सिपाहियो ने जहा तहा वृक्षो की छाया देख कमर खोली और जलपानादि करके श्रम दूर करने को लेटे, राजा भी एक वट वृक्ष की सघन छाया मे बैठा हुआ था कि अचानक उसकी दृष्टि बन मे एक स्थान पर पड़ी तो क्या देखता है कि झाड़ी की ओट मे एक अजा अपने दो बच्चों को लिये बैठी है उधर से एक भेड़िया आकर बच्चो पर लपका चाहता था कि दोनों को उठा कर ले जाय इतने मे माता ने सचेत हो भेड़िये से युद्ध करना

आरंभ किया और भेड़िये को भगा कर बच्चो को बचा लिया। यह कौतुक देख राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उस स्थान पर कुछ चिन्ह कर दिया कि भूल न जावे। जब अपनी राजधानी को लौटा तो दिन भर के परिश्रम से थका हुआ भोजनोत्तर वह शयन गृह मे आकर निद्रा निमग्न हुआ। प्रभात् होते ही गुरु व्यास देव के आश्रम पर जा हाथ जोड़ कर ऋषि से वह बन का चरित्र वर्णन किया। व्यास देव कुछ काल तक समाधिस्थ हो बोले कि राजन! वह भूमि महा पवित्र और बीर है यदि वहा गढ़ बनाया जावे तो उस गढ़ का स्वामी सर्व भूमडल के अधिपतियो का सर्दार होवे। राजा ने निवेदन किया कि महाराज मैं वहा एक नग्र बसा कर गढ़ बनाऊगा। व्यास देव बोले कि आज तिथि, नक्षत्र वार योगादि सर्व शुभ है अत एव एक लोहे की कीली मगवाओ कि वहा गाड़ दी जावे। आज्ञानुसार कीली मगवाई गई व्यास राजा सहित उसी स्थान पर गये और मत्र पढ़ कर कीली वहा गाड़ दी जहा बकरी ने वृक को भगाया था। फिर राजा से कहा कि यही गढ़ की नीव दिलवाना। इस कीली को निकालने का साहस मत करना यह कीली शषनाग के सिर मे जाकर बैठ गई है सो जब तक यह अचल है तुम्हारा राज्य भी अचल रहेगा। व्यास के मुख से यह सुन कर कि यह किल्ली शेष के सिर मे जा बैठी है! राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और कहने लगा कि महाराज! इतनी सी किल्ली शेष के सिर तक कैसे पहुँच सकी है? एक दिन कुतूहल वश राजा ने अपनी शका निवारण करने को बिना विचार उस कील्ली को निकलवा लिया। कील के निकलते ही भीतर से रुधिर की धारा छूटी और कील का मुख भी रुधिर से भीगा हुआ देखा। राजा को बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि मैने केवल अपने सशययुक्त चित्त का सतोष करने के निमित्त उस महर्षि की आज्ञा उल्लघन की और अपने को महा हानि पहुँचाई। फिर उस स्थान पर एक नग्र बनाया क्योकि उस किल्ली को राजा ने ढीली कर दी थी अत एव उस नग्र का नाम भी ढिल्ली ही रहा जो वर्तमान काल मे दिल्ली करके प्रसिद्ध है। राजा की आज्ञा से वहा बड़े २ महल चौहट्टे और विशाल भवन बनाये गये और फिर वही राजधानी स्थापन हुई" ॥

(पृथीराज चरित्र पृष्ठ ३२-३५)

निदान इन तीनो वृत्तान्तो को जिस चद कवि के नाम के ओट से ग्रन्थकर्त्ताओ ने लिखा है उनको उसी कवि के मूल पद्य से मिलाने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि उन्होने (ग्रन्थकर्त्ता) इस दिल्ली किल्ली कथा के मूल पद्य को भले प्रकार पढे और समझे बिन जैसा जिसके ध्यान में केवल दंत कथाओ पर से आशय आया वह अपने अपने ग्रन्थों में लिख लिया है। इनको मूल पद्य से मिलाने पर वृत्तो मे यह बड़े बड़े अंतर स्पष्ट देख पड़ते हैं—

हिन्दी शिक्षावली के कथन में ॥

१ चंद का मूल पद्य चाहे शुद्ध वा अशुद्ध वा जाली कैसा ही क्यो न हो परन्तु उसके अनुसार वृत्तान्त लिखने की प्रतिज्ञा करने वाले को उसके विरुद्ध कुछ भी नही लिखना चाहिये उपन्यास और नाटकादि लिखने के भी नियम है। ऐसा कदापि नही हो सकता कि जहां से मूल कथा ग्रहण करी हो उस लेख के वृत्तो को ऐसे बदल देना कि उनमे रात्रि दिन का भी अंतर पड जाय। देखो चंद ने अपने मूल पद्य मे दो दिल्ली किल्ली कथा वर्णन करी है। एक तो कल्हन वा कल्हन वा किल्हन राजा के समय की और दूसरी राजा अनगपाल के समय की परंतु इन ग्रंथकर्त्ताओ ने दोनो के वृत्तो को घेल मेल करके एक ही कथा कर दी है। क्या मूल पद्य को पढ़ और समझ कर लिखने वाला ऐसी भूल कर सकता है?

२ चंद ने मूल पद्य मे कही नही कहा है कि राजा अनगपाल तोमर वंश मे सोलहवां राजा हुआ था॥

३ और उसने यह भी नही कहा है कि अनगपाल ने पृथ्वीराज के जन्म उत्सव के लिये व्यास नामक ब्राह्मण से किल्ली गाडने का मुहूर्त्त पूछा था।

४ और न यह कही मूल मे कहा है कि भविष्य कहने पर राजा ने अप्रसन्न होकर व्यास को निकाल दिया और वह अजमेर चला गया जहां कि उसका अधिक मान हुआ॥

खड्गराय के कथन में ॥

५ व्यास का राजा को पच्चीस अंगुल कीली देना मूल पद्य मे वर्णन नही किया हुआ है। किन्तु जो किल्ली कल्हन के समय मे गाडी उसका कुछ परिमाण नही लिखा है और जो अनगपाल के समय मे गाडी थी उसका रूपक १२ मे साठि सु अंगुल [illegible] ६० अंगुल का परिमाण लिखा है॥

६ कीली गाडने का संवत [illegible] बैसाख वदी १३ मूल पद्य मे कही नही कहा है।

७ कीली को उखाडने पीछे फिर उसका गाडना और केवल उन्नीस ही अंगुल पृथ्वी मे धसना कही भी मूल पद्य मे नही कहा हुआ है

८ व्यास का अनगपाल को कहना कि तुम्हारी उन्नीस पीढ़ी पीछे राज्य चौहानो के हाथ मे जायगा मूल पद्य मे कही नही वर्णन किया हुआ है॥

पृथ्वीराज चरित्र के कथन में ॥

९ हस्तिनापुर का नाम तक मूल पद्य मे नही है और न उसकी और अनंगपाल के राजशासन की अत्यन्त प्रशंसा उसमे चंद ने कथन की है॥

१० एक दिन राजा अनगपाल का हस्तिनापुर से आखेट के लिये बन मे जाना मूल पद्य मे बिल्कुल नही है। किन्तु रूपक १७ मे कलहन राजा का बन क्रीडा करना कहा हुआ है॥

११ आखेट का सविस्तर वृत्तान्त, जैसा कि वर्णन किया गया है, मूल में नही है ॥

१२ राजा अनगपाल का एक वट वृक्ष की सघन छाया में बैठना भी मूल में नही है ॥

१३ राजा अनगपाल का एक अजा का एक भेड़िये के साथ युद्ध करता देखना लिखा है उसके स्थान मे मूल पद्य के रूपक १७ मे कल्हन राजा के प्रसग मे "सुसा और स्वान" शब्दो का प्रयोग हुआ है ॥

१४ इस कौतुक की भूमि पर राजा अनगपाल का चिन्ह कर देना कि भूल न जावे मूल मे नही है ॥

१५ दूसरे दिन राजा अनगपाल का गुरु व्यासदेव के आश्रम पर जाना आदि भी मूल मे नही कहा है ।।

दिल्ली मे कुतुबमीनार के पास जो एक लोहे की बडी कीली अब तक विद्यमान है उसके विषय मे पुरातत्ववेत्ता विद्वानो मे मत भेद है। ख्यातो की ख्यातिओ में कल्हन, कील्हन, कल्हन और किल्हन का चद भी नामान्तर मिलता है। तथा कल्हनादि नामान्तरो की चन्द्रवाचक व्युत्पत्ति हो सकती है। अत एव अनुमान होता है कि कीली पर जो नीचे लिखे श्लोक खुदे हुए है और उनमे जिस राजा चद्र का नाम है वह यही राजा कल्हन उपनाम चद्र होगा

यस्योद्वर्त्तयतः प्रतीपमुरसा शत्रून् समेत्यागतान् ।
वङ्गेष्वाहववर्त्तिनोऽभिलिखिता खड्गेन कीर्तिर्भुजे ॥
तीर्त्वा सप्तमुखानि येन समरे सिन्धोर्जिता वाह्लिका ।
यस्याद्याप्यधिवास्यते जलनिधिर्वीर्यानिलैर्दक्षिण ॥ १ ॥
खिन्नस्येव विसृज्य गां नरपतेर्गामाश्रितस्येतराम् ।
मूर्त्या कर्म्मजितावनिं गतवतः कीर्त्या स्थितस्य क्षितौ ॥
शान्तस्येव महावने हुतभुजो यस्य प्रतापो महान् ।
नाद्याप्युत्सृजति प्रणाशितरिपोर्यत्नस्य शेषः क्षितौ ॥ ३ ॥
प्राप्तेन स्वभुजार्जितञ्च सुचिरञ्चैकाधिराज्यं क्षितौ ।
चन्द्राह्वेन समग्रचन्द्रसदृशीं वक्त्रश्रियं बिभ्रता ।
तेनायं प्रणिधाय भूमिपतिना भावेन विष्णौ मतिम् ।
प्रांशुर्विष्णुपदे गिरौ भगवतो विष्णोर्ध्वजस्स्थापित. ॥

इस कीली के परिमाण के विषय मे इलाहाबाद लिटेरेरी इन्स्टीट्यूट की बनाई हुई हिन्दी रीडर नम्बर ५ अर्थात् हिन्दी शिक्षावली भाग पचम मे जो सन् १८९७ ई० मे पांचवी बार छपी है, यह लिखा है

"इसी लाट के पास एक बड़ी लोहे की कीली लगभग १६ इञ्च मोटी धरती मे गड़ी हुई है। धरती से ऊपर इस कीली की ऊंचाई २२ फुट है और कनिगहम

साहब लिखते हैं कि यह निश्चय नहीं हुआ कि यह कीली पृथिवी के नीचे कितनी दूर तक गई है। एक बार २६ फुट तक धरती खोदी गई थी परन्तु कीली की जड़ का पता न लगा"।

सो अशुद्ध है। मालूम होता है कि ग्रन्थकर्त्ता ने जनरैल कनिंघाम साहब की सन् १८७१ की रिपोर्ट पुस्तक १ पृष्ठ १६९ ही पढ़ कर यह वृत्तान्त लिख दिया कि जिसको अब तक अनेक बालक पढ़ कर मिथ्याज्ञान उपार्जन करते चले आते हैं। यह तहकीकात पीछे के अन्वेषण से रद्द हो गई है कि जिसका वृत्तान्त उक्त जनरैल साहब की रिपोर्ट पुस्तक ४ पृष्ठ २८ में लिखा है। पिछली तहकीकात के अनुसार इस कीली की ऊंचाई धरती से ऊपर २२ फुट और धरती के नीचे केवल बीस इंच और कुल लंबाई २३ फुट ८ इंच निश्चित हुई है। उक्त सभा जो अपनी पुस्तक में इस भूल को सुधार दे तो अत्युत्तम है॥

इति।

अथ लोहानो आजान बाहु समय लिख्यते

(चौथा समय)

पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को बत्तीस हाथ ऊंची गोष से कूदने की उत्तेजना देना ।।

कवित्त इक्क समय प्रिथिराज। राज ठढ्ढा सामंतह।
हथ बत्तीस इक गोष। चित्रसारी कहवत्तह।।
घटिय सेष दिन रह्यौ। सबै भर भीर गहम्मह।
नग्रनाथ नागोर। पट्टराजंत इन्द्र पह।।
उच्चरिय बत्त इमि मन्नि करि। सोइ जोधा पब्बह जिसौ।
भै भित्त चित्त मैं भित भिरै। इह मुथान कुद्दै इसौ ।।छं० १ ।।रू० १।।

लोहाना का कूदना

कवित्त दुचित चित्त सामंत। नाहि लग्गिय टगटग्गिय।
चित्र जानि पुन्नरिय। नयन जुव्वे पग मग्गिय।।
रज्जि मत्ति नादान। कंन्ह उच्चरिय बत्त इह।
चामुंडा जैतंसि। रोस आक्रस्स कियौ वह।।
ठढ्ढो सु इक्क लोहान भर। कहर कब्बुत्तर कुद्दयौ।
जो नेक चूकि ऐसो गिन्यौ। माप अंब सू हल्लयौ ।।छं० २ ।।रू० २।।

यह समय हमारे पास की संवत् १६४३ की लिखित पुस्तक मे नहीं है किन्तु उसके इधर की लिखी सब पुस्तकों में मिलता । तथा इस कथा का संदर्भ तीसरे समय के रूपक २९ "षोडस गज ऊच्च"–से लगाकर अभिप्राय समझने से ध्यान में आवेगा कि एक दिन राजा पृथ्वीराज सायंकाल के समय सोलह गज वा बत्तीस हाथ ऊंची चित्रसारी की गोख मे सामन्तो सहित खड़े थे और एक चित्रकार ने एक पत्र अर्थात् चित्र पेश किया उसको संभरी नाथ देख रहे थे कि देखते देखते वह हाथ में से छुट पड़ा। उसको लोहानो अजान बाहु ने कूद कर अधबीच मे ही झड़प लिया इत्यादि।

१ पाठान्तर -अजान बाहु। पृथीराज। ठट्ठा। ठट्टा। वट्ठा। सामंतह। बत्तीस। कहै। वर गहंम्मह। वत। मति। उजोधा। जिजसो। भित। चित। कुद्दै।

२ पाठान्तर—मति। वत। चामडां। जैतंसी। आक्रस। चढ्ढो। नेकि। चेक। असो।।

लोहाने के कूदने की प्रशंसा ।।

कवित्त इक्क कहै धर जीव । काज पंषिनी झरप्पिय ।
इक्क कहै सो ब्रह्म । इन्द्र को पुरषेव नंषिय ।।
इक्क कहै आकास । तास हो उडियन तुट्टौ ।
इक्क कहै सुरलोक । तास कोई नर लुट्टौ ।।
कविचद कित्ति उत्तम कहै । लोहाना तोंवर सुभर ।
जाजुल्लि राइ सुत सिद्ध चित । नथ्थि हुवै दुज्जै सुभर ।।

।। छं० ३ ।। रू० ३ ।।

पृथ्वीराज का दौड़ कर लोहाना के पास आना और उसे हिये लगाना ।।

अरिल्ल दौरि राज पृथ्वीराज सु आयो । षमाषमा अप्प उच्चयो ।
और सूर सामंतह अग्गी । हियरा मज्झिय परि लग्गी ।

।। छं० ४ ।। रू० ४ ।।

उसे आप उठाकर अपने घर ले जाना और इलाज करना

अरिल्ल-- अप्प उचाइ अप्प गृह आने । सत्र तबीव बहुत सनमाने ।।
मोज मना मझि होइ सुमग्गो । च्यारि पहर दिवसह मझि जग्गौ ।।

।। छं० ५ ।। रू० ५ ।।

हकीमों का लोहाना को दवा के लिये ले जाना और नवें दिन उसका अच्छा हो कर पृथ्वीराज के पास आना

दूहा नव तबीव तसलीम करि लै घरि आइ लुहान ।
नव दीहे .सिर झल्लयो ढढोलन गय ठान ।।छं० ६ ।। रू० ६ ।।
चद पचमी अति सुअछ, दिए विप्र बहु दान ।
तिथि तेरस रविवार दिन पय लग्गौ चौहान ।।

।। छं० ७ ।। रू० ७ ।।

पृथ्वीराज का प्रसन्न हो कर लोहाना को ग्वालियर, रणथम्भौर, उड़छा आदि पांच हजार गांव देना ।।

कवित्त पय लग्गन चहुवान । मोज ग्वालेर सुदिन्नौ ।
रिनथंभह ऊडछौ । कहर सुरष्षर किन्नौ ।।

---

३ पाठान्तर कहै । सो । कहै । उडयन । कोइ । कवि । तोवर । सिद्ध । दुजै ।।

४ पाठान्तर राजा । पृथीराज । उचायो । मझिए ।

५ पाठान्तर - आनै । बहुपत । मनै मानै । सुमग्गा ।

६ पाठन्तर झलयो ।।

७ पाठन्तर- पचमो । दिये । तेरसि । लगी । चहुवान ।।

लोहाना आजान (बाह)★नाम थप्पे बहु अप्पे ।
महस पंच दिय ग्राम । जैत कबिचद मुजप्पे ॥
तिहि घरिय मज्झि यह अप्पियै ॥ लै पट्टा सीसह धरिय ।
रक्खी मुबत्त दिन तीन मह । षग्ग मग्ग अप्पा परिय ॥
॥ छं० ८ ॥ रू० ८ ॥

आजानुबाहु का आना और पृथ्वीराज का हाथी घोड़े आदि देना ॥

दूहा पूनम तिथि मंगल दिनह, गृह तेग्यि आजान ।
आसन छंडि सु अप्प दिय, बहु आदर मनमान ॥
॥ छं० ९ ॥ रू० ९ ॥

छंद पद्धरी नव दून अप्पि मदझर गयंद । कज्जल सकोट रज्जल अनंद ॥
सै पंच दिन्न बाल्ही पवग । गो अप्प सैक बान)★ग्रहना कुरग ॥छं०१०॥
सै पंच दिन्न अति उट अच्छ । कनार भार पक्कार कच्छ ॥
दोइ सै दिन्न दामी मुचग । झल्कन नाम द्रप्पन मुअग ॥छं० ११॥
सिरपाउ भाउ नप्पे सरम्म । को गनै द्रव्य भडार अम्म ॥
सामन सूर मुष्य नूर नथ्थ । ★ ★ ★ ॥छं० १२॥
अब्बूमराइ जामानि जद्द । चामडराइ मन मुक्कि मद्द ॥
गोयंद राइ पीची प्रमग । उर लग्गि अग्गि नह मुग्ग अग। छं०१३॥
अप्पंन सूर सामन्त और । खरगोस लहै पै कौन दौर ॥
ते सरस सब्ब सामन्त सूर । तिन चहै नाम आजान नूर ॥छं०१४॥
जुग्गिन पुरेस कजि अप्पि जीव । तिहि सबन द्रव्य पूरीव ॥
सिर पटा छाप लोहान होइ । लग्गे सुमरह सब पाइ लाइ ॥छं०१५॥
कप्पुर चीर सागर सुनीर । सह दन्न धान जौहर सुहीर ॥
फुल्लेल अरगजा बहु सुगध । कोठार भार उग्गइ सुबध ॥छं०१६॥
कामंसु अप्पि ऐसे सुक्रित्त । परधान मान करि मानमत्त ॥
रत्तौ सुस्वामि ध्रम्मह सुमत्त्व । ग्रहि चले स्वामि भारे सुतब्ब ॥
॥ छं० १७ ॥ रू० १० ॥

---

८ पाठान्तर लगाम । नहुबान । दिनौ । तिनधिमह । उंइझा । सूरबर । विझो । ★ अधिक पाठ है । थप्पे । अप्पै । जंप्पै । रपी । मरबन दिन तीन तर ॥

६ पाठान्तर—पूर्निम ॥

१० पाठान्तर अनंद । सै । ★ अधिक पाठ है । द्विन । अछ । कछ । सै नषे । सरस । गनै । अस । मुपि । चामंडराय । सुबिक । सब्ब । मुंनीर । जौहर । सुरत्त । ग्रहि । झोरै ॥ ★ पाठ उपस्थित पुस्तकों में नहीं है ॥

लोहाना के बीरत्व का वर्णन ॥

गाथा - लोहाना आजानं । बानं पथ भीम जुद्धानं ॥
आ आरूप सरूपं । बंकं भरं पद्धरं करनं ॥छं० १८ ॥ रू० ११॥

दूहा लोहाना तौंवर अभग, मुहर सब्ब सामत ।
सांई काज मुधारना, ढंढोलन गय दंत ॥छं० १९ ॥ रू० १२ ॥

लोहाना का पांच हजार सेना लेकर ओड़छा के राजा जसवन्त पर चढ़ाई करना ॥

कवित्त उंडच्छा अरि थान, [illegible] ईहां धर रत्तौ ।
नाम नाम जसवन्त, [illegible] राजन धर पत्तौ ॥
लोहाना अनबांह, लीय [illegible] ।
[illegible] सेन सामन, [illegible] ॥
हज्जार पन सेना ममन, [illegible] जुद्दार [illegible] ।
झल्लहलि गमन मागरन दिन, [illegible] गिर हल्लयो ॥
॥ छं० २० । रू० १३ ॥

ओड़छा पर चढ़ाई की शोभा का वर्णन ॥

छंद गीता मालती मजि [illegible] नाम [illegible] धाम [illegible] राम [illegible] ।
[illegible] घोर [illegible] समुद [illegible] उल्लट्टा [illegible] ॥ २१ ॥
[illegible] मान [illegible] जान हल्लय ।
कनवज्ज थान परि [illegible] गल्लय ॥ २२ ॥
आजानुबाह [illegible] गाह घम्मरे ।
चह चहे मद गज्ज मद [illegible] भद उप्परे । २३ ॥
नारद बक्क [illegible] जुद्धरे ।
ऊड़छा उप्परि [illegible] अप्पुरे ॥
॥ छं० २४ ॥ रू० १४ ॥

ओड़छा के राजा जसवन्त का सामना करने के लिये प्रस्तुत होना ॥

दूहा -सुनी धाह जसवन नृप, आयो सेन सुमज्जि ।
ढल्लकि ढाल बद्दल मिल्लिय, पुब्ब [illegible] अवज्जि ॥
॥ छं० २५ ॥ रू० १५ ॥

११ पाठान्तर -[illegible] । बक ।
१२ पाठान्तर—मथ । ढंढोल गमय दन ।
१३ पाठान्तर -उंडछा । थांन । कछ । इहां [illegible] । । [illegible] गमत ॥
१४ पाठान्तर —[illegible] । [illegible] । लेयन । उंडछा । कंवला ॥
१५ पाठान्तर —[illegible] । नृप । [illegible] ॥

लड़ाई होना और लोहाना का जीतना ॥

छंद बिराज —बजे सिंधु नद्दं । करी सुक्कि मद्दं ॥
हकं सूर बज्जे । मनों मेघ गज्जे ॥ २६ ॥
छुटे अग्ग बाजी । भ्रमे मार भाजी ॥
मचे गोम धोमं । मनों राह सोमं ॥ २७ ॥
लियं हथ्थ बथ्थं । मनों जुद्ध पथ्थं ॥
धरे धीर धागी । वकं मार मागी ॥ २८ ॥
ग्रहे सीस ईसं । करा रंन दीसं ॥
जुटंतं मरद्दं । मच्चे एम कद्दं ॥ २९ ॥
लरै यों लुहानं । अभंगं जुवानं ॥
जगव्वंत जोरं । नरक्कीति धोरं ॥ ३० ॥
गमेने गमानं । गए भग्ग थानं ॥ छं० ३१ ॥ रू० १६ ॥

दूहा खेचर भूचर जलचरः सुर गए सुर थान ।
जुद्ध जुरे जगवंतसों, रन जित्तो लोहान ॥ छं० ३२ ॥ रू० १७ ॥

लोहाना का गढ़ पर अधिकार कर लेना ॥

कवित्त सहन उभय लोहाना, [illegible] सज्जे ।
[illegible] धार [illegible] उनत गजराज [illegible] ॥★
[illegible] जिन्नो ।
[illegible] त्रिन्यो ॥
[illegible] लिखी गढ़ भजियै ।
[illegible] यानि मन रजियौ ।
॥ छं० ३३ ॥ रू० १८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके लोहाना आजानबाहु समय नाम चतुर्थ प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४ ॥

१६ पाठान्तर भनों । अग्ग । मनो । हथ । मनो । राम । मचै । लरें । यौं ।

१७ पाठान्तर -थलचरह । सुर । जगवंतसा ॥

१८ पाठान्तर लुहान सजे । ★ यह पाद संवत १८५९ की लिखित पुस्तक में नहीं है ॥

† यह अधिक पाठ है । कित्तो । लिक्षी ! भजियो । वयठो । रंजियो । लेहान ॥

अथ कन्हपट्टी★ समय लिख्यते

(पांचवा समय)

पृथ्वीराज के भोरा भीमंग से वैर होने का कारण ॥

दूहा + -सुकी[1] कहै सुक सभरो, कहौ कथा प्रति प्रान । ‡
पृथ् भोरा भीमंग पहु, किम हुअ बैर विनान ॥छ०१॥रू० १॥

---

१ पाठान्तर सुक । कहै सम्भरो । कहो । पान । पान । प्रथु प्रिथु । वीर ॥

★ कन्ह पृथ्वीराजजी का चाचा अर्थात् काका था । वह सदा आंखों के पट्टी बांधे रहता था इसका वर्णन इसमे होने से इसका "कन्हपट्टी समय" नाम हुआ है ।

इस समय मे गुजरात के दूसरे चालुक्य राजा भोला भीम का नाम और उससे पृथ्वीराज के बैर होने की कथा प्रथम ही आई है । और इसमे कही भी यह नही कहा हुआ है कि सोमेश्वरजी को भीम ने मार डाला था और उसका बैर लेने को पृथ्वीराजजी ने उस पर चढ़ाई करके उसे मार डाला था । जिन लोगो के हृदय मे यह रासो कांटा सा खलता है उनके ही मानने के अनुसार भीम देव दूसरा स० १२३५ ई० ११७८ मे गद्दी पर बैठा था और ६३ वर्ष राज्य करके स० १२९८ ई० १२४१ मे परलोक को सिधारा । और पृथ्वीराजजी का जन्म स० १२०६ मे होकर वे ४३ वर्ष की वय मे स० १२४९ मे मरे । इस से सिद्ध है स० १२४९ तक तो दोनों राजा निर्विवाद समकालीन रहे अब रहा उनके मारे जाने का हाल सो यहां है नही जहा वह आवेगा वहा हम उस के विषय मे भी ऐसी ही सत्य-विवेचना करेगे । अतएव यह समय तो क्षेपक सिद्ध नही होता ॥

† एक पाठक की शंका है "क्या दूहा और दोहा की मात्रा मे कुछ भेद है" ? उत्तर—कुछ भेद नहीं है । दूहा पुराना और दोहा नया प्रयोग है । उनमे से दूहा "दु+ऊह" से बना है अर्थात् जिसमे दो ऊह हो उसे दूहा कहते है । और हिन्दी दोहा शब्द संस्कृत द्वोहा से इस प्रकार बना हुआ जान लेना चाहिए—द्+अ+उ = द्+अ+व् = द्व+ऊहा = द्+अ+ऊहा = द्व+ओ+हा = द्वोहा = हिंदी दोहा । षट्भाषा के प्रचार के समय मे इसको दूहडिका वा दोहडिका भी कहते थे । उसका संस्कृत मे लक्षण और उदाहरण यह है—

मात्रा त्रयोदशकं यदि पूर्वं लघुक विराम ।
पश्चादेकादशकंतु दोहडिका द्विगुणेन ॥

पृथ्वीराज के कुंअरपन का तपतेज वर्णन ॥

कवित्त कुंअरप्पन प्रथिराज । तपै तेजह सु महावर ॥
सुकल बीजु दिन हुतें । कला दिन चढत कलाकर ॥
मकर आदि मक्रमन । किरन बाढै किरनाकर ॥
यौ सोमेस कुंआर । जोति छिन छिन अति आगर ॥
हय हथ्थि देत मंकै न मन । पल षंडन गढ गिरन वर ॥
चिहु ओर जोर दसहूं दिसा । कीरति विस्तरि महिय पर ॥छं०२॥रू०२॥

गुजरात के राजा भोरा भीम का तपतेज वर्णन ॥

कबित्त भोरा भीम भुअग । तपै गुज्जर धर आगर ॥
है गै दल पायक्क ★ । पग्गवल तेजह सागर ॥
काका सारँगदेव । देव जिम तास बड़ाइय ।
तासु पुत्र परताप । सिघ मम मत्त सु भाइय ॥
परताप सीह अरसीह वर । गोकुल्लदास गोविंद रज ।
हरसिंह स्याम भगवान भर । कुल अरेह मुष नीर सज ।
॥ छं० ३ ॥ रू० ३ ॥

तथा उसका प्राकृत उदाहरण यह है
माई दोहाइणठग सुण ... ।
वृन्दावण घणकु ... ।
अन्वयार्थ —
हे मात । दोहडिका पाठ श्रुत्वा कृष्ण ... कर्माद रमात्न चलित:
कुञ्ज वृन्दावन ।
घनकुंजे वृन्दावनस्य निविडघनकुंजे । माई दोहडिका पाठ ... राधिकाया
दोहडिका पाठ श्रुत्वा । गुरुलघु ... ॥
यह २४ मात्रा का छन्द है ... मे ... । और
उसमे ६ ताल होते हैं—... ऐसा ... गान में ठीक दीपता है ॥

* यहाँ शुक और शुकी से ... अभिप्राय ... और उसकी स्त्री से है।
क्योंकि यह सब महाकाव्य उनके ही संवाद में रचा गया है और आगे भी कई एक
समयों में यही प्रयोग आवेगा। चंद प्रायः कवि को कीर की उपमा देता है—"आस
असन कवि कीर"।

२ पाठान्तर कुअरपन । कुअरप्पन । पृथीराज । ★ ज्यो ज्यो अधिक पाठ
है । जिम । बढै । कुआर । कुआर । छिन ही छिन । हथि । गिनर । चिहु । चिहुं ।
दिशा विसतरि ॥

३ पाठान्तर गुजर । हय । गय । पाइक । ★ प्रचड अधिक पाठ । पायक ।
सु । सारंगदेव । बड़ाई । तास । भाई । सिंह । सिष । स्याम । भगवान । सजि ॥

उसके काका और चचेरे भाइयों की वीरता का वर्णन ॥

दूहा जोरावर जुरि जंगमति, भरे बथ्थ नभ गाज ।
हुकम स्वामि छुट्टत सु इम, मनौं तितर पर बाज ॥छं० ४ ॥ रू० ४॥
तिन पर तुट्ट बीज जौं, जिन पर राज अरुट्ठ ।
राजकाज संमुह भिरन, दई न कबहू पुट्ठ ॥छं० ५ ॥ रू० ५॥
गाथा - मारे रान मुरानं झालासबलं अंगं झालाल ।
जिन भंजे जैमालं । कढ्यौ भ्रातराजमि पचं ॥छं० ६ ॥ रू० ६॥

पाट बैठने पर प्रतापसी को गर्व होना ॥

दूहा मारंग दे सुरलोक गन, भो प्रतापसी पाट ।
सात भ्रात सेवा करे, तपै तेज थिर थाट ॥छं० ७ ॥ रू० ७॥
अट्ठसहस दलबल अनंत, बहुत ग्रब्ब वर आप ।
सनरि सहस धर गुज्जरनि, मधि ओपन जिमकाप ॥छं० ८ ॥रू० ८ ॥
स्वामि ध्रम्म रत्ते सुमन, जे ठेल्ले गजठट्ट ।
हरै परब्बन सिषर डर, करै सत्रु दहवट्ट । छं० ९ ॥ रू० ९॥

प्रतापसी के देश उजाड़ने की पुकार भीमंग के पास होना ॥

दूहा भोरा भीम भुआल के, कोई एक मेवास ।
तिन उज्जारन देस को परि पुकार नृप पास ॥
॥ छं० १० ॥ रू० १० ॥

गाथा प्रात समय पुकार आई नरिंद भीम दरबार ।
करि नीसान सुधार नाद गाज गाजि आतुरयं ॥
॥ छं० ११ ॥ रू० ११ ॥

---

४ पाठान्तर जग । बथ । गाजै । स्वामि । छुट्टत । मनो । तीतर ॥
५ पाठान्तर ज्यों । अरुट्ठ । पिट्ठ ॥
६ पाठान्तर रान । भजै ॥
७ पाठान्तर -सारंगदे । भय । करै ।
८ पाठान्तर ग्रब । अप । सत्तरि । गुजराति । उपनि ॥
९ पाठान्तर स्वामि । रते । धंम्म । टठ । हरन । परबत । शिषर । करता । शत्रु । वट ।

१० पाठान्तर भुवाल । सं० १६४७ की मे "कोई एक" के स्थान में "धर आबच" पाठ है । उजारत । देशकों ॥

११ पाठान्तर - पुकारं । आई । निसांन । निमानां । सांव । माजि ॥

दूहा—चालुक्कह गुज्जर धरा, ईस नेति किय भीम ।
मो डभ्भें तिदु पूर सुव्रर, को चंपै अरि सीम ॥
॥ छं० १२ ॥ रू० १२ ॥

भोरा भीम की लड़ाई ॥

छं० पद्ध० चढ़ि चल्लन राज आवाज कीन । नीसान नद्द वज्जे बजीन ॥
चिहु ओर भग्गनि छुट्टे तुरंग । मजि मिल्लह भाँति नाना अभंग ॥
॥ छं० १३ ॥

धम धमकि धरनि थाने सुभंग । गज्जिय अकास कै गहर गंग ॥
भय हह हाक आतंक जोर । गह सुरन फेरि भेरीन घोर ॥ छं० १४ ॥
उडि रेन सेक मुंदिग अकास । परि रोर मोर जहां तहा मैवास ॥
धरि रोम मुच्छ मुररंत भीम । रन वीर वक्र संक्रोध हीम ॥ छं०१५ ॥
चंपी सु भीम अरियन सुजास । डेरा सुदीन नृप सरित नाम ॥
जुररा सिकार तीतर बटेर । पेल्लंत सरित तट भइ अबेर ॥ छं १६ ॥
इहि समय नाम परतापसीह । लहु बंधु साथ अरगी अबीह ॥
ए हुते सकल बाहुर ते बेर । नय मज्ज आइ पेल्लन अबेर ॥ छं० १७ ॥
गाजराज नाम साहन सिगार । सरितान मज्झ वह पियै वार ॥
सुनि सोर दान छुट्टे झंकार । जनु सुन साहि भय भीन भार ॥छं०१८॥
जमुना कि जग्गि काली करार । गिर धुनि मदावन दियौ डार ॥
गज एक आरि तीवंत ढुरि । तिन पर सु वृट्टि अन सिय चूरि ।छं०१९॥
धरि पंत पग्ग जनु धपि धाय । भुज परचौ नभ्भ बद्दर सुमाय ॥
दिषि दुरद उगहि आवंत आन।धुनि करि सु अरि उन पीलवान॥छं०२०॥
धायौ ति समुह साहन सिगार । जनु बंध जंम उप्पर अपार ॥
कलपंत पाइ जनु पवन आइ । हल्ल हल्ले पब्ब जिन नित दिठाइ ॥छं०२१॥
जम रूप दूअ जनु जंम द्वार । द्वय भ्रात बीच घेरे असार ॥
इक ओर वारि द्रह गहर गूल । इक जोर जोर वर उंच कूल ॥छं०२२॥
परता। सनंमुष परचौ जाइ। डारंत अश्व असि कियौ घाइ ॥
बहि सीस परन दो हय करार । परभूज जांनि बिकऱ्यौ बिकार॥छं०२३॥
जगनाय हंडि जनु बंटि दोइ । इह भंति कुंभ कुंभी न होइ ॥
गज पऱ्यौ धरनि साहन सिगार । किन्नो अकास परताप पार ॥छं०२४ ।
अरसीह पुट्ठ जग धऱ्यौ देप । सनमुष्प क्रम्य। सम सीह भेष ॥

१२ पाठान्तर—किये ॥ यह रूपक सं० १६४० की पुस्तक में नहीं है किन्तु उसके इधर की लिखित पुस्तकों में है ॥

१३ पाठान्तर—नीसांन । बजे । चिहूं । चिहुं । उर । छुट्टेनि तुंग । तितुंग । भांति ॥ १३ ॥

गज गही दौरि सिर पग्घ सुड । दिय गुरज चीर द्वय हथ्थि मुड॥छं०२५॥
फट्यौनि सीस भइ पच फारि । गज हन्यो जानि गिरवर विसार ।
सुनि बत्त राज भोरा सु भीम । पायौ अनत दुप आप हीम ॥छं० २६ ॥
कह वाव किभौ नृप अप्प साम । तुम गो न हमहि ता करह काम ॥
॥ छं० २७ ॥ रू० १३ ॥

उन सातो भाइयों का चलचित्त होना ॥

दूहा भा उभय अहंकार करि हन्यो सुघर गजराज ।
दोष हमहि लग्यौ नही, [illegible] हि कीन अकाज ॥छं० २८ ॥ रू० १ ॥

पृथ्वीराज का उन चलचित्त सातों भाइयों को जागीर और सिरोपाव देना ॥

दूहा सात भ्रात निज बात सुनि, जए अप्प चलचित्त ।
प्रथीराज सुनि कुंवर ने, आप बुलाए हित ॥ छं० २९ ॥
दिये हथ्थ लिषि गाम पट, रहे वाम [illegible] आन ।
चालुक चातुर वीर वर [illegible] उपत मुष पानि ॥ छं० ३० ॥
बाजी मत दीने बगसि, [illegible] मन भ्रात ।
एक एक सिर पाव दिय, बहु आदर किय ब्रात ॥ छं० ३१ ॥
गुरु लज्जा गुरु मत्ति गुरु, पन गुरु साप नरेम ।
गुरु उर मन गुरु मूरतन, गुरु गनि मनि गुरु प्रेम॥छं०३२॥रू०१५॥

थान । रंजिय । गग । १४ ॥ रैन । मैन । भिवास । मुंछ [illegible] । १५ ॥
सुजाम । नाम ॥ १६ ।★ इस छंद की चारो तुकें सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं
है । ताम । परना[illegible] । बाहुरन । मग्ग । भेरि ॥ १७ ॥ नाम । [illegible] । [illegible] ।
पीवन । वारि । दान । लुटे । छंछार । भै ॥ १८ । अगि । हारि । नर ॥ १९ ॥
पवय । जनु । धरि । नभ । बदर । [illegible] । आनि । पीउवान ॥ [illegible] । म हून ।
भृगार । पाय । पवय । बहाइ ॥ २१ ॥ जमकर । जम्म । ओर । जोर ॥ २२ ॥
जाय घाय । बिकर्यो ॥ २३ ॥ [illegible] । कृभिय । होय शृंगार । सिगार ।
कीनौ ॥ २४ ॥ अरसिंह । तुठि । देगि । मनमुग । गही । शिर । पग ।
चीरि । हुथ ।
२५ ॥ सुभीम । भय । फार । गै । जानि । बिसाल । बत । [illegible] ॥ २६ ॥
कहवाय । कीयो [illegible] । शाम । साम । मो । मौं । न काम ॥ २७ ॥

१४ पाठान्तर - भ्रात । अहकारि ॥ यह सं० १६४७ की पुस्तक मे नही है ।
और भा शब्द भ्रात का वाचक है ।

१५ पाठान्तर निजि । भये । अय । अचल । चित । कुंअर । बुलाए ।
हित ॥ २९ ॥ हथ । गांम । ओपत ॥ ३० ॥ बाज । सपत्त । दिने । सिरपाव
॥ ३१ ॥ गुर । नरेश । गुर ॥ ३२ ॥

पृथ्वीराज का दर्बार करके बैठना-उसमें प्रतापसी का आना और उसे मूछ मरोड़ने पर कन्ह का मारना ॥

सोरठी दूहा— सक इक सोम कुमार, सम सामंतन सूर सम ।
सोभ सीस भुअ भार सो बैठे सुभ सभा रचि ॥छं० ३३ ॥ रू० १६॥

छंद मोतीदाम- रची सुभ सोम सभा प्रथिराज । विराजित मेरु जिमे भर साज॥
भुजा सम कन्ह रजे चहुवान । तिनं मुछ राजत है मुह पान ॥छं० ३४॥
जिनं चष चाहि कंपै भर मांन । कंपै जनु सोरन श्रप्प पिवास ॥
रहै चष वारि सुरातन एम । जवा ग्रन प्रान कियौ सक जेम ॥छं० ३५॥
तहां वर चावंड राइ रजत । जुधं मधि चावंड रूप सजंत ।
नृसिंघविराजनसिंघ जिसौह । विभीषन भा कयमास जिसौह ॥छं० ३६॥
सबैं भर ओर उनथ्थ सुमंत । तिन मधि पीथ कुंआर रजंत ॥
मनौ सकलं पष बीज कौ चंद । तिया रस राजत ताान वृंद ॥छं० ३७॥
प्रतापसि पालउ आन सरीस । प्रथी पति आइ नमाइय सीस ॥
ति सोहत मानुस नं मन मेर । किधौ मन सिंधु सुहंत उजेर ॥छं० ३८॥
सनंमुष कन्ह प्रतापसि आइ । ठई तिन बैठक साल सुभाई ॥
कहै भर भारथ बत्त स बान । धऱ्यो परतापसि मुच्छन पान ॥छं० ३९॥
लषी चहुआन सु कन्ह अपन । कढी असि तव्व असप भपन ॥
दई असि दौरि जनेउ उतारि । इही धर अध उपम विचारि । छं० ४०॥
मनों सब नागर साबु कटंत । इही जनु गंठि बिचें बिच तंत ॥
पऱ्यो परताप प्रथी पर आय । भई भर मध्य सुजोर अमाय ॥
॥ छं० ४१ ॥ रू० १७ ॥

---

१६ पाठान्तर - सोरठा । समं । रसै । एक । कुआर । सामनर । सीश । भू । बैठे ॥

१७ पाठान्तर - पृथीराज । मेर । कन्ह । रचे । चहुवान । तिन । मुछ पान ॥ ३४ ॥ जिनं । कपै । चपै । श्रप्पन सोर । रहे । कि उसननेम ॥ ३५ ॥ चामुड । चावंठ । राय । चामुड । नरसिंघ । विराजित । जिसौ । सिसु । भीषन । जिसौ ॥ ३६ ॥ सर्वे । और । ऊनथ । पधि । कुमार । कंआर । मनो ॥ ३७ ॥ पृथीपति । नमाईय । झोका । सोहनि । मानौ । मांनुस । किधो ॥ ३८ ॥ प्रतापसी । आय । कहै ॥ बत । मुछन । मुहन ॥ ३९ ॥ चहुवान । अपान । तारि । बही ॥ ४० ॥ मनौ । नीगर । बिचै । पृथी । ४१ ॥

भाई के मारे जाने पर अरिसिंह का क्रोध करना और कन्ह चौहान पर वार करना ॥

दूहा -भई हूह मज्झह महल, पर्यौ भुंमि परताप।
हाक बीर बज्जे विषम, अरसी कुप्पौ आप ॥छं० ४२॥ रू० १८॥

कवित्त भई हूह परताप। परस्यौ दिष्यौ अरसी वर।
उठ्यौ कढ्ढि तरवारि। दई भुज कन्ह वाम कर ॥
इक्क सोह बर ओर। गरै पष्पर गहि डारी।
एक अगनिता मद्धि। आनि कूपी घृत धारी ॥
चहुआन कन्ह अग्गै सुबर। ता पच्छे लोहन दग्यौ।
जाजुल्लिन मत्त बर बीर मति। बीर बीर रस सौ छग्यौ ॥
॥ छं० ४३ ॥ रू० १९ ॥

पृथ्वीराज का महल में जाना और अरि सिंहादि की लड़ाई का होना ॥

दूहा -उट्ठि कुंवर प्रथिराज लषि, गयौ महल निज मद्धि।
दै किवाट मिल्लि थाट जुध मच्यौ कलह सभ मद्धि ॥
॥ छं० ४४ ॥ रू० २० ॥

गाहा कढ्ढी असि अरसिंघं। नरसंघस्य ज्ञाग्य सीसं।
दई गुरज गुर अड्डं। बड गुज्जरं रभ कंदाइं ॥
॥ छं० ४५ ॥ रू० २१ ॥

चालि दिषि चावड ॥ गिजि चावड ॥
लोह चावड ॥ मन चावडं ॥ चावड ॥
॥ छं० ४६ ॥ रू० २२ ॥

कवित्त चढ्डिय जग उनग। दंग जनु दाह सुलग्गिय ॥
परिग्य रोर गाव रन। जुग्गिय जुध कन्ह अभिग्गिय ॥
मारि डारि अरिसीह। हक्यौ गोवंद मह गति ॥
कढ्ढि हथ्थ जम दड्ढ। दई चहुआंन कूप घत ॥

---

१८ पाठान्तर दाहा। भई। भुंमि। यह दोहा सं० १६४१ की पुस्तक मे नही है ॥

१९ पाठान्तर -चाप। एक। और। डारीय। आनि। चहुआन। अगें। पछे। मत्त। सों ॥

२० पाठान्तर उठि। लिषि। मधि। मच। मधि ॥

२१ पाठान्तर गाथा। अरसिंघ। सीसं। बडगूजरं। कंदाई ॥

२२ पाठान्तर -अचनीका। छद। चामुंडं। गिजि चामुंडं। चामुंड ॥

करि रोस कन्ह कर चपि सिर। दो हथ्थन भेजी उड्डिय ॥
निकसीय प्रान गोविंद उर। जोति भेदि जोतिह मिलिय ॥
॥ छं० ४७ ॥ रू० २३ ॥

हरसिंह का युद्ध ॥

कवित्त –हक्कि कहर हरसिंघ। बथ्थ नरसिंघ विलग्गिय ॥
लथ्थ बथ्थ लोहान। उपर नर तर परि दग्गिय ॥
नषि अद्ध नरसिंघ। भयौ हरसिंघ उद्ध वर ॥
दौरि राव चामंड। दई तरवारि सिट्ठ पर ॥
कर फोरि मुक्कि डर अद्धधर। भयौ त्रिबधव बटि घर ॥
हरिसिंह बस्यौ हरिसिंघ पुर। रवि मंडल व्रत भेदि करि ॥
॥ छं० ४८ ॥ रू० २४ ॥

दूहा भेद्यौ रवि मंडल सु पटु। करि प्राक्रम्म प्रमान ॥
धनि चालक पित मात धनि। निरमि न पायौ मान ॥
॥ छं० ४९ ॥ रू० २५ ॥

नरसिंह का युद्ध ॥

कवित्त करि उप्परि ते दुरि। तरट्ट नरसिंघ सु उट्ठिय ॥
तबै भरक्कि भगवान। आइ सिर मार सु बुट्ठिय ॥
जब नरसिंघ नरन। करन रट्टी स[illegible]रिय ॥
घल्लि हथ्थ गल व[illegible]थ। तेन उदर त्रिच फारिय ॥
पर भमि सुर भगवान सिरि। [illegible] प्रान [illegible] अप ॥
है है सु सबद स्रत लोग भय। जै जै सुर सुर लोकजय ॥
॥ छं० ५० ॥ रू० २६ ॥

कमास का युद्ध ॥

मोरल्ल गढि गोकन्ह सुजान। मद मोकन छुट्टिय।
तुट्टिय वीज अकास। मीन कैमान अरुट्टिय ॥
तुरम फट्टि कटि गुरज। मुकुट करि रेष रिपसर ॥
अमि कढ्ढत बर रोम। उदर बर बट्टिय सु ओझर ॥

---

२३ पाठान्तर [illegible]। हथ। दल। कुपि। षनि। [illegible]। निरम्मिन ॥

२४ पाठान्तर [illegible]। फौरि मुकि। अध्र [illegible] त्रिवधव।

२५ पाठान्तर प्रमान। मान ॥

२६ पाठान्तर – उठिग। तब। भगवान। [illegible] फटारिय। [illegible]। बल। [illegible]। फारी। भगवांन। सुसद। मृत ॥

बिन पत्त मत्त जनु डंड डक । रंभ षंभ कर कटियध्धज ॥
तिहि काज साज साकल सुरर । सु गुरुर पठाइय गुरुरध्वज ॥
॥ छ० ५१ ॥ रू० २७ ॥

माधव खवास का युद्ध ॥

कवित्त काम धाम रिम राह । स्याम जिम धाम पिथ्थपति ॥
पत्त लत्त दिय रोम । फट्टि किप्पाट थाट भजि ॥
धसिय मध्य माधव षवास । आय पत्तौ तहा आरौ ॥
लगि बथ्थ बिन नथ्थ । मंड मल मच्चि अपारौ ॥
जम दढ्ढ कढ्ढि चलक्क चँपि । दिढ्ढ पानि पावार उर ॥
मडल दिनेम मे भेद करि । गुपाट परिठ्ठय ब्रह्म पुर ॥
॥ छ० ५२ ॥ रू० २८ ॥

कन्ह का युद्ध ॥

कवित्त परि भूमि पावार । उररि भजन किवार हुअ ॥
तब लगि कन्ह तमकि । आइ पहुच्यौ अनकलुअ ॥
मुक्कि रोम असि नमसि । घाइ सिर जाइ रह्यौ उन ॥
मनहु सक्ति बल दैन । अंग जनु हन्य अजा सुत ॥
तिन हनत सिभ धुन हनिय सिर । राज ग्रेह मधि समर हुअ ॥
हल हलकि मच्चि कोलाहलह । हाय हाय दरबार हुअ ॥
॥ छ० ५३ ॥ रू० २९ ॥

चालुको के मारे जाने से दरबार में कोलाहल होना ॥

दूहा कोलाहल दरबार भो । सुनि चालुक भ्रत मथ्थ ॥
धसिय पैरि गज मन मम । पुच्छत पुच्छत कथ्थ ॥छ० ५४ ॥ रू० ३० ॥
छिछ रुधिर डट्टन गिरिय । परिय मत्र परिधारि ॥
दिषि चालुक भ्रत नेह टग । कुलह बाजि जनु डारि॥छ० ५५ ॥रू०३१॥

---

२७ पाठान्तर मुकानि । बीत । आकाग । धीम । सिर्गीमर । ओमर । चमर । कर्टार । स्वत । गिहि । नाके गुरर ॥

२८ पाठान्तर काम । धाम स्याम । धाम । पिथपति । पत । लत । पटि । क्रिपाट । मधि । लगि । व । नथ । मचि । जमदढ्ढ । चालुक । चपि । दिढ्ढ । मे । परठिय ॥

२९ पाठान्तर नमकि । हुअ । मुकि । सिर । मनहु । सक्ति । हन । हुलहलिकि । मचि । हाइ हाइ ।

३० पाठान्तर—पय । मन । पुछन । कथ ॥

३१ पाठान्तर—बाज । यह रूपक सं० १६८७ की पुस्तक मे नही है ॥

कवित्त - संकर घिस कि छुट्टि । छुट्टि इन्द्र कि गरुअ गज ॥
कि महिष छुट्टि मय मत्त । भरिय दीयौ कि दुष्ट कजि ॥
भौ कि हाम रस रोम । मद्धि रावत्त विरच्चिय ॥
कोलाहल बल्ल कूक । मज्झ रावर हूल मच्चिय ॥
चालुक्क षवास ताकथ्थ कयि । कोलाहल इन जानि घर ॥
छंडिय मयल बोहिथ नृपनि । हनिग कन्ह मारंगहर ॥
॥ छं० ५६ ॥ रू० ३१ ॥

दूहा - भर प्रताप दरबार के । द्वार परे मय मत्त ॥
सुनत बत्त इह कहि परे । मनु निम तुट्टि नछत्त ॥छं०५७॥रू०३३॥

कवित्त निमि पह तुट्टि नछित्र । रोप महिपा छुटि वानन ॥
परि कि दीप पानग । मिघ जनु छुट्टि छुधा तन ॥
यों तुट्टं भर भरन । भररि भैभीर सुभग्गिय ॥
मनहूं परा पति चनन । परिय मिचान अचिनिय ॥
पारि पौर पौरि दीनी दरकि । धरकि कूह बल पौरि बिचि ॥
पेल्लन सब मन कलहन जनु । पारथ सम भारथ मचि ॥
॥ छं० ५८ ॥ रू० ३४ ॥

दूहा माया मोह विरत्त मन । तन तिनुका सम डारि ॥
जुटे पिथ्थ दरबार महि । करि तरवार दुधार ॥छं० ५९॥रू०३५॥

छं० त्रोटक तरवार जुधार दुधार धरे । सि मार अपार विचार परे ॥
गिरवार किवार दुकार दिए । घर द्वार उघारि सुमार किए ॥ ६० ॥
सर मार डरार सिरार मरे । धर वारि मझार सुवारि परे ।
तरवारि करार अंगार झरे । परिमार अपार सुभार रे ॥ ६१ ॥
हडवारि कचार क्रिचार करे । नर मारक वारि कन्हार करे ॥
कर तारि दै नारद नृत्य करे । विकरारनि चौसठि पत्र भरें ॥ ६२ ॥
किलकारति भैरव भूत करे । हलकारत षेतरपाल षरें ॥
॥ छं० ६३ ॥ रू० ३६ ॥

---

३२ पाठान्तर भगीय । दीपि । मधि । रावत । विराच्चिय । मझ । मत्तिच । कथ । जांन ॥

३३ पाठान्तर--मत । बत । मनो । नछित्र ।

३४ पाठान्तर-नछित्र । परिय । संप । मनो । जनहुं । अक्षितीय । दीनीय । बच षेलंत । म । भारथ ।.

३५ पाठान्तर -विरत । पिथ ॥ यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नही है ॥

३६ पाठान्तर -परवारि । घरें । दये । किये । झरार । परें । झरें । क्रपारि । झंन्हार । करै । विकरालनि । करै । परें ॥

दूहा अंत कलप जनु मचि कलह। भिरे महिष मय रुद्ध ॥
चालुक अरि चहुआन भृत। काल कलह क्रित युद्ध॥छ०६४॥रू०३७॥

छंद विराज जुगजुद्ध जुरे। मन को न मुरे ॥
धक धीग धके। बक बैन बके ॥
घट घाव घने। बलि जोग बने ॥
तरवारि कसी। घन विज्ज लसी ॥
नर मुंड नचै। सिव माल मचै ॥
रिन षेत रच्यौ। रँग रत्त मच्यौ ॥
धरती धरकै। घन घाव रकै ॥
पग हथ्थ परे। कवि ओप करे ॥
मधु माध समै। मधु जानि भ्रमै ॥
सव देव भ्रगै। पलकै न लगै ॥
किलकार करै। षिलवार षरै ॥
जुगिनी हुलरे। रुधि पत्र भरे ॥ छ० ६५ ॥ रू० ३८ ॥

दूहा पत्र भरें जुग्गिनि रुधिर। ग्रिध्धिय मम डकारि ॥
नच्यौ ईस उमया सहित। रुड माल गल धारि ॥छ० ६६ ॥रू० ३९॥

छंदपद्धरी-दरवार ताल रुधि भरित वारि। इक हथ्थ रत्त चढ्ढी किनारि ॥
तिन मध्धि मग्न तरु जिम मजत। धर धारि मारि जे धुक्त मत ॥
॥ छ० ६७ ॥ रू० ४० ॥

दूहा ★ षेल मच्यौ दरबार मझि। मत्त गवार बमन ॥
सिर श्रुक बिनु धावह करै। सुभट सु अगध कत ॥
॥ छं० ६८ ॥ रू० ४१ ॥

छंद लघुनाराच धुकत धार धार सो। बकंत मार मार सो ॥
झुकत झार झार सौं। नकत सार तार सौं ॥ ६९ ॥
डकत भूत डाक सौं। कमत बीर बाक सो ॥
परंत हीन पाइह्लै। झरंत हथ्थ घाइह्लै ॥ ७० ॥

---

३७ पाठान्तर - महिष। अरी ॥

३८ पाठान्तर- जुरें। कोन। बैंन। घनें। ब्रजि। बनें। नचें। मचें। रग। धरकें घावरकें हथ। परें। उप। करें। जानि ॥

३९ पाठान्तर- ग्रिधय। ग्रिधिय ॥

४० पाठान्तर—हथ। रत। चढी। मग्नि। ने ॥

४१ पाठान्तर —मत। गवांर। बनु। धावहं ॥

★ यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक मे नहीं है ॥

लरंत मंत मंत सें। घरंत घाइ घन मं ॥
मुषग्ग अंगुली पिरे। फली मुकेर बिथ्थुरे ॥ ७१ ॥
नचन घाइ नारद। उटे सुघाउ ठारद ॥
भभक्कि रुद्धि भभ्भसे। बबक्कि गद्द बद्द मे ॥ ७२ ॥
हबक्कि हाक हक्कए। चवक्कि कुंभ चक्कए ॥
मोग्गि मुच्छ मुच्छए। चढी सु आनि चच्छए ॥ ७३ ॥
चलंत हाथ चचलं। परत बान पचलं ॥
भिदन भान मडलं। भयौ सु नट्ट कुडलं ॥ ७४ ॥
बहत मोप बट्टए। हगाकि लग्गि हट्टए ॥
कटत सीम कट्टए। रिनक पत्त फट्टए ॥ ७५ ॥
फटन फफ फेफरं। गटत पेषि बेफरं ॥
बजन घाव घमरे। मनौ परेत्र घुमरे ॥ ७६ ॥
कुटै सिर करारयं। कपाम ज्यौं पिजारयं ॥
फुटन यौ सुपोपरी। कि जोग पत्र टोपरी ॥ ७७ ॥
कटन जघ कुभए। मनौ सुरभ गिभए ॥
★ परीय मंझ मामय। चलुक्क रप्पि नामय ॥
॥ छं० ७८ ॥ रू० ४२ ॥

सांझ हो गई परन्तु लड़ाई न रुकी।

कवित्त परिय सझ जग मझ। टरिय ककन रकन धन ॥
भरिय पत्र जुगिनीय। करिय सिव माल सीम घन ॥
मुरिय न भ्रिन चालुक। धरिय रसगेस कन्ह हिय ॥
पैरि चलिय दरबार। सीह गज घट्टि उट्ठ ग्रिय ॥
मय मत्त मार मत्तो उररि। भररि भररि भग्गिय अनिय ॥
है घरिय लोह बुट्यौ लहरि। षेल कन्यौ किगवारनिय ॥
॥ छं० ७९ ॥ रू० ४३ ॥

दूहा कन्ह जाइ संमुह परत। कला एक मचि रारि ॥
सत सारध दूनौ कटै। भजे अवर तजि ढार ॥ छं० ८० ॥ रू० ४४ ॥

---

४२ पाठान्तर भक्त। मो। डक्त। हूं। हथ। ग्राय। पिरे। षारें। बिस्तरै। घाय। भभकि। रुधि। भद्र। भट्ट। बबकि। रद। ब। हबकि। हकए। चबकि। चकए। मोग्गित। मोग्गि। मुह। मुछ। मुछए। आनि। छए। नट। रिबकि। पत। मनो। कुटें। सिरं। ज्यो। यो। मनो। ★ यह पाद सं० १६४७ की पुस्तक मे नहीं है ॥

४३ पाठान्तर - शिव। चालुक। पैट। चलीय। घट। उपटिग। भाठीय ॥

४४ पाठान्तर —जा। समुह। दूनौं। कटे। भजि ॥

कान्ह चौहान का युद्ध जीतना ।

करषा झरैं (★ मार) सिर मार विकरार रत्तन झरत ॥
परत धरनीय ढरैं जरकि जूषी ॥
चक्क चहुवांन चालुक्क भृत उपर चर ।
कोपियं कन्ह मनौं काल रूपी ॥ छं० ८१ ॥
रुड भकरुड किय तुंड मुंडन ररत ॥
बाहि सिर सार मनौ मेह बट्टै ॥
कूह करि जूह समूह को कोक हूर ॥
रोस रिस राह जेम जीव छुट्टै ॥ छं० ८२ ॥
पांनि करि पानि अरि पानि करनीय हक ।
सांम अरी पारि सब पेत सीच्यौ ॥
भ्रान सोमेस नृप न सजन भग्ग ।
पेत पयकार पय काल पीज्यौ ॥
। छं० ८३ ॥ रू० ४५ ।

श्लोक हतिन निनायक सेना, कथित न च पर्वतम ।
अयुद्धं चरन एषा जिना स्वामि न सुग्रम ॥
॥ छं० ८४ ॥ रू० ४६ ॥

प्रतापसिंह आदि के मारे जाने का समाचार
सुनकर पृथ्वीराज का अप्रसन्न होना ।

दूहा नीठ विनासन अप्प भर, गनौ कन्ह चहुआंन ।
गए ग्रेह ले सकल मिलि, प्रथीराज अकुलान ॥
॥ छं० ८५ ॥ रू० ४७ ॥

पारि भिन्न चालुक्क भर, मध अजमेर प्रमान ।
सात भ्रान भीमह हने, रन जीयो भर कान ॥
॥ छं० ८६ ॥ ★रू० ४८ ॥

---

४५ पाठान्तर ★ अधिक पाठ है । धरनि । मनो । जम । दारि । नृषात ।
† यह श्लोक सं० १६४३ की पुस्तक मे नहीं है ॥

४६ पाठान्तर --हनन । यं । अयुद्ध । स्वामी । रिने । जुधं ॥

४७ पाठातर --अप । चहुआन । अकुलान ॥

४८ पाठान्तर --मध्य । प्रमान ★ यह श्लोक सं० १६४३ की पुस्तक में नही है ।

पृथ्वीराज की अप्रसन्नता सुनकर कन्ह चौहान का घर बैठ रहना, तीन दिन तक अजमेर में हरताल पड़ना।

बत्त सुनी तब कान्ह नें, षिज्यौ कुअर प्रथिराज।
बैठि रहे तब निज सुघर, अँदरबार ममाज॥

॥ छं० ८७ ॥ रू० ४९ ॥

तीन दिवस अजमेर मे। परी हट्ट हटनार॥
हह कोह बज्यौ विषम। लग्यौ मु भूत भूत भुआर॥

॥ छं० ८८ ॥ रू० ५० ॥

मधि बजार चल्लि रुधिर नदि। रत्त नड घन मड॥
बरकि कन्ह चहुआन करि। तिल्ल निल्ल मम तन तड॥

॥ छं० ८९ ॥ रू० ५१ ॥

सात दिन तक कन्ह के न आने पर पृथ्वीराज का उनके घर मनाने को जाना और कहना कि संसार में यह बुराई हुई कि घर बुलाकर चालुक्यों को मार डाला।

कवित्त मात दिवम जब गए। कन्ह दरबार न आए॥
तब प्रथिराज कुंआर। आप मनाए ग्रह जाए॥
तुम ऐसी क्यों करो। आप सिर चढ़िय गुराई॥
कहिहै गव चहुआन। हने चालुक्क मुराई॥
आएनि विरे अप्पन मुघर। मो गावर ऐसी करिय॥
इह दोम अप्प लग्यौ खरौ। बत्त वित्तरिय जग बुरिय॥

॥ छं० ९० ॥ रू० ५२ ॥

कन्ह का कहना कि मेरे सामने दूसरा कौन सभा में बैठकर मोछ पर ताव रख सकता है।

दूहा कही कन्ह चहुआन तब। मो बैठें कोइ आनि।
सभा मद्धि संभरि अवर। मुच्छ धरै क्यौ पानि॥

॥ छं० ९१ ॥ रू० ५३ ॥

---

४९ पाठान्तर—बत। षिजय। कुंअेर। प्रथीराज रहे। † यह रूपक कौल-फील्ड वाली पुस्तक मे नहीं है॥

५० पाठान्तर—हट। हटनार। भुआर॥

५१ पाठान्तर—चहुआन। तिल॥

५२ पाठान्तर—कुंआर। अप। शिर। काइय। कहिहें। चालुक। राइय। विवै। करीय। लग्यौ। विस्तरिय।

५३ पाठान्तर—कोई। आनि। मध्यि। संभरी। मुछ। पांनि॥

पृथ्वीराज का कहना कि तो आप आंख में पट्टी बांधे रहा कीजिए ।

करी अरज प्रथिराज बर । जो मानौ इक कन्ह ॥
सभा बुराई जौ मिटै । चष बँधि पट्ट रतंन ॥ छं० ९२ ॥ रू०५४॥

पृथ्वीराज का जड़ाऊ पट्टी बनवाकर अपने हाथ से कन्ह के आंख में बांध देना ।

तब प्रथिराज विचार करि । चष आस्यौ हो पट्ट ॥
बहुरि कोइ भर भोरही । धरत परै इह बट्ट ॥
॥ छं० ९३ ॥ रू० ५५ ॥

मनी बत्त सुसत्य मन । लै जराब को पट्ट ॥
राजन कन्ह चप बंधरी मनौ मिरी जग घट्ट ॥
॥ छं० ९४ ॥ रू० ५६ ॥

कवित्त पाव लष्ष परिमान । मोल किंमति ठहराइय ॥
तौल टंक इकईस । नथन आकार सवारिय ॥
जरिय जवाहर मद्धि । अरक उद्योत प्रकासिय ॥
दिष्टि मंडि देषंत । दुअन उर अंदर त्रासिय ॥
कंचन किलाव लगाय कल । पट्टी बंधिय चंद भट ॥
तिहि वेर कन्ह चहुआन चष । रूप प्रगटि अति पिच्चि वट ॥
॥ छं० ९५ ॥ रू० ५७ ॥ †

दूहा – पाटी बंधिय कन्ह चष । इह ओपम करि अँष्षि ॥
तन सरवर जल बीर रस । ओटा वधि सुरष्षि ॥
॥ छं० ९६ ॥ रू० ५८ ॥ †

पट्टी रात दिन बंधी रहती थी ।

दूहा सो पट्टी निस दिन रहै । छोरि देइ द्वै ठाम ॥
कै सिज्या वामा रमन । कै छुट्टन सग्राम ॥
॥ छं० ९७ ॥ रू० ५९ ॥

---

५४ पाठान्तर - प्रथीराज । जो । मानौ । जौं । बंधि । ★ संवत् १६४७ की प्रति में यह नहीं है ॥

५५ पाठान्तर - पृथीराज । पट । वट ॥

५६ पाठान्तर -मानी । मनि । पट । राज रूप चष कन्ह बंधि । मनुं । सरी । घट ॥

५७ पाठान्तर - परिमान । ठहराईय । तोल । मध्रि ।

५८ पाठान्तर —अपि । रषि ॥ † ये दोनो रूपक संवत १६४७ की पुस्तक में नहीं है ।

५९ पाठान्तर—निशि । सेज्या । संग्राम ॥

करि सुचित्त चित कन्ह कों। प्रथीराज रम भाइ॥
अवर सूर सामंत सब। रहे हीय सुख पाइ॥
॥ छं० ९८ ॥ रू० ६० ॥

एक बाज ऐराक वर। हम नाम अवर्नीस॥
साजि साजि राजन रजक। कन्ह कीन बगसीस॥
॥ छं० ९९ ॥ रू० ६१ ॥

जम दढ इक्क जराव जरि। एक उच्च सिर पाव॥
न० (मृ★) नाहर वर कन्ह को। कीनो कुंअर पसाव॥
॥ छं० १०० ॥ रू० ६२ ॥

कन्ह चौहान की प्रशंसा।

कवित्त इमो कन्ह चहुआन। जिमो भारथ्थ भीम वर।
इमो कन्ह चहुआन। जिमो द्रोनाचारज वर॥
इमो कन्ह चहुआन। जिमो दससीस वीसभुज॥
इमो कन्ह चहुआन। जिमो अवतार वारि भुज॥
जुध वेर इस्स तुट्टै जुरिन। सिघ तुट्टि लपि सिघनिय॥
प्रथिराज कुंअर साहाय कज। दुरजोधन अवतार लिय॥
॥ छं० १०१ ॥ ६३ ॥

दूहा जहँ जहँ राजन काज हुअ। तहँ तहँ होइ समथ्थ॥
मेर हब्ब बथ्थह भरै। नर नाहा नर नथ्थ॥
॥ छं० १०२ ॥ रू० ६४ ॥

चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयों के मारे जाने का समाचार सुन कर बहुत दुखी होना।

गाथा फुट्टिय वत्त प्रहास। अनिल वसिजेम परिमलय॥
सुनियं चालुक भीम। सारंग सुत हति चहुआन॥
॥ छं० १०३ ॥ रू० ६५ ॥

---

६० पाठान्तर-चित्त। भाय। नाय। पाय॥

६१ पाठान्तर ए। नाम।

६२ पाठान्तर--सिराव। ★ अधिक पाठ है। को। कीनी। कुअर।

६३ पाठान्तर इमो। चहुवान। जिमो। भारथ। द्रोणाचारिज। एम। इम। सिहलीय। प्रथीराज। दुर्जोधन।

६४ पाठान्तर—जहां २। तहां २। होय। समथ। हथ। बथह। भरै। नृथ॥

६५ पाठान्तर - अ। सुनीयं। सारंग। चहुवानं॥

जलियं चालुक नाथ । अग्नि विलग्गिय उअर मक्षायं ।।
मुक्किय नृप नीसासं । मंनिय बुष भ्रात अप्पाय ।।

।। छं० १०४ ।। रू० ६६ ।।

भीम का पृथ्वीराज से भाइयों के पलटे में लड़ाई मांगना ।

दूहा अति दुख मन्यौ भीम हिय । लिषि कग्गद चहुआन ।।
मत्त भ्रात मेरे हने । इहै वैर अप्पान ।।

।। छं० १०५ ।। रू० ६७ ।।

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि हम तयार है जब चाहे आओ ।

सुनिय राज चहुआन वर । दिय कग्गद फिरि तेह ।।
जब तुम मग्गो वैर वर । तब हम वैर सुदेह ।।

।। छं० १०६ ।। रू० ६८ ।।

भीम का चढ़ाई के लिये तय्यार होना पर सरदारों के कहने से वर्षा ऋतु भर ठहर जाना ।

कवित्त बंचि कग्गद चालुक्क । रोम लग्यौ अयान कह ।।
करो मेन सब एक । चलो अजमेर देस रह ।।
तब कह्यौ वीर परधान । मास पावस्स रहै घर ।।
करि कातिक तन कटक । हनै चहुआन सोम वर ।।
सुनि राज अग्ग मन्यौ सुहिय । मनह सब जन अवर नर ।।
उपसन्न रोस चालुक्क नृप । थिन थिन विनिय जेम थिर ।।

।। छं० १०७ ।। रू० ६९ ।।

उपसंहार का कथन ।

दूहा रहै राज अजमेर महि । संभरेस चहुआन ।
निसि दिन यौ क्रीला करै । ज्यौ अवतार सुकान्ह ।।

।। छं० १०८ ।। रू० ७० ।।

इति श्री कवि चन्द विरचिते प्रथिराजरासके कन्हाख्यपट्ट बन्धनं नाम पञ्चम प्रस्ताव संपूर्णम् ।। ५ ।।



---

६६ पाठान्तर –लुगिन । मनीय ।।

६७ पाठान्तर –कग्गर । चहुवांन । मान । अप्पांन ।।

६८ पाठान्तर मग्गो ।।

६९ पाठान्तर –बंचि । कग्गर । लग्गी । अयानकह । अवासकहि । रहि । प्रधांन । मास । पावस । कातिक । मन्यौ । उपसंमि । विनीय ।।

७० पाठान्तर –चहुवांन । यों । ज्यों ।।

अथ आषेटक वीर बरदान वर्णन समय लिख्यते

छठां समय

पृथ्वीराज के कुंअरपने के तपतेज का वर्णन

कवित्त कुंअरप्पन प्रथिराज । वर्ष त्रिय सपत समर तन ॥
समूह तेज असहेज । हरन तम तेर ससि गन ॥
उर किवार भुज वज्र । अग वज्रंग पल्लन हुअ ॥
भुज भुजंग वर जोर । जोर त्रनह सत्रन भुअ ॥
अंगअंग अग जनु अगदह । पवन पाइ आपेट महि ॥
संग डोरि श्वान जीवन लषै । सबन अग्ग अपजह तिवहि ॥
॥ छं० १ ॥ रू० १ ॥

कवित्त बर्षन सोभा नैन । मैन जनु मुदित सरित सर ॥
हरष हास मुष कति । बिकसि जनु कमल सूर बर ॥
मधुर सबद गुंजार । जानि गंभीर हरिय मद ॥
गयन गरुअ गज भति । चलत कुल चालि वेद बद ॥
चहुआन सूर सोमेस सुअ । ध्रुअ जनु भुअ अवतार लिय ॥
मन हरनि हरत मन पिष्पि कै । जनु विधिना अप हथ्थ किय ॥
॥ छं० २ ॥ रू० २ ॥

छंद पद्धरी रहै सुभट थट्ट प्रथिराज सग । जै पैज गग सुअ कप्पि पंग ॥
षट रस विलास अनन अपार । भुवनंन भोग भट सुभट सार ॥छं० ३॥

---

१ पाठान्तर स० १ ४० की पुस्तक में इस का ऐसा पाठ है कुअरपन पृथ्वीराज । वर्ष त्रिय बीस समर वरष । समूह अस तेज हेज । जोर त्रनह सत्रुन भय । भुज भुजग वर जोर हरन तरोर तमरगन । उर किवार भुज वज्र । अंग वज्रंग पल्लन सन ॥ बाकी दोनों तुक जैस के तैसे हैं ।

२ पाठान्तर---सोभा । नेन । मेन । उदित । सरनि । कानि । विकसित । जानि । कुलि । चहुआन । सुय । मन । पिपिकै । हथ्थ ॥

३ पाठान्तर --प्रथीराज । कपि । अनन । ज्यों बस । छतीश । चहुआन । उप । मधि । कांनि । मधि । पृथीराज । बानि । मधि । गुरदेव । जाय । मजि ।

सुरनाथ सग सुर सकल सोभ । बसह छतीस चहुआन ओप ॥
नव कुलन मध्य नव नाग जानि। तिम जूथ मद्धि गज राज बानि ॥छ०४॥
उडगनन मद्धि गुरदेव कति । बरनी न जाइ सुत सोम भति ॥
छूह पच मद्धि ज्यो हनुअ लक। तिम [illegible] कथ्थ पल पग्न बक ॥छ०५॥
नव ग्रहन मद्धि ज्यु सूर तोष । षग धम क्रम समर अदोष ॥
क्रीडत अग रँगह हुलास । विश्रवा पुत्र जनु अलक वास ॥छ० ६॥
कर तानि बान कमानि धारि । अनभूल घान नर्ण उतारि ॥
अदभुत बान विद्या अअमग । लहै दाव घाव बज्र ग अग ॥छ० ७॥
पाइक्क अक पेलत किनेक । गहि त्रिन मुदत छुट्टत गक ॥
आषेटनि पुन लषि जीव घान । गज सिंघ रिछ कुपि काल पान ॥छ०८॥
है लषै सकक करि भेद छेद । दिग्पत नयन सालोप पेद ॥
गज निगच्छ इच्छ जानत सब्ब । नाटिक निवास सम सेम कब्ब ॥छ०९॥
सम सिल्प सास्त्र वसु क्रम क्रम । सब वेद गीत गंपर भ्रम ॥
यौ नपै गिथ अजमेर माहि । सोमेस सुर चहुआन छाहि ॥
॥ छ० १० ॥ रू० ३ ॥

पृथ्वीराज की दिनचर्या का वर्णन ।

कवित्त प्रथम जामि निसि रज्ज । रज्ज हैगै दिग्पत लगि ॥
दुतिय जाम सगीत । उठव रग [illegible] जगि ॥
त्रितिय जाम भोजन्न । गमन चव जाम [illegible] ॥
[illegible] उर [illegible] । [illegible] उर [illegible] ॥
घरिग्यार रतिय [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] राज [illegible] । [illegible] ॥
॥ छ० ११ ॥ रू० ४ ॥

पृथ्वीराज का आखेट के लिये निकलना ।

कवित्त कर पद सन [illegible] । [illegible] आनन सुचरा [illegible] ॥
पटह हीस घन स । बिपुल [illegible] [illegible] पथ ॥

क्यो । [illegible] । [illegible] । [illegible] । समर । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।
अग । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।
सामन । यो । [illegible] । [illegible] ॥

४ पाठान्तर [illegible] । निसरज । [illegible] । [illegible] । जाम [illegible] । [illegible] ।
भोजन । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । बसीय । [illegible] । [illegible] ।
महूरन । [illegible] ॥

इक बंधिय इक बधिय। एक भंमिय भ्रम भीर ।।
इक्क सु मृग विफुरीय। इक्क चिकरीय दीन सुर ।।
कवि चंद मोर चिहुं ओर घन। दिघ्घ सद्द दिग अंत भो ।।
संकिय सयल्ल जिम रंक। इम अ न्य आतंक भो ।।
।। छं० १२ ।। रू० ५ ।।

अकेले कवि चंद का बन में भूल जाना।

कवित्त - जंगल्ल धर सुकुमार। करत आपेट सपत्तो ।।
संग सूर सामंत। गहन गिरि पोह सुरत्तो ।।
एक सहस संग स्वान। एक सतं चीते सगह।
उभै सत्त सँग हिरन। करन सन पवन सुभंगह ।।
सम विषम विहर बन सघन घन। तहां सथ्थ जिन तिन्न हुअ ।।
भूल्ल्यो सुसंग कवियन वनह। और नही जन संग दुअ ।।
।। छं० १३ ।। रू० ६ ।।

एक आम के पेड़ के नीचे एक ऋषि से उसकी भेंट होना।

दूहा विपन विहर ऊरल्ल अकल्ल। सकल्ल जीव जड जाल्ल ।।
परसंपर वेल्ली विटप। अवलंबि तरल्ल तमाल ।। छं० १४ ।।
सघन छांह रवि करन चप। पग नर पसु भजि जान ।।
सरित सोह सम पवन धुनि सुनत श्रवन झहनान ।। छं० १५ ।।
गिरि तट इक सरिता सजल। झिरन झिरन चिहुं पास ।।
सुतरु छांह फल्ल अमिय सम। वेल्ली निसद विलास ।। छं० १६ ।।
तहां सु अंबतर रिप्प इक। क्रम ... अग सरंग
दव दद्धो जनु द्रुम्म कोइ। कै कोट भूत भग्रग।।
।। छं० १७ ।। रू० ७ ।।

गाहा जप काल्ला मृग माला। गोटा विभूतं जोग पट्टाय ।।
कुविजा खप्पर हथ्थ। रिद्ध सिद्धाय वचनय मझं ।।
।। छं० १८ ।। रू० ८ ।।★

---

५ पाठान्तर पन। धनु। धनुक। धनुष। नर। चय। सद। वदिय। इक। भ्रम। विफुरिय। चिहु। उर। दिघ। अंप। सकल्ल। सयल ।।

६ पाठान्तर - करन। आपेटक। संपतौ। द। पोहर। संग। साथ। तित्त। भूल्यो। कवियन ।।

७ पाठान्तर ऊपरल। परसपर। अवलंबि ।। १४ ।। झहुनांन। झहुनाउ ।। ।। १५ ।। गिर। झरत। झरन ।। अंबर। तरु। जनी। अंग न रंग दुअ ।। १७ ।।

८ पाठान्तर - बिभूत। पठायं। मसं। मंझं ।।

कविचन्द का ऋषि के पास जाकर पूछना कि आप कौन हैं ?

दूहा - चंद पिष्षि चरच्यौ सुमन। इह कोइ रूप अलेष।
पग परसौं दरसौं दरस। उत्तिम भूत अरेष ॥ छं० १९ ॥
करि बंदन कविचंद कहि। को तुम आदि अनादि।
तुम दरसन बिन दिन गए। ते सब बीते वादि ॥ छं० २० ॥
तुं † धावा करतार तुं। भरता हरता देव।
तुं दत्ता गोरस तुहीं। प्रसन होउ प्रभु मेव ॥
॥ छं० २१ ॥ रू० ९ ॥

ऋषि का पूछना कि तुम कौन हो इस बीहड़ में बन में कैसे आए।

दूहा - कहे जंगम तुं कौन नर। क्यों आगम ह्यां कीन।
जीव जंत घन विघन वन। जीव जीव वल छीन ॥
॥ छं० २२ ॥ रू० १० ॥

चन्द का अपना परिचय देना।

गाहा - दरसन देव मुनिंदं। चंदं विरहं च दुग्घदं दायं ॥
अब मुझ क्रम्य सुफलियं। दिष्पे सुफल रूप नपसीयं ॥ छं० २३ ॥
देवान वरं सिद्धाण दरणं। गुर नरिंद सनमानं ॥
गय भुम्मि दब्ब नट्ठा। पां मिज्जे पुण्य रेहायं ॥
॥ छं० २४ ॥ रू० ११ ॥

दूहा - भट्ट जाति 'कवियन नृपनि, नाथ नाम मो चंद।
आलस में गंगा बही, अब्ब गए सब दंद ॥
॥ छं० २५ ॥ रू० १२ ॥

जती का प्रसन्न होकर एक मंत्र बतलाना जिसके वश में बावन बीर हैं।

कवित्त - प्रसन चंद मम जतिय। दिन्न इक मंत्र इष्ट जिय ॥
इह आराधत भट्ट। प्रगट पचास बीर बिय ॥

★ यह रूपक सं० १६४७ वाली पुस्तक में नहीं है।

९ पाठान्तर पिषि। कौ। परसो। दरसो ॥ १९ ॥ न। भता। तूं। दता। तुहीं। होहि ॥ २१ ॥ † यह संस्कृत त्वम् का पहिला हिन्दी रूप है।

१० पाठान्तर - जती। तूं। कौन ॥

११ पाठान्तर - गाथा। दसनं। चंद न विरह दुदेह दंदायं। चंद्रम। दंदाई। कर्म। दिपे। सकल ॥ २३ ॥ सिद्धान। दसनं। भूम्मि। भूमि। पा। मिजे। पुन्य। रेहा इं ॥ २४ ॥

१२ पाठान्तर - नृपति। नाम। आल सर्गे। आल समय। अब ॥

करि साधन इह साध। व्याधि नासत फल धारिय ॥
गुरु उपदेसह पाइ। सकल आधीन अकारिय ॥
धारि कान मंत्र लीनौ कविय। परम पाइ अग्गे चलिय ॥
करवे सुपारिष्या मंत्र की। रचि आसन अग्गे बलिय ॥

॥ छं० २६ ॥ रू० १३ ॥

चन्द का मंत्र की परीक्षा करना और वीरों का प्रगट होना।

दूहा भली बुरी निमित्त कछु मेटि न सक्कै कोइ।
याही सो भवतव्यता कहत सयाने लोइ ॥ छं० २७ ॥
पसु आषटक करन को स। नरपति बरदाइ।
ऐसे मे इह भावर्इ, अकगमात हुअ आइ ॥ छं० २८ ॥
मंत्र परिष्या करन को, बन मझ बैठ्यो चंद।
रचि रचना सुचि स्नान करि, धूप दीप पढ़ि छंद ॥ छं० २९ ॥
रचि आसन गनपति तहं, सिद्धि बुद्धि लहि लाभ।
फुनि मनह भैरव जपत, रक्त गरज्जिय आभ ॥ छं० ३० ॥
गैन गहर गंभीर धुनि सुनि ममर भय गात।
आनन अग गज गज हुअ जानि उरक्का पात ॥ छं० ३१ ॥
गुरु दाता माता पिता सेवक सरन सधार।
उपवन बैठे चंद जहँ, है पचास पधार ॥ छं० ३२ ॥
मंत्र जत्र धारत मन, आकरष जब चंद।
प्रगट दरस दीने सबन कवि उर बढ्यो अनंद ॥ छं० ३३ ॥
महा पुरिष पिष्पै जबै, तब हुअ सरीर।
दंडवत अंजुलि करिय, मन आनद रधीर ॥

॥ छं० ३४ ॥ रू० १४ ॥

१३ पाठान्तर दीन। भठ। प्रचास। ग। नासत। धारीत। अकारीय। प य। अग्गे। अग्गै। करने। करनै। परष्या अग्गे ॥

१४ पाठान्तर निमित। भवितव्यता सयाने ॥ २७ ॥ को। नृपति। ऐसें। आय ॥ २८ ॥ परिष्या। को। बैठो। स्नान। रि। चद ॥ २९ ॥ गनईस। तहा। बुधि। उक। गरजिय ॥ ३० ॥ गगन। आनन। अग। गअ गंज। भौ। जानिक। उलका ॥ ३१ ॥ जहाँ। तहा द्वै ॥ ३२ ॥ धारना। अकर्षे। बढ्यो। ३३ ॥ पुरुष ॥ पिषे। जबे। हर्ष। शरीर। ३४ ॥

बीरों के रूप आदि का वर्णन ।

छंद पद्धरी आनद चद दरसंत इद । सोभा सुभत बज्र ग दद ॥
तन तेज तरनि ज्यौं घनह ओप । प्रगटी कि किरनि धरि अग्नि कोप ॥३५॥
चदन सुलेप कसतूर चित्र । नभ कमल प्रगटि जनु किरन मित्र ॥
जनु अगनित नग छवि तन बिसाल । रसना कि बैंग जनु भमर ब्याल॥३६॥
मृग मद मयूष जनु पिउष पान । प्रभ मुदित मगन नाभी स्थान ॥
मर्द्दन कपूर छवि अग हनि । सिर रची जानि बिभूत पंति ॥ ३७ ॥
कज्जल सुरेष रचि नैन पति । सुत उरग कमल जनु कोर पति ॥
चंदन सुचित्र हनि भाल रेष । रजगुन प्रकासने अरुन भेष ॥ ३८ ॥
रोचन लिलाट सुभ मुदित मोद । रवि बैठि अरुन जनु आनि गोद ॥
घघर घमकि पाइन बिसाल । नृत्तन जननि जनु अग्ग बाल ॥ ३९ ॥
धमरम भुर बनि बार सीस । छवि बनी मुकुट ज जटा ईस ॥
बनि बिनदकंठ इक बेलि माल । आभाति उड़गन निसापाल ॥ ४० ॥
चावकनि पहुप बनि कंठ कंति । रस रमन भमर जन पीन पंति ॥
नृत्तन एक सगीत भंनि । नारद रिझ बर धरन नंनि ॥ ४१ ॥
इक पग्ग बथ्थ इक लग्ग हथ्थ । गज नरनि केहि नन गोरन सथ्थ ॥
इक प्रगट गीत इक दुरे ग्यान । परमत [illegible] सुमन दान ॥ ४२ ॥
[illegible] [illegible] गिर गरुअ [illegible] । गरजत [illegible] जन [illegible] ॥
इक उरद्धि नद्द सगीत नाल । [illegible] [illegible] नागम [illegible] ॥ ४३ ॥
इक बद्ध पंग सम रत्त थाप । पौरिस प्रगट इक रचन साप ॥
दाढ़ाग्र [illegible] चबत फुनिद । इक धरत ध्यान जानिक मुनिद ॥ ४४ ॥
इक गरनि मद सुप [illegible] एक । [illegible] जर सहार निर नरत नेक ॥
इक मुष्ष अग्गि ज्वाला उठत । इक पग्ग दल बग्गिय उठत ॥ ४५ ॥
इक करत गाज [illegible] एक । एक कहत सुदत गिरि उठत केक ॥
इक करत [illegible] गिरि सिषर तोड़ । इक रूप बहुत इक एक छोड़ । ४६ ॥
धमकंत धरनि इक लात घात । इक स्वास उड़त उपवनह पात ॥
बिपरीय चरित ए चद भट्ट । हंसित स्याम मन स अघट्ट ॥ ४७ ॥
रोमंच अग उम्मार देह । सैभीति भनि तहां दिष्षि एह ॥

॥ छं० ४८ ॥ रू० १० ॥

---

१५ पाठान्तर ज्या । उत । अग्न ॥ ३५ ॥ अगिनह । भ्रमर ॥ ३६ ॥ म्रिगमद । पियूष । पांति । अगहूंति । बिभूति ॥ ३७ ॥ नेत । प्रकाश ॥ ३८ ॥ आनि । घुघर । घमकि । पायन । रसाल । नृत्यत । अग ॥ ३९ ॥ बलि । आभाति । उडगन । निसापाल ॥ ४० ॥ नृत्यत । नारद । रीझ ॥ ४१ ॥ हथ । तरुन । स्वच्छ । दुरे ॥ ४२ ॥ [illegible] ॥ ४३ ॥ बद्ध पोप । पावन । एक ध्यान

कवित्त जिन देखत दरसन । देव दानव हिय सकहि ॥
किंनर जष गंध्रब्ब । सर्व सनमुष जिन कंपहि ॥
सिध्ध साधक जिन दरसि । तरसि सकर हिय विभ्रम ॥
महावीर बलवंत । कवन सहि सक तिन क्रम ॥
अदभुत चरित्र चंदह चरचि । सुर विचित्त हिय इच्छ किय ॥
आराधि मंत्र मन तार सह । साव धान सम्भारि जिय ॥
॥ छं० ४९ ॥ रू० १६ ॥

दूहा फुनि सुदिष्ट दूरी करन, अकड भयानक भीर ।
विना मंत्र को वसि करै महाराय वे वीर ॥ छं० ५० ॥
अनरिति फल काहू करन किहिकर अनरित फल ।
दिव्य वस्त्र काहू करन, नाना वरन अमल ॥ छं० ५१ ॥
सन मन को दिखियन [illegible] मय [illegible] ईसन ।
तामस [illegible] प्रबल [illegible] ॥ छं० ५२ ॥
[illegible] मह [illegible] [illegible] सम्प ।
[illegible] पन्नग [illegible] भूप ॥ छं० ५३ ॥
[illegible] भूप ।
[illegible] ॥ छं० ५४ ॥
[illegible] मह ।
[illegible] ॥ छं० ५५ ॥
[illegible] ।
[illegible] परमम ॥
॥ छं० ५६ ॥ रू० १७ ॥

चन्द का बीरो को देख कर प्रसन्न होना

दूहा दिषिय चंद आनंद मन, धनि सुझ गुर उपदेस ।
महा पुरुष दिष्षे प्रसन, सो मन मिटि अंदेस ॥
॥ छं० ५७ ॥ रू० १८ ॥

जानि कै । [illegible] । सुप । [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । उठत ॥ [illegible] । [illegible] । स्वास । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ ४७ ॥ उभार । [illegible] । दिषि ॥ ४८ ॥

१६ पाठान्तर [illegible] गन्नर्व । सिद्ध । महावीर । अद्भुत । चरित्त [illegible] । सावधान ॥

१७ पाठान्तर करण । भयानक । वे ॥ ५० ॥ काहू कदण । वर्ण ॥ ५१ ॥ सन । मत । दिषियन । से [illegible] । [illegible] ॥ ५२ ॥ पन्नग । दिषित ॥ ५३ ॥ कोई । [illegible] ॥ ५४ ॥ बरस । संदुर ॥ ५५ ॥ [illegible] । करतह । रमम । भम । आपम पद परमम ॥ ५६ ॥ **१८ पाठान्तर** दिषि । दिषे । प्रसन । अदेश ॥

चन्द का बीरों की पूजा करना ।

कवित्त मनरूप अंजुलि जोई, करी दंडौत सबन कहुँ ॥
कुसुमंजलि सिर मंडि । धूप नैवेद समूह सह ॥
आरति सबनि उतारि । नयन नैनह सब मिल्लिय ॥
रहे पिण्खि सब बीर । जानि पनग बच पिल्लिय ॥
किनी सुभ गति भव भावना । चित चंचल सुथिर करिय ॥
भय चंद चंद तन मन प्रसन । अस अभूत पूजिजय रचिय ॥
॥ छं० ५८ ॥ रू० १९ ॥

चन्द का पृथ्वीराज के लिये शत्रुशमन मंत्र ग्रहन करना ।

कवित्त जिन बीरन बसि करन । जोग जोगी हठ साधहि ॥
जिन बीरन बसि करन । कुल आराधन [illegible] ॥
जिन बीरन बसि करन । चरन सत गुरु अभ्यासहि ॥
जिन बीरन बसि करन । प्रेत भूतन बिसवासहि ॥
सो बीर पंच हुअ सहज में । जसी [illegible] परसाद किय ॥
प्रथिराज भाग बरदाइ बर । सत्र समन [illegible] किय ॥
॥ छं० ५९ ॥ रू० २० ॥

क्षेत्रपालों (बीरों) का पूछना कि हम लोगों को क्यों बुलाया है ।

दूहा पतपाल तब चंद सों । किय हुकम सुहेव ॥
जब सब आराधे हम । क्यों आराधे सब ॥
॥ छं० ६० ॥ रू० २१ ॥

चन्द का यह उत्तर देना कि हमने पृथ्वीराज की सहायता के लिये आप लोगों को बुलाया है ।

साटक आश्चर्यं च देव सेव सबयं, पिथ्थं हितं कारनं ।
विग्रम बल सहाय आय भद्रं, भद्रं भया भंकरं ॥
इच्छेय मन पेमरा च वरयं, दद दल दारुनं ।
श्रीबीराधि सुरिंद चंद नमयं, चतुरंग मर्नागतं ॥
॥ छं० ६१ ॥ रू० २२ ॥

---

१९ पाठान्तर- [illegible] । इस्नान । करी । कहु । नैवे । कही । सहु । सबन । सैन । नैन । मिल्लिय । पिखि । जानि । पिल्लिय । किनी । भवना । सुथिर । प्रमन । पूजिन ।

२० पाठान्तर- अधम आतम भ्रम सहहि । आजिकरन । बिसवासहि । सोइ । पृथ्वीराज । सत्रु ॥

२१ पाठान्तर- सो । हुकम । सु ॥

चन्द का प्रार्थना करना कि जैसे आप राम रावण आदि की लड़ाई में रक्षा करते आए ऐसे ही पृथ्वीराज की भी करना।

कवित्त महनि मच्चि जब सुरनि। जुद्ध असुरा सुर जब्बह ॥
असरन अमिय अमीय। मोहि असुरन तब तब्बह ॥
काली सुर महिषास। त्रिपुर जितिय महिषासुर ॥
जालंधर भसमास। राम दसकंध अभगुर ॥
जहं जहं सुदव वक्रम परिय। करिय अभय तुम देव तब।
देवाधि देव दानव दहन। चरन सरन हम रखिय अब ॥

॥ छं० ६२ ॥ रू० २३ ॥

वीरों का प्रसन्न होकर कहना कि जब गाढ़ पड़े तब स्मरण करना।

कवित्त गिनक मान रहि देव। वचन चदह उच्चारिय ॥
हम प्रसन तुम सेव सुनह भट्ट सुभ कारिय ॥
समर मग तुअ राज [illegible] पल जानिय।
[illegible] मुनि [illegible] तुम मानिय ॥
सिर [illegible]
करि [illegible] नाम [illegible] ॥

॥ छं० [illegible] ॥ रू० २४ ॥

भैरव का एक वीर को आज्ञा देना कि सब वीरों का नाम बतला कर चन्द को पहिचनवाना।

दूहा तब [illegible]।
[illegible] नाम [illegible] ॥

॥ छं० [illegible] ॥ रू० २५ ॥

सब वीरों का नाम गुण कथन।

दूहा वज्रपाट ता नाम रन घन तन घोर भयंक ॥
प्रथक नाम बरनन सबन। सुनत मिटै तन संक ॥

॥ छं० ६५ ॥ रू० २६ ॥

---

२२ पाठान्तर पिय। वर। सुभट। घट। [illegible]। सुधीर। चरनम्य। सरनागत ॥

२३ पाठान्तर महन। मचि। असुरान। जबह। अमिय। अमीय। मोह। तबह। राम। दसमथ। जहा [illegible]। मकर। रवि ॥

२४ पाठान्तर मोन। वचन। उचारिय। उचारीय। प्रसन। हुव। हुअ। भटं। कारीय। जानीय। नहा। देह हमे मनमानीय। मनमानिय। मदा। प्रसंन। करि। भट्टह। बिचारि। नाम कहो ॥

२५ पाठान्तर दोहरा। नाम।

छंद पद्धरी- गुन ईस चरन गुन गहर गाइ।प.ल सिद्धि बुद्धि जा नाम पाइ ॥
बानिय प्रमंन जो प्रथम होइ । करो प्रसन बीर पचास दोइ ॥ ६६ ॥
आइक्क बीर यह प्रथम सेव ॥ तिहि प्रसन प्रमन सब जानि देव ॥
वपुलाइ वीर वृनन विनोद ॥ जिहि प्रमन मदा आनद मोद ॥६७॥
बुँढिआइ वीर बन्दौ सनेह ॥ जल मय मुथलनि करि बरसि मेह ॥
आनल्लप्रहारिय प्रबल वीर ॥ जिहि जुग्त दनुज भरहरै भीर ॥६८॥
नागीय क्रीडनह होइ कोट ॥ ब्रह्मा उपाम करै ट्रक दोइ ॥
गुलीय भज अनगज वीर ॥ वज्रह सुभजि ढोइ करै चीर ॥ ६९ ॥
ममसान लोटना बोर बक ॥ तिहि पीर भीत अन सक भक ॥
गढ उपडनाइ नो बीर नाम ॥ क्रोधन कट नह लहै ठाम ॥ ७० ॥
मामुद्र निग्न इह वीर चाव ॥ सप्तम समुद्र मनु बहत बाव ॥
मामुद्र सोप अनभग बीर ॥ दनु देव समुद्रन हरत नीर ॥ ७१ ॥
इह लोह भजनिय वीर दीम ॥ मारन पहार भजै गरीम ॥
सकला ओट इह नाम धारि ॥ भजै जर्जार जनु मुन तार ॥ ७२ ॥
विम पाय गाय मा वीर जानि । पचवन जहर जनु दूध पानि ॥
रुंडमाल नाम लोट है देष । पिग्गिय भयक उव कालभप ॥ ७३ ॥
अग्गिया वीर कुप्पन वार । प्रब्बनप्रजारि सा करत छार ॥
बिपपिया बीर बीरगधि बीर । निहि क्रोध दनुज सहरै भीर ॥ ७४ ॥
जमघट नाम औघट्ट जोर । जिन गहज गाज घन घोर मोर ॥
कालाइ नाम इह वीर लेषि । सब नजै भीर भै भीत देषि ॥ ७५ ॥
कुरलाइ नाम इह कलन जाइ । सुर असुर नाग तानकै पाइ ॥
अगिज्वाल बीर जब होत कोह । तब जरत तेज गिरसिषर पोह॥७६॥
विपकन बीर अन्यत वक । जिन पिपि वक अन सक मक ॥
रगतिया बीर पग रत्त रग । अरि रत्त बाह सो करत भग ॥ ७७ ॥

२६ पाठान्तर नाम । पृवक । प्रथुक । बग्नन । मिट ॥
२७ पाठान्तर—गाय । नाम । पाय । बानी । प्रमन । हाय । करो । दोय । ॥ ६६ ॥ आइक । निहि । लाय । जिहि ॥ ६७ ॥ वुढि । र रह । थलन । अनल । प्रहारीय । जिहि ॥ ६८ ।। क्रोड नह । करे । दाय । अनभग । हा ॥६९॥ समसान । तिहि सक बक अनभीन वीर । नाग नाम । हले । ठाम । ॥ मामद । जनु । बहतु । बायु । माममुद्र । शोषा मावै समुद्र सब पिवै नीर । ७१ ॥ और । जजीर । ॥ ७२ ॥ विसपावरा । पानि । मानि । रुडमाल । पिपिय । भय ॥ ७३ ॥ अगिया । कोपंन । पब्बंन । प्रजार । करै । विपपियाइ । निहि ॥ ७४ ॥ समघंट घाट ।

कोइलाइ नाम जो सेव पाइ । तिन कष्ट होत भग्गै सदाइ ॥
कालक नाम करौ बीर सेव । निहि प्रसन काम दुग्ध कि देव ॥७८॥
कालवे लाइ नाम बिन बीर कौन । गम अगम थान जनु वहत पौन ॥
काल घटाइ बज्र ग वान । कोपन दनज दल हरन पान ॥ ७९ ॥
इद्र बीराइ बल इद्र जोर । त्रीगुन विलास तन हरत रोर ।
जम बीराइ बीर क्रम्यन्त कोह । मत्तउ समुद्र जल करत गेह ॥८०॥
देवगिन नाम करौ सेव पाइ । सुभ धर्म कर्म दाता सदाइ ॥
उंकार बीर रमि करो ध्यान । जिहि प्रसन सदा आनन्द ग्यान॥ ८१॥
झापटा बीर जब जुरन जुद्ध । नहि सहत जोर दनदेव सुद्ध ॥
मानिक्क भद्र है सेर मान । ठेलन अद्रिल्ल गढ दुर्ग पान ॥ ८२ ॥
कपाडिया बीर कहा करौ विनि । मन वित्त राग लै मुक्ति जित्ति ॥
केदाइ रा. नव जुद्ध आर । दिग्पन्त नैक जिन जात पाप ॥ ८३ ॥
नरसिंध बीर नरसिंघ रूप । त्रीगुन विलास आतम अनप ॥
गोरिया बीर गुन सकल जानि । नव रसन राग नाना विनान ॥८४॥
घट घट बीर जनमे सुजान । सोपन समुद्र अरि समुद पानि ॥
कटेभ्य बीर सुनि समर थाज । दनु दलन कटक मे परै गाज ॥८५॥
बग नाम बीर जब समर कच्छ । बग लेन ढुंढ जनु नीर मच्छ ॥
माहल्लवगाव वज्रंग अग । अदभून अग रूपह सुरङ्ग ॥ ८६ ॥
मतो माइ सत मनह सुधीर । पर मथ्थ अथ्थ भव नाथ कार ॥
महा सतोष मत संग धार । सेवक समुद्र भव नाव पार ॥ ८७ ॥

ओघट । ओघट । कालाय । बीर । लेप । नजै । देप । ७५ ॥ कुरलाय । नाम । निहि जाई । पाय क्रोध । पोध तव जरत सिपर गिर तेज पोध । ७६ ॥ बीर । बंक । पिपि । वाह ॥ ७७ ॥ कोरा । नाम । भग्गै । कालकाइ । कालका । नाम । करो । निहि ॥ ७८ ॥ ब्रिन । किन । कोन । बहि । समीर । वान । दनुनि । पानि । पान ॥ ७९ ॥ वीर । त्रिगुन क्रमत । जल हरन ॥ ८० ॥ नाम । करूं । करो । पाय । सहाय । सरो । ध्यान । जिहि । ग्यान । ग्यानं ॥ ८१ ॥ झापरा । युद्ध । नह । माणिक भद्र । मान । पानि ॥ ८२ ॥ कापडिया । कहा । करो । वीत । जिति । केदाइराय । दिषंन । नेन ॥ ८३ ॥ त्रिगुन । गोदिला । जान । जानि । विनानं ॥ ८४ ॥ घटाघटे । दुजान । मे । सु जान । समुंद । यानि । कुनटेभ्य । सनि । मैं । परं ॥ ८५ ॥ वग । नांम कछि । कछ । लैत । ढुंढि ।

भ्रमराइकाइ बल बाय बेय । भ्रम परे समर बल परे लेय ॥
महाभ्रमराइ काइक अजीत । भ्रम होइ ताहि जाक्रर चीन ॥ ८८ ॥
सहमाष अष्पि कर सहन जान । जानु द्रुपद मध्य रहै रच्छ दान ॥
मह स्राग अग नित रूप चित्र । भय भीन अभय भै करन मित्र॥८९॥
षेत्र पाल षिति पल करै ष्याल । नाना चरित्र गोपाल बाल ॥
भूनषनइ बीर बलवन्त कूर । तटकन्त पिञ्झि तन करत चूर ॥९०॥
साकिनीमार अदभूत जोर । समरन्त भक्त तन हरत रोर ॥
बेदरी रीति भञ्जन बलाइ । कल्पन करन जे तक तपाइ ॥ ९१ ।
मालि बाहनह ससि सूर रूप । सेवक निवाजि बर करन भूप ॥
ए नाम बीर सुनि चंद लेइ । पहिचानि प्रमन करि विदा दइ ॥
॥ छं० ९२ ॥ रू० २७ ॥

चंद का बावनो वीर को पहिचान कर प्रणाम करके विदा करना और आर पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे बढ़ना ।

कवित्त पहिचानिय कविचंद । बीर बावन सूर बर ॥
महाकाय मदमत्त । अत जनु अग्गि दनुज डर ।
तेज साजि नग भाजि नाग धीरज धीर धर ॥
भीत भयकर भयान । जानि ग्रीषम अगनि उर ॥
करि नवीन चद पहिचान नव । बज्रपान अग्गा रचिय ॥
बहुराइ देव कनियन प्रबल । मिल्लन पिथ्थ आगे चलिय ॥
॥ छं० ९३ ॥ रू० २८ ॥

चन्द का उस जङ्गल का वर्णन करना जहां पृथ्वीराज आखेट खेलता है ।

कवित्त अग्ग गयौ गिरि निकट । विकट उद्यान भयकर ॥
जँह न पवरि दिसि विदिसि । बहुत जहं जीव पयकर ॥
सिह कोल गज रीछ । बहुत सामर बलवन ॥
चीतल चीत हिरन । पाइ परके भजि जन्ते ॥

मठ । मर्हवगाव । ८६ ॥ मत्त । मनह । परमथ । भय । नामकीर । बीर सन्यंग ॥ ८७ ॥ भ्रमराव काय । परे । परै । महाभ्रमरराय । कायर । हीन ॥ ८८ ॥ महनाध्य अंग । जानि द्रुपद । रछि । दान । महश्राग ॥ ८९ ॥ षितपाल । ष्याल । पाल । भूनषानाय । भूनषनाइ । पिझि ॥ ९० ॥ साकिमोमार । बलाय । पाय ॥ ९१ ॥ मालिवाहन । नाम । लेई पहिचान ॥ ९२ ॥

२८ पाठान्तर पहिचानिय । मदमत । नग भासि । धीरज । जानि । ग्रीषम अगनिर । पहिचानि । बहुराय । सिय । अग्गे ॥

सेही सियाल लंगूर बहु। कुंड कदम भरि तर रहिय ॥
पिष्षे सु जीव कवि चंद ने। तुच्छ नाम चौपद कहिय ॥
॥ छं० ९४ ॥ रू० २९ ॥

कवित्त ठाम ठाम जल थान। मद्धि जल जीव निवासिय ॥
टेक कुरम कुरच। हंस सारस सुभ भासिय ॥
बगले बतक बिहंग। मगर मछ कछ द्रह पुरिय ॥
देवि दनुज पनग निवास। सिद्ध साधक रुचि रुरिय ॥
पर परषि बरन घन पिष्षियै। रोम हर्ष देषत नरन ॥
तुछ बुद्धि भट्ट देषत भल्यौ। कवि सुभन्ति कहै का बरन ॥
॥ छं० ९५ ॥ रू० ३० ॥

कवित्त सघन वृच्छ घन छांह। जानि बद्दल नभ वासिय ॥
देषत पथ्थ गिरत्त। बेलि अवलम्बि विलासिय ॥
मोर सोर कोकिलन। (रोर ★ चींह पपीह पुकारन ॥
सुमन सुगन्ध समूह। मध मधुकर मधु आरन ॥
वह कुही बाज सिचान बच। लंगुर लाग देषत फिरै ॥
दषन्त जनावर भष्य हों। जनु अकास तारा गिरै ॥
॥ छं० ९६ ॥ रू० ३१ ॥

कवित्त तह पल्लन पंषिराज। मग सामन्त जन्न जुरि ॥
पट सुडोरि मग स्वान। सेन तनि तब गयन जुरि ॥
बगुन घेरि त्रिपत्त। आप मूल्लन सु मंडिय ॥
नक्कर नकें इक रहिय। हक्कि पेदा पिझ छडिय ॥
भहराइ भग्गि पसु उठि चले। आवै आवै होइ रह ॥
परसपर सोर वे करत सुनि। यों सिकार चन्दह सुरहि ॥
॥ छं० ९७ ॥ रू० ३२ ॥

---

२९ पाठान्तर अग्र। तहा। जह। बहुत। तहा। मोर। रीछ। सामर। सावर। चित्रक। हिरन। पार। परकै। अगर। पिषे। तुछ। नाम। चोपद ॥

३० पाठान्तर ठाम -। थान मधि। निवासीय कवह द्रह। पुरीय। पिषियै। बुधि भट ॥

३१ पाठान्तर वृच्छ। जानि। बदल पथ। र। ★ अधिक पाठ है। पपीह। सीचान। लंगूर। फिरे। देषत। जिनावर। भषक ही भष्षक हों। जनु। आकास गिरैं ॥

३२ पाठान्तर तहा। सु डोरि। मग स्वान। बगुर। घेरीय। त्रियत। षडिय। हकि। भयराय। भगि। हुइ। रहिय। लहिय ॥

पृथ्वीराज के शिकार की प्रशंसा।

कवित्त तिलक भाल ससि षण्ड। गण्ड मद भमर बिलुद्धिय॥
सुरभि तेल सिंदूर। सुमन सपति मन सुद्धिय॥
सुद्ध दुद्ध जिम दसन। विमद बानी जिम न्रिमल॥
फरस मुसल असि चर्म। हथ्थ पचम मोदक कल॥
पुज्जिय सुचंद सुर इदजग। गवरिनंद दूषन दुरय॥
कपहि सिकार गज तुड डर। सब बिघन गनपति हरय॥
॥ छ० ९८॥ रू० ३३॥

कवित्त दुजपति अकह हिरन। इक्कनिभय सुभाय अति।
गजननह टारन्न। विघन विय दिट्ठ गनप्पति॥
पट आन बर मोर। त्रनिय उरीय निम र उर।
भगवति वाहन सिघ। वेदग जीय गुमेर थरि॥
बरदाइ चद सुपच्यारि पग। पचम वह सुपह रहहि॥
आनक अवर आरन्य पसु। डर थरहरि कपत रहहि॥
॥ छ० ९९॥ रू० ३४॥

कवित्त हहरि हिरन हारियन। हेरि कानर रव रद्धिय॥
अप त्राम भय मोह। विरह लग्गी नटपद्धिय॥
हिय धरक्क धुधरह। वदन लोटन जर निज्झर॥
नकित चकित सकीत। गमग मकरिय दुग्गभर॥
भैरन्न चमक्कत पत्त रव। पिनक चित्त जिम रपरै॥
पिल्लत सिकार सिथ कुंअर डर। पसु पीपर दल थरहरै॥
॥ छ० १००॥ रू० ३५॥

कवित्त पोमिन बन नहि चरहि। नहिन सर्चारहि कुमुद बन॥
ईप गेन परहरहि। जीर परट अविरल मन॥
मथर गति लग्गि सुथ। काम कानन नह चप्पहि॥
नह पिप्पै नियनारि। नहिन चप कदलि रप्पहि॥

---

३३ पाठान्तर गह चम्मर मदचुद्ध। गुरभि। सपति। दुद्ध। दूध। सुद्ध। बानी निमल। चम्म। हथ। पुजय॥

३४ पाठान्तर इक सुभिय निभय अति। गजवदन हर। गजननह। दिठिय। गनप त। त्रनीय। उरीर। निमम। गर्जीय। गजिय। थिर। रहिय। आतंक। आरन्य। रहिय॥

३५ पाठान्तर -हहकि। हीरन। हारीयन। रव। भय। लगिय। धरक। धुंधर। निझर। सकित। समग्ग। मंकरीय। दुग। भयपत्र। चमकत। पत्र। रपरैं। पिल्लत। कुअर। पियद।

गिरि मद्धि गहिर गुज्झह बसहि । नीर समीप न सचरहि ॥
सोमेस सुतन आपेट उर । इमड ढाल उस मह चमहि ॥
॥ छ० १०१ ॥ रू० ३६ ॥

कवित्त गिर कदर सर वरह । सरिन कच्छह घन गुच्छह ॥
निझ्झर कल न द्रहन । बेननल तिन सर पुजह ॥
ऊजर अरि पुर घरह । सैल तट उद्ध्ह अद्धह ॥
हथ्थ जोरि सब सुभ्भि । उभ्भ दिप्पहि किन लद्धह ॥
फल मल टप्प भ अकास थल । वन उपवन घन सचरहि ॥
ढढन ढढाल ढढाल बिय भुक्कारन बहु भकरहि ॥
॥ छ० १०२ ॥ रू० ३७ ॥

कविन नहि गव्वन करि गव्व । नहिन गज्जन घन गज्जन ॥
पोलन नहिय नयन । सिघ करि बोलन लज्जन ॥
भअन मद्धि सचरन । नहिन कुचरन दुरद बन ॥
तरन लप लप्पनसु । पुछ गज मृत्तिय मग गन ॥
धक धकहि धकहि तरहि तरहि । दिघ्घ उसासन उल्हसहि ॥
प्रथिराज कुवर रावट उर । गिर कदर केसर बसहि ॥
॥ छ० १०३ ॥ रू० ३८ ॥

कवित्त बग्गुर अगिनत परन । किनिक फदन पर्गविद्धत ॥
किनेक सूलन सरन । किनिक स्वानन मह सिद्धत ॥
घटनगगन किनक । किनक चीते नकि दब्बन ॥
बाज सिचान कुहीन । झपटि चचनु फल चब्बन ॥
घन कह सिकारन ह्वै रही । भजि न जीव कहु जै थकै ॥
बलवत बाघ हथ्थिय अजर । पकरि हकि लीजै थकै ॥
॥ छ० १०४ ॥ रू० ३९ ॥

---

३६ पाठान्तर नहि । चरहि । इस । परहरन । परब्बत । मथर । सुथ । चपहि । पिवै । नाहि । रचहि । मभि । गुजह । टमद । सहि ।

३७ पाठान्तर- गिरि । कछह । गुछह । निझर । कुलन । कुदह । सेल । अघह । हथ । सुभि । उभ । दिपहि । इस । भ । भुपुकारनिबहुसुकरहि ॥

३८ पाठान्तर नहि । गबनु गब । गजत । न । लाजत । भुअअन । रेष लुंपतसु । पुछ । मग्ग मृति । हिचकहि । दिघ । उल्हसै । पृथीराज । कुंअर । केहरि । बसै ॥

३९ पाठान्तर बगरि । कितेक । स्वानन । दबन । चचनु । पल । चूब्बत । चूबत । कहु । बहुं अथिय । स्थीय । हकि ॥

कवित्त गाडी लिए कितेक। किनक उटन पर डारे।
पन गपे धर कितक। किनक हथ्थी पर धारे।
काहर कधन कितक। किनक स्वानन मुप टुट्टन॥
बिछी मर्प विषग। मंत्र वादी मिल लट्टत॥
वज्ज निशान महनाद्द मूर। तबल डक्क वज्जन वल्लिय॥
मिक्कार पल्लि घन रम रह्यौ। सब पहार पग बलदल्लिय॥
॥ छं० १०५ ॥ रू० ४० ॥

कन्ह चौहान आदि सब सरदारों का आकर पृथ्वीराज से मिलना और कहना कि आज यहीं शिकार हो।

कविन आइ कन्ह चहुआन। नवनि प्रथिराजमु किन्निय॥
आइ राइ गोयद। प्रथुक आदर आदन्निय॥
आइ चद पुंडीर। धीर मध्यह हसि मिल्लिय॥
वल्लिभद्दह कूरम। कहर जिन्ने रम गिल्लिय॥
अबुआ गाड पावार मिलि। वग्न वध सिर कर धरिय॥
मिरी कही मिह पाहार टर। आज केलि अदभन करिय॥
॥ छं० १०६ ॥ रू० ४१ ॥

दूह मिलिय मकल मामन नहूं गनि न कहै पर नाम॥
हान गंम पग्बत नजिय मान मुखिरम जाम॥
॥ छं० १०७ ॥ रू० ४२ ॥

पृथ्वीराज का शिकार मे घर की ओर लौटना॥

छंद पद्धरी फिर चल्ले कुअर प्रथिराज गेह। मिलि सकल सूर मामन नेह॥
परहास परसपर करत केलि। नारीन नविक नृप केन मेलि॥१०८॥
मगाइ नीर कर मुप पपारि। मब करन मडि कर्पूर धारि॥

गोठ (भोजन) के स्थान पर ठहरना॥

जहा हुई गोठि भोजन नरिंद। तहा हुते मकल्ल मामत वृंद॥१०९॥

४० पाठान्तर डीग। किार। किनक। पीठि। हथ्थी। स्वानन। सर्प। बजत। निमान। महनाद। सूर। बजत। सिकार॥

४१ पाठान्तर आय। चहुआन। पृथीराज। किनिय। आय। राय। गोइद। पृथुक। आए। मध्यह। हसि। मिल्लिय। गिल्लिय। करिय॥

४२ पाठान्तर तहा। नाम॥

★ यह तुक एसियाटिक सोसाइटी की पुस्तक मे नहीं है॥

४३ पाठान्तर -फिरि। पृथीराज। येह॥ १०८॥ मगाय। मगि। होइ॥ १०९॥ सिर्जे। वग्दाय। आए। कहिय। वन। पछि पुनाय। जाय। एकंर॥

चन्द बरदाई का आकर पृथ्वीराज से मिलना और पिछला सब वृत्तान्त एकान्त में ले जाकर कहना ॥

फुनि मिले चद वरदाइ आइ। कछु कही बात पिछली सुनाइ ॥
नृप भट्ट जाइ बैठे इकंत। फिरि कही बत्त जा आदि अंत ॥११०॥

पृथ्वीराज का भोजन करना और फिर आगे बढ़ना ।

सुप मद्धि सुप्प प्रथिराज पाइ। भोजन करन नृप बैठे आइ ॥
छह रस निवास आहारि अन। करि कुरल पान करपूर लिन ॥१११॥
मृगमद जवाद सब चरचि अंग। कसमीर अगर सुर रहिय अंग ॥
सुभ कुसुमहार सब कंठ मेल्हि। इम चल्लिय बल्लिय चहुआन पेल्हि ॥११२॥
लह अग्गा इक्क सौ तुरिय तेज। उड्डुन पपि बिन पषिकेज ॥
बगसीस सकल्ल सामंत जोग। दिपि वाह वाह सब कहत लोग ॥११३॥
सुप चाल फाल जे हिरन लेत। उतंग गात पाषर समेत ॥
गज घोलि बाह घूघर सल्लोल। लप्पे न गाह करन कल्लोल ॥११४॥
हा रहत उडन हा कहत उड्ढ। गिर परन धक्क जिन कोट गड्ढ ॥
पिन मान असल्लि अंगाक देस।

सब सरदारों को एक एक घोड़ा बांट दिया उसी पर सब चढ़ कर चले ।

सामंत आनि रवि रथ्थ भेस ॥ ११५ ॥
है एक एक सब बटि दीन।
चढ़ि सूर सकल सामंत लीन★ ॥

कविचन्द को एक हाथी देना जो महा बलवान था ॥

दिय हस्ति एक कवि चद बोलि।
अद्दून ताहि को सकै षोलि ॥ ११६ ॥
नल बहत पाट मुझ्झै न अपि।
अति पाइ काइ गहि लेइ षपि ॥
अनि गज्ज मुप्प को सकै झेलि।
खल दलन मझ्झ पारत्त भेलि ॥ ११७ ॥
सुर नाथ वाह सम अंग ओप।
दिप्पियै खिज्यौ जनु काल कोप ॥
बिन रोम सहज मे अजा जानि।
हर कोइ बचिलै चल्यौ कानि ॥ ११८ ॥

---

११० ॥ मध्य। सुप। पृथी राज। पाए। भोजन। करन फुनि। बैठि। आय। लीन ॥ १११ ॥ जवादि। सुभ कंठहार। मेल्हि। चहुवान ॥ ११२ ॥ एक। एक सौ। उड्डुन पपि ॥ ११३ ॥ उतंग। पषर। लषे ॥ ११४ ॥ धक। जिहि। गढ। रथ ॥ ११५ ॥ हय। लिन। आदून ॥ ११६ ॥

सक्कै न बोलि को हय अरूढ । छरहरौ पग्ग बलि कवन मूढ ॥
अगि जल्ल मरझ मानै न सक । होइ रहै भूत मुनि वज्जि डक ॥११९॥
मुनि विरद कान चल्लन मग्ग । तिहि चंद हथ्थ दिय कनक वग्ग ॥
॥ छ० १२० ॥ रू० ४३ ॥

दूहा बाग धरी कवि चंद सिर, हरष भयौ बहु अंग ।
तू विक्रम अक्रम हरन, करन दरिद्रह भंग ॥
॥ छ० १२१ ॥ रू० ४४ ॥

एक एक सामंत हय कीनिय चंद हजार ।
वहि चल्लिय हल्लिय अगै सरिन तुरगन पूर ॥
॥ छ० १२२ ॥ रू० ४५ ॥

कवि चंद का पृथ्वीराज की स्तुति करना ॥

कवित्त करिय नवति रविचंद । छंद [illegible] ॥
तू सुरानि सम कुंअर । [illegible] ॥
अग्नि [illegible] जल चंद । पवन [illegible] ॥
[illegible] धीर । [illegible] ।
[illegible] । चंद [illegible] ॥
[illegible] सामंत सब । [illegible] ॥
॥ छ० १२३ ॥ रू० ४६ ॥

दूहा [illegible] ।
जीव बुद्धि [illegible] निमित्त [illegible] मति [illegible] ॥
॥ छ० १२[illegible] ॥ रू० ४[illegible] ॥

सब लोगों को अपने अपने घर बिदा करना ॥

रह्यौ रंग बहर ग्रहन, करिय बिदा सनमान ॥
निसा सुख्ख सई सुपन, जागे ऊगत भान ॥
॥ छ० १२५ ॥ रू० ४८ ॥

नव लहन । सुभ्र । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । मम्र । [illegible] ॥ ११७ ॥
उंप । दिषियै । मैं । [illegible] । कान ॥ ११८ ॥ नहैं । [illegible] । पग । [illegible] । मझ ।
मांनै । होय । वजि ॥ ११९ ॥ चाल्लन । मग ।

४४ पाठान्तर तू । तूं ॥

४५ पाठान्तर कीनीय । चल्लिय । हल्लिय । अगै । तुंगन ॥

४६ पाठान्तर [illegible] । कुमर । कुअर । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] ।
सकल । रहै । [illegible] ॥

४७ पाठान्तर [illegible] । बुधि । [illegible] । मनि ॥

४८ पाठान्तर—सनमान सुष । मइं । उगत । भान ॥

वीरों के मिलने के समाचार से पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ॥

प्रथीराज आनंद मन, मुनि बीरन वर वत्त ।
फुल्लत तन तरु नीर लहि, इम आतम उल्लसत्त ॥
॥ छं० १२६ ॥ रू० ४९॥

श्लोक शुभ दिवसे शुभ वार्ता । अशुभेच्च अशुभानि च ॥
शुभ शुभ यथायुक्तं । भवति दिवसानि च ॥
॥ छं० १२७ ॥ रू० ५० ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥

कवित्त प्रथीराज चहुआन । बान पारथ्थ वलिवड्डह ॥
प्रथीराज चहुआन । दंड दंडैनि अदंडह ॥
प्रथीराज चहुआन । सम्मि जुध कोउ न मंडै ॥
प्रथीराज चहुआन । मंत्र विनु रद गहि छंडै ॥
प्रथीराज चहुआन पट्ट । कली करन अवतार कहि ॥
सामंत सूर पूरै सभग । उदर पिथ्थ अवतार लहि ॥
॥ छं० १२८ ॥ रू० ५१ ॥

दूसरे दिन सवेरे पृथ्वीराज का उठना और नित्य कृत्य करना ॥

दूहा प्रात राज जग्गे प्रथम गो रज दरसन कीन ।
देहक्रति पुनि सुद्ध सुचि पावन पानि सुलीन ॥
॥ छं० १२९ ॥ रू० ५२ ॥

करि पावन परिग वर सोहन सुरभि सुमेक ।
मर्दनीक मर्दन करे बठे धान नर नेक ॥
॥ छं० १३० ॥ रू० ५३ ॥

नहाकर दस गोदान, दस तोला सोना और बहुत सा अन्न दान देना ॥

करि सनान गंगोनकह, दिय सुगाइ दस दान ।
दस तोला तुल्लि हेम दिय, अनदान असान ॥
॥ छं० १३१ ॥ रू० ५४ ॥

---

४९ पाठान्तर वन । लहि । इम तूं आतम उलसत ॥

५० पाठान्तर -सुभ । सुभ । वार्ता । असुभे । असुभानि । सुभासुभं । यथायुक्तं ॥

५१ पाठान्तर पृथराज । चहुआन । चहुवान । वान । वडह । पृथियराज । अडंडह । पुद्ध विनु । कलि । पिथ ॥

५२ पाठान्तर – गो । देह कति पुन । सुचि । पान पानि ॥

५३ पाठान्तर पावन । सुरंभ । सुरभ । मर्द्दनीक । मर्द्दन ॥

५४ पाठान्तर--सनांन । गंगोदकहि । दांन । अन । दांन । अप्रमांन ।

महल में पृथ्वीराज का विराजना और सरदारों का आना ॥

छन्द पद्धरी- करि स्नान दान सुचि रुचि कुंआर । होइ देवरूप साष्यात चार॥
कीनौ सु महल वज्जै निसान । आनन्द सकल सामन्त मान ॥१३२॥
आये सुमहल सामत सूर । पूरन तेज वीरत्त पूर ॥
अनभङ्ग अङ्ग अनभूल बान । जिन दिठ्ठ अरिय पावै न जान॥१३३॥
कैमास आइ कीनौ जुहार । विद्या सु चतुर्दस मत्ति सार ॥
गोयन्दराज गहिलौत आइ । बैठो सुकुअर कमल नवाइ ॥१३४॥
चहुवान कन्ह आयौ अभङ्ग । भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसङ्ग ॥
अनि अनी सूभर बेट सुआइ । अन मित्त मत्ति बल अप्रमाइ ॥१३५॥
राजन कुंआर मधि सूर साज । देवतन मद्धि जनु देवराज ॥
गिरिराज मद्धि सब गिरन रज्ज । दखन्त सभा सुभ इन्द्र लज्ज ॥
॥ छ० १३६ ॥ रू० ५५ ॥

बीरों के बश होने की बात से पृथ्वीराज का पेट फूलना है पर किसी से कह नहीं सकता ॥

दूहा बैठि सभा प्रथिराज रचि, आय सुरति निज चित्त ॥
वत्त बीर बरदान की, अति उमग उलमित्त ॥
॥ छ० १३ ॥ रू० ५६ ॥

रहै न आनँद कुंअर हिय, उगमत रुप्र प्रमान ।
कहै न कासों वत्त वर मानो दुद्ध उफान ॥छ० १३८ । रू० ५७॥

कैमास का हाथ जोड़कर पूछना कि आपके मुख पर कुछ उत्साह दिखाई देना है पर आप खुलकर कहते क्यों नहीं ॥

अरिल्ल पानि जोरि कयमास । बदै नव राज व्रति ॥
उर अवलोकित उलमत । सामन्त राज अति ॥
को कारन मुष चारु । न कथ्थिहि वत्त गति ॥
सूभर सूर सामन्त जु । विनवत्त राज प्रति ॥छ० १४० ॥रू० ५८॥

---

५५ पाठान्तर स्नान । दान । कुंआर । कुंआर । हाय । बजे । निसान । मांन ॥ १३२ ॥ पूरन । तैज । वीरत्त । अभू । बान । दिट्ठि । जान । १३३ ॥ आय । चतुर्द्दस । मति । गोइन्द । आय । आइ । कुमर । कमल । नवाय ॥ १३४ ॥ चहुआन । भारथ । कथ । अनि अनी । आय । आइ मित । अप्रमाय ॥ १३५ । कुंआर । देवतनु । मधि । मधि । रज । सुभ । लज ॥ १३६ ॥

५६ पाठान्तर प्रथीराज । वरदान । उलहमित ॥

५७ पाठान्तर -आनंदद । कुअर । कुमर । प्रमान । मनो । दूध । उफान ॥

५८ पाठान्तर चन्द्रायना । पानि । उल्हस्सत । सामंत ॥ १३९ ॥ चारु । कथि । बत । बिनवत ॥ १४० ॥

पृथ्वीराज का चन्द के वीरों को वश करने का समाचार कहना ॥

दूहा तब कहै कुँअर सामन्त सम, कलि आखेटक रंग।
भयौ सुर मर्मै एक भय, आलम ही में गंग॥
॥ छं० १४१ ॥ रू० ५९ ॥

कवित्त अररंजे आषेट। चन्द भुल्यौ सुबट्ट बन॥
जंगम इक तापस्स। मिल्यौ बरदाइ सुद्ध मन॥
प्रसन भयौ कविचन्द। वीर मन्त्रह दीनौ बर॥
अजमायौ कविचन्द। वीर बावन ढग्म चिर॥
तिन देखि अमित चरितह सुनत। बरनै कवि बरदाइ अति॥
अन्नेक रूप अन्नेक गुन। अनंत गति अनतह सुमति॥
॥ छं० १४२ ॥ रू० ६० ॥

सरदारों का उपहास करके कहना कि भाट, नट, चारन, ये सब आरत हैं इन की बात सत्य नहीं माननी चाहिए।

अरिल्ल प्रसन सूर सामन्त सकल बर। हासे अप्प परम्पर सुभ्भर॥
भट नर चारन जु आरत्तह। इनकी गति न मन्नियै सत्तह॥
॥ छं० १४३ ॥ रू० ६० ॥

कैमास ने कहा कि चन्द को देवो ने बरदान दिया है वह सचमुच कोई अवतार है।

गाथा कथ्थिय बर कैमास। देवी बरदाय चन्द भट्टायं॥
अस तिन चवै असेसं। सत्यं रूप सत्य अवतारं॥
॥ छं० १४४ ॥ रू० ६१ ॥

कन्ह ने कहा कि चन्द छूट गया था यह बात सच है इसी पर उसने यह बात प्रसन्न करने के लिये गढ़ी है।

अरिल्ल कहै कन्ह हम मानी सब्बह। भुल्ल्यौ भट्ट मग्गा बन तब्बह॥
हसन केलि डर जोरिय बत्तं। इह अचिज्ज मन्नै न बिसत्तं॥
॥ छं० १०५ ॥ रू० ६२ ॥

---

५९ पाठान्तर कुमर। कुअर। कालिह।

६० पाठान्तर अपरजेन भयौ। कविचंद। भूल्यौ। बट। तापस। मिल्ल्यौ। चंद। वरने। बरदाय। अनेक। अनत॥

६० पाठान्तर प्रसंन। सुभर। भट्ट। नट्ट। चारंन। जु। आरतह। मनियै॥

६१ पाठान्तर -कथिय। भटायं॥

६२ पाठान्तर --कहै। मांनी। भुल्यौ। मग। तवह। जोरीय। शुभ हित इवर गाम सपत्तं। अचिर्ज॥

पृथ्वीराज के मन में सन्देह हो जाना।

दूहा —किन्ही मंत्री अमत्री सुकिहि, त्रिविधि जानि संसार ॥
सुनत राज विभ्रम भयो, परयौ सुचित्त विचार ॥

॥ छ० १४६ ॥ रू० ६३ ॥

इतने में चन्द का आकार आसीस देना।

इहि विचार करवह मनह, आयौ चद सुतव्व।
दिय असीस कर उच करि, बेद नीत बर कव्व ॥

॥ छ० १४६ ॥ रू० ६४ ॥

पृथ्वीराज का चन्द को पास बुलाकर बीरों की बात छेड़ना।

राजह सूर हकार लिय दिय सादर सनमान।
वीर बिरद बरदाय प्रति, लग्गे बत्त पुछान ॥

॥ छ० १४७ ॥ रू० ६५ ॥

पृथ्वीराज का चन्द की बड़ाई करके कहना कि हम लोगों की बड़ी अभिलाषा है सो आज वीरों का दर्शन करवाओ।

कवित्त कहै चद कविराज। बत्त पूरब्ब जो बिन्निय ॥
कहिय कुंअर प्रथिराज। चद बरनी सो मन्निय।
हमहि बहुत अभिलास। देव बीरानि दरस रज ॥
पावहि तो परसाद। सूर सामत मन अज ॥
तो सम न और तिहु लोक मे। नट्ट भट्ट नाटिक्क नर ॥
ससार पार बोहिथ समह। तोहि मान देवी सुबर ॥

॥ छ० १४८ ॥ रू० ६६ ॥

कवि चन्द का मंत्र जपना और होम करना।

दूहा —सुनि आनद्यो चद चित। कीन मत आरंभ ॥
जप्प जाप हवि होम मत्र। लग्यो कज्ज असंभ ॥

॥ छं० १४९ ॥ रू० ६७ ॥

---

६३ पाठान्तर किंहि। स। किहि। त्रिधा। जानि। चित ॥
६४ पाठान्तर इह। विचारि। तव। दीय।
६५ पाठान्तर -राज। हक्कार मनमान। बरद। बरदाइ। लगे। पूछांन ॥
६६ पाठान्तर -कहै। कुंअर। पृथीराज। बरना। बरनि। मतिय। हमहिं। बीरनि। बीरान। करि। पावहि। सामंत। तिहुं। मैं। नट। भड। नाटिक ॥
६७ पाठान्तर -आनंद्यौ। मंत्र। जप। सम। लगो। कज ॥

वीरों का प्रगट होना।

गाथा - जिय जप जाप मुहोम। आए वीर धीर आतुरय॥
गज्जै गयन गहीरं। भय भै भीत मोर आघात॥
॥ छ० १५० ॥ रू० ६८ ॥

छंद भुजंगी धमकी धरा धम धमै धरक्की। कठ पिट्ठ कमट्ठ कट्ठै करक्की॥
डिग्गै अड्डिग सो दिगपाल्ल दम्म। तरक्के चके मुनि जन तपम्म ॥१५१॥
भरक्कै मुवाज सु बाज बिछुट्टै। तरक्केक एक उलट्टै मुलट्टै॥
इसो आगमं भौ मुबावन्न वीर। कंपे काइर धीर रघ्यो सुधीर॥
॥ छ० १५२ ॥ रू० ६९ ॥

वीरों के शब्द से सामंतो का डरकर सोचना कि बिना काम इन को बुलाना ठीक नहीं हुआ।

दूहा—मुनिअ घात बर बीर को चमकै चित्त सामन्त॥
इन गरयै कज्ज बिन किनो अप्प अमन्त॥
॥ छ० १५३ ॥ रू० ७० ॥

दो मत्त हाथी दर्बार के बाहर बांधे थे वह बीरो का भयानक शब्द सुनकर चौंके॥

दूहा गज घमन्त गजराज बर दो हथ्थी दरबार॥
दुरि दुरि बन्धे रहै। काल समान कमार॥
॥ छ० १५४ ॥ रू० ७१ ॥

कवित्त अति बठवन्त अनन्त। गरुअ मानहु गिरवर पे॥
गगन जेम गाजन्त। बध बधन ते सरसे॥
च्यार पटे छुट्टै★ छछाल। मद्द नद्दह सु अहो निस॥
पवन पाइ पुरबाइ। काल रूपी कंकाल रिस॥
सिर दिघ्घ दिघ्घ दन्तह सुभग। जरजगाइ बगरि जरिय॥
लष लष्ष दाम पावहि पटै। कनक साजहाज सु करिय॥
॥ छ० १५५ ॥ रू० ७२ ॥

---

६८ पाठान्तर -गाहा। स। गजे॥

६९ पाठान्तर धम्मकी। धम। धमै। धम्मे। धाम्मे। धरकी। कमठ। कठे। करकी। डि गै। डिगे। अडिग। द्रिगपाल। दम। तरके। करकै। चके। सुजि। मुनि। जनं। तपमं॥ १५१॥ भरके। बिछुटे। तरकेक। उलटे। मुलटे। इमो। वीर। कप। कपे कायर स॥ १५२॥

७० पाठान्तर -सु आघात। चमके। कज। किनो॥

७१ पाठान्तर -गुमार। हाथी। रहै। समांन॥

७२ पाठान्तर—गरुअ। मानहु। ते। च्यारि। पठ★ अधिक पाठ। मद।

दोनों हाथियों का तुड़ाकर लड़ जाना और दर्बार में खलमली मचना।

दूहा - बीर सोर आघात सुनि, गज छुटि बन्धन तोरि ॥
भिरे उभय भय भीत होइ, परि दरबारह रौरि ॥
॥ छं० १५६ ॥ रू० ७३ ॥

छं० मोतीदाम - भिरे गजराज भयानक रूप। उभै मदमत्त महा जम जूप ॥
भए कइकाल कराल अरूट। लगै जनु क्रोध सु कज्जल कूट ॥१५७॥
जुरे जुग जानि गुरू गजराज। किधौ कउ दानव रूप दुराज ॥
जगे प्रलकाल भयानक भूत। इसे दुइ दन्ति भिरे अदभूत ॥
॥ छं० १५८ ॥ रू० ७४ ॥

सरदारों का बहुत उपाय करना पर हाथियों का बश में न आना।

दूहा दौरि सकल सामन्त मिलि, करे अनन्त उपाइ ॥
रोस लगै छुट्टै नही- भई सुहायो हाइ ॥
॥ छं० १५९ ॥ रू० ७५ ॥

चिहूं ओर हरषी छुटै, परै अगड सुमार ॥
गोला गगै गिलोल गुरु, छुटै न तो इगगार ॥
॥ छं० १६० ॥ रू० ७६ ॥

गाथा वर बावंन सु बीर। कौतिग लग्गन्न सूर सामन्त ॥
करै अनन्त कलाप। नहु छुट्टन्त गज गरु आइ ॥
॥ छं० १६१ । रू० ७७ ॥

चन्द का बावन बीरो से प्रार्थना करना कि आप लोग इन हाथियों को छुड़ाकर बांध दीजिए।

दूहा तब कर जोरिय चन्द कवि, अग्गै बावन बीर ॥
तुम सु छुडावहु मस्त वहु, बहुरि जरहु जज्जीर ॥
॥ छं० १६२ ॥ रू० ७८ ॥

हुद हद्द। अहनिसि। पाय। दुरबार। कराल। दिघ दिघ। गरजराट। बगरी। लग २। दाम। पार्वहि। पट। माजनु ॥

७३ पाठान्तर छुट्टि। भिरै। भै। दरबारहि। रोरि ॥

७४ पाठान्तर भिरै। भयानक। मदमत। कोट। अरट। लगै। कजल। कूट ॥१५७। जानि। गिरराज। काऊ। दानव। लगै। जगे। प्रलै। भिरे ॥१५८॥

७५ पाठान्तर - दौरि सामत। करै उपाय। रगे। छुटै। नहीं। स ॥

७६ पाठान्तर —चिहु। उर। परे सुगड पर सार। लगें। गुरु। छुट्टै। तो। अम ॥

७७ पाठान्तर - बावन। सामंत। करै। गुरुपाई ॥

७८ पाठान्तर- बावन। बांवंन। स ॥

भैरव की आज्ञा से बीरों का हाथियों को जंजीर में बांध देना।

अरिल्ल तब भैरव भूवाल्ल बीर बर। कीन हुकम कालीय ऊंच कर ॥
छोगबद्दु गजराज पांनि गहि। बहुरि जरो जन्जीर थान कहि ॥
॥ छं० १६३ ॥ रू० ७९ ॥

दूहा तब काली दोरचौ तलपि। गज्ज छुराइ समथ्थ ॥
उभै पांनि मो रद उभै। गहै उभै बरहथ्थ ॥
॥ छं० १६४ ॥ रू० ८० ॥

यह कौतुक देखकर सरदारों का आश्चर्य में होना और सब का दर्बार में आकर बैठना।

गाथा बंधन दीन सु पाइं। कौतिगं दिष्षयं मज्झ सूरं ॥
मंनिय मन आचिज्जं। बैठे फेरि आइ दिवानं ॥
॥ छं० १६५ ॥ रू० ८१ ॥

पृथ्वीराज का सब बीरों को प्रणाम करना, चन्द का नाम ले लेकर सब बीरों को पहिचनवाना।

परसे बीर सु मज्झ। करी प्रथिराज पाइं परिनामं ॥
प्रथम चन्द कथि नामं। पहिचांनै बीर बीरायं ॥
॥ छं० १६६ ॥ रू० ८२ ॥

चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि बिना कारण इन को बुलाया है इस से इन की बलि दो पृथ्वीराजका बावन घडा मदिरा बावन बकरे मंगाकर बलि देना और भैरव आदि की पूजा करना।

छंद पद्धरी पहिचांनि राज प्रथिराज बीर। भयो उदित मन आनंद धीर ॥
कविचंद कहिय प्रथिराज राज। इन देहु सुबत व्याकुल समाज ॥१६७॥
बिन कज्ज अप्प आराध कीन। नवि विहित कुसल उभ्भो सुईन ॥
बावन घट्ट वारुनि मंगाइ। बावन बीर प्रति घुट्ट पाइ ॥१६८॥

---

७९ पाठान्तर भुवाल्ल। किन। उच। छोगबौं। पांनि। जरो। थांनि। कहिं।

८० पाठान्तर गज। छोराय। समथ। पानि। मों। सं। हथ ॥

८१ पाठान्तर दीय। सु पायं। पाई। मज्झ देषीय। दिषय सब। मनिय। आचिजं। फिरि। आय। दीवांनं ॥ ४ ॥

८२ पाठान्तर —फर। करि। पाय। प्रथुक। करि ॥

८३ पाठान्तर —पहिचानि। प्रथीराज। भयो। श्रीर। कहीय। प्रथीराज। स। बाकुल ॥ १६७ ॥ कज। कुशल। लभौ। बावन। घट। मंगाई। घट। पान ॥ १६८ ॥ भय आनि। निशान। आरंबि ॥ १६९ ॥

वावन अजासुत भष्ष आंनि । दीने सु आदि भैरव निदान ॥
सिंदूर तेल पुहपनि अरच्चि । सन्तोषि पोषि सब तन चरच्चि ॥

॥ छं० १६९ ॥ रू० ८३ ॥

वीरों का प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहना कि बर मांगो सो हम दें और अब हमको बिदा करो ।

दूहा—भये त्रिपत बीराधिबर, पूरन ढक्क डकार ॥
अति आनन्दत उल्हसत, बोले बयन बकार ॥

॥ छं० १७० ॥ रू० ८४ ॥

मङ्गि मङ्गि महिपत्ति तुअ । मोर्ई समप्पै आज ॥
दै सुबिदा न बिलम्ब करि । जु कछु चित्त तुअ काज ॥

॥ छं० १७१ ॥ रू० ८५ ॥

पृथ्वीराज की ओर से चन्द का कहना कि लड़ाई के समय हमारी सहायता कीजिएगा ॥

गाथा जपे वर बरदाई । तुम बरं वीर देव देवाधि ॥
भो प्रथिराज महाई । जुद्ध जय राज जुट्टाइ ॥

॥ छं० १७२ ॥ रू० ८६ ॥

भैरव का चन्द को बुलाकर कहना कि जब तुम्हें टेढ़ा समय आवे तब हम को याद करना ।

गाथा तब वर भैरव बीरं । उच्चारीगं संमुष्ष चन्दं ॥
जं तुम बंकट ठौरं । तं सँभारं बिहित अम्हाइं ॥

॥ छं० १७३ ॥ रू० ८७ ॥

गाथा परतिषि अम्ह सुहब्बं । करयं जुद्ध तब्ब साहस्सं ॥
जथ्यं चण्डिन चन्दं । तथ्यं करै न हम आगमं ॥

॥ छं० १७४ ॥ रू० ८८ ॥

---

८४ पाठान्तर तृपति । डंक । डक । आनंद तन । बैन ॥

८५ पाठान्तर– महिपति । समपै । देह । तू कछु चितन काज ॥

८६ पाठान्तर –जपै । बर । बीर । देवधि । बीर देवाधि । जुटाई ॥

८७ पाठान्तर – उचारित चंद संमुषं । तुम । बकठ । ठौरै । सभारि । संभारे । बिबित । अम्हाई ॥

८८ पाठान्तर– चंन्द । जुद्ध । तब । साहसं । जष । तथं । हुंम्म । आगमं ॥

बचन देकर बीरों का बिदा होना, सरदारों का चन्द की बात पर प्रतीत करना और पृथ्वीराज का चन्द पर अधिक प्रेम बढना ।

दूहा दइय वाच सब बीर नै । बहुगए कवि चन्द ॥
मब सामँत अनन्द भो । दरमन नट्ठे दन्द ॥

॥ छ० १७५ ॥ रू० ८९ ॥

मत्य करै मान्यो मकल । हरषित भय प्रथिराज ॥
प्रेम बढ्यो अति चन्द मो । साहम रीत ममाज ॥

॥ छ० १७६ ॥ रू० ९० ॥

पृथ्वीराज का चन्द से कहना कि सब सरदारों को मन्त्र बतला दो, चन्द का सब को मन्त्र बतलाना ।

गाथा तव कुअर कहि चन्द । देहु मन्त्र सब्ब सामन्त ॥
तव कहि मन्त्र चन्द । कीन अप्प अप्प सहायं ॥

॥ छ० १७७ ॥ रू० ९१ ॥★

चन्द को बीस गांव और एक घोड़ा पृथ्वीराज ने दिया ।

दूहा बीम गाम कविचन्द प्रनि, कर्ग कुंअर वगमीस ॥
एक वाजि माजनि मजहि । दियो मु सम्भरि ईस ॥

॥ छ० १७८ ॥ रू० ९२ ॥

इति श्रीकविचन्द विरचिते प्रथिराजरासके आखेटक बीरबरदान वर्णनं नाम षष्ठ प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥

८९ पाठान्तर वीरनैं । मामंत । नठै ॥

९० पाठान्तर मति । करे । मंन्यो । हरषत । प्रथीराजं । समाज ॥

९१ पाठान्तर—देहु । मंत्र । मब । अप्प । अप ॥ ★ यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नही है ॥

९२ पाठान्तर—ग्रांम । कुअइ । कुंअर । सजि । दीयो ॥

अथ नाहर राय कथा वर्णनं लिख्यते।

(सातवां समय)

सोमेश्वर देव का शिवरात्रि का व्रत जागरण करके सोने की तुला दान करना और उसे बांट देना।

दूहा ग्यारह सौ गुन तीस वदि, फागुन चवदसि सोम ॥
सिवरत्ती सोमेस नृप, निसा मण्डि जप होम ॥
॥ छ० १ ॥ रू० १ ॥

पञ्च गव्व अस्नान करि सीस सहस घट मण्डि ॥
दीपदान घन सहस शिव कुसुमजलि सिर छण्डि ॥
॥ छ० २ ॥ रू० २ ॥

शिव उपास सोमेस वर पञ्च उपासि सुराज ॥
सहा मोह भक्ती सुगुर, करिय किन्ति कविराज ॥
॥ छ० ३ ॥ रू० ३ ॥

श्लोक शिवशिवा उपास्य राजन् वीरं रवन कामयम ॥
कविचन्द महावाणी, प्रगट रूपाण विस्मितम ॥
॥ छ० ४ ॥ रू० ४ ॥

दूहा चतुर जाम जग्गिय नृपति, कनक तुला तहं कीन ॥
प्रात समै वर दुजन कहुं वटि अप्प कर दीन ॥
॥ छ० ५ ॥ रू० ५ ॥

---

१ पाठान्तर दाहा। से। सै। गुनि। चवदसि। सिवरत्ती। नृप ॥ इस रूपक में सवत् ११२९ अनन्द साक वा पृथ्वीराज का तृतीय साक है। इस का वर्णन कवि ने आदि पर्व के रूपक ३५०। ३० , पृष्ठ १३८ में किया है। तदनुसार इस में अन्तर के ९०। ९१ वर्ष जोड़ने से ११२९+९०। ९१ १२१९। १२२० वर्तमान विक्रमी होगा ॥

२ पाठान्तर -पचगव्य। अस्नान। सहस्र। दान। सहास। कुसुमाजलि। शिर ॥

३ पाठान्तर - शिव। स राज। स गुर ॥

४ पाठान्तर—सिवसिवा। राजं। राज्यं। वीर। कामयं। वानी। रूपेन। विस्मितं ॥

५ पाठान्तर —जाम। तहां। समे। कहौं ॥

अन्न अमार अपार उठि, जिहि लीनो दिय ताहि ॥
छग्ग भोग भोजन भले, रही न मनमा काहि ॥
॥ छं० ६ ॥ रू० ६ ॥

उमय ईस अग मोम पुनि, अस्तुति मण्डि ममुष्ष ॥
तब त्रिनेत तन ताप हर, संचन सेवक मुष्ष ॥
॥ छं० ३ ॥ रू० ७ ॥

शिव जी की स्तुति करना ।

कवित्त - विदित मरग्ल अति चपल । विमल मति कञ्ज निअच्छिनि ॥
गीत राग रस रटित । मती लपट विम भच्छिनि ॥
भगति देन जन विभव । भूर भूछिन तन मोभिन ॥
त्रिपुर दहन कविचन्द । केन कारन क्रन लोकिन ॥
श्रीविश्वनाथ ममित गवन । गरग्ल त्रिलोचन रस कुमल ॥
मुष अमल कमल परिमल वहुल । भगति चारु चर्मन भ्रमल ॥

छद पद्धरी - गरग्ल कठ दीमहति वीय । जम चित प्रगट संमार नीय ॥
सारङ्ग उछह तिन पान पानि । दिव तुङ्ग जाल जव जवनि मानि ॥१॥★
जट मुकुट गग दीमहि उतङ्ग । मोमन्त चन्द लिल्लाट रङ्ग ॥
सारङ्ग मूल साद्दूल चम्मं सेवक महाय अघ हरन कम्मं ॥ १० ॥
कटि विकट निरट नटवन विभङ्ग । यनपुत लेय विभूत अङ्ग ॥
बुन्द जा काम ज श्राप लूल । जंजे मूर्त्तिस माया अमूल ॥
। छं० ११ ॥ रू० ८ ॥

साटक - कप्याली कर आल बाहु ग्रहयौ गिरज्जाइ सारङ्गनो ॥
बीभच्छौ रस तप्य निम्य रतयौ, मुत्र्वा मदा तुङ्गयौ
रुद्रो रुदरि पाय नगिन उरयौ, हास्य रस शङ्करं ॥
जामन्त गिरिजानिनं विरचयो, करनाथ कामं त्रय ॥
॥ छं० १- ॥ रू० १० ॥

---

६ पाठान्तर अमरअन्न । उठ्ठि । जिहि । नही ॥

७ पाठान्तर मण्डिय मुष । महोय ममुष ॥

८ पाठान्तर विअछन । विअछिनि । विषभषिन । विभो । क्रुन । गवन । कुशल । चारु । चर्म्मंन । भमल ॥

९ पाठान्तर -जुर । दीमहिति । जम । पानि पानि । ★ "दिव तुङ्ग जाल दिव दिव न मान" सवत् १६४७ की पुस्तक में पाठ है ॥ १ ॥ लिलाट ॥ सादूल । चर्म । कर्म्म । विभूत । अभूल ॥

१० पाठान्तर --कप्पाल । ग्रहयो । गिरिजाई । गिरजाई । नो । बीभछो । तप । रतयो । मुत्री । तुंगयो । उरयो । गिरिजा । करुनाथ । काम ॥

साटक - वामं गौरि शृंगार हास्य नगनं, कर्नाय कामं त्रयं ॥
रौद्रं रौद्ररि पाय भार दमनं, वीरं त्रिनेत्रं ज्वलं ॥
भै भीतं दिषि अङ्ग भङ्ग अहितं, वीभच्छ नट्टव्वतं ॥
सान्तं संमित जोग दीन अदभू, त्नो रम्स रस्तं शिवं ॥
॥ छं० १३ ॥ रू० ११ ॥

शिवजी की स्तुति करके सोमेश्वर देव का अपने कुमार के विवाह के लिये नाहर राय के पास दूत भेजना ।

दूहा सा देवह करि अस्तुती, बर सोमेस कुमार ॥
नाहरराइ नरिंद कै, दूत संपते वार ॥
॥ छं० १४ ॥ रू० १२ ॥

शामदामादि में निपुण दूत का पत्र दरसाना ।

गाथा सामं दामं भेवं । वेदं गुनं विग्य अंगाई ॥
जानं पनं मलीहं । ने पत्नं दूत दरसायं ॥
॥ छं० १५ ॥ रू० १३ ॥*

कवि का सनीचरी दृष्टि के योग पर से भविष्य में बैर दोष होने का कथन करना ।

साटक दिष्टी दिष्ट सनीचरी वमहिनो, हंनोपि दुज्ज घर ।
पावारं परिहार वैर गुरयं, जद्दोर चौहानयं ॥
सोगिनीरि समस्त संयुत कला, भारथ्थनो द्रिष्टयं ।
साबाला बर बैर ग्रेह तिगुना, के के नगे राजयं ॥
॥ छं० १६ ॥ रू० १४ ॥

कवि का कहना कि स्त्री के कारण से बैर दोष आगे रामादि बड़े बड़ों को हो चुका है ।

कवित्त - गयौ चन्द तारिका । पुत्र लज्जा बिन आन्यौ ॥
षेत्र वीर्य सम्भवं । वीर्यं लभ्भवं न पान्यौ ॥

---

११ पाठान्तर—शृगार । करुनाय । काम । त्रियं । त्रिनेत्र । भय । बीभछ । नटवर्त्तन । टटवत्तनं । अदभून । अदभुन । नो रम । नो रस्स । रमितं ॥

१२ पाठान्तर—अस्तुनि । नाहरराय । के । कैं । संपत्ते ॥

१३ पाठान्तर—दामय । गुन । विग्य ॥ ★ यह श्लोक सं० १६४७ और १८५९ की लिखी पुस्तकों में नहीं है ॥

१४ पाठान्तर—हननोपि । दुजन । दुज्जम । वमं । परिहारं । पावार । बेर । जदौर । चहुवान । गिरिनारि । भारथ ॥

बैर दोष श्रीराम । बैर दोषइ दुर्योधं ॥
बैर दोष नघराई । बैर दोपह मुचकन्धं ॥
मा बैर दोप पण्डव वल्यिय । मान वचन ग्रह दोष महि ॥
इक दिनह समय सुन्दरि सचिय । सझ समय इह चरित्त लहि ॥
। छं० १७ ॥ रू० १५ ॥

कामधेनु का चरित्र ।

कबित्त कामधेन पच्छै प्रचण्ड । त्रिषभयं चह अधिकारिय ॥
एक एक उत्तरै । एक चढ़ै रस भारिय ॥
हमी सची दिषि निजर । दीन सराप सुधेनह ॥
हौं पसु तुअ सुमनुच्छ । होइ पच्छाल ग्रेह मह ॥
लच्छी सुपच्छ जननी वचन । यटि लई क्रम क्रम सुमर ॥
निह ग्रेह और जा सम्भवै । तो बर्नहि डेवर सबर ॥
॥ छं० १८ ॥ रू० १६ ॥

प्रात समय जगते ही दूत का पत्र पढ़ना ।

दूहा भयो प्रात जगात दुतिय, बचि सुकग्गद पानि ।
आबू रा मलषान लिषि, बर गिर नारी बानि ॥
॥ छं० १९ ॥ रू० १७ ॥

उस पत्र में बीर रूप देवस्थान हिंगुलाज के प्रभाव से पृथ्वीराज के बलवान होने और नाहरराय के बल प्रताप का वर्णन था ।

कवित्त पूना कर पर वत्तह । कोरि दह नील सवायो ॥
बीर रूप इक रुद्र । थांन हिंगुलाज बनायो ॥
देवल एक अचम्भ ; हेम पुत्तलि इक मंडी ॥
धूप दीप साषा★ सुरङ्ग । धजा पत्ताकह ठण्डी ॥
दिष्षन सुथांन आचम्भ बर । ज्यों कवि मंत्री होइ कल ॥
कवि कहै चन्द बरदाइ बर । जो चहुआन सुहोइ बल ॥
॥ छं० २० ॥ रू० १८ ॥

---

१५ पाठान्तर—बीरज । लभवं । श्रीराम । दुर्जोध । नघुराय । मचकन्धं । दिम । मुन्दर । इक ॥

१६ पाठान्तर - कामधेनु । पछै । प्रछै । प्रछण्ड । बृषभ । अधिकारीय । उतरै । चढै । भारीय । माराय । हों । तूं । मनुप । भनुछ । लभी । सुपछ । बटि । और । होण्हे ॥

१७ पाठान्तर —पांनि । थांन । वानि ॥

१८ पाठान्तर -परवत्तह । प्रबतह । घांन । थांनि । हिंगुलाज । फुत्तरि । पुत्तलि । ★ अधिक पाठ है । सुरङ्ग । पत्ताकह । दिदिन । सु थान । ज्यो । कहै । जो । चहुंवान । चहूआंन ॥

कवित्त – बर गिरनारि नरेस । सिधु बट्टी सुरतानं ।।
तेज तुङ्ग तप तेज । बैर भजै अरि पानं ।।
बर गुज्जर वैसाहि । जमत अड्डो सुस्त्र बल ।।
तिन मुक्कलि दिय दूत । राज सम्भरिय पिन्नि षल ।।
परिहार नाथ नाहर नृपति । दुह बढ्यौ इक्क अग ।।
जाने कि जरा जुब्बन दुवन । सामन्ता सतोष भग ।।
।। छं० २१ ।। रू० १९ ।।

कवित्त – इन सामन्तन नाथ । बाथ बडवानल घल्लन ।।
मण्डल घल्लन नाथ । मार अग्गी षल जल्लन ।।
अकह कहानी कग्न । मरन रष्षन अमरन बल ।।
सुथिर अथिर करि थपन । अग जग जन दारुन दल ।।
भअ लोक सोक हर सुहिन तन । पन अप्पन सोमेस सुअ ।।
छत्र धर्म कलिमल मलन । तिहिन छोर पिष्षिय सुदुअ ।।
।। छं० २२ ।। रू० २० ।।

कवित्त – चरन पषि गिरि राज । पिष्षि मृगराज मृगनि गन ।।
गोधन धग्न गुवाल । हकि लै चलत बननि बन ।।
मह तजि चरन मृराल । अन्य तरु माग लगन कहुँ ।।
बट्टुर बिगर बिमाल । चलत बसि पवन गगन महँ ।।
तिम नाहर राइ नरिन्द पिषि । समर सहिन सक्कहि सकज ।।
गिरि लर्कु मद्दु मम बट गम्अ । गिरद पारि किज्जै अजक ।।
।। छं० २३ । रू० २१ ।।

पट्टन में चौलुक्य भोमदेव, आबू पर जैत (सलख ?) पंवार, मेवाड में समरसिंह, दिल्ली में अनङ्गपाल जैसे बलवानों में मण्डोवरमें नाहरराय के राज्य करने का वर्णन ।

कवित्त – उन पट्टन भीमग । ब्रह्म चालुक्क लोह लुअ ।।
अब्बू जैत पवार । लोह लरि जानि अचल धुअ ।।
समर सिंघ मेवार । दण्ड देवार अजर जर ।।
दीली पत्ति अनंग । लरन अड्डो सुलोह लरि ।।

---

१९ पाठान्तर –वट्टी । पान । गुजर । अडो । मुकलि । पिन्न । षल । जाते । जुबन । सांमन्ता ।।

२० पाठान्तर –घरन । जलन । कहानी । रषन । अग । जगन । जर्ग । कलिमल कलि मल्लन । पिषिय । सुअय ।

२१ पाठान्तर –पंष । बाज । पिषि । मृगनी । बनन बन । महुवाल । शाषा । कहौं । कट्टु । मट्टु । नाहरराय । सकहि ।।

परिहार नाह नाहर नृपति । इतन बीच अप बल रहै ॥
मण्डोवराइ मारू मरद । बर बिरद्द वके वहै ॥
॥ छं० २४ ॥ रू० २२ ॥

पृथ्वीराज का आठ वर्ष की अवस्था: मे दिल्ली ननिहाल में आना, दिल्लीश अनंगपाल के अधीन राजाओं का वर्णन ।

कवित्त बरष अट्ठ प्रथिराज । गयौ मुमाल दिल्ली थह ॥
राज करे अनंगेस । सेव मरुधरा करै मह ॥
मडोवर नागौर । सिधि जलवट्ट सुपट्टै ॥
पेमौरा लाहोर । धरा कगुर लगि वट्टै ॥
कासी प्रयाग गढ देवगिर । इते सेव अग्गा धरै ॥
सीमाटवियां सर्क सुपसु । भिन अनग सेवा करै ॥
॥ छं० २५ ॥ रू० २३ ॥

मंडोवर के नाहर राय का दिल्लीश्वर की भेट को दिल्ली आना, पृथ्वीराज का रूप देखकर प्रसन्न होना और माला पहिरा कर कहना कि जब पृथ्वीराज सोलह वर्ष का होगा तब मै अपनी कन्या इसको विवाह दूंगा ।

कवित्त आयौ नाहर राइ । सेव आदरिय दिलेसर ॥
दिष्पि कुवर प्रथिराज । नर अदभुत नरेसर ॥
अबर माला दक्क । अक पहिराइ कह्यौ इह ॥
मै दिन्नी रूपमगि । सबै उच्छाह कियौ यह ॥
आनद तेज राजा अनंग । प्रथीराज आयौ घरह ॥
दुइ अट्ठ बरस बीति गय । व्याहौं कह्यौ देव गिरह ॥
॥ छं० २६ ॥ रू० २४ ॥

नाहर राय का मत पलट जाना अर्थात् कन्या देना अस्वीकार करना ।

दूहा लालपनै प्रथिराज न, दिय कचन वैमाल ॥
मतौ फिरि किन्नौ अत्रम नाहर राइ बिसाल ॥
॥ छं० २७ ॥ रू० २५ ॥

---

२२ पाठान्तर नाहुक । अबु । आनि । दिल्लीपति । अपौ । बीचि । बिरद । ।

२३ पाठान्तर पथीराज । मुर । मध । बट । पुरै । पैसोरा । कटै । इतै । ? । भ्रन ॥

२४ पाठान्तर—नाहरराय । आदरौ । दिल्लेसर । देषि । कुअर । प्रथीराज । दभुत । एक । पहिराय । छोधौ । सबै । उछाह । कीयौ । मह । आभग । अनग । थिराज । अयो । अठ । बीतिगा । व्याहयु । व्याहयु । देवगिर ।

२५ पाठान्तर - बालपनै । पृथीराजनै । फिर । कीनौ । नाहर राय ॥

नाहर राय का उत्तर लिखना कि तुम्हारा कुल आदि हमारे योग्य नहीं है।

कवित्त -लिषि कग्गद परिमान। थान अजमेर पठाइय ॥
दूत पथ अबिलब। पास सभरि वै आइय ॥
चिनि मन्त आरभ। सेन पारंभ विचारिय ॥
बाल बीर प्रथिराज। देइ नाही परिहारिय ॥
गग पन सुआदि मम वर नृपति। समर जुद्ध मांझै समर ॥
कुल हुह नाम दिज्जै नही। इह कलंक लग्गै सुघर ॥
॥ छं० २८ ॥ रू० २६ ॥

अरिल्ल पंतरपाल को पूजै कौन। जो परहरि गौ विदह मौन ॥
परहरि मित्र उमया गुन तत्र। को मडै चडाली मत्र ॥
॥ छं० २९ ॥ रू० २७ ॥

दूत का यह पत्र लाकर पृथ्वीराज के हाथ में देना।

दूहा लिषि कग्गद परिहार पर विसरि विवर करि दूत ॥
लै दीनौ प्रथिराज कर, ममी मझ मगहूत ॥
॥ छं० ३० ॥ रू० २८ ॥

पृथ्वीराज का क्रोध करना. सोमेश्वरदेव का समझना।

कवित्त -बढि अवाज★ अजमेर। बचि कग्गद चौगामिम ॥
परिहारह मत्र सेन। धर्म परिहरि वढ्यौ भ्रम ॥
सूर नर तिन तेज। मध्य अँषियन यो गाजै ॥
प्रात श्राम जिमबद। जवह अग्रत अनु गाजै ॥
मगल्ल अनेक जात करन। तात बरज्यौ पुत्र फिरि ॥
मजाह मात मिसु बन मुनि। करहि जुद्ध मम्मिय सु जुरि ॥
॥ छं० ३१ ॥ रू० २९ ॥

---

२६ पाठान्तर परिमान। थान। विनि। मन। विचारीय। पृथीराज। देन। नाही। परिहारीय। नृपति। जुध। माधे। नाम। दिजै। नाही। लगे।

२७ पाठान्तर पंत्रपालकू। पूजै। गो। मोन।।

२८ पाठान्तर –प्रथीराज। पहूत ॥

२९ पाठान्तर -आवाज। भ्रम। मधि। अषिन। राज। उत। वुंद। अयन। मंगाह माह। सुरीर ॥ ★ यह शब्द अयात् "आवाजि और आवाज" आदिपर्व के रूपक १८१ तथा १ २ पृष्ठ ७६ मे भी आया है। उस पर की टिप्पण देखो। सस्कृत "वाज' और "वाद' शब्द Sound, sounding, discourse speech. and Prayer आदि के अर्थो मे प्रयोग होते है उन मे यह हिन्दी अपभ्रष्ट शब्द बने दीखते है ॥

सरदारों का पत्र सुनकर क्रोध करना।

कवित्त सुनिय वत्त सामन। बंचे कग्गद परिहारो।
सीस लग्गि अमकान। पिज्यौ लगा वगारो॥
सिघाने करि हन्यौ। हन्यौ केन जब कवर पद्धो॥
केन छीन मनि गाह। जुद्ध नाग ममि बध्यौ॥
बर कन्ह बीर सोमेस पहु। चाहुवान बक्करियै॥
बाहन बीर अरि नीर विच। दल चोहाना नारियै॥

॥ छ० ३२ ॥ रू० ३० ॥

कवित्त मुक्कै दूत मुद्धत। रत्त गुन अग्नि विरत्ता॥
चित तनौं गिर भार। मार कारज सो रत्ता।
बर अप्पन जानहीं। प्रमान नमान सुरप्पै॥
द्रिग राजान प्रमान। देस विद्दस परप्पै॥
ते दून स्पत्त सदोवरह। चर चरित्र अनुसरि परे॥
भय प्रात राज दरबार गय। दिषिप धार धर धर डरे॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये सजना।

दूहा तार बरज्यौ बन बहु एक न आवै दाइ॥
उन प्रथिराज नरिंद ने, सज्यौ सेन सुभाइ॥

॥ छ० ३४ ॥ रू० ३२ ॥

सेना का वर्णन।

लघनाराच हय गय सजे भर। निसान बज्जि दुम्भर॥
नफेरि बीर बज्जई। मृदंग झल्लरी गई॥ छ० ३५॥
सुनत ईस रज्जई। ननीस राग सज्जई॥
सुभेरि भकय घन। श्रवन्न फट्टि झन्नन॥ छ० ३६॥
नरट्ट नाद रिझ्झय। चमट्ठ ताल दिज्जय★॥
तुरंग पति चल्लय। मनौ जलट्ट हल्लय॥ ३७॥
तरप्पि तेज तामसी। मनो कि नट्ट वाममी॥
झलक्कि मत दनय। मनौ कि बीज पतय॥ छ० ३८॥

३० पाठान्तर सुनीय सामन्त। वच। बा। कग्गद। अममान। लग्गा। कर। पद्धो। छीन। बधो। कन्ह। चाहुआन। चहुबांन। बकारीये। बाहद। बिचि। चौहानां। तारीयै॥

३१ पाठान्तर मूके। कारिज। जानि हि। प्रमान। निम्मान। प्रमान। प्रमान। रांजन। विदेस परषं। सपत्त। वर चारित्र। दिषि॥

३२ पाठान्तर --दाय। पृथ्वीराजनें। सुभाय॥

जेर जराय बंगरी । मनौं चमक्क विज्जुरी★ ॥
मिरीसु सोभ जग्गयं । कि भान मेघ उग्गयं ॥ छं० ३९ ॥
श्रवंत सोभ दानयं । झरंत मेघ जानयं ॥
उपंम और दुत्तियं । षिलाब राह पुत्तयं ॥ छं० ४० ॥
उपंम तीय उद्धरं । कि मित्र कज्जलं गिरं ॥
जु वैरषं विराजही । वसंत वृष्ष लाजही ॥ छं० ४१ ॥
ढरंत चौर सीसयं । गिरं कि गंग दीसयं ॥
दुती उपंम लग्गयं । कि बद्दलं कि बग्गयं ॥ छं० ४२ ॥
जु घूघरं घमक्कय । कि दादुर सु भट्टयं ॥
दुती उपंम मेलयं । सुहाग वाम केलयं ॥ छं० ४३ ॥
सुघंट घोर मोरयं । सुनंत श्रोन फोरयं ॥
तिलक्कं चंद साजही । मनौ गनेस राजही ॥ ★छं० ४४ ॥
दुनी उपंम जग्गयं । दवकि लग्गि पब्बय ॥
गरुव गर्ज सद्दयं । मनौ कि मास भद्दय ॥ छं० ४५ ॥
सु पीलवान चंदयं । अरापती कि इंदयं ॥
सुअस्सवार राजही । कि जम जोर साजही ॥ छं० ४६ ॥
मिलंत मुंछ नैनयं । तिलग्गि मांग गैनय ॥
ते रूप भूप सारसे । कि अश्वनी कुमार से ॥ छं० ४७ ॥
त्रिगुंन तेज तंततं । तिलंक कंक ममतं ॥
मनाह रूप अंगमं । मनौ कि जोग जंगमं ॥ छं० ४८ ॥
मनाह जोति दिप्पयं । मरीच भान भिप्पय ॥
सुभट्ट छंद बद्दयं । कि बीर बान सद्दय ॥ छं० ४९ ॥
आगंम विप्र बोलयं । हुलाम छत्रि चोलय ।
सु पाइ कंचनं पनं । बुलंत ते झनं झन ॥ छं० ५० ॥
जुरंत जाम मल्लयं । प्रभा प्रसाद बुल्लयं ॥
निमध्य राज पिथ्थय । सु अग गंग तिथ्थयं ॥ छं० ५१ ॥
सामंत मध्य सोभय । कि इंद्र देव लोभयं ॥
कि पथ्थ पडव दलं । धनुक्क बान सब्बलं ॥ छं० ५२ ॥

३३ पाठान्तर—छंद । लगुनागज वा नराजा । हयगय । निमांत । दुभर । बजई ॥ ३५ ॥ रजई । मजई । वजई । नफेरि । अवन ॥ ३६ ॥ नारद नरद रिमयं । चौसट्ट । ★ यह दूसरा पाद सं० १६४७ की पुस्तक मे नहीं है । चलयं । मनों । जलद । हलयं ॥ ३७ ॥ नरगि । तांमसी । मनों । बांमसी । झलकि । मनों । बग्गयंतयं ॥ ३८ ॥ ★ ये दोनो पाद सं० १६४७ की पुस्तक मे नही है ।

चढंत राज प्रातयं । ते दूत देषि जातयं ।।
कहंत अब्ब घटायं । भई ममुद्र पाटयं ।। छं० ५३ ।।
उषाह मध्य ते चलं । मगुन्न वंदि जे भलं ।।
★ममूर मूरयं कलं । दिन मु अष्टमी चलं ।।
।। छं० ५४ ।। रू० ३३ ।।

पिता की आज्ञा लेकर अष्टमी को पृथ्वीराज का लड़ाई के लिये यात्रा करना ।

कवित्त दिन अष्टमि रवि वार । राज मुभ मँडि प्रस्थानं ।।
अष्ट दिसा जोगनी । भई साहाय मुध्यानं ।।
अष्ट च्यारि भय भान । राजदै अर्घ बधाइय ।।
इन मे भौम अनिष्ट । चंद चौथे ग्रह आइय ।।
चले नरिंद धायि दून नव । मन आनंद मु छंद हुअ ।।
प्रथिराज तात अग्या मगुन । चरन वंदि चल्लि वज्र भुअ ।।
।। छं० ५५ ।। रू० ३४ ।।

चौपाई-★तात मात आग्या परमानहि । ता ममान नह धम्म प्रमानहि ।।
गुरु द्रोही पति प्रोही जान । मो निहचै नर नरकहि थान ।
।। छं० ५६ ।। रू० ३५ ।।

नाहर राय के दूतों का पृथ्वीराज की चढ़ाई और सेना बल का समाचार नाहर राय को देना ।

छंद पद्धरी नाहर नरिंद जे दूत आइ । ममाचार मबै कहि ते मुनाइ ।।
दिगि जीत मत्त चहुवान मूर । लषियै नरिंद मन मज्झ करूर ।।छं०५५।।
इक महम म्वान मंग नाम धार । देमान देन बल तग अमार ।।
तिन मज्झ पच्च मै पत्तन पात । पिन मान अगल लाहौर जात ।।छं०५६।।
पाभगी अग जिन पमम होत । दिपि दीप जोति तिन नेन होत ।।
गानन्न मम घृत दुग्ध पान । आजान बाह दिगियै बखान ।।छं०५७।।

मर्गन । नगर । भान । उगिय । २२ ।। रानप । जानय । तृतीय पिलावै । गुनिय ।। ६० । उत्तम । चल्ल ।। ६१ ।। चोर ।। ६२ ।। पुषर । दलपम । दहुर । भदन । उपम ।। ६३ ।।

३४ पाठान्तर शुभ । मडि । भान । मै । भोम । अरिष्ट । चौथै । ६८ । नरिंद । धमि । प्रथीराज । आग्या ।।

३५ पाठान्तर--आग्या । परमानीय । परमानहि । समान । धुम्म । प्रमानाय । जान । निश्चै । नरकन । थानं । ।। ★ सं० १६४७ की पुस्तक में इसे अरिल्ल करके लिखा है ।।

रेसमी डोरि पट्टी नरंम । रहै सीत छांह दुष्षित गरंम ॥
तिन सथ्थ पंच सै और डोरि । ते रप्पिक विन को सकै छोरि ॥छं०५८॥
इक आइ पेस इक अश्व मोल । बलवांन अंग चष रहत षोल ॥
मिक्कार नाम जहतह तिकान । आरंभ जुद्ध सब लपि विनान ॥छं०५९॥
इक सत्त ऊंट भरी जीन साल । तिन धरै अंग छिप्पै न काल ॥
भेदैन वघ्र बर नीर धार । तिन धरैं अंग जे दल पगार ॥ छं०६०॥
सन्नाह महिम वरनी न जाइ । जिप्पनि कि देव दनुजनि उपाइ ॥
जनु ब्रह्म होम कढि मंत्र जोर । कै इद्रं अग्नि अप्पे अकोर ॥छं०६१॥
कै बरून अप्पि पाताल ईस । कै पवन प्रसन परसाद दीस ॥
वाचिष्ट कढ्ढि कै कुड होम । दीनी कि प्रसन ह्वै मात भौम ॥छं०६२॥
असि सिलह सथ्थ लीनी नरेस । जितनह समर सज सत्रुदेस ॥
॥ छं० ६३ ॥ रू० ३६ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप सुनकर नाहरराय का चौकन्ना होना ।

दूहा--सुनी पवर जब दून मुष । चमक्यौ नाहरराव ॥
ए अप्पन गनियं नहीं । वैरी बिम हर भाव ॥
॥ छं० ६४ ॥ रू० ३७ ॥

अपने सरदारों से नाहर राय का कहना कि अब क्या करना चाहिए पहिले चौहानों से हम से और बात थी पर अब तो बिगड़ गई ।

कवित्त मुच्छिन मकल लिय बोलि । पुच्छि परिगार [illegible] ॥
चाहुआन पायान । करन आपट जुद्ध बन ।
ननक भनक मी कान । दून [illegible] सुनि आए ॥
अप्प अचेतन रहौ । धरो धर भूमि गदाए ॥

---

३६ पाठान्तर समाचार । सब । जिन । सत । चहुआन । मनमे । स्वान ॥ ५५ ॥ सग । नामधार । देमान । मद्य । मे । अमिल ॥ ५६ ॥ नयम ॥ गनव । पांन । आजानवाहु । बल्वान ॥ ५७ ॥ नरम । शीत । दुषित । सथ । डोर । नि । रषिक ॥ ५८ ॥

पाठान्तर पेमि । बल्वान । मिकार । नाम । जहा । कान । बिनान ॥ ५९ ॥ ऊंट । धरै । छिपै । भेदैन । धरैं ॥ ६० ॥ सनाह । महम । जिपन । उपाय । ब्रह्म । इद्र । अपे ॥ ६१ ॥ कै । प्रासाद । कढि । प्रसन । भोम ॥ ६२ ॥ सथ । जितनह । सत्रु ॥ ६३ ॥

३७ पाठान्तर --पवरि । चमयक्यो । अपने । गिनियै । नही ॥

३८ पाठान्तर --पुच्छि । चहुआंन । पायांन । कान । उनह । अचेतनह । सुदाय । हमह कम । नही । सुहन ॥

मोमेस हमह कछु है नही । तिन मुहिन माला लई ॥
तब तो सनेह कछु और हो । अब तो कछ औरै भई ॥
॥ छं० ६५ ॥ रू० ३८ ॥

सरदारों का कहना कि लड़ना चाहिए ।

दूहा कहत सुभट परिहार के । हथ्थ चढी क्यों देइ ॥
सम्भ्र मारि दल भजि कै । पग्ग धार धर लेइ ॥
॥ छं० ६६ । रू० ३९ ॥

नाहर राय का कहना कि आगे से बढ़कर एक बारगी उन पर चढ़ाई करना चाहिए नही तो जीत न होगी ।

कवित सुनि मंडोवर राइ । कहत बलवंत सुभट मह ॥
द्रव्य उनह कर चढ्यौ । कहहि सुनौ★ मति बन यह ॥
जाइ अचानक परौ । बहुरि छुट्यौ नहि जैहै ॥
प्रथीराज उग सबल । मारि धर्त्ती सब लैहै ॥
इक सुनत सबन बेठी सुमन । सजन सेन बेगो कह्यौ ॥
च [illegible] चरनि कै बन [illegible] । सो अर्न्नी मारग गह्यो ॥
॥ छं० ६[illegible] ॥ रू० ४० ॥

नाहर राय का सेना सजना ।

[illegible]
[illegible]
॥ [illegible] ४१ ॥

पृथ्वीराज की सेना की प्रशंसा ।

कवित सग्ग सेन सनाहि । [illegible]★ [illegible] ॥
बीर सिगार सुभत । [illegible] जनु रन वाम [illegible] ।
सत्तउभय तत्ताम । मिल्हइ सजी चहुआन ॥
चंद देषि मन मगन । कवित तिन करै बषान ॥
पचमी सोम रितु राज सत । सुर तेज जाजुल्लित हुअ ॥
करतार हथ्थ कित्ती कही । बजि निसान चहुआन धुअ ॥
॥ छं० ६९ ॥ रू० ४२ ॥

---

३९ पाठान्तर हय कै ॥
४० पाठान्तर मडोवरराई । मडोवरराय । सुभट । कहहि सुनो मति बन इह । ★ अधिक पाठ है । परो । नहि जैहै । इम । [illegible]नी लैहै । सबन । बेगो । बन अनी ॥
४१ पाठान्तर नाहरराय । पभरि वार । उद्योत । अनद ॥
४२ पाठान्तर सभारि । ★ अधिक पाठ है । सधि । सिगार । सजी । चहुआन । येषि । बषान । रिति । हय । किती । निसान । चहुआंन ॥

पृथ्वीराज का आगे से बढ़कर लड़ने के लिये जोबनराय को आज्ञा देना ॥

तबै सुजोबन राई । सूर साह्यौ चहुवान ॥
तुम गुज्जर वैषंड । गाम मुरधर अगिवान ॥
पथ पथ परवान । धाइ अगिवानी किज्जै ॥
सगा सपन जपियै । हमनि आरोहि गुलिज्जै ॥
वामान पथ अधी प्रकृति । विन दिट्ठै दिट्ठै न कछु ॥
बन पन अड्डु परवत रहै । भेद विना जानहि न कछु ॥
॥ छ० ७० ॥ रू० ४३ ॥

जोबनराय का उत्तर दे कहना कि नाहरराय का पथ बांधा सो वह रणभूमि को तिरछी छोड़ कहीं चला गया ।

तब्ब सुजोबन राइ । बत्त जपै चहुवान ॥
अड्डु पन परवत्त । मत्त गुज्जर धर मान ॥
लोहानौ आजान । पथ बध्यौ पाल्लक्की ॥
नाहर राइ नरिंद । गयौ तिरछौ मज मुक्की ॥
करिवर अनेक केवर गहिय । प अग्गै को धाइया ॥
निह ठाम चक्र चिन्यौ हनौ । पै नाहर राइ न पाइया ॥

सबेरे नाहरराय के भग जाने पर साझ को पृथ्वीराज का पहुँचाना और उसको खोज करना ॥

गयौ प्रात परिहार । मझ चहुआन सपत्तौ ॥
बरज्यौ जीवन राइ । पांज क्रम क्रम करि लिन्नौ ॥
पथवान पुच्छयौ । नदी उत्तरि तिन अप्पिय ॥
तानै पूर नरिंद । बाज तत्ता करि नप्पिय ॥
आनंद मिल्लह मज्जिय नृपनि । पगौ पारिव मार जिम ॥
ज्यौ गिद्द भ्रम पच्छौ करै । चित्त दिगंबर कियौ तिम ॥
॥ छ० ७२ ॥ रू० ४५ ॥

---

४३ पाठान्तर तबै । राय राय । चहुआन । चहुआन । गुजर । गाम । मुरधुर । अगिवान । परवान । अगिवानी । कीजै । किजै । वामान । दिठे । दिठे अडु । अड्डु । प्रवत । जानै ॥

४४ पाठान्तर तबै । तबै । योबनराय । चहुआन । चहुवान । अड्डु । अड्डु । परबीन । गुज० । मान । लोहानौ । अजान । पाल्लुकी । नाहरराय । मुद । गुहिय । के अग्गै । उधाइया । निहि । टाम । यै । नाहरराय ॥

४५ पाठान्तर— चहुआन । सपनो । योबनराव । लीनो । पथवाल । पुछयौ । नदि । उतरि । अपीय । अप्पीय । नषिय । सजिय । पारेव । ज्यो । गद्द । गंद । पछो । चित । डिगंबर । कीयो ॥

चालुक के प्रधान (दीवान) के घर नाहरराय का पता मिलना और सामन्त सहित पृथ्वीराज का नदी उतरना।

कुंडलिया -नदी उतरि सामंत सह। डीम संपते जाई ॥
चालुक्का परधान ग्रह। पट्टन नाहर राई ॥
पट्टन नाहर राइ। सेन सज्जे सथ षच्यौ ॥
त्रय हजार असवार। वीर संधान जुसच्यौ ॥
प्रात कूच उप्परै। आज मुकांम जुदुम्तर ॥
अकि प्रथिराज नरिंद। मिलह मज्जी नदि उतरि ॥

॥ छं० ३३ ॥ रू० ४६ ॥

सुभट सहित सेना मे पृथ्वीराज कैसा शोभता है।

कवित्त सुभट मिलह घट जोति। भयौ घट मिलह सुभट्टन ॥
कै★ दीप मध्य भूडोल। कै★ भान बद्दली सुभट्टन ॥
कै★ मकुर मध्य प्रतिबिंब। कै★ गभ विभ्भून अधारै ॥
कै आरांम म सार। हथ्थ करतार सुधारै ॥
पाहार भार डिल्लै रमनि। कै★ उदधि मद्धि लका दहै ॥
त्रिय बनित द्रव्य अरु मोह बसि। नजि जुदि बानै ग्रहै ॥

॥ छं० ३४ ॥ रू० ४७ ॥

पृथ्वीराज के ग्राम पहुंचने का समाचार नाहरराय का सुनना और सेना इकट्ठी करना।

दूहा भई षवरि परिहार कौ, नदि आयौ प्रथिराज ॥
लग्यौ सेन एकत्र करन दद बजाने बाज ॥

॥ छं० ३५ ॥ रू० ४८ ॥

घाटी पर पर्वतराय को रास्त रोकने के लिये भेजना।

दूहा जहँ पब्बय घाटो हुतो, मीना मेर मवास।
प्रब्बत सौं प्रब्बत मँड्यो, अनमीजो घन त्रास ॥

॥ छं० ३६ ॥ रू० ४९ ॥

४६ पाठान्तर नदि। उतरी। उतरि। सामंत सब। संपत्ते। जाय। चालुका। परधांन। राय। सेन जेन। सजे ऊपरै। मुकाम। मुदुम्तर। प्रथीराज। मजी। उतरि ॥

४७ पाठान्तर -ज्योति। ★अधिक पाठ है। मधि। भांन। बदली। सुषटन। मुकर। बिंम। विभून। आरंमि मार मे। हथ। सुधारै। मधि। दहैं। वसि। बांनै ॥

४८ पाठान्तर -भई। को। पथीराज ॥

दूहा हुकुम कीन परिहार तिन, प्रब्बत मीना मेर।
इनतें तू रुकि एक टक, जितनें आवत बेर ॥
॥ छं० ७७ ॥ रू० ५० ॥

पर्वतराय का घाटी रोकना।

दूहा -सुनि प्रब्बत धायौ तुरत, घाटी रोक्यौ जाइ।
च्यारि सहस मीना प्रबल, बैठे आइ बलाइ ॥
॥ छं० ७८ ॥ रू० ५१ ॥

दूहा तीन पनच धुनही करन, बड़े कटन तंडीर ॥
सगुन बिना पग ना धरै, बिकट बन हडीर ॥
॥ छं० ७९ ॥ रू० ५२ ॥

पर्वतराय कैसे घाटी रोक कर बैठा है।

कवित्त मंडोवर धर लाज। राज रप्पन परिहारन ॥
स्वामिन सक बज्रंग। जग जिन अग न हारन ॥
देत सेवासनि भेलि। मारि धर पर पसु लावै ॥
देषत कै राजान। बिरदवा नैन चलावै ॥
बैठे सु ओट रूपन उपल। करि तरकस इधे धरनि ॥
देषन वह चहुवान की। भरै जानि बिसहर बरनि ॥
॥ छं० ८० ॥ रू० ५३ ॥

घाटी रुकने का समाचार पृथ्वीराज को मिलना।

दूहा लही षबर प्रथिराज तिन। मीना मरद अमान ॥
पकरि लोह पब्बह गह्यौ। लहै की अग्गौ जान ॥
॥ छं० ८१ ॥ रू० ५४ ॥

---

४९ पाठान्तर जहा। जह। घाटी। हूता। [illegible] मीना। मीना। परबत। सों परबत। प्रबत। ज्यौं। प्रबत। मटभी। जो ॥

५० पाठान्तर परबत। इतने। इनने। तु। जितनै ॥

५१ पाठान्तर पर्ब्बत। घाटो। रोक्यिग। बैठे। आनि ॥

५२ पाठान्तर—धुनही। वड्डे। कढन ॥

५३ पाठान्तर— बजरग। गग बिन अगन हारन। [illegible]। मेवासन। मेवासन। कै। राजांन। बिरदवा नेन। रूप उटन। ओधै। चहुवान। भरे। जानि ॥

५४ पाठान्तर षवरि। प्रथीराज। मीनां। अमान। गृह्यौं। अग्गी। अग्गी। आंन ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का पर्वतराय से लड़ने को कन्ह चौहान को भेजना ।

कवित्त सुनि कुप्पिय प्रथिराज । जानि पुच्छिय मुथप्प मल्लि ।।
मनु मृगराज मृगीन । जोर क्रद्धिय दिप्पिय बल्लि ।।
ग्राह ग्रहन जनु जीव । देषि तुट्टिय सुमीन कह ।।
समर समुद जल पियन । जानि घट जन्म क्रोध मह ।।
पिजि कही कन्ह चहआन सह । एक आइ अड़े फिर ।।
सिर नाइ धाइ नरनाह तब । प्रब्बत सम प्रब्बत भिर ।।
।। छं० ८२ ।। रू० ५५ ।।

कन्ह का पर्वत से युद्ध और उसमे पर्वतराय का मारा जाना ।

छंद भजंगी सर मेर मीना ग्रहा घेरि घाटी ।
मिले आइ कन्ह मनो लोग आटी ।।
मते मूल बग्ग कहं दल ओट ।
हठ ना सुमेर मेट जानि कोट ।। छं० ८३ ।।
भई तीर मार सरोस सवेग । तबे ताहि पारै सविद्ध अछेग ।।
महावज्रघात उतप्पात भइयौ । करे हल्ल हाक बर वेग हन्यौ ।।छं०८४।।
जुटे जुद्ध अनबद्ध करिब्रुद्ध टाटे । करै हथ्थ वाह पय मडि गाढ़ ।।
गिरेबान लग्गे बिय उत्त उत्त।महामत्र विद्या गुरू द्रोन चित्त ।।छं०८५।।
भई बान छाया न सूझै मरीच । मिले लोह लक्काह तत्त नरीच ।।
गिरै अश्व असवार लोह जहीर । परै जानि डड्डर वृष्प गहीर ।।छं०८६।।
हय छडि नरनाहि हुए उतारै । हहकार बज्जै सहोम पुकारै ।।
परै अश्व घातसरोम सरीर । बकै केय वक्क करै के अगीर ।।छं०८७।।
सर जाल भाल उठै लोह अग्गी । जरै पप्प पर्षो गिरै स्वर्ग मग्गी ।।
भरे मुट्ठि कन्ह सर मार बग्ग।निकस्सै सुबिद्धहुअे पग्ग उग्ग । छं०८८।।

---

५५ पाठान्तर प्रथीराज । जानि । पुच्छिय । मनो । क्रुधिय त्रि दिपि बल । जानि । चहुआन । आन । परबत । भिरै ।।

५६ पाठान्तर मई । मीना । घाटी । मिले । कन्ह । मनो । ... । लोन । मर । वग्ग । उट । हिरै । ना । मइ ।। ८३ ।। सवैग । हक । ताक ।। ८४ ।। वरै । हथ । गिरै । बान । लग्गे । बाय । इन । ... चित ।। ८५ ।। बान । लवाह । गिरै । परै । जानि । वृष ।। ८६ ।। नरनाह । हकहाक । बजे । मह मे । परें । सरोम । बकैं । बक । वक । करैं ।। ८७ ।। जरे । गिरे । भरे । भूट्टि । निकसै । बुद्धी । हुअे । उग । डग ।। ८८ ।। लगे गुजे । गुरज । शीस । कहे । पलारन । तुबां । मनो । बहै अश्व निर्घात । बहे । निघात । मनो । निकसै ।

लगे गुज्ज सीसं कहैं उक्ति कोगी । पछारंत तूंबा मनौं षीजि जोगी ॥
वहै अस्सि निग्घात रोसं प्रहारं।मनौं निक्कसै सब्बनं तंततारं ॥छं०८९॥
लगे संग छत्ती फुटै पुठ्ठि पच्छी । किकंधं कहारं कटै जार मच्छी ॥
जितं तित्त उठंत छिछ रकत्तं । फिरै भट्ट भीते भयानं बकत्तं ॥छं०९०॥
नचै भूत वेताल पेतं भयानं । रसं वीर रस्से इसे निर्द्दयान ॥
मिल्यौ भुष्ष कन्ह परब्बत वीरं।हन्यौ अस्सि घातं धुक्यौ ता सरीरं॥९१॥
जरयौ कंध कन्ह असीघात धीरं । करी कट्टि मना षरी चग्ग हीरं ॥
परयौ झुज्झि प्रब्बत्त रावत्त मेरं । गज्यौ नाहर गाज नाहूसंवेर ॥
॥ छं० ९२ ॥ रू० ५६ ॥

पर्वत के मारे जाने पर नाहरराय का स्वयं टूट पड़ना ।

कवित्त परत धरनि परबत्त । आइ हुंबिकय नाहर रन ॥
बलबड्डे मह मेर । जानि हनुमान लंक बन ॥
इक्क गिरत घन थाप । इक्क बथ्थनि पछ्छारिय ॥
बहर रूप मम भूप । रूप अनभत मंचारिय ॥
मानिक्क वम आयौ उनह । इन नाहर गल गज्जयौ ॥
परबत्त परयौ पट्ठ पिप्पिकै । मिन बज्जन बज्जयौ ॥
॥ छं० ९३ ॥ रू० ५७ ॥

पृथ्वीराज का भी चढ़ चलना ।

छंद पद्धरी चढ़ चल्यौ राज प्रथिराज नाम । साधन सुमेन वर वरन वाम ॥
दुल्लहै भयौ सोमेस पुत्त । वनिता विवाह मन कर पत्त ॥ ९४ ॥
बज्जहि निसान दस दिस गुरान । आषाढ़ अग्ग ज्यों मेघ थान ॥
रथ वाजि करी पयदल्ल पुन्न । सज्यौ नरिंद चतुरंग सेन ॥ ९५ ॥★
मुक्की सुभुम्मि अजमेर राज । यत्तौ गुजाइ पट्टन समाज ॥
बज्जी सुलागि सिधू निसान । भयभीत भेष भय दस दिसान ॥ ९६ ॥

निकसै । सबंन ॥ ८९ ॥ लगें । सगि । छत्ती । फुटे । पुट्ठि । मछी । कहार । कटै । मृछी । जित । उठत । छिछ । रकत । फिरे । फिरै । भट । बकत ॥ ९० ॥ नचै । रसें । मुष । सुपरबत । असि ॥ ९१ । कंन्ह । असि । कटि । मनाह । षरि । चष । झुझि । परबत । रावत । नाहर । सवेर ॥ ९२ ॥

५७ पाठान्तर – परबत । आय । हुबिकय । बट्ट । कह्रे । जानि । हनुमान । रक । घन घाय । इक । बथन । पछारीय । पछारिय । सम रूप । सचारिय । संचारीय । मानिकं । मानिक्क । गजयौ । परबत्त । पिपि । कै । सिधु । बजन । बजयो ॥

बज्जिय सुभेरि भय भकरीस । गज गजे गाह हय हट्ठ हीस ॥
गिरनार देस अरु सिंधु वट्ट । गज्जे सुराज सजि थट्ट थट्ट ॥ ९७ ॥
ढलकंत ढाल बैरष्ष रग । सोभत विपन रिति राज सग ॥
मिलि आय पथ नाहर नरिंद । बीराधि बीर बह्ठे सुदद ॥ ९८ ॥
हक्कारि भट्ट सेना सवान । सामत सूर करि लोह पान ॥
कन्हा नरिंद आजान बाहु । लगरी राव स्वामित्त राहु ॥ छ० ९९ ॥
सभारि बीर चालुक्क भूप । उपज्यो ब्रह्म कुडह अनूप ॥
अतताइ तुरग नेरहु सुषंड।षिजि रह्यौ रोपि रन रोहि झुड॥छ०१००॥
तिन ठाम आइ नाहर सुघेरि । वाहन हथ्थ जनु करिय केरि ॥
॥ छ० १०१ ॥ रू० ५८ ॥

इधर पृथ्वीराज इधर नाहरराय का सन्मुख युद्ध ।

कवित्त उत प्रथिराज नरिंद । इत सुपरिहार प्रबल रन ॥
दुअन सेन असि कढ्ढि । करन कल्पन समय जनु ॥
दुअन अङ्ग सनाह । दुअन तप चम्म उघारे ॥
दुअन इष्ट आरम्भ । ★अनि दुअ हथ्थ दुधारे ॥
दुअ सुभिम अङ्ग दुअ दव जनु★ दुअन धार दुअ तुछ कढ्ढिय ॥
सनाह रढ्ढि कट्टी सुतुछ । तस उपम चन्दह कढ्ढिय ॥
॥ छ० १०२ ॥ रू० ५९ ॥

कवित्त दुअन हथ्थ दुअ भूप । रूप अद्भुत रथ वहि ॥
उन्द्र मिलह प्रथिराज । चद्र परिहार तज गहि ॥
दुअ अभग सनाह । दुअन देवन आराग्न ॥
दुअन तेज तन अस । हस दुअ हस ससाधन ॥

५८ पाठान्तर ★ व ९४।९५ और ९६ छद स० १६४७ की पुस्तक मे नही है । प्रथीराज । नाव । वाम । दुन्द । पुर ॥ ९४ । ज्यो । थान । पलेन । मज्यौ ॥ ९५ ॥ मतो । वर्जा । लाग । निमान । दिमान ॥ ९६ ॥ बजिग । गजै सुराज हय हठ हीस । गिरनारि । वठ । गजे । थट थट ॥ ९७ ॥ बैरम । बढे ॥ ९८ हहाकार । भट । सवान । आजानबाहु । स्वामित ॥ ९९ ॥ चालुक । ऊपज्यो । तुरग । रोहि ॥ रिन रोपि ॥ १०० ॥ ठाम । हय ॥ १०१ ॥

५९ पाठान्तर प्रथीराज । कढी । सनाह । नष । हय । दुधारे । सुभि । कटि । कटी । "उपम ॥

६० पाठान्तर —हय । प्रथीराज । रहि । उतिम । वुनि । भृगु । लछिन ॥

★ एशियाटिक सोसाइटी की पुस्तक मे "दुअन इष्ट आरम्भ से "दुअ देव जनु" तक नही है । परंतु सं० १६४७ की मे है ॥

अवतार भूत दुअ देव सम । दुअन चिन्ह उत्तम करिय ॥
परभास षेत परब्रह्म दुति† । भ्रगु लंछन जनु धरि हरिय ॥
॥ छं० १०३ ॥ रू० ६० ॥

उसमें पृथ्वीराज का नाहरराय के घोड़े को मार डालना ।

दूहा फुनि प्रथिराज कुमार नें, हय हन्यो परिहार ॥
कंध दुअ कटि वग सहित, धुक्यो धरनि असिधार ॥
॥ छं० १०४ ॥ रू० ६१ ॥

दूहा धुकत धरनि नाहर तुरिय, झपट्यौ वध कनक ॥
तेक नोकि तक्यो तुरी बहि असि कध छनक ॥
॥ छं० १०५ ॥ रू० ६२ ॥

दूहा दुअ कोटल दुअ नृपति के, किन्ने हाजुर आनि ॥
दुअन बीच दुअ सुभट थट, अरुन भए चहुआनि ॥
॥ छं० १०६ ॥ रू० ६३ ॥

रनबीर का सन्मुख हो पृथ्वीराज से जुद्ध करना ।

कवित्त बर पावस रनबीर । दुतिय पावस मम मज्ज्यौ ॥
धूम जोनि अरु सलिलं । मरुत प्राकारन बज्ज्यौ ॥
सज्जि सेन अनुरंग । बग्ग बद्दल रग धारिय ॥
स्याम सेन अरु पीत । रत्त धज मत्त विचारिय ॥
उन्नयौ धार धाराधनी । लग्ग तिरच्छो बुद्धिवर ॥
विज्जुलि झमकि षग पतिकर । गिर्वी सेन अरिजुथ्थ पर ॥
॥ छं० १०७ ॥ रू० ६४ ॥

मोहन परिहार और पवार सन्मुख हो लड़ना ।

दूहा उन मोहन परिहार रन । मेर ममान अमान ॥
द्वै द्वै असि कटि विकट वनि । द्वै धनु द्वै द्वै बान ॥
॥ छं० १०८ ॥ रू० ६५ ॥

---

† एशियाटिक सोसाइटी की पुस्तक में " दुअ देव सम ... स ब्रह्म दुति" तक नहीं है । परन्तु सं० १६४० की में है ।

६१ पाठान्तर प्रथीराज । कुआरनै । ... हन्यो ... कद्द दुअ ॥

६२ पाठान्तर तुरी नोंकि ॥

६३ पाठान्तर दुतीय । मज्यो । मुरत । प्रकारन । सजि । बद्दर । धारीय । स्यांम । रत विचारीय । उनयो । तिरछो । छुटि पर । बुद्धि । बिजुलि । झमंक जुथ ॥

६५ पाठान्तर —दोहरा । समान अमान । द्वै द्वै धमु द्वै बान ॥

कवित्त - उत मोहन परिहार । इत सुपावम पंवार बर ॥
दिष्ट दिष्ट अंकुरिय । मंझ जुग मौत दिष्ट धर ॥
मोहन कोपि करार । सीम पावार मुझारिय ॥
टोप कट्टि फटि मुड । अपटि पावार निझारिय ॥
फटि मुंड तुंड धर कट्टि झटि । लट्ट विफार अफार झट ॥★
कर वत्त तत्त विहार कि तुरन । जनुकि क्वारिय पट्टुपट ॥
॥ छं० १०९ ॥ रू० ६६ ॥

चामंड का युद्ध ।

कवित्त नट रूप चामंड । वलन वग्गयन प्रतापन ॥
हन्यो मग दुअ अग । निरगि दुअ अग्गुल मापन ॥
उभै मग चलि आइ । मध्य गट्टि हथ्थ सु हथ्थन ॥
उडि भेजी मुअकास । छुट्टि निकास दद्धिकन ॥
परताप भगि परि प्रथ्थि पर । लोक तीन कीरति कहिय ॥
द्रव्यान पान निकसी सुरधि । जोति जाइ जोतिन मिलिय ॥
॥ छं० ११० ॥ रू० ६७ ॥

कवित्त मिलै पौन सो पौन । मिलै पानी सौं पानी ॥
मिलै तेज सो तेज । मिलै सूनै सनानी ॥
मिलै प्रथी सो प्रथी । मिलै हरि सौ हरि वेना ॥
मिलै हुतासन होन । होम होमै जो होना ॥
जल होत जोत जल भिरत हरि । पय मे जिम पय मिलि सुपय ॥
तिमि मरत दुरत जेइ झरन रनि।सुमिलिय प्रताप सु आप स्वय ॥
॥ छं० १११ ॥ रू० ६८ ॥

कवित्त मंस हड्डु रद गूद । अत बर बाज गज्ज नर ॥
भय भूभ्रन्त असत्त । चढिय जुग्गिन तिन उप्पर ॥
इक्क दत गज गिद्धि । उनरि लै अत अलुझ्झिय ॥
इक्क कोद जुगिनीय । करन अंचत सौ झत्विय ॥

---

६६ पाठान्तर पावार । झारीय । पटि । निझारीय । " ★ कटि मुड तुंड हुअ । घड हुअ । अधर फट्टिय बर पग झट ।" स० १६०७ वी मे यह पाठ है । वत । तत । विहार कि । ववारीय । पट्टु ॥

६७ पाठान्तर आय । मग । हथ । दुद्धन । दधि । प्रताप । पर । पृथी । लोकं तन । द्रव्यांन । पांन । जाय ॥

६८ पाठान्तर -पोंन । पानी । मों । पानी । सुने । सुनांनी । पृथ्वी । सों । पृथ्वी । बता । होमे । भिलत हर । दुरत । जेई । रिन ॥

तिहि दिष्ष चंद कविराज तत । अति उल्हास ओपंम बढि ।।
उडवत्त चग सुचंग अँग । राज कुमारि अट्टानि चढि ।।
।। छं० ११२ ।। रू० ६९ ।।

दूहा – धवलंगी धवली दिसा । धवल त्तन चहुवान ।।
धवल दीह समुह लरचो । जस धवलो तन आनि ।।
।। छं० ११३ ।। रू० ७० ।।

स्वामि रत्त रत्ते समुह । रत्ते नैन करूर ।।
रन रत्ते दव दाह सम । गुजत गल्ह गरूर ।।
।। छं० ११४ ।। रू० ७१ ।।

नाहर ? से नाहरराय का लड़ना ।

कुंडलिया नाहर सौं समुह लरचो । नाहर राइ नरिंद ।।
मडोवर मारू वली । धनुवर भूपति दद ।।
धनुवर भूपति दद । सेन चहुआन ढँढोरी ।।
सुर असुरन करि मेर । मथत दरिया हिल्लोरी ।।
हय हथ्थिन घन हकि । बीर छुटयौ छकि छाहर ।।
मरदन सौ मिलि मरद । मरद यु यों मुप नाहर ।।
।। छं० ११५ ।। रू० ७२ ।।

बलराय का खेत मे मंडना ।

कवित्त हथ गयौ थिर सुथिर । पत्त मडयौ बल राय ।।
मार मार अप्पार । धार लग्गा धर नाय ।।
उडिय अग पगधार । धपी द्रुगा धर लोइय ।।
धक्क हक्क उच्चार । मार श्रप्प दल भोइय ।।
निघ्घात घात भरकर करहि । नभ निसान निन सद्द भरि ।।
सब सूर सुरगीय कक बल । सुभर कह्हिड अंस वर पसरि ।।
।। छं० ११६ ।। रू० ७३ ।।

---

६९ पाठान्तर बांज । गज । भून । असन । जुगिना । उगर । इक । उतर । अलुझिय । इक । जोगिनिय । अंतन । सो । भुकिय । तिहि । दिगि । तिन । उपम । उडवन । अग । कुमारि । अट्टानि ।।

७० पाठान्तर - नन । तन । चहुवान । आनि ।।

७१ पाठान्तर -स्वामिरत्त । रत्ते । रते । नेन । वते ।।

७२ पाठान्तर -सो नाहरराय । धनिवर । अहुआन । ढढोरी । ढटोरी । असुरनु । दरीया । हिलोरी । हथिन । सों ।।

७३ पाठान्तर -थह । अपार । लगा । दुगा । धक हक । उचार । श्रपं । निघ्घात भह । निसान । शब्द । सुरंगीय । कहि ।।

घोर युद्ध वर्णन।

छंद विराज- कढी★ तेग तत्तं। मनौं मल्ल घत्तं ॥
लगे लोह लग्गं। षगं पग्ग बग्गं ॥ छं० ११७ ॥
दुअं बाह बाहं। गजं गज्ज दाहं ॥
जुटे इत्त उत्तं। मनौं मंस चित्तं ॥ छं० ११८ ॥
धुकं धीग धक्कं। हुकं मार छक्कं ॥
भिरें भूमि रुंडं। बकें बैन मुंडं ॥ छं० ११९ ॥
तुटैं तूट वाहे। दतं दंत माहैं ॥
इकं पाइ कूदें। टिकें नेक रुंदे ॥ छं० १२० ॥
चहै चाहुआनं। तडित्तं कमानं ॥
रमं वीर रस्मे। बहै लोह हम्मे ॥ छं० १२१ ॥
गजे गैन देवी। अभूतं मुएवी ॥
नचै भूनि भूमी। जकं देषि झूमी ॥ छं० १२२ ॥
षिलं पत्त पालं। विहद्दं कपालं ॥
रचै रुड मालं। थबै थोन लालं ॥ छं० १२३ ॥
चवट्टी चिकारै। फिकींयं फिकारैं ॥
गम गिद्ध गद्दै। पलं पूचि चहुंै ॥ छं० १२४ ॥
भिरै भति भागी। अभूतं मुरारी ॥ छं० १२५ ॥ रू० ७४ ॥

दूहा पग्ग भिग्ग तुट्टत मुकर। करत निवत्तं सुहथ्थ।
अप्पानौ बल हथ्थनह। का मंगै बल तथ्थ ॥
॥ छं० १२६ ॥ रू० ७५ ॥

नाहर कर नंग्हा सुपय। भय भारथ्थ उपाउ।
जागु जहां जो ऊबरै। तिहि बल गेह सदाउ ॥
॥ छं० १२७ ॥ रू० ७६ ॥

---

७४ पाठान्तर तेग। तत्ते। मनो। दुअ। गजे। गज। इत्त उत्त। मनौं। चित्ते। धके। धीग। हके। छके। बेन। तुटे। तूटें। तूट वाहे। दतै। साहै। पाय। कद्दे। चाहुवान। रसे। बहै। हसे। गेन। भूमि भूमी। जकें। रचें। रुड। थवै। चवटी। चवट्टी। फकारी। फिकियं। फिकारै। गोमं। गिद्दं। गद्दै। चुट्टै। भिरें। मारी। अभूतं ॥★ सं १६४० की लिखी पुस्तक में इस छंद का शुद्ध नाम विराज है और इतर में रसावला है। यह दो लगुरु और रसावला दो गुरुलगु का होता है।

७५ पाठान्तर— चुटत। हथ। अप्पनौ हथ। मगौ। मगै। तथ ॥

७६ पाठान्तर—भारथ। तिहि ॥

गाथा कायर मुष्ष प्रमान । बर कमोदय मोदय मुग्ग ।
सत सित पत्र प्रमान । ईधारिय वीर वृदाय ।।

।। छ० १२८ ।। रू० ७७ ।।

छंद त्रिभगी हकारे सूर वज्जत तूर, नच्चत हूर, मुर मूरय ।
हय छडिय राज, तेजय पाज, लरे सुमाज, तार झरय ।।
चलि चाल बधी, नारा मधी, हँसे सुनदी दै तारी ।।
तुरसी रस मजरि, तव नव पजरि, तन घन पंजरि, वैमाल ।।१२९।।
घन केसर रग, अवनि अग, नच्चत जग, अहि काल ।
जपे हरि गग, गुन अनभग, चरमन अग असि झारे ।
दुनो बबकारे, दुनो न हारैं, छोह करारै, गुन भारे ।
केसरि रँग रोरं, असिवर झोर, भौ तन कोर, घटि हाल ।।१३०।।
सिर तत्रि प्रमानं उभया जान ध्रुअ समान, सुर हाल ।।
झिल्लोरे पग्ग अरि घट जग्ग करिन अभग्ग, जुध्रमोर ।
परिहार सु आप अरि उर दाप रनि रन थाप पग जोर ।।
चारनर सुमान जुद्ध समान, अरि हरि मान सुग्यान । छ० १३१।।
पर म य नवार असि वर झार [illegible] वार [illegible] रान ।।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] गुरजनि [illegible] ।।
रन जेत [illegible] तुट्टिय [illegible] ।।
रन लुट्टिय अ[illegible]थ, गुन कवि कथ्थ अचरिज मथ्थ रवि र[illegible] ।।

।। छ० १३३ ।। रू० ७८ ।

छंद भुजगी हकार्यो जुझ्झर विराजत वीर । स्वय कंठ आभूषन छद नीर ।।
पया पेम मना चवं पत्र अच्छी। किनौ छद नाम विराजै सु लच्छी।।छ०१३ ।।

---

७७ पाठान्तर मुग । प्रमान । रमाद । कमोद । रग । प्रमान । उधारियं । वृंदाइ ।।

७८ पाठान्तर हकार । वजन्त । नचन । १२० ।। कसरि । नचत । गग । सिरमन । बबकारे ।। १३१ ।। अछोरि । सोनान । करभ । करभ । कर्ं । भगी । फिरि । लगी वुदं । बुन्द । बुन्द । डुन । झाल भार सिर । कुमारं । हल ।। १३२ ।। फुट्टे । विट्टे । फुट्टे । नट । सीसं । बथ । लथ त लुथ । कथ । सथं । रथ ।। १३३ ।।

नव नेह नागी लछी देह दूनो । करी सूर नार्हा विराजत सूनो ॥
हय छडि राज लरे सूर तेज । मनो जुद्ध आकूत भारथ्थ एज ॥ छ० १३५ ॥
चलै चाल बत्रे तन मद आस । कहै चद कर्व्वी तिन जुद्ध भास ॥

॥ छ० १३६ ॥ रू० ७९ ॥

गाथा हकारे बिर सेन । बजे बज्जाई पच सद्दाय ॥
सछे नव रँडा रग । भग कन्ह चितय पलय ॥

॥ छ० १३७ ॥ रू० ८० ॥

दूहा – उत मडोवर बीर कै इत सभरि वै राव ॥
दुअ लग्गा अस गार जुध, सुकवि चद करि काव ॥

॥ छ० १३७ ॥ रू० ८१ ॥

छंद भजगी – [illegible] निकथ्था। उयान उवान समान पकथ्थ ॥
हयग रथग धर धार तुट्टै । धर धार धीर महा बीर लट्टै ॥ छ० १३९ ॥
पलकै रुधिरआ [illegible] । [illegible] धाम [illegible] रन [illegible] ।
[illegible] निकारे सूर [illegible] रग [illegible] । छ० १४० ॥
[illegible] सुरती [illegible] । [illegible] सुर्नी [illegible] ।
मन [illegible] । [illegible] नन ना [illegible] ॥

॥ छ० १४१ ॥ रू० ८२ ॥

लोहाना आज नु बाह के युद्ध का वर्णन ।

कवित [illegible] ।
[illegible] बाह पमारि । नेग [illegible] उक्मारै ।
उक्मारै निक्मार । बीर बाहै बद्‌डाली ॥
अद्‌डाली अर बढ्डि । कध सोहै मुड्‌डाली ॥

---

७९ पाठान्तर सो सु । पट । अछो । किनो । नाम । [illegible] ॥ १३४ ॥ लरैं । मनो भारथ ॥ १३५ । कहै । करी ॥ १३६ ।

८० पाठान्तर हकारे । बीर बजाइ । सद्दाई । सदे रग रग । रग रग । भग ॥

८१ पाठान्तर कं । दोउन के असराल युद्ध सो चद करीव नु काव ॥

८२ पाठान्तर -सुलुथ मलुथ । मलुथ सलोथ । अलुथ निलुथ । उयान । प्रलथ । हय गगरथं । तुट्टै । लट्टै ॥ १३६ ॥ पलकै ॥ रुधिरआ । प्रवाह । कन । मनकन । निकारे सुरगी । नचै । सेगो । ननथे ननथी ॥ १४० । अन्नुस । अरुसै सुरनी । अरुसेन । उडे । भुअ । हयन । गयन । परे । तुटे ॥ १४ ॥

सुद्दाल कंध विव षंड हुअ । विधि ओपम कवि चंद कहि ॥
आवृत्त घत्त आजान भुअ । मनु कजल कोटकि विज लहि ॥
॥ छं० १४२ ॥ रू० ८३ ॥

कवित्त लोहानें अरि फौज । चक्क चिहुंकोद फिराइय ॥
ज्यौ तूल मध्य बातूल । पवन जिम पत्त भ्रमाइय ॥
मारुत बजि आरिष्ट । वाइ चिहुँकोद झुलावय ॥
कै वाय पुरानन धज्ज । त्रिविधि विध तुग हलावय ॥
कै कुलाल चित चक्रित भो । चक्र चिहू दिसि फेरइय ॥
मृगराज मृगनि ज्यौ क्रोध बल । बल समूह अरि घेरइय ॥
॥ छं० १४३ ॥ रू० ८४ ॥

कवित्त—तहां पिझ्झि पिथ कुंअर । लोह झारै गज मथ्थ ॥
भइय भमुड विषड । भ्रम मोभन मुनथ्थ ॥
कै ★ जलधि नट्ट हवि होम । धोम धारा घृन सिच्चिय ॥
कै ★ नडिन नेज नव घन प्रमान★ । भान चलि बद्दल पंचिय ॥
कज्जल प्रमान प्रब्बन ढला । रन धार बुट्टु न जल ॥
कच्चन प्रनार है मुर ध्रवकि । इह ओपम शोमन पल ॥
॥ छं० १४४ ॥ रू० ८५ ॥

दूहा जावक्र श्रोन प्रनार जल । इगुर फटिक वहात ॥
जोवन रद कढि रुहिर तिन । दंनू मर दररात ॥
॥ छं० १४५ ॥ रू० ८६ ॥

कवित्त लोहानों आजान बाह★ । जित्त आरनि जस लिन्नौ ॥
ज्यौ इक लैई कन्ह । दंग दावा नल पिन्नौ ॥
ज्यो इकले हनुवंत । वक लंका गढ ढाह्यौ ॥
ज्यौ इकलेई भीम । मित्त कौरव नन गाह्यौ ॥

---

८३ पाठान्तर आजान । वाह । पमारे । उभारै । उभारै । विभार । बढाली । वढाली । अरिकट्टि । मोहैट्टै । मुढाली । मुढालि । पध छिछि षड हुअ । उपम । आवृत । घन आजानु । मनो ॥ मनौ ॥

८४ पाठान्तर लोहानो । चिहु । कौद । ज्यो । तुल । मधि । भ्रमाइय । बलि चिहु । धज । विधितुग । भयो । चिहु । फेरईय । ज्यो । घेरिईय ॥

८५ पाठान्तर—षिझि । कुआंर । मठं । भईय । तथ । कं । तरह । चिचिय । चिचीय । ★ यह सब अधिक पाठ हैं । भांम वट्टलह । कजल । प्रमांन । प्रबत ।

८६ पाठान्तर—प्रनाल ॥

ज्यौ पुनि अगस्ति अप इक्कलै । मोषि मञ्ज मायर लयौ ॥
दांनव कि चंपि अंगद बलिय । नंषि उदधि परमौ गयौ ॥
॥ छं० १४६ ॥ रू० ८७ ॥

कवित्त बल बध्यौ नाहर नरिंद★ । इद्र जनु वज्र हथ्थ झलि ॥
मुकति मुफल लद्धीय । बीर ब्रह्मांड नार पुलि ॥
नर नाहर ज्यौ लर्‌यौ । लज्ज पकह आलुझ्झौ ॥
मार धार निद्धार । पार मुक्किग जग मुझ्यौ ॥
कल्हन केलि परिहार रिन । त्रिमल तेज लग्गिय त्रिभुअ ॥
भग्गौ न भमि रजपूत हौ । करौ नाम जिम अटल ध्रुअ ॥
॥ छं० १४७ ॥ रू० ८८ ॥

कवित्त गुनिय मत्र सेवक्क प्रमान★ । रहट घट्टी फेरहि हम ॥
पेट भरन★ चल्लन । पुट्टि दै भार चढहि क्रम ।
ते नर गनियै सूर । ध्रम छिन्निन कौ नाही ॥
स्वामि मरै छंडि । लोभ अप्पन घर जाही ॥
गनियै न सूर अरि जूह बल । आप सेन उपि पट्टियै ॥
जै अजै भाग भपनि क्रमह । अप्पु दोस अप मिट्टियै ॥
॥ छं० १४८ ॥ रू० ८९ ॥

कवित्त वाय रूप प्रथिराज । गज्जि गयौ अगि रूक ॥
सार धार उझ्झार । गुरज भज्यौ सिरभूक ॥
रह्यौ भान रथ षचि । पवन रह्यौ गति छंडि थिर ॥
रहे देव टग चाहि । नच्चै बैताल बीर भर ॥
मडे जु राम कित्ती प्रबल । सोइ मरन छुट्टैन दिन ॥
पल पष राम पच्छै चढी । नाहरराइ नरिंद रन ॥
॥ छं० १४९ । रू० ९० ॥

---

८७ पाठान्तर ★ अधिक पाठ है । जिति । गीनी । ज्यौं । इकलेह । इकलेंह । ज्यो । इकलेइ । हनवन । हनमन । ज्यो । इकलै । मन इकलै । मव । दानव । परमो ॥

८८ पाठान्तर नाहर । ★ अधिक पाठ है । हथि । हथ । मुगति । ब्रह्मांड । ज्यो । जल । पंकह । निझार । मुकिग हौ । करौ । नार ॥

८९ पाठान्तर सेवक । ★ अधिक पाठ है । घठी । घटिका पुटि । चलि । कौ । स्वामी । जाही । रपि । भुआरि ॥

९० पाठान्तर--प्रथीराज । गजि । उझार । भान । पवन । मडै । यु । रासि । किति । सोई । पछै । नाहरराव ॥

कवित्त नाहर राइ नरिंद । चित्त चिंता उतारिय ।। १ ।।
मन बध्यौ बल घटयौ । मरम केवल विच्चारिय ।।
सुनहुँ तौ★ कह कवित्त । सुथिर जीवन जग नाही ।।
इह ससार असार । सार कित्ती कलु माही ।।
ज्यौ उरगह मुष उदर परै । यौ सुदेह नाहर कहै ।।
भवतव्य बान मिट्टै नही । नाम एक जुग जुग रहै ।।
।। छं० १५० ।। रू० ९१ ।।

दूहा इह कहि रहि रन मड रूपि । ज्यौ कपि रघम सेन ।।
कोपि कन्ह धायो बली । ज्यौ अगि बिछुटिय गेन ।।
।। छं० १५१ ।। रू० ९२ ।।

कन्ह चौहान के युद्ध का वर्णन ।।

विराज धप्यौ कन्ह थट्टी । छुटी अपि पट्टी ।।
अगी सेन फट्टी । मनो दूध पट्टी ।। छं० १५२ ।।
परे उ[illegible]ट्टी । मना कठु कट्टी । परे भमि रट्टी । मना गद जट्टी ।।छं०१५३।।
बहे धार रट्टी । मनो नारु मट्टी ।। तरकै कि तट्टु । मना आगि नट्टी ।।छं०१५४।।
लरें रा [illegible]ट्टी । मना [illegible] अट्टी । मुग मारि जट्टी । मनो [illegible] नट्टी ।।छं०१५५।।
रघू रार रट्टी । [illegible] ओन चट्टी । कमीचंद भट्टी । मुष तिनि रट्टी ।।
।। छं० १५६ ।। रू० ९३ ।।

कवित्त नाहर नाहर राव । कहर नाहर मुर[illegible]र ।।
दिठ्ठ दिठ्ठ अकुरिय । भारय विम जानु विपहर ।।
हमनि कन्ह असिगीम । सीस चकि परिय बाम भुज ।।
पुनि उछटि परिहार । सार सिर कहर टोप बुज ।।
लग्गे मुटाप उड्डिय किरच्च । बहन धार उन मग बनि ।।
जैंजया मद्द जुगिन करहि । दुअन जुद्ध अदभन भत्ति ।।
।। छं० १५७ ।। रू० ९४ ।।

---

९१ पाठान्तर नाहरराय । चित । चिंता । उतारिय । बद्ध्यौ । विचारिय । सुनहु । सुन ह । ★ [illegible] । [illegible] । नाही । ज्यौ । [illegible] । मुमष । [illegible] मिटै ।

९२ पाठान्तर रह । ज्यौ । रघुन । कन्ह । ज्यौ । विछुट्टिय ।।

९३ पाठान्तर ★ म० १५८७ की प्रति में छंद नाम विराज है और उसमें छंद समावना है । १५२ ।। मनो । कठ । परे । मनो । मनो । मद ।। १५३ ।। बहै । मनो । तरकै । आग ।। १५४ ।। [illegible] । या । मना । [illegible] । मना । लत ।। १५५ ।। मुष । थट्टी । कब ।। १५६ ।

९४ पाठान्तर [illegible] । दिठ दिठ । तान । परीर । बाम । कुनि । उछटि । वछुटि । कन्ह । उडिय । मरद । जुगिन ।।

डारि कन्ह तरवारि । कढ़ि जम दड्ढ मिल्यो हिय ॥
अचिर्ज जुद्ध इन बीच । धार भतीज दिष्षि तिय ॥
गहि मुसिष्ष पुट्टि आइ । घाउ जम दड्ढ कियो तिय ॥
छडि प्रान परिहार । परे पाल्हन ऊपर जिय ॥
गहि रोम नषि नर भूमि पर । हनि अनियारिय उभय रसि ॥
तिन हनत घाय घुमत झुमत । गया निट्ठि नाहर निकसि ॥
॥ छं० १५८ ॥ रू० ९६ ॥

नर नाहर जिम लर्यो । गयो नाहर जिम नाहर ॥
घाव घट्ट घन घुमि । झमि निकसिय बल नाहर ॥
कन्ह [illegible] किय नन्द । [illegible] पच्छारिय ॥
जनु [illegible] । [illegible] धर डारिय ॥
[illegible] ॥
[illegible] नूर [illegible] । [illegible] छदर धोरिय ॥
॥ छं० १५९ । रू० ९६ ॥

[illegible] । [illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
नम तेज रुधिर [illegible] । [illegible] ॥
॥ छं० १६० । रू० ९७ ॥

दूहा नाहर नाहर जिम निकसि । [illegible] नाहर के [illegible] ॥
कनर [illegible] धरि कुपि पुट्टि । वली मीर [illegible] ॥
॥ छं० १६१ ॥ रू० ९८ ॥

कुंडलिया फिरि जुहार किय स्वामि को । मृतिकय काम धमारि ॥
वली मीर गढ्ढो लरयो । मरन मरन विच्चारि ॥

९५ पाठान्तर [illegible] । नमदड । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । भतीज । दिषिनीर । [illegible] । पुट्टि । नमदड । प्रान । [illegible] । [illegible] । अनियारीय । [illegible] ।

९६ पाठान्तर [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । डारीय । मदान । बजि । [illegible] । [illegible] । करीर । नहुआर । नहुआर । नूर । [illegible] ।

९७ पाठान्तर [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । भारीय । [illegible] । मन मो । [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥

९८ पाठान्तर नाहर कैं । [illegible] ॥

मरन सरन विच्चारि । मिलन अंतहपुर किन्नो ॥
बँधि त्रिय सांइ सुभ्रित्त । करि सांई सो दिन्नो ॥
मार धार तन पंड । पंडि मारयौ रिपु जुर जुरि ॥
तिल तिल तन तुट्टयो । रंभ ढंढयौ हित फिरि फिरि ॥
॥ छं० १६२ ॥ रू० ९९ ॥

दूहा- सिर तुट्टै परि भूमि पर । यौ राजै कविचंद ॥
कमल जानि नच्चंत सर । सरद चंद पर कंद ॥
॥ छं० १६३ ॥ रू० १००॥

कुंडलिया कमल जानि नंच्यौ ज सर । दिसि सोभै संग्राम ॥
मानहु जल्लद कमोद तजि । थल ऊए ए ताम ॥
थल ऊए ए ताम । चंद ओपम नहा पाई ॥
मांनहु बीर समुद्र । दयौ फल हथ्थ बधाई ॥
धार धार चढि सूर । सूर कीरति विमल ॥
धन्नि धन्नि उच्चार । सीस नच्चौ सुकमल ॥
॥ छं० १६४ ॥ रू० १०१ ॥

नाहरराय का भागना और पृथ्वीराज का पीछा करना ॥

कवित्त--भग्गा नाहर राई । पाई सुक्कै नाहर जिम ॥
जिम जिम भर कट्टई । रोम लग्गा बर तिम तिम ॥
षेत सोधि चहुआन । पस्यौ तूवर पाहारी ॥
बर★ परयौ तहां गोइंद । परयौ भट्टी अधिकारी ॥
पोची प्रसंग बंधव उभै । मोह सुबंधा बध बर ॥
तिम सिम सु तेग तारुन लगै । तिम तिम बुट्टै सार नर ॥
॥ छं० १६५ ॥ रू० १०२ ॥

---

९९ पाठान्तर—स्वामि को । सुकिय । काम । गढो । शरन । विचारि । अन्तरपुर । बधि । त्रीय । साई । सुभ्रिन । सुभृत । तिल तिल्ल । ढुढयौ ॥

१०० पाठान्तर- तुट्टै । यो । राजि । राजै । जानि । नाचत । सरद कंद ॥

१०१ पाठान्तर- जानि । जानै । नच्चौ । सूर । मानहु । थल । ऊए ताम । ऊपम । पाइय । मानहु । हथ । बधाइय । ★ विए नि । बिए सु । धनि २ । उचार । नंच्यौ ॥

१०२ पाठान्तर—नाहरराय । पाय । सुक्या । कढ्ढई । रोम । चहुवान । चाहुआंन । तूवर । तूअर । पहारी । परहारी । ★ अधिक पाठ है । तथा उलट पुलट पाट ऐसा है— बर गोइंद तहा पर्यौ । बध्या बंधवर । तेज ॥

त्रिविध सहस्त्र नाहर★ बसंत । पत्र कायर तन झारिय ॥
वीर रूप तप भान । नीर सूकें थल भारिय ॥
ततारि तुँअर नरिंद । भयौ तम गहर घन छंह ॥
छाह स्वामि समूह । जह टारिय सुअग तहं ॥
फल फूल किन्नि पषी बरन । विमुष न भो समुह लर्यो ॥
गधर्व वीर चालक वरन । मरन वीर अच्छरि वर्यो ॥
॥ छ० १६६ ॥ रू० १०३ ॥

गुज्जर वै परधान । जैन ध्रम्मी मन लद्धी ॥
एकादस चहुआन । धर धारह सा रुद्धी ॥
सहस एक असवार । धार है गै पट सट्टो ॥
नाहर राइ नरिंद । कोट पट्टन तै चट्ठयो ॥
दट्ठयो घन चहुआन वर । उर भारथ आहुट्टया ॥
चामर सु छत्र धरि पट्ट स । सुगा विविध विधि लुट्टया ॥
॥ छ० १६७ ॥ रू० १०४ ॥

डोला पन पचीस । स्वामी सजुन चढाइय ॥
चाट रूह घट घम्मि । चाट एकादस राइय ॥
चपि वीर चाउसर । राज मे सान तुरुक्क हरि ॥
गज गजै सामत । धरै धरनी नाहर धरि ॥
रविवार वीर पंचाम दिवस । एकादस रोवसजल ग्रह ॥
अष्टम सु नष्ट जागिनि ग्रहन । वर वज्जनि नरिंद नह ॥
॥ छ० १६८ ॥ रू० १०५ ॥

पट्टन मे पृथ्वीराज का राज्याभिषेक होना ॥

दव दसमि क दीह । नयर पट्टन चहुआन ॥
गुर पचम रवि नवम । सुक्र ग्यारह ससि थान ॥
तीय थान बर भौम । सुक्र सत्तम बल किन्नो ॥
केईद्री वर बुद्ध । राह सब कोद अहिन्नो ॥

---

१०३ पाठान्तर सहस्र ।★ अधिक पाठ है । झारीय भान सुक्कै । झारीय । ततारी । तुअर । ताअर । तन सर । तन छर । छर । स्वामि । टारीय । तहा । भो । गधर्व वीर चारन रन । अछरि ॥

१०४ पाठान्तर गुजर । परधान । ध्रम्मी ध्रमी । चहुआन । अरुद्धी । नाहराय । चढयो । चहुआन । आहुटयो । लुटयो ॥

१०५ पाठान्तर डोला । स्वामी । स्वामि । धाय । घमि । घुम्मि । धाय । ईकादस । सेलान । तुछ । वरैं । वरो । वजेनि ॥

आनंद चंद बरदाइ घन । राजभिषेकन पट्टि करि ॥
साजंत भूमि जीते सुपति । तेज तुंग दुज्जन सुहरि ॥
॥ छं० १६९ ॥ रू० १०६ ॥

दूहा – तिरिय वक्र अधचक्र नन । ऊरध वक्र प्रमान ॥
इन नछित्र चहुआंन कौ । पट अभिपेक समान ॥
॥ छ० १७० ॥ रू० १०७ ॥

कवित्त -- इन नछित्र कविचंद । कौन कारन ऊपावै ॥
पटभिषेक राजान । बहुत आराम प्रभावै ॥
ग्रह प्रसाद ★ तोरन ऊतंग । छत्र जंत्रह गर टावै ॥
धजा बंधि पताक । संग चामर मडावै ॥
उछ्यन परत पानि ग्रहन । वहू विवेक छमह सुधरि ॥
नन का नडागन वाणियन । धन गुनियन गुनियन्न वरि ॥
॥ छ० १७१ ॥ रू० १०८ ॥

नाहरराय का हारकर अपनी कन्या के विवाह का
लग्न लिखवाकर भेजना ॥

छंद पद्धरि – सव सथ्थ तथ्थ हुअ एक ठाम । सुनत गस नरनि गिरिनार गाम ॥
सव लोक महाजन मिले आइ । चिन्यौ सुचित्त नाहर सुभाइ ॥छं० १७२॥
जिहि मेल होइ सो करि उपाइ । दिपियै दीप सो नहीं लाइ ॥
पहुमी सुकाज भर नजन प्रान । पहुमीग काज धन देत दान ॥छं० १७३॥
पहुमीय काज जग बाजि देत । उपाइ नेक पहुमी गुनेत ॥
पुत्री सुएक तिन तन कुआरि । दीसत देह जनु मदनधारि ॥छं० १७४॥
बुल्लाइ विप्र लिपि लगन तथ्थ । पठ्ठाइ दीन नृप पिथ्थ जथ्थ ॥
आनंद राज सव सेन अंग । फुल्ले कि कमल जनु दिपि पतग ॥
॥ छं० १७५ ॥ रू० १०९ ॥

---

१०६ पाठान्तर – चहुवानं । चहुआनं । थान । कीनो । केट्री । सवकोद कहिनो । वरदय घन । पट । दुजन ॥

१०७ पाठान्तर – तिर्गीय । प्रमान । चहुआन को । पटभिषेक । समांन ॥

१०८ पाठान्तर - कोन । उपावै । पाट विभेव रजान । पाटभिषेक राजान । आराम ।★ अधिक पाठ है ॥ उतग । पताक । छत्र । उछ्यन । पानि । पांनि । धुंम्मह । नटाकन । घन सुकियन चुकियन वर ॥

१०९ पाठान्तर – सब्ब । सथ । तथ । हुव । ठाम । गिरनारि । गांम । सब्ब । मिलिय । आय । चिन्यौ । सुभाय ॥ १७२ ॥ जिहि । होय । उपाय । दिपियै । नही । लाय । पुहमी । आंन । दान ॥ १७३ ॥ उपाय । कुवार । धार ॥ १७४ ॥ बुलाय । तच्छ । पठाइ ।. पिथ । जथ । फूले ॥१७५॥

पृथ्वीराज का ब्याहने को जाना ॥

कवित्त नठ्ठा नाहरराइ । षेत ढुंढ्यौ चहुआनं ॥
राज जीति गज लभ्भि । सीस लग्गा अममान ॥
तुम मल्लह परिहार । मत्त कीनौ अमित्त जुध ॥
बरन बीर समुहो । रज लग्गे सुमन सुध ॥
पंचमी वार रवि रात दिन । राज नाम वर जोग गुर ॥
गिरि नाम करन राजन्न बर । चढ्यौ बीर बीरम डर ॥
॥ छं० १०६ ॥ रू० ११० ॥

पृथ्वीराज का तोरन की बदना करना ॥

कवित्त बंदि राज तोरन्न सुचंग ★ । मुत्ति लग्गै अंकित अलि ।
मनो ★ नद्द त्रिगुनि उड्डत । भान लग्गै मयूष हलि ॥
ठाम ठाम सिर गान । जानि अच्छरि केलासह ॥
सुभ सिंगार सामन । जानि रंग ओप रस वासह ॥
तोरन्न सुनार थाचार करि ★ । के जनवासन संपहि ॥
दिष्पंत नयन अनुराग नरिन्द । मा बंधि अग्गहि भाव कहि ॥
॥ छं० १०७ ॥ रू० १११ ॥

पृथ्वीराज का नाहरराय की कन्या से विवाह होना ॥

दूहा तोर आचार सब पढ़ित । पानि ग्रहन फुनि ब्याह ॥
साम वाम वसुनायक । धंन नाहर सब्याह ॥
॥ छं० १०८ ॥ रू० ११२ ॥

नाहरराय का कहना कि आपके काम मे सीस देने के सिवाय और कुछ देने के योग्य हम नहीं हे ॥

दूहा नाहर राइ नरिंद कहि । का तुम जोग जगीस ।
और देन हम है कहा । काम सीस हम ईस ॥
॥ छं० १०९ ॥ रू० ११३ ॥

---

११० पाठान्तर नठा । नाहरराव । ढुंढ्यो । चहुआन । लभि । मल्लह । मत्तर । मत । अमित । जुद्ध । लगा । रात्रि । नाम । गिरि नाम । करन । चढ्यौ । वीरम् ॥

१११ पाठान्तर तोरन ★ अधिक पाठ है । मुत्ति । नदै । छुट्टत । नदै । ठाम ठाम । शीष । गान । साम ॥

११२ पाठान्तर पढ़िहनन । पानि । फुनि । सोसामव सुनायकै । सोवास बसुनाइकै । धंनि । कुब्याह ॥

११३ पाठान्तर --नाहरराव । नाहरराय । कहा । देन । और देन । आर । देन । है । काम ॥

नाहरराय की कन्या का गुण और रूप वर्णन ।

साटक—तन्मै स्याम सुरँग बाम तनयं, मन्मथ्थ वल्ली कला ।
सुषष धामय तेज दीपक कला, तारुन्य लच्छी ग्रहा ॥
रूपं रंजित मंजु माल कलया, वासंन पत्रावली ।
श्रव्न लच्छन काम धीरज गुणं, धन्यौ दुती दपती ॥
॥ छं० १८० ॥ रू० ११४ ॥

पृथ्वीराज का जीत कर स्त्री के साथ लौटना ॥

कवित्त सभरि वैरन जीत । बीर चालुक्क काम बल ॥
उभै जोध मो जितै । लेइ कर वत्त कामि कल ॥
बीर निमानित भग्ग । बग्गि आनन्द निमान ॥
प्रात होत वर बीर । चढ्यो सभरि दिसि थान ॥
भर विब्भर मग मग हय गज्य । रहिय निम्मगन जुद्ध इच्छ ॥
कालक कोटि भजे विपल । सुबर बीर बीरह जु पुच्छ ॥
॥ छं० १८१ ॥ रू० ११५ ॥

अरिल्ल लै नहर्नी डोला चढ़ि राज । डोला लगरिगाइ बिराज ॥
धन रगा नोर निय धन्य । जिन रष्यो जोवन नृप मन्य ॥
॥ छं० १८२ ॥ रू० ११६ ॥

संग बरनि डोला चढ़ि राज । मनों रनि दुति काम समाज ॥
कै अलि डोलनि मध्य सुसाज । चढ़ि पत्र मध्य अजावन राज ॥
॥ छं० १८३ ॥ रू० ११७ ॥

पथ्वीराज का ग्यारह डोलो सहित होना ।

गाहा -करी जजंन सरीर । भीर भजि स्वामि का मंत्र ॥
ग्यारह डोल सुमथ्थ । कथं पनेत्र सभरि ग्रह ॥
। छं० १८४ ॥ रू० ११८ ॥

---

११४ पाठान्तर—तन्म । स्याम । बाम । मनमथ । बाल्ली । सुष । लछी । गुहा । पत्रावली । श्रव्न । लछन । काम । गुनै ।

११५ पाठान्तर -रिन । जात । करवत । कालिक्क । निमान । वग्गि । निमानं । थान । विभर । श्रामगह । गइय । निम । भजे । पुच्छ ॥

११६ पाठान्तर -लगरीराय । धनि लगा नोर नीय धन्य । जोविन । मंन्य ॥

११७ पाठान्तर —बरनि । मनो । रमि । डोलन । पय ॥

११८ पाठान्तर -करि । भजि । सुमथ । सभरी ॥

पृथ्वीराज का विवाह कर घर पहुँचना।

दूहा ग्रह पत्तो जित्तो मयन। परनि सुचंगी वाल ॥
जंभा वीतं त्रिम्मयो। कुंअरप्पन सुहि लाल ॥
॥ छं० १८५ ॥ रू० ११९ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा।

कवित्त बंस अनल चहुआन। भयो न पिथ सम कोई ॥
जिग पड़े षल पग्ग। दीन बदै मय लोई ॥
जिन नाहर राइ नरिंद। १डव मह पज्जारिय ॥
जिन बभनवा मौ मिघ। मपन ढ्ढ्यौ गजाइय ॥
अरि घग्न घरनि घर चैन नहि। मयन निमकन मचरहि ॥
बन गहन बहन विल्लुल फिरहि। त्ररर ज्यों कदर बसहि ॥
॥ छं० १८६ ॥ रू० १२० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासे नाहरराइ
कथा वर्णन नाम सप्तमो प्रस्ताव. ॥ ७ ॥



११९ पाठान्तर —ग्रह। त्रिमयो ॥
१२० पाठान्तर—चहुआन। भय। पिथह। नाहरराय। नाहरराव। पंजारीय। सौं। बांन। ठट्टो। ठढो। चेन नह। ज्यो ॥

अथ मेवाती मुगल कथा लिख्यते

(आठवां समय)

सोमेश्वर के मंडोवर जीतने और लूट को सरदारों में बांट कर प्रबल प्रताप के साथ राज्य करने का वर्णन।

कवित्त सुवसि देस सोमेस। पेस मैवास महीपन ॥
सुभट थट्ट सघट्ट। दिट्ठि कुंवर किय जीपन।
मंडोवर परिहार। मारि उच्चारि जेर किय।
सामतन सम रंग। लच्छि लभ्भी सुबांटि दिय।
दिन दसा देस दरबार दुति। दान पग्ग रत्तौ रहै ॥
पट्टु प्रबल पारि पच्छारि करि। अदट दट्ट अगहनि गहै।
॥ छं० १ ॥ रू० १ ॥

सोमेश्वर के गुणों और उसकी गुणग्राहकता का वर्णन।

कवित्त भरिह दड बल मंड। गंज गजंन उर छंडहि ॥
मगपत इक पग त्रान। पलक सेवा सिर मंडहि ॥
दुजनि देव गुर गाइ। पाइ पुज्जियहि निरंतर ॥
पंडित गुनी गुनग्य। द्रब्य लै चल्लहि दिसंतर।
दरबार भीर सुभटन थटन। कला कलित नाटिक नटहि ॥
छत्तीस राग रागनि रसनि। तत ताल कटन टटहि ॥
॥ छं० २ ॥ रू० २ ॥

सोमेश्वर का मेवात के राजा मुगल (मुद्गलराय) के पास कर लेने के लिये दूत भेजना।

कवित्त एक सुदिन सोमेस। दूत हज्जूर बुलाइय ॥
मैवाति मुगल नरिंद। पत्र पट्ठाइ लिप्पिदिय ॥

---

१ पाठान्तर—सुभट्ट। दिट्ठ। कुअर। कुवर। जिप्पन। उजारि। लछि। लभि। लभी। लीय। दान। पछारी। हन ॥

२ पाठान्तर—छडह। दुजन। गाइ। गाग। पाय। पुजहि। पुजियहि। रागन रसन। तंन ताठ ॥

३ पाठान्तर—हजूर। मैवाती। नरिंद। पठाय। लिपि। भूमियान। उत रहि। हुक्म तबां। तह ॥

★प्रमान—प्रमानराय नामक कायथ सोमेसराज की पेशी का मुंशी था ॥

भूमि आस जो करहि। भरहि तो डंड सेव करि ॥
नतर समर डर डरपि। समुद उत्तरहि पार तरि ॥
सिर धारि हुकुम चर चलिय तहँ। जहां मुगल मडल मही ॥
सोमेस सूर प्रथिराज बल। तिम समुह चर बर कही ॥
॥ छं० ३ ॥ रू० ३ ॥

मुद्गल का यह पत्र पाकर क्रोध प्रगट करके दूत को लौटा देना और सोमेश्वर का पत्रोत्तर पाकर क्रोध करना और उस पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना।

छंद पद्धरी पढ़ि पत्र पिथ्थ मुग्गल नरिंद। प्रज्जरिग रोस मेवात इंद ॥
बहु दिवस सोम नृप हुअ सुपग्ग। किम उछ्छवन्न बढ्ढी सुपग्ग ॥ छं० ४ ॥
किम सलिल उट मृग चढै नीर। किम पवन गवन गति धरै धीर ॥
किम सूर सीन गुन गहै अंग। किम धर्मराज धरै दया अंग ॥ छं० ५ ॥
किम तजै व्याल बल विषम मुप। किम तजै अर्द्ध गल गरल दुप ॥
किम तजै उर्दधि उर अगनि दाह। किम तजै चंद रवि राहु ग्राहु ॥ छं० ६ ॥
धरि नाम छत्रि क्यों दंड देइ। इह बल सुप्प क्यों राज लेइ ॥
अरु करन सेव नहि चाहुआन। मन मझ हास मति राज आन ॥ छं० ७ ॥
मेवासु मांहि श्रीनाथ पाइ। तिहि चरन चित्त लग्यौ सदाइ ॥
भंडार दंड मो सम्य पान। जब तक मुलेछ हाजुर निदान ॥ छं० ८ ॥
सिर पाव साग बुल्लिक प्रवीन। पहिराइ चरन बर विदा दीन ॥
फिरि दूत पच्छ अजमेर आइ। दिय पत्र लगि सोमेस पाइ ॥ छं० ९ ॥
बचिय मुलेष काइथ प्रमान★ सुनि सोम राज चहुआन भान ॥
करतार हथ्थ पग दान दोइ। धन मद्द गव जिन करौ कोइ ॥ छं० १० ॥
अनमक कक हम बंक धीर। तिहि दान दंड मो जुद्ध धीर ॥
प्रज्जरिग सोम सुनि श्रवन दूत। जिहि ग्रेह पिथ्थ अवतार भूत ॥ छं० ११ ॥
बुल्लाइ सूर सामंत राज। दुय घरी मुहूरत सधौ आज ॥
मेवात मही उजारि जारि। पुर ग्राम नैर दीजै प्रजारि ॥ छं० १२ ॥

---

४ पाठान्तर पिथ। मुगल। नरिंद। प्रजरिग। प्रज्जरिग। रोस। मेवात। सुपग्ग। उछवत्त। बढ्ढी ॥ ४ ॥ सलित उलटी। नीर ॥ ५ ॥ ब्याल। मु.प। मुंष। दु.ष। दुष ॥ ६ ॥ नाम। छित्री। मु ष। चहुआंन। चाहुवांन। मझ। होस। होस। आंन ॥ ७ ॥ पाय। तिहिं। दड मो भंडार बर सत्व पादि। निदान ॥ ८ ॥ बुलिक परबीन। पहिराय। पछ। आय। दीय। लगि। पाय ॥ ९ ॥ कायथ प्रमांन। चहुवान। भांन। हथ। दान। दोय। मदहिं। कोय ॥ १० ॥ तिहिं दान प्रजरिग। जिहि। गेह। पिथ ॥ पिथ ॥ ११ ॥ बोलाय। दुअ। महूरत।

षन षोदि बंक गढ ढाहि देहिं । इम करिय भूमि मैवात लेहिं ॥
कित्तीक महिप मुंगल नरेस।बल बंधि सधि बिन करि अभेस ॥छं०१३॥
पज्जून बोलि कूरंभ राव । पुंडीर चंद जनु अग्नि बाव ।
दाहिम नरिंद कैमास संग । चामंड राव अरि दल अभंग ॥ छं० १४ ॥
गुज्जर कनंक बड़ राम देव । गहिलौत राव गोइंद सेव ॥
इतने सुभट्ट मजि जूह धार । बजि पच सबद बाजे करार ॥
॥ छं० १५ ॥ रू० ४ ॥

ज्योतिषियों से मुहूर्त दिखाकर पुष्य नक्षत्र में चढ़ाई के लिये निकलना ।

दूहा बोलिय जोतिग गनिक दुज । घरी मुहूरत मद्ध ॥
तेरसि पुष्य रु भृगु दसा । चढि चल्ले निसि अद्ध ॥

घर की रक्षा के लिये पृथ्वीराज को घर पर छोड़ा ।

दूहा रतनजु इह विधि ग्रेह भय । मुनि सोमेस भुआल ।
सिसु रष्षि रु संन्हो चढ्यो । मुगल दिसा बिसाल ॥
॥ छं० १७ ॥ रू० ६ ॥

यात्रा के समय अच्छे शगुन मिले ।

दूहा प्रथम प्रयानह सदरी । मिली अक त्रिय बाल ॥
पीतांमर अंबर धरैं । दीप जोति रचि थाल ॥
॥ छं० १८ । रू० ७ ॥

दूहा कलस कामीनी उक्क सिर । प्रात होत नृप जिग्ग ॥
मच्छ कंध कावार करि । पर धनि ब्राह्मन अग्ग ॥
॥ छं० १९ ॥ रू० ८ ॥

दूहा - अन्य सगुन सुभ पिष्षि सत्र । गुज गहर नीसान ।
तमहर कर उज्जल अवनि । प्रगटे पुब्ब दिसान ॥
॥ छं० २० ॥ रू० ९ ॥

उजारि । ग्राम । नयर १२ ॥ पनि । करिअ । करिवु । मवात । किनक । सुभूमि ॥ १३ ॥ पजून जनु । चावंडराइ । जर । रामदेव । गोयद । भट ॥ १५ ॥

५ पाठान्तर बोल्लिय । धरी । पुष्कह । भृगु दशा । चले । निशि ॥

६ पाठान्तर - रति यु विधि इह ग्रेह भय । रंध । ससुह । दिशा विशाल ॥

७ पाठान्तर -पयानह । प्रयानह । त्रियें । पीतंमर ॥

८ पाठान्तर —एक शिर । पिषि । मझ । बामम ॥

९ पाठान्तर -सुगुन सत्र । निसान ! उजल । अगटी । दिसान ॥

पृथ्वीराज को राज्य में छोड़कर सोमेश्वर का मेवात पर चढ़ाई करना और उसकी सूचना पत्र द्वारा मुद्गलराय को दे कहना कि लड़ो वा दंड दे अधीन हो।

छंद भुजंगी चढ्यौ चंपि सोमेस मैवात थानं।
रष्यौ राज प्रिथराज ग्रहं निधानं॥
फटी फौज बैरीन की काल दिष्षी।
नवै कग्गदं ग्रेह राजं विसष्षी॥ छं० २१॥

वरं बीर धारं महा बैर पुव्वं। मगै राज सोमेस सौं जुद्ध अव्वं॥
महा तेज जाजुल्य भारी सुपग्गं। करै बैर मारथ्थ पारथ्थ जग्गं॥ छं० २२॥
इसौ सूर सोमेस दीपौ मिल्लानं। दियं कग्गदं मुग्गल राजथानं॥
करौ सेव मेव किसो अप्पि दंडं। नजो आज पच्छै परां षड्डि छंडं॥
॥ छं० २३॥ रू० १०॥

मुद्गलराय का पत्रोत्तर देकर सोमेश्वर और पृथ्वीराज दोनों से लड़ाई मांगना।

साटक स्वस्ति श्री सउमेस राजन वरं। प्रिथराज राज वरं॥
तौ पत्तं सुनि श्रव्न कग्गद वरं। षल्यज आकूनयं॥
जाजा भंजन सेन साहस रने। प्रात प्रतं जुद्धयं॥
नां किज्जै तिन ठाम षत्रिय वरं। छिम्या किमा कामनं॥
॥ छं० २४॥ रू० ११॥

सोमेश्वर का अपने लड़के के बध के विषय में संशय करना।

दूहा मिसु संसौ मन्हौ फिरयौ। उभय काम बध बीर॥
जो मुक्कै त्रिय अधम कृत। तौ दल मद्धि सरीर॥
॥ छं० २५॥ रू० १२॥

और पृथ्वीराज के पास मुद्गलराय के पत्र का संदेसा भेजना और उसका रोस में आकर पिता के पास रण में आ मिलना।

कवित्त छल भग्गा तिय पुच्छ। तात मुक्यौ संदेसं॥
अरिन सयन ससुहौ। जुद्ध मंगन अंदेसं॥

---

१० पाठान्तर सवात। प्रिथिरात। प्रिथराज। गेह। निधानं दीषी। तवे। विसषी॥ २१॥ मगे। युद्ध। अंव्वं। भारी सुजाजुल्य षगं। सारथ पारथ ॥ २२॥ इसो। मेल्लानं। दीयो। पछै। छडि॥ २३॥

११ पाठान्तर - स्वस्तश्री। सोमेस। प्रथीराज। प्रथिराज। तो। श्रवन। षल्यंच। पलयंज। प्रात। प्रातं। ना। किजै। ठांम। षित्रिय। छिमया॥

१२ पाठान्तर- दोहरा। संह्यनो। पन्यो। उभै। मुकै॥

बाल कठिन कर ग्रह्यौ। धंम रष्पन पित कागर ॥
जु कछु अग्ग संभवै। सोइ किज्जै सुमंत नर ॥
चढि बाल वियोगन कंत अप। सो निस रष्षौ राज सिमु ॥
सामंत्र दोह भय प्रात बर। चढि चल्ल्यौ संग्राम किमु ॥
॥ छं० २६ ॥ रू० १३ ॥

कवित्त सुन्यौ राज प्रथीराज। तात मुक्यौ संदेसं ॥
भयौ रोस जाजुल्य। तुल्य पावक्क सुभेसं ॥
कवन बत्त इह तत्त। मन मंड्यौ अरि ग्रेहं ॥
महिम जुद्ध विन मुद्ध। करे नह सेव गनेहं ॥
बुल्लाइ अप्प भर अप्प सँग। नदि चल्यौ निमि अथ्थ मह ॥
पत्तौ मुजाइ तिन ठाम तब। मुष्ण सयन सोमेस मह ॥
॥ छं० २७ ॥ रू० १४ ॥

पृथ्वीराज का पिता के पास पहुंच कर सब सेना को सोते हुए पाना और सोमेस का उससे न बोलना।

गाहा - पत्तौ पहु ढिग तातं। दिष्यौ सोनथ्थ सब्ब सेनाय ॥
न बुल्यौ सोमेसं। प्रथिराज मिष्टरं बैनं ॥
॥ छं० २८ ॥ रू० १५ ॥

उसका पिता को निद्रा में और शत्रु की सेना को देखभाल कर उत्तापित होना।

अरिल्ल महा तेज तन जग्गिय वीर। तात दिष्षि निद्रा घन धीर ॥
पहिल्लोइ अरि सेन संपन्निय। ज्यों अग्गि घन वीज पिवन्निय ॥
॥ छं० २९। रू० १६ ॥

और उसका शत्रु की सेना पर झपटना।

दूहा सयन छंडि पति सयन सो झपट्यौ तन उन मान ॥
लीनर तीनर देषि कै। झपट्यो जानि सिचान ॥
॥ छं० ३० ॥ रू० १७ ॥

---

१३ पाठान्तर भगा। पुछ। पुछि। मुक्यौ। संदेस। अग्गि। सेन। अंदेस। रषन। पु। आय। निशि। रष्यौ। राजे। सामंत। राज बर। चढे। चल्यौ। संग्राम।

१४ पाठान्तर सुन्यो। पावक। करे। बुलाय। अप। अप्प सग। चल्यौ। निशि। अथमह। पत्तो। ठाम मुष। सेन। सोमस जहां ॥

१५ पाठान्तर सो सब्ब सच्छ सेनाय। नथ। सब। नह। बुल्यौ पृथीराजं ॥

१६ पाठान्तर वीर। दिषि। निद्रा घट धीर। पहिलो। अरि संपन्निय संपन्निय। पिवन्निय ॥

१७ पाठान्तर सेन छंडि पति सेन सो। उनमान। लीनर। जानि।

पृथ्वीराज और मुद्गलराय का युद्ध।

कवित्त जनु कि सिंघ बन गज्जि। झपटि करि करनि जुथ्थ पर ॥
जनु कि अजनिय जान। पान दनु दिप्पि हथ्थवर ॥
जनु कि भीम भीमडा। दन दतीय उछारन ॥
जनु कि गरुड गल्ल गज्जि। बज्जि पनग बहु पारन ॥
तिम सूर झपटि मोमेम सुअ। जनु अकास तारक तुटिय ॥
जम जोर रोर अरि उड्डवन। मार मार मत्तुन जुटिय ॥
॥ छं० ३१ ॥ रू० १८ ॥

कवित्त उन मुगल महि इद। इद देवन जनु पारस ॥
हर बल कर बल कोर। गोल मडिय भर भारस ॥
गहिर गुग नीसान। जानु बद्दल गुर गज्जिय ॥
बरन बरन वैरष्य। इद्र धनुपह सम रज्जिय ॥
हय नारि धारि आतम अनत। मोर गोर अमर उटिय ॥
जानै कि विरनि वारिधि लहरि। महि मजाद बूटन छुटिय ॥
॥ छं० ३२ ॥ रू० १९ ॥

ऐसे पृथ्वीराज के अन्य सूर मुग्दल के योद्धाओं से लड़े॥

गाहा इम रजे रन रग ॥ सूर नर जग अभितार ॥
जनु ★ विरचे महिप महिंद्र ॥ वज्ज तान पाव अगार ॥
॥ छं० ३३ ॥ रू० २० ॥

कन्ह का मेवातियो से युद्ध॥

कवित्त उनमग दर छोर। छोर रत्तन मेवातिय ॥
सीस नाट मगल्ल नरिद ★। कहर कुप्यौ घन घातिय ॥
इन सु कन्ह नरनाह ॥ दाह दावानल जल्लिय ॥
हक्क बक्क धरि धक्क। जानि महना रँभ झल्लिय ॥
चव दन मन उरझे जनुकि। मेह बुद सर कर छुटिय ॥
सरजाल हाल अनहद अवनि। तिमिर पसर रविकर मिटिय ॥
। छं० ३४ ॥ रू० २१ ॥

---

१८ पाठान्तर कर। कोरन। जुथ। अ [illegible]। दिपि। हथ भर। गजि। बजि। तिम नु सूर मोमम सुभ सू [illegible]। उडबन ॥

१९ पाठान्तर मही। गहर। नीपान। तानु। रजिय। जानै। सूरद ॥

२० पाठान्तर सूर। नूर। अग। ★ अधिक पाठ है। महिंद्र।

२१ पाठान्तर - छोर। छोर। मेवातीय। नाट मगल ★ अधिक पाठ है। घातीय। जलिय। जानि। रभ। झल्लिय ॥

कैमास का पठान बाजीदखां से युद्ध ॥

कवित्त वाम अंग पठान । विरचि बाजीद † सुपनिय ॥
उन उप्पर कैमास । हुकम प्रथीराज सुदिनिय ॥
सीम नाइ बल बाइ । लाइ लग्गिय घन रोसन ॥
तीर तुबक तरवारि । तच्छि निकरै उर ओरन ॥
अनहद्द नद्द नीसान धुनि । लगी लाग मारू बजन ॥
रन तूर तूर तवलन त्रहक । गहक हक्क रज्जे रजन ॥
॥ छं० ३५ ॥ रू० २२ ॥

कुरंभ से राम गूजर का युद्ध ॥

कवित्त दष्षिन दिसि कूरंभ । नाम नरेन निवदिय ॥
तिन पर गुज्जर राम । करन दग दुवम वदिय ॥
ममर भ्रमर परे सूर । चपि जल जानि उछारिय ॥
लोह लहरि बुडि जाँहि । सुररि मरदान मुछारिय ॥
अन भग अंग तन नन तकहिं । हकहिं बकहिं बज्जहिं बलिय ॥
अनभूत भूत भिरै भून भुव । ममर थ्रोन मलिना चलिय ॥

इतने में पृथ्वीराज का रण के बीच अचानक जा पहुँचना और घोर युद्ध का होना ॥

छंद भुजगी ॥ जय जाय पत्तो प्रथीराज जुद्ध । करो मव्व सेना विरुद्ध विरुद्ध॥
बजे ताल कालं महा मल्ल बीर । दुहु बाह सेना विरु ड सुधीर ॥छं०॥३७॥
गही बाग गड्ढी कढे लोह तन्ने । मनो कारनं काम दुर्गा विरन्ने ॥
स्वय सूर सूरं मही में पचारे । लगै लोह अगं बकै मार मारे ॥छं०॥३८॥
उडै छिछ स्रगं मनों अगि ज्वाला । हलै जानि पत्त बसंत तमाला ॥
झिनं केति षग्गं हिनक्केनि ताजी।★भिले भूप भूपमहावीर गाजी। छं०॥३९॥

---

२२ पाठान्तर— वाम । पठान । सुयं । नीय । प्रथीराज दनिय । नाइ । बाइ । लाइं । तबक । तरवार । निकसै । उरन । नीसान । हक । रजे ।

† बाजीदखा नामक पठान मुगदलराय का एक बडा लडाका सेनापति अर्थात् जनरल था और प देशी सिपाही उसके विभाग मे थे । यह वृत्त इस महाकाव्य मे जो मुसल्मानी भाषा के शब्द आते हैं उनके विषय की शका मिटाने के लिये बड़ा उपयोगी है ॥

२३ पाठान्तर— दषिन । दिशि । नाम । नारि ननिवद्दिय । गुजर । रांम । दूबल । वदिय । परै । परे । जानि । लोहरि । जाहि । मरदान । मुछारीय । तकहि । बकहि । हकहि । भिरैं । भुय । मलिय ॥

छिनक्कैति षग्गं तुटैं सीस लल्लैं । उठै छिछ इच्छं मनो दाह पल्लै ॥
लगें गुर्जं सीमं इसे टोर टट्टैं । मनो दंग दाहं लगं बंग फुट्टैं ॥छं०॥४०॥
इसे मंत्र छत्री लगे लाग षग्गे । प्रलै काल ज्याल मनौं वीर जग्गे ॥
॥ छं० ४१ ॥ रू० २४ ॥

मुग्दलराय की फौज का तितर बितर होना और उसका पकड़ा जाना ।

कवित्त कहुँ तिमत्त धर धुकत । लुकत कहुँ सुभट थान छल ।
ठुकत काल कँहु पत्र कुकत कहुँ सेन पाइ जल ॥
रुरत समर भट भीर । धुकत धर मद्द छक्क जनु ॥
मुकत कठ श्रम समर । ढकत कातर फौजन तनु ॥
इम★ सोमेस राइ चहुवान सुअ । अरि समद जल बट्ठयौ ॥
चढ्ढिय जिहाज जम जड्डि पल । मगल्ल महि गहि कढ्ढयौ ॥
॥ छं० ४२ ॥ रू० २५ ॥

कवि का सोमेश्वर की सेना और घोड़े हाथी आदि की यज्ञादि अनेक उपमाओं के साथ प्रशंसा करना ॥

दूहा चमकत सार सनाह पर हय गय नरभर लग्गि ॥
मनो वृच्छ परि झिंगिनिय. करत केलि निसि जग्गि ॥
॥ छं० ४२ ॥ रू० २६ ॥

कवित्त जग्गि सूर सोमेस । सेन सज्यो हयगय नर ॥
राका निसि जनु उदधि । चढै हल्लोर चंद पर ॥
सुन्यो श्रवन इह वैन । लरहि प्रथिराज पल्लनदल ॥
पुच्छ चांपि जनु सिंह । दिष्षि प्रजल्यो नयन झल ॥

---

२४ पाठान्तर—दुहुं । बाइ ॥ गद्दी । मनों । काम । दुगा । महो मे । महोमै । पधारै । लगै । बकैं । मारै ॥ ३८ ॥ छिहि । श्रगं । स्रगं । मनो । ज्वाल माल । सबंनन माला । छनकैति । छिनकेति । भिलै । ★ सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥ ३९ ॥ छिन्कैति । तुटै । सीस । लल्ले । उठै । इछैं । मनो । पल्ले । लगै । लगें । सीशं । टुटैं । मनो । लगैं । फुट्टैं ॥ ४० ॥ मंत्र । गित्री । मानों । वीर ॥

२५ पाठान्तर कहुं तमंत । तमत्त । कहुं । कहु । थान । ढुकत । कहुं । कहु । सैंन । मद । ढुकत । तन । ★ अधिक पाठ है । राय । चहुवांन । चढिय । मूंगल्ल ॥

२६ पाठान्तर—निर । झिगनी । निशि ॥

दइ बंब दुतिय जनु गगन रव । कुटि अंदुन गज गुरि चलिय ॥
दीसंत मत्त छक्कें नयन । मनौं प्रबत पंषह हलिय ॥
॥ छं० ४१ ॥ रू० २७ ॥

दूहा —ठनक घंट घुघ्घर धमक, धमक धरनि बर पाइ ॥
झमकत सुंड लपेट भट, भरत देत गिर राइ ॥
॥ छं० ४५ ॥ रू० २८ ॥

दूहा —पग लंगर जंजीर जरि, कज्जल गिरवर अंग ॥
दिघ्घदंत बग घन बरन । झरत मदंग छदंग ॥
॥ छं० ४६ ॥ रू० २९ ॥

दूहा पब्बय कै पावस जलद, दल दाहन उठि कोर ॥
दिष्षावत दल बद्दलन, भर हर परत अमोर ॥
॥ छं० ४७ ॥ रू ३० ॥

दूहा दंति पंति कज्जल बरन, दिष्षि दलंमल ढाल ॥
करहरंत वैरप लषी, दल मोमेम भुआल ॥
॥ छं० ४८ ॥ रू० ३१ ॥

दूहा —उठी कोर हथ गय प्रबल दिठु दुअन लुटि धीर ॥
दिषि धनु धर हयनारि धरि, भरकि भग्गहरी भीर ॥
॥ छं० ४९ ॥ रू० ३२ ॥

छंद विराज★ कियं चित्त पंगे । घटं घट्ट भंगे ॥
उनंगे मुषग्गे । मनो बीर जग्गे ॥ छं० ५० ॥
रसं वीर लग्गे । बढ़ै अग्ग अग्गे ॥
डिगें नाहि डिग्गे । महा मोर भग्गें ॥ छं ५१ ॥

---

२७ पाठान्तर —रन नर्ढ । मून्यो । बैन । पृथीराज । पुछ । दिषि । प्रज्जरे । दई । दइय । अंद्दन । छक्कै । छकै । मनो । पंषकि ॥

२८ पाठान्तर —ढनक । घुघर । धमकि । पाय । पाय । राय ॥

२९ पाठान्तर —कजल । दिग्घ । दिघ । मढग ॥

३० पाठान्तर —दिषावन । दिषावै । दल बल दलन ॥

३१ पाठान्तर —दंन पंत । दिषि । ठल मल । वैरपलको ॥

३२ पाठान्तर —हय दल । देषि धनुष हय नारि धरि फरकि ॥

★ इसी समय के रूपक ३२ की टिप्पणी के साथ इस रूपक को भी ध्यान में लेना चाहिए ॥

परैंके अछग्गे । न बैरीन मग्गे ॥
तजै नाम पग्गे ॥

॥ छं० ५२ ॥ रू० ३३ ॥

गाहा — जग्गेयं जुध वानं । कुभे यंनं ककल्ल काय ॥
दंतं मुष्ष करेय । वाहंनं वीर सुभटायं ॥

॥ छं० ५३ ॥ रू० ३४ ॥

रण में मरे और घायल कैसे पड़े दीखते थे और कौन कौन योद्धा किस किस से घायल हुए और मारे गए।

कवित्त हय हिंसहि गज चिकरि । भगर मम दिषि कुल्लाहल ॥
बलि पंषिनि बेताल । नदि नदिय झोलाहल ॥
गिद्धि सिद्धि किलकंत । ईस मुंडावलि संधय ॥
हकि कमंध पर टुट्टि । चढी देवी दल मंधय ॥
उपमान तास कवि चंद कहि । सुभन मनाह सुकालनिय ॥
जानि कि कृष्ण वृन्दावनह । रास रमैं निगि ग्वालिनिय ॥

॥ छं० ५४ ॥ रू० ३५ ॥

कवित्त ★ जहँ बाजीद पठान । सघन पुरसान पान नहँ ।
हय कटि टुत नतीर । उभय कम्मान नानि गह ॥
उच टहर कधान । छोट गिरि दान लव भुअ ॥
रकत क्रन सुष चप्पु । कर अनमक अवनि धुर ॥
भरि बाह कान निलि जोर मुठि । दिगि पवामनि ओट करि ॥
ओडन समेन सनाह मम । नर सुविधि फुट्टिग निकरि ॥

॥ छं० ५५ ॥ रू० ३६ ॥

---

३३ पाठान्तर इतर पुस्तकों में इस छंद का नाम रसावल वा रसावला है परन्तु हमारी सं० १६४७ की पुस्तक में शुद्ध नाम विराज है इस हमने प्रयोग में लिखा है क्योंकि यहां पर उसका ही लक्षण मिलता है अर्थात् वह दो गुरु का होता है । घट । मनो । बढ़े । अग्गे । अग । अग डिगे । नाहि । मोर बग्गे । फरेंके अछगं । मगे । तजै । नाम ॥

३४ पाठान्तर — कुभेयन ककल काए । दंतं मुष सुभटाइं ॥

३५ पाठान्तर — हिंसहि । हिंसहि । दिषि । पषिन । गिद्ध । सिद्ध । मधिय । कमंध । हार । सिद्धि उपमान । उपमान । निकि ग्वलिनीय ॥

३६ पाठान्तर — जहा । बाजीद पठान । तह । तहा । टुअ । चपु । भिरि । मिलि छोह । दिषि ।

कवित्त— धुकत धरनि षावास । कोपि कयमास काल कर ।।
वज्र घात बलिबंड । हनिग तरवारि टोप पर ।।
टोप टुट्टि सिर फुट्टि । सम सुसंनाह चीर हुअ ।।
बष्षर पप्पर तुट्टि । तुट्टि हय षंड परिय जुअ ।।
जय जया सद्द आयास हुअ । सुमन सघन उप्पर झरिग ।।
देष्षत वहर करिंवार वर । सेन मपन त्रिदुरी टरिग ।।

।। छ ५६ ।। रू० ३ ।।

जहँत रेन धर धरन । तहँन बड गुज्जर गामह ।।
तहँ मुगल रपन समर । मग षतिलय मिर सामह ।।
तुरमवीध मिर टोप । फुट्टि सुप्परि रत बुढ्ढिय ।।
तहा उठिग इक बीर । जानि जमरांन मुट्ठिय ।।
तरवारि तेज नारेन हनि । धर असध तुट्टिग धरह ।।
अनभूत दृष्ट अवसान वद्दि । करहि दव ग्रदन वरह ।।

।। छ० ५७ ।। रू० ३८ ।।

कवित्त जहाँ मगद मरदान । कन्ह तहाँ जानि नाग भुअ ।।
मिल तक्कि तरवार । झारि उम्भारि मीस दुअ ।।
मेल्यि मागद सीम । टोप कट्टिय मिर धारिय ।।
नर नाहै कटि कट्टि । अद्ध अद्ध करि डारिय ।।
धर गिरत मत मारु मरद । हय षधा अंसिवर जरिय ।
जै जया सद्द सुरपुर भयो । इम सुकन्ह है धर परिय ।।

।। छ० ५८ । रू० ३९ ।।

कवित्त- कन्ह कटत है धरनि । करनि जित नित मार मचि ।
वहै दुहथ तरवारि । छछ कवि लप्पटाइ तचि ।।
उडतहि हथ पग न्यार । मीम हक्करि धर धावहि ।।
हंस हम के मिल्हि । माल अच्छरि के नावहि ।।

---

३७ पाठान्तर- के माग । बलिचड । त्रुट्टि । बार । पषर । त्रुट्टि । त्रुट्टि है षंड परिय जुअ । जै ज्या । हुय । दिप्पन । त्रिदुरि डरिग ।

३८ पाठान्तर- जहान । जहन । धरन । तहान । तहन । गुजर । गाम । तहां । मुगल । रापन । घत्तिय । मामह विाध । मेर । बुढ्ढिय । उठग । इक । जानि । यमरान । जमरान । तुट्टिग । अवसान ।।

३९ पाठान्तर- जहा । मरदान । तहां नर नाह कंन्हक । कमकि बाहि धग झट्ट । झारि उभारि सीम दुअ । मेल्हिय । मंगद । सीस । धारीय । नर नाहै असि कट्टि । यद्ध अद्ध करि डारीय । जरिय ।।

अदभूत भयानक भगर मम । लगर लाग लग्गिय रनह ॥
हंकार हक्क कल कूह मवि । जयं सबद मच्चिय घनह ॥
॥ छं० ५९ ॥ रू० ४० ॥

जयजयकार का उपमाओं के सहित वर्णन।

कवित्त मुषनि बह्हि हंकारि । तलब टंकार लाग लगि ।
बजि भेरी भंकार । धार झंकार षाग षगि ॥
छुट्टि सीर मंकार । लुट्टि भंडार धीर मुति ॥
धुकहि धज्ज झंडार । झुकहि संडार मार धुति ॥
अचरिज्ज अवनि अंमर चरनि । बरनि कवि कहा सब सकय ॥
समरंग दुदल पिष्षिय सुभट । जकय केय कुक्कुय हकय ॥
॥ छं० ६० ॥ रू० ४१ ॥

छंद तोटक★-भमरावलि छंदय चद कलं । पढि पिंगल अच्छिर जे निमलं ॥
बजई झनकार सुअंस्सि घनं । यह तुंमर रिझ्झिय नाद धुनं ॥छं० ६१॥
झननं कहि पग्ग कला दुसरी । प्रगटे जनु बिज्ज षहं पसरी ॥
उपमा तिमरी असि बैठि चयं । फिर नागनि नाग मनो पहयं ॥छं०६२॥
जु करै दल दोइय नीर मरं । वहहै जनु टिड्डिय सेन परं ॥
दुतिई उपमा कवि यों मनयी । किय भ्रगन चंद निमा जगयी ॥छं०६३॥
जु तह तह बचक बज्जि घन । कि नचै उपमा अग ईस जनं ॥
जु फिरै गज गुजन रोग चहं । पहु बद्दल जानि किवाई वहं ॥छं० ६४॥
किमु गोपिय झुड्य सूर रन । कि सुभै सुबमंन पजरि जनं ॥
जुबरै बरनी धन अच्छ बर । हुलरै हिय नागि विपिट्ठ कर ॥
॥ छं० ६५ ॥ रू० ४५ ॥

---

४० पाठान्तर मार मनि । उट्टहि लक्कहि । भढ़रि । भयानंक । लग्गिय । जय ॥

४१ पाठान्तर बढ्डि । धंत ॥

४२ पाठान्तर ★ इस छंद का नाम इतर पुस्तकों में भमरावली लिखा है सो अशुद्ध है किन्तु वह तोटक वा त्रोटक नामक है। इनमें इतना ही अंतर है कि तोटक चार लघु का होता है और भमरावली पांच का । अछिर । बजी । रिझिय ॥ ६१ ॥ फिरै । नागनि । मनो ॥ ६२ ॥ नारन मार । वहै । अपार । दुती उपमा कवि यों मन लग्गि । कि भ्रंगन चंद निमा महि जग्गि ॥ ६३ ॥ तहं तहं चढंत । जानि । चढंत । ॥ ६४ ॥ कि रोपिय । अछ ॥ ६५ ॥ उपर । मनो ॥ ६६ ॥ मनों । हय । गुरजन ॥ ६७ ॥ मुद्दु । मिलंत । रंगिनि । दिष्षिय । उद्ध । पिस्यौ । मरोर । बठी । बरिंदह । कोर ॥ ६८ ॥

जु बहै सिर उप्पर राम सरं। सु मनौं अरिविंदन भौंर भरं ॥
गज सीस सिरीन जु छिछ परी। कच अंगन इंद वधू विथुरी ॥
॥ छं० ६६ ॥ रू० ४६।

छुटि चक्र लगे गज कुंभ जिसे। मनु बद्दल पै सत चंद जिसे ॥
दुअ हथ्थ गुरू जन मीस जरी। दधि भाजन ग्वालिन कोरि हरी ॥
॥ छं० ६७ ॥ रू० ४७।

जु कियौ दल दोउन दुंद जुधं। मिलअंत मुइंषिन दिप्पि उधं ॥
षिसयौ दल मुंगल मार मरं। बढिई प्रथिराज नरिंद कुरं ॥
॥ छं० ६८ ॥ रू० ४२ ॥

पृथ्वीराज की विजय।

दूहा- भई जीत मोमेस सुअ, लियौ मुगल गज मेलि।
सोधि षेत सब दिघ्घ लहु, वीर बरनिय केलि ॥
॥ छं० ६९ ॥ रू० ४३ ॥

रन सुद्धिय क्रुद्धिय तजिय, घाइल लीन उठाइ ॥
भये सूभट जे अंत तन, दाघ दिघ्घ तन ताइ ॥
॥ छं० ७० ॥ रू० ४४ ॥

हुअ डेरा नौबति बिहसि, पच सबद दरबार ॥
जिन भट लग्गे सम्त्र तन, तिन तन कीनिय सार ॥
॥ छं० ७१ ॥ रू० ४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके मेवाती मुगल कथा नाम अष्ठम प्रस्तावः ॥ ८ ॥



४३ पाठान्तर—जीति। दिघ ॥
४४ पाठान्तर—दाघ दिघ ॥
४५ पाठान्तर—निहसि। कीनीय ॥

अथ हुसेन कथा लिख्यते ।

(नवां समय)

संभरिनरेश (पृथ्वीराज) और गज़नी के शाह (शाहबुद्दीन) में कैसे बैर हुआ इसका वर्णन ।

दूहा   संभरि वै चहुआंन कै, अरु गज्जन वै साह ॥
      कहौ आदि किम वैर हुअ, अति उतकंठ कथाह ॥
                                    ॥ छं० १ ॥ रू० १ ॥★

शहाबुद्दीन के भाई मीर हुसेन के गुणों और उसकी वीरता की प्रशंसा ।

कवित्त   बंधव माहि सहाव । मीर हुस्सेन खान धर ॥
      निज्ज खान सु प्रमान । खान नीसान बधं सुर ॥
      गान तान सुज्जान । बाहु अज्जान बान बर ॥
      भव राज परवान । उच्च जस थान जुज्झ भर ॥
      उद्दार तिन दातार अति । तेग एक ददे विसव ॥
      सकंत माहि साहाव तिन । तेज अजै जयसंत ग्रव ॥
                                    ॥ छं० २ ॥ रू० २ ॥

शहाबुद्दीन की पातुर चित्ररेषा की प्रशंसा, शहाबुद्दीन का उस पर प्रेम, मीर हुसेन का भी उस पर आसक्त होना और चित्ररेषा का भी मीर को चाहना ।

कवित्त   इथि वधु आचार । मीर उमराव जपि जस ॥
      एक पात्र साहाव । चित्ररेषा सु नाम तस ॥
      रूप रंग रति अंग । गान परमान विचष्पन ॥
      बीन जान बाजान । आनि बत्तीसह लच्छन ॥

---

१ पाठान्तर - चहुआन । गजन । साहि ॥

★ हमारे पास की सं० १६४७ वाली पुस्तक में इस प्रथम रूपक के नीचे तो इसमें लिखा दूसरा रूपक ही लिखा हुआ है, परन्तु उसके किनारे पर यह दोहा और लिखा हुआ है सो हम को क्षेपक दीखता है । दूहा ॥ आनंदिय गंधर्व तब, अहो सुनहि द्विग जेन । अति विथार कथन कथा, विवर कहो बर बेन ॥

२ पाठान्तर —साहाव । हुसेन । षान । निज । षांन । प्रमांन । षांन नीसांन बंधे । गांन । तांन । तोन । सुज्जांन । सुज्जांन । आज्जांन । बांन । परमांन । परवांन । उंच । थांन । जुझ । उदार । संकंतं । अजे ।

दस पंच बरष वाचा सुबच । सुप्रसाद साहाब अति ॥
आसिक्क तास हुस्सेन हुअ । प्रीति परसपर प्रान गति ॥
॥ छं० ३ ॥ रू० ३ ॥

शाह का यह समाचार सुनकर क्रोध करना ।

कवित्त एक सुदिन सुविहांन । साह हुस्सेन सुबुल्लिग ॥
वे काफर आतस्स उतंग । दह दिसि नह डुल्लिग ॥
पैसंगी पासंग । लष्ष लष्षां नलवाही ॥
सांई सों संग्राम । हक्कि हैवर गुरदाही ॥
गर्दन गुराब महि महि मषां । षाषवास अष्षिय घरह ॥
अन हल्ल नाल लब्भय रवन । करौ तुच्छ तुझ्झी बरह ॥
॥ छं० ४ ॥ रू० ४ ॥

हुसैन का शाह की बात न मानना और शाह का आज्ञा देना कि या तो मेरा राज्य छोड़ दो नहीं तो मारे जाओगे ।

दूहा सुनिअ बैन साहाब तब । प्रीत न छडी बाम ॥
कोपि कह्यौ सुरतान तब । हनौ कि छडौ ग्राम ॥
॥ छं० ५ ॥ रू० ५ ॥

मीर हुसैन का देश छोड़ कर परिवार आदि के साथ नागौर की ओर आना ।

कवित्त सुनिय वत्त हुस्सेन । सेन अप्पन साधारिय ॥
छडि नयर निस्सक । सक मन साह नगारिय ॥
निसा जाम इक आदि । लई सो पात्र परम गुन ॥
तरुनि पुत्र परिवार । सज्जि सत्र साज सु अप्पन ॥
परिगह सुअप्प अग्गे करिय । पान पान बंधी मिल्लह ॥
सचरयौ नैर नागौर इह । नजिय देस निज गढ ग्रह ॥
॥ छं० ६ ॥ रू० ६ ॥

---

३ पाठान्तर दीप । वध । स नात । अनि अग । गान । परमान । विचक्षन । आन । वाआन । आनि । लछन । लक्षन । आसिक । हुसेन । प्रान ॥

४ पाठान्तर सदिन । हुसन । आतस । उतग । पासगं । लष । लषा । सांई । सो । गह् । अनहल । लब्भे । लभय । तुझीय ॥

५ पाठान्तर –सुनिग । छडिय । बाम । सुरतान । क । ग्राम ॥

६ पाठान्तर –हुसेन । छंडिय । निसक । सारीय । जाम । साहिलीय पात्र परम गुन सथि । परगह । बंधिय ॥

मीर हुसेन का पृथ्वीराज के यहां आना ।

दूहा लै परिगह हुस्सेन गय । दिमि प्रथिराज नरिंद ॥
संभरि वै संभारि कै । मनु आयो ग्रहदद ॥

॥ छ० ७ ॥ रू० ७ ॥

मीर हुसैन को आदर के साथ पृथ्वीराज का बुलाना । और मीर का आकर सलाम करना ।

कवित्त पातिसाहि तद्दिन★ नरिंद । साहि पीरोज प्रसन्नो ॥
घर घर माहि घग्न । छिति नीसान दिवन्नो ॥
पर पठान उचीगु । मान अगिवान अगन्नो ॥
तिन मे रष्यौ साहि । आन गज्जन घर थन्नो ॥
लभ्भै मुमीर जमी जहर । दुनिया दिल लगि दुअन था ।
हुस्सेन मीर सल्लाम करि । गौ चहुआनह पास थां ॥

॥ छ० ८ ॥ रू० ८ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलना और मीर हुसैन का सुन्दरदास को पृथ्वीराज के पास भेजना ।

कवित्त पारधि पहु प्रथिराज । रमैं पट्ट पुर पासह ॥
चहिल्ल तीग निवक्क । गणिय रमम धर रासह ॥
सो कृग्ग फंदेन । तोरि बहु बधि सिनानिय ॥
जाम एक दिन आदि । मध्य पे है मृगयानिय ॥
आयो बसाहि हुस्सेन नर । सुन्यो राज मृगया समर ।
बुल्लाय दाम सदर तिरिय । पठ्ठयो प्रति चहुआन नर ।

॥ छ० ९ ॥ रू० ९ ॥

सुन्दर छाया का स्थान देखकर मीर का डेरा डालना ।

दूहा उत्तम ठाम सु छाह जल, करि मुकाम बलवीर ॥
पुलि डेरा विधि विधि बरन, तहा बयट्ठो मीर ॥

॥ छ० १० ॥ रू० १० ॥

---

७ पाठान्तर हुसन । प्रथीराज । मना ॥

८ पाठान्तर -पातसाहि ★ अधिक पाठ है । नीसान । पठान । गुमान । मान । अगानो । अगानो । मैं । रष्षे । थानो । लभै । जु । दुनी । हुसेन सल्लांम ॥

९ पाठान्तर --पारिधिरा । पृथीराज । पट्टपुर । तीम । फंदैर । सिनानीय । थांम मधि हुसेन । तठ्ठा । बुलाय । सुंदरि । तिरीय । चहुआन । रय ॥

१० पाठान्तर -उत्तिम । ठाम । मुकांम । बर बीर । बयठो ॥

हरम (स्त्रियों) का डेरा पीछे की ओर डाला।

दूहा- डेरा हरम सुपिट्ठ रषि, चिहु पष्षां बर मीर ॥
पासबांन कुल सील सम, पास रष्षि बर नीर ॥
॥ छं० ११ ॥ रू० ११ ॥

सुन्दर दास का पृथ्वीराज के पास जाना, पृथ्वीराज का मीर का कुशल-समाचार पूछना और उसका सब हाल कहना।

दूहा सुंदर दास सुपास गय, जहां राज प्रथिराज ॥
मिलिय बिबिधि पुच्छे कुसल, कहौ मीर सब साज ॥
॥ छं० १२ ॥ रू० १२ ॥

मंत्री, कैमास, चंद, पुंडीर आदि को बुलाकर पृथ्वीराज का पूछना कि क्या करें क्योंकि दोनों तरह विपत्ति है एक शाह का कोप, दूसरे, शरण आए को न रखना धर्मविरुद्ध है॥

दूहा बोलि मंत्रि कैमास बर बोलि चंद पुंडीर ॥
राव पूजन प्रसंग नर, गोयंद रा गुन नीर ॥
॥ छं० १३ ॥ रू० १३ ॥

दूहा मेछ मुष देषे न नृपति बिपति परी दुहु क्रम ॥
इक मरना इक रष्षन, इक धर रष्षन ध्रम ॥
॥ छं० १४ ॥ रू० १४ ॥

चन्द का सलाह देना कि जैसे शरणागत होने पर विष्णु भगवान ने मत्स्य रूप धर कर पृथ्वी को अपनी सींग पर रक्खा था वैसे ही आप भी कीजिए॥

गाथा मनसा धारि बिरंचं। दक्षिन पग अंगुरी नषयं ॥
संभू मंन नरिंदं। मन जुगं आदि कीन पैदासं ॥
॥ छं० १५ ॥ रू० १५ ॥★

---

११ पाठान्तर - पिठि। चिहुं। पषा। पासवान। शील। रषि ॥
१२ पाठान्तर सु पास। राजन। पूछै। पुछी ॥
१३ पाठान्तर— मत्र। पुंडीर। रा वर्जून। गोइंद ॥
१४ पाठान्तर— यक। रषन ॥
१५ पाठान्तर- ★ यह रूपक और इसके आगेवाले १६ और १७ रूपक संवत् १६४७ की प्राचीन पुस्तक मे नही हैं किन्तु इतर आधुनिक पुस्तकों मे हैं ॥

कवित्त - संभू मन बरदान। लियौ तप जोर ब्रह्म पहि ॥
सरन रष्षि वसुमती। होत कलपंत काल महि ॥
नारद धरन बताइ। मच्छ रूपं जगदीसं ॥
दस हजार जोजन। शृग रचि ऊरध मीसं ॥
करि मत्त नाव तिहि पर धरे। अनकपित जिम गैन धुअ ॥
ऐसेक चंद कहि पीथ सम। गरुअ नंन नृप अग्ग हुअ ॥
॥ छं० १६ ॥ रू० १६ ॥ ★

जैसे शिवजी गले में विष धारण किए हैं वैसे ही मीर को आप भी रखिए यह चन्द ने कहा ॥

दूहा संकर गर विष कद जिम ॥ बडवा अगनि समद ॥
तै रष्षहु चहुआन तिम। पा हुसेन कहि चद ॥छं०१७॥ रू०१७॥★

सुन्दरदास से पूछना कि अब सब स्त्रियां तो सुख से हैं और शाह से झगड़ा होने की बात क्या सच है?

दूहा मिल्यि सु सदर दास तह। पुच्छिय विधि विधिवत्त ॥
कहौ सुषी त्रिय सब विसर। विग्रम माहि सो मत्त ॥छं०१८॥रू०१८॥

सुन्दरदास का कहना कि हूर की ऐसी एक पातुर शहाबुद्दीन के पास थी उसको लेकर हुसेन यहां चौहान की शरण में आया है ॥

दूहा पात्र एक साहाब संग। हूर नूर गुन गान ॥
लै आयौ हुस्सेन इन। सरन तकि चहुआन ॥
॥ छं० १९ । रू० १९ ॥

चन्द का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना कि जैसे मोरध्वज के यहां अर्जुन ब्राह्मण बन कर शरण गया, भगवान ने सिंह बन कर मांस मांगा, शरणगता द्रौपदी का चीर बढ़ाया, वैसे ही तुमने शरणागत को रखकर क्षत्रिय धर्म की रक्षा की, तुम्हारे माता पिता धन्य हैं ॥

कवित्त मोरद्धज कै सरन। गयो दुज होइ सु अर्जुन ॥
सिंह रूप धरि कन्ह। मस मग्यो करि गर्जन ॥
दैन चीर अरधंग। नृपति सिर करवत धार्यो ॥
देषि महा सतवंत। प्रगट गोविंद उचार्यो ॥

---

१६ पाठान्तर - रषि। मछ। अग ॥
१७ पाठान्तर - ते। रष्षो। चहुआन ॥
१८ पाठान्तर -तहां। पुछिय। सुषि। त्रीय। विसर। सो ॥
१९ पाठान्तर- संग। गांन। हुसेन तब। तकि। चहुआन ॥

धनि धंनि मात पित धंनि तुअ । सरनागत ध्रंम तै रषिय ॥
षित्री कहंत कविचंद सो । संभरि बै तिहि सम लषिय ॥
॥ छं० २० ॥ रू० २० ॥

शाहहुसैन का पृथ्वीराज से मिलना, पृथ्वीराज का आदर देना ॥

दूहा -गयो राज सामंत सम । मिलिग साह हूसैन ॥
आदर न्रप किन्नौ अदब । विवह प्रमंनिय बैनं ॥
॥ छं० २१ ॥ रू० २१ ॥

हुसैन को दक्षिण की ओर नागौर की जागीर देना ।

दूहा लिये मथ्थ प्रथिराज पहुं । गयौ सुपुर नागोर ॥
धरमायन कायथ † धवल । दिसि दच्छिन दिय ठौर ॥
॥ छं० २२ ॥ रू० २२ ॥

पृथ्वीराज का हुसैन को घोड़े हाथी आदि देना और दोनों का परस्पर प्रेम बढ़ना ॥

दूहा भोजन भष्षे विविध वर, बहु आदर विधि कीन ।
मान महातम रष्षि रज, गज उभय हय दीन ॥
॥ छं० २३ ॥ रू० २३ ॥

दूहा धरिय डोरि हुस्सेन सिर, है बधिय हैमाल ॥
आप सु चिन्हिय अवर दिन, रज पहुवै ग्वाल ॥
॥ छं० २४ ॥ रू० २४ ॥

कवित -नरकम पत्र गिरम । तीन प्रति पगर तीन मह ॥
पुरासान कंमान । पत्र तरमान मान जह ॥

---

२० पाठान्तर -हन । त्रैत धन । ध्रम । गो ॥

★ यह म्लोक हमारे सं० १६०७ वाली प्राचीन पुस्तक मे नही है पर आधुनिक पुस्तकों मे है ॥

२१ पाठान्तर -न्रा । प्रमंनीय ॥

२२ पाठान्तर -नय । प्रथी राज । दछिन । दयन । है ।

† धर्मायन कायथ -पृथ्वीराज का दरबार मुशी था । उसका काम है कि जो जो दरबार मे आवें उनको उनकी नियत की हुई ठौर पर बैठावे । ऐसा बरताव अभी तक राजपुताने मे प्रचलित है ॥

२३ पाठान्तर -भष । मान । रषि ॥ उभै ॥

२४ पाठान्तर -धरी । हुसेन । चीन्हे । पठवै ॥

गज सु एक सिंघ लीय । सेत तन मद्द रत्ति वहू ॥
गुंजन मधुप कपोल । गज्ज भज्जै प्रेमल मद्द ॥
हय पंच माजि माकति सुनग । गंगाकी कुल उच्च जिहि ॥
अंमोल बज्र इक लाल दोय । रिझ समप्पिय गज महि ॥
॥ छं० २५ ॥ रू० २५ ॥

दूहा। राजन रप्पिय सब्ब इह, प्रनवेऊ प्रति मंत ॥
उभै परमवर गंठि परि, संचिय पेम सुमंत ॥
॥ छं० २६ ॥ रू० २६ ॥

शहाबुद्दीन का चार दूत अजमेर भेजना ॥

दूहा च्यारि दूत अजमेर पुर, थिर मुक्केनु विहान ।
आपेटक बन देपि कैं, तकि गए चहुआन ॥

पृथ्वीराज का हुसैन को कैथल, हांसी, हिसार का पर्गना देना और शिकार में साथ रखना, यह सब समाचार दूतों का शहाबुद्दीन से कहना ॥

कवित्त- आपटक चहुआन । पास हुस्सेन संपत्तो ॥
बार आइ चहुआंन । भाइ घन ताहि दिपन्नो ॥
नीति राव कुटवाल । ताम ग्रह राज सु अप्पिय ॥
★वर कैथल हांसि हिसार । राजपट्टी दै थप्पिय ॥
इह चरित देषि सब दूत तब । जाइ संपते माहि दर ॥
चरवर चरित जुग्गिनि पुरह । कहिय बत्त सें मुष्ष घर ॥
॥ छं० २८ ॥ रू० २८ ॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करना और अरब खां को पृथ्वीराज के पास भेजना कि भला चाहो तो हुसैन को निकाल दो ॥

छंद पद्धरी संभरिय बत्त साहाब दीन । उच्चरिय बैन अति कोप कीन ॥
मुक्कलौ इत चहुआंन पास । कढ्ढौ हुसैन जो जीव आस ॥छं०२९॥
बोल्यौ षांन तातार तब्ब ॥ संजाव षांन उमराव सब्ब ॥
पुच्छी सु बत्त किय इत सार । थप्पी सु बत्त पुरसान बार ॥छं०३०॥

---

२५ पाठान्तर नोन । पनग । पुरासान । कमान । पच परमांन मान जिहि । सिघल्लीय । मद रति । गज । भजै । परिमल । है । उंच जिहि । दुइ । गंज ॥

२६ पाठान्तर रषिय । पन ।

२७ पाठान्तर थिह । सुके । मुक्कै । बिहान । चहुआंन ॥

२८ पाठान्तर चहुआंन । हुसेन । संपत्तो । आय । भाइ । दिषंनो । नीतिराज । कुटवार । ★ अधिक पाठ है ॥ कैंथल । हांसी । हिसार । पटो । थपीय । जाय । माहिवर । चवर । चरित । जुग्गिनि । मुष ॥

आरब्ब सेष लीनो बुलाइ । वैव्रद्ध व्रद्ध बुद्धी मुताइ ॥
वंछै सुपेम सक लेहिं साहि । लज्जी अनंत आदब्ब थाहि ॥छं०३१॥
उच्चर्‍यो बैन साहाब भास । आरब्ब जाहु चहुआन पास ॥

अरब खां से कहना कि पहले हुसैन के पास जाना, जो वह पातुर को दे दे तो हम क्षमा कर देंगे, जो वह गर्व करके न माने तो पृथ्वीराज के पास जाकर हमारा पत्र देकर समझाना ॥

अप्पै जु पात्र हुस्सेन जाम । लैआउ मम्म हुसेन ताम ॥छं०३२॥
मुक्को सुगुनह कीनौ पसाव । मैं दीन पच्छ करि षिमा दाव ॥
छंडै न पात्र हुस्सेन अब्ब । चहुआंन मिलै सामंत सब्ब ॥छं०३३॥
जंपियौ बयन चहुआंन साइ । कढ्ढौ हुसेन नागौर थाइ ॥
अज्जीज षांव तुम सच्च उच्च। लिष्यो सु पत्र हम परम रुच्च॥छं०३४॥
कढ्ढौ हुसेन तुम देस अंत । बंछो जो पेम मानौं सुमंत ॥
रष्या हुसेन जो असु परेम । चतुरंग सेन सज्जौ विसेस ॥छं०३५॥
भंजो सुनैर नागौर देस । जीवंत बंदि बंधौ नरेस ॥
सामंत सूर सब करौं अंत । बंधौ सुबंध सा नरनि कंत ॥छं०३६॥
उच्चरि गुमान तन वन थूल । सगग करै मानौं स मूल ॥
तुम जाउ सिघ्र नागौर वास । मति करो एक दिन घर विश्राम ।३७॥

तीन सौ सवार और रथ देकर अरब खां को रवाना करना ॥

सै तीन दीन असवार सथ्थ । आरुहन दीन नरयान रथ्थ ॥
सचर्‍यौ सेष आरब्ब राह । दो पष्ष पत्त नागौर थाह ।
॥ छं० ३८ ॥ रू० २९ ॥

अरब खां का हुसैन से मिलकर समझाना, हुसैन का न मानना ॥

दूहा गय आरब नागौर धर । मिल्यौ साह हुसेन ॥
भोजन भष्य सुभाव किय । विवध प्रसन्निय बैन ॥
॥ छं० ३९ ॥ रू० ३० ॥

---

२९ पाठान्तर उचरीय । मुकल्लो । कढौ । हुसन सौं ॥ २९ ॥ ततार । तब । प । पुछी । कीय । पुरसान । ३० ॥ आरब सेष । व्रद्ध वृद्ध । बुद्धीय । बछै । पिम्म । लेहि । लज्जी । आदब । थाह । ३० ॥ उच्चरयो । बैन । आरब । हुसेन । जाउ । मम्म । हुसेन । ताम ॥ ३२ ॥ मुक्को । स । पछ । हुसेन । अब । सब । अब ॥ ३३ ॥ बैन । साइ । घाट । अजीजषान । सच उच । लिषै । रुच ॥ ३४ ॥ बछो । जो । सु । मानौं । रषो । जो । तो । चतुरंग । सजो ॥ ३५ ॥ करौ ॥ ३६ ॥ उचरि । गुमान । कहै । मानौं । जाहु । सीघ्र । बांम । करो । विश्रांम ॥ ३७ ॥ सथ । असहनन । नरयान । रथ । आरब । दोय । पष ॥ ३८ ॥

३० पाठान्तर हुसेन षष । विरह । प्रसन्ने बैन ।

दूहा— कही बत्त हूसेन मम । जो कहि साह महाव ॥
नह मंनिय मोमंन हिय । दिय आरब्ब जबाव ॥
॥ छं० ४० ॥ रू० ३१ ॥

अरब खां का पृथ्वीराज के पास जाना ॥

दूहा गयो सेष आरब्ब दर । लही षवर प्रथिराज ॥
बोलि मज्झ मंडिय महल्ल । सामंतन सब साज ॥
॥ छं० ४१ ॥ रू० ३२ ॥

पृथ्वीराज का सुलतान की कुशल पूछना ॥

दूहा मंझ महल्ल आरब्ब गय । मिलि मंनिय सनमान ॥
दै आसन पुच्छिय कुसल्ल । चाहुआंन सुल्तान ॥
॥ छं० ४२ ॥ रू० ३३ ॥

अरब खां का कहना कि हुसैन खां को निकाल देने के लिये सुलतान ने कहा है ।

छंद पद्धरी उच्चरयौ बैंन आरब्ब सेष । सल्लाम बहुत पति एक एष ॥
कह्यौ हुसेन तुम देस अंत । साहाब साहि बत्तौ सुमंत ॥ छं० ४३ ॥
जुगमीत अथ्थि उबरे न आदि । इम नाउ भाउ बहु बैंन सादि ॥
जपे सु बैंन जे कहे साहि । कह्यौ न बत्त गंभीर भाहि ॥ छं० ४४ ॥

शहाबुद्दीन का संदेसा सुनकर पृथ्वीराज का मुख लाल हो गया, भौहें चढ़ गईं ।

संभल्लिय बत्त प्रथिराज मन । त्रिकुटी करूर द्रिग रत्त जन ॥
आरत्त मुष्ष रू न श्रोन बुंद । कलमल्लिय कोप रोमंच जिंद ॥छं०४५॥

कैमास ने डपट कर कहा कि आर्य लोगों का धर्म सुलतान नहीं जानता इससे ऐसा कहता है, हुसैन पृथ्वीराज के शरणागत है, क्षत्री का धर्म उसे छोड़ने का नहीं है ।

उच्चरयो कोपि कैमास बांनि । अतासनि आर्य मिच्यो सुजानि ॥
आरब्ब बोल बोल्यौ विरूर । सुरतान जानि जंप्यो गरूर ॥ छं०४६ ॥
प्रति बुद्ध लह्यो प्रथिराज नूर । अतुलित्त जुद्ध सामत सूर ॥
हुस्सेन आइ प्रथिराज थान । जोधांन धंम षत्रीय आन ॥ छं० ४७ ॥

---

३१ पाठान्तर -हुसेन । साहाब । नह । आरब ॥

३२ पाठान्तर —आरब । षबरि । प्रथीराज । मझ । सामंता । सम राज ।

३३ पाठान्तर -आरब । सनमांन । पुछिय । कुशल । चाहुवांन । सुरतान ॥

३४ पाठान्तर -उच षो । बेन । आरब । शेष । सलाम ॥ ४३ ॥ युगमीत । अथि । उबरें । बेंन । जपें । कहै । भाह । नाह ॥ ४४ ॥ तथ्य । तष । प्रथीराज ।

कन्ह चौहान, सूरसिंह, गोयंदराज, चन्द, पुंडीर आदि का भी यही कहन और सुलतान से लड़ने को हम प्रस्तुत है यह कहना।

जपै मुबैन चहुआंन कन्ह। द्रिग पानि रत्त रोमन्च तंन॥
रज धम विषम बुझ्झै न गाह। अनि राह जेम जपै बिगाह॥छं ४८।
गज्जे न लज्ज कोपै मृगिंद्र। उतकिष्ट सूर गिर महि न निद्र॥
गुरु तज्जि जपि गोइंद राज। लग बैन गीर गम वत्त साज॥छं०४९।
सज्वाल तेज सम नेन बान। निरभै सुताम चपै पयान॥
उच्चरयौ चंद पुंडीर कोप। आदीन भाल सम दून ओप॥ छं० ५०।
गज्जनौ कौन केतुक महाव। गम अत्त बन जपै कहाव॥
हुस्सैन राइ प्रथिराज थान। मरनै सुकौन बहुटै नियान। छं०५१॥
दल मज्जि सीम चपै सुगाहि। दल भजि ग्रहै प्रथिराज ताहि॥

अरब खां का अपना निरादर होना देख उठ आना और गज़नी को कूच करना तथा शहाबुद्दीन से सब समाचार कहना।

मानी न सेष आरब्ब वत्त। सामंत सूर देष विरत्त॥ छं० ५२॥
आदरह मद तजि उठ्यौ सेष। झषीर बदन द्रिग बढ्ढि नेष॥
पुच्छीय जुगति नृप महल जानि। उठि गर्व दुष्प मन हीन मानि॥छं०५३॥
चढि चल्यौ सेष रह साह देम। गज्जनै गयौ मन मानि रेम॥
गय महल माहि मिलि कहिय बत्त।सिर धूनि रीम करि नैन रत्त॥छं०५४॥
उठि गयौ साह बद्दल महल्ल। आसंन साजि बैठो मथ्थल॥
॥ छं० ५५ ॥ रू० ३४॥

दरबार करके शहाबुद्दीन का तातार खां, अरब खां, मीर जमाम, कमाम खुरासा खां, रहन महन खां, रुस्तम खां, हाजी खां, गाज़ी खां, अम्मन खां, गज़नी खां, मुहब्बत खां, मीर खां, आदि सरदारों को बुला कर सलाह करना।

कवित्त सजि आसन साहाब। साह काजी मत बैठो॥
बोलि मझ्झ तत्तार। बोलि आरब दिन जेठो॥

भृकटी। आरक्त। मुष्य। अग्नि। कलि ॥ ४५॥ उच्चरयौ। खानि। आरज्ज। संच्यो। जांन। आरज। सुरतान। जानि॥ ४६॥ प्रथीराज। अतुलित। युद्ध। हुसेन। थान। जोधान। पिजीय॥ आन॥ ४७॥ जपै। चहुआन। बुझै॥ ४८॥ गजें। कोपें। मृगेंद्र। मृगेंद्र। उतकृष्ठ। नंग्द्रि। तजि। जपि। गोयंद। बैन॥ ४९॥ तेजवान। निरभै। सताम। पयांन। उच्चरयौ। रूप॥ ५०॥ गजनौ। केतक। जपै। हुसेन। प्रथीराज, थांन। कोंन। नियांन॥ ५१॥ सजि। सीम। प्रथीराज। मांनी। आरब। शेष। विरत्त। शेष। पुछिय। जप। जांनि। दुष। मानि॥ ५३॥ गजनैं। मांनि। धनि। नैंन॥ ५४॥ महल। सुथल॥ ५५॥

मीर जमांम कमांम । षांन पुरसांन त्यान बर ॥
षांन रहंन महंनं । षांन रुस्तंम महा भर ॥
हाजीय षांन गाजीय षां । षान जमन बंधव मुत्रिय ॥
गजनीय पान महुबत्ति पा । मीर पान सब बोलि लिय ॥

॥ छ० ५६ ॥ रू० ३६ ॥

तातार खां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज पर चढ़ाई करनी चाहिए ॥

कवित्त कहै साहि साहाब । अहो ततार पान सुनि ॥
जिन जुमत्ति उपज्जै । कहो सब पान जानि मन ॥
गो आरब चहुआन । फेरि आयो सु सुनिय सब ॥
सरन रषि हुस्सेन । बोलि सामत राज सब ॥
जपिय ततार संजो सयन । हनो राज प्रथिराज रन ॥
है गै सुबंध बंधौ रिनह । सेर कि गहि छुट्टै सुनन ॥

॥ छ० ५७ ॥ रू० ३६ ॥

खुरासान खां का तातार खां से कहना कि उसके बल को भी विचार लो, जल्दी न करो ॥

दूहा कहै षान पुरसान तब । अहो षान ततार ॥
चाहुआन सामन्त बल । चिंति सुविविधि विचार ॥

अरब खां का कहना कि उसका बल अतुल है, तुम लोगों ने देखा नहीं है इससे ऐसा कहते हो ॥

दूहा कहै सेष आरब अतुल । बल सामन्त नरिंद ॥
अबे न तुम दिष्षिय नयन । सजो सेन बिन बंध ॥

॥ छ० ५९ ॥ रू० ३८ ॥

शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना ॥

कहै साहि आरब्ब तुम । कहौ सूर सामन्त ॥
कहा क्रति प्राक्रम कहा । मति पत्र पहु नन्त ॥

॥ छं० ६० ॥ रू० ३९ ॥

---

३५ पाठान्तर [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । त्यान । महन ॥

३६ पाठान्तर - [illegible] । [illegible] । [illegible] । सब सुनिय । हुसेन । [illegible] । हनो । मरै ॥

३७ पाठान्तर - कहै । चिन्त सुविधि विचार ।

३८ पाठान्तर बे । सेन । दिषिय ॥

३९ पाठान्तर - आरब । सब । क्राति । मन्त ॥

अरब खां का पृथ्वीराज के बल की प्रशंसा करना ॥

कवित्त -इष्ट मत्र उच्चार । दिष्ट उठ्ठ हित इक्क थर ॥
क्रमत पेषि पच्चीस । मिलत सत एक इषि पर ॥
सहस सुभर बाहंत । एक सामत पराक्रम ॥
जामह दुप्पल कटै । ताम बाधत बीर दस ॥
सिर परै सुहक्कै धर भिरै । परै श्रोन उठ्ठै सधर ॥
असिधार सूर उठ्ठै किलकि । एह पराक्रम सूर नर ॥
॥ छं० ६१ ॥ रू० ४० ॥

तातार खां का अरब खां की बात को हँसी में उड़ा देना, अरब खां का कहना कि अपनी आंख से न देखने से ऐसा कहते हो ।

कवित्त हस्यौ षान तातार । एम हाजी सम बद्दिय ॥
जय रूनही बिन बषत । मरन भै डरै न कद्दिय ॥
कहि आरब ततार । अहो सामंत न दिष्षिय ॥
अतुल तेज बल अतुल । अतुल बल देव सुरष्षिय ॥
वे साम धंम रत्ते अतुल । अतुल मत्त कैमास भर ॥
उमगा अनत देषै अनत अतुल बत्त पहुचै न नर ॥
॥ छं० ६२ ॥ रू० ४१ ॥

शाह का क्रोध करके तातार खां को चढ़ाई के लिये प्रस्तुत होने की आज्ञा देना ।

दूहा कहै साहि गोरी गरुअ । अहो षान ततार ॥
कल्हि नरीक सुउच दिन । चढि अरि सद्धौ सार ॥
॥ छं० ६३ ॥ रू० ४२ ॥

दूहा उठि गोरी दिन्ने बहुरि । गयौ सु अदर साह ॥
बहुरि षान मीर बरा । अति चचल तुर ताह ॥
॥ छं० ६४ ॥ रू० ४३ ॥

---

४० पाठान्तर उच्चार । उठ । ट० । पच्चीस । इषि । दुप्पल । साम । परै । सुहकै । उठै । उठे ।

४१ पाठान्तर ततार । बदिय । भय । कद्दिय । काहि । दिषिय । रषिय । सांम । उमगा । अनत ॥

४२ पाठान्तर—काल्हि । नेरीक । सु । सधौ ॥

४३ पाठान्तर--दिनं ॥

शाह के जी में रात दिन चौहान की चिंता लगी रहना ॥

दूहा —तपै माहि गोरी सबर । चित साले चहुआंन ॥
वैरोचन की साप ज्यौं । कोटी भ्रग प्रमान ॥
॥ छं० ६५ ॥ रू० ४४ ॥

अरिल्ल जग्गत निमि झंपत सुरतानह । घरी मत्त रहि सेप प्रमानह ॥
जगि आगम दिय दीन निमानह । चिंता माहि चढी चहुआनह ॥
॥ छं० ६६ ॥ रू० ४५ ॥

सेना के साथ चढ़ाई के लिये शाह का तैयार होना ॥

छंद मोतीदांम
भए सुर नौन धुनक्क निसान । चढ्यौ अश्व गज्जि गिन्है सुरतान ॥
चढे सब पान सु उम्मर मीर । सजे सहनाइ बजे रस बीर ॥ छं० ६७ ॥
बजे सब बाज भयानक भाइ । चितै हिय बुद्धि जितै जन नाइ ॥
चढ्यौ सत्र सज्जिय सेन गरिट्ट । परी दस दिग्ग सुधुंधरि दिट्ट॥छं०६८॥

अशकुन होना ॥

नरद्द सियांन सुसेन कपोत । ससमुष माहि दियौ दल दोत ॥
भयौ दिसि बामिय काग करार । रुक्यौ दिसि सोमय धम्म नभार॥छं०६९॥
ससमुष दच्छिय जम्बुक सेन । बिगो सिसि रगत भग्गहि तेन ॥
भ्रमे नभ ऊपर गिद्ध अपार । नवै सुर रुद्र पमारिय पार ॥ छं० ७० ॥

अरब खां का कहना कि आज ठहर जाइए, शकुन अच्छा नहीं है ।

गही सुरतान सु आरब बग्ग । रहौ दिन आज सगुन न जग्ग ॥
रहै कुहु अज्ज ततार सुदिन्न । गही चाहि चक्कहु सत्रि सगुन्न ॥छं०७१॥

सुलतान का कहना कि काफिर चौहान को जीतना कौन बड़ी बात है जो इतना बिचार करते हो ॥

कहै सुरतान अहो तुम क्रूर । भये भय म्रित्यु सु झपहु नूर ॥
कहा बल जुद्ध कहो प्रथिराज । किनौ बल सामत जुद्धिह साज ॥छं०७२॥★

---

४४ पाठान्तर —चहुआन । भ्रग । प्रमान ॥

४५ पाठान्तर —जगत । जपत । सुरतानह । मत्त । रही । प्रमानह । निसांनह । चहुआनह ॥

४६ पाठान्तर—मोतीदाम । निसान । साजि । गिन्है । सुरतान । ६० ॥ सजे । चितैं । त्रितैं । सत्रिय । गरिट्ठ । दिस । धुंधरी दिट्ठ ॥ ६८ ॥ सियान । बामीय ॥ ६९ ॥ ऊपर । पमारीय ॥ ७० ॥ सुरतान । रहो । कहु । कही । आज । गही बल सत्रहु चाहि सगुन । ७१ ॥ भयै पयै । प्रथीराज । नलु । सामंत ॥ ७२ ॥

हनौं रन सूर जिके चहुआंन । गहौं जुध राज सु षंडिय प्रान ॥
कहा डर काफर दाषहु मुझ्झ। कहा भर आवध आगरि जुझ्झ॥छं०७३॥*
नमंनि चमंकि चढयौ सुरतान । टमंकिय गज्जिय नद्द निसान ॥
जलथ्थल होय थलं जल भार । अमग्गह मग्ग चलै गहि लार ॥छं०७४॥
मिल्यौ इक साहन लष्ष समुंद । समुझ्झिन कंन भयो सुर मुंद ॥
चल्यौ सुरतान मिलान मिलान । बढ़ी अति चिंत दुनी चहुआंन ॥
॥ छं० ७५ ॥ रू० ४६ ॥

शाह का चौहान की ओर जाना और दूतों का यह समाचार नागौर में हुसैन को देना ॥

दूहा– गयौ साहि चहुआंन घर । दिए मिलान मिलान ।
गए सुचर नागौर पुर । कही षबरि सुरतान ॥
॥ छं० ७६ ॥ रू० ४७ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई का समाचार सुनकर सरदारों को बुलाकर सिंध तक शाह के पहुंचने का हाल कहना

कवित्त सुनिय षबरि प्रथिराज । कहिय जे चरन चरित्त मह ॥
बोलि मंत्रि कयमास । बोलि चामंड गुज्झ गह ॥
बोलि चंद पुंडीर । बोलि पीचि प्रसंग वर ॥
बोलि गज्जि गहिल्लौत । बोलि रा कन्ह नाह नर ॥
बोलेति सव्व सामंत भर । कही बत्त सो कहिय चर ॥
सामंत मंत भर सव्व मिलि । सिंधु सुचंपिय साह धर ॥
॥ छं० ७७ ॥ रू० ४८ ॥

लड़ने के लिये प्रस्तुत होने का सब का मत होना ॥

दूहा कहत सव्व सामंत मति । चढ़ि दल सजौ समकि ॥
सुनिव मंत्रि कयमास कहि । करहु निसान टमंकि ॥
॥ छं० ७८ ॥ रू० ४९ ॥

हनो । चहूवान । गहौ । मुझ । जुझ ॥ [illegible] । चढ्यौ । सुरतान । [illegible] । निसान
जल थल हु [illegible] । [illegible] । सुरतान । मिलान ।
चहूवान ॥ ७५ ॥

★ यह ७३ और [illegible] पुस्तक में नहीं है
इतर में है ॥

४७ पाठान्तर चहूवान । घर । दीए । मिलान । सुचर । सुरतान ।

४८ पाठान्तर - प्रथीराज । चरनि । कैमास । गुझ्झ । गृह । पीचि । गो ।
सब । मिलि ॥

४९ पाठान्तर-- सुनै । मंत्र । कैमास । करहु । निसान ॥

युद्ध की तैयारी होना ॥

गाथा –अथ टामंक निमानं । पत्तं निज ग्रेह सूर सामंतं ॥
बाजे बज्जिय अनेकं । हय मंगे राज चहुआनं ॥
॥ छं० ७९ ॥ रू० ५० ॥

गुरुराम ब्राह्मण का आकर आशीर्वाद देना, बहुत कुछ दान कराना और वेद मंत्र से तिलक करना ॥

छंद पद्धरी –आये सुराम गुरु राम राज । पढ़ि पत्र मंत्र द्विज बोल्लि साज ॥
ग्रह नव सुदान विधि विद्ध दीन । वेदंत विप्र अभिषेक कीन ॥छं० ८०॥
चत्र सहस हेम दिय विप्र दान । अम्मेर वेद त्रय साम गान ॥
दिय दान भूरि पर्ना सु चंड । दीनी सु अश्व जिन हथ्थ मंडि ॥छं० ८१॥
जै जया जीह जपी सु आन । मंगल्ल सुवार चव पढ़िह गान ॥
आसिष्प वयन चहुआन रान । गुरु राम जज्जि आहुत प्रान ॥ छं० ८२॥
दिय तिलक पत्र पढ़ि वेद मंत्र । आरोपि कंठ हन मंत्र जंत्र ॥
कज दग्ग वाम चक्कोर आनि । कल्यान जानि जंपै सु बानि ॥छं० ८३॥
गजन निरद्द किय दरनि दिस्स । आदरस दिष्षि किय अभिरस्स ॥
चिल्यो सु चित्त जीति उमर का । मानौ सु हन हय तेजवर ॥छं० ८४॥
पित्री सु जानि जोबन पूर । पच्यौ कि मनो नृप रथ्थ सूर ॥

भगवान का स्मरण कर यात्रा करना ॥

सारंग्नि सज्ज गज्जी सु बानि । धरि और हेम नृप अग्ग आनि॥छं०८५॥
चपै सु चढ्यौ नृप वाम पाम । जै जया सद्द आयास भाम ॥
चढ़ि चल्यौ बधि आवद्ध राज । सामंत सथ्थ चढि सूछ साज ॥छं० ८६॥
नीसान ताम बज्जे सु घाव । आकास धरा कद्दे निहाव ॥
संवत्त तीस अरु पंच माघ । तेरस्स सेत सुभ जोग साध ॥ छं० ८७ ॥★

---

५० पाठान्तर पत्त । गह । सामता । चहुआन ॥

★ इस ५१ रूपक के छंद ८७ के दूसरे पद में इस हुसेन और चित्ररेखा विषयक शहाबुद्दीन की चढ़ाई का मुकाबिला करने को जाने का सनन्द अर्थात् पृथ्वीराज का तीसरा शाक ११३५ माघशुक्ला १३ शुभ योग कहा है। वह जैसे कि सब तक इस महाकाव्य में आए सब सनन्द अर्थात् प्रचलित विक्रमी संवत् से आदिपर्व के रूपक ३५५ में कहे अंतर वर्ष ९० । ९१ के जोड़ने से मिल जाते हैं वैसे मिल जाता है–
११३५+९० । ९१–१२२५ । २६ ॥

५१ पाठान्तर –राम । दान ॥ ८० ॥ दान असेष । साम गान । दांर । स चंड । अथ । हथ । जंपय । आन । पढ़ि । गान । आशिष । वैन । चहुवांन । रांम । जजि । प्रान । ८२ ॥ हनमंत्र । वाम । चकोर । आनि । जानि । वानि । दरस्स ।

हुसैन का भी अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज से आ मिलना ॥

मजि सथ्थ चढयौ हुस्सेन सेन । बंधे म तोन भर मीर ऐन ॥
हुस्सेन सथ्थ मिलि सहस एक । उर सामि ध्रंम बंधें सुतेक ॥ छं० ८८ ॥
प्रथिराज आइ किन्नो सलाम । आदर अदब्ब दिय राज ताम ॥
मिलि चल्यौ सेन भर तेजवंत । बज्जे सुबज्ज जय हेमवंत ॥ छं० ८९ ॥

दस कोस पर डेरा देना ॥

दस कोस जाइ दिन्नो मेलान । डेरा सुदीन जल सुभ्भ थान ॥
॥ छं० ९० ॥ रू० ५१ ॥

दूतों का सुलतान को पृथ्वीराज के चढ़ आने का समाचार देना ॥

दूहा देखि चरित नृप साह चर । गए पास सुरतान ॥
कहैं मैंन संमुष गजैं । चढि आयौ चहुआंन ॥छं० ९१ ॥ रू० ५२॥

सुलतान का चढ़ाई के लिये धूमधाम से चलना ॥

दूहा सुनि चरित साहाब चर । दिय निरघोष निशान ॥
चढ्यौ सेन सज्जे सिलह । करिब फौज सुरतान ॥छं० ९२॥रू० ५३॥

सुलतान की चढ़ाई का वर्णन ॥

छंद मोतीदाम–चढ्यौ सुरतान सुमज्जिय फौज।बजे बर बज्जन वीर अमोज॥
भयो गज घुंमर घंट निघोर । मनो झुकि क्रन्न भयौ सुर रोर ॥छं०९३॥
गजें गज मद्द मनौं घन भद्द । चिकार फिकार भए सुर रुद्द ॥
तुरग्ग सहोम कडक्क लगांम । खरक्किय पप्पर तोन सुतान ॥छं०९४॥★
चमक्कत तेज सनाह सनाह । करं धर पक्खर राह विराह ॥
झलक्कत टोप सुटोप उतंग । मनो रज जोति उद्योत बिहंग ॥छं०९५॥
दमक्कत तेज कमान कमान । चितं चित मीर रह्यौ मइमान ॥
भले भर सांइय ध्रंम सगत्ति । लपे धर जीयत जत्तिन गत्ति ॥छं०९६॥

दरम । दिस । दिषि । परम । चित ॥ ८४ ॥ पंच्यौ सूंच । मनों । रथ । हारन । सब । मजी । वार्ता । ओर । आनि ॥ ८५ । स चढ्यौ । मबद । आउद्ध । सव । सुछ ॥ ८६ ॥ नीसान तांम । बजे स्वेन ॥ ८७ ॥ मजि सथ संपत्त हुसेन । सेन । सतोन । एन हुसेन । सथ सामि । बधें ॥ ८८ ॥ प्रथीराज । आग । कीनो सलाम । अदब ताम । बजें । बज्जय ॥ ८९ ॥ कीनो मिलान । सुभ । थान । थानं ॥ ९० ॥

५२ पाठान्तर—सुरतान । कहै । चहुवांन ॥

५३ पाठान्तर—चरित । चरित । साहब । निसान । सजे । सज्जै । सुरतान ॥

★ यह पद Coufield Mss. में नहीं है ।

५४ पाठान्तर – मोत दांम । सुरतान । जुमजिब । बजन । घंटन । कंच ॥९३॥ बजें । मनों । भद । रद्द । रुद । सकड कड । परकिय । पषर । सतांम ॥ ९४ ॥

नमैं निज सांइय पंच बषत्त । सिपारह तीस पढैं दिन रत ॥
नमैं निज सेष धरंम मरंम । क्रमैं रह रीति कुरान करंम ॥छं०९७॥
दिढंबर बाचरु काछह मीर । तरंनिय एक रतं बर बीर ॥
सवद्दय बेध करै तम तांह । भमतिय पंषि हनै छित छांह ॥छं०९८॥
धरै इक एक अनेक सुवान । झलक्कन मुड तवल्लह मान ॥
धरैं धर नाहिय म्याहिय मीम । मिरक्कहि बंबर धुमर दीम । छं०९९॥★
अनेक सुवान अनेकह रंग । चढे सब मीरह सेन अभंग ॥
अनेक सुवान अनेकय ब्रन । समुझ्झि न होय समुझ्झिन क्रन ॥छं०१००॥
पय भर अग्ग अनेक सुभार । अनेक सुजानि अनेक सुतार ॥
सिरक्किय सुंडिय मुड सुअद्ध । जुवट्टिय उट्टिय जानि अनद्ध ॥छं०१०१॥
कर निय झट्टिय रग अनेक । फुरक्कहि झषहि झषह तेग ॥
चले धर बान सुमद्धिय दिट्ठ । अगं हथ नारि अभूल गरिट्ठ ॥छं०१०२॥
अगं किय मद्द गरक्क सुभार । मनो पय चल्लन पब्बन त्यार ॥
ढलैं सिर ढाल अनेक सुरंग । परैं फरहारि उभारिय अंग ॥छं०१०३॥
बरंनह संग्य संउय जुत्र । मनो पट रित्ति अनगह रूत्र ॥
भई पुर उब्बर अंबर रेन । जरं रजपट्टरि सक्कमि सेन ॥
॥ छं० १०४ ॥ रू० ५४ ॥

सारंड अचलपुर में सुलतान का डेरा डालना ॥

दूहा जथ्थ नथ्थ सक्कमि सयन । उन थान जल थान ॥
दिय साण्डप अचल पुर । किय मुकाम सुरतानन ॥छं० १०५॥रू० ५५॥

कैमास का यह समाचार घडी रात रहे पृथ्वीराज को देना ॥

दूहा घरी सुनव निसि सेष चर । आय पास चहुआंन ॥
गये पास कैमास कपि । चरित सब्ब सुरतान ॥छं० १०६ ॥ रू० ५६॥

★ यह तुक ए० सो० की प्रति में नहीं है ॥ करे । झलकत मनो रजि ॥ ९५ ॥ कमांन २ । मान । त्यो । अनिन । गनि ॥ ९६ । बषत । पढै । रत । नमै । जिन । कुरान । तरनीय । रतें । सबदय । बर । ताट । भ्रमतिय । धरे । सुवान । झलकत तबलह । मान । धरे इक । धरनाहीय । शीम । कहि । धुंघर ॥ ९९ ॥ बान । अनेक सु । सेनय । मीर । बान । बृन । समुझि ॥ १०० ॥ हतार । जानि ॥ १०१ ॥ इट्टिय । फरकहि । झपय । बांन । सधिय । १०२ ॥ मद । गरक । मनो । पग । चलत । पवन । ढलै ॥ १०३ ॥ मनो । रित । अनंगए । उबरे । रेणु । सेनु ॥ १०४ ॥

५५ पाठान्तर— जथ । थान । जलथान । सारुडे । मुकाम । सुरतान ।

५६ पाठान्तर— निशि । सेवचर । आइ । चहुवान । सब । सुरतांन ॥

अरिल्ल जगि मंत्री कैमास महा भर । गठिय चित्त चरित्त कहिय बर ॥
जग्गिय सथ्थ मज्ज निस सेनं । गयो राज यह सज्जि द्रुगेनं ॥
॥ छ० १०७ ॥ रू० ५७ ॥

पृथ्वीराज का उसी समय चढ़ाई करने को तैयार होना ॥

गाथा—जग्गिय नृप चहुवान । कहियं कैमाम मज्जि मुरतानं ॥
बज्जि निहाय निसान । मजि बाध सेन मुरतान ॥
॥ छ० १०८ ॥ रू० ५८ ॥

चढ़ाई की तैयारी, भगवत् स्मरण तथा दानदेना ॥

छंद त्रिभंगी मयनं मज्झान, क्रिग मज्जान, बज्जि निहान, नीसानं ।
बधे मिलहान निज निज थान, पप्परि पान, असगान ॥
निज किय न न्हान दीन सुदान सब समान हमान ।
मने त्रिपान नही मान, आनिप्पान, जपान ॥ छ० १०९ ॥
तुलसी तिन मजरि चक्र तन धरि हरिचरना अरि जल सार ।
तिलकी मन कारि, क्रपण उर धरि साज सब करि जआर ॥
मौजह [illegible] [illegible] साग सब [illegible], [illegible] कारि [illegible] ।
मयो [illegible] ॥ छ० ११० ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible], उ[illegible] ।
चढ़ढी [illegible] मान [illegible] ॥ छ० १११ ॥
चिर्न चिना चिन गुमान जग उगान ईनान ॥
॥ छ० ११२ ॥ रू० ५९ ॥

पृथ्वीराज का सवार होना ॥

कवित्त चिन ईन चहुआन । चढ्यो हय मज्जि सुआवध ॥
बोल्लि सूर सामन । वान मज्ज सुबान जुध ॥

---

५७ पाठान्तर गढीय । गठोय । रहीय । नर्न मजि ।

५८ पाठान्तर चहुवांन । मुरतान । मज्जी कै बांध मन मुरतान । मजिस कै बांध सेन मुरतान मजि कै बाध ।

५९ पाठान्तर मवान । कीय । मजानं । बजि । थान रगरे । असु । पान । संन्हानं । ईमानं । इमान । त्रिपान । निजपान ॥ १०९ ॥ तुलसी सिर मजरि चक्र तनं जरि कर जुग अंजुरि हरि चरन । मन्त्र । सिव । कुमार । मौज । हर्न । बगत्तरि । कसि हार । है । पषर । मृषराज ॥ ११० ॥ मराजं । उत्तिम । कसेतंस । घतंसं । चढ्यो । चढ़ियो । पैवामनं ॥ १११ ॥ जग । मानं । इमानं ॥ ११२ ॥

जय हर ! जंपे राज । चल्यौ थप्परि है कंधं ।।
जै मन्निय ९ राव । करी कसि मुष ऊरद्धं ।।
षुदंत धरा पुर षुर विद्दर । करिय लोह दंतै क्रमक ।।
नाचंत नैन पैरव मुथल । धरनि ध्यंम धुज्जिय धमकि ।।
।। छं० ११३ ।। रू० ६० ।।

पृथ्वीराज का मीरहुसैन के डेरे में आना, मीरहुसैन का अपने साथियों के साथ तैयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ।।

कवित्त गयौ राज चहुआन । साह डेरा हुस्सेनह ।।
सुनी षबरि बर बीर । सज्जि आयौ मथ्थै सह ।।
करि गोसल्ल पवित्र । होइ चित्तं रहमानं ।।
बधि सिल्लह हे सगि । बीर बज्ज नीसान ।।
चढ़ि वाह सज्जि सामंत सयन । सीस नम्मि सल्लाम किय ।।
देषे सुबीर चित हर्स सुमन । बर सनमान अतित्त लिय ।।
।। छं० ११४ ।। रू० ६१ ।।

पृथ्वीराज और मीरहुसैन के मिलकर चलने का वर्णन ।।

छंद गीता मालती चढ़ि चल्यौ राज सन साज बीर बाज बज्जए ।।
नद्द निसान सजे सुभ घोर घन गज्जए ।।
फौजे हल्लकी बीर बक्की सूर जक्की जम्भरं ।।
विरदैत बीर जुद्ध धीर साम भार ध्रम धरं ।। छं० ११५ ।।
असमान हाम साई आग, उच्च भाम अज्जरं ।।
लीक सुबच्छ सुच्छ कच्छ, गज गच्छ धींदर ।।
सजि पान पथ्थ इन अथ्थ, राज सथ्थ समिल्ल ।।
चल्लै सबल्ल हाल हुल्ल, गज्ज मल्लं झुल्लिय ।।छं० ११६।।
घंटा सुघोर भरि रोर, नय नोर मद्दयं ।।
सगं मब्बद्दं नीर नद्द, सूर वद्द बद्दयं ।।
धर पाइ धक्की है पुरक्की, गैग हक्की पष्षरं ।।
उड्डी सुरेन मुदि गेन, आइ सेनं मद्धरं ।। छं० ११७ ।।

---

६० पाठान्तर — है । मजि । सूर मत्रान । बान । सबान । जुद्ध । जे । हय । मन्नी । उरधं । करिय । दंत लोहे । पयरव । धरनि । नाम । घुजिय ।।

६१ पाठान्तर -चहुवान । हुसेनह । सजि । मथै । चित्यौ । बजे । निमानं । सज । मथी । नमि । सलाम । सनमान । अतिन ।

६२ पाठान्तर —बजए । नद्दे । निमानं । गजए । हलकी । बकी । जकी । विरदैत । धुद्ध । साइ । धंभरं ।। ११५ ।। साइं । उब । अजरं । सुबछं । कछं । गछं ।

गिद्धी सुतथ्थं चली सथ्थं, सीस रथ्थं अच्छरं।
निरषें सुवीरं निज्ज नीरं, अस्स हीरं मच्छरं ॥
पुट्ठे समीरं बहि सधीरं, साइ भीरं मंभरं ॥
सेनं सहस्सं तेय दस्सं, झुज्झ जस्स धिद्धरं ॥ छं० ११८ ॥
नारद्द नद्द बीर बद्द, गोम सद्दं नद्दयं।
सामंत सूर चढे नूर जुद्ध भूरं जद्दयं ॥
मथ्थं सृंगार मंम हारं, ना उचार जैकरं।
श्रोनं गभथ्थी भू चरथ्थी, षैचरथ्थी षेचरं ॥

॥ छं० ११९ ॥ रू० ६२ ॥

सुलतान के चरों का सुलतान को जाकर समाचार देना कि शत्रु की सेना एक योजन पर आ गई ॥

दूहा चरित लष्य साहाव चर। गए पास सुरतान ॥
सजी सेन सामंत पति। आयौ जोजन थान ॥

॥ छं० १२० ॥ रू० ६३ ॥

सुलतान की सेना की तैयारी का वर्णन ॥

छंद त्रिअष्परी सुनि चरित्त साहाव नाम चर। बोल्लि मीर उमराव महा भर।
दिय निरघात षावनीसान। चल्यौ सेन सज्जै सब्बान ॥ छं० १२० ॥
वाजित्र वीर अनेक सुबज्जे। धर पड्डिहाय सुगोमह गज्जे ॥
डर्यौ सूर चढ्यौ सुरतान। बज्जि निहाव नाल्लि गिरि बान ॥छं०१२१॥
फौज सुपच सजी साहाव। उलट्यौ सेन समुद्दह आव ॥
दच्छिन दिसा सज्जि ततार। दिसा बाईं षुरसान सुधार ॥ छं० १२२ ॥
हाजिय राजिय गाजिय षान। सनमुष सेन सजी सुरतान ॥
मीर जमांम षांन कमान। महब्बति मीर पुट्ठि सजि ताम। छं० १२३ ॥

धिढर। वाना। पथ। अथ। मथ। वह। सवल। हल। गज। मल। अशय ॥ ११६ ॥ सदय। वदय। धकी। पुरकी। गहकी। पष्पर। उडी। सदेन। आर। सधर ॥ ११७ ॥ सतथ। मथ। रथ। अछर। निरषें। निरषें। निज। अस। मछर। पट्टें। सार। सहस। दस। झुझ। जस। द्धिढर ॥ ११८ ॥ नारद। नदय। सद्दय। युध। जदय। मथं। शांगारं। सगार। जैकरं। सभपी। चरपी। षेचरपी ॥ ११९ ॥

६३ पाठान्तर- ★ स० १६४७ की मे इसका यह पाठ है-मिलि भूचर षेचर सकति। लष। सुरतांन। थान ॥

६४ पाठान्तर—उमदा। निषात। चढ्यौ। सजै ॥ १२० ॥ बजे। गजे। डर्यौ। बजित्र ॥ १२१ ॥ समुद्र कि। दषिन। सजि। षुरसांन। सषारं ॥ १२२ ॥

षान मरुस्तम रुस्तम षानं । मद्धि फौज रज्जे सुरतानं ॥
सहते वीस वीस मजि फौजं । तुंबा पंच रचे अहहौजं ॥ छं० १२४ ॥
चिहुपष्षां गज घूमहि डमर । हथ्थ नारि गिर बान अमवर ॥
रिन रन तूर घोर नीसान । भेरी शृंग गरुड थन थान ॥ छं० १२५ ॥
नफ्फेरी त्रिय विध सुर डड । जोमप पट्ट वजे घन दड ॥
आवन झुझ्झ डहक्क डहक्किय । हैवर हीस दरक्क गहक्किय॥छं०१२६॥
गज चिक्कार फिकार सवद्द । तदुल तब्बल मृदंग रबद्द ॥
जगी वीर गुडीर अनेक । बाजित्र अनेक गने को वेग ॥ छं० १२७ ॥
फौज पच साजी माहाव । मीर अनेक गने को नाव ॥
देस देस मिलि भाष अनत । नर्वायन नाम अनेक गननं ॥ छं० १२८ ।
फौज पच मजि चर्यौ जु माह । गज्जे धरनि गैन पुर गाह ॥
साह है सज्यो दिसि वाम । पद्दर सद्दर उत्तिम ठाम ॥
॥ छं० १२९ । रू० ६४ ॥

सारूँडे की बाई ओर सजकर सुलतान का खड़ा होना ॥

दूहा उत्तिम पथर पुट्ठि जल । लग्गी जीय सुथान ॥
साह हौ दिसि वाम दै । गजि गाढौ सुरतान ।छं० १३० । रू० ६५॥
उड्डि रेन अंबर अगर । दिय्यो सेन चहुआन ॥
गुनिगन्नन बाजित्र बहन । गजे नीस अममान ॥छं० १३१॥रू० ६६॥

सुलतान की सेना देखकर पृथ्वीराज का मीर हुसैन की ओर देखना, हुसैन का अपने सरदारों के साथ तैयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ॥

कवित्त देखि सेन सुरतान । नैन चहुआन महाभर ॥
सज्जि फौज हुस्सेन । सेन सब मीर बीर बर ॥
रूमी षा कमाम । वेग हुस्सेन समथ्थं ॥

हाजीय । राजीग । गाजीय । सुरतान । जमाम । पान । कमान । पुठि ॥ १२३ ॥ मधि । रजे । तेईस । टुबा ॥ १२४ ॥ चिहु । पा । धूंमर । हथ । बान । असंवरं । रिनतूर । नीमान । नफेरी । त्रिबिधि । पट । आवध । झुझ । डहक । डहकिय । हय । गहकिय ॥ १२६ ॥ चिकार । फिकार । सवद । रवद । गडीर । अनंत ॥ १२७ ॥ सजी । मीर अनेक अनेक सनाब । चाष अनेकं । नाम करे सुविवकं ॥ १२८ ॥ सु । यु । गजे सज्यौ । पधर । सधर । ठाम ॥ १२९ ॥
६५ पाठान्तर—उत्तम थलअरु । लषी । थांन । बाम । सुरतांन ॥
६६ पाठान्तर—उडि । मंबर अबर । दिषी । सुने । असमांन ॥

कासिम्म षांन करीम षां। षोजा कासिम काज सुध ॥
मिल है सुसब्ब लिय समथ सजि। करि सलांम किय सीसउध ॥
॥ छं० १३२ ॥ रू० ६७ ॥

मीर हुसैन का कहना कि आपने हमारे लिये कष्ट उठाया है तो हमारा सिर भी आपके लिये तैयार है, देखिए कैसी लड़ाई लड़ता हूं। पृथ्वीराज का कहना कि इसमें आश्चर्य क्या है मैं भी आज तुम्हें गजनी का सुलतान बनाता हूं ॥

कवित्त कहै साह हुस्सेन। सुनौ चहुआन जुज्झ बत ॥
आज सीस तुम कज्ज। सेन साहाब पडौ पत ॥
सो कज्जै साहस्स। करिग प्रथिराज सग्ग ध्रम ॥
हौं उज उम्र अज्ज। करौ राजन अकथ क्रम ॥
जपै स राज प्रथीराज तब। कहा आचज्ज जपो तमह ॥
अपौं सु छत्र गज्जन पुरह। नहि सेन साहाब गह ॥
॥ छं० १३३ ॥ रू० ६८ ॥

मीर हुसैन का सलाम करके बाईं ओर सेना सजना, पृथ्वीराज का अपने सरदारों को आज्ञा देना कि तुम लोग मीरहुसेन की सहायता करो और सामन्तों का आज्ञापालन करना ॥

कवित्त करि सलाम हुस्सेन। अनी वर्षी दिसि बाउ ॥
सजग बंध करु। सह सज्ज थन थाउ ॥
बोल्लि राज प्रथिराज। वीर जद्दव जामानी ॥
सहन सीह परिहार। सूर गुज्जर रामानी ॥
तीकम बोल्लि तारन भर। बगारीय देवह गुअन ॥
मंडलीक बोल्लि परमार सुअ। जीहराज जपै सुगुन ॥
॥ छं० १३४ ॥ रू० ६९ ॥

---

६७ पाठान्तर —सुरतान तेन। चहुवान। सजि। हुसेन। कमाम। हुसेन। समथं। दवनी। करी। अकथ। कासम्म पान। पोजा। काश्यप। सब। मय सजि। किय सलाम। करि सीस ॥

६८ पाठान्तर —हुसेन। सुन। कन। पडो। कजै। साहस्म। प्रथीराज। ध्रमं। हौं उम ऊमु भज। करो। राजन। अकथ्थं। अकथ्य। क्रम। अप्पौं ॥

६९ पाठान्तर —किय। सलाम हुसेन। सजे। प्रथीराज। जांमांनी। गूजर। रामानी। तिकम। सगुन ॥

कवित्त – चवैं राज चहुआन । तुम सामंत सूर बर ॥
बर कुलीन कुल लज्ज । जुद्ध अन भग अंग भर ॥
तुम सहाइ हुस्सेन । सेन मज्जौ दिषि बाईं ॥
तुम अनंत बल तेज । देव बर कंठ सुहाई ॥
माहाब दीन सुरतान मो । भिरो चाल बधब विनसि ॥
मनै मुचले निज सेन सजि । नाइ मीम रजि वीर रस ॥
॥ छं० १३५ ॥ रू० ७० ॥

कैमास आदि सामंतों का चार सहस्र सेना के साथ पृथ्वीराज के दक्षिण ओर सेना सजना ॥

कवित्त दिसि दच्छिन कैमास । राइ चामड महाभर ॥
चद्रसेन पुंडीर । सिघ पम्मार अज्झ सर ॥
गरुअधाव गहिलौत । निभै पनि धार भार घन ॥
तंवर राइ परिहार । चित्त अनमग मोट मन ॥
साहस्स चार सज्जे सयन । अनी बधि दच्छिन नपति ॥
रत्तासि वस्त्र रत्तै सुभर । जै मनी चहुआन चित ॥
॥ छं० १३६ ॥ रू० ७१ ॥

पृथ्वीराज के आगे की ओर गोइन्दराय आदि सरदारो का पांच सहस्र सेना के साथ खड़ होना ॥

कविन मद्धि अनी प्रथिराज । अग्ग सज्जै भर सामत ॥
गरुअ राइ गोइंद । राज मनै साहस मत ॥
देव राइ बग्गारि । कन्ह चहुआन नाह नर ॥
पीनी राइ प्रसग । बीर रन कूरंभ गजर ॥
सामत सूर विक्रमे सुमन । अरि दल तिल मत्त्त गनिय ॥
॥ छं० १३७ ॥ रू० ७२ ॥

दोनो सेनाओ का सामना होना और निशान बज उठना ॥

दूहा अनी बधि प्रथिराज नृप । अनी पत सुरतान ॥
मिली सेन दूनो निजरि । गज्जे गोम निसान ॥
। छं० १३८ ॥ रू० ७३ ॥

---

७० पाठान्तर [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । सज्जौ । बाई । सु तान । भिरो । बधोब । [illegible] । [illegible] सान ॥

७१ पाठान्तर दछिन । दाहन । [illegible] । पामार [illegible] । गहिलोत । तोअर । गाय । पझार । दिसि । साहस्स । सजे । दछिन । रत्ता स । रत । चहुवान ॥

७२ पाठान्तर मध । प्रथिराज । अग सजे । सामन । रान । चंद जहुआन । वनकु । मथह अनीग । समन । मत्ति ॥

७३ पाठान्तर—बधी । प्रथीराज । सुरतान । दोनु । गजे । निसांन ॥

हुसैन और तातार खां की सेनाओं की लड़ाई होना अंत को तातार खां की फौज का भागना ।।

छंद भुजंगी -जगे गोम नीमानं इवान सेन । धमंकै धरा गान गज्जे मुगेंनं ।।
झरं पष्षर हार डालें ढलक्की । घन सेन संनाह दूनो चमक्की ।।छ०१३९।।
मिले मीर धीरं सुदिट्टं दुआनं । पलं एक जीव उभै सिंघ जानं ।।
दिसा बाइयं मार हुस्सेन अंनी । तिनं मज्झ सामंन सामंत मंनी ।।छ०१४०।।
भरं जाम जद्दों सुमाल्ह महनं । पलं गुज्जरं राम मंनै न मनं ।।
सजे सेंन अंनी महस्सं चियार । गुरुं जुज्झ भारी सुधारी करारं ।।छं०१४१।।
सनंमुष तनार बीसं महस्सं । घटा बंधि भट्टो बकं बीर रस्सं ।।
उडी सेन रेनं रुक्यौ रथ्थ सूरं । बकै दीन दीनं भर आप दूरं ।। छ०१४२।।
घनं बान कंमान डड्डै फि जगं । मनौं जोति पद्योन प्रस्नू निहंगं ।।
ढरक्की सिरी डार डारं दुरं । महानद्द सद्दं मनौ सिंघ पूरं ।।छ०१४३।।
बजै धार धारं सुझारं करारं । परै गज्ज सुंडं ढरै सूर भारं ।।
हकं हक्क बज्जी मजग्गी मकन्नी । परें रुड मुड परं श्रोनं रनी ।।छं०१४४।।
मिलें पान तातार हुस्सेन सेन । बकें उंच बाच गिर गज्जि गेन ।।
हयं छंडि कर तेयं मडि कन्ने । ममं संमुनं दुय सूर समन्ने ।। छं० १४५ ।।
महस्सं हयं छंडि हुसेन सथ्थं । सयं तीन तातें बिय हिद तथ्थ ।।
मरं पान तनार मन तरष्ष । हय छंडि काम मन मंति गम्म ।।छं०।।१४६।।
भई फौज तीर दुअ जुद्द धीर । दिपे नम्मल निज्ज साभिन्न बीर ।।
उभै डारि ओडं न गज्जो गुमान।जगै दीन मीर सुनस गुनगी कमान।छं०१४७।।
बजी नद्द नीमान भेरी भयद । गजै भूग गोम मनौ मेघ नद्द ।।
उभै हथ्थ पोले सुपग्ग करार । परे मुझझर मुभ्भर फूल धार ।।छ०।।१४८।।

---

७४ पाठान्तर--नीषान । दुवान । धमके । गजे । पषर । डालै । ढलकी । चमंकी । १३९ । म । दिठ । हुसन । अमी । मझ ।। १४० ।। जाम । गुजर । राम । मंने । महसं । जुझ ।। १४१ ।। सनंमुष । महस । बकै । रस । रथ । बकैं ।। १४२ ।। बांन । कमान । उडै । मनो । ज्योति । ढरकी । मनो । परै । गज । ढरें । हकें । हक । बजी । मजगी । मकनी । परैं । ओन रनी ।। १४४ ।। मिलें । पान । तता । हुसेन । बकें । गजि । दुअ । सूर । मनं ।। १४५ ।। महसं हुसेन । सथ । तथं । षान । महस । गम ।। १४६ ।। दुयं । युद्ध । दिपे । निम्मल । साभिन । डंडं । गजे । जगै । कमानं ।। १४७ ।। नद । नीमांन । गजें । मनों । नद । हथ । परें । मरं सुभर । १४८ ।। मवांन । मनौं । बन । झर्में ।। १४९ ।। ढरें । मनो । पावक । हुसेन । षानं । जुडें । हट । हयं । १५० ।। जुटें । जमि । बथं । सुनी

उभै आम जीवं नसा सूर छुट्टी । भरी काल संवान आयं सुघट्टी ॥
कगे अप्प ईसं दुईसं दुहाई । मनौ बन्न झज्झे गजं महराई ॥छं०॥१४९॥
ढरे उत्तमंगं उडै श्रोन पूरं । मनौ काल पावक्क झालं करूरं ॥
मिले घाइ हुस्सेन तत्तार षानं । जुटे इट्ट हथ्थ उभै काल जानं ॥छं०१५०॥
तुटैं आवधं मावधं लग्गि बथ्थं । सुनी कन्न कथ्थन्न दिठ्ठी अकथ्थं ॥
जमं दठ्ठ प्राहार छेदं छुल्लिक्का । उरा पार फुट्टै हबक्कै क्रमक्का ॥छं०१५१॥
कलेवार पेतं ढरं दूअचेतं ॥ उभै सूर झज्झै उभै साहि हेतं ॥
भिरे बान रूमीय षानं दठेलं । परं पाइ सांई हकै सेन पेलं ॥छं०१५२॥
षगे षंड षंडं निजं सामि अग्गै । न को हारि मंनै न को झूझ भग्गै ॥
हकै जाम जद्दौं मुत सिध वीरं । घरै आवधं आवधं ढारि धीरं ॥छं०१५३॥
भगी षॉन तत्तार अंनी बिहालं । भिगी साहि फौजं टरी गज्जढालं ॥
॥ छं० १५४ ॥ रू० ७४ ॥

दूहा सहस पंच रन मीर परि । साथ सुषांन ततार ॥
परे हुसे० सुत्तीन सै । गै दो हिंदू मार ॥ छं० १५५ ॥ रू० ७५ ॥
गाथा नंचिय तीस कमंध । करि झोरी षॉन ततार ॥
दिष्पिय रनसुर बद्द । भय रसं अद्भुत भयानं ॥ छं०१५६॥ रू० ७६ ॥
भग्गिय अनी षॉन★ततार । चपिय जद्दव महा असवारं ।
वज्जिय बर नीसान । सज्जिय जुद्ध हिंदू सवान ॥
॥ छं० १५७ ॥ रू० ७७ ॥

खुरासान खां का आगे बढ़कर लड़ना ॥

छं० त्रोटक सजि संमुष षुरसान दलं । जग डम्बर बंबर [illegible] ॥
बजि भेरि नफेरि भयान सुरं । घनन क्किय घुघ्घर घट घुरं ॥छं० १५८॥
गजघोर निसानत घुमरयं । दिग अठ्ठ धरा धर धुंमरयं ॥
मिलिवीय अनी दुअ आवधयं । भरबछि उभै पल सावधाय ॥छं० १५९॥
झर आवत्र आवत्र झाक धरं । कटि मंडल्ल षंडल्ल ढारि ढरं ॥
धरि पेलहि सेलहि केस कसं । रस होइ भयानक रुद्र रस ॥छं० १६०॥
असि षंड विहंडति हैवरयं । गज मुंडह मुंड ढरै धरयं ॥
धर लुट्टहि जुद्धहि रंधरयं । मिलिवीय अनी दुअ आवधयं ॥छं० १६१॥

कथ्थ कंनेन दिट्ठी अकथ्थ । प्रहार । उराफार । फुटै । हबके । क्रमका ॥ १५१ ॥ कलेवार । ढरें । झझैं । भिरे । षान । रूमीय । [illegible] । परे । पाय । हके ॥ १५२ ॥ सांइ । अगैं । भो । जाम । जदौं । ढरे ॥ १५३ ॥ विहालं । मिली । गज ॥ १५४ ॥

७५ पाठान्तर हुसेन । सै । दो । दोइ । हिंदू ।

७६ पाठान्तर -नचीय । कमध । दिषिय । बद । रस अद्भुत । भायानं ।

झरयं फिर गिद्धय रोर रुलं। धर श्रोन प्रवाहति पूर चलं ॥
करि डक्कह डक्कति बीर नचे।सिर माल सु ईसर आनि सचैं॥छं०१६२॥
बर बीर भरे भर अच्छरियं। सुर रोर सकत्तिय मच्छरियं ॥
हनि हक्कहि षां षुरसान रिनं।द्रिग दिष्षिय चावड राय तिनं॥छं०१६३।
मिलि आवध सावध दुब्भरयं। हय धाय गुरज्जत सुज्झरयं ॥
क्रमि चामँड सगिय झारि झरं। जुग फुट्टिय जानु हय ममरं ॥छं०१६४॥
सम षां षुरसान सहाब परं। बहि शृंगय शृंग समूर ढरं ॥
दस षान हयं तज उप्परयं। बदि जीह दुरी हति दुप्परयं ॥छं० १६५॥
पग छंडिय चामँड राइ रिन। दिषि राज पुँडीर तज्यौ हयनं ॥
मिलि चपिय ढारन षान धरं। तब भग्गिय फौज अरुज्झ परं ॥
॥ छं० १६६ ॥ रू० ७८ ।

ख़ुरासान ख़ां की फौज का भागकर मुलतान की फौज के साथ मिलना और कैमास का चढ़ाई करना ॥

दूहा भगी अनी षुरसान षा। मिलिय जाइ मुरतान ॥
चढ़िय फौज कैमास तब। मज्जे मिर अममान ॥छं० ६७॥ रू० ७९।

बाईं ओर से जमान, दाहिनी ओर से कैमास और सामने से पृथ्वीराज का चढ़ना ॥

गाथा झोरी षा षुरसान। परिय मोर रन महसेय ॥
बढ़्ढिय जैतसु राज। भग्गिय सेन देषि सुरतान ॥छं० १६८ ॥रू० ८०॥
दिसि बाईं जामान। दिसि दाहिनी चपिय कैमास ॥
सनमुष चपिय साजं। जै जै जपि राइ चहुआन ॥
॥ छं० १६९ ॥ रू० ८१ ॥

७७ पाठान्तर भगीत। ★ अधिक [illegible] और प्राचीन मे [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

७८ पाठान्तर [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । १५८ घुमरय । [illegible] । [illegible] । १५९ । [illegible] । [illegible] ॥ १६० ॥ [illegible] मुड़ह । १६१ ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] । [illegible] सकत्तिय । [illegible] । [illegible] । षुरसान । दिठिय । [illegible] । १६३ ॥ आउध । [illegible] दुभरय । [illegible] । सुझरय चामड । जान ॥ १६४ ॥ षुरसान । [illegible] । समूर । उप्परयं । [illegible] । उप्परय ॥ १६५ । चावड । चामड । पुंडीर बान । भग्गिय अपुझ ॥ १६६ ॥

७९ पाठान्तर—षुरसान । जाय । सुरतान । मजे अमहान ॥

८० पाठान्तर—गादा । षुरसान रन । महसय । बढ़िय । जै तस । भगी । भगीनी । सेन । सुरतान ॥

८१ पाठान्तर--बाई । चपिय । राय ॥

युद्ध का वर्णन ॥

छंद नाराच जय जयंति जपिय। चढ़े सुगाज चपिय ॥
बहंत बान बानयं। ग्रहंत गोम छानय ॥ छ० १७० ॥
करी सुफौज एकय। बहंत नाम नेकय ॥
बहंत बीर आवध। करंत बीर गावधं ॥ छ० १७१ ॥
हबक्कि मग्ग मग्गय। बहंत अग्ग अग्गय ॥
झटा पटा झमक्कय। करीअ रीन टक्कय ॥ छ० १७२ ॥
ममं भरं बगत्तरं। हुवंत पट्ट पट्टरं ॥
ढरंत रुंड मुंडय। भ्रमंत जंत तुंडय ॥ छ० १७३ ॥
फरं फरंत फेफरं। बुलंत ते डरं डरं ॥
कटे सुगात सिप्पयौ। परंत घाव घिप्पयौ ॥ छ० १७४ ॥
करंत हक्क हक्कय। भ्रमंत धक्क धक्कय ॥
चढंत देत दंतरं। अरं अझंत अंतरं ॥ छ० १७५ ॥
भभक्कयंत श्रोनय। बहंत वेग कोनय ॥
सरप्फरंत सिद्धयों। किलक्किलंत सिद्धयों ॥ छ० १७६ ॥
नचंत मद्धि नारियं। परंत बीर नारियं ॥
डहक्कि डक्क डम्मरं। धमं धमंत भीमरं ॥ छ० १७७ ॥
फिकारियंत फेरियं। पलं चरंत रेरियं ॥
सपूर श्रोन मक्कती। गुरं सुरंग हक्कती ॥ छ० १७८ ॥
किल मुकट्ट धामय। मनंत मनि तामय ॥
कटे सुगज्ज कंधरं। विहंड षंड पड्डरं ॥ छ० १७९ ॥
करंत गज्ज चिक्करं। फिरंत सूर फिक्करं ॥
किनक्किनंत बाजयं। जमं ग्रहंत गाजयं ॥ छं० १८० ॥
बहंत श्रोन नद्दियं। चलंत सूर मद्दियं ॥
धरं गजं बिकं टय। हय अनेक संठय ॥ छ० १८१ ॥
तरं सझडं झालयं। रजंत संगि लालय ॥
धरं परंत मच्छयौ। गजं सु सीस कच्छयौ ॥ छ० १८२ ॥

---

८२ पाठान्तर छंद लघुनाराच। नराज छंद। बांन। बनियं ॥ १७० ॥ आउध ॥ १७१ ॥ हबकि। झटकय। टक्कयं ॥ १७२ ॥ नरं ॥ बगतरं। हुअंत ॥ १७३ ॥ फर। पाय। सिपयौ ॥ १७४ ॥ धकधकय। रंनदंतरं। अझ्झरंत ॥ १७५ ॥ भभकयंत। सरफरंत। किलकि। १७६ ॥ मठि चरियं। दियत। वीर। डहकि। धम ॥ १७७ ॥ फेबियं। संपूर। मकती। हकती ॥ १७८ ॥ कामयं। गज

गजं सुमुंड ग्राहयो । सुरंजि श्रप्प चाहयो ॥
रजंत बीर नम्मयं । भयं दपंति जम्मयं ॥ छं० १८३ ॥
पलं अनंत पक्कयं । कुकातर भयंकयं ॥
सुहत सीस अंबुज । पटं पदं द्रिगबुजं ॥ छं० १८४ ॥
कच सिवार बिथ्थुर । सुगधि पंषि कदुर ॥
वहंत पूर जोरय । कल्लर मद्द रोरयं ॥ छं० १८५ ॥
सुनान पति गोमयं । उचत वीर सेनय ॥
अनेक रंग चमरी । वहत जीन पमरी ॥ छं० १८६ ॥
वही अनेक साकते । कहत चद्द वाकते ॥
अनेक रथ्थ अच्छर । बरत सूर मच्छर ॥ छं० १८७ ॥
रजोद कठ सक्कती । रजत श्रोन रक्कती ॥
हहक्क रत साजय । झरत जेम वाजय★ ॥
॥ छं० १८८ ॥ रू० ८२ ॥

पृथ्वीराज की सेना का बढ़ना, और मंडलीक का मारा जाना।

कवित्त –वाज जेम चहुआन । डारि सेना अर मुज्झर ॥
कोउ ल्लन केल्लत्त । गज्ज ढाहे धर मुद्धर ॥
ठेलि अनी दम पट्ट । झक्क वाजनी ढारी ॥
मारि मीर अनभग । विधर जु सेभर मारी ॥
मंडलीक सूर पिज्झिय सुभर । जुटे पान सु गज्जनिय ॥
मडलीक सीस तुट्टे विलगि । हन्यो पान जिन चचनिय ॥
॥ छं० १८९ ॥ रू० ८३ ॥

कवित्त –विना सीस मडलीक । हन्यो गज्जनीय पान गुर ॥
अवर मीर च्यालीस । जुज्झ ढाह भर गुज्झर ॥

॥ १७९ ॥ गज । चितर । फिर । सिनफिनन ॥ १८० ॥ नदीय । सदीय । धर । गढ । विकठय । मठय ॥ १८१ ॥ मठयो । पटीम । कठयो ॥ १८२ ॥ किगजन । ग्राहयो । सिरजि । श्रय । चाहयो । रज । बीर निम्मग ॥ १८३ ॥ सुभत सीस । दिग । १८४ ॥ बिथुर कठर । कमूर ॥ १८५ ॥ गोमयं । वीर सेमय । जान समदी । १८६ ॥ रथ । अछर । मछर ॥ १८७ ॥ सकतो । रकती । हहक । रत ॥ १८८ ॥ ★ यह तुक ए सो की प्रति मे नही है।

८३ पाठान्तर –चहुवान । सुभर । केउल्लन केल्लत । गज । वाजनी ढारी । मारि मार । मडलीक । पिजिय । गजनीय । मडलीक । सीश तुट्ट । बिन सीस नीय ॥

परत सुअन पर सग । बुद रुधिर नर बुढ्ढिय ॥
सुहथ षग्ग सब एक । बीर करि किलकि सुउड्डिय ॥
रत्तरे गात उत्तग तन- उद्ध रोम झारत असि ॥
गहि दन्त दंति धरि पुछ हय । उड्डि सुनचिय बीर हसि ॥
॥ छं० १९० ॥ रू० ८४ ॥

शहाबुद्दीन की सेना का भड़कना और पृथ्वीराज की सेना का पीछा करना ।

कवित्त -भरकि सेन साहाब । डरिरि भगो हय गय नर ॥
घरिय एक बित्ती । बिहर अट्टे अघाम हर ।
दिष्षि दिष्ट साहाब । राउ चामंड बीर वर ॥
चद्रसेन पुंडीर । जाम जद्दौ भर सुम्भर ॥
कैमास दिट्ठि दिष्षौ समर । क्रमे क्रमे च्यारि गहन सुबचि ॥
इत्तन सुबीर अट्ट अरगि । रन रंग आवध रीठ मचि ॥
॥ छं० १९१ ॥ रू० ८५ ॥

घोर युद्ध का वर्णन ।

छंद त्रिभंगी मत्ति मन आवद्ध रीठ । भर हरि देन सुम्भर पीठ ॥
हक्कै सूर अगार नार । भर नर परै बुड्डिय धार ॥ छं० १९२ ॥
जपै उभै दीन जु वान । जुट्टिय मत्त मत्तिय पान ॥
बह बहक्क कह कह कै हार । बज्जै बिषम आवध झाक ॥ छं० १९३ ॥
परि रुर थरै उठ्ठ एक । नम्मी उठ्ठि झारै नेक ॥
पट्ट पट्टी आवध मार । बाहै बीर बार बार । छं० १९४ ॥
अन्यो अन्य मद्दे नाम । आवध ग्रहे अप्पन नाम ॥
हह करै इष्ट संभारि ॥ उट्ठे बिरद धारी झारि ॥ छं० १९५ ॥
अदभुत्त बीर भैयान । मचिय कक बिषम कृपान ॥
नर बर बरय हम रंभान । उड्डिय नेह ग्रेहनि जानि ॥ छं० १९६॥

---

८४ पाठान्तर -मडलीक । सुत ढाह भर सुभर । बुंढ्ढ्य । उड्डिय । रत्तरे । उत्तग । उध उड्डि । हसि ॥

८५ पाठान्तर घरीय बिहर । अड्डे । जाय सुहर भर । अघाम । दिषि । राय चामुंड । जाम । जद्दो । सुभर । गहन । सुमीर । अड । दिन ॥

८६ पाठान्तर —छंद । उझोर । मत । मद्ध । देन । सुभर । हकें । अगर । परें ॥ १९२ ॥ जुवान । बह बह कक हक्कै हाक ॥ १९३ ॥ थरे । उठि । नमि । मारें । पट पट्टि । बहि । १९४ ॥ मद्दे । नाम । ग्रहै । अप्पनै । ताम । हह । द्रष्ट । संभारि । उठे ॥ १९५ ॥ अद्भुत । अदभूत । भैयान । मचि । ककम । क्रमान ॥

तुट्टिय सेन पल तिष तीर। इन परि जुद्ध जुट्टिय धीर ॥
तरै सांई उप्पर भ्रत्य। सेवक उद्ध सांई किति ॥ छं० १९७ ॥
चौसठि क्रंम लोथि पथार। भर परि धरह लुब्भिय हार ॥
उप्पर भिरे सामंत सूर। मत्तौ जुद्ध इन कहर ॥ छं० १९८ ॥
ठेलै एक एकें वीर। गज्जै दीन जपै मीर ॥
चावंड राव जद्दों जामि। मारू महन गूजर राम ॥ छं० १९९ ॥
गोविंद राव विकसिय भाल। मानो कोपियंते काल ॥
आवरि बीर च्यारो बीर। धारे षग्ग दोकर धीर ॥ छं० २०० ॥
हक्कें बीर जपै बानि। जुट्टे इम केहरि जानि ॥
चंपै मीर तुट्टे मार। नचें कमध अठ्ठ उझार ॥ छं० २०१ ॥
भग्गे परे के अगिवान। बढी जैन राव चहुआन ॥
सतै सहस लुथ्थिय भार। परि रन मीर धीर पथार ॥
॥ छं० २०२ ॥ रू० ८६ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का शहाबुद्दीन का पीछा करना ॥

कवित्त परे मरि पथ्थार। माह हक्कयौ रा★ चावंड ॥
मं मुह गोरी चपि। मनो गज मो गज आमड ॥
चद्र सेन पुडीर। आइ मज्यो दिसि वाम ॥
क्रमि मनमुष कैमास। हक्कि जद्दव राजामं ॥
पुडीर राइ चामड भर। गहे दून दूनो मुकर ॥
हं हन्यो जाम जद्दव उझर। मिलि चिहु चपिय षंड भर ॥
॥ छं० २०३ ॥ रू० ८७ ॥

सुलतान का पकड़ा जाना, उसकी सेना का भागना, और पृथ्वीराज की विजय ॥

कवित्त– गह्यो षचि सुरतान। डारि अड्डो है चामड ॥
भगी सेन बेहाल। परे घन थान थान थड ॥

रंभान। उटिय। जानि ॥ १९६ ॥ तुटिय नरे ॥ माट। उप्प। ऊपर। भृत। सांइ। क्रत ॥ १९७ ॥ लुथि। लुभिय। भिरें। सामन। दुनो ॥ १९८ ॥ एकें। गर्जै। चावंड। जाम। गुजरा। राम ॥ १९९ । गोइद राय। गोविंदराव। गोइदराइ। विकसि। मानों। कोपीयते। आवरि। धारे। धारे। षग ॥ २०० ॥ हुकें। बानि। इम। जानि। चपे। तुट्टें। कमध्र ॥ २०१ ॥ भग्गे। परें। अगिवांन। बीतरा। चहुवांन ॥ सतै। लोथीय। लुथिय ॥ २०२ ॥

८७ पाठान्तर– पथार। हक्यो। ★ अधिक पाठ है ॥ गोरी। मनों। क्रमि मनमुष पुंडीर। मंजि जद्दव राजामं ॥ राय। राव। गहै। जांम। चंपियं ॥

ग्रहन अग्र सुरतान। परे षां न्याजी गाजी ॥
मीर मान कम्मांन। पर्यौ आरब अरि भाजी ॥
को गनै षान मीर रु अवर। महम मत्त तुट्टे मुधर ॥
नच्चै कमंध च्यालीस रम। जै लभ्भी चहुआंन भर ॥
॥ छं० २०४ ॥ रू० ८८ ॥

दूहा -मंडलीक षीची परयो। नीकम त्यार सुबंध ॥
राम वाम पंमार परि। नच्चि सामन कमंध ॥
॥ छं० २०५ ॥ रू० ८९ ॥

सूर्योदय से एक घड़ी पांच पल पर लड़ाई प्रारम्भ हुई और चार घड़ी दिन रहे सुलतान पकड़ा गया, बीस हजार मीर और सात हजार हाथी घोड़े मारे गए, हिन्दू तेरह सौ मरे, तीन कोस में लड़ाई हुई, सुलतान को अपने डेरे में लाए ॥

कवित्त घरी एक पल पंच। सूर ऊगत सज्ज्यौ जुध ॥
घरी च्यारि दिन सेष। ग्रह्यौ सुरतान रान उध्र ॥
सहस बीस इक अग्र। परे रन मीर समथ्थ ॥
सहस्स सत्त हैगै। समूह षंडे धर तथ्थं ॥
सय तेर परे हिंदू सयन। कोस तीन रन अद्ध परि ॥
सुरतान गहिय चहुआन पहु। आयौ वज्जत वज्ज घर ॥
॥ छं० २०६ ॥ रू० ९० ॥

रणक्षेत्र में ढूंढकर पृथ्वीराज का मीरहुसेन को लाश निकलवाना ॥

दूहा षेत ढंढि प्रथिराज नृप। बजे जीत रन तूर ॥
षा हुसेन घन घाव घट। उधारिग वर सूर ॥
॥ छं० २०७ ॥ रू० ९१ ॥

पातुरि का जीते जी हुसेन के साथ कब्र में गड़ जाना।

दूहा पर्यौ हुसेन सुराब सुनि। चितिय चित्त इमान ॥
सजो घोर हुससेन सथ। करो प्रवेस अपान ॥
॥ छं० २०८ ॥ रू० ९२ ॥

---

८८ पाठान्तर सुरतान। अग्रा। है। नामह। षान षान। सुरतान। मांन। कमान। भागी षान। सु। तुट्टे। मधर। नचं। भी। चहुआन ॥

८९ पाठान्तर दोहरा। राम। वाम ॥

९० पाठान्तर -उग्गत। गहनौ। सुरतान। पानि। पारं। तुज। समर्थ। सहस। समूह। षडे। तथ। परे। सुरतान। चहुवान ॥

९१ पाठान्तर -प्रथीराज। उगारिग ॥

९२ पाठान्तर -इमान। सजो। हुसेन। करों। अपान ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को पांच दिन आदर के साथ रखकर, तीन बेर सलाम कराके मीरहुसेन के बेटे ग़ाज़ी को उसको सौंप कर यह प्रण कराके कि अब हिन्दुओं पर न चढ़ूंगा, छोड़ना, शाह का ग़ाज़ी को लेकर कुशल से गज़नी पहुंचना ॥

कवित्त– रष्षि पंच दिन साहि । अदब आदर बहु किन्नो ॥
सुअ हुसेन गाजी सुपुत्त हथ्थे ग्रहि दिन्नो ॥
किय सलाम तिय वार । जाहु अप्पने सुथानह ॥
मति हिंदु पर साहि । सज्जि आओ स्वथानह ॥
बैठाइ साह सुष्षासनह । लाय अप्प गाजी सुसथ ॥
संपत्त जाइ गज्जन पुरह । करी पैर उद्धार अथ ॥
॥ छ० २०९ ॥ रू० ९३ ॥

अमीरों का सुलतान के जीते जागते लौटने पर बधाई देना और कुशल पूछना ॥

दूहा और बधाई ऊमरा । करी आइ सुरतान ॥
अन्य सबन कीनी पयर । पुजिय पीर ठटान ॥
॥ छ० २१० ॥ रू० ९४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हुसेन षां चित्ररेखा पात्र अधिकारे पातिसाह ग्रहन नाम नवम प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ९ ॥



---

९३ पाठान्तर– सपुत्त । हथ्थें । दिन्नो । सल्लाम । बेर । सजि । आयो । सथानह । वैठाय । सुषासनहि । लीय । सथ । आय । गजनपुरह ॥

९४ पाठान्तर– उमरिनि । उमरनि । आय । सुरतान । अन्य । पुजीय ॥

उपसंहारिणी टिप्पणी

यह पर्व्व वा समय हिन्दुस्थान के इतिहास में हिन्दुओं की बादशाहत के तो नाश होने और मुसल्मानों के स्थापित होने के सत्य मूल कारण को ज्ञान करानेवाला है तथा यह वह कारण है कि जिसको सब मुसल्मानी तारीखों ने जान बूझकर छिपाया है। इस हीं से इस में लिखे वृत्तादि का मुसल्मानी तारीखों में मिलना कठिन हो रहा है। जब कवि यह न लिख गया होता तो हमको इस समय वह ही ज्ञात होता कि जो मुसल्मानी तारीखों में लिखा मिलता है। यद्यपि चंद पृथ्वीराज और हिन्दुओं का पक्षपाती कहा जा सकता है तथापि उसने मुसल्मानों की भांति विपक्ष के वृत्तों को बिल्कुल छिपाया नहीं है किन्तु उनकी अपेक्षा उसने कुछ सविस्तर लिखा है कि जिनमें से अन्य बातों को छोड़कर ऐतिहासिक अंश हम पृथक् कर सकते हैं। जिस हुसैन की कथा का यह समय है वह कौन था? इस का स्पष्ट पता मुसल्मानी तारीखवाले नहीं देते हैं, किन्तु यूरोपियन विद्वानों ने उसका पता लगाने में बड़ा परिश्रम किया है। जब कि मुख्य पुरुष का पता लगाने में इतनी कठिनता है तब अन्य योद्धादि के जो नामादि इसमें आए हैं उनका पता लगाना कितना कठिन है। इस विषय में बहुत कुछ लिखने की अपेक्षा हम डाक्टर होर्नली साहब का एक ऐसा नोट नीचे प्रकाशित करते हैं कि जिससे इस हुसैन का पता और चंद का उसको शहाबुद्दीन का बांधव बताना सत्य ज्ञात हो जाए। उक्त डाक्टर साहब का लिखना यह है

195. Hussena Khana (Husain Khan) appears to have been a son of the Mir Husain, who as related in Canto 8, was the primary cause of the invasions of India by Shahab ud din. Mir Husain or, as he is variously called Shah Hussain or Husain Khan, is there said to have been a cousin (bandhava) of Shahab ud-din, a distinguished warrior, living at the Shah's Court at Ghazni The Shah had a beautiful mistress. named Chitrarekha, to the story of whom the 10th Canto is devoted. She was fifteen years old and very skilful in music, and was greatly beloved by the Shah. Husain fell in love with her and she with him. One morning the Shah sent for him and upbraided him on his conduct. But Husain continued to intrigue with Chitrarekha and was forced to leave the city. He carried off his family and property and Chitrarekha and fled to Prithiraj to Nagor. Prithiraj, after some hesitation,

welcomed him and gave him asylum. Hearing of this, Shahab-ud-din was furious and sent messengers to demand Chitrarekha from Husain; failing which, in they were to demand the expulsion of Husain from Prithiraj Husain refused to send the woman back, and Prithiraj replied, he could not give up the man who came to him for refuge Shahab ud-din receiving this answer, at once prepared to invade India; Prithiraj, on his part also prepared for war In the battle that ensued, Husain distinguished himself greatly, but lost his life Chamand Rae succeeded in capturing the Shah, and thus the battle was decided in favour of Prithiraj After five days the Shah was released and allowed to return to Ghazni taking Ghazi, Hussain's son with him and pledging himself no more to make war upon the Hindus The pledge, it need hardly be said, was not kept by the Shah and the implacable hatred, which these events had created in his mind was never appeased till it was slacked in the blood of Prithiraj and the destruction of his Empire The capture of the Shah, here related, is the first of the seven times, he is said to have become the captive of Prithiraj The next occasion of his capture is referred to in note 87; once more, he is made captive as related in the present. Canto Chitrarekha is said to have burned herself with the corpse of Husain. If the Husain Khan mentioned here, is the son of the elder Husain, who was taken to Ghazni by Shahab ud-din, he must have made his escape afterwards and returned to Prithiraj The elder Husain is undoubtedly the same as Nasir ud-din Husain who is repeatedly mentioned in the Tabaqat-Nasiri (Major Raverty's translation pp. 344, 361 364, 365). He was the older of the two sons of Malik Shihab-ud-din Muhammad, a younger brother of Sultan Baha ud din Sam the father of Sultan Shahab ud din The elder Husain, therefore, was as Chand correctly states a cousin (bandhava) of the latter, In the Tabaqat, it is true, it is said that Nasir-ud-din Hussain usurped the throne of his uncle Ala-ud-din during the latter's temporary captivity at the Court of Sultan Sanjar of Khorasan, and that he was murdered

by his uncle's partisans on the latter's return from captivity (p. 364) But firstly, this story is contradicted by all other Muhammadan historians, who pass at once from Ala ud-din to his son (see Major Raverty's foot note, p 364) Secondly it is more probable that if there was any usurpation at all, it was made by Nasir ud-din'n Suri Baha ud-din Sam, and Ala-ud din Hussain, succeeded each other on the throne of Ghor; it is natural, therefore, that during Ala ud din's captivity the fourth brother Shihab ud-din Muhammad, should have occupied or attempted to occupy the throne The writer of the Tabaqat must have confused father and son, as he has done also on other occasions (e g with regard to Ziya-ud-din Muhammad). Thirdly the description of Nasir-ud-din Husain's character : "he had a great passion for women and virgins, and had taken a number of the handmaids and slave girls of the Sultan's harem" (Tabaqat p. 364), agrees with Chand's story about his intrigue with Chitrarekha and has evidently a confused recollection of it There can, therefore, be little doubt that Chand gives substantially the true account of Husain's fortunes It may be added, that both the Tabaqat and other Muhammadan histories give a rather confused relation of an ancestor of this Husain (and of the Ghori royal family generally) who also bore the name of Husain or Hasan, having fled to India, and having lived some time at Delhi (see Tabaqat pp 322, 323, 332); There is perhaps in this a confused recollection of the flight of Husain to Prithiraj related by Chand

अभी हमने इस कथा के नायक हुसैन खां ही का अपने पाठकों को बतलाया है किन्तु अन्य जितने योद्धाओं के नाम इस में आये हैं उनका हम पता मुसलमानी तवारीखों में लगा रहे हैं और अन्य विद्वानों से भी उनके विषय में निश्चय कर रहे हैं, अतएव उनके विषय में फिर निवेदन करेंगे। अभी तो हमारा इतना ही काम है कि इस महाकाव्य को इतना शोध कर प्रकाशित करा दें कि विद्वान इतिहासवेत्ता उसे अवलोकन कर सकें, इत्यलम् ॥

अथ आषेटक चूक वर्णनं लिष्यते ॥

(दसवां समय)

एक वर्ष बीत गया, परन्तु शहाबद्दीन के हृदय में पृथ्वीराज का बैर सालता रहा ॥

दूहा बरष एक बीते कलह। रीस रष्षि सुरतान ॥
उर अंतर अग्गी जलै। चित सल्लै चहुवान ॥ छं० १ ॥ रू० १।

एक महीना पांच दिन गजनी में रह कर फिर हुसैन का पृथ्वीराज के पास आप जाना ॥

दूहा मास एक दिन पंच रहि। बद्धि धाइ हुसेन ★ ॥
पग लग्गो चौहान कै। राज प्रसन्निय बैन ॥ छं० २ ॥ रू० २ ॥

फिर पृथ्वीराज का आषेटक माड़ना और शहाबुद्दीन का चूक करने को आना ॥

दूहा फिरि आषेटक मंडि नृप। पट्ट बन घन नाम ॥
इन साहि साहाबदी। आइ सपन्न पाम ॥ छं० ३ ॥ रू० ३ ॥

नीतिराव क्षत्रिय का शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज के आषेट का समाचार देना ॥

कबित्त नीतिराव षत्रीय। चष्षि ग्रेह चहुआनं ॥
दिल्ली को वर भेद। लिषे कग्गद सुविहान ॥
बरष उभै षट मास। करै सुबिहान पलान्यो ॥
पट्ट बन घन राज। बीर आषेटक जान्यो ॥

---

१ पाठान्तर बीतै। मयल्ल। रषि। सुरतान। अंदर। अगी। सल्लै चहुआंन ॥

२ पाठान्तर -बाध। बधि। धाय। धाइ। धाव। हुसेन। लग्यो। चौहान। बैन ॥ ★ यहां "हुसेन" से कवि का अभिप्राय हुसेन कथा नामक समय के चित्ररेखा को लानेवाले हुसेन के बेटे गाजी हुसेन से है कि जिसको पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को हाथ पकड़ा कर गजनी भेज दिया था। (हुसेन कथा रूपक १३) परंतु शाह ने गजनी पहुंच कर उसे भी कैद कर दिया था सो वह जेल से कतल करके पीछे फिर १ महिने और ५ दिन वहां रह कर पृथ्वीराज की शरण में आ गया।

३ पाठान्तर—पट्ट। इत्त। दी। आय। संपन्ने ॥

सामंत सूर सथ्थंन को । बर वीरं तन पेल्लइय ॥
दैवान जुद्ध चहुआन भर । भिरि दुरजन भर ठिल्लइय ॥
॥ छ० ४ ॥ रू० ४ ॥

आषेट का अच्छा अवसर पा कर शहाबुद्दीन का भेद लेने को दूत भेजना, दूत का समाचार देना, शाह का सरदारों को आज्ञा देना कि छिप कर पृथ्वीराज पर चढ़ाई करो ॥

दूहा इक तप पग नरिंद को । अह★ सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय । पट्टवन चहुवान ॥ छ० ५ ॥ रू० ५ ॥

कवित्त आषेटक वन तकिक । इन गज्जनें सपत्ते ॥
साह जोर साहाब । दिए फुरमान निरत्ते ॥
हसम हय गय सुबिर । राज पट्ट बन पिल्लै ॥
सामन्त न को मध्य । अझ्झ गुज्जर दिसि मिल्लै ॥
निकस्यो द्रव्य साहाब दिय । बर नागौर ग्रह धन ॥
इह घात माहि गोरी सुबर । करो चूक कै सज्ज रन ॥
॥ छ० ६ ॥ रू० ६ ॥

हाजी खां आदि का तयारी करना ॥

चौपाइ आपेटक पट्ट, चहुवान । कहै पूत से सुष सुविहान ॥
हाजी षा गाषर सुकताजी । सइयाँ चक महमद गाजी ॥
॥ छ० ७ ॥ रू० ७ ॥

शहाबुद्दीन का आज्ञा देना कि इस बात का भेद लो कि कितनी सेना चौहान के साथ है क्योंकि बिना भेद कुछ काम नहीं बनता ॥

कवित्त से बुझ्झै सुरत्तान । दूत पच्छिम सुबिहान ॥
आपेटक प्रथिराज । मध्य कित्तक चहुआनं ॥

---

४ पाठान्तर ग्रेह । चहुआन । कगार । कोपि नृ । बिहान । पलान्यो । पटु । जान्यो । सपह । सथा । को । को । पेल्लईय । दैवान । चहुआन । दूजन । ठिलईय ॥

† नीतिराव पत्रिय नामक मुकबिर था कि जो पृथ्वीराज के यहा की खबरें शहाबुद्दीन को दिया करता था । वाह यह कैसा देश द्रोही पुरुष था ! ! !

५ पाठान्तर- को★ अधिक पाठ है ॥ सुरतान । पृथ्वीराज । पट्ट । चहुवांन ॥

† यह रूपक सं० ६४७ की प्रति मे नही है ॥

६ पाठान्तर- गजनै । सपत्ते । दीए । फुरमांन । पट्ट । षिल्लै । मध । सुम । गुजर । मिले । द्रव । दी । नागोर । सजि ॥

तुम राजन निमांन । राज विव्वेक परष्यौ ॥
तुम★स्वामी ध्रंम दृग स्वामि । स्वामि द्रोही तन लष्यौ ॥
जंगली नृपति जंपहु चरित । छल बल मंत सु किज्जियै ॥
ततार षांन षुरसान षां । हिंदू भेद सुलिज्जियै ॥
॥ छं० ८ ॥ रू० ८ ॥

कवित्त भेद द्रुग्ग भंजियै । भेद दुज्जन दल भंजै ॥
राजभेद बंधियै । भेद देवनग्रह रंजै ॥
मंत्र मोइ जिन भेद । भेद बिन मतौ न होई ॥
भेद बंध बल सोइ । भेद देषै सब कोई ॥
संग्रहौ भेद चहुआन कौ । सुष उचार जो जंपियै ॥
ततारषान षुरषान षां । बलहन दुज्जन चंपियै ॥
॥ छं० ९ ॥ रू० ९ ॥

सब सरदारों का मत होना कि बिना धोखा दिए चौहानों को जीतना कठिन है ॥

कवित्त -चहुआन जम वान । गेन मुक्कतें मुछुट्टै ॥
कुटिल दिष्ट जिहि फिरै । तेज अरियन दल षुट्टै ॥
प्रबल तेज अस हेज । जुद्ध दैवान देव गति ॥
एक कलप लेषियै । एक लषियै लषपन भंति ॥
इह जानि चक्क चिन्त्यो नृपति । इहै बत सुबिहान कौ ॥
ततार षांन निसुरत्त षा । पुच्छि षान षुरसान कौ ॥
॥ छं० १० ॥ रू० १० ॥

कवित्त षा षुरसान ततार । षान अरदास ससषिय ॥
चक्क मंडि सुरतान । थान चहुआन सुबषिय ॥
हाजी ष्वा गाजी सु । बंध निज बंधी गष्षर ॥
सुबिहान साहाब । माहि मोर दल पष्षर ॥

---

८ पाठान्तर -तुमं । तु । राज । तुं । तुमे साहाब । साह पच्छिम सुरतान ॥ प्रथीराज । मत । विवेक । विवेक । चहुवान । विवेक परष्यौ । ★ अधिक पाठ है ॥ स्वांमि । द्रग । स्वामि । साम । तन । लष्यौ । ततार । षुरसान ॥

९ पाठान्तर -द्रुग । भंजीयै । दुजन । बंधीयै । ग्रह । सोई । सोय । देषो । चहुवांन । जपीयै । ततार । षुरसान । दुजन । चंपीयै ।

१० पाठान्तर -चाहुवान । जमवान । मुकतें । जड़ । लप । लेषीयै । एक लेषियै । जानि । चिन्त्यौं । इहै । बिहांन । ततार । निसुरत्त । पुछि । षुरसांन कौं ॥

निज षान षान षुरसान पति। हथ्थ साहि बल्ल बधियै ॥
मिलि मीर मसूरति तत किय। चृह साहि अरि सधियै ॥
॥ छं० ११ ॥ रू० ११ ॥

पृथ्वीराज का बेखटके आनन्द से आखेट खेलना ॥

दूहा रग रमै राजान बन। नहीं सक मन माहि ॥
तरु बेली घन गह बरिय। सुभि जल्ल निरमल्ल छाह ॥
॥ छं० १२ ॥ रू० १२ ॥

पृथ्वीराज के आखेट का वर्णन ॥

कवित्त मतह पच दीपीय। गण फदंत पच मों ॥
महम स्वान दम डोरि। ग्रहै पचान पच मो ॥
पच अग्ग पचाग। करु चाव द्रिमि मज्जे ॥
कुही बाज उत्तग। पग आघात सुबज्जे ॥
परगोम सिह पजर गृहा। धनुष धनषिय धार घन।
प्रथिराज राज मट्टे रवनि। आषेटक पट्ट सु बन ॥
। छं० १३ ॥ रू० १३ ॥

आठ हजार सेना और सरदारों के साथ शहाबुद्दीन का पट्टूबन मे छिपकर पहुंचना।

कवित्त षा ततार षुरसान। षान हाजी षा गाजी ॥
गष्षर पष्षर माह। मीर महमद षा बाजी ॥
अष्ट सहस असवार। तुग तिय अग्ग बनाइय।
पेसकमी पतिसाह। कूर पर पचन आइय ॥
सेनाह सज्जि अंदर मिलह। नह पिषै जामे रंचह ॥
करि चूक आइ पट्ट बनह। प्रथीराज चहुआन जहं ॥
। छं० १४ ॥ रू० १४ ॥

---

११ पाठान्तर पुरसान। गुरसान। मान कुरसान। नबध। मवध। निवधी। गषर। गबिहान। बिहान पषर। पान। षान। पुरसान। बधीयै। अर। सधीयै ॥

१२ पाठान्तर - राजान। नर। बरीय। निम.. ॥

१३ पाठान्तर-- महाम। रण। एन। अच। करु। च बद्रिसि। मजे। उत्तंग। बजे। सीह। प्रथीराज। मट्टे। वरन। पट्ट। स ॥

१४ पाठान्तर—पुरसान। षान। गषर। पषर। गाजी। सन्यह। सजि। नहि। पिष्वै। रचह। चहुआन। जह ॥

सबेरे के समय चढ़ाई करने का विचार करना।

कवित्त दस अराक जातीय। पंच षुरसान कमानं॥
तक्यौ साहि गज्जनै। चिति षट्ट चहुवान॥
छल सज्यौ बल हारि। घात नर घात निहान॥
लग्यौ चपि सुरतान। वैर हुस्सेनह षान॥
सुविहान आन चहुआन सौ। लै फुरमान गमान धरि॥
सुविहांन हिंदु पुज्जै नही। जमन जोर बल बहुत करि॥
॥ छं० १५॥ रू० १५॥

पांच सरदारों को साथ लेकर आषेट को पृथ्वीराज का निकलना।

कवित्त आषेटक सभरिय। राज मेल्लान न आइय॥
हम्मम हय गय मुक्कि। तकि पट्ट बन धाइय॥
के हंका के हक्कि। नथ्थ पछिबानह लग्गा॥
सथ्थ पंच सामंत। मूल चहुआन बिलग्गा॥
पमार मलष अल्हनह बलिय। चाहुआन रघुवंस हिम॥
रुक्यौ नरिंद चालुक्क सम। सघ बिटि धागह जिम॥
॥ छं० १६॥ रू० १६॥

कवि चन्द का कहना कि हमें शहाबुद्दीन के आने का सन्देह है और खोज करने पर चारों ओर यवनों को पाना।

कवित्त करि बिटिय चहुआन। विप्र गत मन्त्र समाहिय॥
सुब्बिहान फुरमान। बनि कविचंद सुनाइय॥
सुबर जोर साहाब। साह से देस सुरग्गा॥
तोन कमान प्रमान। दए दस हथ्थ तुरग्गा॥
छिन एक छिमा छिम रप्पके। चावद्दिसि नृप बिटयौ॥
तन तोन झारि संमुह भए। राज अदब्ब सुमिटियौ॥
॥ छं० १७॥ रू० १७॥

---

१५ पाठान्तर अैराक। पुरमान। कमान पट्ट। चहु ान निआन। सुरतान। हुसैन सु षान बिहान। आन। चहुवान। सा। फुरमान। बिहान। पुज्जे। नही। जवन। जोर।

१६ पाठान्तर आईय। हमम। तकि। पट्ट। धाईय। नथ। पषिवानह। लगा। मथ। चहुवान। बिलगा। चाहुवान। चाहुआनि। रुक्यो। चालुक। बीटि॥

१७ पाठान्तर—वटिय। चहुआन। सु बिहान। फुरमान। बिबि। साह संदेस सुरंगा। तोंन कमान। प्रमान। हथ। छिमाछिम एकरिके। चावद्दिसि। बीटयो। अदब। मिटयो॥

शाह की ओर से आक्रमण आरम्भ होना।

कवित्त चंपि लहट्टिय हथ्थ। जमन ठट्ठे चावद्दिसि॥
चूक चित चहुवान। कन्ह कड्ढी सु बक असि॥
हार्जी षान गष्षर नरिंद★। षनि षग पोलि विहथ्थ॥
तेग झार विभ्भार। मलष घल्ली गल बथ्थं॥
घरि अद्ध अद्ध बीभच्छ भय। जगि भयानक वीर सम॥
दुहुलोह कढ्ढि परि यार न। चूक विनि छुट्यो विभ्रम॥
॥ छं० १८॥ रू० १८॥

युद्धारम्भ युद्ध वर्णन।

छंद विराज

षरं धार कड्ढी। घनं बीज बड्ढी॥रमं रोम थट्टी॥मुष मुछ अट्टी॥ छं०१९॥
परे चट्ट पट्टी। मनो मद जट्टी। उन तेग कड्ढी। जनो वज्र टट्टी॥छं०२०॥
जम दड्ड दट्टी। मनों नोन मट्टी॥ उछट्टे उछट्टी। घन घट्ट घट्टी॥छं०२१॥
कुठाल उलट्टी। उतारन भट्टी॥ रटे मार मार। सुर आसुरार॥छं० २२॥
परे ने पथार। कुठारं वगार॥ बुठे घाव तार। किनार उतार। छं० २३॥
इनौ जुद्ध आरं। मनौ कूर कार॥ पयो पंत भारं। . . . .
॥ छं० २४॥ रू० १९॥

पांच सरदारों का पृथ्वीराज की रक्षा में चारा ओर हो जाना और इन सभों का यवनों के बीच में घिर कर युद्ध करना।

कवित्त - पनातन भैपत्त। स्वामि ओडन थह रत्ते॥
इक्क स्वामि रन अग्ग। इक्क उभ्भे दग दिग्घे॥
मार धार प्राहार। बीय तिय उप्पर वाहै॥
मनो तत्त परियार। मेघ जल बुट्ठ प्रवाहै॥
दनु देन जप्प गध्रब्ब जय। गन हय गय उच्चार हुअ॥
सुरतान सेन झुकि माहि परि। धनि नरिंद सोमेस सुअ॥
॥ छं० २५ । रू० २० ॥

---

१८ पाठान्तर हय। यवन। ठठे। चावदिसि। चिंति चहुआन। षा। गषर। ★ अधिक पाठ है। विहथ। विभार। घत्ता। वथ। बीभछ भयानक। दुहुलोह। कढ़ ने।

१९ पाठान्तर छंद रसावला। धर धर कटी। बटी। थटी। मुछ अटी ॥१९॥ परें चटपटी। मद जगी। कढ़ी। तटी॥२०॥ दड दढी। नौन अटी। उछटी। घट घटी॥२१। कुस्साल। उलटी। भटी। आसुरारं ॥२२॥ घाव ॥२३॥ पस्यौ। युद्ध ॥२४॥

२० पाठान्तर —भौ। उडन। रत। एक। दिन। एक भये। पषं। मोघ। उपर। तत। वुट्ठि। जरक। गध्रव। गगन। उचार। सुरतान॥

पृथ्वीराज का कमान सँभाल कर यवन सरदारों को गिराना ।

कवित्त चाहुआन कमान । पंच लीने सुपंच सर ॥
बप्पर पष्षर सो पलान । असु ढ्यो मीर धर ॥
दूजै बान तकंत । तक्कि भज्यौ षा गोरी ॥
तीजे बान तकंत । साहि भंजी बिय जोरी ॥
कंमान बान चवहथ्थ भिरि । षिजि किरवान विरान कढि ॥
कटि बीर अंग फरक पहर । रह्यौ नट्ट कुट बस चढि ॥
॥ छ० २६ ॥ रू० २१ ॥

पृथ्वीराज का तलवार लेकर यवनों का विनाश करना ।

कवित्त षा गाजी चहुआन । दिट्ट मग्दा दो उट्ठी ॥
दग लग्गि जनु अग्ग । घृत धारा हर बट्ठी ॥
दूनो हथ्थ उतग । तेग कड्ढी दुहु बंकी ॥
मनु घन घटा मझार । बीज कुडली झल्की ॥
चहुआन तुच्छ ढढ्ढर वहिय । ढग्गि मीर द्विय गिर ढ्र्यौ ॥
जानेकि वज्र वज्री सुपति । गिरनि छेद हथ्थह धर्यो ॥
॥ छ० २७ । रू० २२ ॥

मुलतान की ७५५ सेना का कट कर आगे गिरना ।

अरिल्ल— सुवर सेन संमुष सुरतान । धेन वच्छ परि जल करि जान ॥
सत पंच परि उप्पर पचं । तुट्यो मार धार करि रच ॥
॥ छ० २८ ॥ रू० २३ ॥

चालुका का घोर युद्ध करके वीरता के साथ मारा जाना ।

कवित्त जूह मंत संमूह । कूह आयेटक बज्जिय ॥
वर चालुक्क नरिगे । चंपि चावद्दिम गज्जिय ॥
छडि थान पछिवान । हुंकि सैधव झुकि धाइय ॥
गही सेन सुरतान । नेज बाजी जस धाइय ॥

---

२१ पाठान्तर कमान । पचि । सपच । बपर पषर । पलान । ढन्यो । बान । तकि । वान । कमान । बान । हथ । किरवान । बिरान । झुटि । फरकुर रह । नट ।

२२ पाठान्तर—चहुआंन । दिष्टि । दो । उठिय । अगि । घृत । बुठिय । हथ । दुहुं बंकिय । मनों । झलकिय । चहुआंन । तुछ । ढड । ढग्गि । गमीर बीय सिर । सिम्ढ्ढ । ढुट्यो जाने । हथह ॥

२३ पाठान्तर—बछ । ज्यंनं । सत । उपर । करि ॥

बिम्भाय धाय तन झंझरिय । तुटि पंजर वर घुक्किधर ॥
कटि घाइ लष्ष पंचौ प्रगट । उड़ि हंसव संमान सर ॥

॥ छं० २९ ॥ रू० २४ ॥

कवित्त- सोलंकी सिर मौर । रेह अनहल पुर रष्षी ।
दोऊ दीन पष्षर प्रमान ★ । कित्ति दुअ पष्षह भष्षी ॥
धूप दीप साषा ★ सुगंध । रंभ रानी मिलि गावै ॥
नाग पती सुर वधू । केलि करि कलस वंदावै ॥
लग्यौ भरम द्रिगपाल धर । जंम भरम जग्गे सुभर ॥
कविचंद मग्न चालुक्क कै । मरघो न को रवि चक्कतर ॥

॥ छं० ३० ॥ रू० २५ ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का तलवार से युद्ध करना, पृथ्वीराज की सब सेना का इकट्ठा हो जाना ।

कवित्त सुधर जुद्ध अवरुद्ध । जुद्ध कटि सिद्ध समानं ॥
मार मार उच्चार । नेग कढ्ढी चहुआनं ॥
तुटि सिषर उर फुट्टि । बीर अद्धो अध झुल्लै ॥
मानुं तुला की डंडि । बीर बानावलि तुल्लै ॥
आपेट भग्गि एकट्ठ हुअ । सबै सेन प्रथिराज जुरि ।
बाजिद षान गष्षर गहर । वाम कोद उब्भै उसरि ॥

॥ छं ३१ ॥ रू० २६ ॥

सुलतान का बढ़कर लड़ना, दो घड़ी युद्ध होना ।

कवित्त- रुप्यौ सेन सुरतान । राज चढि नंषि सुरंगं ॥
कै तिमर भग्ग तपभांन । सिंह हक्कै कि कुरंगं ॥
तब ★ रुप्पौ राव सिंघरिय । लाज सुबिहान षटक्किय ॥
सस्त्र तेज बल बंधि । सेन चहुआंन हटक्किय ॥

---

२४ पाठान्तर— जूहं मत । चालुक । दिसि । षान । पल्हिवांन । मेघव । धाईय । सुरतान । घाईय । घाइ । झझरिय । लष । उड्डि । समांन ॥

२५ पाठान्तर—रष्षिय । दोउ । पषर । ★ अधिक पाठ है ।। बिंनि दुअ दीनह भषिय । ★ अधिक पाठ है । बदावै । भरंम । दिगपाल । चालुक । रथतर ।

२६ पाठान्तर—युद्ध । युध । उचार । चहुवांनं । त्रुटि । सिष्षर । धर झुलै । मनौं । दंड । बानावली । तुलै । एकठ । प्रथीराज । बाजिद षान गषर । बांम । उभै । उबरि ॥

द्वै घरिय टोप उप्पर बह्यो । सार तिनंगा तारयो ॥
जार्नें कि तिदु दारुन जरै । जैत षंभ पर झारयो ॥
॥ छं० ३२ ॥ रू० २७।

दूहा — हय मुक्कयो सिरदार दुहु । देखि भयो नृप चूक ॥
घरी एक झरि सार बहु । ज्यों अगि संजुत्ता ऊक ॥
॥ छं० ३३ ॥ रू० २८।

यवन सरदारों का मारा जाना, पृथ्वीराज की विजय ।

कवित्त - जुद्ध जुरे सिरदार । राउ रंघह बाजी दह ॥
पालि बथ्थ गल हथ्थ । हडु भंजिय रग गूदह ।
ज्यौं मुष्टिक चानूर । कन्ह भंजिय अष्षारह ॥
उत्तमंग लै हूर । सूर अपछर उप्पारह ॥
वाजीद षांन झोरी धरिय । धाड पंच रंघर नृपति ॥
रष्षै जु सांइ मिट्टै कवन । निमष मांहि उतपति षपति ॥
॥ छं० ३४ ॥ रू० २९॥

हारकर शहाबुद्दीन का गज़नी की ओर लौट आना ।

दूहा — चूक चूक भय असुर सुर । फिरि गज्जन दिसि षांन ॥
हारि जुआरी ज्यौं चलै । कर घट्टै कर जान ॥
॥ छं० ३५ ॥ रू० ३०॥

चौहान की विजय पर चन्द कवि का जै जैकार करना ।

दूहा — जीति राज चहुवांन वन । आषेटक असुरान ॥
जै जै जै कविचंद कहि । चद सूर बष्षान ॥
॥ छं० ३६ ॥ रू० ३१॥

**इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके राजा
चहूवन आखेटक रन सुरतांन चूक करनं नाम
दसम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १० ॥**



---

२७ पाठान्तर — सुरतांन । बाजि चढि । मांन । झूकै । ★ अधिक पाठ है। रिचरिय । विहांन । चहुआन । हटकिय । घरीय । जानें ॥

२८ पाठान्तर — दुहुं । अगनि । उक ॥

२९ पाठान्तर — युद्ध । जुरै । सिरदार । राव । बाजीदह । बथ । गर। हथ । रंग । अषारह । उपारह । वजीद । षांउ । धाव । सांई ॥

३० पाठान्तर — गजन । षांन जुवारी । चले । चढे । जांन ॥

३१ पाठान्तर — चहुआंन । असुरान । बषान ॥

उपसंहारणी टिप्पणी

यह समय भी हमारे स्वदेशी इतिहास के लिये बहुत उपयोगी है। क्योंकि एक लड़ाई तो "हुसैन कथा" नामक समय में रासो के अनन्द संवत् अर्थात्, पृथ्वीराज के तृतीय साक ११३५ माघ शुक्ला १३ = ११३५ + ९० । ९१ = १२२५ । २६ वर्त्तमान विक्रमी में आगे हो चुकी थी और दूसरी उसके एक बरस पीछे यह "आखेटक चूक" नामक हुई है। इस लड़ाई के होने का समय कवि ने स्पष्ट न बताकर प्रथम रूपक में—बरस एक बीते कलह—से पहिली के एक वर्ष पीछे इसका होना वर्णन किया है अर्थात् पहिली के सं० ११३५ + ९० । ९१ = १२२५ । २६ में एक जोड़ने से ११३५ + १ = ११३६ + ९० । ९१ = १२२६ । २७ वर्त्तमान विक्रमी होता है। वैसे ही "अखेटक" शब्द के नियत समय के अर्थ से "फाल्गुण" मास का होना भी प्रकाश किया है। प्राचीन समय से हमारे देशी राज्यों में वर्ष भर के अनेक त्यौहारों में फाल्गुण मास में जिस दिन ज्योतिषी आखेट का मुहूर्त्त देते थे उस दिन एक बड़ा त्यौहार मनाया जाता था। इसी से यहां कवि ने "आखेटक" शब्द से फाल्गुन का संकेत अर्थ में माना है। अब यह त्यौहार लुप्त सा होता चला जाता है, तथापि वह प्राचीन राज्य उदयपुर में इस समय तक भी माना जाता है और उसको वहां "अहेरिया" वा "महूरत का शिकार" करके कहते है। और उसका सविस्तर वृत्तान्त कर्नेल टौड साहब ने अपने परम प्रसिद्ध ग्रंथ "राजस्थान" में यह लिखा है॥

"The merry month of Phalgun is ushered in with the Ahairea or spring-hunt. The preceeding day the Rana distributes to all his chiefs and servants either a dress of green, or some portion there of, in which all appear habited on the morrow, whenever the astrologer has fixed the hour for sallying forth to slay the boar to Gouri, the Ceres of the Rajpoots : the Ahairea is therefore called the *Mahoorat ca sikar* or the chase fixed astrologically. As their success on the occasion is ominous of future good, no means are neglected to secure it. either by scouts previously discovering the lair, or the desperate efforts of the hunters to slay the boar when roused. With the sovereign and his sons all the chiefs sally forth, each on his best steed, and all animated by the desire to surpass each other in acts of prowess and dexterity It is very rare that in some one of the passes or recesses of the vally the hog is not found; the spot is then surrounded by the hunters, whose vocife-

rations and scon start the *dhokra* and frequently a drove of hogs. Then each cavalier impels his steed, and with lance or sword, regardless of rock, ravine, or tree, presses on the bristly foe. whose knowledge of the country is of no avail when thus circumvented, and the ground soon reeks with gore, in which not unfrequently is mixed that of horse or rider. On the last occasion, there occured fewer casualties than usual, though the Chandawut Hamira, whom we nicknamed the "Red River," had his leg broken, and the second son of Sheodan Singh, a near relation of the Rana, had his neighbour's lance driven through his arm. The young chiet of Saloombara was amongst the distinguished of this day's sport It would appeal even an English fox-hunter to see the Rajpoots driving their steeds at full speed, bounding like the antelope over every barrier, the thick jungle covert or rocky steep bare of soil or vegetation." with their lances balanced in the air, or leaning on the saddle bow slashing at the boar".

TOD'S RAJASTHAN, VOL I, PAGE 435.

और उन्होंने इस वृत्तान्त मे के "अहेरिया" शब्द पर जो टिप्पण दी है उसमे पृथ्वीराज जी के इस आखेटक के विषय मे यह कहा है --

"In his delight for this diversion, the Rajpoot evinces his Scythic propensity. The grand hunts of the last Chohan emperor often led him into warfare, for Prithirai was a poacher of the first magnitude, and one of his battles with the Tartars was while engaged in field sports on the Ravi."

TOD'S RAJASTHAN, VOL. I, PAGE 485.

यद्यपि रूपक ४ के वाक्य–वरष उभै षटमास–का अर्थ दो वर्ष और छ महिनो का भी हो सकता है, परन्तु प्रथम रूपक के वाक्य–वरष एक बीते कलह–की उस के साथ संगति मिलाने से उस का अर्थ एक वर्ष का ही होता है अर्थात्, वर्ष अर्थात् दो छमांही । सो पाठक विचार देखें ।।

जैसे "हुसैन कथा" वाली रासो की संवत् ११३५ की लड़ाई का कारण हुसैन और चित्ररेखा का पृथ्वी राज के शरण आना था; वैसे ही इस आखेटक चूक की लड़ाई का कारण उनके बेटे गाजी हुसैन का रूपक २ के अनुसार एक महिने और पांच दिन पीछे फिर पृथ्वीराज जी के पास चला आना है ।।

तथा रूपक ४ एक अपूर्व वृत्त प्रकाशित करता है कि हमारे एक हिन्दू-नितिराव पत्रीय दिल्ली में विराजे हुए हिन्दुओं की बादशाहत नाश करवाने को पृथ्वीराज जी के यहां की मुकबरी शहाबुद्दीन को लिखा पढ़ा करते थे । ऐसे जीव भी धन्य हैं ! ! !

अथ चित्ररेषा समयौ लिष्यते ।

(ग्यारहवां समय ।)

चित्ररेखा की उत्पत्ति पूछना ।

दूहा पुच्छि चद बरदाइ नें । चित्ररेष उतपत्ति ॥
षां हुसेन षावास कहि । जिम लीनी असपत्ति ॥ छं० १ ॥ रू० १ ॥★

कवित्त -गज्जनेस अवदेस । साहि पल्लान कुमान ॥
बदक स्वामि भेहरा । छंडि गष्षर छिति आवं ॥
जल जोवन माहाव । दीन दुरंगे करि गिन्निय ॥
हिंदवान मेछान । थान थानह करि लिन्निय ॥
बजि विषम थाइ सुरतान ष्पन । साहि बदी मत्र दीन पति ॥
अनसंक कंक मनु लकपति । जनु जोवन तन रवित पति ॥
॥ छं० २ ॥ रू० २ ॥

शहाबुद्दीन का अरब खां पर चढ़ाई करने की इच्छा कर सरदारों से पूछना ॥

कवित्त -दिसि आरब सुरतांन । दिष्टि आलोकि बंक सुअ ॥
आकंपै दिसि डुल्लि । अचल चालंत चित्त दुअ ॥
सज्जि सेन चतुरंग । जंग अनभग विचारिय ॥
बोलि षान पुरसान । षान जित्ते अधिकारिय ॥
मारूफ षान तत्तार षा । षान षान सेरिन सुबर ॥
काली बलाइ कलहंत रिन । बोलि वीर पच्छे सुनर ॥
॥ छं० ३ ॥ रू० ३ ॥

---

१ पाठान्तर -पुछि । बरदाईनें । उतपति । लीनिय । असपति ॥ ★ इस समय में कवि ने हुसेन षा के कहे अनुसार जैसे शहाबुद्दीन ने चित्ररेषा को प्राप्त किया था सो वर्णन किया है ॥

२ पाठान्तर -पल्लाणि । एलांन । कसुबि । बदक र । सांमि । दुरंगे । गिन्नीय । गिनिय । हिंदवांन । मेछांन । थांन । लिनीय । सुरतांन । सहाबदी । मनौं । जन । जर ॥

३ पाठान्तर -दिसि बर आरब साह । दिष्ठ । सुव । डुलि । सजि । विचारिय । षांन । पुरसांन षांन । जिते । अधिकारीय । मारुफ । षांन । ततार । षांन षांन । रन । बलाय । पछै ॥

अरब खां नवता नहीं है इसलिये उस पर चढ़ाई होनी चाहिए यह आज्ञा दी ॥

दूहा -★ आरब पति अर सिंध तट । विन सलाम सुरतान ॥
तिन उप्पर सज्जिय सयन । कहर छंडि फुरमान ॥छं० ४॥रू०४॥

चढ़ाई की सेना की संख्या ॥

कवित्त —सत्त पंच वारुन्न विसाल ★ । लष्ष दुइ तुरी लषिन्ना ॥
आरब्बी सें पंच । लष्ष इक सोधि सुलिन्ना ॥
काबिल्ली उर तेज । रोम रोमी पंजावी ॥
लोहानी जल वान । सेष गोरी आरब्बी ॥
लष एक लष्ष लष्षा मुहा । पारेवह जिन पंष लिय ॥
चालंत कटक गोरी प्रबल । भूषी चाली पंचनिय ॥
॥ छं० ५ ॥ रू० ५ ॥

सेना की धूम का वर्णन ॥

छंद भुजंगी—चली पंषिनी सथ्थ चोसट्ठ थानं।चली अग्ग पती सुदती प्रमानं ॥
तिनं दंत कंती तडित्ता समानं । .... छं० ६ ॥
धजा पंति फेरंत भादब्ब भारं । झबक्कें मनों सूर संगी कि सारं ॥
बजै त्रंब त्रंबाल गज्जै करूरं । बज्जें तट्ट सट्टं पपीहं ददूरं ॥ छं० ७ ॥
धरं बंक यद्धोर उद्धोर घंटं । बरं वेंर भंजें धरैं षित्र बट्टं ।
अगें चल्लियं अग्गिवानं समीरं । तिनं पुठ्ठ षुर्सान षा बंधि मीरं ॥छं०८॥
धरै छत्र सीसं विराजंत गोरी । षिलै पंति देवं विचें किद्ध होरी ॥
बकीथान थानं छुटें मानु पट्टं । जगी जोग जालं जलट्टं सुघट्टं ॥छं० ९ ॥
चलै आरबं उप्परे साहि सज्जी । कमट्ठं पिठं उथ्थलं सेस दज्जी ॥
बिटे गट्ठ गोहार केथान थानं । मनों सागरं बीच बद्धानलानं ॥छं० १०॥
बजे थान थानं सुत्रंबाल दूरं । गहे षग्ग मीरं वदे मुष्ष कूरं ॥

---

४ पाठान्तर—सिद्ध । नट । सलाम । सुरतान । उपर । सजिय । फुरमान ।
॥ ★ अरब खां नामक कोई छोटा राजा वा सरदार उस समय सिंधु तट पर के देस का पति था कि जिसके पास चित्ररेखा थी ॥

५ पाठान्तर—सत । वारुन । ★ अधिक पाठ है ॥ लषु । दोइ । लषीना । आरबी । पांच से । लष । लीनां । कबिली । बांन । शेष । गोरी । आरबी । लष । लषां । मुहा । पारेवाह । पंल्यि । गोरी । पंचनीय ॥

६ पाठान्तर—सथ । चौसठि । थानं । अंग । सदती । प्रमानं । तडिता ॥ ६ ॥ पति । फहरंत । भदवा । झबक्कें । मनों । गजै । बजैं ॥ ७ ॥ पद्धोर उधोर । घटं । बर । बटं । अगे । चलियं । अगिवानं । पुठि । षुरसान ॥ ८ ॥ धरैं । गोरी । थानं २ । छूटे । पट्टं । मांनो । न उट्ठं सुरानें ॥ ९ ॥ उपरें । सजी । कमठं । उथल ।

शाह का निसुरति खां को अरब खां के पास भेजना कि चित्ररेखा को देकर पैर पर गिरै तो हम क्षमा करदें ।।

बरं मोकले मेलनि स्नुत्ति षानं।कह्यो आरबं लग्गि पायं विहानं ।।छं०११।।
दियौ चित्ररेषा लियौ दंड दोनं । भिरै षेत मोसौं कहूं अज्ज कोनं ।।
षम्यौ तापना आरबं निठ्ठ निठ्ठं।गयो काहरं धीरजं दिठ्ठ दिठ्ठं ।।छं०१२।।

अरब खां का सादर आज्ञा मानना और चित्ररेखा को देना स्वीकार करना ।।

दियौ जाइ फुर्मान निस्रत्त ईसं । लियौ आरबं आदरं नाइ सीसं ।।
दई चित्ररेषा सिताबी सुडोरं । तिनं उप्परं गुंज भौंरान कोरं ।।छं०१३।।
इकं सेत हथ्थी दु आबं अराकी । पलंगी रजक्की धरें अंतपाकी ।।
सतं एक सष्षी दई चित्ररेहा । बनी सुद्ध बानै उरं मद्धि नेहा ।।
।। छं० १४ ।। रू० ६ ।।

निसुरति खां का अरब खां को शाबसी दे कहना कि तुमने शाह के बचन माने और हिन्दु धर्म को न मान कर म्लेच्छ कुल कर्म को धारण किया सो ठीक किया ।

कवित्त --कह्यौ साहि जो बचन । सोइ तुम काज सुधारयौ ।।
तेइ बचन सति होइ । हिंदु ध्रम्मं न बिचारयौ ।।
मेछ धन्यौ कुल क्रंम । जोगि ग्यानह जिम धारहि ।।
सेवक मत्त सुभाइ । देन आलम नाकारहि ।।
षुरसान षान सुरतान पति । दल बद्दल पावस मिलिग ।।
चतुरंग सज्जि चौरंग मिलि । सिद्ध चरित सिद्धन चलिग ।।
।। छं० १५ ।। रू० ७ ।।

शहाबुद्दीन का सेना समेत सजकर चलना ।

कवित्त -गज्जनेस आएम । सूर चतुरंगन सज्जिय ।।
बीर बाल ससि बट्टि । मोह पूरन जिम भज्जिय ।।

दसी । बिटे । गढ । कै । षान षानं । बडषानलानं ।। १० ।। षांन षांनं । गहे । मुष । निमुरति । षानं । कहौं ।। ११ ।। भिरें । मोसूं । कह्यौ । कोनं । तापनां । निच निठं । दिठि दिठं ।। १२ ।। फुरमांन । निसुरत्त । नांग । सीसं । सडोरं । उपरं । भवरांन । झोरे ।। १३ ।। हथी । आरब । औराकी । रजकी । मध्धें । षांने ।। १४ ।।

७ पाठान्तर—सोय । साज सुधारो । होई । ध्रंम । बिचारो । धरो । कम्मं । जोग । ग्यांनह । सुभाय । सुभाई । षुरसांन षान । सजि ।।

करक निसा दिन मकर। सेन बढ्ढी तिम चंगिय ॥
मिलि अनंग आनंद। रंज आनंद सुजंगिय ॥
द्वादस सहस्र वारुन समह। दोइ लष्ष सज्जे सुभर ॥
पारन सुअन्य आरंभ दल। चढ्यौ साह मधि दुप्पहर ॥
॥ छं० १६ ॥ रू० ८ ॥

चलते समय शाह का चित्त चित्ररेखा में मत्त गयंद की भांति लगा हुआ था।

गाथा—चित्तं मत्त गयंदं। फुंतारं नथ्यि उत्तरयं ॥
त्यौं चित्ररेषय चित। सुविहानं मंडियं नेहं ॥ छं० १७ ॥ रू० ९ ॥

सेना की शोभा का वर्णन।

छंद पद्धरी - चढि चल्यौ साहि साहाब कूर। चल चले समुद सरिता सुपूर ॥
सुरतान छत्र अप-अप समान। सुर पंच बीर उर पत्ति षांन ॥ छं० १८ ॥
काली बलाइ सेरन वितंड। सो अरिन फौज पारंत दंद ॥
तत्तार षांन षुरसान षांन। सो मामि ध्रंम राषत गुमांन ॥ छं० १९ ॥
मारूफ षांन मारु मरद्द। दल मंझि जानि नरसिंघ मद्द ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति बीर। आरब्ब मरद मझ्झैं गभीर ॥ छं० २० ॥
महबूब षांन महबूब माह। दल मंझ अर्क उग्यौ उगाह ॥
वर बीर महन मझ्झी मरद्द। लज्जा कि अंग चंद सु मरद्द ॥ छं० २१ ॥
कंकर कराव मैंदान भान। जादेत सेष मा ध्रंम षान ॥
पानी प्रवाह ढिग साह थूर। झिलि मिलिग सिद्ध अंगा करूर ॥ छं० २२ ॥
नीसान जोर बज्जे सु नद्द। भद्दव कि मास घन गरज सद्द ॥
हुल्ल विरद्द वाने विवेक। जाने कि ब्रम्ह रति राज नेक ॥ छं० २३ ॥
गज सीस चौंर सेतह सुभाह। हरहार गंग छुट्ट प्रवाह ॥
चमकंत नाल उप्पम सु जोह। समि बाल जानि घन घटा सोह ॥ छं० २४ ॥

---

८ पाठान्तर—आएक। चतुरंगनि। गजेय। भजिय। निशा। बढी। चंगीय। जंगीय। समुंद। समद। दोय। लषु। सजे। दुपहर ॥

९ पाठान्तर -चितं। मत। पुतारं। नथि। उतरयं। चित्तं ॥

१० पाठान्तर—साह। संपूर। सुरतांन। समांन। समानं। पति। षांन। ॥ १८ ॥ बलाय। ततार षांन षुरसांन षांन। सांमि। ध्रम्म। गुंमांन ॥ १९ ॥ मारूफ षांन। मरद। मझि। जांनि। नरसीह ततार षांन निसुरति। आरब। मझैं ॥ २० ॥ षांन। मझ्झ। अगाह। मझी। परद। चंदं। सारद। सरद ॥ २१ ॥ मैदांन। मैदोंन। भांन। धूंम। षांन। पानी ॥ २२ ॥ नीसांन। बजे सबद।

सिप्पार तीस ते पढत मुष्ष । आध्रंम हृथ्थ तसबी सुरष्ष ॥
है परष परष साई सुकीय । छुट्टंत अरम जनु किरन कीय ॥
॥ छं० २५ ॥ रू० १० ॥

शाह की सेना की प्रबलता देखकर अरब का अपना बल भंग होना कहना ।

दूहा सुनि अवाज आरब मुषसु । बर उत्तर तिय मुंद ॥
बल भग्गो इन भंति वर । ज्यौं तत्त तवे पर बंद ॥
॥ छं० २६ ॥ रू० ११ ॥

अरब खां का आज्ञा मानकर चित्ररेषा को भेंट में देना ।

अरिल्ल आरब षान तत छन मानिय । ज्यौं मुकिया पिय आग्या जानिय ॥
जै फुरमान बंदि सिर धारिय । चित्ररेष दीनी सो नारिय ॥
॥ छं० २८ ॥ रू० १२ ॥

चित्ररेषा वेश्या के रूप का वर्णन ।

साटक वेस्या बंछित भूप रूप मनसा, शृंगार हारावली ।
सोय मूरति लच्छि अच्छिन गुनं, बेली सु कामावली ॥
का बर्नें कबि उक्ति जुद्ध मनय, त्रैलोक्य म माधनं ॥
सोयं बाल तिरत्त उष्ट विद्रुमं, का मोद जोगेश्वरं ॥
॥ छं० २९ ॥ रू० १३ ॥

साटक रूपं नहि कटाच्छ कूल तटयो, भयं तरगं वरं ॥
हावं भावति मीन प्रमित गुनं. सिद्धं मन भंजनी ॥
सोयं जोग तरंग रूवति वरं, त्रीलोक्य ना ता समा ॥
सोयं साहि सहाव दीन ग्रहियं, आनग क्रीड़ा रसं ॥
॥ छं० २९ ॥ रू० १४ ॥

भदव । गद्दर सद । हूले विरद वानें । जाने वन । क्रनुगाज ॥ २३ ॥ शीश । छुट्टं । उपम । जांनि ॥ २४ ॥ सिपार । मुष । हथ । रप । मांई अरम ॥ २५ ॥

११ पाठान्तर —आवाज । समुष । उतरिय । भगो । तये ॥

१२ पाठान्तर—षांन । छन । मांनिय । सुकीया । जांनिय । फुरमांन । धारीय ॥

१३ पाठान्तर—पोयं । लछि । अछित । वेली । बरनै । युक्ति । मन । तिरत । जोगेसरं ॥

१४ पाठान्तर—नत । कंटाक्ष्य । तटयो । मान । पसित । भजनी । रूअति । त्रीकोन ता । त्रिलोक्य । मह । पमां । साहाव । प्रहीयं ॥

विना युद्ध चित्ररेखा को लेकर गोरी का लौट आना।

दूहा—अंग सुलच्छिन हेम तन। नग धरि सुंदरि सीस॥
गोरी ग्रहि गोरी गयो। विना जुद्ध बुझि रीस॥

॥ छं० ३० ॥ रू० १५ ॥

चित्ररेखा के साथ शाह के आदर और प्रेम का वर्णन।

दूहा—जिम जिम साह सु आदरिय। तिल तिम बढ्ढिय पेम॥
क्रम क्रम फल गुन बद्ध इय। बेली नमैं सु तेम॥

॥ छं० ३१ ॥ रू० १६ ॥

चित्ररेखा के सुलतान को बश करने का वर्णन।

कवित्त—बसि कीनो सुरतान। चंग जिम भ्रमै डोरि कर॥
ज्यों भावी बसि लाइ। बचन उद्योत बाल सुर॥
ज्यों बसि जीवन मंन। प्रात बसि जेम क्रंम्म गुर॥
ज्यों बसि नाद कुरंग। बास बसि जेम मधुक्कर॥
महिला सु मुक्कि सब बस्सि भय। महिला महिल सुमत्ति बसि॥
एकंग एक अंदर महल। रहै साहि सुरतान रसि॥

॥ छं० ३२ ॥ रू० १७ ॥

चित्ररेखा की कथा सुन कर कवि का आनंदित होना।

दूहा—पंषी पेम परेव जिम। सुमन मनोहर मिष्ट॥
सुनत कथा संमूल इह। अनंदिय मन इष्ट॥

॥ छं० ३३ ॥ रू० १८॥★

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके चित्ररेखा वर्णनं नाम एकादसो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ११॥



१५ पाठान्तर—लछिन। शीश। ग्रहि। युद्ध॥

१६ पाठान्तर—आदरीय। बढिय। जिम २ फलगुन बाधइय।

१७ पाठान्तर—कीनौं। मुरतांन। भ्रमै। डोई। मंत। क्रम। नंद। बषि। मधुकर। सुमति। बषि। मति। रहैं। सुरतांन। रस॥

१८ पाठान्तर—यह। आनंदीय॥

★ यह दोहा Caulfield, Ms. में नहीं है, परन्तु वह हमारी सं० १६४७ और सं० १८५९ की पुस्तकों में है।

अथ भोलाराय समय लिखते।

(बारहवां समय)

भोलाराय भीमदेव का बल कथन और राजा सलष को संभरि-राज (सोमेश्वर) की सहायता का वर्णन।

कवित्त-- छत्तीसा[1] सुक्रवार। चैत पुष सिन दुति पारिय ॥
भोराराय भिमंग। सोर शिवपुर प्रज्जारिय ॥
आरज सांइ सलष्ष। राज संभरि संभारिय ॥
चहुआन सामंत। मंत कैमास पुकारिय ॥
घरजान पवारह पट्टना। बोले बंक दुराइ दिल ॥
कैवार कथ्थ नथ्थह तनी। पंगे राज क्रिसान षल ॥ छं० ॥ १ ॥

शुकी का शुक से इंच्छनी के विवाह की सविस्तर कथा पूछना।

दूहा -जंपि सुकी सुक पेम करि। आदि अंत जो बत्त ॥
इंच्छिनि पिथ्थह ब्याह बिधि। मुष्ष सुनते गत्त ॥ छं० २ ॥

इधर चौहान तपता था उधर आबू का राजा सलष पंवार बड़ा प्रतापी था उसका वर्णन।

कवित्त - तपै तेज चहुआन। भान ढिल्ली इच्छा वर ॥
बीर रूप उप्पज्यो। पन्न रष्षै जुग्गिनि भर ॥
आबू वै अनभंग ॥ जंग षगो षल दारुन ॥
जोग भोग षग मग्ग। नीर[2] षित्री अवधारन ॥
कित्ती अनंत सलषेज भुअ। धुअ प्रमान पन रष्षई ॥
चव बरन सरन भुजदंड भर। दल दुज्जन भिर भष्षई ॥ छं० ॥ ३ ॥

सलष को एक बेटा जैत नाम का और मंदोदरी और इंच्छिनी नाम की दो बेटियां थीं।

दूहा --जैत पुत्र सलषेज लघु। इच्छिनि नाम कमारि ॥
बर मंदोदरी सुंदरि। बियन[3] रूप उनिहार ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

१. मो-चौआलीसा।
२. को-बीर।
३. मो-बिनय।

बड़ी मंदोदरी का विवाह भीमदेव के साथ होना।

गाथा –सो अप्पी बर भट्टं। रुद्रं बर माल थानयं भेवं ॥
सिद्धं सिद्ध सुपुत्रं। नामं जास भीमयं रायं[1] ॥ छं० ॥ ५ ॥

भोला भीमदेव के बल पराक्रम का वर्णन।

कवित्त –अनहलपुर आभ्रंन। राज भोरा भीमंदे ॥
देसां गुज्जर षंड। डंड दरिया से बंदे ॥
सेन सबल चतुरंग। बीर बीरा रस तुंगं ॥
अति उतंग अनभंग। बियन पुज्जै बल जंगं ॥
कलि[2] काल किंत्ति मित्ती इतिय। पलटि प्रीति[3] क्रत जुग करन ॥
भोरा नरिंद भीमंग बल। उभै दीन तक्कै सरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

गाथा –तक्कै चालुक रायं। त्रैलोकं चरनयं सरनं ॥
मुरषंडं जं बलयं। सा बलयं भीमयं राजं ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीमदेव के मंत्री अमर सिंह सेवरा का वर्णन।

कवित्त –भीमराज राजिंद। राइ राइन उच्चारन ॥
अति अचंभ बलरूप। द्रुगपति सेव सधारन ॥
वाहन बट[4] बटवान। तुंग तेरह हिमारं ॥
मिद्ध बट्टी बटवान। थान थट्टा घर धारं[5] ॥
आरब्ब गरब दरब दिल दल। चालुक्कां चिनां चढ्यो ॥
मंत्री सुराय[6] जना जहर। अमरसिंह सेवर पढ्यो ॥ छं० ॥ ८ ॥

मंत्र बल से अमर सिंह का अमावस को चन्द्रमा उगाना, ब्राह्मणों का सिर मुंडा देना, दक्षिण और पश्चिम दिशा को जीतना।

कबित्त –जिन अमरसीह सेवरा। चंद मावसि उग्गाइय ॥
जिन अमर सीह सेवरा। बिप्र सब सीस मुडाइय ॥
कहर कर पाषंड। चंड चारन मिलिवत्तं ॥
दुज दोपंजर हेम। देहि उत्तर घन हित्तं ॥
नर नाग देव छंदां चलै। आकर्षै आवंत कर ॥
विदरम्भ देस दष्षिन दिसा। सब जित्ती पच्छिम सुधर ॥छं०॥९॥

---

१. मो–जो भीम नर रायं।
२. को कृ ए–किल।
३. मो–रीति।
४. मो–षट।
५. मो–प्रति में "थान थट्टा घर धारं" के स्थान पर "तुंग तेरह हिसारं" है।
६. ए–पुराइ।

इंच्छिनी के रूप की बड़ाई सुन भीम का उसपर आसक्त होना ।

कबित्त– जहोंरा पारक्क । सर्व सोढा पज्जाई ॥
बारी बंभन वास । ठाम ठट्टा छड्डाई ॥
माही माल्हन हंस । पालि आबू धर लग्गा ॥
आगेंही सलषान । दई मंदोदरि सग्गा ॥
आचंभ रूप इंच्छिनि सुनी । जन-जन बत्त बषानियां ॥
भोरा अभंग लग्यो रहसि ॥ काम करक्कं प्रानियां ॥ छं० १० ॥

आबू की ओर से आनेवालों के मुंह से इंच्छिनी की बड़ाई सुन सुन जैन धर्मी भीमदेव भीतर ही भीतर कामातुर हो व्याकुल हुआ ।

कबित्त- द्रव्य दार उद्दार । मरन कज्जे मुह नष्षै ॥
कैवत्ता आबूअ । दिसान जितिहि मुष लष्षै ॥
जेहा तुंग तुरंग । चंग जेब्राहन बट्टी ॥
पांवारी कथ झूंठ । तेसु पहिचानी हट्टी ॥
श्रोनान राग लग्ग लिषं[1] । पट्टनवै पट्ट सरां ॥
जैं जैन धंम उग्गाइयां । तेन कूर लग्गो करां । छं० ११ ॥

देखने सुनने और स्वप्न में मिलने से कामान्ध होकर भीमदेव रात दिन इंच्छिनी के ध्यान में पागल सा हो गया ।

दूहा --मादक उनमादक नयन । सोषन द्रप्पन बान ॥
इक सुपनंतर राग मुनि । इक दिष्टान विनान ॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त- मादक उनमादक । समीप[2] सोषन अरू द्रप्पन ॥
बिय असोक अरबिंद ॥ चंद चंदन उर जप्पन ॥
विमल तान उबान । सुबनि नामे इंच्छिनि सज ॥
पट्टनवै पट्टयो । लाज भग्गी[3] वर अग्रज ॥
सपनानुराग बढ्ढयो नृपति । अरू श्रोतानन राग भय ॥
पंमार मोहि टारे सलष । अनष एन आबू मुलय ॥ छं० ॥ १३ ॥

गाथा रोगंता मनमंथं । विह्वल चंपि अंग अंगाइं ॥
सुनि इंच्छिनीय नामं । झुट्टं सच्चेव लष्ष अप्पाइं ॥ छं० ॥ १५ ॥
लष्षं लष्ष लहिज्जै । इंच्छिनिय नामाइं झुट्ट सच्चाइं ॥
चाउ द्दिसा विभूति । चतुरंगं मुक्कियं भीमं ॥ छं० ॥ १६ ॥

गाथा-- दिष्टानं श्रोतानं । सुपनानं रागय हुंती ॥
तीनं राग प्रमानं । चाल्लुकं रोग लग्गियं तीनं ॥ छं० १४ ॥

---

१. मो–लषै ।
२. मो–सुदृष्ठि ।
३. मो–भड़ो ।

भीमदेव का राजा सलष के पास अपने प्रधान को पत्र देकर भेजना कि इंच्छिनी का विवाह मेरे साथ कर दो और जो पूर्व वाग्दान के अनुसार चौहान को दोगे तो तुम्हारा भला न होगा ॥

कबित्त— तिन प्रधान पट्ठाइय । लिष्षि आबू दिसि रायं ॥
तुम बड्डे घर बड़े । बानि बड्डे चित चायं ॥
संध सगप्पन सध्यो । चूरि चालुक परिहारां ॥
पज्जाई दो बार । बाल बांरू रूकारां ।
नग हेम मुत्ति मानिक्क घन । कहि न जाइ लष्षा लिषां ॥
इंच्छिनि सुचित्त चहुआन बर । तौ आबू गिरि सर[1] भषां ॥छं० १७॥

सलष के बेटे जैतसी की वीरता का वर्णन, भीमदेव के दूत का आबू पहुंच कर राजा का सलष से मिलना ।

छंद पद्धरी – सज्जी सुभीम चतुरंग लच्छ । पट्टाय सलष पावार पच्छ ॥
तस पुत्र नाम जैतसी वीर । जित्तिया सिंघ बट्टी सधीर ॥ छं० ॥ १८ ॥
रावन सुमेघनद्दह[2] समान । भंजइ इन्द्र आरूढ थान ॥
इन भिरवि वढ्ढि बघ्घेल सब्ब । रषि आस रंन पंमार अब्ब ॥छं०१९॥
तिन बंधु भीम हम्मीरसेन । मेवाति भंजि ढिल्ली बलेन ॥
देवत्त बांह द्रिग कमलरूप । अनपुच्छ लोइ जानियै भूप ॥ छं० ॥ २० ॥
दिग धरनि धरनि सलषेज वीर । भंजए जाइ धवलह सधीर ॥
बंभन सुवास पट्टन प्रजारि । ता समह भीम मंडन मुरारि[3] ॥छं० २१॥
तिही दूत आय परनाम कीन । परमार हथ्थ कग्गद सुदीन[4] ॥छं० २२॥

पंवार सलष की प्रशंसा ।

अरिल्ल—पांवारी परिगिह प्रतिछीनो । बल कीनें बज्री रस भीनो ॥
जिन ध्रम धरा भारथ धर लीनी ॥ तीनों पन कित्ती रसभीनी ॥छं०२३॥
गाथा— कित्ती कित्ति गनिज्जै । जानिज्ज सलषयं देवं ॥
सैसब वै पोगंडं । किसोरं बढ्यौ जसयं[5] ॥ छं० ॥ २४ ॥
गाथा — पत्री पत्र गनिज्जै । मानिज्जै[6] कित्तयो गुनयं ॥
सीयं दून प्रमानं । साहसं तेव सलषयो राजं ॥ छं० ॥ २५ ॥

---

१. को ए कृ साइर । २. को कृ ए–सद्दर ।
३ मो–मदन हरारि ।
४. मो० मे यह पद नहीं है ।
५ मो–सजयं ।
६. को कृ ए–मढिज्जै ।

पंवार सलष पर चालुक्य भीमदेव का जंपना और पत्र में लिखना कि मन्दोदरी दिया है अब इंच्छिनी को भी देओ नहीं तो आबू की गद्दी से हाथ धोओगे।

कवित्त—पतिपहार मोरा सु। बीर जंप्यौ चालुक्कं ॥
रंक अजुह पमार। भीर जानी भरतक्कं ॥
अति उतंग भारथ सु। चंग पथ पार्थ न मानिय ॥
बेनतेय सुत इंद्र। करन कित्ती जिन ठानिय ॥
लच्छन उतंग इंच्छिनि सुनिय। तिन चालुक्क न वीसरिय ॥
मंदोद मंद मंदोदरिय। लै कग्गर फिर ईसरिय ॥ छं० २६ ॥

दूहा—कै इंच्छिनि परनाथ मुहि। रष्षि सगप्पन संधि ॥
जो चित्तै चहुआन कों। गढ़ तें नष्षौं बंधि ॥ छं० २७ ॥

भीमदेव के प्रधान को पांच दिन तक आदर के साथ राजा सलष का रखना, छठें दिन दरबार में आ उसका पत्र और भेंट उपस्थित करना।

कबित्त—तिन प्रधान आवंत। अरघ सांई सलष्ष दिय ॥
दिवस पंच भोजनं। दुजन आदर अदब्ब किय ॥
षट्ट अग्ग संझहसु। पान कग्गर कर अप्यौ ॥
रस रसाल गुज्जरह। नरिंद रायं गन थप्यौ ॥
आरब्ब तेज ताजी तिसल। जर जरीन आभरन बर ॥
देषंत भेष लग्यौ बनै ॥ दुअ सुदीन रिझ्झय सुनर ॥छं०॥२८॥

सलष की वीरता की प्रशंसा और उस पर चालुक्य भीमदेव के कमर कसने का वर्णन ॥

दूहा—अब्बू वै है गै समर। समर सप्पन तेज ॥
समर उभै समरंग करि। समर सुपुज्जै हेज ॥ छं० ॥ २९ ॥

कुंडलिया - षेमकरन षंगार भर। वर उद्धरन नरिंद ॥
भीमजैत परतापपति। बर पहार बर चंद ॥
बर पहार बर चंद। नरन रूपह नाराइन ॥
अब्बू वै दुग्ग भान। अब्बु बंध्यौ जिहि पायन ॥
ता उप्पर चालुक्क। बीर बंधी तिम सीमह ॥
नर न करन करतार। कन्ह कुंभह बर भीमह ॥ छं० ३० ॥

राजा सलष और उसके पुत्र जैतसी की गुणग्राहकता और उदारता का वर्णन।

कवित्त—जै अब्बू वै भार। लाज अब्बू गज रष्यौ ॥
मान प्रमान समदान। अंग कवितन कवि[1] सष्यौ ॥

---

1. मो—तन।

डोलौ लंमन होइ। घाइ बज्जै रस भीरं ॥
सलष सुतन पामार। समद लज्जा मुष नीरं ॥
मिलि मंत तंत इक्क सु करन। करक कसम सगुनं सुबर[1] ॥
संवरन मंत मंतह रवन। भान दान दिष्ये सुबर ॥ छं० ३१ ॥

चालुक्य को मंदोदरी देकर नाता किया, परंतु भीमदेव ने इंच्छिनी के रूप पर मोहित हो अपने प्रधान को भेजा।

चौपाई—मंदोदरी दीनं पामारं। बर चालुक्क सरप्पन भारं ॥
सुनि इंच्छिनी तनरति अवतारं। पठय दिये परधान बिचारं॥३२॥

सलष ने विचार किया उसे वह प्राण देकर भी न पलटेगा।

चौपाई—अब्बू वे दूजो न विचारै। गढ़ अब्बू किरि उंच करारै ॥
जो इंच्छिनि इच्छन बर अष्षं[2]।गहि करि प्रान मान गढ रष्षं[3]॥३३॥

भीमदेव का पत्र पढ़ कर जैतसी का क्रुद्ध होना।

छंद त्रोटक- नर रिझ्झय देषि रसाल रसं। जिवदेव नरिंद किये बसयं ॥
जर पट्टन रच्चत अंबरयं। रज रंमि फिरंगत संमग्यं ॥ छं०३४ ॥
समरू वन रूव बधन्न दुनं। न फिरै तिन हथ्थन सीस पिनं ॥
अति उंच उतंग तुरंग तुरं। धरि चष्षि गिलंद उडंद षुरं॥छं०३५॥
निमिषं जुग ओजनयं बिसष। चित्त चंचल नारि चछं सुरषं ॥
घनसार विहरात आभरनं। अजु आजु निसा दिन सादरनं ॥छं३६॥
उर मंदोदरि सुंदरीयं। तिन पच्छति इंच्छिनि सुंभरयं ॥
इति दष्षियं कग्गर बंचिनियं।तहां जैतकुमार उठ्यौ सुनियं॥छं०३७॥

जैतसिंह का तलवार संभाल कर कहना कि भीमदेव का मन पाषंड से आकर्षण आदि का मंत्र वश में करके बहुत बढ़ गया है पर उत्तर के क्षत्रियों से कभी काम नहीं पड़ा है।

कवित्त— तेग झारि पंमार। जैत जग हथ्थ बत्त किया ॥
मंगै हैल सुगल्ह। तात अविवेक छित्ति दिय ॥
मोरा भीम नरिंद। बंध पाषंड प्रगट्टै ॥
आकर्षन मोहन मंत्र। जंत्र जुग जुग जे घट्टै ॥
धन द्रव्य देस बलि बल करन। जानै ना उत्तर अस्यौ ॥
धाराधि नाथ धारी धरनि। बहुल बेल नाथह धरयौ[4]॥छं०३८॥

---

1. मो–सुबर।
2. को० कृ० ए–रष्षं।
3. कृ–ष्षं।
4. मो–ग्यो।

गाथा - न थांनी घन घत्ती। षग्ग तमस उज्जलौ षरयं ॥
सोयं जैत कुमारं। भारथन थेव नथ्थयो ध्रग्यं ॥ छं० ३९ ॥

जैतसी का कहना कि पावंड से अपना बल बढ़ाकर भीमदेव अपने को अमर समझता है यह उसकी भूल है।

कबित्त - तेगझार पामार। जैत जग हथ्थ उचारिय ॥
अरे भीम पाषंड। सत्र डंडह हनि जारिय ॥
हैवुर षग्ग सुभूमि। दान विद्या अधिकारिय ॥
रूपदान रसग्यान। तत्त नह मत्त बिचारिय ॥
मोरे सुमत्ति भूलै अमर। बुद्धि समर सधन सकल ॥
परधान बंध कीजै मतौ। रथ जुत्तह पट्टू म कल ॥ छं० ४० ॥

भीमदेव के प्रधान का भीमदेव के बल की बड़ाई करके कहना कि वह पुंगल गढ़, आबू, मंडोवर और अजमेर सब जीत लेगा।

कवित्त -- बंधि पारि परधान। थान थानह द्रब सचिय ॥
ता पच्छै हुँगै भंडार। अप्पन धर पंत्तिय ॥
ता पच्छै मामंत। नाथ मिलि एक मुबत्तिय ॥
भोरा राइ दिसान। सैंध सगपन की कथ्थिय ॥
आरब्ब तेज गढ़ उद्धरन। षेमकरन सिंगार सिर ॥
मुरदेस सलष सुत जैतसी ॥ नव सुकोटि नागौर नर ॥ छं० ४१ ॥

दूहा - घाट किराडू पारकर। लोद्रा लौ जालेर ॥
पुंगल गढ़ आबू सहित। मंडोवर अजमेर ॥ छं० ४२ ॥[1]

छंदत्रोटक - नवकोटि मरूस्थल बीरबरं। दश अट्ठ सुअर्बुद राज घरं ॥
सर नागत रष्षिय कोन बरं। धन धन्नि नरिंद सुलोइ नरं ॥छं०४३॥

राजा सलष का उत्तर देना कि गोवर्धनधर श्रीकृष्ण हमारी सहायता करेंगे ॥

साटक—जा रष्या हय गर्व प्रीछित रिषं, दावा नलं जालयं ॥
सोयं मातुल नंद बंधि सलिता[2], कावेरि नौ प्रीतयं[3] ॥
जि रष्यो बर पानि प्रब्बत महा, गोवर्द्धनं धारनं ॥
सोयं सा हरि रिष्यि ध्रूवति वरं, जे ट्रट्ठ गोल्केस्वरं ॥छं० ४४ ॥

छंदत्रोटक -- सिय मंति सुमंतिय तत्त गुरं। हरि रष्षिय बालक बिप्पनरं ॥
जम लोकसु आंनिय बंध तपं। क्रितकाल सुगोकुल कालथपं ॥ छं० ४५॥

---

१. यह दोहा मो० प्रति में नहीं है। २. मो०—सरिता।
३. को—बृ—ए—बालयं।

भयकोपमयं दिवनाथवरं । हरि रष्षिय कूट सुअठ्ठघरं ।
धर धार बरष्षिय मेघघनं । जल सुक्कि तुवंत्तत बुंदजनं ।।छं०४६।।
कर कोमल पंकज पाइ हरी । करनी कृत धाइय देव करी ।।
नृप राज सुद्रोपद पुत्तवरं । किय कोटि दुकूल कला निकरं ।। छं० ४७ ।।
रषि षंडव मंडव लष्षि ग्रहं । सलषानिय पत्ति सुतत्त वहं ।। छं० ४८ ।।

दूहा - जिन रष्षी हरि भक्तिवरं । दैहथ्थ हम तेग ।।
दुहुन भंति मंडन मरन । सुर नर रष्षौ बेग ।। छं० ४९ ।।

कवित्त –षेमकरन षंगार[1] । महन गोइंद त्रिलोचन ।।
पंच भ्रत पंचौ सुबंध । स्वामि संकट रन मोचन ।।
लै संक्या[2] सिर पांन[3] । मनों पंडिवति पंच सम ।।
गोइंद सलष नरिंद । जोति रष्षन भारतभ्रम ।।
उत्तरिय गढ्ढ आबूधनी । रहिय विनग आबू नृपति ।।
कढघो सुभृत नृप नीठ कै । स्वामि धूंम रष्षन सुभति ।।छं० ५०।।

ऐसेही वाक्य जैतसी के भी कहने पर प्रधान का यह कह कर-
जाना कि सावधान रहना तुम पर हम राजा को लेकर आवेंगे।

दूहा– इम कहि जैत सुतात सम ।। गढ वपु रष्षौ सच्छ ।।
हम तुम जाइ सुराज पै । लैआवें बर पच्छ ।। छं० ५१ ।।[4]

राजा सलष का अपने यहां तयारी करना और इंछिनी को
विवाहने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना ।।

कवित्त --गय सलषांनी राव । वीर अग्गर गढ रष्षै ।।
बर आबू की लाज । षेम क्रंनह सिर भष्षै ।।
बंधो राब धरंनि । वीर पामर सुर सष्षी ।।
प्रजा पुलंत नरेस । ग्राम षट्टू दिसि रष्षी ।।
वर मुक्कि वीर धारह धनीय । हथ्थराज परवान लिषि ।।
सोमेस पुत्र प्रथिराज कों । दै इंछिनि सगपन सुबिषि ।।छं० ५२।।

कवित्त —बर उद्धरन नरिंद । षेम क्रंनह गढ साहिय ।।
जोग मग्ग लभ्भियन । षग्ग मग्गह मुति पाइय ।।
बहुत सिद्ध साधन सुमंडि । जोग आरंभ बिचारिय ।।
मुक्कि त्रिगुन गुन गहै । छिमा सद्धै क्रमनारिय ।।

१. कृ० को० ए०–उद्धरन।
२. मो०–मुंच्यो ।
३. मो०–मार ।
४. मो० प्रति में यह दोहा नहीं है ।

हम परत भूमि पंचह सुधर । पहिलै मोधर चंपिहै ॥
गोइंद परै बड़ गुज्जरैं । आबू आनि सुजंपिहै ॥ छं० ५३ ॥

भीम देव का सलख पर चढ़ाई करने के लिये अपने सामंतों से
सलाह और उन्हें उत्तेजित करना ।

कवित्त —आसोंजै रानिग राव । परवत बेहानै ॥
सो बन गिरि संथान[1] । राव सामंत सिवानैं ॥
चारु बंकि चालुक्क । राइ भोरा भुवपत्तिय ॥
कढ्ढिव अपो पंमार । षंडि छंडो छत पत्तिय ॥
आरद्ध उधाइ मंडली । गुज्जर राइ गरब्बियौं ॥
प्रथिराजराज राजंग गुर । तप्पि तरक्कस तष्पियो ॥ छं० ५४ ॥

चालुक्य और चोहान से जो विवाह का झगड़ा पड़ा है उसका
वर्णन चन्द करता है ॥

दूहा —चालुक्का चहुंआन सौं । बंधे तोरन माल ॥
ते कबिचंद प्रकासिया । जे हूंदे दल हाल ॥ छं० ५५ ॥

जैतसि का भीमदेव के संदेसे पर महाक्रोध प्रकाश करके पिता से
कहना कि यह कभी न होना चाहिए ।

दूहा —पउर कुंवर जैतह अनुज । मंगै भोरा राइ ॥
आबू तर उप्पर करो । कै इंच्छिनि परनाइ ॥ छं० ५६ ॥

कवित्त —तब उरिय जैत पामार । मलष नदन इह कथ्थिय ॥
भोरा भगुर राइ । राइं प्रज्जुन[2] मुष सष्षिय ॥
रा भोजन भुअ पत्ति । कुलह कुंडल्ल कलिमडिय ॥
सस्त्र बस्त्र करि नस्त्र । तिनां दंनन निन षंडिय ॥
गुज्जरिय प्रब्ब गो उप्परिय । गेहरि गल नच्चन कहै ॥
चालुक्क भष्प बप्यहतनो । किम प्रगट्ठ इंच्छनि लहै ॥ छं० ५७ ॥

दूहा —जिन दीनो जीयन मरन । दई हथ्थ हम तेक[3] ॥
और न चिंतन चिंतियै । सो रन रष्षं एक[4] ॥ छं० ५८ ॥

कवित्त —तब भीमवत्त सलषान । जैत बंधो उच्चारिय ॥
भूमि तात अप्पनी । रुधिर छूटै गल सारिय ॥
आदि अवनि ब्योहार । धनी धर धार न षंडै ॥
धन लुट्टुन गोआल । परह पुक्कारन छंड ॥

---

1. पृ० को० ए०—संधार ।
2. को—पान ।
3. मो—तेग ।
4. मो—एग ।

देषियै दीन घर घर फिरै। गरुअतन हरुअत्तनै ॥
निद्रा पियास छुध मोह[1] तजि। दुष सुष इक्क न गनै ॥छं०५९॥
दूहा—हरुअ घर घर बुल्लियै। कुजस कहै सब कोइ[2] ॥
बहु उबार मुष उच्चारै। जुद्ध बिनाइ लषोइ ॥ छं० ६० ॥
सबकी सलाह का यही होना कि चौहान के पास पत्र भेजा जाय।
दूहा—सकल परिग्गह एक किय। षट दिस पूजा सद्धि ॥
कागर दै चहुआन कौं। पठइय दूत समद्धि ॥ छं० ६१ ॥
दूत का दिल्ली में जाना और पृथ्वीराज को लड़ाई के लिये प्रचारना।
छंद वृद्धनाराच- परदि पुत्ति भेदि भेदि ढिल्लि दिस्सि संभरं ॥
सलष्ष राज काम साज सुद्ध बत्त बिस्तरं ॥ छं० ६२ ॥
सरंन काज चालुकं सबालुकं समत्तियं ॥
रषे जु षेमसी करंन राज पत्ति षित्रियं[3] ॥ छं० ६३ ॥
चढंत यं गिरा गिरं धरा धरं सुहल्लियं ॥
सतं मुषं जुसत्तसूर सत्र चूर चल्लियं[4] ॥ छं० ६४ ॥
सुनंत मंत्र मंत्रियं सुसोम पुत्र सज्जियं ॥
सुसेन सोभ सोभियं सुछित्त छत्र छज्जियं[5] ॥ ६५ ॥
सलष का पत्त पढ़कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना।
दूहा— सुनि कग्गर नृपराज प्रथु। भौ आनंद सुभाइ ॥
मानों बल्ली सूक ते। बीरा रस जल पाइ ॥ छं० ६६ ॥
मंत्री को पृथ्वीराज ने पांच हाथी, सौ घोड़े, पांच सौ रुपया आदि दिया और आप सलष की राजधानी की ओर गया, यह सुनकर भीमदेव क्रुद्ध गया।
कबित्त— पंच हस्ति सत बाजि। द्रव्य दीनो सत पंचं ॥
धरमत्ती मेवात। दियो हिसार सुषंचं ॥
तेग एक षुरसानि। इक्क माला गुन दानं ॥
आदर सजुत बोल। मुक्कि मंत्री अगिवानं ॥
संभाग राज सोमेस सुअ। सलष राज कीनो गवन ॥
सुनि बात राय भोरंग हिय। मनो घाव दीनो लवन ॥ छं०६७ ॥
दूहा— करि जुहार भीमंग सो। चल्यो जैत कुंआर ॥
षेमकरन षंगार कौं। दै सिर उप्पर भार ॥ छं० ६८ ॥

१. मो—सुध सोह। २. मो—सोइ।
३. को—कृ-ए—पत्रियं। ४. मो०—सतं मुषं जुसत पत्र सूर पत्र चल्लियं।
५. कृ-को-ए—सज्जियं।

इंछिनी का पृथ्वीराज से ब्याहा जाना सुनकर भीमदेव का सरदारों से सलाह करना।

दूहा—गढ साह्यौ सुनि भीम ने। कन्यावर प्रथिराज ॥
बोलि मंत्रि सज्जन कह्यौ। दुहूं बाजएं बाज ॥ छं० ६९ ॥

भीमदेव का सलष पर क्रोध प्रकाश करना और दिल्ली दूत भेजना की उसे चहुआन शरण न रक्खे ॥

छंद पद्धरी - जं बात सुनिय सलेषज बीर। परि तत्त तेल जनु बूंद नीर ॥
प्रजरंत रोस चालुक्क भान। धर धरिग धरा षल संक मान ॥ छं० ७० ॥
बंधू समेत पाताल मेन। जमराज षून को करे हेत ॥
इंकिनी पास पीठी मिडाइ। को तिरै समुद बिन हथ्थ पाइ ॥ छं० ७१ ॥
को हथ्थ सिंघ पुच्छी जगाइ। को लेइ नाग मनि सीस लाइ ॥
को काल ग्रेह गहै षंचि हथ्थ। घालै जु कौन तत अग्गि वथ्थ ॥ छं० ७२ ॥
रष्षै सु कौन चालुक्क षूंन। संभर्यो कौन त्रैलोक हून ॥
मैं सुन्यो क्रंन जुग्गिनि पुरेस। परमार रष्षि अप मध्यदेस ॥ छं० ७३ ॥
ज्यौं पियो कृष्ण दावानलेस। त्यौं पिउ गहूढ आबूअ देस ॥
गढ चढै मान मन धरिग भार। मम करों जारि मंगारमार[1] ॥ छं० ७४ ॥
मुक्कले दूत ढिल्लीय थान। रष्षं न मरन ज्यौं चाहुआन ॥ छं० ७५ ॥

भीमदेव का चारो ओर मित्र राजाओं की सेना बुलाना और चढ़ाई की तयारी करना।

कवित्त –जपि भोरा भीमंग। अंग कंप्पै रस बीरह ॥
बिषम क्षार उद्धार। बारि बोरैं अरि नीरह ॥
दिसि[2] दिमान कग्गर। प्रमान पट्टे पट्टनवै ॥
बारिधि बंदर सिंधु। बाज सोरठ ठट्ठनवै ॥
कच्छे न जथ्थ जद्दव जहर। सेन इक्क भए आनि भर ॥
चालुक्क राइ चालंत दल। अम्मर घुम्मर घुमर बर ॥ छं० ७६ ॥

आबू पर चढ़ई की तयारी।

कबित्त –बर गिरनार नरेस। कियो साहस चालुक्की ॥
लोहानो कट्ठीर। सेन बंधे भुअलुक्की ॥
आबू उप्पर कूच। बीर भीमंदे दिज्जै ॥
बर निसान सुर गज्ज। गज्जि[3] जैजै अरि पिज्जै ॥

---

१. मो—छार।
२. को० कु० ए०—दम।
३. को० कु० ए०—गज्जिर।

सहनाइ न फेरिय बीर बजि । सिंधुअ राग सु आदरी ॥
पंमार भीम पूजी सहर । बजी कूह गुन गहरी ॥ छं० ७७ ॥

भीमदेव की सेना के कूच की धूम का वर्णन ।

छंद भुजंगप्रयात्—धरा धूरि पूरं।सिरं सेत नेतं।षहं षंड षंडं । उडी रेन रेतं॥
मदं गधं भौरं । लगे झौर भारं । मनौं कज्जलं कूट । कलषंठ थारं ॥छं०७८॥
ढलं ढाल ढालैं । चलै ब्रंन ब्रंनं । मनौं केलि पंचं । रगंवा सुब्रनं ॥
चलें चौंर चावद्दिस वात पत्तं । मनौं भौरयं भौर वासंत मत्तं ॥ छं० ७९ ॥
नवं नद्द नीसान बज्ज अघातं । गजै गैन कै सिंघ कै गिग्गिरातं ॥
नवं नद्द नफ्फेरि भेरी सभालं । तरक्कंत तेगं मनो बिज्जु नालं ॥ छं० ८० ॥
करक्के नरं षाल षग्गं षनक्कैं । मनौं काल हथ्थं सुबिज्जू झलक्कैं ॥
थलं बेयलं वेयलें तथ्थ नीरं । मनौं नंषियं बान रघुनाथ बीरं ॥ छं० ८१ ॥
जलं बेत षुट्टी बनं बेत तुट्टी । थलं वेत छुट्टी फन वेत उट्टी ॥
धरं रेन उड्डी सुलग्गै अभानं । दलं वेत बढ्ढी पयानं पयानं ॥ छं० ८२ ॥
करी आनि सेना सुआबू गिरद्दं । मनौं पारसं चंद आभा सरद्दं ॥
कवी बीय ओपंम चित्तं बिचारी । उरंहूव माला सिवं ज्यो अधारी॥छं०८३॥
चिहूं कोर डेरा कहूं पीत सेतं । मनौं ग्रीषमं अंत उद्दिठ मेघ मेतं ॥छं० ८४॥
गाथा--आभा सरदं प्रमानं । सेनं सज चालुकं बीर ॥
छिति छत्रीयं छत्रं । जनु बद्दल छुटि संकरं मेघं ॥ छं० ८५ ॥
छंद भुजंगी –निसानं निसानं निसानंत बज्जै।दिसानं दिसानं दिसानंत गज्जै॥
तमंते तमंते तमं तेज भारे । झमंते झमंते झमंकार झारे ॥ छं०८६ ॥
पुजै नाहि बानं कमानं प्रसारे।इसे राइ चालुक्क सेना समारे॥छं०८७॥
गाथा—मत्ता मेघ दिसानं । रिस्सानं चालुकं राइं ॥
नैनं तेजति तुट्ठं । ज्यौं तत्ताइं अग्गियं बुद्दं ॥ छं० ८८ ॥

आबू की शोभा वर्णन ।

कबित्त—बलि भीमंग नरिंद । गढ्ढ मप्पो चिहुं पासं ॥
नारि गौर सावात । बीर धावै रस रासं ॥
बिय ऊंचौ षट कोस । पंच मुर मध्य लंबाइय ॥
बागवान जलथान । जानि कैलास बनाइय ॥
गिरि गंग सहित तिथ्थह जहां । देवधान उद्यांन तहं ॥
रिषि संत जती जंगम जुगी । रहहिं ध्यान आरंभ महं ॥ छं०८९ ॥

भीमदेव का वैदिक धर्म छोड़कर जैन धर्म मानना ।

दूहा—ठानिज्जै मानिज्ज भत । हानिज्जै गुर ग्यान ॥
बेद धर्म जिन भंजए । जैन ध्रम परिमान ॥ छं० ९० ॥

अमर सिंह सेवरा की सिद्धि का वर्णन ।

कवित्त—अमर सीहू सेवरा । मंत्र भेदं उप्पाइय ।।
जैन ध्रंम बाचिग्ग । मंत्र कर कग्गर वाइय ।।
मोर सोर पप्पीहू । जीहू दद्दुर सुर लाइय ।।
हुथ इथ्थ सुहमैन । भेद अद्धी निसि आइय ।।
नाइक्क एक दष्षिन तनौ । दष्षिन दर कूची दइय ।।
चौसट्ठि देवि परसाद करि । मंत्र भेद अमरै ठइय ।। छं० ९१ ।।

भीमदेव का रात के समय कूच करना ।

दूहा—चढ्यौ भीम भोरा सुभर । अंधारी निसि अद्ध ।।
रौरि परी गढ उप्परैं । भेद सबै बर षद्ध ।। छं० ९२ ।।

छंद भुजंगी—उसद्देति सद्दे कुसद्दं गभीरं । चयं चंद बोधं अबोधं सरीरं ।।
हको हक्क बाजी गजे मेघ नद्दं । जगे लोइ लोयं कुसद्दे कुसद्दं ।।छं०९३।।
गली गलि छत्ती छितीता छितानी । कमट्टं विमट्टं निठं जाहि रानी ।।
छती छत्र मंत्रे विमंतेति भारे।मुनी क्रंन चालुक्क सेवक्क सारे ।।छं०९४।।

कुंडलिया जिनी ओंडां हंमीर हो । तिन मलषानौ भार ।।
दियो कोट चालुक्क कौं । मो दीहा मंसार ।।
मों दीहा संसार । भीम अप्पो गढ अढ्ढो ।।
कहै बंधु बीरम । राज षंगर गढ चढ्ढो ।।
हक्यो भीम कुमार । मुक्कि मावित्ता कोडां ।।
चढ्यो जुद्ध पमार । गयो हमीरसी उंडां ।। छं० ९५ ।।

गाथा - बल्भे बल्भो बातं । नह अच्छी बीय भेदयो ।।
भेदै अच्छरि कुल्यं । पावारं प्राति बालायं ।। छं० ९६ ।।

कवित्त वार दीहू लगि नवमि । बहुरि रिन रत्तह लग्गा ।।
पामारां चालुक्क । सेन लुथ्थिन भोमग्गा ।।
दनु सुदेव है हैयकरत । षल हलि गिरि अंन ।।
कोटि तिथ्थि धारीहू । धरत धारहू पति तंनं ।।
इम भिरत पंच दस वासरह । सूर उद्ध उद्धरन धर ।।
कर हनिग राव गुज्जर दलां । मार मार उचरंत सिर ।।छं० ९७।।

कवित्त—मार मार उच्चार । धार धव दग्ग भीम दल ।।
षेम करन षंगार । देषि भर भीर तऊ बल ।।
सिर उड्डुत उतकंठ । हंस रस कीय कटारै ।।
अति निसंक अरधंग । कमध कीनों पंमारै ।।
दहू पंकधार धारहू घनिय । जुरन जुत्ति जुमहर गनी ।।
ता पच्छ सुगति लम्भय सुबर । चिंति चिंति मुनि सिर धुनी ।।छं०९८।।

कवित्त - आसति अस्तुति अस्त । वस्त छित्री छित रष्षी ॥
कहै तो रष्षौं हेतु । केइ अगय इह भष्षी ॥
ईस अचल दिषि अचल । अचल डुलै न पाइ तिन ॥
धू धू धू मंडलह । सार बज्ज्यौं सारन झिन ॥
वेहथ्थ दरद्री द्रव्य ज्वौं । अचल सचल मिर दिष्षइय ॥
षंगार षेम षेमह करन । जित्ति कित्ति अभिलष्षइय ॥ छं० ९९ ॥

दूहा - अचल कहै गिरि सिर धर्यो । तद्दिन तें पन पानि ॥
रुधिर सुधिर सस्त्र षस्वो । घन्नि घन्नि सलषानि ॥ छं० १०० ॥

कवित्त - रष्षि रष्षि सलषानि । जूह सलषानि पवारं ॥
वर भीमंग नरिंद । सीम दीनो भर भारं ॥
उद्धं राव उद्धरन । कोट नव कोटी लाजं ॥
पूंजा पुंज पहार । लाज विम्भूतिय साजं ॥
महनसी टंक मारू मरद । गज्जिधार सिर वहिग बन ॥
जाने कि सद्द पर सद्द गिरि । सुत हंक्यो मंतह पवन ॥ छं १०१ ॥

दूहा - मत्त मत मातंग बर । छह पत्ता मुष मंडि ॥
ते षंडे सो षंड ए । जम किंकर क्रित छंडि ॥ छं० १०२ ॥

गाथा -- छुट्टा मुत्तिय पुहपं । नुटा रुधिराइ धार धारयं ॥
जानिज्जै षहमग्गं । जग मग्गं पेह यो पहयं ॥ छं० १०३ ॥

सलष और भीम की सेना से घोर युद्ध ।

छंद भुजंगी - मिले सेन पंमार चालुक्क एतं । कुहू रैन जुट्टं मनौं प्रेत हेतं ॥
परं सीस तुट्टं विछुट्टं बिहारं । करें गल्ल ग्रज्जें पिसाचं चिहारं ॥ छं० १०४ ॥
तरक्कंत घायं श्रैं घाइं कच्छी । मनौं नीर मुक्कें तरप्फंत मच्छी ॥
कियौ जुहरं जालिबालानि तत्यें। वढयो राउ भोरा सिरें अब्बुमत्यें॥छं०१०५॥
षर्ष चच्चरंची मुरंची झनक्के । वज्यौं जानि घरियार संभ्या ठनक्के ॥
रुधि धार धारं भई भूमि रत्ती । रमैं जानि वासत निस्संक छत्ती॥छं०१०६॥

सलष का मारा जाना, उसकी वीरता की बड़ाई ॥

कवित्त— षेमकरन षंगार । उद्ध उद्धरन गह्यो गिरि ॥
वल बरसिंघ ततार । सार लग्गै प्रहार सिर ॥
मंस अंत तुट्टई । वीर बंटई जुराज्यो ॥
जरासिंध जोरयो । जोर दिष्षिय ज्यो पाज्यो ॥
दिषि मंत मत मती उमा । जैं जै जै जंपत सुभर ॥
पंमार पंच पंचौ मिले । रह्यौ एक औसाफ धर ॥ छं० १०७ ॥

कवित्त - षेमकरन षंगार । जुरत जौं हूर संपत्रिय ॥
लिय गिर गुज्जर राइ । कंध निन हुंस उडन्निय ॥

सिर तुट्टै धर भिरिग । ढरत कर लई कटारिय ॥
कर कत्ती सुकमंध । कंध बिन करिय पवारिय ॥
बरन बिन्त वित्त कवित्त यौ । लष्षि पमार सुलष्षन ॥
सक्क सों काल कमधज्ज किय । सुकवि चंद कित्ती भषन ॥ छं० १०८ ॥

कुंडलिया - अब्बुअपति पामार पह । लिय गिर गुज्जर राइ ॥
ता पछ वित्त कवित्त यो । कह्यौ चंद बरदाइ ॥
कह्यौ चंद बरदाइ । कज्जभर बित्त कबित्तौ ॥
पट्टन वैहै गै पलान । मुरधर संपत्तौ ।
मलष अलष करि कित्ति । सुयसु संमारह जानिय ॥
करन नंद करिवार । गढ्ढ चंपत बष्षानिय ॥ छं० १०९ ॥

भीमदेव का आबूगढ़ पर अधिकार करना ।

कवित्त - परे अझ्झि रन बीर । मरन ज्यौं जानि जम्म बर ॥
पुत्र मित्र सज्जन सुलच्छि । टरे नन काल काल कर ॥
धरी लच्छि धर धरयो । धारि उद्धार पमारं ॥
सह परिगह छह पुत्त । तुट्टि धारा धर धारं ॥
धुअ धाई भीम[1] लीनौ सुगढ़ । सुकल पच्छ पुनिम सुदिन ॥
जय दंद[2] बत्त चालुक्क सुनि । नभ लग्यौ सलषान तन ॥ छं० ११० ॥

एक महीना पांच दिन आबू में रह कर भीमदेव का अपने राज्य को लौटना ।

दूहा -एक मास दिन पंच रहि । गढ़ मुक्यौ तिन बार ॥
पट्टन वै पट्टन गयौ । अब्बू वै सिर भार ॥ छं० १११ ॥

अपने राज्य में आकर भीमदेव ने शहाबुद्दीन को पत्र लिखा कि आप सारंडू आइए हम आप मिलकर पृथ्वीराज को जीतें, पत्र देकर मकवान को भेजना ।

छंद भुजंगी - थपी थान थानं सुअब्बू प्रमानं । गवो राज पट्टं सु पट्टं निधानं ॥
दियं कग्गदं साहि सुरतान गोरी।करौं भेद[3]वत्तं बधौं पिथ्थ जोरी।।छं०११२।।
धप्यौ साहि गोरी सुमारूंड आवै । हमं सब्ब सेनं पसौ कित्त धावै ॥
दऊं गढ्ढअब्बू रुजंबू निधानं । साहि चौहान करि षग्ग पानं ॥ छं० ११३ ॥
तहां मुक्कल्यौ बीर मकवान राजं।लिषे कग्गदं चालुकं राजकाजं ।।छं०११४।।

मकवान से भीमदेव का कहना कि केवल इंछिनी के ही कारण से मैंने सलष को सकुटुंब स्वर्ग लोक को भेजा है ।

दूहा —पूत परिग्गह बंधु सह । मै मुक्कलि लग[4] लोग ॥
एकै इंच्छिनि कारनह । मति सलषानि अजोग ॥ छं० ११५ ॥

---

१. को कृ. ऐ–गढ़ । २. को–जयचन्द । ३. मो–तेह । ४. को–अग ।

और मेरे मन का दुःख तब दूर होगा कि जब चौहान पर चढ़ाई करूं, सुलतान मुझसे मिलजाय, और दिल्ली का राज्य अपने हाथ से नष्ट करूं।

गाथा — मम मनरंजन भंजो। सजौं सेनाइं संभरी देसं॥
जो मिलई सुरतानं। भंजौं राज दिल्लियं पानं॥ छं० ११६॥

भीमदेव के कागद के समाचारों का सारांश।

कुंडलिया — कग्गर गुरिय सहाबदिस। भरि लिषि भोरा राइ॥
तुम धरि संभरि उत गहो। हिम नागौर निहाई॥
हम नागौर निहाइ। बंधि सभर गिरि अब्बू॥
जौ मिलंत मुहि आइ। देउं घन अंबर दब्बू॥
पहु पाकर पटनेर। सीम भष्षर ही अग्गर॥
गुज्जरवै गरू अत्त। लिषे गोरी दिस कग्गर ॥ छं० ११७॥

घोड़े, चमर, पशमीना आदि भेंट दे कर शहाबुद्दीन के यहां भीमदेव का दूत भेजना।

कवित्त—बहन बटी सौ तुरग चमर पसमी चौरंगा॥
पंच घाट पंचास। अस्सि तंबोली थंगा॥
उभय मत्त गजराज। सेत बलभद्र समानं॥
लिषि कग्गर चालुक्क। बोलि सारँग मकवानं॥
सालोभ अंगनन झूठ मन। चित उदार सच्ची कहन॥
इन दूत मुलच्छिन होहि नृप। तब मुराज हथ्थह गहन ॥ छं० ११८॥

पत्र पढ़कर सुलतान ने कमान खींचकर कहा किया तो मैं म्लेच्छों को मारूंगा या खुरसान रहूंगा।

दूहा —सुनि कग्गर गोरी गरुअ। कर षंची कम्पान॥
कै भंजौं मेछान दल। कै रंजौं षुरसान॥ छं० ११९॥

कवित्त —षां ततार षुरसान। षान न्याजीषां रुस्तम॥
षां पिरोज पाहार। बली निसुरत्ति जुद्ध जम॥
तुंगीषा निरहुंति। अग्गवानी दल पानी॥
हूं उजबक उज्जाकूं रेह। रुष्पन मै दानी॥
चालुक्क लिषे कग्गद जुवै। बषतवान दस्सन दुनम॥
हंमीर मिले हंमीर वर। बर भीमानी भीम रम ॥ छं० १२०॥

सुलतान ने कहा कि दान, खड्ग, विद्या और सम्पत्ति ये साझे में नहीं होते।

दूहा —कही बत्त सुरतान नै। जे[1] सारँग वर बीर॥
दान खग्ग विद्या विभो। एनहु बंदै सीर॥ छं० १२१॥

---

१. मौ—रै।

अरिल्ल— दानह षग्ग बिभोदी बंदै । लच्छि बीर पाषंड उमंडै ॥
को अष्षै लच्छी परिमानं। मोहि आज चरका चहुआनं ॥छं०१२२॥

गाथा— भूमी द्रवै सुलच्छी । बंका बीरां इवं कियं भूमी ॥
नह बंकी धर कब्बं । बंक बीराइं बंकियं होई ॥ छं० १२३ ॥

पृथ्वी वीरभोग्या है भीमदेव मुझसे क्या शेखी मारता है मैं उसे भी मारूंगा ।

कबित्त— बीर भोग वसुमती । बीरं बंका अनुसरई ॥
बीर दान भोगवै । बीर षग्गह गुर करई ॥
अन्न पान रस द्रवै । लगै काइर नह अच्छी ॥
है षुर षग्गह धार । बीर भोगह बर अच्छी ॥
जंपै न बीर सारंगतं । भोरा नाम अभंग भर ॥
भुग्गवै कौन को भुग्गिहैं । करौं चरक्का पग्गबर ॥ छं० १२४ ॥

श्लोक - न कस्यापि कुले जाता न कस्य नरनारियम् ॥
हयक्षुर खड्ग धाराच । बीरभोगी वसुंधरा ॥ छं० १२५ ॥

यह सुनकर सारंगदेव मकवाना का क्रोध करके भीमदेव की बड़ाई करना ।

दूहा -सुनिय मत्त सारंगवर । केहा देहा नेह ॥
दई दुहथ्थं विजरै । हिंदू मेछन छेह ॥ छं० १२६ ॥

छंद भुजंगी— न हिंदू न मेछं बरै काहि कोय। बरै ताहि तायं रसं बीर भोयं॥
कहै बत्त भोरं सुभोराति नामं। भज्यो इव्व अब्ब लग्यो सीस नामं॥छं०१२७॥

शहाबुद्दीन का फिर कहना कि पहिले चौहान को मारूंगा पीछे भीमदेव चालुक को ।

कवित्त पुनि गज्जन वैमाहि । कहै भोरा भीमंदे ॥
धर पाषंड निदान । बीर विद्यादिय बंदे ॥
दीहा दोती मंत्र । मोहि चहुआन चरक्का ॥
ता पच्छै गल्हवान । गल्ह करिहै धर धक्का ॥
पाषंड डंड रच्चै नही । जिम्मीजर कंकर बरा ॥
संभरिय काल कंटक हनौं । तापाछैं गुज्जर धरा ॥ छं० १२८ ॥

मकवाना सुलतान की बात सुन बोला कि चालुक का दल जब चलता है तो काल कांपता है ।

कवित्त—सुने सद्द सुलतान । बोल बासीठ बुसद्दे ॥
रस रसाल केरी करकि । कर चोपि लुहद्दे ॥
भीमां सौं भारथ्थ । चाव लग्गे सुरतानं ॥
मुसलमान दीवान । बंक बोल्यौ मकवानं ॥

चालुक्क राह चालंत । काल कलह छंडन करै ॥
मेवार अजैपुर गज्जनै । तीन राइ तिज्जर डरै ॥ छं० १२९ ॥

चालुक्य के आगे जालंधर, बंग, तिलंगी, कोंकन, कच्छ, परोट मरहट्ठे आदि कोई नहीं ठहर सकते ।

कवित्त –नहिं जालंध्रर वार । बंग चंगी न तिलंगी ॥
कुंकन कच्छ परोट । थट्ट सिंधू सरभंगी ॥
गवरि गवर गुज्जरी । सबर मरहठ अरु पंडं ॥
मुरि मरहठ नंदवार । राइ मालव गुन छंडं ॥
चामिली बार डर सिंधबर । सकहि न मंडन षग्ग रूकि ॥
चालुक्क राइ चालंत दल । काल कलह मंडै न झुकि ॥छं० १३०॥

जिस भीमदेव ने बघेलों को जीता, आबू को तोड़ा और जादवों को हराया उसको जीतना सहज नहीं उसे ब्रह्मा ने अपने हाथ से बनाया है ।

कवित्त –जिन जूना जंगाल । बाढ बाढेल उछट्टी ॥
जिन आमावलि अंग । देव बाघेल पलट्टी ॥
जिन भरि भोरा भीम । पालि चंपी आसेरी ॥
जिन जोग बेग जद्दों । निकारि अब्बू अतसेरी ॥
मकवान बोलि अगवान सौं । मकरि ताम मम जुद्ध सचि ॥
ए धरनि भीम भंजन घडण । अप्प कियो करतार रचि ॥छं १३१॥

सुनकर सुलतान की आंखे क्रोध से लाल हो गईं और वह उसको मारने पर उद्यत हुआ ।

कवित्त –कलह न छंडै काल । देश पुब्बेस पुलंगी ॥
अग्निवान दषि प्रभा । वाइ कूनारस मंगी ॥
मुसलमान दीवान । साह अग्गे इह बुल्यो ॥
लरै चंपि चहुआन । काल षग्गर सं तुल्यो ॥
सुनि श्रवन मग्ग रत्ते नयन । बयन साहि तत्ते तमसि ॥
जानै कि अग्गि सिंचिय सु घृत । ताम तेज चढ्यो विहसि ॥छं० १३२ ॥

कवित्त –मदपानी कि करै । कि जंपै मतिहीना ॥
कि वायस ना भषै । कि न कवि करै सुहीना ॥
अवध बाल कि कहै । चलहु सौं कि नह होई[1] ॥
आसवंत कि करै । पुन्नावंतह कि जोई ॥

---

1. को० कु० ८०-अलहु निघटहु कि न होई ।

कि करै काम अंती कठिन । कि न करै लोभी नवन ।।
कि करैं न तसकर अप्पवर । अबुध इष्ट सत्तह सुमन ।। छं०१३३।।

वजीर ने समझाया कि दूत नहीं मारा जाता, इसमें बड़ा अयश होगा ।।

कवित्त- रमन रोस सुरतान । हुसम हाजुर फुरमानं ।।
बर बजीर बरजंत । अैब लग्गै सुबिहानं ।।
अवध बसीठरु भट्ट । नीति हिंदू तुरकानं ।।
स्वामि सकल बोलंत । बघ्घ अरु सप्प षानं ।।
जल्लान आन साहाबदी । हल हलाल किज्जै गमन ।।
अनहल आलिल भैरवा । षलक षान षग्गह हुसन ।।छं० १३४।।

छंद मोतीदाम-षयं षग षत्तिय मत्त प्रमान । भयौ रस वीर हलाहल जान ।।
तमी तम लग्गि नभी नभ भान । उयौ जनु बद्दल फुट्टि प्रमान ।।छं० १३५।।

शहाबुद्दीन को महा क्रोध हुआ, एक सामंत ने वजीर से कहा कि तुम ठीक कहते हो पर यह कैमी गंवारों सी बात करता है ।

रिसं रिस रत्त तमी तम नैन । उरं घन वीर सिरं लगि मैन ।।
हुकंम हजूर वजीर सुपान दलं । दल ग्रब्ब भई रस षान ।। छं० १३६ ।।
वजीरन मज्झि कियो वल माहि । लगी जनु विज्जल श्री घन चाहि ।।
करी करुना रस केलि सुभ्रत्त । मगी वर साहि कमान अहित्त ।।छं०१३७।।
बुल्यौ बर गामिय गुज्ज गवार । कहै सुरतानप सेन उबार ।।
टगट्टग चाहि रहे सब लोइ । दिष्यो वर तेज अद्भुत सोइ ।।छं० १३९।।

यह सुन मकवाना को क्रोध आगया, उसने सामंत को एक हाथ मारा कि सिर जुदा हो गया ।।

छंदभुजंगी-बढी बीर बल्ली मुऊभी अभत्ती।परयौ सीस अग्गं मनो साहि मत्ती।।
उठी छिच्छ उंची रुधि छोन छोनं । मनौं वीर मत्ते सिवा जाल पीनं।।छं १४।।
षरी एक रवि मंडलं छिद्रकारी। तुटे कंध कामंध भो जुद्ध भारी ।।छं०१४१।।

इस पर ऐसा हाहाकार मचगया ।

छंद गीतमालती ढलकंत ढालें, चंद्र सालें, बंध हालें, प्रब्बतं ।।
रस रसनि रागं, बहुत आगं, बीरजागं, उर्वतं ।।
उर्वी न पावै, देव गावै, सार, भावै बीरयं ।।
मकवान थानं, भेदि भानं, करि प्रमानं, धीरयं ।।छं० १४२।।
बहु मंत कंतिय, भंति भंतिय, दंत दंतिय, उब्भरं ।।
नग नग निमानं, बुद्धि दानं, निव पारानं नीसरं ।।छं० १४३।।

मकवान का अपने चित्त में सुलतान के संदेसा न मानने पर विचार।

दूहा - कही चित्त मकवान नें। नह मंनी सुरतान ॥
अप्पन अप्पन सथ्थ सों। बल मडै चहुआन ॥ छं० १४४ ॥

कवित्त - करि सिद्धानी आन। बंग जे सुन हित हिंदू ॥
ते हिंदू मुष निंद। निगम निंदै गुन जिंदू ॥
इक्क बार सुनि बंग। सहस पातक रजपूतन ॥
नरकह सोधि नरक्कह। कवन कढ्ढै न्रक पुत्तन ॥
रजपूत मुक्ति[1] षग चित्तधरि। विधि बिनान यौं न्रम्मयौ ॥
कलि जाहि मिटै महि मंडलहि। पै न मिटै तन श्रम्मयौ ॥छं० १४५॥

इधर चालुक्क राय का अपनी सेना सजना ॥

गाथा—सजी सेन असुरायं। उप्पंमं चंद देवियं बरयं ॥
जानिज्जै परमानं। कै हल्लियं बद्दलं साहि ॥ छं० १४६ ॥

कवित्त—बद्दल दल बल उभरि ॥ सेन घुंमर घट घुम्मरि ॥
सयन बयन जकि नयन। मयन मत्ते जनु घुंमरि ॥
अरि अरिष्ट सम दिष्ट। धिष्ट धारन धर धुम्मर ॥
अग्गि झाल बिन धूम। इसे दष्षिय गज झुम्मर ॥
चालुक्क राइ मज्जे मयन। हय हिंसार न उच्छरै ॥
सिद्धान बंस सिद्धान गति। सिद्धइष्ट गुन बिस्तरै ॥छं० १४७॥

उधर शहाबुद्दीन ने तो अपने सामंत के मरने पर क्रोध कर मकवान को एक तीर मारा और मकवान ने हैजम हुजाब के सिर में एक सेग ऐसी मारी कि दोनों गिर गए।

कवित्त—सुनि माहाब वजीर। बोलि बल की अप्पानां ॥
क्रक्कस कर तें वर। कमान तानी लगि कानां ॥
छल छुट्टी छातीह। हनत सारंग सुषानां ॥
मार मार उच्चार। वेग कढ्ढी मकवानां ॥
हैजम हुजाब सिर उच्छटी। बीजलि कै अंबर अरी ॥
क्रंनांन भंजि पुप्परि षला। मही अग्गि उछटी परी ॥ छं० १४८॥

कवित्त—हैजम धुकि धर पर्यौ। पर्यौ माझी मकवानां ॥
रस रसाल लुट्टीय[2]। अैव लग्गिय सुरताना ॥
गयौ साहि ओसाफ। साव भग्गिय दुनियाना ॥
बुरे बुरी सब बोह। कहत संजम सुनियाना ॥

---

१ को० ३० क—मुत्ति। २. मो०—छुट्टीय

करतार हथ्थ वेती कला । कियो सुलभ्भै अप्पना ॥
पापंग देह मट्टी मिलै । दीदे देषि सु सुप्पना ॥ छं० १४९ ॥

भीमदेव ने अपने दूत का मारा जाना सुन बड़ा क्रोध किया और गजनी पर चढ़ाई के लिये वह सेना सजने लगा ।

कवित्त—सुन्यौ भीमर बध्यो । बसीठ षोलै षज्जीनां ॥
करि सिद्धानिय आन । मेट मेछाइन दीनां ॥
बंग सद्द कंनान । जीह जंना जन बढ्ढौ ॥
असी सहस्स सेना । सजन गोरी जर कढ्ढौ ॥
ढल्लांन मलंढी चाल जनु । असम समुदसेना तिरिय ॥
मय मोह छंडि रत्ते विषम । दइ दिवान गुन दुस्तरिय ॥छं०१५०॥

छंद फारक—रत्तानी बानी यूबानी । नीलानी सोहैं सावानी ॥
भुरवानी बानी बोलंदे । सिहानी सकर तोलंदे ॥
सोरठ्ठी बह निहट्टायं । हुरम जहूरहु बद्दायं ॥
अग्गिबान कमान सस्त्रायं । सर सस्त्र कमा मय यंत्रायं ॥
॥ छं० १५१[1] ॥

दूहा—ढल्लानं हल्लौ हलं । चौंरा नंच बदंत ॥
भोरानं भुअ उप्परै । मै छुट्टा मै मंत ॥ छं० ॥ १५२ ॥

दूहा—घोरानं छत्रं छतं । मोरानं मंथ्थान ॥
सारत्री पष्षर जरी । हेमानी गत्तान ॥ छं० ॥ १५३ ॥

सेना सजने पर आग लगने से अपशकुन होना ।

कवित्त नीला नीनी जूह । धाम लग्गी चालुक्कां ॥
हक्कारी हाकंत । सथ्थ सत्तरि वै भुक्कां ॥
गोम गज्ज उछरीय । धाम धर कंपि हलक्किय ॥
नाग भाग सत दीह । नीय तन कंप सलक्किय ॥
प्रज्जाल माल हिंचाल हलि । कलि कलाप कलि उल्लटिय ॥
पहु राइ पिढ्ढ छित्तंग छिति । नित नियंग सुर उच्छटिय ॥छं० १५४॥

दूहा - बोली बंधनि हाय धन । पंमारे चहुआन ।
बीरं दाइ बसीठियां । है हिंदू सुरतान ॥ छं० १५५ ॥

दूहा—जित्ती धर चहुआन की । जित्ती[2] ताइ तुषार ॥
परठी पट्टनवै परत । मग्गां दान सवार ॥ छं० ॥ १५६ ॥

---

१. यह छन्द मो० और कृ० प्रतियों में नहीं है ।

२ कृ० को—बोली ।   ३. मो—जितीक ।

भीमदेव का प्रतिज्ञा करना कि जो खुरासान के राज्य पर शहाबुद्दीन रहै तो मेरा नाम नहीं।

छंद भुजंगी-करी राज भोरा प्रतंग्या प्रमानं। हसे बोल अष्षे सु उंचेहु मानं॥
रहै साहि गोरी षुरासान थानं। नहीं नाम चालुक्क भीमं परानं॥छं०१५७॥
धर्‌यो नाम रजपूत सू बंभ लट्टौं। इती दोष दंदं दहै जो न कट्टौं॥
धरै ध्यान छत्री डुलै चित्त मंझै। परे न्रक्क आव्रत बुज्झै न सुज्झै॥छं०१५८॥
जिते बाल उपबैन झूठे उचारैं। धरै नाम छत्री न सस्त्रं पचारैं॥
इमं[1] बीर बीरं कहो भीमराजं। गजे गुंग नीसान ईसान गाजं॥छं० १५९॥

उधर शहाबुद्दीन ने अपनी सेना सजी।

कबित्त गज्जनेस गोरीय। सेन हय गय अपसज्जिय॥
षां ततार षुरसान। मीर माही पव रज्जिय॥
हय गय नर असुरान। मुनी चावद्दिम बत्तं॥
पट्टनवै पट्टंन। बीर गोरी जुध मत्तं॥
मैमंत राज प्रथिराज पर। अब्बू वै ऊपर करै॥
सुरतान सेज सज्जे सुने। धर गिरजल रज उच्छरै॥ छं० १६०॥

सुलतान और चालूक के अपनी अपनी सेना सजाने पर चहुवान का भी दिल्ली और नागौरादि में अपनी सेना सजाना।

दूहा–ढिल्ली वै सेना सजय। रंजन रन रावत्त।
मधुर महुब्बति षानवर। दिय कग्गद गुन मत्त॥ छं० १६१॥

छंद हनूफाल रावत्त रत्त दिसान। सजि चालि[2] सेन सुरतान॥
सारुंड गोरिय आइ। बहु सेन असेष[3] सुजाइ॥ छं० १६२॥
प्रब्बाह सेन समुद्द। मिटि गई छित्ति सरद्द॥
नागौर ढिल्लिय राज। हज्जार अट्ठ विराज॥ छं० १६३॥
सुभ च्यारि सहस प्रमान। षट उभै सेना मान॥
चालुक्क भोरा भीम। को काल चंपै सीम॥
बर करै तमकत रीस। तिहि जगैं जगि गिरीस॥
सोझत्ति चालुक राइ। मनु बीर कच्छि प्रवाइ॥ छं० १६४॥

कैमास का मति उपजाना कि ऐसे में अपने दोनों शत्रुओं से लड़ने का अच्छा अवसर है।

कबित्त—चाहुआन सामंत। मंत कैमास उपाइय॥
बंदि लग्ग हुंकार। बंध बंधान उचाइय॥

---

१. मो–इमें। २. कृ० मो० को.–चलिय। ३. कृ को.–अव्व। मो–सलष

दस गुंगां बल देषि । साजि साधन सु मुगंधह ॥
दुहु मुष्षांहीं लग्गि । बीच चंप्पो सुम्रदंगह[1] ॥
गोरीय एक गुज्जर धनी । मुष विचित्र धनि संभरी ॥
हज्जार दून द्वादस भरह । दो गिलग्गि दुहु दिसि बुरी ॥छं०१६५॥

कबित्त -सारुंडे साहाब । दीन सुरतान बिलग्गा ॥
सोझन्नी भर भीम । राव लग्गह अगदग्गा ॥
नागौरें सामत । ईम चहुआन पियाई ॥
अम रनि गुज्जर पनी । जानि म्रदंग वजाई ॥
दो बीच हजारी अट्ठ नव । ग्रेहा मत परट्टयौ ॥
नामंड राइ कैमास सम । पीनी पग्ग बरट्टयौ ॥ छं० १६६ ॥

कैमास की उपजाई मति के निश्चय के लिये नागौर में मता मंडना अर्थात् सब सामंतो की सभा होना उसमें कैमासादि का अपना अपना विचार प्रकाश करना ।

कबित्त मनो मडि नागौर । राइ कैमास विचार ॥
दल समूह सुरतान । मिल्यौ नाहर परिहारं ॥
सोझन्नी चालुक्क । गाइ भारा बढि लग्गा ॥
तुछ अराज मजि जुह । जियन कज्जं नह भग्गा ॥
चामंड जैत उच्चारयौ । बाचारो[2] लंबी सुभुअ ॥
सुरतान सेन[3] कितक[4] कहै । हम ठेलैं पुरसान धुअ ॥ छं० १६७ ॥

उसमें चामंड राव और जैत राव की प्रतिज्ञा ।

कबित्त- -कहौ[5] तौ बंधो साहि । धाय चालुक्क विडारौं ॥
हम स्वामि[6] काज सामंत । मरन तन तिनुक बिचारौं ॥
अप्प अंग गुज्जीव[7] । पुत्र बंधव पिजि भामं ॥
चक्रवर्ति तिन मान । वंत रागी करि जानं ॥
अंतरौ एक कैमास सुनि । मरन तुच्छ मारन बहुल ॥
उन असमो नन आम हम । निरगुन ए वे सहित मल ॥ छं० १६८॥

---

१. ए-म्रदंगी । २. कृ० को०-बाबारो
३. कृ० को०--"सेन" नही है ।
४. कृ० को०-"कितक" की जगह "किता:क" है ।
५. मों-कहै ।
६. कृ० को०-श्रमि ।
७. मो०-"अप्प अग्ग मै सुजीव" ।

बागरी अर्थात् देव राव बग्गरी का कथन ।

कवित्त—पहिलै भंजौं भीम । कहिग बग्गरी बिसाले ॥
महनसीह[1] परिहार । देह दुज्जर मुंछाले ॥
राज दुअं जह जहह । जीभ जह्यो आ मानिय ॥
ओ[2] छाही सारंग । देव पट्टे पर बानिय ॥
चालुक्क चंपि धूनी धरा । सो सुरतानह संभरी ॥
बेदलह धाइ बधाइयां । बोल उचा उंचां मरी[3] ॥ छं० १६९ ॥

राव बड़ गुज्जर का कथन ।

कवित्त—रा प्रथिराज प्रसंग । राव बोले बड़ गुज्जर ॥
तिन तोली तरवारि । माह उप्पर दक्ष दुज्जर[4] ॥
कैमासै गढ़ सौंपि । कह्यो कोटां रा रष्षन ॥
तुं मंत्री सस्त्रधार । भार भारी भर[5] भष्षन ॥
आलोच[6] अवारी संभरिय । मति बिहत्त ते बत्त हुअ[7] ॥
आरीर हजारी पंच सें । चाहुआन षल घत[8] तुअ ॥ छं० १७० ॥

लोहाना का आगे होना और सेना ले जहां चाहुवान सेना फेरता था वहां जा मिलना ।

कवित्त—लोहानो भयो अग्ग । तोन सै पंच हलक्किय ॥
पंच हजारह लेन । एक दस अठुह भेरिय ॥
उच्छंगी संनाह । ठारि ते सुभट सनेरिय ॥
मिले आय जहां अग्ग* । फौज चहुआन सुफेरिय ॥
उत्तंग ढाल बैरष बनिय । पज्जूनह सो टारियह ॥
अस पत्ति सेन नष षग्ग कहि । सावन सार सुनत्त यह ॥ छं १७१॥

सामंतो का मत हो जाने पर चाहुवान ने अपनी सेना के दो भाग किए, एक चामुंड राव जैतसी के साथ मुलतान पर चढ़ा एक और दूसरा चालुक्क भीम देव पर ।

कवित्त—मतौ मंडि सामंत । सेन बंटे चहुआनं ॥
जैतसि राव चमुंड । मुक्कि कैमासहयानं ॥

---

१. कृ० को०—महनसिंह । २. मो०—ऊंछा ।
३. मो०—"ऊचा उंचां भरी" की जगह "बाल उवाए संभरी" ।
४. को० कृ०—उज्जर । ५. कृ० को१—हूर ।
६. मो०—आलोप ।
७. मो०—"मति बिहत ते बत्त हुआ" की जगह—'मत्त बहुत्तति बत्त हुआ'
८. मो०—बत्त ।

अड्डे ए संवोधि । चंपि चालुक मुष लग्गा ॥
जित्ते मिल्ले संभरी । जोग सहै अप भग्गा ॥
बंटई फौज प्रथिराज भर । अर्क बार राका हरी ॥
वर लाज लई धर संभरी । संभरि वच कंधह धरी ॥ १७२ ॥

बुग्रोरी चढाइयों की सेना की शोभा का बर्णन ॥

छंद भुजंगी —बंटी फौज दूनों चढ़े चाहुआनं। भरं स्वामि दूनों भरे चित्तबानं॥
तिनं की उपंमा कवी चंद पढ्ढै।मनो कर्क अरु मक्र निसिदीह बढ्ढै॥छं०१७३॥
दुई इक्क मन्नैं उमन्नै नसाई । करी संभरी भ्रत्य दूनो दुहाई ॥
भ्रितं मुष्ष उंचं दिपै चाहुआनं । मनो डंमरी बाल उग्गो विभानं ॥छं०१७४॥
फिरै उंच तेजं तुरं गंति ताजी । जिनै[1] देषते नैन गत्यं[2] न लाजी ॥
षचे बाग उट्ठै चुटक्कै हुरेवं । मनों मंडियं मौज केकी परेवं ॥ १७५ ॥
पहू पाइ मंडं तनं चित इंवी[3] । मनों पातुरं चातुरं तं विसंषी ॥
कवी चंद ओपंम दंती करत्ती । मनों कज्जलं कूट धावै धरत्ती ॥ छं०१७६ ॥
षिनं[4] उप्परं ढाल नेजे सुरंगं । तिनं ओपमा चंद चिती सुचंगं ॥
जरे पाटनारी बिचैं हेम गुंथे । मनो षज्जुरी केलि जुग मेर मंथे ॥ छं०१७७॥
ठनक्कंत घंटा चनैं अंग मोरें । मनों कूलटा छैल चित चालि चोरें ॥
झमैं दंत दंती सुनेनं[5] विराजे । मनों विज्ज लत्ता नभं मध्य छाजै[6] ॥१७८॥
मुषं सूर सूरं सुमुच्छी विराजे । तिनं चंद बीजं गत[7] देषि लाजै ॥
पटे बीय पासं उपंमा सुकब्बी । मनों राहु बीयं रनं[8] चंपि रब्बी ॥छं०१७९॥
सजे आवधं सूर छत्तीस डब्बे । मनों राहु रूपं ससी कोटी दब्बे[9] ॥
करी सेन गोनं मिलानं दवानं । वढी वेय बाजू सरित्ता किजानं ॥छं० १८० ॥
गह्यो मुष्ष गोरी प्रथीराज राजं । मनो राहु अरु भांन मिलि जुद्धसाजं ॥
मुषं रोकि सुर्तान को चाहुआनं । उते रोकि कैमास भोरा मुहानं ॥छं०१८१॥
दूहा—षीची षग्ग परट्ठि वर । वर भीमंग चालुक्क ॥
तिहुं दिस तिहुं बर धाइया । ज्यौं पच्छिमी आरक्क ॥ छं० १८२ ॥

---

१. मो०—तिनै ।
२. कु० को० मो०—गति अैन ।
३. मो०—अवी ।
४. कु० विनं । को० मो०—तिनं ।
५. को० कु० मो०—सतेनं ।
६. मो०—साजै ।
७. मो०—गती ।
८. मो०—रतं ।
९. मो०—हव्वे ।

कुंडलिया--मुच्छ उच्छटिय बंक भरि । हसि कपोल भय लोल ॥
जौं जंबुक बर वत्ति है । तौ सिंघानैं तोल ॥
तौ सिंघानैं तोल । लोल लंबी हलि बाहं ॥
मनों बीर सौ अंग । उठे सिर गंग प्रवाहं ॥
तन उतंग आरत्त । मत्त आरत्त सुदिट्ठी ॥
मानो चालुक राय । देव दूसासन उट्ठी ॥ छं० १ ३ ॥

इधर सुरतान का मुख अर्थात् मुहाना रोक और उधर भीम से लड़ने के लिये चौहान का नागौर जाना ॥

दूहा--रोकि मुष्य सुरतान को । चहुवान दै बान ॥
बर बसीठ भोरा सुभट । चलि नागोर निथान ॥ छं० १८४ ॥

छं० विअष्परी--नागौरें चहुआन पिथाई । चंद विअष्पर छंदह गाई ॥
सोझती चालुक मुष लग्गा । नागौरें गोरी दल पग्गा ॥ छं० १८५ ॥
असपति गजपति नरपति बीरं । धा तिहुं दिसि मज्ज सरीरं ॥
ज्यौं कुरषेत किस्न मति कीनी । भारथ बेन सेन मति भीनी ॥छं०१८६॥
सामदान करि भेद सुदंडं । बंधे वर चहुआन विपंडं ॥
जिन चहुआन परद्धर लीनी । बहुत दोप देवरान भीनी ॥ छं० १८७ ॥
सु बर बीर कीनो बर अंसं । किस्न सुगोकुल मथुरा कंसं ॥
गोरी वै मद पान उमत्ता । तिन बसीठ हंते बिन मत्ता ॥ छं० १८८ ॥
पिझ चालुक्क निसान बजाए । दल समूह मजि दुम्भैर धाए ॥
दुहुं बंध्यो नर बैर प्रमानं । उत गोरी सम्हो[1] चहुआनं ॥ छं० १८९ ॥
चालुक मतो विचार न कीनो । अमर सीह बोल्यो मति झीनौ ॥
भैरू भट्ट सुबंभन लीला । करो मंत्र बर मंच अकीला ॥ छं० १९० ॥
जुद्द मंत बंधो सुरतानं । अरु गोरीसाहो[1] चहुआनं ॥
छल बल करि कैमासह बंधो । सुचि सुमंत्र सुचि क्रम[2] विरुधो॥छं०१९१॥

कबित्त--मिलि धर भीमंगराव । चाव पत्तो पति गुज्जर ॥
बिषम बैर उद्धार वीरत्त सुदुज्जर[3] ॥
चाहुआन सुरतान । काम कंदल क्रत लग्गं ॥
देवंग बद्दल सीम । मार जरजीज सुजग्गं ॥
कलमल्यि उअर[4] परताप तन । छुध्र पियास निद्रा गमिय ॥
अनुराग तरुनि षल षेध जिय।दुअ दुराह चालुक दमिय ॥छं०१९२॥

---

१. को० कृ० मो०--सम्हो ।

२. मो०--"सुचि सुमंत्र सुचि क्रम विरुधौ"--की जगह "सुचि सुक्रम सुचि मंत्र विरुधौ ।" ३. मो०--उज्जर । ४. मो०--अरि ।

कवित्त—सोक्षत्ती है गै उभार । दल अरि संपत्ती ॥
सुभर सार भीमंग । गज्जि गज्जन अतिरत्तौ[1] ॥
आयस रहमि विचार । मुष्ष मंत्री आभाषिय ॥
तिहि निसाह परधान । अंध लच्छी उप्पासिय[2] ॥
पामार राम रन उद्धरन । गुर गुरीठ पैरंग गुर ॥
रानिग झाल पग झालि नर[3]। वीर देव बघ्घेल धुर ॥छं० १९३॥

कवित्त—सोढा सारँग देव । गंग डाभी सु गुज्जगुर ॥
बर चाविग्ग[4] सुदेव । धरि बाघेल ध्रंमधुर[5] ॥
अमर सीह सेवरा । बीर विद्या बल जासं ॥
मित्र अट्ट मिलि काज । चित चितिय चित सारं ॥
उच्चरै गरुव भीमंग तव । करौ मंत्र उच्चार चित ॥
पंमार सरन चहुआन गय । लहौ हीर सगपन्न हित ॥ छं० १९४ ॥

सब सामंतों का गुर्जर नरेश से कहना ।

छंद पद्धरी— सम कही सबन गुज्जर नरेस । चितौ सुसब्ब कारन सुरेस ॥
पम्मार सरन चहुआन रष्ष । औगुन अनेक अष्षेव नष्ष[6] ॥छं० १९५॥
साहाब दीन सारंग मद्धि । उब्भरे कोप बोल्यौ विरुद्ध ॥
चितेव चित्त सज्जौ समंत । मो कज्ज लज्ज मनकंध संत ॥छं० १९६ ॥
उच्चरिग नाम सारँग देव । पुच्छो सुराव पुरंभ भेव ॥
सनमध सगप्पन चाहुआन । उच्चरिग मंन चितौ उरान ॥ छं० १९७ ॥
जै जंपि तांम पैरंभ राव । बूझै न मंन को अंम ठाव ॥
अपराध कौन पम्मार कीन । तारुन्य मदोदरि तुमहि दीन ॥छं० १९८॥
अब रचौ बुद्धि मो राज सार । सब होइ सोइ लग्गी उहार ॥
उच्चरिग झाल रानिग ताम । गत मोच[7] न कीजै जत्त काम॥छं०१९९॥
पतिसाह बैर बंध्यौ बिराह । संमाज रूह मनु सिर गजाह ॥
बघ्घेल सुजंपै बीर देव । अनभूत भेव कारज्ज एव ॥ छं० २०० ॥
सनमंध कुंवर कवरा सुकाज । ता सोंह सगप्पन संधि[8] लाज ॥
तुम करहु सधि सम चाहुआन।मिलि जुरौ जुद्ध सुरतान ठान॥छं०२०१॥
हन भंजि चित्त गुज्जर नरेस । षिति काज कित्ति बहुत असेस ॥
सेवरा ताम त मे अमरसीह । तुम कही बत्त सांची[9] सलीह॥छं० २०२॥

---

१. मो०—असि अत्तौ । २. मो०—उत्तासिय । ३. कृ० को० मो०—बल ।
४. मो०—बारचिक्क । ५. मो०—धर्मधुर । ६. मो०—तष ।
७. मो०—चीत । ८. मो०—बंधि । ९. मो०—संची ।

कलि[1] बवन वेद भीमंग राव। चहुआन थान उच्चन्यो दाव।
बंधियै बंध उत्तंग साव। उग्र[2] गज्ज गाहू प्रथिराज राव ॥छं० २०३॥
प्रथिराज काज कैमास अथ्य[3]। सामंत सूर सब तास सथ्थ[4] ॥
करि अथ्य माहि विद्या अभूत। अति इष्ट अग्यकारी सनूत ॥छं०२०४॥
वसि करौं आइ दाहिम सोइ। चहुआन काज बूझै न जोइ।
वसि करौं सब्ब सामंत सूर। बल द्रव्य इष्ट[5] अथ्थीस पूर ॥छं० २०५॥
उद्धरौं आंनि नागोर देस। भीमंग बढ्ढि कित्ती असेस ॥
प्रथिराज आइ लग्गौ[6] सुपाइ। सामंत सूर भर सथ्थ आइ ॥छं०२०६॥
वसि करौं सब्ब दल सजौं सार। भंजों सुजाइ साहाब भार ॥
हनि षेत जित्त गज्जन नरिंद। जस बढै पहुमि उद्धार इंद ॥छं० २०७॥
मति सुनी भीम सब अमरसीह। भल भलो पढ्ढि सब भषी लीह ॥
नागोर अमर सज्ज्यो पयांन। निरमत्त सथ्थ सज्जे सयान ॥छं० २०८॥
भैरव सुभट्ट बंभन सुलील। चारंन चंद्र नंदन छबील[7] ॥
लिय द्रव्य सब्ब सथ्थां सुभार। नागोर चले मति मंत्र तार ॥छं० २०९॥

फिर निशान का बजना और अमरसीह का दाहिम को बांधने का पाखंड करना।

दूहा—इह कहि गहि बज्जन बिलसि। बज्जि निसान निहाय।
करि पाषंड सुअमर बर। बंधन दाहिमराय ॥ छं० २१० ॥

पाटरिया रान का कहना कि कैमास को छल करके बांधूंगा।

अरिल्ल—छल करि बर बंधो कैमासं। सजो सेन सुरतानह पासं ॥
बोलि[8] रान पाटरिया वीरं। झाला अनी साधि सो धीरं ॥२११॥

अमर सिंह सेवरा के मन्त्रबल से कैमास को वश में करने का निश्चय करना।

कबित्त—बर पट्टन वैरांन। तेन[9] झाला अधिकारिय ॥
मतो मंडि चालुक्क[10]। अमर सेवर सुधि भारिय ॥
भैरों भट्ट प्रमान। बुद्धि कायप अधिकारिय ॥
सो मत्तें सो मत्त। बुद्धि सेनह बिच्चारिय ॥

---

१. मो०—लिल।
२. मो०—"उग्रगज्जगाहू" की जगह "उग्रंग अंग"।
३. मो० कृ०—अथि। ४. मो०—सथि।
५. कृ० मो०—द्रष्ट। ६. मो०—लग्गौ।
७. को० कृ०—सुबील। ८. मो०—बोलीय।
९. मो०—तेग।
१०. मो०—"मतो मंडि चालुक्क" की जगह "सो मने चालुक" है।

दल मलहि सेंन चहुआन को । अरु भंजै सुरतान दल ।।
मंत्री सराज कैमास बर । साम दाम[1] कीजे सुछल ।। छं० २१२ ।।

चालुक्यराज की सेना की चढ़ाई और अमरसिंह का मन्त्र आरम्भ करना ।

गाथा —चढियं चालुक सेनं । चहुआनं साधनं भीरं ।।
दिसि कैमास प्रमानं । अमर सिंह मुक्कियं मंत्रं ।। छं० २१३ ।।

अमर सिंह के मन्त्रबल की प्रशंसा ।

कवित्त —जिन अमरसि सेवरा । आनि देवंग परब्बत ।।
जिन अमरसि सेवरा । द्रव्य आन्यो अनिश्रब्बत ।।
जिन अमरसि सेवरा । चंद मावसि उग्गाइय ।।
जिन अमरसि सेवरा । पदमनि मात रिझाइय ।।
षट उभय कोस उद्योत हुअ । विप्रसीस मुडिय सकल ।।
चित मंत धंम आधम बर । सुबर मंत्र किज्जै सकल ।।छं०२१४।।

छंद मोदक—इति मोदक छंदह बंध गती । जगि सस्त्र मुक्तिय बधमती ।।
दिसि अट्ठ दुरी दुरितान कला । चित्त सुबवल्लि च्य ग वसीट बला ।।
।। छं० २१५ ।।

जिन मंत्र बसीठन चित्त करं । नव निक्कर नेह अम्रत्तधरं ।।
षिति बीरति बीरय मंत्र मुषं । तिन रायन राज निब्रत रुपं ।।छं०२१६।।

छंद बिअष्षरी - भैरों भट्ट मुब्रभन लीला । चारन चंद्रानन्द छबीला ।।
महातम अमरसीह गुणग्याता[2] । साम दाम[3] भेद सुबिधाता । छं०२१७।।
जिन अमरसी[4] अमरि रिझाइय । चालुक सेन सुमंत्र बढाइय ।।
मावस चंद जेन परगास्यो । जेन[5] जैन ध्रमह अभ्यास्यो ।। छं० २१८ ।।
सिंगी हेम भरे नग पासं । लच्छि प्रसंनिय दारिद नासं ।।
भोरा राय भुअंग वजीरं । भो प्रसंन सुरसुरी सुनीरं ।। छं० २१९ ।।
बाद जीति[6] सिर विप्र मुंडाइय । कुंभ षप्पि जिन साष भराइय ।।
बोल्यो कुंभ कलक्कल बानी । नीर मध्य दुरगा सुसमानी ।। छं०२२० ।।
इष्ठ गंठि तहां दिष्ट विचारिय । वेद उपाधिक रैभ विचारिय ।।
रथ षटधात हेमसिर छत्रं । चढि नागोर अमरसी मंत्र ।। छं० २२१ ।।
बर चौरासी सथ्थसु आसं । छलन राजमहि मंत्र कैमासं ।।
है दुज धरत नील पट पंजर । रतन हेम नग मुत्ति सुपंजर ।।छं० २२२।।

---

१. कृ० को० मो०—दान ।
२. कृ० को०—अमर सिंह महाग्याता ।
३. कृ० को० मो०—दान ।
४. कृ० को० मो०—अमरसिंह ।
५. कृ० को०—जिने ।
६. कृ० को०—जीति ।

घट में कहै सुकीर प्रगासै । सुनत सुवीर ध्रंम भर नासै ॥
जै भर धर चालुक्क प्रजाए । अमर महातम बुद्धि रिझाए ॥छं० २२३॥
इन विधि नर नागौर सँपत्ते । हीह निसा गुन करे सुरत्ते ॥
छल छंदै बंदे कर भूपन । लच्छि केर करनी कर रूपन ॥ छं० २२४ ॥

कैमास के यहां सन्धि का पत्र लेकर वहां का भाट भेजा गया उसने चालुक्य की बड़ाई करके पत्र दिया ।

दल कैमास भई सुअवाजं । भोरा राइ वसीठन साजं ॥
चेटक चंचल नंचल कानं । आर भटी देपे सब्बानं ॥ छं० २२५ ॥
भेटि भट्ट कैमास कलाप । आदर अधिक कियो सुअलाप ॥
मुत्तिय माला कंठ मुबानी । भोला राव दई सहनानी ॥छं० २२६॥
मुत्रिय[1] पत्र पढै परवान । वीर मंत्र पूजा मह दानं ॥ छं० २२७ ॥

छंद नाराच -कलप्प केलि मेलि मद चंद चारु पट्टनं ।
तमेग दुग्ग सुग्ग सुब्भ बन्ध कट्टन ॥
नरिदं नील मील संच बंचयं भुअप्पती ॥
चरित्त चारु चालुकं नरिंद को नरप्पती ॥ छं० २२८ ॥

गाथा- न को न को नरप्पती । पत्ती चालुक्क गइयो सीसा[2] ॥
कि चहुवान सुमंती । कैमासं जानयं वीरं ॥ छं० २२९ ॥

चालुक्य राज का पत्र ।

साटक- स्वस्ति श्री जय भूपरिप भीमं भयं वर्त्तते ॥
पाया पात्र लवंत[3] देव पिनयो मत्रान् मही नप्पते ॥
हेमं कोटिव पग्ग पग्ग वल्यं, देवा चरित्त भयं ॥
द्रारिद्रं यद ईव आनन रयो, द्रिप्टा म या पावयं ॥ छं० २३० ॥

साटक – जं तं वारिधि बंध्रनेव चलयं भीमं भयानं बलं ॥
कल्पं केलि मगोरि मारव दिमा, बध्य पुर बन्दरं ॥
दीवं देवण देव हब्बम पुरं, हब्मी हजावं पुरं ॥
सोयं भीम वलिष्ट मध्य वलय, लेन कल्ल दुस्तर ॥ छं० २३१ ॥

गाथा – इंदो वारिधि बंधो । बारिधि मद्धे[4] मुइंद्रन द्रिप्टा ॥
वारिधि अंचन इदो । सा भीमं रूपयं भूपं ॥ छं० २३२ ॥

गाथा—भूपति भीम नरिंदं । भूभारं काज अवतार ॥
तुं कैमाम न जानं । तो नं तो छंडि चहुवानं ॥ छं० २३३ ॥

छंद पारक रूंमानी[5] बानी पुब्बानी । नीलानी सोहं सब्बानी ॥
मुरबानी बानी बोलंदे । मिधानों सकलं तोलंदे ॥
सोरट्ठी थट्टी निहटेयं । हुर बंजहु रावर वट्टेयं ॥ छं० २३४ ॥

---

१. मो०–पत्री । २. मो० कृ० को०–सरसा ।
३. मो० "पात्रल" की जगह "एतल" । ४. मो०–ब । ५. मो०–बानी ।

छंदत्रोटक-आगे वांनक वांनक सस्त्रकरां।सत्र मस्त्रक मंत्रक मंत्र तयं।।छं२३५।।

अपनी बड़ाई लिखकर एक स्त्री का चित्र लिखा कि यह स्त्री लो और कई ग्राम और धन देंगे तुम आनन्द करो।

चित्र देखकर कैमास का मोहित हो जाना।

अरिल्ल --लिष्यौ चित्र पुत्तल परिमानं। ज्यौं कैमास भयो भ्रमि प्रानं ।।
वायत्र सें पषा कर डुल्लै। त्यौं कैमास मंत्रत्रठ भुल्लै ।।छं०२३६।।

कबित्त गुज्जर वैधर देहि। देइ धोरहरा ग्रामं ।।
मति संपूर कैमास। देइ बहु द्रव्य सुनामं ।।
मध्य पहरजं मध्य। द्रव्य आवै बंदर बर ।।
सो अप्पौ चालुक्क। करै कैमास इन्द्र घर ।।
को सुनै कहै को जंपि को। को उत्तर तिन देइ फिरि ।।
कैमास मत्र किन्नौ वसै। लिष्यौ चित्र पुतलि लहरि ।।छं० २३७।।

अरिल्ल—साषि भरै घट सोइ प्रगासै। सुर नर नागनि[1] कौतिग आसै ।।
सब भ्रत सहर महर सब मिल्यौ। नट गति एम[2] अचम गति षिल्यौ ।।

।। छं० २३८ ।।

दूत ने लाले नामक एक खत्री को रूपवती लड़की के द्वारा वश करने का मंत्र आरम्भ किया।

दूहा— घट्ट सदय विधि दुज्ज दुअ। जैन धम्म अभिलाष ।।
श्रवन मझ्झि कैमास कहि। अमर महातम भाष ।। छं० २३९ ।।

अरिल्ल —षित्री एक सुनैर[3] सुमत्ती। कलत्र एक सुरवर की गत्ती।
हठ हित केलि रसं रस मडिय। मनि आभरन नारि सब[4] छंडिय।।२४०।।

छंद विअष्षरी - षित्री एक नाम जिन लाले। ताके मुगध प्रौढ त्रिय बाले ।।
मध्या मान बाल सिरन्हाई। प्रौढा कै वार निसि आई ।।छं० २४१।।
अप्पन प्रौढ मुगध गति लीनी। च्यारो जाम रमी रस भीनी ।।
प्रात बालबेल्ह रस[5] जान्यौ। भूषन बिन शृंगार सुहान्यौ।।छं०२४२।।
षित्री सोइ जुनैर हिसारं। बिन त्रिय एक कन्यो शृंगारं ।।
तिन हित मांन केल तिथि मंडी।मीनह मनु अवबन सिर छंडी।।२४३।।
षित्री एक मुगध सूमती। तहा मंत्र आरंभन जत्ती ।।
हरि हरि तहां कन्यो उच्चारं। पढ़े छंद गुन मंत्र बिचारं।।छं०२४४।।

---

१. कृ० को०—नागति।
२. कृ० को०—राम।
३. मो०—सुमैर।
४. को० कृ०—सिर।
५. मो०—"बेल्ह रस" की जगह "बलभरइ"।

मंत्र श्लोक—ॐ नमो गिरे[1] गर्जेस्य । जल्पं जल्पेषु जालपम् ॥
तत्वयं मंत्रं विध्वंसं । सारं धारं निवर्त्तयेत् ॥ छं० २४५ ॥

दूहा—असूच नयन लच्छी अलष । नर कुमंत्र बर ग्रब्ब ॥
आकरषे तिन चारनह । भैरों भट गंध्रब्ब ॥ छं० २४६ ॥

दूत समय जान उस स्त्री को साम्हने लाया ।

दूहा—अमर सिंह पासे प्रसन । मानि मंत्र जल जथ्थ ॥
तम तरुनि आनी चिहुनि । सुनै सुमंगल कथ्थ ॥ छं० २४७ ॥

उस स्त्री के रूप का वर्णन ।

कबित्त—कुटिल केस बय स्याम । गोर गुन बाम काम रति ॥
चोर धनी उन्नित नतंब । जानि रवि बिंब बीय गति ॥
चष चंचल उद्दिय नरीह[2] । करी मनों ब्रह्म अप्प कर ॥
ता समां न कोई आन । नांहि असमान बान धर ॥
कवि चंद कहे का ब्रंन करि । पदम गंध मुषचंद सरि ॥
जुब्बन तुरंग सुमनह करन । मानों मार अवंगि धरि ॥ छं० २४८ ॥

कबित्त—चंद बदन चष कमल । भौंह जनु भ्रमर गधरत ॥
कीर नास बिंबोष्ठ । दसन दामिनी दमक्कत ॥
भुज म्रनाल कुच कोक । सिंघ लंकी गति बारुन ॥
कनक कंति दुति देह । जंघ कदली दल आरुन ॥
अल संग नयन मयन मुदित । उदित अनंगह अंग तिहि ॥
आनी सुमंत्र आरंभ बर । देषत भूलत देव जिहि ॥ छं० २४९ ॥

दूहा—कोटि ईम कीए सुव्रत । विमति मत्ति परमान ॥
तहां मंत्र पत्ते सुबर । गहै काल म्रित पान ॥ छं० २५० ॥

छंद त्रिभंगी—संचारी देस, कुजर भेसं, करि षोडस, शृंगार ॥
आकर्षत मंत्रं, एक सबस्त्र, दर्पन हस्तं, कर्तारं ॥
कबरी करतारं, कज्जर सारं हार सुधारं, निम्भारं ॥
मुष मंडन नीलं, कर नष नीलं, नेवर[3]नीलं, सुढ्ढारं ॥ छं२५१ ॥
बे संधि समानं, उप्पय जानं, कब्वि बषानं, रितुराजं ॥
रितुराज चढंतं, फागुन अंतं, बलि आमंतं, इन साजं ॥
हरि हरि झारं, मुष उच्चारं, बिहु बिम्भारं, घनघोरं ॥
घन घंट किसोरं, मुष उच्चारं, बिहु बिम्भारं, घनघोरं ॥

---

१. मो० कृ० को०—गिरा ।

२. को० कृ०—"उद्दिय नरीह" की जगह "उद्दित नरीह" ।

३. मो०—नीलं ।

घन घंट किसोरं, मुष तंमोरं, प्रोढन भोरं, इन ओरं।।छं०२५२।।
आवक रंग पायं जेहरि श्रायं ओपम आयं मिलि चंदं।
कंचन घर[1] घुघ्घर बजि रस दुब्भर रति समउब्भर मैजानं ।।
पीरे घन भोरं, लगि मन मोरं, अमी सझोरं मन मालं।
अलि अलि वेकारं हल हित तारं ससि सम रारं पहु रारं।।छं० २५३।।
चलि चंचल नेनं, संभरि बेनं, कवि छवि देनं पचिहारं।
नर नागन ओरं, देवन जोरं, रचि पचि[2] ओरं, तन थोरं ।।
कटि किंकन रोरं, गंध्रव ढोरं, ढपै सरोरं, सिर सोरं।
चिहु चक्रित नेंनं, तड्ठिय[3] अैनं, मधु रस बैनं रस सेनं ।। २५४ ।।
ढल कंतिय वेंनी भिभरनेनी, जुग फल देनी रस मेंनं।
बसतर तन मंडिय भूषन षंडिय गुन बहु मंडिय दुषछंडी ।।
तारक बिन सस्सिय आभा लस्सिय भाइ प्रसंसिय भव षंडी।
आवरदा लज्जिय संमर रज्जिय,नन नं नज्जिय, थन थोर।।छं०२५५।।
चल चंचल नेंनं, मधुरित बेंनं, भंभरि भैनं, बनि रोरं ।।
प्रज्जंक सुगंधं नव नव नधं सषि नावंधं हरि होरं।
आचिज्ज सरस्सय किंकन कस्सय हहं हस्सय दुजदोरं ।। छ०२५६ ।।
गाथा—पारवती जिन मंत्री । कामनषं रषियं बरयं ।।
इन दिष्टि सुधामय बाले । आनंग नाम अग सो मिलय ।।छं०२५७।।
छंद नाराच—अनंग अंग अंग मांन अंग अग नितंय ।।
कि वाल काम साम कांम काम काम पत्तय।
मनों कि मेंन सागरं सुबुद्धि ताक मोदयं ।।
मनों कि छाय भायकै विचित्र चित्त सोधयं ।। छ० २५८ ।।
कबित्त—अंग चरित्र कि चित्त ।[4] चित्तं मनमथ विकारिय[5] ।।
मानों मेनं तरंग[6] । [7] अनंग आनंग प्रचारिय ।।
किधौं जोग मन भजन । रजनि सायक सुषसागर ।।
मनों मयन रबन । सेत सज्जी रति नागर ।।
सरिता सुरूप[8] लोइन लहरि । रहै मीन मन मोंर [9]परि ।।
घन हाइ भाइ गुन ग्राह सम । कवि का ब्रंन करै[10] [9]करि।।छं०२५९।।

---

१. मो०—घन ।
२ मो०—ऊरं ।
३. मो०—तुट्ठिय ।
४. कृ० मो०—चित्त ।
५. मो०—आधिकारिय ।
६. मो०—तुरंग ।
७. मो०—अंग ।
८. मो०—संपूर ।
९. मो०—श्रीर ।
१०. मो०—कहै ।

आश्चर्य है कि कैमास ऐसा मंत्री बालचरित्र के वश पड़ जाता है।

गाथा—आचिज्ज बालचरियं। किहो जंम्म जम्म बिन हरियं॥
कै विधि पुव्वह लिषियं। जो मन मारुत सुष मुषांइ [1] ॥छं०२६०॥

वचनिका—प्रथम सदा दुज्जन राइ कैमास मंत्री दुष्टां तो॥
उन मंतो कांमां तो॥
अमर महा तम देवि प्रसादां तो। कैमास दुष्टां तो॥छं० १६१॥
दूसरेहंस राव बोल्यो। दुर्लभ राइ कुमारां तो॥ पात्रांतो पानिग्रहनांतो॥
पर्यंकांतो कामांतो। रति सांतो घट बोलांतो॥ छं० २६२॥

छंद त्रिभंगी—घनं नंकि घटंतो भजि भजि मंतो। इय कलि तंतो [2] गुनवंतो॥
सकृति गुन सुंदरि अंमरि संचरि मिश्रन मंजरि रातवंतो॥ [3]
लवली पुफ्फं जरि करकिय पंजरि मिलि मीनं जरि [4] जुगजंतो॥
विछित्त सिर मंडिय हों प्रभु मडिय प्रभु मन मंडिय सुम संतो॥छं०२६२॥

दूहा—दूरत [5] बाले बाल गुन। रही चित्र परिमान॥
कै आई अहि लोकतें। कै अमरेष बषांन॥ छं० २६४॥
सुरपुर नरपुर नागपुर। इह आचिज्ज सुकीन॥
घनि मंत्री सेवर अमर। दाहिम [6] सुबल सुछीन॥ छं० १६५॥

अमर सिंह के मंत्र के बस में कैमास ऐसा प्रबल स्वामिभक्त मंत्री फंस गया।

कवित्त—जिन मंत्री कैमास। द्रव्य उद्धरि घर लीनी॥
जिन मंत्री कैमास। प्रलै जद्दव कुल पीनी॥
जिन मंत्री कैमास। लियो पट्ट निधि धारी॥
जिन मंत्री कैमास। जंग संभरि उद्धारी॥
मंत्री अनास कैमास सों। मति उनार अमरा कियो॥
गंधर्व घाट दुर्गा विसार। मंत्र विसेषन जे भयो॥ छ० २६६॥
जा दिषंत मंत्रियमु। पंचदस नयन प्रपत्ती॥
तहां बध्यो मेवात। राज मंगल गुन रत्ती॥
होत बरस नव दून। जाइ थट्टा रन भंज्यो॥
उभै बीस इक मास। अद्ध अद्धे गुन सज्यो॥

---

1. मो०—दुषाइं।
2. मो०—जयवंतो।
3. मो०—यह तुक नहीं है।
4. मो०—'मिलि मीनं जरि' की जगह 'मिलि मिलि मंजरि' पाठ है।
5. मो०—दूरति।
6. मो०—दाहिमा।

भंजयो बीर बंभनति वस । अब अमंत्र मंत्री[1] कियो ॥
कैमास भयो षल वसि विषल । मंत्र सस्त्र सत्रह गयो ॥ २६७ ॥

दूहा -यों[2] वसि भयौ कैमास वर । ज्यौं रोगी भेषज ॥
ज्यों नट वसि कपि नंचई । ज्यो त्रिय बसि पति सेज ॥ छं० २६८ ॥

कैमास ऐसा मंत्रमुग्ध हुआ कि पृथ्वीराज को भूलकर चालुक्यराज के वशवर्ती हो गया ।

अरिल्ल -यौं बसि कियो दाहिमौ प्रमानिय । कोह मोह लोह मद ठानिय ॥
इक[3]आंन फिरी चाल्लुक्कह मांन की मेटी आंनि प्रथीपति जानिकी ॥२६९॥

दूहा किये बसि कैमास तहां । अमर महातम उट्ठि ॥
सजल महर भीमग त्रर । प्रथक आंनि संगुट्ठि ॥ छं० २७० ॥

कैमाश के वश होने से नागौर में भीमराय चालुक्य की आन फिर गई ।

कबित्त -मंत्री भौ कैमास । काक नृपमग्गो नेह जिति ।
सामि ध्रम मुक्कयो । नीत मुक्की अनीत ग्रहि ॥
मादक उनमादुक समपि । सोपर द्रव आनिय ॥
बध ध्रम्म छड्यो । अध काम उनमानिय ॥
लज्जा सुमंत मन नहि रह्यौ । नयि पनि पत्र अलुझयो ॥
चालुक्क आनि नागौर फिरि । मग्न अध नर सुझयो ॥ २७१ ॥

चन्द बरदाई को स्वप्न में इस समाचार की सूचना हो गई ॥

आनि फिरि भीमंग । नैर नागौर घरं घर ॥
बसि कीनौ दाहिम । धरनि भौ कंप धर द्धर ॥
सुपन बीर बरदाइ । भरकि उच्यो जु चरित तह ॥
जहं मत्री भर सुभर । करिग वसि वमन देव जहं ॥
धूमंग धूप डंवर परिय । झिल झिलत डमरू करह ॥
दनु देव नाग सब बसि करन । कितक बध बुद्धी नरह॥छं०२७२॥

यह जानकर चन्द ने देवी का आह्वान और उसकी स्तुति की ।

दूहा -इह चरित दिषि मात तहां । कटक संपती अप्प[4] ॥
चंद जप्यो जप जुगति सम । निसि सुपनतर जप्प[5] ॥ छं० २७३ ॥

छंद भुजंगी -चढी सिंह देषी प्रक्रति पुरष्षं । महा तेज जागुत्य चंद मुष्षं ॥
दिसे वाज वानीं समानी न जंपं । भुकपे वधूरं नचे मेर तंपी ॥

---

1. मो०-मुकी ।
2. मो०-बति ।
3. मो०-'इक' नहीं है ।
4. कु०-"आन"-इतना और अधिक है ।
5. मो०-आय ।
6. मो०-पाय ।

सुभं सेत स्यामं रगं रत्त पीतं। मनो दिष्षियं धनुष नभ अभीतं ।।
बजै डक्क डोरू त्रिसूलंत हथ्थं।स्वयं बाक बानी बिराजंजत तथ्थं।।
मिल्यौ अमर राहू सु कैमास भानं।भयौ अंधकारं दलं सा बयानं ।।
बधे जेन घट्टं मध्यं अंधकारं। गई मत्ति चंदं भयौ सीत तारं।
कवी दिष्षियं रूप सा दिव्य अग्गै।पतालं[1]नषं सिष्ष ता अम्भलग्गै।।
जयं जै जयं जै [2]जपै चाहुआनं। तबै चंद कब्बी परतीत मानं ।।
उमा कै बिसासी परतीत पावै। जहां अब्बिसासी तहां देवि नावै।।
उद्यो चंद आसी पुरं प्रात राई। दई निरत नांही चहूवांन जाई ।।
किधों केवल मरन सरनं बिचारौं।किधों जैन ध्रमं जुगं पाइ टारौं।।
।। छं० २७४ ।।

चन्द स्वयं कैमास के पास नागौर की ओर चला।

दूहा—सुकबिचंद चल्यौ सुनिज। पुर नागौर निधांन ।।
जहां कैमास पलटि तन। करत केलि अह्वांन ।। २७५ ।।

नागौर पहुंच कर चन्द ने सब बात प्रत्यक्ष देखा और घर घर यह चरचा सुनी।

छंद मोतीदाम—जहां तहां गल्ह सुनी परबांन। सुमित्तिय दामय छंद बषांन।
जहां महां गल्ह सुनी परवांन। सुमि[3]त्तिय दामय छंद बषांन ।।
बजी ग्रह ग्रेह घरं घर बात। मनो त्रिन उड्डिय वाय अघात ।।
कियो बमि-दाहिम मंत्रिय राज। बजी सुर सब्ब अकित्तिय बाज।।
उडी बर नैरनि नैरनि तत्त। गई अजमेर सुनी भ्रतबत्त ।।
धरद्धर कंपिय ध्रंम परान। भयो बसि दाहिम देव सुजान ।।
सुनी चहुआन कही कविचंद। भयो नृप बत्त अगाह दमंद ।।
स पठ्ठय वस्त जित्यो कयमास। करो जिन षग्गह षित्रिय आस ।।
भयो सपनंत चल्यो कविचंद। जहां कयमास पलहि सरीर।।२७६।।

यह देखकर चन्द ने बड़े क्रोध से भैरो तथा देवी का अनुष्ठान आरम्भ किया।

दूहा—दिष्षि नयन झल हुलि भयो। हल हुल हुल्ल्यो अंग !!
क्रोध लग्गि किलि कुप्पवो। दिष्षित डिभ नरंग ।। छं० २७७ ।।

छं०भुजंग प्र०—कहे चंद चंडी अहो भट्ट भैरू।तुवं लुट्टि बिप्रं तनी लछि जोरौं।।
अहो चारनं नंदनं दीन सानं। घटं मध्य काली कलं कल किलानं।।

---

1. पाठांतर—बलानं।
2 मो०—जंपियं।
3. मो०—सुमुत्तिय।

मयं घट्ट घट्टं बमंबंत जोरं । घुलै देव बोलै बुलै होइ सोरं ॥
वियो घट थप्पे हयं थरथरानं[1] । जयं जैन भग्गी भलं भरभरानं॥
कहै कोनं आरंभ जीत्यो सुजैनं । वजी हुक्क चंदं लग्यो सीसगैंनं॥
थरं थप्पि थानं वियं घट्ट मंडे । बजै सस्त्र दूनों जिनें सद्द संडे ॥
द्रुगे धाम धामं पियं पट्ट पांनी । ढिली जैन ध्रंमं सबं राजधानी ॥
फिरे पछिमंत्रं महा मंत्र जंत्री । हरे षंड षंडं सबं सस्त्र छत्री ॥
मिले राज मक्षं[2] मरज्ज्याद छुट्टी।उमा सत्त सामंत की सक्ति षुट्टी॥
निरालंब लंबी वियं वीरबाहं । त्रिषा रतपुज्जी नही रत राहं ॥
विथा जथ्य लग्गी तथा तो प्रसादं।कथा काल जैनं भयो एकबादं॥
जहां बेद बांनी सती सत्त पाटं । तहां जैन जंपै सु पाषंड वाटं ॥
हुहुंकार हंक्या घटं घाट उठ्यो । छलं छेद भेदं[3] दुअं धूम बुठ्यो ॥
धरं धार झारा धरा कंप ठांनी।मिटी बूंद माया सु आकास[4] बांनी॥
दुजं दोइ उड्डे छटे सुर्ग मग्गं । घटं घाट फुठ्या भ्रमं धाम भग्गं॥
छलं छत्र मोहं महं मूल तुठ्ठो । परा पेष तें जैन ध्रंमं सु लुठ्यो ॥
महा मंत्र मंत्री दिठी माउ मांनी।कबी चंद मंत्रं सिधी सो समांनी॥
॥ छं० २७८ ॥

संग्राम काले संग्राम ईश्वराय संग्राम भूपाय स्मरनं कृत्व मंत्रं ॥
संग्रामे प्रविसे तु जया संग्रामे विजयां भूपाल हारे स्मरणं कृत्वा॥*

चन्द का देवी की स्तुति करना ।

साटक—चामंडा वर षग्ग मंडित करा हुंकार सद्दा धरं ॥
प्रभासं सहसंघ सत्य तपसं रूंडाल माला धरं ॥
लग्ना[5] हस्त मुषी प्रचंड नयना पायातु दुर्गेश्वरी ॥
काली कल्प कराल काल वदनां अंगे कलिंगे[6] जया ॥ छं० २७९ ॥
माया तूं वृंदार माल कलया जीनं जगद ब्रह्मनी ॥
माया तूं माहेश्वरी जह कहं अग्गोचरं गोचरं ॥
सिष्षं रिष्ष[7] सपट्ट नंचत वसा हिंगोल हुं हुं करं ॥
साहुंका हुंकार इक्क सुनयं जातं दलं दुर्ज्जनं ॥ छं० २८० ॥

---

१. मो०—थुरहरानं । २. मो०—मध्य ।
३. मो०'छलं छेद भेदं दुअं धूम बुठ्यो'की जगह छलं छेद दूयं धरं धूप उठ्यो है।
४. मो०—आसमान । * यह मंत्र एशियाटिक सोसाइटी की प्रति में नहीं है ।
५. मो०—लग्नी हस्तमुषी प्रचंड नैनी पायातु दुर्ग्गेश्वरी ।
६. मो०—कलिंगे जया की जगह कालिंगेश्वरी हैं ।
७. मो०—रष्ष ।

षग्गं जा मिति झाम झाम झमियं तस्यास्य मंत्रे मुषं ॥
सा मंत्रे उच्चार धार धरियं[1] अभ्भं अभंगा अरी ॥
जय्यानं जय जोग जोग पतयं पाषंड षंडायनं ॥
काली लंक ललंति कति त्रिपुरा तस्यासि ध्यानं धरं[2] ॥

चन्द का देवी से बर मांगना कि जैन की माया को जीतें।

राई तू उमया अषंड तनया दाता दुगी नासिनी ॥
संतुष्टा सुर नाग किन्नर गना दैत्यानि संत्रासिनी ॥*
यस्या चारु चवंति चारु कमलं संतुष्टयं साधुनं ॥
जैनं[3] बर्द्धस बद्धगाइ चरनं जै जै सुजित्त्वामन ॥ छं० २८२ ॥

दूहा सुविधि सिद्धि सेवग सुवर । बन्द सिद्धि परमांन ॥
जंच मत्र जा जप्प सौ । लगे गेन अगनान । छं० २८३ ॥

छंद भुजंगी उठे चंद चद बरद्दाय धीर । भयो तेज आकुन संती अधीरं ॥
बुल्यो बीर बानीय ज्यो गेन पानी । मनो उग्गिय बीर सिवदिष्ट जांनी ॥
महा मंडियं बीर अंकुससिरान । तजा तेज तन्न उठी बीर बानं[5] ॥छं० २८४॥

कवित्त -जिन मंत्री मंताय[6] । द्रव्य उद्दरि धर लीनी ॥
जिन मत्री रिनथभ । ठेलि जद्दन कुल दीनी[7] ॥
जिन मंत्री ढुंढार । ठार कूरंभक सारी ॥
जिन मंत्री जंगली । जुग सभरि उद्धारी ॥
मंत्री अभासि[8] कयमास सौं । मंति उचार अमरा कियो ॥
बम्भरी भट्ट दुग्गाइ इम । घट विघाट उम्भा वियो ॥छं० २८५ ॥
उठ्यो चन्द बरदाइ । बिरद दुग्गा सम्भलि सुर ॥
सुमन सस्त्र तजि मित्र । पत्र बञ्चिय जुमित्र बर ॥
कल कलंत[10] कल्यांन । कलह घटन आघट्ट बर ॥
भट[11] निघाय[12] रागी सुनट । भट साहस धम्मं[13] धुर ॥
दिष्यो सु चारु मंत्री धरा । मति अचार[14] कर लिष्यो ॥
गन्धर्व[15] गांन चरन अमर । बर पाषण्ड सुविष्षयो ॥छं० २८६ ॥

१. मो०–भंगा । २. मो०–धर्नं ।

★ ये दो चरण रायल एशियाटिक सुसाइटी की प्रति में नहीं हैं ।

३. मो० 'जैनं वर्द्धम पाइ चंदि चरनं' । ४. मो०–चंडी ।

५. मो०–सिरानी । ६. मो०–बानी । ७. मो०–कैमार ।

८. मो०–तीनी । ९. मो०–अनासि । १०. मो०–कस्यांत ।

११. मो०–नट । १२. मो०–धिम ।

१३. मो०–बि । १४. मो०–उच्चार ।

१५. मो०-हंकि हुंकारह छंडियो मनो असर गुरु सिष्षयो ।

समाचार पाकर चन्द का मंत्र व्यर्थ करने के लिये अमरसिंह का मंत्र प्रयोग करना और घट स्थापन करना।

सम[1] हो चन्द कबिन्द बाद। अंकुस सिर मण्डिय ॥
मंत्र देव उच्चार। हंकि हुंकारय छंडिय ॥
अमरसिंह बर भट्ट। बीर बम्भन बिच्चारिय ॥
मंडि वीर पाषण्ड। मंत्र जंत्रह उच्चारिय ॥
मंडयो कुम्भ सलिलरु सुमन। धूप दीप अच्छित धरिय ॥
सेवर सुगन्ध आडम्बरह। हथ्थ जोरि बीनति करिय ॥ छं० २८७ ॥

छन्द भुजङ्गी—
महाबीर बीरं चितं जाप लीनो। जिनैं कुच्छितं लुचितं पंथ कीनो ॥
जिनैं जग्य ध्रंमं चरं नेति[2] भंजे। सुध्रंमं उथापे अध्रंमं सुरंजे ॥
बधं जीव टार्यो सुलोभं निवार्यो। सतं सील आचार अंगं अधार्यो ॥
रषे पंच भूतं प्रथी अप्प तेजं। ग्रहे नाहि धातं अघातं सुनेजं ॥
दमं दान ध्रंमं दयाजूह मंड्यो। मुअं अमर उप्पासनं तासषंड्यो ॥छं० २८८॥

एक घड़ी तक चन्द का भ्रम में पड़ जाना। फिर संभलकर अपना अनुष्ठान करना। देवता आदि का आश्चर्य के साथ दोनों का बल देखना।

कबित्त—बोल्यो घट्ट सुघट्ट। बीर हुंकतिय ॥
ता पछै मंत्री न मंत्र। आरंभ सुथतिय ॥
इक्क मुट्ठि दुअ मुट्ठि। चंद संमुह पढि नंषिय ॥
घरी एक भ्रम भ्रम्यो। जागि द्रुग्गा जस लग्गिय ॥
बुल्लयो बीर कविचंद मुष। हल हलंत हेमावलिय[3] ॥
सु प्रसंन मात भट्टह भइय। बस[4] पाषंड भ्रमाव तिय ॥छं० २८९॥
कह्यौ बीर कविचंद। प्रगट आचिज्ज दिषायो ॥
कुंभ मध्य पाषंड। वांन विद्या इन मायो ॥
दनुज देव मानुष्ष। सकल आचिज्ज सु जान्यो ॥
है मनुष्ष गति लेइ। उपल जिम मिदै न पान्यो ॥
सोचलै रिझ्झ जल जिमि प्रबल। भट्ट सरस रस बुल्लयो ॥
गंध्रव बीर चारन अमर। ध्रंमर उच्चित डुल्लयो ॥ छं० २९० ॥

---

१. मो०-छंद २८७ के आदि के दो तुक का पाठ इस प्रकार है-"जनमय अचक्रजकज। मंच आरम्भ सुमण्डिय ॥ पउमावइ परतषि। हक्कि हुंकारब छण्डिय।

२. कु० को०—नन्ति + मो०-'ध्रंमं चरं नन्ति' की जगह 'धर्म्मं वरं नीति'—है।

३. मो०—हेमावतीय। ४. मो०—सब पाखण्ड भ्रमाववीय।

राजा बसुव षट्टनी । चंद कहों उप्पर आइय[1] ॥
सबें माय चालुक्क । अमर भए तुग महाइय[2] ॥
रह्यौ भान रथ षंचि । देव लगि तुग तमासे ॥
कुटिल दिष्ट छुटईन[3] । आज मत लभ्भ[4] कैमासें ॥
उचर्‌यौ चंद उरहक्कयौ । आरंभ्यौ बर मंत्र कै ॥
आचिज्ज लोइ दिष्षत[5] भयौ । अरु प्रारंभ न तंतको ॥ छं०२९१॥

चन्द ने अमरसिंह की माया काटने के लिये योगिनियों के जगाने का मन्त्र आरम्भ किया ।

छंदभुजङ्गी-कियौ मंत्र आरम्भ प्रारभ कव्वी जगी चौसठी देवि तो तेज हव्वी॥
चितै चन्द कव्वी तहां रूप तैसौ । मनो अर्क राकान छित्रं मिलै सौ ॥
मुषं चन्द कव्वी पढै दिव्य बानी । रिझें मात कव्वी तिन में समांनी ॥
रिझें थावर ताहि जंगंम कैसें । सुनें प० बानी मुनी मोंन जैसे[7] ॥
सुनें कान नारी सुधा बाल भग्गी । मनों नर्क उत्तर्क संदेस जग्गी ॥
बुलै कंठप्रावं लिषे चित्ररेषं । लगे मंत्र मांनो सजीवं सुभेष ॥
रहे मीन मन्दं सुगन्धं सुवातं । मुषं कैं सुधारें सुरंनं अघातं ॥
रथं षेचि अर्क अरुन सुनावैं । रह्यो मोह माया क्रमं नं न धावैं ॥
चल्यौ ग्राव रीझे गति कैंकी लीनी । रसम्भौ भयानं अदभ्भूत निन्ही॥
नगं मृदगी चित्त चितै सुअग्गी । चल्यौ गाव रीझै नदी माहि नग्गी ॥
घरी एक चन्द ठठक्यो सु कव्वी । मनो पज्जियन्मझ पाषान द्रव्वी ॥
मंगी मूदरी मोहि दै अव्व उट्ठी।लगी दौरि तूसी करामात जुट्टी॥छं०२९२॥

अमरसिंह का बहुत पाषण्ड फैलाना ।

दूहा -अमरसिंह सेवर सुवर । किय अनर पाषण्ड ॥
सिर रचै धर नचई । धर पच्चै तनि मुण्ड ॥ छं० २९३ ॥

चन्द का पाषण्ड भंजन में सफल होना ॥

कवित्त - कहै चन्द मुनि बाज । देय आसीस उक्क पय ॥
तक सुकिन किन नक । बोल्लि बानी सुरम्म हय ॥
जै जै जै उच्चार । कह्यौ कवि निम निम नच्या ॥
सब देवत बोलयो । बहुत रचना कर रच्यो ॥

---

१. मो०–राज बसु पट्ठनी । चं० उप्पर नै आया ।   २ मो०–महायो ।
३. ए–छुटठन ।   ४ मो०–मनि रुयि ।
५. मो०–हकसो ।   ६ मो –दिषित ।
७. मो०–मनो पय बानी मुनी मान जैसे ।
८. मो०–हाल ।

पाषण्ड डण्ड[1] सेवर भ्रमिय। घंट भंजन उप्पाय किय ॥
मांनुछ न जांनिय देव गति । भ्रम भग्गौ[2] सुब चन्द जिय ॥ छं०२९४॥

दूहा—तिनहु न तिन देषिय नयन। मयन सकल विध वीर ॥
ते कयमास नरिन्द गति। कढ्ढन मनहि सुधीर ॥ छं० २९५ ॥

कबित्त—सत्त सुमतियं तत्त। बाद लग्यौ चिहु पासं ॥
हय हय हुंकार वन। कुम्भ बुल्यो बल भासं ॥
नव निर्तन नव घात। नवति बल मंत्र उचारहि ॥
एक एक सम्भवहि। एक एकन पढि डारहि ॥
लागंत चन्द बरदाइ तन। भ्रमत भ्रम्यौ हक्किय उमा ॥
तन जग्य न निद्रा मण्डि वर। सुमति मन्त चिन्तिय उमा ॥छं० २९६॥

छन्द पद्धरी गवरी मद्‌ध्य गवरी व ईस। जग्गायो चंद मंत मत्रसीस[4] ॥
अविवेक गारुडिय मात पाग। लग्गे न [illegible] अगि [illegible] तास[5] ॥छं०२९७॥

दूहा—आसमुष भ्रंमीय उर। रमिय काय भून धारि ॥
जै ऊँ नै उच्चार बर। पार न लभ्भै पार ॥ छं० २९८ ॥

चालुक्य राज का मन्त्र नष्ट होना।

छंद भजंगी -
मिटे मंत्र मंत्रं[6] मुचा[illegible] राजं भए [illegible] मन्त्र संगी थकाजं ॥
सबै मंत्र मन्ती [illegible] च [illegible]न्यौ। [illegible] पट्टी [illegible] थान [illegible]न्यौ ॥
कढी [illegible] निसारी [illegible]गी। मनो [illegible] पमारी ॥
दईचंद अप्पी सु[illegible] चंद चली। [illegible] मन्त्र सु जली ॥छं०२९९॥

गाथा [illegible]क्क प्राम मन्जि[illegible] [illegible] ॥
कि[illegible] मुदेवं। [illegible] ॥ छं० ३०० ॥

चन्द का अमरसिंह को वाद में [illegible]ना।

दूहा - घरी एक किय वाद वर। को जिने [illegible] ॥
अमरसिंह नवर सुरर। भयौ [illegible] सुनाद ॥ छं० ३०१ ॥
वर पाषंड न पुज्जयौ। किए अमर घन तंत ॥
को जिते कविचंद सों दुग्गराइक मंत ॥ छं० ३०२ ॥

अरिल्ल जे पाषड बहुत अभ्यासे। चंद मीन [illegible] ज्यों ग्रहि ग्रासे ॥
छिनक एक विद्या गुन सधी। वर पाषड मडि कवि बंधी ॥छं०३०३॥

---

१. मो०—मंड। २. मो०—मानुक जानियपु देवगति।
३ मो०—'भ्रम भग्गौ' की जगह—'भ्रभग्गौ'।
४. मो०—जाया। ५. मो०—मजन बगीय।
६ मो०—माग। ७. मो०—काम। ८ मो०—मत्री।

दूहा—बद्धा जैन सुजैन लगि । जीता चंद चरित्त ॥
भामीं भट्ट सुमंत[1] किय । मरन जियन करि हित्त ॥ छं० ३०४ ॥
लुट्टि लये पाषंड सब । छुटि मंत्री कैमास ॥
हर हरंत आयास लगि । चंदन छंडे पास ॥ छं० ३०५ ॥

चन्द की सेना का युद्ध करके शत्रुओं को भगाकर कैमास के पास आना ।

छंदभुजंगी—महदेव देवात चालुक्क चंपे । तहां तूं सहायं मयं राग जंपे ॥[2]
निसा एक रत्ती असो जंग घायो । पलं श्रोन षोचीन भूची अघायो ॥
हहं[3] हार हंक्यो मयं मात साथे । सदा देव द्रुगे अनाथं न नाथे ॥
सवा लष्ष सेना गजं बाजपूरं । अगं बान कंमान सजि गैन दूरं ॥
झमी झंम नेजे छिता[4] छत्र पत्रं । महा ग्रब्ब श्रब्बं लवी मंत्र जंत्रं ॥
धरा धार षंडे सुमंडे विसष्षें । परी[5] धार पाइक्क काइक्क लष्षे ॥
विना सामि सेना सुपंचं हजारं । तिनं मंझ सामंत पचीस भारं ॥
मुषं मंत्रि कैमास दिव कासमीरं । बियो बग्गरी राव स्वाकित्त धीरं ॥
तियो जाम जद्दो लघु बंध जाजा । धरै लाज गुज्जर धरा राम राजा ॥
षटो षग्ग तोनं जयं जैत छत्रं । गुरू राव गोयद सत छत्र रत्तं ॥
सयं सिंह साना हनो अष्ट काली । जिनें द्रुग्ग देवं समं तेज झाली ॥
दसं गोर गाजीव साजीव सामं । सुनी संभर्ग राव स्वामित्त तामं ॥
अषा राव हाडा चयं चंड देवं । जिनै द्वादसी धबल एकाहि सेवं ॥
तनं तुंग लंगा अभंग विचारं । जिनै मारिया राय जंगी पछारं ॥
बली राइ बंको विरुद्दांन बंके । जिने ढाहि ढुंढेरिया राइ हंके ॥
बरं जोर कूरंभ रांजंग सूरं । जिसो पथ्थ पत्ताष मझ्झे लंगूरं ॥
नियं राइ नीहर[6] तनो रथ सथ्थी । जिसो राव संतन तनो भीष रथ्थी ॥
महा मल्ल सज्ज्यो बियो मल्ल भीमं । बरं तास चंपेन को जोर सीमं ॥
महं बंदनं देवतो पास सेवं । थुती मंत्र मुष्षं मयं जंपि एवं ॥
हु हुंकार हक्की सती सा बिचारं । चढे मत्त अग्गे सुपंचं हजारं ॥
महा सेन सत्तरि तनो लष्षसांई।सुन्यो राइ कित्ती दियो रति बांई॥छं०३०६॥

कबित्त—बर बंधे वसीठ । ढीठ पाषंड निवारे ।
धोरहरा ग्रामांन । सेन संग्राह संभारे ॥
तोरी रति त्रीजांम । जांम बोल्यो जद्दोंनी ॥
होजा जारन जाइ । गस्त चौकी भीमोंनी ॥

---

१. मो०—सुमित ।
२. मो०—कंपे ।
३. मो०—अहंकार ।
४. मो०—सिता ।
५. मो०—फरी ।
६. मो० को०—नाहर ।

हल्लाल हल्ल सेपंच दुति । सेनी झल्लि दुरा[1] नरन ॥
सेलंध नेज भज्जह भिरिय । बंसी जान बिषांन वन[2] ॥छं० ३०७॥

कैमास का लज्जित होना ।

चौपाई–बंसी जान बषांन प्रमानं । रह्यौ लज्जि कैमास निधानं ॥
चौमठ्ठी मनों ग्राव सुडारी । उठै सीस संमुह क्यों भारी ॥छं० ३०८॥

कवित्त – उठ्ठावै नह सीस । लज्ज दाहिम चहुवानं ॥
उठै सीम नह ईस । लज्ज कुल पन कुल पानं ॥
उठै सीस नह ईम । करै भारथ बहु काजं ॥
उठै मीस नह ईस । देंव गति देवनि साजं ॥
उठै न सीस संमुह सरस । लज्ज विरह्ां भार सिर ॥
कैमास काज लग्गी गवनु । विसर बीर दिष्यो विम्रर ॥छं० ३०९॥

चन्द का कैमास को आश्वासन देना ।

दुहा—बर बरदाइ नरिदं कवि । दै आसिष छिति राज ॥
तूं लज्जित कैमास बर । मंत विरोधन काज ॥ छं० ३१० ॥

कैमास को लेकर पृथ्वीराज के सामतों का चालुक्य राज पर चढ़ने को प्रस्तुत होना ।

कवित्त- चंद सुचंडि प्रताप । मित्र कैमास छुडाइय ॥
मेटि आंनि चालुक्क । आंन चहुआन चलाइय ॥
लाज राज कैमास । सीस ढंकै न उघारै ॥
सबला सों संग्राम । लरन रति वाह विचारै ॥
उज्जली रेन उज्जल दिसा । जस उज्जल कों धाईयां ॥
दाहिम राइ दाहर तनै । सिलह सुरंग बनाइयां ॥ छं० ३११ ॥
सथ्थ राव चांमड । सथ्थ सज्जिय परिहारं ॥
महन सिंह बल्हार । नांम रानो षग झारं ॥
रामों हा चंदेल । राव भट्टी मह नंगी ॥
भर भट्टी बहु सथ्थ । सार अग्गी तन दंगी ॥
जाजुल्य तेज नरसिंघ नर । चाहुबांन कूरंभ गुर
सामंत सत्त[3] सतह सुमति । सुवर बीर भारथ भर ॥ छं० ३१२॥
परम पवित्र पमार । जांन उद्यांन पैंचाइन ॥
सारंग सिसु चालुक्क । राज रघुबंस सुभाइन ॥

---

१. मो०–दुरान वल ।
२. मो०–बल ।
३. मो०–सूर ।

रत्ति वाह्[1]मन चित्ति। सेन सज्यो विन राजं ॥
तरुन तेज तम हरन। मेघ मंते जनु गाजं ॥
कल हुंत केलि मंडिय बिषम। गरुअ ग्रब गहिलोत गुर ॥
लंगिरय लोह लग्गोरसै। स्वामि ध्रम जिन भार धुर ॥छं० ३१३॥
अचल वरुन अत ताइ। कंन्ह विन बीरब्रसिगं ॥
रानिडुर रट्ठौर। साल[2] झिल्लन रन रग ॥
बा बारो बरसिघ। रेह रापन अजमेर ॥
दहिया जंगल राव। जग मग्गह धर मेर ॥
ठंठरी टाक चाटा चपल। अकल मति जिन उद्धरिय ॥
ठिल्लै सुवज्ज वज्ज्रंग तन। षल षडै बजन बलिय ॥छं० ३१४ ॥
बर जद्दव जै सिघ। राव जघारी सुब्भर ॥
किल्हन कनक नरिद। इन्द्र दल [3]दप्पय दुब्भर ॥
बली बाह हरसिघ। रेह रष्षै चहुआनिय ॥
सुवर बैर ब्राहरू। बन्निय सभरि घर जानिय ॥
अजमेर मुक्कि चहुआन कौ। ए छहै भारथ भिरन ॥
दिन एक वीर बल वड षल। उभय लभ्भि लड़ू जिरन ॥छं० ३१५॥

चालुक्य राजा का सेना प्रस्तुत करना।

छंद भुजंगप्रयात

फिरी गम्न चौकी सुचालुक्क राई। सथै सठ हज्जार मकवान घाई ॥
रन पाटरी रान ता नांम सीह। वलं बैर वैरीन को चपि लीह ॥
जिनै देषिया जुह जाड च सब्वं। जिने कछ पचालची[4] सोषि अब्व ॥
षटंबीय सन्नाह सज्जे सुअगं। रुकै रूक अग अरी कोटि सग ॥
तिनंकी उपमा कवीचंद गाई। सुते कठ राषत गोरष्ष पाई ॥
तिनं हाथ लै हाथ सज्जे उपाई। तिनंकी मयूख स्यं होड लाई ॥
सुयं कंठ सोभातर टोप सोमा। ससी अष्टमी अद्धये भानं लोभा ॥
जरे जंजरायं भरं रांग मिल्लै। मनों नौ ग्रह ताडिका होड षिल्लै ॥
हुयं पष्षरे पष्षरं जंजारायं। कपी सीस द्रोनं मनो लक कायं ॥
फिरै गज्ज राजं मदं तेज गाजी। तिनं देषतें बद्दलं कति लाजी ॥
बली वीर कैमास सामुष्य अग्गें। मनो राम कामं कपी कूट लग्गें ॥
सुनी कंन्ह भोरा जु चालुक्क बीरं। कुहायो व है कोय कैमास भीरं ॥
इकं नाम चंदं बरंदाइ बानी। जिनें भंजिया च्यारि मो मंत्र पानी ॥

---

१. मो०—सार। २. मो०—वी।
३. मो०—रंग। ४. मो०—गंवि।

दिसा च्यारि रष्यो निरष्यौ प्रमानं । जहां सज्जियं सूर चहुआंन थांनं ॥
रजं मोद वंकी करक्की कमांनं । धुनै तूल धूमी मनो कट्ठ' यानं ।।
हुकंमं नरिंदं सुचालुक्क दीनो । रह्यो आज चोकी सुझाला नवीनो ।।
चिहू कोद हथ्थीन कीं वीरटं फेरो । निमा आज रष्यौ सुमंत्रीति मेरो ॥
चढी चौक्क चौकी सुझाला निमांनी । उठी क्रूर द्रिष्टी स्वयं मेन जांनी ॥
रच्यो यों महासेन भीमंग राजं। मिले मल्ल मल्लं अधमं सुसाजं ।।छं० ३१६॥

चालुक्य की सेना का वर्णन ।

दूहा   सज्जि सेन चालुक्क भर । रहे लोह करि कोट ।।
पयदल गज वर हय चपल । भए आंनि गव जोट ।। छं० ३१७ ॥

छंद भुजंगी-महा सेन सेनं गभीरं गरज्ज । मनो मेघ माला सुकाला घरज्जं ॥
झमं झंम झंमंति झाल्ला नियानी । चढी चक्र चक्री चवट्ठी सुबानी ।।
सयं सहस ते नेज कैमाम अग्गं । सयं तीन मथ्थं जयं जाज लग्गं ।।
सयं पंच अट्टा सु आमानि तक्के । सयं अट्ठ अट्ठं रमं राम । ।
दुहं बांह सेना वरं बीर बाही । मनोंकु ड्री द्राि मा ही ।।
अहं मेत्र सामंत स्वामित्त लग्गं । सु मानो कि मे न ।।
भय ऊन ऊनं ठिठं ठिट्ठ चौकी । मनों अंकुरी टिट न आनि ।
धरे ढिग्ग षग्गं भिरे अन्न भल्ले । घरी एक भग्गे नही दोय बल्ले ।
भगे सीह रायं भई कूह मद्दं । सुनी राव भोंरा भने कव्वि चंदं ।।छं० ३१८॥

कवित्त   कलह भग्ग सामंत । काम कैमास कुमल्लिय ।।
गज्ज अज्ज भरुजाज । अनुज फिरि पच्चो दुमल्लिय ।।
झल्लानी झरफट्टि । छट्टि संका सामंता ।।
ज्यों लद्धी परनारि । भोग मिल्ल्यो धावता ।।
असमांन हल्लि भूमिय धरिय । धाय धमंक धमंक धर ।।
बंदियहि बाह बाहू दुदल । प्रथीराज राजंग बर ।। छं० ३१९ ।।

चालुक्यराज का धोखा करना ।

दूहा --भर मिरि चौकी चपि चलि । मिलि ठिलि जहा दलराइ ।।
सबर जुद्ध दरबार भो । चढि चालुक्क रिसाइ ।। छं० ३२० ।।

युद्ध का वर्णन ।

छं० भुजंगप्रयात्--
धमं धाम धामंत धामं निसानं । निसा स्याम बज्जी सुभेरी भयानं ॥
तिगं तंछि तैजी हयं हिन हिनानं । छुटे अंदु हस्ती मद जाजु रानं॥

---

१. मो०-कंठ ।   २. मो०-रच्यौ ।
३. मो०-मंडली ।   १. मो० कृ० को०-झालानी ।

हयं[1] हाय हायं दलं हिंदवानं । महाबीर जग्गे सुदग्गेह मानं ।।
गिरें रत रावत्त तुट्टे वितानं । परी हल्ल हल्लं सुसामंत पानं ।।
कथा उच्च भारी सुभारह पुरानं।सुनें ध्रंम बढ्ढे सुममं गियानं।।छं०३२१।।

कवित्त—मिले मल्ल आलंग । जंग भोरा भुअंग जगि ।।
के कुलाह कंतार[2] । धारा डंडूर पूर लगि ।।
है हुलाह छुटया कि । सिंघ मगल मैं मत्ता ।।
कै [3] अप्पां अप सेन । राव[4] रावत्त ★ विरत्ता ।।
आवृत[5] सेन उत्तर दिसा । ईसानै लग्गिय लहरि ।।
धावंत धाम सामंत सों । सूर समर लग्गे समरि ।। छं० ३२२ ।।
चंडिय देवि पसाइ । हस्ति तोरै मै मत्ते ।।
चढ्यो राव भीमंग । चौर मौरह सिलहंते ।।
कै अप्पानी रारि[6] । काइ वाम कि डंडूरिय ।।
कै छुट्टा संग्राम । सिंघ संकर निज्जूरिय ।।
कै वीर धांम धुज्जिय धरा । कै कलाक[7] कलपंत हुअ ।।
जा जंपि जंपि जंपन कहै । जपै राज भीमंग भुअ ।। छं० ३२३ ।।
नां अप्पानी रारि । नाहि वाइ सुडंडूरिय ।।
नां छुट्टा संग्रांम । सिंघ संकर निज्जूरिय ।।
है हक्कां धर कंप । चंप उत्तर थी लग्गिय ।।
चोकी गस्त गुराइ । कोट कोटन इत भग्गिय ।।
सा दुग्ग देव सत्तरि पती । पति पहार ठेल्यो करिय ।।
आहंन हंन हंनेव हठ । निसि निसान सद्दह भरिय ।। छं० ३२४ ।।

सप्तमी को घोर युद्ध का प्रारम्भ होना ।

दूहा—सद्दां सद्द उसद्द भय । बज्जा बज्जिय लग्ग ।।
जूना जंजर हैर[8] वल । भई सुरासुर जग्ग ।। छं० ३२५ ।।
संमरि सों लग्गे समर । अंमर कौतिग एव
घरी सत्त सत्तमि दिवस । उग्यो उडग्गन देव ।। छं० ३२६ ।।

---

१. मो०—भयं । २ मो०—कुठार ।
३. मो०—"कै आसेना अप्प । अप्प रावत विरत्ता" ।
४. कृ०—माम ।
★ राव० ए० की प्रति में नहीं है ।
५. मो०—आवृतसेन । ६. मो०—की अपनी पार ।
७. मो० कृ० को—कुकाल । ८. मो०—वैर ।

छंद भुजंगप्रयात् —

घरी सत्त सत्तं उग्यौ चंद मानं । वरं बीर चालुक्क षग्गं षगानं ॥
बजी जूह कृहं कलं कोकनद्दं । मनों गज्जियं मेघ नद्दं प्रसद्दं ॥
कुलं बीर जग्गे मुषं नीर भारी । परे लोह आवृत्त सा व्रत सारी ॥
बहै षग्ग धारं गजं सीस भारी । मनों धूम मज्झे उठे अग्गि झारी ॥
तमी तेज भग्गे जगे तेज षग्गं । बजे जंग नीसांन ईसांन मग्गं ॥
करै अप्प अप्पं नृपं बे दुहाई । नचे रंग भैरू ततथ्येन धाई ॥
बहै बांन आव्रत सावर्त्त तेजं । तहां चंद कब्बी उपमां कहेजं ॥
लगें अंग अरि गजि सुग्रीव भारी । फिरंतं ज जंगम दीसै उतारी ॥
परें संध्र बंधं असंधं निनारे । मरोरंत चोरं मनों मूर बारे ॥
फिरें[1] मद्धि ढालं रिनं मंझ रीति । तिन मुक्कियं कुंत वारी निव्रती ॥
॥ छं० ३२७ ॥

युद्ध की तयारी का वर्णन, सरदारों का सेना समेत प्रस्तुत होना।

कबित्त--है[2] पग गै पग रथ अरथ । बढि बढ़ी नर लग्गा ॥
कै घायां घन नंत । भयें भंभरि[3] भर भग्गा ॥
चालुक्कां चंप्यो सयंन । सें दल सामंता ॥
गोरीरद कैमास । भूप भोरा धावंता ॥
रथ सथ मिलह सज्जन कह्यो । गहकि गज्जि भोरा सुभर ॥
को करै काल सों चाल क्रत।महन रंभ मानों अमर ॥छं० ३२८॥
हक्कार्‍यो रा भीम । मत्त में गल गज्जानां ॥
सहस पंच साहन समंद । ढाले ढल्लानां ॥
जंत्र मंत्र गोला गहक्क । छोनी सब संकिय ॥
साहन वाहन बर बिरद्द । आव्रत उत्तंकिय[4] ॥
लल्लरिय लोह अप्पां अपन । झर उझार लग्यो गपन ॥
हूल हूले सैन सामंत[5] दल । मनों अंत[6] जम जुथ्थ पन ॥छं०३२९॥
ना छुट्टा रासिघ । डांम बडूरन उठ्यो ॥
ना हुंकार्‍या आप । सेन भारथ्थ न जुन्यो ॥
सा मंतारी हाक । धाक उत्तर दिसि लग्गी ॥
अप्पांनी सेना सुनत[7] । भारथ भि[?] भग्गी ॥

---

१. मो०—हत्थि ।
२. मो०—हैयथ गैयथ ।
३. मो०—भूंभर ।
४. मो०—उतंगिय ।
५. मो०—सामंद ।
६. मो०—अंठ ।
७. मो०—सुमंत ।

सन्नाह राव सज्जी सुकसि । विधि विधान लग्गिय अमर ॥
चालुक्क राइ चित घूंमरी । सार धार लग्गी समर ॥ छं० ३३०॥
महन रंभ आरंभ । जग्गि[1] भोरा सनाह सजि ॥
तब लगि दल रुक्कयो । राज कंठीर कन्ह रजि ॥
भर अभंग चालुक्क । रोस आकास प्रमानं ॥
हाला हूल तंमस्यो । तप्पसि तामम तम भानं ॥
नेत जगि प्रलैकाल जनु । बधि बधि गज्जे उभय ॥
बंभान जग्य जे उप्पने । करो सोइ निर्व्वीर मय ॥ छं० ३३१ ॥

युद्ध आरम्भ होना ।

षग उभारि दल रारि । तारि कढ्ढन दुज्जन वे ॥
ओडन हंयह नगि । धगि भ्रत चाल्लकन रवै ॥
कढि स्वग्ध धर लट्टि । लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
श्रोन धार षल हल्लिय । मोह माया भ्रम छुट्टिय ॥
तुटि अंत दंत पाइक डुरहि । बहर रूप धावें अछग ॥
पग पगनि मिम पग रग मुगनि।भुगति लम्भ किर्त्ती मुजग ॥छं० ३३२॥

दूहा -किर्त्ती गजन लग्गो नृपति । सुर विष्वमन काल ॥
बीस महम पारस पारय । मनो वीर बर माल ॥छं० ३३३॥

छंद मोतीदाम -

समग्ग अमग्ग विमग्ग विमग्ग विसाल । रहे जुरि चालुक देवन साल ॥
जुरे बर वीर दमो दिसि पति । मनो घन भद्दव वत्तन भंति ॥
दोऊ दिसि घाव बढे करि साज । मनों चव चग कुलगन बाज ॥
परे बहु दनिय[6] भतिय काल । बरै बर ढढि निवानन[7] बाल ॥
मनों मुगधा मन मान प्रमांन । रही इम अच्छरि रछि विमान ॥
सुदेव जय जय नंषि पुहुप्प । करे दोउ चंद सुकीरति जप्प ॥
इकै अङ्ग कीरति अमृत एक । कछूक कवित सुधारें विसेक ॥
सुर च्छिनंत नहि वीर बलांन । बढ़ बर बान कमा मय[9] थान ॥
भ्रमंतिय निद्धिय रुद्धिय[10] भांन । रही[11] इछ अच्छरि अच्छ विमांन ॥
॥छं० ३३४॥

---

१. मो०—जगि । २. मो०—नंषि । ३. मो०—पंभु ।
४. मो०—किति मजन जग्गो नृपति । ५. मो०—मनो घट मद्रव सह निरति ।
६. मो०—पतिय । ७. मो०—निवानन ।
८. मो०—अषि । ९. मो०—मय ।
१०. मो०—पावै न बांन । ११. मो० इम ।

वाजिद खाँ का लड़ना और बीरता से मारा जाना ।

दूहा—महि षांन वाजींद भिरि । पंच सहस तिन सथ्थ ॥
भर चालुक सेवक बली । जे घल्ले जम हथ्थ ॥छं० ३३५॥

कवित्त—जुद्ध जूह सिरदार । ढारि दीने बलवानैं ॥
नल कूबर मनि ग्रीव । जमल भग्गा तरकांनै ॥
पुब्ब श्राप नारद समूह । किति दरसन हरि पाइय ॥
उत्तसंग उत्तरें । हूर लै सूर बधाइय ॥
उप्पारि षांन वाजींद लिय । षग्ग मग्ग बोहिथ्थ से ॥
चाल्लुक भीम परपंच परि । चपि चूरि षग्गह पिसे ॥छं० ३३६॥

अष्टमी के युद्ध का वर्णन

दूहा—भर पर भर वज्जे सुभर । हय गै दल भर तुट्टि ॥
चंद सीस अद्धौ चढयो । वर आटमी अहुट्टि ॥छं० ३३७॥
से बंध्रन बधन ब्रह्म । पच पंच लै तन्न ।
दल छिक्कन छिपैं मुगनि । आप भत अपतत्त ॥छं० ३३८॥
सिसिर आइ कायर तनह । ग्रीषम सूर प्रमान ॥
वे तट्टे ए नन्न गुन । त्रिविधि विधान दै वान ॥ छं० ३३९ ॥
बालापन जुब्बनपन । लर्इ बालपन किनि ॥
धनि हाला हल जिनि तजा । भर्इ अमट्ट जिमि विंति ॥ छं० ३४० ॥

छंद नाराच -परट्ठि सेन सज्ज वीर वज्जए निसानय ।
नराच छंद चंद जंपि पिंगल प्रमानय ॥
गज गजे हलं मले हल्ले चले गिरद्धरं ।
कसंमसे उकस्स सेस कच्छप उचछरं ॥
उपारि भूमि दट्ठ तब्ब कंध आनि मुक्कयं ।
जुराह रूप जुद्ध भीम सीस नाग धुक्कयं ॥
सुअंत सथ्थ[1] विथ्थुरं अनेक भांति वाहुई ।
मनों कि दंड चच्चरीय बालकं उछाहुई[3] ॥
झनंकि षग्ग सौं निसा चमू चमक्कई ।
मनों कि चंद चंद सो धरा न भुम्मि मुक्कई ॥
अनेक भंति सा दुरं वजंत वान सा[2]रं ।
मनों कि जीव जंत पांनि उच्छयं उछाररं ॥
बजंत राग पंच षट् मोह बंधि आनयं ॥
अवंत सेन संधि भूप चंद जंपि पानयं ॥

---

१. मो०—सूर । २. ए०—मत्त । ३. मो०—उछारई ।

तुरंत चौरं गज्ज सीस सस्त्र मग्ग जत्तरें ।।
मनों कि कूट सीसतें सुगंग भूमि विस्तरें ।। छं० ३४१ ।।

चावंडराय के युद्ध का वर्णन

अरिल्ल—जस धवली लद्दी कैमासं । चावंडराइ बंधव अभ्यासं ।।
सस्त्र मग्ग तन[1] तिऊ निल षंड्यौ।बली जूह भारथ फिर मंड्यौ ।।छं०३४२।।

कवित्त—धनित्र सूर सामंत । लोन ह्वै मिले अरिन अट ।।
इक मागिय हुइ षार[2] । भाग चौसट्ठि षार घट ।।
ते दुसेन मुष धरनि । लज्ज सो निट्ठ उतारे ।।
मार मार विस्तार । सार संन्हौ गहि डारे ।।
उर धर्‌यौ सिंधु[3] सिंधुर सुभट । उदर मध्य फुट्यौ अम्रित ।।
चामंड राइ दाहर तनौ । सोंन नेह बंध्यौ अमित ।। छं० ३४३ ।।
एक बीस इकईस । एक इकतीस सहस बर ।।
इक्क सहस इक डेढ । इक्क वर उभय सस्त्र झर ।।
एक एक इक लष्ष । विलष वल पुज्जहि देव ।।
ते जगिय वीर बीराधि । बीर बीरा रम सेवं ।।
मारु महंन नाहर वलिय । हलिय कित्ति दष्षिन वयह ।।
निडुर नरिंद पजून बल । हाइ हाइ करे द्दिसि दसह ।। छं० ३४४ ।।

दूहा—हय हय गय नह सूर बर । दिष्षि भयानक देव ।।
जंबूरा हंमीर मों । भर भारथ वितेव ।। छ० ३४५ ।।

यह युद्ध संवत् ११४४ में हुग्रा ।

★ ग्यारह सें चालीस चव । बंधव पुत्र अहुट्टि ।।
सुफिरि राज सेना नृपति । भौ भारथ संजुट्टि ।। छं० ३४६ ।।

कवित्त—हय गय नर आहुटैं । लुथि आहुट्टि लुथि पर ।।
इक हय दुअ विहय । उच्च चढ़ि षित्त मद्धि धर ।।
बलि वामन रामह सुबीर[4] । पंच पंडौ बल भारी ।।
जरासिंध नर केस । नरनि नर सिंघ उचारी ।।
इन समह समर इत देव मय । क्रत द्वापर कलियुग्ग मझि ।।
इत करिय सोह करिहै न को।करो सुकोइ न बत्त बुझि।।छं०३४७।।
तरनि तेज तप हरन । भरन पोषन दोषन षल ।।
उदर ब्रत्ति जं करिय । उदर कढ्ढै सुमध्य मल ।।

---

१. मो०—तिन । २. मो०—अपार । ३. मो०—बाप ।

३४६—★ यह दोहा एशियाटिक सोसाइटी की प्रति में नहीं है ।

४. मो०—राव हमीर ।

बल भट्टी जं करिय । करिय कर दंत मत्त गहि ॥
षरी एक इक पाइ । षग्ग टिक षग षेत रहि ॥
जंबूर लग्ग भग्गान तउ । बर बुल्ल तामस बयन ॥
चालुक्क आंन जंपै मुषह । रत्त मुष्ष अग्गी नयन ॥ छं० ३४८ ॥

दूहा—नयन बयन तन अग्गि जगि । कित्ति अग्गि जग जग्गि ॥
बर विताल जंगम विहंसि । दयसीस नर षग्गि ॥ छं० ३४९ ॥
रन षग्गा भग्गान को । पत्ता चालुक राइ ॥
हंमीरां हंमीर बर । भो वर बीर विभाइ ॥ छं० ३५० ॥

उन सरदारों का नाम कथन जो लड़ते थे ।

कबित्त—सुअन[1] सूर सामंत । मंत लग्गे विरूझानं ॥
रा चामंड जैतसी । रांम बड गुज्जर दानं ॥
उदिग वांह पग्गार । कन्ह कूरंभ पजूनं ॥
षीचीराव प्रसंग । चंद पुंडीर सु द्दूनं ॥
महनंग मेर मारू मरद । देवराज वग्गरि सलष ॥
देवराज कुंअर अल्हन अनुज।इन वीरा रस लषि अलष॥छं०३५१॥
निडुर बर नर सिंघ । बीर भोंहा भर रूपं[2] ॥
बीर सिंह बर सिंघ । गरुअ गोइंद अनूपं ॥
रा बड़ गुज्जर राम । बलिय बंभन रस बीरं ॥
दाहिम्मो नर सिंघ । गरुअ सारंग रन धीरं ॥
चालुक्क बीर रन सिंघ दे । दै दुवाह दुज्जन दहन ॥
सुर तांन गहन मोषन चहै[3] । चालुक्कां लग्गे महन ॥ छं०३५२ ॥
घट्टिय घट्ट निघट्ट । धांन दिष्षे इन भंतिय ॥
ज्यो प्रात उडग्गन चंद । दीह दीपक ज्यों कंतिय ॥
तमसि तमसि सामंत । जाइ बर बीर सुरुभ्यो ॥
उभय पुत्त इक बंधु । भीम भारथ बल वंध्यो ॥
ओहनय हथ्थ लग्गी तनह । उपम चंद सारह करिय ॥
धूमली रत्ति में बंक षग । मनों चंद ह्वै विस्तरिय ॥ छं० ३५३ ॥
नर नाहर ज्यों लस्यो । अयुत नाहर धर षंडिय ॥
नाहर राइ नरिंद । षेत माया तन मंडिय ॥
ढंढो रिझ्झै ढाल । ह्राल चालुकह कढ्ढै ॥
आंन राज प्रथिराज । लाज सांई सिर चढ्ढै ॥

---

1. मो०—सुग्रीव ।　　२. मो०—भूपं ।
३. मो०—कहै ।

हसि कहिल्ल बाग कढ्ढिय बली । मिलि मस्वौरि संन्ही लच्यौ ॥
जांने कि अग्गि लग्गी बनह । दंस दाव दव प्रज्जर्यो ॥
बड़ गुज्जर राजैत । छत्र देषै पट्टनवै ॥
बैं नीसांनी मार । घाट गिर वर घट्टनवै ॥
अधरा षंडन षग्ग । झग्ग झूरे सुषमारह ॥
मनों सराली जंग । पांन कुट्टैं गंमारह[1] ॥
रा राम देव देवत्त तुअ । जाजै जौरि जुहथ्थ किय ॥
नर नाग देव देवी विहसि । पंजुलि पंज प्रहास किय ॥छं० ३५५॥
जिन थक्का जरि देव । सेव थक्की मातंगी ॥
धर थक्की धर भार । भारथ क्यों शिव मंगी ॥
कर थक्का करि वार । वांन थक्का कम्मांना ॥
मुष थक्का मुव मार । ठांन थक्का तुरकानां ॥
थक्कान जैत जज्जर बलां । कल्ति राम गुज्जर अरी ॥
चालुक्क रार गुज्जर पती । घाय घाय घुमर परी ॥ छं०३५६ ॥

दूहा—परिय रार हिंदवांन गों । मोअन्नी रनि वाह ॥
दिल लग्गा वरदाइ बल । जो हुंदे हयं वाह ॥ छं० ३५७ ॥

युद्ध का वर्णन ।

कवित्त—हय हय हय उच्चार । देव दिगाकुर भाजिय ॥
हर हर हर उच्चार । गाउ घाउं घट बाजिय ॥
बह बह बह बाना । तरुक पग पग गट्टन ॥
ठक ठक उनग्गिय । जाति नर भर भर पट्टन ॥
हर हार नाय हर हन जुग्गिय । भुव मंजन मद्दत दुल्लै ॥
मंगल पंवेर भार न किय । जिन गुणग्ग मायन पुल्लै ॥छं०३५८॥

दोहा - मर्थ भ्यांन वयन सु ग्रग्ग । पच पंचलै तत्त ॥
पंच पच पंचह मिलै । आप भूत अह वत्त ॥ छं० ३५९ ॥

छंद भ्रमरावल नव जंपि नऊ रग वीर नवै।भमरावलि छंद सुकिति सचै॥
रस भो छह नीय नवं नव थांन । दियौ मुष रूप सु चालुक पान ॥
भयौ मुष वीर सु भूप नरिंद । भयौ रस रोद्र कट्टन कंध ॥
भयौ अदभूत भयांनक वत्त । भयौ रसहास उमा कृतपत्त ॥
भयौ रस रुद्र अदब्भुत जुद्ध । भयौ तिन मध्य सिंगार विरुद्ध ॥
भयौ रस संत भई तिन मुत्ति । दिपै जनु पल्लव लाकिन गत्ति ॥
टगं टग चाह रहे पल हार । उठे तहां हंकि सुबीर हंकार ॥ छं० ३६० ॥

१. मो०—गुनमारह । २ मो०-दुल । ३. मो०—धुनेव ।

दूहा - दल बल कल सांई बिमल । मरन महूरत संधि ॥
चाहुआंन चालुक्क के । लगे बीर गुन बंधि ॥ छं० ३६१ ॥

छंद रसावला -

सूर सांई रनं । बीर चक्के बनं ॥ मोह मत्ते जनं । सार पीवं पनं ॥
बार बीरा इनं । काल जुट्टे जनं । षग्ग षग्गं षनं । ज्वाला लग्गं मनं ॥
अश्व तुट्टे ननं । रक्त जायें पिनं ॥ लोह बज्जे पन । डिभ डिभी रनं ॥
तार तारं पिनं । काल अैसे ननं ॥ रत्त अग्ग निनं । लोह न्हा[1] मनं ॥
तीय छुट्टे इनं । मात पित्त रनं ॥ स्व भि जित्ते तन । [illegible] मारे घनं ॥
देव कालं कलं । ग्यान छुट्टे छलंजोग पावै ननं मुक्ति मग्गं गन ॥छं० ३६२॥

छंद भुजंगी हुअ गौर गौरग मोरंग[2] मोरं । प्रजाल्लंत बीरं निसानंत भोरं ॥
मुपं मंच कैमास नैभं[3] जिभीर । कही चद नट्टी बर जास पीरं ॥छं० ३६३॥

आर्या पारसं अड्वं चंद्र[illegible] नार [illegible] ॥ बीर गा बीर मंध गुर छुट्टै छवंधं[4] ।
कल हग्गा प्रमानं । देव जग्गा दिवानं ॥
गुज्जर राय रायं । चन्द कह्यो [illegible] ॥ छं० ३६४ ॥

स्वयं भोरा राय के युद्ध का वर्णन ।

कवित्त हाड हाड बिकराई । नैन [illegible] ॥
दिष्पि रिपिय अ[illegible] । [illegible] म लल्लै ।
ग्रहन अरुअ ज्यों [illegible] ॥
यों लगि [illegible] । [illegible] जनं ।
लै चल्यौ [illegible] दिरबे सकल । [illegible] सडिव ।
[illegible] मिल्यौ गगन । [illegible] ॥छं० ३६५ ।

छन्द वेली [illegible]

प्रसाद [illegible] मु आवध [illegible] । ओर [illegible] संचर ॥
पंज [illegible] मिल भर । [illegible] सुधारि सुन [illegible] ॥
ठिल्लिय फौज मिले बल[7] दु दरि । [illegible] भयो मनि सुंदरि ॥
अप्पय अप्प मिले भर भीमर । पार अपार सरम्भर धुंधर ॥ छं० ३६६॥
पानि निषेध बजी झरम्मो झर । [illegible] ना जननी [illegible] ॥
मे हथ वाह सय भर सुम्भिय । गोहिल मुज्झि परे पय रम्भिय ॥
हथिय हूकि भिरच्चो प्रभु भीमिय । लप्प सवाय जिही दल जीमिय[9] ॥
उत्तर उत्त तुरंगति छडिय । जद्दव षग्ग [illegible] करि मडिय ॥छं० ३६७ ॥

---

१ ए०-में नहीं है । २. मो०-दिद्दिसान । ३. मो०-जा मरीरं ।
४ कृ० मो०-कलहृदग्गा । ५. मो०-भूवर । ६. मो०-दल ।
७. मो०-सुम्भर । ८. मो०-सारधर । ९. मो०-दलंदल ।

लुथ्थिय जलथ्थिय पलथ्थिय तनंषिय । हुंकत देव सिरं परि पंषिय ॥
रूंडन मुंड परे दरवारिय । जांनि कि कूर सुकट्ठ कबारिय ॥
सें हथ हथिय मों जुज पारिय । जानि चनूर[1] कि मूर मुरारिय ॥
सें गुर बंध सु जांम सु चष्षय।सैं दल रांमति गुज्जर नष्षय[2]॥छं०३६८॥
तीन सु तुग किए तन[3] कुंजर । मीडत जांनि मिली भुज पिंजर ॥
तीन निमेष जग्यौ जदु मुच्छिय । जयं[4] जयजोर पड़े उर लच्छिय ॥

भोला राय को लिए हुए हाथी का गिरना और मरना ।

चंपिय पांनि हियं दल कुष्षिय । राय समेत पस्चौ धर धुक्किय ॥
प्रांन गयौ गज गुज्जद हारिय । स्वामि गुरज्जन चंद प्रहारिय॥छं०३६९॥

पृथ्वी पर गिरने से भीमराय का महाक्रोध करके कैमास पर टूटना

भूमि परे भयो भीम भयानक । भीम कि भीम · गजाधर जानक ॥
षग्ग तुटें कर कढ्ढि कटारिय । सो कयमास ग्रह्यो कर भारिय ॥
राड पनो निरयो निज चालुक । दत[5] कैं कंठ लग्यो मनो कालक ॥
कष्ष धन्यो कयमास उचाइय[6] । पटन राइ जै सिध दुहाइय ॥छं०३७०॥
कंन्न परी गुर गुज्जर रामहि[7] । जैत पवार सुमोहिल रांनहि ॥
तेन लगे चल चालत तानहि । सिघ परै बछ् मे गजवानहि ॥
हक्कि हमीर हस्यो मुष तढ्डिय । तुम सामंत किना मुष पढ्डिय ॥
गहि गल भीम झमक्कि हिलोन्यो।अंब पन्यो तर जानि झंझोन्यो॥छं०३७१॥
फिरि करि वाहि र्नरिद कटारिय । सें मुष मल्ह[9] हमीर निवारिय ॥
गो भजि भूप जहां रज पत्तिय । रुद्दिव झरें जल ज्यों गिर गतिय ॥
अप्प गज्यो भर भीम महाभुज । उभय सुषग्ग सुबंक दुअंनुज[10] ॥
आय मिले भर भीम समथ्थह । जंपिय जीह हरी हथ तथ्थह॥छं०३७२॥
झंभिय बीर महा बर बीरह । सोढा सारंग देव सधीरह[11]॥
चोरा चाचिग देव सधीवह[12] । बीर बढेल सु जुह ॐरेवह ॥
सथ्थह सत्त सहस्र सु सथ्थिय । जुह मच्यो सम सूर समथ्थिय ॥
भीर भई भर सामंत सूरह । बीर जग्यौ सम बीर करूरह ।।छं०३७३॥

---

१. को०—जा बिचनूर ।
२. मो०—नंचय ।
३. को०—कृ० ए०—केर ।
४. मो०—कृ०—जय ।
५. मो०—नीम ।
६. मो०—रंनिय ।
७. को० कृ० ए०—उचारिय ।
८. मो०—कान्हहि ।
९. मो०—मेल्हि ।
१०. मो०—उनिय षग्ग सुबंक बिय दुज ।
११. को० कृ० ए० में यह तुक नहीं है ।
१२. मो०—चोरा चाचीय देव सुदेवह ।

कैमास पर भीड़ देख कर चामंडराय का सहायता पर पहुँचना।

कवित्त—तामस मय चामंड। आप तथ्थह संपत्तौ ॥
चरन बंदि मथुरेस। सुने कारन क्रत तत्तो[1] ॥
सुभट पंच सैं सथ्थ। सिलह बंधी सवधीरं ॥
परसि तिथ्थ कटि पाप। अप्प आवरेसु बीरं ॥
देषियै भीर कैमास सिर। सँधि रारि उससे अरुन ॥
हहकारि हक्क चामंड गजि[2]। सब्ब[3] लोह कढ्ढ लरन ॥
॥ छं० ३७४ ॥

घोर युद्ध का वर्णन।

छंद भुजंगी—कढे लोह सोहं जपे आंन ईसं। समं ज्वाल पावक्क में धूम दीसं॥
बजे लोह रथ्थ[4] रजे रारि संधी। षिले षेल वीर दुअं पंति बंधी॥
धवक्कंत संगी हवक्कंत बीर। भभक्कंत श्रोनं अमेनंति धीर॥
पलं[5] षंड तुट्ट कटि हड्डजाम। बधे वीर बीरत्त अंगं उधामं[6] ॥ छं० ३७५॥
असी झाक बाजंत पावक्क उट्ठं। जरै टट्टरं धज्ज उब्भार मुट्टं ॥
रुरै अंत अंती पयं रुझि[7] तुट्टं। कटि[8] पाइ पानि धर सीस लुट्टं ॥
असी अग्गि उड्डे लगें टोप दझें। उठै श्रोन छिछ्छं तिनं ताप रझें ॥
परैं हाथ चामंड बाजी बिभंगं। नरं रुथ्थ संनाह षंड अलग्गं ॥ छं० ३७६ ॥
रिनं राइ चामंड षेलं करूरं। मनों भग्गलं नट्ट मंड्यो विरूरं ॥
चढ्यो गज्ज[9] पामार सिंघ समथ्थं। तिनं गज्जयं चंपि चामंड तथ्थं ॥
चप्यो अश्व चामंड गो भूमि मग्गं। उठ्यो अस्सि मग्गं[10] हयो सं समग्गं ॥
फटयो सीस कंधं समं झाक ताहं। गहें[11] दंत दंती धमक्यो धराहं॥छं०३७७॥
फटे कुंभ प्राहार श्रोनं अजेज। महामट्ट फुट्या मनों रंगरेजं ॥
चली कुंभ साडंभ भेजी डपट्टं। मनो भंजियं कन्ह सोदद्धि मट्टं ॥
पर्यो सिंघ भूमं करै हक्क उठ्यो। हयो असि विभाग क्षोनी अपुठ्यो ॥
हहक्कारि सारंग सोढा समथ्थं। समं आइ चामंड सों सेल हथ्थं ॥छं० ३७८॥

---

१ कृ० को० ए० सुनिय कायरन क्रत तत्तो।
२. मो०—गति
३. मो०—सबहि।
४. ष्ये०—रत्तं।
५. मो०—पलं पञ्जु तट्टं करें।
६. मो०—बंधे बीर वीरं सुअंगं उधामं।
७. मो०—रुक्कि।
८. मो०—कटे।
९. मो०—सलष।
१०. मो०—उठे असि इभ्भं।
११. मो०—गजे।

हयौ अस्सि दाहिम्म सा सीस मंधे । जरासंध फट्या जरा जानि संधे ॥
हयं सद्द जंपेव वट्टेल बीरं । समं अश्व चामंड चंप्यो सुधीरं ॥
हयौ सेल दाहिम सीसं सुदेसं । फटै टट्टरं पुट्टि उट्टे परेसं ॥
ग्रहे[1] बांह चामंड चंप्यौ सुऊरं । विना अभ्रु नष्षो कलेवं सभूरं ॥छं० ३७९॥
चढ्यौ अश्व वढेल चामंड बीरं । जयं सद्द जंपे सुरं सीस धीरं ॥
चढ्यौ अश्व चामंड चंपे अरेसं । बिबं षंड षंडं षरंतं परेसं ॥
परे संड मुंडं सु सामंत हथ्थं । मनों कोपि कोरों दलं पारि पथ्थं ॥
परीहार सिंहं लग्यौ लोह रस्सं।मनो सूक षंषं सुरं मुष त्रस्सं॥छं० ३८०॥
नृभौ धार ईसं गहक्के बहंके । हनो सद्द जंपे लषे भीमधंके ॥
तबे सां षुला आय बोरंम देवं । नृपं अप्प अडो उहसे उरेवं ॥
दुअं उंच गातं दुअं उच्च हथ्थं । दुअं सामि ध्रंमं सुधारंत मथ्थं[2] ॥
दुअं सेत अश्वं सिरं गेन सारं।दुअं आइ आभासि सेलं उभारं॥छं० ३८१॥
दुअं वाहि सेलं तनं मझ्झ भग्गे । ... ... ॥
विना बाज दूनं कढे षग्ग ढानं । जुटे अंगदं भीम दुर्जोधजानं ॥
उभै षग्ग भग्गे कढे जंम दड्ढं । जुटे हथ्थ बथ्थं समथ्थं सनद्धं ॥
धवक्कं हवक्कं जमं दड्ढं पानं । लषे सीसयं फूल नष्षे सुरानं॥छं०३८२॥
करे तर्पनं रत्तपिंडं पलोरं । करे केस कु स्सं नृभै तिय सारं ॥
वरं[3] रथ्थ रोहे चढे स्रग मग्गं । धनं धंनि वांनी सबै सेन लग्गं ॥

भोलाराय की सेना का भागना ।

गहक्केव क्रम्यौ सु कैंमास जामं।भहंराइ सेनं भगी भीम तामं॥छं०३८३॥

दूहा—दस सहस्र दुअ भुज परत । रहि दरबार झुझाइ ॥
हसम सहित हैंवर मुमति । कतिहुन वांन सिराइ ॥छं० ३८४॥
दरसि राज पट्टन सुपति । गति फर पारस लग्ग ॥
मनों इन्द्र इन्दी वरन । मुष मुष कंकन लग्ग ॥ छं० ३८५ ॥
लुथ्थि रही दरबार गुथि । घरिय पंच अम रीस ॥
नित महि सक कैंमास सथ । रहिग अठारह बीस ॥ छं० ३८६ ॥
अप्पांही अप्पां जुरिग । भग्गा धर वर धाइ ॥
मुआ न को मृत जा करहु । कढ्ढी कढ्ढन पाइ ॥ छं० ३८७ ॥
कवित्त—आयौ कढ्ढी स्वामि काज । साहस सागंतां ॥
बारह से बानेत । सुन्नत ढुढन धावंता ॥

---

1. मो०—महं । 2. मो०—मध्धं ।
3. मो०—वरं ।

हैवं लग्गे हथ्थ । तथ्थ भोरें राकज्जें ॥
जो वित्त कवित्तयौ । देव दरबार सु गज्जै ॥
संग्राम लग्गि संकट सु पहु ग्रहास पिंगिय पहर ॥
तुट्टिय सु सस्त्र छिन्निय सिरन।गहत गनन ब्रह्मं गहर ॥छं० ३८८॥

छंद रसावला —

हिंदु हिंदू ररी । लोह उड्डं[1] झरी ॥ मुक्क उक्कीबरी । मुक्क मुक्कैसरी ॥
राग रंगे तरी।भीर भागे परी॥झल्ल मल्लै ढरी।ढल्ल कल्लै टरी ॥छं० ३८९॥
कढ्ढि कूटं करी । ईम ईमं अरी ॥ भीम लग्गी घरी । राइ तुंगं परी ॥
गोम हेमं लरी। आइ छा उग्गरी[2]॥कंज कूरंभरी।दाहिमानी भरी ॥छं०३९०॥
जड्डु हड्डं करी । घेर बज्जीघरी ॥ सून सेनं टरी । लुथि पा थरी ॥
कोंन जंत्रं झरी । केयकेनी बरी ॥ जैत उप्पा भरी ॥··· ··· ·· ॥छं० ३९१॥

कवित —काकढ्ढी झुझयो । रह्यो रानिग देव उर ॥
जेन सहू धरि छत्र । मंच त्रिबह्यौ मंडि सिर ॥
गहअ राव पैरंभ । रह्यौ ग्यारह से संभर ॥
पारिहार पावार । नेह निव्वह्यौ सुनिब्बर ॥
जानै न चंद अतन आनत । महस तीन तेरह परिग ॥
गुज्जरिय ग्रेह सदेह मिटि । महस मत्त दह निव्वरिय ॥छं० ३९२॥
चहुआनां रे सेन । समुद विच बडवा गोर ॥
अगि सु षग्ग षग्गयो । सुनमरन धन धन कोरं ॥
स्याम छोह दढ्ढयो । रोम नथ्थयो सु गढ्ढो ॥
दुति ओपम कबि चंद । चंद पारस विच ठढ्ढो ॥
झुलई लोह लहरें सुनन । तुटि गुरज्ज अरि छडिल्लिय ॥
कढ्ढयो समर चालुक्क रन । अप्प पंच मिलि अप्प जिय॥छं०३९३॥

पृथ्वीराज का राज्यस्थापन होना ।

जित्यौ रति रति वाह । सिघ लीनो गज घेरिय ॥
बलि दाहिम कैमास । दियो चालुक मुष फेरिय ॥
बरति संग वे थांन । रा भोरा हय मंडिय ॥
दिसि दिसांन कग्गद प्रमान । आव आवन लगि छंडिय ॥
ढुंढयो षेत सामंत भर । आपन घर उत्तारयो ॥
तिन रानि रारि चहुआंन दल । मंत सुमंत विचारयो ॥छं० ३९४॥

---

१. मो०—झर्म ।
२. मो०—आइ छत्रापुरी ।

छंद भुजंगप्रयात-
पर्‍यो अष्षि हाडा हयं हड्डभग्गी। लर्‍यो छोह भीमं सिरं छत्र लग्गी ॥
पर्‍यो पंथ मारा[1] उपरिहार पाली। जिनै ब्रह्मचारी चितं किति आली ॥
पर्‍यो माझ मोहल्ल मल्लीन बल्ली। जिने देह रत्ती करी सस्त्र झिल्ली ॥
त्रिभै जैत बंधं पर्‍यो धार नाथं। मही राव भागै नहीं जासु हाथं ॥छं० ३९५॥
सहदेय सोनिग्ग चौहथ्थ हथ्थें। रद्दी रंभ ढिल्ली गुनं गैन तथ्थें ॥
असारी असंभी जयं जोग ध्यानं। कवीचंद किती करें का वषानं ॥

आबू का राज्य जैतसी को सौंपना।

रतिं वाह वित्यौ जयं जैत सूरं। बदे ग्रेह सामंत तत्ते सपूरं ॥
भजं वाज लुट्टे रु छुट्टे पवारं। दियो राज अब्बू सद्दुग्गं अघारं ॥ छं० ३९६ ॥
परे स्वामि कांमं जु सामंत सथ्थी। प्रकारे[2] सु चंदं दिसा सुद्ध षथ्थी ॥
जयं पथ्यराजे सु सोमेसपुत्तं। धर्‍यो संभरी राव सो छत्र हित्त ॥ छं० ३९७॥
इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय सों जुद्ध सामंत विजै नाम द्वादस प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १२ ॥



१. मो०—प्यवार परिहार।
२. मो०—प्रकासे ।

अथ सलष जुद्ध समयो लिष्यते ।

(तेरहवां समय ।)

सिंहावलोकन

दूहा—गह उग्गह निग्गह करन ।-भिरन भूप चहुआंन ॥
सिंघालोकन कथ्थ कथि । सो कवि चंद वषांन ॥ छं० १ ॥

कवित्त—धन निध्रन दोइ धपहि । धपहि रन वीरह काइर ॥
छुट्टैं बल वे पांन । बीर हक्के बल साइर ॥
अधम जुद्ध नह आदि । जुद्ध हिंदवान हिन्दु बर ॥
चाहुआंन सुर तांन । कहो कलहंत केलि भर ॥
आदेव सेव चहुआंन किति । चालुक्कां लग्गे भिरन ॥
सम मुगति बंध बंधे वलिय । सुबर बीर लग्गे तिरन ॥ छं० २ ॥

गाथा—ढिलिय ढाहन सस्त्रं । बज्जिय आशाज राज राजेन्द्रं ॥
ग्रामं पुर अजमेर । जग्गे सय वीर विकदं ॥ छं० ३ ॥

दूहा—सयन सिंह लग्गा सुअरि । सुनि करि वर प्रथिराज ॥
सा रुंडै संन्हो चढयो । तहं गोरी प्रति बाज ॥ छं० ४ ॥

गाथा—भारद्वाज सु पंषी । उभयं मुष उद्दरं एकं ॥
त्यों इह कथ्थ प्रमानं । जांनिज्यो कोविदं लोयं ॥ छं० ५ ॥

उधर भोला भीमदेव से सरदारों को लड़ाई ठनी इधर शहाबुद्दीन की खबर लाने दूत गया, उसका लौटना और पृथ्वीराज से विनय करना

दूहा—उत भोरा भीमंग सों । सूरन संच्यो सार ॥
इत प्रथिराज नरिंद को[1] । दूत संपते बार ॥ छं० ६ ॥
अंग भसम जंगम जुगति[2] । जटा जूट सिर मंडि ॥
कसिल गोट म्रिग चर्म पट । बड आडंबर हुंडि ॥ छं० ७ ॥
नयन जोति वत्तन विबुष । असन दंभ कहुं आंन ॥
षबरि होन बुल्ले निकट । दुवा दीन[3] चहुआंन ॥ छं० ८ ॥

१. कृ० को० मो०—कै ।
२. को०—सुगति ।
३. मो०—विध दुवाह ।

साटक—श्री चहुआंन नन्यिद[1] इदं अवनी भूपाल भूपालयं ॥
जंबू दीप महीप दीप निबलं कित्तीति विस्तारयं ॥
षग्गं त्रास मैवास त्रास त्रसनं गर्भा न गर्भं गलं ।
तोयं जैति जिह्वांन भांन तपनं मोनं दष्टा जे बलं ॥ छं० ९ ॥

वार्ता—अचहु अै चहुआंन गाजी । षलक तो षग राजी ॥
मेवास मार बाजी । पर्ब तो सरन साजी ॥
भैभीत भूषं त्रषेवं । फल पत्र कंदं भषेव ॥
आवास निर्बास नैरं । जहां तहां तजमि धतूर षेरं ॥
अजमेर पीर सहाई । दुसमंन पैमाल लषो देव हाई ॥
पीर पैगंबर दुवाह गौर सारे । अन मीन मइत्रिन दंत चारे ॥
ढिल्ली तषत थिर राज तेतें । गंग जल जमन रवि चंद जेतें॥छं०१०॥

दूत का आकर पृथ्वीराज को खबर देना कि तीन लाख सेना के साथ शहाबुद्दीन आता है ।

दूहा—सुनि दुवाह जंगम चरन । आडंबर तन तिच्छ ॥
रिझिय गल्हां गुर सुतन । कहो षबरि की मिच्छ ॥ छं० ११ ॥
कहै दूत दिल्लेस सुनि । चरचि बत्त चहुआंन ॥
हम आए तब उन कियो । बाहिर नगर मिलांन ॥ छं० १२ ॥
कहै विवर सांई सुनो । गज्जमेस सह भेव ॥
तीन लष्ष साहन सबल । अकल अनंम अतेव ॥ छं० १३ ॥
बंके मुष बंके चषन । बंकी करन कमांन ॥
बंक दीह सम करि गनौ । बंके षग्ग अमांन ॥ छं० १४ ॥

दूत का ब्योरे के साथ शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन करना ।

छंद पद्धरी—कर जोरि अरज तिन करी राइ । गनि कहैं सेन जे जुरे आइ ॥
दस सहस सेन षग्गर अगंज । अति उंच गात सादूल पंज ॥छं० १५॥
बत्तीस सहस कबिली करूर । जम जोर जोध निज्जरि गरूर ॥
कसमीर कहर सत्तरि हजार । कमनैत काल मुठ्ठी समार ॥छं० १६॥
हबसीह संम त्रैपन हजार । कर धरें कहर कत्ती बजार ॥
पेंतीस सहस रूमी रहस्सि । तिन गहै लोह महमह महस्सि ॥छं०१७॥
सेंतीस सहज सज्जे फिरंग । तिन लंब मूल टोपी सिरंग ॥
सत्रह हजार सज्जे पठांन । अनभंग जंग अनमूल बांन ॥ छं० १८ ॥
दस सहस सेन सज्जे सजट्ट । बाराह बैर बल घट अघट्ट ॥
पन्नह सहस पस बांन साह । अंगन अगंज को सकै गाहि ॥छं० १९ ॥

---

१. मो०—नंदिव ।

पचीस सहस सागिरद पेस । कामीक कमल पेषे असेस ॥
सुलतांन षबरि इह सेन पाइ । बगसी सहाब बरनी सुनाइ ॥छं०२०॥
तिन मद्धि इक्क लष अकल जीव । जांनै न भज्जि[1] वज्जी करीव ॥
तिन मद्धि मीर के चमर धार । तिन माया न मोह षिष्षिय लगार ॥
॥ छं० २१ ॥
तिन मद्धि मिले केतबल साज । सम रंग जंग जनु परत गाज ॥
पच्चास सहस तिन महि असंक तिन चित्त अभै भै भीत बंक॥छं०२२॥
तिन मद्धि तीस बहरी वलाइ । हुकमी हसंम जनु सोर लाइ ॥
तिन मद्धि सहस दस समर धार।अरि मार सार जं करै सार॥छं०२३॥
तिन मद्धि पंच सें सत्र चूर । रन रंग नेंन लषियैं करूर ॥
पंच बीस पंच दिन करें निवाज । हक अहक वस्त जिन नही काज ॥
॥ छं० २४ ॥

श्रय काल पाक अस्नांन अंग । छल छेद भेद जिन नही रग ॥
संमरन संग जिन नही द्रव । अल्लाह लाह व्यापार भव ॥
की रीय करी जिन देह एक । पैराति परन पर्जा न टेक ॥छं०२५॥
दूहा—कहे दूत प्रथिराज सम । मिछ सेना वरजोर ॥
सहर निकसि बाहर भए । बंत्र बज्जि घन घोर ॥ छं० २६ ॥

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का क्रोध करना ।

कबित्त—सुनत सुवन सोमेस । भैंम भैभीत भयो तन ।
रोस रग प्रज्जलिग । मगि संम्राह अमर जन ॥
हयन हुकुम करि देन । मंत गज अंदु न पुल्लिय ॥
नालि गोल जुत जंत्र । हसम हाजुर सह बुल्लिग ॥
लोहांन बोलि आदर अनत । विवरि बत्त दूतन कही ॥
विफरि वीर डक्कन सुनत । जनु कि पुंछ मिळ्यि अही ॥छं०२७॥

लोहाना का क्रोध करके शाहगोरी के नाश करने की प्रतिज्ञा करना ।

पुच्छ चंपि जनु चिल्ह । चिष सोबत जग्गाइय ॥
हक्कार्यो कि वराह । दंग जनु अग्गि लगाइय ॥
बरड छता कै छेरि । गाय ब्यानी मग्गांनिय ॥
कै जग्गाए वीर । भीर भारथ मग्गानिय ॥
विरचयो लोह लोहांन सुनि । जत्र कत्र मेछन करों ॥
सोमेस आंन सुरतांन धर । तर ऊपर गज्जन करों ॥ छं० २८ ॥

---

1. कु—भंजि ।

आबूपति सलष आदि का अपनी सेना तयार करना ।

सुनि अवाज सुविहांन । सलष अब्बू पति रष्षन ॥
सहस सत्त सजि सेन । गिलन गोरी भर भष्षन ॥
गजन पंति ढुलि ढाल । तत्त तोषार पष्षरिय ॥
जंत्र गोर गहरांन । मिलन मेछांन मष्षरिय ॥
अनमूत भूत संनाह सजि । बजि निसांन घन घुम्मरिय ॥
इम जैत सुवन द्रुवननि दहन । लरन लोह मन गुंमरिय ॥छं०२०॥
पुनि गुज्जर बलि बंड । लोह अन डंडनि डंडन ॥
रहसि राम रन जग । नथन अन नथ्थन संडन ॥
अठ्ठ सहस असवार । सार पाहार प्रव्रत्तिय ॥
दांन ध्यान असनांन । सोक संसार निवर्त्तिय ॥
अनचिंत्य आइ सारोंड सह । जनु अकाल पावस मँडे ॥
आवाज साह अवननि सुनत । सकल सुष्ष विभ्रम छँडे॥छं०३०॥

पुरोहित गुरु राम का आशीर्वाद देना ।

फुनि आई गुर राम । माम भुज डंड समर जिहि ।
जांनु भारथं द्रोन । श्रोन बरषंत सस्त्र जिहि ॥
अश्व अयुत तिहि तीन । ग्यांन विग्यान विनांनिय ॥
मंत्र जंत्र आराध । मथ्थ जिन बीर विग्यांनिय ॥
आसीस आंनि चहुआन दै ॥ कहा विरम माजिन चलौ ॥
चंपै न सीम साहाब सक । धक धकि धर करिहौ प्रलौ ॥छं०३१॥

दूहा—दिषि डरांन डूंबर सबन । गहकि गज्जि नीसान ॥
घर धुंमर अंमर[1] मिलिय । मुक्ति रोस रीसांन ॥ छं० ३२ ॥

थोड़ी सी सेना के साथ शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये पृथ्वीराज का निकलना ।

कवित्त—सहस पंच दस सेन । अलप चहुवांन संघातिय ॥
बाल पोस प्रत्यंग । सस्त्र सत्रंग निघातिय ॥
चमर तबल टंकार । हुंक हुंकार हकारिय ॥
लोह छक्क धर धक्क । कक अनसंक वकारिय ॥
सहस तीस सह सेन मिलि । गिलन मेछ गज्जे गहर ॥
तिन संग बीर बेताल चढि । पढत मंत बब्बुठे कहर ॥ छं० ३३ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये साकंडे पर चढ़ाई करना

कवित्त—सजि धायौ चहुआंन । साइ साकंड सु संभरि ॥
उत जित्यौ चालुक्क । रति रति बाह सुसंभरि ॥

---

1. को०- अम्बर ।

घनि सुभाग प्रथिराज । बीर भोरा बिड्डार्यौ ॥
अरि अनंत कलहंत । सेन सामंतन झार्यौ ॥
लग्गयौ षग्ग उड़ि हथ्थ तें । त्रिया नयन मत्ता मयन ॥
गाहंन गहन दुज्जन दलन । सुबर सूर सज्जिय सयन ॥ छं० ३४ ॥

लोहाना आजान बाहु का पांच सौ सेना के साथ आगे बढ़ना ।

लोहांनौ अगिवांन । सेन सै पंच हलक्किय ॥
पंच सहस सों मोम । पुत्त करि तोन षलक्किय ॥
गौ डंडा नीसांन । एक दस अठ्ठ सुभेरिय ॥
ओछंगी सन्नाह । फौज चहुआन सुफेरिय ॥
उतंग ढालकी वैरषौं । कोहंकै अठ्ठारहा ॥
निमि जाम तीनि वित्ते पतिय । पंजूगाय सुढारहां ॥ छं० ३५ ॥

तातार खां का सुलतान से चौहान की सेना पहुंचने का समाचार कहना ।

अरिल्ल तौ प्रश्न कीनौ चहुवांन । बल जल धर धंमर परिमान ॥
आयौ अनी बंधि सुरतान । कही षांन तत्तार प्रमांन ॥ छं० ३६ ॥

सुलतान का अपनी सेना को तयार करना ।

दूहा—दल सज्जिग सुरतांन ने । है गै गगन गभीर ॥
जनु भद्दों भर उनमत । बाइ भान चँपि सीर ॥ छं० ३७ ॥

सुलतान का उमराओं से कहना कि अब की अवश्य जीतना चाहिए ।

बोलि उंमरा मीर सब । यौं जंप्यौ सुरतांन ।
अब कें पग गढ्ढे गहौ । भजो सेत परान ॥ छं० ३८ ॥

खुरासान खां तातार खां आदि सरदारों का बादशाह की बात सुन आक्रोश में आना ।

कवित्त –षां षुरसांन ततार । षान रुस्तंम अधिकारी ॥
बली षांन पीरोज । नाम रोजन रज धारी ॥
षां रूमी हबसी हुजाब । षांन षांना रुस्तम षां ॥
जमन जुद्ध बर मुद्ध । मुद्ध अनुरुद्ध मुस्त षां ॥
सुरतांन बमाऊ हथ्थ धरि । गहकि गज्जि षग हथ्थ लिय ॥
रष्ष सुभीय हम साह सुनि । जौ बंधै चहुआंन जिय ॥ छं० ३९ ॥

सब सरदारों का सजकर धावा करना ।

बोलि मांन सुरतांन । बाहु लंबी पस्सारिय ॥
है हीना षुरसांन । मरन सांई अधिकारिय ॥
सरन आइ षुरसांन । बंधि वा रूप महंगल ॥
षेलि षांन सजि प्रांन । सैंन सज्यौ दिसि जंगल ॥

बढि सुबर भिस्त अरु बयन जिय। आनंद्यौ गौरी गरुव ॥
धाए सुघूम बद्दर मनों। सस्त्र धार धावै धरुव ॥ छं० ४० ॥

सेना की चढ़ाई का आरम्भ होना।

छंद मोतीदाम—सज्यौ बर गौरी साह सयन। सुमोतिय दाम बरंन बयंन ॥
छिति छत्र हिती पति बज्जहि लोइ। उगे जनु अंकुर बीज सुदोय ॥छं० ४१॥
बजे रन तूर वरद्दय[1] कन्न। जग्यौ जनु बीर दुती सिर पंन ॥
बजे रन रंग रजो दन मोद। फले बल मध्य कला कृत क्रोध ॥ छं० ४२ ॥
हलं हल बद्दल सद्दल बांनि। उपट्टिय सत्तय सिंध प्रमांन ॥
बजी रन रंग सुरंगय भेरि। धरी हथ नारि छतीसउ फेरि ॥ छं० ४३ ॥
बजी सहनाइन फेरि उपंग। बजे दस पंच स सिंधुअ रंग ॥
बजे रव रंग निसांन दिसांन। बजे घन त्रंबक ढोल निसान ॥ छं० ४४ ॥
बजे घरियारि रनं किय घट। बजे घनि घुग्घर पष्वर अट ॥
बजे तंबल सुर तंग तद्दूर। बजे रन बीरति झालरि रूर[2] ॥ छं० ४५ ॥
बजी सिर चोट दमांमन रीस। नचै जनु गंगय अग्गय ईस ॥
फिरें गज राजत गज्जत पंति। करी मनों कज्जल पव्वय कंति ॥ छं० ४६ ॥
बनी गजराजन बैरष पति। मनों बनराइ बसंत हलत ॥
चले बनि पतिय दंतिय जोर। तुरै छह रंग नछत्र हिलोर ॥ छं० ४७ ॥
चढे गज अंडन बधिय पांनि। चढें गज राज चले गिर जानि ॥
छरं छर पाइ इनो छर होइ। पुजै नह वान कमानह कोइ ॥ छं० ४८ ॥
सउज्जल दंत न उप्पम बानि। मनों बग पति पनी[3] घट जानी ॥
बदै नन अंकुस कूह चिकार। सहै तन वज्जय वज्ज प्रहार ॥ छं० ४९ ॥
जरें नग दंत न हेमरु मुत्ति। मनो घन मंजह विज्ज पवंत ॥
छयं घन पट्ट सु छिछ्य तांम। झरें झरना जनु पव्वय स्यांम ॥ छं० ५० ॥
मचै तहां कद्दव कीच झकोर। करै तहं दद्दुर घुघ्घर सोर ॥
धरें धर पाइ हरे हर जोट। चलावत मेर कहां कहो कोट ॥ छं० ५१ ॥
बियं बिय बौरंग जें गज लेहि। लरें नह सायर ढिग्ग समेहि ॥
बनी बर नारिय रेसम रंग। चढें गिर इद वधू मनो चंग ॥
तिनं उपमा बरनी नन जाइ। प्रलै घन संकर छुट्टिय पाय ॥ छं० ५२ ॥
दूहा—पाइ दाइ धर वर धरै। सद मद रोसत जंग ॥
दुअन दिषाअै देषियैं। जनु बिस भरे भुजंग ॥ छं० ५३ ॥

---

१. कृ० को०—रवद्दय।
२. कृ० को०—कूर।
३.—कृ०—बनी। को—बनी।

चौहान की सेना का पूर्व और पश्छिम दोनों ओर से चढ़कर मिलना।

निसि पद्धरी नरिंद तो। सज्जि सेन चहुआंन ॥
मिले पुव्व पच्छिमहुतें। चहुआंन सुरतांन ॥ छं० ५४ ॥
हय गय दल बद्दल सुअन। नर भर मिलि चतुरंग ॥
चाहुआंन हैं वेंजु सों। बढिय रारि रन जंग ॥ छं० ५५ ॥

खुरासानियों का चौहानों पर टूट पड़ना।

घरी एक पल बिपल हुअ। लोह षोलि षुरसांन ॥
उररि परे दोउ दलन वल। चाहुआंन तुरकांन ॥ छं० ५६ ॥
लै संभरि पति सगुन वर। पुट्ठि पवन प्रथिराज ॥
जुग्गिनि चक्र अचक्र बर। सो सन्ही अरि काज ॥ छं० ५७ ॥
लो जुग्गिनि प्रथिराज वल। संमुह दै पति माह ॥
च्चारि घरी घरियार ज्यों। चच्चर सी सम राह ॥ छं० ५८ ॥

शाह की सेना का युद्ध वर्णन।

छंद रसावला - साह गोरी भरं। सेन संमं फिरं। ★ ★ ★ ★ ★ ★ ॥
लोह कढ्ढे करं। बीज झंपं झरं। अस्सि बंकी करं। चंद वीयं वरं ॥
नेंन रत्ते करं। कंध कढ्ढे करं[1]। बं वजे घुघ्घरं। मुष्षजा कंदरं ॥५९॥
वीर बड गुज्जरं। सेन बद्धी परं। अस्सि मारं झरं। उत्तकंठं परं ॥
रंभ ढुंढे बरं। लुध्थि आलुथ्थरं। सेन भग्गं परं। लेहु ले उच्चरं ॥६०॥
पंथ ते उत्तरं। भार नंषे सरं। जोग दिष्षे नरं। सिद्ध तारी पुरं ॥
वजीयं यों करं। मुत्ति बंधं परं। सूर नांही डरं। स्यार पच्छे परं ॥६१॥
दूहा--उनंगे सुरतांन दल। सारुण्डे चतुरंग ॥
दीह दुघट्टी रन मिले। सोभर नी कि जंग ॥ छं० ६२ ॥

दोनों सेनाओं का मुठभेड़ होना, सलख राज का भी आकर मिलना।

छंद भुजंगप्रयात—
जुगं जंग लग्गे हलक्के गुमानं। ढलक्के सुने जा चढ्यो सूविहानं ॥
नियं नद्द नीसांन बज्जे विहानं। परी अैल आलंम हुअ जान थानं ॥
चढी चक्क चक्की हुअं सोर ओरं। मनों मेघ घोर कियं सोर मोरं ॥
कहैं षांन जादे अबे सू विहानं। चढयो साहि सद्दैं अरे चाहुआंनं ॥६३॥
भरक्के भराहं उने हंस नद्दं। भए बंध हीनं घने मेछ अद्धं ॥
असौरा अछेहं भगे बंध फौजं। मिल्यो आय फौजं सलष्यंति सौजं ॥

1.-को०-घरं।

उतंगं सु गातं भरं बथ्थ घातं । सनेही सुभट्टं मनों सिंह बातं ॥
अलग्गं सुलग्गं उछारंत मेछं । उड़ी पंति गत्तं बंधे रेस रेसं ॥
कला सूर एकं असू रंस चोकी । सहै कौन मारं बिसूरं सु सौकी ॥
॥ छं० ६४ ॥

सलष की प्रशंसा ।

कबित्त– ढंढो रज्जहि ढाल । मुरें गौरी दल अविहुर ।
अविहुर दल विहुरंत । परे सिल्ला रति असि झर ॥
असि झर भर भिगई । मलिक दावानल लग्यौ ॥
दावानल प्रज्जर्‌यौ । पिठ्ठ सु समान विलग्यौ ॥
सूरिमा हाक संभरि ससिक । त्रिगुन सद्द लय दल सहुअ ॥
दल प्रलय होत को अंग मे । पष्षर लष्ष सलष्ष तुअ । छं० ६५ ॥
त्रिगुन त्रास पामार । भिरिग चोकीय चकाहिम ॥
चका व्यूह अहिवंन । मनो जै द्रच्छ सु दाहिम ॥
घरि घारह घारार । घार घारह आबट्टिय ॥
आहुट्टिय मनों सिष । सिष ए काम उथट्टिय ॥
जज्जरिय गात आघात उठि । प्रभु अबु अठट्टह अठिल ॥
घरि एक सार संभरि सुभर।रन त्रिघात नंचिय नठिल ॥छं० ६६॥

आजानबाहु लोहाना का मारकर भागना ।

लोहांनो आजांन बाह । वाहन वहि लग्गो ॥
त्रिगुन त्रंस त्रिसीय । मार भारी भर भग्गो ॥
तव जग्यौ सुरतांन । षान षग्गह पंधारिय ॥
वाह वाह आलंम । अभग आलम कहि मारिय ॥
बिस्तरिय बहसि हिंदू तुरक । किरकि कंक मंजन करिय ॥
संभरिय धरिय संमर तनिय।कब्बि मुष्प अस्तुति घरिय ॥छं०६७॥

दूहा—जहां जहां रन अंकुरिय । तह तह चंपिय राज ॥
मिच्छ सेन एकत करिय । मनों कुलिगन बाज ॥ छं० ६८ ॥

सलष राज की बीरता का वर्णन ।

कबित्त—ढंढो रिज्जे ढाल । ढाल ढंढोरि ढंढोरै ॥
मुरें ढालंढी चाल । चाल अरि माल बिछोरै ॥
अरि बिछोरि अरि माल । सलष उभ्भो पय पय असि ॥
हुल्लि नाग गिरि नाग । तेग कढ्ढे बढ्ढे कसि ॥
दन देव दच्छ गंध्रब्ब गन । अजुत जुद्ध बिष्षै अदय ॥
चहुआंन सेन सुरतांन सों । सुजनु अंत लग्गे सदय ॥छं० ६९ ॥

बड़ गुज्जर और तातारखां का युद्ध वर्णन ।

बड़ गुज्जर रा रांम । उत्त ततार मंडि रन ॥
सार धार उझ्झरिय । श्रोन झंझरिय गगन तन ॥
लोह हड्ड उड्डंत । हंस छुट्टंत श्रीर सर ॥
फिरत रूंड बिन मुंड । दंत बिन सुंड सार झर ॥
अद्‌भुत भयावह समर मच्चिय । रच्चिय रक्त काली कहर ॥
इक लरत गिरत घुंमत घटत । भटकि नट्ट मंडिय बहर ॥छं०७०॥

छंद हनूकाल—कहि हनुं कालय छंद । मिलि साहि गोरिय दंद ॥
तत्तार षांन मसंद । बड गुज्जर राम नरिंद ॥ छं० ७१ ॥
नट वरह मंडिय ष्याल । पर वृत्ति हाल विहाल ॥
झरि रार रत्तह भीर । उठि अग अगनित बीर ॥ छं० ७२ ॥
कढि लोह कोह दुदीन । बजि तार झार सुझीन ॥
का कंठ कंठिय जांनि । करै देव दुंदुभि गान ॥ छं० ७३ ॥
नचि चक्क चक्कि गरिट्ट । अरि भक्त इष्ट सु दुष्ट ॥
बनि सार धार करक्कि । परि सीस भूमि तरक्कि ॥ छं० ७४ ॥
उडि छिछ इच्छ प्रकार । रुधि बहै अंगन षार ॥
इन भेष राजत बीर । मधु माघ बृछ सरीर ॥ छं० ७५ ॥
सुनि श्रवन समझन वेन । आवृत्त घाय प्रचेंन ॥
परि अंग अंग निनार । वजि दिव्य देवन तार ॥ छं० ७६ ॥
असि बजत सार सरीर । जनु झिलत सूरत नीर ॥
अंग अंग घाइ घनक्कि[१] । जलजात बोलत थक्कि ॥छं० ७७॥
सुरतांन आंन कहंत । सुनि सेन सध्य गहंत ॥
टरि घरिय मध्य मध्यांन । चहुवांन देषिय भांन ॥ छं० ७८ ॥

दोनो सेनाओं का एक घड़ी तक एकमेक हो जाना और घोर युद्ध होना, आकाश न सूझना ।

कवित्त— भान दिष्षि धुम्मरो । रैंन उड्डी घर धूंमर ॥
चक्रित देव गंध्रब । ईस चक्रित गुन अमर ॥
टोप नेत चक चेत । अग्गि उडिवी असि टोपं ॥
मुकर मध्य जनु ईस । नेत देषत त्रय कोपं ॥
घरी एक एकभिक्क हुअ । महन रंभ मच्यो सुविय ॥
इक परत गिरत तुट्टत सुतन।इम छित्रिय छिति पर सुभिय ॥छं०७९॥

१. को०—घनकिक ।

कैमास का साथ छोड़ कन्ह चौहान का भी सारुंडे में आ जाना।

दूहा – कन्ह छंडि कैमास फुनि । सुधि सारुंडां रारि ॥
तनक भनक सी सुनत ही । जांनि कै धप्पी धारि ॥ छं० ८० ॥

कान्ह का बड़ी वीरता से धावा करना।

कवित्त—धारि धाप धपि कन्ह । आंनि अर्नांचत परी रन ॥
वसीह सम संचरन । जांनि दव दंग सुक्कवन ॥
कै आषाढ उड्डूर । तोरि तर मूल उछारिय ॥
कै ब्यानी वाघनि सुपत्त । उकति आषेट उछारिय ॥
रूठो कि रिच्छ राषिस दलन । समर सेन धक्कह धरिय ॥
नंपंत जांनि सरवर सुभर । कढि सरोज मत्तो करिय ॥ छं० ८१ ॥

दोनो ओर के सरदारों का महा क्रोध कर करके युद्ध करना।

छंद भुजंगी—
परयौ धाइ सुरतांन सुविहांन गोरी । चंपे चाइ चहुआंन गो पंच डोरी ॥
भिड़्यौ वंक सूरं सलष्षं पवारं । नृपं सार टट्टी किसारं किवारं ॥ ८२ ॥
भिड़्यौ कंन्ह कंकं भेंडा मड्डि गाढौ । मनों राष्पसी सेन में कप्पि ठाढौ ॥
गहे दंत दंतीय भुज्जं उषारं । [1]धरा कढ्ढि मूला मनो मार डारें ॥८३॥
दुवं वीर हक्क महावीर मद्दं । भये रंग रत्तं मनों मल्ल हद्दं ॥
लगैं सस्त्र अन संष हथ्थीन टारें [2]मनों कोपियं भीम पाहार फारें ॥८४॥
तुटै टोप टूकं मुउड्डंत दीसें । मनों चंद तारा नषै हथ्थ रीसें ॥
लगी नाग मुष्पी गजं सीस भारी । मनों द्वार रुंधे षिरक्की उघारी ॥८५॥
हुले सेल सालें वरं वीर दीसं । मनों सिद्ध तारी लगी सीस ईसं ॥
परं तेन दीसं वरं वीर कोई । लगें धार धारा रजी रज्ज होई ॥ ८६ ॥
पर्‍यौ राउ रघुबंस बरसिंह जोरं । जिनें मुत्ति लष्भी वरं वीर भोरं ॥
बजें धार धारं गजं सीस तेगं । नचें जांनि बीजं घनं मध्य वेगं ॥८७॥
लगै कुहुक वांनं गजं जोर सीसं । उठे छिछ इच्छं गिरं ऊक दीसं ॥
भरं सुंड रक्तं सहं अंग डोरं । श्रवें वद्दली मेघ गेरून धारं ॥८८॥
घुमें मुक्कि सीसं भटं लोह छक्कै । उभै जांनि भूतं महा मंत्र हक्कै ॥
फिरें रुंड विन मुंड रस रोस राचे । मनों भग्गरं नट्ट विद्या कि नाचे ॥८९॥
परे अस्व हुंसं सिरं जोर सूरं । तुटें षुप्परी हड्ड हवै भूर भूर ॥
लगी गुर्ज सीसं भजी भंति छुट्टें । मनों मंथनं दद्धि मंथांन उट्टें ॥९०॥

---

१. को०—इस तुककी जगह यह तुक है "मनो को पियं भीम पाहार फारें।
२ को०—इस तुक की जगह यह तुक है "धारा कढ्ढि मूला मनो मार डारें।

हुअे छीन छीसं छरी मार छक्कै । झरं रक्त डोरी महा मल्ल हुक्कै ।।
भिरै सस्त्र विन बथ्थ भर भीर भीमं । परैं लोथि जूथं बिनं जीव हीमं।।९१।।
लरंतं जदीसं परं तेन कोई । लगे षग्ग षग्गं श्रमे मल्ल होई ।।
तुटैं दंत दंती कि रच्चा निनारैं । मनों कज्जलं कूट तें चंद झारैं ।।९२।।
दोऊ क्रन्न हुस्ती चुबै रुद्धि भारी । मनों कूट तें उत्तरै भूमि रारी ।।
बहै बांन कंमान मिटि थान थानं । तहां पंति पंषीय पावै न जानं ।।९३।।
उते षांन गोरी इते सिंघ राई । मनों बीय सिघं पलं काज धाई ।।
चँपे गिद्धि मंसं उडै रुठ्धि छुट्टै । मनों रक्त धारा नभं मेघ बुट्टै ।।९४।।
मुर्यौ साहि गोरी महाबीर धीरं । तसब्बी तिनष्षी लिए षिझ्झि तीरं ।।
धरी ध्यार ज्यौं चच्चरं षग्ग संध्यौ । पछै साहि गोरी सु चौहांन रुध्यौ ।।९५।।

कवित्त –करिय पार सो भंत । रुधिर जल रजि[1] सज्जिय सर ।।
केस रज्जि सेवाल । मकर कर जंघ मीन नर ।।
षुप्परि कच्छ सुअच्छ । बसैं तहां गिद्ध सिद्धबर ।।
रंभ अंभ तहां भरै । फुल्लि पोइन मु मुष्ष नर ।।
जल देंहि ताहि तारिन छुटैं । मात पित्तु गुरु मनि धुअ ।।
नन करिय कोइ करिहे न को । करैं जु ए सामंत भुअ ।।छं०।।९६।।

दूहा - पुनित गुनित गुर मंत्र गुर । धुर वद्दल दल गाजि ।।
सूर अमर संचरि समर । दिषन राम गज साजि ।। छं० ।। ९७ ।।

आकाश में देवांगनाओं का बीरों को बरन करना ।

कवित्त गजं आगि जनु जग्गि । पवन बमि मंत्र बीर बर ।।
घर अमर धमधमिय । क्रमिय सह सेन हयनि हर ।।
तीर तुबक नरवारि । कुनि किरबांन कटारिय ।।
दुरित[2] ढाल गज माल्ल । जांनु जल जोर अटारिय ।।
हुअ धुंध धरनि सुझ्झि न नयन । श्रवन वयंन न संभरहि ।।
अछहु अकास अनंद मय । बैठि बिमान सुबर बरहि ।। छं० ।।९८।।

गुरु राम का एक मंत्र लिखकर म्लेच्छों की सेना पर डालना ।

दूहा राम मत्र इक जत्र लिषि । कग्गद सर मुष रष्षि ।।
षंचि कठिन कमांन कर । म्लिच्छ सेन पर नष्षि ।। छं० ।। ९९ ।।
छंद बिभूत पढि हथ्थ धरि । संमुहु समर उडाइ ।।
अचल चित्त जिन जिन तनहु । धीरज तिनहि छिडाइ ।।छं०।।१००।।

---

१. को०–रंजि सज्जिय ।
२.–ह०–दुरति । को०–दुरहि ।

मंत्र के बल से शाह की सेना का माया में मोहित हो जाना, इधर से काजी खां का मंत्र बल करना और युद्ध होना ।

छंद भुजंगी—करी मंत्र विद्या गुरं राम गानं । ठगे सेन मिछं हुरे हेम जानं ।।
महा मोह मोहे रहे ठान ठानं । मनों चित्र असवार भ्यंती विनानं ।।१०१।।
हुते भूत से भीत षीजे षईसं । बंधे सब्द सूरं विना रोस दीसं ।।
रहे साहि गोरीय तत्तार षानं । तियो मान काजी महा मंत्र वानं।।छं१०२।।
कहे साहि गोरी सुनो मांन काजी । लियं बोलि हज्जूर तहं मीर हाजी ।।
करी जोर विद्या सुजंनार दार। करों क्योंन ऊषेलभी क्या विचारं।।१०३।।
तबं काजियं दस्त दुअ मुष्ष फेरी । जपै जाप पीरां दुबो सेन हेरी ।।
तबै मेछ सेनं सहं मोह भग्गो । सबैं हिंदु सेनं फनी बद्ध लग्गो ।।छं० १०४ ।
गुरं गरुड आह्वान राम उचार्यो । तबं बंधनं नाग तिन षंडि डार्यो ।।
भए सेन हुसियार दोऊ करारे।षिझे रोस असमांन पिष्षे डरारे ।।छं० १०५।।
षिरे षग्ग षुरसांन षां जेरषूनी । बढी बाग गुररांम जम धार दूनी ।।
तजी मंत्र बिद्या सजै सार सारै । बजी षग्ग अग्गीय ओडंन डारै।।छं०१०६।।
सरं जाल षे काल उड्यो अनुद्धं । बहे बाहु जम दाह क्रुद्धं धनुद्धं ।।
उडै जंत्र गोरी नरं नारि धारी । धर्के मंत मंते गिरे ज्युं अटारी ।।छं० १०७।।
उड्यो सोर असमांन कुहुरांम अैसो । षिझे जानि गंगेव बल बंध जैसो ।।
फिरे रुंड भक रुंड विन सुंड दंती । परें पीलवानं चढे पंषि पंती ।।छं०१०८।।
दूहा—सुनि सहाब साहाबदीं । है छंडिब गजि[1] तक्कि ।।
मिले सामि कर भर सुभर । दल चहुवांन सु रुक्कि ।। छं० १०९ ।।

मारुफ खां का शाह ये कहना कि अब बड़ी भीड़ पड़ी जिन काजी खां पर खुरासान का दार मदार था उन्होंने तसबीह छोड़ दी, हिम्मत हार दी ।

कहे मीर मारूफ षां । परी भीर सुरतान ।।
तिन तसबी नंषी करहु । जिन कंठन षुरसांन ।। छं० ११० ।।

खुरासान खां आदि सरदारों का फिर एकत्र होना और लड़ने को तयार होना ।

कबित्त—षां षुरसांन ततार । षांन हुसेन बिमाही ।।
षान षान रुस्तंम । षांन निज बंध समाही ।।
षां जलाल षां लाल । षांन षिलची षां गब्बर ।।
केली षां कुंजरी । साहि भग्गी बल पष्षर ।।

---

1. को०—गज ।

जिन भुजनि साहि साहिब तूंग । जिन ढिल्लां चढयो सुभर ॥
तिन धीर मीर संमुह षरिय । षिष्षि नंषी तसबीहि कर ॥छं० १११॥

छंद भुंजगी—
मिली मंडली फौज गोरी नरिंदं । मिले दीन दोइ कहै चंद दंदं ॥
गहै दंत दंती तजै मोह तुच्छं । दोऊ दीन धावै सुधारै सुमुच्छं ॥छं० ११२॥
करै संभारी दीन साहिब्ब राई । उनके उनाहं दुदीनं दुहाई ॥
सु पैठंत पीठं गलं बध्थ घल्लै । धकै धीग धक्कै हुलाए न हुल्लै ॥छं० ११३॥
कढी बंध अस्सी गजं सीस लस्सी । मनों बीज चंदं किते रस्स सस्सी ॥
तुटी भूमि भारी षुरं तार पायं । बजै षग्ग जंजं झनंके झनायं ॥छं० ११४॥
तजे वीर अश्वं उपंमांन अैसी । मनो चच्चरी बाल हुडूड तैसी ॥
करै घाट औघाट निघट्ट घट्टं । तिनंकी उपंमा कही चंद भट्टं ॥छं० ११५॥
भरं भूमि भारी पुतारीति बज्जै । गहे षग्ग झोर षनकेति तज्ज ॥
बरं बीर धावंत ओपंम अैसी । मनों मल्ल धावै हडू तक्कि तैसी ॥छं०११६॥
तरंफंत सीसं धरगं निनारे । मनों मीन तुच्छं जलं में उछारे ॥
नियं नट्ट अस्तूति जंपी न जाई । मनों भंगुरं नट्ट विद्या बनाई ॥छं० ११७॥

कबित्त—तोन षान अहमद्द । तीर विय सहस लोकि तब ॥
अंगुर अट्ठ भलक्क । वाइ बंधे नंषे कब ॥
मेघ धार बरषंत । टोप उप्पर चहुआंनी ॥
मनों जैत षंभ परि तत्त । बीर पावस वुट्ठानी ॥
धरी एक मुट्ठी नैंषियत बर । षिष्षि किरवांन विचारि नर ॥
पष्षर प्रमान पट्टन सबर । धर तुट्यो लम्यो सुधर ॥ छं० ११८ ॥
पष्षर लष्ष सलष्ष । भयो षुरसांन षांन दल ॥
एक एक भुज अमित । सेन रुक्वए अकल षल ॥
धार धार बज्जै प्रहार । गुरज बज्जै तन रज्जै ॥
मनों घट्ट घरि पार । प्रहर पूरन प्रति बज्जै ॥
यों बज्जि सार आतुर हतिय । ज्यों डंडूरिय बूंद धर ॥
पंम्मार सार धारहु धनिय । ईस अनंदिय माल गर ॥ छं० ११९ ॥

दूहा—गरल धरन गल माल धर । टपकत बुंदन रत्त ॥
भेष भयानक भंति तिहि । कंपति दिषिगिर जत्त ॥ छं० १२० ॥
कोइक कमल कहि कहि हसत । कोइक हुंकत हुंक ॥
मार मार कोई कहत । मुदित माल शिव अंक ॥ छं० १२१ ॥

कबित्त—षुरासांन तत्तार । षांन रुस्तम अधिकारिय ॥
एक सबमि रन अग्ग । द्वै द्वै दुहुं बांह बिधारिय ॥

पुट्ठि पवन बल्लोच । साहि रष्षें सुरतानं ।।
मावसि राहु नरिंद । आइ चढ्या मुष भानं ।।
मध्यांन टरिय निसि मुदित भय । कमल विमल छविकय विछुरि ।।
सारस सुरंग को तरति तर । उडि पंषी अंषी निजरि ।।छं० १२२।।

छंद त्रोटक—चकचक्कि बिचक्कहि थांन बरं । उडि पंष सकोतर चित्त धरं ।।
सपयोनिधि मद्धि पतंत रवी । समनों दिसही दिस दून छवी ।।
सत पत्र मुदेक मुदै उघरैं । निसि विप्प सुग्यांनहु तेज हरैं ।।
मनमथ्थ चढे जुबतीन जनं । सुविषै विरही जन कंप तनं ।।
नन दिष्षिय पंथ निहारि मगं । उलटी वर दिष्ट निहारि मगं ।।
उतरी जनु चंगय डोरि डरी । विरही जन दिष्ट सुधान फिरी ।।छं०१२३।।

साटक—मोदं मोद हसंत कंमुद कला चक्कीय चक्की चितं ।
चंदै चंद वढंत तत्त कलयो भानं कला छीनयो ।।
मत्तं मन्मथ जांन बांनति बरं अंगुष्ट तेउच्छुदं ।।
सासत पत्त्य तत्र काइर मष वीरा रसं सूरयं ।।छं० १२४।।

अपनी सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन ।

छंद त्रोटक- इति त्रोटक छंद उदंत कलं । रस बीर जगावत बीरबलं ।।
घन नंकि त्रिघोष निसांन बजं । बर बढ्ढिय बंबरि छत्र सजं ।।
बढि गोरिय साहि सयंन मुषं । नन मुज्झय सूर दिसांन चषं ।।
नत्रश्रिति निरेहिय बीर रसं । जिन को जम ग्रह्मय दैव कमं ।।छं० १२५।।
धनि हथ्थ मराहिय दीन दुहं । कवि जीह प्रमांनय सार वहं ।।
प्रथिराज विराजत सेन मझं । सुमनों बडवानल दद्ध दझं ।।
दोय दीन दुहाइय दंड[1] पढै । चढि साग प्रहार पयोनि गढै ।।
कटि कंध कमंध गिरै दुमरै । उछरै मनु प्रब्बत वीर हरै ।।छं० १२६ ।।
नव हुंमन एक न मुक्कि चलै । नव लुट्ठि नई मुकनें न पुलै ।।
लगि सस्त्र भए जर अंग इसे । तन वाहुत जंगम जांनि जिसे ।।
निकरें नव हुंस उमंग मगै । तिन पंजर फेरिन आइ लगै ।।छं० १२७ ।।

कवित्त चलत मेर नन चलहि । चलन सब सथ्य हथ्थ चलि ।।
चलन भांन नन चलहि । वित्त नन चलै मोह पुलि ।।
अभ्र चलन नन चलहि । चलन रह्यो असु असुमय ।।
सो ओपम कवि चंद । कहिय आनंद हथ्थ सय ।।
निघनिय नारि अकुलास त्रिय । अग्गयानी जी तुट्टई ।।
इम अभ्र षांव तत्तार को । सार धार बर तुट्टई ।। छं० १२८ ।।

---

१. को०—चय ।

मुरिल्ल --नागोरै मंत्री सत मिल्ल्यौ । भोरा राइ भुअंगम किल्ल्यौ ॥
सांडै संमुह सुरतांनह । चच्चर षग्ग कियौ चोहानह ॥छं०१२९॥

पृथ्वीराज का विजय पाना, शहाबुद्दीन का बांधा जाना ॥

छंद मुकुंदडांमर -चहुआंन उदंडिय चंडिय चंपिय साह सुसद्धिय बंध धरे ॥
हाकंत हनंत ससोम हनं दग बदन बंदित दूरि करे ॥
भुअ कंपित जंगित संगित गोरिय लुथ्थिय अलुथ्थिय पलथ्थिय परे ॥
पल एक सुनीन कियौ तिल मत्तह भारि भयानक भूमि टरे ॥
सामंत सितुंग सुरंग तुरावध आवध आवध अग्गि झरे ॥ छं० १३० ॥
धरकंत सुमीर गंभीर गहं ग्रह ग्रब्ब गुंडावन बीर बरे ॥
नर वीर दिवादिव देवस पुब्बह ग्रब्ब गुजाइय तुंग ढरे ॥
जय पत्त जपत्त भमंतिय जुग्गिनि श्रोन सुषप्पर चंपि करे ॥छं० १३१॥
तुरयं तुर तांन प्रमांन कमांनय सुझ्झिय भांन जुआंन अरे ॥
जुग जीत पर्थ सुधि अंथन बंथन सथ्यन बंधिय बंधि षरे ॥
जितयौ चहुआंन गह्यौ सुरतांन हयौ तुरकांन क्रिसांन जरे ॥ छं० १३२ ॥

इस युद्ध में सलष राज की वीरता का वर्णन ॥

कवित्त हय हथ्थिय कननंकि । बज्जि झननं झननं कहि ॥
दंति दंग आहुरहि । षड षडेन ठनंकहि ॥
घट घट लग्गिय सग । फोर पत्तिय पतिवानं ॥
मनु षंचे बलराम । हथ्थ हथिनापुर जानं ॥
षंचे कि द्रोन हनवन कपि । कै कन्ह षंचि गोवग्धनह ।
कर करी दंत सज्जाह घरन । यों मुम्भै हथ्थी ग्नह ॥छं० १३३॥
दिल्लि राज प्रथिराज । गहिय करियान चरि कर ॥
रोस मुत्तिनि बगीय । दंतबाही मुकुम धर ॥
धार मुत्ति आहुरिय । पति लग्गे नुभि बीर ॥
मनहु रोस गहि षग्ग । टरै धाराधर नीरं ॥
कै दुतिय चंद बद्दल बिचह । पति लग्गि उडगन रहिय ॥
घर धुक्कत मंत सुदिष्षियहि । मनहु इन्द्र बज्जह बहिय ॥छं०१३४॥

दूहा --जिन लग्गे तिन अंत किय । धर धर धुक्किय धार ॥
पहर एक पर हथ्थरें । सिर सिर बुट्यो सार ॥ छं० १३५ ॥
सस्त्र अस्त्र सिर सिर परहि । डरहि न जन कुमदंग ॥
मीर स्वांमि संकट लषत । परत कि दीप पतंग ॥ छं० १३६ ॥

गाथा पतत पतंग रूपं । धूपं धरा जांनि विषमाय ॥
हरन स्वांमि भय चितं । हित वियन जन्म मरनाई ॥ छं० ॥ १३७ ॥

दूहा—ठांम ठांम सिंधू बजहि । बजहि सार मुष मार ॥
तन तरवर जहं तहं ढरहि । जे भूझार मुझार ॥ छं० ॥१३८॥

सलषराज का घोर युद्ध करना, उनकी वीरता की बड़ाई ।

स्वामि सलष लषियत लरत । भंजि मीर बहुआंन ॥
हुंकार्‍यौ ना जाइ मिछ । तो सम को पहुआंन ॥ छं० ॥१३९॥

कवित्त—तूं अब्बू पति धनी । राज रष्षन दिल्ली धर ॥
तूं चालुक चंपनो । भार भंजन गुज्जर धर ॥
अडर अकल आजांन । पान भंजन मेछाइन ॥
अपमुष आयौ साहि । ताहि सही इछ्छाइन ॥
प्रथिराज प्रबोधिय धार धर । हंकि साह उप्पर परिय ॥
जांनै कि अग्गि उद्यांन वन । वंस थूर दव प्रज्जरिय ॥ छं० १४० ॥

पृथ्वीराज का सलष की सहायता करना ॥

फुनि प्रथिराज नरिंद । करिय ऊपर जैतह रन ॥
भरनि भार भंभरिय । हंकि हुंकरिय सिंघ जनु ॥
मद गज ढहनि कि तरनि । तरनि लुप्पन जनु जलधर ॥
भकह कष्षि करि बार । काल कुप्पिय जीवनि पर ॥
सोमेस सुअन विरचंत रन । चढ पट घट भट्टह लुटिहि ॥
हय अयुत [बत्त पिष्षत नरह । भुजति भार अंनक फुटहि ॥१४१॥

पृथ्वीराज की वीरता की प्रशंसा ।

भरनि भीर चल भलत । रेन चल मलति पवन करि ॥
लोथ लोथ पर परति । अर्क नहि सकत गवन करि ॥
श्रोन छिछ उछरंत । सुभट सुभ्भति जनु किंसुव ॥
गजन ढाल कंवुरति । मार संघर तक मघ्घ भुव ॥
विरचंत विफुरि सोमेससुअ । सहस करन बर कर बढिय ॥
बन बृंद पियन बडवा नलकि । क्रस्न जांनि संमुह कढिय ॥छं०१४२॥

दूहा—हाला हल इह पिष्य जहं । झाला हल भंकाल ॥
उतरन कुप्पौ सलष लष । काला हल कंकाल ॥ छं० ॥ १४३ ॥

सलष राज के युद्ध की घोरता का वर्णन ।

छंद मोतीदांम—

कुप्पो रन साहस लष्षिय लष्ष । रूपे रन रोह अरेह बिपष्ष ॥
करक्कर बज्जिय सारन मार । भरब्भर हुंकत हक्क करार ॥
तरत्तर तेग तरप्फर अंग । त्रिसत्तित होत घनं भट भंग ॥
चढे मुष मेछ ससंद मसंद । त्रिसत्तित टूटत तेक असंध ॥छं० १४४ ॥

लरथ्थर पथ्थर सथ्थर तोम । मनों जनमेजय चिल्हिय होम ॥
गिरंत उठंत कमंध विहाल । हहंकत मुंष भसुंड विहाल ॥
इसो रन रंग सलष्य सरूप । मनो मुचकुंद क्रिजग्गि विरूप ॥छं०१४५॥

म्लेच्छों की सेना का मुंह मोड़ना, सुलतान का हाथी छोड़ घोड़े पर चढ़कर भागना ।

दूहा—मेछ सेन बहु झरि परिय । केविडु रिग्गय डग्ग ॥
फिरी मुष्ष सुरतांन को । हथ्थि छंडि हय मंगि ॥ छं० १४६ ॥

म्लेच्छ सेना और सुलतान की भगेड़ का वर्णन ।

छंद भुजंगी—
कुसादे कुसादे कहे षांन जादे । रिग्यौ साह आलंम सब सेन बादे ॥
सबै सेन दिष्यौ इसौ साह मुष्षं । मनों प्रात चंदं सुकंती अलष्षं ॥
बरें पारि बेरू समुद्द न लक्के । जबै साह गोरी षुरासांन चुक्के ॥
फिर्‌यौ एक लष्षं सलष्षं पवारं।मनो रोहियं रोह वाराह दारं॥१४७॥
भग्यौ साहि गोरी विलं देहि मथ्थं । तबै रुद्धियं आनि पंम्मार सथ्थं॥
रषत्तं वषत्तं हयं हथ्थ सथ्थी । भग्यौ साहि गोरी विवांनै न कथ्थी ॥
इकं दीह चौहांन फल द्वै प्रमानं । छुट्‌यो रुद्धि कैमास सुरतांन भानं ॥
॥ छं० १४८ ॥

इस युद्ध में सलषराज के यश पाने का वर्णन, सुलतान का बांधा जाना ।

कवित्त—चामर छत्त रषत्त । तषत लुट्टै सब कोई ॥
जस लद्धो पामार । सेन सागर मथि जोई ॥
रतन कित्ति संग्रही । रज्ज आबू तन धोई ॥
हय गय दल बल मथित । कित्ति फल लभ्भिय सोई ॥
बंध्यौ सुचैंपि षुरसान पति । रतिवाहे चालुक जिनिय ॥
जै जया देव जंपत जसह । तव सुचंद कित्ती सजिय ॥ छं०१४९ ॥

दूहा—जीति लियो जय पति रनह । बर चतुरंगी मोरि ॥
पष्षर लष्ष सलष्ष हुअ । गोरी ढाल ढंढोरि ॥ छं० १५० ॥

सुलतान को जीतकर सलषराज का लूट मचाना ॥

कवित्त—जीत लियौ जैपत्त चारु चतुरंग सु मोरी ॥
इक लष पषर प्रमांन । ढाल गोरी ढंढोरी ॥
षांन सुरति परि षेत । षेत गोरी उप्पारी ॥
रिन बुढ्ढ्यौ चहुआंन । साह झोरी करि डारी ॥
बज्जे सुबीर बज्जन नृपति । बहु लुट्टे सुरतान गै ॥
नीसांन षांन षुरसांन पति । चामर छत्त रषत्त मै ॥ छं० १५१ ॥

सुलतान की सेना का भागना, चौहान का पीछा करना, पृथ्वीराज की दोहाई फिरना ॥

दूहा—भै भग्गा सुरतांन दल । लै लग्गा चहुआंन ॥
ताप तेज तुंगी तरुनि । प्रथीराज फिरि आंन ॥ छं० १५२ ॥

पृथ्वीराज के जीत की जय जय कार मचना ॥

कवित्त—कहि जित्यौ चहुआन । गरुअ गोरी दल भज्यौ ॥
कहि जित्यौ चहुआंन । ईस सीसह धर रंज्यौ ॥
कहि जित्यौ चहुआंन । चंद नागौर सुनंगे ॥
कहि जित्यौ चहुआंन । सत्त सामंत अभंगे ॥
जित्यौ सु सोम नंदन कहिय । सहिय सद्द सुर लोक हुअ ॥
पामार पव्व सलष्ष नह । धरनि काज धर पंक धुअ ॥छं० १५३॥

पृथ्वीराज के सरदारों की वीरता की प्रशंसा ॥

छत्र धार सुविहान । छत्र धारी लोहांनौ ॥
पत्र धार जो गिनिय । कुबक लग्गिय आसानौ ॥
मंत्र धार पामार । सलष भंज्यौ मेछानौ ॥
जनु गुवाल गो डंड । सेन हंकिय सुरतानौ ॥
जित्यौ जुवांन चहुआन रिन । मुरिग वैर बलिवंड बर ॥
घर गवरि नाह नंचिय रहसि । गह्यौ जाहि भंजे सुषल ॥छं०१५४॥

पृथ्वीराज का जीतना, तेरह खां सरदारों का पकड़ा जाना, सारुंडे का टूटना ॥

अरिल्ल—जित्यौ वे जित्या चौहानं । भग्गा सेन सन्या सुरतांनं ॥
तेरह षांन परे परमांनं । सारुंडे तोरयौ तुरकानं ॥ छं० १५५ ॥

इधर शहाबुद्दीन को दंड देने, उधर कैमास का चालुक्यों को जीतने का वर्णन ॥

कवित्त—साह डंड डंडयौ । मेह मंड्यौ नागोरिय ॥
भट्टिय रा भटनेर । राव सिघातन तोरिय ॥
जा रानी जग हथ्थ । मंडि मंडोवर पासह ॥
जै जै जै प्रथिराज । देव सद्दंति अकासह ॥
आरज्ज लज्ज सुरतांन कहि । फिरि मिलांन दीनौ पुरां ॥
जो सय कय कैमास किय । चालुक्कां सोमति धरां ॥ छं० १५६ ॥

शाह के बांधने, भीमदेव के जीतने और इंछिनी के ब्याह की प्रशंसा ॥

एक दीह इक घरिय । राज लहु बेलद्धा ॥
रुधवाह संजित्त । साह गोरी गहि बद्धा ॥

बर भीमंग नरिंद । षोदि कढयो कैमासं ॥
बर बज्जे नीसांन । राज जित्यो रन भासं ॥
बर बंधि साहि गोरी गह्यो । बर इछनि पानी ग्रहन ॥
नव दीह नवंमिय नेह नव । सुवर चंद बत्तां कहन ॥ छं० १५७ ॥

सं० ११३६ के माघ सुदी में सुलतान को बांधना, माघ ब० ३ को इंच्छनी का पाणिग्रहण करना, दंड लेकर सुलतान को छोड़ना और फिर खट्टूबन में शिकार को जाना ॥

ससिर सु मग्गह अंत । तीस षट बीर समंधर ॥
ग्यारह सें परवींन । साहि बंध्यो गोरिय बर ॥
माह प्रथम बर तीज । बीज रवि सप्तम थानं ॥
बर पांनिग्रह मंडि । सुबर इंछिनि चहुआंनं ॥
मुक्क्यो साहि घन डंड ले । बर बाजें नीसान घन ॥
आषेट फेरि मंडिय न्रपति । बन षट रवि चन मन ॥ छं० १५८ ॥

शुकी से शुक ने जो कथा चालुक्यों के पालने की कही उसे साहंडे में कविचन्द ने वर्णन किया ।

दूहा – सुकी सरस सुक उच्चरिय । प्रेम सहित आनद ॥
चालुक्कां सोभ्रति मध्यो । सारूंडे मे चद ॥ छं० १५९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सलष जुद्ध पाति साह ग्रहन नाम त्रयोदश प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १३ ॥



अथ इंछिनि व्याह कथा लिष्यते ।

(चोदहवां समय)

सुकी के प्रश्न पर शुक का चालुक्य के जीतने, शहाबुद्दीन के बांधने और इच्छिनी के व्याह का वर्णन करने लगा ।

दूहा— कहै सुकी सुक संभलो । नीद न आवै मोहि ॥
रय निरवांनिय चंद करि । कथ इक पूछौं तोहि ॥ छं० १ ॥
सुकी सरिस सुक उच्चरयो । धर्‌यो नारि सिर चत्त[1] ॥
सयन संजोगिय संभरै । मन मैं मडय हित्त ॥ छं० २ ॥
धन लद्धो चालुक संध्यो । बंध्यो षेत षुरसांन ॥
इंछनि व्याही इच्छ करि । कहों सुनहि दै कांन ॥ छं० ३ ॥

शाह को दंड देकर छोड़ने पर राजा सलष ने पृथ्वीराज के यहां लग्न भेजा ।

मुक्कि साह पहिराइ करि । दंड दियौ सलषांनि ॥
लगन पठाइय विप्र करि । बर व्याहन पिथ्थान ॥ छं० ४ ॥
पठयो प्रोहित भान कर । कनक पत्र लिखि लग्न ॥
श्रीफल बहुल रत्तन जरि । पिष्षि होत जिहि मग्न[2] ॥ छं० ५ ॥

कवित्त— अब्बू वै अब्बू समप्पि । सीम वधी दह गुन्निय ॥
पावारी इंछनिय । व्याह सोधन बर मन्निय ॥
लच्छि ग्रेह कूबेर । अन ग्रीषम दिन धारी ॥
परनि राज प्रथिराज । हथ्थ श्रीफल अधिकारी ॥
नर नाग देव गंध्रब्ब गुन । गान जांन[3] मोहें सकल ॥
अछै उतग लच्छन महज । थांन नधि वधी विकल ॥ छं० ६ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इंछिनी का रूप नाम आदि पूछना ।

दूहा—प्रथु पूछत बंभननि सुनि । कहौ बाल किन वेस ॥
कितक रूप गुन अग्गरी । सुनन मोहि अदेस ॥ छं० ७ ॥

इंछिनी की सुन्दरता का वर्णन ।

साटक— बाले तन्वय मुग्ध मध्यत इमं स्वपनाय वै संधयं ॥
मुग्धे मध्यम स्यांम बांमति इमं मध्यान्ह छाया पगं ॥

---

1. को०—सूंचत । 2. को०—मग्न । 3. को०—मान बान ।

बालप्पन तन मध्य जोवन इमं सरसी अवग्गी जलं ॥
अंगं मद्धि सुनीर जे मल ससी सुब्भै सुसैसव इमं ॥ छं० ८ ॥

कवित्त--अति सुरंग वय स्याम । संधि वय संधि जुरिय बर ॥
ज्यों दंपति हथ लेव । पंथ जोगिंद मिलत गुर ॥
नयन मयन आरुहिन । धर्‌यौ आरुहन थांन दिन ॥
कछु कज्जल अंकुरिय । करिन आवें पें लज्ज मन ॥
ज्यों करकादि निसा मकरादि दिन । करक आदि सै सब सुगुर ॥
मकरादि बाल जोवन अदिन । काम धुरा लीनी सुधुर ॥छं० ९॥

दूहा—स्यांम सु बांम अनंग भय । घटी न घट्टि किसोर ॥
बालपन बैवेस तन । मनों भरें घन चोर ॥ छं० १० ॥

कवित्त—षट हथ्थी बहु हेम । रतन गुर पाट पटंबर ॥
पीत रत्त गुन सेत । स्यांम नग सुन गति अंमर ॥
सो मंगी चालुक्क । सोइ[1] दीनी प्रथिराजं ॥
मनु इंद बधू सच्चीव । कांम बंधी चढि पाज ॥
बर बरनि राज सेंभर धनी । सुफल बधि फल संग्रहिय ॥
इंछनि अवाज आवाज क्रम । अदिन भंजि के दिन सजिय ॥छं०११॥

साटक—नां पतनी नल राज राजन बधू दमयंति नो इंद्रयं ॥
नां सच्चीव सुनाथ नायक धरं लच्छीन धरया धरं ॥
नां रत्ती मनमथ्थ रत्ति कलया मदोदरी रावनं ॥
सोयं सा प्रथिराज इंछिनि बरं समयो न लभ्मै कवीं ॥छं० १२ ॥

पृथ्वीराज का ब्याहने के लिये यात्रा करना ।

दूहा—तिहि सुंदरि ब्याहन नृपति । रिति ग्रीषम दिन संधि ॥
चढ्यो सूर सभरि धनिय । सुष संचन षल बधि ॥ छं० १३ ॥
धर अंबर तर जलध बल । कहुं न सूर तप सीत ॥
अगम पंथ नर घरनि सुष । बिलमत दंपनि मीत ॥ छं० १४ ॥

साटक—पंथं दुस्तर वाय मुकुलिनसरं[2] ज्वाला इला दुस्सहा ॥
क्रीलायां घन क्रयन यांइ मृगनं नर्जीव शब्दं धरा ॥
आवर्त्तं बर तत्त मित्त करनी धूमाय विदिसा दिसा ॥
सरनं मरनय पंथ ग्रीषम षपं सुष्यं ग्रहं प्राणिनां ॥ छं० १५ ॥

दूहा—प्रानी पंथ न सुष्ष जल । मरन सुनिश्चय मांन ॥
दीह उदय दिसी मुदय भय । सुरति स्वयंबर ठांनि ॥ छं १६ ॥

---

१. क०—साइ ।
२. क० को०—तरं ।

पृथ्वीराज के साथ सामंतों का वर्णन ।

कवित्त—सथ्थ कन्ह चहुआंन । सथ्थि निड्डुर रषि राजं ।।
सथ्थ सोम सामंत । अल्ह पल्हन प्रति साजं ।।
बलिय गरूअ गहिलौत । बलिय भोहा बर सिंघ नर ।।
दाहिमो कैमास सथ्थ । सूरो चावड गुर ।।
मति भद्र मंति साधन सकल । लोहांनो स्वांमित्त धुर ।।
चतुरंग सूर वय रूप गुन । लिए राज राजान गुर ।। छं० १७ ।।

पृथ्वीराज की बारात की शोभा वर्णन ।

छंदपद्धरी—
चढि चल्यो राज प्रथिराज राज । रति भवन गवन मनमथ्थ साज ।।
सिर पहुप पटल बहुसा षबास । अवलंब रहिय अलि सुर सुरास ।।
मुष सोभ जलज कंद्रप किसोर । दीजै सु आज न्रप कोंन जोर ।।
चिति काम बार रजि अंग ओर । संकर्यो जान मनमथ्थ जोर ।।
जिम जिमति लाज अरु चढत दीह । लज्जा सुजांनि संकलिय सीह ।।
जिम जिम सुनंत न्रप श्रवन बत्त । तिम तिम हुअत रस काम रत्त ।।
मधु मधुर बेन मधुरी कुंआंरि । रति रचिय जांनि संसव सबारि ।।
।। छं० १८ ।।

श्लोक—साय दीपसमो दिष्टे । जैति जैति विजै जितं ।।
देवासुर मनुष्यानां । काले कैक न गच्छति ।। छं० १९ ।।

कवित्त—कोंन काल वसि परयो । काल ग्रह कोंन न बंध्यो ।।
कोन काल जित्तयो । काल किहि षाइ न रुंध्यो ।।
मठ विहार वापीन । त्रिरथ सुर थावर जंगम ।।
सुबर राज राजिंद । कोंन दिष्षो न अभंगम ।।
ज्यां बंधयो साहि गोरी सुबर । मर तिन कति नंतयो ।।
इंछनिय इच्छ इच्छा सुफल । सुबर बीर बीरह जयो ।।छं० २० ।।

साटक—बीरं जा बर बीर भीमति बरं कामं तनं उष्षया ।।
पंथे वानति वान मानति वरं कुरनंद केवं कुरू ।।
धाता मानय बीर वामन बलि पूरोरवा भर्षयं ।।
तू पत्नी प्रथिराज कालति रहं कालं जसं वर्तते ।। छं० २१ ।।

पृथ्वीराज को आते हुए सुनकर सलषराज का धूमधाम से अगवानी करना ।

कवित्त—सुनि आवत चहुवांन । करिय अग्गीन सलष बर ।।
हय गय लच्छि सुभच्छि । आदि उम्महिय राज बर ।।

पट अंबर रुजराव। जेब नंगन जगमग्गिय ॥
फुल्लिय मानहु संझि। चित्त चकचोंधिय लग्गिय ॥
चहुआंन रत्त तोरन समय। लगन गोधूरक संधयो ॥
जांनै कि अर्क राका दिवस। इक्क थान उगि रूंधयो ॥ छं०२२॥

दोनों राजाओं की सेना के मिलने की शोभा का वर्णन।

जिम सावन भादव सिंधु। घुमरि घन घटा मिलत दुअ ॥
जनु समुद्र अरु गंग। उमडि मिलि दुहुन थोभ हुअ ॥
जनु सुर अरु सुक्र। सिगि रिषि गननि गगन मिलि ॥
जनु दधि मथि सुर असुर। करन मधुपान षिभिर ठिलि ॥
तिम संभरेम अब्बूधनी। अनी बनी रस विरस भरि ॥
नग जोति जरकज दीप दुति। नही श्रवन बाजव करि ॥छं० २३॥

सलषराज की प्रशंसा।

पंच हस्ति मद वहि गिरद। गरुअ गरजत मेघ जनु ॥
तुरी बीस अैराक। तेज तन अगिन पवन मनु ॥
जर कमर जनेउ। हथ्थ मकर नग मडिन ॥
सत्त मुषम पर काल। हेम त नन तन छडित ॥
वारोठि विवह वम्तह ममझि। मह चक्रत पिष्पित र-य ॥
विवहार बिबुध्र जोतिग गिनन।सलष किन्नि जातन कहिय॥छं०२४॥

तोरन आदि बांधकर, कलस धरकर, मोती के अक्षत छिड़क कर मंगलाचार होना।

दूहा—तोरन कर वर बद तह। मुत्तिय अच्छित डारि ॥
मनो चद त्रिय भेष धरि। अच्छित अच्छ उछार ॥ छ० २५ ॥
साटक—बदे बिंद कलस्स तोरन वरं तुगे रसं मन्मथ।
सुष्यं साजनि सक्र चक्रति कला निग्राह नु ग्राहनी ॥
जा निज्जै त्रैलोक उम्भति पुरे बदे कवी उप्पमे ॥
दुअ पास दुअ नारि दिष्षत बर मनो नैर वर दिष्षय ॥छं० २६॥

नगर में स्त्रियों का बारात की शोभा देखना।

कबित्त—नृपति काज अलि दिषहि। अलिन दिष्षत नर नारिय ॥
जनु मिलतराज प्रथिराज। नयर बिय बांह पसारिय ॥
जनु वन्ही गुर देव। सत्ति स्वाहा हाहा हुअ ॥
जै जै जै उच्चार। राज रवनी रजत रुअ ॥
पंमार सलष बंदत बलिय। दिष्षि कला मनमथ्थ पिय ॥
दिष्षै सुभिया दुरि दुरि नयन।मनहु तरंग कि काम तिय॥छं०२७॥

छंद पद्धरी—चित काम बीर रज्जियं ओर । संकुस्वी जांनि मनमथ्थ जोर ॥
दुरि दिषें बाल झीनेति वस्त्र । उपमान चंद जंपंत तत्र ॥
जाने कि जार परि मध्य मीन । पुज्जै कि दीप भोडल प्रवीन ॥
इक करन पलटि इक करन लंत । घुंघट्ट बदल लज्जा सुभंत ॥ छं०२८ ॥
घुंरलिय रैंन जनु वदल जोट उझकंत चंद जनु आंनि कोट ॥
कर उंच बाल अच्छित उछारि । जनु कमल बाइ बसि ओस झार ॥
गावंत गान बहु विधि सवारि । कलयंठ कंठ जनु रति धमारि ॥
मुसकंत हास दिषियै विसाल । विकसंत कमल जनु चंद ताल ॥
तनु अैंठि मेंठि भोंहै कि वाल । मूरछयो मेन जग वही ब्याल ॥ छं० २९ ॥

सुहासिनी स्त्रियों का कलश लेकर द्वार पर आरती उतारना ।

दूहा—कलस बंदि सुभगा सिरह । महुर मद्धि सय मेलि ॥
बहुरि सुहाग सुहागिनी । वई कांम रस बेलि ॥ छं० ३० ॥
कनक थार आरति उदित । सुभग सुवासिनि लाइ ॥
जनु कि जोति तम हर परह । नव ग्रह करत बधाइ ॥ छं० ३१ ॥
महुर पंच सें थार धरि । दुति दूलह जिय जांनि ॥
कांम कसाए लोइननि । हन्यो मदन सर तांनि ॥ छं० ३२ ॥

सलष की रानी दूलह की शोभा देख प्रसन्न होना ।

सषिन ओट सलषह घरह । दूलह दुति दृग देषि ॥
कोटि काम छवि पिष्षि पिथ । जनम सफल करि लेषि ॥ छं० ३३ ॥

स्त्रियों का महल में आना और बारात का जनवांसे आना ।

महल झुंड महलनि बहुरि । जनवासह जुरि जानि ॥
सोभि साम सामंत मह । जनु विटन शनि भानि ॥ छं० ३४ ॥

जनवांसे की तयारी का वर्णन ।

छंद पद्धरी—बहुरी बरात जनवास थांन । छवि सोभ सुवन भुवभंति भांन ॥
संग सुभट थाट सामंत सूर । बलवंत मंत दिपियै करूर ॥
अंग अंग अंग उन्हास हास । जनु लच्छि लाह सोभा प्रकास ॥
सत षन अवास माला सुरंग । सुभथांन जैत आबू दुरंग ॥ छं० ३५ ॥
जालीन ओप सोभा न पार । रवि सोम क्रति क्रनन प्रसार ॥
पंच रंग ब्रंन चित्रत सुवेस । बहु गरथ रूप मंडित जुवेस ॥
रेसम गिलम दुल्लीच मंडि । तिन जोति होति दुति बिज्ज षंडि ॥ छं० ३६ ॥
हादसह सेज विछाय पंति । तिन दिग्ग मूढ गादीय संधि ॥
प्रति सेज सेज फूलन अपार । तिन सोभ गंध रग रंग पार ॥
इक लाष पांन बीरा बनाइ । घनसार मद्धि बीरन लगाइ ॥

कुंम कुमन कुंभ अहं तहं छुटंत । बातीन अगर धूपन लुटंत ॥
कर्द्दमन अष्ष मचि कीच भूमि । नाना सुरंग रहि गंध धूमि ॥
मस्साल दीप प्रज्जरि फुलेल । केतकी करन वेली गुलेल ॥
ऊड़त कपूर पवनं पषांनि । तिन सरस गंधि सक्कि न बषांन ॥
सूरंत क्रंति सोभा विसाल । सोभंत जुरे तहं श्रव भुआल ॥ छं० ३८ ॥
प्रथिराज कुंअर कुअरनं नरिंद । धरि भूप रूप अवतार इंद ॥
मनु कांम रूप रति भ्रमन चित्त । अश्विनि कुमार ससि सोभ मित्त ॥
नग कनक मंडि वासन विचित्त । ससि सूर सोभ सुभ सज्जि छत्र ॥
वर विप्प अप्प गज गाह धारि । जनु सोम उभय आरति उतारि ॥छं० ३९॥
आसंन अस्स प्रथिराज आइ । तहां पंच सबद बाजे बजाइ ॥
संग एक कुंअर जल पान धार । ड्योढी न रूकि सामंत भार ॥
गुर राम चंद कवि ढिग्ग आई । परधान कन्ह काइथ अताई ॥
पुनि कंन्ह काक गोइंद राइ । परिपुर्न क्रोध जे गलत लाइ ॥छं० ४० ॥
पुंडीर धीर पावस्स संग । दाहिम द्रूव जम जोर जंग ॥
जैतसी सलष लष्षनह सिंघ । छिति छत्र ध्रंम जे इष्षि रंघ ॥
बलिभद्र सिंघ कूरंभ राइ । अनि नांम सूर कित्तक गिनाइ ॥
प्रथिराज इंद दिकपाल सूर । अंग अंग वढ़ि सब जोति नूर ॥ छं० ४१ ॥

दूहा—गवष जाल महलनि महल । फिरे चारु मन सर्व ॥
सोंज सोभ अंतन लही । दिष्षत भग्गत[1] गर्व ॥ छं० ४२ ॥
महलनि सालनि महलमंडि । दासी सालनि गान ॥
मंडप मंडित बेद धुनि । सुभटन सोभ समांन ॥ छं० ४३ ॥
जहां तहां आनंद उमग । आनंद उछाह अनंत ॥
वंस छत्रीय छत्रीस छह । भाट विरद्द भनंत ॥ छं० ४४ ॥

छंद मोतीदाम —
गहने नग जोतिन हीरन लाल । पटंमर पूर झरप्पिय झाल ॥
मनि मांनिक मोतिन हीरनि हार । भगीरथ भंत हिमग्गिरि धार ॥
रितं रित भूषन भांति अनेक । धरे धन पंतिय आनि घनेक ॥
रंग रंग वारनि वारनि वार । धरे नवला नष भूषन भार ॥
तिते सब संचि सवारिस ओप । झलंमल झालन डालन नोप ॥
सकुंकम कूएन वंदिन पोति । सुहाग सुमंगल अष्ट न होत ॥ छं०४५॥

दूहा—अष्ट मंगलिक अष्ट सिध । नवनिध रत्न अपार ॥
पाटंबर अंमर वसन । दिवस न सुझ्झहि तार ॥ छं० ४६ ॥

---

१. को० कु०—भग्गै ।

जनवासे में भोजन का नेवता देकर सलषराज का लौटना ॥

फिरिय चार करि फिरिय सब । भोजन कारन बोलि ॥
भाव भगति आदर अमित । देव पूजि सम तोलि ॥ छं० ४७ ॥

इच्छिनी का शृंगार आरंभ होना, शृंगार वर्णन ॥

जनवासें पधराइ बर । बरी सिंगार अरंभ ॥
जुरि जुब्बन सुर सुंदरी । जे रस जांनत डिंभ ॥ छं० ४८ ॥

छंद त्रोटक—

बिन बस्तर अंग सुरंग रसी । सुहलै जनुसाष मदंन कसी ॥
लव लोनइ लोइ उबट्टनकों । कि बस्यो मनु कांम सुपट्टन कों ॥
द्रिग फुल्लिय कांम विरांमन कें । उघरे मकरद उदै दिन कें ॥
बिन कंचुकि अंग सुरंग षरी । सुकली जनु चंपक हेम भरी ॥छं० ४९॥
सुभई लट चंचल नीर भरी । तिनकी उपमा कवि दिव्य धरी ॥
तिन सों लगि कें जल बूंद ढरै । सुछटै मनु तारक राहु करै ॥
जु कछू उपमा उपजी दुसरी । मनों माटय स्यांम सुमुत्ति धरी ॥
अति चंचल ह्वै विछुटै मुषतें।मनों राहु ससी सिसुता बषतें ॥छं० ५०॥
मुमनों सति स्वात अमुन इयं । तिन की उपमा बरनी न हियं ॥
कबहुं गहि सुक्त सिषंड बरें । मनों नंषत केसन सिंदु सरें ॥
जु सितं मित नीर लिलाट घसैं । मुमनों भिदि स्रोमहि गंग लसैं ॥
जल में भिजि भृह कन्ला दुसरी । सु लरै मनु बाल अलीन षरी ॥
बुधि त्रित्त उपंन किनीक कहो।जिन पाट अभै त्रन वेद लहो ॥छं०५३॥

दूहा · मयनि मत्त अस्नान करि । गुभ दवनि दिन सोधि ॥
चाहुआंन इंछिनि बरन । मयन गीनि ध्रवगोधि ॥ छं० ५२ ॥
करि मजन अगोछि तन । घृप बासि बहु अग ॥
मनं देह जनु नेह फुलि । हेम मोज जनु गग ॥ छं० ५३ ॥
तन चरक कुदन मनो । कै केसर रग जुक्ति ॥
पीय बास छवि छीन लिय । और धीन मन जुक्ति ॥ छं० ५४ ॥
अंग अग आनंद उमगि । उफनत बेनन मास ॥
सषी सोभ मन वसि भई । मनों कि फूली माझ ॥ छं० ५५ ॥
निरषत नागिनि बसि भई । किनर जच्छ किंतेक ॥
सब सोभा ससि मांनि कैं । सांची इंछिनि एक ॥ छं० ५६ ॥
प्राग माघ अस्नान किय । गज गजे घन धाइ ॥
विश्वनाथ सेए सदा । प्रथीराज तो पाइ ॥ छं० ५७ ॥

कवित्त – कमल भाल जनु बाल । मकर कर मंडि इंछनिय ॥
निरषि नैंन प्रतिबिंब । करहि निवछार निछिनिंय ॥

प्रमुदित अगनि अनंग । कोक कूकन उच्चारत ।।
एक रमन रस रंग । बात बातन मुच्चारत ।।
गंध अर वस्त्र गहनं करनि । हास भास मंडीर रिय ।
तिन मध्य पवारी पिष्षियै । जनु विधिना अप्पन घरिय ।।छं०५८।।
श्रवननि लगत कटाच्छ । जनु पवन दीपक अंदोलित ।।
मुसकनि विकसत फूल । मधुर बरसति मुष बोलति ।।
इठलनि अलसति लसति । सुरति सागर उद्धारति ।।
रति रंभा गिरजादि । पिष्ष तां तन मन हारति ।।
तिहू अग अंग छवि उक्ति बहु । छंद बंध चंदहु कहिय ।।
जीरंन जुग्ग महि अमर इहु । कलू एक कीरति रहिय ।। छं० ५९।।
कमल विमल लज्जा सुगंध । बाल विस माल लाल उर ।।
भूषन सोभ सुभंत । मनों सिंगार सुचिर धर ।।
अलप जलप रति मंद । चंद बारुनि कुल तारुनि ।।
सो इछिनि पामार । राज लहिय अति सारनि ।।
सत च्यारि बरष बरनि सुंदरिय । सुर विसाल गावत गरज ।।
चहुंआंन सुअन सोमेस कहि । विधि सगपन सांई अरज ।।छं० ६०।।

छंद मोतीदाम —
सजे पट दून अभूषन बाल । मनों रति माल विसालति लाल ।।
धर्‌यौ तन वस्त्र सुकोर कुआर । मंडी जनुसिभ मनंमथ रारि ।।छं० ६१।।

छंद कंठाभूषन -इक गावही रस सरस रग भरि विमल सुंदर राजही ।।
मनों चंद उडगन राति राका सोम पति बिराजही ।।
इक त्रित रंगन कांम अंगन अजंस लज्ज की सुंदरी ।।
मनों दीप दीपक भाल बालय राज राजन उच्चरी ।।छं०६२।।
सुभ सरल बानिय मधुर ठानिय चित्त भंजय जोगयं ।।
द्रिग निरषि निरषि कटाच्छ लग्गहि जुक्त रमन भोगयं ।।
अलि रूप नयनं मनहु वयनं चलिहि तिष्प कटाष्ययं ।।
स्फुट्टंत निकरहि वार पारहु करत तक्कि तनतच्छयं ।।छं०६३।।

ब्राह्मण लोग बिवाह की विधि करने लगे ।

कवित्त - विधि बिवाह दुज करिय । करिय तन अंग बाम जन ।।
निरषि नयन मुख कंति । भयौ रोमंच सब्ब तन ।।
फुलिग नयन मुख वयन । भयौ आरूढ कांम मन ।।
चित बसीकरन समहु । भयौ आनंद सब्ब तन ।।
अभिलाष मिलन हित हिलन मन । कार्कविद कवितहु करै ।
प्रथमहु समागम मिलन कों बहुत अडंबर विस्तरै ।। छं० ६४ ।।

दूहा—सोंधा सुगंध घन डंमरी । सुमन सुदिष्ट पसार ॥
धूप अडंमर धुंधरिय । झल मल जल समढार ॥ छं० ६५ ॥

पृथ्वीराज के रहने को जो बाग सजा गया था
उसकी शोभा का वर्णन ।

छंद पद्धरी—
बरबग्ग मग्ग चिहुं दिसा दिष्षि । जहां तहांति सुमन अति बैठि पिष्षि ॥
कच मग्ग भूमि चिहुकोद गस्सि । नारिग सुमन दारिम विगस्सि ॥
प्रतिबिंब तास दिषिय सरूप । बसंम एम जंपै अनूप ॥
नव बधू अंग नवजल प्रवेस । मुमकंत दत दिष्षिय सुदेस ॥ छं० ६६ ॥
प्रतिबिंब चंप देषे फुलीन । दीपक्क माल मनमथ्थ दीन ॥
उप्पंम ओर उर एक लग्गि । संजीब मूरि जनु जोति जग्गि ॥
हूल हूलै लता कछु मंद वाय । नव वधू केलि भयकंक पाय ॥
उपमां उर कवि कहीय तांम । जुब्बन तुरग अगि ओगि कांम ॥ छं० ६७ ॥
पाटीन दिष्षि चकचौंधि होइ । ससिपरह उठ्ठि घन घटा दोइ ॥
सुभ माग सरल सूधी सुवानि । ससि क्रम्म चली घन छेकि जानि ॥
फुल्ले सुगंध के वरनि फूल । देषंत वग्ग पावस्स भूल ॥
घन बर अनंद अग्गें निसब्ब । जनु रंक इच्छ पासै सुदब्ब ॥ छं० ६८ ॥
नल नलिनी नीरू चहू वचनि उद्धि । धरधार गंग जनु-उठिरुबुद्धि ॥
बिट बिटनि बेलि झुलि बेल फूलि । जनु काम ग्रह बाग तर छत्र झूलि ॥
कदलीन पत्र हुलि पवन ओर । जनु करत पषा नृप पिय्य ओर ।
कलरव करंत दुजनेक थांन । संगीत कांम चट सार गांन ॥
निरतंत केक केकीन संग । पावसह जानि गिर रमत रंग ॥ छं० ६९ ॥

दूहा—नंदन वन वैकुंठ जनु । इंद्र लोग सुर बाग ॥
वृंदावन भूलोग जनु । सोभा सुभग सुभाग ॥ छं० ७० ॥

गाहा—तिहि थांनं रजि राजं । उत्तरियं बीर सा साजं ॥
सब संबल बियानं । जांनं वद्धायइं बीजयौ चंदं ॥ छं० ७१ ॥

कवित्त—को इंद्रो गुर राज । भांन सत्तम अधिकारी ॥
भांन नवम प्रथिराज । राहु दुष्टम अधिकारी ॥
बर बज्जी नीसांन । बंदि लीनं नृप राजं ॥
प्रीय त्रिया हित बंधि । सोइ इंछिनि बर पाजं ॥
त्रियांह तात अरु बाल सह । उचरैं मुष इंछिनि सुनहि ॥
धनि धनि गवरि पूजा लह्यौ।सुवर सुबर सुंदरि समहि ॥छं०७२॥
ब्रह्म बेद सद्धय्य । अग्नि होतय बर राजय ॥
स्वाहा अगनि विवाह । रति कामह गुन गाजय ॥

दुहिति नाम दुहुरिष्षि । दुहुति परहं दुहुं गोती ॥
राजं गुरु उच्चरै । सलष बहुआंन सकोती ॥
अंनेक भाव दिष्षहि सुदिव । दिव दिवांन दुंदुभि बजइ ॥
प्रथिराज राज राजन सुबर । तिहित लषै रतिपति लजइ॥छं०७३॥
कुंदन ओपति अंग । मग जनु चंद किरनि सिर ॥
बैनी सुभग भुजंग । फूल मनि सीस मीस थिर ॥
पट्टिय घुंटित मेंन । तिमिर कज्जल छवि छीनिय ॥
भुअजुग गोस घनुष्ष । वदन राका रुचि भीनिय ॥
सुक नास नेंन फूले कमल । कंबु कंठ कोकिल कलक ॥
दुल्लह सुचित्त फंदन मनहु । फद मंडि रष्षिय अलक ॥ छं० ७४ ॥

ब्राह्मणों का मंडप स्थापन करना ।

दूहा – फुनि पंडित मंडप मँडिय । बेद पाठ आधार ॥
षट करमी सरमी अनिघ । गुर सगह गुर भार ॥ छ० ७५ ॥

दूलह का मंडप में आना ।

तिन दूलह मंडप बुलिय । हम सत घमम निसान ॥
जनु बद्दल ब्रज क्रिस्न पर । सुरपति बहुरि रिसान ॥ छ० ७६ ॥
देषि सोभ प्रथिराज त्रिय । बारत राई नोन ॥
हर्ष हास मुष चष उदित । जनु कमल विकस रवि भोंन ॥ छं० ७७ ॥

कवित्त – देसन देस नरेस । भेस अमरेस अमर भति ॥
सील सत्त गुनवंत । दांन षग कहुन कोन मति ॥
अरकस पसम जराउ । गंध्र रस सरस अमीवर ॥
तेजवंत उद्दार । बडम विवाहर प्रंथ भर ॥
मंडप्प जान दुअ दिसि मिलत । हास तर्क जात न गन्यो ॥
दीपति नगनि निसि दीह भय।वर दाई दिव वर मन्यो ॥छं० ७८॥

स्त्रियों का दूलह की शोभा देख मग्न होना ।

दूहा – साल अटा जालिन गवष । रष्षत नव रनिवास ॥
छत्र छाह छबि करत जित । भमर मत्त रस वास ॥ छं० ७९ ॥
नग मोती गहने अगन । गिरत न सुद्धि सम्हार ॥
कांम लहरि छबि छोल उठि । दुति दरियाव बेपार ॥ छं० ८० ॥

स्त्रियों का मंगल गीत और गाली गाना ।

मंगल गावत झुंमकनि । कोकिल कंठी नारि ॥
सुघर पुरुष जोबन छके । सुनहि सुहाई गारि ॥ छं० ८१ ॥

दूलह दुलहिन का पट्टे पर बैठकर गंठ जोड़ा होकर गनेश पूजन करना ।

पटां बैठि पट गंठि गुह पूजे प्रथम गनेस ॥
दुव कुल वारि विचार कर । ब्याही बांम नरेस ॥ छं० ८२ ॥

नवग्रह, कुलदेवता, अग्नि, ब्राह्मण की पूजा कर शाखोच्चार होना ।

ग्रहन पूजि ग्रहदेव पुजि । पूजि अगानि दुज देव ॥
साषोचार उचार धुनि । प्रसन भए नृप बेव ॥ छं० ८३ ॥
चंद सूर तहां साषि दिय । बन्हु बारुन बुध वाइ ॥
प्रोहित गुर उपदेस करि । बांम अंग तब आइ ॥ छं० ८४ ॥

ब्राह्मणों का आशीर्वाद के मंत्र पढ़ना ।

पढ़ि संकलप विकलप तजि । भजि भगवति भगवंत ॥
तम सु पाइ परसाद करि । चिर जिओ इंछिन कंत ॥ छं० ८५ ॥

सलषराज का कन्या दान देकर विनय करना ।

अब्बूपति पट गंठि त्रिय । विनय जोरि कर कीन ॥
इह कन्या नृप सोम सुत । दासपंन पन दीन ॥ छं० ८६ ॥

कान्ह चौहान का कहना कि जैसे शिव के साथ गौरी है वैसे ही यह होगी ।

कही कन्ह तब जैत सम । मंडन संभरि ग्रेह ॥
ज्यों गवरी सिव लच्छि प्रभु । त्यौं मन बाढो-नेह ॥ छं० ८७ ॥

लग्न साधकर तब राजा का ज्योनार करना ।

लगन साधि आराधि नृप । पुनि ज्यौंनारि जिवाइ ॥
छ रस अंन अंतन लहो । क्यों कबि कहे बनाइ ॥ छं० ८८ ॥

ज्योनार के पकवानों का वर्णन ।

अगनि पक्क घृत पक्क कर । दूध पक्क बेपार ॥
तेल एक लषियै नही । जहं तहं लूट अमार ॥ छं० ८९ ॥

छंद भुजंगी—

रहस्यं रहस्यं अनेकंत भंती । घनं जोति मिष्ठांन पानं प्रभंती ॥
उडंदं पुडंदं गुडंदंति मासं । किते ब्रंन-प्रंनं किते बीर भासं ॥
किते स्वाद स्वादं प्रथी देव वंछे । तहां केवलं ब्रंनि आवर्त गंछे ॥
भरे एक वारं घ्रितं षंड मढी । दिषे स्वाद राजं चली देव वंधी ॥ छं०९०॥
घनं अंमरं डंमरं दिसि प्रमानं । उठै अत्र तीनो सुगंधं विधानं ॥
अंगं अंग अंगं सलप्पत नारी । महा लालची कांम बसु भी भिनारी ॥
हुवं देव राजं सुदंपत्ति बंधे । मनों मिस्स अग्गं गुरं चित्त संधे ॥
बधें अंचलं संचलं इन प्रकारं । मनों बंधियै मौन मन मच्छ धारं ॥छं०९१॥

लियौ हथ्थ राजं त्रिया हथ्थ सोहै । मनों पैसि सत पत्र कंमोद सोहै ॥
जनं अंग अंबं बरं मालधारी । मनों काम अग्गं जु विद्या पसारी ॥
छितं छित्त राजै नरं नाह नारी।मनों जीवनं कांम लज्जी उधारी ॥छं०९२॥
परं पुब्ब कथ्थं कथी कब्बि चंदं । रही लजि मनों रत्ति फिरि दहन हद्दं ॥
दियै तिलक दद्धि अछि अछत सारे । मनों डग्गि अंकूर सुष सेन भारे ॥
दियै कंकनं हथ्थ चहुआंन राजै । मनों रत्ति बंध्यौ दई छाप छाजै ॥
रहै एक ग्रेहं घरी अद्ध भारे । तहां वेद मंत्रं दुजं जा उचारे ॥ छं० ९३ ॥

कवित्त—सुभत बीर तन तांम । बाल राजै दिसि वामं ॥
मनहु मुत्ति पहिचांन । रत्ति बंधी कर कांमं ॥
अति सोभा सोभई । चंद ओपम तहं वर वर ॥
मनों मकर मकरेस । आय चंराई अप्प घर ॥
सज्जे सुरत्ति मनमथ्थ बर । कै इंद्रानी इंद्र परि ॥
संप्रति लच्छ लच्छिय सुबर । संपति तन सज्जेउ बर ॥ छं० ९४ ॥

दूहा—बर सोभे वर राजपति । लिय दच्छिन हत वांम ॥
मनों ब्याह पूरन करै । सुभ्रित वीरतम हांम ॥ छं० ९५ ॥

पृथ्वीराज के विवाह का वर्णन कविचन्द अपनी सामर्थ्य से बाहर बतलाता है ।

परनि बीर प्रथिराज बर । बहुत कहै रस जोइ ॥
कबि बर बरनत नां बनै । बर भूषन तिन गोइ ॥ छं० ९६ ॥

नव दुलहिन की शोभा का वर्णन ।

छंद पद्धरी—

लज्याति मांन गुन ग्रब कटाछ । अल पहति अलप सुलपह सुलाछ ॥
भौंर भर अभय भय सील नील । सरसात पिंम रस पिंम चील ॥
गुंजंत ग्रांम सोभिल कुआंरि । तिहि हरत हरनि मनमथ्थ रारि ॥
तन सात नितंबनि तहं प्रमांन । बर हुरैं बरनि पिय लटि प्रमान ॥
सित असित सुबृत कटाक्ष बाल । शृंगार मध्य भूषन रसाल ॥
रस हास मध्य शृंगार होइ । संकर सुभाग उप्पनै लोइ ॥छं० ९७॥

साटक—कामं जा गहीइ लज्ज गहने भय भ्रत भव कोटकं ॥
धू घट्टं पद होहि बामति बले ऊधी सुकागछ रसे ॥
जाति जात न जासि जोगित बरं भंजे मनं विभ्रमं ॥
नां दीसंत गता गतेस सैमं द्रग्गं चलं निभ्रलं ॥ छं० ९८ ॥

छंद त्रोटक—बरनं गुरु अक्खिर अंति पयौ । इति तोटक छंदय नाम भयौ ॥
प्रिय नाम सुबद्धिय काहुनयं । बन पंति विपत्ति सुगाहुनयं ॥

बरनें बरनं बरनीन कयं । सु चढ्या अनु मेष प्रथंम रथं ॥
प्रग अंचल चंचल बाल ढंके । तिहि कांम बिरामन बांन थके ॥छं०९९॥
नव बास सुनूपुर सद्द गुरं । नृप आगम जाइ बधाइ घरं ॥
गज ज्यौं मनमत्त जंजीर जरी । क्रम निठ्ठत निट्टय पाइ भरी ॥
दस पंच सषी नृप पास गई । ति मनों सुष श्रीफल हाथ दई ॥
करुनातिमुचीरस भौर सता । श्रम भो अभिलाषरुप्रब्ब जिता॥छं०१००॥
नृप पुठ्ठ मुषं अवलोक करै । सु मनो घन रंक विलोकि गुरै ॥
ति कंही न बनै कविचंद कथा । सु लजै रसना अरु बीर अथा ॥
सुकछूक कहों दिठि क्रमं क्रमं । सुमनो मनता बरनी न भ्रमं ॥छं०१०१॥

प्रथम समागम का वर्णन ।

दूहा—अंन सैंन रति मैंन सय । प्रथम समागम बाल ॥
नेह देह दुअ एक हुअ । परे प्रेम रस जाल ॥ छं० १०२ ॥
गाहा—इत्तं सुष्य गनिज्जे । लज्जीजै जोहयो कब्बी ॥
ज्यों वारिज बिपनं मझं । सुझ्झै ना यहि गरुआयं ॥ छं० १०३ ॥
मूलं वर मकरंदं । विजी पुर षाई सुंदरी वीयं ॥
मालचि दंपति वासं । चाहुआनं वीरयो पत्ती ॥ छं० १०४ ॥
जभ्रम भ्रमैति चित्तं । आवै नठ्ठं य ग्यांनयं चितयं ॥
जंभ्रमि भ्रमि सह रूपं । अवलोकं इछनी करियं ॥ छं० १०५ ॥
इक्क जगी बिस बाले । काम भयंक षयो द्रिगयं ॥
आनिज्जै गम सैसं । नैंनायं जोग व सनायं ॥ छं० १०६ ॥
उअर उरोजति सद्धे । बुद्धी बालाय दिठ्ठयो नैंनं ॥
कुच तुछ अंकुर उट्ठे । मनों प्रीतम विभ्राव हीयो चढयं ॥ छं० १०७ ॥
चौपाई—नैननि प्रथम प्रमांनिय पुब्ब । सेवालय रोमावलि रुब्ब ॥
अग्यानय जोवनति कुंआर।अब जांन्यो सैसब चलि भार ॥छं०१०८॥
इहिबिधि मत्त गत्त भय रजनी । बाल लता बालहुम गहि सजनी ॥
यों डग मग सुंदरि विरुझाई । ज्यों वेलिय अवलंब लहाई॥छं०१०९॥

दुलहिन को लेकर दूलह का जनवासे में आना और
हाथी घोड़े धन आदि लुटाना ॥

दूहा—पांवारी प्रथिराज बर । पुनि जनवासे आइ ॥
एक सहस हय हथ्थि वर । दीने तुरत लुटाइ ॥ छं० ११० ॥
होत प्रात जग्गिय सलष । भंत अनेक तिभोग ॥
जुकछु देव देवंस मति । सो लभ्भै नहिं लोग ॥ छं० १११ ॥
छंद भुयंगी—सुद्दं सुद्द सुद्दसि राजं । सुतो देषियै कोटि कोटेक साजं ॥
कयं छध्य भाइं नटं नट्ट रागं । मनो देषियै यंद प्रहप्रहेन आगं ॥

जिते तार झंका नच्चे निनारे । मनों देषियै भांन ससि लष्य तारे ॥
सुभंग सुतालं मृदंगं बजावै । हहा हूह सुगं सुगंध्रवं गावै ॥छं० ११२॥
घनं पक्क षानं समानंत नेहं । करै प्रथ्थिराजं अप अप्प देहं ॥
करै राज राजं सबै ब्याह काजं । मनों दिष्षिये राज सूजग्य साजं ॥
धरे अग्ग राजं छिती छत्र जोरी । मनों उन्नयो मेघ आषाढ़ कोरी ॥
फिरै दास भारी बुलै राग बैनं । मनों नभ्यसी मास कै बीज गैनं ॥छं०११३॥
बजै ग्राम नारी छतीसों सुरागं । मनो बोलयं मोर आषाढ गाजं ॥
बजै घुघ्घ नारियं रंग भारी । मनों दादुरं जोति मनमथ्थ सारी ॥
रंगे कासमीरं सबै ब्रस्त्रधारी । किधों बद्दुलं रंग कै ग्रहन गारी ॥
किधो इंद्रबद्दू चढ़ी नीर धारा । किधों राज्र वासत भूपालद्वारा ॥छं० १४॥

दूहा – गति त्रिजांम भय प्रातबर । इह मनुहार प्रमांन ॥
बर दिष्षो चहुआंन नृप । रत्ति काम उनमान ॥ छं० ११५ ॥

गाहा—रत्ति काम दुअ दाहं । कै दु षंकरी कत्तरी बाले ॥
सो इंछनि पांत्रारी । लष्भी नृप मुक्तिका रूपं ॥ छं० ११६ ॥

छंद हनुफाल –इति मुक्रति सकति सकोर । जिन लभि न पारस घोर ॥
जिन कांम बान झकोर । गुन मुदित मुदित सथोर ॥
चित मित्त मित्तह जोर । मनों उदय निषत्रन चोर ॥
मुष जुगति भगति उपाय । का करिहि मुक्ति अमाइ ॥ छं० ११७ ॥
सुष करन दिन प्रनि जीह । दिन सुफल धरियति ग्रीह ॥
प्रति राज राजन जोर । पावार सलषनि ओर ॥
मनुहार मडित्त थोर । नृप चलन ग्रेह सजोर ॥
है गैति रथ बर बाजि । नृप दए दान विराजि ॥ छ० ११८ ॥

दहेज में सलखराज का बहुत कुछ देकर भी संकुचित होना ।

कबित –सहस एक रथ साजि । दासि बिय तिपति इक्क मधि ॥
इक्क इक्क करि सथ्थ । किरनि पंचो प्रति प्रति बधि ॥
मी हाथी इह भांति । माल मुत्तिय उतंग बर ॥
लच्छि पटंबर अंग । दए राजिंद राज गुर ॥
इतनौ देत सकुच्यो नृपति । तै दिनता चरनन गहिय ॥
प्रथीराज राजन मुक्कर । सलष फेरि चल्यो समिय ॥ छं० ११९ ॥

पांच दिन तक सब जातियों को भोजन कराया गया ।

दूहा—पंच दिवस च्यारौं बरन । भुजत अंन अपार ॥
छरस अंन छह रितिन सुष । अम्बू दै आचार ॥ छं० १२० ॥

पलकि[1] थार अथार करि । समद करी सब सथ्थ ॥
है हथ्थी जर कस बसन । को कवि बरनै कथ्थ ॥ छं० १२१ ॥

बारात की बिदाई का वर्णन ।

छंद पद्धरी-पहिराइ राइ पावार सथ्थ । नह बुद्धि बरन बर विविध कथ्थ ॥
इक करी सत्त हय सोम राइ । अैराक जाति जे पवन पाइ ॥
सिर पाव पंच जरकस पसंम । सूत रूपोत रेसम नरंम ॥
सोइ विदा कीन दूलह बनाइ । जमदार सोंपि संभरि गनाइ ॥ छं० १२२ ॥
कलधूत कलस दस गढित हथ्थ । इक उंच कुंडि जल न्हांन सथ्थ ॥
दस थार कनक प्रतिबिंब सूर । बाटका बीस बिअ अभुत नूर ॥
ता सक्क पंच दुव मनह थार । बाजोठ एक हिम जटित लाल ॥
पालकनि हेम रेसम निबारि । अनि ठांम नंन्ह को लहै सार ॥ छं० १२३ ॥
कठ लोंनि बीस सोवन मटाइ । पल्लांन ऊंच दावन चढाई ॥
मन बीस पंच इह सोंज अब्ब । जिन कोय करो छिनीस प्रब्ब ॥
दुअ हथ्थि साजि माझे जिजीर । रूपेन साज सज्जे वजीर ॥
हंडवाइ बीस मन साजु सुद्ध।उज्जल रज रजक्क जनु उफनि दूध।।छं०१२४॥
दस सहस हेम दासीन सग । तिन देषि रंग रैंभ होत भंग ॥
सामंत सत्त इक रस्स अग्ग । पहराइ तिनह नृप नमिय पग्ग ॥
इक तुरी जात अैराक थांन । अग्गीय अंग पग पवनमांन ॥
इक इक्क बटुअ.मालाति इक्क।मुद्रकी इक्क इन पुहचि किक्क ।।छं० १२५॥
सिर पाव उंच सरकस[2] अनूप । तिन दिष्षि होत हैरांन भूप ॥
बंभन बनंक कायथ्थ संग । पसवांन लोग जे रषिक अग ॥
लघु दिघ्घ ओर असवार पाल । करि सुमन सब्ब अब्बू भुआल ॥
पंच सै सोम रनिवास नांम । रेसम सूत गनि पंच ठांम ॥ छं० १२६ ॥
सब हर्ष सहित समदे नरेस । सजि चले सुभट सब अप्प देस ॥
इंछनिय मद्धि पिय बैठ ढाल । गज गाह घुरें दुहुं अंग भाल ॥ छं० १२७ ॥

बारात का विदा होकर अजमेर की ओर चलना ।

दूहा—चल्यौ व्याहि संभरि धनी । मंगन भए निहाल ॥
पुह चावन धन संग भए । नृपगुन चर्वें रसाल ॥ छं० १२८ ॥
पंच कोस परथिथ्थ कहु । बिदा मंगि अबु ईस ॥
ओर देन तुम सोंभ कहु । कांम तुम्हें हम सीस ॥ छं० १२९ ॥
नवमि मंडि बहुरे घरह । वे सज्जे अप देस ॥
नृपति व्याह दुअ रस रह्यौ । हिम गिरि जांनि महेस ॥ १३० ॥

---

१. कृ० को-पालिका । २. कृ० को-जरकस ।

आरिज आरिज सलष तें । इंछनि इच्छा पूरि ॥
भुज मंडल मंडित दिनह । सिर दधि अच्छित जूर ॥ छं० १११ ॥
चलन राज प्रथिराज बर । बरनि पत्त बर राज ॥
मद्धि अमोलक सुंदरी । डोला सट्ठित साज ॥ छं० १३२ ॥
यौं आयौ नृप ग्रेह बर । सुनि अवाज त्रिय कांन ॥
मानौं बीर दुहाइयां । कांमहि नंषन बान ॥ छं० १३३ ॥

बारात के अजमेर पहुंचने पर मंगलाचार होना ।

कवित्त—सोमेसर संभरिय । राज आवत प्रथिराजह ॥
हे गै रंभ सुसाज । इंद चल्ल्यौ लष साजह ॥
कोटि कोटि मनु इंद । इंद दिष्षो इंदासन ॥
एक एक दंपतिय । बरह बंधे विधि साजन ॥
दुज मानं वेद मंगल त्रियह । मुत्ति अछित वंदहि सुबर ॥
नृप मौर मुष्ष मुत्तिय लगहि । सो अपम कविराज धर॥छं०१३३॥

अरल्लि—
लगत मुत्ति नृपति सुपंति मुष वर । मांनों भानं★ उनग्रेह मुतारक ऊवरं ॥
मिलि सो फिरि चलहि ससिगन भांन कों।मानहु लषद्धे ानि आनै आंनकों॥
॥ छं० १३५ ॥

दूहा—बंदि लियो बरनी सुबर । त्रिया हेत लजि गान ॥
मांनों बैसंध सुंदरी । चलत समप्पत दांन ॥ छं० १३६ ॥

शुकी पूछने पर शुक का इच्छिनी के नषशिष का वर्णन करना ।

बहुरि सुकी सुक सो कहे । अंग अग दुति देह ॥
इंछनि अंछ बषांनि के । मोहि सुनावहु एह ॥ छं० १३७ ॥

छंद हनूफाल - धन धवल गावहि बाल । मनमथ्थ तिथ्थ विसाल ॥
बहु फुल्लि केवर फूलि । बग बैठि पावस भूलि ॥
धन धवल दै मनमथ्थ । आनंद अंगनि सथ्थ ॥
जनु रंग पाये दब्ब । नल नलन नीर बहब्ब ॥ छं० १३८ ॥
धर धार गंग कि उट्ठि । फिर नभ्भ परसि अपुट्ठि ॥
बट बिटप बेलिय झुल्लि । ग्रिह बाग तरु छत्र झुल्लि ॥
नृप परनि पुत्रि पवार । जनु जुबन सैसुब रारि ॥
इह रूप राजित देव । इन्द्र इन्द्रनी अहमेव ॥ छं० १३९ ॥
सोइ सलष राज कुंआरि । नृप लसी ब्रह्म सवांरि ॥
लछि लच्छि पूर सहज्ज । व्रत नाथ व्रत करि कज्ज ॥
कविराज ओप प्रकार । आवै न कोटि विचार ॥
सिप मध्य अंग सुरत्त । किम करय मंद सुमत्त ॥ छं० १४० ॥

जगि रंग जोबन जोर । ससि बिलसि बयक्रम थोर ॥
बर उदै गुन बर गोर । बै स्यांम राजत ओर ॥
बनि केस देस सुवेस । कवि कहत उप्पम तेस ॥
चढि मेर नागिन नंद । ससि गहत समुष फद ॥ छं० १४१ ॥

उपम्म कवि कहि वाम । जुब्बन तरंग अगि कांम ॥
पाटीय चकचुंधि होइ । मिसि परह उठि घट दोइ ॥
लिलाट आउ प्रकार । मनमथ्थ अंगन थार ॥
तिन मद्धि मुत्ति तिलक्क । कवि कहत ओपम थक्क ॥ छं० १४२ ॥

हरि कठिन गंगय मांन । ससि भेद ग्रस चलि जांन ॥
कविराज ओपम दीय । दछि पुचि ससि मिलि हीय ॥
तिन मध्य म्रग मद व्यंद । कवि जंपि उप्पम छंद ॥
ससि उडत मद्धि कलंक । हरु अत्त अंकह अंक ॥ छं० १४३ ॥

लछिन्न हरि तन ताह । ससि थांन बैठो राह ॥
अति हलत चपलह भौंह । कवि कहत उप्पम सौंह ॥
ससि धरत जूप सु अंन । तिहि चलित चक्रित नैंन ॥
मन धरत उप्पम आंन । अभि संधि अलि सुत जांन ॥ छं० १४४ ॥

बर बाल नैंन झकोर । ग्रह जियन बानह जोर ।
जिम भए भोंरह चोंर । मै भरै धाम झकोर ॥
इक कही ओपम चाइ । पंनन कि उडि फल पाइ ॥
जनु वाग छुट्टिय अंन । तिम होत चक्रित नैंन ॥ छं० १४५ ॥
सित असित नैंन उचार । मनों गह नारक चार ॥
तिन मद्धि सोभै रत्त । त्रिधि धरिय मगल्ल गत्त ॥
रसवास नासिक नीय । निल्ल पुहप चपक दीय ॥
मनों लज्जि मंजरि मध्य । कल्ल प्रगटि दीपक मध्य ॥ छं० १४६ ॥

नव रुल्लन मुत्तिय नास । नमु किव ओपम भास ॥
रस ग्रहन अम्रत चाइ । तप करैं ऊरध पाइ ॥
मुष कीर सोभित जोम । जनु चुनत कनग्रत ओम ॥
जगिनाय पुर मन रज्जि । कवि कही उप्पम सज्जि ॥ छं० १४७ ॥

अध अध्धर रत्त सुरंग । ससि बीय रंग तरंग ॥
उत्तग रंग मुभाल । जनु फुलि कमुद्दिनि ताल ॥
कै पक्क बिंब संभाल । सुक हसिय ग्रसिय न आल ॥
तिन मध्य दंतन कंत । जनु बज्ज राजत पंत ॥ छं० १४८ ॥

फुनि कही ओपम साज । सुत स्वाति सीपय राज ॥
सति इक्क ओपन अच्छ । बत्तीस लच्छन लच्छ ॥
इक अलक सुम्मत मुष्ष । कवि कहत ओपम सुष्ष ॥
ससि मुक्कि मधुरय अंक । बर भजत विभय कलंक ॥ छं० १४९ ॥
जनु वनम धारा रेष । कै मिल नगी चलि सेष ॥
कल ग्रीव रेष त्रिवल्लि । कवि राज ओपम भल्लि ॥
ससि मिलत पुब्बय बैर । गुरदेव सेव सुसैर ॥
गर पोति जंति विचारि । ससि चरन फदय डारि ॥ छं० १५० ॥
ससि समर दंद प्रमांन । जिति राहु बैठो थांन ॥
कै संघ श्रीबर जांनि । कर अंगुलि इक थांन ॥
कालंक दिठवन जोर । कवि इक्क उप्पम दौरि ॥
जनु कमल कोर प्रकार । सिमु भ्रंग बैठे वार ॥ छं० १५१ ॥
रस सरस कुच कहि चंद । उर उकिर आनंद कंद ॥
ससि बदन मदन सु जोर । चित रहै चाहि चकोर ॥
कलि काकि कंज अनूप । उर उदिन रवनि[1] रूप ॥
कथि कलभ कुंभ प्रमांन । छवि स्यांम रंग सुदांन ॥ छंद १५२ ॥
गुन गँठिय मुत्तिय माल । कुच परस कंत विसाल ॥
विय सिंभ मीस कि चंग । चढि चलिय गंग सुरंग ॥
नव रोम राजिय राजि । कही कपी ओपम साजि ॥
मनों नाभि कूप प्रमांन । भरि भूरि[2] अमृत थांन ॥ छं० १५३ ॥
अंमृत आवहि जाहि । पप्पील रंगहि चाहि ॥
उर उदित सुभगय वाल । आनंग रस समि बाल ॥
जनु कच्छि क्रीडैं ताल । हिम फात्र लग्गि रमाल ॥
सुभ निरषि त्रिवली तेह । कविचंद ओपम एह ॥ छं० १५४ ॥
बयसिसु मिलनहु वाल । सि ढ मडि कांम विसाल ॥
रिपु उभै सुम्मिय आनि । छवि लषि लंक प्रमान ॥
नित्तंब उत्तग रज्जि । मनमथ्थ चक्र बिसज्जि ॥
पैरंग पिंडिय ढार । मित सीन उष्न तुसार ॥ छं० १५५ ॥
नव रंभ गति विपरीत । छवि षंभ देवल जीत ॥
गज सुंड सुलप सरूप । मनो कुंद कुंदन भूप ॥
किधों करभ कोर प्रकार । तिन मद्धि उतरत ढास ॥
मनों मींन चिक्कन देह । छवि छरत पिंडुर एह ॥ छं० १५६ ॥

---

१. को०—रवनिय । २. को०—भूमि ।

घन घुंमि घुघ्घर हेम । कबि कहौं ओपम एक ॥
मनो कमल सौरंभ काज । प्रति प्रीत भमर बिराज ॥
कहु कहौं अंग सुरंग । रति भूलि देषि अनंग ॥
लषि लछ्छि पूर स्रहज्ज । चित वृत्त मांनो रज्ज ॥ छं० १५७ ॥

सो सलष राज कुंआर । नृप लही ब्रह्म सवार ॥
इन लछ्छि इछनिय रूप । कुल बघू लछ्छिन भूप ॥
रति रूप रमनिय रज्जि । छवि सरल दुति तन सज्जि ॥
रसि रसित रंगह राज । तिह रमन हुअ प्रथिराज ॥ छं० १५८ ॥

कवित्त—नयन सुकज्जल रेष । तष्षि तिष्षन छबि कारिय ॥
श्रवनन सहज कटाछ । चित्त कर्षन नर नारिय ॥
भुज मृनाल कर कमल । उरज अंबुज कलिय कल ॥
जंघ रंभ कटि सिंघ । गमन दुति हंस करी छल ॥
देव अरु जष्षि नागिनि नरिय । गरहि गर्व दिष्षत नयन ॥
इंछिनी इषि लज्जा सहज।कितक सक्ति कब्बिय वयन ॥छं०१५६॥

दर्पन दल नष जोति । सुरग महदी रुचि रूरिय ॥
एडी इंगुर रंग । उपम ओपियै सु संचिय ॥
सो तिन सकल सुहाग । भाग जावक तल बंध्धिय ॥
विकसित अंग अंग अंग । चारु मुसकनि बै सधिय ॥
दिषंत नैंन दंपति कजहि । हर्ष सोभ वर्षंत अकल ॥
रति कांम कांम गहि गछनि । और उप्पम लुट्टिय सकल ॥छं० १६०॥

जेहरि नूपुर नद्द । मद्द घुघर कोतूहल ॥
बिछिय निमद्द निसाल । सद्द झिंगुर कल कूहल ॥
अगुठनि जटित अनोट । घोंट कुंदन नग मंडित ॥
निरषत द्रप्पन नैन । बदन बीरी रद षंडित ॥
हाव अरु भाव संभ्रम विभ्रम । बड पुन्य करि प्रभु पिष्ष लहि ॥
इंछनिय इछ अछ्छर अवनि । सुनिय सोभ ससि कब्बि कहि ॥१६१॥

जरकस घुघर घमंड । जांनु रवि किंप्र कदली ग्रह ॥
कसुंभ लरे नीसार । रंग छबि छंडि हुंड हर ॥
पीत कंच की संचि । षंडि कस अंग उपट्टिय ॥
कंकस कर वर वरत । गंध्र हरवीय उपट्टिय ॥
आलोक नैंन गति बचन बहु । सचिन सोभ मंडिय तनह ॥
फुंकिय सांझ कवि चंद कहि।मनहु बीज घर की घनह ॥छं० १६२॥

शोभा कहते कहते रात बीत गई।

दूहा—सुनत कथा अछि बत्तरी। गइ रत्तरी बिहाइ॥
वुज्ज कही वुकि संभरिय। जिहि सुष श्रवन सुहाइ॥ छं० १६३॥
आरिजु आरि जस लषहीं। सो इंछिनि इछ्छा पूर॥
भुव मंडल मंडित दिनह। सिर दधि अछ्छित जूर॥ छं० १६४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इंछिनि
व्याह वर्णनं नाम चतुर्दश प्रस्ताव संपूरनम्॥ १४॥



अथ मुगलजुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पन्द्रहवां समय ।)

इंछिनी को ब्याह कर लाने पर मेवात के राजा मुगल का पूर्व वैर निकालने का विचार ।

दूहा—प्रथीराज राजत सुबर । परनि लच्छि उनमांन ॥
दिसि मुग्गल संभर धनी । बैर षटक्यौ प्रान ॥ छं० १ ॥
बैर षटक्यौ पुब्बवर । मति मंत्री मेवात ॥
बर उद्दित संभर धनी । अरत बीर भय गात ॥ छं० २ ॥

मेवात राज का विचारना कि रास्ते में पृथ्वीराज को मारना चाहिए ।

कवित्त—बैर षटक्यौ पुब्ब । करिय सोमेस सुराजं ॥
सो आंने सोमेस । तात मुग्गल भजि काजं ॥
सारंग बैर सारंग । देषि कढ्यौ तिन बेरं ॥
सो संभरि प्रथिराज । मत्त बढ्यौ धर वैरं ॥
हम मत्त मत्त गुरजन कहै । सर्व बेर लज्जी भुवन ॥
प्रथिराज राज काटन मतै । तिहित पंथ कीजै गवन ॥ छं० ३ ॥

यमुना की एक घाटी में मुगलराज का छिप रहना ।

चित्त मुग्गल चितयौ । राज प्रथिराज वैर बर ॥
मद्धि थांन मेवात । रह्यौ चपे सुढिल्लि धर ॥
ढिल्ली वै बर धाम । सुथल अंगन मेवातं ॥
तन्न मत्त उप्पन्नौ । बीर बीरा रस गातं ॥
मुगल नरिंद मेवात पति । कूच राज चित्यौ सुबर ॥
बट्टह मुएक जमुना त्रिकट । सुघट घाट ओघट नयर[1] ॥ छं० ४ ॥

पृथ्वीराज के डेरे में कैमास को छोड़ सब का सो जाना, कैमास का उल्लू की बोली सुनना ।

छंद माधुर्यं —
जग जोति विगिन निसि अमिगिनी रत रतति अंबरं ॥
सामंत सूर सुथान निद्रा भ्रमित क्रोध सुउत्तरं ॥
अति चतुर चित्रय मधुर मित्रय किल विहु चक विस्तरी ॥
कैमास जाग्र स मकन निद्रा बीर सर सुभंमरी ॥ छं० ५ ॥

---

१. ए० को०-औघट्ट नर ।

आवृत्ति रत्त रुहुंग नील रु थान पुब्बय उत्त यो ॥
संनाहु स्वामि नरिंद तामय कलहु वित्तिय बिस्तऱ्यो ॥
बोलि घूघूअ साद दीक्यि महसती[1] सुर उफ्फस्या ॥
इहु सुनि रू सूरं धरि करूरं बीर बीरहु उच्चऱ्यौ ॥ छं० ६ ॥

कैमास का बाईं ओर देवी को देखना।

कवित्त—बर निड्डुर राठौर। राज सूतो ढिग बीरं ॥
और सब्ब सामंत। पास कैमास अधीरं ॥
नव वेहड बंकट सु। भ्रमत आषेटक आइय ॥
क्रोध सजल उच्चरिय। सद्द मोर्दे तन हाइय ॥
मत्ते सुभ्रमर पत्ते सुग्रहु। षग बंधे निद्रा ग्रहिय ॥
जग्गै न कोइ जाग्रत सुसित। वाम दिसा देवी लसिय ॥ छं० ७ ॥

देवी की बोली सुनकर कैमास का गुरुराम पुरोहित से सगुन पूछना, पुरोहित का कहना कि इसका सगुन चंद से पूछिए।

बोलत देवी सुनिय। जगि निड्डुर नृप पासं ॥
राज गुरू जग्गाय। बोलि मंत्री कैमासं ॥
राज गुरं दुज राम। बलिय बंभन अधिकारिय ॥
सार सिध रन द्रोन। तेन भारथ भर भारिय ॥
कवि चंद बोलि चाचिग महर। सगुन संधि सद्धिय लगन ॥
आवै न मंत्र मंत्रीय घन। सुवर चित अच्चिय अगन ॥ छं० ८ ॥

साटक—जे मत्ताते कारन बरं पुड्वं न्रपं प्रातयं।
अस्या सस्त समस्त अस्त कुंभकं सुयसं समुद्रं बरं ॥
निर्घोषं यमयाय धारन धरे विद्याधरा उद्धरं।
सोयं सो प्रथिराज बैरत बरं मोमेस तिय अग्गियं ॥ छं० ॥ ९ ॥

चंद का पृथ्वीराज के वंश की पूर्व कथा वर्णन कर मेवातियों के साथ बैर का कारण कहना।

छंद पद्धरी—न बस भइग आना नरिंद। दस पुत्र भय गति न वैर कंद ॥
चहुआंन नाम चहुआंन वैर। बोसल कुलान उप्पने नैर ॥
आवृत्त बीर ढुंढा सुरष्षि। तिहि बंस भइग चहुआंन सष्षि ॥
जैसिघ देव तिहि बंस वीर। धारं करिय अइर जज्जर सरीर ॥ छं० १० ॥
बीऱ्यो जु बीर संभरि सुहंत। पट्टन प्रबास अरि हऱ्यो कंत ॥
छंडाय सब्ब मेवात भुम्म। आवृत्त जुद्ध मंड्यो क्रम्म ॥

---

1. को०—सती।

तिहि वंस भयौ सोमेस सार। जंपए बीर परवत विथार ॥
उत्तर्यौ आइ जंगल सुदेस। गहिया नरिंद संजै प्रवेस ॥छं० ११॥
विष्थान मग्ग जिम हुत उचीर। साधयौ जुद्ध किय सुद्धि हीर ॥
तिन पाट प्रथि प्रथिराज तप्पि। आबू नरिंद पावार थप्पि ॥
जस आति भूमि अरु भर सदंद। मुग्गल मयंक तारका चंद ॥
ढंढोर बैर षल करिय पंग। पारस परिय साइर अनंग ॥ छं० १२ ॥
तिहि वेर जग्गि मुग्गल नरिंद। जंपयौ बीर कविचंद छंद ॥
इह कहिरु राज निद्रा ग्रसीय। चिंता न राज चिंता बसीय ॥
चहुआन बीर बर सोमनंद। तिन तेज प्रज्ञ मानों रविंद।
निसि सेन अैन अवनी अनंग। फुनि क्रील केलिनि सिप्प रंग ॥छं० १३॥
भो प्रात भांन झलमल्यौ अंग। फुल्लेति कमल उडि चले भ्रंग ॥
छल छैल चोर मन भए पंग। हुंभार सब्ब गो करि उतंग ॥
द्रुम द्रुमति रोर पंषिय करंत। करें क्रम सुम्भ रव सुद्ध संत ॥
चकीय चक्क करि मिलिय रंग। भगि रोर चोर भय तन अनंग॥छं०१४॥
ऊघरे पूज देवहु कपाट। जग्गेति बिप्र वर क्रंम घाट ॥
उच्चरहि वेद वा नीति चंग। न्रंमल प्रवाहु जनु जलहु गंग ॥
बहु भंति क्रंम आचरत लोइ। बंदेति पुज्ज गुरू देव दोइ ॥
आघ्रंन पुहप अस्नांन दान। मंडे सुजन नर थांन थांन ॥ छं० १५ ॥

सवेरे उठकर पृथ्वीराज का अपने सामंतों के साथ
शिकार को निकलना।

तब जग्गि नंद सोमहु कुमार। अनभंग अंग अरि कुल पयार ॥
कैमास बोलि सामंत सूर। चढि चल्यौ राज आषेट दूर ॥

मुगलराज का आकर रास्ता रोकना।

इत्तनै होत बज्जी अवाज। मुग्गल सु आइ करि सकल साज ॥
रुक्केति पंथ गिरि कंठ ठैर। मग्गयौ आंनि तिन पुब्ब बैर ॥ छं० १६ ॥
संभरिय वैन सामंत नाथ। ज्यौं सुन्यौ बैर लगि सीस माथ ॥ छं० १७ ॥

तुरंत पृथ्वीराज का शत्रुओं के बीच में घुसना, मानो बड़वानल
समुद्र पीने के लिये चला हो।

कवित्त—बढि आवाज गिरि गाज। राज भय अंग न आनिय ॥
ज्यों कमल पानि जोगीनि। कुंभ चीकट जिम पानिय ॥
मूढ मत्त गूंग सवाद। मांन कल तंत सूर भय ॥
यों सोमेस कुमार। दिषि चित्र बट अंग त्रय ॥
करि सिलहु अंग हूं तेज करि। कढिय बाग कहूढी असिय ॥
जानै कि पियन सागर जलहु। बडवानल मध्ये ग्रसिय ॥ छं० १८ ॥

पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन ।

भौ बडवानल राज । समुद सोषन मैवाती ॥
भौ बड़वानल राज । जांनि रषि अंजुल घाती ॥
भौ बडवानल राज । मोह् वित रागत सौ सौ ॥
भौ बडवानल राज । ज्यों दोस आदोस स दो सौ ।
प्रथिराजन जांनिय मान तप । महन रंभ बंछै बलह ॥
ज्यौं बंछै अवधि सुंदरि पिया । त्यों कलहुवंत बंछै कलह ॥ छं० १९ ॥

दूहा—कलह कूर बढ्ढिय निजरि । भयो समुद अरि सेंन ॥
बा वारो मंगै नृपति । हथ्थ जोरि मति दैन ॥ छं० २० ॥

कवित्त—कितक बत्त मेवात । राज मेवात पत्त कह ॥
ता उप्पर चहुआंन । तेग बंधै सु राज इह ॥
मुक्कि बलिय कूरंभ । कहि मारत न हथ्थ कहि ॥
नृप होइ जुद्ध सुरतांन सौं । कैपंग राग संभ्रौ लरै ॥
गामी गवार मैवात पति । राज राज सम्हौ भिरै ॥ छं० २१ ॥

दूहा—नृप छुट्टत बर हुकम मुष । दिठ्ठही धावंत ॥
बर मुग्गल सामंत रन । दल दारुन गाहंत ॥ छं० २२ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला—
बोल बुल्ले घनं । स्वामि सद्धे रनं । लग्गियं सग्गरं । धार धारं धरं ॥
रोस लग्गे जदं । सिंघ मद्दे मदं । बीर बीरं बरं । ओघ नषे धरं ॥छं० २३॥
सार सज्जे इसे । बज्ज बज्जे जिसे । सार अग्गें झिलें । रूक रूकं पिलें ॥
रंग रत्ते रनं । कंक प्रल्लै मनं । लाग बज्जी जरं । मेघ गज्जै धुरं ॥छं० २४॥
टूक तुट्टै षगं । बिज्जु बालं लगं । तीर छुट्टै इसे । रत्ति तारा जिसे ॥
सार उड्डै रनं । भद्द ज्यों जिगनं । पार मत्ती भरं । कढ्ढि जीहं सरं ॥छं०२५॥
पिथ पंथं बरं । लोह लग्गे लरं । कन्ह एकं अपं । अग्गि पीए धपं ॥
काल जित्ते तनं। मेटि आवा गमं।काल जित्ते तिते।प्रम्भ यों ही मिते॥छं०२६॥
सूर सूरं धरं । ठाम लद्धी नरं । मित्त इत्ती रनं । रित्र छुट्टै तनं ॥
हथ्थ कित्ती कियं । बंध छुट्टै जियं। क्रंमनासा नदी ।श्रंम कीने सदी ॥छं०२७॥
धार धारं धरं । बीर भग्गै भरं । कालकूटं कर । जम्म जुद्धं बरं ॥
बीर मत्ते परं । रूक छक्के धरं । लोह लग्गे नरं । तार बज्जे हूरं ॥
कंक जित्ती जिनं । क्रंम भग्गे तिनं । लाज सिंधू गिरे।बीर बीरं तिरे॥छं०२९॥
जोति सद्धी गनं। सिद्ध पुज्जे बनं। मुष्ष मुक्कै ननं । धार मुक्की घनं॥छं०३०॥

कवित्त—सोलंकी सारंग । अंग जंमिन मुष लग्गिय ॥
हय गय बर उब्बार । आनि मुग्गल मुष पग्गिय ॥

भर हनि जुट्टिय मुष्ष । तेग लंबी उभ्भारिय ॥
घम घरियारे षत्ति । लत लोहा करि झारिय ॥
सम रंग सार टिझिय पहर । गहन इक्क मच्यौ सयन ॥
मुग्गल नरिंद चहुआंन भर । अंग अंग सच्यौ तयन ॥ छं० ३१॥

दूहा—कायर मुष अैसे भए । ज्यौं चित्त पुत्तल पांन ॥
सूरन मुष अैसे भए । ज्यौं नष सुंदरि आंन ॥ छं० ३२ ॥
असित असित दोइ बीर है । ता पट कँबर अंत ॥
ज्यों जातो तन संग्रह्यौ । बर भारथ्थें कंत ॥ छं० ३३ ॥

मुगलराज को चारो ओर से घेर कर बांध लेना ।

छंद पद्धरी—उतरिय घाट पलेट सुबीर । पत्तोति सूर सामंत तीर ॥
घेर्यो सुराइ मुग्गलय राज । गिरवर कि सिंघ प्रज्ज्यो अगाज ॥
जानैं कि विट तारक मयंक । संकन निसंक गहि षग्ग बंक ॥
रुक्कंत सूर सामंत सत्त । बल घर्यो राज मेवात पत्त ॥ छं० ३४ ॥
उप्परिन हथ्थ हथियार छत्त । बिन नेह पिया मनुहार पत्त ॥
अंगन अनंग तन में छिपाइ । रहै मूंन मनह तन ज्यों लुपाइ ॥
बंध्यो सुराज मुग्गल नरिंद । छंडाय सस्त्र भारथ्थ इंद ॥छं० ३५॥

मुगल को कैद करके इंछिनी को साथ लिये पृथ्वीराज आनंद से घर आए ।

कवित्त—बंधि राज मुग्गल नरिंद । जित्ति अप्पथान संपत्तिय ॥
देस देस अनगेस । कित्ति मुष्ष मुष्षन कहिय ॥
रिन अड्डी अरि अंग । षग्ग कोइ षंतिय पावै ॥
जस बंध्यो सिर मौर । ब्याह दल दुज्जन आवै ॥
आषेट करिव अरि निग्रह्यौ । इंछिनि रत्तौ हंस सर ॥
कलि केलि रमै कामिनि कमल । मनों मनमत्तौ भ्रिंग भर ॥छं०३६॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथीराज रासके मुगलकथा वर्णनं नाम पंचदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १५ ॥

अथ पुंडीर दाहिमी विवाह नांम प्रस्ताव लिष्यते ।

(सोलहवां समय ।)

राजा सलष की बेटी के ब्याह के वर्ष दिन बड़े सुख के साथ बीते ।

दूहा - बरस ब्याह बीते सकल । सुंदरि सलष कुंआरि ॥
विधि बिधि भोग संजोग रजि । नवल मुगध सुपियार ॥ छं० १ ॥

गाथा- रन जय पत नरिंदं । पुत्तय मुनं च निरमला कित्ती ॥
नव नव मुगध मुरत्त । चोजुत्त रज्ज सुष्षाइ ॥ छं० २ ॥

चंद पुंडीर की कन्या का रूप गुण सुनकर पृथ्वीराज का उस पर प्रेम होना ।

दूहा - चंद पुंडीर नरेस घर । सुंदरि अति सुकुमार ॥
प्रेम प्रगट राजन भयौ । गुन पुच्छत विस्तार ॥ छं० ३ ॥

चंद पुंडीर की कन्या का रूप वर्णन ।

छंद हनूफाल — गुन बाल वेस कमांन । सैसब्ब सुषंचत बांन ॥
छुटि नष्ष क्रमन[1] आंन । सैसब्ब वै संधि जांनि ॥
लज रत्त जाहि नरंत । सैसब सुतुच्छ बलमंत ॥
नप न्रिमल उप्पम नास । अरधंत तो मति भास ॥ छं० ४ ॥
नव नास उप्पम षुट्टि । मनु काम मंजरि फुट्टि ॥
सोरंग ओपम पाइ । भ्रम बांन बाल बनाइ ॥
बर जंघ ओपम अम्भ । मनु बाल कदली ग्रम्भ ॥
सोइ बदलि कदली चंद । छबि करत रत्त सुदंद ॥ छं० ५ ॥
जलरूप बिट बिराज । उर मदन सदन सुपाज ॥
सैसब सुवै कहि छंडि । जोबन्न गुन कनि मंडि ॥ छं० ६ ॥

पुंडीर का कन्या देना स्वीकार करना ।

दूहा — सुनि श्रोतान नरिंद हुअ । कहिय बत्त पुंडीर ॥
रूप अनूपम राज बरि । दिय राजन हित हीर ॥ छं० ७ ॥

---

1. कृ०—क्रमन ।

सुभ लग्न विचार कर चंद पुंडीर का कन्या विवाह देना ।

लगन सुदिन हथलेव करि । चंद सत्त गजराज ॥
एक अग्ग रुत्तरि सुहय । नग मोती बहु साज ॥ छं० ८ ॥
परनि राज पुंडीरनी । सुत चंदानि कुंआरि ॥
दइ बिधिना करि न्रिमई । ब्रह्मा बिरचि सँवारि ॥ छं० ९ ॥

पुंडीर दाहिमी की कन्या के साथ पृथ्वीराज के आनन्द विलास का वर्णन ।

नव जोबन जोरी नवल । छंदानित्त नवल्ल ॥
बात बिनोद बसंतरै । सुनी दाहिमी गल्ल ॥ छं० १० ॥
कवित्त—नवल पुहुप फल नवल । नवल नारी नव जोवन ॥
द्रव्य देषि होइ निजरि । कवन अैसा सिद्ध साधन ॥
चित्त चलै साधक्क । विषम जोवन बे मांही ॥
कामी कलहु विच्छन्न । बहुत पचि हारो कांही ॥
पुंडीर कुंअरि सों रस रमत । दाहिम्मी चित्तह लगी ॥
सुभ लगन जोग दाहिम्म बर । दाहिम्मी राजन मगी ॥ छं० ११ ॥

विवाह का वर्णन ।

द्रुअन ढार उद्दार । भार फल पति भर भग्गे ॥
गढ बयांन सुभ थांन । सोभ कैलासहु लग्गे ॥
दोइ म्रहम दाहर दिवांन । पुत्र तीनहु परिमानं ॥
दोइ पुत्री सुविसाल रूप रति अंग सुजानं ॥
दाहिम सुराज कायम्म कलि । पल केवा सेवा करन ॥
प्रचंड वाहु महि उप्पियहि । लष्ष एक लष्षन भिरन ॥ छं० १२ ॥
काल प्रात कैमास । पलक चामड पग षद्धिय ॥
सूर नूर सम सथ्थ । सक्क पूजा सुर सिद्धिय ।
मेवाती मुग्गल सुतथ्थ । पुत्रि इक्कहु परनाइय ॥
बिय पुत्री सिर ताज । सुतो प्रथिराज ब्याहिय ॥
दोआंन मान चहुआंन दल । प्रथम कलस संभर धनिय ॥
उच्छाह बहुत मंगल करहि। गीत गांन अलि सुर बनिय ॥ छं० १३ ॥

विवाह का फेरा फिरना ।

करि तोरंन प्रकार । सार भारहु फन संकिय ॥
चौवेदी चौसाल । चिहु पच्छिम दिसि पंकिय ॥
कमला सन मुक कमल । बेद धुनि दुज किय सज्जिय ॥
चैत सुकल पष तीज । लगन गोधूलक रज्जिय ॥

कता सुजोग अमषंट तजि । लगन सुद्ध मम सुद्ध यति ॥
मंगलाचार फेरा सुफिरि । अचल राज अजमेर पति ॥ छं० १४ ॥

दहेज में आठ सखी, तिरसठ दासी, बहुत से घोड़े हाथी देना ।

सषी अट्ठ सिर ताज । अंग शृंगारि सुरँग बर ॥
सट्ठि तीन दासी सुचंग । बरष सत अट्ठ सरब्भर ॥
एक सत्त सुभ तुरँग । ढोइ पर्वे अैराकिय ॥
दोहथ्थी दस ढाल । रहे छहरिति मद छाकिय ॥
सुष पाल रअत सोभा सुशनि । सत पुत्तलि सेवा करै ॥
डाइ चोदिद्ध दाहिम दहन । भुज भुजंग कीरति करै ॥ छं०१५ ॥
सात गय्ज सु विसाल । सित्त साहन सुअ चंगल ॥
जर जरकस सिर पाव । सद्वि माला नग न्रिमल ॥
सहस एक सो ब्रंन । हुन्न दीनी चौहानं ॥
जिन मंग्यौ तिन दियो । करी कीरति सुप्रमानं ॥
उच्छाह कियौ दाहिम प्रथ । गढ उप्पर थंभह कर्‌यौ ॥
प्रति पुच्छि चंद दाहिम बर।परचि वित्त जल घर भर्‌यौ ॥छं०१६॥

दूहा – अति आतुर राजन मिलन । दाहिमी मुष दिट्ठ ॥
ज्यों बद्दल में कुमुदिनी । चंद चमकयौ निट्ठ ॥ छं० १७ ॥

पृथ्वीराज और पुंडीरनी की जोड़ी की शोभा का वर्णन ।

कवित्त – बर समुद्र चहुआंन । रतन मों रतन उपज्जै ॥
दाहिम्मी उर ग्रभ्भ । कित्ति आभूषन रज्जै ॥
इह सुबंध बंधनह । जुगति बंध्रन बर राजिय ॥
इह अमोल मोलंन । बहुमोल ग्रह फिरि माजिय ॥
इह परषयौ कविन कित्ती चसम । वह चसम परष्षन परषयौ ॥
इह सोभ राज राजंन महि । वह घर कंचन घरकयौ ॥ छं० १८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पुंडीरनी दाहिमो विवाह वर्णनं नाम षष्ठदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १६ ॥

अथ भूमि सुपन प्रस्ताव लिष्यते ।

(सत्रहवां समय ।)

पृथ्वीराज का कुंअरपन में शिकार खेलना ।

कवित्त—कुंअरप्पन प्रथिराज । राज आषेटक षिल्लहि ॥
जोव्वने मझ रवन । मूल पच्छिम दिसि मिल्लहि ॥
भालि बीर वाराह । हक्क बज्जी चालद्दिसि ॥
मुक्कि थान पंचांन । मिले सूर संमूह घसि ॥
लोहांनं बीर आजान भुअ । लोहा लंगर धाइया ॥
इह थांन चुक्कि अपथांन मुकि । पंचां नन रव छाइया ॥छं० १॥

हाथी घोड़े आदि का इतना कोलाहल होना कि शब्द सुनाई नहीं पड़ता ।

दूहा—पंष मबद गुंजत सुगज । है हींसत सद स्यानं ॥
गिर गुंजत परसद्द बहु । सद्द न सुनिये कांन ॥ छं० २ ॥

सिंह का क्रोधित होना ।

कवित्त—सद्दपति संभरिय । कांन मंडे रव सभलि ॥
ज्यों षल बयन प्रसंत । विप्र षोजै निगम मिलि ॥
गुन अंवगुन कुल बधू । सती पति वृता मानि मन ॥
नाग अंग चंपयो । किमार अग्गं फुल्यो मन ॥
षिझयो एम पंचाननह । बाय बास सुमंन फुलिय ॥
द्रिग षोलि द्रिष्ट भ्रगया सकल । तेज अंग कायर हलिय ॥छं०३॥

दूहा—कांनन सद्दन संभरत । कूह कलह आषेट ।
यह सूतो बर जग्गयो । सिसु दंपति घटि पेट ॥ छं० ४ ॥

कवित्त—दिष्ट राज अंमरिय संभरिय संपत्ते ।
के हूंके हक्काह । केक चावद्दिसि धत्ते ॥
के पाइल बर बान । मूल धारी उठि नट्ठे ॥
के असवार करार । हीन काइर ह्वै लट्ठे ॥
के गए मुक्कि पाइल भ्रगय । वीर छंटि तक्कार परत ॥
दिष्षयौ लंग लंगावली । वियो न कोइ धीरज धरत ॥ छं० ५ ॥

सिंह का महा क्रुद्ध होना ।

सुनिब सूर बर हक्क । धक्क बज्जी चावद्दिसि ॥
नरन सद्द कानन प्रसद्द । सिंघ किन्नो सु क्रोध ग्रसि ॥

बीरा रसु बिहुरिय । पुंछि सिर झारि झपट्टिय ॥
दीप नयन प्रज्जरिय । लंग दिसि लगें लपट्टिय ॥
बल अतुल तोल तोल्लंत पय । बुल्यौ मन सद्दह गुहिर ॥
फटिय धरकि मानहु गगन । भिस सनेह संगन बहुन ॥ छं० ६ ॥

दूहा—आषेटक दरसे सकल । सिमु मिघनी त्रिच मिघ ॥
स्वान देषि मुहु रव करत । ओलंघे नरसिंघ ॥ छं० ७ ॥

सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज का तलवार से सिंह को मारना ।

कवित्त—सबै सेन अवसान । मुविक लग्यौ बर तामस ॥
तब पंचानन हकि । धकिक चहुआनां पामिस ॥
लै कमान बिय बांन । षंचि नंष्यौ बिय चुक्यौ ॥
समर सिंघ सब सथ्य । तथ्य चावद्दिसि हुक्यौ ॥
झंकरिय डहकि विज्जुल लहकि । षग कढ्यौ सोमेसजा ॥
चंप्यौ नरिंद अवसांन तकि । षंडो डारिय हथ्यता ॥ छं० ८ ॥
चंपि स्वामि बिहुरिय । लोह संजुरि नग मुक्यौ ॥
लोहा लंगर राइ । बीर अवसान न चुक्यौ ॥
स्वांमि सथ्य परिबथ्य । रुंड धर वर उथ्थारे ॥
रुहिर अंग झंझरिय । सिंघ गारिय अष्षारे ॥
बन राय बीर बन हित रुष । सूर स्वांमि ध्रंमं सुरसि ॥
चर नग बीर तल बज्जय । सबर जोर जम दढ्ढकसि ॥ छं० ९ ॥

दूहा—लगे लोह उचाइ करि । अरु चावद्दिसि चाहि ॥
हथ्थ आइ कर तोन द्रढ । बर कमान कर साहि ॥ छं० १० ॥

कबित्त—द्रढ कमान मुट्ठिय प्रमान । गह्यौ तकि तोन जोर कर ॥
बरकि बरकि बंगाल । चितत चंचल सु बोलि गुर ॥
गुंजि गरज भूभांन । जग देवत्त रत्त जुअ ।
नचि निवेस तजि बाल । सिंघ सम बीर इक्क हुअ ॥
आषेट तजिय चल्लिय सुभर । बिबिध्र मिघ दिष्षन दिसा ॥
सम बीर बीर एकत भए । तहा दिष्यौ सोमेस जा ॥ छं० १० ॥
षेघ लगिग छुटि बीर । सुबर दिषि बीर अष्ट क्रम ॥
सोमेसर सुअ सूर । लयौ पर तोजिम रवितम ॥
मुष्टि दिष्टि मरदां मरद । मिले पंचानन सूरं ॥
पिता भ्रात बेबंध्र । द्रव्य अघो अघ पूरं ॥
मय भाग तक्किय सिंघह सुहय । तुला मूल लंगी चढ्यौ ॥

उप्पमा चंद सुनि सुपन ज्यौं । सुबर बीर देही दरुयौ ॥
उप्पमा चंद सुनि सुपन ज्यौं । सुबर बीर देही दरुयौ ॥ छं० १२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की धूम धाम का वर्णन, पृथ्वीराज का एक पेड़ की छाया में अपने सरदारों के साथ बैठना।

छंद पद्धरी—आषेट रमत प्रथिराज रंग । गिरवर उतंग उद्यांन ढंग ॥
उत्तंग तरुन छाया अकास । अनेक पंषि क्रीडहिं हुलास ॥
सुब्बा सरास छुट्टे सुगंध । तहां भ्रमत भोर बहु बास अंध ॥
फल फूल भार नमि लगी साष।नासा सुगंध रस जिह्व चाष॥छं०१३॥
पन्नग प्रचंड फूंकर फिरंत । देषंत नरहु ते करत अंत ॥
अनेक जीव तहां करत केलि । बट बिटपि छांह अवलंबि बेलि ॥
इक घाट विकट जंगल दुअर । तहां बीर मूल पिप्पल कुंआर ॥
वामंग अंग चामंड राय । चूकै न मूंठि सो काल घाइ ॥ छं० १४ ॥

दाहिनि दिसा कन्हा सुजोध । सम ब्रह्म सस्त्र सम ताहि क्रोध ॥
लोहांन पिठ्ठु बैठो प्रचंड । जंनार जोर जम देन दड ॥
ढिग कन्ह बैठि पुंडीर धीर । आजान बाहु बज्री सरीर ॥
चामंड अंग कैमास काल । जीवार जोध पसु धरनि घाल ॥
तिन अग्ग आइ पज्जून राइ। सब षेल निपुन पसुदाइ घाइ । छं०१५॥

दुअ ओर और सामंत जूह । षेदानि जोर करि करी कूह ॥
कर जोरि मेन सात सहस सथ्थ । उड्डंत पषि गहि लेंइ हथ्थ ॥
जुर वाज कुही तुर मती धारि । उड्डंत जीव ते लैंहि पार ॥
सच लैंहि स्वांन ते रोझ भुम्मि। पिप्पियं जु करक बिन मंस भूम्मि ॥
। छं० १६ ॥

सकल अनेक उठ्ठे वराह । बट बंटि मंसनह तुट्टि थाह ॥
सा मरन सूर परि बथ्थ लेहि । ते बटि बंटि सब सथ्थ देहिं ॥
षरगोस स्वांन नह लहत बाटि । फिरि चढ़े जीव ते ओठ चांटि ॥
अगमाल पवन उठि चले भागि । तिन परसु तीर सरवसि आगि ॥
॥ छं० १७ ॥

अनजीव जीव वष्षांन कोंन । सिकार लग्गि इन हाल होंन ॥
सब सथ्थ तथ्थ हुअ एक जुट्टि । गज्ज्यो सु सिंघ जनु गगन फुट्टि ॥
धपि चल्यौ बीर प्रथिराज धीर । लंगरिय लोह तहु इक्क तीर ॥
दिष्यौ सुजाइ सिंघनिय बाल।अवतार धरिय जनु पुहमिकाल॥छं०१८॥
गरु राइ गुंग गज्यौ गरूर । उच्चाइ पुछ मनु पुहमि चूर ।
हुयवांन हथ्थ हाकंत व्याल । दहरनि दौरि मनोद बटि व्याल ॥

आकास सीस दृढ़ प्रचंड । जम रूप जीव ताडंत तुंड ॥
हन्यो सुराइ संजम कुंआर । छुटयो सु तेज जनु तीर तार ॥छं०१९॥
भए लथ्थ बथ्थ नर जीव जोध । न्रप अग्ग केलि जनु मल्ल क्रोध ॥
गल बांह घल्लि दब्यो सुसूर । फार्‌यो सु उदर जम दढ्ढ पूर ॥
हथवाह एक केहरिय कीन । पय हथ्थि अंषि करि कंन हीन ॥
आये सु दौरि सब सथ्थ जाम । लंगा सघन्नि इम कहिय स्वांम ॥
॥ छं० २० ॥

संजम राय के बेटे का बीरता दिखलाना ।

दूहा — संजम राइ कुमार बल । करि संजम नृप ध्रंम ॥
इक्क मिक्क एकत भए । अप्प चम्मं पसु चम्मं ॥ छं० २१ ॥
गजनि कुंभ जिसि हथ्थ हनि । फारि चीर धर डार ॥
संजम राइ कुमार सो । बथ्थन मारि पछारि ॥ छं० २२ ॥
रीछ रोझ बाराह हनि । दढ्ढन बढ्ढे कोरि ॥
तिते जीव उर मझ्झतें । कढि जम दढ्ढे फोरि ॥ छं० २३ ॥
गिरि परबत नद षोह सर । लघत लगी न बार ।
लंगा इक्कन लघयो । अनी धार धर धार ॥ छं० २४ ।

पृथ्वीराज का प्रसन्न होना और उसकी पीठ ठोंकना ।

कवित्त - भौ प्रसन्न प्रथिराज । बोल बुल्ल्यो सुलगरिय ॥
इत्तो देऊं प्रचंड । पच जो मद्धि मोरि जिय ॥
अद्धा राज सु अद्ध । पाट अद्धा तबूल ॥
अद्धा बेस सुदेस । करों आदर संमूल ॥
बोलंत बैन प्रथिराज सुनि । जीव लज्जि नीची नजरि ॥
लगाइ कंठ ठुकि पिठ्ठ कर । भलो भलो सब सथ्थ करि ॥छं० २५॥

दूहा — जब दैवत्त दिवाइहै । तब सच्चा मुझ बैन ॥
म्रिग तिस्ना ज्यो देषियै । प्यास न बुझ्झै नैन ॥ छं० २६ ॥
सुपनंतर की प्यास ज्यो । भजै मही किहि भंति ॥
जब देहौं तब पूजिहै । जो मन मझ्झह पंति ॥ छं० २७ ॥

सब लोगों का आगे बढ़ना, एक शकुन मिलना ।

इह कहि करि अग्गें चले । मिले सूर सब संग ॥
तब दिष्यौ इक सगुन वन । भए सबन मन पंग ॥ छं० २८ ॥

शकुन को देख कर सब को आश्चर्य होना ।

बत्त कहत प्रथिराज ने । पिष्यो सगुन नृपत्ति ॥
सकल साथ अचरिज भयो । देषत इहै चरित्त ॥ छं० २९ ॥

एक सर्प को नाचते हुए देखना।

कवित्त—अहि सुरंग मनि दुत्ति। देवि मंडे तंडव गति ॥
बालमीक विल अग्र। इक्क फनि कुटिल क्रोध मति ॥
इक्क हथ्थ बिच विहथ। थांन उंचो रवि संह्यौ ॥
बर संमल उर चंपि। तेज जाज्जुल्लि सुचिन्हौ ॥
आचिज्ज देषि प्रथिराज तब। हक्कार्‌यो पामर सहर ॥
धावर सु कन्ह चहुआंन को। बोलि वीर चच्चिग महर ॥छं०३०॥
महर कहर करिवार। भार जिन जुद्ध कन्ह बर ॥
नरनाहां बर गढ। गाह गिर दीह दुअन घर ॥
मति जोतिग सहदेव। सगुन आगम गम जांने ॥
प्रबल मैबासन मारि। उथपि थप्प थिर थांने।
बिर दैत दमित आजांन भुअ। उर किंवार वर बज्र जुअ ॥
छुट्ट न किमह जे क्रोध तजि।दुअ महिष निवारै भुजनि दुअ॥छं३१॥

पृथ्वीराज का इस सर्प को देवी के शकुन का फल पूछना।

छंद पद्धरी—आयौ सुमहर महरन नरेस। जिहि सुनत चढि भगि जात देस॥
उभिद अंग उत्तंग कंध। बर बाहु वज्र अरि घर असंध ॥
बेहथ कलाइय हथ्थ जाहि। पग दोरि त्रियन बर रह्यौ गाहि ॥
महिषी सु उभय पय टांसि जाइ। कलहंत क्रोध दिष्षय बलाइ ॥छं० ३२॥
रष्षत सु निजरि सब अग्ग पच्छ। चुक्कवै चोट हनि तुच्छ तच्छ ॥
छल छेद भेद तस करन राव। पर भूमि श्रप्प दस धरै दाव ॥
दुअ सहस महर जिन संग जोध। कमनैत काल अनमी अबोध ॥
बहु ब्रषभ गाय महिषीन तुंग। छेली छयल्ल गडरन्न पुंग ॥ छं० ३३ ॥
घुंमत मथांन जिन घरन घोर। आगम अषाढ जनु घटा मोर ॥
बेपार दुग्ध जिन घरन षर्च। अनभंग बुद्धि जिन समर चर्च ॥
बिरदैत एक वांने न धार। चमरैत एक इक तबल तार ॥
सिर वहै बिदर पग पच्छ देन। द्रिग समर देषि मिर लषत गेन ॥छं०३४॥
गुज्जर अहीर असि जाति दोइ। तिन लीह लोपि सक्कै न कोइ ॥
चाचिग हजूर कुम्मार आइ। करियै हुकंम मिर त्यौं चढाइ ॥
बुल्ले सुबैन चहुआंन राउ। कहि सगुन सर्प देवी प्रभाउ ॥ छं० ३५ ॥

ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से आपको बहुत धन मिलेगा।

दूहा—महर कहर गति बैन कहि। ज्यों बुल्लै तुजबैन ॥
घरी एक सम्ह्यौ रहै। तौ लछमै नृप चैन ॥ छं० ३६ ॥

कुंडलिया—मंने संभरि बार मुनि । इह अपुब्ब गति इच्छ ॥
मज्झ छदन धरि इक्क मैं । आवै भूमि रु लच्छि ॥
आवै भूमि रु लच्छि । पषि माता इह सारी ॥
दल जित्ते षुरमांन । कित्ति जग ज्यों विसतारी ॥
इन सगुननि चहुआंन । तुच्छ दुष अतिहि अभन्नो ॥
बिन जुद्धइ इह लग्ग । द्रव्य निकसै आभन्नो ॥ छं० ३७ ॥

दूहा—कुटिल दिष्ट तिन चिन्त करि । कही महर इक बात ॥
सो ब्रह्मा नन जांनई । बात भविष्षन षात ॥ छं० ३८ ॥

पृथ्वीराज का देखना कि सर्प आधा बिल में है और आधा बाहर, उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारो ओर नाचती है और राजा पर प्रसन्नता दिखलाती है।

कवित—संभलि पिथ्थ कुमार । व्योम दिष्यो स्रप सारिय ॥
अद्धो बंबी मध्य । अद्ध उँचो अधिकारिय ॥
ता फनि ऊपर मनि प्रमांन । देवि चावद्दिसि नंचै ॥
दिष्यो इछ मन मंडि । राज दिसि सगुनह संचै ॥
आवै न पच्छ तथ्यह निजरि । नृपति हियं अत्यंत सुष ॥
जंपयो महर धावर धनू । सगुन बीर जानै सरुष ॥ छं० ३९ ॥

देवी का इतने में उड़कर आम की डार पर बैठना और साग गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना।

दूहा—इतें देवि उडि बैठि अँब । चंच गिराइय साग ॥
दौरि महिर तब हथ्थ किय । लै नरिंद तुअ भाग ॥ छं० ४० ॥

सर्प सर्पिनी का मिलना और वहां से दूसरी जगह उड़ जाना।

सर्प आंनि सर्पिनि मिलिय । भषु दीनो तिन षाइ ॥
निय आसन थल छंडि कै । अन्न स्थल उडि जाई ॥ छं० ४१ ॥
इह अचिज्ज पिष्षिय सकल । चाचिग पुछि फिरि बत्त ॥
तुम जानो सब फल सगुन । महर कहर मत तत्त ॥ छं० ४२ ॥

इस शुभ शकुन का फल वर्णन।

छंद पद्धरी—तब बत महर तिन कही बत्त । या सगुन लाभ वरन्यो न जत्त॥
दिन तुच्छ मद्धि धन लाभ होइ । ता पच्छ कंक दुअ राह जोइ ॥छं० ४३॥
तुम जैत होइ भग्गो बलांन । धन जुद्ध लाभ लब्भै बलांन ॥
इह लाभ महूरत इनो देव । पल भूमि अदेव तो करै सेव ॥ छं० ४४ ॥
संसार कित्ति बहु चक्क होइ । बंदै सुबाहु बल दीन दोइ ॥
सागुन्य सगुन फल कहे जब्ब । प्रमुदित मन चहुआंन तब्ब ॥ छं० ४५ ॥

जिम मेह मोर आनंद होइ। राका रयनि आनंद तोइ ॥
रिति राइ पाइ तरु फलत फूल। जिम सिद्ध सेव हिय हरत सूल ॥छं० ४६॥
जिम मंत्र सक्ति साधक लहंत। रस धात रसाइन लहि चहंत ॥
जिम इष्ट लाभ आराध्य वंत। प्रमदा मुदित जिम आइ कंति ॥ छं० ४७ ॥
तिम भयो सुष्ष प्रथिराज अंग। बजि पंच सब्द बाजै सुरंग ॥ ४८ ॥

शिकार बंद कर के वन में पृथ्वीराज का डेरा डालना।

दूहा—पंच सबद बाजित्र बजि। तजि म्रगया चहुआंन ॥
कानन मध्य सु उत्तरिय। किन्नौ कुअर मिलांन ॥ छं० ४९ ॥

डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वीराज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना, सब का ठंढा होना, भोजन की तयारी।

छंद नाराचा—कर्‌यो मिलांन राजयं। बरनि कब्बि राजयं ॥
फिरंग सू फनक्कसी। जरद्दु जंज रक्कसी ॥ छं० ५० ॥
सुवंन वंस राज्जतं। उभं सुमज्झ मज्झतं ॥
फिरंन सूर लग्गतं। अजब्ब जेव जग्गतं ॥ छं० ५१ ॥
गिरिद्द डोरि रेसमं। सुपंच रंगयं भ्रमं ॥
तने तानव तंबुअ। करे सुपद्धरं भुअं ॥ छं० ५२ ॥
विछाइ कैंदुली चयं। धरे प्रजक वीचयं ॥
सवारि सेज़ पथ्थर। सुगंध फूल विथ्थरं ॥ छं० ५३ ॥
गरम्म रूम तोसयं। ढक पलंग पोसयं ॥
कनंक मैं सिंघासन। अछादितं सुवासनं ॥ छं० ५४ ॥
धरे सुपिठ्ठ तक्किए। अतल्ल संत ढक्किए ॥
अगें अबन्नि अंगनं। सिका करै छिरक्कनं ॥ छं० ५५ ॥
कुंमकुमा गुलाबय। सुनेक छटि आबयं ॥
तहां सु बैठि पिथ्थयं। करै अषेट कथ्थयं ॥ छं० ५६ ॥
अनेक भंति चंदयं। पढै विरद्द छंदयं ॥
सामंत सब्ब नम्मियं। मिलांन अप्प क्रम्मियं ॥ छं० ५७ ॥
सें हथ्थ चाहुआनयं। दए कपूर पानयं ॥
षवास पास वानयं। हजूर उभ्भ आनयं ॥ छं० ५८ ॥
विरष्ष बट्ट जंबुअं। षिरन्न जट्ट अंबुअं ॥
गयंद बंधि अंबुअं। झरंत मद्द बिंदुअं ॥ छं० ५९ ॥
करंत केलि सारसी। मलप्प ते महारसी ॥
विरद्द नेंक बोलते। पलक्क चष्ष षोलतें ॥ छं० ६० ॥

महावतं पुकाररतें । हुठं न लै अहाररतें ॥
पियंत नीर यों गरैं । गरज्ज नभ्म ज्यों गरैं ॥ छं० ६१ ॥
कपोल लोल हुल्लते । चबेल सुंड झल्लते ॥
गिलोल चोट लग्गतें । विरष्ष ओट भग्गतें ॥ छं० ६२ ॥
दिपंत दंत उज्जलं । पहार पंति कज्जलं ॥
दुरद्द हद्द बेसके । दियें गनेस भेस के ॥ छं० ६३ ॥
सुपीलवान उभ्भयं । चरष्षि गट्ठु षुभ्भयं ॥
करे तुरंग काइजं । भरें भमंन बाइजं ॥ छं० ६४ ॥
मिटै डरं पसीनयं । पलान दूरि कीनयं ॥
न्हवाइ नष्ष सिष्षयं । अछादि कंध रष्षयं ॥ छं० ६५ ॥
रतब्ब दे अहासयं । करे त्रपत्त घासयं ॥
ता पच्छ जाइ साहनी । अरांम पंड वाभनी ॥ छं० ६६ ॥
कहूं करं भलारयं । भरी रषत्त भारयं ॥
अनूचर उतारयं । संभारि ढार ढारयं ॥ छं० ६७ ॥
हुलास सेन उप्पजै । भोज्जंन भष्ष निप्पजैं ॥ छं० ६८ ॥

सब लोगों के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना ।

दूहा—करि मिलांन मध्यांन हुअ । न्रिपति भोज छह् भंति ॥
एकत मिलि आहार हुअ । रही न मन कछु षंति ॥ छं० ६९ ॥

संध्या होने पर सब लोग घर लौटे ।

मादक में नउ दीप किय । बढ्ढि सुगंधन तार ॥
निसि आगम बहुरे ग्रहन । जित तित भूपन भार ॥ छं० ७० ॥

पृथ्वीराज का घर पहुंच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को स्वप्न में देखना ।

चढि करि संभरि वार चलि । ग्रेह सपत्तो जाइ ॥
अंधारी दारुन निसा । भू सुपनंतर आइ ॥ छं० ७१ ॥

भूमि देवी के रूप सौन्दर्य का वर्णन ।

कवित्त—पीत बसन आरुहिय । रत्त तिलकावलि मंडिय ॥
छूटिय चंचल चाल । अलक गुंथिय सिर छंडिय ॥
सीस फूल मनिबंध । पास नग सेत रत्त बिय ॥
मनों कनक साषा प्रचंड । गहै काली उप्पंम रुच ॥
मनो सोम सहायक राहु होइ । कोटि भांन सोभा गही ॥
अदभूत ग्रष्य ससि अहि गल्यो । साष सुरंग भमावही ॥ छं० ७२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस समय यहां क्यों आई हो।

दूहा—सुरंग त्रिया सोभो नृपति। वचन सुपन कहि लाल॥
का तूं सुंदरि किन बरन। क्यों ऊभी इहि काल॥ छं० ७३॥

भूमि देवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूं, मेरे लिये सुर असुर सब शंकित रहते हैं पर जो सच्चा वीर मिले तो मैं बहुत रस भवती हूं।

कवित्त—वीर भोग वसुमती। बीर भोगी वर चाहौं॥
हाई भाइ कटाच्छ। बीर बीरां तन साहौं॥
वीरां पी पद्धरी। विना वीरां वर बंकिय॥
हुं दिव्य नारी एह।। सुरां असुरांनह संकिय॥
मिष्टांन पांन बहु भोग रस। रस सुगंध वीरन द्रष्षौं॥
अनभंग वीर जोहित्त वरि। रस अनेक निहचै श्रष्षौं॥छं० ७४॥

गाथा—पंक जनय नीवामं। सुपनंतर राज दिट्ठायं॥
जानिज्जै रति अंगं। कामं उछाह दीपयं मालं॥ छं० ७५॥

राजा का विचार में मग्न होना।

कवित्त—मन लगौ बिभमित विचार। राज चिंता उप्पंनिय॥
भोमि बयन मन मझ्झ। सु कर वर गहि कर लिन्निय॥
सुभ लच्छिन उत्तंग। अंग अंग गुन पिन्निय॥
ता समांन छवि वांम। आंन करतार न किन्निय॥
मानीक वंस दानव कुल्लह। भोमि चरन्न निवास करि॥
जै जया सबद सुरपुर भयो। करै केलि कलि इंद्र सर॥ छं० ७६॥

पृथ्वीराज से भूमि का कहना कि षट्टू बन में अगनित धन है।

दूहा—कहै भूमि प्रथिराज सों। स्तुति दे करि मन सुद्धि॥
बसै द्रव्य अगनित सगुन। षट्टू पुर बन मद्धि॥ छं० ७७॥

अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वापर में था, उसने वहां असंख्य धन रक्खा है॥

कवित्त—अजैपाल चक्कवै। द्रुग्ग अजमेर द्वापरह॥
तिहि बानिक पुर सिद्ध। लिषिय संजीत अपारह॥
हेम कोटि हा हून। इन देवर घर मझ्झह॥
घरी आइ इक पहर। देव देवी तत सुझ्झह।
अस्नांन काल पूजादि बहु। तहं पत्तौ दुज राज बर॥
अप्पी असीस मंगी लछिय। कांम कह्यौ दुजराज नर॥ छं० ७८॥

इक्क सहस अपि द्रव्य । फेरि विप्रह अप्रमानं ।
सुनी सलछि बर बिप्प । दई सुमहा बर थानं ॥
फिरि पत्तो तहां राज । दियो तब श्राप दुज्जबर ॥
श्रप्प भयो सुइ राज । रहै धन रष्षि गइयो घर ॥
मो मति द्रव्य तिहि थान रहि । तास मोह राजन करै ॥
षायो न कोइ षैहै न को । यो अरत्त अर्जुन फिरै ॥ छं० ७९ ॥

दूहा—को गहुं षायोति को । को विलसै करि भेव ॥
माया छाया मध्य दिन । ज्यो बिषया बल देव ॥ छं० ८० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके भूमिस्वपन
नाम सप्तदशो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १७ ॥



अथ दिल्ली दान प्रस्ताव लिष्यते ॥

(अट्ठारहवां समय ।)

अनंगपाल के दूत का कैमास के हाथ में पत्र देना ।

दूहा—दिय पत्री कैमास कर । अनंगपाल कहि दूत ॥
बर बंची सामंत सत । न्निमत अष्पर नूत ॥ छं० १ ॥

पत्र में अनंगपाल का अपनी बेटी के बेटे पृथ्वीराज को लिखना कि मैं बूढ़ा हुआ, बद्रिकाश्रम जाता हूं, मेरा जो कुछ है सब तुम्हें समर्पण करता हूं ।

साटक- स्वस्ति श्री अजमेर द्रोन दुरगे । राजाधिपो राजनं ॥
पुत्री पुत्र पवित्र पथ्थ अघनो । पित्री सबं तावनं ॥
मा वृद्धा इह बिद्ध तप्प सरनं । बद्री निवर्तं तनं ॥
आभूमं पुर ग्राम हय गय समं । संकल्पितं त्वार्थयं ॥ छं० २ ॥

पत्र पढ़कर सब का विचार करना कि क्या करना चाहिए ।

दूहा—बंचि पत्र कैमास कर । नृप सामंत समंत ॥
आइ दूत दिल्ली पुरह । सुबर बिचारहु मत ॥ छं० ३ ॥

कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिए, कोई कहता है पहिले पृथा कुंआरि का ब्याह रावल समरसिंह के साथ करना चाहिए ।

चौपाई—इक कहै दिल्लीय चलि राजं । मातुल बोलि तुमं प्रथिराजं ॥
इक्क कहै भगिनी परनाइय । समर सिंघ चित्रंग सुराइय ॥ छं० ४ ॥

कवित्त—समर सिंघ रावर नरिंद । चित्र चित्रंग देव दुति ॥
तिन सगपन संमुहो । राज जानंत राज गति ॥
कै दिल्ली दिसि चलहि । बाल सेंवर अधिकारिय ॥
सोमेसर पितु मतें । करिय जिन बोल सुभारिय ॥
आवै न मंत श्रिय बंध वृत । अनंगपाल संमुह चल्लिय ॥
ता पच्छ प्रथा आगम सु प्रय । देवमत्त ब्याहं धुलिय ॥ छं० ५ ॥

राजा सोमेश्वर सब सामंतों को एकत्र कर परामर्श करता है कि क्या कर्तव्य है, पुंडीर राय ने सलाह दी कि आता हुआ राज्य न छोड़ना चाहिए ।

सिध सामंत रु नृप्प । बैठि सब सभ्भय मंतर ॥
कैमासह चामंड । राय रामह बड गुज्जर ॥

हाहुलि राय हमीर । सलष पांमार जैत सम ॥
कह्यौ राज हम मात । तात अप्पी दिल्ली तम ॥
पुंडीर राइ इम उच्चरै । करो सकल आदर सुभर ॥
उप्पाइ अनंत महि लिज्जिये । आदि ध्रंम अंमर असुर ॥ छं० ६॥

चंद बरदाई का मत पूछना ।

चौपाई—सब भट पूछि पूछि कवि चंदह । तुम बरदाइ लहौ बुधि कंदह ॥
किम अप्पै पितमात धरंनिय । सब बिरतंत कहो मन करनिय ॥ छं० ७ ॥

चंद ने ध्यान करके देवी का आह्वान किया और देवी की आज्ञा से कहा ।

तब बरदाइ सुद्ध मन कीनो । सुमरिय सकति ध्यांन मन लीनै ॥
देवी आइ कह्यौ बर तंतं । सो अप्पै प्रथिराज सुमंतं ॥ छं० ८ ॥

व्यास ने जो भविष्यत बानी कही थी वह सुनाकर चंद का कहना कि आप का राज्य खूब तपैगा ।

कवित्त—पुब्ब कथा बरतंत । कहो व्यासह ज्यों चंदह ॥
सही भविष्यित बात । सुनी मो होइ नरिंदह ॥
तोंअर बद्दी जाइ । पय समप्पै चहुआंनं ॥
तपें तेज रवि जेम । कहों सरसें परवानं ॥
इह मत्त सत्त मन्नो मनह । अरु पुब्बह मंत्री सपुन ॥
सामंत सित्त धर ध्रंम रत । सों पुब्वहु सच्चहु अपुन ॥ छं० ९ ॥

दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना (?) को वैराग्य क्यों हुआ ।

दूहा—दूत हजूर बुलाइ करि । पुच्छत पिथ्थ कुंआर ॥
क्यों मातुल हुअ धर अरत । सो कहो सत्त विचार ॥ छं० १० ॥

दूत का अनंगपाल की प्रशंसा ।

गाथा—दिल्ली अनंग नरिंदं । दंदं दहन दुअनं दलनायं ॥
त्रिगुन तेज सुअंगं । पुहमी इंदं पहुमी सरनायं ॥ छं० ११ ॥

अनंगपाल का प्रताप कथन ।

दूहा—बंक नृपति इक अंक लौ । मिटत करब्भर पांन ॥
इम इच्छै अवनी अटल । सत्रु न सुनियै कांन ॥ छं० १२ ॥

कवित—गज गज्जत दरबार । घुरत दमंम बहु धुअ ॥
बज्जत हय षुर तार । गाल गुज्जत सु डंट मव ॥
तंत तान झंकार । भमर गुंजार बास रस ॥
मुकट बंध राजान । लीन सेवंत हुकंम बस ॥
यों अवनि इंद्र तूंअर तपै । कंपै रोर मोजन मनह ॥

घय बरन सरन सुष्षब रसहि। दुष्षन[1] किहि दिष्षिय तनह ॥छं० १३॥

अनंगपाल के राज्य में दिल्ली की शोभा वर्णन।

अनंगपाल तोंअर सुढाल। सोज वासंत दिल्लीय बर॥
घर सुहार कालिंद पार। अठ्ठार ब्रंन घर।
बर बिहार प्रक्कार। बिपन वाटिका बिराजिय॥
ग्रिह उतांन वतांन। गोष जाली उच साजिय॥
सब लोक असोक अनंद में। अप्प अप्प रह उद्धरिय॥
जाजंन जाप अद्धा परषि। होम धोम धू विध्धुरिय॥ छं० १४॥

अनंगपाल का वृद्धावस्था में सपना देखना कि सब तोंअर लोग दक्षिण दिशा को जा रहे हैं।

अति तोंअर परिवार। वृद्ध बहु रिद्ध अनूप॥
ध्रम क्रंम बहु रीति। चलै सब लोक सु कूपं॥
बीर सेन सुत बीर। पाल बहु काल धरंत्रिय॥
मन लग्गौ वैराग। करत क्रन ऊंच करन्निय॥
निसि मध्य सुपन पिष्षियै दुरय। सब तूंअर दक्षिन चलै॥
आरत्त माल कंठह कुसुम। दूरि मग्ग षोनी मिलै॥ छं० १५॥

स्वप्न से जागकर अनंगपाल का हरि स्मरण करना।

अनंगपाल पहु सुपन। देषि अप्पन चल चित्तहि॥
हरि हरि हरि हरि चवै। इष्ट फुनि भूत बिहत्तह॥
निसा जांम इक सेष। अप्प सुपनौ फुनि पिष्षिय॥
अप्प तरुनि सम उट्ठि। तिथ्थ थानक तप दिष्षिय॥
इह लष्षि चित्त चंमकि नृपति। पांनी पाय अंदोलि अप॥
नरसिंघ नाम जंपिय पृथुक। सुत पुन नहीं पवित्त बप॥छं० १६॥

दो घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक सिंह यमुनाजी के किनारे आया है, दूसरा उस पार से तैरकर आया, दोनों सिंह आमने सामने बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे, इतने में नींद खुल गई, सबेरा हो गया।

घटिय उभै निसि सेष। ताम सुपनौ फुनि पिष्षहि॥
तट कालिंदी तीर। सिंघ क्रीड़त दिब दिष्षहि॥
ताम समै इक सिंघ। पार उत्तरि जल आयौ॥
उभै स्यंघ सा मिल्या। नेह क्रीड़ा दरसायौ॥

---

1. मो०—दुबन।

बैठो सुसिघ हथ मंडि करि। बैठि सनंमुष सिघ दुअ ॥
जगायो बीर सिघहु सुतन। नाम सुपिच्छो प्रात हुअ ॥छं० १७॥

अनंगपाल का व्यास जगजोति को बुलाकर स्वप्न का प्रश्न करना।

तब तूंअर चित चक्रत। उठि एकंत मंत हुअ ॥
हरि जोतिहु जग जोति। बोलि दैवग्य तथ्थ दुअ ॥
दिय आसंन तमोर। बचन आभासि भाव दिय ॥
कहो सुपन विरतंत। आदि अंत कारंन तिय ॥
संभलें सुपन मन दुज दुमन। देषि राज बुल्यौ न हसि ॥
क्रित कहौं सब छंडो दुमय। सब न्रिम्मान सुकाल बसि ॥छं०१८॥

व्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चोहान का राज्य होगा जैसे सिंह आया था, सो तुम भला चाहो तो अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो।

तब दैवग्य विचारि। एक एकन पुष लोकिय ॥
सब गंठी न्रिम्मान। एक कारन चिन दो किय ॥
कहूँ सुनौ सुन बीर। दिल्लि चहुआंन निवास ॥
ज्यों दिष्यो तुम सिघ। मिलै तूंअर मम तासं ॥
तप सद्धि तुमहु सद्धो सरग। जो इच्यौ उड्डुन अपन ॥
तूंअर विनास अग्गहु अतुल। सब भविस्य कारन सुपन ॥छं०१९॥

इस भविष्यबानी को सोचकर विचार करना कि दिल्ली का राज्य अपने दौहित्र चोहान को देना चाहिए।

दूहा— सबै भविस्य बिचार मन। पुत्रि पुत्र चहुआंन ॥
तिहि अप्पो दिल्लिय सुदत। पमरं क्रित्ति प्रमांन ॥ छं० २० ॥

अनंगपाल का मन में यही निश्चय कर लेना कि पृथ्वीराज को राज्य देकर बनवास करना चाहिए।

कवित्त— बालप्पन पन ज्वांन। गतहु व्रिद्धप्पन आयो।
एक समे एकंत। चित्त परब्रह्म लगायो ॥
पुत्र होइ संसार। भूमि रष्षै षल षंडै।
बढ़ै वंस विसतार। क्रित्ति दसहूं दिसि हुंडै ॥
अब करों जोग जंगम जुगति। भुगति मुगति मंगो हरिय ॥
पुत्तीय पुत्त अप्पों पुहमि। इम चितन मन में धरिय ॥छं० २१ ॥

अनंगपाल का मंत्रियों को बुलाकर मत पूछना।

छंद पद्धरी— बोलेति मंत मंती प्रमांन। स्वामित ध्रम जे अंग जांनि ॥
रामहु सुराज चितै सदाय। धुर ध्रंम्म रूप बांनी बदाइ ॥ छं० २२ ॥
एकंत महल राजन बयट्ठ। गुदराइ बोलि दरबांन तट्ठ ॥

संसार विरत मन दिष्षि राज । चीकट्ट कुंभ जल बूंद भ्राज ।। छं० २३ ।।
अग्यांन चित्त ज्यों दिढ्ढ ग्यांन । लोभीय चित्त ज्यों हरि न ध्यांन ।।
कुलटा सुनैंन नहि लज्ज जेम । कपटीय मनह नहि प्रेम नेम ।। छं० २४ ।।
बांनिक बनिज नहि प्रीति अंग । दिष्यौ सराज इन परि बिरग ।।
बुल्ले सु बिनय करि बैंन एव । कछु दुचित अज्ज मन लगत देव ।।छं०२५।।
प्रति वात कहिय अब हमहिं ईस । बिनु पुत्र सत्रु संसार दीस ।।
नृप वंस अंस जो पुत्र होइ । अवनीय अप्प रप्येति सोइ ।। छं० २६ ।।
पुत्री सपुत्र चहुआंन पिष्य । तिन देंउ राज मो सरन तिथ्थ ।।
मंत्रीन मंत तब कहिय राज । चव जुगनि जुगति जे भूमि काज ।।छं०२७।।
जिहि जियत जीय धर रमै ओर । तिहि नृप मही कहि लोक ठौर ।।
जनमंत पुब्ब जिन तप्प होय । करि कष्ट कष्ट तप भूमि जोइ ।।छं० २८।।
धर पाइ राइ धर ध्रंम बढ्ढि । धर ध्रंम क्रम सुरलोक चढ्ढि ।।
जो गंग जुगति कल कठिन कांम । कहु षंगधार बिश्रांम ठांम ।।छं० २९ ।।
हम सीष मांनि अनंगेस राइ । भूमिय सु तजै सुष कित्त जाइ ।।
मंत्रीन राज तब कहीय बत्त । मानों कि वैर गहि गुंग गत्त ।। छं० ३० ।।

मंत्रियों का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनता से होता है इसे न छोड़ना चाहिए।

अरिल्ल ते मंत्री जंपिय नृप बत्ते । किहि गुन राज भूमि अनुरत्ते ।।
गति अगत्ति जिन धर पर अप्पी । तिहि धरपति धर कैंबहु न रप्पी ।छं०३१।
कवित्त - जो धरपति धर छंडि । भ्रम्यो नल राय हेत त्रिय ।।
जो धरपति धर छंडि । तौ राम रप्पी न सीयत्रिय ।।
जो धरपति छंडि । भ्रमिय सुन पंड पड वन ।।
धर कारन विक्रम । कितौ करगमिय भग्गन ।।
धर मंडि न छंडि अनंग नृप । निश्चै भ्रमन गाजिद तन ।।
धर काज राज धर पंडियै । तिन न दिप्पहि राज मन ।छं०३२।।

मंत्रियों की बात न मानकर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना।

अरिल्ल –कहिय मत्र नह मनिय राय । लिषि कागद अजमेर पठाय ।।
सुनि वत्ती नृप भर किल क्रानं । राका वर उदधि परमान ।। छं० ३३ ।।

कवि चंद का मत सुनकर पृथ्वीराज का दिल्ली जाना निश्चय करना।

दूहा सुनिय राज कवि चंद कथ । उर आनद अपार ।
पित मातुल मिट्ठन नृपति । कियो गुगवन विचार ।। छं० ३४ ।।

कैमास का भी यही मत होना।

थपिय मत कैमास सोइ । भ्रगति धरनिय त्थ्थ ।।
चढ़ि चहुआन सुमंत्रि रित । पुर दिल्लीय मंतत्त ।। छं० ३५ ।।

कवित्त –सुनहि राज तूअर नरेस । एक बर बुद्धि विचारिय ।।
एक बनिक पाहार । सु बय अंगह तिह सारिय ।।
ताहि बाल वय नन्ह । सील वृत दुल्लभ लीनो ।।
कंप काल मन हुल्यो । चित्त मति सत उपन्नो ।।
अंनगेस राज तोंअर प्रगट । उह सुमंत्ति जिन लेइ उर ।।
मम भूमि मुक्कि राज्यंद मुनि । ध्रंम धुरा रष्षै न धर ।।छं० ३६।।

दूत ने आकर समाचार दिया, पृथ्वीराज का धूम धाम से दिल्ली की ओर यात्रा करना ।

दूहा –कही दूत सारी विवरि । आदि अन्त जो बत्त ।।
चढि चहुआंन सु संचरिय । जुग्गिनि पुर लै बत्त ।। छं० ३७ ।।

चौपाई –लै सम सूर चढ्यो चहुआंनं । ऊगत सूर देव प्रति मानं ।।
सगुन सकल संमूह बनि आए । गयौ राज दिल्ली समचाए ।।छं०३८।।
गयौ राज दिल्ली परिमानं । मिले सूर अनंगेस निधानं ।।
देषि भूमि दिसि थांन प्रामानं । राजा सुष वढ्यो चहुआंनं ।।छं०३९।।

अनंगपाल ने दौहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा दिन दिखला कर दिल्ली का राज्य लिख दिया ।

दूहा मातुल पित भिटयो सु पहु । मिलि अति उच्छव कीन ।।
वासुर सुर रवि इद यल । लिषि दिल्ली पुर दीन ।। छं० ४० ।।

पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का वर्णन ।

छंद उधोर पयो हर पाइ पाइह अन । दह जुग मत्त रत गुरंत ।।
आषंद चंद छंद उधोर । प्रति पग कही पन्नग जोर ।। छं० ४१ ।।
लिषि वर धटी मधुरन मन्न । दुज धन वेद विधन सत्त ।।
आनन हेम पट्ट सुढार । मानिक मुत्ति द्युति उजार ।। छं० ४२ ।।
मण्डित कलस विप्र विनोद । राजन अनिहि मानिय[1] मोद ।।
भुनि वर विप्र मंडन येउ । माननी मङ्गल गाजत तेउ ।। छं० ४३ ।।
वज्जहि नहुल वज्जन भार । गांनहि मान ग्राम सुतार ।।
नचि त्रिय पाप भग्ग सुभाव । दांनहि लिय विभ्रम साव ।। छं० ४४ ।।
गज्जित सघन सिंदुर दंति । जग्ग सु पुष्प सोभत पंति ।।
धवलें चढिव निरषति नारि । गोपन रध्ध[2] राजकुंआरि ।। छं० ४५ ।।
दमकत दसन हम विराज । मानहु नडित अम्भ अग्राज ।।
वसनह रसमि रज्जित जोर । मनि सिन सघन वामत्र जोर ।। छं०४६ ।।
राजत श्रवन रवनि ताटंक । राका मनहु सोभ मयंक ।।
सोभत लाल कुंडल क्रांति । मनु बधू इंद इद मिलंत ।। छं० ४७ ।।

---

1. मो०–मा॰ त । 2. मो०–भा र ।

चढि सु पट्ट सोहत दंति । मनों इंद्र ऐरापंति ॥
मांडत विप्र वेद सुवेद । जग्यहि जपति भेदहि भेद ॥ छं० ४८ ॥
पट्टहि पुत्ति पुत्त अरोहि । विजत नृप्प चामर सोह ॥
मांडत मुकुट उत्त सुमंग । रचि बहु धात मोल सुरंग ॥ छं० ४९ ॥
दुति कलस करिय तास । मारिच कोटि इंद उहास ॥
धुअ सम मंडि छत्र अजेर । मनों हरि बाल बिंब सुमेर ॥ छं० ५० ॥
तिलकह जटित रजित भाल । झल हल करहि दीप उजाल ॥
चरचहि मुत्ति कुंदन थाल । पूरति सुपट्ट पूजति बाल ॥ छं० ५१ ॥
चरचति सुकर अनंगपाल । सोहति कठ मोतिन माल ॥
दुज वर चवै असिष वेद । मांननि गांन तन सु अषेद ॥ छं० ५२ ॥
हय गय हथ दिल्लिय देस । समप्पहि पुत्ती त नरेस ॥
षोडस दांन पूरन मांन । अप्पे विप्र धेन सुआंन ॥ छं० ५३ ॥
थप्प विप्र गेव सुग्यांन । ग्रहन सुतप्प तप्पिय थांन ॥
बद्रिय नाथ धरिय सु ध्यांन । ....॥ छं० ५४ ॥
तजि ग्रह मोह माया जाल । सज्जिय जोग बंचिय काल ॥
रच्चिय बांन प्रस्थह रूप । क्रमि रह ताप नप्पित भूप ॥ छं० ५५ ॥
हय गय तरुनि द्रव्य सुदेस । तिन वर तजिय राज नरेस ॥
संवन ईस तीस रू अठ्ठ । चल्लि नृप हेम गहि कर-अठ्ठ ॥ छं० ५६ ॥

कवित्त—एकादस संबतह । अठ्ठ अग्ग हति तीम भनि ॥
प्रथि सुरति तहा हेम । मुद्ध मगसिर सुमास गनि ॥
सेत पष्ष पंचमीय । सकल वासर गुर पूरन ॥
सुदि मृगसिर सम इद । जोग मद्धहि सिध चूरन ॥
पहु अनंगपाल अप्पिय पहुमि । पुत्तिय पुत्त पवित्त मन ॥
छंडयौ सुमोह सुष तन तरुनि । पति बद्री सज्जे सरन ॥ छं०५७ ॥

शुभ लग्न दिखा कर बड़ी तयारी और विधि के साथ अनंगपाल का पृथ्वीराज को पाट बैठाकर अपने हाथ से राज्य तिलक करना ।

छंद पद्धरी—
सुभ लगन दीन दिल्लिय नरिंद । तुम करहु राज जनु पहुमि इंद ॥
सुनि श्रवन सह आनंद अंग[1] । राका रयन जनु दधि तरंग ॥ छं० ५८ ॥
बुल्लाइ फेरि दुज वर प्रमांन । थपि लगन मगन अंमृत समांन ॥
जिन वचन व्यास मिट्टै न कोइ । सहजह कहंत सुष सिद्धहोइ ॥ छं० ५९ ॥

---

१. मो-कंद ।

मंडप्प मंडि सुतधार बांनि । रचि ब्याह कृश्न रूकमनि मानि ॥
उच्छव अनंत बाजंत बाज । जिन घुमर घोर रव गयन लाज ॥ छं० ६० ॥
नृत्यंत नृ य पातर प्रवीन । तिन रुप्प अंग मुनि मन अधीन ॥
सब नगर उड्डि गुड्डी अनंत । कैलास विपन बांनिक बसंत ॥ छं० ६१ ॥
आरास सुब्रन बनिकाच छोह । देषंत नेंन मुनि मगन मोह ॥
बहुरंग ब्रंन विचित्त अवास । साला सुरंग गोषन उजास ॥ छं० ६२ ॥
अंगन अनंग दिषि रहत भूलि । त्रिगुन निवास सुरवास फूलि ॥
जाजिम पट्ट जरकस जराव । अवनीस दिष्षि जकि धरत पाव ॥ छं०६३ ॥
छुट्टंत तार सहजह सुरंग । भृंगीन भ्रंग भय भ्रमत अंध ॥
नव ग्रही वास सुर वास साज । तहां बैठि आंनि अनगेस राज ॥ छं०६४ ॥
बुल्लाय सब्ब अर भर समान । द्रिगपाल जोर तन तेज भान ॥
लघु बेस तरुन के वृद्ध वीर । कछ वाच साच वज्र ंग श्रीर ॥ छं० ६५ ॥
इंद्रान मोह जिन अंग भंग । संग्राम रंग जनु कप्पि पंग ॥
मच्छर हुलास जिन अंग सोह।त्रिन जरत उठ्ठि सिर समय कोह ॥छं०६६॥
नव रस विलास निय नारि रंग । अनिवरत रंग भीषम प्रसंग ॥
षग दान मान परिमान जोइ । कवि कहै ब्रंन जो आंनि होइ ॥ छं० ६७ ॥
कुल रीति नीति हिंदुन राह । दारुन्न दुसह दुब्भर दुवाह ॥
अस बैठि भूप सब सभा आंनि । सुर इंद्र कोटि तेतीस जांनि ॥छं० ६८ ॥
तहां धरिय सिंघासन कनक कंति । जिन हीर लाल पीरोज पंति ॥
मानिक्क चूनि मनिमुत्ति भति । चकचोंध दिष्ट बुधि भूलि जंति ॥छं०६९॥
नृमान लषित पुष्पह उपाइ । तहां बैठि भूप कुल सुद्ध आइ ॥
आसन्न असमु तहां धीरय आंन । सुरजपि तथ्थ जै जया बान ॥ छं० ७० ॥
प्रथिराज बोलि बैठाय पाठ । धुनि करन वेद तहां विप्र ठाठ ॥
त्रिय कंध पच्छ त्रिर चमर ढार।रजि रूप जानि अश्विनि कुमार ॥छं०७१॥
धरि कनक दंड सिर छत्र सीस । सिर चद कंति कैलास ईस ॥
गायंत गांन कामिनि उतुंग । कलयंठ सुर करत भंग ॥ छं० ७२ ॥
मुसकत हसंत अैंडत अलोल । सहजन कटाच्छ छंडत सलोल ॥
रस भरिय एक आलसय भंग । मुनि देषि अंग मति होत पंग ॥ छं० ७३ ॥
इक अलसि फेरि अैंठति अलोल । छंडंत असित सित श्रवन कोर ॥
अंगन अवास सालानि चूरि । जालोन गोष भरि रहो पूरि ॥ छं० ७४ ॥
बंदीन ठाठ बिरदह बुलंत । नव रस विलास रसना तुलंत ॥
सधि लग्न मुहूरत सुभ प्रवीन । अनगेस राज तब तिलक कीन ॥ छं०७५ ॥
बजि सबद पंच बाजे बजंत । तिन सोर घोर दरिया लजंत ॥
जिन तित अति उच्छव रजंत । बरषाहु पाइ जनु जग गजंत ॥ छं० ७६॥

दिल्ली के सब सर्दारों का आकर पृथ्वीराज को जुहार करना।

छं० भुजंगी—

तहां बैठयं राज दिल्ली प्रधानं। सिरं आतपत्रं सु दीनो निधा नं॥
बजे दुंदुभी भीत[1] आकास थानं।................................॥ छं० ७७॥
मिले आइ सब लोइ ते सूर बीरं। जिनै आदरं राइ दीनो सरीरं॥
झनक्केति ताजी झिनक्के करीनं। महामत्त दीसं सुमत्ती सुभीनं॥छं० ७८॥

दूहा - करि जुहार भट सुभट थट[2]। प्रजा महाजन आइ॥
सब काहू मन यों भयो। ज्यों जलचर जल पाइ॥ छं० ७९॥

बड़ी तयारी के साथ सजकर पृथ्वीराज की सवारी निकलना।

सत हथ्थी दस सित हुअस। मानक मुत्तिय लाल॥
सवा लष्ष सोव्रन महुर। गनै और को माल॥ छं० ८०॥
चढन जोग हथ्थी तबैं। मंगवायो मदमंत॥
जनु घन बद्दल पवन बसि। बग पंकति ता दंत॥ छं० ८१॥
जो रावर जंजीर बसि। पवन न पावै जांन॥
अग्न मंडि डारै प्रबल। सायर अजा समांन॥ छं० ८२॥

छंद पद्धरी —

आरूढ इंद्र सम गज गरूर। ज्वालाति जोति जनु किरन सूर॥
जरक्स जराव ओछार मंडि। सुरराज विपन सोभात षंडि॥ छं० ८३॥
रेसंम रास नारी बनाइ। घुघ्घर घमक कंचन जराइ॥
आरूढ राज आसन अनद। सुर पुप्फ विष्टि दुअ दीन बंदि॥ छं० ८४॥
लंगरी राव पच्छें अरोह। कर कनक दंड सिर छत्र सोह॥
बिय ब्राह चमर दर गाहु धारि।रवि चंद किरनि जनु सिर पसारि॥छं०८५॥
तिन पच्छ पंति दंतीन साजि। सामंत सूर सब चढ़ गाजि॥
तिन पच्छ तुरी तनै निवानि। बर पवन रूढ मन भए जानि॥ छं० ८६॥
छत्तीस सज्ज वज्जे सु बाज। विरदैत बिरदै चंद राज॥
अवधारि मध्य बाजार बीच। केसरि कपूर तहँ अगर कीच॥ छं० ८७॥
जित तित गिरंत जारीन फूल। छबि छलै छैल नवल्ला अभूल॥
मन मगन मुक्क अष्षित उछार। जलजान मनों वसि ओस झार॥छं० ८८॥
सब परज अरज प्रभु करत एह। इक भूमि ग्रेह थिर राज देह॥
नर नारि निरषि मनु मुदित मोह। लगि चंद सूर चिरजीव होह॥छं०८९॥
षट दरस दरसि आसिष्ष देत। प्रथिराज बंदि सिर झोलि लेत॥
फिरि राज आइ अंदर अवास। जहं रहत मुग्ध मध्या सुवास॥ छं० ९०॥
सनमान कीन रनिवास राइ। जस मझि सत्त सत सिद्ध पाइ॥ छं० ९१॥

---

1. मो०—घोस।

2. क को० ए०—भर सुभट सब।

पृथ्वीराज का रनिवास में आना, रानियों का मंगलाचार करना।

दूहा —अन्य नृपति गन सुंदरिन । मधि अंगन रनिवास ॥
दिष्षत छबि छक्की सकल । मिल त्यंजन[1] दिन तास ॥ छं० ९२ ॥
कनक किउ कुंदेरनह । भरत कि भरिता अंग ॥
जलज नैन मुष कर चरन । जनु धरि अंग अनंग ॥ छं० ९३ ॥
मधुर कंति मुष मधु मुदित । उदित अर्क आकार ॥
तोरि त्रन तरुनिय कहत । धरनि गह्यो तुम भार ॥ छं० ९४ ॥

गाथा - बनिता बिनय सुकरिय । धरिय ध्रम केन अंगायं ॥
के छबि छकित छलीयं । भइयं ववमि पिष्षि पिथ्थागं । छं० ९५ ॥

दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थवास के लिये जाना।

दूहा जुगिनिपुर चहुआंन दिय । पुत्रीपुत्र नरेस ॥
अनँगपाल तोंअर तिनिय । किय तीरथ परवेस ॥ छं० ९६ ॥

यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का प्रसन्न होना।

कवित्त -सुनि सोमेसर सूर । हियै वढ्ढिय आनंद सुप
अति अनद न्रिमलय । धनि सो पुत्र दीह [illegible] ॥
वर बांने उंधियै । मिले सामंत [illegible] गव ।
गोत्रर लभन नइडन नृपति । [illegible] ॥
मातनिय मान जानै सकल । नप [illegible] समत्त ॥ छं० [illegible] ॥

छंद पद्धरी नदहि विवेक अविवेक पाइ । दिल्लहि मुकुट सो [illegible] ॥
नग नगन जरहि किरनी जगाइ । जा[illegible] अगनि [illegible] वाइ ॥छं० ९८॥

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन।

छंद त्रोटक भयभीन मनत नइन [illegible] । अनियै गुरदेव गुमंग मना ॥
बर बज्जि निसान दिसांन धुअं । नृप राज सुकाज ज्यों ध्रंम सुअं ॥छं० ९९॥
प्रगटी जनु कामय कोटि कला । करि उज्जल गज्ज सुषंत मला ॥
बिसरे द्रगपाल दसो दिसयं । प्रगटी जनु काम कला मसिय ॥ छं० १०० ॥
रन नकिय पाइ कमन्न भुअं । छनि मिन्न छिराधिप चित्त धुअ ।
प्रगटे प्रथुपालक पंच कला । तिनमें प्रथुराज प्रथून बलं ॥ छं० १०१ ॥
परधाननि भीम कुंआर तिनं । नृप सेवन जास सुपाइ गनं ॥छं० १०२ ॥

दूहा भ्रत बुनिय नृपराज तपि । ढिल्ली ह्वै धन साज ॥
जानिज्जै जंगल नृपति । मन उदद्धि गुन पाज ॥ छं० १०३ ॥

आशीर्वाद।

सित छ अग्ग सामंत सजि । वजि निघोष सुनंद ॥
सोमेसर नंदन अटल । ढिल्ली सुबसि नरिंद ॥ छं० १०४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल
दिल्ली दान नाम अष्टदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १८ ॥

---

१. कु—सुम सम्यजन । २ —मो० था६ ।

अथ माधो भाट कथा लिष्यते ॥

(उन्नीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना ।

कवित्त -किय निवास प्रथिराज । आइ चहुआंन वीर वर ॥
पुज्ज धाम जुगिनी समांन । बाल दीय थांन थिर ॥
दस दिसांन दस महिष । किन्न[1] सहु नयर दीन बलि ॥
अवर देव पुज्जै सु सेव[2] । नैवेद धूप मिलि ॥
पुज्ज सु दीय दानानि अथ । अथ पंषि दीय षंडरस ॥
कंपै सुसीम तहां राषि भट । जसजुप्रग्गट्यो दिसि विदिस ॥छं०१॥

शहाबुद्दीन के कवि माधोभाट का गुण वर्णन ।

छंद भुजंगी -कबी कब्बिचदं सुमाधो नरिंदं । सुरंतान भट्टं मधू माद इंदं ॥
कवी एक मंडी भिडिभी प्रमानं । किने तार अकार विद्या सुजानं । छं०२ ।
विधं मंत्र पत्री पढ़ै वेद बानी । तिन भट्ट कोन जु पूजै गियानी ॥
पढै तर्क वित्तर्क चौसठ्ठि विद्या । तिनं रूप के भेद चोरास सद्या ॥छं० ३॥
सतं मद्धि घटियं सुषोडम प्रमानं । इने छद विच्छंद बंदे कलानं ॥
महा रूप रंगत्ति गंगा प्रकारं । तिनं बाइकं भट्ट बोलंन सारं ॥ छं० ४ ॥

माधो भाट का दिल्ली आना और यहां की शोभा पर मोहना ।

छंद त्रोटक दिषि भट्ट सुथांनक दिल्ली धरं । जमना जल राजन पापहरं ॥
तिह ध्रंम सुनं त्रिप ध्रिन दई[3] । मोइ दिल्लिय राजस राज भई ॥छं० ५॥
इंद पथ्थ सु पूरब नाम धरं । इन काज सु पंडव जुद्ध जुरं ॥
षव पंय पती पति पाव हरे । रवि की तनया तन तेज दुरं ॥ छं० ६ ॥
इतनी विधि देषन थान गयो । श्रग लोक समान सु तेज तयो ॥छं० ७॥

दूहा -इहि विध्रि दिष्षिय सकल त्रिग । पुर ढिल्ली उनमांन ॥
थांन बीर चहुआंन को । प्रति कैलास समांन ॥ छं० ८ ॥

पृथ्वीराज के इन्द्र के समान राज्य करने का वर्णन ।

इंद रूप ढिल्लिय नृपति । इंद्रासन पुरि ढिल्ल ॥
सच्चीवा इंछिनि सुव्रत । सुवृत वृत्त गुन किल्ल ॥९॥

---

1 -मो-किम ।
2.-मो०-पुज्जेति सेव ।
3.-मो-विप्पतई ।
4 -मो०-गई ।

सुरपति सम सामंतपति । अति अनूप मति सार ॥
कनिष्ट आंन हिंदुवांन सब । इह गरु अत्तें भार ॥छं० १०॥
इह चरित्र दिष्षिन नयन । गयौ भट्ट नृप थांन ॥
मय[1] मनुं सुमन सुरष्षि कै । रच्यौ प्रथी पर आंन ॥छं० ११॥

माधो भाट का पृथ्वीराज के दर्बार में भेद लेने को आना और अपने गुणों से लोगों को रिझाना ।

कवित्त –दिषि भट्ट माधो नरिंद । राजधानी चहुआंनी ॥
दूत भेद अनुसरै । दूत लग्यो परिमानी ॥
हिंदु भाष षट रस । मेछ पारसी उच्चारै ॥
जहां अछिर कोइ कहै । बांन तेहीं विधि मारै ॥
भाषा कवित्त नाटिक सकल । गीत छंद गुन उच्चरै ॥
आनंत तर्क वितर्क सब । राग बिरागह अनुसरै ॥ छं० १२ ॥

गाथा – हिंदू हिंद अवचने । रचने मेछायं मेछयो बयनं ॥
जं जं जेम समुझ्झै । तं तं समुझायं माधवं भट्टं ॥छं० १३॥

धर्माइन कायस्थ का माधो भाट को सब भेद देना ।

कवित्त – धर्माइन कायथ सुरंग । मिल्यौ बर भट्ट प्रमानं ॥
जु कछु भेद चहुआंन । दियौ निहचै सुरतानं ॥
त्रिभ्रम सुभ्रम विसाल । कहो निभ्रम परिमानं ॥
कग्गद मंत चलाइ । मंत मग्गी चहुआनं ॥
दै लेइ दांन संभरि धनी । गोर सनम करभांन बर ॥
मय मंत मंत चितान करि । दयौ दांन इन्नीति नर ॥ छं० १४ ॥

पृथ्वीराज का माधो भाट को बहुत कुछ इनाम देना ।

दूहा दस हथ्थी मैं मत्त करि । भर मंडन मुष अग्ग ॥
अरि षंडन मंडन फवज । लेइ बीर बहु बग्ग ॥ छं० १५ ॥

कवित्त -दस हथ्थी सत एक । एक कज्जी कंमानं ॥
कंजी तोनति पंच । बान सोहै परिमानं ॥
दियौ साह सुरतान । भट्ट दीने परधानिय ॥
छह मोती बर माल । कनक इक तोल सुजानिय ॥
दिय प्रथिराज सुराज बलि । द्रव्य सबर चतुरंग बिधि ॥
माधव सुभट्ट रंजे नृपति । चंद कही असतुति समधि ॥छं० १६॥

दूहा –हेमर है गै अवरह । सरसें बुद्धि गंभीर ॥
सत्त सुमति आमित्त गति । माधो भट्ट सुबीर ॥ छं० १७ ॥

१.—मो० बहु ।

बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माधो भाट को दिल्ली में रखना।

कवित्त—दियौ दान बर भट्ट। मास रष्षै दिल्लीधर ॥
बहु भोजन प्रति स्वाद। इंद इंद्रास देव गुर ॥
मन लीनौ नृप हथ्थ[1]। भट्ट न्रप[2] इंद प्रमान्यौ ॥
गए दरिद जनमंत। चित्य चिंता घट भान्यौ[3] ॥
अप्पै सु दांन सामंत सब। सुवत मत्त वृत्तह सुघरि ॥
भै पूर पूर पूरन कवी। जा चंग्गा भग्गी सुउरि ॥ छं० १८ ॥

दूहा—जात जात जे जात है। गए गवन किन कीन्ह।
इत्तय बन पूरन नहीं। मत्ति गरुअ तन चीन्ह ॥ छं० १९ ॥

बहुत सा दान (जितना कभी नहीं पाया था) लेकर माधो भाट का गज़नी लौट आना।

अरिल्ल—लै सुदांन गज्जन पुर आयौ। इतौ दांन जनमंत न पायौ ॥
महादांन विद्या परकारं। दियौ राज चौहांन विचारं ॥ छं० २० ॥

माधो भाट का शहाबुद्दीन के दर्बार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने आदि का वर्णन करना।

छंद पद्धरी
गरु अन्न मन्न कविराज राज। श्रृंगार हास्य अदभत विराज ॥
तिहि जाइ कीन नृप स्त्रिन्नि बैन। निम गिम सुहाय सुरतान चैन ॥ छं० २१ ॥
संभरिय बन्न उम्मरि उरन्न। सुरतान बेन गोरी विरन्न ॥
मातुलह वंग चहुआंन राज। दै गयौ मरन्न दिल्लीस काज ॥ छं० २२ ॥
है गै भंडार त्रिन कित्ति भूमि। वली राज मार आवृत्ति कमि ॥
देवत्त करै इह मनुछ लोइ। वली राज जनन आवृत गोइ ॥ छं० २३ ॥
अनगेस राज तजि तिथ्थ जाइ। सामंत सूर वर मिले आइ ॥
अजहूति सेन इक मनी नथ्थ[4]। गोरी सहाव उह घात तथ्थ ॥ छं० २४ ॥

दूहा—फ़ट्टिय बत्त प्रहास सब। वसि दिल्लिय चहुआंन ॥
बंदिन माधौ आय कहि। सम गोरी सुरतान ॥ छं० २५ ॥
है गै दिल्लिय देस सब। अरु जु अबर द्रब अप्प ॥
सो सब दै चहुआंन को[6]। अनंगपाल गय तप्प ॥ छं० २६ ॥

अनंगपाल के बनवास का वर्णन।

लै चल्यौ संग निज तरुनि। दै दिल्लिय अनगेस ॥
मन वच क्रम बद्री चल्यौ। साधन जोग जोगेस ॥ छं० २७ ॥

---

१. मो—बरभट्ट। २. मो—नृप बर।
३. मो—जान्यौ। ४. मो—दान।
५. मो—सथ्थ। ६. कृ—सो सब पय प्रिथराज कूं।

यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होना।

सुनत सटप्पट लग्गि मन। उर गोरी बर बीर ॥
पल पल षिन जुग जात जिय। बढ़िय बिषम षल पीर ॥छं० २८॥

शहाबुद्दीन क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिये चलना, फौज की शोभा वर्णन।

छंद भुजंगी –

चढ्यौ मंषि सुरतांन साहाब ताजी। जरं जीन अंमोल साकत्ति साजी ॥
बरं बासनं रत्त हेमं हमेलं। मनी मुत्तिमाला बनी लष्ष जेलं[1] ॥ छं० २९ ॥
जरं हेम छत्रं सुभं सोभ सीसं। उव लाल थंभं सिरं सूर दीसं ॥
अगे लक्करी लाल दो सहस मोह। जिनं आइ जक्की सह कोइ कोह छं०३०॥
अगे साहि गोरी निसूरत्ति षानं। लग्यौ बदि माधौ पढ़ै बिद्दवानं ॥
दिसा दाहिनी षांन तत्तार गोरी। दिस षां पुरासांन रजि बांम जोरी छं३१।
उभै पुट्ठि मम रेज मुल्तांन षानं। मुन साहि महमंद गोहिन षानं ॥
मुष अग्ग वेतं डसे रत्र साहं। सिरं चौर वाने सित गज्ज गाहं ॥छं० ३२ ॥
कही बत्त गोरी तिनं मो मवाही। कहै जेत्र अब्बाव पुछत साही ॥
अपं सेन सथ्थं सह सूर गथ्थें। तिन जानि वाने बहै कोन कथ्थे ॥ छं० ३३ ॥
चले आइ मो मेपची मग्र थान। रय छंडि दरबार साहाब तान ॥
दर रष्षि दरबन अप मंडिउ आय। तै बोलि उमरांति सब अप भायं ॥
॥ छं० ३४ ॥

दूहा ओर रोकि अप मज्झ गय। नमि पय सेव चिमन ॥
अप्प प्रसंसिय विग्रह परि। बंठि ग्रधरि पन ॥ छं० ३५ ॥
मीष सु पुच्छिय मंम मह। बोलि पंचदस षान ॥
आगन छंडिय अप्प तिन। दिय आदर मनमांन ॥ छं० ३६ ॥

शहाबुद्दीन का तातारखां आदि सरदारों को इकट्ठा करके सलाह पूछना।

छंद पद्धरी गोरी ततार गुर लज्ज भार। पुरसान षान मति सिंधुमार ॥
निसुरत्ति षांन जेहान मीर। ममरेज षान बल लाज नीर ॥छं० ३७॥
आजांन षांन सेरन बितंड। मुल्तान षान मुहबत्ति बंड ॥
मारुत्त मीर जमुनह सुमीर। साहाब षान गरुअत गभीर ॥छं० ३८॥
रुस्तम षांन षल संक आस। गज्जनी षान रिन साहि आस ॥
गजनीय लज्ज गुर तेज गंज। महमुंद मीर अरि तेज भंज ॥छं० ३९ ॥
गोरीय व्रंन काली बलाइ। मृगराज जेम मृग और पलाइ ॥
साहब सलाम सब करी आइ। चीमंन सेष नमि परिस पाइ ॥छं० ४०॥

---

1 मो–सेलं।

बद्धे सु सब कर कर समुठ्ठि । षिन एक बैठि साहाब उठ्ठि ॥
गयौ सेष बाग तरु चंप नूप । बैठक्क तथ्थ चौरा अनूप ॥ छं० ४१ ॥
आसंन मंडि बैठो सु साहि । बैठक्क दई उमराव ताहि ॥
उच्चर्‌यौ बीर गोरी सु संच । पुच्छिय जु सत्र मंत्रह प्रपंच ॥छं० ४२॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के दिल्ली पाने का समाचार कहकर उसके जोर तोड़ने का मत पूछना ।

कवित्त —कहिय साहि साहाब । षांन तत्तार सुनौ सत्र ॥
बसि दिल्लिय चहुआंन । कही माधौ जु चड कब ॥
अनगपाल गय तप्प । देस है गै सु द्रव्य सह ॥
सो समप्पि चहुआंन । अप्प सज्ज्यौ सुबंन रह ॥
अति मत्त अग्ग बर जोर हुअ । अरु लंभी चतुरंग श्रिया ॥
सध्धियै बेगरन षेत षल । जो लौं जोर न बध्रिया ॥ छं० ४३ ॥

तातारखां का सलाह देना कि दिल्ली पर चढ़ाई करना चाहिए

तब कहै षांन तत्तार । साह साहाब चित्त धरि ॥
अरि अनंत बर जोर । याहि सध्धियै मनद्ध करि ॥
तब दिष्यौ दल जोर । सूर सामत समथ्थं ॥
अन्त तेज मत अनैंन । बेग रन बहै सुहथ्थं ॥
दल जोर जोर भंडार घन । करि सुचित्त भर एक मन ॥
भरहथ्थ जीव दिल्लिय सहर । मम करि अरि सद्धन मयन ॥छं० ४४॥

तातारखां की बात का सब लोगों का सकारना, रुस्तमखां का मंत्र देना कि जब तक सेना तयार हो तब तक एक दूत दिल्ली जाय सब समाचार हिंदुओं के ले आवे ।

छंद पद्धरी पुरमांन षांन कहि सुनि ततार । संत्री सु बत्त जंपी सुढार ॥
दल मेलि वेग सद्धो सुमंत । बंधीय बंध्रान अरि करिय अंत ॥छं० ४५॥
जेहान बीर जंपे तमंकि । तुम उरी मीर छुट्टी न अंक ॥
सद्धियै दौरि करि मत्त सथ्थ । नन होइ कांम दष्षी सुहथ्थ ॥छं० ४६॥
जंपी सु षांन निसु रति तब्ब । बिन बंध्र वन्न डिंभ ह गब्ब ॥
चच्चरन देषि चहुआंन तुम्ह । जंपौ सवत्त मंतह गुरंम्म ॥ छं० ४७ ॥
उद्धरिय षांन साहाब सक्क । वे वृद्ध भये बुद्ध जक्क ॥
झंपियै जुद्ध पावक्क पाइ । बंध्यौ विराम ना निजरि आइ ॥छं०४८॥
बल तुच्छ अरिय सद्धौ सु साहि । बल दुष्ट जोर बंध्यौ न जाइ ॥
मुलतांन षांन हसि कहिय बत्त । मम रेज षांन गाथौ विगत्त ॥छं०४९॥

पंजाब गरुव छंड्यो गुमांन । धन मद्द मंत वयची प्रमांन ॥
कालिंग पुलै जिम जुध पुलाइ । गह अत्त साहि साहाब जाइ ॥छं० ५०॥
उवकसैं षांन सेरन वितंड । विकसे कहिय कर षग्ग मंड ॥
गोरिय अवनि तुम गनो गत्ति । भय भीत मृत्य दीसहि सुमत्ति ॥छं०५१॥
बिनसंत काज क्यों पातिसाह । पूछै सुमंत अच्छै सुभाह ॥
जंपयौ बत्त काली बलाइ । मो बिना सेन गोरी पलाइ ॥ छं० ५२ ॥
काल ग्रहंत मन आइ मुझ्झ । मंडयौ जुद्ध मो बिन अबुझ्झ ॥
तमस्से मीर तब फते जंग । पुज्जेन सेन पंषी कुलग ॥ छं० ५३ ॥
सम बरन साज सज्जै न संग । हरि तेज तेज दष्षै अभंग ॥
अरि सार जैत जांनौ न भेव । उच्चरो मत गुन गुबर गेब ॥ छं० ५४ ॥
तब मीर जमन गज्जनी षांन । महम्मद्द मीर मारत्त षान ॥
उठे सुच्यार तम तेग झारि । बुल्ले बिहंसि मत्ते विचारि ॥ छं० ५५ ॥
थिर जुद्ध मंत रच्चो सु सब्ब । बैटनह सूर नहि ध्रम अब्ब ॥
कीयो हुकंम साहाब जब्ब । ग्रहि तेग हनै प्रथिराज तब्ब ॥ छं० ५६ ॥
रुस्तम कही साहाब अज्ज । मुक्कलो दूत जुध करो कज्ज ॥
लषि आवै चर सु हिंदू चरित्त । तब लगि सेन सज्जो मुहुत्त। छं०५७ ॥
मन्यो सुमंत सब चित्त सार । मड्यो सुमंत बर चरन चार ॥
रुस्तंम वाह धरि चवत दीठ । बुल्लाइ सिघ बर चर गरीठ ॥ छं० ५८ ॥
छंद भुजंगी स्वय भेद प्रकार भेदं प्रमानं । सुनो षानं तत्तार षांन सुमानं ॥
स्वय साहि साहाब साहाव सूरं । मनो भेद बभान छूटघा बरूरं ॥छं० ५९॥
षान तेज तेजं प्रकारंत न्यारे । वही कव्वि चदं उपम्मा उचारे ॥ छं०६० ॥
दूहा कहत चंद बर भट्ट फुनि । सकल कथा परिमांन ॥
जु कछू भट माधो कही । सम गोरी सुरतांन ॥ छं० ६१ ॥

छंद पद्धरी—

उच्चर्यो चंद बरदाइ मडि । सरतांन षांन आरज्ज छंडि ॥
वर बीर धीर तत्तार षडि । काली बलाइ सेरन बितंडि ॥ छं० ६२ ॥
हबसी हुजाव षुरसांन बंध । पीरोज षांन निज बंध सिंध ॥
पर दार पौरि दस दस प्रमांन । राजन अनेक भर मुष्भ षांन ॥छं०६३॥
तिन व्यंटि सभा दिष्षी नरिंद । मनों जामिनी तेज रबि सबर इंद ॥
बदै न चंद तत्तार षांन । पीरोज बंध हबसी समांन ॥ छं० ६४ ॥
षुरसांन षांन अल्लाल बीर । सेरन वितंड माधो सरीर ॥
हुस्सेन सूर भट्टी प्रकार । साहै जु साहि ज्यों चंद सार ॥ छं० ६५ ॥

बैरंम षांन जमनेस जोर । जमजोर बहै तिन बल सुथोर ॥
पीरोज षांन माही मरद्द । मोभंत तेज ससि बर सरद्द ॥ छं० ६६ ॥
उष्न ग षांन गाभरू मीर । बेधंत सत्त धातह सु तीर ॥
तुम तेज षांन ममरेज मीर । पुरमांन लज्ज निज मुष्ष नीर ॥ छं० ६७ ॥
फतूव मीर तुगी तुरांन । पुज्जै न नाम तम तेग पांन ॥
नव नेह षान मैदान मीर । रुम्मी रुहिल्ल तम तेग धीर ॥ छं० ६८ ॥
ढिल्ली वढाल ढाहन प्रकार । सभरे मुष्ष भए रत्त भार ॥
पारषि रष्ष पावंग जान । जानहि जु स्वामि ध्रम प्रमान ॥ छं० ६९ ॥
फिरि पूछि जाइ इत सबनि कट्ट । उच्चरै वत्त चहुआन थट्ट ॥
भय भीत रीन माधव सुभट्ट । हो देषि आइ इह तथ्य घट्ट ॥ छं० ७० ॥
सोमेस सूर तस पुत्तमान । मारन हमीर जाने गियान ॥
दातार ओर पोहचे न दान । दै गयौ अनग दिल्ली निधान ॥ छं० ७१ ॥
बर राज अनंग तिथ्यह जु जाइ । है गै सु लच्छि दोहित्त पाइ ॥ छं० ७२ ॥

माधव भाट की बात पर विश्वास न करके शाह का दूत भेजना।

दूहा साह वदी सुरतान तब । माधौ कह्यौ न मान ॥
भट्ट जाति जीहं गुनौ । दूत सु पठय प्रमान ॥ छं० ७३ ॥

दूतों के लक्षण का वर्णन।

कवित्त क जानी कम्मान ॥ अंक रेमम प्रति भामै ॥
दन अंगाक निय नोन । नाहि गोरी मुनि जामै ।
दूत भेद अनुसरे । लषि हिदआर चरित ॥
सो मनह सुरतान । थान सो करि दग रत्त ॥
दूत के दूत भवह सुतन । मत्र सु चरित अगिन लपै ॥
उच्चरै वत्त साची सुदून । सुनि विधि अमृत भपै ॥ छं० ७४ ॥

दूहा इन मुकलि उन गथ्य बर । निसि दिल्ली पतिमान ॥
माधो भट्ट सु तथ्य कहि । दूत पठय सुरतान ॥ छं० ७५ ॥
चाहुआन सुरतान बर । करन जुद्ध परिमान ॥
मिलन पुब्ब रहिन हुनै । बांग रग उतान ॥ छं० ७६ ॥

कवित्त —सं बुझ्झे सुरतान । अदर गज्जन रहवान ॥
आपटक हम करहि । दूत सुबंक अगिवान ॥
जु कह भेद अनुसरै । ततथ्यानं परिचानिय ॥
भय भयंक भ्रम पड । काल कलहं गुन ठानिय ॥
ज कह्यौ नाइ सम्मूर षा । मरत षान विरद्ध बर ॥
हुबसी हुजाब मुक्कलि नृपति । सुबर बीर मत्ते गहर ॥ छं० ७७ ॥

भेद दुग्ग भंजियै । भेद उरजन धरि छिज्जै ॥
भेद भूमि अनुसार । भेद दिल्ली धरि लिज्जै ॥
भेद पच्छ मन नथ्थ । भेद विग कंक न होई ॥
भेद गुरुअ गुरु ग्यान । भेद बिन तान न जोई ॥
अवृत्त भेद वर रजियै । गुन मज्जन मज्जन बरन ॥
सुरतान दीन माहाब दी । भेद साहि कीजै गवन ॥ छं० ७८ ॥

गाथा पुरमान प्रति षान । पील नथ नथिय थान ॥
पुंगी नथ्थ पमान । वस्त्र नथ्थ मम्भयो वज्जय ॥ छं० ९ ॥
अै गजनी नरिंद । बुल्ल्या वीगाद बीर गाहस ॥
विन जग्गत जग्गाय । नो जिनै निश्चय षलय ॥ ८० ॥

दूहा विन जग्गत जो जग्गियै । पग्ग माह विन हाय ॥
मेछ पिच्छ किर सान गुर । बिवरि गुरज्जन गाथ ॥ छं० ८१ ॥
पातसाहि षित्री मुछिनि । मति गप्पन परिमान ॥
जो भंजै चौहान तू । कहै दूत मोट ठान ॥ छं० ८२ ॥

अरिल्ल माधौ बत्त मुमत्त प्रमानिय । तऊ दून मुबत्तलि गुन ठानिय ॥
नव नव नव घन मध्य प्रमान । कह्यौ मन गोरी मुविहान ॥ छं० ८३॥

दूत भेजकर अपनी सेना की तयारी करना ।

छंद पद्धरी करि मत साह गोरी अचभ । आरंभ चक्क भज दंड अंभ ॥
जर थल निथ्थल्लन करि प्रमान । उनध्यो मेछ जनु मध्य भान ॥छं०८४॥
गगन मगन पुर षेह छाय । सुझ्झै न भान मिटि पथ नाय ॥
अग्गे मुरुमल्ल मजुत्ति मकोर । म्रुगी मु वदन अलि किमल्ल शोर ॥छं०८५॥
चकवी चनक चक चक्की भूमि । रस नाल विनाल नल रहिड नुमि ॥
गिर बननि तुट्टि छर छरत नीर । पंजरं पथ माइर गंभीर ॥ छं० ८६ ॥

तर्क करै पवन गवन प्रकार । उरअन धना गज हल्लन लार ॥
बाजन टमक नवल कठोर । नाचत ईस जनु नग मोर ॥ छं० ८ ॥
सुझ्झै न नैन दिसि विदिसि थान । मन भ्रम बुद्धि नट्ठी प्रमान ॥ छं० ८८ ॥

दूहा चाहुआन चतुरग दिसि । मजि सुमन माधव्व ॥
जुरुछ मन गुन उच्चरिय । वर कोविद माधव्व ॥ छं० ८९ ॥
मनि माधव कोबिद मुबर । कही बत्त गुन वृत्त ॥
तऊ साहि गोरी नृपति । फेरि मुकले दुत्त ॥ छं० ९० ॥

---

१ ... भ्रमगी । ... ...
२ ... ना । ... ... ।

बोलि दूत चव[1] अग्ग लिय । दिय कग्गर धूमांन ॥
सुद्धि सिंध अरु सोब बर[2] । दिय इनांम श्रब्बांन ॥ छं० ९१ ॥

शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की ओर जाना ।

चल्यो दूत दिल्ली दिसा । लिये शाह फरमांन[3] ॥
भेष सुसोफिय तम्र सजि । चित्त अचिंतिय मांन ॥ छं० ९२ ॥

दूत को दिल्ली पहुंचकर अनंगपाल के बनबास और पृथ्वीराज के न्यायराज का समाचार विदित होना ।

गाथा—दिल्ली दूत सपत्तं । फिरि फिरि देषंत न्याव नृप नैरं ॥
यह धूंमांन सुग्रेहं[4] । दिन्नं बर पत्र हथ धूंमान ॥ छं० ९३ ॥
षबरि श्रब धूमानं । दिन्नं नृप आदि सूर मामंत ॥
अनंगपाल तप सरनं । दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं ॥ छं० ९४ ॥

धूमान कायस्थ का सब समाचार सामंतों के रहने आदि का दूत को बतलाना ।

कवित्त— विवरि षबरि धूमांन । कही चहुआंन सेन बर ॥
पष्ष[5] सत्त राजांन । सुवास कीन पिथ्थपुर ॥
पष्ष पंच कैमास । राव चावंड पष्ष चव ॥
वसि वित्ते दिन अठ्ठ । पष्ष लोहांन रसे सुव ॥
चहुआंन कन्ह पष एक हुअ । बसिय बास दिन पंच हुअ[6] ॥
सामंत अवर आगम इछै । सवन[7] बास चहुआंन रय ॥छं० ९५ ॥

धूमान का सब समाचार लिखकर भेजना ।

दूहा- लषि करि इह बंधी विवरि । राज धूम्म चहुआन ॥
दिय कग्गर तसु दूत कर । बर कागर धम्मान ॥ छं० ९६ ॥

सब समाचार लेकर दूत का लौटना ।

षबरि सबै लीनी नृपति । चलिय दूत निज मग्ग ॥
आतुर पति गज्जन नमिय । सौफी वे सह जग्ग ॥ छं० ९७ ॥
अरिल्ल— दूत आइ दिल्ली परिमानिय । राजधान जुग्गिनि पहिचानिय ॥
निगम बोध दिष्यो चहुआनं । रहे पट दीह फिरे तिन थानं ॥छं० ९८॥

---

१. मो०—बचन ।
२. मो०—सब ।
३. मो०—में यह तुक नहीं है ।
४. मो०—गेहं ।
५. मो०—मो०—परक ।
६. मो०—भय ।
७. मो०—रसन ।

दूत ने छ महीने रहकर जो बातें देखी थीं सब शाह को आ सुनाई।

दूहा— रहे दूत षट दीह बर। लषि चरित्त षट मास ॥
जु कछु चरित षट मास कै। कहै विवरि सुद[1]भास॥ छं० ९९ ॥
क्रम ढिल्ली ढिल्ली बयर। ढिल्ली नृप चहुआन ॥
गौ तीरथ बन सज्जिकै। प्रगटि दिसांन दसना ॥ छं० १०० ॥
प्रथीराज चहुआंन बर। लै ढिल्लीपति मूद ॥
जानत सकल जिहनां बर। बजि निघोंप सुदंद ॥ छं० १०१ ॥

शहाबुद्दीन का लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना, उमरावों की तयारी का वर्णन।

कबित्त— साह बदी सुरतना। आइ गज जुद्ध निरष्षिय ॥
अगड मध्य चौगांन। वीस गजमत्त [2]सज्जकिय ॥
सहस एक गज झुंड। मंडि मडल अविघानिय ॥
तह्यां गोरी बर बीर। दंति हक्के दिन मानिय ॥
गज एक सेत निज रोहि बर। चढिय पिठ्ठु तत्तार षां ॥
सुरतान षान निसुरत्ति षा। चढि सुगज्ज बाई रुषा ॥ छं० १०२ ॥
दिसि दष्षिन साहाब। माहिजादा चढि दतिय ॥
अबर सब्ब उमराव। चढे गज बंधि सुपतिय ॥
लाल झंड सम सिघ। हेम रज्जंत साहि सिर ॥
हैदल पैदल अबर। गनिक को गनै गहब्बर ॥
महमंदचंद महावत्त सौं। बोलि साह पुर मान दिय ॥
गज भूत सिघ गज मुष्य है। आनि सुअगडह अड्डु किय ॥ छं० १०३ ॥

दूहा— इहा कहत तिन चर [3]चवन। दिय दुवाह सुरतान ॥
निरषि साह उची निजरि। बे बुल्ले षुरसान ॥ छं० १०४ ॥
बारुन बर बानै बिबिधि। असु अैनप आलोल ॥
ठाढा कौतूहल कबल। करत दान नव[1] लोल ॥ छं० १०५ ॥

छंद उघोर— मंडित उतंग उत्तिम छद। मूरघ सोभा सोमह नंद ॥
छत्र विसाल बर दुति सीस। बाल विसाल उडगन ईस॥ छं० १०६ ॥
आसन सिघ मंड्यो राज। सामंत सूर भर करि साज ॥
राज चहुआन प्रथी नरेस। मडिय चंद देव सुरेस ॥ छं० १०७ ॥

---

१. मो०—सुधि।
२. को०—कृ० ए०—गमंत।
३. मो०—करबानन।

मास बितिय मंडी रेर। नद्द निसांन थांनह भेर ॥
है गैगुंजि नाना भंति। छत्र विराज छत्रनि मंति ॥ छं० १९८ ॥
मिलिभर जहां तहां भरि भीर। सूर समथ्थ जुद्ध सधीर ॥
जित तित दिष्षि रंग सरंत। आगम जांनि फूलि बसंत ॥ छं० १०९ ॥
बसन विराजि दसन कुआरि। लोल कलोल सुंदर नारि ॥
गावति हसति अलि अलि रासि। दृग दुति कमुद किरनि प्रकासि ॥छं११०॥
जब लगि बढै वीर जराइ। तब लगि गहिन साहि बधाइ ॥
जब लगि बढत बर जर जांम। तब लगि करन मत्तन कांम ॥छं० १११॥
सुनि उर लग्गि अग्गि उदार। परति न षिनक चैन दुवार ॥
बरु चर चवत बारु विचार। सिर दहु वार नंमि उदार ॥छं० ११२ ॥

दूत का ब्योरेवार दिल्ली का समाचार कहना।

दूहा - सुनत बत्त षुरसांन[1] बर। बोले दूत हजूर ॥
पुछै साहि सुचित्त करि। बिवपरि षबरि संमूर ॥ छं० ११३ ॥

बचनिका- सुरतांन सु विहांन सुलतान साहाब दीन ॥
करि करतार कि जोर। आमु कित्त जे अरु दल की जोरि जोरि ॥
जनु दरियाव की हिलोर। मिलते सों मुह जोरे ॥
अन मिलत सों षल षंचि कढोरे[2]। सुरतांन सुचिर दूतांन ॥
आंनि कही कायथ धुमांन। दिल्ली की षबरि विवरि लिषि दीनी ॥
अनंगपाल तूंअर बन बास लीनी ॥
देस है गै कोस पुत्री पुत्र प्रिथीराज को दीनी ॥
पष्ष सत हुए वास कीनें। तरुनि पुत्र परिवार सुष चेंन ॥
पष्ष पञ्च कैमास कों भए आएं। मास इन दिन अठ्ठ भए चावंड बसाएं॥
तीन मास लोहान बीतें। बीम रोज कंन्ह चहुआंन हूतें ॥
ओर सब सामंतकी बसही आंनी। कितेकों आंननै मांनी ॥
चौहांन वास की आग्या दीनी। सब सामंत सीम नांमि लीनी ॥
रोज बाईस तिस पर हमको राह लगे। पडि पतंग जग्गि सानंगे ॥
जबलगि न बैरी जराइ। तब लगि साह मारि करि आइ ॥छं० ११४॥

छंद पद्धरी —उच्चर्‌यो इन प्रति गज्जनेस। चहुआंन तेज दिप्यो असेस ॥
अनगेस राज तजि तिथ्थ जाइ। सामंत सूर सब मिले आइ ॥छं० ११५॥
संकुरे सकल भुम्मिया भयांन। सेवंत आन दरबांन थांन ॥
इक भजत भोमि तजि गहन ग्रेह। निय नारि रंम्मि सक्के न नेह ।छं०११६।
इक मिलत आंनि तजि गहन एंड अंग। षल षग्ग षंडि षेसैं जु अंग ॥
अजहूं सुसेन इक मनी नथ्थ। गोरी सहाब इह घत तथ्थ ॥ छं० ११७ ॥

---

[1]. मो०-सुरतांन।   [2]. मो०-षांच के तोरे।

संवत् ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना ॥

दूहा—ग्यारह सें अडतीस भनि । भो ढिल्ली प्रथिराज ॥
सुन्यो साहि सुरतान बर । बज्जे बज्जि सु बाज ॥ छं० ११८ ॥

अरिल्ल—ग्यारह से अडतीसा मानं । भो ढिल्ली नृपरा चहुआनं ॥
विक्रम बिन सक बंधी सूरं । तपे राज प्रथिराज करूरं ॥छं०११९॥
कलिजुग अरु द्वापर की संधी । साको ध्रंम्म सुतह बल बंधी ॥
ता पच्छै विक्रम वर राजा । ता पच्छै दिल्ली नृप साजा ॥ छं० १२० ॥
कहि चरित्त दिल्ली परिमानिय । सब गुन साह बिबेकत जानिय ॥
सबें चरित्त कहे प्रति भट्टं । सोइ दूत अष्षे[1] प्रति घट्टं ॥ छं० १२१ ॥

दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना, शाह का खुरासान खां आदि से मत पूछना ।

छंद दुअष्षरी—दूत आइ दिल्ली प्रतिथानं । हेम सु हे गै मुद्रित मानं ॥
तपै राज दिल्ली चहुआंनं । नाकरघू नागेंद्र प्रमानं ॥ छं० १२२ ॥
एक बराह थिरं बेराहं । सकल कृत्य सुरराज समाहं ॥
को अग्या भंजै न[2] विराजं । अप्प लज्ज सम सामंत लाजं ॥छं०१२३॥
मुष छुट्टै जो बैन प्रमानं । तो चल्लै अगि जुलित नयानं ॥
सुनो साहि गोरी सुरतानं । एक अंग एकं मन ठानं ॥छं० १२४॥
पुब्ब लोइ दालिद्रो नासं । सबै मुक्र तब टंक विलासं ॥
दड हथ्थ जोगिंद सुदिष्यो । नहि सुदंड प्रज्जा सिर पिष्यौ ॥छं०१२५॥
दुज उचिष्ट नह उष्टं अल्ली । छीन लंक कोइ छीन न भल्ली ॥
कठिन कक्कुच त्रिया प्रकारं । कोइ न कठिन दुअन अधिकारं॥छं०१२६॥
कसै हेम सोनार सुबीरं । कोइ न कसी दरिद्र सरीरं ॥
भै निरभै संसार सुजानं । सुनि सुनि राज वृत सुरतांनं ॥ छं० १२७ ॥
मोवृत अवृत सुवृत गुन जांनी । कहै दूत बिधि विधि परिमांनी ॥
मोहे मझ्झ अवृत्त अभिलाषं । मोज प्रवाह सुभंत बैसाष ॥ छं० १२८ ॥
यों आवै बद्धै कवि मन्न । इतौ राज अप्पै प्रति दिन्न ॥
सेत सुमंत सुमंतह सारी । भो मुष मंद मंद अभिसारी ॥ छं० १२९ ॥
यों जंपिय चहुआंन सुमंतं । स्यों अभिलाष गई मति तंत ॥
बोलि षांन तत्तार प्रकारं । कहो मत सो किज्ज सारं ॥ छं० १३० ॥
अनंगपाल गो तिथ्थ सुनिज्जै । चाहुआंन दिल्ली प्रति रज्जै ॥छं०१३१॥

तातार खां का दिल्ली पर चढ़ाई करने की सलाह देना ।

दूहा—कहै षांन तत्तार बर । अवृत चरित्त सुमंत ॥
जे चरित्र दिल्लिय नृपति । कहि गोरी गुनमंत ॥ छं० १३२ ॥

---

1. मो०—अषें ।
2. मो—नह राजं ।

कवित्त— कहै षांन तत्तार । सुनहि गोरी सुरतानं ॥
मोहि मत्त जो किजियो । सजियै सेन परमानं ॥
कही वत्त माधो सुभट्ट । सोइ लिषि कायथ कग्गर ॥
सोइ दूत कहि वत्त । सुत बोलैं न भट्ट बर ॥
धरमांन नाम काइथ सुघर । तेनु चरित लिष्षे सबैं ॥
अप्पै सुहथ्थ बंदीन ते । सुवृत बीर बीरह तबै ॥ छं० १३३ ॥

तातारखां का मत मान कर सुलतान का सेना सजने के लिये आज्ञा देना ।

दूहा— मानि मंत तत्तार बर । मति गोरी सुरतान ॥
लिषि धरमानह कग्गरह । सुविधि विद्धि परिमान ॥ छं० १३४ ॥
गाथा— माधव कोविदं भट्टं । गीतं काव्यं रसं गुनं ॥
नट्टं चित्रं महा विद्या । पिंगलं भरहं तथं ॥ छं० १३५ ॥

छंद मोतीदाम—
निरंजन भट्ट सुमाधव बीर । कही तिन वत्त सुसत्ति सधीर ॥
इहै कहि मत्त सुमत्त प्रमांन । सजी चतुरंगिनि सेन निधांन ॥ छं० १३६ ॥
कवित्त— सेन साजि चतुरंग । लिषे कग्गर परिमानं ॥
थांन थांन प्रति आंन, । साहि कढ्ढे फुरमानं ॥
आइ सेन सजि थट्ट । सक्क सवै उमरावं ॥
चढिहै कंधे झपटि । जांनि उलट्यो दरियावं ॥
विधि रूप दैव गोरी नृपति । गरुअ मत्ति भंजन सयन ॥
तत्तार षांन षुरसांन षां । करे मत्त सच्चे बयन ॥ छं० १३७ ॥
गाथा— सुनि श्रवनं चर बत्तं । वज्जानं घाव नीसानं ॥
निज है वर आरोहं । चढियं सजि गज्जनी साहं ॥ छं० १३८ ॥
कहि ततार गहि बग्गं । बसो छरोज अजर हो ग्रेहं ॥
रोज पंच मिलि सयनं । करि सुबसि सिंघ बहुआनं ॥ छं० १३९ ॥
कहिब साहि बर बत्तं । सुनि तत्तार सह तुम साजं[1] ॥
अरि आघात समथ्थं । सद्धि सुसिद्धि निद्ध कज्जायं ॥ छं० १४० ॥

शाह की सेना का धूम धाम से कूच करना ।

छंद पद्धरी—
चढि तमकि चढ्यो गोरी सहाब । उल्लट्यो आंनि सायरन आब ॥
पुठि प्रवाह मिलि चलिग सेन।विधि विधि प्रवाह सर भरि जलेन।।छं०१४१।।
द्वादसह कोस किन्नो मुकांम । डेरा सुदीन नारोल गांम ॥
मिलि पुट्ठि आइ सब सेन भार । है लष्ष मीर गरुअत्त गार ॥ छं० १४२ ॥

१. मो—सारं ।

बाजित्र बीर बज्जत बिसाल । नारद्द नंचि तिन भृकुटि ताल ॥
बित्ती त्रियाम उग्गयौ सूर । दल चढ्यौ सत जनु सिंधु पूर ॥ छं० १४३ ॥
संक्रमन सेन हूऔ हुलास । चलि विषम सुषम वेराह भास ॥
षुर धूरि पूरि धूंध्ररिय भांन । गह्वर सुबत सुनियै न कांन ॥ छं० १४४ ॥
दर कूच कूच उत्तरिय सिंध । दल विषम वृत्त उर साहि विद्ध ॥
किन्नौ मुकांम आवार आर । डेरा सुदीन दल उंच ठार ॥ छं० १४५ ॥
झंडे अनंत गडि विविध रंग । फुल्ल्यौ बसंत बनराइ चंग ॥
चर चले धरनि दिल्ली सुथांन । दल कहै चरित षुरसान षांन ॥छं० १४६॥
दूहा —कहै चरित सुरतांन मौं । जे देषे तिन दूत ॥
घुरि निसांन भद्रत्र भरिय । हम दिष्षिय अदभूत ॥ छं० १४७ ॥

छंद भुजंगी—
घुरे नद्द नीसांन उग्गंत सूरं । वरं बीर बाजित्र बज्जे करूरं ॥
घनं पष्षरे बाज दंती मयत्रं । दलं मज्जि मत्राहयं श्रब्बयत्रं ॥ छं० १४८ ॥
रचियं पौज भरं सों अडु साहं । तहां चोर मोर गुरं गज्ज गाहं ॥
तहा बिट्टियं दंषि ऊपन मत । नहां छत्र रंगं त्रियगे डरंनं ॥ छं० १४९ ॥
तहा बीर माही उमाही सुरानी । नहां ढाल बहु रंग अंगी बुरानी ॥
दिसा बांम तत्तार गोरी सु अन्नी।दिसा दाहिनी षान षुरसांन रन्नी॥छं०१५०॥
मुष अग्ग बेनड सेरंन षांन । रनं बैरष रत्त गज गाह ठानं ॥
तिने रत्त उच्चारि कारत डार । रज रत झंडं नर ताल हालं ॥ छं० १५१ ॥
अनी मा हे पुट्टें बिनें माहि म ज । अगें अग्ग बाजी हयं नारि माजं ॥
अगें बांन गीरं सजे जुद्ध मारं । ··· ·· ·· ·· ··मुषे मारमारं । छं० १५२ ॥
सुर दीन दीनं कलि कूक फुट्टी । भरं आइ काल नरी जुद्ध घट्टी ॥
उडी डंबरं अंबरं रेनु पूरं । बरं बाज आघात बज्जे करूरं ॥ छं० १५४ ॥

साह की दो लाख सेना का सिंधु के पार उतरना ।

दूहा -गज्जनेस सब सेन जुरि । आयौ सिंधु उलंघि ॥
कूच कूच आतुर चरिग । दोइ लष्ष दल संघि ॥ छं० १५४ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर अपने सरदारों से परामर्श करना ।

कवित्त —सुनिय बत्त पृथिराज । बोलि कैमास मंत्र बर ॥
कंन्ह काइ[1] चहुआंन । बिरदि बज्जैति[2] नाह नर ॥
रा पज्जून पवित्त । सलष पमार जैत सम ॥
वांम देव अट्ठों जुवान । पर संग राव प्रम ॥

---

१. मो—कक्क २. मो—बज्जेति ।

पुंडीर सेन चंदह सुमति । लोहांनो आजांन भुअ ॥
मिलि सकल मंत पूछिय प्रथुक। सनमांनिय सोमेस सुअ॥छं०१५५॥

कैमास का मत देना कि हम लोग आगे से बढ़कर रोकें ।

कहिय मंत कयमास । सुनो सामंत सब्ब भर ॥
गज्जनेस आयो सु सज्जि । सब सेन अप्प पर ॥
कूच कूच उभ्भार । सुन्यो उत्तार सिंधु नव ॥
सिंध मंत सुभ रच्यो । फोज चंपी न होइ हद ॥
आयो सुराव चावंड तब । कहा विरम रच्यो सयल ॥
इह मंत सिलहसज्जे सहलि । चढि रन चंपहु दुस्ट षल॥छं०१५६॥

इस मत को सब का मानना ।

दूहा—मांनि मंत सामंत सब । हरषि राज प्रथिराज ॥
बत्त परट्ठिय ग्रेह गय । अप्प अप्प जुस साज ॥ छं० १५७ ॥

पृथ्वीराज का सबेरे उठ कर कूच करना ।

अरुनोदै वैरां विहसि । बज्जि निसांन निहाइ ॥
चढ्यो राज चहुआंन तब । चिति अप्प जुध चाइ ॥ छं० १५८ ॥

कवित्त—तषत सुरंग षुरंग । सुरन ध्रमांन हथ्थ लिषि ॥
सांम दांन अरू भेद । दंड निरनै बिसेष सिषि ॥
इहुत काल इह घरिय । साहि सज्जे चतुरंगिय ॥
सुनि अवाज सुरतांन । हिंदू करिहै रन जंगिय ॥
प्रति कूच कूचनि करि प्रसति । चाहुआंन न करै बिषम ॥
मो मत्ति मांनि माधव सुकथ । सुबर वीर बज्जे सुषम॥छं०१५९॥
चढ्यो राज प्रथिराज । करन मुक्क्यो प्रति साजिय ॥
बाइ गंठि बंधईय । सुबर मानंक सु ताजिय ॥
मंत्र बंधि कैमास । कन्ह चहुआंन सु निठ्ठुर ॥
अवूत बत्त सज्जए । सूर सामंत तत्त गुर ॥
विधि रूप भूप जानन सकल । तत्त मंत बसहु सुबर ॥
संग्राम सूर साधै सकल । षग झिल्ल बफ्फी सुकर ॥ छं० १६० ॥

दूहा—चढ्यो राज प्रथिराज बर । सजि सुभट्ट अप्पान ॥
विकसे अंबुज बीर बर । काइर कंपत प्रान ॥ छं० १६१ ॥

कवित्त—चढ्यो राज प्रथिराज । मंगि गज रूप सुताजिय ॥
षित्रिय जाति सुभांति । हेम नग साकति साजिय ॥
बंधि सत्त सैं तोन । बांन तीषे सुभाल जल ॥
बोलि कन्ह चहुआंन । मंत्र कैमास बुद्धि बल ॥

बोले सु सब्ब सामंत भर । अरु जु सूर सथ्थें सयन ॥
आए सुराज अग्या सुसजि । चले जुद्ध सिर सजि गयन॥छं०१६२॥

पृथ्वीराज की सेना का वर्णन ।

छंद त्रोटक —
चढि राज चल्यौ सब सेन सजं । उड़ि षेह रजं रुकि अंब रजं ॥
सुर त्रंबक रोर तहृत्र हुयं । सहनाइय सिंधु बसंन हियं ॥ छं० १६३ ॥
विकसे अरुबिंद जुबीर उरं । किन नंकिय कातर नारि नरं ॥
दल संग जु ग्रिद्ध पयांन सजं । हरषै नचि जुग्गिनि जुद्ध रजं ॥ छं० १६४ ॥
दह सत्त सहं सदलं मिलियं । नव कोस सुनन्त मिलान दियं ॥
अति कूचहु कूच दलं षरियं । जल पंथहु जाइ सु उत्तरियं ॥ छं० १६५ ॥

युद्धारंभ होना ।

दूहा —कूच कूच गोरी सयन । जकि आयो जल पंथ ॥
सुदि बैसाष मृग भृगु दसैं । सज्ज्यो जुद्ध समंथ ॥ छं० १६६ ॥
दिष्षि रेन डंबर डहर । चढिय चाइ चहुआंन ॥
सुर आनंद अनंद किय । काइर कंपि पुलांन ॥ छं० १६७ ॥

युद्ध वर्णन ।

छंद मुकुंद डामर —
ढलकंतिय ढाल निसांन नहि मिय चंचल सूर चढे कसियं ॥
त्रक टोप सरूप रँगा दह हथ्थल जोर सनाह विषि जरियं ॥
रुम मंस उक्रंमत मुंछ तिरछिय दांन मगानन न्हान कियं ॥
नचि नारद तुंमर अबर आनद ईस सु सिंगिय नद्द दियं ॥ छं० १६८ ॥
चढि अच्छरि ईसय सीस निरष्षन बीर जु जुद्ध बिनोद नचं ॥
सुर रच्चिय रथ्थ अयास सुबासिय गोद चवट्ठिय मांनि सचं ॥
नृप रच्चिय फौज सुपंच प्रपंचिय गज्जिय गेंन सिरं धरियं ॥
भरमंनिय अप्प सु जेत प्रकासिय बदि बिरद्द प्रती परियं ॥ छं० १६९ ॥
बर सांइय सुब्भर जीव कलप्पिय मंनि अनंत सु सीस भुअं ।
पल वारि पलद्धर श्रोन सकत्तिय डिंभु अगिद्धिय चित्त घुअं ॥
सुप नेंन मुरत्तिय श्रोन सुरत्तह मुंछहु भोंह उभं धुकजं ॥
नृप दिष्षिय सुब्भर सूर अनंदिय के कसि बीरति फौज सजं ॥ छं० १७० ॥

कवित्त- इत रचिग सेन सामंत । जुद्ध मारू रा भष्षन ॥
मोर व्यूह आकार । अप्प दुर्जन दल दग्गन ॥
एक पंष निड्डुर नरिंद । सथ्थ कैमास राम भर ॥
दुतिय पंष अत ताइ । बलिय बलिभद्र सार झर ॥
पिड पाइ लव राज हुअ । रवइ पुंछ पज्जून भर ॥
पुंडीर चंच कीनो नृपति । महन रंभ मच्यो सुघर ॥ छं० १७१ ॥

दष्षिन दिसि कैमास । बांम दिसि कन्हति सज्जिय ॥
च्यार सहस सेना सजंत । नील फर हर दल रज्जिय ॥
सकट व्यूह सजि सुभर । कग्ग चामंड अग्ग करि ॥
मंत्र राज ढंढरिय । ठंठ मारू महंन धरि ॥
चंदेल माल भौंहा सुभर । उभय चक्र सज्जे उभय ॥
प्रथिराज अनी दष्षिन दिसा।विषम बांग सज्ज्यौ सुरय॥छं०१७२॥
अवर अनी सामंत । षरे नव वीय महाभर ॥
सोलंकी रन बीर । सुतन विझह सुराज बर ॥
षीची राव प्रसंग । हीर पम्मार सहथ्थं ॥
सुवर बीर अवसांन । करन प्राक्रम अकथ्थं ॥
पंम्मार दोइ सिघह सुअन । सुअ प्रसंग सागर बरन ॥
बघ्घेल भींम लष्षन सुअन । रांम वांम द्वय हझ्झरन ॥छं० १७३॥
बांई दिसि चहुआंन । कंन्ह सज्ज्यौ दल बद्दल ॥
सहस तीस सजि सेन । मध्य सामंत अठ्ठबल ॥
हर सिघह बर सिघ । हक्क हंमीर गंभीरह ॥
मंडली कमल नाल । भांन भट्टी बर नीरह ॥
उदिग षगांर बिरदैत बर । सोलंकी सारंग उर ॥
सिर कन्ह छत्र सज्यो नृपति । भार सयंनह जुद्ध भर ॥छं० १७४॥
मुष अग्गों पम्मार । सलष सम जैत सु सज्जिय ॥
लोहांनो आजान । तिन मद्धि विरज्जिय ॥
सहस पंच सेना समथ्थ । पंम्मार सिघ सम ॥
मध्य सूर सामलो । भीम चाल्लुक्क पर जम ॥
ठंठरी टांक चाटा चपल । धवल जसह लोहांन सुअ ॥
लोहांन बंध केमरि समथ । अग्र भाग सब सूर हुअ ॥ छं० १७५ ॥
मध्य भाग प्रथिराज । सहस सेना सु च्यारि सजि ॥
चंद्र सेन पुंडीर । राइ पर सिघ सिघ गजि ॥
बिझ राज लष्षन बघेल । राइ रामह कनकू सम ॥
कूरंभह रज्जून । भीम चहुआन भीम क्रम ॥
माषरह दास मंधे समय । चाहुआंन नृप कन्ह सुअ ॥
गोइंद राव भुअ हथ्थ नृप । पुठ्ठि सु रज्जिय ॥
आंम देव जद्दों जुवांन । नृप पुठ्ठि सु रज्जिय ॥
स्याम चमर पष्षरह । स्यांम गज ढाल सु सज्जिय ॥
कोगी कंमर राव । अल्ह परिहार सूर बर ॥

अचल अटल चहुआंन । सिंह बारह अभंग भर ॥
जंघाल राइ भीमह सुबर । सागर गुर रिन झूरि बल ॥
सामंत सकल सज्जे समय । कज्ज राज प्रथिराज दल ॥छं०१७७॥
उत गोरी सुरतांन । सज्यौं सेन अध चंद्रं ॥
अर्द्धचंद्र तत्तार । षांन षुरसांन सु वृंदं ॥
अर्द्धचंद्र बर सार । षान पीरोज स इंदं ॥
मधि कलंक जल्लाल । बीर रस बीर समंदं ॥
उज्जल निसंक दोउ कोर बर । तेज ताप सुरतांन हर ॥
चहुआंन राह लग्गन फिर्‌यौ । पूरन पुनिमासी सगुर ॥छं०१७८॥

छंद भुजंगी —
हसी लीन जो गिद जो गिद्द भासै । उड़ी गिद्ध पच्छै मनों मीन भासै ॥
कहै नद्द नंदीं सुनारद्द बीरं । मनों जोग जोगाधि को अंत नीरं ॥छं० १७९॥
करक्कंत बानं झरक्कंति बेनं । गए लज्ज पांबी फटे पक्क पेनं ॥
मयं मत्त दंतीन की पंति सोभै । तिनं देषते इंद के चित्त लोभै ॥छं० १८०॥
झटक्कंत दंती सुपंती प्रकारं । बलाकंति पंती बगं मेघ सारं ॥
झरं डंमरं रेन रुकि भूर नब्भ । कलापंत पंतीन की सत्त सब्भं ॥छं० १८१॥
दूहा -दिषिय रेंन डंमर डहर । चढ्यो चाय चहुआंन ॥
सूर अनंद अनंद किय । कायर कंपि परान ॥ छं० १८२ ॥
सज्यो सेन जंगल सु पहु । जिम बद्दल आकास ॥
ढलकि ढाल ढिल्ली मिली । बिषम बीर रस रास । छं० १८३ ॥

घोर युद्ध होना, मुलतान की सेना का भागना ।

छंद भुजंगी -ढलक्की मिली ढाल ढालं दुसेनं । चढे देव देषै रचै रथ्थ गेनं ॥
हकं हक्क बज्जी गजं तार[1] नारं । महा जुद्ध लग्गो उठ्यो धोम धारं ॥ छं० १८४ ॥
छुटै बान हुव्वाइ[2] अप्पार भारं । जबी दामिनी इंद्र भादों सुढारं ॥
मिली कन्ह अन्नी षुरासान अन्नी । महा षेत मत्तो गजं गाह रन्नी ॥छं० १८५॥
छुटै बांन कम्मान हव्यो सुगेनं । उवं जुद्ध दिट्ठं न प्राचार सेनं ॥
उभै जुद्ध मंड्यो महा भार भारं । भरं दून भग्गे धरं धार धारं ॥छं० १८६॥
गिरें उत्तमंगं धरं सूर नंचै । भरं सीम कंमालियं माल संचै ॥
करै जोगिनी जोग उच्चार बीरं । पियें श्रोन धारं अपारं सुधीरं ॥ छं०१८७॥
मिले षेत षुरसांन षां कन्ह धायौ । उरं झारि सींगी अपुट्ठं गिरायौ ॥

---

१. मो—तारि ।
२. मो—हुवाय ।

परयौ भूमि षुरसांन षानं सुषाए । अनी भग्गि गय और सुरतांन ठाए ॥
॥ छं० १८८ ॥

परे सहस दो षांन कढि षेत साजं । बजी जैत देषी प्रथीराज राजं ॥
भगी फौज सुलतांन देषी बिहालं । कुप्यो साहि षुरसांन किय नैंन लालं ॥
॥ छं० १८९ ॥

फ़ौज को भागते देखकर सुलतान का क्रोध करना ।

दूहा—भगी फौज सुरतांन दिषि । कोप्यो साहि सहाव ॥
बहुरि मिलत जनु मेघ घुरि । सावन बद्दल आव ॥ छं० १९० ॥

सेना को ललकार शाह का फिर ज़ोर बांधना ।

कवित्त—हक्कि सूर सुरतान । साहि बंध्यो बल भारी ॥
अग्गेई चौरंग । राज रष्षन अधिकारी ॥
सुनै साहि सुरतान । साहि जीवन सुरतानं ॥
सुबर बीर हिंदवांन । कलह चंपै हिंदवानं ॥
दीजै न दान दुर्जन घरह । दइ दुवाह ऊभौ नृपति ॥
मुरि भग्यो साहि सुरतांन कों । साल रहै जीवन सुपति ॥छं०१९१॥

तातारखां का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना,
पृथ्वीराज की विजय ।

तब कही षांन तत्तार । साह मंनी परिमानं ॥
रुप्यो साहि नरिंद । साहि षुरसांन सवानं ॥
धरी एक आवद्ध । बीर बीरह रस सध्या ॥
षेत परे तत्तार । साह गोरी गई सत्या ॥
मुह मेल साह चहुआंन हुअ । हैयप्परि दौरे असुर ॥
चामंड राइ दाहर तनय । जै सबद्द उचरंत उर ॥ छं० १९२॥

दूहा—दंतिपत्ति हल्लिय विहर । जलद कि पव्वय पाइ ॥
बाइ सहाई कै अनल । कै ग्रीषम लगि लाइ ॥ छं० १९३ ॥

छंद माधुर्य—दव दवरि दवरित सैंन डमरित गज्ज गहरित सद्दयं ।
बिरहंत भद्दव जलद हद्दव कीच मच्चित भट्टयं ॥ छं० १९४ ॥
गिरि पंषि उल्लसि उडय दस दिसि बाय वेग छरि छरैं ।
देषंत मन गति होत पंगुर दांन बरषत गिरि झरैं ॥ छं० १९५ ॥
गज पंति दंतिन कंति उज्जल बग्ग पंति कि राजए ।
रवि किरन बद्दल मध्य मानहु अन्य सोभ सु साजए ॥ छं० १९६ ॥
बर करत अनतह षग्ग षुल्लत उडत किरच सुपंडि कै ।
इल चंद मानहु कोपि उडगन अद्ध रयनीय छंडि कै ॥ छं०१९७ ॥

हूल मलिय है दल दलित पैदल सैल सिषरहु फट्टियं ।
गोपीय कन्हं जनु अगन्हं सार मार उहट्टियं ॥ छं० १९८ ॥

दूहा— गज्जन समवर रोस रस । बज्जिग मार अपार ॥
षोलि षग्ग सैंभरि बलिय । जनुपाइक पुंतार ॥ छं० १९९ ॥

छंद रसावला—
करी मत्त भारी बहे सार धारी । दुहथ्थं करारी । तुटै दंत जारी ॥छं०२००॥
रदं क्रिच्च झारी । मांने मच्छ वारी ॥ लगें वांन भारी । गिरं टिड्डि चारी ॥ छं० २०१ ॥
लगें संग भारी । मनों ब्रज्ज तारी ॥ उठें छंद धारी । मनों धूम झारी ॥ छं० २०२ ॥
लगें केक टारी । धनुं चंद्र धारी ॥ लगि दंति अंती । म्रिनाली सुहंती ॥ छं० २०३ ॥
भरंके उछारें । बकें मार मारें॥ढहे गज्ज जारी । गिरं श्रृंग सारी ॥छं०२०४॥

दूहा— गज्जन गज गज्जै सुभट । रहै रोकि रन रंग ॥
छिति छज्जै छित्री इसे । जिसे भीम अनभंग ॥ छं० २०५ ॥

छंद पद्धरी—
अति उद्ध जुद्ध अनबद्ध मूर । बलवंत मंत दीसै करूर ॥
झलमलहि संग फुटि परहि तुच्छ । उप्पमा चंद जंपैसुअच्छ ॥छं० २०६॥
दल स्यांम हृदय सोभै प्रमांन । मानों कि पंचमो भाग भांन ॥
बर संग फुट्टि सिप्पर प्रमांन । छर स्यांम राहु सुभ्भै समांन ॥छं० २०७॥
मानों कि राहु ग्रहि ससिय आइ । छुट्टी कि किरन बद्दल नचाइ ॥
किरवांन वंक बढ्ढी बिसाल । ससि बनिय डोरि करि चक्र चाल ॥२०८॥
सिप्पर सुस्यांम हेमह मुहंत । मांनो कि चक्र हरि धरिय संत ॥
लै संगि अंग है हनि उठाइ । उप्पमा चंद जंपै सुभाइ ॥ छं० २०९ ॥
मांनो कि हथ्थ हथिनापुरेस । षंचै सु बलिय बलिभद्र भेस ॥
प्रथिराज करिय करि संग सुद्ध । लांगत भेस दीसंत उद्ध ॥ छं०२१० ॥
मांनों कि रांम कामह प्रमांन । षंचैति द्रोन हनमंत जांन ॥
ढहि पर्यो गज्ज बर षेत भूमि।मांनो सुअ सुरनिय अंत झूमि॥छं०२११॥

दूहा— चक्र रूप दोइ दीन दल । बल अभूत बलवंत ॥
जांनि जुगंतहु जम लरें । करन प्रथीपुर अंत ॥ छं० २१२ ॥

छंद विअष्षरी— पूरन ससि सुरतांन नरिंदं । भारथ राहु भिरें भर दंदं ॥
हींदू सेन चढे रिन षंतं । जित्तन दल षुरसान सुहेतं ॥ छं० २१३ ॥
डोंरु हथ्थ हबै कर डाबै । सींधू राग श्रवै सुर गावै ॥
नंचै बर बेताल त्रिषाइ । नारद नद्द करै किलकाई ॥ छं० २१४ ॥
सुर रसं सुर बीर प्रमानं । उडै उछंग अरिन निढानं ॥
वाहिम्मी वाहिर अधिकारी । गहन साह गोरी षग रारी ॥छं०२१५॥

जंपे मेछ कुसाद कुसादे । पारसीय मीरं रसवादे ॥
षां ततार षुरसांन पषानं । गहें सूर संमुह रन बानं ॥ छं० २१६ ॥
पंच बांन वह ते अघकोसं । सह्यो नाह नरिंद सरोसं ॥
रुद्ध्यो दिष्षि साहि सब षानं। गहिय तेग अनमित्त जुवानं॥छं०२१७॥
दूहा —मिले खेत रन रंग रस । षां ततार कैमास ॥
विषम रुद्र रत्तो बिहसि । मनों तेग रस रास ॥ छं० २१८ ॥

छंद मोतीदाम —
मनों रस रासय तेगय तार । करकर बज्जिय रीठ करार ॥
चलंतह बांन सुभांन छवान । निरष्षत अच्छरि व्योम विमांन ॥ छं० २१९ ॥
छुटै गज बाज अनंदिय जात । मनों लगि गोम उदोत उदात ॥
भिरें भय भोम सु धूंधय भार । लषै न को सूरति एक दुरार ॥छं० २२०॥
फिरें धर बज्जिय भार करार । ठिलें नठिलाइ न मज्जिय हार ॥
नचं भति जोगिनि नंचिय बीर । मिटी सिर मालहु संकर पीर ॥ छं० २२१ ॥
मिले कायमास ततार सुअंग । हन्यो कयमासह जांनुय संग ॥
फुटी जुग जंग तुरंग समेत । पर्यो हय मुच्छ ततार सुषेत ॥ छं० २२२ ॥
बिना सिर नंचिय सद्दि कमंध । चले असि टेकि सु तुट्टिय रंध ॥
षिले विक मंध कमंध सुबीर । सहस्सह पंच परे रन मीर ॥ छं० २२३ ॥
भगी रन फौज सु चंडह साहि । जिते र१ हिंदुअ ठट्ठ मुठाहि ॥ छं० २२४ ॥

पृथ्वीराज का सुलतान की सेना का पीछा करना ।

दूहा --भगी अनी ततार लषि । दल परमारह चंप ॥
धप्यो राज प्रथिराज तब । लेहु लेहु मुष जंप ॥ छं० २२५ ॥

छंद पद्धरी —धप्यो सुराज प्रथिराज हकि । उर रोहि सेन उप्परें धकि ॥
मिलि फौज अट्टकिय एक ठांम । आघात रीठ मत्ती उरांम ॥छं० २२६॥
किलकार हक्क बज्जी करार । आवद्ध तुट्ट मुष धार धार ॥
चंप्यो पटाटि चामुंड राव । हल हल्ल हूक मते हलाव ॥ छं० २२७ ॥
बीभच्छ मंत बिय भर अकूर । आवद्ध जांम मच्यो करूर ॥
संगें सुसंग असि असी घाइ । पट्टा सुपट्ट बज्जे निहाइ ॥ छं० २२८ ॥
जम दड्ढ दड्ढ जुट्टें विरांम । छुलिका सुघाव जुट्टे सुआंम ॥
पाटू सुढीक परहार पार । मिले लष्य बष्य भुंभे भुभार ॥ छं० २२९ ॥
कर केस केस एकहु अलुझ्झ । छुरिका सअंनि बाहें सुलझ्झ ॥
तुट्टंत अंत चंपंत पाइ । तुट्टंत सीस जनु विषम बाइ ॥ छं० २३० ॥
किन नतं परत दंती सभार । है परें बिहंड चंडै सधार ॥
है गै परंत धर पूरि पारि । घन स्रोन अंब पूर्‌यो सवारि ॥ छं० २३१ ॥

लग्गे सरसंग नेजा सुढाल । सोहंत पाल तरवर सुहाल ॥
कच्छपह सीस गजराज नूप । धर परे हय गय मगर रूप ॥ छं० २३२ ॥
तुट्टे सुबांह मनुं मीन पांन । सोहंत मीन बर विविध जांन ॥
सोहंत सीस अंबुजह सूर । से वाल विकुर रज्जे बिरूर ॥ छं० २३३ ॥
विगसंत नेंन सुरंगी न दिट्ठ । अंबुज निसांनि मधुकर बयट्ठ ॥
षप्पर सुभरै कालिका वारि । विन हंस सूर उड्डे उभारि ॥ छं० २३४ ॥
पट्टाटि पर्‍यो चामंड धाइ । विहरंत विषम बज्यो सुघाइ ॥
दिध्यो सुघाइ साहाब दिट्ठ । आवद्ध मंत मत्ती सुरिट्ठ ॥ छं० २३५ ॥
मिल्ल्यो सुघाइ चामंड राइ । हय हये उंन उभ्रं उनाइ ॥
हय परे बथ्थ लग्गेव सूर । थल घाव रिट्ठ मत्ती करूर ॥ छं० २३६ ॥
चंपे सुमीर उप्परह धक्कि । सामंत सूर लग्गे विहक्कि ॥
धर परे षेत तहां दस्स मीर । सामंत पंच परि षेत तीर ॥ छं० २३७ ॥
धरि लियो साहि चामंड राइ । नव सहस मीर तुट्टे सुघाइ ॥
चामंड राव हय दिय षवास । सा॒ल नाम पावार तास ॥ छं० २३८ ॥
भग्गो सुषेत सुरतान सेन । जै जया सद्द सुर सद्द गेंन ॥
जे परे मीर सारंत षेत । वरदाय चंद ते गनिव हेत ॥ छं० २३९ ॥

कवित्त- पर्‍यो भीम चहुआंन । बंध भापरह महाभग ॥
सांमदास त्रय बंध । सुतन चहुआंन नाह नर ॥
पर्‍यो षेत जस धवल । सुअन लोहान समथ्थं ॥
केसर केहरि रुप । बंध लोहांन सुतथ्थं ॥
रन परे पंच सामंत बर । षेत रैठ मत्ती भरन ॥
चामंड राइ दाहर तनय । गहत साहि पप्पल सुरन ॥ छं० २४० ॥
परघो षांन सेरंम्र । वितंड मुलतांन षांन धर ॥
मारू मीर सुभीर । मीर जेहांन महाभर ॥
मीर अमुन गजनीय । षांन महमुंद मीर वर ॥
फतेजंग मीरह सुभीर । हासंन रु अंनर ॥
काली बलाइ विरदैत बर । मीर अवम्र सुजुज्झ मन ॥
दस परें षेत वानेत तब । गहत साहि पप्पल सुरन ॥ छं० २४१ ॥
अवर अनी सांमत । परे रन मीर महाभर ॥
सोलंकी रन बीर । सुतन बीम्रह सुराज बर ॥
षीची राव प्रसंग । सुतन सागरह समथ्थं ॥
मकंन बंध षसंग । हीर पामार सु हथ्थं ॥
पामारनीरध्वज सिंघु सुअ । सुत प्रसंग सागर सुअन ॥
बध्येक भीम लष्यन सुवन । राम बाम हृदय हरन ॥ छं० २४२ ॥

दूहा—सहस एक हिंदू अवर । परे घाइ रिन षेत ॥
सहस आठरह असुर दल । परे सुबंधन नेत ॥ छं० २४३ ॥
सहस सात हय षेत रहि । परे पंच से दंति ॥
लुथ्थि कोस पंचह प्रचर । परे सुपाइल अंति ॥ छं० २४४ ॥
षेचर भूचर हंसचर । पलचर रुधिचर चार ॥
न्रप आनंदिय राजकहुं । बलि जै जंपि उचार ॥ छं० २४५ ॥
सूरन सीस जु ईस जुरि । सुर रज्जे बर रथ्थ ॥
रजि अच्छरि आसिष्ष दिय । बर लद्धे बर हथ्थ ॥ छं० २४६ ॥

चामंडराय का सुलतान को पकड़कर पृथ्वीराज के हाथ समर्पण करना ।

कवित्त—बंधि साह चामंड । दियो प्रथिराज सुहथ्थह ॥
राज मांनि पतिसाह । आनि मुष्यासन तथ्थह ॥
कियो दंड पतिसाह । सहस अट्ठह हय सुब्बर ॥
सोइ अद्ध प्रथिराज । दियो चामंड महाभर ॥
मुक्यो सुराज सुरतांन गहि । रोहि सुवासन पठय घर ॥
जित्यो सुराज प्रथिराज रिन । जय जै सद्दय सुर अमर ॥छं०२४७॥

सुलतान को एक महीना दिल्ली में रखकर छोड़ देना ॥

बंधि साह सुरतांन । राज ढिल्लीपुर पत्तो ॥
दंड मंडि सुबिहान । राज जस जस गुन रत्तो ॥
चामर छत्र रषत्त । सकल लुट्टे सुरतानं ॥
मास एक बर वीर । रष्षि मुक्यो सुविहानं ॥
जय जय सुमन क्रित्तिय कवित । डोला राज नरिंद बर ॥
मामंत सूर प्रथिराज सम । भयो न को रवि चक्र तर ॥छं० २४८॥

दूहा—माधो भट्ट सुमंत कथ । सुमत चित्त परमांन ॥
सबर साहि गोरी नृपति । बंधि छंडि उनमांन ॥ छं० २४९ ॥

इस विजय पर दिल्ली में आनंद मनाया जाना, बहुत कुछ दान दिया जाना ।

बंटि बधाय दिल्ली सहर । जीते आवत राज ॥
द्रब्य पटंबर विविध दिय । बज्जा जीत सु बाज ॥ छं० २५० ॥
दुजिय सुबद्दिय प्रति दुजह । त्रिप्या ब्याह बिगत्ति ॥
किमि फिर बंध्यो साह रिन । किम धन लद्ध सुमत्ति ॥ छं० २५१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके माधो भाट कथा पातिसाह ग्रहन राजाविजय नाम उनविसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १९ ॥

अथ पद्मावती समय लिख्यते ।

(बीसवां समय ।)

पूर्वदिशा में समुद्र शिखर गढ़ के यादवराजा विजयपाल का वर्णन ।

दूहा—पूरब दिस गढ गढनपति । समुद सिषर अति द्रुग्ग ।
तहँ सु विजय सुर राज पति । जाद्दू कुलह अभग्ग ॥ छं० १ ॥
हसम हयग्गय देस अति । पति सायर म्रज्जाद ॥
प्रबल भूप सेवहिं सकल । धुनि निसांन बहु साद ॥ छं० २ ॥

विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटी का वर्णन ।

कवित्त—धुनि[1] निसान बहु साद । नाद सुरपंच बजत दिन ॥
दस हजार हय चढ़त । हेम नग जटित साज तिन ॥
गज असंष गजपतिय । मुहर सेना तिय संषह ॥
इक नायक कर धरी । पिनाक धरभर रज रष्षह ॥
दस पुत्र पुत्रिय एक सम । रथ सुरङ्ग उंमर डमर[2] ॥
भंडार लछिय अगनित पदम । सो पदम सेन कूँवर सुघर॥छं० ३॥

कुंअर पद्मसेन की बेटी पद्मावती के रूप गुण आदि का वर्णन ।

दूहा—पदम सेन कूंवर सुघर । ता घर नारि सुजान ॥
ता उर इक पुत्री प्रगट । मनहुं कला ससिभांन ॥ छं० ४ ॥

कवित्त—मनहुं कला ससिभांन । कला सोलह सो बन्निय ॥
बाल बेस ससिता समीप । अंम्रित रस पिन्निय ॥
बिगसि कमल म्रिग भमर । बैन षंजन मृग लुट्टिय ॥
हीर कीर अरु बिंब । मोति नष सिष अहि घुट्टिय ॥
छत्रपति गयंद हरि हंस गति । बिह बनाय संचै सचिय ॥
पदमिनिय रूप पदमावतिय । मनहु कांम कामिनि रचिय ॥छं०५॥

दूहा—मनहु काम कामिनि रचिय । रचिय रूप की रास ॥
पसु पंछी सब[3] मोहनी । सुर नर मुनियर पास ॥ छं० ६ ॥
सामुद्रिक लच्छन सकल । चौसठि कला सुजान ॥
जानि चतुर दस अंग षट । रति बसंत परमान ॥ छं० ७ ॥

पद्मावती एक दिन खेलते समय एक सुग्गे को देख कर मोहित हो गई और उसने उसे पकड़ लिया और महल में पिंजरे में रखा ।

सषियन सँग खेलत फिरत । महलनि बाग निवास ॥

१; क्र—घन ।   २ को—भ्रमर ।   ३. क्र—मृग ।

कीर इक्क दिष्षिय नयन । तब मन भयो हुलास ।। छं० ८ ।।

कवित्त- मन अति भयो हुलास । विगसि जनु कोक किरन रवि ।।
अरुन अधर तिय सधर । बिंब फल जानि कीर छबि ।।
यह चाहत चष चक्रित । उहजु तक्किय झरपि झर ।।
चंच चहुट्टिय लोभ । लियो तब गहित अप्प कर ।।
हरषत अनंद मन महि हुलस । लै जु महल भीतर गई ।।
पंजर अनूप नग मनि जटित । सो तिहि मँह रष्षत भई ।।छं० ९।।

पद्मावती कीर के प्रेम में खेल कूद भूल कर सदा उसी को पढ़ाया करती ।

दूहा— तिही महल रष्षत भइय । गइय षेल सब भुल्ल ।।
चित्त चहुट्टयो कीर सो । रांम पढ़ावत फुल्ल ।। छं० १० ।।

पद्मावती के रूप को देख कर सुग्गे का मन में विचार करना कि इसको पृथ्वीराज पति मिलै तो ठीक है ।

कीर कुंवरि तन निरषि दिषि । नष सिष लौं यह रूप ।।
...रता करी बनाय कै । यह पदमिनी सरूप ।। छं० ११ ।।

कवित्त— कुट्टिल केस सुदेस । पोह परचियत पिक्क सद ।।
कमल गंध वय संध । हंस गति चलत मंद मद ।।
सेवत वस्त्र सोहै सरीर । नष स्वाति बुंद जस ।।
भमर भंवहि भुल्लहि सुभाव । मकरंद वास रस ।।
नैन निरषि सुष पाय सुक । यह सदिन मूरति रचिय ।।
उमा प्रसाद हर-हेरियत । मिलहि राज प्रथिराज जिय ।।छं० १२।।

पद्मावती का सुग्गे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है ।

दूहा— सुक समीप मन कुंवरि को । लग्यो बचन कै हेत ।।
अति विचित्र पंडित सुआ । कथत जु कथा अमेत ।। छं० १३ ।।

गाथा— पुच्छत बयन सुबाले । उच्चरिय कीर सच्च सच्चाये ।।
कवन नाम तुम देस । कवन थंद करै परवेस ।। छं० १४ ।।

सुग्गे का उत्तर देना कि मैं दिल्ली का हूं वहां का राजा पृथ्वीराज मानो इंद्र का अवतार है ।

उच्चारिय कीर सुनि बयनं । हिंदवान दिल्ली गढ अयनं ।।
तहां इंद अवतार चहुवानं । तहं प्रथिराजह सूर सुभारं ।।छं०१५।।

पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना ।

छंद पद्धरी—पदमावतिहि कुंवरी संघत्त । दुज कथा कहत सुनि सुनि सुवत्त।।
हिंदवांन थान उत्तम सुदेस । तहं उदत द्रुग्ग दिल्ली सुदेस ।। छं० १६ ।।
संभरि नरेस चहुआंन थांन । प्रथिराज तहां राजंत भांन ।।
वैसह बरीस षोडस नरिंद । आजानबाहु भुज लोक यंद ।। छं० १७ ।।

*संभरि नरेस सोमेस पूत । देवंत रूप अवतार धूत ॥
सामंत सूर सब्बैं अपार । भूजांन भीम जिम सार भार ॥ छं० १८ ॥
जिहि पकरि साह साहाब लीन । तेहुं बेर करिय पानीप हीन ॥
सिंगिनि सुसद्द गुन चढ़ि जंजीर । चुक्कै न सबद बेधंत तीर ॥ छं० १९ ॥
बल बैन करन जिम दांन पान । सत सहस सील हरिचंद समान ॥
साहस सुक्रंम विक्रम जुबीर । दांनव सुमत्त अवतार धीर ॥ छं० २० ॥
दिस च्यार जांनि सब कला भूप । कंद्रप्प जांनि अवतार रूप ॥ छं० २१ ॥
दूहा—कामदेव अवतार हुअ । सुअ सोमेसर नंद ॥
सहस किरन झल हल कमल । रिति समीप वर विंद[1] ॥ छं० २२ ॥

पृथ्वीराज का रूप, गुण सुनकर पद्मावती का मोहित हो जाना ।

सुनत श्रवन प्रथिराज जस । उमग बाल विधि अंग ॥
तन मन चित चहुवांन पर । बस्यौ सु रत्तह रंग ॥ छं० २३ ॥

कुंवरी के स्यानी होने पर विवाह करने के लिये मा बाप का चिंतित होना ।

वेस बिती ससिता सकल । आगम कियौ बसंत ॥
मात पिता चिंता भई । सोधि जुगनि को कंत ॥ छं० २४ ॥

राजा का वर ढूंढने के लिये पुरोहित को देश देशांतर भेजना ।

कवित्त—सोधि जुगति कौ कंत । कियौ तव चित्त चहौं दिस ॥
लयौ विप्र गुर बोल । कही समझाय बात तस ॥
नर नरिंद नर पती । बड़े गढ़ द्रुग्ग असेसह ॥
सीलवंत कुल सुद्ध । देहु कन्या सुनरेसह ॥
तब चलन देहु दुज्जह लगन । सगुन बद दिय अप्प तन ॥
आनंद उछाह समुदह सिषर । बजत नद्द नीसांन घन ॥छं० २५॥

पुरोहित का कमाऊं के राजा कुमोदमनि के यहाँ पहुंचना ।

दूहा—सवालष्ष उत्तर सयल । कमऊं गढ दूरंग ॥
राजत राज कुमोदमनि । हय गय द्रिब्ब अभंग ॥ छं० २६ ॥

पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर कमोदमनि को लगन चढ़ा दिया ।

नारिकेल फल परठि दुज । चोक पूरि मनि मुत्ति ॥
दई जु कन्या बचन बर । अति अनंद करि जुत्ति ॥ छं० २७ ॥

---

*को० कृ—में यह तुक नहीं है । १. को—विंद ।

कुमोदमनि का बड़ी धूम से ब्याह के लिये बारात लाना, पद्मावती का दुखित हो कर सुग्गे को पृथ्वीराज के पास भेजना।

छंद भुजंगी—

विहिसितबरं लगन लिन्नो नरिंदं। बजी द्वार द्वारं सु आनंद दुंदं॥
गढंनं गढं पत्ति सब बोलि नुंत्ते। आइयं भूप सब कटु बंस जुत्ते॥ छं० २८॥
चले दस सहस्सं असव्वार जानं। पूरियं पैदलं तेतीसु थानं॥
मंत मद गलित सै पंच दंती। मनों सौंम पाहार बुग पंति पंती॥ छं० २९॥
चलै अग्गि तेजी जु तत्ते तुषारं। चौवरं चोरासी जु साकत्ति भारं॥
कंठ नग नूपं अनोपं सु लालं। रँगं पंच रंगं ढलकंत ढालं॥ छं० ३०॥
पंच सुर सावद् वाजित्र वाजं। सहस सहनाय म्रिग मोहि राजं॥
समुद सिर सिषर उच्छाह छाहं। रचित मंडपं तोरनं श्रीयगाहं॥ छं० ३१॥
पदमावती विलषि बर बाल बेली। कही कीर सों बात तब होइ केली॥
झटं जाहु तुम्ह कीर दिल्ली सुदेसं। बरं चाहुवानं जु आनो नरेसं॥छं० ३२॥

सुग्गे से संदेसा कहलाना और चिट्ठी देना कि रुक्मिन की तरह मेरा उद्धार कीजिए।

दूहा—आनो तुम्ह चहुवांन बर। अब कहि इहै सँदेस॥
सांस सरीरहि जो रहै। प्रिय प्रथिराज नरेस॥ छं० ३३॥

कवित्त—प्रिय प्रिथिराज नरेस। जोग लिषि कग्गर दिन्नो॥
लगु नव रग रचि सरब। दिन द्वादस ससि लिन्नो॥
सें अक्कयारह तीस[1]। साष संवत परमानह॥
जोवित्री कुल सुद्ध। वरनि वर रष्षहु प्रानह॥
दिष्षंत दिष्ट उच्चारिय[2] वर। इक पल न बिलंब न करिय॥
अलगार रयन दिन पंच महि। ज्यों रुक्मनि कन्हर वरिय॥छं० ३४॥

शिव पूजन के समय हरन करने का संकेत लिखना।

दूहा—ज्यों रुक्मनि कन्हर वरी। ज्यों वरि संभरि कांत॥
शिव मंडप पछिछम दिसा। पूजि समय स प्रांत॥ छं० ३५॥

सुग्गे का चिट्ठी लेकर आठ पहर में दिल्ली पहुँचना।

लै पत्री सुक यों चल्यो। उड्यो गगनि गहि वाव॥
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर। अट्ठ जॉम में जाव॥ छं० ३६॥

सुग्गे का पत्र पृथ्वीराज को देना और पृथ्वीराज का चलने के लिये प्रस्तुत होना।

दिय कग्गर नृप राज कर। षुलि बंचिय प्रथिराज॥
सुक देषत मन में हँसे। कियो चलनको साज॥ छं० ३७॥

---

१. को—अगुनीस। २. को—वह चरिय।

चामंड राय को दिल्ली में रख कर और सरदारों को साथ लेकर उसी समय पृथ्वीराज का यात्रा करना।

कवित्त—उहै घरी उहि पलनि। उहै दिन बेर उहै सजि॥
सकल सूर सामंत। लिये सब बोलि बंब बजि॥
अरु कविचंद अनूप। रूप सरसै बर कहु बहु॥
और सेन सब पच्छ। सहस सेना तिय सष्षहु॥
चामंड राय दिल्ली धरहु। गढपति करि गढ़ भार दिय॥
अलगार राज प्रथिराज तब। पूरब दिस तब गमन किय॥छं०३८॥

जिस दिन समुद्र शिषर गढ में बारात पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी पहुँच गया और उसी दिन गज़नी में शहाबुद्दीन को भी समाचार मिला।

जा दिन सिषर बरात गय। ता दिन गय प्रथिराज॥
ताही दिन पतिसाह कों। भइ गज्जनै अवाज॥ छं० ३९॥

यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज का रास्ता आगे बढ़ कर रोका और इधर इसकी सूचना चंद ने पृथ्वीराज को दी।

कवित्त—सुनि गज्जनै अवाज। चढ्यो साहाब दीन बर॥
पुरासान सुलतान। काम काविलिय मीर धुर॥
जंग जुरन जालिम जुझार। भुज सार भार भुअ॥
धर धमकि भजि सेस। गगन रवि लुप्पि रैन हुअ॥
उलटि प्रवाह मनों सिंधु सर। रुक्कि राह अड्डो रहिय॥
तिहि धरिय राज प्रथिराज सों। चंद बचन इहि विधि कहिय॥
॥ छं० ४०॥

बारात का निकलना, नगर की स्त्रियों का गोष आदि से बारात देखना, पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना।

निकट नगर जब जानि। जाय बर विंद उभय भय॥
समुद सिषर घन नद्द। इंद दुहुँ ओर घोर गय॥
अगिवानिय अगिवान। कुँअर बनि बनि हय सज्जति॥
दिष्षन को त्रिय मबनि। चढ़ि गोष छाजन रज्जति॥
विलषि अवाम कूँवरि वदन। मनों राहु छाया सुरत॥
चंपति गवष्षि पल पल पलकि। दिषत पंथ दिल्ली नृपति॥छं०४१॥

सुग्गे का आकर पद्मावती को समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर शृंगार करना, और सखियों के साथ शिव जी की पूजा को आना वहां पृथ्वीराज का उसे उठाकर अपने पीछे घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर रवाना होना, नगर में यह समाचार पहुँचना, राजा की सेना का पीछा करना, पृथ्वीराज के साथ घोर युद्ध होना।

छं० पद्धरी—दिषत पंथ दिल्ली दिसांन । सूष भयो सुक जब मिल्यो आंन ॥
संदेस सुनत आनंद नैंन । उमगिय बाल मन मध्य सैन ॥ छं० ४२ ॥
तन चिकट चार डार्‌यो उतारि । मज्जन[1] मयंक नव सत सिंगार ॥
भूषन मँगाय नष सिष अनूप । सजि सेन मनों मनमथ्य भूप ॥ छं० ४३ ॥
सोव्रन्न थार मोतिन भराय । झल[2] हल करंत दीपक जराय ॥
संगहृ सषिय लिय सहृस बाल[3] । रुकमनिय जेम मज्जत मराल ॥ छं० ४४ ॥
पूजिय गवरि शंकर मनाय । दछ्छिनै अंग कर लगिय पाय ॥
फिर देषि देषि प्रथिराज राज । हृस मुद्ध मुद्ध चर पट्ट लाज ॥ छं० ४५ ॥
कर पकरि पीठ हय परि चढ़ाय । लै चल्यो नृपति दिल्ली सुराय ॥
भइ षबरि नगर बाहिर सुनाय । पदमावतीय हृरि लीय जाय ॥ छं० ४६ ॥
बाजी सुबंब हय गय पलांन । दौरे सुसज्जि दिस्सहृ दिसांन ॥
तुम्हृ लेहु लेहु मुष जंपि जोध । हृन्नाहृ सूर सब पहृरि क्रोध ॥ छं० ४७ ॥
अग्गें जु राज प्रिथिराज भूप । पछ्छें सु भयो सब सेन रूप ॥
पहुंचे सुजाय तत्ते तुरंग । भुअ भिरन भूप जुरि जोध जंग ॥ छं० ४८ ॥
उलटी जु राज प्रथिराज बाग । थकि सूर गगन घर धसत नाग ॥
सामंत सूर सब काल रूप । गहि लोहृ छोहृ इम सारि धार ॥
घमसान घान सब बीर षेत । घन श्रोन बहृत अरु रुकत रेत ॥ छं० ५० ॥
मारे बरात के जोध जोहृ । परि रुंड मुंड अरि षेन सोहृ ॥ छं० ५१ ॥

पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना ।

दूहा—परे रहृत रिन षेत अरि । करि दिल्लिय मुष रुष्ष ॥
जीति चल्यो प्रथिराज रिन । सकल सूर भय सुष्ष ॥ छं० ५२ ॥

पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का समाचार मिलना ।

पदमावति इम लै चल्यो । हृरषि राज प्रिथिराज ॥
एतें परि पतिसाहृ की । भइ जु आनि अवाज ॥ छं० ५३ ॥

अवसर आन कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को पकड़ने के विचार से सेना सजना ।

कवित्त—भई जु आँने अवाज । आय सहाबदीन सुर ॥
आज गहौं प्रथिराज । बोल बुल्लंत गजत धुर ॥
क्रोध जोध जोधा अनंद । करिय पंती अनि गज्जिय ॥
बांन नालि हृथनालि । तुपक तीरहृ स्रब सज्जिय ॥
पवै पहार मनों सार के । भिरि भुजांन गजनेस बल ॥
आये हृकारि हृंकार करि । षुरासान सुलतान दल ॥ छं० ५४ ॥

---

१. ए० कृ–मंजन ।
२. को–कल ।
३. को–नव रस बाल ।
४. कृ–जुरि ।

शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन, पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लेना।

छं० पद्धरी-षुरासान मुलतान षंधार मीरं। बलक्क मो बक्कं तेग अच्चूक तीरं॥
रुहंगी फिरंगी हलब्बी ममानी। ठटी ठट्ठ बल्लोच ढालं निमानी॥ छं० ५५॥
मँजारी चषी मुष्ष जंबक्क लारी। हजारी हजारी हुकें जोध भारी॥
तिनं पष्षरं पीठ हय जीन मालं। फिरंगी कती पाम मुक्कात लालं॥छं०५६॥
तहाँ बाघ बाघं मरूरी रिछोरी। घनं मारसंमूह अरु चौंर ओरी॥
एराकी अरब्बी पटी तेज ताजी। तुरक्की महाबांन कम्मांन बाजी॥छं०५७॥
ऐसे असिव असवार अग्गेल गोलं। भिरे जून जेते सुतत्ते अमोलं॥
तिनं मद्धि सुलतांन साहाब आपं। इसे रुप सों फौज वरनाय जापं॥छं०५८॥
तिनं घेरियं राज प्रथिराज राजं। चिहो ओर घन घोर नीसांन बाजं॥छं०५९॥

पृथ्वीराज का तेग सँभाल शत्रुओं पर टूटना।

कवित्त—बज्जिय घोर निसांन रांन चौहांन चिहो दिस॥
सकल सूर सामंत। समरि बल जंत्र मत्र तस॥
उट्ठि राज प्रथिराज। बाग मनों लग वीर नट॥
कढ़त तेग मनों बेग। लगत मनों बीज झट्ट घट॥
थकि रहे सूर कौतिग गिगन। रगन मगन भइ श्रोन धर॥
हर हरषि वीर जग्गे हुलस। हुरत्र रंगि नव रत्त वर॥ छं० ६०॥

दिन रात घोर युद्ध हुआ, पर किसी तरह जीत न हुई।

दूहा—हुरत्र रंग नव रंत वर। भयौ जुद्ध अति चित्त॥
निस वासुर समुझि न परत। न को हार नह जित्त॥ छं० ६१॥

युद्ध का वर्णन्।

कवित्त—न को हार नह जित्त। रहेइ न रहहि सूरवर॥
धर उप्पर भर परत। करत अति जुद्ध महाभर॥
कहौं कमध कहौ मध्य। कहौ कर चरन अंत रुरि[1]॥
कहौं कंध वहि तेग। कहौं सिर जुट्टि फुट्टि उर॥
कहौं दंत मंत हय षुर षुपरि। कुंभ भसुंडह रुंड सब॥
हिंदवान रान भयमांन मुष। गहिय तेग चहुवान जब॥छं० ६२॥

पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन, शहाबुद्दीन को कमान डाल पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना।

छंद भुजंगी—
गही तेग चहुवान हिंदवान रानं। गजं जूथ परि कोप केहरि समानं॥
करे रुंड मुंडं करी कुंभ फारे। वरं सूर सामंत हुकि गर्ज भारे॥ छं० ६३॥

---

1. रू०—रुरि।

करी चीह चिक्कार करि कलप भग्गे । मदं तंत्रियं लाज[1] ऊमंग मग्गे ॥
दौरि गज अंध चहुआंन केरो । घेरियं[2] गिरदं चिहो चक्क फेरो ॥छं० ६४॥
गिरदं उडी भांन अंधार रैनं । भई सूधि सुझ्झै नहीं मझ्झि नैनं ॥
सिरं[3] नाय कम्मांन प्रथिराज राजं । पकरियै साहि जिम कुलिंगवाजं ॥
॥ छं० ६५ ॥

लै चल्यौ सितावी करी फारि फौजं[4] । परें मीर सै पंच तहँ षेत चौजं ॥
रजंक्कुत पंचास झुझ्झे अमोरं । बजै जीत के नद्द नीसांन घोरं ॥ छं० ६६ ॥

पृथ्वीराज का जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना ।

दूहा—जीति भई प्रथिराज की । पकरि साहु लै संग ॥
दिल्ली दिसि मारगि लगौ । उतरि घाट गिर गंग ॥ छं० ६७ ॥

पद्मावती को वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के निकट त्र्यम्भुजा के स्थान में पृथ्वीराज का पहुँचना ।

वर गोरी पद्मावती । गह्रि गोरी सुरतांन ॥
निकट नगर दिल्ली गये । त्रभुजा चहुआंन ॥ छं० ६८ ॥

लग्न साध कर धूम धाम से विवाह करना ।

कवित्त—बोलि विप्र सोधे लगन्न । सुध घरी परट्ठिय ॥
हर बांसह मंडप बनाय । करि भांवरि गंठिय ॥
ब्रह्म वेद उच्चरहिं । होम चौरी जु प्रत्ति वर ॥
पद्मावती दुलहिन अनूप । दुल्लह प्रथिराज राज नर ॥
मंडयो[5] साह साहाबदी । अट्ठ सहस है वर सुवर ॥
दे दांन मांन षट भेष को । चढ़े राज द्रुग्गा हुजर ॥ छं० ६९ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुलहिन के साथ अपने महल में आना ।

कवित्त—चढ़िय राज प्रथिराज । छाड़ि साहाबदीन सुर ॥
न्रिपत सूर सामंत । बजत नीसांन गजत धुर ॥
चंद्र वदनि मृग नयनि । कल ले सिर सनमुष्ष जुष ॥
कनक थार अति बनाय । मोतिन बँधाय सुष ॥

---

१. कृ०—आल ।
२. कृ०—करीयं ।
३. को०—सब ।
४. को०—में "के चल्यौ निकसि सब फारि फौजं" लिखा है ।
५. कृ०—डंडयौ ।

मंडल भयंक वर नार सब । आनँद कंठह गाइयव ॥
ढोरंत चवर क्किकर करहि । मुकुट सीस तिक जु दियव ॥छं ७०॥

महल में पहुँचने पर आनंद मनाया जाना ।

दूहा —चढ़े राज द्रुग्गह न्रिपति । सुमत राज प्रथिराज ॥
अति अनंद आनंद सें । हिंदवांन सिर ताज ॥ छं० ७१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके श्री प्रिथीराज समुद सिषर गढ़ पद्मावती पाँणि ग्रहणं जुद्ध पश्चात पातिसाह प्रिथीराज जुद्धं श्री प्रिथीराज जुद्ध विजय पातिसाह ग्रहनं मोषनं नाम विंशति प्रस्ताव संपूर्णम् ॥



अथ प्रिथा व्याह वर्णनं लिष्यते ।

(एक्कीसवां समय ।)

चित्तौर के रावल समर के साथ सोमेश्वर की बेटी के विवाह की सूचना ।

कवित्त - चित्र कोट रावर नरिंद । सा सिंघ तुल्य बल ॥
सोमेसर संभरिय । राव मानिक सुभग्ग कुल ॥
मुष मंत्री कैंमास । पांन अवलंबन मंडिय ॥
मास जेठ तेरसि सुमधि । ऐन उत्तर दिसि हिंडिय ॥
सुक्रवार सुकल तेरसि घरह । धर लिन्नो तिन बर घरह ॥
सुकलंक लगन मेवार धर । समर सिंघ रावर बरह ॥ छं० १ ॥

सोमेश्वर का अपनी कन्या समर सिंह को देने का विचार करके पत्र भेजना ।

दूहा – उत्तर दिसि आहुट्ठु कौं । दे कग्गद लिषि वत्त ॥
सोमेस कीनो मतो । भगिनि दिये प्रथु पत्त ॥ छं० २ ॥

समर सिंह के गुणों का वर्णन ।

चौपाई – प्रवत्तवै[1] पहुमी बल राजं । अरु जोगिंद सबन सिरताजं ॥
समर सिंघ रावर चितिज्जै । पुत्रि प्रिया चित्रंग सुदिज्जै ॥छं० ३॥

कवित्त – बर प्रब्बत वैंराज । नरन उत्तिम चित्रंगी ॥
बर आहुट्ठु नरेस । समर साहस अनभंगी ॥
बर मालव गुज्जर नरिंद । सार बंधो बर अड्डो ॥
उंच सग्गपन किये । पुत्त आवै घन अड्डो ॥
बर बीर धीर जाजुल्लति तप[2] । शिवप्रसाद अविचल घरह ॥
प्रियकज्ज अज्ज मन संभरी । सुनि समर कीजै बरह ॥ छं० ४ ॥

दूहा – सोमेसर नंदन मतो । पुच्छि कन्ह चहुआन ॥
आदि ध्रंम घर पंथ ए । हिंदवान कुल भान ॥ छं० ५ ॥

कवित्त – हिंदवान कुल भान । ध्रंम रष्षन सुवेद बर ॥
लै मुंजांनी ढाल । जुज्झ संग्राम सार गुर ॥
सो चित्रंग नरिंद । प्रिया दीनी प्रथिराजं ॥
हेम हयं गय अप्पिय । देन दिल्लीय सब साजं ॥

---

१. मो०–पब्बयपति । २. को०–ए०–यत ।

गरू अत्त बत्त गहिलौत गुर । सिंगी नाद निसांन बर ।।
कालंक राइ कुप्पन बिरद । महून रंभ चाहूंत वर ।। छं० ६ ।।

दूहा – सो भागिनी दीनी प्रिथा । सकल रूप गुन लच्छि ।।
चित्रंगी रावर समर । अंगन अवृत सु अच्छि ।। छं० ७ ।।

पत्र लेकर गुरुराम पुरोहित और कन्ह चौहान का जाना ।

कुंडलिया – बाल वेस भागिनी प्रिया । अरु समर केलि चित्रंग ।।
राज गुरू गुरराम सम । ताजी तेरह तुंग ।।
ताजी तेरह तुंग । मुत्ति नग माल सुरंगी ।।
बर दाहिम कैमास । बीर बंधव मुकि रंगी ।।
नृप कग्गद गहि हृथ्थ । कन्ह अग्या बर एसं ।।
नर उत्तिम चित्रंग । दई बर बाल सुवेसं ।। छं० ८ ।।

पृथा कुंअरि के रूप का वर्णन ।

दूहा – बर बरनन भगिनी प्रिथा । कहि न परै कवि चंद ।।
मानों रति कौ रूप लै । धरि आई मुष इंद ।। छं० ९ ।।

चौपाई – सुफल दियौ फल लद्धो नाहि । इद्र सुबल बलि नवला वाहि ।।
सीस सूर मुप अगनि कुबेर । इन समानह सुदर हेर ।। छं० १० ।।

पृथा कुंअरि और समरसिंह के उपयुक्त दम्पति होने का वर्णन ।

कवित्त – स्वाहा ज्यों ग्रह अगनि । सीय ग्रह राम काम रति ।।
नल दमयंत सयोग । द्रुपद कन्या अरजुनपति ।।
इद्र सची वा जोग । जोग गवरिय अरु शंकर ।।
भांनर नास्तिनि कन्ह । सोम रोहिनी नारि घर ।।
फल अप्प हृथ्थ सो दीन नृप । लच्छि सहज लच्छी सुनन ।।
दुज राज राम ग्रह लगन लिषि । मद्धि महूरत चिंति मन ।छं०११।।
इंद्र जोग पंचमी । सुबर पंचमि अधिकारी ।।
भोम बीय नृप थान । सूर ग्रह केत उचारी ।।
इम सुमंत ग्रह लगन । व्याह दंपति दपति गन ।।
और सबै सुभ जोग । होइ सप जात धान धन ।।
इक मास लगन बर थप्पि कै । दिल्ली वै दिल्ली गयौ ।।
सुरतांन दंड लीनों सुकर । सुकर धंम कारज ठयौ ।। छं० १२ ।।

लग्न का शोधा जाना ।

दूहा – थप्पि सु लगनह राज ग्रह । सोधि पुरान उरान ।।
बाजपेय मुष उद्धरे । प्रिथा व्याह उनमान ।। छं० १३ ।।

कवि चंद कहता है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं सकता पर जहां तक बनेगा उठा न रक्खूंगा।

बहुत मोहि कहत न बनै। बरनत कविन कठोर ॥
गुन मैं थोरिन अप्पि हौं। कछु बरनिहौं सुथोर ॥ छं० १४ ॥

स्त्रियों के शरीर की उपमाओं का वर्णन।

कवित्त विधानजाति—

अहि ससि सन उतंग। पिक्क उर केहरि करिवर ॥
अलक बयन चष चंच। जीह कटि जघन बराबर ॥
किस्न सकल चल अचल। अदिठ अलसंत चलंतह ॥
चंदन नभ वन भवन। अंब गिरि व्यंम बसंतह ॥
सुमनि सरद भय भीत निसि। रति पति लंघत मंदगति ॥
अबला सुअंग ओपम इतिय। कही चंद इन परि विगति ॥ छं० १५ ॥

दूहा—को कवि ओरम बाल की। कहिवे कों समरथ्थ ॥
सब संयोग बनाइ कै। काम चढ्यो मनुरथ्थ ॥ छं० १६ ॥

पृथा कुंअरि के रूप तथा नव यौवनावस्था का वर्णन।

छंद मोतीदाम—

बरनों ससि जुब्बन की वय संधि। तिनं उपमा बरनी बल बंधि ॥
मिली सिसरं रिति राजह जोर। चंप्यौ न तनं विपनं नह कोर ॥छं० १७॥
कवै चलि चंचलता चलि जाइ। धरै कबहूं धन धीरज पाइ ॥
तिनं उपमा बरनी कविचाई। पढ़ावत कांम नई गत ताई ॥ छं० १८ ॥
करं सिर ठंकि सँवारत बार। सिपावत कांम मनों चट सार ॥
दुती उपमा बरनै कवि चंद। चले घट रूप दिखावत इंद ॥ छं० १९ ॥
त्रती उपमा बरनी कवि चाह। लरैं दुअ कोर मनों ससि राह ॥
उठे थन थोर विराजत वाम। धरें मनु हाटक सालिग राम ॥ छं० २० ॥
किधों फल तिंदुअ कंचन जान। धरे मनु भ्रंग सुधा रस पान ॥
तुछं रूम राजिय राजत बाम। पपीलकि सोवन थंभ विश्राम ॥ छं० २१ ॥
जु बंकिय भौंह न तुच्छ गरूर। उठ मनु मच्छ घनंक अंकूर ॥
सुबालय उप्पत मोर सुर्दास। मिले जनु मगल है ससि रीस ॥ छं० २२ ॥
कहूं उठि लागित मोर सुसीर। उठे मनु अंकुर कांम सरीर ॥
तुछं द्रग सोभत कज्जल ताम। चढ़े जनु वाहन बल्लिय काम ॥ छं० २३ ॥
दुहूं कुच बीच सरोमय तट्ट। लगी मृग मद्दय छीन सुघट्ट ॥
तिनें उपमा बरनी कवि रंग। पिपे जनु कालिय के सुतभ्रंग ॥ छं० २४ ॥
कवै मिलि श्रोंन द्रिगस्सुतु लेहि। मनों सिसु जुब्बन तारिय देहि ॥
सविभ्रम हाइ उभारित चक्र। इमं द्रिग इष्ष कटाच्छ सुवक्र ॥ छं० २५ ॥

इते गुन लच्छिन तच्छिन बाल । करी मनों काम सिरी रति माल ॥
भई जब बाल चऊंतय बेस । दई तब पिथ्थ नरिंद गिरेस ॥ छं० २६ ॥

रावल समर सिंह का गुण वर्णन ।

दूहा—नर नरिंद जोगिंद पति । मुंजी ढाल विरद्द ॥
उडगन निकट नरिंद विय । सेवत रहत गिरछ ॥ छं० २७ ॥*

कवित्त - सिगी रा अवधूत । बीर चिचंग नरिंदं ॥
कमल पानि सारथ्थ । अरुन तेज कहि चंदं ॥
बर कप्पन कालकं । विरद साहन सुरतानं ॥
बर प्रब्बत वैराज । भोग जोगह बड़ दानं ॥
सो महन रंभ आरंभवै । एक रंग रत्तो रहै ॥
कलिकाल घाम छिप्पैं नही । झलहल्लंत दुज्जन दहै ॥ छं० २८ ॥

श्रीफल देकर पुरोहित को तिलक चढ़ाने को भेजना और इस संबन्ध से अपने को बड़ भागी मानना ।

दूहा—फल श्रीफल दुज हथ्थ कै । जाइ सँपतो देव ॥
आज हनंदे पाप हम । मिलि चित्रगी सेव ॥ छं० २९ ॥
भोजन भाव अनंत किय । दिसि उत्तर ग्रह रष्यि ॥
पाप जन्म चहुआन को । गय दुज राज सु इष्पि ॥ छं० ३० ॥

पुरोहित का चित्तौर में पहुंचकर बसंत पंचमी को तिलक देना ।

कवित्त—आज हनंदे पाप । समर संमुह ग्रह भग्गे ॥
वय अक्रंम मन नट्ठए[1] । क्रंम सुक्रत[2] फल जग्गे ॥
पंच दिवस रहि थांन । जंपि दुज राज सु आइय ॥
बर बसंत बैसाष । लगन पंचमि थिर पाइय ॥
चतुरंग लच्छि चिचंक दिय । छुयन राम बिप्रह सुतह ॥
जाने कि अग्गि समसान की । देषि सुतन लग्गे मु जंह ॥छं० ३१॥

पृथ्वीराज के विवाह की तयारी करने का वर्णन ।

बाजपेय राज सू । होइ कलजुग्ग ध्रंम्म गुर ॥
और जगनि ना होई । व्याह मंडघो सुध्रंम धुर ॥
रथ चौसट्ठि प्रमान । रथ बर जोग प्रमानं ॥
बार बार पर बाज । बीर सज्जे उनमानं ॥
सा इक्क इक्क कर ना किरनि । सत्त सत्त सो बेद[3] विधि ॥
चित्रंग राव रावर सुध्रम । करन मतौ प्रिथिराज सिधि॥छं०३२॥

---

* यह दोहा मो० में नहीं है

१. कृ० मो०—अक्रंम नट्ठए । २. को० कृ० ए० अकृत ।

३. मो०—बेद ।

हेम हयं गय जुगति । सचे मिष्टान पान बर ॥
बर कुबेर कम्भैन । पार प्रथिराज राज नर ॥
चाव द्दिसि बर गांन । दांन चाव द्दिसि अप्पै ॥
ब्रह्म बेद क्रम छेद । मूर नहि सोरथ थप्पै ॥
जे जोग भोग जोगिंद नव । सो उग्गत महि भुल्लई ॥
प्रथिराज राज राजन बली । बलिन जग्ग सम तुल्लई ॥छं० ३३॥

दूहा – धरम सुथिर राजन बली । देव दैव दुति चाव ॥
चाव द्दिसि सो देषियै । लच्छि मोल लषि भाव ॥ छं० ३४ ॥

छंद मोतीदाम – जयं जय छंद जयं गुन रूप । कटावत हेम सु बारह भूप ॥
दिसं दिसि पूरि नृपं नृप थांन । मनों विधि जग्ग कि देवन थांन ॥छं० ३५॥
रसं रस तोरन बंधत बार । मनो नट वत्त कला गुन चार ॥
सुभै अति सोभ सुभद्रह हेम । मनों बर मेर बिराजत तेम ॥ छं० ३६ ॥
सबै बर बीर फिरै जिहि पास । मनो बर भांन कलान प्रकास ॥
कढ़े गर सुंदरि नान प्रकार । मनों ससि भांन उगे इक बार ॥ छं० ३७ ॥
बिराजत मुत्तिन बंदरवार । मनों मुअ आंन मयूष प्रचार ॥
ग्रहं ग्रह उंच सु पंति विसाल । मनों कयलासय सोभति हाल ॥छं० ३८॥
कथा कविचंद सु उप्पम थोर । बिराजत पंतिय कंतिय चोर ॥
धरें धर अंम्रत पच प्रकार । जचें तिन देत संतोष अहार ॥ छं० ३९ ॥
टगं टग लग्गिय दिष्ट प्रकार । दिषे चहुआंन कलाधर सार ॥
भली विधि रूप प्रकार प्रकार । सुभं जनु इंद्र सु जातिह हार ॥ छं० ४० ॥

कवित्त – नहिन हेम पर भास । लच्छि कुबेर लच्छि गुन ॥
थान थांन नवनिद्ध । देव जंपै सुदेव मन ॥
अनिम महिम गरिमास । लभि देवात मद्धिधिय ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि । राज द्वारह बर बंधिय ॥
जीतिय जितीक सुरतांन निधि । प्रिथा व्याह न्रिमत करै ॥
धंनि धंनि धंन नव षंड हुअ । लंक पंक गड्डिय डरै ॥ छं० ४१ ॥

पृथ्वीराज ने ऐसी तयारी की मानो इन्द्रपुरी है ।

साटक – हैंम हेमय द्वार दारुन गनं[1] । दीसंत लच्छी बरं ॥
पंच द्दून सु च्यारि रत्न गुन ए । सिद्धांत सारं गुरं ॥
संभया वारुन तारु नैव तनयं । धन पौर संघं गुनं ॥
जानिज्जै सुर लोक इंद्र उदितं । धामं सचीवं बरं ॥ छं० ४२ ॥

---

1. कु० मो०–नव ।

पृथ्वीराज का चारो दिशा में निमन्त्रण भेजना, घर घर में तयारी होना।

छंद हनूफाल— धनि धंम धनि प्रथिराज। गुन दच्छि लच्छि विराज॥
मधि जमुन में यों धांम। सुर नाक सुर विश्रांम॥ छं० ४३॥
धज इंव फरहर रूप। सुरतान पट्टय भूप॥
त्रैलोक न्योंतें काज। मनो देव व्याह विराज॥ छं० ४४॥
विधि वरन वरन सु धाम। कुब्बेर बरषिय काम॥
बर धंम जग्गि प्रकार। सम दांन विनयह सार॥ छं० ४५॥
फिरि राज राजन चाल। लछि देव एवति पाल॥
षट पाल कै प्रथु पाल। ....॥ छं० ४६॥
मति धंम भूपति साज। आनंद उछव विराज॥
जगि जोग जुग्गनि नैर। उच्छाह घर घर कैर॥ छं० ४७॥
बिधि भांन सुरपति भांन। चहुआंन तिन सम मांन॥
नव नेह ग्रह ग्रह दान। कवि करै कौन बषान॥ छं० ४८॥
बर जीह फनपति होइ। चहुआन व्याहक जोइ॥ छं० ४९॥

हाथी घोड़े सेना आदि की तयारी का वर्णन।

छंद वृद्धनाराच - परट्ठि सेन सज्जि बीर बज्जए निसानयं॥
नाराच छंद चंद जंपि पिंगलं प्रमानयं।
गजं गजं हिलं मल चला चलं गरिट्ठयं॥
कसंमसं उकस्सि सेस कच्छ पिट्ठ उट्ठयं॥ छं० ५०॥
पर्यो सुभोम भार सो वराह कंध उन्नयं॥
चले सयन्न वंधि भूप चंद जपि बोलयं॥
मनों दसंति काज सेन मेलि इंद्र तोलयं॥
ढुरंत चोंर गज्ज सीसता सिंदूर राजयं॥ छं० ५१॥
मनों त्रिजाम कंठ सूर चंद बंधि लाजयं॥
....
फिरंत डोरि कुंडली सुबाज राज दिष्षहीं॥
कै हथ्थ भोर चंद कब्बि ता भ्रमंत पिप्पहीं॥ छं० ५२॥
सु नच्चई सुरंग धाप बाज ताज उट्ठहीं॥
मनों कि डोरि चक्करी सुहथ्थ हथ्थि नच्चहीं॥
सुबीयता सुरंग चंद उप्पमा सु रट्टई॥
मनोकि तार नभ्भतेय काल तेज तुट्टई॥ छं० ५३॥
लजै भजै मनं गतीय पुब्बता[1] कवी कहै॥

---

1. कृ० मो०—पुब्बका।

सु अंषिका कुरंग गत्ति भांन देषिता रहै ॥
रज रजं जराइ राइ छित्तयं किरावलं ॥
उपम्म चंद कव्वित्ता कही तहां उतावलं ॥ छं० ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तयारी का वर्णन ।

कवित्त—पंच राइ पंचाल । लिन्न वैराट बद्ध वर ॥
जैत सींह भोंहा भुआल । का कन्ह नाह नर ॥
रा पज्जून नरिंद[1] । पांन ठंठरिय सिवनग ॥
दह रावत आजांन । बाह बंधव सुवन्न अग ॥
बंधन सुमौर मेवार पति । अति उछाह आनंद घरि ॥
संजुरिय[2] जांन छत्रन सहस । सहस अद्ध बज्जन सुघरि ॥छं०५५॥

दूहा—जस वेली वर हथ्थ लै । फल पुच्छै चित रंग ॥
बर सोमेसर हथ्थ दै । ग्रह सज्जै रस जंग ॥ छं० ५६ ॥

रावल समर सिंह का ब्याह के लिये पहुंचना, रावल की शोभा वर्णन ।

आयो बर रावर समर । तोरन संभरि वार ॥
बाल बेस बनिता बनी । मनों संग रति मार ॥ छं० ५७ ॥
सूर रूप रावर समर । बेस बाल सत पत्र ॥
प्रीत चंद कमनिय कुमुद । परस सरस सित[3] रत्त ॥ छं० ५८ ॥

नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा वर्णन ।

छंद मोतीदाम—
चढ़ी घर जाहिन बाल[4] बिसाल । रही लघुवेस लगी चित्रसाल ॥
तनं सुघ बालय अचल लेंहि । चपं चपला कुलटा गति केंहि ॥ छं० ५९ ॥
हलावत चंचल अंचल नारि । मनों विधि देंहि कटाच्छन गारि ॥
बंध्रे सुर नारि कयं सुर रंग । उरि निरखें घन विद्युत अंग[5] ॥ छं० ६० ॥
झमं झम होई सुहेम किरन्न । ससी पर होइ मयूष अरुन्न[6] ॥
मची बर बीरन पीकह[7] कीच । बरघ्य कि मंगल सूर सु बीच ॥ छं० ६१ ॥
झमं झम होत करं नथ पान । परी छवि होइ रवी ससि जानि ॥
तिन मुष यों नथ में झलकाइ । न दिष्षहि उंच रहै ललचाय ॥ छं० ६२ ॥
दिपै नग चीर चिराकन वांम । रचै जनु दीपक कामय स्यांम ॥
सु उज्जल भोंन चिराकनि जोति । फिरै तहां बाल जराइन कोति॥छं०६३॥

---

१. कृ० ए०—रा पजून पूरंन ।　　२ मो०—संमिलिय ।
३. मो०—हिततब ।　　४ मो०—बाम ।
५. ए० कृ० को०—दुरि देखत मेघ नहिन सु अंग ।　　६. मो०—अरंग ।
७. मो०—बीरह पीकन ।

उदै जनु लिच्छमी कंति [1]त्रिगास । किधौं तप तेज किराज विलास ॥
कहै कवि चंद उधम्म प्रकास । बन्यौ जनु प्रप्पन[2] तेज विलास ॥छं० ६४॥

समरसिंह के पहुंचने पर मंगलाचार होना ।

कवित्त—बर कलस्स बर बंदि । बंदि तरुनिय सर लिन्नौ ॥
ग्रह सुरंग कवि चंद । तहां उप्पम बर दिन्नौ ॥
धन चंदन बर पट्ठ । सिढिय सोभा सुफटिक मनि ॥
धन प्रवाल थुंभिय बिलास । सिर सोभ सुरंग फुनि ॥
उत्तरिय बीर रावर समर । बर जोगिंद नरिंद गति ॥
शृंगार बाल भूषन कहौं । जु कछु चंद बरदाइ मति॥छं०६५॥

दूहा—स्यांम बेस नन बालमय । घटि न कछूब किसोर ॥
दोष बाल बरनत कविय । भयौ भेंर घर चौर ॥ छं० ५६ ॥
बर सुबस्त्र तजि बाल नें । सैसब[3] मिस सुंढारि ॥
अब भूषन जब ग्रह करहि । जोवन चढत सवारि ॥ छं० ६७ ॥

शृंगार का वर्णन ।

छंद त्रोटक—
तजि मज्जन सज्जि सिंगार अली । प्रगटी जनु कंद्रप जोति कली ॥
जुसँवारिय केस सुरंग सुगंध । तिनं बर गुंथि प्रसून सु बंधि ॥ छं० ६८ ॥
तिनं उपमा सु कहै कवि सुद्ध । लग्यौ ससि राह अधंमय[4] जुद्ध ॥
चलें अलकें अलि चंचल घट्ट । लगी जुनु कालिय नागिनि पट्ट ॥ छं० ६९ ॥
जर्यौ ससि फूल धर्‌यौ मनिबद्ध । उग्यौ गुर देव किधौं निसि अद्ध ॥]
बियं उपमा कबरी सु अलप्प । चढे मनु[6] मेर ससी लय श्रप्प ॥ छं० ७० ॥
सी मंति सुमुत्तिय बंधि संवारि । तिनं उपमा बरनी सु विचारि ॥
परी रवि होड मयूषन तार । भए जनु सिद्ध उधातम धार ॥ छं० ७१ ॥
बनी कबरी बर पुत्तरि दांम । अध्यातम पाठि पढावत कांम ॥
धर्‌यौ बर भाल तिलक्क मिलाइ । मनों ससि रोहिनि आनि मिलाइ ॥
॥ छं० ७२ ॥
मनों ससि बीयक तीय समान । तिनं सिरसाइ लिलाट सुजांन[7] ॥
दुती दुतियं बरनो कवि चंद । दुर्‌यौ छबि देखि सरद्द को इंद ॥ छं० ७३ ॥
बनी बर भौंह सु बंकिय एह । मनों धनु कांम धर विन जेह ॥
कहौं बर नासिक ओपम एह । सु काम भवन्न कि दीपक तेह ॥ छं० ७४ ॥

---

१. ए०—विग्रास । २. मो० दर्प्पन ।
३. मो०—बिसाल । ४. मो०— शैशव ।
५. मो०— अधार्मय । ६. मो०—मनों ।
७. ए० कृ०—सुजानि ।

द्रगं उपमा दुति यौं दमकै । सु मनों सुत षंजन के चमकै ॥
जु दिषै वर भाइ दुलोचन कोर । मुषावत कांम कमान के जोर ॥छं०७५॥
आटंकन की उपमा इतनी । जु कही कवि चंद सुरंग घनी ॥
जु सुन्यो रवि राह ग्रह्यौ ससि है । सु फिरै दुहु बीच सहायक ह्वै ॥छं०७६॥
उपमा सु कपोलन की चिलकै । जु मनों ससि ह्वै रवि में झलकै ॥
जुटि गंठिग मुत्तिय पंतिन की । तिनकी उपमा कवि नै मनकी ॥छं० ७७॥
दुअ पास कपोलन तेज छुट्यो । मनों तारक लै ससि उग्गि उठ्यो ॥
जु चिबुक्कन की उपमा हिलज्यौं । मनों भ्रंग सुता सितपत्र तज्यौं ॥
कल ग्रीव चिवल्लिय रेष वनं । सु ग्रह्यो मनु कन्हर पंच जनं ॥
विय बाल सुमालन लाल सजै । सुधसी जनु भारति नम्भ तजै ॥छं० ७९॥
गुँथी पट स्यांम सु मुत्तिय माल । भयो जनु तीरथ राज विसाल[1] ॥
उठी पट कुट्टिय कंचुकि वाम । कि जीयन कों त्रिपुरं चलि कांम ॥छं०८०॥
कछू छबि छत्तिय की बरनं । सु रह्यो मनों कांम तिनं सरनं ॥
बर लंकिय लंकय सिघ किती । वर मुंट्टिय मांहि समाइ तिती ॥ छं० ८१ ॥
* पसरे नन द्रष्टि न ठौर रुकै । *मृगतिस्नह देषि मनौं सु चुकै ॥
कटि मेषल उप्पम एह धरं । मनों नोग्रह सिघ सहाइ बरं ॥ छं० ८२ ॥
सुभंत समुपित अंगुरि तत्र । मिले गुरु मंगल हस्तनि षत्र ॥
बनी कर पौंचिय पट्टय स्यांम । तिनं उपमा बरनी बर ताम[2] ॥ छं० ८३ ॥
लटकै बर अंग सु फूंदन लाष । झुलैं मनुं नागिनि चंदन साष ॥
बरनों मनि बढ्ढि बढंत नितंब । सुभै जनु उज्जल द्वै रबि बिंब ॥छं० ८४॥
सकोमल जंघ सु रंग सुढार । भ्रमी मन चित षरादिय मार ॥
सजे बहु वार सिगार सुरत्ति । चली तव हंस उपप्पन गत्ति ॥ छं० ८५ ॥
सु एडिय उप्पमता कवि एह । रची जनु कोरिय कुंद नरेह ॥
बरने नख की उपमा कविता । सुजरे मनुं कुदंन मुत्तियता ॥ छं० ८६ ॥
†जल बूंद पुहप्प कि द्रप्पन दुत्ति । †कि तारकि तेज कि होर प्रभत्ति ॥
बर गोप्प सुगंध सुजांनियनं । प्रगटै बर बास सदेव घनं ॥ छं० ८७ ॥
पट दून चबगुन में बरनं । सिनगार अभूषन ए कहनं ॥
तब सज्जिय बालत मोर मुषं । उपमा कविचंद कही सुरुषं ॥ छं० ८८ ॥
इन भाइ सुमुत्तिय गुंज[3] बहोह । द्रिगं अधरं प्रतिबिंब सजोह ॥
करैं रंगरत्त दुकूल सु ओर । झुलै मुष ऊरध पाइ झकोर ॥ छं० ८९ ॥

---

१. को०—प्रयाग ।
२. प्रो०—कवितास ।
३. मो०—नख ।

* ये दो पंक्तियां मो०—प्रति में नहीं हैं ।
† ये दो पंक्तियां मो०—प्रति में नहीं हैं ।

बन्यो मनवंछ मनोरथ जंम । करे जहु चंद जु धूरिक क्रम्म ॥
मिले कि कंहू अधरा रस पांन । कहै कविचंद सु जीरन जांनि ॥ छं० ९० ॥
सु देषि कह्यौ कबिरूप अभ्यास । मनों उठई मकरंद सुबास ॥
सजे षट दून अभूषन बाल । मनों करि कांम करी रति माल ॥ छं० ९१ ॥
सु लज्ज सु संकर सों मन अंध । मनों अरनांमद श्रग्ग सुबंध ॥
धरचो तन कौरव वस्त्र कुंआरि । मंडी जनु संभ मनंमथ रारि ॥ छं० ९२ ॥

पांच सौ वैदिक पंडित, दो सहस्र कोविद, एक सहस्र मागध आदि गुण गाते हुए, ऐसी धूमधाम से रावल समरसिंह का मंडप में आना ।

कवित्त— सय सुपंच वर विप्र । बेद मंत्रं अधिकारिय ॥
उभय सहस कोविद्द । छंद तक्कह[1] अनुसारिय ॥
सहस एक मागध सु । सित्त पौरांन पवित्रिय[2] ॥
सहस अठ्ठ डाहालगत । गाइन सुर जित्तिय ॥
उडिरेन धेन गौधूल कह । सहस दोष कट्टन धरिय ॥
संभरिय ग्रेह[3] आहुट्ठ पति । मिलि विधान[4] मंडप भरिय ॥ छं० ९३ ॥

विवाह मंडप की शोभा का वर्णन ।

छंद नाराच— विधांन धान मंडपं । जवांन जग्ग[5] पन्नयं ॥
बिपष्ष चारि कित्तनं । समर्ध देव रत्तनं[6] ॥ छं० ९४ ॥
धुनद्द धुंम्म सालियं । अषंड लंन वालियं ॥
प्रजात पुन्य पानयं । सु पंच कोटि दानयं ॥
सभूत भेम लच्छिनं । अभूत दांन दच्छिनं ॥ छं० ९५ ॥
दमित्त काम लंबरं । कलंक कित्ति रावरं ॥ छं० ९६ ॥
भ्रमेंन भूमि भारियं । ग्रहंत पांनि धारियं ॥
कुसंभ चीर गंठियं । प्रथा प्रसंग पट्ठियं ॥ छं० ९७ ॥
सु सद्दियं जयं जयं । सु सद्द विप्रयं लयं ॥
अरुन्नयौ सु उद्दयं । सिकार सद्दयं सयं ॥ छं० ९८ ॥
अचिज्ज सिद्ध चारनं । बिचार बार बारनं ॥ छं० ९९ ॥

दूहा—परनि बीर रावर समर । बहुत कहूं रस जोइ ॥
कवि वर बरनत ना बनत । और सुभष बहु होइ ॥ छं० १०० ॥

---

१. ए० को० कु०—तर्क ।
२. मो०—पवित्तिय ।
३. मो०—एह ।
४. ए०—बिधान ।
५. मो०—जग ।
६. यह तुक मो०—में नहीं है ।

करे चंद बरदाइ दुहुं । बार बार मनुहार ॥
राज राज ढिग ढिग फिरै । मनों समहु रवितार ॥ छं० १०१ ॥

कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहां विवाह मंडप में इन्द्रादिक देवता जय जय कर रहे हैं और लग्न का समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है ।

कवित्त —चौहानन के ग्रेह । इंद्र जचि[1] होय अग्नि बर ॥
अष्ट देव सत सील । नाम[2] संतोष मंत्र बर ॥
सहस गयन बर राज । धीर ढिल्ली अधिकारिय ॥
जच्छ देव गंध्रब्ब । जयति जै जै उच्चारिय ॥
दिव देव लगन आवै घरी । तिम तिम बाढै पेम रस ॥
ज्यों चढ़े समुद हिल्लोर बर । तिम सु बीर बढ्ढति जस ॥छं० १०२॥
दान मकल सामंत । न्यांत अग्गे अधिकारिय ॥
इंद्र साज कुब्बेर । इंद्र वासम न विचारिय[3] ॥
बचन रचन सचि कहहि । देव सचि कहै ग्यान सधि ॥
अष्ट जोग भुल्लै सभोग । निरषंत सकल सिधि ॥
जे बे नरिंद संभरि धनी । संभरि विधि संभरि चरित ॥
भूपाल बीर दरबार बर । तिहित देव लागे सुगत ॥ छं० १०३ ॥

सांमतों और राजाओं ने जो जो दहेज दिया उसका वर्णन ।

छंद भुजंगी—
प्रथमं सुकन्हं निवंत्यो सु राजं । कही उप्पमा चंद कब्बीति साजं ॥
शतं[4] एक बाजी करी पंच दूनं । दियो राज कन्हं निवतो स ऊनं ॥छं०१०४॥
लछी वस्त्र हेमं नगं पारि पारं । तिनं देषते देव गत्ती विचारं ॥
दियं निड्डुरं राइ रट्ठौर राजं । भुजंगादि भुल्लै कहै सब्ब साजं ॥छं०१०५॥
दियं बंध राजं सलष्षं पवारं । धनं राइ कुब्बेर लभ्भै न पारं ॥
महा दंत दंनीन की पंति बंधी । दरब्बार मानों नगं जोति संधी ॥छं०१०६॥
दियो जाम जद्दों सु लद्दो जुवानं । सहस्रं दसं हेम गज एक पानं ॥
दियो राज पीची प्रसंगंति बीरं[5] । उभै दून हथ्थी हयं सत्त सूरं ॥छं०१०७॥
रजक्की सु बस्त्रं अनेकं प्रकारं । दिषे बीर बीरं महा बीर सारं ॥
दियौ राज गोइंद आहुट्ठ राजं । दियं तीस हथ्थी महातेज साजं ॥छं०१०८॥

---

१. मो० बव । २. ए०—नाम ।
३. मो०—प्रति में "दान दरषत उजवारिय" पाठ है ।
४. को० कृ० ए०—चिबं ।
५. को०—पीरं ।

इकं माल मुत्ती उतंगं सरूपं । तिनं देखतें भांन क्रंनं न भूपं ॥
अतताइ बीयौ लियौ नाहि राजं । हुतौ ईस भक्तं उदे देव साजं ॥छं०१०९॥
त्रिया रूप आगें महा पाप लच्छी । तिनं राज राजं निरष्षी अनछी ॥
दियौ राम राजं रघुवंस बीरं । तिनें पार कुब्बेर लब्भै न तीरं ॥छं०११०॥
उभै सत वाजी उभै सत हृथ्थी । तिनं सथ्थ एकं किरन्नी बिरथ्थी ॥
उऐ एक राजं दियौ एक भानं । दसं तेज राकी एराकी प्रमानं ॥ छं०१११॥
दियं सत बंधं कनक्कू बिराजं । उभै सहस हेमं इकं बाज राजं ॥
कियौ राज न्योंनै अजम्मेर बीरं । सदा सागरं गोरयं लाज नीरं ॥छं०११२॥
दिए पंच बाजी सुरंगं तुरक्की । जिने धावतें बाइ की गत्ति थक्की ॥
दियौ राज बंदं पुंडीरं सु बीरं । महा हेम सहसं उभै बाज तीरं ॥छं० १३॥
दियौ राज कैमास न्योनौ नरिंदं । धरं पंचमो भाग लच्छी स व्यंदं ॥
जितौ राज राजं दरब्बार हेमं । तितौ पंचमो भाग अप्पो सु तेमं॥छं०११४॥
दियौ बाइ चामंड लच्छि प्रकारं । नवं निद्धि सिद्धं सुलब्भै न पारं ॥
रह्यो एक वस्त्रं उभै पंच बाजी।दियौ राजराजिंद राजिंद साजी॥छं०११५॥
दियौ अन्नूरं अंग इतौ प्रकारं । तिए तात के नग्ग लिन्नें सुधारं ॥
हारं हेम करं गरद्दं मु लच्छी[1] । जिनं देषनें इंद्र को द्रब्ब गच्छी ॥छं०११६॥
दियौ दान सूछम्म[2] सादल्ल मोरी । इकं बाज बीरं रजं पंच कोरी ॥
दियौ राज बंदेज मोड्डा त्रिवारं।तिनं न्योत को कोइ लब्भै न पारं॥छं०११७॥
नांपरं मुनी इभी अट्ठ माला[3] । जिनें द्रब्ब को छेह आवै न पाला ॥
वेंगे माहि गोरी लही तस्स बीरं । दई राज चोहांन न्योंतें सरीरं ॥छं०११८॥
सतं पंच बाजी सतं अट्ठ हृथ्थी । तिनं देखतें तेज कुब्बेर नथ्थी ॥
दियौ राज जंगल्ल मह्नों नरिंदं । तिनें नांम भीमं महातेज कंदं ॥छं० ११९ ॥
दसं बाज पंचं इकं[4] मुत्ति मालं । तिनं तेज आवृत्त रवि किरन झालं ॥
चरं मीनि धारं सरं समरकंदी।गुरं राम दीयौ मनों राज इंदी ॥छं०१२०॥
लियौ ना सुराजं कछू नाहि रष्यौ । पछै धर्म राजं सु राजं बिसष्यौ ॥
दियौ बीर बालुक्क बावार बीरं[5] । सिरं काज राजं सुभारथ्थ भीरं ॥
॥ छं० १२१ ॥

नृपं हृथ्थ देतं सु सेवक्क मंडे । महा छत्र छत्री न छत्रीन षंडे ॥
हस्यो राज प्रथिराज दै हृथ्थ तारी । तिनं भारती कौन आवै प्रकारी ॥
॥ छं० १२२ ॥

---

1. ए० कृ० को०— में "तिनं बंध बंधं विरच्चं सुलच्छी पाठ है ।
2. ए० को० कृ०—सूछम्म ।
3. मो०—मर्ग । 4. को०—बाजं । 5. ए० कृ० बीयं ।

दियो टांक चाटा चपल्ल प्रकारं । इकं बाज तेजं मनों अग्नि सारं ॥
दियो बग्गरी देव देवाधि दानं । सहस्संत बाजी दियं बाइ पानं ॥छं०१२३॥
दियं अंबरं छाव से पंच हूनं[1] । तिनं तेज आवृन्न देषंत भूनं ॥
झुल्यो सर्व सामंत को गर्भ भारी । पर्छे दोन सीसं दियं हथ्थतारी॥छं०१२४॥
दियो राज हम्मीर हाहुल्लि इंदं । तहां कब्बि चंदं उपम्मा सु छंदं ॥
मृगं नाभि कप्पूरयं गुंट बाजी । दियो मुद्ध[2] मुष्टं तनं तेज साजी॥छं०१२५॥
इकं कास मीरं पची संती थंभं । इकं भद्र जाती सु हथ्थी अचंभं ॥
सबं सठ्ठि हज्जार भारं प्रमानं । दियो चारके कष्ट सोभिनं दानं॥छं०१२६॥
दइ एक मालं सुमुत्ती सुरंगं । दिनं एक को मौल आवै सुभंगं ॥
दियो नीति रायं सुषित्रीय दानं । षिझयो राज चहुवान चल्यो न पानं ॥
॥ छं० १२७ ॥
दई भांन भट्टी मिथी ताप कारं । उभै एक बाजी तुळं द्रव्य धारं ॥
दियो बीर पाहार न्योंतो प्रमानं । तिनं दान कैमास कों आहु थानं ॥
॥ छं० १२८ ॥
मुरं दोइ बाजी सु तत्तं प्रकारं । दई लष्ष दूनं अघं तानि तारं ॥
दियं अल्हनं दानयं मत्ति घट्टी । इकं बाज रूपं अघं सहस पट्टी ॥छं० १२९॥
इतो अब्ब सामंत दीनो प्रमानं । सगा रध्यदानं करै को बषानं ॥छं०१३०॥

कवित्त—जालंधर बर बाइ । बीर थट्टा मुलतानी ॥
बंग तिलंगी तुच्छ । कारनद्दी निद्धानी ॥
बर गोतम दिसि गंग पार । परबत दिसि राजं ॥
मारू मालव राज । बीर बीरहु गति राजं ॥
कुंकुन सकुंब कालिंग दिसि । कंदलेस कछ अच्छु गति ॥
नृपराज राज राजन बली । सुबर बीर जा बीर मति ॥छं०१३१॥

पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है दोनों की प्रशंसा ।

कवित्त—बलिय राज प्रथिराज । सुभ्रत सगपन सु द्रष्ट[3] गति ॥
ग्रब्बल को बल राहु । सबर बीरहु सुबीर मतिं ॥
सुत्त मत्त रजपूत । फिरे चाव द्दिसि धारं ॥
अंग अंग तनु झुलै । क्रम्म सा क्रम्मय सारं ॥
मति गरुव राज राजन बली । धरैं अंग लज्ज सुधर ॥
चित्रंग राव रावर बली । उंच सग्गपन तत्त बर ॥ छं० १३२ ॥

---

१. ए०—पूनं ।   २. मो०—ध्रुमीव ।
३. मो०—इष्ठ ।

कवित्त—अति उदार पहु पंगं । सुनिय जग बत्त श्रवन्नं ॥
बलिय भाव आदरन । पर्व सम पवित समन्नं ॥
बहुरि गहअ तोंअर त्रिनेत । मानव मातुल गुर ॥
तिहित राज चितंयौ । धंम मूरति बिवाह धुर ॥
इक मात पुत्र आनंग वर । द्वै भगनी द्वै पुत्र जनि ॥
संसार संभरिय राज गुर । भए सलष या परि सुभनि ॥छं०१३३॥

पृथ्वीराज और पृथाबाई के नाना अनंगपाल का वर्णन ।

अनग पाल तोंअर सु । धम्म धारन उद्धारन ॥
बंस बीय मातुलह । भए द्वै बीर सुभारन ॥
कलि तारन अरि देह । जुगनि कित्ती विस्तारन ॥
चाहुआंन कमधज्ज । बंस मातुल गुर पारन ॥
प्रथीराज दिल्ली नृपति । चित्रंगी वर चितयो ॥
पंचमि विवाह पंचमि घरिय । भले मुहूरत में भयो ॥ छं० १३४ ॥

कवित्त - व्याह मद्धि करनेस । जग्य मध्धें चित डोले ॥
इतौ पाप कविबंध । देव देवासुर बोले ॥
ज्यौं चारन घर[1] निंद । जाइ भुक्तं अनुधारी ॥
सा सुरिंद संग्रहै । दोष लग्गं जुग भारी ॥
ग्यार सें अंन भषह सुवृत । महा दोष अति ही सुबर ॥
बडबंध होइ निग्रह घरन । लघु बंधव हुअ नरक पर ॥ छं १३५ ॥

विवाह का वेद विधि से होना, बहुत सा दान दहेज देना ।

छंद पद्धरी-तिन मध्य विराजत राज राज । निर्मलिय कला रवि तेज साज॥
ज्यूं जुगति जूबवर करन भोग । आए सु राज राजन सभोग ॥ छं० १३६ ॥
आए सुराज तिस्सुत नरिंद । हाडाल क्रन क्रन्नह मुम्यंद ॥
पंचाल देस सोमेस सूर । झलकंत मुष्य न्रमल मनूर ॥ छं० १३७ ॥
आए सु बीर क्रिन्नाट कर्न । धूंमह सुदेव धम्मह सुपंन ॥
एलची देम भांडेर बीर । आए सु कोषि मुष तिनह नीर ॥ छं० १३८ ॥
देवरय व्याह चहुआंन कीन । दंष्यं सु व्याह सम बरह चीन्ह ॥
अप्पी सु पुत्रि सिबरह सु ग्रेह । कल बढी कला जिन लीन देह ॥ छं० १३९ ॥
अप्पे सु एक सिव ग्रह प्रमांन । आवन्न व्याह दुग्गह निधान ॥
मै मत्त मत्ति मंतह सु कीन । सिंगार सार सत सहस दीन ॥ छं० १४० ॥
हुअ व्याह जनक सीता प्रकार । मिलि जग्य राज राजन सुभार ॥
संभरि नरेस सोमेस पुत्त । रस मांनि बीर अब धूत धुत्त ॥ छं० १४१ ॥

---

1. मो०—बर ।

साटक—ऐ सोमेस सुवंस संभरि वयं । तारंग सूरं बरं[1] ॥
सा दुज्यं दुज ध्रंम्म देवति धरा । ग्राहं ग्रहुंजं बलं ॥
तामध्यं न्रप अंस सोम नृपयं । नामं नरिंदं धुरं ॥
प्रिथ्थू नाथ सनाथ जग्य करनं । राज्यंद राजं गुरं ॥ छं० १४२ ॥

ब्याह के पीछे दर्बार में आना ।

कवित्त- दलन मंत्र सब राज । आइ दरबार सु इंदं ॥
ज्यों नछित्र बिटयौ । सरद सोहै अति इंदं ॥
कनक पंति नग ब्यंट । भांन बिठ्यौ सुमेर बर ॥
जस बिठ्यौ बल लोई । ईस बियौ सु जटद्धर ॥
यों बिठयौ राइ सेमेस सुअ । सबल राज राजन गरुअ ॥
आरत्ति बीर देषति नृपति । भांन चंद लग्गे हुरुअ ॥ छं० १४३ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ।

दूहा—हुरुअ सु लग्ग सु अर गिरि । गरुअ लगे प्रथिराज ॥
चावद्दिसि लछ्छी सु जन । काजन मुक्किय काज ॥ छं० १४४ ॥

दूहा—लयौ जनम या कज्ज नृप । घर घर धरपति कांम ॥
चाव द्दिसि भूपति सुभे । जु कछु भूमि पर हांम ॥ छं० १४५ ॥

छंद पद्धरी– जो कछु राज राजन नरिंद । सो भये कांम प्रथमीस इंद ॥
नर वर नृपत्ति दीसं प्रमांन । उज्जले गग ज्यों ध्रंम थ्यांन ॥ छं० १४६ ॥
बर मुबर बीर पग मुक्कि धीर । बहु द्रब्य इंद्र राजन सरीर ॥
नव लच्छि अंग ग्रह ग्रह प्रमांन । उच्छास लोइ मडै निधान ॥ छं० १४७ ॥
कनवज्ज बीर मुक्को मु लच्छि । तिहि देषि इंद्र को ग्रब्ब गच्छि ॥
कुब्बेर कोपि अंतहु निरष्पि । सो ग्रंन धार ग्रह ग्रह बरष्पि ॥ छं० १४७ ॥
कनवज्ज बीर मुक्की सु लच्छि । तिहि देषि इंद्र को ग्रब्ब गच्छि ॥
कुब्बेर कोपि अंतहु निरष्पि । सो ग्रंन धार ग्रह ग्रह बरष्पि ॥ छं० १४८ ॥
बहु बंधि संधि मनु देब काज । मंगल सु जोर नीसांन बाज ॥ छं० १४९ ॥

रावल का रनिवास में आना ।

दूहा—बर बंदे सुंदरि सकल । चावद्दिसि फिरि पंति ॥
मनुं अंग अंग अनंगनहु । रति बर राजति कंति १५० ॥

कवित्त—बरति चाह उप्पर । उतंड अच्छित मुत्ताहल ॥
ससि उप्पर ससि किरनि । धीर सुभे गुन चाहल ॥
चावद्दिसि अंगना । अंगनं मित गुन मंडहि ॥
एक एक कों मिलत । एक लज्जा तन घंडहि ॥

1. मो०–बलं ।

प्रिया दिख्खि ऋषि चित्रंगपति । अच्छित मंत्रहु विक्रति ॥
ओबंत ओट ओटन किये । अंनयं नारि नंषं सुवृत ॥ छं० १५१ ॥

तिलक होना, और भांवरी फिरना ।

छंद भुजंगी--वियं अंग अंगति अंगं तिरंगं । बुले बेद बेदं सुजं मंत्र भंगं ॥
कला की अनेकं प्रकारंत ब्याहं । टरै लग्न साहं महं मंत राहं ॥ छं० १५२ ॥
दियं हस्त थालं तिलक्कंति राजं । तहां चंद कब्बी उपम्माति माजं ॥
मनों क कमोदंत ज्यों इंद साजं[1] । मिल्यौ जाइ चंदं सु मुत्तीति पाजं ।
॥ छं० १५३ ॥
दिसा देव मंत्रं अमंत्रंति धारें । नृपं ध्रंम सोधं विधी देव टारें ॥
बुले बिप्र अंगं सु विद्धी सुवेदं । मनों देवता अग्ग भूले सवेदं ॥ छं० १५४ ॥
नृपं राहु दिठ्ठं करूरंति टारें । फिरें भावरी भांन सुम्मेर सारें॥ छं० १५५ ॥

ऋषीकेश वैद्य और चन्द के बेटे जल्ह आदि को दिया तब रावल फेरा फिरे ।

कवित्त-- श्रीपति साह सुजांन । देस थंभह सँग दिन्नो ।
अरु प्रोहित गुर गांम । ताहि अग्या नृप किन्नो ॥
रिषिकेस दिय ब्रह्म । ताहि धनंतर पद सोहै ॥
चंद सुतन कवि जल्ह । असुर सुर नर मन मोहै ॥
कबि चंद कहै बर दाय बर । फिरि सुराज अग्या करिय ॥
करि जोरि कह्यो पीथल नृपति । रावर सत भावरि फिरिय ॥
॥छं० १५६॥

दोहा-- निगम बोध गोतंम रिष । थिरि जेहि दिल्ली थांन ॥
दास भगवती नाम दे । प्रिथीराज चहुवांन ॥ छं० १५७ ॥
रिर्षाकेस अरु राम रिष । बहु विध देकर मान ।
प्रिया कुंवरि परनाय कै । संगि चलायै जांन ॥ छं० १५८ ॥

प्रत्येक भांवरी में बहुत कुछ दान देना ।

कवित्त--एक फिरत भांवरी । साठि मेवात गांम दिय ॥
दुतीय फिरत भांवरी । दुरद दस एक अग्गरिय ॥
त्रितिय फिरत भांवरी । दयौ संभरि उदक्क कर ॥
चौथी भांवरि फिरत । द्रव्य दीनो अनंत बर ॥
चहुवांन चतुठ चावद्दिसा । हिंदवान बर भांन बिधि ॥
गुन रूप सहज लच्छी सुबर।सहज बीर बंधी जु सिधि ॥छं०१५९॥

---

1. मो०--साजं ।

रावल समरसिंह के पुरखों को चित्तौर मिलने का इतिहास वर्णन ।

छंद भुजंगी –

अनेकं अनेकं प्रकारंत सब्बी । करै राज ध्रम्मं सुतं ध्रम्म कब्बी ॥
मिले सर्व छित्री इते ब्याह राजं । तिलब्भै नहीं नेक राजं सुमाजं॥छं०१६०॥
महं भाजनं रंग रामं प्रकारं । कला अट्ठ मांनों सु हृथ्थं पसारं ॥
रतं नील रेनं किते स्याम सेतं । तहां ओपमा चंद बरनै सहेतं ॥ छं० १६१ ॥
गुरं भांन चंदं अरी राहु राजै । मनों एक नषित्र सज्जे बिसाजै ॥
उडंतं अबीरं घनं सार रंगं । तिन देवता बास भूलंत भ्रंगं ॥ छं० १६२ ॥
किते भेद भेदंत मिष्ठांन रूपं । तिनं वास देवं लगै सोम भूपं ॥
बिधं कुंड मंडप्प मंडे उतंगं । तिनं वास भोरं अली भूलि संगं ॥ छं० १६३ ॥
जिती बिद्ध चित्रंग गावै अपारं । दियं विप्र गारी सबं भक्ति सारं ॥
तुमं मद्धि छित्री न जानंत तत्तं । तिनं बंस कोनं सु पुच्छे अभीतं ।छं०१६४॥
रसं रच्चि छच्छी बडी पग्ग डट्टी । तिनं ढुंढि ढंढात नीके लिपट्टी ॥
बडे राज देवत्त बीसल्ल नारी । सराधार भारं बली सत्रुधारी ॥ छं० १६५ ॥
तुमें चित्त चित्रंग चित्तं विचारं । तुमं ब्रह्म बंसं हुरें सत्रु भारं ॥
दियौ राज हारीत रिषं प्रमानं । कन्यो तप्प एकं गए कंग पानं ॥छं० १६६॥
सिवं लिंग बिम्बे तुठ्यो सो अघाटं । तिनं ठांम नामं ध्रन्यो मेद पाटं ॥
रमै विप्र सायं सु हारीत रिष्षं । करै सेव बालं स आवृत्त सिष्षं॥छं० १६७॥
किते छेद भेदं किते गान गावै । किते देवता सेव पुष्पं चढावैं ॥
करै रष्षि तप्पं दिनं गंग न्हावै । तहां उज्जलं गंगयं नीर धावैं । छं०१६८ ॥
करै अंग कष्टं सधै पंच अग्गी । महा तेज छीनं तनं पंच नग्गी ॥
क्रियं पूरनं तप्प तथ्यं स अग्गं । लियं लप्ष हारी अहारी सु मग्गं॥छं० १६९॥
जिती काल बेसं वहै बाल पत्या । तिनं देषिकें सद्द जाजुल्य गत्या ॥
रिषं उंच तेनं पिनं मोल चायं। नहीं मुष्य मड्यो लियौ भेग्नि पायं॥छं०१७०॥
चल्यौ अद्ध सीसं किते उद्ध पायं । महा तेज दुःष्यं दिष्यौ रिष्ष रायं ॥
नमो मंत्र मंत्री नमो घोसपालं । दियो राज बस जमं को बिमालं॥छं० १७१॥
रयं मंत्र प्रम्मान दिष्यौ सुरिष्षं । दई भूमि जुग्गं जुगंतं विसष्षं ॥
तिनं बंस चित्रंग चित्रं सु राजं । पर नीति बीर प्रिया बाल काजं॥छं०१७२॥

छंद गीता मालती –ढलकंत बैंनिय बाल सेंनिय भ्रग्ग नेनिय गावई
मधुरं सबद्दं रहसि बद्दं हद्द हद्दं भावई ॥
बै स्यांम सोरं गुनति गोरं चित्र सोरं सोहई ।
गुम्मंत[1] घोरं उठे कोरं बेस भोरं मोहई ॥ छं० १७३ ॥

---

1. को०—ढबंत ।

विवाह की शोभा का वर्णन ।

कवित्त —विधि श्रृंगार रस बीर । हास करुना तन चारिय ॥
रुद्र भयानंक मंत । करी करुना ता वारिय ॥
करुना तजि रस अट्ठ । भयौ नृप राज ब्रिवाहं ॥
सुष सनेह धन ग्रेह । राज जोगिंदति साहं ॥
सुष ब्याह सजन सम वृन रवन । गई नट्ठि त्रय जांम निशि ॥
सहदेव देव देषन चलह । भुगति मुगति धन राज बशि॥छं०१७४॥

दूहा —सा सुंदरि सुंदरि सुकय । रस[1] दरसन परिमानं ॥
मनों देव देवाल बजि । बर दुंदभी निसांन ॥ छं० १७५ ॥

छंद भुजंगी —बजे दुंदमी भेरि देवाल थानं । करे युक्ति रूपं अनेकं प्रमानं ॥
न्रिपं भीर अैसीं दरब्बार थानं । मिले षंड षंडं सुराजान जानं॥ छं० १७६ ॥
प्रिथा रूप आगें प्रथी कौन अैसी । जनक्कं सुदारं सिया रूप कैसी ॥
भुगत्ती मुगत्ती हितं ताइ कारं । सबै दिष्षियं राज राजं दुआरं ॥छं० १७७॥
महा भोजनं ते प्रकारं बिकासं । तिनं स्वाद तें देव छंडै न पासं ॥
रचै अग्नि स्वाहा सुदेगत्ति होऊ । महा जग्य जापं अवृतंत सोऊ ॥छं०१७८॥
छिन्न छिन्न लंका सपत्तौ विराजै। दिनं षष्ट ग्रेहं रहै द्वार साजै ॥
सुई राज लच्छी न पूजै सु रुंती । जये देवता जग्य मे जीमवंती ॥ छं० १७९॥

कवित्त —बहुत मंसधन सार । अमन वलमीन ममंकृत ॥
अनेंग जोग फल अनत । पान मिष्टान असंकृत ॥
छिति छित्री विधि मजहि । देइ लछ्ची लछि रूपं ॥
रंक रंक गति छंति । होइ राजिंद सुभूपं ॥
नवनीत सुनीत पुनीत प्रभु । चाहुआन रजे सुभर ॥
जानियें राज राजन कै । सुरा पान माया सुध्रर ॥ छं० १८० ॥
अग्र दीप घनसार । बंटि मृगमद्द पान रस ॥
बहुत सरस रस राज । दिष्षि प्रतिब्यंब अप्प जस ॥
अरति ब्यंद अरबिंद । कमल कैरव ससि सागर ॥
भुगति मुगति संग्रहे । मुकति भंजै अति आगर ॥
मय मंत कूअ[2] अष्षा अषम । ल षन बतीस सुबंधि गुन ॥
तिहि काज भोज राजन करत।उछ्छाहं प्रथिराज मन॥छं० १८१॥

दूहा—माया मोष[3] सु देषि कैं । गति भूले चालाहिं[4] ॥
मानों मंत्र सुमंति[5] गति । बर ब्रह्मा वस मांहि ॥ छं० १८२ ॥

---

१. को० कृ०—सर । २. मो०—कुआ ।
३. मो०—सोष । को०—सोख । ४. मो० कृ० को०—चलाहिः ।
५. ए०—को०—कृ०— मंत ।

पृथ्वीराज के दान दहेज देने का वर्णन।

कवित्त— एक एक रन जोग। गरुअ हुरुअत्त चित्त विधि ॥
सांम दांन लघुमंति फंति मग्गीति संति सिधि ॥
अबलि बाज गज एक। उभै अप्पै नर वस्त्रं ॥
हेम हीर रजकोय। पार पावै ना मंतं[1] ॥
गरुअत्त गरुअ भय भ्रत्त सों। सत हथ्थिय कर निय जुगति ॥
प्रथिराज राज राजन बलिय। देव दांन राजन भुगति ॥छं०१८३॥

कवित्त— राज दांन विधि देत। लग्गि आचिज्ज थांन त्रिय ॥
नाग लोक सुर लोक। रबी मंडल नर नर हिय ॥
हयति कंति कंतियति। हथ्थ पंतिय रवि राजे ॥
सु कवि चंद बर दाइ। देषि देवाधि सु लाजे ॥
बदि राज धांन संभरि धनी। किहि बिधि लछी लछें गुनी ॥
बेरू सुगंग उड़गनति[2] नभ। पत्त तरोवर गिर धनों ॥ छं०१८४ ॥

दूहा— दांन मांन निरमांन गुन। भगति रत्ति नृप जोर ॥
कहा दिष्षि कोइ लेइ निधि। भयो भरें[3] घर चोर ॥छं० १८५ ॥

दूहा— तन अग्गै मन चलत है। मन अग्गे तन जाइ ॥
जिहि बिधि दांन सु उच्चरै। तिहि विधि पाप सु जाइ ॥छं० १८६॥

दूहा— क्रम्मसु अति विधिनां रची। अंग रोर सिर पान ॥
तिन भंजन सोमेस सुअ। धनि संभरि चहुआन ॥ छं० १८७ ॥

चौपाई— दिसि दिसी पूरिय हय गय राज। प्रिथीराज सुरपुर सम साज ॥
बाजे पंच सबद बनि रंग। रहबनि द्वादस सूर अभंग ॥छं०१८८॥

कवित्त— एक दीह निड्ढग्गह। राज रष्षो चित्रंगी ॥
★दुतिय दीह सामंत। गरु अ गोविन्द अभंगी ॥
त्रितिय दीह पज्जून। बलिल कूरंभ सुधारी ॥
चतुर दीह नर नाह। कन्ह कीनी किति भारी ॥
पंचमै दिवस कैमास बलि। बलि सुराइ सम जग्य किय ॥
छट्टैं सु दीह पुंडीर धनि। धीर रष्षि कीरत्ति लिय ॥ छं०१८९ ॥

कवित्त— सत्तम दिन रघुवंस। राम करनी कर मेरं ॥
जिहि नंदी पुर भजि। समर मनुहारि सुबेरं ॥

१. मो०—मत्रं।

२. ए० कृ० को—उड़नति। ३. मो०—भरयो।

★ ए० को० कृ० प्रति में "दुतिय गोविन्द सु दीह। गरुअ सामंत अभंगी" पाठ है।

अट्ठम दिन अचलेस । अचल कीरति बिन रष्षी ॥
नवम दिवस पाहार । जगत दारिद्द सु नंषी ॥
दसमें पँवार धाराधि पति । सलष सु लषि पूरन विधि ॥
दिन एक एक रष्षे सवन । पंच च्यार लुट्टाय निधि ॥ छं० १९० ॥

रावल का बारह दिन तक बारह सामंतों ने अपने यहां नेवता किया ।

कुंडलिया— रष्षि उभय षट[1] बीर बर । बर जंघारो भीम ॥
जिहि ओलें प्रथिराज की । को अरि चपे सीम ॥
को अरि चंप्प सीम । देव दुज्जन अधिकारिय ॥
तिहि रष्यो चित्रंग । समर रावर ग्रह चारिय ॥
विधि विधांन न्रम्मान । द्रव्य अर्चन करि चष्षो ॥
रावर समर नरिंद । न्योति द्वादस दिन रष्यो ॥ १९१ ॥

बारह दिन तक रहकर रावल का कूच की तयारी करना ।

दूहा— षट बीस बीस रषो सु नृप । भर सु भाति बहु राज ॥
दिन बारह चित्रंग पति । बज्जे बज्जन बाज ॥ छं० १९२ ॥

कवित्त- बजि बाजन अनुराग । सबर उच्छव बर धारिय ॥
नूर धूप तें अछ्छ । पंड हथिनापुर सारिय ॥
हुअ उछ्छाह दिल्लीस । बधि गुड्डिय ग्रह[2] धारं ॥
मनो सोम कल कोट[3] । करिय कल बल बिस्तारं ॥
घन ग्रहति ग्रेह उच्छाह हुअ । चाहुआन रवि वट्टयो ॥
वेनिय[4] सुजस्स पुरषातनह । बल अनंत घट चढ्ढयो ॥ छं० १९३ ॥

बरात लौटने की शोभा का वर्णन ।

छं० मोतीदाम— इति छंद सुछंद सुचंद प्रकार । सु मुत्तियदाम पयं पय चार ॥
परे गजनां जिहि कंकन हार । इसो गुन पिंगल नाम उचार ॥ छं० १९४ ॥
दसों दिहि पूरी न्रपत्तिय सेन । बिराजय राज अनंद सु अँन ॥
सुधि सुधि बीर प्रकार प्रकार । चले सग दपति ज्यों रति मार ॥ छं० १९५ ॥
ठनंकिय घंटनि हृथ्यिय पूर । किनं किय बाजिय साजिय सूर ॥
इकं इक हृथ्यिय दासिय पच । इसी सरसं गुन रच्चिय सच ॥ छं० १९६ ॥
विधि बिधि पूरन पत्तिय सोम । तिनं किय प्रज्जल सज्जल व्योम ॥
रहं रह राजत साजत सेन । मनो दिव देव दिखाधिय तेन ॥ छं० १९७ ॥
तुरंगनि तुंगनि की प्रति हीस । लगै तिन मंद सुमुंदह ईस ॥ छं० १९८ ॥

१. ए०-कृ०- बर ।
२. मो०- बर द्वारं ।
३. मो०- कोटि ।
४. ए० कृ०- विलिय ।

दूहा—ईस मंद संकर उदित । ब्रह्म ध्यान सिव पान ॥
संभरि बर चित्रंगपति । को सन मानन आन ॥ छं० १९९ ॥

कवित्त—बर सु बुद्धि साधन सरीर । जोगहु अधिकारी ॥
कर अदग्ग जग दग्ग । सरन रष्षन जुगचारी ॥
माया सों नहिं लिपत । नीर नीरज समान बर ॥
यों चित्रंग नरिंद । चतुर विद्या कोबिद नर ॥
गोरी सु बंध सुरतान रन । जस लेयन जै जंति बर ॥
सा लच्छि रूप भगनी प्रिया । परनि राज पत्तो सुघर ॥छं०२००॥

दूहा—जहां परनि चित्रंगपति । करी उलटि बिपरीत ॥
सिर अप्पो जुग्गिनि नृपत । देव लोक दिवजीति ॥ छं० २०१ ॥

अनंगपाल का बहुत कुछ दान देना ।

कवित्त—बाजे बीर सु बाजि । राज बज्जा सो बज्जा ॥
जस बज्जा बज्जा सु । ध्रम्म क्रमं चित रज्जा ॥
सम न कोई चित्रंग । गरुअ गहिलोत गरुअ मति ॥
धनि सुध्रम्म अरु दान । दियौ दिल्लीस बहु भंति ॥
भर मंझि बीर बुट्ठ दिवस । सत्त अट्ठ अरु पंच मति ॥
अग्गरें बांन बर काम कृत । इक्क बार घट्टइ सुगति ॥ छं०२०२ ॥

रोला[1]—जो दिन रही ढिल्ली प्रति मानिय देव गति ॥
रति संपति सुख ग्रेह भार आर अति ॥
दुहुं तन सुमन निरष्षिय लोइ बर ॥
मानों सची संजोग सुरपति आनु घर ॥ छं० २०३ ॥

दूहा—कनक क्रीड सुष्षे जयति । रनिन कहै कवि चंद ॥
बर आने कै दंपती । कं[2] दीपक कै चंद ॥ छं० २०४ ॥

कवित्त—मति मध्या भय बाल । बिनौ प्रौढा अधिकारी ॥
लच्छी सोज सहज्ज । रूप रति सुरन सु सारी ॥
धीरं तन सिय सार । विरह मंदोदरि नारी ॥
पति सु वृना रुकमनी । गिनी[3] कंध्रिनि अधिकारी ॥
सा प्रथीराज भगनी प्रिया । देव जग्य सम जग्य किय ॥
आनंद करु आनंद कय । सोम नंद जस बंद लिय ॥ छं० २०५ ॥

---

1. ए०—कृ०—को०—चौपाई ।
2. ए० को०—को ।
3. ए०—को० कृ०—गिनी ।

कवित्त—अहल तकन उदयंत । सिद्ध सिक्कर फिक्कारिय ॥
दिसि उत्तर ईसान । दिसा दस दसन उच्चारिय ॥
बिमल नाग बल्लिय विनोद । केलिय अबिलंबिय ॥
वागवान दरिमीय । रवन राजन कर संमिय ॥
संचार सुमन सौरम्भ बर । भ्रमर रोरि रंगिय करिय ॥
आगम अरंभ बर बरष फल । जगति जोति व्यासह धरिय ॥
॥ छं० २०६ ॥

व्यास जगजोति की भविष्यद्वाणी ।

कहत व्यास जगजोति । नयर नागोर वसंतह ॥
जोइ नंदै सोइ नंद । हुवै सो रह्यौ हसंतह ॥
इंद्रपथ्थ पुर आदि । राज राजन चहुआनह ॥
अमर बेलि कीरति । अछेह साधन सुरतानह ॥
आचिज्ज बत्त हिंदुअ तुरक । हमल हेल हल्लं भुअन ॥
प्रथमंम पुब्ब पच्छिम पथिर । होत बत्त गंध्रव सुअन ॥छं० २०७॥

कवित्त—रुधिर अकल्पित न्हान । छत्र पुब्बह पच्छिम पर ॥
कोलाहल कमिनिय । कज्ज हारम्य देव हरि ॥
समर सून्य[1] मंडलीय । अमर विच्चार बार[2] किय ॥
द्रुपद राय पंचाल । दुसह द्रोपदिय चीर लिय ॥
★सोइ समय वरष इकईस मय । हुरषवंत जुग्गनि कहिय ॥
बंचै विचार हिंदू तुरक । इक्क अचल कीरति रहिय ॥छं० २०८॥

सभों का अपने अपने घर लौटना ।

कवित्त—★"अप अप ग्रेह गुरंम्य" । राज राजन संपत्ते ॥
भोरा राव भिमंग । बत्त पुच्छै जग जित्ते ॥
पामारिय प्रारंभ । सोर संभरि[3] आदानह ॥
सा ठंडै सोमेस । पुत्त बंधन सुरतानह ॥
हेला हमीर हम्मीर सों । विजय राज कमधज्ज किय ॥
अच्छर अथम्भ[4] गल्हां गरुअ।धरनि पंच चहुआन लिय।।छं०२०९॥

---

१. ए०—सुन्य ।
२. मो०—सार ।
★मो० प्रति में "सोई समय अमय पठ विय वरष" पाठ है ।
★ मो० प्रति में यह पंक्ति नहीं ।
३. ए० को० कृ०—संभि ।		४. ए०—अबंध ।

कवित्त--धरनि पंच चहुआनि। आनि फेरिय कर जित्तो ॥
ता पछ हि[1] तुरक। सबै[1] बीतक ज्यौं बित्यो ॥
धीर मीर संग्रहिग। भीर भंजिय भिरि राजन[2] ॥
जै जै तन चहुवान। देव दुंदुभि घन बाजन ॥
जिहि ग्रहन पानि रावर समर। इअ आगम जोतिग कहै ॥
अप अप्प क्रंम केलिय कहूल। लिष लिलाट तित्तो लहै ॥छं०२१०॥

दूहा--सत्तरि सत तिय अग्ग करि। रज रज अप्प ग्रहास ॥
लीन सगोरी दंड धपि। षट्ट सित्त पंचास ॥ छं० २११ ॥

साह गोरी का रावल का बहेज देना।

कवित्त--सत्तरि सत तिय अग्ग। बीर गज राज सु अप्पिय ॥
ते लीनों सुरतान। साहि गेरी गोरी किय।
पंच सित्त पंचास। एक सौ तुंग तुरंगम ॥
सौ दासी चतुरंग। सत्त ढोलिय अच्चंभम ॥
चतुरंग लछ्छि चित्रंग दे। बर सोमेसर थप्पियै ॥
बुल्लाइ[3] सजन रावर समर। पंच कोस मिलि जंपियै ॥छं०२१२॥

पृथा ब्याह की फल स्तुति।

सुनै ग्रहै उग्रहै। बत्त बिय सम उच्चारै ॥
लिषै दिषै अरु सुनै। सुद्ध मंत्री सुद्धारै ॥
प्रथा ब्याह संभरै। पंच भौ अंचन लग्गै ॥
सेम फनंमित सुभट। काल पंमी नन लग्गै ॥
साधचीसीय भगनी प्रिथा। प्रथा बरन चित्रंग पर ॥
इन सम न कोइ भुवनह भयो।नन ह्वैहै रवि चक्क तर॥छं०२१३॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके प्रिथा विवाह वर्णनं
नाम एकविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २१ ॥



१. ए० को० कु०--प्रति में नहीं है।
२. ए० को० कु०--रावन।
३. कु०--बोलाई।

अथ होली कथा[1] लिष्यते ॥

(बाइसवां समय)

पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा और छोटे बड़े का विचार छोड़कर अबोल बकते हैं इसका वृत्तान्त कहो।

दूहा -इक दिन प्रिथु नृप पुच्छयो। कहि कविचंद विचारि ॥
नर नारी लज्या गई। फागुन मास मझार ॥ छं० १ ॥
बाल वृद्ध जुव्वन पुरुष। बुल्लैं बोल अबोल ॥
मात पिता गुर ना गिनैं। निकसैं टोला टोल ॥ छं० २ ॥
च्यार वरन इक्कत्त मिल। कलह रूप कलहूत ॥
षाधि अषाधि न जानहीं। ज्यों मन[2] नहि विलसंत ॥ छं ३ ॥
या पुच्छी कविचंद कौं। हिय हरष्ष मुषदाय ॥
जु कछु भयो सु कहो तुम। तुम बानी बरदाय ॥ छं० ४ ॥

चन्द का कहना कि चोहान वंश का ढुंढा नामक एक राक्षस था उसकी छोटी बहिन ढुंढिका थी।

ढुंढा नाम राषस हुतो। चहुवाना कुल मझ्झि ॥
तस लघु भगिनी ढुढिका। जोंवन रै सुप सझ्झि ॥ छं ५ ॥

ढुंढा ने काशी में आकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन ढुंढिका भी भाई के पास गई, ढुंढा भस्म हो गया तो भी ढुंढिका बैठी रही, उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते बीता।

ढुंढि गयो वानारसी। सत्त वरस तप किन्न ॥
तब ढुंढी सुनकैं गई। रही भ्रात सुष बिन्ह ॥ छं० ६ ॥
ढुंढै तन मन जग्य मैं। बाल कियो भसमंत ॥
प्रिथीराज चहुवान भय। भए सूर सामत ॥ छं० ७ ॥
तब ढुंढी बैठी रही। सत्त वरष जग जान ॥
पवन खाय सेवा करै। ताको सुनो बषान ॥ छं० ८ ॥

---

१. मो० और को० प्रति में यह (होली) समय नहीं है।
२. ए०—माहि।

तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुंढिका से कहा कि
मैं प्रसन्न हूं वर मांग।

तब गिरिजा सु प्रसन्न भय। मँगि ढूंढी बरदान॥
हम सहँ तव सह करनि। भष्षि करै नर आन॥ छं० ९॥

ढुंढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को
मैं भक्षण कर सकूं।

बाल बृद्ध भष्षन करौं। हम को दै महमाय॥
यह बानी सुनि सामुही। रष्या करनी राय॥ छं० १०॥

गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिका
की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सके।

तब गिरिजा पति सौं कह्यो। ढुंढी रष्ष सु वत्त॥
ढुंढी नर भष्षन करै। सोय विचारो मत्त॥ छं० ११।
गिरिजा सिव मिलि यौं कहै। एक अपूरब वत्त॥
जोगी जंगम बाहुरैं। मे राषे नित नित्त॥ छं० १२॥

शिवजी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली
बकें, गदहे पर चढ़ें, तरह तरह के स्वांग बनावें उनको
छोड़ और जिसको पावे वह भक्षण करे।

विहृल विकल बानी असुर। बोलहिं बोल अनन्त॥
एता नर मारीत जवि। अवरनि को करि अंत॥ छं० १३॥
सिव अग्या पवनह दई। प्रिथमी घर सहु अंग॥
फागुन मासह तीन दिन। करो अनेरो रंग॥ छं० १४॥
रासभ परि चढ़ि चढ़ि हसहिं। सूप सीस धर लेहु॥
गोसा बंधे गलि फिरै। हो हो सबद करेहु॥ छं० १५॥

ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते, पागल से
बने, गाते, बजाते, आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया।

ढुंढी आइ जहां तहां। दिष्षे लोग अजान॥
हो हो करि रासभ चढ़ें। ए कवि कहै बषान॥ छं० १६॥
चटक चटक दिन प्रति भषें। मद मादक अप्रमान॥
नर नारी सब बति गई। ए पन मन अनुमान॥ छं० १७॥
सिंधू राग बजावहीं। गावहिं नवला गीत॥
हो हो करि हा हा करैं। ए मंडी विपरीत॥ छं० १८॥
घरि घरि अगनि प्रजारहीं। उक्षित धूर अरु राष॥
नाचैं गावैं परस्पर। त्रिया विधावत काष॥ छं० १९॥

इहि विधि बाउ जवाविउ । फगुन मास मों भाव ॥
लज्ज भयज बिष्घन गई । भावै षाव सुषाव ॥ छं० २० ॥

इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर आनन्द हो गया ।

इहि विधि दुरित निवारियो । मिथ्यो सब्बी उर दद ॥
आयौं चैत सुहामनो । गृह् गृह् भयो अनंद ॥ छं० २१ ॥

जाड़ा बीतने और बसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुंढिका की स्तुति करते हैं ।

श्लोक गतेनु षार समये । वसंते च समागमे ॥
होलिका प्रब्व पूज्यंते । ढुंढा देवी नमोस्तु ते ॥ छं० २२ ॥

इति श्री कवि चंद बिरचिते प्रिथीराज रासके होली कथा समय नाम बावीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥

अथ दीपमालिका कथा लिष्यते ।

(तेइसवां समय)

पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा -फिर पूछी पृथिराज नृप । कहो चद कवि सब्ब ॥
होतु सुकातिक मास महि । दीप मालिका प्रब्ब ॥ छं० १ ॥

चन्द का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ।

कहि कब्बिचंद नरिंद सुनि । जो पुच्छौ कथ मोहि ॥
दीपमालिका उतिपत्ति सब । कहै सुनाऊं तोहि ॥ छं० २ ॥

सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन मे दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे ।

सतयुग सतवृत राजसय । प्रनय दियायो देव ॥
तासुन सोमेसर कहिय । सुर नर करन सुसेव ॥ छं० ३ ॥
बहुन पुण्य पालै प्रजा । रिद्ध सिद्ध मंडान ॥
च्यार वर्न चंहु आश्रमहि । दान मान परिथान ॥ छं० ४ ॥

उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग लगे थे वहां एक वैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ।

ता नगरी सत्यावती । नगित समुद्रह नट्टि ॥
बारी बाग विचित्र नर । ग्यान ध्यान घटि घट्टि ॥ छं० ५ ॥
तहां वसे मनश्रम द्विज । वेदवंत बल बुद्धि ॥
ताकी नारी नागरी । ताछर नाहीं रिद्धि ॥ छं० ६ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना ग्रोर दु:ख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करे ।

अवर न कोई नर दुषी । सुग भोगनो अनंत ॥
नारी कहि जिसु रथ्य सम । त्रिया जीव तुम कंत ॥ छं० ७ ॥
विष्या जीवन मनुष को । जो धन नाहीं पास ॥
तातें को[१] उपचार कर । करै रहै बन वास ॥ छं० ८ ॥

---

१. छ०—का ।

सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया।

तब सतिश्रम आदर करिय। ग्यान ध्यान चित देषि ॥
जीवन जनम बिथा गयो। पाप उदय तन देखि ॥ छं० ९ ॥

गाथा --सपनो अथ्थ विहूनो। सेवेरने न भावयो दीनो ॥
मंगहु मरन महु गोन। बीहि नेम न मानि कित ॥ छं० १० ॥

सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है।

दोहा -सति सरम मन वरष लो। सेवे विष्णु नरंन।
विष्णु बतायो ब्रह्म कौं। ताको पार न अन। छं० ११ ॥
तब ब्रह्मा सु प्रसन्न भय। रुद्र बतायो ताम ॥
रुद्र कह्यौ माया बरहु। करै हमारो काम ॥ छं० १२ ॥

तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए।

त्रियन बरस त्रिय मास दिन। त्रीय घटी पल उन्न ॥
सु प्रसन भइ सा कामिनी। दिय चौदहो रतन्न ॥ छं० १३ ॥

सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है।

तब सतिश्रम ऐसी कही। कहा रिद्ध अरु सिद्धि ॥
सेवो नरपति नाह को। एह बानएहु तिद्ध ॥ छं० १४ ॥
दिन पद्धर बुधि उपजी। दिन विहल्लि बुधि जाइ ॥
दीर दिपायो बुद्धि वर। बुझै दीर लछि जाइ ॥ छं० १५ ॥

गाथा को कौन पथीयो। कौन जवीओ ॥
कहु कहुन नामियं सीस। उभर[1] गअर चक्क ओ किम्रयं किन कायवं॥
॥ छं० १६ ॥

ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कातिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है।

दोहा -बंभन बुद्धि विकास हुइ। तहुं दिष्षे लछिवास ॥
कातिक मावस सोम दिन। लछि आवहि तिहि पास ॥ छं० १७ ॥
लच्छी जल निधि ही बसी। निकसि तिहू दिन दिन्न ॥
अगर कपूर सुदीप दर। जहां थान उर विप्र ॥ छं० १८ ॥

1. ए०-उभर।

ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग।

बंभन राज सेवतौ। बरस भये दुअ च्यार ॥
तब राजा बरदान दिय। मगो मन्नि विचार ॥ छं० १९ ॥

ब्राह्मण ने दीपदान वर मांगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जले।

तब बंभन ऐसी मँगी। दीपहु दान विचारि ॥
कार्तिक मास समुद्ध दिन। दीप नवै ससारि ॥ छं० २० ॥
अच्छे लोयन अच्छि तहां। अच्छे लोयन निपान ॥
नर नारी उद्दिम रहै। पीक परी तिहिपान ॥ छं० २१ ॥

राजा ने कहा कि तुमने क्या मांगा ब्राह्मणों को पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गाँव मांगना था, अस्तु अब घर जाओ।

कहा मँगी तुम देवता। पश्चिम बुद्धी विप्र ॥
अन धन गांव गंमार मगि। घर जाओ तुम विप्र ॥ छं० २२ ॥

ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल और सवा सेर रुई मंगाई।

अपने घर तब आय करि। तेल लियो मन एक ॥
रूई सेर सवा लई। इह तन की जु विवेक ॥ छं० २३ ॥

कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए।

कार्तिक आयो कल्पतरु। विप्रह भयो उछाह ॥
मंग्यो हुतो सु देउ प्रभु। पढह आज बहु नाय ॥ छं० २४ ॥

राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले।

तब आयस नरपति कियो। कोय न बाल्है दीप ॥
आज्ञा भग जो को करे। ताहि बँधाऊ चीप ॥ छं० २५ ॥

लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अंधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देखकर वहीं आई और विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए।

लच्छि समंद निस्सरी। आई नगरहु तथ्थ ॥
अंधारी अहि पूरजे। सु दीपक दिठ्ठो अथ्थ ॥ छं० २६ ॥
बंभन के घरि दिष्षि करि। आइ सही दरबार ॥
अहु निसि वासै हम वसै। लच्छी कहै विचार ॥ छं० २७ ॥
लच्छी बच्छी क्या करै। दारिद दहि मुहि मत्त ॥
तू पाला घर थान रहि। सदा दुखितै चित्त ॥ छं० २८ ॥

मो संगि सथ्यि जु निरवहो। नदी पत्रनि गिर दंद ॥
रात दिठ्ठ वासौ बमों। सं छंड्यो मनि दंद ॥ छं० २९ ॥

लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म मैं तेरे घर बसूंगी।

तब लच्छी सु प्रसन्न हुइ। कट्टे रोर करंक ॥
सात जनम तुरि घर वसौ। एक बमन अकलंक ॥ छं० ३० ॥

तब दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूंगा।

तब दारिद्र जु भजि चल्यो। बंमन पकर्‍यो धाय ॥
इक छोरी तुम पुब्ब सो। लच्छिक देव न जाय ॥ छं० ३१ ॥

दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मै कभी इस नगर में न आऊंगा।

तब दरिद्द वाचा दई। मो कू नृ दे जान।
बहुरि न आऊँ इह पुरी। अैसो कह्यौ बषान ॥छ० ३२॥

उसी घड़ी से उसके यहां आनन्द हो गया, हाथी घोड़े झूमने लगे। उसी दिन से यह दीपमालिका चली।

घरि लच्छी आनंद मन। हय गय मान महंत ॥
दीपमालिका तदिन ते। एह चली महि वत ॥ छं० ३३ ॥

चारो दिशा में दीप मालिका का मान्य है। यह कथा कवि चन्द ने कह सुनाई ॥

पुब्ब पछिम उत्तर दछिन। दीपमालिका मान ॥
थान थान परिमान मन। काम मनोरथ थान ॥ छं० ३४ ॥
कही चंद आनंद सो। पुच्छी नृप प्रिथीराज ॥
दीपमालिका प्रगट हुइ घरि घरि मगल साज ॥ छं० ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रिथराज रासके दीपमालिका पर्व्व कथा समय नाम तेत्रीसमों प्रस्ताव संपूरणम् ॥



अथ धन कथा लिष्यते ।

(चोबीसवां समय)

षट्टू बन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी के कैद करने की सूचना ।

दूहा— षट्टू आषेटक रमै महिम सुरस्थल[1] थांन ॥
नागौरै गोरी ग्रहन । सथ ग्रिमल परधांन ॥ छं० १ ॥

पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धिमत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना ॥

कवित्त— मंच जोग कयमास । मंच प्रथिराज सु पुच्छन ॥
तूं मंत्री मंचंग । मंत्र जानहि सुभ लच्छन ॥
सांम दांन अरु भेद । डड निग्नै करि लष्षै ॥
बहु मंत्रह उप्पाइ । राज मत्रह करि रष्षै ॥
मंत्रह सुमंत्र मन अनुसरै । अरु मत्र भेद जानै सकल ॥
अदभुत चरित्त पाषान लिषि । बचिन किन आवै अकल ॥ छं० २ ॥
तू मंत्री कयमास । मत्र पय पय उप्पावहि ॥
तू मंत्री मंत्रग । मंत्र मत्रीन दिषावहि ॥
तू मंत्री सामंत । *स्वाम ध्रम्म विच्चारै ॥
धर समूह सग्रहै । मत्र करि अरिन विडारै ॥
तुम जोग मंत्र मत्री न कोइ । मह बत्तन उच्चार कै ॥
संसार सार मंत्रह प्रबल । कहो मंत्र विच्चारि कै ॥ छं० ३ ॥

पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इसके अर्थ करने में सब भटकते हैं, सो तुम इसका अर्थ करो ।

ककवित्त- सलिल सुबर पाषांन । मध्य पूतली अचंभं ॥
सलिल मत्त तन जा विसाल । उप्पम रिस रंभं ॥

---

१. मो०—मरुस्थल कृ०—पुरस्थल ।

* मो प्रति में "सांमि ध्रम्मं सुविचारै" पाठ है ।

ता उप्पर बिय नाम। प्रगट प्राकार उचारे ॥
भूलि भूलि भ्रमि लोइ। मुद्ध मनसा करि डारे ॥
वंचौ सु वीर कैमास तुम। बियौ बच नाहि बनिय ॥
भूतह भविष्य अरु व्रतमन। इहु अपुब्ब में कथ सुनिय ॥ छं० ४ ॥

पुतली के सिर का लेख "सिर कटने से धन मिलै सिर रहने से धन जाय"।

दूहा—सिर कट्टै धन संग्रहै। सिर मज्जै धन जाइ ॥
सो मंत्री कैमास तू। मंत्रहि करै उपाइ ॥ छं० ५ ॥

पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैमास से परामर्श करना।

कवित्त - श्रवन राज दृग रत्त[1]। श्रवन जानहि परिमानन[2] ॥
वेद दिष्ट देखै सु। भेद अब्भेद सु ग्यानन ॥
पसुअ नयन आचरहि। धनह परिमान सु लप्पइ[3] ॥
विपति लोइ संसार। सार द्रिग उत्तय दिप्पइ ॥
मंत्रीन दिष्ट मत्रं ननी। मंत्र भेद अनुसार मरति ॥
भ्रमांन[4] वीर जाने सकल। मुद्ध ग्यान प्रौढह सुमति ॥ छं० ६ ॥

कवित्त -तिण्ण तरगन परयो[5]। मत्र तारक हरि मुद्धरि ॥
बद्दरि[6] अध्र कन्धार। राज दंडह लिय उद्धरि ॥
सारथंग जक जीव। मयन त्रिगात धान जुरि ॥
अखिल अरेटक भूमिर। इच्छि जव चित्त मित्त परि ॥
भुल्लहि सुदान भ्रिममान गनि। मरन मन[7] नहि लिप्पवै ॥
मंत्रीन मत्र भुल्लै नजे। ।नधि विचार निधि दिप्पवै ॥ छं० ७ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि वीर बाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्वंश मरेगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है।

छंद पद्धरी-अब कहौं मत्र तुम पुच्छ लोइ। मनि यहौं नेम जिन करो सोइ ॥
पाषान अंक में लिखे राइ। वृतान्त सोइ सब कहु सुनाइ ॥ छं० ८ ॥

---

१. मो०—रस।
२. मो०—की प्रति मे "श्रब जानन परि मानन" पाठहे ३. मो०—लखहि।
४. ए०—भ्रमान। ५. मो०—पच्यो। ६. मो० कृ०—बंदरि।
७. मो०—मर्न।

बाहन सुवीर कोइ भयो राइ। तिहि पाप क्रंम लीनी उपाइ॥
संसार सकल तिहि दुष्ष दीन। सेवकन सेवनिह द्रव्य कीन॥ छं० ९॥
प्रज पीड़ माल संग्रह्यौ कोरि। भरि जनम मूढ़ भंडार जोरि॥
संसार सकल तिन दुष्ष पाइ। सब श्राप दीन इह अगति जाइ॥छं०१०॥
विन वंस हंम इह तजै देह। इम प्रजा सकल कहि अप्पग्रेह॥
कितनेक दिवस तिन तज्यो श्रीर। भंडार पाहि बह सुनो वीर॥छं०११॥

कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर के रावल समरसिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचन्द, शहाबुद्दीन भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं॥

अप पान कढ़न नहि जाइ राइ। चित्रंग राव लिज्जै बुलाइ॥
मिलि सुभट तास कढ्ढो भंडार। तिन बिना दंद मच्चै अपार॥छं १२॥
कनवज्ज राव जैचंद देव। नर असी लष्प तिन करत सेव॥
गज्जन नरेस साहाब साह। दस लष्प मैच्छ सेवंत ताह॥ छं० १३॥
गुज्जर नरिंद भीमंग देव। तिन अप्प अब्ब[1] परिकंक केव॥
ढिल्लीस तेज तूंअर नरिंद। तस बढ्यो वैर उपजै सु दंद॥छं० १४॥
अर तुच्छ सेन इह मत्त मानि। मिलि समर सथ्थ पुछि लच्छवानि।१५॥

पृथ्वीराज का कैमास की इस सलाह को मानकर उसको सिरोपाव देना और उसकी बड़ाई करना।

चौपाई -राजा ढिग कैमास बुलाइय। पहराइय सुउच्च सिरपाइय॥
बगलि अप्प आरोहन बाजन। करी सुपारस सुसर कि राजन॥छं०१६॥

दूहा हरषि राज प्रथिराज कहि। मनि कैमास दै नाम॥
मति कैमास[1] कैमास तुम। सकल सुमति के धाम॥ छं० १७॥

दूहा जां मंत्रह पूछन नृपति। साई अंग सु काम॥
समर सिंघ रावर मिले। धन काढै अभिराम॥ छं० १८॥

पृथ्वीराज का चन्द पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समरसिंह के पास भेजना।

मांनि मन्त्र चहुआन इह। बोल्लिय चंद पुंडीर।
समर सिंह रावर दिसा। दै कग्गद मति धीर॥ छं० १९॥

रावल की भेट को घोड़े हाथी आदि भेजना।

दूहा -दस हैवर इक बग्ग बर। अरु दिय सिंगिनि पानि॥
कहि जुहार विधि जंपियो। नृप पुच्छिय कुसलानि॥ छं० २०॥

१. ए०-अब्ब। २. मो०-उपज्यो।
१. मो०-कैमास।

चन्द पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर हैं।

कवित्त -लै कग्गर प्रथिराज। बीर पुंडीर संपन्नो ॥
सुबर जोर माहाब। मंडि गोरी धन थन्नो ॥
बर भोरा भीमग। चंपि चालुक्क बिलग्गा ॥
नाहर राउ नरिंद। सेन लप्पा असि दग्गा ॥
आषड द्रव्य दिल्ली धरा। सुनि चढ्ढे द्रिगपाल सजि ॥
कढ्ढियै मंत्र मंत्री अपुन। बर बिभूति लच्छी सुरजि ॥ छं० २१ ॥

रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशंसा।

कवित्त समरसिंघ रावर नरिंद। समर मह संभर जित्तन ॥
अरु जोगिंद नरिंद। त्रिन जोगिंद समन्नन ॥
कमल माल सी भन्न। चंद लिल्लाट बीय दुति ॥
नयन रभ आरंभ। जोग पारभ सिभ मंत ॥
मुंजीव ढाल जीपन बिरद। नाग मुषी मिल्लार बनि ॥
सा चित्र कोट ओटह नृपति। महन रभ मडहि सुमनि ॥ छं० २२ ॥

पत्र पढ़कर समरसिंह ने हंसकर चन्द पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह दैव गति है।

दूहा बंचि बीर कग्गद नृपति। हंसिय चित्त बर बंक ॥
कछु लज्जा सगपन सु हित। रष्य पुंडीरां संक ॥ छं० २३ ॥

कवित्त हंसि जोगिंद नरिंद। बत्त से मुष उच्चारिय ॥
* एक ग्रध्र समूह। मस लद्धो पल हारिय ॥
अब्ब ग्रिद्ध चिटयो। मस चाषो जे कारिय ॥
तब सुमंत उप्पनो। मंस लद्धो गहि डारिय ॥
भुगवंति कोइ गड्डंति कोइ। कोइक पढ कोइ लब्भवै ॥
दैवान दुसंकह दैवगति। जो न्रिम्मान सु निम्मवै ॥ छं० २४ ॥

चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा रखते हैं सो चलिए।

कवित्त -सुनि रुबत्त पुंडीर। बत्त जंपी सुनत्त जोइ ॥
तुम जोगिंद नरिंद। मत्त जंपो सुतत्त होइ ॥

---

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है।

सुअ सोमेस नरिंद । सुवत सगपन मिस पुच्छिय ।
तुन चहुआना[1] गरुअ । मुष्ष कढ्ढौ किम ओछिय ॥
सामंत नाथ सामंत बल । मेर ठेलि दच्छिन धरहि ॥
प्रथिराज आज राजिंद गुर । इंद फुनिंद न सो डरहि ॥छं० २५ ॥

शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुओं का सामना है इस लिये सहायता में आपको चलना चाहिए।

कवित्त —अग्गेइ रावर समर । करन साहम चहुवानिय ॥
हलहल अग्ग प्रचंड । सभ सोभै गर बानिय ॥
* अग्गौं अग्ग जुगिंद । अग्गि लग्गै विरझानिय ॥
अग्गे व काल सुनियै दुसह । सह पिच्छै फिरि ठट्टयो[2] ॥
चित्रंग राव रावर समर । संभरि वै दिसि चढ्ढयो ॥छं० २६॥

रावल समरसिंह का सेना आदि सजकर चलना सेना की तैयारी का वर्णन।

रिंग्यो सवर[3] नरिंद । सज्जि है गै चतुरंगिय ॥
हय गय दल चतुरंग । जपि माहा भर जंगिय ॥
महा सुभर गज्जत । बूंदि धुरधर आहुट्टिय ॥
सेस सहस फन फट्टि । मकिल्लि सल मलि माहुट्टिय ॥
फट्यौ सु सेस फन चंद कहि । तब फूंकर करि जग्गयो ॥
फन किन्न उद्ध कुंडल करिय । तब सु सेस बल भग्गयो ॥छं०२ ॥

छंद भुजंगी -
बरं बिटिय समर सम्हस नरिंद । मनो विटिय उड्डगन अम्भ चदं ॥
किधौ इद्र पासं सब देव राजै । किधौ मेर तीर सु पब्बै विराजै ।छं०२८।
उठ्यो छत्र सीस निराजे कला की । मनो इद्र इदी वर चद · जाकी ॥
दुनीना उपम्मा करी का बखान। मनो हेम के दंड पर चद जान।।छं०२९॥
कछू स्याम पाट बिराजै करारी । मनो मद्दई सोम कालक कारी ॥
मयमद्द गज्ज सबद्दं सु उद्दं । बरष्पन दान मनो मेघ बुद्दं । छं० ३०॥
बजै ता जजीरं अनेक सबद्द । मनो बुल्लित झिगुर साम भद्द ॥
धजं धज्ज हालं विराजं फिरन्ती । मनो मडिय बग्ग घन मडिस पती ।३१।
गजं उप्परं ढाल मोरं झल्लक्कं[4] । मनो वेल उग्गी गिर कज्जलक्कं[7] ॥

---

१. मो० को०—चहुआना ।
* यह पंक्ति मो०-प्रति मे नहीं है ।
२. मो०—उट्ठयो ।
३ मो०—समर ।
४. मो०—सकल ।
५. मो०—बन्ध ।
६. मो०—ठलक्कं ।
७ मो०—कज्जलक्कं ।

सितं अद्ध हज्जार विठ्यो नरिंदं। तिनं उप्पमा दिष्पि जंपी सु चंदं ॥छं०३२॥
सबै सेन चतुरंग सज्जी अनेकं। मनों पारसं भांन ग्रह एक एकं ॥छं० ३३॥

परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के
पास नागोर को चले।

दूहा– करि मत्तो चहुहे नृपति। समर राव चहूवान ॥
नागोरह आए धरा। मद्धि कट्टि मेलान ॥ छं० ३४ ॥*

धर्मायन कायस्थ ने यह समाचार चुपचाप दूत भेजकर शहा-
बुद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चितौरपति धन
निकालने नागोर आए हैं।

ध्रंमायन कायथ लभे। परठि दूत पतसाह ॥
ढिल्लि वै चित्तोर पति। धन कढ्ढे धरमाहि ॥ छं० ३५ ॥*

समरसिंह का दिल्ली के पास पहुंचना और दूत का
पृथ्वीराज को समाचार देना।

कवित्त– जाइ सपत्तो समर। चंपि ढिल्ली धरवानं ॥
चहुआना रै हथ्थ। दूत दीनो फुरमानं ॥
असम बिषम साहसी। रत्न माया रत्तुरत्नं ॥
कमल पत्त जल जत्त। मध्य अरु न्यारो जत्त ॥
छिप्पै न कलंक काटन कलंक। राज बंध बंध्यो नहीं ॥
दस कोस कोस ढिल्लीय तें। राज मुक्कि राजन तहीं । छं० ३६ ॥

पृथ्वीराज का आध कोस आगे से बढ़कर आगवानी करना।

कवित्त राज दै दरबार। सुबर आनंद उपन्नो ॥
पुब्ब पाप कट्टनह। समर जिन समर मगन्नो ॥
सुबर वीर जोगिंद। चंद बिरदावलि दिन्नो ॥
दिल्ली तें अधकोस। राज अग्गे होइ लिन्नो ॥
मंडरी मद्धि देषै सु कवि। मति इमरि लभ्भै न दुइ ॥
समरह सु ग्रेह अरु समर अलि। समर सुबग अरु समर जुइ[1] ।छं०३७।

समरसिंह का अनङ्गपाल के घर में डेरा देना, दो दिन रहकर
सब सामंतों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन
निकालने का क्या उपाय करना चाहिए।

कवित्त- अनंगपाल ग्रह जा विसाल। समर उत्तरिय प्रिया पति ॥
विधि अनेक भोजन सु ब्रत। राज उत्तर सु सार भति ॥

---

* छं० ३४–३५ मो.–प्रति में नहीं है और को. प्रति मे ये ४० छंद के बाद मिलते हैं।
१. मो०–जुब।

उभय दिवस बित्तीय । सब्ब सामंत सु पुच्छिय ।
साम दांन अरु भेद । कंक भजि कढ्ढो लच्छिय ॥
कं कहन बंक तुम अनुसरहु । समरसिंह रावर सुमन ॥
उप्पाइ मिट्टि सोमंत करि । सु बर बीर कढ्ढो सुधन ॥ छं० ३८ ॥

कैमास ने कहा कि मेरी सम्मति है कि शहाबुद्दीन के आने के रास्ते पर दिल्लीपति रोकें, और भीमदेव चालुक्य का मुहाना रावल समरसिंह रोकें और तब धन निकाल लिया जाय ।

कवित्त मति सुचारु कयमास । द्रव्य कढ्ढन उच्चारिय ॥
सेन सुष्ष सुरतान । राज दिज्जै प्रथुभारिय ॥
चालुक्कां चंपै न सीम । रावर मुष दिज्जै ॥
अप्प अप्प मुष रष्षि । कढ्ढि लच्छी बर लिज्जै ॥
आलाभ जुच्छ[1] पय लाभ तुछ । सु कछु कांम किज्जै नही ॥
गोइंदराज षीची सुमनि । मिलि विभूति कढ्ढ गही ॥ छं० ३९ ॥

रावल समरसिंह का इस मत को पसंद करना और मंत्री की प्रशंसा करना ।

कवित्त तब चित्रंग नरिंद । चंदपुंडीर बरज्जिय ॥
तुम कुमंन बल मंन । भंन जांनो न मरज्जिय ॥
ते मत्री मंत्रंग । निगंम आगम मत्र बुज्झैं ॥
अंगन कै छुट्टंन । घरह सुज्झै मन बुज्झैं ॥
अरि अरिन मुष्ष रक्कहि सुभर । तब सु द्रव्य मिलि कढ्ढियै ॥
सुरतान भीर भंजै समर । सुमन मत करि चढ्ढियै ॥ छं० ४० ॥

नागोर के पास सब का पहुंचना, सुलतान के रुख पर पृथ्वीराज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना ।

कवित्त -जाइ संपनो समर । मध्य नागोर प्रमानह ॥
सुरताना रै मुष्ष । कोट अड्डो चहुआनह ॥
धन असंष कढ़ तहां । साह चर वर पगधाइय ॥
चरचि चित्त सब सरित । वित्त करि हृथ्य दिपाइय ॥
साहाब सुकर फुरमांन दिय । गांमी छल बल लग्गया ॥
कढ्ढी सुलच्छि आहुट्ट पति । मुष चहुआन बिलग्गया ॥ छं० ४१ ॥

---

१. मो०—पच्छ ।

दो दो कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा देना।

कवित्त उभय दूत नागोर। दूत चहुआन पास दुअ ॥
मब चरित्त धरि चित्त। लषन लष्यो सुमेन मुअ ॥
है कोसां चहुआंन। कोस चित्रगराज दुअ ॥
अवन गवन जानहु सुवत्त। अनुसरहु पथ जुअ।
मन मध्य कथ्थ जानहु सकल। चल्लहु कग्गर राज लै ॥
धन ध्रंम अर्थ कड्ढइ चरित। कहो वत्त दिष्पै सु लै ॥ छं० ४२ ॥

दूत का शाह को समाचार देना कि नागोर में धन निकालने के लिये दिल्लीपति आगए।

दूहा कलि चरित्त नागोर पहु। दूत मत्ते आइ ॥
दिल्ली वै कड्ढै सुधन। बज्जा बज्जन वाइ ॥ छं० ४३ ॥

नागोर के समाचार पाकर सुलतान का उमरा खां के साथ डङ्का निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

कवित्त वज्जा बज्जन वाइ। देषि दैवान दुसकह ॥
चित्रकोट रावर नरिंद। कहुन भुज अरह ॥
सभरि वै आहुट्ठ। लच्छि वड्ढन बत्तीसह ॥
गज्जन वै सुरतान। दूत लै आइ चरीतह ॥
सुनि सच्छ नच्छ नीसान किय। बोलि उम्मरा षान सह ॥
सज्जो सुमज्ज सभरि दिसा। चाहुआन किज्जै वसह ॥छं० ४४॥

शाह का चक्रव्यूह रचना करके चलना, सेना की सजावट का वर्णन।

कवित्त माह बदी[1] सुरतान। चक्का व्यूहं रचि चल्लिय ॥
एक एक असवार। विच्च पाइक तिह मिल्लिय ॥
ता पच्छै गज पति। पति असवार समूह ॥
जमर जंग ऐराक। गोर जंबूरति जूहं ॥
ता पच्छ पति पुरसान षां। ता पच्छै बंधी अनिय ॥
तत्तार षान निसुरत्ति षा। हासिमरू षोषर पनिय ॥ छं० ४५ ॥

पृथ्वीराज को बाईं ओर से बचाता सुलतान धूमधाम से चला शेषनाग को कंपाता पृथ्वी को धसाता रात दिन चलकर नागोर से आध कोस पर आ पहुंचा।

कवित्त—वाम कोहु प्रथिराज। मुक्कि सुरतान सुचल्लय ॥
सज्जि सेन चतुरंग। समर दिसि समर सुहल्लय ॥

१. मो०—ए०—माहाबदी।

भूमि धसिय धस भसिय । सेस कसमस्सि उक्रस्मिय ॥
कमठ विमठ हुअ पिट्ठ । दट्ठ कूरंभ करस्सिय ॥
रिगयौ सबल षुरसान दल । करि मुकाम सक्यौ न कोइ ॥
नुर अद्ध कोस नागोर तें । सज्जि बाज चंप्पौ सु जोइ ॥छं० ४६ ॥

यह समाचार सुन समरसिंह का धन पर मंत्री कैमास को रख-
कर आप सुलतान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना ।

कवित्त--समर सिंघ सुनि श्रवन । वीर नीसान दिषदे ॥
सज्जि सेन चतुरंग । तरकि[1] तोषार चढंदे ॥
थिर थप्पौ कैमास । लच्छि उप्पर गहि रष्षिय ॥
तरकि तोन सजि द्रोन । बलिय पारथ मम दिष्षिय ॥
भारथ्थ कथ्थ कवि चंद कहि । समर सार बर चल्लवै ॥
उच्छारि सेन सुरतान को । हय अट्ठनि करि हल्लवै ॥ छं० ४७ ॥

जैसे समुद्र में कमल फूले हों इस प्रकार से सुलतान की सेना ने
डेरा दिया ।

★दूहा --साइन कर पनिय समुद । कमुद प्रफुल्लिय रंग ॥
उतरि सेन सुरतान तँह । मह आई ममरंग ॥ छं० ४८ ॥

सवेरे उठते ही समरसिंह आगे सुलतान के दल की ओर बढ़ा,
उसकी सेना के चलने से धूल उड़ने लगी ।

प्रात उदित रवि रत रंग । समर समर दिसि जग्गि ॥
तब लगि दल सुरतान के । रेहु सु उडुन लग्गि ॥ छं० ४९ ॥

धूल उड़ने से सब दिशा धूंधरी हो गई दोनों दलों का हथियार
सज सज कर लड़ने के लिये तैयार हो जाना ।

कवित्त --रह सुरेह डंबरिय । दिसा धुंधरी सुराजे ॥
श्रग मग उच्छरै । चित्त उच्छरै पराजे ॥
पवन वेग संजुरै । श्रवन लग्गा असि मंत्रं ॥
रथ कुबेर चढ्ढगे । बांन बढ्ढये सुमंतं ॥
दोउ दीन कर दुंद दल । लरन लोह सज्जे सु बर ॥
चंप्पौ नरिंद आहुट्ठ पति । अगनि सार उड्डिय दुजर ॥ छं० ५० ॥

लड़ाई का आरम्भ होना ।

कवित्त --घन नरिंद सुरतान । षांन दोइ वीस समाहिय ॥
दोइ सुष्ष अरि सक्कि । मित्र बन की गति साहिय ।

---

1. रा० को० कृ०--तरिक ।

★ यह यहा (छन्द) मो० प्रति में नहीं है ।

धार धार बज्जै प्रहार । नद्द लग्गे¹ नीसानं ॥
संभरि वै सुरतान । मीर उट्ठे झुकि षानं ॥
धरि च्यारि लग्गि तरवार झार । बहु उझार लग्गिय फरन² ॥
दोउ दीन भीन घट घुम्मि घन उच्छरि सेन लग्गे लरन ॥छं० ५१॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद पद्धरी -बलवंत सबल पाहार पुंज । कर धरे षग्ग धायो सु नंज ॥
ले पत्र चली कालिका नारि । पर बत्त गहै गय दंत भार ॥ छं० ५२ ॥
सिर तीर बुंद बरषंत वारि । सिर नपै वृंद अप्पित अपार ॥
षग्ग सों षग्ग वज्जै करार । घन टहै घाइ जनु मत्त बार ॥ छं० ५३ ॥
मस्संद मीर महुब्बत षांन । ढाहनह धीर धायो परांन ॥
प्राहार कुंत किय पुंज राज । समभेल चलै हनि षग्ग गाज ॥ छं० ५४ ॥
तुटयो सु मीस संभेन पानि । ढाहे कमंध महुबत्ति षांन ॥
लघु बंधु रुस्तमा हनिय सूर । वर माल बरे ले चली हूर ॥ छं० ५५ ॥
जं जंत सबद जंपै जगत्त । पाहार करी अविगत्त वत्त ॥
पाहार पुंज रुस्तम्म षांन । मुह जुरे मरद हूये उतांन ॥ छं० ५६ ॥
है हयो षग्ग रुस्तम मरद्द । बाह्यौं षग्ग पुंजा दरद्द ॥
तुट्टयो मीस सा पुंज राज । अच्छरी वरै करि उर्द्ध काज ॥ छं० ५७ ॥
नारद्द नद्द ग्रह इंद मद्द । पलचरी कालिका करै नद्द ॥
प्राक्रम सूर देषे पहार । धनि धन्नि कहै भर सकल सार ॥ छं० ५८ ॥
ब्रह्म पुरि भेदि गय सूर सार । अवि उंच क्रंम पामेव वार ॥ छं० ५९ ॥
कवित्त बलिय फौज पाहार । दुनिय भारय जिन मंड्यो ।
अरि अच्छरि वर लीन । धार धारहु तन षंड्यो ॥
ईश सीस संग्रह्यो । इवक तें हथ्थन मुक्यो ॥
सुर मुरीय कँहु जांनि । मरम सिंगारहु चुक्यो ॥
जानयो गवरि कह मानि किय । कहा जानि नंदी हस्यो ॥
जांनयै चंद इय कब्ब करि । चंद लिलाटहतें धस्यो ॥ छं० ६० ॥
कवित -मुत्ति लहत सामंत । सिद्ध मन डोलन लग्गा ॥
चुकि समाधि जगि सिभ । बंभ आराधन भग्गा ॥
★ आतुरता तजि सूर । तुचा मृग्गन आराधी ।
तन तुट्टिग अधि³ धार । मग्ग नहि अच्छरिबाधी ॥

---

१. ए० कृ० को०—भग्गो ।
२. मो० प्रति में "बल उझारिय षग झरन पाठ है ।
★ "षिति संपुट षलभस्यौ । तुचा मग्गन आराधी" मो०—प्रति में ऐसा पाठ है ।
३. मो० असि ।

अचरिज्ज एक आतम गमन । देह मटी मुक्की निमुष[1] ॥
षंषेरि षाल मुक्किय जगत । सुकर किति चल्लिय सुरुष॥छं०६१॥

दूहा षां ततार रुस्तम सुभर । अरु जे मीर समंद ॥
सोइ तत्ते गहि तेग षरि । वर वीरा रस मंद ॥ छं० ६४ ॥

दूहा- चंद बंध पुंडीर बर । लष्षन लष्षा सार ॥
मिले मीर मरदान मुष । धरि कर षग्ग करार ॥ छं० ६३ ॥

कवित्त षां ततार रुस्तम हुजाब । मुस्तफा महमद ॥
† है सज्जे बर मार । नथ्थ आए मीरबद ॥
मार मार कहि धीर । मिले लष्षन लष्षमर ॥
सार धार वज्जंत । भिर्‌यो मुग हम्मीर गुर ॥
पुण्डीर सुबर साहस वरह । वग्गि षुद् षद्दे सुषल ॥
कौतिग्ग देव देषंत सिग । अरिय भूत नचे अकल ॥ छं० ६४ ॥

छंद हनूफाल आए सुमीर मसत । वर षग्ग धारिव इद ॥
हक्कंत हक्क कराग । वज्जन कर करनार ॥ छं० ६५ ॥
त्रिघाय षग्ग त्रिकट । ग्रहि मार मामत जूट ।
पुडीर लष्षन लोइ । मर मार आए दोइ ॥ छं० ६६ ॥
बाहैं दुसार कगार । लरि लष्ष लष्षन मार ॥
झंडे सु षग्ग उझट्टि । तुट्टे सु झल्लर नट्टि ॥
उकि उक्कि ईस रनद्द । नारद्द नचि उमद्द ॥
भगि मीर पुरं गुर तार । जुरवंत मीर जुझार ॥ छं० ६७ ॥
भज्जंत सेन महाव । गज्जंत लष्षन गाब ॥
तन्नार नूरि हुजाब । रुस्तम महमुद आव ॥ छं० ८ ॥
बाहै सुलष्षन सार । त्रिमि टोर छिप्पर लार ॥
चोहनी लष्षन धार । परममि मीर मुझार ॥ छं० ६९ ॥
गय सूर मंडल भेदि । भल कहत अच्छर वेद ॥ छं० ७० ॥

कवित्त- चंद बंध पुडीर । नाम लष्षन लष्षे सुर ॥
दुंद देवि पच्चार । दियौ हुंकार हक्कि गुर ॥
ईस सीस आनंद । विड गिद्धिन मन भाइय ॥
हूर सूर अच्छरि बिमांन । चढ़ि देवन आइय ॥

---

१. मो०—निमग ।

† मो०—प्रति छन्द ६४ की प्रथम दो पंक्तियों का पाठ "षां ततार रुस्तम हजाब, षान मुस्तफा महांमर, है सज्जै वर सार, तथ्थ आए सुर सरष" है ।

२. मो० सुनद्द । ए०— मरद्द ।

आतंम सोई उतपति चल्यौ । देव धांन विश्रांम भय ॥
जम लोक लोपि बसि ब्रह्म पुर । जरि सेन दोउ सद्द जय॥छं०७१॥

छंद दुमिला – छह गुर लहु पाय अछिर दायं विचि विचि रायं इंदोई ॥
दुमिलानय छंदं पढ़य फुनिदं कहि कविचंदं गुनगोई ॥
बज्जै रन तालं असि बर झालं भर भर हालं भभीर ॥
पारस सुविहान छुट्टिय थानं चढ़ि मध्यानं छुटि तीर ॥ छं० ७२ ।
गंजी जननं जरि भंगी द्विककरि लरि रज उच्छरि गगनेदं ॥
धर धीर धरंतं जोग जुगंतं लरि लरि जोर जरि मेछं ॥
किरवांन करक्कै बिज्ज तरक्कै छिच्छ उछक्कै इन भेसं ॥
दो उप्पम भासं माधव मासं अनि उल्हासं दुति केसं ॥ छं० ७३ ॥
उडि सकै न गिद्धं सरवहि विद्ध हूसयनि मिद्धं दै तारी ॥
षप्पर अधिकारी षड उकारी जै जै कारी किलकारी ।
गज दंत न कड्ढै दै पग चढ्ढै कुन मु कढ्ढै सिर चढ्ढै ॥
कंदल परि उट्ठै सीस विछुट्टै हनहि न रड्ढै भर बढ्ढै ॥ छं० ७४ ॥

दूहा सस्त्रन सस्त्र न उब्बरिय । मन वर छुट्टिय नाहि ॥
ज्यों मध्या प्रिय तुच्छ निसि । सेरो सहर समाहि ॥ ७५ ॥

रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला रोस राजं भरी । चित्रकोटे मुरी[१] ॥
हथ्थ बथ्थ जुरी । जुट्टि सोहै पुरी[२] ॥ छं० ७७ ॥
नीच दोनं परी । बीर हक्कै उरी ॥
कुंत कढ्ढै छुरी । हथ्थ वथ्थ करी ॥ छं० ७८ ॥
दंद कढ्ढै करी । कंध सोभै धरी ॥
कथि आलुथ्थरी[३] । मंम्मता विछ्छुरी ॥ छं० ७९ ॥
देवता संभरी । ढिल्ल राजं भरी ॥
जोग मत्ते जुरी । रंभ दूढै वरी ॥ छं० ८० ॥
वीर जा संभरी । छुट्टि झुक्कै करी ॥
मात पित्तं उरी । षत्त कन्है नरी ॥ छं० ८१ ॥
··· ··· ··· ··· । किति जुग्गं करी । छं० ८२ ॥

---

१. मो०–सरी ।
२. मो०–खरी ।
३. मो०–लोथि लोथं परी ।

दूहा—कित्ति जोग करनह समथ । मिले सबक सासेन ॥
आए मीर सुकूह कहि । परिय सिंह सिर जेन ॥ छं० ८३ ॥

अरिल्ल —कोप्यो गबल राज महाभर । सेना गाह सहावह लिय पर ।
हिंदुअ सेन हक्कि भर उठ्ठे । पंच पांन सिर मारह तुट्टे ॥ छं० ८४ ॥

छंद भुजंगी —उठे पंच षानं बरं आमुरानं । बजे भेरि नफेरि त्रंबे[1] निसानं॥
धमक्कै धरा नाग गज्जै मुगेनं । चढ़े देव कौतिग्ग देषत नैनं ॥छं० ८५ ॥
मिली अच्छरी रथ्थ अप्पार रज्जै । नच्चै नारदं ईसुरं अप्प कज्ज ॥
करे कइ दौरं भर आपुरानं । जुटे सूर सामंत लग्गे भरान ॥ छं ८६ ॥
षगं दुअ बाहे झरे टोप मथ्थै । मनो झल्लरं देवल कुटि हथ्थै ॥
जुरे पांन सामंत दोमार मारं। कहै दीन रामं जपे इष्ट सारं[2]॥छं० ८७॥
षडे आइयं अष्ष आकब मीरं । छुटे ध्रंम धीरज्ज कपे अधीरं ॥
तबै आइ चामंड दाहिम रायं । हयो सेल मीर गहक्के गुरायं ॥छं० ८८॥
समं सेल सानं बहे षग्ग कट्टं । पर्यो अश्व चामड भग्गै सुघट्टं ॥
उठे चोंड रायं गहे षांन सारं । तुटे मंडलं तुट्टिहै भाग पारं ॥छं० ८९॥
ढह्यो षांन हथ्थें सु चामंड रायं । इतै देषि मीरं निकट्टं सु तायं ॥
वहे षग्ग ढाहे चढ्यो अप्प सायं । हली फौज साहं चपे अमुरायं ।छं०९०।
तबै केलियं षान षानां कुलाहं । दुअं धारि षग्ग नट्टे हिंदु थाहं ॥
तबै आइ अड्डो भरं अत्तताई। लिए मिप्परं घाव तिच्छे सुनाई ।छं०९१॥
वहे दुअ षग्ग करे मार झट्टं । मनों रंभयंमं दुअ मीग कट्टं ॥
गुरं गज्जते अत्तताई अभंगं । भरक्कै सुसेना सबै मीर भग्गं ॥छं० ९२॥
इकं सेर नंमीर साहब्ब षानं । दुअं बघ्र पुत्तं सु आरब्ब जानं ॥
दुअं ध्रंम धारी उर आगियानं। उभे दौरि बंधं लगे आसमानं ॥छं० ९३॥
चपे मीर मुष्पं चवै मार बानं । लगे दात्र घावं करे षग्ग पानं ॥
इयं जुद्ध आनुद्ध देष्यो अगारं । भरं निड्डुरं देषि धायो सुभारं ॥छं०९४॥
हुए निड्डुरं संगि हय बंध्र मीरं । मनो सीर[3] इक्कं बरे दो सरीरं ॥
हुने तेग तुरियं सुकमधज्जरामं । ढह्यो अंस ओहंस उद्यो तिमायं ।छं०९५।
उठे निड्डुरं हक्कि रट्ठोर[4] रानं । सिना[5] बीस चौकं सुषं मानि भानं ॥
इतै आइ दीनों तुरंग अपानं । चढ्यो राव हयमीर कमधज्ज भानं ॥९६॥
धये आइ तते करे अप्प पानं । भगे सेन मीरं रहे पंच षानं ॥
बढी जैत देषी बरं हिंदुआनं । ... ... ॥ ९७ ॥

१. ए०-को०-त्रंबे । २. मो०-षारं ।
३. मो०-सीश । ४. मो०-रत्तोरे ।
५. मो०-छके ।

रिझें नार छंअछ्छरी गिद्ध सिद्धं। मनं बांछि प्रेमं जयं जस्स लिद्धं ॥
जयं जंपियं जोगिनी जे गमत्ते। करी कित्ति चंद गय गेतं पत्ते ॥छं०९८॥

पृथ्वीराज की विजय, शहाबुद्दीन की सेना का भागना।

कवित्त - घरिय अद्ध दिन रह्यौ। माह साहत्र यत भग्गिय॥
गात षंम निरषान। हथ्थ सामंतन लग्गिय॥
पर्यौ षांन आफत्र। जेन सेना ढंढोरिय॥
केलीषां कुंजर कुलाह। नट्ठि निन मग्ग त्रिछोरिय॥
चहुआंन सेन चत्र दंत चढ़ि। तनु निन रव रत्तपयौ॥
सुरतांन भीच पंचौ परत। जलधि मध्य पनगयौ॥छं० ९९।

सूर्यास्त होना।

गाथा -अथ वन दीह सुभीरं। मानिव सेरन हनि निड्डुग्य॥
करि प्राक्रम अपारं। जलनिधि मद्धि गत पतंगं॥छं० १००॥

रात होना। सेना का डेरे में आना।

कवित्त -जब निसि नग तारं। पतं[1] दिसिय तम ग्रामिय॥
कायर पंकज मुदिग। कुमुद उघ्घरि अलि वासिय॥
तर की चिनव विहंग। बाम विरहनि दुष वड्डिय॥
सजोगिनि श्रृंगार। चित्त कामह रथ चड्डिय॥
चक्रवाक चित चक्रित हुअ। चोर विटर मन उल्लमिय॥
औमरे सेन बिय उत्तरिय। स्वामि ध्रंम मन मे बसिय॥छं०१०१॥

गाथा निसचर विरचिन चित्तं। चिनं जाग्रत उभय सयनेयं॥
जामं सर सरि हितं। वामीयं काम सपनायं॥ छं० १०२॥

अरिल्ल -पतन पतंग मुद्दिष्षिय अंब। मानहु मीय सुद्ध प्रति व्यबं॥
नष मयूष कोदह उप्पारे। मानो तिमिर जोग जंभारे॥छं०१०३॥

चामंडराय आदि सरदारों का रात भर जागकर चौकसी करना।

कवित्त -जबहि राज प्रथिराज। सेन उत्तरिय रयन गत॥
तबहि सुराजन कज्ज। रहे सामंत सु जग्गत॥
राचां मंड निडुरकमंघ। अत ताइय ईस बर॥
सु गुरु जैत पामार। अ[2]िय भंजन अलष्ष भर॥
अवरें सु सब्ब सामंत भर। चढ़े राज चौकी समथ्य॥
गुर लज्ज अबर भर सज्जि रहि। है पष्पर चवरार हथ॥छं०१०४॥

---

१. मो०—तंग।
२. मो०—पतस।

अरिल्ल—डेरा करि बर राज महाभर। तुछ अतर मिलि रहै सिघ गुर ॥
चौकी सेन चढ़े भर सिघं। सक एक एक सूर अभंगं ॥छं० १०५॥

दूहा—राम रैंन पावार भर। अरु सु कन्ह भत्तीज ॥
फुनि रघुवंसी राज धर। सब चौकी सजि नीज ॥ छ० १०६ ॥

अरिल्ल—

सजि चौकी अप सथ्थ सकल मिलि। चढ़त सूर भर न्रप बरज्ज[1] बलि ॥
गुब सामंत अयति अप्प गढ़ि। रहै सुच्चारि दुअ चौकी चढि ॥ छं० १०७ ॥
इक चौकी वर सिघ राज सज। भर दुअ चढ़े अप्प अप्पन कज ॥
थांन थांन जकि रहे सूर बर। सज्जि सनाह रहे जु हुंस नर ॥छं० १०८॥

शहाबुद्दीन के सरदारों का रात को चौकी देना।

छंद भुजंगी—चढ़ी साह चौकी सुरत्तांन षानं। दोई दीन बज्जै निसानं रिसानं ॥
चमक्कै सनाहं उपंमा सु चंडी। मानो चंदनी रैंन प्रति व्यंब मंडी ॥१०९॥
फिरै पंति दंती नकी कंति एमं। मनों कज्जल कूट कगूर हेमं ॥
फिरै पष्परी पंति कूदंत बाजी। तिनं देखते बंदरं द्रोन लाजी ।छं०११०॥
लगे पारसी बोलनं मेछ सथ्थं। मनो प्रब्बतं बदरं केलि कथ्थं ॥
इकं एक चित्ते दुअं चित्त नांही। तिनं षचियै[2]सार साध्रंम मांही ।१११।
पिक्षै मुष्ष बोलै सुरत्तान दोही। करै भूमि दुजन पुरं काल कोही ॥
इसी सेन जोरी मुगोरी नरिंदं। मनों बटियं पारस नभ्भ चंदं ।छं०११२॥

पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन।

अरिल्ल—सिलह सजि प्रिथिराज महाभर सेन सह।
मनों प्रप्पन प्रति व्यब प्रगट्टिय जानि ग्रह ॥
यापर ओपम ओर विचार लो अप्पियं ॥
ज्यों बद्दर में चंद दुरै कछ दिषियं ॥ छं० ११३ ॥
घुरि निसान घन सद्द स्रवंन न सभरै।
हय गय साजिय साज हक्कतें उब्भरै[3] ॥
भेरि भनंकिय भंकिन फेरिय नद्दयं।
*एक तबे उत दिष्षि दल बल बद्दयं ॥छं० ११४॥

शहाबुद्दीन के सेना का वर्णन।

कवित्त—षां रुस्तम ततार। थांन चौकी बे लग्गा ॥
षां नूरी हुजाब षा। महमद अमि जग्गा ॥

---

१. मो०—बररजि। २. मो०—षचियं।
३. मो०—प्रति में "हय गय साजिय साज कूकतें उब्भरै"; पाठ है।
* मो०—प्रति में 'इन बे उन दिष्ष' पाठ है।

केली षां भष्षरी रोम षोषर षां पन्नी ॥
वर भट्टी मह नंग । स्वामि मर्‍यौ सा अन्नी ॥
बीरंग बीर वज्जर विरज । बर चरित्त चिहुं दिसि लगे ॥
सुरतांन कांम अरि भंजनौ । सुबर बीर बीरह पगे ॥ छं० ११५॥

सुलतान के सरदारों के क्रम से सजकर खड़े होने का वर्णन ।

कवित्त —अग्गिवांन उजवक्क । धाइ धावड़ सुरतानी ॥
ता पाछै साहाब । षांन बंध्यौ तुल सानी ॥
ता पाछै नूरी । हूजाब सेई संचारी ॥
केलीषां कुंजर कुलाह । किन्नी कुट वारी ॥
बांनिक विराह दुल्लाह बर । भाई षा भट्टी सु सिर ॥
प्रिथिराज राज आहुठ्ठ तें । बर निसान बज्जै दुमर ॥ छं०११६॥

घड़ी दिन चढ़े सुलतान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का आगे बढ़ना, दोनों सेना का साम्हना होना ।

कवित्त —सुलतानां रै मुष्ष । समर उत्तर्‍यौ नरिंदं ॥
मनों विद्धि विद्वान । मांड म्रजाद समुंदं ॥
दोऊ सेन उत्तरिय । धंम्म अप्प अप्पन उच्चारिय[1] ॥
अरि समूह करि प्रांन । जुद्ध बर मंडि उछारिय ॥
पहु फट्टि निसा पह फट्टि कर । घरिय बज्जि घरियार घन ॥
प्राची सुमंत दिसि वर झिलिय[2] ।अमर कित्ति चिते सुमन॥छं०११७॥

प्रात:काल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन ।

छंद गीतामालची -नव नवय प्रातय विरह आवय[3] संव दिव धुनि बज्जियं॥
झलकंत पत्रनह मधुर गवनह अंसु अश्व हरज्जियं ॥
विछुरंत चंद सुमंन दंदं दिवस ता गम जानयं ॥
पह फट्टि चीर परिग पीर तोरि भूवन नापयं । छं० ११८ ॥
नव मिलहिं अलिनी हूले नलिनी सह मंद प्रकासयं ।
नय मुदिय कुमुदिय अचित प्रमुदिय सत्त पत्त सुभासयं ॥
जुग जपन अजय धरत मजयं[4] नित्त मरन विचारयं ।
सामंत सूरय चढ़े नूरय देव तूरय तारयं ॥ छं० ११९ ॥
घरि अद्ध भानय चढ़ि प्रमानय राज सेनय सज्जियं ।
उब्भारि बीरय बधि तीरय अप्प अप्पय गज्जियं ॥ छं० १२० ॥

१. मो०–विच्चारिय । २. कृ०–सिलिय । ए०–मिलिय ।
३. मो०–पाठय । ४. मो०–नव ।

कवित्त—अद्ध सूर उग्गंत । ढ़ाल ढुबकी सुरतानिय ।
ठांम ठांम मद्धगंध । सज्जि चल्लै अगवांनिय ॥
धर तर गिर धावत समूह । जूह चतुरंग जगाइय ॥
ढिल्ली बै सुरतान । धुबिक नीसान बजाइय ॥
जा हथ्थ हथ्थ कविचंद कहि । अल्लह देइ सुपाइयं ॥
ततार षांन निसुरत्ति षां । सुबर सेनरि गाइयं[1] ॥ छं० १२१ ॥

रावल समरसिंह का सब सरदारों से पूछना कि क्या हाल है
कौन दृढ़ है और डरता है । सभों का उत्साह
पूर्ण वीरता का उत्तर देना ।

कवित्त—प्रात समर रावर नरिंद । साहस गत पुच्छिय ॥
कहै सब्ब सामंत । मत्ति जंपो मति अच्छिय ॥
कोन वीर को धीर । कोन साहस को कातर ॥
कवन दूत अवधूत । जोग कावंध समातर ॥
बंधनह कोंन को बंधियै । अरु किन बंधन तन छुट्टयो ॥
चित्रंगराज राजंग गुर । रहसि मंत बर छुट्टयो[2] ॥ छं० १२२ ॥

रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़कर
स्वामी का साथ देता है वही सच्चा वीर है ।

इहै वीर अवजोग । प्रांन पति सथ्थ न छुट्टै ॥
चुक्कै न बीर अवसर प्रमान । जिहि जोग अहुट्टै ॥
इक बंधन बंधियै । इहत तन बंधन अग्गै ॥
स्वांमि संकरें छाड़ि । स्वांमि हक्कारति भग्गै ॥
सोई बीर धीर साहस मुई । मुइ रन बीर सुबीर हुई ॥
चित्रंग राव राबल्ल चवै । जल बुड्डतं रन कीर सोइ ॥ छं० १२३ ॥

दोनों सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना ।

दूहा—उदित अर्क दिसि पुब्ब पहुं । जगे सेन दोइ जंग ।
अप्प अप्प बल बद्धए । बल बज्जंगी[3] अंग ॥ छं० १२४ ॥

पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना ।

कवित्त—तब प्रथिराज नरिंद । समर उत्तरिय चढ़ाइय ॥
सज्जि सेन चतुरंग । को[4] दाव लसाइय ॥

---

१. ए०—को०—कृ०—रंगाइए ।
२. मो०—छुट्टयी ।
३. मो०—बज्जंगिय ।
४. मो०—कोवं ।

स्यांम सेत धजबंधि। नेत निवकरि निवकाइय ॥
बंदि बीर बिभ्भूत लुलिय लिल्लाट लगाइय ॥
नारद्द दद्द तुंबर सुचिर। सिव समाधि जग्गाय, बसि ॥
अदभुत जुद्ध दोउ दीन को। अप्प आन दिष्षै रहसि ॥ छं० १२५॥

सुलतान का रणसज्जा से सजकर सवार होना।

दूहा सुनि रू वत सुरतांन चढि। गजि नरमिय अपसिद्ध ॥
अश्भर सकल सनाह कसि। चढ़ि अवधूत सनद्ध ॥ छं० १२६ ॥

हिन्दुओं के तेज के आगे मीरों का धीर छूटना।

दूहा जब हिंदू दल जोर हुअ। छुट्टि मीर धर ध्रंम ॥
★ असमय आर बषांन चलि। करन उद्धमा क्रंम ॥ छं० १२७ ॥

एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर से रावल समर सिंह का शत्रुओं पर टूटना।

दूहा इत राजन उत समर बर। दुअ दल मज्जि अमर ॥
तन तुरंग तिन बर करन। नमिय तेज हय नंग ॥ छं० १२८ ॥

युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन, अरब खां का मारा जाना।

छंद भुजंगी
मिले लोह हथ्थं सु बथ्थं हकारे। मनो दाहनी मन मै गंग भारे ॥
दिठी दिठ्ठ हूनं भरं आसुरानं। पलं कह वज्जे उभै सिध जानं ॥ छं० १२९ ॥
जपै इष्ट मत्रं मुषं राम नामं। कहै मेच्छ दीनं ग्रहै मुक्ति वाम ॥
छुटै तीर भारं द्रमं के निसानं। मनो भादव गज्जिय मघ्घवानं ॥ छं० १३०॥
वजे भेरि तूरं बजे संष नद्द। मनों गज्जई वीर अनहद्द सद्दं ॥
भिरैं मेच्छ हिंदू लरं लोह तने। मनं ईस सीस यह देव पत्ते ॥ छं० १३१ ॥
हुए षंड षंडं भरं सो अ अग्गं। मनों देव दाने त्रिहथ्थें बिलग्गं ॥
षिजे लोह आरब्ब बाहै कम्मरं। हली फौज चहुआंन सय सूर नूरं ॥ छं० १३२ ॥
तवें आइ ठढ्ढो भरं सिघ सेनं। तनं आवरे वीर रूपं पयेनं ॥
दिठं दिठ्ठ लग्गी समं षान षानं। हयतो हयनी रूप आसुरान ॥ छं० १३३ ॥
तुरी छडि राजं महे संग पानं। हद् सेल सथ्थं फटे षांन थानं ॥
जुटे सेल संम्हो बहै षग्ग अट्टं। परे टट्टरी[1] झट्ट लग्गे सुघट्टं ॥ छं० १३४ ॥
भई भीर सिघं अनुद्ध अपार। कहै बीर धीरं मुषं मार मारं ॥
रह्यो आइ अड्डो पतीधार स्यामं। हयो षग्ग षानं सु पंमार रामं। छं० १३५ ॥

★ मो०-प्रति में "असरम मय साह करि आसखां प्राक्रम" पाठ है।

1. मो०-टट्टरं।

बह्यो आरबं षांन दो दीन साषी। जिने दीनके धंम की लाज राषी॥ छं०१३६॥

पांच घड़ी दिन चढ़े वीरता के साथ लड़ कर अरब खां का मारा जाना।

कवित्त – पंच घटी दिन चढ्यो। उमरि आरब्ब षांन लरि॥
हिंदुअ सेन समूह। छोह छंड्यो सुकंक अरि॥
असि प्रहार चढि धार। मन तुट्यो तन तुट्टिय॥
अस्त वस्त बज्री कपाट। दद्धीचन जुट्टिय॥
पग पगति सिभ पग पग मुगति। भुगति भूमि कित्तिय चलिय॥
धनि सेन साह सुरतांन दल। दरिय बीर मुत्ती षुलिय॥ छं०१३७॥

खुमान खां का क्रोध करके लड़ने को आना।

कवित्त एकादस दिन जुद्ध। उमड़ि आरब्ब षांन जुरि॥
★ बल घट्यो पतिसाह। षबरि षुम्मान षांन सुनि॥
परि अरिष्ट मु बिहांन। भए सब सप्प उतारे॥
अप्प अप्प मुष छडि। मंडि करि वार करारे॥
घरियार सघन समघाइ बजि। लरत लोह भए लल्लरिय॥
दोइ दीन दुंद दारुन दरिय। करै बीर गुन गल्हरिय॥ छं०१३८॥

युद्ध का वर्णन।

छंद मोतीदाम – सुअंत कमंत बढै अनदोस। परै घन वत्त सरोसिय रोस॥
लठै अनु सांड भयानक भंति। करै घन गज्जं घन बन कंति॥ छं० १३९॥
बहै असि अंक निसंक नि नारि। उतारत भाजन मून कुंभार॥
तकै सिरहंन तकत्तिय घाउ। बहै करि वार मनो बहि बाउ॥ छं० १४०॥
जहां तहां धुक्कत उठ्ठन एक। सरफै तरफै रत तच्छिय तेक॥
हलंमल होत षरभ्भर भीर। वहै असमान अनुद्धिय तीर॥ छं० १४१॥
बहै सर पष्षर निक्करि जात। तकै तन घट्ट करंत निघात॥
परैं बर बज्र गुरज्ज मिग्न। वहै मिर रत्त कै पब्ब झिरन॥ छं० १४२॥
अदभ्भुत आवध्र वज्जिय मार। ढहै जिमि वृक्ष मुनद्द किनार॥
हलंमिल्ल है दल पैदल ‍क। भय इम युद्ध भरी भर ‍क॥ छं० १४३॥

ग्यारह दिन युद्ध होने पर सुलतान की सेना का निर्बल होना। रावल समरसिंह का तिरछी ओर से शत्रु सेना पर टूटना

कवित्त –एकादम दिन जुद्ध। मबर संघट पच घटि॥
बल घट्टिय पतिमाह। बग्ग परमरिय षांन जुरि॥

★यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है।

१. मो०–संरम्भ।

हाइ हाइ आरिष्ट । सकल हिंदून सेन करि ॥
समर सिंघ मुष छंडि । जाइ भंज्यो तिरछो परि ॥
घन घाइ बजाइ सु फौज फिरि । लरन लोह कढ्ढै भिरन ॥
दोउ दीन दीन उप्पम बिसल । मद मैंगल जुट्टे लरन ॥ छं०१४४॥

छंद त्रिभंगी मद मोष कि जुट्टं दो वर जुट्टं संकर तुट्टं आहुट्टं ।
भर भर भूआलं भूधर हालं कर बजि तालं तर तुट्टं ॥
करि कर बर कुंतं सजि बलवंतं भिरि गज दंतं चढ़ि दंतं ।
करि घन समानं बीर भरानं उप्पम जानं करि नंतं ॥ छं० १४५ ॥

युद्ध बर्णन ।

तज्जे सब सस्त्रं बीर सुमित्रं बजि अनुरत्त उत्तगे ।
उर उर बर घट्टे रुधि रस लुट्टे छबि बल पट्टे रग रंगे ॥
धर धरति फुरक्कं चलत न दिष्षं अंतर रुष्ष अवरुष्षं ॥
बग्गं अघ जानं को किग्वानं गिल हित पानं जह भष्षं ॥छं० १४६॥
है वै हिंदवानं तजै न थानं द्रोन समानं गुर पिंडं ॥
रितु राज बसंतं दीपति चितं संकुचि जंतं मिल षंडं ॥
नेजे बर षानं बलि लछि ध्यानं मीर धरानं भ्रमि दंदं ॥
सब सेन समाहं सुरपनि छाहं को तिग राह लै चदं ॥छं० १४७॥

खुरासान खां का घोर युद्ध करना ।

कवित्त - षां षुरसांन ढहाइ । षांन षुरसांन गहन पति ॥
सत्त दून भर समर । समर आहुन्ति मडि छिति ॥
सेन नवत भ्रित नवत । नवत गजराज माज नव ॥
ते समस्त नव मंत्र । यंत्र नत्र नव्वत सव ॥
दिन अदित हूंम इक सथ्थ उडि । रन आहुट्टिय बीर बर ॥
दिष्षहि सुजथ्थ गंध्रव गुननि । जुबर कित्त बित्ती सुभर ॥छं० १४८॥

समर सिंह की बीरता का वर्णन ।

कवित्त - पर्‌यो समर षाबास । समर जिनै गुरसानी[१] ॥
परि भट्टी मह नग । सस्त्र बाहे सुविह्नानी ॥
पर्‌थो गोर केहरी । रेह अजमेरां मरिषय[२] ॥
स्वामि ध्रम जस रत्त । कित्ति भारथ भर भष्षिय ॥
रघुवंस पंच पंचौं मिले । बर पंचानन नाम क्रमि ॥
चित्रंग बीर पंचो परत । चढयो भान मध्यान नमि ॥छं० १४९॥

१. मो०-षुरसानी । २. मो०-रष्षिय ।

कवित्त — चढ़त भांन मध्यांन । बीर गष्वर उग्गरि घर ॥
सुमरि सेन सामंत । ओट तत्तार षान भर ॥
बज्र घात आरिष्ट । बीरता रिष्ट गरिष्टिय ॥
लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि । लुथ्थि लुथ्थन पर जुट्टिय ॥
धारंग छुट्टि अन छुट्टिहै । डंक बज्जि बज्जी विपल ॥
हरुवंत देखि उभ्भै हसब । उघरि सिंभ दिष्षै सुपल ॥छं० १५०॥

बड़े बड़े बीरों का मारा जाना ।

पल उघघरि दिषि सिंभु । ब्रह्म दिष्यो ब्रह्मासन ॥
प्रकृति पुरुष दिष्षीन । प्रकृति दिष्यो गुरु षासन ।
थान थान जम पुच्छि । रंग पुच्छै पछ गृह फिरि ॥
भौ अचंभ कविचद । लोक मंगै सु लोग सुरि ॥
लभ्भी जु मुगति पग मग्ग करि । जोग भग्ग जिन मुक्कयौ ॥
सामंत सूर मिलि सूर ग्रह । फिरि न तिनन तन चुक्कयौ । छं०१५१॥

गष्वर खां और तातार खां दोनों का मारा जाना ।

दूहा — उभय सहस गष्वर परिग । थल बिहथ्यो सुरतान ॥
समरसिंध रावर सिमुख । परिग बीर[1] बिय षांन ॥छं० १५२॥

याकूब खां का घोर युद्ध वर्णन ।

छंद भुजंगी —
पर्यौ षांन आषूब मुष्षं समाहं । बजे टोप टंकार के तार साहं॥
कटै कंध कामंध नंचे विभंगं । मनों अग्गि लग्गी समीपं न दंगं ॥छं० १५३॥
करै बीर भंगं सुभट्टं करं क । मनो उच्छरै मीन जल मज्झ पंकं ॥
करे दोह दोही समं चित्र कोटं । परे बीर बीरं सुरत्तान जोटं ॥छं० १५४॥
मथी सेन दूनं भई थोर थोरी । मनों वारिज पंनि दंनी ककोरी ॥
बजै घाइ अघ्घाइ निघ्घाइ घट्टं । पढ़ै वेद विप्रा वके ज्वान भट्टं ॥छं०१५५॥
परै ढाल मालं विराजै कला की । मनों भीति गोष भिदै नीर जाकी ॥
जिनैं नीर मुष्षं षगं नीर झल्लै । मनों माधव माम वे वंक फुल्लै ॥छं०१५६॥
किरव्वान कुंतं झरै पंमु कक्की । मनों बीज लट्टी कुलट्टा मा‍ककी ॥छं०१५७॥

अब आधी घड़ी दिन रह गया तो निसरत खां और तातार खां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया ।

दूहा — रहिग जांम तन अद्ध घटि । टरिन बीर जुध बार ॥
षां निसुरत्ति तत्तार षां । लयौ सैन सिर भार ॥ छं १५८ ॥

---

१. मो०—बीय ।

घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार लेकर टूट पड़ना।

छंद भ्रमरावली —

जयं जय सद्द सु सद्दिय सूर। जु अच्छरि पुक्क उछारत दूर॥
हहा हुहु गंध सुगंध्रव गांन[1]। पर्यो घरि एक उभै रथ भांन॥१५९॥
भवं[2] रुंड मुंडय सुगुंथय माल। भ्रमंय उपावहि ढुंढहि लाल॥
जु षिझै चहुवांन कृपान कसी। मुमनो दुति दोझर गी निकसी॥छं १६०॥
तुटि पट्टन भो उपमाहि लह्यौ। सुपर्यौ जनु मेर सुरंग कह्यौ॥
नव जंपि नवै रस बीर नच्यौ। भमरावलि छंद सु चंद रच्यौ॥छं० १६१॥
नव नंचिय रुंडति मुंड हस्यौ। तिन ठौर विभछ्छ भयानक सो॥
परि लुथ्यिअ लुथ्थि तहां सरसं। सुभयौ रस शंकर रुद्र रसं[3]॥छं० १६२॥
रुधि सों गज राजति दांन झरै। कवि चंद तहां उपमां उचरै॥
छबि सो घन स्यांम सुरत्त परी। मनों विज्र बलै नदिट्ठ उतरी। छं०१६३॥
उपमा दुसरी रंग देषि कहै। जमुना जल में सरसत्ति बहै॥
घन अच्छरि अच्छ कटाच्छ करै। रस भेद सृंगार पनाह हरै॥छं०१६४॥
तिन जारन गाड़न को न बचै। रनमं[4] रस तीय सु मत्य नचै॥
धरकै घर काइर चित्त वियं। करुना रस केलि कुलान कियं॥छं० १६५॥
बर बीरन जुद्ध इतो संपज्यो। तिहि ठौर भयानक सो उपज्यो। छं०१६६॥

रावल की वीरता का वर्णन।

दूहा - अति प्राक्रम रावर सुभर। कूरंभ नरसिंघ जग्गि॥
रघुवंसी अति क्रम्म गुर। कथ्थ करन कलि लग्गि॥छं० १६७॥

शाह का प्रबल पराक्रम करना। हिन्दू सेना का घबड़ाना।

गाहा — जब मचि रीठ अपारं। कि। अति क्रम्म जवनय साह॥
भर हर हिंदुअ भग्गं। कर धरि षग्ग धाय कूरभ॥ छं० १६८॥

रावल का क्रोध कर स्वयं सिंह के समान टूट पड़ना।

कवित्त - जबहि सेन चतुरंग। साहि अरि जंग आइ जुरि॥
तबहि राज रघुवंस। झुकित बर षग्ग अप्प गहि॥
हनिय मत्त गजराज। सिंघ कर मथ्थ सिघ्र[5] बहि॥
मनो बसत रंगरेज। मट्ट फुट्यौ सुरंग ढहि॥
दौरे मसंद किलकार करि। धुअ समान साहस धरै॥
बज्जे बदन असिवर सबर। सुकवि चंद कीरति करै॥छं० १६९॥

---

१. मो०—जांन। २. मो०-भवो।
३. मो०—हसं।४. ४. को० कृ०—संसर।
५. मो०—सिंघ।

दोनों सेनाओं का सन्मुख पन्थ होकर घोर युद्ध करना।

छं० विराज—

जुरे हिंदु मीरं बहे षग्ग तीरं। मुषें मार मारं बहे सूर सारं॥ छं० १७०॥
भिरे इअ भारं तुटे★ षग्ग तारं। अकथ्थं करार कहे देव पारं॥ छं० १७१॥
जुटे पंच षानं करक्के कमानं। रघूवंस रायं धरे षग्ग घायं॥ छं० १७२॥
नरं सिंघ रूपं जुरे नेक जूपं। महंमूद षानं रघूवंस रानं॥ छं० १७३॥
हयौ सेल मीरं पर्यो मध्य वीरं। कही फौज साहं वहे कछ्छवाहं॥छं०१७४॥
दुअं तीन षानं हयं तीहि यानं। बहे षग्ग झट्टं सुवा हिम घट्टं॥ छं० १७५॥
बहे धार धारं करै मार मारं। हुओ हुल्ल मीरं नयो नाग पीरं॥छं० १७६॥
सिरै तुट्टि तारं मिले षांन सारं। अनुज्जं अपार ···· ···॥ छं० १७७॥
बहावंत घायं मनो वृष्व बायं। गए सूर भेदं बरी अच्छ मेदं॥ छं० १७८॥
दुअं फौज राजं जु साहाब गाजं। रहे दोस सामं करै सामि कामं॥छं०१७९॥
करे देव साषी सबै किति भाषी।·····················॥ छं० १८०॥

रावल के क्रोध कर लड़ने का वर्णन।

कवित्त—हुं तत्तो रघुवंस। भीर भंजन बहुआनिय॥
भयो दुलह तिन बेर। बरन बरनीं सुरतानिय॥
बीर मत्र उच्चार। लोह अछ्छित उछ्छारै॥
मिलि अछ्छरि करि गांन। लोन गिद्धनि उत्तारै॥
पुज्जंत[1] कलस धपि धवल सिर। कलह केलि भावरि फिरहि॥
मंडप्प षेत मांनिनि मुगल।सस्त्र कटाछ मु मुकि करहि॥छं०१८१॥

युद्ध की शोभा का वर्णन।

छंद त्रोटक—

दोउ दीन मु दुंदुभि लोह मिले[2]। अंग अंग करक्कत[3] जग पिले॥
सहनाइ नफेरिय नेंक बजं। मु मनों घट भद्दव माम गजं॥ छं० १८२॥
घन टोप मु रम्मिय तेज पुले। जनु पत्तिय त्रग्ग हुलेक मिले॥
घन पाइक पत्ति झनक्कत यो। मनो मोर कला करि नाचत यो॥ छं०१८३॥
धुंधुरी दिस दिस्स★ मवंग दिमा। दिशि पीत मु पत्तिय अद्ध निसा॥
गज बंधि सनंन चमक्कनि यों। मुमनो लगि ऊक परब्बत ज्यों॥छं० १८४॥

*यह पंक्ति मो०-प्रति मे नहीं है।

१. मो०-पूजत।

२. मो०-मिले।   ३. कु०-अरक्कत।

★ को०-ए०-प्रति में "दिसि जीतिय मीति" पाठ है।

किरवान कढंत कला दुमरी । सुमनों झर होरिय सी पसरी ॥
कटिकंध[1] कमंधन छुट्टि जुरी । मनों बीज कला छय छुटि परी ॥ छं० १८५ ॥
असवार सु पष्षर कढ्ढि तबै । सुमनों घर बटत[2] बधव है ।
करि फुट्टि बगत्तर रत्त रयो । मनु जावक मैं जल बटत ज्यो । छं० १८६ ॥
भभकंत भसुंडन हंड परी । बढि पावक ज्वाल मनो निकरी ॥
दुहु बीच भसुडन देव लसै । मनों बाल गनेस हि पूजि हसै ॥ छं० १८७ ॥
सिर फूटत भेजिय उड्डि चली । सु मनो दधि मट्ट उपट्टि हली ॥
तरफै घन घंटन घट्ट सुधं । सु फिरं जल मुक्कय मीन उध ॥ छं० १८८ ॥
गज उप्पर ढाल गिरं बर तें । सु गिरें गिरि केलि मनो जरतें ॥
गिरि केलि कमंधन षंत षरे । मनो भेष पिसाचन साच करे ॥ छं० १८९ ॥
† बढि बढ्ढि घन घट सीस जरं । जनु बद्दल बद्दल बीज अरे ॥
जु सनाहन घाइ सुभै तन मे । झर होरिका सी प्रगटी घनमे ॥ छं० १९० ॥
चवमठ्ठियों तारिय दै किलकी । सु नचे जनु गोपिय पेम छकी ॥
घन घाव मु बिद्दल यो घुरकै । मनो बोलि कबूतर द्वै सुरकै ॥ छं० १९१ ॥
दुनिय उपमा कविता सुर कै । मनो पूर नदी हय ज्यो फुरकै ॥
तर वारनि तेज परै तरसी । घन घुम्महि मध्य मनो झरमी ॥ छं० १९२ ॥
तिन उप्पर पषिय बंधिय पति । मवो षह इद्र धनकिय पति ॥
पिलवान हलै करि पील गिरै । कलसा मनो देवल के विहरै ॥ छं० १९३ ॥
घन छिछ उपंम करै सुरपै । मनो मेघ प्रवालनि कै वरषै ॥
घन नाइ रही घन घुघ्घग्गिय । सु नचै मनो बालक विरलरिय ॥ छं० १९४ ॥
इक सूरह की उपमा बरनों । दर मध्य गरज्जत सिंघ मनो ॥
सुर तीन हजार मु लोह मिले । तिन मे दस तीन कमध षिलें ॥ छं० १९५ ॥
दस रावर है वर षेत चढ्यो । टुक की टुकरा नव टूक बढ्यो ॥
दोइ दीन रहै इतनै उनमान । मनो तारक प्रात विचद समान ॥ छं० १९६ ॥

रावल का शत्रु सेना को इतना काटकर गिराना कि सुलतान और उसके सेनानियों का घबड़ा जाना ।

कविन्त दसहै बर कटि ममर । छोरि गज गाह हथ्थ लिय ॥
छिछ श्रोन सब अंग । पुहप जनु वृष्टि देव किय ॥
किल किंचित रस भर्यो । लुथ्थि पर लथ्थि अहुट्टिय ॥
सीस हक्कि धर जुट्टि । छुट्टि अरियन फिर जुट्टिय ॥

---

१. क०-को०-ए०-बंध ।
२ मो०-' दधव बंटत'' ।
† ये दोनो पक्तियां मो०-प्रति मे नही है ।
३. ए०-बद्दिल ।
४. ए०-को०-प्रान ।

बिड्डर्‌यौ देषि सुरतांन मन । सेन सब्ब मन बिड्डुर्‌यौ ॥
अटि हार कोइ पुच्छै नही । बल अभूत आतम कर्‌यौ ॥छं०१९७॥

पृथ्वीराज का अपनी कमान संभाल कर शत्रुओं का नाश करना ।

कवित्त तब पृथिराज नरिंद । साह सम्हौ गज साहिय ॥
पच बान कम्मान । साहि गोरी अभि बाहिय ॥
सरकि सेन सब धरकि । पञ्च जगञ्ज भए ठड्डे ॥
पथ्थ जेम भारथ्थ । कृष्ण सारथ सम ठड्डे ॥
बर करकि करकि कमान कर । पंच तेज छुट्यौ सबल ॥
नट डोरि जानि गड्डुह चड्यौ।धुधिर कोरि मडी तिलक ॥छं०१९८॥

सुलतान का अपनी सेना को ललकारना कि प्राण के लोभ से जिसको भागना हो सो भाग जाओ मैं तो यहीं प्राण दूंगा ।

कुंडलिया तब जपै सुरतान अप । जीवन जाइ सु जाउ ॥
हूं जीवत रन रुक्किहो । मो मति इहै सुभाउ ॥
मो मति इहै सुभाउ । साहि निग्घन बल एही ॥
नर नारी घन छांह । तूल अग्गै जिय देही ॥
बीज छटा जिम प्रान । नई काया मिल ढुंपै ॥
ग्रह लोभी ग्रह जाउ । साहि आलम इम जपै ॥ छं० १९९ ॥

सब लोगों का सुलतान की बात सुन बड़ाई करना ।

कवित्त - सुबर बीर गजनेस । अंग चौरंग बात सुनि ॥
राज रह दिल्ली विचार । नर नाग देव मुनि ॥
तुम गज्जन वै साह । दाव दिज्जै नहि दुज्जन ॥
जम आजम भै मरन । जद्दु बंधै सज्जन इन ॥
दिसि अदिसि और दुष सुष्य गति । ए सरीर लग्गा रहै ॥
उच नीच चंगत चक्र गति । पति बिपत्ति जिय सब सहै॥छं०२००॥

दूहा - का काया मायानिका । का ग्रहनी ग्रह कोन ॥
अप्पन अंषिय मिहवर्नै । जो देषियें सुलोन ॥ छं० २०१ ॥

सुलतान का तातार खां से कहना कि संसार में सब स्वार्थी हैं मरने पर कोई किसी के काम नहीं आते ।

कवित्त - सुनहि षांन ततार । अप्प स्वारथ सब लग्गे ॥
पसु पषी बर जिते । तत्त सोइ तत मग्गे ॥

---

१. ए०-मन ।
२. मो०-तलक ।

त्रियं बंध सेवक सुमंत । तन पें तन चाहैं ॥
सुर नर गनधर और । जग्य जाग अवगाहै ॥
आचेत अवर परबसि परे । भयन विन मरदंग कह ॥
जम हथ्थ जीव पंजर परें । पच मलाकह तुछ्छ मह ॥छं० २०२॥

दूहा जमर काल मो व्याल भ्रम । पंजर तुट्टन नेम ॥
षां ततार अरदास मुनि । मो आलम मति एम ॥ छं० २०३॥

शाह का कहना कि सच्चा सेवक, मित्र, स्त्री वही है जो स्वामी के गाढ़े समय मुंह न मोड़े ।

कवित्त सो सेवक सुनि स्वामि । स्वाम संकटैं छुड़ावैं ।
★सो सु मित्र अप्पनो । चित्र मित्तं न दुरावै ॥
★सो बंधव अप्पनो । दमा अवदमा न कथ्थै ॥
सोइ त्रिया अप्पनी । आस मुक्कै असु मथ्थै ॥
मति मोइ जोग पग उप्पजैं । तत्त मोइ ततह मिलै ॥
हम परत भिरत सुरतान सुनि। गज्जन भै गज्जन वलै। छं०२०४॥

सुलतान की सेना का फिर तमक कर लौट पड़ना और लड़ाई करना ।

कवित्त तमकि तेज गोरी । नरिंद चित डोलें वरो माह्यौं ॥
अधम भृत्त बिन अश्व । पृथ्थि गोरी न ससाह्यौ ॥
सुवर बीर सुरतान । सेन चहुआंन ढँढोरिय ॥
पगी जांनि पारव्व । जेम दरियाव हिलोरिय ॥
पछ्छिलो वलन सुरतान दिषि । सिघ लोक अविलरकयो ॥
मुरि गयो सेन सुरतान को । छत्र सीन तब संषयो ॥छं० २०५॥

पांच खां और पांच खवासों का घोर युद्ध मचाना ।

कवित्त पंच षान सुरतान । पच षावास सु चढ्ढिय ॥
पासवान सुरतान । पास बाजू दोइ ठढ्ढिय ॥
रन रुंध्यो सुरतान । सेन चहुआन ढँढोरिय ॥
मनु पलट्यो नट भेस । बीर करुना रस सज्जिय ॥
भर भीर तीर छुट्टिय दिषिय । तब सु ओट आलम गहिय ॥
ततार षांन षुरसान षां । मंत मडि सब दिषि कहिय ॥छं० २०६॥

कवित्त -जब सुषान षावास । भरर लग्गिय भय तप्पन ॥
बहिय सार सुष मार । छंडि गोरिय बल अप्पन ॥
लाल डंड सिर छत्र । देषि सुरतान साहि पर ॥
तब दौरे भर सुभर । हले हल हल्ल धराधर ॥

---

१. मो०-मीचतें । २. ए०-कृ०-ओल ।

बिचलिय सुफौज सुरतान लषि । तब छुट्टिय षर धीर सचि ॥
षानह सुपंच षावास भिरि ।सिर पर आवघ रीठ मचि॥छं०२०७॥

कवित्त – इत सुषान षावास । उतह सामंत सिघ भर ॥
रिस रिन मत्ती रीठ । तुट्टि ताइय मसंद घर ॥
गह गहंत उच्चार । कही राजेंद्र राज गुर ॥
तबह षांन रिस ग्रब्ब । हथ्थ बाहंत हूंस धर ॥
जै जै सुसद्द जुग्गिनि करहि । कर षप्पर उनमंत मत ॥
दुअ लरे दीन वल स्वांम कें । घुरत त्रंब त्रंबान ॥ छं० २०८ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला हिंदु मेछ्छंभरी । ताल वज्जे हरी ॥
घाय घायं घुरी । मत्त छक्के परी ॥ छं० २०९ ॥
साहि साहाबरी । षान झुझ्झे परी ॥
राज रावल्लरी । कंध्र कंधे धरी ॥ छं० २१० ॥
सीत तुट्टे तुरी । डक्क नद्द करी ॥
ईस सीसं जुरी । नचि नारद्दरी ॥ छं० २११ ॥
थेइ थेई धरी । गिद्ध सिद्ध करी ॥
जस्स जंगल्लरी । षान षावासरी ॥ छं० २१२ ॥
जंग जुद्धं भरी । भीर राजं परी ॥
मार मारुच्चरी । हिंदु सामंतरी ॥ छं० २१३ ॥
हल्ल हल्लं धरी । मश्र इहं मुरी ॥
फौज पिछ्छी फिरी । राज राजंगरी ॥ छं० २१४ ॥
धीर छुट्टे धरी । वोलि रावल्लरी ॥
हनो मीरभ्ररी । अभ्भ छडे परी ॥ २१५ ॥
हाय हाय सुरी । बढ्ढिय बब्बरी ॥
काल दिट्ठं सुरी । मद्द घट्टं करी ॥ छं० २१६ ॥
दिष्षि राजंतरी । छंडि हूंसं हरी ॥
कंक बंकं करी । मीरषांनू नरी ॥ छं० २१७ ॥
ढा [illegible] षानं ढरी । अप्प ढोरें अरी ॥
कढ्ढि कीरं मरी । बाढि ऋषां नरी ॥ छं० २१८ ॥
सेस बिच्छेदरी । रंभ थंभं ढरी ॥
देषि दाहिम्मरी । पीप मा निट्ठुरी ॥ छं० २१९ ॥
अल्ह सारो सरी । दूर राजं बरी ॥
देषि लोहं अरी । षग्ग षग्गं भरी ॥ छं० २२० ॥

जुद्ध भूतं करी । काम सामंतरी ॥
मीर पच्छी परी । बढ्ढि हंसे सुरी ॥ छं० २२१ ॥
भाल भल्ले सुरी । राज कित्तं करी ॥
अट्ठ षानं गिरी । हूअ रावल्लरी ॥ छं० २२२ ॥
और सब्बं सरी । षांन ढाहे धरी ॥
कित्ति चंदं करी । नाम ले अच्छरी ॥ छं० २२३ ॥
दीह दस्सं बरी । सेष सेषं परी ॥
संक मुच्छं मुरी । भान षानं परी ॥ छं० २२४ ॥
भेद चल्ले सुरी । हूर सें अंबरी ॥
बिंद ढुढ्ढै फिरी । जैत राजंगिरी ॥ छं० २२५ ॥
कित्ति देवं करी । फौज हल्लै धुरी ॥
चल्ल विच्चल्लरी । कुस्स कुस्मं मगी ॥ छं० २२६ ॥
.... । देव नचे षरी ॥ २२७ ॥

कन्ह का खुरासान खां को मारना ।

छंद मोतीदाम - पर्यौ जहाँ सेन मुरावर मार । मनों मदमत्त कँठीर गुंजार॥
नयौ सिर नाग सुमंडिय जंग । घुरें मुर जोरय[1] त्रंबक संग ॥ छं० २२८ ॥
वहै करि वार सु सग्गिय सूर । परे पर नार अमूर पनूर ॥
गही बर सिद्ध रु सूर समंत । भयौ जनु आनि कै ईसग अंत ॥ छं० २२९ ॥
नचै दय तारिय चौसठि नारि । बरें वर सूरय देय धमारि ॥
मिले सम कन्ह अनी षुरसान । वकै दुह ईसह आन समान ॥ छं० २३० ॥
दुअं बर धारिय संग गुमांन । हए हिय कन्ह सुषान उगांन ॥
पर्यौ षुरसान सु बंधव नैन । बढी अनि देषि प्रथी पनि जेत ॥ छं० २३१ ॥

खुरासान खां के गिरते हिन्दुओं की सेना का फिर तेज होना ।

दूहा परे षेत षुरसान षा । ढहि घन घाय अचेत ॥
फिरि दल हिंदू जोर हुअ । बजि वरताई षेत ॥ छं० २३२ ॥

पृथ्वीराज का ललकारना कि सुलतान जाने न पावै इसको पकड़ो ।

सब सरदारों का टूट पड़ना ।

छंद मोतीदाम मिले बर हिंदु तुरक्क सुतार।कटक्कट वज्जिय लोह करार॥
उडै बर षग्ग न टूक निनार । मनो छुटि सूर किरन्न प्रहार ॥ छं० २३३ ॥
कहै[2] बर छुट्टि सुबोल उचार । जपै उर राम कहै मुष मार ॥
भिरें भर मीर सु सामंत सुद्ध[3] । कहै कवि कथ्थ सु अंषिन लद्ध ॥छं० २३४॥

१. मो०—जोरस् । २. मो०—बहै । ३. मो०—शुद्ध ।

बहै स्वर[1] संग दोऊन अपार। ढहै बर मीर सुअंग अगार ॥
चंपे दल साहि जके चहुआंन। गह्यो सुरतान हनो षग पान ॥ छं० २३५ ॥
फुले मनो साइप ध्रम्म सुरत्त। बढयो मन साहि गहंन सुवत्त ॥
चवै चहुआन अहो वर सूर। करो सब मीर षरग्गय चूरि ॥ छं० २३६ ॥
तपे गहि राज सु संग त्रिभाग। छुटे घर मीर सु धीरज नाग ॥
चवै मुष मार सुचावंड राइ। दलों सुरतान करों इक घाइ ॥ छं० २३७ ॥
सुने बलिभद्रय पीप सु अल्ह। नरां सिर निठुर रष्षन गल्ह ॥
चंपे चव सामंत धाइ परेस। बहै बर सेल कियो इह भेस ॥ छं० २३८ ॥
लगी बर सेल कमद्धं निसास। फुले मधु[3] माधुअ केसु पलास ॥
कटे बर षग्ग कमद्ध निसार। तुटै वर देवल अंड अधार ॥ छं० २३९ ॥
हके बर सामंत जुद्ध अनुद्ध। परे असि टेकत उठ्ठि कमंध ॥
चले बर नालय रुद्धि प्रनाल। नचै वर सूर अपच्छर माल ॥ छं० २४० ॥
छुट्यो घर धीरज मीर अभंग। बढ़ी बर जैत सु दिष्षिय जंग ॥
फटी बर फौज अनंत्रिय जात। अघाइय गिद्ध रु सिद्ध सुमात ॥ छं० २४१ ॥
नचै बर नारद बीर निसान। थेई थेइ कट्टन वे थिरतान ॥
रिसै[4] अति ताइ तुनार मुढांन। मिलें मुहु जोर हुए मरदान ॥ छं० २४२ ॥
हुए हिय नेज ततार सुतंन। पर्यो घर मुच्छि कह्यो ध्रनि धंनि ॥
करै मुष किित्ति नये कुममंन। हली वर फौजय साहि मुनंन ॥ छं० २४३ ॥
ढहै बर मीर सु साहिज मंन। .... ॥ छं० २४४ ॥

घोर युद्ध होना, शाह और पृथ्वीराज का सम्मुख युद्ध।

दूहा—अति संकर वर जुद्ध हुअ। इत गजन उत माहि ॥
दोऊ नैंन अंकुरि परे। बजि श्रीग रम ताहि ॥ छं० २४५ ॥

शहाबुद्दीन का तलवार से और पृथ्वीराज का कमान से लड़ना।

उअ रुप आइ सहावदी। इय रुप आइय राज ॥
इय कर पोले षग्ग बर। उअ कमान कर साज ॥ छं० २४६ ॥

दोनों नरेशों का युद्ध वर्णन।

कवित—जबहि साह आलम्म। मुक्कि[5] कम्मान अप्पगहि ॥
तबहि राज प्रथिराज। तेग षक्करिय अण रहि ॥
वहु बरषत बर तीर। षचि वरषत सार ढहि ॥
हहै तेज षग झमहि। करी तुट्टे कमंध बहि ॥

१. ए-कृ०-को०-बर।　　२. ए०-कृ०-को-ढहै बर।
३. मो०-मनु माधव।　　४. मो०-रसै।
५. मो०-मुकित।

आलम्म राज दुअ जुद्ध हुअ । नह दिष्यो दानव ह सुर ॥
बर दाय चंद इम उच्चरै । करत किति गैंनह अमर ॥ छं०२४७ ॥

घोर युद्ध वर्णन । शाह की सेना का भागना ।

छंद त्रिभंगी —पढ़ मंदह रतनं[1] अहुह रतनं[2] पुनि वसु हरनं रस रहनं ॥
त्रभंगी छंदं पढ़ सु चंदं गुन वहि दंदं गुन सोई ।
अंतें गुर सोहै महि लय मोहै सिद्ध समोहै यह होई ।
विज्जू वर षग्गं असि मर लग्गं भिरि जग्ग रजि रंघं ॥ छं० २४८ ॥
बज्जें रिन तालं माह्रो मालं षग्ग सु षालं भिरि चालं ॥
राजा प्रथिराजं असवर झालं साहि सु साजं भिरि भाजं ।
किरवान रुकंतं सजि बलवंतं भिरि भय अंतं कलमंतं ।
षप्पर अधिकारी चौसट्ठि नारी देदें तारी किलकारी ॥ छं० २४९ ॥
उक ईसर नद्दं नचि उन मद्दं रजि रज सद्दं जुरि जंगं ।
अदभुत रस अंग षग्ग उनंग सार सुभंगं परि रंगं ॥
सामंतं सूरं चढ़ि विम्रूरं बजि रन तूरं अमि चूरं ।
तुट्टैं धर मीरं साह गुहीरं गजि गंभीरं भिरि बीरं ॥ छं० २५० ॥
नचि मीर कमंधं हसैं तमिद्धं भिरि भिरि जुद्धं षग षद्धं ॥
नंषैं हय हंसं तेज तरंसं सहित मरंसं करिगंमं ॥
बुल्लिय सुबिहानं हिंदुअ रानं कढ्ढि कृपानं गहि पानं ॥
झारे षग झट्टं विज्जल छुट्टं वाहि बिकट्टं नचि नट्टं ॥ छं० २५१ ॥
हनि हनि मामंतं जानि जुगंतं भिरि भर जंतं अरि अंतं ।
चच्चर चहुआनं गह गह वानं साहि सुनानं बलगानं ॥
छंडे सिर छत्रं साहि सु तत्रं गोधीरत्रं मनमंतं ॥
बहरी तजि बाजं रुहि गजराजं लरि षग साज कह काजं ॥ छं० २५२ ॥
तन्ने षरि राजं साहि सु साजं जे जुग काज रस साजं ॥
आलम अरु राजं दुअ दे हाजं[3] हनि हनि बाजं भिर वाजं ॥
दिषवी तहां राजं तजि गज राज हैंवर साजं गुत गाजं ॥
गहि कर कम्मानं तीर सुतानं लगि असमानं बहि वानं ॥ छं० २५३ ॥
त्रिस झल्लर टोपं राजन घोपं अगि वर जोप वहु कापं ॥
है हनि सु बिहानं कर अप्पानं ग्रहि सुरतानं बलवान ॥

---

१. ए०—कृ०—को०—हरणं ।
२. ए०—कृ०—को०—हरणं ।
३. मो०—राजं ।

उड़ि दिसि विसि भाजं मीर अकाजं पष्षि सहाजं गहि बाजं ॥
भग्गी बर फौजं साहि सु ओजं मन करि मौजं धरि धोजं ॥ छं० २५४ ॥

शाह की सेना का भागना और शाह का पकड़ा जाना ।

दूहा— भगी अनी षुरसान षां । छुट्टि मीर धर ध्रंम ॥
गह्यौ साह आलंम कर । बिचलि सुभर तजि श्रंम ॥ छं० २५५ ॥

सुलतान की सेना के भगेड़ का वर्णन ।

छंद भुजंगी - कुसादे कुसादे कहैं षानजादे ।
ग्रह्यौ हथ्थ गोरी अबैं साहि बादे ॥
लग्यौ चित्र कोटी सुरत्तांन साह्यौ ।
बजे वे निसानं सजित्यौ सराह्यौ ॥ छं० २५६ ॥
गयो भग्गि कूरंभ मरहट्ठ वाली ॥
गयो सत्त मुक्के नृपं वे पंचाली ॥
सबैं सेत बंधी रहे सेत मुक्के ।
गयो हब्बसी रोमसा ध्रंम चुक्के ॥ छं० २५७ ॥
बरा रीत गोरं भगे रुंड मुडं ।
पर्‌यो मज्झ सामंत गोवाल कुडं ॥
भग्यो कंनरी हस्त बे हस्त बान ॥
भग्यो बेदरी बल कदी छंडि पान ॥ छं० २५८ ॥
बदं वे कुसादी पर्‌यो कासमीर ।
मुलत्तान षट्टू छुट्यो हथ्थ तीर ॥
भग्यो प्रब्बती एलची झारषंडी ।
जिनै भुज्ज गोरी ग्रहं लाज मडी ॥ छं० २५९ ॥
भग्यो वे बंगाली करनाट वाली ।
भग्यो मागि सांद्रोह कूरंभ वाली ॥
पर्‌यो झूझि सा बद्दरी बद्द तीनो ।
जिनै ठेलि चहुआन सब सद्द दीनो ॥ छं० २६० ॥
बयं बिदु वाली भग्यो सथ्थ सब्बं ।
जिनै लोहची लग्गि अंची[1] न कब्बं ॥
मयं मेछ बहु मय मक्क राया ।
जितैं भागतं बार लाभी न काया ॥ छं० २६१ ॥
भग्यौ ब्रह्म जा पुत्र अच्ची कुचीरं ।
जिनैं भग्ग तैं भग्गि सुरतान धीरं ॥
भग्यो गज्ज पीरा ठठा वृत्त नाथं ।
भग्यो अग्गिवानं सु मानं सु साथं ॥ छं० २६२ ॥

---

1. मो०—अंचन ।

परयौ षांन आषूब संसार साषी।
जिने दीन बंदेन की लाज राषी॥ छं० २६३॥

रविवार चतुर्दशी को समरसिंह का यह युद्ध जीतना और धन निकालने को चलना।

कवित्त -गहि लीनौ सुरतान। समर लिन्नौ जसुभारी॥
चामर छत्र रषत्त। वषन लुट्टे रन रारी[1]॥
चित्र कोट चव रंग। साहि दिन्नौ चहुआनं॥
चतुर दसी रवि वार। वीर बज्जे परवानं॥
बुल्लयौ बीर कैंमास तब। धन कढ्ढन चल्लो समुह॥
आरब्ब राव भीरा सुबर। चंपि जु रष्यौ गंज उह[2]॥छं० २६४॥

पृथ्वीराज के सुलतान को पकड़ने पर जय जयकार होना।

दूहा -परे सेन गोरी गरुअ। गहि लीनौ सुरतान॥
सोमेसर नंदन सुकर। जे लिन्नो जय पान॥ छं० २६५॥

इस विजय पर चारों ओर आनन्द ध्वनि होना।

कवित्त गह्यौ साहि आलम्म। सुजस लीनो चहुआनं॥
षलक षान भग्गिय विहाल[3]। परे है गै धर थानं॥
मीर मसंद मसंद। कटे सामंद हथ्थ भर॥
दुअ राजन भर जुरे। सुबर लिन्नो सु अप्पकर॥
जै जै सबद्द जुग्गिनि करै। सीस गहै ईसन समथ॥
कवि कहै चंद भारथ्थ बर। करिय राज्य प्रारंभ कथ॥छं०२६६॥

राजगुरु का कहना कि अब विजय कर के एक बेर दिल्ली चलिए फिर मुहूर्त बदलकर आइएगा।

दूहा -करिय जैत राजन सु बर। चलिय लच्छि बर साज॥
तब विचार राजंन गुर। कही राज सिरताज॥ छं० २६७॥
तब रावर वर राज गुर। कहिय राज प्रथिराज॥
ढिल्ली दिसि ग्रह चल्लियै। फिरि सु मुहूरत साज॥ छं० २६८॥

राजा का पूछना कि पीछे लौटने को क्यों कहते हो इसका कारण कहो।

फिरि राजन इम उच्चरिय। सुनो अहुट्ठ नरिंद॥
का कारन पीछे फिरै। सो कारन कहि नंद॥ छं० २६९॥

१. मो०-नारी।
२. मो०-वह।
३. ना० कृ० को०-बिहाल।

उनका उत्तर देना कि इस विजय का उत्सव घर पर चलकर करना चाहिए।

तबै सिंघ फुनि उच्चरिय। अहो समंतन राज ॥
साह गह्यो तुअ जैत हुअ। ग्रह करि मंगल काज ॥ छं० २७० ॥

यहां राव दाहिम के साथ सेना चन्द भट्ट और सामंतों को छोड़कर शुभ काम कीजिए।

रहैं अप्प सेना सुसथ। अरु दाहिम्म सुराज ॥
भट्ट चंद सामंत सथ। करि सुभ मंगल काज[1] ॥ छं० २७१ ॥

वहां से लौट कर तब धन निकालना चाहिए।

जतन लच्छि बर किज्जियो। रहो सुभर अप्पानि ॥
जब रह फिर इरजिद इत। तब कढ्ढै लच्छि आनि[2] ॥ छं० २७२ ॥

पृथ्वीराज का दाहिम का मत मानकर दिल्ली चलना स्वीकार करना।

गाथा—कहि प्रथिराज नरिंदं। जु कछु कहै सिंघ दाहिमं ॥
सोइ थप्पिय द्रढ मंतं। चलि राजिंद ढिल्लि मग्गेयं[3] ॥ छं० २७३ ॥

फागुन सुदी तेरस को दिल्ली यात्रा करना।

ढिल्ली मग्ग सु चलयं। फागुन सुदि त्रयोदसी दिवसं ॥
क्रमे सु दस दिन मग्गं। अवरं रष्षि सब्ब भार तथ्थं ॥ छं० २७४ ॥

रावल के साथ दाहिम आदि सरदारों और सेना को छोड़कर और कुछ सामंतों और सेना को लेकर दिल्ली यात्रा करना।

दूहा—सकल सथ्थ रावर सुभर। अरु दाहिम गुर राज ॥
भट्ट चंद बर दाइ बर। आनि समत सकाज ॥ छं० २७५ ॥

कवित्त—बड़ सामंत सु काज। अचल पुंडीर मंत्र गुर ॥
राम रैंन पावार। चंद हाहुल्लि सेन वर ॥
रष्षि पास नृप सिंघ। रहै थह लच्छि सुभट्टं ॥
और सकल सब सथ्थ। जुद्ध जस लहन सुघट्टं ॥
ता मद्धि राज संबोधि थपि। सु गुर मंत्र बरदाइ थिर ॥
चढ़ि चले राज दिल्ली दिसा। लै जदू पज्जून भर ॥ छं० २७६ ॥

राव पज्जून, कन्ह आदि राजा के साथ चले।

दूहा—जाम देव पज्जून नर। वलि भद्र जैत अरु सिंग ॥
कन्ह काय चहुआन वर। चले राज गुर संग ॥ छं० २७७ ॥

---

1. मो० करि चल दिल्ली साज।
2. मो० प्रति में "जब आंऊ दिल्ली सुधी तब कढ्ढे लछिमान"।
3. ए० कृ० को—मग्गाइ।

शत्रु को जीत कर होलिका पूजन के निकट राजा चले।

अरिय जीति ग्रह दिसि चले। आइ निकट हूतास ॥
चलत पंथ राजन नें। पूजा करनहु जास ॥ छं० २७८ ॥

होलिका की पूजा विधि से करके शाह को लिए घर की ओर चले।

कवित्त -- निकट सुदिन हूतास। पूजि इन भंति राज नर ॥
चंदन कुमकुम अगर। नंषि श्रीफल अमष फर ॥
फिरि परदष्षिन राज। मांनि बर विप्र बेद धुर ॥
घुरै नद्द नीसांन। गांन नर तर्क नचैं बर ॥
ज्वारिय माल तृप्पय नृपति। अति सुदेव नइवेद जुत ॥
दिन बीच चले जोगिन पुरह। ग्रहिय मेछ सग्रहनि भति॥छं२७९॥

कुमार का पैंतल आध कोस आगे बढ़कर मिलना।

दूहा – ग्रहिय साहि ग्रेहं गवन। आइ मिले सुकुमार ॥
मधूसाह अध कोस पर। छंडि तुरिय पै पारि ॥ छं० २८० ॥

राजा का कुमार को सवार होने की आज्ञा देना।

चढन राज बर हुकुम दिय। रेत सुमनहु साज ॥
जैत हुई आनंद करि। ग्रह जित्तन सुभ काज ॥ छं० २८१ ॥

चैत बदी सप्तमी को महलों में पहुंचे।

गाथा - ग्रहन जित्त अरि ग्रहिय। चैत्र बदी सत्तमी दिवसं ॥
गुरुवारं सुभ जोग। राजा सपत्र धवल मज्झेनं ॥ छं० २८२ ॥

महल में सब स्त्रियों ने आकर निछावर किया।

आये राज सुधाम। गए ग्रह मद्धि माल सुभ तघ्यं ॥
बोलि आइ सब वाम। निवछावरं करि गई ग्रेहं ॥ २८३ ॥

स्त्रियां अपने अपने घर गईं। राजा ने विश्राम किया और वे नाना भोग विलास कर सुखी हुए।

गई ग्रेह ते त्रीय। राजन सुख विस्रमियं तथ्थं ॥
अति मादक उनमादं। करि सुष सॅन रमन रस क्रीड़ा ॥ छं० २८४ ॥

दूहा--क्रीड़ि वांम नृप रंग करि। नेह संपूरन काज ॥
दीय बचन रष्षन सुजन। डोली साह सुराज ॥ छं० २८५ ॥

शहाबुद्दीन की डोली मंगाकर उसे भोजन कराया और आज्ञा दी कि इन्हें सुख से रक्खा जाय।

डोली साह सहाब की। दोइ रकेब बर सथ्थ ॥
सो डोली कच दस असुर। करि हुकंम मर मथ्थ ॥ छं० २८६ ॥

दस आदम साहाब कज । रषि भोजन न्रप पास ।।
सुष सबाब तुम रष्षियो । रहै राज सुभ भास[1] ।। छं० २८७ ।।

शाह के पकड़े जाने और दिल्ली पहुंचने का समाचार पाकर उसके अनुचरों का आतुर होना।

सुनिय बत्त गज्जन पुरह । ग्रहत साह की घत्त ।।
अनुचर आतुर अति भयो । उर जानी अविगत्त ।। छं० २८८ ।।

एक वीर ने दौड़ आकर यह समाचार तातार खां को दिया।

डर जांनी अविगत्त जब । भजि आयो भट मझ्झि ।।
कहर हक्कि पानीय चढि । कहि ततार अग गुझ्झ ।। छं० २८९ ।।

ततार खां ने खत्री को तुरंत पत्र देकर दिल्ली भेजा कि आप बड़े भारी राजा हैं अब कृपा कर शाह को छोड़ दीजिए।

गाथा -सुनिय ततार सु तब्बं । रहनं तुछ दिल्लीपुर राजं ।।
षित्री आतुर पठयं । वेगं साहि दंड कज्जेनं ।। छं० २९० ।।

दूहा -तुम जाहु सु चहुआन प्रति । कहु सलाम सब सथ्थ ।।
तुम सु बढे हिं‍{न में । छुटै साहि सुभ बत्त ।। छं० २९२ ।।

खत्री का पांच सौ सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना।

षित्री चलि चहुआन पै । करिके सबन सलाम ।।
पंच सत्त असबार लै । कोस सत्त मुक्कांम ।। छं० २९३ ।।

खत्री शकुनों का विचार करता, बारह कोस नित्य चलता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा।

छंद पद्धरी - धर मग्ग चल्यो षत्रीस हिंदु । अति चित सुरतान बंद ।।
द्वादसह कोस प्रति चलै मग्ग । निज मंत्र इष्ट चित वन सु लग्ग ।।छं०२९४।।
अपसगुन सगुन चिनो विचार । दिषि बाम सिंघ दिष्षी दहार ।।
उल्लूक सबद दिय गिरह सीम । दाहिन सुपत्त मृग [illegible]गी ईस ।। छं० २ ५ ।।
मृतक रथी सनमुषह आइ । फुनि समुष ग्राम लग्गी स लाइ ।।
अति उअर षित्रि आनंद जग्ग । अ[illegible]नुग्गह चल्यो दिल्ली समग्ग ।। छं० २९६ ।।

खत्री लोरक का दिल्ली के पास पहुंचना।

कवित्त -तब षित्री लोरक्क । चले दिल्ली पुर मग्गं ।।
पंच सत्त असवार । उर सु चिंता मन भग्गं ।।
वामी देव श्रवंत । तार उछ्छव सिर उप्परि ।।
मृग समूह दाहिने । चल्ल्यो पहु पिंगी निक्करि ।।

---

1. ए०–कृ०–सास ।

बंदेव चित्त मन मत्त हुअ । चल्यो कूच पर कूच करि ॥
आए निकट्ट दिल्ली सु तट । मन चिंता अंदेस हरि ॥छं० २९७॥

लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में
ठहरना और वहीं भोजन करना ।

गाहा -मन चिंता अंदेहं । षित्री आइ दिल्ली मझेनं ॥
अहनि मिरह मे क्रमियं । आयं डाक चौकि लोरष्षं ॥छं० २९८॥
तहां उतरि लोरष्षं । बाग निरष्षि उत्तिमं छाहं ॥
भोजन करि बहु भंतं । आहारे अन्न तथ्याहं ॥छं० २९९॥

दो घड़ी दिन रहे दिल्ली में प्रवेश किया ।

दूहा दोइ घरी दिन पछ्छ रहि । चल्यो दिली पुर मांहि ॥
अति उज्जल वस्त्रंग वर । प्रावर षित्रि उछाह ॥छं० ३००॥

नगर में घुसते ही फूल की डाली लिए मालिन
मिली । यह शुभ शकुन हुआ ।

नैर प्रवेस सगुन्न हुअ । मालनि फूल उछंग ॥
लिए बंदि षित्री सुमन । मुषिक महुर सुभ नंग ॥छं० ३०१॥

खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुंचना ।

चलि षित्री दरबार मग । जहां राज प्रथिराज ॥
अवर सूर सामंत सुभ । बेठे सभा विराज ॥छं० ३०२॥

डयोढ़ी पर से समाचार भिजवाया कि तातार खां का भेजा वकील
आया है । राजा ने तुरंत साम्हने लाने की आज्ञा दी ।
लोरक ने दर्बार में आकर सलाम किया ।

कवित्त -गय षित्री दरबार । हार पालक सम अष्षिय ॥
कूरम केहरि कहों । साहि उवकील सुलष्षिय ॥
गय केहरि न्रप निकट । कह्यो गज्जन पुर [illegible]तं ॥
पठयो षान ततार । साह छंडावन बत्त ॥
नृप बोलि कह्यो हज्जूर तिहि । [illegible]का एकी मघ्य लिय ॥
सनमुष्ष आइ चहुवांन को । सीस नाइ तसलीम किय ॥३०[illegible]॥

सभा में बैठे सामंतों का वर्णन । राजा की आज्ञा से लोरक
का सलाम कर के बैठना ॥

कवित्त -सभा विराजत राज । आइ बैठे सुब्बर भर ॥
कन्ह काइ चहुवांन । जैत बलिभद्र सिंह नर ॥
जांम देव पज्जून । बड़े सामंत लज्जभर ॥
और सकल भर राज । बैठि तहां महुल रंग जुरि ॥

आए सुतांम लोरक्क तब । मिलि सलाम राजन करिय ॥
बैठन्न हुकुम राजांन किय । करि सलांम बैठो नरिय ॥छं० ३०४॥

लोरक ने तीन सलाम करके तातार खां की अर्जी राजा को दी ।

दूहा—तब षित्री प्रथिराज कों । करि सलांम तिय वार ॥
लिषि अरदास ततारषां । समपी बीर त्रिचार ॥छं० ३०५॥

मध्धु शाह प्रधान को पत्र दिया कि पढ़ो ।

मधू साह परधांन कर । दिय पत्री षर्त्रीस ॥
किय हुक्म्म बर राज नें । बंचे साह जगीस[1]॥ छं० ३०६॥

तत्तार खां की अर्जी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना ।

साटक— स्वस्ति श्री राजंग राजन बरं धर्म्माधि धर्म गुरं ॥
इंद्रप्रस्त सु इंद्र इंद्र समयं राजं गुरं वर्तते ॥
अरदासं तत्तार षांन लिषियं सुरतांन मोक्षं करं ॥
तुम बड्डु बड्डाइ राजन सुरं राजाधिपो राजनं ॥छं० ३०७॥

राजा ने अर्जी सुनकर हँस दिया और खत्री को विदा किया ।

दूहा—तब षित्री अरदास किय । बंचि सुनाइब[2] राज ॥
तब राजंन प्रसन्न हुअ । दई सीष यह काज ॥ छं० ३०८ ॥
उठि राजन दीने बहुरि । यह षित्री गय अप्प ॥
मन चिंता लग्गी घनी । राजन देषत तप्प ॥छं० ३०९॥

दूसरे दिन लोरक फिर दर्बार में आया ।

बहुरि सु आए दिन अवर । मिलि राजन किय बत्त ॥
सँमुप राजन उच्चरिय । मन सु अगोचर तत्त ॥छं० ३१०॥

लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह को छोड़ने की प्रार्थना करना । पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी नाम क्यों पड़ा ?

छंद पद्धरी- षत्रीस वंस थम अप्पि राज । चहुवांन वंस तुम हिंदुलाज ॥
चीतोर स्वांमि कै सभरेस । चालुक्क राज जिहि षग्ग षेस ॥छं० ३११॥
कमधज्ज मंगि तिहि व्याहि अप्प । जैचंद उरहि[3] दिय अनुज नप्प[4] ॥
कइ बार साहि बंधयो पांन । दीनो केवार जिहि जीव दांन ॥छं० ३१२॥

---

1. ए०—कृ०—को०—गुहीर ।
2. मो०—कृ०—को०—ए०—नर ।
3. को०—कृ०—ए०—तुअर ।
4. कृ०—ए०—नाथ ।

तब लोरक सम[1] पुछे नरेस। गोरी सु नांम किहि विधि कहेस ॥
सम राज अष्षि षत्री तिवार। नृप राज एह अद्भुत विचार ॥छं३१३॥

लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन बैठा, वह बड़ा कामी था। पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान न हुआ, तब शाह निज़ाम की टहल करने लगा।

कवित्त – बैठि पाट असुरांन। साह जल्लाल प्रमानं ॥
अनंत तेज षग ताप। अनंत दातार दिवानं ॥
पंच सत्त दस हरम। साह कामी तप भारी ॥
हमल हरम निज जांनि। *हनें कर असि बर नारी ॥
सुत ताप राज डरतें गहन। कांम पैर निसि माह मन ॥
सुरतांन षेर अग्गें धरिग। सेष निजांम सु हुअ प्रसन ॥छं० ३१४॥

शेख़ निजामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशिर्वाद दिया कि तुम्हें ऐसा प्रतापी बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं को जीत दिल्ली पर तपैगा।

प्रसंन निजांम सुसेष[2]। लेष सांई इमलेषं ॥
अहो साह जल्लाल। आलि तुम्ह समथ सदष्षं ॥
महा प्रबल तप तीन। दीन हिं[3] दल[3] आलम ॥
धरि करिहै निज पांन। जोर जुग्गिनि पुर जालम ॥
अज्जाब नारि तिहि पाप तें। अमुध कित्ति दुनियां रहै ॥
दस दिसा दप्प असुरांन दल। लिहि लिलाट तित्तो लहै ॥ छं० ३१५ ॥

शाह घर आया। चित्त में चिन्ता हुई कि जो यह लड़का ऐसा प्रतापी होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा। इतने ही में एक बेगम को गर्भ रहने का समाचार मिला। शाह ने सिर ठोका और उस बेगम को निकाल दिया। पांच वर्ष बीते शाह मर गया, वजीर लोग सोच में पड़े किसे गद्दी पर बैठावें। एक शेख़ ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर बालक को दिखलाया।

छंद विभष्षरी—आयो निज सुरतानह गेहं। वेन निजाम उवर दुष लेहं ॥
जौं मुझ सुत ह्वैहै बलकारी। तो मुझ मारि लेइ धर सारी ॥ छं० ३१६ ॥

---

१. मो०—समह।

* मो०—प्रति में "हनें कर बर कर नारी" पाठ है।

२. लो०—प्रसनि आनि हंसेष।

३. ए०—कृ०—को०—अकि।

तितें नारि इक प्रभहु धरयो। दासी कांन साह अनुसरयो ।।
ततषिन साहु सीस हनि नारी। समहु गरभ धर मंड[1] सुधारी ।।छं०३१७।।
बरष पंच अनि ऊपर बीतं। हुअं साहु सुरतान सुअतं ।।
सबै षांन मिलि मंत्र विचारं। कवन सीस अब छत्र सुधारं ।।छं० ३१८।।
सेष एक मधि गोर निवासी। तिहि अद्भुत रस दिष्षि प्रकासी ।।
अष्षिय आइ जहां मिलि षानं। कुदरति[2] कथा एक परमानं ।।छं०३१९।।
झूठी होइ तो सजा लहीजै। सच्ची हुअै निवाजस कीजै ।।
सबै षांन मिलि पूछै बत्तं। कहिवे सेष सु कथा कुदरत्तं ।। छं० ३२०।।
बीबी फतेसाहु की घरनी। कुदरति गोर मद्धि एक धरनी ।।
गोरि मद्धि इक चेलक वासं। देष सरूप कोटि रवि भासं ।। छं० ३२१ ।।
सबै षांन मधि गोर सिधाए। करि अंगुरी तिहि सेष दिषाए ।।छं० ३२२।।

उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया।

दूहा –गोरि दिखाई षांन तिहि। ततषिन भंजी पाज ।।
निकस्यो सूरति सरस को। जोति भांन महराज ।। छं० ३२३ ।।

ज्योतिषी को बुलाकर जन्मपत्र बनवाया उसने कहा कि यह जलालुद्दीन से भी बढ़कर प्रतापी होगा। इस की जाति गोरी है। यह हिन्दुस्तान पर राज्य करेगा।

कवित्त –जोति रूप महराज। साहतें प्रगट सवायो ।।
षांना षांन जिहान। बेगि निज्जूमि बुलायो ।।
लिषिय जनम तिय लेष। सेष तत षिन इम अष्षी ।।
नाम साह साहाब। जाति गोरी तिहि दष्षी ।।
बहुतेज तषत तर जग्गि है। धरा हिंद सम लग्गि है।
दस दिसा साह दोही फिरै। घन बीरा रस भुग्गि है ।।छं० ३२४।।

लोरक ने शाह की पूर्व कथा इस प्रकार कह सुनाई।

दूहा –जाते बहु रिन भग्गि है। फुनि तिहि गहि है पांनि ।।
पुब्ब कथा पिथ्री कहै। सुनहु राज चहुआंन ।। छं० ३२५ ।।

पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान श्रृङ्गारहार नाम का हाथी है उसको शाह बहुत चाहता है। उसको और तीस हजार उत्तम घोड़े दो तो शाह छूटे।

कवित्त –तब सुराज प्रथिराज। कहै पिथ्री सुनि बत्तं ।।
हम आलम गति कहैं। सोइ मानै करि सत्तं ।।

---

1. मो०–मंडहु।
2. ए०–कृ०–को०–कुद्दरति।

गज सु एक सिंघली । नाम शृंगारहार गज ॥
अति पीय साह साहाब । लखै निसि दिन आलम सुज ॥
अप्पौ सु मोहि वह डड करि । तीस सहस हय नेक बल ॥
छुट्टै जु साहि साहाब तब । हम तुम रहै सु प्रेम भल ॥छं०३२६॥

खत्री ने कहा कि जो आप मांगेंगे वही दूंगा पर शाह छूटना चाहिए।

दूहा - तब पित्री इम उच्चरै । सुनो राज प्रथुराज ॥
जो मंगो सो देउ तुम । छुटै साहि बर आज ॥ छं० ३२७ ॥

पत्र लिखकर दूत को दिया कि जो इकरार हुआ है वह भेजो।

थप्पि वत्त इह पत्र लिषि । दियो दूत के हथ्थ ॥
जो कछु कियो करार कर । सो पठवो तुम अथ्थ ॥ छं० ३२८ ॥

पत्र पाते तातार खां ने हाथी घोड़े भेज दिए जो दस दिन में रात दिन चलकर पहुंचे।

तब ततार षां मुक्कि दिय । रजत हयग्गय नंग ॥
अहि निस आतुर आइचर । उभय सु दस दिन संग ॥ छं० ३२९ ॥

दण्ड पाने पर सुलतान को छोड़ देना।

कवित्त दिय सु दंड सुरतान । गय सु इक्कति पंचह हय ॥
ऐराकी बर उंच । उभय रष्षै सु निरम्मय ॥
नाम पट्ट शृंगार । पट्ट रिति मद्द पट्ट झर ॥
अलि गुजत मकरंद । वाम भज्जंत अवर डर ॥
है सहस तीम अनि साज भल । दिय सु दड सुरतान तय ॥
मुक्यो सु राज प्रथिराज तब । चल्यौ साह गज्जन पुरय॥छं०३३०॥

सुलतान का गज़नी पहुंचकर अपने उमराओं से मिलना।

दूहा चल्यौ मेच्छ गज्जन पुरय । दै सुदड प्रति पिथ्थ ॥
मिलिय उम्मरा अप्पने । करिय बैर सम सथ्थ ॥ छं० ३३१ ॥

शाह के महल में आने पर तातार खां खुरासान खां का बड़ा आनन्द मनाना।

गयौ साहि आलम महल । करी बैर बर अप्प ॥
मिलि ततार षुरसांन षां । बड़ वषत्त मिलि तप्प ॥ छं० ३३२ ॥

पृथ्वीराज का शृंगारहार को सामने रखना। हाथी की बड़ाई और राजा की सवारी की शोभा का वर्णन।

कवित्त वह सु पट्ट शृंगार । मत्त गज राज पटा झर ॥
रहै नरिंद मुष अग्ग । रास रेसंम फंद पर ॥
जब राजन चढ़ि चलै । तबहि मुष अग्ग निरष्षै ॥

जे अनंत गज प्रबल । ते सु प्रमल सह घष्षै ।।
जब चढ़ै राज टामंक करि । तब अजब्ब सोभा लहै ।।
आतस चरित्त अदभूत लिषि । दुभ्र कपोल बूंदन बहै ।।छं० ३३३।।

हाथी के रूप और गुणों का वर्णन ।

कवित्त सत्त हथ्थ ऊरद्ध । हथ्थ नव देह लँबाइय ।।
दस हथ्थां परिमांन । पीठ छत्तं। गिर दाइय ।।
भद्र जात उतपंन । दुरट्ट हद पाट शृंगारं ।।
जो रावर कहि चंद । कोट गढ़ ढाहन वारं ।।
च्यालीस कोस चालंत मग । लियें लोह च्यालीस मन ।।
दिन प्रति गुलाल थानं करत । षंभारें डारंत घन★ ।। ३३४ ।।

सब सामंतों को साथ ले एक दिन सिकार के लिये राजा का जाना । वहां कन्ह चौहान का आना ।

एक सुदिन राजन्न । चढिव सिक्कार प्रपत्ते ।।
और सकल सामंत । जाइ सथ पच्छ मिलंते ।।
सत्त सहस असवार । मिले मुष राज सुरत्ते ।।
जांम देव पज्जून । मान मरदन मरदत्ते ।।
सिघह पवार सुभ सथ्थ तहँ । जैत राव वलिभद्र सम ।।
चहुआन कन्ह नर नाह वर । आतुर षरि आयेव श्रम ।।छं०३३५।।

गाथा —परि कर सकल सिकारं । लीने सब राजनं रार्जं ।।
अवर सूर सामंतं । धरियं साज अप्प सा काजं ।। छं० ३३६ ।।

एक अनुचर का आकर एक सूअर के निकलने का समाचार देना ।

दूहा तब प्रथिराज नारिंद प्रति । कही सु अनुचर एक ।।
सुभ वराह एकल प्रबल । कही पव रे सु बिवेक ।। छं० ३३७ ।।

राजा का आज्ञा देना कि उसे रोको भागने न पावे ।

तब प्रथिराज सु उच्चरिय । अरे सिकारी साज ।।
मति एकल बन जाइ भजि । करि रोकन को साज ।। छं० ३३८ ।।

चारों ओर से नाका रोक कर सूअर को खदेरना और उसके निकलने पर राजा का तीर मारना ।

कवित्त —एक दिसा कूकरह । एक दिसि मूलह धारिय ।।
एक दिसा पेदा अनंत । एक दिसि और प्रचारिय ।।
एक दिसा राजंग । एक दिसि अनि अनुचारिय ।।
एक दिसा सामंत । एक बहु भांतिय तारिय ।।

★ छन्द ३३४ मो० प्रति में नहीं है ।

[illegible] राजन करिय । हक्कि सोर उच्छारि भर ॥
निकसंत सु सूकर अप्प रह । हने तीर षंचे सु कर ॥ छं० ३३९ ॥

सूअर का मरना सरदार का राजा की बड़ाई करना ।

दूहा –लग्यो बांन बाराह उर । पर्‌यौ षेत धर मुच्छि ॥
मिले सकल सामंत तब । कही "बन धन" अच्छि ३४० ॥

बड़े आनन्द से राजा राज को लौटता था कि एक पारधी ने एक शेर निकलने का समाचार दिया ।

घन अनंद राजन भरिय । चल्यो राज चढ़ि बाज ॥
तब सु एक पारधि कही । नाहर घान सु राज ॥ छं० ३४१ ॥

राजा का आज्ञा देना कि बिना इसको मारे तो न चलेंगे ।

तब सुराज से मुष्ष कहि । सुनौ सबै प्रति सूर ॥
बिन सुघान अग्यार में । आन राज इंद नूर ॥ ३४२ ॥

एक नदी के किनारे वृषभ को मारकर सिंह खाता था राजा ने पारधी को आज्ञा दी कि तुम उसको हांको ।

कवित –नदि सु एक जल किंदु । तहं सु एकह सुभ कोहर ॥
बहु तर वर जल छीन । थान सोभंत मनोहर ॥
ता नीचै केहरी । हनिब इक वृषभ अहारै ॥
अति अरिष्ट आभूत । कोइन पग अग संचारै ॥
उच्चरै राज दिल्ली धनिय । पारद्धी हक्को तुमें ॥
बड़ सुभट आंन सोमेस की । बिन अग्या घातन रमैं ॥ छं०३४३ ॥

राजा का शृङ्गारहार गज पर चढ़कर सिंह को मारने चलना और सिंह को हंकारने की आज्ञा देना ।

कवित्त –तब सु राज प्रथिराज । पाट शृंगार मगि गज ॥
बड़ पष्षर[१] तन रज्जि । दंति कट्टा[२]र बंधि सज ॥
उभय पष्ष असवार । गिरद रष्षे करि राजन ॥
तीरंदाज अभूल मूल रष्षे करि राजन ॥
सें मुष्ष राज यों उच्चरे । हक्कारौ केहरि सकल ॥
सा वचन सुनन करि कूह भर । गज्ज सु केहरि अप्प बल ॥ छं३४४ ॥

कोलाहल सुन सिंह का क्रोधकर निकलना । राजा का तीर मारना और तीर का पार हो जाना । कूरम्भ का बढ़ कर तलवार से दो टूक कर डालना । सब का प्रशंसा करना ।

निसांनी –सुने गहग्गह केहरी उठ्‌यो हक्कारे ।
कंपि धरद्धर मेदिनी गल्हन गल्हारे ॥

---

१. मो०–परिकर । २. ए० कृ० को०–पत ।

कोइक काल अभूत कैं पचायन भारे।
गात सु दीरघ हथ्थ गुर जीहा जक झारे[1] ॥ छं० ३४५ ॥
नष तिष्षा गिर वज्र कै पुंछन तिष्षारे।
कंध सु जड्डा केहरी नेनां ज्यों तारे ॥
दिष्षौ मरद महावली कंधा उप्पारे।
गज्जत गज्जत आइया अरियन कें थारे ॥ छं० ३४६ ॥
सिंह सु सन्हा चल्लिया गजराज संभारे।
तव राजन गज चपिया हेंवर ठट टारे ॥
तीर सनंमुष नंषिया कोइ लग्गै न्यारे ॥
नेरां आयां जैत राव सिगनि उब्भारे ॥ छं० ३४७ ॥
छोड़े मोह सु हल्लिया नाहर ललकारे।
पारधि एकें चंपिया हथ्थल पछ्छारे ॥
राज कमान सु षचि कर तरीन तिष्षारे।
फूटि दुवा सूवार पार गल्लन जिब्भारे ॥ छं० ३४८ ॥
करिहै तत्ता कूरंभ झुकया असि झारे ॥
बाहे बब्बर वीचह्वैं द्वै टूक निनारे।
मनों सबन विच सुभ्भि थावहि तंतू सारे।
भल भल सब सेना कहै कूरंभ करारे ॥ छं० ३४९ ॥
धनि माता अरु धनि पिता पज्जून पचारे ॥ छं० ३५० ॥

राजा के शिकार करने पर बाजे बजने लगे।

दूहा--धन सिकार राजन करिय। हनि बराह अनि अट्ठ ॥
बाजे बज्जन सुबर[2] बजि। करि राजन पहु पट्ठ ॥ छं० ३५१ ॥

सब सरदारों में शिकार बँटवा दिया।

हनि सिकार वाराह बर। दीए सब सामंत ॥
बंटि सु दीनो अबर भर। करि उच्छाह अनंत ॥ छं० ३५२ ॥

राजा का दिल्ली लौटना, कवि चन्द का आकर फूलों की वर्षा करना।

कवित्त--तब प्रथिराज नरिंद। आइ दिल्ली पुर मझ्झं ॥
अप्प चित बर अवर। बैठि सिंहासन रज्जं ॥
अवर सूर सामंत। सकल सभ्भा भर मंडे ॥
तब सु चंद बरदाइ। आइ कुसुमावलि छंडे ॥
बैठे सु सबनि उच्चार करि। सुनिय गान गायन सकल ॥
दिल्लीय नैर दिल्लीय पति। करि अनंद दंडै सुषल ॥ छं०३५३ ॥

1. मो०--जीहा झक कारे। 2. मो०--सुरस।

राजा का गुरु से धन निकालने चलने का मुहूर्त पूछना।

दूहा—एक सुदिन देवंग सों। बोलिय राज नरिंद ॥
देउ मुहूरत दुज सु गुर। तिहि हम करैं अनंद ॥ छं० ३५४ ॥

राजगुरु का बैसाष सुदी तीज को मुहूर्त निकालना।

तब दुजराज सु उच्चरिय। सुनि सामंत सु नाथ ॥
सेत त्रतिज बैसाष दिन। सुभ दिन चलौ समाथ ॥ छं० ३५५ ॥
सुभ सँजोग अंतर घरी। कहत बचन देवग्गि ॥
सोइ सुदिन आनंद करि। चलौ सुराज गुनग्गि ॥ छं० ३५६ ॥

पृथ्वीराज का मुहूर्त पर धूमधाम से यात्रा करना।

कवित्त—चढिय राज सुभ जोग। करि सुमंगल अनद गुर[1] ॥
दै सु विप्र धन चंड। दीन अग्नि दान लोक कर ॥
बढि सामंत रु सूर। करै उच्छत्र उमत्त पर ॥
बजत नद्द नीसांन। चवै जै जया देव नर ॥
सैनह सु सथ्थ है पंत्र सय। नैर निकरि बाहिर चले ॥
मत्तह सुछक्क कुल्लाल घट। भरि बारन मै मत मिले ॥छं०३५७॥

एक वेश्या का शृङ्गार किए मिलना। राजा का शुभ शकुन मानना।

दूहा नैरनाइका एक चलि। तन आभ्रन्न अलंकि ॥
देखि न्रिपति रह सिर मिले। दुअ आनंद असंकि ॥ छं० ३५८ ॥

रात दिन कूच करते हुए राजा का चलना।

गज राजन द्वादस रहे। सुभ सँयोग सुभ साथ ॥
करिग कूछ उतिम प्रचर। पढि लमकर प्रथि माथ ॥ छं० ३५९ ॥
कूच कूच राजन चले। सथ सामत अभग ॥
पंच सत्त असवार सग। षडि गिल्लि सावँत सग ॥ छं० ३६० ॥

रावल और सामंतों तथा सेना का आगे बढ़कर राजा से मिलना।

दीह निसा चहुआंन चलि। आइ अचानक राज ॥
तब जानी जब दिष्ष नृप। मिलि सब सेन समाज ॥ छं० ३६१ ॥

सब सरदारों और रावल के मिलने से बड़ी प्रसन्नता का होना।

कवित्त—मिले सुभर अप्पान। जांनि आतुर चढि राजं ॥
हाहुलि रा पुंडीर। अचल चौहान सु साजं ॥

---

1. मो०—वर।

राम रैंन पावार । सु गुर गुरराज समाजं ।।
अवर सुभर सामंत । बहुत परिकर सम राजं ।।
इत्तने आइ सब बैठि मिलि । तब जानी जब दिष्षि नृप ।।
सुनि बेंनि षवरि आतुर तुरत । मन प्रमोद आनंद वप ।।छं०३६२।।

गाथा—आतुर षडि[1] राजानं । मिलियं सेना सु अप्प भर मग्गं ।।
हुअ आनंद अपारं । मिलियं सिंघ राज सामंतं ।। छं० ३६३ ।।

रावल से मिलकर राजा का प्रेम पूर्वक शिकार और शाह के दण्ड का समाचार कहना।

कवित्त—मिले राज वर सिंघ । प्रेम पूरन राजन भर ।।
घरी दोइ बैठे सुतथ । बत्त सिकार कहिय गुर ।।
अरु सु दंड पतिसाह । कृत्य कारन कहि राजन ।।
सुनि दाहिम्मरु चंद । सुभट[2] सब कही सभा जन ।।
चल राज सिंघ प्रति सब कही । अरु कढ्ढन लछी गहिय ।।
आयो सु राज पह अप्पनै । एक निसा राजन रहिय ।। छं० ३६४।।

शाह के पकड़ने और दण्ड देकर छोड़ने आदि का सविस्तार समाचार कहने पर बड़ा आनन्द उत्साह होना।

कवित्त—बजि नरिंद जय पत्त । बीय बज्जा घन बज्जै ।।
ताइप धर गजराज । राज दरबारन गज्जै ।।
चामर छत्र रषत्त । तषत लीनो सुरतानी ।।
उत्तर वै साहाब । गयो मुल्तानह पानी ।।
छंडयो छत्र सुरतांन सिर । राज छत्र सिर मंडयो ।।
बाजंत नद्द नीसान घन । बंधि साहु दंडि छंडयो ।। छं० ३६५ ।।

गाथा—जित्ते बज्जन बज्जं । सज्जे सेन सब सुभट्टायं ।।
सुद्धे षेत सु सूरं । उप्पारियं केक सुभट्टायं ।। छं० ३६६ ।।

राजा का गुरु से लक्ष्मी निकालने के विषय में अरिष्टों का प्रश्न करना।

कवित्त—वर बंध्यो सुरतान । लच्छि कढ्ढन क्रम दिसा ।।
भई षबरि कै मास । राज अग्गै होय लिसा ।।
सत्त मंत जोतिगी[3] । सब्ब जोतिग उच्चारै ।।
द्रिष्टि राहु ग्रह दुष्ट । मंत्र जंत्रहु वर टारै[4] ।।

1. ए० कृ० को०—षरि ।
2. ए०—सुनि ।
3. मो०जोतिषी ।
4. मो०—वर दारै ।

पुछयौ बीर चहुआंन तब । धन अरिष्ट गुन संभवै ॥
छछिन्न लछि अब बंचि विधि । तब बहि मंतत सुन्नवै ॥छं० ३६७ ।

धन निकालने के विषय में राजा ने कैमास को बुलाकर परामर्श किया । कैमास ने कहा कि मैं चौहानों की पूर्व कथा सब जानता हूँ, आप को देवी का वर है यह निश्चय जानिए । इस धन के निकालने के समय देव प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे ।

कवित--धन कड्ढन चहुआंन । बोलि कैमासह पुछिय ॥
बहु अद्भुत जम सुन्यो । आइ कड्ढन बर लच्छिय ॥
पुब्ब कथा चहुआंन । हौं जु आगम सब जानो ॥
देवी सुर बरदाई । कहौं सु उर अंतर आनो ॥
अद्भुत वत्त धन निक्करत । दोइ बीर दानव जगे ॥
सो सूर धीर धीरजज जिय । छंडिय सत्त काइर भगे ॥ छं० ३६८॥

पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू बन में चले, वहां एक पत्थर का शिलालेख कैमास को दिखलाई दिया ।

दूहा--सो षट्टू रहे थांन बर । द्रव्य अजै जै राज ॥
ता देषन चहुआन फिरि । गौ आषेट बिराज ॥ छं० ३६९ ॥

उस शिलालेख को देखकर सब प्रसन्न हुए और आशा बंधी ।

अति आदर आखेट नृप । पति पुर षट्टू पास ॥
पाहन एक पयाल में । सपेष्यो कैमास ॥ छं० ३७० ॥

कवित--संपेष्यो कैमास । आम बंधी मन संती ॥
ज्यौं बाल चंद निसि करक । मकर दिन मास वसंती ।
यों उद्दिम नृप सेव । सेव न्रप सेव सुमंनी ॥
ज्यां कन कलंक लगि अंक । सुबर बर वीर अमंती ॥
बच क्रम्म क्रोध अम्मर अरस । सुमन वाम ज्यौं वायबर ॥
लछिनह लछि अरु बचि बिच । हुबर हीर तन्नह सुनर ॥छं०३७१॥

कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा ।

दूहा--मंत्री न्रप सामंत सम । परी सु पाहल पास ॥
रास थंभ जनु ग्वाल लिखि । लगि बंचन कैमास ॥ छं० ३७२ ॥
ऊरध अंगुल सट त्रिसठ । तीर कहृत चवसट्ठि ॥
तहां अच्छर लिम्यो सु इम । सरमै द्रव्य अनिट्ठ ॥ छं० ३७३ ॥

भरि प्रसंक अंगुल भरिग। तिय अंगुल सत[1] अंक ॥
अंगुल अंगुल अंक में। एकादसो प्रसक ॥ छं० ३७४ ॥
भवतब्यह जो दुज लषै। घरी दीह पल मास ॥
हृदय क्रोध ज्यो द्रिग लयै। त्यों लष्षो कंमास ॥ छं० ३७५ ॥

उसे पढ़कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया।

बंचि उचारिं सुमंत तिहि। सरमय[2] मप्पिय बाह ॥
मंडि सु अंगुल विगुलह। द्रव्य निरत्तिय ताह ॥ छं० ३७६ ॥

दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे।

ग्रह सु दुष्ट दूरी करन। धन अरिष्ट नृप जोइ ॥
सोइ पूजा क्रत चित्र पति। तिन पर वज्जन होय ॥ छं० ३७७ ॥

चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जगजोति कह गए हैं कि पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर करके नागौर बन के धन को पावेंगे।

पहिले अरिषय चंद बर। कहिय व्यास जग जोति।
बीर सघन नागौर धन। ★ लभ अरिष्ट प्रथु होत ॥ छं० ३७[illegible] ॥

राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूं।

कवित्त— पुच्छि राजा गुर सिघ। मृ गुरु देवग्गि सत्ति पति ॥
धन अरिष्ट गुन होइ। तास मेटन रच्चौ मति ॥
सोइ सुभ काज सु राज। सुजस संग्रहौ सक्र भनि ॥
सुर सुकाज सुद्धरै। अप्प उद्धरन कज्ज गति ॥
बुल्लिय सु राज सम चित्र पति। तुम कारन पुज्जौ सुग्रह ॥
आरिष्ट सु गुन दूरी करन। या मंगल कज्जै सुग्रह ॥ छं० ३[illegible] ॥

तब चन्द को बुलाया, उसने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है।

गाथा— बुल्लिय भट्ट सु चंदं। हो राजन लछि कढ्ढिजं ॥
ज्यों बंध्यो निरमानं। मेटन कवन सोइ बिधि पत्र ॥ छं० ३८० ॥

---

1. मो०—छह। 2. मो०—सरमैं।

★ मो०-प्रति में "लभहि अरिष्ट होत" पाठ हो।

रात को सब सामंतों को रखकर रखवाली करो।

दूहा —थांन निरष्षिय राज बदि। अछिर द्रव्य सु अछ ॥
सुबर सूर सामंत मिलि। निसि सथ रष्षा अछ ॥ छं० ३८१ ॥

कुछ सरदार साथ रहे कुछ सोए। सवेरे वह स्थान खोदा गया, वहां एक पुरुष की मूर्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उनको कैमास ने पढ़ा।

कवित्त —सथ्थ तथ्थ निसि रष्षि। दीन वासन ग्रह थानह ॥
अबर सब्ब सामंत। कीन पारस विश्रामह ॥
रैनि मध्य त्रिन चंद। जगे सामंत स्वांमि तँह ॥
नीद सयल हुअ सथ्थ। षनिय सम द्रव्य राज यह ॥
षोदंत पुरष इक्कह प्रगट। सिलह धत्त सनह सुमय ॥
नहि सकय अंक लिष्यो मुरर। बंचि राज कैमास तथ ॥ छं०३८२॥

उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देखकर तुम न हँसो तो पाखान को देखो (?)

दूहा - सुनो सूर सामंत सब। सु हृदय सकल रजान ।।
जो न हसै मुहि बबर[1] कोइ। तो दिष्षो पाषान ।। छं० ३८३ ॥

सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे।

न्याय नांम कैमास तुझ। दुज दीनो सुद्धाइ ॥
ज्यों बेली फल भारतें। न्याइन मै सुब्भाइ ॥ छं० ३८४ ॥

शुभ मुहूर्त आते ही कमान की मूठ में ताली थी वह देखी (?)

भयो समय इमरत्तरी। ज्यों वय संधि सुबाल ॥
मध्य मुट्ठि कमांन की। रही रति तिन ताल ॥ छं० ३८५ ॥

उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे।

तब दिष्षो वह थांन तिन। सस्त्र अनी छिति भजि ॥
श्रप सु दिष्षो चव सबल। रहे दूरि सब भजि ॥ छं० ३८६ ॥

विक्रम संवत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीराज ने असंख्य धन पाया।

साक सुविक्रम इक्क दह। तीसरु अठ्ठ संपत्त ॥
चहुआनां न्रप सोम सुअ। लभ्भिम वित्त अनमित्त ॥ छं० ३८७ ॥

चन्द ने मन्त्र से कीलकर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे।

अप्प मंत्र बंध्यौं सु कवि। द्रब्य निरष्यो जाइ ॥
चिहुं दिसा जौ देखियै। दिष्ट न आवे ठाइ ॥ छं० ३८८ ॥

---

1. ए० कृ० को०—सकल।

कवित्त—दिष्षो जीयड प्रमांन । मध्य राजा रघुवंसिय ।।
वाहन सोसत पुत्त । तात अग्यान न गसिय ।।
दुष्ट देइ दिन मान । राज अग्या सुन मांनै ।।
सोक अग्गि तन दझ्झ । गयो सुरलोक नियांनै ।।
रचि मंत्र जंत्र पुत्तलि करिय । होम दिष्ट दानव जलिय ।।
चिंतै सु चित्त कविचंद तहं।करिय बात इह हम भलिय।।छं०२८९।

चन्द की बात मानकर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए ।

गाथा—गृह वरदाइय वत्तं । कड्डन लछि भयं क्रमयं ।।
तुछ अंतर भर सेनं । आए लछि ठाइयं राजं ।। छं० ३९० ।।

राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काटकर धन निकालो ।

दूहा—यह आए वर राज धर । दिय हुकम्म सिल कट्टि ।।
हुअ हुकम्म राजंन को । कढै सिला सिर कट्टि ।। छं० ३९१ ।।

शिला काटकर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी कांपने लगी ।

कट्टि सीस सिल कढ्ढि करि । दियो बचन षोदान ।।
तब सु कंपि भअ धर धरिय । हांक सुनी न्रप कान ।। छं० ३९२ ।।

शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊंचा खोदा तब खजाने का मुंह खुल गया—।

कवित्त—सस्त्र अनी छिति षनी । सेन सुत्तो चावद्दिसि ।।
सपत धात पाषांन । तीस अंगुल दल बल कसि ।।
द्वादस अंगुल उंच । निठ्ठ करि ग्रीवह[1] लाइय ।।
उघरि मुष्ष वर द्रव्य । कही कवि चंद न जाइय ।।
सिल तरति हलंतल भ्रम्म हलि । द्रव्य परष्षिय मध्य ग्रसि ।।
सामंत सूर इम उच्चरै । भलो बीर कैमास लसि ।। छं० ३९३ ।।

बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला ।

सुनिय बत्त चहुआन । भयो आचिज्ज सब्बघन ।।
भूमि किात्ति संजुत्त । ग्रहे आवै अभंग धन ।।
पुर सु तिष्ष धर मध्य । क्रोध जाजुल्य नैन रत ।।
मुर लंगर विच बंधि । ग्रीव[2] लीनो उछंग तत ।।
षोदयो भूमि द्वादस सु हथ । हंकि बीर दानव गजिय ।।
कवि चंद दंद मन महि वेध्यो।चित्त चित संग्राम लगिय।।छं०३९४।।

---

1. ए० कृ० को०—ग्रावह ।
2. ए० कृ० को०—ग्राव ।

उस राक्षस ने माया करके लड़ना आरम्भ किया।

छंद भुजंग प्रयात्—

प्रकारे सुचारे भुजंगं प्रयातं। षगप्पत्ति गायं अहप्पत्ति गातं॥
स्वयं बीर दानव्व हक्यो हकारं। बरं बंध रक्की षरक्के प्रहारं॥छं० ३९५॥
बरं व्योम ब्रब्बं षहं पत्ति संक्यो। करे कोटि माया निसा पत्ति हंक्यो॥
पयं पाइ उट्ठं महा रोम[1] भ्रुम्मी। मनों चक्क फेरं कुलालं स भुम्मी॥
॥ छं० ३९६॥

षिनं रत्त दीसै षिनं मत्त माया। षिनं रत्त पीतं षिन स्याम छाया॥
षिनं मेघ रूपं षिनं अग्गि सीसं। षिनं कोटि रूपं षिनं एक दीसं॥छं०३९७॥
षिनं बाल वृद्धं षिनं वै किसोरं। भयं भीम भीतं षिनं दिव्य गोरं॥
षिनं मोह माया षिनं दट्ठ बज्जै। षिनं मोहनी मोह रूपति सज्जै॥छं०३९८॥
षिनं मै बिडाली षिनं बिप्र माया। षिनं मेछ रूपं षगं हृच्य धाया॥
हयं ग्रीव रूपं षिनं मच्छ दीसै। षिनं गज्जियं सिंघ आवृत्त रीसै॥छं०३९९॥

जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति की कि मां
अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले।

कवित्त - तोरि बीर संकर समूह। छडि गजराज थांन गय॥
भयो समूह अरिष्ट। तुंढि लच्छी न मत्ति हय॥
सत्त मत्त छुट्टयो। अप्प अप्पन संभारै॥
भो अचिज्ज सामंत। व्याम बचनं न बिचारै॥
कविचंद मंत्र आरंभ बर। उमा उमा कहि बंचयो॥
अप्पियै बचन मुहि मात इह। तुअ काली कलजच्चयो॥छं०४००॥

दूहा - करि अस्तुति कविचंद बर। अहो मात बरदान॥
इह माया मैं बहु तन। कढै लच्छि तुअ पान॥ छं० ४०१॥

देवी की स्तुति।

छंद विराज—सुनी देवि बानी। चढ़ी सिंघ रानी॥
मयं मत्त माया। तुंही तूं उपाया॥ छं० ४०२॥
अरी जुद्ध भव्वं। प्रक्रत्ती पुरव्वं॥
निराधार बंधी। निसंधे निसंधी॥ छं० ४०३॥
चिहूं चक्क चंडी। इकं पाइ मंडी॥
जपीं तोहि तोही। जगत्रय मोही॥ छं० ४०४॥
निसा पत्त मारै। दया बज्ज तारै॥
तुही मंत्र मंत्री। तनं आ पवित्री॥ छं० ४०५॥

---

1. मो०—रोम।

तुही आसमानं । तुही भूमि थानं ॥
तुही बाग बानी । कला निद्धि रानी ॥ छं० ४०६ ॥
कवी चंद चंदं । करै दूरि दंदं ॥
कलं षग्ग धारे । प्रनेता उचारे ॥ छं० ४०७ ॥
निसा बीर बढ्यो । इहां आइ ठढ्यो ॥ छं० ४०८ ॥

देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया।

दूहा--मात प्रसंनन गुन गहिर । दियो हुंकि हुंकार ॥
दियो बर सु दानव मलन । कियो देव जयकार ॥ छं० ४०९ ॥

बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारा गया।

कवित्त--तव प्रथि राज नरिंद । बीर दानव हक्कारिय ॥
सबद द्रुग्ग संभर्‌यो । पच्छ दीनो हुंकारिय ।
दिषत सथ्थ सब तथ्थ । कथ्थ कोइ बैन न मंडै ॥
भीत सीत भय अंग[1] । रंग[2] रस रोस सु चंडै ॥
अरु नाइ प्रान सम ग्रेह तिह । कज्जल कूट समान मुइ ॥
मन चित चंद प्रारुथ्यनहु । जबै देवि डर आन उइ ॥ छं० ४१० ॥
बल उत्तंग सुमेर । रुचि६ संकिन मग मुक्किन ॥
छिनक मंत निय संत । तेज आहुटि बल तक्किन ॥
सबर बीर कविचंद । मंत्र दुरगा तब पढ्यो ॥
करी नवनि कर जोर । जाइ अग्गै भयो ठढ्ढो ॥
अस्तुति अनेक उच्चार मुष । चरन चंपि द्रढ कर गहिय ॥
धन जोग कथा पूछी सुहित। उचित चंद अप्पन कहिय ॥छं०४११॥

चन्द ने स्तुति करके इस राक्षस और धन की पूर्व कथा पूछी।

दूहा--करि अस्तुति द्रढ चरन गहि । पूछी भट्ट विगत्ति ॥
जु कछु आदि पुच्छै सहित । कहत सु बीर विमत्ति ॥ छं० ४१२ ॥

देवी ने कहा कि जी लगाकर तू इसकी पूर्व कथा सुन।

कहै बीर कविचंद तुअ । पूत्र कथा कहुं मंडि ॥
जिन लच्छी घर मुक्कियै । घर रष्षै धन छंडि ॥ छं० ४१३ ॥

सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर मे पूजा और कलयुग में वीरता प्रधान है।

जुग सु आदि हुअ मंत्र गुर । त्रेता जुग हुअ सत्त ॥
द्वापर जुग पूजा प्रसिध । कलि जुग बीरं दत्त ॥ छं० ४१४ ॥

---

१. ए० कृ० को०--अम्म । २. ए०--सार ।

रघुवंश में आनन्द नामक एक राजा हुआ है उसकी कथा कहती हूं ।

गाथा —हुअ आनंद सु बीरं । बुल्लिय सु प्रसंन होइ कल बानी ॥
सुनि उत्पत्ति सु कव्वी । कहि अब रघुवंस आदि संकेतं ॥छं० ४१५॥

वह राजा बड़ा अन्यायी था धर्म विरुद्ध काम करता था ।

कबित्त —*तिहि तजिय सु रघुबंस । पुत्र मारंत इन्ह षिज्जि ॥
चित कीनो चरचित्त । मरन अंग आगम लषिज्ज ॥
जो बरजै बहु बार । ध्रंम मानै न भयंकर ॥
सोक अग्नि तिन दह्झि । प्रान छंडो गतियंकर[1] ॥
† सत बरस राज तय अंत करि । कित्ति ध्रंम संगह यइय ॥
आध्रंम कित्ति ज्यों मंडनह । सो उव्वरि बीरनि रहिय ॥छं० ४१६॥

यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कर्मों को देख ऋषियों ने शाप दिया कि जा तू राक्षस हो जा ।

कविन -तिहि बाहन बज सूर । धरम रष्षो रघुबंसी ॥
वेद ध्रंम उथ्थापि । काल कंटक बल कंसी ॥
सज्जि तेज आजुल्य । जग्य विध्वंसिय सब्बल ॥
कमल समूह अरिष्ट । जीति दगपाल ध्रंम पल ॥
मारग्ग हत्ति उथ्थापि करि । दिब सराप सब रिष्पि मिलि ॥
जा वीर दांन दानव सु बरि । अमर सिंह बल जीति इलि ॥
॥ छं० ४१७ ॥

उसका शरीर भस्म हो गया और वह दैत्य होकर यहां रहने लगा ।

मिलि अयास आयास । आप मिलि आप अहुट्टिय ॥
मिलि समीर संमीर । धरा धर धार आहुट्टिय ॥
तेज जोति बहु पीर । सुवर मंगल फिरि आइय ॥
विहि अध्रंम जरि तास । मांहि सो कछु न समाइय ॥

---

* मो०—"तिहि तजिय इर रघुबंस पुत्र मारत पुच्छ लिज ।"

1. मो०—अंकर ।

† मो०—प्रति में इन दो पदों के स्थान में तीन पद दिए हैं जिनमें से अंतिम पद तो चारों प्रतियों में समान है किन्तु मो० प्रति में दोनों में एक का सारांश मिलता है यथा—मो०—"सत बरस राजा ने सबल राबंत अंत कर, सब सौरव्य सिंह अरि अंत करि कित धर्म संग्रह गहिय ।

आकास मध्य ता मध्यतें फटिक बीर है चीर हुअ ।।
ते बीर बहुत दानव अतुल । भये काल थानय रहय ।। छं० ४१८ ।।

इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई ।

बहु बित्ते बर काल । चंद बरदाइ थान हम ।।
को जीवत देष्यो न । मरत देष्यो न न जे हम ।।
मात ग्रम्भ जम निका । राम तामस करि नच्यौ ।।
इल हट्टै अंगनैं । कौंन रूचै को रुच्यौ ।।
जीरन सु जगा संसार भो । लच्छि न जीरन भइय इह ।।
आयंत जात धंधो सकल । ग्यानवंत जानहि सु इह ।। छं० ४१९ ।।

तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब धन निकालने में दैत्य दुःख न दे ।

दूहा—तब प्रथिराज नरिंद बर । अरु सुमंत्रि कविचंद ।।
इष्ट बत्त बर संमुहे । ज्यो दानव करे न दंद ।। छं० ४२० ।।

इष्ट मंत्र का साधन करते यज्ञ करते हुए खोदकर लक्ष्मी निकालना आरम्भ किया ।

छंद त्रोटक—कढ़ि लच्छिदिसंक्रम दीन न्रपं । निज मंत्र बलं कल तत्र जपं ।।
भुज भान सुरं भज भान दिसं । बर इष्टय चंद कविंद क्रुसं ।। छं० ४२१ ।।
सब देव क्रमं क्रम दीन नृपं । जय जग्यरु जाप करंत तपं ।।
घन गंध सुगंधन की हलितं । चलि सीत न तप्प सुभं मरुतं ।। छं० ४२२ ।।
घन सार मृगम्मद होम जरैं । तिन उप्पर भौरन ग्रोर परैं ।।
उड़ि धूम चिहूं दिसि छाय घनं । करि मंत्र सुदेव बलि बलनं ।। छं० ४२३ ।।

देव ने चन्द से कहा मेरे पिता रघुवंशी धर्माधिराज थे मैं उनका बेटा आनन्दचन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने न्याय से संसार को जीता, इस लिये शाप से मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम बीर पड़ा ।

कवित्त—नृप पूजी रघुवंस । नाम धृम्माधिराज सुअ ।।
बिय बाहन नृप सूर । पुत्र आनंद चंद दुअ ।।
सब जित्ते द्रगपाल । माल लिन्नो अधू म छलि ।।
राज नीति सब मुक्कि । क्रंम बंध्यो अक्रंम कलि ।।
अद्भूत मरन छिन भंग गति । पित बिस्स क्रम अनुसरिय ।।
तप भंग[1] गच्छता आनि नह । नाम बीर दानव धरिय ।।छं०४२४।।

---

1. पी०—जग्ग ।

बीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैंने ही यहां रक्खा था।
दैवगति से इसीको लेकर मेरी यह गति हुई।

दूहा - कहै बीर सुनि चंद तुअ। अप्प कथा कहौं मंडि ॥
जा मुक्की लच्छी धरनि। सो रष्यौं उर संडि ॥ छं० ४२५ ॥
हौं रष्यौं इन भंति करि। अहो चद बरदाइ ॥
रघुबंसी अति मोह् मय। अवगति कोइ सुभाइ ॥ छं० ४२६ ॥
माया छाया पुत्तरी। क्रोधवंत हम बीर ॥
रहै छंडि हैं लच्छि यह। नम्मित हुम इह धीर ॥ छं० ४२७ ॥

बीर का अपने पिता रघुवंश राज की प्रशंसा करना।

कवित्त –क्रोध लोभ जानी न। मोह् माया न अलंकृत ॥
मोह् गीत अरु सीत। जग्गि जा जापय सुक्कृत ॥
बहु बिवेक निृमांन। राज विसतरहि नीति बहु ॥
नव निवर्त धुनि बेद। कर्म छेदन अभेद लहि ॥
सो बहि सांइ सेसब सुलप। जोवन बै विष अलप मन ॥
रघुबंस बृद्ध आवस्त त्रिय। जोग मग्ग सो छंडि[1] तन ॥छं० ४२८॥

चारों युगों के धर्म का वर्णन।

श्लोक - सत जुगे बंधयो देवो। त्रेताया सोम जाधयो[2] ॥
द्वापरे वाहनो सूरो। कलिजुगे बीर भीपम ॥ छं० ४२९ ॥
सतजुगे ब्रह्मपुत्रश्च। त्रेतायां बीर भक्षय[3] ॥
द्वापरे चित्रि वशस्य। कलिजुगे सूद्र ग्रहनिका ॥ छं० ४३० ॥

बीर का अपने बल का वर्णन करके अपने सामने
धन निकालने को कहना।

कवित्त —हम सु भयंकर बल। भट्ट सुभटन हंकारहि ॥
हम प्रचंड प्रब्बत्त। कनिष्ट अंगुलि उप्पारहि ॥
सत्तों समुद प्रमान। सु तत छिन तिरि दिष्षहि ॥
सुनि न होइ देखी न। तोइ ब्रहमंड सु लष्षहि ॥
दैवान दुसंकह दुष्ट गति। देव जोग को गद्दवै ॥
आतम्म मनुष्छन जीव बल। मो देखन धन कद्दवै ॥ छं० ४३१ ॥

चन्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने
से अब राजा धन निकालेंगे।

---

१. मो०—संडि।
२. मो०—जोधयो।
३. मो० अषिय।

अरिल्ल—*बुल्लै चंद सुनो बर बीर । तुम त्रिकाल दरसी अति धीरं ॥
तुम अनंत बल रूप सरूपं । कढ्ढै धन तुम बचन सु भूपं ॥छं०४३२॥
गाथा—कहै बीर चंदं बर बंदं । हो देवाधि देव बलवंनं ॥
तुम देषत गत पापं । होइ प्रसन्न देहु बर बचनं ॥ छं० ४३३ ॥

चन्द की सुन्दर बानी सुनकर बीर ने प्रसन्न होकर धन
निकालने की आज्ञा दी ।

दूहा —सुर बानी सुन भट्ट की । मन प्रमोद बरबीर ॥
दई बाच कढ्ढो सु धन । प्रसन देव करि धीर ॥ छं० ४३४ ॥

बीर की बात सुनकर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि
शुभ कर्म कराओ और आनन्द से धन निकालो ।

अरिल्ल —बीर बचंनति चंद प्रकासिय । कहै राज गुरजन प्रति भासिय ॥
करो होम देवान मंत्र जप । सब प्रसन्न हुअ लहै धन्न नृप ॥ छं० ४३५ ॥

चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रसन्नता
के लिये जो कहो वही करें ।

कवित्त —तुम समान कोइ आन । पान पन दान मान मन ॥
कवन श्रवन रस राग । दैव परंग अंग नन ॥
राजस तामस सत्त । मत्त जोगिंद विराजहि ॥
जंह एक गुन कोटि । रत्ति सो वोलन लाजहिं ॥
महदेव[1] सेव तुम चरन रत । पति पवित्र मन मोह धरि ॥
हिंड्यो सु बीर उत्तर दिसा इह पसाव चहुआन करि ॥छं०४३६॥

बीर का कहना कि मेरी प्रसन्नता के लिये पंडित से जप कराओ
और महिष का बलि देकर धन निकालो ।

दूहा —कहै वीर कविचंद सौं । हों सु प्रसन्नौं तोहि ॥
तीन लोक में जुगति बनि । मुझमन नाही मोहि ॥ छं० ४३७ ॥
पंडित वोलि रु जप करो । होम दान ग्रह मान ॥
महिष मोहि पूजा करो । तो कढ्ढो पाषान ॥ छं० ४३८ ॥

दानव यह कहकर स्वर्ग गया । चन्द का राजा से कहना कि शाह को तो
तुम बांध चुके अब रावल के साथ धन निकालो ।

कवित्त —सुरग गयौ दानव्व । बत्त वल महिष उचारिय ॥
मंत्र तंत्र बंध्यो । बलन अप्पन सम्हारिय ॥

---

* मो० प्रति में "बुल्लै धन चन्द सुनो बर बीर" पाठ है और धन शब्द यहां विशेष है ।

1. मो०—सहदेव

बर गज्जनी नरिंद । बंधि छंड्यौ चहुवानं ॥
घन कढ्ढन[1] तिन थांन । बज्जि निर्घोष निसानं ॥
आनंद मंत्रि कैमास बल । तिथ्थि घरी बल पुच्छिबर ॥
जै जया मिह आहुट्ट पति । मिलि विभूत कढ्ढी सुभर ॥छं०४३९॥

राजा ने रावल को बुलाकर ज्योतिषी पंडित को बुलाया, पंडित ने होम की सामग्री मँगाकर वेदी आदि बनवाकर शुभ अनुष्ठान का प्रारम्भ किया।

छंद त्रोटक तब बुल्लिय राजन राज गुरं। सु मनो गुर राजत देव दरं।
बुलि बेद सु पंडित जोतिगयं । जिनु बुद्धि सु ब्रह्मय सुद्ध लयं ॥ छं० ४४०॥
तिन मगिय होम प्रकार सयं । रचि जग्य अकार प्रकार मयं ॥
मिटई[2] जिह दोष[3] सु होइ जयं । ... ॥ छं० ४४१ ॥
कढ़ि लच्छि दिसा क्रमि देवि नृपं । कवि चद अनदिय मत्र जपं ॥
विधि भान सूरभिय भान दिसं । मब देव क्रमक्रम होइ रस ॥ छं० ४४२ ॥
जय जग्य रु जाप करै बल्लिना । घन गध सुगंधन की हल्लिता ॥
सु रची रवनीय सवै अवनी । धज हल्लन बेदिय मंडि फनी ॥ छं० ४४३ ॥
झरि चदन पाटक पाट करी । अनुराग सु कुकम होम जरी ॥
नव रत्त कला कल सान स्फुटे । मनु द्वादस भान इहां प्रगटे ॥ छं० ४४४ ॥
धुनि मुनिय बेदन होन रुष । प्रगयौ कमलानन तास मुषं ॥ छं० ४४५ ॥

छ प्रधानों को पास रखकर राजा ने पत्थर खोदकर हटवाया।

कवित्त कढ्ढि बीर पाषान । राज पट रष्षि प्रधानं ॥
चंद भट्ट गुरराम । कन्ह रष्षिग चहुआनं ॥
रष्षे अत्ता ताइ । ईस लद्धौ बर भारी ॥
दैव बत्त सजोग । भोग लद्धौ रन रारी ॥
रष्षिजै भीम रवूबम बल । अरु रष्षै पुंडीर सह ॥
अनवत्त अग्ग लै स्याम की । पच दीह तिन थान रहि । छं०४४६॥

वह स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला, उसमें एक सोने के हीराजटित हिंडोले पर सोने की पुतली सोने की बीणा बजाती और नाचती हुई निकली, उसका नाच देखकर आश्चर्य होने लगा।

षोदि थान पाषान । ग्रेह निकर्‌यौ अच्चंभम् ॥
हेम हीर हिंडोल । हेम पुत्तरी सुरंभम् ॥

1. मो०—कढ्ढय ।
2. मो०—लहि ।

हेम हथ्थ वाजित्र । नृत्य पुत्तरि अरि जंत्रिय ॥
इह अचंभ पुत्तरी । जानि सर जीवन मंत्रिय ॥
आलिग नयन करि सिथल गति । तिहि दिष्षत मन मयन रुकि ॥
आचंभ चंद देखत भयो । रंभ कि नृत्यत तार चुकि ॥ छं० ४४७ ॥

पुतली को देख गुरुराम का आश्चर्य करना ।

दूहा - सुर उद्योत गुरराज तिहि । पुत्तरि दिष्षि अचंभ ॥
रति पति मन संमुह धरै । घट सु घटिय आरंभ ॥ छं० ४४८ ॥

चन्द का कहना कि यह मायारूपी है ।

कहै चंद गुर राज सुनि । यह माया बल रूप ॥
न करि मोह कर गहि सु दुज । मूछि[1] बहोरिय नृप ॥ छं० ४४९ ॥

रावल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुतली किसका अवतार है ?

राज गुरु कहि चंद सो । हो कविराज विचारि ॥
कोन रूप अवतार किय । क्यों लच्छिय पर नारि ॥ छं० ४५० ॥

चन्द ने कहा कि ठहरिए तब कहूंगा और उसने बीर को स्मरण करके पुतली का भेद पूछा ।

कवित्त – तन सु चंद बर दाइ । राज गुरु बचन अप्प सर ॥
छिन इक धरो विलंब । कहों बर बीर पुच्छि नर ॥
करि अस्तुति कलि बानि । बीर देवाधि देव सुनि ॥
हम मनुष्य मय मोह । तास नहि लहै अंत पुनि[2] ॥
पुच्छइ सु देव आपुब्ब कथ । कोन रूप इह पुत्तरिय ॥
रह लच्छि थान सुर केम तत[3] । कौन काज बर सुद्दरिय ॥ छं० ४५१ ॥

देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि रानी है ।

गाथा – सुर बांनीयं चंदं । सुप्रसन्नं देव मय कब्बी ॥
इह तेजं रिध्धि रांनी । संपेषे सु चंद गुरु कब्बी ॥ छं० ४५२ ॥

यह ऋद्धि साक्षात लक्ष्मी का रूप है इसे तुम बे खटके भोग सकते हो । यह देव बानी सुनकर चन्द प्रसन्न हुआ और रावल का संशय मिटा ।

कवित्त– इह सु कृत्य बल रूप । देव देखहु सु मोह मत ॥
मामा छाया सु लच्छि । अनुसरै सु लच्छि रत
इह लच्छी बर रूप । तेज जाजुल्य प्रमानं ॥
हम वचंन इह रिद्धि । तुमहु सुप्रसंन सुथानं ॥

---

1. मो०–मुरछिक । 2. मो०–फुनि ।
3. मो०–तन ।

भोगवन काज संभरि सुपहु[1] । इह विधिना अप कर गढ़िय[2] ॥
सुनि चंद बचन आनंद हुअ । राज गुरू संसय मिटिय ॥छं०४५३॥

इस हिंडोले को पूजन में रखना यह कहकर देव अन्तर्ध्यान हो गए। राजा फिर धन निकालने लगे।

दूहा —हिंडोलो बर हेम करि । सिंघासन सुरराज ॥
वह प्रसंन होइ रष्षियौ । पूजन हरि गुर राज ॥ छं० ४५४ ॥
षिन धरि माया अप्प दुरि । गए सु अंमर देव ॥
फिरि कड्ढन लग्गे सु द्रव । लहै सुरप्पति भेव ॥ छं० ४५५ ॥

कुबेर के से भण्डार सा धन निकलना, सब को आश्चर्य होना और तब सुरंग को देखना।

कवित्त —कलस बंक त्रंबक्क । लोह संकर बर बंध्यौ ॥
रजत कलस अरु हीर । रत्त अंतर चित संध्यौ ॥
हेम कलस नग भरिग । कंति दीपन जनु अग्गी ॥
सुबर कलस पाषान । मद्धि मन तेज उपंगी ॥
आचिज्ज चंद बरदाइ भय । ग्रह कुबेर करि लष्षयौ ॥[3]
गुरराज राम भट्टह सहित । फिरि सुरंग सव दिष्षयौ॥छं० ४५६॥

पुतली का बिना कुछ बोले चन्द और रावल की ओर तीक्ष्ण कटाक्ष से देखना।

कवित —ता पच्छें कवि चंद । राज गुर संमुह दिष्यौ ॥
ब्रह्म थांन शिव थान । थान पति नाक विसष्यौ ॥
नवति बीर ग्रह जोग । सिद्ध नव निद्ध सु अट्ठौ ॥
च्यारि अंग लछी प्रमान । धूम द्वादस अंग दिट्ठा ॥
सा अंग बाल पुत्तलि अचंभ । हाइ भाइ विभ्रम बहै ॥
लावंनि चित उत्तर रहति । बंक कटाछन चित्त है ॥ छं० ४५७ ॥

चन्द और रावल का मूर्छित होकर गिरना। कुछ देर में संभल कर उठना।

कवित--मुच्छि पर्‌यो कवि चंद । मुच्छि दुजराज पर्‌यो कल ॥
नाच भंग तन भंग । अंष झल मलिय नैन जल ॥
उष्ट कंप तन स्वेद । भेद बल बिन [4]कवि किन्नो ॥
चढ़िय अंग पिडुरिय । गात सोभत अल भिन्नो ॥

---

१. मो०—सपहु ।
२. ए० कृ०—घटिय ।
३. मो०—लिष्षयौ ।
४. ए० कृ० को०—कंठ ।

सिथल चरन गति भंग हुव । वै बिलास अभिलाष गति ॥
जग्गेव मुच्छि दुजराज सब । देव एव चित्रं सुभति ॥ छं ४५८ ॥

उठने पर राज गुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन निकला अब क्या आज्ञा है ।

दूहा--मुछि उठ्यौ गुर राज तब । पुछ्यौ संभरि बार ।
जु कछु सुबर अज्ञा नृपति । धन निकर्‌यौ अप्पार ।। छं० ४५९ ॥

धन के कलश आदि का वर्णन । रावल और पृथ्वीराज का एक सिंहासन पर बैठना ।

कवित्त--सत्त[1] कलस त्रंबकिय । सत्त अध्र मंडि रजक्किय ॥
हेम कलस सत पंच । कलस पाषान गतक्किय ॥
सत्त अद्ध बाजित्र । सहस अध पग्ग प्रमानं ॥
हेम हीर हिंडोल । एक आचभ सु थानं ॥
जान्यो न देव देवाधि गति । दैव जोग सिंहासनह ॥
चित्रंग राव रावर समर । मम सुराज प्रथु आमनह ॥छं० ४६०॥

एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और रावल आए ।

एक सुदिन संध्या समय । बिझ्झासनि के थान ॥
एक अचंभो देखियै । जो आवै चहुआन ॥ छं० ४६१ ॥
उभय राज बर बन करि । चले सुथानक देव ॥
निकट देखि देवी सुमट । गए सिघ बर सेव ॥ छं० ४६२ ॥
आए नृप चित्रंग पति । अरु संभरी नरिंद ॥
तब लगि राम सु विप्र ने । करिय अनिज्ज सु चंद ॥ छं०४६. ।

पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुण का वर्णन ।

छंद भुजंगी- समं चढ्ढियं समर रावर नरिंदं। तिनं वाम भुज्जं समं सूर नंद ।
घनं सथ्थ मध्यं दोऊ बीर राजं । तिनं देषतें बामता काम लाजं ॥छं० ४६४॥
उठी मुच्छ आनं धुनी लग्गि गेनं । मनों चंद बीयं सियं[2] कीय हेनं ॥
दोऊ राज राजन्नता राज सक्की । दोऊ ध्रंम षंढे जमं ब्रड हक्की ॥छं०४६५॥
दोऊ रत्त[3] माया ननं अग्ग लग्गे । मनों कंज[4] पत्रं जलं भिटि भग्गै ॥
उभै सूर नूरं विराजंत राजं । जिनै सोभियं कंठ रह हिंदु लांजं ॥ छं०४६६ ॥

---

१. ए० कृ० को०–सिस । २. ए० कृ० को०–सित ।
३. ए०–सिर्षकी अ । ४. ए०–वस ।
५. ए० कृ० को०–कंप ।

वेद मंत्र से दोनों राजाओं के लिये पूजा की और दस महिष बलि चढ़ाया। चतुःषष्टि देवि ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया।

कवित्त—बेद मंत्र दुज राम। उभय कारन क्रित किन्नो॥
समर समरसन कीन। राज उनहार सुलिन्नो॥
दस महिष्ष बल भंजि। चंद मंत्रं प्रारंभे॥
नृप आज्ञा नन दीनु। सस्त्र मंगे प्रारंभे॥
आरंभ मंत्र चवसठ्ठि जगि। है हुंकारब सद्द हुअ॥
गत दंद चंद चंदाननहु। मात प्रसंनन मन्न जुअ॥ छं० ४६७॥

राजा ने सिंहासन हाथ में लेकर देवी की स्तुति की देवी ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया।

दूहा– सिंहासन प्रिथिराज ले। मात वरंनन कीन॥
मात प्रसन चहुआन कौं। जै हुंकारव दीन॥ छं० ४६८॥

देवी पृथ्वीराज को आशीर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गई।

कवित्त- हुअ प्रसाद चवसठ्ठि। हथ्थ सिंहासन अप्पिय॥
बल अप्पो प्रथिराज। कित्ति कलसा लगि थप्पिय॥
विय सपत्त लभ्भै न। पुत्र लभ्भै सु थान तुअ॥
मन सु वंस जय लभै। सज्ज अनुवृत षित्त जुअ॥
पूजनह थान रबिवार कहि। अदिष्ट मात अंतर भइय॥
सुभ लच्छि सुभग्रह आइ तंह। बर सुहेम हत्थां दइय॥

पृथ्वीराज ने सिंहासन और लक्ष्मी मँगाकर रावल के साम्हने रक्खी। रावल ने कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई है, तुम्हारी है। पाटन के यादव राजा की कुवँरि ससिव्रता की सगाई का विचार॥

कवित्त - मँगि सिंघासन राज। लच्छि चतुरंग सु अप्पिय॥
समर सिंघ रावर नरिंद। अग्गें धरि जप्पिय॥
रंजि राज आहुठ्ठ। राज दिल्लिय दिस आइय॥
वर पट्टन जद्दों नरिंद। लिखि दूत पठाइय॥
श्रोतान राग चहुआन हुअ। कथा जपि ससिवृत्तकिय॥
पावस प्रमान कट्टिय बिकट। सुबर राज यों मत्त किय॥छं०४७०॥

गाथा– सिंघासने सुरेसं। अरु सु लच्छि सा हयं ग्रहियं॥
सो अग्गे बर सिंघं। मुक्के राज परिकरं सब्बं॥ छं० ४७१॥

रावल समरसिंह का धन लेने से इंकार करना और कहना कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्हीं लो।

कवित्त—रंजि राज दष्षिन गिरेस। राजन प्रति बुल्लिय ॥
तुम सु बड़े राजिंद। कहा गुन कहै सु भल्लिय ॥
हम सु तुम्म सगपंन[1]। जानि आए तुम सथ्थं ॥
तुम लहुए लहुआंन। मुष्ष कढ्ढौ सु अरथ्थं ॥
तुम कहिय बत्त अब जो हमैं। तुम समान नहिं प्रीति भति ॥
उच्चरो वचन तुम राज बर। सो हम हृदय सुमत्ति गत्ति ॥छं० ४७२॥

पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात से रावल को क्रोध आ गया तब उन्होंने अनुचरों को धन ले लेने को कहा।

दूहा—अति क्रोधित रावर समर। जब दिष्षौ प्रथिराज ॥
तब अनुचर प्रति उच्चरिय। लेहु लच्छि धरि साज ॥ छं० ४७३ ॥

पृथ्वीराज से रावल का घर जाने के लिये सीख मांगना पृथ्वीराज का कहना कि दस दिन और ठहरिए शिकार खेलिए। रावल का आग्रह करना।

कवित्त—तबहि जुग्गबर समर। राज राजन प्रति बुल्लिय ॥
हम सु सीष संभवैं। चलैं चित्रकोट सु थल्लिय ॥
तब राजन उच्चरिय। रहो दस दिन सब मिल्लिय ॥
रमैं सरस आषेट। करैं क्रीला घर दिल्लिय ॥
तब कहंत राज आहुट्टपति। अहो राज राजंन[2] गुर ॥
हम चलैं राज काजंम गुर। भर सु सब्ब समनेह उर ॥छं० ४७४॥

प्रेमाश्रु भरकर रावल ने बिदा मांगी, पृथ्वीराज उठकर गले से गले मिले।

दूहा—भरे सु सकल सनेह करि। रावर मंगिय सीष ॥
तब सुराज राजंन गुर। उठि मिलि सज्जन ईष ॥ छं० ४७५ ॥

पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा सदा ही स्नेह बनाए रहिएगा।

देत सीष प्रथिराज नृप। इह बुल्लिय गुर राज ॥
होत सगप्पन प्रेह रह। रष्षत रहियो[3] काज ॥ छं० ४७६ ॥

---

१. ए० कृ० को०—सगपत्त। २. मो०—रायंन।
३. मो०—रहिऊं।

रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो देह हैं, हमको तुम से बढ़कर कोई प्रिय नहीं है।

नृप सन रावर उच्चरिय। तुम सम नेह न कोइ ॥
जीव एक पंजर उभय। महन लोइहै दोइ ॥ छं० ४७७ ॥

रावल समर सिंह गदगद हो विदा हुए और अपने देश की ओर चले।

तब सनेह नृप नैन भरि। अमुअ आप सु राज ॥
समर सिंघ चित्तौर कों। दिय अग्या सु समाज ॥ छं० ४७८ ॥

रावल को विदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया और रावल के यहां हाथी आदि भेंट भेजा।

अब रावर सीषह सु करि। चढ़ि दष्षिन गिर राह ॥
तब मुराज प्रथिराज गुर। बोलि चंद बिरदाह ॥ छं० ४७९ ॥

कवित -तबहि राज प्रथिराज। बोलि कैमास चंद बर ॥
दिय अग्या बर सेव। कीए आएस राव गुर ॥
*जुगम सिंघ बर क्रमिय। लेहु परिकर करि वेसं ॥
गय सुपंच मद गंध। सत्र हय साज सुरेसं ॥
लै चले चंद बर दाइ बर। जहां राज रावर सुभर ॥
बैघरी बसत अनेक सुर। करि अस्तुति मुष कोटि तर[1] ॥छं०४८०॥

रावल ने चन्द को मोती की माला देकर विदा किया और आप चित्तौर को कूच किया ॥

दूहा -राजन वर रष्षिय प्रसन। करिय सब्ब सामंत ॥
माल मुत्ति दिय चंद कवि। चल्यो चित्रगढ भंति ॥ छं० ४८१॥

कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का दिल्ली चलना।

अरिल्लआर—
फिरि आये कैमास चंद बर। मिले राज तहं पूर्न प्रेम भर ॥
डिल्ली पुर आवन चहुआनह। अनि तोरन उच्छव संमानह ॥छं० ४८२॥

कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया। राजा खट्टू बन में शिकार खेलता चला।

कवित -चंवि राज कैमास। सोई अतर सिल लीनह ॥
द्रव्य ताम उभरीय। भरिय कर हासे तीनह ॥

---

* मो०—"मग सिंह त्रिहि क्रमिय"।

1. मो०—नर।

एकादस गज पूर । पंच संभरि पुर थानह ॥
बासुर सत संक्रमे । भरिय भंडार विधानह ॥
संचरिय राज मृगया बहुरि । पुर षट्टू पारस रवन ॥
कर पत्र रूढ़ जट्टा[1]सुषह । आइ राज भेंटया सुजन ॥ छं० ४८३ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत से धन को बराबर भाग कर के सब सामंतों को बांट दिया । सरदारों का बांट का वर्णन ।

बंटि दियो प्रथिराज । भाग किन्ने सह श्रब्बर ॥
एक भाग कैमास । तीय अप्पे नरसिंघ नर ॥
पंच भाग चावंड । भाग अद्धो बर कन्हं ॥
द्वादस भाग नरिंद । दियो परिगह सब थंनं ॥
प्रथिराज दिष्ट आवै नही । चिकट कुभ ज्यां जल अभिद ॥
लग्गै न नीर पत्रह कमल । भिदै न मति छीवै उछिद ॥छं० ४८४॥

दूहा—एक भाग दिय विप्र कर । करै राज सुष कंद ॥
धन लभ्भिय प्रथिराज धन । कथी कथ्थ कबि चंद ॥ छं० ४८५ ॥

बड़ी धूमधाम से दिल्ली के पास पहुंचे, राजकुमार ने आगे से आकर दण्डवत किया । बड़ा आनन्द उत्सव हुआ ।

कवित्त— अति तोरन उच्छ्छवह । आइ ढिल्लीय निकट वर ॥
रेन कुमार सु आइ । सुबर सामंत मधुत्तर ॥
सत्त बूअ असवार । कहत नामी अग्गै भर ॥
छंडि तुरिय पय लग्गि । दीय सा चढ़न सीष गुर ॥
बंदे व चढ़े तुरियं समथ । आए नंद उछाह घर ॥
चित्ते मलेच्छ लभ्यो सुधन । अति तोरन उच्छव नयर ॥छं०४८६॥

जेठ सुदी तेरस रविवार को राजा दिल्ली आए ।

गाथा— अति तोरन उच्छाहं । आए जेठ सुदि त्रयोदसियं ॥
सुभ जोगं रविवारं । गहनं साह बद्धि जस भारं ॥ छं० ४८७ ॥

महल में आने पर रानियों ने आकर मुजरा किया ।

दूहा—ग्रहन साहि जस बढ़िय घर । आइ धवल मधि साल ॥
त्रिया सकल आई सु तहँ । मुजरा करन सु हाल ॥ छं० ४८८ ॥

दाहिमा, आदि रानियां न्योछावर कर राजा की सीख पा अपने महल में गई ।

गाथा— दाहिम्मी प्रथु भट्टी । पुडीरी आइ नृप ढिग्गं ॥
करि न्योछावरि सकल । नृप दी सीष गइय ग्रह अप्पं ॥ छं० ४८९॥

1. मो०—जटाजूट धर ।

रात को राजा पुण्डीरी के महल में रहे। सबेरे बाहर आए, मन में शाह के दण्ड का विचार उठा।

राजा धवल संपत्तं। गये ग्रह रति तथ्य पुंडीरं ॥
करि रस अनंग क्रीडा। बढ़िय सुवेलि सुमन मन मथी ॥छं० ४९०॥
सुमन बेलि मन मथ्थी। करि क्रीडा हुअ बर प्रातं ॥
अंतर साल वयट्टं। मन विचार साहयं दंडं ॥ छं० ४९१ ॥

बादशाह से जो घोड़ें आदि दण्ड लिया था सब सरदारों में बांट दिया। अपने पास केवल यश रक्खा ॥

कवित्त—दंड सुबर पतिसाह। दीय हय बंटि राज बर ॥
बीस सुभर हय कन्ह। बीस हय उंचह निढ्ढर ॥
बीस दूअ रघुबंस। बीस उभ्भय दाहिम्मं ॥
अत्तताइ अल्हन पहाड़। बीस हय जैत गुरंमं ॥
औरह सु सकल भर बीस अघ। बंटि बंटि दिय सबन नर ॥
रष्षन सु गल्ह राजंद गुर। जस रष्षौ निज बर सुकर ॥छं०४९२॥

गाथा—जस रष्षौ कर अप्पं। मुत्तिय माल लालयं द्रब्बं ॥
आरोही पुर दत्तं। कवि दीनौ सु अवर कर साहं ॥ छं० ४९३ ॥

दूहा—सकल दंड पतिसाह कौ। बंटि दियौ सब सूर ॥
तपत राज अति षत्रिवर। ग्रीषम वित्तिय पूर ॥ छं० ४९४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पथिराज रासके षट्ट बन मध्ये आखेटक रमन धनसंग्रहन पातिसाहबंधनं धनकथा नाम चोबीसमों प्रस्तावः ॥ २४ ॥



अथ शशिवृतावर्णनं नाम प्रस्ताव ।

(पचीसवां समय)

शशिव्रता की आदि कथा वर्णन की सूचना ।

दूहा—आदि कथा शशिवृत्त की । कहत अब्ब संमूल ॥
दिल्ली वै पतिसाहि ग्रहि । कढ्ढि लच्छि उन मूल ॥ छं० १ ॥

ग्रीष्म में पृथ्वीराज का विहार करना ।

अरिल्ल—
ग्रीषम ऋतु कीड़त[1] सुराजन । षिति उकलंत षेह नभ साजन ।
विषम वायु तपित[2] तनुभाजन । लग्गि सीत सम्मीर सुकाजन[3] ॥ छं० २ ॥

कवित्त—लग्गि सीत कल मंद । नीर निकटं सु रजत घट[4] ॥
अमित सुरंग सुर संघ । तनह उवटंत रजति पट ॥
मलय चंद मल्लिका । धाम धारा ग्रह सुब्बर ॥
रंजि बिपन वाटिका । तीस द्रुम छांह रजति तरु ॥
कुमकुमा अंग उवटंत अति । मधि केसर घनुसार घति ॥
क्रीलंत राज ग्रीषम सुरिति । आगम पावस भद्दय भति ॥ छं० ३ ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आरम्भ होना ।

गाथा—ग्रीषम वित्तिय कालं । आगम पावस दीह मझ्झेनं ॥
दिसि दष्षिन वर देशं । नाइक[5] आइ चंद्रोदयं नामं ॥ छं० ४ ॥

राजा सभा में बैठे थे कि एक नट आया, राजाने आदर कर उसका परिचय पूछा ।

सभा बिराजित राजं । तहां नट आइ पत्त संगीतं ॥
मिलत मान दिय राजं । पुच्छिय विगति देस रह्न मझ्झं[6] ॥ छं० ५ ॥

नट को गुण दिखलाने की आज्ञा देना ।

दूहा—इह संभरि न्रप उच्चरिय । अहो सु नट गुरराइ ॥
गुन उचार[7] कछु किज्जियै । ज्यों दिज्जं दानाइ ॥ छं० ६ ॥

---

१. ए०-कृ०-को०-क्रीलंत । २. ए० कृ० को०-तपि तम तन ।
३. मो०-राजन । ४. मो०-षट ।
५. ए०-कृ०-को०-ताइक । ६. ए०-कृ०-को-मध्यं ।
७. मो० ए०-उचार ।

नट का कहना कि मैं नाटक आदि सब गुण जानता हूं आप देखिए सब दिखाता हूं ।

गाथा— नाटक प्रमान कथयं[1] । सुनि राजन श्री ढिल्लीसं ॥
पात्रं घर के सब्बं । गुन सुनियै चितयं लायं ॥ छं० ७ ॥

दूहा— अवसर तत्त प्रगट्ट किय । जंत्र मृदंग मुतान ॥
करिय राग श्री उंचकर । करन नृत्य बहु गान ॥ छं० ८ ॥

देवी को बन्दना करके नृत्य आरम्भ करना ।

आदि सकल अस्तुति करिय । पहुपंजलि पटिदेव ॥
कहि मंगल[2] घरनी निरषि । करन नृत्य अति भेव ॥ छं० ९ ॥
चंद चारु मागध सुअरु[3] । गीत प्रबंध प्रसन्न[4] ॥
उघटि त्रिघटि सब प्रमुष दै । देषि विगति सुर भिन्न[5] ॥ छं० १० ॥

नट का नाच के आठ भेद बतलाना ।

तब सुनट्ट इम उच्चरिय । हो राजन नर इंद ॥
बहु विवेक संगीत कल । अष्टह नृत्य सुनद ॥ छं० ११ ॥

आठों भेदों के नाम ।

श्लोक— मृदंगी दंडिका ताली । कहली श्रुत धुद्धरी[6] ॥
नृत्य गीत प्रबंधं च । अष्टांगो[7] नृत्य उच्यते ॥ छं० १२ ॥

नृत्य देख कर बैठने का हुक्म देना ।

दूहा— कहिय नृपति अष्टंग सुधि । रंजि राज कल गान ॥
बहुरि हुकंम बैठन्न दिय । फिरि पुच्छिय थह न्यान ॥ छं० १३ ॥

राजा का नट से उसके निवास स्थान का नाम पूछना ।

तब राजन यों उच्चरिय । अहो सु नटवर राय ॥
कोन ग्राम ठोरह सु तुम । कहो सु गुन प्रति भाय ॥ छं० १४ ॥

नट का कहना कि देवगिर में मैं रहता हूं वहां का राजा सोमवंशी जादव बड़ा प्रतापी है । राजा की बड़ाई ।

तब नट नमि करि उच्चरिय । सुनहु राज दिल्लीस ॥
सोम वंश जद्दव नृपति । देव गिरी वसि जीस ॥ छं० १५ ॥

कवित्त— देवगिरी जद्दव नरेश । अति प्रबल तपत तप ॥
संगीतरु बर कला । लहन शुभ ग्यान सुभत बय ॥

---

१. मो०—कथियं ।
२. मो०—घरती ।
३. मो०—सुरुअ ।
४. मो०—प्रमान ।
५. मो०—तान ।
६. मो०—घर्घरी ।
७. ए०—कृ०—को०—अष्टांगो ।

ग्यान[1] तान[2] गुन लहुन । भेद सुन ग्यान विचारं ॥
तास राज संमीप । रहौं नट विद्य उचारं ॥
ता ग्रह सु पात्र अन्नेक गुन । रहैं सु तहं निशि दीह पर ॥
राजंत राज जद्दव नृपति । ज्यों सुदेव पति नाक गुर ॥छं० १६॥

मैं उनका नट हूं आपका नाम सुन यहां आया ।

गाथा—तिहि ग्रह नट वर रूपं । आए मंगेव सीष कुरषेतं ॥
तुम गुन अति संभरियं[4] । आवन हूअ एम दिल्लि मझेनं ॥छं० १७॥

राजा का पूछना कि उनकी कन्या का विवाह किसके साथ निश्चय हुआ है ।

कहि संभरि नृप राजं । हो नट राइ सुनहु बर बचनं ॥
किहि व्याहन बर संगं । को राजन कवन घर मझ्झं ॥ छं० १८ ॥

नट का कहना कि उज्जैन के कमधज्ज राजा के यहां सगाई ठहरी है ।

पर चर उजेन मझ्झं । करि पामरि सगप्पनं राजं ॥
शुभ अंत करि आदं । व्याहन मन कीन राइ कमधज्जं* ॥छं० १९॥

दूहा—कै सगपन जद्दव नृपति । करै सु दिसि कमधज्ज ॥
कोई पुत्र अनूप है । तिन गुन व्याहन कज्ज ॥ छं० २० ॥
व्याहन मन कमधज्ज करि । सगपन राजहोरं[5] ॥
पंम्मारी दिय पुत्र पर । तिहि पुत्री बर ठोरं ॥ छं० २१ ॥
पुत्री बरी उजैन दिसि । पहिलै पंग स पुत्त ॥
अवन गवन पुर आदि दै । पढि जद्दव ग्रह तत्त ॥ छं० २२ ॥

यादव राजा ने सगाई के लिये ब्राह्मण उज्जैन भेजा है । पर लड़की को यह सम्बन्ध नहीं भाया ।

गाथा—पठवन किय दुज जद्दों । पुत्री दीय पुरी[6] उज्जेनं ॥
तिहि पुत्री नारत्तं । व्याही पंग पुत्त अज इंदं ॥ छं० २३ ॥

नट का शशिव्रता के रूप की बड़ाई करना ।

दूहा—सुनि राजन क्यों करि कहौं । जो शशिवृत्ता रूप ॥
जीह एक ब्रह्म न बनि । तिन गुन ब्रह्म अनूप ॥ छं० २४ ॥

---

१. मो०—तान ।
२. मो०—मान ।
३. ए०—कृ०—को०—इंद ।
४. ए०—कृ०—को०—संभरिय ।
★ व्याहन कीन कमधज्जं ।
५. मो०—रजदोर ।
६. ए०—कृ०—को०—पुरि ।

सभा उठने पर राजा का नट को एकान्त में बुलाना।

तब राजन ऊठी सभा। फिरि दीनी सब सीष॥
अंदर नट्ट बुलाइ कें। पुछिय विगति बिसीष[1] ॥ छं० २५॥

नट का शशिव्रता का रूप वर्णन करना।

कवित्त—कहै सु नट राजिंद। ब्रह्म आमोदक्क दिन॥
चंद कला मुख कंज। लच्छि सहजेंह सरूपतन॥
नेंन सु मृग शुक नास। अधर बर बिंब पक्क मति॥
कंठ कपोत मृनाल भुज्ज। नारगि उरज सति॥
कटि लंक सिद्ध जुग जंघ रंभ चलत हंस गति गयंद लजि॥
सा नृपति काज न्रंमिय तरुनि। मनो मेनिका रूप सजि॥छं०२६॥

दोहा—कहु गुन बरनौं राज कहि। कुंअरी जद्दव नाथ॥
विधना रचि पचि कर करी। मनुं मेंनिका समाथ॥ छं० २७॥

उसका रूप सुन राजा का आसक्त हो जाना और नट से पूछना कि इसकी सगाई मुझ से कैसे हो।

आरिल्ल—

सुनि राजन्न लग्गो ओतानं। लग्गे मीन केतु क्रत बानं॥
कहै नट सौं राजंन बर प्रेमं। मह सगपन सा करहि सुकेमं॥छं०२८॥

नट का कहना कि इसका उत्तर पीछे दूंगा। मुझ से इस में जो हो सकेगा उठा न रक्खूंगा।

दूहा—पुनि नट वर यौं उच्चरिय। फिरि कहिहों राजिंद॥
जो मुझ कीयो होइ है। तो करि हौं नृप इंद॥ छं० २९॥

राजा का नट को इनाम देकर विदा करना, नट का कुरुक्षेत्र की ओर जाना।

तब राजन नट सीष दिय। गज सु एक है पंच॥
चल्यौ दिसि कुरषेत प्रति। परसन हरि चरनंच॥ छं० ३०॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आगमन हुआ, राजा का मन शशिव्रता की ओर लगा रहा।

अरिल्ल—
ग्रीषम रिति बित्ती सुभ राजं। पावस आगम भई समाजं॥
सुनि नट बैन अ,ब जद्दव कथ। नन धीरज्ज हुंम आतम हथ॥छं० ३१॥

---

1. ए०—कृ०—को०—बिईष।

राजा का शिव जी की पूजा करना, शिव जी का प्रसन्न होकर आधी रात के समय दर्शन देना।

दूहा—हर सेवा राजन करत। क्रमिय मास जब संग।
अद्ध निसा शिव आइ कै। दिय सु वचन मन रंग॥ छं० ३२॥

शिव जी का मनोरथ सिद्ध होने का बर देना।

जो कामन मन सद्दई। सो पूरे हर ईस।
नन चिंता करि राज गुर। आयो गुन तुछ दीस॥ छं० ३३॥

राजा का स्वप्न में बर पाकर प्रसन्न होना और किसी तरह वर्षा ऋतु काटना।

कवित्त – हुअ प्रभात जब राज। सुपन मन मद्धि राज रस॥
प्रसन होई शिव शिवा। काम सीझै सु इंद जस॥
मन जाने वर अप्प। लगि भोतान राज उर॥
चित्र महावतगंद[1]। बहुरि उतरैन अवर पर॥
नन धीर करत पावस मुरित्ति। छिन छिन जुग जुग जात जिय॥
बर मोर सोर दद्दुर बचन। लग्गि तपत तन असम किय॥ छं० ३४॥

वर्षा की शोभा का वर्णन-राजा का शशिव्रता के विरह में व्याकुल होना।

कवित्त- मोर सोर चिहुं ओर। घटा आसाढ़ बंधि नभ॥
बच दादुर झिंगुरन। रटन चातिग[2] रंजत सुभ॥
नील बरन बसुमतिय। पहिर आभ्रंन अलंकिय॥
बंद बधू सिर व्यंज[3]। धरे बसुमत्ति सु [4]ज्जिय॥
बरषंत बूंद घन मेघ सर। तत्र सुमरै जद्दव कुंअरि॥
नन हंस धीर धीरज सुतन। इष फुट्टै मनमथ्थ करि॥ छं०३५॥

वर्षा वर्णन-राजा का विरह वर्णन।

छंद पद्धरी—
घन घटा बंधि नभ मेघ छाय। दामिनिय दमकि जामिनिय जाय॥
बोलंत मोर गिर बर मुहाइ। चातिग्ग रटत चिहुं ओर नाइ॥ छं० ३६॥
दादुरन सोर दस दिस डराइ। रह पंथ पथिक थकि पाइ साइ॥
विरहिनी दूरि जिन[7] पंथ नाह। तिहि बुंद लगत जनु ईष जाह॥ छं०३७॥
दंपती करै क्रीला उमंग[5]। मनमथ्थ रहसि बढ़ि अंग अंग॥
बिरहनी रटत पप्पीह[6] नार। प्रफुल्लित लता लल्लरिय बार॥ छं० ३८॥

---

१. मो० कृ० को०—मयंद, मयेंद। २. मो०—चातुक।
३. मो०—व्यंद। ४. ए०—तिम।
५. मो०—कृ०—उतंग। ६. का०—पप्पीह।

घन वृक्ष लता कलिपुष्फ[1] मंत । सब रंग रंग पावसह कंत ॥
उम्भरिय चलिय सलिता संपूर । चलि मिलिय संग सायरह नूर ॥छं० ३९॥
रति करन क्रीलनह[2] राज थाह । नन हंस धीर मन सुष्ष ताह ॥
नहि सजे सुष्ष लषि बिषम बाइ । तन होत तपति शीतन सुहाइ ॥छं० ४०॥
नन प्रीत सुहृथ गय नारि मांहि । अतिताप जंत तन रोम मांहि ॥
नन नींद सुष्ष[3] नन राज अंग । लग्गेसु बाग मन मध्य पंग ॥ छं० ४१ ॥
भेदेव अंग अंग रोम राइ । जांनै न कोइ बर अवर भाइ ॥
यों करत गई पावसी विषम्म । किय सुमन[4] दसा दक्षन करंम । छं० ४२ ॥

वर्षा बीत कर शरद का आगमन ।

दूहा - गत पावस आगम शरद । गई गुडल नभ मान ॥
ज्यों सद गुरु मिलि अंदरद । [5]मिलि प्रगट्ट गुरु आन ॥ छं० ४३ ॥

शरदागमन-शरद वर्णन ।

सुविक पंक उत्तरि सरित । गय बल्ली[6] कुमिलाइ ॥
जलधर बिन यों मेदिनी । ज्यों पति हीन त्रियाइ ॥

छंद पद्धरी- ग्रम्मलिय[7] कला उग्गयो सोम । कंदर्प प्रगट उद्दित[8] व्योम ।
सरिता सुनीर आए निवांन । पंगु रन हरै त्रिय द्रग लजान ॥
मल्लिका फूल सुग्गंध वाय[9] । सजोगि कंत रहि लप्पटाइ ॥
फल फूल सकल लूटंत अंब । जस प्रभा सुब्भ सुनि राज ब्यंब ॥
देवास पूजि न्रप रजि बिवेक[10] । सिर छत्र चौंर राजंष[11] तेक ।
आगम्म शरद रितु चलन साजं । आनंद उभर उमगे सु राज ॥
अति प्रीति सूर सामंत काज । पति नाक सभा हेमंत लाग ॥
किय सुमन चलन गिरि दक्षनेस । श्रोतान राग लग्यो अमेस ॥ छं० ४५ ॥

अरिल्ल पावस रितु क्रीलंत सु राजन । फिरि आइय दिन सरद समाजन ॥
करन राज क्रीला आषेटं । संक्रमि देस मद्धि मन भेटं ॥ छं० ४६ ॥

राजा का अपने सरदारों के साथ शिकार के लिये तय्यारी करना ।

कवित्त- सम सिकार कजिराज । सबर चतुरंग सु सज्जिय ॥
सघन सूर सामंत । अप्प अप्पन भर गज्जिय ॥
रंजि राज प्रथिराज । राज क्रीलन मन लाइय[4] ॥
बर पट्टन जद्दवन । दूत राज पै पठाइय ॥

---

१. ए०—पुष्प । २. ए० कृ०—कील । ३. मो०—सुषं ।
४. मो०बिसा । ५. मो० मिलै पगट । ६. मो०—बेली ।
७. मो०—निम्मंली । ८. मो० कृ० को०—उद्दित सु । ९. ए० कृ० को०—बाद ।
१०. ए०—कृ०—को०—विमेष । ११. मो०—राजत अनेक ।

श्रोतान राग चहुआन हुअ। कथा जंपि ससिवृत्त किय ॥
अब कहत कथ विस्तार किय। जो राजन ३तन करिय॥छं० ४७॥

राजा का शिकार के लिये सवार होना।

गाथा —तुछ दिन अन्तर क्रमियं। राज[1] क्रीलंत अप्प घर मझ्झं ॥
एक सुदिन राजानं। क्रीलन आषेट अप्प चढ़ि चलियं ॥ छं० ४८ ॥

दूहा —क्रील राज आषेट चढ़ि। अन्तर दिन हुअ आदि ॥
मिलिन जोग विधि लिषियबर। करि सनद्ध चढ़ि सादि ॥ छं०४९ ॥

माघ बदी मङ्गलवार को शिकार के लिये निकलना।

अरिल्ल —क्रीलन राज[2] चढ़े आषेटं। माघ बद्धि दुतिया दिन भेटं ॥
दिन सुभवार सु मंगल लहियं। करन सिकार अप्प चढ़ि चलियं॥छं०५०॥

राजा की धूमधाम का वर्णन।

कवित्त —चढ़िय राज प्रथिराज। साज आषेट लिए सजि ॥
सथ्थ सुभट सामंत। संग सेना सु तुच्छ रजि ॥
जाम देव का कन्ह। अत्त ताई निड्डुर गुर ॥
मति मंत्री कैमांस। राव चामंड जुझ्झ[3] भर ॥
परमार सिंघ सूरन समथ। रघुबंसी राजन सुबर ॥
ईतनें सहित भर सेंन चलि। उडी रेनु आयास पर ॥ छं० ५१ ॥

बन में जानवरों का वर्णन।

बागुर जाल बयल्ल। हिरन चीते सु स्वांन गन ॥
कालबूत, म्रग, बिहंग। विवाह तट्टीय चलत बन ॥
सर नावक बं३क। हरित जन बसन विरज्जिय ॥
गै जिमि गिरि करि अग्ग। अप्प बन स३ति सज्जिय ॥
है भारि भईय कांनन सकल। मग अमग्ग दल संचरिय ॥
षिल्लन सिकार चढ़्ढिय न्रपति। प्रथिराज महि संमरिय॥छं०५२॥

शिकार का वर्णन।

इन[4] सु साज मृगया सु। बाज उत्तंग अंग बर ॥
निमष निमष मंत्ररहि। निमिष जोजन जोजन सर ॥
छित्त लिये जिम पवन। वेग जग्गै जिम अग्गिय ॥
घट छुट्टै जिम सद्द। उरह चक्रवाक बिसग्गिय[5] ॥
यों बंधि राज आषेट बर। वपु सुत सुअ दिष्षे सु चष ॥
धह मंगि अंषि मंगल पवन। सबै होइ जोजन समष ॥५३॥

---

१. मो०—इश्वणेश। २. मो०—भाइय। ३. मो० चढ़ोन।
४. कृ०—रावन। ४. ए०—हुन। ४. मो०—हर।
५. ए०—कृ०—को०—राअम ५. मो०—बिकस्सिय। ५. मो०—माल।

घुर घुरंत घन स्वांन । अप्प पंजर तीतर बर ।।
मच्छ जाल बग्गुरि हि । फंद फैदैत सुवर धर ।।
धनक बान हक्कां सु । सिंघ पंजर जल रष्षन ।।
षांट षैर विसमिल्ल । ताग तारक्क चित्र पन ।।
सर हद्द म्रस लग्गी रमत । भुलै साष श्री नाथ पति ।।
कविचंद विरद वंनन करै । श्रवन सुनै दिल्लिय न्रपति ।।छं० ५४।।

शिकार पर जानवरों का छोड़ा जाना ।

गाथा--जित तित छुट्टे पंषी । थावर जलह जंगमं जोती ।।
ससि सालं हरि[1] पालं । भूपालं काल प्रति पालं ।। छं० ५५ ।।

भालू, सूअर आदि का आगे होकर निकलना ।

भालक आइ सहीयं । बाराह कोस अठ्ठयं पंचं ।।
आतुर षरि राजानं । अति अदभूत रूप शूकरयं ।। छं० ५६ ।।

राजा के बन में घुसने पर कोलाहल होने से शूकरों का भागना ।

दूहा -गये सुबन राजन सुभर करन घात सु प्रपंच ।।
कोलाहल सुनि सूकरह । उठि त्रय कोस पुलंच ।। छं० ५७ ।।
तिहि को हर इक प्रबल षह । षोदि सुहै इर तार ।।
फिरि अष्षो राजन्न प्रति । व्योरो कोल उचार ।। छं० ५८ ।।

सब सरदारों का भी वहां पहुंचना, एक बधिक का आकार शूकर का पता देकर राजा से पैदल चलने के लिये निवेदन करना ।

और सकल सामंत भर । आइ संपते तथ्थ ।।
अरज राज प्रथिराज सम । कही बधिक इह[2] कथ्थ ।। छं० ५९ ।।
त्रय सु दिवस राजन क्रमिय । तीस कोस त्रै अग्ग ।।
जंगल धरतें बेद त्रय । सिल नालूर सुरंग ।। छं० ६० ।।
बधिक कही इह राजप्रति । घात करै सुभ संच ।।
दल समूह तजि चल्लियै । तुबक गही तुर तंच ।। छं० ६१ ।।

राजा का तुरंत घोड़ा छोड़ तुबक कन्धे पर रख बाराह की खोज में चलना ।

तब राजन्न तुरंग तजि । गहि दिढ़ तुबक्क सुकंध ।।
कोहर मध्य बराह बर । करिय चोट सुर संघ ।। छं० ६२ ।।

---

१. ए०—सुक्ख ।
२. मो०—इक ।   २. मो०—धारो ।

सूअर को राजा ने मार कर बधिक को इनाम दे कर सुन्दर बारी
में विश्राम किया, समय होने पर भोजन की तय्यारी होना ।

कवित्त --हनिग राज बाराह । अप्प बधिक इनाम दिय ॥
सुभर सकल सामंत । रंजि राजन्न[1] सुभंतिय ॥
बारी को सदुआन । तास धरा ग्रह सुन्दर ॥
तहं बिराम करि राज । अवर सामंत अप्प जुर ॥
जब भई गोठि तथ्थह सुवर । तब परिहार सु सद्द किय ॥
सामंत सुभर राजंन[2] अप । आहारे बिंजन सुलिय[1] ॥ छं० ६३ ॥

चारों ओर राजा के शिकार की बड़ाई होना ।

दूहा --दिल्ली वैहै बेगहत । खना* अषेटक राज ॥
चात्रद्दिसि सुर जंपई । धन चहुआन समाज ॥ छं० ६४ ॥

कबित्त --उभय सत्त मृग मुदित । बंधि फै दंत रहित बर ॥
यों बंधे मृग बीय । कहै ओपमा चंद बर ॥
मन बंधि कुलटा विटप । ग्यांन बधि प्रकतित आवै ॥
दिन बंधि आवै कुमति । काल नर बुद्धि डुलावै ॥
आनई लज्ज गुल जस पकरि । आंनि संचि आवै अजस ॥
आनई क्रोध वर कलह को । यों आने म्रग बीय गस ॥ छं० ६५ ॥
नाम स्वान गति सीह । पत्त पर भवत बाय पुर ॥
कल दृढ़ अग्गि सु ज्वाल । जीव पुज्जै न चित्त जुर ॥
दीप नयन प्रज्जरै । क्रन्न लंबे कंध डारे ॥
कहि ओपम कवि चंद । बीज चंचल बति हारे ॥
अति ज्वाल परिग्रह रोमभर । दुति तरंग छिति जल छलिय ॥
पामर रुषाट पंजर विहर । राज पास दसदिसि चलिय ॥छं० ६६॥

राजा का अकेले बधिक के साथ शिकार के पीछे चलना
और सरदारों का राजा के पीछे चलना ।

कबित्त --इक्क समय राजन्न । करन क्रीला धर अप्पं ॥
बिपन मध्य संक्रमन । करन आषेट सु तप्पं[1] ॥
ग्रह करि तुपक सु राज । अग्ग छत्ती धर चल्लिय ॥
अवर सूर सामंत । फौज पच्छैं धरि हल्लिय ॥

१. मो०--राजन्नप्रति ।
२. मो०--राजान ।

१. मो०--राजान ।
२. मो०--लय ।

* ए०--कृ०--को०--बैगहन बरन अषेटक राज ।

१. आषेटक ।

कर हथ्य डार वृछन सुपर । चले राज तुछ बधिक सथ ॥
लग्यो सुरंग आषेट को । क्रम्यो राज पर भूमि पथ ॥ छं० ६७ ॥

शुकी का शुक से पूछना कि दिल्ली के राजा के गन्धर्व विवाह का समाचार कहो शुक ने कहा कि जादव राजा ने नारियल देकर ब्राह्मण को भेजा ।

पुच्छ कथा शुक कहो । समह गंध्रवी सुप्रेमहि ॥
स्रवन मंमि संजोगि । राज ममघरी सुनेमहि ॥
... ... इम चिंतिय मन मज्झि ।
कै करो पति जुग्गनि ईसह । ईस पुज्जै सु जग्गीसह ॥
शुक चिंति बाल अति लघु सुनत । ततविन विस उपजै तिहि ॥
देव सभा न जुद्दुव न्रपति नाल केर दुज अनुसरहि ॥ छं०६८ ॥

ब्राह्मण का जैचन्द के यहाँ जाकर उसके भतीजे वीरचन्द से शशिव्रता की सगाई का संदेसा देना । एक गन्धर्व यह सुनता था वह तुरन्त देवगिरि की ओर चला ।

नाल केर दुज गहिय । द्वार जै चंद गयो बपु ॥
करी षवर हे जमह । अप्प अंदर बुलाइ न्रप ॥
नाल केर दुज आनि । कह्यो राजन अव धारी ॥
देव सु गिरि त्रिप भ्रात । पुंज ससि वृत्त कुमारी ॥
सो दइय बंध नृप बीर कहु । लगन मास दिन पंच वर ॥
सुनि श्रवन एह गंधव कब । चल्लो सु दछ्छन देव घर ॥छं० ६९॥

गन्धर्व का शशिव्रता के पास आना, वह बन में विचर रही थी ।

दूहा—चलयो सु दक्षिन देव गिरि । जहां शशिवृत कुमारि ॥
विपन मद्धि क्रीड़ा करन । समह बाल चितचारि ॥ छं० ७० ॥

सोने के हंस का रूप धरकर गन्धर्व का दिखलाई देना, शशिव्रता का उसको पकड़ना और पूछना कि तुम कौन हो । हंस का कहना कि मैं गन्धर्व हूं देवराज के काम को आया हूं ।

कवित्त -हेम हंस तन धरिय । बिपन मद्ध बिश्राम लिय ॥
दिष्षि तास शशिव्रत । अतिहि अचरिज्ज मानि जिय ॥
बल कर गहिय सु तत्व । हत्थ लै करि तिहि पुच्छिय ॥
कवन देव तुम थान । कवन माया तन अच्छिय ॥
उच्चर्‌यो हंस ससिव्रत्त सम । मति प्रधान गन्धर्व हम ॥
सुरराज काज आए करन । तीन लोक हम चाल गम ॥ छं०७१ ॥

शशिव्रता का पूछना कि हम पहिले कौन थी और हमारा पति कौन होगा हंस का कहना कि तू चित्ररेखा नाम की अप्सरा थी, अपने रूप और गान के गर्व में इन्द्र से लड़ गई इससे दक्षिण के राजा की बेटी हुई।

कबित्त—कहै बाल सुनि हंस। कवन हम पुब्ब जम्म कह॥
कवन पत्ति हम लहैंहि। लेष बिच्चार लहो इह॥
तबै हंस उच्चर्‌यो। सुनहि शशिवृत्ता नारी॥
चित्ररेष अपछरि। सगीन अति रूप धरारी॥
तिहि गरब इन्द्र सम कलह करि। क्रोध देवबडी सुरम॥
दच्छिन नरेस नृप तान बंधु। पुंज ग्रहे अवतार सुम॥ छं० ७२॥

हंस ने कहा कि पङ्ग अर्थात् कान्यकुब्ज नरेश के भतीजा वीरचन्द्र के साथ तुम्हारे मा बाप ने सगाई की है पर वह तुम्हारे योग्य बर नहीं है।

चौपाई—कहै हंस सुनि बाल विचारी। पग बधुर बीर स पुतारी॥
तिहि तु दई मातु पितु बंधं। सो तुम जोग नहो बर बध॥ छं० ७३॥

उसकी आयु एक ही वर्ष है, इस लिये दया करके राजा इन्द्र ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है।

तेम रहै बर वरष इक्क महि। हय गय अनत झुज्झि है समतहि॥
तिहि चार करि तुमहि पै आयो। करि करुना यह इन्द्र पठायो॥ छं० ७४॥

शशिव्रता ने कहा कि तुमने मा बाप के समान स्नेह किया सो तुम जिससे कहो उसी से मैं ब्याह करूं।

तब उच्चरिय बाल सम तेहं। तुम माता सम पिता सनेहं॥
मुझ्झ सहाय अवरि को करिहो। पानि ग्रहन तुम चित अनुहरिहो॥ छं० ७५॥

हंस का कहना कि दिल्लीपति चौहान तुम्हारे योग्य बर है।

चौपाई—
तब बोल्यो दुजराज बिचारं। सुनि ससिवृत्त कत्थ इक सारं॥
दिल्ली वै चहुवान महा भर। सो तुम जोग चिन्तयो हम बर॥ छं० ७६॥

उसके सौ सरदार हैं, उसने गज्ञनीपति को पकड़कर दण्ड लेकर छोड़ दिया।

सत सामंत सूर बलकारी। तिन सम जुद्ध मु देव बिचारी॥
जिन गहियौ सर बर गज्जन वै। हय गय मंडि छंडि पुनि हिय वै॥ छं० ७७॥

महाबली चालुक्य भीमदेव को जीता है। यह सुन शशिव्रता का प्रसन्न होकर कहना कि तुम जाओ और उन्हें लाओ जो वह न आवेंगे तो मैं शरीर छोड़ दूंगी।

गुज्जर वै चालुक भीमतर । ते दिन राति डरै जंगल धर ॥
बरन जोग तुम तेह विचारं । सुनि की मुंदरि हरष अपारं ॥ छं० ७८ ॥
तहां तुम पिता कृपा करि जाउ । दिल्ली वै अनुराग उपाउ ।
मांस षटह हों वृत्तह मंडों । थ्थुना आवै तौ तन छंडों ॥ छं० ७९ ॥

हंस वहां से उड़कर दिल्ली आया ।

तब उड़ि चल्यौ देह दिम उत्तरि । ढिग ससिव्रत रष्षि निज सुदरि ॥
जुग्गिनि पुर आयो दुजराज । सोबन देह नगं नग साजं ॥ छं० ८० ॥

बन में शिकार के समय हंस का आना उसे देखकर आश्चर्य में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना ।

कवित्त बय किसोर प्रथिराज । रम्य हा रम्य प्रकार ॥
सेत पष्य विय चंद । कला उद्दित तन मारं ॥
विपन मध्य चहुआन । हंम दिष्यो अप अष्षिय ॥
चरन भग्ग दुति होत । हेम पच्छी वियलष्षिय ॥
आचिज्ज देषि प्रथिराज बर । धाइ न्रपति बर कर गहिय ॥
आपुब्ब दुज्ज गति त कथ । रहसि राज सौं सब कहिय ।छं० ८१॥

दूहा विपन मध्य आचिज्ज इह । दिष्षि राज प्रथिराज ॥
धूत दूत कलधौत तन । हंस सरुप विराज ॥ छं० ८२ ॥

संध्या को हंस रूपी दूत का सबको हटाकर राजा को पत्र देना ।

संझ सपत्तो न्रपति पै । दूत सु जद्दव राइ ॥
बर कग्गद न्रप हथ्थ दे । कहि श्रोतान बधाइ ॥ छं० ८३ ॥

दूत का कहना कि एकान्त में कहने की बात है । इतना कहकर चुप हो जाना ।

कह्यो दूत मन अप्पनै । जो व्रनो विधि जोइ ॥
दोषु[1] जानि नन ब्रंन वहि । न्रप श्रोतान न होइ ॥ छं० ८४ ॥
चौपाई - अति सु मनह चिते परि मौंन । मानहु थके सिंध्र जल वांन ॥
दारुन श्रष्प एक सोइ जाइ । चितो कहा सु अंनह षाइ ॥छं० ८५॥
दूहा - इह कहि बत्त ठठुकि रहि । उत्तर एक न आइ ॥
मानो उरग छछूदरी । कंठ लगावहि धाई ॥ छं० ८६ ॥
गाथा - मुष जंपी मन बत्तं । इतं जे नवाइ हिर पुछ ॥
बर चहुआन कमानं । किम जहों नमों नम नाउं ॥ छं० ८७ ॥

1. मो०-देषु ।

हंस का कहना कि शशिव्रता का गुण कहने को शारदा भी समर्थ नहीं है।

दूहा — इह अष्षी चहुआन सों। नतो मार कहि आइ ॥
सुनिवेकों ससिवृत्त गुन। सारदऊ ललचाइ ॥ छं० ८८ ॥

चन्द्र और सूर्य के बीच में शशिव्रता ऐसी सुशोभित है मानों शृङ्गार का सुमेर हो।

राका अरु सूरज्ज विच। उदै अस्त दुहु बेर ॥
बर शशिवृत्ता सोभई। मनों शृङ्गार सुमेर ॥ छं० ८९ ॥

शशिव्रता के रूप का वर्णन।

इन वै इन रूपह तरुनि। इन गुन आवै मान ॥
सो बर बर कविचंद कहि। सुनहु तो कहूं प्रमान ॥ छं० ९० ॥

छंद त्रोटक —
बय संधिरु बाल प्रमान व्रनं। कहि त्रोटक छंद प्रमान सुनं ।।
बय स्यांमऽरु शैशव अंकुरयं। अह अंत निसागम संक्रयं ॥ छं० ९१ ॥
जल सैसव मुद्ध समान भयं। रबि बाल बहिक्रम लै अथयं[1] ॥
बरसै सब जोबन मधि अती। सु मिलें जनु षित्तह बाल जती ॥ छं० ९२ ॥
जुर ही लगि मै सब जुब्बनता★। सु मनों ससि रंतन राज[2] हिता ॥
जु चलै मुरि मारुत अकुरिता। सु मनों मुरबेस मुरी मुरिता ॥ छं० ९३ ॥
कलकंठ सु कंठय पंष अली। गुन जपि कवित्त सु चद बली ॥ छं० ४ ॥

कवित्त — ससिर अंत आवन बमन। बालह सैसव गम ।।
अलिन पंष कोकिल सुकंठ। सजि गुड मिलत भ्रम ॥
सुर मारुत मुरि चले। मुरे मुरि बैस प्रमानं ।।
तुछ कों परसिस फुट्टि। आन किस्सोर रँगानं ॥
लीनी न अमि नक स्यांम नन। मधुप मधुर धुनि धुनि करिय ॥
जानी न वयन आवन बमत। अग्याता जोवन अरिय ॥ छं० ९५ ॥

कवित्त — पत्त पुरातन झरिग। पत्त अंकुरिय उट्ठ तुछ ॥
ज्यों सैसव उत्तरिय। चढ़िय सैसब किसोर कुछ ॥
शीतल[3] मंद सुगंध। आइ रिति राज अचानं ॥
रोम राइ अंकुच नितंव। तुच्छं सरसानं ॥
बढ्ढै न सीत कटि छीन हूँ। लज्ज मांन टंकनि फिरै ॥
ढंकै न पत्त ढंकै कहै। बन बसंत मंत जु करै ॥ छं० ९६ ॥

---

१. मो०—अत्थमियं।
★ मो०—सु लगो जनु शैशव योबनता।
२. मो०—रोच।
३. मो०—सीत।

पृथ्वीराज का शशिव्रता का रूप सुनकर उसके मिलने की चिन्ता में रात दिन लगे रहना । सबेरे उठते ही राजा के दूत से पूछना ।

दूहा –श्रवनन भव श्रोतान न्रप । मन बछै चहुआन ।।
मनु ससिवृत कुंआरि कौ । पर्‌यो उर द्वर बान ।। छं० ९७ ।।

कवित्त –निसि नरिंद चहुआन । चित्त मनोरत्थ विचारै ।।
भई दीह सब निशा । निशा सयनंतर धारै ।।
सयनंतर ससिवृत्त । चाटु चटु बैन उचारै[1] ।।
चारु चारु बर बयन । मान माननि संभारै ।।
दैवान मनोरथ चित्त बर । भव भव छन्नन कह करै ।।
भो प्रात दूत पुच्छै न्रपति । जद्दोवै चित्तै धरै ।। छं० ९८ ।।

हंस का राजा देवगिरि का जैचन्द के यहां सगाई भेजने और शशिव्रता के पण ठानने का वृतान्त कहना ।

दूहा बर बंध्यो ससि वृत्त कौ । अरु न्रप भान कुंआर ।।
वेंही दिन कमधज्ज कै । नाम बीरबर भार ।। छं० ९९ ।।
ससिवृता वृत आइ है । बरु देख्यो बर कीन ।।
न्रप वै भान स्वयंबरहु । एक ब्रत बरु लीन ।। छं० १०० ।।
जैत थंभ मंड्यो नृपनि । बान हनन वृत लीन ।।
ता काजं दिसि दिसि नृपति । घर घर कग्गर दीन ।। छं० १०१ ।।
इह अमंत[2] न्रप वर जिनै । कियो न मन्नै ताम ।।
दारुन वृत लीजै नही । इह कहि पूरि सु ठाम ।। छ० १०२ ।।
इह सुनंत प्रस्थान दै । बर पचमि रबि वार[3] ।।
पच्छ चलाइ गवन्न सुनि । कानन बीरत[1] बार ।। छ० १०३ ।।
दोऊ बाल पावक्क बनि । मुनि परि उट्ठहु गात ।।
मानों त्रीय चतुर्द्दशी । कै शशि उट्ठिय प्रात ।। छं० १०४ ।।
सुनि कै आसन उट्ठि बर । ढुंढत फिरत सु जोइ ।।
कत कंत के करत हीं । कान भनक कछु होई ।। छं० १०५ ।।
बीर चंद जैचंद बंधु । देवर पुंज कुअरि ।।
न्रप पठये चहुआन पै । दै शशिवृत्ता नारि ।। छ० १०६ ।।

शशिव्रता की विरह कल्पना का वर्णन ।

आगम बीर बसंत कौ । शिशिर संरते अंत ।।
प्रीतम पतन सु प्रीत कौ । दैन बांहु सो कंत ।। छं० १०७ ।।

---

1. ए०–कृ०–को०–उचारै । 2. मो०–अमृत । 3. कृ०–चार ।

कवित्त—शशिर सु विथुरत बन। वियोग विछुरत बन कंते ॥
दुहन आस रहि सास। कंत आयो न बसंते ॥
उपवन पत्त झंझरिय। बिरह पंजर संझंझरि ॥
आस अनहिन हुलसि। विपन हुलसै सु समंझरि ॥
अनमेष जपत इच्छा सघन। आनंद उर भूषन तजै ॥
दोऊन होइ कवि चंद कहि। असु रष्षिरु ध्रज सम सजै ॥छं०१०८॥

शशिव्रता का चित्ररेखा के अवतार होने तथा पृथ्वीराज के पाने के लिये रात दिन शिव जी की पूजा करने का वर्णन।

कवित्त—चित्र रेष बाला विचित्र। चंद्री चन्द्रानन ॥
स्वर्ग मग्ग उत्तरी। चित पुत्तरि परमानन[1] ॥
काम वान सुंजुरी। बाल अंजुरी सु लच्छिय ॥
मार कलह उत्तरी। पुब्ब अच्छरी सु लच्छिय ॥
लच्छिन बत्तीस लच्छी सहज। रति पति चित्त समंध्ररै ॥
संग्रहै वृत चहुआन को। गवरि पुज्ज दिन प्रति करै ॥छं०१०९॥

दूहा बरनी जोग बरन्न को। बर भुल्लै करतार ॥
तिहि कारन ढुंढ़त फिरै। सत्त समुद्रह पार ॥ छं० ११० ॥

वह आप अब मिल गए देर न कीजिएं चलिए।

जा कारन ढुंढ़त फिरत। सो पायो दीलीस ॥
अब जद्दव ससिवृत चढ़िय। दीनी ईस जगीस ॥ छं० १११ ॥

मैं महादेव जी की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूं।

शिवा बानि शिव बचन करि। हो येठयो प्रति तुज्झ ॥
कारन कुंअरि वृत्त को। मन कामन भय मुज्झ ॥ छं० ११२ ॥

शशिव्रता के रूप गुण का वर्णन।

सुभ लच्छ जद्दव प्रिया। कचियै का सु विवेक ॥
हंस कहै राजन सुनिय। उत्तिम लच्छिन केक ॥ छं० ११३ ॥

काव्य- पीनो रूपीन उरजा, सम शशि बदना, पद्म पत्रायताक्षी ॥
व्यंबोष्टी तुंग नासा, गज गति गमना, दक्षना वृत्त नाभी ॥
संस्निग्धा चारु केशी, मृदु प्रपु जघा, वाम बध्या सु बेसी ॥
हेमांगी कंति हेला, वर रुचि दसना, काम बाना कटाक्षी ॥छं०११४॥

---

1. मो०—समानन।

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम सब शास्त्र जानते हो सो चार प्रकार की स्त्रियों के गुणादि का वर्णन करो।

अरिल्ल —

सुनि प्रथिराज हंस फिरि पुच्छिय। तुम सब जान सु लच्छिन लच्छिय॥
चारि जुगत्ति त्रिया परकारं। कहु दुजराज सु लच्छिन सारं॥छं०११५॥

हंस को देर होने के भय से कोई बात अच्छी नहीं लगती।

दूहा — कही हंस जद्दो सु कथ। लगि श्रोतान सुराज॥
छिनन हंस धीरज धरै। लगै बान सम साज॥ छं० ११६॥

हंस कहता है कि स्त्रियों की बहुत जाति हैं पर शशिवृता पद्मिनी है।

कहै हंस बर राज सुनि। अति अनेक है जाति॥
पदमनि है जद्दव कुंअरि। आंन तरुनि अनि भांति॥ छं० ११७॥

राजा का उत्तम स्त्रियों का लक्षण पूछना।

राज कहै दुजराज सुनि। करि बरनन कथि सोइ॥
को लच्छिन उत्तिम त्रिया। कहियै सो सब जोइ॥ छं० ११८॥

हंस का पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी, और संखिनी इन चारों का नाम गिनाना।

चारि जाति है त्रीय तन। पदमिनि हस्तिनि चित्र॥
फुनि संषिनिय प्रम्भान इह। मन नह रंजिय मित्त॥ छं० ११९॥

राजा का चारों के लक्षण पूछना।

छंद पद्धरी -

सुनि हंस बैनं उर लगी बत्त। विधिना लिषंत क्यों मिटै पत्त॥
श्रोतान राग उर लगे राज। तन लगे बान समरह सु साज॥ छं० १२०॥
वुल्लस राज फिरि हंस बत्त। सुनि श्रवन बेंन मन भयो रत्त॥
पुच्छनह राज सब त्रिय विवेक। उच्चर्‌यो* हंस सा बत्त एक॥छं०१२१॥
तुम देव अंस जानो सु भेउ। हम कहन परम दुज लहै केउ॥
लच्छिन प्रकार त्रय त्रिय विवेक। करि वरन सुनावहु भांति नेक।छं०१२२।

हंस का लक्षण वर्णन करना।

गाथा—कहै विवेक सुहंसं। त्रीय प्रकार चार लहि इंदं॥
सुनि राजन सुभ वांनी। आनंदे श्रवन मझ्झेनं॥ छं० १२३॥

दूहा—तब दुजराज सु उच्चरिय, रे संभरि पुर इंद॥
पदमिनि हस्तिनी चित्रिनी, संषिनि संषन नंद॥ छं० १२४॥

---

* करि हंस राज यों बत्त एक।

स्त्रियों के उत्तम गुणों का वर्णन।

अरिल्ल—रक्त जीभ मृग अंक सु लच्छिन वान इहि ॥
बचन सु अमृत धार रती रति जांन जिहि ॥
इला[1] सील कुल वाल छती छामोदरी ॥
इन गुन नृप भय चारु सु चार जु संश्वरी ॥ छं० १२५ ॥

पद्मिनी का वर्णन।

कवित्त - कुटिल केस पदमिनी। चक्र हस्तन तन सोभा ॥
स्निग्ध दंत सोभा विसाल। गंध पद्म आळोभा ॥
सुर समूह हंसी प्रमांन। निद्रा तुछ जंपै ॥
अलप वाद मित काम। रत्त अभया भै कंपै ॥
धीरज्ज छिमा लच्छिन सहज। असन बसन चतुरंग गति ॥
आवंक लोइ लग्गै सहज। कांम वांन भूलंत रति ॥ छं० १२६ ॥

हस्तिनी का वर्णन।

उर्द्ध केस हस्तिनी। वक्र अस्तन दसनं दुति ॥
मधुर गंध गरनाट। भुल्लि भ्रम कांम बाम रति ॥
गूढ़ सवद मन जा। विषान रंगन छामोदरि ॥
चित्र नयन चंचल। विसाल बरनी जंमोदरि ॥
छिन रुदय हसय विहसय लहय। वसि च्रित्तह चित पुत्तलिय[2] ॥
नीवीय मान जानें बहुत। कंत चित्त जाइ न कलिय ॥ छं० १२७ ॥

चित्रनी का वर्णन।

दीर्घ केस चित्रिनी। चित्त हरनी चंद्रानन ॥
गंध म्रग चित्र निद्र। कोक शब्दन उच्चारन ॥
सील नील लज्जा प्रमांन। रत्ति भै भय घन मारै ॥
अलस नयन रस वलित। कलित कल वोल उचारै ॥
धीरज्ज छिमा छबि लोक करि। अवलोकन गुन औसरै ॥
विस्तीर्ण मंत्र मोहन पढै। चित्त वित्त कंतहु हरै ॥ छं० १२८ ॥

संखिनी का वर्णन।

अलप केस कुच मूल। थूल दंती उच्चारन ॥
थूल उदर लंकीस। थूल क्रिस लंगध बारन ॥
घोर निद्र[3] तन तास। अलप रसना रस छंडै ॥
अलप सील गंभीर। सबद कलहंतर मंडै ॥

१. कु०-ए०-इली। २. मो०-फुत्तारिय।
३. मो०-नींद।

आचार ध्रंम नहि सुद्द मन । विधि बिचार बिभचार घन ॥
आसंष संष संषिनि गुननि । मुष्ष नाह पावै न तन ॥ छं० १२९ ॥

शशिव्रता के रूप तथा नखशिख शोभा का वर्णन ।

दूहा – सुनो श्रवन चहुवांन बर । देवग्गिरि नृप भान ॥
रूप अनूप अनूप गति । कहि ओपम सुनि कान ॥ छं० १३० ॥

छंदनाराच– चढंत वेस सामयं । अरंभ ग्रेह कामयं ॥
उठति एहि हल्लिता । वियद्ध चंद्र चल्लिता ॥ छं०१३१ ॥
नषं सुरंग रंजनं । तरक्क दर्प्प कंजनं ॥
हलंत पेंड रच्चयो । अरुन्न नील कच्चयो ॥ छं० १३२ ॥
रही सु कंति थावकं[1] । चलंत हंस भावकं ॥
दो हंस अंग अंगुरी । उपंम काक विज्जुरी ॥ छं० १३३ ॥
मराल होड़ मुक्कियं । चरंन चंपि लक्कियं ॥
सुरेष पिंड सुम्भियं । अनंग अंग लुम्भियं ॥ छं० १३४ ॥
दीपंत जंघ पिंडुरी । भराइ काम सुंदरी ॥
दुती उपंम जंघ की । किधों उलट्टि रंभ की । छं० १३५ ॥
त्रितिय उपंम जंघरी । षराद काम की करी ॥
कनक्क षंभ रंभ सी । अनंग रंग रंग सी ॥ छं० १३६ ॥
नितंब तुंग मंडली । सयन्न काम की हली ॥
उतग भाग अग्रता । मनों तुलाकि दंडिता ॥ छं० १३७ ॥
छछीन हीन लंकयं । कमान काम अकयं ॥
सरोम राइ राजई । उपंम कव्वि साजई ॥ छं० १३८ ॥
सुमेर शृंग कंदकै । चढ़े पपील चंद कै ॥
उपंम कव्वि टट्टई । धनक्क मुट्ठि चट्टई ॥ छं० १३९ ॥
थनं त्रिपान थोरयो । अनग बान ओरयो[2] ॥
सुरंम रोम बाल सी । जु केवलं प्रवाल सी ॥ छं० १४० ॥
उपंग चंद ग्रीव की । मनो अनंग सीव की ॥
दुती उपंग तं लहै । कपोत कंठ कंक है ॥ छं० १४१ ॥
चिबुक्क चारु बिंद को । हर्‌यो कलंक चंद को ॥
दसन्न जोति कामिनी । मनों दमक्कि दामिनी ॥ छं० १४२ ॥
हसंत छब्बि में कही । सु लच्छि रंक ढंकही ॥
सुरंग ओठ अद्ध सी । सु अद्ध रेष चंद्र सी ॥ छं० १४३ ॥

---

१. ए० कृ० को०–जायकं ।
२. ए० कृ० को०–भारयो ।

दसन्न चारु मानयं । प्रभात के प्रमानयं ॥
दिषंत जोति नासिका । सु गत्ति कीर आसिका ॥ छं० १४४ ॥
चुभी जराइ राजई । उपंम कव्वि साजई ॥
मनों तरक्क बिछ्छुरे । मिलंत चंद उछ्छुरे ॥ छं० १४५ ॥
तटंक कन्न राजई । उपंम ता समाजई ॥
सुकांम बाम चाढ़िकै । धरे षरास बाढ़िकै ॥ छं० १४६ ॥
सुमत्ति नास जीपकै । चुनंत कीर सीपकै ॥
सुभाइ वंक नैन की । हरंत चित्त मैंन की ॥ छं० १४७ ॥
हलंत नेंन भ्रूव ले । धरंत चंद जूव ले ॥
लिलाट आड़ सोभई । अनंग थान लोभई ॥ छं० १४८ ॥
सुरंग केस पासयं । सु मुत्ति मंडि भासयं ॥
किरंन सूर साजकी । अहार दूध भास की ॥ छं० १४९ ॥
त्रिषंड मंडयो गुही । उपंम काक विज्जुही ॥
सोवन्न षंभ दुस्तरी । उरग्ग ग्रीय उत्तरी ॥ छं १५० ॥
शृंगार भार भारियं । विलोकि काम पारियं ॥
श्रवन्न मंडनं धरी । अनंग चित्त ही हरी ॥ छं० १५१ ॥
विसाल बाल बिब्भरी । कबिंद बुद्धि बिस्तरी ॥ छं० १५२ ॥

राजा का पूछना कि अप्सरा का अवतार क्यों हुआ ।

दूहा—जंपि राज दुज राज सम । तुम मति रूप अलोइ ॥
कवन काज अवतार इत । सच कहो तुम मोइ ॥ १५३ ॥

हंस का विवरण कहना ।

हंस कहै राजन्नसुनि ।[1] कहों उतपत्ति त्रियेन ॥
सुनहु राज मन प्रमन होइ । विवरि कहों सब बेंन ॥ छं० १५४ ॥

इन्द्र और चित्ररेखा के झगड़ा तथा शाप का वर्णन ।

कवित्त - एक समैं सुर ईस । अप्प पुर इन्द थान गय ॥
आगम देव मुनेव । नाग पति अति उछाह भय ॥
अरघ पाद करि धूप । करै मंगल अपुब्ब सुर ॥
सुभ आसन रजि रुद्र । करै धर सार वारि हर ॥
अस्तुत्ति करन लग्गो सुरिंद । तब प्रसन्न भयं ईस प्रति ॥
उच्चरिय कूट जट इंद सों । सुभ दिष्यौ अच्छर नृपति ॥छं०१५५॥

पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप इन्द्र का देना ।

रंभ घृताची मैन । मंजुघोषा सुरंग त्रिय ॥
उरबसि केसी नारि । तुरत तिल्लोत्तमानि पिय ॥

---

1. मो०—कहए उतपति तिय दीन

किय शृंगार सुंदरिय । आइ उम्भी सुर बामं ॥
देषि त्रिया मन प्रमुदि । हुओ मन उद्दित कामं ॥
अब सरस नृत्य कारनह कजि । जंत्र मृदंग[1] उपन्न सजि ॥
अस्तुति अनेक पढि घोष त्रिय । पहुपंजुलि सुर इंद्र कजि ॥छं० १५६ ॥

अनेक स्तुति करने पर शिव जी का प्रसन्न होना ।

तब सु कोप धरि ईस । दियौ सुर श्राप पतन धरि ॥
और रंभ किय नृत्य । सुबर अन्नेक विद्धि पर ॥
बहु बिबेक कल मान । ताल मडै त्रिगन सुर ।
रजि राज सुर ईस । दीन बर बानि रंभगुर ॥
अति प्रमुदि चित्त कैलास पति । उभय देव आनंद हुअ ॥
सुभ सभा बिराजै राज सुर । सुबर प्रमोदिय मन संभुअ ॥ छं० १५७ ॥

शिवजी का प्रसन्न होकर वर देना कि तेरा जन्म राजकुल में होगा और ब्याह भी छत्रधारी से होगा । पर तेरा हरन होगा और तेरे कारण घोर जुद्ध होगा ।

दूहा - करि प्रसंन सुर राज त्रिय । सुप अस्तुति सुर कीन ॥
बर बानी पुर इदकं । [2]यह सुवाक्य सिव दीन ॥ छं० १५८ ॥
परै तुज्झ उत्तिम घरनि । पुत्री भमि नरिंद ॥
दुअ पष्षां सिर छत्रहै । करि सेवा हर इंद ॥ छं० १५९ ॥
बरन ईस तें बर लहै । हरन होइ तुअ नारि ॥
कलह केलि भावन भवन । ह्वै है जुद्ध अपार ॥ छं० १६० ॥

शिव की उसी बानी के अनुसार वह अपने समान पति चाहती है ।

कही बांनि कैलास पति । मैनकेस सुनि नारि ॥
परस दोष भरतार सम । करत सु क्रील अपार ॥ छं० १६१ ॥

दिन पूरा होने पर उत्तम पति पाकर फिर अप्सरा योनि पावेगी ।

गाथा - तुच्छ दिन अंतर क्रमियं । आगम भरतार पंमि उद्ध लोकं ॥
फिरि अच्छरि अवतारं पांमै तुज्झ ईस बर बानी ॥ छं० १६२ ॥

शाप के पीछे शिव जी कैलास गए अप्सरा मृत्युलोक में गिरी, वही जादव राज की कन्या शशिव्रता है और तुम्हें उसने पति बरन किया है ।

कवित्त - इं सरात सुर नारि । अप्प करि ईस थान चलि ॥
घर अस्तुति कर इंद्र । प्रमुदि अति हद्र बानि फलि ॥

---

1. मो०-उपन्न ।   2. किय बधाय बिबतीन ।

चलै थान कैलास । परी अच्छरी [1]मृतं पुर ॥
जद्दव ग्रह त्रिय जाइ । उअर उप्पजी कुंअरि बर ॥
देवास थान तपि भान नृप । तिहि पुत्री ससिबृत कुंअरि ॥
सोई वाच रुद्र देवह सुत्रिय । तुअ कारन साथह उअरि ॥ छं० १६३ ॥

हंस कहता है कि इस अप्सरा का अवतार
तुम्हारे ही लिये हुआ है ।

दूहा– और सुबर संकेत [2]सुनि । हंस कहै नर राज ॥
मेंन केस अवतार इह । तुअ कारन [3]कहि साज ॥ छं० १६४ ॥

हंस कहता है कि राजा जादव ने शशिव्रता को कान्य-
कुब्जेश्वर को ब्याहना बिचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें
मन अर्पण कर शिव की आराधना की । शिव
की आज्ञा से मैं हंस रूप धर तुम्हारे
पास आया हूं । शीघ्र चलो । राजा
का प्रस्तुत होना । दस
सहस्र सेना सजना ।

छंदवाधा हंस कहै नृप राज विचारं । जो पूछो कारन कृत्यारं ॥
देव गिरि जद्दों नृप भानं । ता पुत्री ससिवृत्त सुजानं ॥ १६५ ॥
सो मंगी कम धज्ज सुराजं । तिहि गुन सुनि चहुवानं मुताजं ॥
छडे तमि पित मान सुजान । बरन बृत्त लीनै चहुवानं ॥ छ० १६६ ॥
हर सेवा सुमंडय कलेसं । तप आचरन क्रम्म सदेस ॥
हौं गुन तास हंस भय रूप । पुछि त्रिय कारन तुनिय सु भूप॥छ०१६७॥
दील्ली वै अच्छे दृढ़ नेम । हो पठयो सु तुज्झ प्रति प्रेम ॥
प्रसन ईस अंबिका समेतं । बुल्यो राज संल सबेत ॥ छं० १६८ ॥
चढ़न कह्यि राजन सो हेमं । उड्डि चलो दक्षिण तुम देम ॥
सुनत श्रवन चढ्यो नृप राजं। कहि कहि दूत दुजन सिरताजं॥छ०१६९॥
भय अनुराग राज ढिल्ली वै । दस सहस्र सज्जी न्रप हेवं ॥ छ० १७० ॥

राजा का कहना कि जादव राजा के गुणों का वर्णन करो ।

गाथा– जंपै दुज सम राजं । तव गुन ग्रंन कीन अपारं
हम गुन किम संभरियं । लग्गे श्रोतान राग किम जद्दों ॥ छं० १७१॥

---

1. मो०—धारा । 2. मो०—कह ।
3. मो०—करि ।

हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना।

दूहा– हंस कहै राजन्न सुनि। इह उतपति अनुराग ॥
श्रवन सुनो संभरि सु पहु। कहौं वृत्त संलाग ॥ छं० १७२ ॥

कवित्त– देवग्गिरि नृपभान। सोम वंसी सुतपं नृप ॥
तिन अनंत बल सेज। बहुल है गै पैदल तप ॥
नयर मध्य कोटीस। बसैं बानिक्क अनंत लछि ॥
धर्म तप्पनह पार। न कोऊ दास रहै इछु ॥
सा एक लष्ष पयदल पुलत। षग्ग जोर [1]षूनं वहै ॥
जद्दव नरिंद सब गुन कुसल। धन प्रताप दिन दिन लहै ॥ छं० १७३ ॥

उनके बेटे और बेटी के रूप गुण का वर्णन।

तास पुत्र नारेन। पुत्रि ससिवृत्ता प्रमानं ॥
दुअ अनंत मूरत्ति। रूप मकरद सु जान ॥
भगिनि भ्रात दुअ प्रीत। पिता माता प्रिय मानं ॥
अति उछाह रग रमै। असन इक ठाम प्रधानं ॥
सबरिष्ष भई सत्रहऽरु दुअ। अति अभुत लच्छिन प्रबल ॥
ललित सरूप पिय चंद सम। राजकुंअरि राजै अतुल ॥ छं० १७४ ॥

एक आनन्दचन्द खत्री था उसकी बहिन चन्द्रिका कोट में ब्याही थी, वह बिधवा हो गई और भाई उसको अपने यहां ले आया।

तिन राजन कै मंत्र। नाम आनंद चद भर ॥
तिन भगिनी चद्रिका। ब्याह ब्याही सु दूरि घरि ॥
नैर कोट हिस्सार। ताम षित्रीय प्रमथ बर ॥
अति सु प्रीति नर नारि। सुष्ष अनुभवै दीह पर ॥
कोइक्क दिवस भर तार वहि। तुच्छ दीह परलोक गत ॥
आनई बहनि फिर अप्प ग्रह। अति सु दुष्ष निसि दिन करत ॥ छं० १७५ ॥

वह गान आदि विद्या में बड़ी प्रवीणा थी।

दूहा– अति प्रबीन विद्या लहन। गान तान सुभ साज ॥
केइक दिन अंतर वहिग। गइ अंते बर राज ॥ छं० १७६ ॥

उसके पास शशिव्रता विद्या पढ़ती थी।

तिन संगह ससिवृत्त सुअ। पठन विद्य सुभ काज ॥
देवि कुंवरि अदभुत अवय रंजित है अति लाज ॥ छं० १७७ ॥

---

1. मो०–षूनी।

उसी के मुख से आपकी प्रशंसा सुन कर वह आप पर मोहित हो गई है ।

कवित्त—अब षित्रिन चंद्रिका । कहै गुन नित चहुवान ।।
जेस पराक्रम राज । तेइ बरने दिन मानं ।।
राजकुंअरि जब सुनै । तबै उब्भरै रोम तन ।।
फिरि पुच्छै ससिवृत्त । सद्दि एकंत मत्त गुन ।।
जे जे सु पराक्रम राज किय । सोइ कहै षित्रिन समथ ।।
श्रोतान राग लग्यो उअर । तो वृत्त लिनौ सुनौ सुकथ ।।छं०१७८ ।।

यों ही दो वर्ष बीत गए, बाल्यावस्था बीतने पर काम की चटपटी लगी ।

दूहा—यों वरष्ष दुअ विति गय । भइय बैस बर उंच ।।
तब कामन सु कलेव मुर । करे सेव मुनि मव ।। छं० १७९ ।।

तभी से नित्य शिव की पूजा कर के वह तुम्हें मिलने को प्रार्थना करती रही ।

हर सेवा निस प्रति करै[1] । मन वचा क्रम वंध ।।
बर चहुआन सु कामना । सेवा ईस सगंध ।। १८० ।।

कवित्त—कहै हंस सुनि राज । करों ब नन सु कह्यो गुर ।।
दिवस च्यार प्रजत । ओर मो सरन लह्यो पर ।।
सेवत नित प्रति ईस । मास पंचह वित्तिय वर ।।
एक सुदिन सिव सिवा । व त्रन संपुट लग्गी कर ।।
देवाधि देव सुनि ईस वर । करि सुचित्त कूंअरि सु व्रत ।।
पारथ्थ रुंड माली सरस । पर मंगा गवरी करत ।। छं० १८१ ।।

दूहा—इह सुनि दस दिन गए बहि । सुनि रहि वचन सुईस ।।
एक सुदिन ससिवृत ने । किय द्रढ नेम जगीश ।। छं० १८२ ।।
बर बरिहों संभरि सु पहु । बियो पुरुष सुझ भ्रात ।।
मिलन किया हर साम प्रति । भषिवैं संनर घात ।। छं० १८३ ।।

शिव पार्वती का प्रसन्न हो कर सपने में वर देना ।

बचन सिवा सिव वाच दिया । पति पावै चहुआन ।।
बर प्रमुदिय प्रथमाधि पति । हुअ सु नंतर मान ।। छं० १८४ ।।
कै जानै मन अप्पनो । कै षित्रिन कै ईस ।।
और शिवा सुनि ईस प्रति । किय अस्तुति बर दीस ।। छं० १८५ ।।

---

1. मो०—करत ।

प्रसन्न हो कर शिव पार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि जयचन्द व्याहने आवेगा सो तुम रुक्मिणी हरण की भांति इसे हरण करो।

कवित्त - हुअ प्रसंन सिव सिवा। बोलि हूं पठय तुम्ह प्रति ॥
इह वरनी तुम जोग। चंद जोसना वान बृत ॥
ज्यों रुकमिनि हरि देव। प्रीति अति बढ़े प्रेम भर ॥
इह गुन हंम सरूप। नाम दुजराज भनिय चर[1] ॥
बुल्लिय सु पिता कमधज्ज नर। व्याहन पठयौ सुर गुर दुज ॥
आवै सु भ्रात जैचंद सुत। कमध्र पुंज व्याहन सुकज ॥छं०१८६॥

राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों व्याह रचा और क्यों प्रोहित भेजा।

दूहा - फिरि राजन यों उच्चरिय। सुनि दुजराज सुजान ॥
पिता व्याह क्यों कर रचिय। क्यों प्रोहित पठवान ॥ छं० १८७ ॥

हंस का कहना कि राजा ने बहुत ढूंढ़ा पर दैव की इच्छा उसे जयचन्द ही जंचा। वहां श्रीफल ले प्रोहित को भेजा।

कवित्त कहै दुज सकल बांनि। अहो ढिल्ली नरेस सुनि ॥
देवगिरी जद्दव नरेस। रचि बहु भाति व्याह गुनि ॥
अति रचना विधि करिय। तासु गुन कहि न सकों बर ॥
संषपक दुज कही। सुनि रु राजन कहै नर ॥
प्रोहित सुहन्थ जदुनाथ लै। पठइय श्रीफल सुदिन धरि ॥
कनवज्ज दिमा इकमास प्रति। चलि[2] राजन गुर मिलि सुजुरि ॥
॥ छं० १८८ ॥

प्रोहित ने जयचन्द को जाकर श्रीफल और वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया।

मिले राज जयचंद। सु गुर प्रोहित्त समत्थं ॥
पठए जदव सुनाथ। वस्त श्रीफल सुभ सत्थं ॥
हय साकति सजि पंच। सहस इक वस्त्र पटंबर ॥
मुत्ति माल जुरि पंच। अवर जो वस्त व्याह पर ॥
हेमंग पंच सत लेइ दुज। सुर राजन अग्गै धरिय ॥
ते वस्त अनेकं विधि सुवर। रंजि राज अप्पन सु जिय ॥छं०१८९॥

१. मो०–बर।
२. मो० चलि राजगुर।

टीका देकर प्रोहित ने कहा कि साहे को दिन थोड़ा है सो शीघ्र चलिए।

मिलि प्रोहित जैचंद। दियौ श्रीफल सुबिंद कर ॥
जे पठई बर वस्त। अग्ग लै धरिय राज बर ॥
सोइ श्रीफल कमधज्ज। दियौ सुइ अवध पुंज नर ॥
अति उछाह माननिय। मिले रस हास परसपर ॥
बोलयौ तब प्रोहित सुबर। अहो राज पंगुरन सुनि ॥
लै चलै बींद ननकरि [1]बिलंब। दिन तुच्छै साहौ सु पुनि ॥छं० ११०॥

प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तयारी और उत्सव करने की आज्ञा देना।

दूहा—ह्वै प्रसन्न बहु पंगुरै। दियौ हुकुक सुभ बंध ॥
प्रेरि सयूथ जब अप्प पर। अति पर घर सुअ नंघ ॥ छं० १११ ॥
सज्जि सेन चतुरंग नर। देवगिगरि कज व्याह ॥
अति अगनित सथ द्रव्य लिय। नर उच्छव करनाह ॥ छं० ११२ ॥

हंस कहता है कि वह पचास सहस्र सेना और सात सहस्र हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो। पृथ्वीराज ने दस सहस्र सेना लेकर चलना विचारा।

छंद पद्धरी—

चढि चलिय सब्ब रठ्ठौर सेन। उढि रैंन रथ्थ रुविक्रय मुगेन ॥
दस लष्ष सेन सज्जिय कमंध। वारुनिय गंधर्ब सजि मदंध ॥ छं० ११३ ॥
सा अद्ध लष्ष पै पुल्लिय नैर। हज्जार सात मैंगल्ल सु भेर ॥
दर कूच धरे बल वंस [2] बीर। ब्याहनह काज उच्छव सु बीर ॥ छं० ११४ ॥
कह हंस राज राजन सु वत्त। चढ़ि चलौ कन्ह रष्षन सुकत्थ ॥
तुम योग नारि वरनौ [3] कुमारि। हूं पठय ईम तुअ बृत्त नारि ॥ ११५ ॥
उन लियौ बृत तुअ दृढ्ढ नेम। नन करि विरम्म राजनं सु एम ॥
इक मास अवधि दुजकहै वत्त। व्याहन सु काज मन करौ [4] रत्त ॥छं० ११६॥
बर ईस भयौ अरु सिवा बानि। सुख लहौ बहुत हम दुख बषानि ॥
सुनि सुनि श्रवन अनुराग कीन। तन रोम अंग उब्भारि चीन्ह ॥छं० ११७॥

१. मो०—बिरम। २. मो०—बरि।
३. मो०—कुंआरि। ४. मो०—सत्त।

दस सहस सेन सजि पास राज । चढ़नैं सुचित्त करि बाज साज ॥छं०१९८॥

पृथ्वीराज का शशिवृता से मिलने के लिये संकेतस्थान पूछना ।

दूहा –कह संभारि बर हंम सुनि । कह जहँ संकेत ॥
कोन थान हम मिलन है । कहन बीच संमेत ॥ छं० १९९ ॥

ब्राह्मण का संकेतस्थान बतलाना ।

गाथा – कह यह दुज संकेतं । हो राज्यंद धीर ढिल्लेसं ॥
तेरसि उज्जल माघे । ब्याहन बरनीय थान हर सिद्धि ॥ छं० २०० ॥

राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊंगा ।

दूहा –तब राजन फिरि उच्चरैं । हो देवस दुजराज ॥
जो संकेत सु हम कहिय । सो अष्वी त्रिय काज ॥ छं० २०१ ॥

हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहां अवश्य पहुंचिए ।

अरिल्ल—
सो अष्षिय हंम नेम सु दृढ्ढं । तुम अवस्य आवो प्रभु गढ्ढं ॥
सेन माघ त्रयोदसि सा वहि । हाहर सुकलेव थांन मुति भावहि ॥ छं०२०२॥

इतनी वार्ता करके हंस का उड़ जाना ।

दूहा - इह कहि हंस सु उड़ि गयो । लग्यो राज श्रोतान ॥
छिन न हंस धीरज धरत । सुख जीवन दुख प्रान ॥ छं० २०३ ॥

दस हजार सेना सहित पृथ्वीराज का तैयारी करना ।

दस सहस्त्र हेंवर चढिय । न्रप दिल्ली चहुआन ।
हुकम सद्दि साहन कियो । दै सूरन विल्हान ॥ छं० २०४ ॥

राजा का सब सामंतों को हाथी घोड़े इत्यादि बाहन देना ।

छंद भुजंगी –
दियो कन्ह चहुआंन मानिक्क वाजी । जिनं देषतें चित्तकी गत्ति लाजी ॥
मुषंमज्झ पायं कढ़ै बाज राजं । मनो बग्ग मीषं कृतं कढ्ढि पाजं ॥छं०२०५॥
दियो वाजि इंदं बरं जाम देवं दिपै तेज ऐसं चिरं पंष एवं ॥
धरै पाइ ऐसे इलं मज्झि जेसे । सुनै जैन ध्रंमं धरै पाइ तेसे ॥ छं० २०६ ॥
चढ्यो राव कैमास चिन्तं तुरंगी । रहै तेज पासं उछट्टंन अंगी ॥
[1]चमक्कं[2]नालें विसालं खुरंगी। मनो बीज छब्बी कि आभा अनंगी॥छं०२०७॥
उड़ै झार झारं पयं नाल झारी । समं बूंद धावै मनों चार तारी ॥
चढ़े राजहंसं सु चाभंड [3]जोटं । मनो तेजबंधी मुनी बाइ मोटं ॥ छं० २०८ ॥

---

१. मो०–चमक्कति । २. मो०–तालं ।
३. ए०–जोर्ट ।

झुलै [1]कंन मांहीं सिलीका सुग्रीवं । मनों जोति बंध्यो [2]सूनूवातदीवं ।।
चढ्यो राज षीची प्रसंगं पहूपा । उड़ै वास ज्यों वाय [3]वग्गै अनूपा छं०२०९।।
बंध चोर चित्तं चमक्कंत चाहं । हरद्वार छुट्टै कि गंगा प्रवाहं ।।
चढ्यो राज पट्टं अजानंत बाहं । कही कब्बिराजं उपम्माति चाहं ।।छं०२१०।।
दियै [4]बीच तारी कोई नाहि पुज्जै । बलं ताहि दिष्षै सरित्ता अमुझै ।।
दियोमृग्गराजं चढ्यो देवराजी।उड़ै पंखि पाजी रही पच्छ लाजी ।।छं०२११।।
चढ्यो निड्डुरं राइ अंगं अभंगं । छुटै जानि तारान के व्योम मग्गं ।।
चढ्यो हाहुली राइ जंबू नरिंदं । बढ्यो बांन ज्यों तेजकम्मान चंदं।।छं०२१२।।
चढ्यो लंगरी राव लंगा सुबीरं । किधों वाय बढ्यो बुअं जानि धीरं ।।
चढ्यो राज गोइंद आहुट्ठ राजं । किधों वाय बुंदं स छुट्टीय साजं ।।छं०२१३।।
चढ्यो राव लष्षं सु लष्षं पवारं । भ्रमें अंग ऐसे उपम्मा विचारं ।।
किधों अग्गि दंडं ब्रजं बाल फेरें। किधों भोर हथ्थं किधों चक्र हेरें ।।छं०२१४।।
किधों राति बोहिथ्थ भ्रमि भोर नारं । कही चंद कब्बी उपमाति चारं ।।
चढ्यो चंद पुंडीर राजीव नामं । तिनं [5]ओपमा चंद देषी बिरामं ।छं०२१५।।
जिनें गत्ति जीती सयम्नं पगारं। चली अंषि के पंष चित्त बधारं ।।
चढ्यो अत्त ताई उतंगं तुरंगा । मनों बीज की गत्ति आभा अनंगा ।छं०२१६।।
चढ्यो राव रामं [6]रघूवंस वीरं । गति सूर जित्ती मृगं चंद भीरं ।।
चढ्यो दाहिनंदेवनर सिंध कैसे।मनों चित्तकी अर्थ की गत्ति जैसे ।।छं०२१७।।
चढ्यो भोज राजं पहारं त्रिनैतं । फुटै सद्द तेजं अवाजं [7]त्रितेतं ।।
चढ्यो वीर जोद्धं कनक्कं कुमारं । चली कृत्य पूरन्न आचार पारं ।।छं०२१८।।
चढ्यो राव पज्जून कूरंभ बीरं । बढ़े लोह अग्गं धनं जैतपूरं ।।
चढ्यो सामलो सूर सारंग ताजी ।गही होड़ बंधी वयं वाम पाजी ।।छं०२१९।।
चढ्यो अल्हनं बीर बंधव्व पानं । चढ्यो दान ज्यों ग्रहंनं जुद्ध वानं ।।
चढ्यो लष्ष लष्षी सलष्षं बघेला। बढ्योनेत ज्यों देह देषै सु हेला।।छं०२२०।।
चढ़े सब्ब सामंन छल बलत बीरं । मनों भान छुट्टी [8]किरनी कि तीरं ।।
चढ्यो बाज राजं प्रथीराज राजं।तबै पष्षर्यो बाज साकत्ति साजं।।छं०२२१।।
उड़ें सूर ज्यों हंस तुट्टै कमंधं । बरं ओपमा चंद जंपी कविंदं ।।
द्रुमं ज्यों मरोरै [9]शिरंस्वामि हेतं। मयूरंकलाबाज रची बंधि नेतं ।।छं०२२२।।

---

१ ए०—कैन ।
२. ए०—मुनि बात ।
३. मो०—वेगै ।
४. मो०—बाच ।
५. मो०—उप्पमा ।
६. मो०—रघोबंस ।
७. मो०—त्रिनेतं ।
८. मो०—किरन्नं ।
९. ए०—सिरं ।

चढ़े सब्ब सामंत सामंत बीरं। तबै जग्गियं जानि जोगाधिधीरं ॥
जगी जोग माया सु जग्गीय थानं। प्रलीनं प्रलै ज्यों प्रलीन प्रमानं। छं२२३॥
जगें बीर बीराधि डोरूं बजावै। नचै नद्द नंदी त्रिघाई त्रिघावें ॥ छं०२२४ ॥

माघ बदी पञ्चमी शुक्रवार को पृथ्वीराज का यात्रा करना।

दूहा —[1]आगम निगम जानि कै। चलि न्रप सुक्रवार ॥
माह वद्दि पंचमि दिवस। चढ़ि चलिये नुर तार ॥ छं० २२५ ॥

चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना।

छंद त्रोटक -कवि चंद सु ब्रंनन राज करं। सोइ त्रोटक छंद प्रमान धरं ॥
जिहि च्यार परे सगना सगनं। सुभ अच्छिर लाइ तजे अगनं ॥ छं० २२६ ॥
विवहार धरै बरन सु बरं। पढ़ि पिंगल बाहन केन हरं ॥
बर चोजन चारु सुरंग इलं। तहां झौर न मोर सुरंग हुलं ॥ छं० २२७ ॥
गज उप्पर ढाल ढलक्कि तरं। सुकहों तहां केलि[2] अचिज्ज बरं ॥
तहा पल्लव लल्लित रत्त वचं। तहां जे धन दंतिय पंति रचं ॥ छं० २२८ ॥
झमकै बर नंग मयूष कसी। निकमी तहा केतक सी विकमी ॥
सु चलें बर मंद सुगंध प्रकार। बढी दिमि दस्स मु उज्जल मार ॥छं०२२९॥
बजे मद्दु रंग सु गंधन भ्रंग। बजे सहनाइ न फेरि उपंग ॥
हल बर लत्त पवन्न झकोर। घरघ्घर होहि पिलग्पित जोर ॥ छं० २३० ॥
बुलै कल कंठ मु कंठह सद्द। तहां चढ़ कव्वि वसीठ उवद्द ॥
सत्रेम कुसंम रु अंकुस पानि। हुने हर काम असो गज जानि ॥ छं०२३१ ॥
अतमी बर पुप्फ सु वाढ़हि भृंग। बजै गज पांनि सु इंदुब रंग ॥
लता ललिताह हलावन ढाल। उतह जम लग्गय रुगतिताल ॥ छं० २३२ ॥
विक्रामित केसर [6]कुंकुम कांम। सरोज मुरंभ अनूपम नांम ॥
उहा मिटि ताल तरगिनि कांम। उहा चलितेनिय ना तिहि ठांम ॥छं०२३३॥
उहा बरहा जनु उप्परि केल। किने तब ढीठ हिया छबि मेल ॥
हले जनु नेजे षजूर बसंत। ढली बन राह मुढालह मंत्र ॥ छं० २३४ ॥
तजी बर बाल सुरंग सुभेस। चल्यो प्रथिराज सु दच्छिन देस ॥
विरदै चहु विप्र कहै कविचंद। सही चहुआन प्रथी पर इंद ॥ छं० २३५ ॥
दूहा चढ़ढि चलिय प्रथिराज बर। देवग्गिरिघ्घर राज।
तव सुकन्ह बरदाय बर। पुच्छिय बिगत सुकाज ॥ छं० २३६ ॥

---

१ ए०—अगम निरागम। २ मो०—अचजिब। ३. मो—लालित।
४. ए.—उतंग। ५. मो०—गिन।
६. ए०—कुसुम। ७. मो०— सरूप।

कहत कन्ह बरदाय बर । अहो राज सुभ मांनि ॥
कही पथांन सज्यौं कहां । सोहम कहो प्रमांन ॥ छं० २३७ ॥

चलने के समय राजा को भय दिलाने वाले सकुनों का होना ।

कवित्त – चढ़त राज प्रथिराज । सगुन भै भीत उपन्नो ॥
स्यांम अंग तन छिद्र । कलस सं मुहं सपन्नो ॥
रत्त वस्त्र आरुह्य । रत्त तिलकावलि छुट्टिय ॥
मुकत माल छुट्टियं । केस छुट्टिय कस तुट्टिय ॥
लट्टिय अनंग भय भीत गति । मन अलुब्भ निद्रा [1]असति ॥
विब्भाइ भाइ उनमोद पति । मंद मंद सक्रति हसति ॥छं० २३८॥

राजा का इन शकुनों का फल चन्द से पूछना ।

अरिल्ल-सो भय भीत देषि कवि पुच्छिय।जंपि कहो मति मोहि सु अच्छिय॥
तुम सब जांन त्रिमान प्रमानं । जंपि कहो कविराज सुजानं ॥छं० २३९॥

चन्द का कहना कि इस शकुन का फल यह होगा कि या तो कोई झगड़ा होगा या ग्रहविच्छेद ।

दूहा – पाछे बीर सगुन्न भय । ते कहंत कविचंद ॥
कै दंदग्गेनय ऊपजै । कै नवीन ग्रह दंद ॥ छं० २४० ॥

चन्द ने राजा को जैचन्द के पूर्व बैर स्मरण दिलाकर कहा कि इस काम में हाथ देना मानों बैठे बैठाए भारी शत्रु को जगाना है ।

कवित्त सीस डोलि कविचंद । चित्त अंदेह उपन्नो ॥
पुब्ब बैर चहुआन । बैर कमधज्ज दिपन्नो ॥
सवर जोर संग्राम । निबर अंगम्यो न जाइय ॥
को जम हथ्थ पसारि । लेह [2]ग्रह अप्प बुलाइय ।
[3]मंडाय पेट डंकिन सरसि । कौन बांह सायर तिरै ॥
[4]असगुन जानि चहुआन चलि।दै विधान त्रिम्मित करै॥छं०२४१॥

वय, पराक्रम, राज और काम मद से मस्त राजा ने कुछ ध्यान न दिया और दक्षिण की ओर शीघ्रता से बढ़ चला ।

कवित्त – बेस मद्द बल मद्द । और बंध्यो सुरतानी ॥
राज मद्द उनमद्द । काम मद्दह परिमानी ॥
अरु श्रवनी श्रौतांन । तीन बंध्यो चहुआनं ॥
दल बद्दल पावस्स । चल्यो दछिन भर वानं ॥

---

१. मो०–असित ।　　२. मो०–सह ।
३. ए० कृ० को०–मैमय ।　　४. ए० कृ० को०–असुगन ।

[1]छतीस कुली बर वंस विय । चढ़ि प्रथिराज नरिंद चलि ।।
उपवन्न बंब बज्जी विषम । खान थान द्रिगपाल हलि ।।छं०२४२।।

पृथ्वीराज से पहिले जैचन्द का देवगिरि पहुंचना ।

दूहा —इन अग्गें कमधज्ज लै । आइ संपतो थान ।।
माघ नवमि त्रंबक बजे । चहुआना परिमान ।। छं० २४३ ।।

जैचन्द के साथ की एक लाख दस हजार सेना का वर्णन ।

जैचन्द का आना सुन शशिवृता का दुखी होना ।

कवित्त —[2]एक लष्ष दस अग्ग । सेन सज्जे कमधज्जं ।।
बीय सहस बारुन्न । सत्त हज्जार फवज्जं ।।
अद्ध लष्ष पैदल्ल । अद्ध साइक वहंतं ।।
सजि समूह चतुरंग । दिसा दछिन [3]परजंतं ।।
सुनि श्रवन कुंअरि शशिवृत्त लिय । सुनि अवाज बर बीर घन ।
चहुआन वृत्त लीनी अधम । प्रान हीन कढ्ढन सुमन ।।छं०२४४।।

शशिवृता मन ही मन देवताओं को मनाती है कि मेरा धर्म न जाय और उसका प्राण देने को प्रस्तुत होना ।

दूहा -मिलि पूजे बर बीर को । करी भगति घन भाइ ।।
बाला प्रान [4]सुकढ्ढनह । अंतर ध्रम्म न जाइ ।। छं० २४५ ।।

सखी का समझाना कि व्यर्थ प्राण न दे, देख ईश्वर क्या करता है । ईश्वरी लीला कोई नहीं जानता । सखियों का श्रीरामचन्द्र, पाण्डव आदि के प्राचीन इतिहास सुनाकर धीरज धराना ।

[5]कहै सषी समझाइ कर । पुब्ब कथा कहु मंडि ।।
घरी अद्ध जो सुनिहि तुअ । प्रान बाल नन छंडि ।। छं० २४६ ।।

छंद पद्धरी —मिलि बाल ताहि रचि कहै बत्त । संग्रहन भवन क्यों मिटै पत्त ।।
दैवान बत्त जानै न कोइ । लिष्षे जु अंक मिट्टय न सोइ ।। छं० २४७ ।।
बल बीर जुद्ध पंडव नरेश । बन ग्रह्यौ राज मुक्क्यो सुदेश ।।
[6]जिप्पनह सब्ब दृगपाल जोग । संध्यो सुजोग तजि राज भोग ।। छं०२४८ ।।
बलि राइ जग्य आरंभ सत्य । जित्तनह इंद्र आरंभ पत्त ।।
मुक्किय सुथान तिन मान षंडि । सेवहु सुदेव पाताल मंडि ।। छं० २४९ ।।
कट्टन कलंक शशि जग्य कीन । का कुष्ट अंग छिन मान हीन ।।
नघु राइ कीन राज सु अनूर । का कुष्ट काल संड्र्यो कूप ।। छं० २५० ।।

---

१. मो०—छत्रीस ।
२. ए० कृ० को०—एह ।
३. ए० कृ० को० करजंतं ।
४. मो०—कढ्ढतेह ।
५. मो०—कही ।
६. मो०—जिप्पताह ।

श्रीराम हृथ्थ पकर्‌यो प्रबीन । आरन्य बहुत दुष सीय कीन"॥
गुरुदेव त्रिया तारा प्रमान । सकसोरि परी देवन समान ॥ छं० २५१ ॥
सिय लई निशाचर रूप चीह्न । मिलि देव जुद्ध आरंभ कीन ॥
आतम्म घात [1]मंडी विशाल । पावै न सुष वे भ्रमें काल ॥ छं० २५२ ॥
तिय मात तात बंधह्‌ सु देहि । बाला विचित्र ते [2]वृत्त लेहि ॥
कुल जाहि ध्रंम ग्रह राजनीति । जैमंडहि बाल गुर जनन जीति ॥छं० २५३॥
शशिवृत्त जु वत्तिय मत्ति मानि । हित काज मत्ति हम दै प्रमान ॥
पंषी न पच्छि को लगै धाइ । आवै न वृत्त पै जंम जाइ ॥ छं० २५४ ॥
आवै न मेह्‌ ग्रह लगै अग्गि । पावै न जीव को दान मग्गि ॥
मानै न विनति तिन मंत सुझ्झ । जनु कान हीन गुर कही गुझ्झ ॥छं०२५५॥
मंनै न बाल उर मत्त मान । चित्यौ सुतात कढ्ढन परान ॥ छं० २५६ ॥
चौपाई—मिलि बाल रचावे बाले । तन मनमने न चित व्रत साले ॥
बहुत करे सिंगार सार । मनो मृतक नव रंग न धार ॥ छं० २५७ ॥
छंद पद्धरी— राजन अनक पुत्री त्ति ब्याह। शशिवृत्त देव कन्या सिवाह ॥
चहुआन चित जुग्गिन [3]पुरेस । आवृत्त बीर जिन कग्हु भेस ॥ छं० २५८ ॥
निब्बरै बाद जो करौ मंत्र । साधम्म वीर कढ्ढै [4]जु कंत ॥ छं० २५९ ॥

राजा का पृथ्वीराज के आने और शशिवृता के प्रेम का समाचार
जानकर हंमीर संमीर (?) से मत पूछने लगा ।

दूहा—कंति कंति प्रति बढ्ढई । चढ़ै चाइ चहुआन ॥
मो पुच्छं प्रति तान जो । बीर चंद दै दान ॥

हंमीर संमीर का मत देना कि वीर चन्द को कन्यादान दीजिए ।

गाथा—बीरं चंद सुदानं । पानं विधाय नित्तयो गुरयं ॥
बुल्लै नृप हंम्मीरं । साइ संमीरं साइ मंगायं ॥ छं० २६१ ॥
दूहा—जे हंमीर संमीर गति । समुह सु दुज्जन भेव ॥
जिन बड़वानल कुप्पयो । सार मन्ति प्रति सेव ॥ छं० २६२ ॥
सार भार संसार कौ । नव निधि नव प्रति पान ॥
ब्याह्‌ वीर शशिवृत्त कौं । अप दीजें प्रति दान ॥ छं० २६३ ॥

कन्या के प्राण देने के विचार और शकुन विचार से राजा भानु
ने चुपचाप पृथ्वीराज के पास दूत भेजा ।

बाल प्रान कढ्ढत सुपुनि । सगुन एक मन मान ॥
बढि अवाज चहुआन की । अली सुन्यौ अप कान ॥ छं० २६४ ॥

---

१. मो०—मंडै । २. ए० कृ० को०—कर्‌ ।
३. ए० कृ० को०—परेस । ४. मो०—सु ।

यों सु सुनिय न्रप भांन नें । पुत्रि प्रलय व्रत कीन ॥
घर [1]पिष्षिय चहुआन पै । जद्दव [2]मोकल दीन ॥ छं० २६५ ॥

राजा ने पत्र में लिखा कि शिव पूजा के बहाने शिवाले में तुम को शशिवृता मिलेगी ।

मुक्काए मति वंतिनी । न्रप कग्गद दै हथ्थ ॥
पूजा मिसि बाला मुभर । संभु थान मिलि तथ्थ ॥ छं० २६६ ॥

इधर पृथ्वीराज के सरदारों का उत्साहित होना ।

कवित्त—हय गय दल चतुरंग । कंक मंड्योति कन्ह सिर ॥
राजद्दव वग्गरी । रांम रघुवंम जुद्ध जुर ॥
निड्डर रा रट्ठौर । सेन मज्जे भ्रत रज्जे ॥
एक एक मंपज्ज । एक एकन गुन लज्जे ॥
जुग्गिनि डहकि बंबरि लसथ । जिम जिम शंकर सिर [3]धुनिय ॥
अत ताइ उन उत्तंग बर । बावारो सारह [4]सुनिय ॥ छं० २६७ ।

कवि कहता है गन्धर्व व्याह शूरवीर ही करते हैं ।

गाथा—सार प्रहारति भेवो । देवो देवत्त जुद्धयो बलयं ॥
गंध्रब्बी प्रति ब्याहं । सा व्याहं सूर कल्यामं [5] ॥ छं० २६८ ॥

पृथ्वीराज का आना सुनकर मन ही मन राजा भान का प्रसन्न होना, परन्तु वीरचन्द का सशंकित होना ।

कवित्त—मन [6]सद्धि संमुहिय । भान आवाज राज सुनि ॥
प्रान लद्धि जो मद्धि । लाज लभ्भी जु सूर धुनि ॥
प्रिय विरहिनि रिधि रंक । कै ध्यांन लभ्भै जोगिंदं ॥
बलह काम कलहंत । कि कह विश्वासत इंदं ॥
संभरिय कान संभरि नृपति । बीर चंद आगम विषम ॥
निह काल काल भंजन गढ़ै । बढ़ै सार सारह विभ्रम ॥छं० २६९।

दूहा—मार धार पूजै नहे । पिति सामंत न नाथ ॥
आवृत्त बीर क्यों पूजई । देव देवतह साथ ॥ छं० २७० ॥

गाथा—दुअ वंस अंम सरिसं । बज्र बाहु बलयो बलयं ॥
बज्र दृष्टिति रिष्टं । सानिष्टं अष्टयो किलयं ॥ छं० २७१ ॥

अरिल्ल—बर बरिष्ट बर लोभ प्रकार । लष्ष लष्ष सा मंतह सार ॥
तिन बर बर अंगम प्रति जानिय । सो देवत देवत्तह मानिय॥छं०२७२।

१. ए० कृ० को०—छिप्पय । २. मो०—कलि ।
३. मो०—धमुय । ४. मो०—सुनय ।
५. कलयामि । ६. मो०—सद्ध ।

कवित्त—अति प्रचंड बलवंड। बीर [1]बाहरू तत्ताइय।
माया हीन मसंद। दंद दारुन डर नाइय॥
दल दुंदन सिंधु रहि। बाहु दंतन उष्पारहि॥
एक एक संग्रहै। एक शस्त्र करि डारहि॥
देवत्त वाह देवत्त भर। देवगिरि संम्हो चलिय॥
बर बीर धीर साधन सकल। अकल महूरति मति कलिय॥छं० २७३॥

दूहा—अकल बीर रस अफल भुज। कलि न जाहि सामंत॥
भीम भयानक बल सु वृत। जे भंजै गज दंत॥ छं० २७४॥
[2]लब्भै जस लिष्षीय बर। दैव जोग नह[3] हथ्थ॥
पुब्ब दई प्रथिराज कों। सोइ प्रन मन समरथ्थ॥ छं० २७५॥
चाहुआन के कृत सयन। मरन सरन प्रथिराज॥
उभै सिंघ दुअ बीच पल। उभै सिंघ सिर ताज॥ छं० २७६॥

गाथा—घटिका उभय सु देवो। रहियं निकट राजनं ग्रामं॥
जानिज्जै नृप नैरं। दिष्ष न काजेंव सोभियं नैनं॥ छं० २७७॥

दूहा—रंध्र गवष्षनि नैर मधि। जारि न बित प्रमान॥
मानहु नृप प्रथिराज को। रंध्र नैन [4]प्रत प्रान॥ छं० २७८॥

पृथ्वीराज का नगर में होकर निकलना, स्त्रियों का झरोखों से देखना, शशिवृता का प्रसन्न होना।

कवित्त - दुहूं पास नृप नयर। राजा दिष्षै प्रति राजं॥
मनों हथ्थ बर नयर। राज मंमुह प्रति साजं॥
कोट कठिन मेखल सु। कटि द्रिग पलक उघारिय॥
राज किति सभरन। गोष श्रवनन संभारिय॥
किंकिन सुपाइ घंघर सु गज। राज निसान सबद्द प्रति॥
चहुआन राव आगम सु व्रत। कमल हीय बद्दिय मुरति॥छं० २७९॥

राजा भान के हृदय में पृथ्वीराज का आना सुनकर हर्ष शोक साथ ही उदय हुआ।

दूहा—काम कलह रत बढ्ढि प्रति। सुनिय भान नृप कान॥
आनंदह दुष उप्पज्यौ। मरन सु निश्चय मान॥ छं० २८०॥

श्लोक—मंगलस्य सदा व्याहं। अव्याहं सु मंगलं॥
ब्रह्मा चकितं समो दृष्टे। [5]जेक कंज सु कंजकिः॥ छं० २८१॥

---

१. मो०—बाहरू तणाइय।
२. मो०—लभै सुजस लिषसंत बर।
३. मो०—नन।
४. मो०—तजि।
५. मो०—कंचे कंज सुकं कजसि।

पृथ्वीराज की सेना का उमङ्ग के साथ नगर में घूमना।

कवित्त – फिरिंग पंति विहु पास। सूर उब्भो चाव ह्रिसि ॥
अतित जुद्ध आवद्ध। मत्त वरषंत बीर असि ॥
और व्याह मंगलह। व्याह मंगल अविकारिय ॥
परि पिशाच दानव। सु बुधि मग्गह विच्चारिय ॥
नन करहु तात दुष पुत्त को। घर लीनी जम मद्दकैं ॥
प्रथिराज राज राजन बलिय। को पुज्जै रन बद्दिकैं ॥ छं०-८२ ॥

दूहा – को पुज्जै बद्दत [1]सुरन। बयन सयन प्रथिराज ॥
अवत जित्ति जित्तिय सयल। [2]को मंडै कृत काज ॥ छं० २८३ ॥

गाथा – को मंडै कृत काजं। साजं जुद्धय सूर योवनं ॥
तारिज्जै सजि राजं। बकिम भूमायं बिषमयं होई ॥ छं० २८४ ॥

देवालय में शिव पूजा के लिये शशिवृता का आना। पृथ्वीराज का वहां पहुँचना।

देवालय भगवती। पूजैवं पूजयो बालं ॥
सुबर पुछ्यो प्रथिराजं। कुज संसा बीरयो हृथ्थं ॥ छं० २८५ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा – विषम ठौर बंकम विषम। कल [4]सोभित वृत कद ॥
जो प्रथिराजह अग मे। मनो प्रथी पुर इद ॥ छं० २८६ ॥
मनो राज पृथ्वी पुरह। धनि सुध्रम्म लवलेश ॥
मानहु बीर नरिद को। रति आयो अविशेश ॥ छं० २८७ ॥

सखी का शशिवृता से कहना कि तू जिसका ध्यान करती थी वह आ गया, देख।

यों करंत [5]दुत्तिय बियो। कथा श्रवन सुनि मंत ॥
जाकों तें पतिवृत्त [6]लिय। सो आयो अलि कत ॥ छं० २८८ ॥

शशिवृता का आंख उठाकर देखना। दोनों की आंखे मिलना।

श्रवन नयन का मेल कै। भय चंचल चल चित्त ॥
श्रोताने दिष्टांन अह। मिलि पुच्छै [7]दोइ मित्त ॥ छं० २८९ ॥

---

१. ए० कृ० को०–बरषम। २. ए० कृ० को०–नर।
३. मो०–मंडै को। ४. मो०–सोभन।
५. मो०–दुहिय। ६. मो०–लियौ।
७. मो० दोय।

मारे लाज के कुछ बोल न सकी पर नैन की सैन से ही बात हो गई।

चंद्रायना—कर्न प्रयंत कटाछ सुरंग बिराजही।
कछु पुच्छन कों जाहिपै पुच्छत लाजही ॥
नेंन सेंन में बात स्रबनन सो कहै ॥
काम किधों प्रथिराज भेद करिना लहै ॥ छं० २९० ॥

नैन श्रवण का संवाद।

दूहा—नेंन श्रवन्नन पूछई। तुम जानें बहु भंत ॥
मेरे जीय अंदेस है। कह्री न मैं पिय जंत ॥ छं० २९१ ॥
श्रवनन सन नेंना कही। [1]तुम जानो चहुआन ॥
काम नृपति को रूप धरि। आवत है इन थान ॥ छं० २९२ ॥

हंस ने पहुँचकर शशिवृता से कहा कि ले पृथ्वीराज शिवालय में तुझ से मिलने आ गया।

ताम हंस आयो समषि। कह्यो अहो शशिवृत्त ॥
चाहुआन आयो प्रछन। मिलन थांन हर सित्त ॥ छं० २९३ ॥

कवित्त—[2]घरि गांम जद्दव नरिंद। उब्भे बिहु पासं ॥
एक नंषिय रंभा सु। करन आरंभ प्रत्रास ॥
एक एक गुन करहि। सब्ब फूले सत पत्रं ॥
तिन मध्यह शशिवृत्त। भई कम्मोदनि मंत्रं ॥
[3]गित पुच्छि पुच्छि परिवार सब। पुच्छि बंध रज्जन सकल ॥
आवृत्त तात अग्या सुग्रहि। भईय बाल बुध्या विकल ॥छं०२९४॥

दूहा—विकल बाल जहं सकल हुअ। बुद्धि विकल प्रति साज ॥
[4]भान वचन सच्चै सुकरि। जिन अप्पी प्रथिराज ॥ छं० २९० ॥

गाथा—बीरं चंद सुव्याहं। सो व्याहं जोगिनीपुरयं ॥
संभरि क्रन शशिवृतं। अगम बीराइमं जनंत तयो ॥ २५१ ॥

माता पिता की आज्ञा ले शशिवृता का देवालय में जाना।

कवित्त—पुच्छि मात पित पुच्छि। पुच्छि परिवार ग्रेह सब ॥
मैं वृन लियो निबद्ध। गवरि पुज्जनं बाल जब ॥
तिन थानक सब देव। नीति आरंभ व्रत लीनी ॥
तब प्रसाद उप्पनो। मोहि इच्छा व्रत दीनी ॥

---

1. ए० कृ०—जिन।
2. ए०—घोरि।
3. मो०—गति।
4. मो०—तान।

तिन काल व्रत लीनौ समैं । गवरि प्रसाद सु पुज्ज फल ॥
बारंज बात तुअ मोह हुअ।कहै और अब लहि [1]अफल ।छं०२९७॥

दूहा—दुष देवल कौ छंडनह । उर सिंचन अंकूर ॥
दीह काल बल वीचि बदि । लिय समान मंपूर ॥ छं० २९८ ॥

शशिवृता के रूप का वर्णन ।

बाला बेनी छोरि करि । छुट्टे चिहुर सुभाइ ॥
कनक थंभ ते ऊतरी । उरग सुता दरसाइ ॥ छं० २९९ ॥

कबित—तजि भूखन बर बाल । एक आविज्ज उपन्नौ ॥
लता हेम पर चंद । उभै षजन ढिग चिन्हौ ॥
श्रीफल उरज विमाल । बाद्दवर भ्रग सुपत्ती ॥
सुकि मुत रग अरन्नि । करी भग्गावल वत्ती ॥
सोभंत उरगपति भुअ शरन । हम मुनि चर [2]बर करी ॥
सुध काज चढै पन्नील सुत । काम पनिनी दुख डरी ॥ छं० ३०० ॥

दस दासियों के साथ शशिवृता का शिवालय में आना ।

दूहा -ते दासी दस बाल ढिग । तिन बरने कवि चद ॥
तिन में बाल सुमोभियं । मनो प्रथीपुर इंद ॥ छं० ३०१ ॥

शशिवृता का रूप वर्णन ।

छंद त्रोटक मय मंजन मडित बाल तन । घनसार सुगंध सुघोरि घनं ॥
नव लोइन अंजित मजि चली। कि मनो कम कुंदन षंभ हली।।छं०३०२॥
सुभ वस्त्र सुअंग सुरंगनमी । सुहली मनु साष मदन्न कमी ॥
जरि जेहरि पाइ जराइ जरी । सजि भूषन नभ्भ मनो उतरी॥छं०३०३॥
सिगरि लट यो बिथरी विगमें । शशि के मुख तें अहि सें निकसें ॥
रंग रत्त उबट्टन उज्जल के । तिन मे कछु सेत सुधा चलि के॥छं०३०४॥
नव राजियरोम बिराज इसी । जमना पर गंग सरस्वति सी ॥
परि पान सु कुंकन मज्जन कै । नव नीरज अंजन नेंननि कै ॥छं०३०५॥

दूहा —छुटि म्रग मद के कांम छुटि । छुटि सुगध की बास ॥
तुंग मनों दो तन दियो । कचन षंभ प्रकाम ॥ छं० ३०६ ।

कुंडलियां —धर उप्पर कुच कनि परी । राजस तामस रंग ॥
तीजो तिहि सम काम मिलि । सो ओपम कवि अंग ॥
सो ओपम कवि अंग । मदिन मिलि काम पतंगी ॥
चढ़त घरं संमूह । करी भइ फेरि पतगी ॥
*बरं सिर दार बिमार । संभु चहुआन नाह नर ॥
गंग यमुन भारत्थ । हुत्य जोरंत सु अद्धर ॥ छं० ३०७ ॥

---

[1] मो०–सफल । [2] मो०–चर ।
*छं० ३०७ के दोनों अंतिम पद अशुद्ध है । पाठ चारों प्रतियों में समान है ।

दूहा— तिमिर वीर गवनं कुवट । त्रिगुन तेज रवि त्रास ॥
चवनित विक्रम परिस की ।[1] काम ज्वाल बल ह्रास ॥ छं० ३०८ ॥

कुंडलिया— करि मज्जन सज्जन सुक्रम । आभूषन न समान ॥
केहूं काके कोहि दिसि । सजि सषि नैन कमान ॥
सजि सषि नैन कमान । केश बागुरि विस्तारिय ॥
हावभाव कट्टाच्छ । ठुंकि षुट्ठी दिय भारिय ॥
बेठि नैन न्रप मूल । पेम [2]देषन गहु सज्जन ॥
मन मृग पिय कृत काज । ताकि वंधन किय मज्जन ॥छं० ३०९॥

छंद नाराच— सुगंध केस पासयं । सुलग्गि मुत्ति छंडियं ॥
अनेक पुप्प बीचि गुथि । भासिता त्रिषंडियं ॥
मनों सनाग पुप्फ जाति । तीन पंथि मंडियं ॥
दुती कि नाग चंदनं । चढ़ंत दुद्ध पंडियं ॥ छं० ३१० ॥
सिंदूर मध्य गुच्छता । म्रगंमदं विराजयं ॥
मनो कि सूर उग्गतें । [3]गहे सु पुत्र लाजयं ॥
सु तुच्छ सुच्छ पाट आट । प्रेम बाट सोभियं ॥
मनो कि चदं राहु बान । वे प्रमान लोभयं ॥ छं० ३११ ॥
कनक्क काम कुंडिलं । हुलत तेज उब्भरे ॥
ससी सहाइ मान भाइ । सज्जि सूर दो करे ॥
दूती उपम्म बिंद की । किरन्न चंद दिट्ठयं ॥
मनों कि सुर इंद गोदि । अप्प आनि विट्ठयं ॥ छं० ३१२ ॥
भुवन्न बंकं संक जूअ । नैन म्रग्ग जूवयं ॥
ऊरद्धता चपल्ल गत्ति । अच्छ आनि ऊवयं ॥
कटाक्ष नैन बंक संक । चित्त मान वकयं ॥
सुछंडि वे सु कुन्चितं । श्रवन्न बान नंपयं ॥ छं० ३१३ ॥
सुगंधता अनेक भांति । चीर चारु मंडियं ॥
सु केहरी कटि प्रमान । बीच बंधि छंडियं ॥
सुरंग [4]अंग कंचुकी । सुभंत गात ता जुरी ॥
बनाइ काम पंच बान । ओट जोट लै धरी ॥ छं० ३१४ ॥
सुरंग [6]माल लाल बाल । ता विसाल छंडयं ॥
सु पुब्ब बैर जानि काम । अग्गि संभ मंडयं ॥
[7]दुती उपम्म मुत्ति माल । यों विसाल ता कही ॥

१. मो०—हल । २. मो०—बेषन ।
३. मो०—चहुत रहे लाजयं । ४. ए० कृ० को० अप्प ।
५. ए० कृ० को०—रंग । ६. मो० लाल माल । ७. ए०—उदी ।

जु भारथी सु[1] गंग लै । सुमेर शृंग तें बही ॥ छं० ३१५ ॥
जराइ चौकि स्याम पाट । रत्ति पत्ति तें षुली ॥
सुरंग तिथ्थ थान मंडि । ईस शीश तें चली ॥
सुवर्न छुद्रघंटिकादि । षोडसं बषानयं ॥
सु मुत्ति तात मोर तन्न । [2]गोदरं वषानयं ॥
सुगंध गोप चिन्ह मंडि । पीत रत्त जावकं ॥
बनाइ कें चौंडोल लोल । चढ्ढिता सु सुंदरी ॥
सुदोषिता सुरंग थान । अस्तु तास उच्चरो ॥ छं ३१७ ॥

शशिवृता का चंडोल पर चढ़ कर देवी की पूजा को आना ।

दूहा— सजि शृंगार शशिवृत्त तन । चढ़ि चौंडोल सुरंग ॥
पूजन कौं बर अम्बिका । आई बाल सु अंग ॥ छं० ३१८ ॥

तेरह चंडोलों को चारों ओर से घेरकर राजा भानु की सेना का चलना ।

सज्जि सेन जद्दव न्रपति । दसत तीन चौंडोल ॥
लकरि लाल से पंच अग , दस दिसि [3]लष्षन लोल ॥ छं० ३१९ ॥

सूर्योदय के समय पूजा के लिये आना ।
राजा की सेना का वर्णन ।

कवित्त - अरुनोदय उद्यमह् । सुच्छि लिन्नै सु बंध भर ॥
उभय सहस नाजित्त । ढोल त्रंबकी सुमत गुर ॥
अद्ध सहस नफ्फेरि । सहस सहनाइ सुरंगी ॥
सुवर बीर पूजा प्रमांन । कीनी मति चंगी ॥
बिन पुंज संग सेना सकल । अकल अपूरब वत्त बर ।
चर सकल विकल अलि कुलन को।सुचित मित्त इक्कह सुथिर॥छं०३२०॥

गाथा— गुज्जर वै गुज्जर धनी । सथ्थ सेनाह सब्बयो बीरं ॥
जानैनि सबर अद्धं । उग्गे बा तिमिर तप हरनं ॥ छं० ३२१॥

मन्दिर के पास पहुँचकर शशिवृता का पैदल चलना ।

हरनंत पति तुरंगं । साहस मंत्राय गिद्धयो रनयं ॥
देवालयं पासं । सा पासं बालयं चालं ॥ छं० ३२२ ॥

शशिवृता के उस समय की शोभा का वर्णन ।

छंद नाराच— चली अली बनं बनं । सुभत सथ्थ संघनं
बिहंग भंगयो पुरं । चलंत सोभ नोपुरं ॥ छं० ३२३ ॥

---

१. मो०—मंच २. ए०—सोदरं
३. मो० विप्पन ।

अलीन जुथ्थ आवरं । मनो विहुंग सावरं ॥
चुवंत पत्त रत्त जा । उवंत जानि अंवजा ॥ ३२४ ॥
कलिंद सोभ केसयं । अनंग अंग लोभयं ॥
उठंत कुंभ कुच्चयं । उपंम कब्बि सुच्चयं ॥ छं० ३२५ ॥
मनों जरंत बाल की । धरौ सु आनि लालकी ॥
सुभंत रोमराजयं । [1]प्रपील पंति छाजयं ॥ छं० ३२६ ॥
मनोज कूप नाभिका । चलंत लोभ आलिका ।
सुरंग सोभ पिंडुरी । घरादि काम षिंडुरी ॥ छं ३२७ ॥
नितंब तुंग सोभए । अनंग अंग लोभए ॥
मनौ कि रथ्थ रंभ के । सुरंभ चक्क संभके ॥ छं० ३२८ ॥
नषादि आदि अच्छनं । मनों कि इंद्र द्रप्पनं ॥
ढरंत रत्त एड़ियं । उपम्म कब्बि टेरियं। ॥ छं० ॥ ३२९ ॥
मनौ कि रत्त रत्ताजा । चिकंत पत्र अंबुजा ॥ छं० ३३० ॥

गाथा —[3]मढ़ मे रष्पत बाले ॥ लग्गा सेनाय पास चिहु बीरं ॥
घरि धीरं तन दुरयं । रोमं राज रोमयं अंचं ॥ छं० ३३१ ॥

कान्यकुब्जेश्वर को देख कर शशिवृता का दुखी होना और मन में चिन्ता करना ।

दूहा —बाल घरवक्रति त्रवनि गति । ग्यान मोह विष पान ॥
त्यों कमधज्जे देषि कै । वर चिंतै चहुआन ॥ छं० ३३२ ॥

एक ओर कान्यकुब्जेश्वर की सेना का जमाव होना और दूसरी ओर पृथ्वीराज की सेना का घेरना ।

कवित्त —देषि सुभर [4]लच्छिनति । फौज चतुरंग रिगावै ॥
अरो सेन सम भार । धार भंजत मग पावै ॥
बहु गिरष्टता रिष्ट । हुक्कि अप्पन पर धावहु ॥
सुबर स्यंध आलस्य । स्याल सून्नौ करि पावहु ॥
उट्ठंन बीर बोरहु उठत । सुबर मंच फुनि करिय बर ॥
अभ्भंग सेन भद्दव सरिस । अभंग अंग [5]सज्जे कहर ॥ छं० ३३३ ॥

पृथ्वीराज की सेना का चारों ओर से घेरना ।

दूहा —चाहुआन सब सेन जुरि भिरि रूंध चहुंपास ।
देव दुतिय देवहू दरस । बल बढ्ढिय आयास ॥ छं० ३३४ ॥

---

१. मो०—पपील । २. मो०—दरसंनं । ३. को०—मड़ ।
४. मो०—लच्छिम सु । ५. मो०—सज्जै ।

जैचन्द और पृथ्वीराज की सेना की तुलना ।

कवित्त – असुर सेन कमधज्ज । सु सुर प्रथिराज सेन बर ॥
अमृत किसि संग्रह्यो । मदह भो क्रोध वीर [1]तर ॥
महन मोह रंभनी । तहां शशिवृता समानं ॥
दुहुन बीच सिब्भयं । हेत चहुआन सुजानं ॥
अक्किक्त राह पच्छें फिरग । चक्र तेग सद्धिय सुबुधि ॥
अलि सकति सेन माया विषम । सुबर बीर बद्धिय सु सुधि ॥छं०३३५॥

दोनों सेनाएं तलवार लिए तैयार हैं । जिसने द्रोपती का पण रक्खा वही शशिवृता का पण रक्खेगा ।

दूहा – दुहूं तेग तारुन्य तन । सयन सुक्रति प्रतिकाल ॥
जिन रष्यौ द्रोपत्त पन । सो [2]रष्षै प्रति बाल ॥ छं० ३३६ ॥
देह कंचुकि दह दून अलि । विच सुंदरी अमूल ।
डोल तीस संयोग भति । भी भारथ्थ समूल ॥ छं० ३३७ ॥

गाथा भारथ्थं प्रति राजं । सज्जे सेनाय बीर बीरयं ॥
धीरं धीर सधीरं । अधीरं [3]स्रब्ब सेनायं ॥ छं० ३३८ ॥

दूहा – देषि बाल पारस फिरिय । मेर भान प्रति मान ॥
ज्यों शशि पछ पारस सुभति । शंकर सोभत थान ॥ छं० ३३९ ॥

मठ को देख कर शशिवृता के मन में काम उत्पन्न हुआ और उसने मनही मन शिव को प्रणाम किया ।

शंकर रस आचार किय । मढ़ दिष्षिय प्रति जोइ ॥
मन लग्गिय बंधत सु पय । मन कंद्रप रस मोइ ॥ छं० ३४० ॥

तीस डोलियों के बीच में शशिवृता का चौंडोल था जिसको ५०० दासी घेरे हुई थीं । ५००० सवार और ५०००० पैदल सिपाही साथ में थे ।

कवित्त – [4]दहति तीन चौंडोल । मध्य चौंडोल बाल भय ॥
भमर टोल झंकार । दासि बिटिय सु पंच सय ॥
सित्त पंच असवार । पति मंडिय चावद्दिसि ॥
अद्ध लष्ष पैदल्ल । सथ्थ आयो सुअंग कसि ॥
मंगल विवेक विधि उच्चरे । बंधी बंदन मार करि ॥
उत्तरी बाल देवल सुढिग । लग्गि पाइ परदच्छि फिरि॥छं०३४१॥

---

१. ए०-कृ०-को०-त्रसि । २. ए०-कृ०-को-रष्षै ।
३. मो०-सर्ब, सरब । ४. ए०-कृ०-को०-दसत ।

शशिवृता ने चौंडोल से उतर कर पृथ्वीराज के कुशल की प्रार्थना की।

दूहा —उतरि बाल चौंडोल तें। प्रीति हेत प्रथिराज ॥
जिन देवत्त जु संपज्जो। सो मंडन प्रथिराज ॥ ३४२ ॥

बाजों का शब्द सुनकर सामंतों का चित्त पलट जाना।

मंडन रन छंडन कलह। दल दैवत्त सु जुद्ध ॥
बर वज्जे बाजित्र सुनि। भो सामंत विरुद्ध ॥ छं० ३४३ ॥
विरुध जुद्ध बंधन सुदल। स्वामि ध्रंम्म चित्त पान ॥
दुतिय ध्रंम जानै नही। धनि सामंत बषान ॥ छं० ३४४ ॥

गाथा —बद्धे दलं समूरं। लष्षं सेनाय अवृतं बलयं ॥
ते जग्गे रस बीरं। जानिज्जै जोग जोगायं ॥ छं० ३४५ ॥

सेना में बीर रस का जागृत होना।

छंद भुजंगी —जग्यो बीर बीरं सु डोंरू बजावै।
महा चित्त चित्तं सुमंतं निपावै ॥
जग्यो बीर बीराधि बिराधि रूपं।
मनो ईश शीशं नचै बीर [1]रूपं ॥ छं० ३४६ ॥

दूहा —भयो बीर बीरह तिगुन। नच्यो रुद्र बहु भेद ॥
सो दिष्यो दिष्यो [2]नहे। सो देषन गुन छेद ॥ छं० ३४७ ॥
नह तारक्कि सु जुद्ध बर। नह देवा सुर मान ॥
सो दिष्यौ कमधज्ज सो। चाहुआन बलवान ॥ छं० ३४८ ॥
चाहुआन कमधज्ज बर। बरं षटक्क सुब्रद्द ॥
देवग्गिरि [3]उग्गाहिये। करि भारथ्थ न सद्द ॥ छं० ३४९ ॥

देवालय के पास सब लोगों का चित्रलिखे से खड़े रह जाना।

छंद भुजंगी —सुमद्दे विसद्दे विसद्दे निसानं।
[4]रहे देव थानं [5]बटे देव थानं ॥
रहे सब्ब योंही टगी टग्ग लग्गे।
मनो चित्रलिष्ष त्रिचित्रंत ठग्गे ॥ छं० ३५० ॥

गाथा —जो इज्जे मन चरियं। हरियं एक कग्गयो सबदं ॥
सब सेना कमधज्जं। विटे या बाल सर साय ॥ छं० ३५१ ॥

सखियों का जैचंद के भाई को शशिवृता का बर कहना ओ उसे विष सा लगा।

१. ए०—कृ०—को०—सुपं।
२. मो०—नहीं।
३. मो०—सु—उग्गाहिए।
४. मो०—रहे।
५. कृ०—को०—बढ़े, ए०—बढ़ें।

बर जैचंद सुबंधं । प्रोहित पंग रष्षियं [1]आइयं ॥
सहचर चार सुपढ़ियं । हाकाहकं चाल्यं मनयं ॥ छं० ३५२ ॥

अपनी सेना सहित वह भी शिवपूजन के लिये वहाँ आया ।

दूहा—चढ्यौ पुंज नव साज बर । अरु भर लिन्ने सथ्थ ॥
शंभु थान पूजन मिसह । चलि बर आयौ तथ्थ ॥ छं० ३५३ ॥

तब तक पृथ्वीराज के भी ७००० सैनिक हथियारबंद कपट भेष धारण किए हुए भीड़ में घुस पड़े ।

तब लगि दल चहुआन के [2]ग्रह गुपंति कर आइ ॥
रुक्कि सकै नन मध्य लिय । बोलै संमुह धाइ ॥ छं० ३५४ ॥

कबित्त—सहस सत्त कप्परिय । भेष कीनो तिन वारं ॥
गोप तेग गहि गुपत । कपट कावरि सब भारं ॥
किहुन फरस किहुं छुरी । चक्र किन हाथन माही ॥
किन त्रिसूल किन डंड । सिंगि सब सथ्थ समाही ॥
सा अंग सिह चहुआन लै । दूतन दूत बताई हरि ॥
सा अंग बाल उतकंठ करि । पै लग्गो परदच्छि फिरि ॥ छं० ३५५ ॥

शशिवृता ने चौंडोल से उतर कर शिव की परिक्रमा की और पृथ्वीराज से मिलन होने की प्रार्थना की ।

अरिल्ल—फिरि परदच्छि बाल अपु लग्गी ।
सुमन काम कामना सुभग्गी ॥
मन मन बंधि किया हथ लेवं ।
सुमन मंत्र प्रारंभ सुदेव ॥ छं० ३५६ ॥

*दोहा—उतरि बाल चौंडोल तें । प्रीत प्रात छुटि लाज ॥
शिवहिं पूजि अस्तुति करी । मिलन करै प्रथुराज ॥ छं० ३५७ ॥

शशिवृता का शिव जी की स्तुति करना ।

छंद हनूफाल—प्रारंभ मंत्र सु राम । तिहि जपो अजपा नाम ॥
हरि हरी बरुन विरत्ति । कवि कही चंद क्रिरत्ति ॥ छं० ३५८ ॥
श्रुत कह्यो बेद पुरान । ज्यों सुन्यो श्रवन निआन ॥
तन स्याम अम्मर पीत । रघुवंस राजस रीत ॥ छं० ३५९ ॥
दृग कमल कमला पान । मधु मधुर मिष्टत बान ॥
जिन नाम [3]जनमह [4]कोट । कंद्रप्प लावन मोट ॥ छं० ३६० ॥

---

१. ए०—कृ०को०—आहि ।
२. कृ०—किए, कियउ, कियत ।
* यह दोहा मो०—प्रति में नहीं है ।
३. ए०—कृ०—को०—जनमाहि । ४. ए०—कृ०—को०—ओट ।

गंभीर साइर मान । आदिष्टवान प्रमान ॥
नह बाल वृद्ध किशोर । उर बरन स्याम न गौर ॥ छं० ३६१ ॥
अरि दहन उग्रस कोट । पीवै कि गोपिन [1]पोटि ॥
भ्रम भूलि ब्रह्म भुलाइ । सुरनाथ नाथ नचाइ ॥ छं० ३६२ ॥
निज पानि पदम कटाच्छ । जिन भ्रमिय भूतल लाछ ॥
आदित्य कोटि प्रकास । मय सक्र कोटि विलास ॥ छं० ३६३ ॥
आराम कलप निधान । सुर तीन कोट प्रमान ॥
नव रूप रेष अनंग । परकार गर्व बिभंग ॥ छं० ३६४ ॥
पर पाप लिपत इहै न । भुअ भुक्ति मुक्ति सु दैन ॥
काकुस्थ करुना कार । गुन निद्धि सुम्भर भार ॥ छं० ३६५ ॥
रन रंग धीर सधीर । भव पार कद्दृन तीर ॥
सुर सरी नाथ नचाइ । भ्रम भूल ब्रह्म भ्रमाइ ॥ छं० ३६६ ॥
चतुरान षट्ठ सु घूमि । सुरपति फनपति तूमि ॥
तारुन्य रूप प्रकास । सहभूत अंग निवास ॥ ३६७ ॥
त्रय मंत्र जपित वार । हर दीन तेंह हुंकार ॥ छ० ३६८ ॥

अरिल्ल—बाले ब्रित्त विषम्म प्रमानं । हय गय दल रुंध्यो चहुआनं ॥
कुंकुम कलस सलेवर हेमं । देव दैव साधारन नेमं ॥ छं० ३६९ ॥
पंगी पय सतह परिमानं । संमुह दलन रुंध्या चहुआनं ॥
गहहू गहहू कित्ती अविसेशं । सुवर चित्त चिंते जुनरेशं ॥छं०३७०॥

गाथा—बर छित्ती छिति धारी । सारं संग्राम नेहयो बलयं ॥
अग्गेई मृग जूयं । ना झुक्के [2]मृग्गयं राजं ॥ ३७१ ॥
उद्धरे सेन सेनो । [3]संग्रामं वीर सुभट्टायं ॥
कालिंदीय सुरंगे । सो अंगो सुद्ध [4]भूतायं ॥ छं० ३७२ ॥

पृथ्वीराज सात हजार कपट वेषधारी कामरथी
वीरों के साथ देवी के मन्दिर में घंस पड़े ।

कवित्त—सहस सत्त कप्परिय । भेष कीनो तिन वारं ॥
कपट कंध कावरिय । धसिय देवी दरवारं ॥
सर्व सस्त्र आरंभ । हस्त आरंभ सुरी सल ॥
धसिय भीर सम्मूह । जूह पाई ममंडि कल ॥
दल प्रबल उदधि ज्यों मथन कज । भुज सुबिहन चहुआन बिय ॥
शशिवृत्त बाल रंभह समह । मिलिय गंठि बंधन सुहिय ॥ छं० ३७३॥

---

1. मो०—कोटि ।
2. ए०—कृ०—को०—मृग्गयो ।
3. ए०—कृ०—को०सुसंग्रामे ।
4. ए०—कृ०—को०—भूताय ।

पृथ्वीराज और शशिवृता की चार आंखें होते ही लज्जा से शशिवृता की नजर नीची हो गई और पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ लिया।

दिट्ठ दिट्ठ लग्गी समूह। उतकंठ सु भग्गिय॥
निप लज्जानिय नयन। मयन माया रस पग्गिय॥
छल बल कल चहुआन। बाल कुअरप्पन भंजे॥
दोषत्रीय मिट्टयौ। उभय भारी मन रजे॥
चौहान हथ्थ बाला गहिय। सो ओपम कविचंद कहि॥
मानों कि लता कंचन लहरि। मत्त बीर गजराज गहि॥छं०३७४॥

पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने गुरुजनों की खबर आगई और इससे आंख में आंसू आने लगे पर उन्हें अशुभ जानकर उसने छिपा लिया।

चंद्रायना - गहत बाल पिय पानि। सु गु[१] जन संभरे॥
लोचन [२]मोचि सुरंभ। सु अंसु बहे परे॥
अपमंगल जिय जानि। सु नैंन सुष बही॥
मनो षंजन सुष मुत्ति। भरक्कत नषही॥ छं० ३७५॥
दुहु कपोल कल भेद। सुरंग ढरक्कही।
सज्जन बाल बिसाल। सु उरज षरक्कही॥
सो ओपम कवि चंद। चित मे बस रही।
मनु कनक कसोटी मंडि। म्रग मद [३]कसरही॥ छं० ३७६॥

गाथा मृग मद कसयति चित्ते। मित्तं पुनरोपि चित्तय बसय॥
अजहूं कन्ह वियोगे। कालिंदी कन्हयो नीरं॥ छं० ३७७॥
गहियं गह गह कंठो। वचनं मंजनाइ निट्ठयो कहियं॥
जानिज्जै सत [४]पत्रं। बधे [५]मदाइ भवरयं गहियं॥ छं० ३७८॥
तप तंदिल में रहियं। अंगं तपताइ उप्परं होइ॥
जानिज्जै कसु लालं। घटनो अंग एकयो सरिसो॥ छं० ३७९॥
अपमंगल अल बाले। नैनं नषाइ नष कि सलयो॥
जानिज्जै धन कृपनं। सपनंतरो दत्तयं धनयं॥ छं० ३८०॥

जिस समय पृथ्वीराज ने शशिवृता का हाथ पकड़ा पृथ्वीराज के हृदय में वह्न, शशिवृता के हृदय में करुणा और उन शशि के शत्रुओं के हृदय में बीभत्स रस का संचार हुआ।

---

१. मो०-कामुचि। २. मो०-फरसह्नौ।
३. ए०-पत्तं। ४. ए०-कृ०-को०-अम्बाय।

कवित्त—गहि शशिवृत्त नरिंद । सिढी लंघत ढहि थोरी ॥
काम लता कल्हरी । पेम मरुता झकझोरी ॥
बर लीनी करि साहि । चंपि उर पुट्ठि लगाई ॥
मन सुरंग सोई [1]बत्त । कंत लगि कान सुनाई ॥
नृप भयो रुद्र करुना सुत्रिय । बीर भोग सुभर गति ॥
सगपन मुहास बीभच्छरिन । भय भयान कमधज्जदुति ॥छं० ३८१॥

वरिवृत्त से एक घरी ठहर कर पृथ्वीराज शशिवृता को साथ ले कर चल दिए ।

दोहा—बीर गत्ति सघिय सुमति । वृत्त अवृत्त न जाइ ॥
घरी एक आवृत्त रषि । सुबर बाल अनुराइ ॥ छं० ३८२ ॥

शशिवृता के पिता ने कन्या के बैर कमधज्ज ने स्त्री के बैर से लड़ाई का विचार किया और सेना साजी ।

बाल सु बैर स बैर त्रिय । भान विरुद्ध न कीन ॥
सकल सेन साधन घरी । कलहंकृत गति [2]चीन ॥ छं० ३८३ ॥

अरिल्ल—आवृत वृत गुन निग्रह राज । देव जुद्ध देवत्तह साज ॥
है गै दल मज्जै तिहि बीर । हरी बाल चहुआन सधीर ॥छं० ३८४॥

शशिवृता के पिता का कमध्धज्ज के साथ मिलकर पांच घरी दिन रहे सकट व्यूह रचना ।

कवित्त—घरिय पंच दिन रह्यो । गंत जद्दव प्रारंभिय ॥
मिलि कमधज्ज नरिंद सकन व्यूह आरंभिय ॥
अद्धं सथ्थ अप्पनो । चरन मडियबाम दिमि ॥
व्यूह चक्र विय पाइ । सथ्थ उभ्भो नरिंद कमि ॥
उद्धवन भार अंगत सकट । सवर पुंज अप्पन सजिय ॥
रघुनाथ साय वलियं बिहसि । हंकि सु लछिमन तहं रजिय ॥छं० ३८५॥

कमधज्ज की सेना का वर्णन ।

छंद रसावला—भरं भीर भाजी । कहूं कूह वाजी ॥
सुने पुंज राजी । मनो मेघ गाजी । छं० ३८६ ॥
सनाहं सु साजी । चढ़्यो वीर वाजी ॥
बगं मेल ताजी । सबै सेन साजी ॥ छं० ३८७ ॥
करों काम आजी । सिरं मोहि लाजी ॥
उठी मुच्छि एनं । सिरं लग्गि गेन ॥ छं० ३८८ ॥
कमंद्धं निहारी । सयंनं विहारी ॥
कमानै निहारी । तरक्कस्स झारी ॥ छं० ३८९ ॥

---

1. ए०—कृ०—को०—बाद । 2. ए०—चिन्ह ।

अरी तुंग तारी । फिरै [१]गज्ज भारी ॥
सरोसं विहारी । मया मोह जारी ॥ छं० ३९० ॥
महंतं विडारी । ... ... ॥
किए नैन रत्तं । रसं रोस पत्तं ॥ छं० ३९१ ॥
मुरं बीन बीरं । करो आज तीरं ॥
परै मोहि गत्तं । हरे शशिवृत्तं ॥ छं० ३९२ ॥
असी जा पहारं । चढ्यौ धार धारं ॥
लियौ वृत भारी । पगं सीस ढारी ॥ छं० ३९३ ॥
पर्यौ मद्ध धाई । असीजा पुलाई ॥
बजी कूह कूहं । अवाजं मजूहं ॥ छं० ३९४ ॥

घरियाल के बजते ही सब सेना जुट गई ।

कवित –सुनि वज्जी [२]घरियाल । लाग [३]नीमानन बाजिय ॥
इक छिन दोऊ सेंन । चंपि चावद्दिसि साजिय ॥
महन रंभ मा जग्य । मध्य मोहन शशिवृत्त ॥
असुर सु सुर मिलि मथहि । सूर बमी रजपूतं ॥
आरंभ पत्र मंड्यो कगट । कपट मुक्कि कढ्ढिय लपट ॥
दुहूं बीच जद्दों कुंअरि । उभय सिंह सारह झपट ॥ छं० ३९५ ॥

चहुआन और कमधज्ज शस्त्र लेकर मिले ।

दूहा –चाहुआन कमधज्ज बर । मिले लोह जल छोह ॥
भर भर टट्टर बज्जही । संमह लग्गिय कोह ॥ छं० ३९६ ॥

शत्रुता का भाव उच्चारण करके दोनों ने अपने अपने हथियार कसे ।

गाथा –उच्चरियं अरि भायं । मायक कस्मेव अप्प अप्पायं ॥
कढ्ढे लोह करारं । मार मारं जंपि जी हाई ॥ छं० ३९७ ॥

दूहा –अवृन धाइ वट भंग को । करन मतहु वर वीर ॥
मनहु काल कपि दल निरनि । लेन लंक मति धीर ॥ छं० ३९८ ॥
[४]धर धीरत्तन बीर वर । करिय न पंग प्रवाह ॥
चच्चर सीचव रंग गति । विधि बधन रिन चाह ॥ छं० ३९९ ॥

दोनों सेनाओं के युद्ध का वर्णन ।

छंद भुजंगी-मिले धाइ [५]निधाइ सा पुंज राजै । लगे [६]अंग अंगं सुरंगति छाजै ॥
मिले हथ्थ बथ्थं सु सथ्थं निनारै । मनो वारुनी मत्त [७]मय मत्त भारै ॥
॥ छं० ४०० ॥

---

१. मो०–गय । २. ए०–कृ०–को–घरि, घरी पंच । ३. मो०–नीसानत ।
४. ए० कृ० को०–फलक । ५. मो०–घन ।
६. मा०–निघ्घाय । ७. मैं०–मै ।

किधो जुद्ध लग्गे कि मल्लं सवारे ॥ ... ... ॥
उरै लोह पंती परै श्रोन रुद्रं । मनों रत्त धारा बरष्षै समुद्रं ॥ छं० ४०१ ॥
उड़ै छिछि इछं सनाहं सुभिज्जै । मनो पुफरत्तं नभं देव पुज्जै ॥
सुनै ईस सद्दं निसानं गहारं । बजै धार धारं घनं कै प्रहारं ॥ छं० ४०२ ॥
मनो पट्टनं मंजि कंसी डकारं । दुती [1]ओपमा चंद जंपै विचारं ॥
बज झल्लरी देवल द्वार मारं । उड़ै सार किची कि रच्चै प्रहारं॥ छं० ४० ॥
मनो झिगनं भद्दवं रैनि भारं । ... ... ॥
★सबै सस्त्र मंत्रं भरं जम वाहे । षिझै षग्ग कढ्ढै बिहथ्थे समाहे ॥
॥ छं० ४०४ ॥
करं कंस मत्तं पलं पारि छंडै । रुधं धार हल्लै प्रसादेति मंडै ॥
सिवा लीति सोभै [2]प्रनाली अनेकं । फिरै अच्छरी पंति बिय बार वेकं ॥
॥ छं० ४०५ ॥
बहै नाग मुष्षी सु सोहै विकंनं । फटै हस्ति कुंभं ठनंकंत घंटं ॥
वियं वांह षंचै गिरै गज्जराजं । मनो द्रोन षंचे कपी काज पाजं। छं० ४०६॥
षिजै दंत दती भरं कंध डारै । मनो कोपियं भीम हथ्थी उच्छारै ॥
भरं लोहि गिद्धी भ्रमै भंति छुट्टै । मनो देवलं इष्ट चलि डोरि तुट्टै ॥
॥ छ० ४०७ ॥
लगै लोह हथ्थी सिरं वंबिझारै । तिनं गात तिद्दू जरै अग्गि लारै ॥
परै षोपरी तुट्टि भेजी सुभावै।दधी [3]भाजन जानि वायस्स आवै॥छं० ४०८॥
फटै बीर बीरं सुबीरं सुघट्टं । मनो कर्क करवत्त विहरंत कढ्ढं ॥
नचैजा कमंधं करं हाक शीशं । चरंमं सुभज्जै हसै देषि ईशं ॥ छं० ३०९ ॥

युद्ध के समय शूरवीरों की शोभा वर्णन ।

गाथा— मानिक्क प्रति ताजं । हेमं हेमेल विद्ध साधरियं ॥
जानिज्जै निसि मद्धं । निरमल तारक सोभियं गैनं ॥ छं० ४१० ॥
मुच्छी उच्चस बंकी । बाल चंद सुभ्भियं [4]नभ्भं ॥
[5]गज गुर घन नीसानं । रीसानं षंग षल याई ॥ छं० ४११ ॥

अरिल्ल— दहकि बज्जि नीसानति [6]नद्द । सबै सेन संग्राम बिवद्दं ॥
इक्क अंग चावद्दिसि सेनं । जरै राज रत्ते [7]रस नैनं ॥ छं० ४१२ ॥

---

१. मो० उप्पमा ।
२. ए० कृ० को०—प्रनाली ।
★ ए० कृ० को०—सबै शास्त्र मंत्रं भजैरं समाहु ।
बिजै खग्ग कट्ठै बिबी हृथ्थ बाहु ॥
३. मो०—भोजनं ।
४. मो०—गैनं ।
५. मो० को०—गत्त, गत ।
६. ए० कृ० को०—नद्दै, बिषद्दै ।
७. मो०—रत ।

छंद रसावला—लगी कर कोह। लगें घन लोह ॥
छकै अति छाह। महा तजि मोह ॥ छं० ४१३ ॥
भरा भर भार। तुटै तरवार ॥
मची घन मार। परंत प्रहार ॥ छं० ४१४ ॥
धुकंत धरन्नि। सरोस सरन्नि ॥
निफूटत रुन्नि। बरै सु बरुन्नि ॥ छं० ४१५ ॥
करं घन घन। महा इत मित्त ॥
लरं बर लत्त। फटं रिन षत्त ॥ छं० ४१६ ॥
कटारिय एक। लगंत अनेक ॥
सु चंदन साष। संजोइय भाष ॥ छं० ४१७ ॥
घषै अति धीर। मनों बर बीर ॥ छं० ४१८ ॥

कमधज्ज की शोभा वर्णन।

कवित्त—सबर बीर कमधज्ज। अरघ अप्पिय षग मग्गं ॥
इष [1]अच्छित उच्छरहि। जानि परिमानन मग्गं ॥
मार धार पुंषियै। बीर मंगल उच्चारै ॥
सबै साथ बंदियहि। सकल पूजा संभारै ॥
बर मुक्कि बरन बरनी सुबर। इह अपुब्ब पिष्यौ नयन ॥
उप्पनौ बीर सिंगार सँग। रुद्र बीर चौरी नयन ॥ छं० ४१९ ॥

दूहा—सिर सोहत बर सेहुरौ। टोप ओप अति अंग ॥
बगतर बागे केसरे। रुधि भीजत विषमंग ॥ छं० ४२० ॥
[2]सकट भग्ग लइ बग्ग बर। कमधज बीर विसेज ॥
[3]मिले बीर बीरत्त बर। दोऊ दैवत तज ॥ छं० ४२१ ॥

शशिवृता का चहुआन प्रति सच्चा अनुराग था।

देव तेज दैवत्त गुन। अवृत मत्ति गुन कंति ॥
शशिवृत्ता चहुआन सों। सुवृत मंत गुन पंति ॥ छं० ४२२ ॥
सांइ सूर सांई सु गति। दल दुंदुभि दैवत्त ॥
विघरं कर वीरह करह। सुबर बीर मारुत्त ॥ छं० ४२३ ॥
कालकूट कीनौ विषम। कोलाहल बन कीन ॥
अवृत्त वृत्त अंतह भषै। सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ४२४ ॥
भारथ दिव्विय तत्त मति। अवृत चित बल छीन ॥
जिन गुन प्रगटित पिंड किय। सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ४२५ ॥

१. मो०—अच्छित। २. मो०—सपट। ३. मो०—मिलें।

कंठ कील कीली सुवृत । वृतत जुद्ध सम पाइ ॥
सुबर बीर भारथ्थ गुन । उठे बीर विरुझाइ ॥ छं० ४२६ ॥
षल संकुल अंकुल प्रक्रित । चतुर चित्त विरुझाइ ॥
मनु बड़वानल मध्य तें । समुद सत्त गुन भाइ ॥ छं० ४२७ ॥
बीर थान विभ्रम भइय । नयन रत्त सम सार ॥
मानहु बर धरि अद्ध में । नाकपत्ति गिरि झार ॥ छं० ४२८ ॥

पृथ्वीराज की श्री शेषजी से उपमा वर्णन ।

कबित्त—नाक पत्ति संभरिय । उभै काया अधिकारिय ॥
वहु जित्यौ बलि राइ । यहुन दुज्जन सम सारिय ॥
छित्ति पत्ति अति अम्भ । दुहुन आभा पति बुद्धं ॥
वहु गोरी सुरतान । इहति दानवति विरुद्धं ॥
षग षुलै दुहुन पुज्जै न को । दोऊ बाउ बर बीर रन ॥
लै चल्यौ हरिव शशिवृत्त को । पहु पंजलि पुज्जे तरन ॥छं०४२९॥

दूहा—तरुन तेज तम हरन बर । बाल बहिक्रम उच्छि ॥
मानों रति आरुढ़ करि । बर बारधि मति लच्छि ॥ छं० ४३० ॥
लच्छि सु लच्छिरु लीन हरि । इहु लीनी संग्राम ॥
घटि बढ़ि मंत्रहु समन बरि । दोऊ बीर बढ़ि [1]वाम ॥ छं० ४३१ ॥

गाथा—चावद्दिसि न्रप [2]बिठ्यौ । पुंजं सेनायं सेनयौ बीरं ॥
धर धरनी आधारं । सा धारं ढुलियं शीशं ॥ छं० ४३२ ॥

उस युद्ध में वीरों को आनन्द होता और कायर डरते थे ।

[3]मुरिल्ल—बढ़ि सस्त्र दुहाइय बीर रसं । दुहु सेन सुधावत अंग कसं ॥
मुष बीर विगस्सिय रेन ससी। भय कायर चंद प्रभात दिसी॥छं० ४३३

छंद विराज—लगे लोह सारं । दोऊ बीर भारं ॥
महा तेज तारं । बरं कंज झारं ॥ छं० ४३४ ॥
घरी यार सारं । परें कै प्रहारं ॥
भए पार पारं । मनों प्रात तारं ॥ छं० ४३५ ॥
करै मार मारं । बबक्कै बकारं ॥
चलै रुद्धि धारं । पलं मच्छि गारं ॥ छं० ४३६ ॥
चर मंस चारं । दिषै प्रेत दारं ॥
धपै धार धारं । टरैं जे न टारं ॥ छं० ४३७ ॥

---

१ मो०—काम । २. मो०—बिटं ।
३. मो०—प्रति में यह छन्द मोटक नाम से लिखा है ।

डकै भूत डारं । डरै सीस डारं ॥
उड़ी बीर रैनी । भ्रामै भौर सैंनी ॥ छं० ४३८ ॥
अवघ्यं न गोपं । इसे बीर कोपं ॥ छं० ४३९ ॥

दूहा कोपि बीर कायर घरकि । परषि पयंपन जोग ॥
यह गति छंडै बीर बर । परै परत्तर भोग ॥ छं० ४३० ॥

कवित्त -बांन पथ्थ बलभीम । मत्त [1]सिवरी अधिकारी ॥
[2]गंभीरां गुर सिघ । नेह करनह क्रत [3]धारी ॥
बल सुजग्य सक्रह विमाल । पुरषारथ सारी ॥
सुर सिधि बुद्धि गनेश । क्रम्मन घुन घू अधिकारी ॥
सामंत सूर सूरह विरुध । बीर बीर पारस फिरिय ॥
बर सिंघ सिंघ रष्षै मरन । बर कोबिद कोबिद डरिय ॥छं० ४४१॥

कवि का पृथ्वीराज को कलि में वीरों का सिरताज कहना ।

दुहा सु रिधि बुद्धि बुध्यां तरन । मिरन सूर दुति राज ॥
चाहुआन प्रथिराज कल । मंडि बीर सिर ताज ॥ छं० ४४२ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का मुकाबला होना ।

चाहुआन कमधज्ज बर । मिले लोह छुटि छोह ॥
धार मुरै मुष ना मुरै । मरट मुच्छ क्रत जोह ॥ छं० ४४३ ॥
चाहुआन कमधज्ज दुनि । रति नाइक प्रति धीर ॥
सारंगी सारंग बल । इह लग्गी अनि बीर ॥ छं० ४४४ ॥

धन्य है उन शूरवीरों को जो स्वामिकार्य्य के लिये प्राणों का मोह नहीं करते ।

अरिल्ल
द्रव्य वस्य नन होइ प्रमान । अप्पन [4]प्रान स्वाम कृत दानं ॥
जिन जग जित्ति कित्ति बसि कीनी । मरन मूर सस्त्रह बर लीनी ॥छं०४४५॥

दूह -कहां पंच पंचौ बसत । कहा प्रकृति प्रति अग ॥
कहां हंस हंसह बसै । कौन करै रन जंग ॥ छं० ४४६ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का युद्ध ।

इह कहि कढ़िढय सार कर । पोलि षग्ग दोउ पानी ॥
मानहु मत्त अनंग है । धूत छुट्टं [7]जम जांनि ॥ छं० ४४७ ॥

---

१. मो०—सिवरं । २. मो०—गं ीरं ।
३. मो०—भारी । ४. मो०—भूल ।
५. मो०—बसें । ६. ए० कृ० को०—काम ।
७. मो०—यम ।

घोर युद्ध वर्णन।

छंद भुजंगी—
मिले हथ्थ बथ्थं न सथ्थं स धारे। मनौ बारुनी मत्त गज दंत न्यारे॥
उड़ै लोह पंती परै श्रोन [1]रुंदं। मनो रुद्रि धारा बरष्षंत बुंदं॥ छं० ४४८॥
घुमे घाय घायं अघायं अघायं। झुमैं झार झारं झनक्कै झकायं॥
करैं जोगनी जोग काली कराली। फिर पेट धाये महा विक्कराली॥ छं० ४४९॥
परै सूर वाहै बहथ्थी कृपानं। कढ़ी तांत बाढ़ी मल चारि जानं॥
घमां घम्म मत्ती मोह माहि [2]घानों। पिजारे सतं रुत्र पीजंत मानों। छं० ४५०॥
महादेव मालानि में गूथि मथ्थं। [3]कहैं वाह वाहं वहै सुर हथ्थं॥ छं० ४५१॥
मुरिल्ल—[4]हाहरे रूप कायर प्रकार। [5]छडीति लज्ज अरु बीर मार॥
अभ्यसै सूर जिन सूर रूप। देवत्त भूप दिष्षै अनूप॥ छं० ४५२॥

युद्ध की यज्ञ से उपमा वर्णन।

कवित्त—विषम जग्य आरंभ। वेद प्रारंभ शस्त्र बल॥
है गै नर होमियै। शीश आहुत्ति [6]स्वस्ति कल॥
क्रोध कुंड विस्तरिय। क्रित्ति मंडप करि मंडिय॥
गिद्धि सिद्धि बेताल। पेषि पल साकुन छडिय॥
तुंबर सु नाग किनर सु चर। अच्छरि अच्छ सु गावहीं॥
मिलि दान अस्म अप्पन जुगति। भुगति मुगति तत पावहीं। छं० ४५३।
दूहा—करि सुवार आचार सब। समद क्रित्ति फल दीन॥
गुरुजन मिसि करुना करिय। कायर हाहर कीन॥ छं० ४५४॥

कमधज्ज का सरब्यूह रचना।

कवित्त—मिलि जद्दव कमधज्ज। अहिर ब्यूह आरंभिय॥
पुच्छ मु लषि मनि बंध। पांइ गुज्जर पारभिय॥
सुघर मंडि वर बीर। पंग बंधह रवि गढ्ढै॥
फन अप्पन भय पुंज। जीभ कूरंभ मु ठड्डु॥
हयनारि जोरि जंबूर घन। दसन हढ्ढ दुग मुष्ष करि॥
मनि भयो मेर मारूफ षां। [7]बच्चर सीचो रंग परि॥ छं० ४५५॥
गाथा—अप्पं ब्यूह आरंभो। प्रारंभो बीर भद्रायं॥
आनिज्जै चव रंगं। चतुरंग इक्क घंटायं॥ छं० ४५६॥

---

१. ए० कृ० को०–रुद्दं।
२. मो०–घनों।
३. मो० वहै।
४. मो०–हारे।
५. मो० छंडी लज्ज भये बसि मार।
६. ए०–सुस्ति।
७. को०–पच्चर।

दूहा— घटिय घट्ट अघटन घटिय । पढ़िय सार दुअ सैन ।।
पंगराइ बंध्यो सु वृत । किये रत्त बर नैन ।। छं० ४५७ ।।
रत्ते नैन विषम्म गति । दावानल प्रथिराज ।।
बीर चंद घन उन्नयो । सार सु बुड्ढन आज ।। छं० ४५८ ।।

पृथ्वीराज का मयूरव्यूह रचना ।

कवित्त— मोर व्यूह प्रथिराज । सथ्थ [1]सज अप्पन कीनो ।।
चुंच केश मंडलो । कन्ह चहुआन सु दीनो ।।
पांइ पिंड विधि पंष । गरुअ गहिलोत बीर सजि ।।
पुंच्छ राज रघुवंश । चरन पुंडीर चंद रजि ।।
दुहु लोह कढ्ढि गरियार नें । सारधार में श्रम्मि भर ।।
पल पंच तरंगनि हक्कि जल । जांनि कमोदनि नंचि सर ।छं०४५९।।
दिषि वर [2]लष्षिन फवज । चपि चतुरग रिंगावहु ।।
अरि सयन्न संभार । धीर भंजै मग पावहु ।।
बहु गरिष्ट तारिष्ट । हक्कि अप्पन पर धावहिं ।।
सु बर सिघ आलसै । स्याल मूंधो करि ध्यावहिं ।।
उट्ठै न वीर बीरह उठत । सुवर [3]मंत फुनि फुनि करै ।।
वरसै न अंब सर मेघ कौ । जो न [4]ममर सरवर भरै ।।छं० ४६०।।

गाथा—समर सु मथ्यो सेनं । तार झकार बीर भद्रायं ।।
केवल गति कल रूपं । भूयं वीर जुद्धयो समरं ।। छं० ४६१ ।।

बीररस में भृंगाररस का वर्णन ।

दूहा—समर जुद्ध मच्चिय समर । हालाहल बर [5]मत्ति ।।
कोलाहल पषिन कियो । कांम रूप बर जित्त ।। छं० ४६२ ।।

छंद नाराच- बरत काम रूपयं । असी वहै अनूपयं ।।
लगै सु गोरि पासयं । परक्रिया कटाछयं ।। छं० ४६३ ।।
सरंत तीर सोहयं । उरंद मुट्ठि छोहयं ।।
हला हलं हलं मलं । भिलंत अंग संभिलं ।। छं० ४६४ ।।
[6]कडा कडी कडक्कयं । दडा दडी दडक्कयं ।।
पड़ै सिरं पडक्कयं । डकंत बीर डक्कयं ।। छं० ४६५ ।।
घिसै न ज्यों घडक्कयं । तुटंत तेजि डक्कयं ।।
हडा हडी हडक्कयं । .... ।। छं० ४६६ ।।

---

१. मो०—अल ।
२. ए० कृ० को०—लच्छन ।
३. ए० कृ० को०—मंत्र ।
४. मो०—ममूर ।
५. को०—सत्ति ।
६. ए० कृ० को०—कटा कटी ।

निरष्षि पत्ति नाकयं । परंत हीय धाकयं ॥
बरंत अच्छरी बरं । भषंत गिद्धनी भरं ॥ छं० ४६७ ॥
लगंत लोह [1]सो लरं । अरिम मत्त संमरं ॥ छं० ४६८ ॥

अरिल्ल --
आरिष्टन सम दिष्टन दिष्षिय । बीर चंद गह गह मुष भष्षिय ॥
यद भरि होंन न परत सुबंधं । बर भारथ बीर रस संधं ॥ छं० ४६९ ॥

गाथा --उठ्ठहि एक प्रमानी । धावंताय पंचयो सयनं ॥
[2]वाहूतं बर लोहं । साइनं देषयो बीरं ॥ छं० ४७० ॥
रुधिरं पत्र तसतयो । दो मझ [3]काय हक्कयो सिरयं ॥
अति गति दुष्ट प्रकारं । अगिनत होंइ बीर सम सेनं ॥ छं० ४७१ ॥
अगनित गने न जानं । ई कोइ कोपि रुद्धयो सहसं ॥
बर बीरार सुभट्टं । दावानलं पंगयो बीरं ॥ छं० ४७२ ॥

पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर कन्ह का क्रुद्ध होकर झपटना ।

दूहा --तब चहुआन सु कन्ह वर । ठढ्ढो करि गुरुराज ॥
हुकम न्रपति छुट्टौति इम । [4]जनु तीतर पर बाज ॥ छं० ४७३ ॥

कबित्त --मुष छुट्टत न्रप बैन । नैन दिठ्ठो धावंतो ॥
क्रंम बंध वल मोह । छोह बंध्यो सु बरत्तो ॥
सु बर सेन चहुआन । सिग जद्दूनं [5]नवाई ॥
जनु मंदिर बिय बार । ढंकि इक बार बनाई ॥
तकसीर करन दोउ अंस बर । कित्ति मग्ग करतव्य कर ॥
अथवंत रविहू आदित्य दिन । अगनि सार बुढ्ढिय कहर ॥ छं० ४७४ ॥

गाथा --मुष छुट्टा न्रप बैनं । कै दिठ्ठाय धावता नैनं ॥
बज्जी वाहु सुबारं । धारं ढारि [6]मत्तयो धरयं ॥ छं० ४७५ ॥

कन्ह का युद्ध वर्णन ।

दूहा --मत्त ढरहि संमुष भिरहि । स्वामि सनाह ससूर ॥
आज मुष्य चहुआन कन्ह । सिधु सत्त को नूर ॥ छं० ४७६ ॥

गाथा --सद्दं सिद्धत नूरं । काह्ररं करनयो नथ्थी ॥
एको अंग सुरंगो । दिष्षे वा बीरयं बीरं ॥ छं० ४७७ ॥
धनयं लछि नरिंदं । निहि संचिय सायरो नथ्थी ॥
कलहूंतं बल विषमं । जुषमं देहीय लज्जतो सूरं ॥ छं० ४७८ ॥

---

1. मो० सौलरं । 2. को०--व्याहूतं ।
3. मो०--काम । 4. मो०--मनु ।
5. मो०--नमाई । 6. ए० कृ० को०--मत्तयो ।

कढ्ढै लोह दुहथ्यं । सत्तं घरियाय बज्जयो अगं ॥
चावद्दिसि चतुरंगी । अनुरंगी सेन सब्बाइं ॥ छं० ४७९ ॥

दूहा –अनुरंगी सेना [1]सकल । सद्द मुरद्ध विरुद्ध ॥
अवुध बुद्ध भारथ्थ में । दान मान सु [2]प्रबद्ध ॥ छं० ४८० ॥

गाथा –बर अथवंत सु दीहं । सुम्भं विन जोनयं कलयं ॥
घरिघट अघट नरिंदं । मा बुद्धं बीर भद्रायं ॥ छं० ४ १ ॥

पृथ्वीराज के वीर सामंतों का प्रशंसा ।

मुरिल्ल - बीरभद्र अरु रुद्र जलप्पिय । कह्यो सत्त संकरषन थप्पिय ॥
तुम सकल कलित भारथ फिरि दिप्यो । इन समान कोइ बीर विसप्यो ॥
॥ छं० ४८२ ॥

गाथा - को [3]दिठो सम बीरं । सामंतं स्वामयो [4]क्रमयं ॥
इक्कं करन प्रमानं । अंगद कामेय गावनो [5]भिरयं ॥ छं० ४८३ ॥

चौपाई -राम कांम अंगद अधिकारी । स्वांमि कांम सामंतव धारी ॥
जिन हय गय तन तिन बर जान्यो।सुमत ध्रंम स्वामित्त पिछान्यो ।छं० ४८४॥
[6]सुपति ध्रम्म जिन तंत प्रमानिय । मुकति मुगं केवल सुनि बानिय ॥
घट्टिय घट्ट विघट्ट सुषंड्यो । सुपथ साथि आपथं सु मंड्यो ॥ छं० ४८५ ॥
जिन छंडिय मंडिय क्रत धारिय । सार कढ्ढि हय तज्जि सु धारिय ॥
[7]परनि प्रहार सार तजि सारं । जड़ता तज्ज लगत तम तारं ॥ छं० ४८६ ॥

छंद विराज -लगे बीर सारं । किए मत्त पारं ॥
बहथ्थंत धारं । अनुज्जा प्रहारं ॥ छं० ४८७ ॥
तुटें धार धारं । मनों श्रुत्त तारं ॥
अवित्तं विहारं । कलिंदी कहारं ॥ छं० ४८८ ॥
मनौं नभ्भ धारं । सु भारथ्थ सार ॥ छं० ४८९ ॥

★चौपाई - सार धार भारथ प्रहारं । मानहु दु्त्तय अंग बिहारं ॥
धार तिथ्थ के तिथ्थह राजं । जनक काम कामनि सिरताजं ॥छं० ४९०॥

कवित्त बर अथवंत सु दीह । झुझ्झि [8]लच्छिन जद्दव भर ॥
लोह धार लगि विषम । ईस लीनो जु शीश कर ॥

१. ए० कृ० को०–सुबल । २. ए० कृ० को०–प्रबुद्ध ।
३. मो०–नट्ठो । ४. को० मो०–क्रनयं ।
५. मो०–भरयं । ६. ए०–सुमति ।
७. मो०–परति ।
★ मो०–प्रति में अतिरिक्त । ८. मो०–लन ।

रह्यौ न तन दझ्झन सु मंस । पल चरन न पाइय ॥
अश्व शस्त्र पष्षर [1]पलान । ढुढंत नन पाइय ॥
बरि लियन बीर अंतर मिल्यौ । [2]अच्छर [3]सुच्छर ना लियौ ॥
मिलि गय सु भान सुत भान को । दिव दुंदुभि बज्जत बियौ ॥छं० ४९१॥
अगनि झार धर धार । सार वज्जी प्रहार असि ॥
कंक दिष्ट सिवा सुरारि । भग्गौ नल गंभरि ॥
शस्त्र घात आघात । बथ्थ अन बथ्थ सु लग्गा ॥
मृरत अंतरित सेन । मिले दूती मन भग्गा ॥
सिरदार सैन न्रप द्वै करिय । दोऊ घाव घन घुम्मि घट ॥
उबर्‌यो कन्ह प्रथिराज क्रम । झझ्झि पुंज बंध्यौ सुभट ॥छं० ४९२॥

इस युद्ध को देख कर देवताओं का प्रसन्न हो कर पुष्पवृष्टि करना ।

छंद भुजंगी –
बजी दुंदुभी आज आयास थानं । करे लोह लोहं [4]सुलोकंति गानं ॥
कहै चंद सूरं महाबीर पाई । परे पुप्फ बर विष्ट वज्जै त्रिघाई ॥ छं० ४९३॥

सांझ हो गई परंतु कमधज्ज की अनी न मुड़ी ।

कवित्त– जीति लियो जै पत्ति । चारु चतुरंग स मोरी ॥
बर बंध्यो न्रप पुंज । ढाल जद्दव न ढंढोरी ॥
बर [5]लच्छिन परि षेत । कन्ह चहुआन उपारिय ॥
षेत ढूंढ़ि प्रथिराज । सुभ्रत झोरी करि डारिय ॥
इतनें सुं भान अस्तमित भये । दोऊ सेन बर उत्तरिय ॥
मुक्की न बग्ग कमधज्ज की । रोस राह विसरन भरिय ॥छं० ४९४॥
बजी संझ घरियार । सार बज्यो तन झंझर ॥
जनु कि बज्जि झननंक । ठनकि घन टोप स [6]उच्चर ॥
अनल अग्गि सम जग्गि । जेन घज बंधि सलग्गा ॥
मनु द्रप्पन में बैठि । नेत बड़वा नल जग्गा ॥
घन स्यांम पीत रत रंग बर । त्रिविध बीर गुम बर भरिय ॥
हर हार गंठ्ठि रुठ्ठि उमां । किम उतारि पच्छो धरिय ॥छं० ४९५॥

कमधज्ज का अपने बीरों को उत्साहित करना ।

छंद भुजंगी –भिर्‌यौ राम रन बीर कमधज्ज बीरं ।
करो आज सर्वं [7]सुझिब्बीर धीरं ॥

---

१. मो०– प्रमाम । २. मो०–अत्सर । ३. मो०–सुत्सर
४. ए० कृ० को०–लोकेसु । ५. मो०–लच्छिन ।
६. ए०–उच्चर । ७. ए–सझिबरि ।

गुहै माल ईशं नचैं जोग बीरं।
निरं तंत प्रेतं घरं धीर हीरं ।। छं० ४९६ ।।

सब रन भूमि में तीन हाथ ऊँची लाशें पड़ गईं ।

दूहा—परि पथ्थर सथ्थर सुरन । गनक गनें नहि जाइ ।।
हथ्थ तीन लुथ्थह चढ़ी । मुरबी [1]मद्ध न माइ ।। छं० ४९७ ।।
संझ सपत्ते न्रपति बर । नव नव रस अरपंत ।।
बर प्रथिराज नरिंद दुति । सो ओपम कविकंत ।। छं० ४९८ ।।

तीन घड़ी रात्रि हो जाने पर युद्ध बंद हुआ ।

कवित्त -घरिय तीन निसि गइय । बार बर सुक्र सु आगम ।।
पंति परी अरिजूह । बीर बिघ्यो अरि जागम ।।
कोट षलन सोभं । बिसाल सामंत सूर थँभ ।।
जस देवल उप्पनो । बीय गय गिरी सेत रंभ ।।
प्रथिराज देव दानव दलन । लच्छि रूप जद्दव कुँअरि ।।
नव रस बिलास पूजा करहि । बर अच्छरि भइ पहुप सरि।।छं०४९९।।

पृथ्वीराज की सेना की समुद्र से उपमा वर्णन ।

श्रम सु अंग बिटयो । सुधा [2]बिटयो जु बाल रस ।।
अमिय चंद बिटयो । समुद बिटयो बड़वा तस ।।
अरि कें दिल विष उरग । मंत्र ससि वृत्त प्रेम झर ।।
लहि न सुद्धि सब बसन । आइ लग्गेति रोस भर ।।
बजि बीर बार दुज दल सघन । लाग निसानम न्रत्य पर ।।
प्रथिराज सेन बंध्यो स अति । सु कविचंद उच्चारि बर ।। छं० ५०० ।।

युद्ध में नव रस वर्णन करना ।

भान कुंअरि शशिवृत्त । नेन शृंगार सुराजे ।।
बीर रूप सामंत । रुद्र प्रथिराज बिराजे ।।
चंद अद्भुत जानि । भय कातर करुना मय ।।
बीभछ अरिन अमूह । सात उप्पनो मरन भय ।।
उप्पज्यो हास अपछरि अमर । भो भयान भावी बिगति ।।
कूरंभराव प्रथिराज [3]बर । लरन लोह चिते तरनि ।। छं० ५०१ ।।

---

१. ए०—सद्ध ।
२. मो०—बीट्यो ।
३. ए० कृ० को०—छर ।

राम रघुवंश का कहना कि जिस बीर ने युद्धरूपी काशी क्षेत्र में शरीर त्याग करके इस लोक में यश और अंत में ब्रह्म पद न पाया उसका जीवन वृथा है।

कहै राम रघुवंस। सुनो सामंत सूर तुम ॥
अमर नरन बंछहि सु। जुद्ध किन कथ्थ नरिंद भ्रम ॥
धार तिथ्थ बर आदि। तिथ्थ काशी सम भज्जै ॥
असि वरुना तिन मध्य। लोह तेजं सम गज्जै ॥
सिव सिद्ध जोग सज्जै सकल। अकल अपूरब बत्त इह ॥
लभ्यो न बीर जिन ब्रह्म पद। छिनक मद्धि गति लभ्भि इह ॥छं०५०२॥

गुरुराम का पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच देना।

पढ़ि सुमंत्र गुर राम। विष्णु पंजर सनाह दिय ॥
केस कंस मरदन्न। नंद नंदन लिलाट किय ॥
भोंह भुअद्धरं धरि समुह। नैंन निज्जिय नाराइन ॥
बदन दिद्ध श्रीकृष्ण। हृदय थप्पो मथुराइन ॥
कटि जंघ गुविंद रक्षा करन। चरन थप्पि असरन सरन ॥
गुर इष्ट समरि प्रथिराज को। इह सुदिद्ध रक्षा करन ॥ छं०५०३ ॥

कमधज्ज और जद्दव की मृत फौज की शोभा वर्णन।

दूहा—परि पारस जद्दव सयन। मिलि कमधज्ज प्रमान ॥
षट बिय ग्रह मनु नछित लै। [1]पति सु मंडिय भान ॥ छं० ५०४ ॥

किन किन बीरों का मुकाबला हुआ।

छंद त्रोटक —परि पारस पंग नरिंद घनं। मनो भान सुमेर कि पंनि वनं ॥
घन सद्द सुरंग निसान धुनं। मनों बज्जत दुंदुभि देव ननं ॥ छं० ५०५ ॥
चव दून निसान सु कन्ह धनी। जु कियो सिरदार सु पंग अनी ॥
दिसि पच्छिम बालुकराय अर्यो। तिनके मुख कन्ह पजून लर्यो ॥छं०५०६॥
हुअ ईस दिसान दिसा नृप मान। तिनकें मुष भो रन भाटिय भान ॥
दिसि पूरब भी षुरसान षंधार। तिन के मुष मडि सलष्य पवार ॥छं०५०७॥
अगिनेव दिसा वन सिंघ अचाइ। तिन के मुष मडिय निड्डुर राय ॥
दिसा जम लच्छिन बंधिय फौज। तिनके मुष चामंड दाहर कौज ॥छं०५०८॥
सुनै रति छत्र उठ्यो कर बीर। [2]तिन कें मुष मंडिय चंद पुंडीर ॥
जु बायु दिशा दिशि इंद्रयपाल। [3]तिनें मुष भीम भिरे रिनमाल ॥छं०५०९॥
[4]सु उत्तर दे प्रभु पंग कुंआर। तिनें रघुवंस बजावत सार ॥
बढै गुर जंबुर [4]हुय्यह नार। मनों गज मद्दव की उनिहार ॥ छं० ५१० ॥

---

१. ए० पति। २, ३. पंक्ति मो०—प्रति में नहीं है।
४. ए० कृ० को०—हुबं हुव।

छुट्टै गुरजं बिवयान सें । षह तें पलटे मनों तारक से ॥
पति बंधि सनाह सयान करैं । अरि के मुख सामंत सूर लरैं ॥ छं० ५११ ॥

रात्रि व्यतीत हुई और प्रातःकाल हुआ ।

भयें प्रात जगंतय सूर षरे । तिन कें लरतें ब्रह्मण्ड डरे ॥
गये सब्ब निशा पहु फट्टि ननं । दोउ संगम अंग विअंग घनं ॥ छं० ५१२ ॥
प्रिय प्रातक सीत चलै मधुरं । निशि लीय उसास निसास डरं ॥
बर तोरत तारक भूषन सो । मुष मूंदि कमोदनि ना बिगसो ॥ छं० ५१३ ॥
पहु फट्टिय बीर प्रमांन नषैं । रवि [1]रत्त सुतत्त वियोग लषैं ॥
जु भई गति सिथ्थल ना मागरी । सर छिप्पन केलि कला निसरी ।छं०५१४॥
[2]वजि दुंदुभि देव निसान धुअं । प्रगटे सत पत्र सुरंग हुअं ॥
बर रंग [3]जवा सन जोति फिरी । घन देहि असीस चकी चतुरी ॥छं० ५१५॥
घन रोर चकोर कमोद भगे । जु गए दुरि चोर सु देव जगे ॥
जमुना हुलसी जमराज हंस्यौ । जु गयी निमरं भजि तेज सज्यौ ॥छं० ५१६॥
बर इंद अनंदिय चंद कह्यौ । जु सज्यौ रथ उंच अरुन्न गह्यौ ॥
सु चल्यौ चक्र एकहु चक्र कह्यौ।सु गह्यौ कमलं कर की अकरयौ ॥छं० ५१७॥
बर उद्धग नीर पवन्न उछं । जु चले सब क्रंमज जग्गि गछं ॥
जु भयौ धन ध्रंम मिटी वनिता । वल जाप अजाप न सो जपता ॥छं० ५१८॥

गाथा--गई सर्ब्बरी सु सर्बं । फट्टी पहुवं नट्ठयो तिमिर ॥
नम चूरन प्रति किरनं । तरुन बिराइ तरुनयो रचयं ॥ छं० ५१९ ॥

प्रातःकाल होते ही घोड़ों ने ठौं लगाई, शूरबीरों ने तयारी की और दोनों तरफ के फौजी निशान उठे ।

कवित्त मुकट किरनि पहु बीर । परिय आरन्नि निसा गय ॥
उभय पट्ट प्रगटीय । हक्क बोलंन हयनि हय ॥
तिमिर तेज भंजन । प्रमान कमधज्ज नरिंदह ॥
मांन तुंग चहुआन । जग्ग जंपिय कवि चंदह ॥
नव ग्रेंह नवम्मिय नव निसा । नव निसान दिशि मान धुरि ॥
सामंत सूर भुज उप्परै । रहसि राज प्रथिराज फिरि ॥छं० ५२० ।

शूरबीरों के पराक्रम से और सूर्य्य से उपमा वर्णन ।

गाथा -सुघटं किरनं बीरं । पारस मिसह सेन कम्मधज्जं ॥
उदयं अस्तमि भानो । मेर पच्छि दच्छिनो फिरयं ॥ छं० ५२१ ॥

दूहा --दष्षिन पस्स सुमेर फिरि । यों पारस पहु पंग ॥
सार धार धारहु मिले । सुबर बीर प्रति अंग ॥ छं० ५२२ ॥

---

1. को०--रत्त ।
2. को०--बट्टि ।
3. ए०--जवासमि ।
4. ए० कृ० को०--षट ।

चौपाई— सार धार प्राहार प्रकार । मनौ मत्त घन पंति विभार ॥
उठे बीर सत्तों विरझाइ । भान पयान न मत्त सुषाइ ॥छं० ५२३॥

पृथ्वीराज का युद्ध हो कर विष्णु पंजर कवच को धारण करना ।

गाथा—ग्रह सुद्धा प्रथिराजं । अष्ट ग्रहं वंकमो विषयं ॥
विष्णुं बीर सुधारं । पंजर भंजे राजयो अंगं ॥ छं० ५२४ ॥

उस पंजर में यह गुण था कि हजार शस्त्र प्रहार होने पर भी शस्त्र नहीं लगता था ।

दूहा —सा पंजर दिय राज बर । सस्त्र लगै नहि चाइ ॥
कोटि अंग घावह घने । भुज प्रमान सो पाइ ॥ छं० ५२५ ॥

बैकुंठ वासी विष्णु भगवान पृथ्वीराज की रक्षा पर थे ।

गाथा— बैकुंठह बर वासी । सासी गहनाय गिरन सा धरियं ॥
सो रक्षा चहुआनं । अनरष्षा मत्रयो धरयं ॥ छं० ५२६ ॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से कमधज्ज की सेना की तैयारी होना ।

दूहा —बज्जि राग चोहान भर । उत कमधज्ज नरिंद ॥
सार धार बज्जिय विषम । कहि ग्रंनन कविवंद ॥ छं० ५२७ ॥

आगे यादवराय की सेना तिस पीछे कमधज्ज की सेना, तिस के पीछे हाथियों की कतार देकर रूमी और अरबी, का सेना सज कर युद्ध के लिये चलना ।

छंद त्रोटक— मुंर तीन फवज्ज सु बंध थपी ।
अग जद्दव राइ नरिंद रूपी ॥
तिन पच्छ सु बीर मुरंग अनी ।
बिच बंधिय हथ्यिय पंति घनी ॥ छं० ५२८ ॥
बर हब्बसि किन्नर रूमि बिचै ।
झननंकत पाइक पंति नचै ॥
तिन सोर सुगंध बिछाइ घनं ।
बहु जुझ्झ कपट्टिय मंडि डनं ॥ छं० ५२९ ॥
हय उच्छरि षेह अयास लगी ॥
नव तुट्टि [1]तिनं बनि बारि भागी ॥
अरची सरसीरुह [2]संकुचिता ।
चकई चक मूकति चूक तता ॥ छं० ५३० ॥

---

१. मो०-मितम्बनि ।

२. ए० कृ० को०-सकुरित, संकरित ।

पवनं गवनं नन पंथ वहै ।
नव नेज धजा [1]धन लग्गि रहै ॥
फन फू८ फनं पति को विसरी ।
मुदरी दिग अट्ठ दृगं घुँघरी ॥ छं० ५३१ ॥
घन बज्जत घंट सघट घन ।
नव नीरथ नारि निभंग मन ॥
ढलकै गज ढाल सुनेज बनं ।
[2]चमकै बल के मन चोज मनं ॥ छं० ५३२ ॥
तिन की उपमा कविचंद करी ।
मनों मेघ महेंद्रव बीज झरी ॥
घन मन्निय नद्द बिबंक सुरं ।
सुभिहै बिब हथ्थ धजा विथुरं ॥ छं० ५३३ ॥
गज नद्द जजीरन के घुरयं ।
मनौं वधिय झिंगुर सा सुग्य ॥
तिन के कछु दान कपोल झरे ।
सु मनो नभ के वरसे बदरे ॥ छं० ५३४ ॥
बजि लाग निमान घमंक सजी ।
सहनाइन सिंधुंश्र राग बजी ॥
नव नारद सारद ते किलकै ।
नव बंदि विरद्द नदे हलकै ॥ छं० ५३५ ॥
घन देषि अरिष्ट सुबाल डरी ।
मुदरी नव आनद चित्त हरी ॥
कमधज्ज कला चक्र्ती बर पेषि ।
मुंदरी ससिवृत्त दइ शशि लेखि ॥ छं० ५३६ ॥

सेना की सजावट की शोभा वर्णन और उसे देख कर भूत बेताल योगिनी आदि का प्रसन्न हो कर नाचना ।

निसाणी– फौज रची तिन दोय घन मध्य मसंदा ।
जालिम जोध जुवान सेर रस बीर रजिंदा ॥
अग्गैं उब्भा अप्प आइ जादव्व नरिंदा ।
मनो उब्भै मेर कै अड्डी अग झंदा ॥ छं० ५३७ ॥

---

१. मो०–धन । २. मो०–चमकै बलकैं यमकैं जमनं ।
३. ए०–कृ०–को०–नति । ४. मो०–पेषि ।

पीछै ठाढ़े राठ बड़ बल जे विचरंदा ।
जानकि उत्तर उम्नया घन लोह सहुंदा ॥
पाइक पति अपार बर जनु मोर नचंदा ।
बाग गहिग्गहि बाज कीन रन बीर नषंदा ॥ छं० ५३८ ॥
बीरा रस्स उतावल न रहै बरजिंदा ।
अलबेला सु उछंछला अनमी अवलंदा ॥
गाहड़ मल्ल गुमान गुर गुन गात सुरंदा ।
बजे निसान नफेरियान घोर घुरंदा ॥ छं० ५३९ ॥
लत्त बीर सुनंत तन तामस्स भरंदा ।
सुनि चौसट्ठी जुगिन किलकि किलकंदा ॥
भूत भयानक भाव भरि भहरें भहरंदा ।
थेइ थेई गति षेत्र पाल किलकार करंदा ॥ छं० ५४० ॥
बावन बीर [1]बलिष्ट बल करि बिलसंदा ।
देषें देव विमान चढ़ि कौतिग्ग अनंदा ॥
तारी दै दै तान तुट्टि नारद् नचंदा ॥ छं० ५४१ ॥

गाथा– नंचै नारद सिद्धं । बुद्धिवंत सुभट्टाई ॥
बंधे वुधिवर भट्ट । सहकारं बीर भट्टायं ॥ छं० ५४२ ॥

सुसज्जित सेना से पावस की उपमा वर्णन ।

चौपाई— नाम नाम जिम पूरन स्याम । तडित बेन धुक्की धर धाम ॥
गर्जित सिह अपास सबद् । करनि भज्जि होतेजिन मद् ॥ छं० ५४३

गाथा— मदंक रीति भग्गा । चाकास यो सद्दयो सद्दं ॥
सो क्रमं वर मंचं । फेरे अकुंस सीसए मारं ॥ ५४४ ॥

अंकुस लगा कर हाथी बढ़ाए गए और शस्त्र निकाल कर
शूरबीर लोग आगे बढ़े ।

दूहा--अकुंस मारि प्रहारि गज । बंधन अध पूजान ॥
शस्त्र कढ़िढ संमुह भिरन । धनि संभरि चहुआन ॥ ५४४ ॥

कमधज्ज के शीश पर छत्र उठा उसकी शोभा ।

अल्लि—उठ्यो छत्र कमधज्ज नरिंदह शीश पर ॥
मनों कनक्क दंड पर ज्यूं इंदी इंदवर ॥

घोड़ों की टापों से आकाश में धूलि छा गई ।

हय पुर [2]उच्छरि षेह अयासह धुंधरी ।
बान मंग प्रथिराज देषनह उत्तरी ॥ छं० ५४६ ॥

१. ए०–कृ० को०–वरिष्ट । २. ए०–कृ०–को०–चहुाई । ३. मो०–उत्सरि ।

चहुआन का घोड़े पर सवार होना ।

दूहा—बहकि निरह नष्षर भिदे । यह पारथ पवित्रान ॥
सो प्रति सारह उत्तरन । फिरि चढ्ढयौ चहुआन ॥ छं० ५४७ ॥

उस दिन तिथि दसमी को युद्ध के समय के तिथि योग नक्षत्रादि का वर्णन ।

कवित—देव दसमि दिन दीह । दीह पद्धरो नरिंद ॥
गुरु पंचम रवि नमो । सुवर ग्यारमो सुचंद ॥
त्रतिय थान बर भोम । सुक्र सप्तम बर कीनौ ॥
नृप सुपनंतर आइ । ईस [1]जीपन बर दीनौ ॥
चौमट्ठि पुट्ठि वि पुट्ठियन । अरिन सेन संमुह [2]परे ॥
त्रिघोष सद्द बज्जंत सव । सुवर लोह कढ्ढे करे ॥ छं० ५४८ ॥

युद्ध वर्णन ।

छंद त्रिभंगी—कवि चंद सुवरनं करै सुकरनं सूरह लरनं भर भिरनं ॥
तिरभंगी छंदं नाग नरिंदं कथ्थ करिंदं दुष हरनं ॥
[3]पढ़ मंदह मत्ता पुनि अठ मत्ता असु वसु मत्ता रस मत्ता ॥
घन घाइ सघत्ता सूर सरत्ता में गल मत्ता करि घत्ता ॥छं०५४९॥
बज्जै बर कोहं लग्गै लोहं छक्कै छोहं तजि मोहं ॥
सूरा तन सोहं स्वामिन दोहं मत्ते ढोहं रिन डोहं ॥
बर बान बिछुट्टं बगतर फुट्टं पारन षुट्टं धर तुट्टं ॥
तरवारनि तुट्टं धम्मरलु ट्टं अंग अहुट्टं गहि झुट्टं ॥ छं० ५५० ॥
बीरा रस रज्जं सूरस गज्जं सिंधुअ बज्ज गज गज्जं ॥
अच्छरि तन मज्जं बरे बर जज चित्ते बज्जं मन मज्जं ॥
कायर रन भज्जं तज्जि सलज्जं स्वामि सु कज्जं भर सज्जं ॥
जम दढ्ढ सु सज्जे हृथ्थह मज्जे छिन्छन छज्जे रिन रज्जे ॥छं० ५५१ ॥

घायल सामंतों की शोभा ।

सोरठा—रिन मंते सामंत । घाइ अंग तज्जे घने ॥
मनो मत्त [4]मय मंत । बिना महावत रारि मिलि ॥ छं० ५५२ ॥

शूरवीरों का क्रोध में आकर युद्ध करना ।

छंद भुजंगी—कढै लोह कोहं दुदीनंति बज्जै ।
सजे तामसं राज सा [5]तुक्क तज्जै ॥

---

१. को०—जीयन । २. मो०—परै, करै ।
३. ए०—कृ०—को०—परि मंदह मत्तापुर मन्ती ।
४. ए०—कृ०—को०—मैं । ५. मो०—सात्विक ।

[1]कटे कंध्ध सूरं मिले सार कोहं ।
सना हूंत सूरं फिरैं [2]बेश सोहं ॥ छं० ५५३ ॥
उड़े टोप टूकं बजै सार घंटै ।
मनो अग्ग दंती लगी बंस फुट्टै ॥
मनों मीन माया जलं सब्ब तुट्टै ।
... ... ॥ छं० ५५४ ॥
असी मंस तुट्टै करं कंस हल्लै ॥
मनो कग्गदं काल बूतं सु चल्लै
सु भट्टं सु सूरं कुघट्टं सु कीनं ।
उलथ्थें सभेजी घृतं जान थीनं ॥ छं० ५५५ ॥
चढ़्यो पावसं जद्दवं संभरेशं ।
दलं बद्दलं सद्दलं ते नरेशं ॥
घनं घोर घंटा निसानं दिसानं ।
तिनं भूलियं सब्ब आषाढ मानं ॥ छं० ५५६ ॥
झवै दामिनी तेग वेगं प्रमानं ।
पढ़ै भट्ट बीरं बुलै मोर बानं ॥
लगै वाइ बुठ्ठे सरं सार गोरी ।
रुधि नार मानो प्रवाहै स [3]जोरी ॥ छं० ५५७ ॥
करैं कायरं त्रीय करुना प्रमानं ।
लगै बाहु कालंदि चंपे समानं ॥*
ऊनं त्रीय जंपी उनं पीय जंप्पो ।
सोई ओपमा चंद बरदाइ थप्पो ॥ छं० ५५८ ॥

कवि का कथन कि उन सामंतों की जहां तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है ।

दूहा—देवप्पति देवह सु दुति । मति सामंत सधंत ॥
जिन अच्छरि सच्छरि कहौं । सो जस बढि बर कंत ॥ ५५९ ॥

गाथा—जस धवली वर बढयं । त्रय लोकं साध [4]यो तरयं ॥
जानिज्जै परिमानं । सतं समुद्द सीचयो [5]नीरं ॥ छं० ५६० ॥

---

१. ए०—कृ—को—रढे । २. ए०—कृ०—को०बेस ।
३. ए०—जारी ।
*ए०—कृ०—प्रतियों में इसके आगे ये दो पंक्तियां हैं ।
उने मैन मासं उनैं सत्र सारं । लभ्यो काइरं कामनी ना प्रमासं ॥
४. ए०—कृ०—को—हो । ५. को०—नीयं

छंद लघुत्रोटक—मिलि जुद्ध मच्यौ। रन षेत रच्यौ ॥
सम सार सच्यो। नत्र एक मुच्यौ ॥ छं० ५६१ ॥
रस बीर षच्यौ। तन रारि तच्यौ ॥
कहुँ जाई वच्यो। ... ... ॥ छं० ५६२ ॥
जुग्गनि जितनी। किलकें तितनी ॥
घन घाइ घुरें। पट सीस परें ॥ छं० ५६३ ॥
दोउ बीर बड़े। लगि लोह अड़े ॥
घट घाइ पड़े। झुर होइ झड़े ॥ ५६४ ॥
सस केश डफै। तन सों तड़फै ॥
फिफरा फड़कै। कढि सों कड़कै ॥ छं० ५६५ ॥
पग हथ्थ परें। ढी चाल [1]ढुरें ॥
घक धींग धकें। मुष मार बकें ॥ छं० ५६६ ॥
रस बीर छकें। हक हूक हकें ॥
बहु सूर लरें। नृप भार परें ॥ छं० ५६७ ॥

कमधज्ज के बीर षवास का युद्ध और पराक्रम वर्णन।

दूहा—सुबर बीर षावास भिरि। मुक्कि सु धाम धमारि ॥
सो ओपम कविचंद कहि। झुकि कढ्ढी परिहार ॥ छं० ५६८ ॥
अरिल्ल—मोह पारि जिन छंडिय सूर। तिरन बीर भारथ्थह पूर ॥
दैव जुद्ध आक्रत्ति अबुद्ध। कढ़े लोह दुव कोदह जुद्ध ॥ छं० ५६९॥
छंद विराज—कढ़े लोह बीरं। महा मल्ल तीरं ॥
हको हक्क वज्जी। गिरं जानि गज्जी ॥ छं० ५७० ॥
कढ़ें मत्त मंती। अवृतं न दंती ॥
वहै लोह सारं। प्रहारंत भारं ॥ छं० ५७१ ॥
झनंके झनंक्की। रथं भान थक्की ॥
हलक्कंत सूरं। बजे देव तूरं ॥ छं० ५७२ ॥
उतं मं[2] तुट्टे। [3]घरी दोम लुट्टे ॥
घरी इक जानं। सु भारथ्थ मानं ॥ छं० ५७३ ॥
दूहा—सुबर बीर षावास षिजि। कढ्ढी बंकी अस्सि ॥
सौभै सीस गयंद कै। मनु तेरस को सस्सि ॥ छं० ५७४ ॥

१. ए०—कृ०—को०—रच्यौ
२. मो०—हरे।
३. मो०झरी।

सवास तो मारा गया परंतु उसका प्रबंध यश युगान युग चलेगा।

कवित्त—सुबर बीर षावास। षिछ्छि कढ्ढी सु बंकि असि ॥
सुभै सीस गज राज। अद्ध तेरसि कि बाल ससि ॥
मुट्ठि चंपि द्रग पानि। नीर बानं सुद्धारह ॥
मनु मुत्तिय बारुन्न। बंदु बंधे इन बारह ॥
साम रम देन पावरि ध्रनि। स्वामि सु अंतर फुनि मिलिय ॥
जीरन [1]युमास संदेस सदि। गल्ह एक जुग जुग चलिय ॥छं०५७५॥

सवास के मरने से कमधज्ज को बड़ा दुःख हुआ और उसने अपने मंत्रियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिए।

सुबर बीर कमधज्ज। राज संमुह अरि झारिय ॥
मरन षूंज षावास। मरन अप्पनो बिचारिय ॥
सब सु सब्ब पुच्छयो। तंत मंतह उच्चारिय ॥
सकल मंत रजपूत। मंत मो देहु सुचारिय ॥
हारिये ध्रंम जित्ते सुसब। ता उप्पर तन रष्षियै ॥
मो मंत्त सुनो तोहूं कहूं। दुज्जन दल बल भष्षियै ॥ छं० ५७६ ॥

मंत्रियों का कहना कि समय पड़ने पर सुग्रीव, दुर्योधन, श्री रामचन्द्र, पांडव, अर्जुन इत्यादि सब ने अपनी अपनी स्त्रियों को छोड़ दिया।

एक समै सुग्रीव। त्रिया रष्षी न अप्प बल ॥
एक समै दुरजोध। क्रम्रि पुक्कार मंढि कल ॥
एक समै श्रीराम। त्रिया अप्पनी न रष्षी ॥
एक समै पंडवन। चीर कढ्ढत द्रग लष्षी ॥
रष्षिय न गोप पारथ बलिय। ससि सुबेर तारक्क बर ॥
त्रिघात वात गोबिंद बिना। जीव रषिन सबंग गहि ॥ छं० ५७७ ॥

कमधज्ज के मंत्रियों के मंत्र देने के विषय में कवि की उक्ति।

दूहा—भल भल तुरी चढंत बर। तिन अष्षरन अषार ॥
मरन जानि भूनंग हर। कट्टर चढे तुषार ॥ छं० ५७८ ॥

कवित्त—सु कवि गत्ति ननग्रही। कु कवि गतिय सु क्रम बवन ॥
सलिल बानि बोलै न। कठिन कुब्बचन सु स्रवन ॥
फूटत घोट कवित्त। चित्त लहु गुरन प्रकासं ॥
अघट घाट गुन करै। घाट सुद्धं न प्रगासं ॥

---

1. ए० कृ० को०—जुमा।

अच्छरि सुरंग जै जै करहिं। बेन प्रस्तावन पढ्ढियै ॥
घन घट्ट घट्ट सुझ्यो करैं। कुकबि जे महि चढ्ढियै ॥छं० ५७९ ॥

दूहा—फेरि पंति पारस सु वृत। अगति करी नहिं गत्ति ॥
जिन सांई सधनी कला। बनि सामंति सु मत्ति ॥ ५८० ॥

मंत्रियों के मंत्र के अनुसार कमधज्ज ने अपनी अनी मोड़ली।

सुनति मत्ति पारस फिरि। सुभट सेन कमधज्ज ॥
एक लष्ष दल लष्ष में। धनि सामंत सु रज्ज ॥ छं० ५८१ ॥

कमधज्ज की सेना के फिरने से सामंतों का दिल बढ़ा।

गाथा—लग्गा दल बल कलनं। सिंधुर असमान सीस गोरनयं ॥
बल बढ्या सामंतं। कायर कर षेव सूर क्रम [1]छलयं ॥ छं० ५८२ ॥

दूहा—[2]बल छत्रिय मंत्रिय तरन। भिरि भंजै गज दंत ॥
रंभ अरंभन ढूंढए। अचछे अच्छरि कंत ॥ छं० ५८३ ॥
झुकि भारी भगवान भिरि। राम कुलह कुल चंद ॥
सार-सार संमुह [3]भिन्यो। स्वामि सु मेटन दंद ॥ छं० ५८४ ॥
रघुबंसी कमधज्ज झुकि। बंध सु पंग नरिंद ॥
सो ओमें देखी सबर। कहि तत्तौ कविचंद ॥ छं० ५८५ ॥
वसि कीनो सामंत जुरि। बल अबुद्धि बुद्धि धेन ॥
छिति संग्रह संग्राम किय। बल बलिष्ट बल तेन ॥ छं० ४८६ ॥

गाथा—ढंकी काल उछारे। उछारंत मत्त नो हथ्थी ॥
मत्ती मत्त सुमंतं। सो दिठ्ठो भारथं नथ्थी ॥ छं० ५८७ ॥

कवित्त - कहै मात बड़ कीय। सुरत मत्ती अष्षारै ॥
दुति पहार संभार। बीर बीरह [4]बिच्चारैं ॥
रुधिर बूंद कंदल। परत कंदल परि उठ्ठै ॥
सार धार निरधार। सार धारह असि बुठ्ठै ॥
चावंड राइ दाहर तनो। तिन बोहिथ चढ़ि उत्तरै ॥
बीजलह दाग तिलकं मिसह। अदग दग्ग नहि विस्तरै॥छं०५८८॥

गाथा—सो दग्गंत तिलकानं। सो दिष्टाय सारयो सरयं ॥
अपकित्ती मिस दग्गं। ना लग्गंत तासयं कुसलयं ॥ छं० ५८९ ॥

जिस कुल में चामुंड है उसको दाग नहीं लग सकता।

दूहा—तिन कुल दग्ग न लग्ग बर। जिन कुलबल [5]चावंड ॥
दोष रहित अच्छरि अमी। किए षंड पाषंड ॥ छं० ५९० ॥

---

1. मो०—छलनं। 2. ए० कृ० को०—छल। 3. ए० कृ० को०—पच्यो।
4. मो.—बुधिचारै। 5. ए० कृ० को०—चावंड।

अरि मंडल धंडल करन। तिरन मोह मति [1]सिध ॥
रस्स बली बीरा विषम। लै भारथ्थ सकंध ॥ छं० ५९१ ॥

दुपहर के समय कमधज्ज की फौज फिर से लौट पड़ी।

कंध बंध संधिय निजर। परी पहर मध्यान ॥
तब बहुर्यो पारस फिरिय। फिर्यो [2]भीछ चहुआन ॥ छं० ५९२ ॥

कमधज्ज और चहुआन खड्ग लेकर क्षत्री धर्म्म में प्रवृत्त हुए।

कवित्त – छल संज्ज्यो बल जोग। बुद्धि बलजोग पसारिय ॥
चहुआन कमधज्ज। षग्ग षत्रीवस डारिय ॥
रत्तन जुद्ध विरुद्ध। सद्द सद्दह मति कीनी ॥
चावद्दिसि विढ्ढुरें। बीर बीरं रस पीनी ॥
संग्राम धाम धंमार परि। काम धाम धम्मार तजि ॥
सामंत सूर सांमत बर। धीर बीर धारहति लजि ॥ छं० ५९३ ।

शूरबीर हाथियों के दांत पकड़ पकड़ कर पछाड़ने लगे।

दूहा – में लज्जानी लज्ज बर। गब्ब दब्ब सामंत ॥
अंत अलुझ्झय पंति पय। भिरि भंजै गज दंत ॥ छं० ५९४ ॥
भै वृत्त अवृत्त सरीर गति। सिध सरोज सु पान ॥
सूर बदों सामंत दुज। जिन अप्पं जिय दान ॥ छं० ५९५ ॥
जीव दान अप्पन सु वृत। दल दतिय बढ़ि कंत ॥
हनूमान जिम द्रोन बर। बारधि मंत [3]सुपंति ॥ छं० ५९६ ॥

चौपाई – बार बारधि बर पति सुमान। सूर धीर सामंत सुजान ॥
दल बल बल विछोरहि बीर। षग्ग मुष झलकंतह नीर ॥ छं० ५९७ ॥

महाभारत में अर्जुन के अग्निबाण के युद्ध से इस युद्ध की उपमा देना।

कवित्त – षग मुष बर चढ़िढये। धाइ तुट्टै है राजं ॥
बार बार हक्कही। करै अग्या बिन साजं ॥
[4]बाल स्वामि अग्या। विभंग चित ओपम चंदं ॥
त्रिय कठोर निर्द्धम्र। क्रमै अग्या गुन मंदं ॥
करतलह सु कवि कित्तिय सुबर। पथ थक्के आजान जिम ॥
भारथ्थ वीर पारथ्थ जिम। अग्गिबान सामंत [5]भ्रमि ॥छं०५९८॥

घोर संग्राम का वर्णन।

छंद हनूफाल - इति हनूफालय छंद। कवि पढ़ै भारथ चंद ॥
भ्रम भ्रमहि बीर प्रकार। ज्यों चक्र चक्रिय धार ॥ छं० ५९९ ॥
परि घट्ट एक्क विघट्ट। बर बीर भंज्या पट्ट ॥ छं० ६०० ॥

---

१. ए० कृ० को०—छंध, छंद। २. मो० भीच। ३. ए० कृ० को०—सुपाति।
४. मो०—ज्यों बालि। ५. ए० कृ० को०—भरि।

दूहा —पट्टन भंज्यो बीरवर । ज्यों दधीच सु अस्ति ॥
देवकाज बज्जी लियौ । सोइ बर तत्त सबत्ति ॥ छं० ६०१ ॥

कवित्त —बस त्रतीय प्रकार । घाइ बज्जै घट घुम्मै ॥
मार मार उच्चार । सार सारह बर झुम्मै ॥
एक मार संमार इक । सु मारति तै मारै ॥
एकं झार उझार । एक जारति उझ्झारै ॥
घरि एक तरंगनि जक्कि जल । कमल जानि नंच्यौति सर ॥
सामंत सूर सामंत बल । पहर बज्जि बज्जे पहर ॥ छं० ६०२ ॥

दूहा —पहर बज्जि पर पहर बर । पहर पहर आवृत्त ॥
मत्त दंत मद्दह सुकै । बान राज सावृत्त ॥ छं० ६०३ ॥
बान राज सावृत्त दुति । छिति छवी आकार ॥
धन्नि सूर जे अंग में । धनि [1]झिल्लै सु दुधार ॥ छं० ६०४ ॥

गाथा —दुधार सार महियं । हय गय नर बीर बीरायं ॥
जुद्धिय धीमति धीमं । सा बीरं बीरयो राजं ॥ ६०५ ॥
बीरं राजिय बीरं । बीरं बीर सु बीर मुष बीरं ॥
बीरं होइ सबीरं । सो बीरं उब्बियं नथ्थी ॥ छं० ६०६ ॥

दूहा— नथ्थह मुब्बी बीर बर । वल बंकम घट वाइ ॥
घरी एक आच्चिज्ज भो । जोति मग्ग विरुझाइ ॥ छं० ६०७ ॥

छंद भुजंगी —

विरुझ्झाय उट्ठे रनं रोस बीरं । महा मत्त दंतीन की पंति भीरं ॥
गहे दंत धावे सु बाहे पचारै । महा मत्त बोले सुवारं अषारै ॥ छं० ६०८ ॥
कली क्रित्त कुदं करैं दूरि दंदं । बजै सार सारं महा काल मंदं ॥
महा ठट्ट घट्टं अहुट्टं जु थट्टं । बजे घाइ ऐसे बकै जानि भट्टं ॥ छं० ६०९ ॥
रुधि धार रत्ती सु मत्ती उछारै । इमी बीर बत्ती सु भारथ्थ भारै॥छं०६१०॥

दूहा- भारथ्थह नथ्थी सुवृत । अवृत वृत्त गति देव ॥
जिन सांई दुज्जन हत्यो । सो सांई प्रति सेव ॥ छं० ६११ ॥
सेव देव देवन सुबल । रुधत गिद्ध सु मंस ॥
मोह पान माया सुकृत । उडत मुक्कि तिन हंस ॥ छं० ६१२ ॥
हंसन हंसिय हंस बर । मुगति सरोवर बीय ॥
तनु छंड्यो उह मंडि कै । निसा भ्रम्म नह नीय ॥ छं० ६१३ ॥
हू सांई पर हुष्परें । [2]परम तंत पद पाइ ॥
देवगिरि भंजन मती । रा चामंड विरुझाइ ॥ छं० ६१४ ॥

1. मो०—झेलै । 2. मो०—मुक्ति परम पद पाय ।

कवित्त—रा चामंड जैतसी । राम बड़ [1]गुज्जर बुल्लिय ॥
बलियभद्र बलिराम । सार धारह मति घुल्लिय ॥
कलह किती विस्तरै । राइ निड्डुर सम सारं ॥
दुहु बोल दुध चरन । मरन किती [2]अधिकारं ॥
बैकुंठ लेन लिन्ने सु षग । विहंग मग्ग पंषी सुगति ॥
नरसिंह सिंह छंडै नहै । सार धार मारह दिपति ॥ छं० ६१५ ॥

गाथा—सारं धार वरदियंति । रुधिरं छंडेव सूरयो अंगं ॥
जानिज्जै मधु मासं । सा फूलेव षष्षरो बनयं ॥ छं० ६१६ ॥

अरिल्ल—रत्त सु रत्त सु बीर उडाइय । धाइ मृदंग उपंग बनाइय ॥
के माया मोह ग्गति छंडं । काल दंड कालह क्रत छंडै ॥छं०६१७॥

दूहा—काल दंड षंडन करै । भिरै बीर भारथ्थ ॥
सुबर बीर सामंत गति । दे दुवाह पारथ्थ ॥ छं० ६१८ ॥
पारथ पारत्थिय सुवृत्त । सारथ्थिय चहुआन ॥
मानहु बीर समुद्र गति । तिरन मते ध्रम पान ॥ छं० ६१९ ॥

प्रातःकाल से युद्ध होते संध्या हो गई और कमधज्ज की सेना मुड़ गई परंतु चौहान की सेना का बल न घटा

ध्रम्म पार सामंत बर । उदे अस्त भो भान ॥
बहुरि पंग पारस फिरिय । बल न घट्यो चहुआन ॥ ६२० ॥

दोनों सेनाओं के बीर युद्ध से संतुष्ट न हुए तब इधर से भीमराय और उधर से मृत बवास के भाई ने क्रुद्ध होकर धावा किया ।

कवित्त—बल छंड्यो न विराज । सूर उभ्भे दुअ पासं ॥
अंधारो रा भीम । स्वामि सन्नाह सुभासं ॥
दुहु वाहां सामंत । दून दह दहु अधिकारिय ॥
अमर बध्धं वावास । षग्ग षोल्यो षिम्मि सारिय ॥
अंधार राव जोगिंद बर । भुगति मुगति अप्पन अनिय ॥
तामस [1]न बुझयो दोउ सेन को । वजि निसान आभा धुनिय ॥छं०६२१॥

गाथा—आभ सुनिय सु देवो । बज्जे साराह मुंदरे बज्जे ॥
नीसानं निसि सारं । साहारं [2]पारबं होई ॥ छं० ६२२ ॥

दूहा—पर पवरत्त पवित्र गति । रा निड्डुर राठौर ॥
बंधु दोष जान्यो नहै । स्वामि ध्रंम पति मौर ॥ छं० ६२३ ॥

१. मो०—गूजर । २. मो०—अधकारं ।
१. ए०—कृ०—को०—तव्यो न । २. मो०—पारवा ।

स्वामिकार्य्य के लिये जो शरीर का मूल्य नहीं करता वही सच्चा स्वामिभक्त सेवक है।

कुंडलिया— तजिय पुंज षावास बर। तिरन तुंग तन श्रप्प॥
चरन लग्गि बछ्यो मरन। सो सांइ भ्रत तप्प॥
सो सांई भ्रत तप्प। जन्म जानत जंजारे॥
... ... ॥
मयन मत्त बिच्छुरिय। मोह पारी तजि पग्गिय॥
धनि निड्डुर रट्ठौर स्वामि छल स्वामि सु अग्गिय॥ ६२४॥

गाथा – अग्गिय स्वामित कामं। ध्रमियं बीर बीर विस्तारं॥
तिम तिम तामस तेजं। सेनं सज्जि मुक्ति साधीरं॥ छं० ६२५॥

शशिवृता का व्याह धन्य है जिसमें अनन्त धीरों को मुक्ति मिली।

मुक्ती धारन धीरं। पंजर सज्जेव मध्यनो परयं॥
बर ससिवृत्त सु व्याहं। दाहं देहाइ दुष्षनो तजयं॥ छं० ६२६॥

कमधज्ज के दस बड़े बड़े शूरवीर थे वे दसों इस युद्ध में काम आए।

दूहा—देह दुष्ष कट्टिय सुक्रम। रन जित्तिय सुग पान॥
पंच दून पंचो परिग। सुनिय बीर रस पान॥ छं० ६२७॥

गाथा—परियं बीरति नामं। सुरति श्रीदूह नंदह षट्टी॥
सजले सूर सुधारी। भारी भरनेव भारयं भिरयं॥ छं० ६२८॥

कमधज्ज के जो बीर मारे गए उनके नाम।

दूहा - परे सूर तिन नाम कहि। बरनत बनै विसेष॥
देब देव अस्तुति करहि। नाग रह्यौ सिर सेष॥ छं० ६२९॥

छंद भुजंगी परे बीर बीरं तिनं नाम आनं।
पर्‌यौ पुंज राजं महा बीर थानं॥
पर्‌यौ देव सिद्धंत सादुल्ल बंधं।
मुर् षग्ग नाहीं भयो रंघ रंधं॥ छं० ६३०॥
पर्‌यौ किल्ह कामं जु अट्टो जुआनं।
तिनं कट्टिया जेन गयदंत मानं॥
पर्‌यौ बीर भट्टी कियो अंग घट्टं।
जिनें मोरिया पंम रा मीच थट्टं॥ छं० ६३१॥
पर्‌यौ राइ राइं अजम्मेर सूरं।
जिनं स्वामि ध्रमं तज्यो सिंघ पूरं॥

---

१. ए०–कृ०–को०–बंध।

परयौ अंग अंगं सु अर्जोन रायं ।
लगे पंच दूनं महा बीर घायं ॥ छं० ६३२ ॥
परे पंच बंधो बलीभद्र बीरं ।
जिनें अंग अंगं कियौ सा सरीरं ॥ छं० ६३३ ॥

कवित —परत देव वर क्रंन । सरन रष्षन सांई बर ॥
परि मुष रन पुंडीर । सार सारंग देव धर ॥
परयौ बीर बलिभद्र । जात पावार पवित्रं ॥
धार धनी चढि धार । सलष लष्षन दुति मंत्रं ॥
लाषन्न सिंह भुज पाइ बर । अरिन पाइ उठ्ठाइ लिय ॥
धनि धन्नि सूर सामंत बर । जुग जीरन जीरन सुजिय ॥छं०६३४॥

शूरवीरों की प्रशंसा ।

दूहा —जुग जीरन जीरन सुबर । वरन किित्ति सा किद्ध ॥
सुबर बीर सामंत बर । गत्ति न पुज्जै सिद्ध ॥ छं० ६३५ ॥
सिद्ध न पूजै गत्ति तिन । छाया मोहन माय ॥
इन छाया मंडी तहां । ध्रम छांह रहि छाइ ॥ छं० ६३६ ॥
ध्रम छांह रहि छाइ बर । करिय सूर सामंत ॥
सो करनी करिहै न को । करिय बीर गुन मंत ॥ छं० ६३७ ॥
गुननि मंत गंभीर गुर । जै जै सद्द सु सिद्ध ॥
बरन बिहसि बरनिय बरहि । रंभ अरंभन सिद्ध ॥ छं० ६३८ ॥

गाथा —रंभा अरंभं वरयौ । अच्छी अच्छीव अच्छरी सरनो ॥
केकी गवनी कित्ती । साकित्ती बंधयौ रष्षी ॥ छं० ६३९ ॥

चौपाई —बढ्ढि रष्षि कित्तिय परिकार । सार सिंध उत्तर बन पार ॥
जोग सिद्ध जोगाधिय अंत । बजि डक डमरु उमया कंत ॥छं०६४०॥
उमा कंति जोगाधि सु जानै । बीर सगुन बीरा रस मानै ।
जै जै सद्द भयौ तिन वार । राज द्वार घरियार विभार॥छं०६४१॥

दूहा —राज द्वार घरियार बजि । सार बज्जि रति सार ॥
सूर सुमति सामंत की । बीर उतारन पार ॥ छं० ६४२ ॥

त्रोटक —सु उतारन पारति बीर भटं । घटकै घन नद्द उमद्दव घटं ॥
झननंकत हृथ्थत हृथ्थ करं । मनु पाइक पंति पुंतार बरं ॥ छं० ६४३ ॥
किधौं केवल की मुगति मति पान । किधौंरस [1]बीर बिभ्रम सु मान ॥
किधौं करुना करकै किधु काम । मनौं मय मत्त भिरं रस जाम ॥ छं० ६४४॥

---

1. ए० कृ० को०-बीरा रस, बीर रस ।

किधौं विधि बंधन बंधहि ओर । पढ़े दोउ मंत्र सु बीरह और ॥
करै दोउ बीर दुहाइय मुष्ष । मनो रवि उग्गव मासम मुष्ष ॥ छं० ६४५ ॥

दूहा—पुष्ष मास रवि उग्गयौ । भूमि न छिन्नन सीस ॥
मनहु बुद्ध बंदन सु बुधि । करन काम क्रत ईस ॥ छं० ६४६ ॥
क्रतन ईस बल बुद्धि बल । बुद्धि पराक्रम संधि ॥
सुबर बीर संग्राम गुन । अति गुन निर्गन बंधि ॥ छं० ६४७ ॥

गाथा -बंधे बुद्धि सुधारे । प्राहारे बीर सु भट्टायं ॥
निजंत नेह सुधारी । आहारी अंकुरी बीरं ॥ छं० ६४८ ॥

दूहा अंकुरि बीर शरीर गति । सुभट सुथट्ट सुभट्ट ॥
अघट घट्ट नह कियो परै । परे बीर दह पट्ट ॥ छं० ६४९ ॥

कमधज्ज का स्वेत छत्र देख कर चामुंड राय का उसे काट देना और सब सेना का आश्चर्य और कमधज्ज की सेना में हाय हाय मच जाना ।

कवित्त -हाइ हाइ आरिष्ट । दिष्ट अंबरिय सूर बर ॥
मुकि कर बल चामंड । करहु गोलक उप्पर धर ॥
गोलक तुंबा भग्ग । बंध भग्गे चहुआनं ॥
स्वेत छत्र दिषि सीस । पर्‌यौ कमधज्ज निधानं ॥
घरी एक विभ्रम भयौ । सार मार प्राहार बर ॥
जाने कि मत्ति दंतिन कला । कूट मंत्र धारहु सुधर ॥ छं० ६५० ॥

दूहा धारा हर बित्यौ सुधर । चर चरिष्ट चतुरंग ॥
रा निड्डुर रट्ठौर बर । रुप्यौ षेत भ्रत भंग ॥ छं० ६५१ ॥

गाथा पगुर पाइ सुधारं । पंगु भयौ चित तिन बीरं ॥
नह पंगुर कर नैनं । पंगुर नां सूरयौ बैन ॥ छं० ६५२ ॥

दूहा बयन सूर चंचल भइय । निहचल पग सिर नाग ॥
अदग दग्ग भंजै सकल । करत अदग्ग न दाग ॥ छं० ६५३ ॥
अदग दग्ग मग्गिय सु कृत । बर बीरा रस पान ॥
छित्ति छित्ति स्वामित्त गति । सु कति सु अप्पन बान ॥ छं० ६५४ ॥

कवित्त घरी इक्क रंग । रग सबरथ्थ बिछोरिय ॥
पगी जानि पारथ्थ । जेम दरिया हिल्लोरिय ॥
यों [1]षग घपि दोउ सेन । सूर मामत त्रिलोकिय ॥
मनों मत्त उठि द्रष्टि । पिय बीयोग विसोकिय ॥
झुंम्मयौ धार धारहु धनी । सुनिय कित्ति मित्तहु पनो ॥
सामंत सूर सामंत गुन । सु [2]बर बीर सत्तहु सुनो ॥ छं० ६५५ ॥

---

१. मो -बग्ग ।   २. मो०-बीर, बीर ।

छंद रसावला—सार बुट्टी अनी । मत्त मत्तं धुनी ॥
कूह मच्ची घनी । अंत तुट्टं रनी ॥ छं० ६५६ ॥
बीर बीरं अनी । देव बज्जी धुनी ॥
नेह भंज्यौ घनी । काल [1]जैसो पनी ॥ छं० ६५७ ॥
बीर बीरं बनी । रत्त रंगं रनी ॥
सार सारं धुनी । जोति मग्गं जनी ॥ छं० ६५८ ॥
पिंड सारे घनी । कव्वि [2]चंदं तनी ॥
... ... । मुक्ति [3]लुट्टं फनी ॥ छं० ६५९ ॥

दूहा—फनि मनि लुट्टन काज गुर । भौ गुर इत गुर देव ॥
सार सूर संम्हो भिरिय । बरन पथ्य मुष सेव ॥ छं० ६६० ॥

कमधज्ज का छत्र गिरने से सूरवीरों को भय न हुआ ।

गाथा—लग्गिय त्रास न सूरं सुभटाइ मत्तयो दंती ॥
जानिज्जै परिमानं । भारथ्थं बीरयो कंती ॥ छं० ६६१ ॥

दूहा—हूल देवत विछरत्त बर । परषिय जंपहि जोग ॥
सुबर सूर सामंत गुन । [4]श्रुग्ग मत्त [5]मति भोग ॥ छं० ६६२ ॥

स्त्रियों की प्रशंसा ।

भोग जोग दुभ विद्धि विध । दान मुगति संगाइ ॥
त्रीय कहै नट्ठे सु त्रिय । त्रियन गती मुह पाइ ॥ छं० ६३ ॥
त्रियन गत्ति पावहि पुरुष । धरन धरत्तिय ताम ॥
सूर धीर सूरह भिरत । वर विश्राम तजि जान ॥ छं० ६६४ ॥

चौपाई—एक एक उट्ठे परिमानं । सुमति मंत मंत्रिय गुरु दानं ॥
[6]षग्ग टेकि बाहै बर षग्गं । ज्यों बावन छलि भूमि [7]विगंगं ॥ छं० ६६५ ॥

दूहा—भुमि विभग कीनिय सुवृत । देवत्तह प्रति देव ॥
महन रंभ मच्यो सु भर । गुन श्रम न प्रभ भेव ॥ छं० ६६६ ॥
मरन सीस मुक्यौ सु वसु । रस पारायन देव ॥
दुतिय मुतिय दुति बैर तिन । भ्रम भग्गा जुग भेव ॥ छं० ६६७ ॥
अवृत वृत्त विभ्रम [8] भइग । हय गय दुल चतुरंग ॥
चाहुआन कमधज्ज सों । भय बीरा रस भंग ॥ छं० ६६८ ॥

गाथा—भौ बीरा रस भंग । जंग जुग तीय बीर सु [9]भट्टाइं ॥
सद्धिर सुद्धिर सुघटं । साठट्ठई घट्ट्यो भंगं ॥ छं० ६६९ ॥

---

१. मो०—जैसें, जैसे । २. ए० कृ० को०—चित ३. मो०—लुट्टें ।
४. ए० कृ० को०—स्वर्ग । ५. को०—मानि । ६. मो०—खग्ग ।
७. मो०—बर्भग । ८. मो०—ए—भइय । ९. ए० कृ० को०—सुट्टयं ।

रात्रि का कुछ अंश बीतने पर चन्द्रमा का उदय हो गया और
दोनों सेनाओं के बीर विश्राम के लिये रण से मुक्त हुए।

मुरिल्ल—ठट्ठ सेन [1]भग्गौ चतुरंगह । लुथ्थि लुथ्थि आलुथ्थि विभंगह ॥
कल किंचित किंचित रस भारी । इते अस्तमित भानं [2]सारी॥छं०६७०॥

गाथा—अस्तमितं [3]बर भानु । पायानो परम संतोषं ॥
जानिज्जै जस बंधुअ । नव चंदनं तिलकयो दीयं ॥ छं० ६७१ ॥

चंद्रायना—दुरि निसान गत भान भइग बर ।
सिंधु संपतो जाइ तिमिर चढ़ गुर ॥
कुमुद बिमुद अंकूर सूरातन धरियं ।
मानो तम को तेज सु तत्त उधरियं ॥ छं० ६७२ ॥

[4]मुरिल्ल—बर भान संपतो थान गुरं । [5]सरसीरुह उद्दित मुदित बरं ॥
बर बीर कमोदनि की सु गती । सु भए रिसिराज उदोतपती ॥ छं० ६७३ ॥

सूर्योदय से भ्रमर चकवा चकई और शूरवीरों को आनन्द होता है।

दूहा—निसि गत बंछे भान बर । भंवर चक्कि अरु सुर ॥
मंतह मत्त पयान गति । बर भारथ्थ अंकूर ॥ छं० ६७४ ॥

रात्रि को संयोगिनी स्त्री और रण से श्रमित सेना विश्राम करती
है पर कुमोदिनी और वियोगिनी को कल नहीं पड़ती।

कवित्त—कुमुद उघरि मूंदिय । सु बंधि मतपत्र प्रकारय ॥
चकिय चक्क बिच्छुरहि । चक्कि शशिवृत्त निहारय ॥
जुवती जन चढ़ि काम । जाहि कोतर तर पंषी ॥
अवृत वृत्त सुंदरिय । काम बढ़्ढिय बर अंषी ॥
नव नित्त हंश हंसह मिलै । विमल चंद उग्यो सु नभ ॥
सामंत सूर न्रप रष्षि कै । करहि बीर बीश्राम सभ ॥ छं०६७५ ॥

गाथा—विश्रामं बर लेही । सूरं सूरयो धरयं ॥
धायं अंग बिअंगं । जानिज्जै [6]कैतु यो लग्गी ॥ छं० ६७६ ॥

दूहा—तम बढ्ढिय धुंधर धरा । परष पयं पन मुष्ष ॥
तम्म तेज चावहिसह । जुझ्झनि भग्गि अरुष्ष ॥ छं० ६७७ ॥
जुझ्झ भग्गि आरुष्ष बर । रोकि रहिग बर स्याम ॥
सुबर सूर सामंत गुन । तम पुच्छे न्रप ताम ॥ छं० ६७८ ॥

---

१. ए० कृ० को०--भग्गौं
२. ए०--सारं ।
३. ए० कृ० को०--भानु सु भानु ।
४. मो०--मोटक ।
५. ए० कृ० को०--सरसी रह उद्दित जरं ।
६. ए० कृ० को०--केन, केत ।

सहस्त्रों सेना में भी छिपा हुआ चहुआन का शत्रु बच नहीं सकता ।

गाथा—जै जै घर चहुआन । एक होइ सथ्थयो सूरं ॥
को रष्षो परमानं । अरि रष्षै कढ्ढयो मच्छी ॥ छं० ६७९ ॥

चौपाई—कोटि मझ्झि अरि होइ प्रमान ।
ता भंजै निश्चै चहुआन ॥
हरि शशिवृत्त जाइ पहु इंद ।
रुकमनि ब्याहु बरिय गोविंद ॥ छं० ६८० ॥

गाथा—गोविंदं प्रलि ब्याहं । सनमानं सूरयो वृत्ती ॥
अप रष्षै अरि जुद्धं । रष्षै स्वामि मरनयो अप्पं ॥ छं० ६८१ ॥

चहुआन के सामंत स्वामिकार्य्य के लिये प्राण को कुछ वस्तु नहीं समझते और यह स्वभाव चहुआन का स्वयं भी है ।

दूहा—अप्प वृत्त इह सूर किय । सूर वृत्त चहुआन ॥
स्वामि रहै लज्जै जलनि । भो वृत [1]वृत्तिय पान ॥ छं० ६८२ ॥

गाथा—कालिंदी तन स्यामं । लग्गे नथ्थि अगनतं स्यामं ॥
भय अवि वृत्तिय तामं । अन्यं जानि त्तत्तयो मारं ॥ छं० ६८३ ॥

सामंतों का पृथ्वीराज से कहना कि आप दिल्ली को जांय, हम लड़ाई करेंगे ।

अरिल्ल—सत्त सार प्रति प्रत्ति प्रमानं । जाहु राज दिल्ली चहुआन ॥
गुन बढ्ढे हम बढ्ढे सस्त्रं । दुष्ष मानि सुनि सुनिय विरत्त ॥छं० ६८४ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि सूर्य्य बिना चंद्र तथा तारागण से कार्य नहीं हो सकता, हनुमान के समुद्र लांघने पर भी रामचंद्र जी के बिना कार्य नहीं हो सका । मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जा सकता ।

कवित्त—दुष्ष मानि सो रत्त । सुनै सामंत सूर वर ॥
[2]चंद उडग्गन काम । सन्यो कहुं दिष्षि सूर नर ॥
गान काम न न सरे । अरुन जो होइ तेज बर ॥
काम राम [3]नन सरै । हनू [4]कूद्योति लंक धर ॥
नन सरै काम मंगल सु विधि । जो मंगल काकुत्त तप ॥
सामंत सूर हम उब्बरै । कढ्ढि मोहि मुक्कहुति अप ॥छं०

१. मो०—वृत्तपी । २. मो०—चंद उगन काम सन्यो ।
३. ए०कृ० को०—तन । ४. मो०—उद्योत ।

तुम्हें रण में छोड़ कर मैं दिल्ली में जाकर आनन्द करूं यह मैंने नहीं पढ़ा है।

दूहा मुहि कढ्ढिग तुम रहो बर। जियत जांहि उन थान ॥
ऐसी रीति अरीत वर। पढ्ढी नह चहुआन। छं० ६८६ ॥

गाथा जम्मन मज्झि सुरंगं। सो जपेव सूर तुम तत्त ॥
दिन भो रव संग्रामं। [1]सम्मान दारेंति एव गसं ॥ छं० ६८७ ॥

राजा का उत्तर सब को बुरा लगा परंतु किसी ने राजा की बात का उत्तर न दिया।

विष लग्गा नृप बैनं हाल्ला हलयो तनयो मूरं ॥
उत्तर दिय नह राजं। गाम निस भा बुद्धि जन बत्तं ॥ छं० ६८८ ॥

कवि चंदादि सब सामंतों ने समझाया पर राजा ने न माना और यही उत्तर दिया कि शत्रु के साम्हने से भागने वाले क्षत्री को धिक्कार है, मैं प्रातः काल भारत मचाऊंगा।

कवित्त बार बार भर कहिग। राज माने न तत्त [2]मत ॥
बीर चद ता अग्ग। चलै प्रथिराज हारि गत ॥
मो भंजै अरि गज्ज। मोहि [3] मंजै अरि भंजै ॥
ता छत्री कुल लज्ज। छत्र धरि सिर हति [4]लज्जै ॥
जं होइ प्रात दिष्षो सकल। महन रंभ इत्तो करौं ॥
चहुआन चित चितह सुरा। बर भारथ गुन विस्तरौं ॥छं० ६८९॥

गाथा- विस्तरि गुनयो प्रातं। रत्तं रत्त सूर बीरायं।
चावद्दिसि बर वीरं। सा धीरं मत्तयो बीरं ॥ छं० ६९० ॥

सब का यह मत होना कि सूर्योदय से प्रथम ही युद्ध आरंभ हो जाय।

दूहा-मत्ति बीर संमुह [5]भिरत। कठिन शस्त्र अति पान ॥
भान पयानह दीह गुन। लोह पयान पयान ॥ छं० ६९१ ॥

सूर्योदय से प्रथम ही फौज का तैयार हो जाना।

त्रोटक-बिन भान पयानति लोह कढ़े।
जल मत्तिय रत्तिय बीर पढ़े ॥
दोउ बीर दुवं दिसि धूंध धरी।
कलहं तत केलिय ता उपरी ॥ छं० ६९२ ॥

---

1. मो०-समान दारैं तिय बमसं। 2. ए० कृ० को०-बत।
3. मो०-मंबै। 4. मो०-लज्जे। 5. मो०-भिरन।

रण मदमाते निड्डर का घोड़े पर सवार होना और साठ योधाओं को लेकर हेरावल में बढ़ना ।

गाथा—अंकुर बीर सुभट्टं । अघटं घट्टाइ क्रोधयो कलहं ॥
हय मुक्या चलि अंधी । निडुर सध्धस सठयो बीरं ॥ छं० ६९३ ॥

शूरवीर लोग माया मोह को छोड़ कर आगे बढ़े ।

दूहा—बीर बीर बीराधि बर । [1]बढ़े लोह तजि छीह ॥
सूर धीर सामंत पति । नहिं माया नहिं मोह ॥ छं० ६९४ ॥

तीसरे दिवस का युद्ध वर्णन ।

रसावला—जिते सूर पत्ती । लगं लोह तत्ती ॥
नचे सूर छत्ती । उड़े काल षत्ती ॥ छं० ६९५ ॥
[2]जुटे जोध पत्ती । उडी रेन गत्ती ॥
महा बेन तत्ती । कला कोटि कत्ती ॥ छं० ६९६ ॥
प्रवं ग्राव गत्ती । सुरं पंच छत्ती ॥
मचे कूह मत्ती । षचे रोस रत्ती ॥ छं० ६९७ ॥
करे घाव कत्ती । हसे सूर चित्ती ॥
शिए फल्ल सत्ती । घुमें घाइ घत्ती ॥ छं० ६९८ ॥
भजै भीम मत्ती । हनूमान जत्ती ॥
अनाभूत अत्ती । दिपे दारु दत्ती ॥ छं० ६९९ ॥
रुधि धार [3]रुक्कं । भभक्कं भभक्कं ॥
धका धीग धक्कं । बकं मार बक्कं ॥ छं० ७०० ॥
हसे चित्त अक्कं । छुटे मत्त छक्कं ॥
डकारंत डक्कं । त्रिलोकंत हक्कं ॥ छं० ७०१ ॥
मनो मोह थक्कं । हको हक्क बक्कं ॥ छं० ७०२ ॥

युद्ध करते हुए बीरों की प्रशंसा ।

कवित्त— हको हकि बजिय प्रकार । सार बज्जे सु बीर बर ॥
सु बुधि बुद्ध आबुद्ध । मत्त लग्गे असि बर झर ॥
इकन रुद्ध आरुद्ध । नद्द नारद अधिकारिय ॥
रंभ सिभ आरंभ । सिद्ध बुद्धं दै तारिय ॥
धनि धनि सूर दिन धनित बल । छल छत्रिय अंबर रजि ॥
कलहंत काल कालह विषम । सुबर बीर बीरस रजि ॥ छं० ७०३ ॥

1. मो०—बढ़हि ।
2. यह छंद मो० प्रति में नहीं है ।
3. मो०—रुकं ।

दूहा—बीर रज्जि बीराधि भर । बलिय बीर गन सज्जि ॥
सुबर सूर सामंत के । मंत कलह तुटि बज्जि ॥ छं० ७०४ ॥
मत कलह बज्जिय तुटहि । बठहि अघट तुटि मंस ॥
सुबर सूर सामंत को । बर उड्डे तन अंस ॥ छं० ७०५ ॥
हंसति उड्डहि अंस दै । कंसत केसिय प्रान ॥
बर पंषिय पावै न जन । बर छुट्टै किरवान ॥ छं० ७०६ ॥

शूरवीर सामंतों का रणमत्त होकर विचित्र कौशल से शस्त्राघात करते हुए युद्ध करना ।

रसावला—पंष छुट्टै ननं । सूर भत्ते घनं ॥
घाव बज्जे घनं । टूक टूक तनं ॥ छं० ७०७ ॥
आज इक्कं मनं । बान नंसं [1]धनं ।
भीतकं विघ्घनं । कीय लीयं पनं ॥ छं० ७०८ ॥
अच्च झुम्मी बनं । जानि कुल्लालनं ॥
बीरि कड्ढे गनं । देव चढ्ढि विमनं ॥ छं० ७०९ ॥
पेषि इक्कं मनं । कुहुक बानं घनं ॥
नारि छुट्टै पनं । ... ... ॥ छं० ७१० ॥
गज्ज तें गग्गनं । सार वे सग्गनं ॥
सिद्धता मग्गनं । लीह ज्यों लग्गनं ॥ ॥ छं० ७११ ॥
इक्क इक्कं गनं । कुंभ हथ्थी [2]छिनं ॥
रुद्धि धारा घनं । दुद्ध मानों थनं ॥ छं० ७१२ ॥
दोइ पट्ठें दनं । ओप इम्भे इनं ॥
इष्ष वेस मनं । मस्स गिज्जं गनं ॥ छं० ७१३ ॥
गोरियं छन छनं । टूक होयं रनं ॥
सूर ह्वै तन तनं । नंमत फन फनं ॥ छं० ७१४ ॥
बार पारं जनं । रोस चढ्ढे रनं ॥
लग्ग गे बंमनं । रुंड केसि भनं ॥ छं० ७१५ ॥
गिद्ध सिद्धं गनं । टारि रष्षे तनं ॥
दद्धि ज्यों उप्फनं । असि साहै बनं ॥ छं० ७१६ ॥
मीन जातं पनं । पिष्षनं चिम्मनं ॥
कोन को चिम्मनं । भूत प्रेतं धुनं ॥ छं० ७१७ ॥
जुग्गनी जित्तनं । पत्त भत्तं तनं ॥
नारदं नंचनं । मुक्ति मै मंचनं ॥ छं० ७१८ ॥
अमरं गंमनं । बिष्टता सुमनं ॥ छं० ७१९ ॥

---

1. मो०थनं । 2. ए० कृ० को०—छिन, छिन ।

शूरवीर स्वामिकार्य्य साधन करने के लिये वीरता से रण में प्राण दे कर पूर्व्व कर्म्मों की संधि को लांघ कर स्वर्ग पाते हैं।

कवित्त—सूर संधि विधि करहि। क्रम्म संधो जस तोरहि ॥
इक्क लष्ष आहुटहि। एक लष्षं रन मोरहि ॥
सुबर बीर मिथ्या। विवाद भारथ्थह षंडै ॥
[1]बिञ्चि बीर गजराज। बाद अंकुस को मंडै ॥
कलहंत केलि काली विषम। जुद्ध देह देही सु गति ॥
सामंत सूर भीषम बलह। स्वामि काज लग्गेति मति ॥ छं० ७२० ॥

स्वामिकार्य्य में जो बीर रण में मारे जाते हैं उन का शिर श्री महादेव जी की माला (हार) में गुहा जाता है।

दूहा—[2]स्वामि काज लग्गे सुमति। षंड पंड धर धार ॥
हार हार मंडै हियै। गुथ्थि हार [3]हर हार ॥ छं० ७२१ ॥

गाथा—सिर तुट्टं धुर तारं। [4]लार तुट्टि बीरयो सिरयं ॥
धर तुट्टं प्राहारं। सा बज्जे तारयं तारं ॥ छं० ७२२ ॥
तारं तार प्रहारं। देवल दरियाइ झल्लरी बज्जं ॥
बज्ज ते सिर सारं। प्राहार पंच घट्टि काई ॥ छं० ७२३ ॥

तीसरे दिन एकादशी सोमवार को युद्ध होते होते पांच घड़ी चढ़ आई शूरवीर मार मार कर हाथियों की कला कला को पछेलते जाते थे।

कवित्त—घटिय पंच दिन घटयो। उमरि आरब्ब पुंज थिरि ॥
एक दिना दोउ सेन। मोह छंडयो क्रम निक्करि ॥
बान गंग पत्तयो। बीर ग्यारसि दिन सोमं ॥
सूर धीर सामंत। सूर उड्डे रन रोमं ॥
क्रत काम काज सांई बिभ्रम। दल दंतिय पंतिय[5] गमै।
सामंत सूर सांई बिभ्रम। रोम रोम राजी [6]भ्रमै ॥ छं० ७२४ ॥

इधर पृथ्वीराज ने शशिवृता की उत्कंठा पूर्ण की।

दूहा—रोम राज राजी भ्रमहि। [7]थोर थनी कुंठि बाल ॥
उतकंठ उतकंठ की। ते पुज्जी प्रतिपाल ॥ छं० ७२५ ॥

---

१. ए० कृ० को०—बेचि। २. मो०—पति काज लग्गे तिमत।
३. मो०—हाव। ४. को०—लारयं।
५. मो०—पत्तैं, प्रतें। ६. मो०—भ्रतैं।
७. मो०—थोरि।

साटक—साता से उतकंठ रंमति गुना रंभा अरं भावरं ॥
संच बिद्धि सु सुख कारन मिते देवंगना सुंदरी ॥
आ बंदे मिति चंदहुंकारन मिते निर्भासितं भासितं ॥
पाषंडं तजि लीन मूरति वरं आरंभ पारं भनं ॥ छं० ७२६ ॥

सम्मिलन के प्रारंभ में पृथ्वीराज ने प्रण किया कि
मैं तुझे तीनों पन में एक सा धारण किए रहूँगा ।

गाथा —आरंभ प्रारंभो । उतकंठा किनयो वृतयं ॥
साधा धरी सु धरयं । रन छुट्टं तीनयो पनयं ॥ छं० ७२७ ॥

यह बर पाने के लिये कवि का शशिवृता को धन्य कहना ।

मुरिल्ल -बालप्पन जुब्बन पन बीर । दई बीर बडपन्नह [1]धीर ॥
बडपन्नह मति सु तजि डिढाइ । धंनि लई तिहुं पन्न बड़ाइ ॥छं०७२८॥

दूहा - बालप्पन जुवपनह गति । कथ तिय पनहति काज ॥
भर कब्बे [2] राज गुन । नह चल्लै प्रथिराज ॥ छं० ७२९ ॥

पृथ्वीराज का अटल प्रेम देख कर पैर पकड़ कर शशिवृता का
कहना कि दिल्ली चलिए ।

नह चल्लै पृथिराज रिन । लज्ज लपट्टिय पाइ ॥
त्रय जोरे कर हथ्थ दो । चलि संभरि वै राइ ॥ छं० ७३० ॥

उक्त विषय पर पृथ्वीराज का विचार में पड़ जाना कि क्या करना चाहिए।

लज्ज परब्बत ह्वै रही । बैन तजै नृप पास ॥
दुहूं बीर [3]मंडन सु बुधि । अति गत्तिय रति त्रास ॥ छं० ७३१ ॥

यह देख शशिवृता का कहना कि मेरी लज्जा रखिए ।

फिरि बुल्ली लज्जी सुनहि । हों मडन तन बीर ॥
मो बिन इक्कं काज नृप । बुद्धि न आवै तीर ॥ छं० ७३२ ॥

राजा का कहना कि तेरी सब बातें रस कसूम (अफीम
के शर्बत) के समान मेरे जीवन भर मेरे साथ हैं ।

तूं वै एकहु पन रहै । रंग कसूंभ प्रमान ॥
हौं नन छंडों पास तुअ । तीनों पनह समान ॥ छं० ७३३ ॥
तूं लज्जो मो सध्य है । दान खग्ग अरु रूप ॥
मों चल्लै तीनों चलें । संची चवे न भूप ॥ छं० ७३४ ॥
सुन रे वै लज्जो चवै । हूं मंडन नर लोइ ॥
मो बिन अप्पन [3] लद्ध है । नर [4]निभासन होइ ॥ छं० ७३५ ॥

---

१. मो०—धीर ।
२. मो०—संतह ।
३. मो०—लद्ध, लब्ध, लब्ध ।
४. मो०—निर्भासन ।

शशिवृता का कहना कि मैं भी क्षण क्षण आपकी
प्रसन्नता का यत्न करती रहूंगी।

वै बुल्ली लज्जी कलह। क्रत कै काम सुनंत ॥
इकके पल पल मंडनौ। हो रज्जन रजकंत ॥ छं० ७३६ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि चहुआन का धर्म ही लज्जा का रखना है।

अरिल्ल —[1]लज्जी सुनि सुनि हसी प्रमान। तूं जाने सुनि [2]बैन निधान ॥
लज्ज रूप मंडन चहुआन। सुबर बीर [3]आकास निधान ।छं०७३७॥

तू अपने धर्म अनुसार सत्य कहती है।

दूहा—तूं लज्जी सच्ची चवै। तत लगि ध्रंम प्रकास ॥
आवृत्तह गुन भ्रत्त किय। जोग सुहंदा चार ॥ छं० ७३८ ॥

इस प्रकार शशिवृता और पृथ्वीराज का परामर्श होता रहा, पृथ्वीराज रूप रस में मस्त था और उसके स्वामिधर्म में रत सामंत उस तक कोई बाधा न पहुंचने देते थे।

छंद पद्धरी—निब्बयौ बाद वै वर [4]प्रमान।
मानहि न बत्त लज्जी निधान ॥
वै आहु जाहु तन रूप छंडि।
जिन चलै लजज लज्जी त्रिषंडि ॥ छं० ७३९ ॥
कहि बीर राज आए स बीर।
मानहु कि छुट्टि घन बर सरीर ॥
आभास भार तुट्टति अंग।
जोर वरज हूर मत्तीत जंग ॥ छं० ७४० ॥
क्रनत केलि क्रत करहि काम।
सोभहति सूर दक्षिन ति[5]ताम ॥
अति स्वामि ध्रंम नह बाम मग्न।
लग्यो न सूर जिम स्वामि दग्ग ॥ छं० ७४१ ॥
प्रथिराज दिष्ट दिष्टत प्रमान।
अरि भजत मनहु तिन अग्गि आन ॥ छं० ७४२ ॥

यद्यपि सामंत बड़े बलवान थे किन्तु तब भी पृथ्वीराज का मन युद्ध ही की ओर लगा

दूहा—अग्नि पान सामंत बल। घ्रत धीरत्त न जोध ॥
रत्त लग्गि लग्गी न मन। तउन पत्र पति जोध ॥ छं० ७४३ ॥

---

१. मो०—लज्जा सुन रहली प्रमान। २. ए०—कृ० को०—वै सुन निधान।
३. मो०—आकार। ४. ए० कृ० को०—प्रकास। ५. मो०—नाम।

शशिवृता की आशा पूजी, शिवजी की मुंडमाल पूरी हुई और भगवती रुधिर से तृप्त हुई।

त्रिय त्रिघाइ सूरन भए। त्रिरति उमापति मुंड ॥
उमा त्रपति रुधिरं भई। घनि सूरन भुज दंड ॥ छं० ७४४ ॥

शूरवीरों के शौर्य्य और बल की प्रशंसा।

सूर सुघनि भुज दंड बल। बल विक्रम ज्यों [1]पाय ॥
बल किन्नो छल छंडयो। बर बीरा रस चाइ ॥ छं० ७४५ ॥

कवित्त—बीर घाइ आघाइ। बीर बिरुझाइ सेन बर ॥
लष्ष लष्ष इक मद्धि। लष्ष उभ्भिरे लष्ष झर ॥
दल दंतन बिच्छुरे। घाइ है वर किन तंकहि ॥
एक लष्ष रुंधियै। षग्ग षग्गनि झननंकहि ॥
ठननंकि घंट घंटिय परहि। कज्जल कूट विवान भ्रम ॥
सामंत सूर सामंत हय। करहि चंद अस्तुति सु क्रम ॥ छं० ७४६ ॥

शशिवृता के ब्याह की देवासुर संग्राम से उपमा वर्णन।

छंद पद्धरी—आसंभ सेन सेना विरुद्ध। शशिवत्त ब्याह दैवान जुद्ध ॥
नर मयहि मेघ रथ गज सु वादि। होमियै षग्ग रिस अग्ग सादि ॥छं०७४७॥
उच्चरे बैन बाजंत बीर। सद्धै जु उद्ध बुद्ध सरीर ॥
दैवत्त दुर्ग छिति मति अकूर। निर्घोष दोष बज्जै सपूर ॥ छं० ७४८ ॥
हय गय गँभीर तन तुंग ताम। सूरह सु बीर विश्राम जाम ॥ छं० ७४९ ॥
गाथा – रन घन तन विश्रामं। सँग्रामं इक्क घरी पाइ ॥
दावानल चहुआनं। सा बीरं बीर बीराघं ॥ छं० ७५० ॥
बीराघं बर बरयो। सा भज्जै आवनं गवनं ॥
[2]मोहं सलाकं भंजो। नां सज्जं पंजरी दिवो ॥ छं० ७५१ ॥

शूरवीरों का कहना कि हमारी जय तो हुई किन्तु जयचंद का भाई कमधज्ज क्यों जीवित जाने पावे।

चौपाई – नह सज्जै पंजर प्रतिमान। कहै सूर निहचै प्रतिमान ॥
बीरचंद बंधव कमधज्ज। जीवत स्यामि जाइ क्यों लज्ज ॥छं०७५२॥
गाथा – हम बहुलं बेसतयं। बंधे तेग मुक्कि न्रप जायं ॥
जीवत सुनि कमधज्जं। ना मुक्कै लष्षयं बलयं ॥ छं० ७५३ ॥
मुरिल्ल – लष्ष लष्ष बर सुभट सु भट्टह।
अघट घट्ट सु घटै न घट्टह ॥
सुबृत बीर छत्रिय छिति राजै।
मनो इंद घन मद्धि बिराजै ॥ छं० ७५४ ॥

---

1. ए० कृ० को०—आइ। 2. मो०—माहे।

गाथा यों रज्जै नृप भरयो । सरनं सूर सूर गत्ताइं ॥
उग्गं तो रवि मानं । यों रत्ताइ रत्तयो मुषयं ॥ छं० ७५५ ॥

राजा का कहना कि उसे मार कर क्या करोगे ।

दूहा —सत्य सु तुझ कट्यो सु सब । सुभट भट्ट बड़ भृत्य ॥
क्यों न जाइ जीवत घरह । कहा करोगे मृत्य ॥ छं० ७५६ ॥

आततताई का कहना कि उसे युद्ध में खंड खंड कर ही दूंगा ।

छंद भुजंगी —
तबै उच्चयो अत्तताइ अभंगं । सज्यो गैन सीसं जुन्यो जुद्ध रंगं ॥
हनों याहि भंजों सु गंजो पलानं । करों षंड षंडं जु मंडै बलानं ॥छं० ७५७॥

इसी प्रकार गुरुराम की आज्ञा होने से घोर युद्ध का होना ।

तबै गज्जि क्रम्यो गुरुं चाहुआनं । अगे जोगिनी जग्गि क्रम्यो गुरानं ॥
क्रम्यो सथ्थ जद्दो स जामानि तामं । दुअंबद्ध हड्डा चले बंध ठामं ॥छं० ७५८॥
मिली रारि अंकं दुअंकं प्रमान । परे जादव राइ अरु चाहुआनं ॥
कहै भूलि भारत्थ इत्तें सपूरं । उठे कंदलं हक्कि ते कौन सूरं ॥ छं० ७५९ ॥
नरं रक्त बीज बिनं केन दिट्ठं । इतें हंकि सामंत की बुंद उट्ठं ॥
मिले घाइ घायं असी पंगदाय । मिलीं रीठ आवद्ध साबद्ध घायं ॥ छं० ७६० ॥
परे सीस भारं चहूआन धार । मनो इम्भ झंकोर अबूज झार ॥
गजं वाज तुट्टं परे षंड षंड । नचनं पिनाकी करं सज्जि दंड ॥ छं० ७६१ ॥
कटे तुच्छ हड्डं सु मंसं निमंमं । परे सूर मुझ्झेति मध्य उतसं ॥
तिनं सत्त नामं जुअं जू बषानं । रठ निठ्ठुर कन्ह वर वीर जान ॥छं० ७६२॥
तहां अत्तताई रु गोविंद मानं । उठे हक्कि हाक सु पज्जुन पान ॥
रघूवंस भीमं तिनं नाम जानं । परीहार नन्ह तिन नाम ठान ॥ छं० ७६३ ॥
इते उग्गरे कंदलं चंद कव्बी । मनों देपियं जानता जोति हव्वी ॥
परे पंच रायं दहे राज सत्तं । मुर पचरा वृत्त मा वेद वृत्तं ॥ छं० ७६४ ॥
दुहुं पष्ष लग्गे तिनं नाम जानं । तिनं जाति चदं रु सूर बषान ॥
पन्यौ झूझि रघुबंस परताप राजं । परयौ राव चालुक्क ता जैत लाज ॥
छं० ७६५ ॥
पन्यौ दलपती राउ दल सब्ब संध्यौ । पन्यौ कन्ह राजा दलं नेत बध्यौ ॥
झंझा गहु बीरं पन्यौ राजा षीची । जिने कित्ति लच्छी तियं लोक सीची ॥
छं० ७६६ ॥
पन्यौ आवली राव सारग सूरं । तिने अग्गरी अच्छरी छंडि दूरं ॥
पन्यौ दाहिमा देव मिलि धार पंती।वरै अंत कंती विराजै सुंदती ॥छं० ७६७॥
यौ किल्हनं राव माल्हन हूंसं । तुटयौ सार धारं मिल्यौ हंस वंसं ॥
पन्यौ संकली राव दाहिमा नरिंद नृप किति पयो भवी किति चंद ॥छं० ७६८॥

पन्यौ ट्टांक सूरं मिल्यौ सूर मंदे । मिल्यौ सार धारं जमं डंड षंडे ॥
चढयौ धार धारं धनी धार नाथं । मुकी मोह माया लई किति हाथं ॥
॥ छं० ७६९ ॥
पन्यौ राव मोरी मुर्यौ अव्व सथ्थं । नन पाइ चल्लै चलै हथ्थ वथ्थं ॥
परे सूर हक्केय धक्के कलेवं । सिरं जुद्ध आनुद्ध देषत देवं ॥ छं० ७७० ॥
करे जोगिनी डक्क हक्कं गहक्कं । गजं बीर सूर मु आवद्द धक्कं ॥
चलै श्रोन अंमान पूरे प्रनारं । अद्भूत माया न रच्यौ मु भार ॥छं० ७७१॥
तवै अत्तताई लग्यौ लोह रस्स । भगी फौज कमधज्ज दिस्स विदिस्सं ॥
परे सेत सेते न थान मु दिस्सं ।लगं अच्छरी माल नभ्भ सु जिस्स ॥छं०७ २॥
अनंछित अंगं बरं अत्तनाई । भई जीत चहुआन प्रथिराज राई ॥ छं० ७७३ ॥

रण में अगनित सेन को मरा देख कर निड्ढुर का कमधज्ज से
कहना कि अब तू किस के भरोसे युद्ध करता है। पृथ्वीराज
तो शशिवृता को लेकर चला गया।

दूहा परे सुभर दोऊन दल । निड्ढुर देष्यौ बध ॥
कोर भुजा बल जुध करै । मुनि कमधज्ज अमुद्ध ॥ छ० ७७४ ॥
बाला लै प्रथिराज गय । गहिय बग्ग कमधज्ज ॥
रोस रीस बिरसोज भय । रह नाजे अनवज्ज ॥ छ० ७७५ ॥

पृथ्वीराज शशिवृता को लेकर आध कोस आगे जाकर खड़ा हुआ।

कवित्त -अद्ध कोस नृप अग्ग । बीर ठढयौ करि ठड्डौ ॥
मद समूह गजराज । छडि पट्टै बल गड्ढौ ॥
लाज बधि सकरिय । वीर बध्यौ सु अष्ट क्रमि ॥
अरिन बोर छडै न । क्रम्म मडै दिलीय दिसि ॥
मनमत्थ महावत बधि अति । मन मत्तौ उन को धरै ॥
घन घाइ रुधिर छुट्टै परे । अमर पुहुप पूजा करै ॥ छ० ७७६ ॥

अपनी ओर कमधज्ज की सब सेना मरी देखकर यद्दव का
हार मानना और सब डोली पृथ्वीराज को सौंप देना।

षूब राज प्रथिराज । षूब जैचंद बध बर ॥
षूब सूर सामंत षूब नृप सेन पंग बर ॥
षूब सेन ढंढोरि । षूब डोरी करि डारिय ॥
षूब षेत बिढि गाम । बानगंगा पथ झारिय ॥
आसेर आस छंडिय नृपति । बिपति सपति जानीय भर ॥
मुठिहार राज प्रथिराज कौ । धरे सबह चौंडोल बर ॥छं० ७७७ ॥

पृथ्वीराज ने तेंतालसी डोलियों सहित बीच में शशिवृता को लेकर दिल्ली को कूच किया।

चौपाई—गो ढिल्ली ढिल्ली प्रति बीर। सूर घाइ जर्जर किय श्रीर ॥
किति सजी त्रैलोक प्रमानं। अंग कियो जर्जर चहुआनं ॥छं० ७७८॥

दूहा—डोला ग्यारहु दून दस। एकादस तिन मद्धि ॥
मद्धि अमोलिक सुंदरी। काम बिरामन सद्धि ॥ छं० ७७९ ॥
डोला धाइन बंधि नृप। बजि निसान त्रिघोष ॥
सब सामंत समंग्र चढ़ि। बिच सुंदरी [1]अमोघ ॥ छं० ७८० ॥

शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज तेरस को दिल्ली पहुँचे।

गाथा—बिच सुंदरी अमोघं। दोषं नैव बालयो मद्धि ॥
तेरसि गुन अधिकारी। संपत्ते राजयो ग्रेहं ॥ छं० ७८१ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा वर्णन।

दूहा—इन परंत पत्तो सु ग्रह। सुबर राज प्रथिराज ॥
हय गय दल बल मथत बर। रंभ सजीवन काज ॥ छं० ७८२ ॥

चामुंडराय की प्रशंसा।

सहु जहाँ चामंड बर। बर बर जुद्ध बिरुद्ध ॥
सुद्ध करै सामंत की। बर धीरज्ज सु बुद्ध ॥ छं० ७८३ ॥

युद्ध में कमधज्ज और यद्दव को जीत कर शशिवृता को लेकर पृथ्वीराज दिल्ली आ पहुँचे।

चाहुआन चतुरंग जिति। निगम बोध्र रहि राज ॥
बर शशिवृता जित्तिगो। धाम सु ढिल्ली साज ॥ छं० ७८४ ॥

शशिवृता के साथ विलास करते हुए सब सामंतों सहित पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करने लगे।

गाथा—तपय सु नरपति ढिल्ली। दीहु दीहं पद्धरे राज ॥
जं मंगै क्रत कामं। सा देवं सोइयं देहि ॥ छं० ७८५ ॥
दीहं पासा रूवं। साख्वं भूपयो सव्वं ॥
जे मग्गे ते मंगै। देवानं देवयो दीहं ॥ छं० ७८६ ॥

दूहा—सारिन सालै पंस बर। सारि पंस बर जोग ॥
सुबर सूर सामंत लै। करि ढिल्ली प्रति भोग ॥ छं० ७८७ ॥

---

१. ए० कृ० को०—अघोष।

इस जय के प्राप्त होने से चहुआन का यश और बादसाह से बैर बढ़ा ।

जै जै जस लद्धो सुबर । बैर नृपति सुरतान ॥

सुबर बैर बर बढ्ढयो । सुबर जित्ति चहुआन ॥ छं० ७ ८ ॥

पृथ्वीराज शत्रुओं को पराजय कर के प्रचंड बादशाह को

दंड दे कर नीति पूर्वक दिल्ली का राज्य करता था ।

कवित्त – भई जीति चहुआन । अरिय भजे अभंग भर ॥

जै जै सूर बषान । देव नंषें सुमन्न वर ॥

लै शशिवृत्ता राज । अप्प दिल्लीय संपत्तो ॥

अति तोरन आनंद । चित्त रत्तो मन मत्तो ॥

अरि अवनि कोन मंडै मनहु । षग्ग दाग अरि षंडइय ॥

कवि चंद दंद दारुन कयहि । इक अडड करि डडइय ॥छं० ७८९॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासक शशिवृता

कथा नाम पचीसमो समय संपूर्ण ॥

अथ देवगिरि समयो लिख्यते ।

(छब्बीसवां समय)

जयचन्द की सेना ने देवगिरि गढ़ को घेर रक्खा ।

दूहा—ना चल्लै कमधज्ज ग्रह । गढ़ घेर्‌यो फिरि भान ॥
मानहु चद सरद्द [1]जिम । गिर नछित्र [2]परिमान ॥ छं० १ ॥

कुंडलिया गढ़ घेर्‌यो फिरि भान को । दूत सु दिल्लिय मुक्कि ॥
[3]यह अजोग मयोग करि । अदिन कज्ज हम रुक्कि ॥
अदिन कज्ज हम रुक्कि । प्रान इन के दुष मुक्कै ।
इन समान भर सत्त । जीव जावंतै धुक्कै ॥
* प्रथम पुंजा लष्षिन । कुंआरि ससिव्रत्त धीर बढ़ ॥
धन भर लज्ज सुबंध । घेरि मह वीर राजगढ़ ॥ छं० २ ॥

राजा जयचन्द के भाई ने कन्नौज को और देवगिरि के राजा ने पृथ्वीराज के पास सब समाचार भेजा ।

दूहा—इन कग्गद चहुआन [illegible] । उन मुक्कलि [4]कमधज्ज ॥
हूं बीर कबिचंद इह । कै वज्जं कै बज्ज ॥ छं० ३ ॥

दूत ने लज्जा के साथ जयचन्द को पत्र दिया । जयचन्द के पूछने पर दूत ने युद्ध और पराजय का हाल कहा ।

कवित्त—सुबर बीर कग्गदह पंग करि अप्पि सु जंपिय ॥
बहु दुचित्त सजुत्त । लज्ज आजुत्त प्रकंपिय ॥
सुर मुक्कीय कर पग । नैन नीजे नृप दिट्ठौ ॥
तब पहु पग नरिंद । कुशल जानी न गरिट्ठौ ॥

---

१. ए०-कृ०-को०-दिन । २ ए०-कृ०-को-परजानि ।
३ ए०-कृ०-को०ग्रह । ४. ए०-कृ०-को०-कमधज्ज ।

* छंद २ की अन्तिम दोनों पंक्तियों का चारों प्रतियों में समान मूल पाठ इस प्रकार है -"प्रथम पुंज लष्षिन कुंअर ससिव्रत मुधीरह । धन भर लज्ज सुबंध राजगढ़ घे 'महीरह"— यह कुंडलिया छंद के नियम से विरुद्ध पड़ता है परन्तु यह कवि की भूल नहीं है, लेखकों की असावधानी या भूल से ऐसा हुआ है क्योंकि उन्हीं शब्दों के हेर फेर से शुद्ध पाठ हो गया है और अर्थ में भी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं हुई ।

पुच्छी सु बात इह करिय तम । जानि सोक कह उप्पनिय ॥
संग्राम तेज भंजन भिरत । मरन कहो मारन पुनिय ॥ छं ४ ॥

दूहा - दुज्जन दवने पीर के । वज्जे पै बर केक ॥
भर भीरी रहि अंक के । मरन मरन के केक ॥ छं ५ ॥

कुंडलिया - तब पहु पंग न[१]रिंद प्रति । [२]दूत सु उत्तर जप्पु ॥
इह अपुब्ब कथ सुनि नृपति । जीतें हार सु अप्पु ॥
जीतें हार सु अप्पु । देषि कह्यौ चहुआन ॥
ढिल्ली वै अधकोस । बीर मुक्यौ तिहि थानं ॥
आइ सेन घन घाइ । अद्ध भर पारि असुर जब ॥
दिषि निद्दुर कमधज्ज । वग्ग सेना पत्तय तब ॥ छं० ६ ॥

दूहा देवग्गिरि गढ़ घेरि फिरि । [१]हौं मुक्यौ नृप काज ॥
मतौ मंडि रा पंग पै । वे [२]पुक्करि प्रथिराज ॥ छं० ७ ॥

चौपाई इह कहंत नृप पंग सु अष्षी । वियौ [३]दूत नृप अंषन दष्षी ॥
दुषित चित्त मुक्की बर बानी । कुसल वीर कमधज्ज न [४]जानी ॥ ८ ॥

दूहा भयौ स्वेद सुर भंग भो । नैन झलक्यौ पानि ॥
कै फिरि दंद सु उप्पनौ । कै वर बंधव हानि ॥ छं० ९ ॥

कवित्त - कही कुसल तन दूत । किति कुसलत्तन भग्गिय ॥
जेनि रहे कमधज्ज । रहे सो जम्भह लग्गिय ॥
जे निकलंक ग्रह आदि । कलंक कालंक सु कुप्पं ॥
[५]दे विधानं निम्मान । कौन मेटै को थप्पं ॥
भष जोइ सिष जम्बक हरै । काकलब पप्पील गहि ॥
जद्दिनह भई भावी विगत । जिम रक्खै तिमि तिमि सुरहि ॥१०॥

कवित्त - यह कहंत पहु पंग । दूत तिय आन सपत्तो ॥
वाचा शीतल जपि । अंग आरम्भ न सत्तो ॥
चढ़ि नरिन्द कमधज्ज । तीन तन सज्जन बारो ॥
मिलि यद्दव चहुआन । बीर परिहै ससि भारो ॥
दाहिम्मराय चामुंड सौं । सब्ब साथ नृप थप्पयौ ॥
ते काज राज सम्है सुमति । लिषि कग्गद महि अप्पयौ ॥ ११ ॥

जयचन्द्र को महा क्रोध से कहना कि पृथ्वीराज की कितनी सेना है। उसे मेरा एक मीर बंदा जीत कर बांध सकता है।

---

१. क०—होम ।
२. मो०—पुकारि ।
३. ए०—को०—आनी ।
४. मो०—कहै ।
५. मो०—थो ।

क्रोध भरिय कमधज्ज । काक बर बोल उचारै ॥
जो भज्जै ग्रह अपन । कोन अप्पनौ बिचारै ॥
अरे सुनहु भर सुभर । जुज्झ भग्गौ पति छंडै ॥
बेचि बीर गजराज । बाद अंकुस कौ मंडै ॥
चहुआन सेन कित्तिक है । एक मीर बंदा बधै ॥
लम्भयौ राज अप अप्पुनहु । लोह धार मो सम सधै ॥ छं० १२ ॥

जयचन्द ने मंत्रियों से मत करके अपने स्नेही राजाओं को सेना सहित आने को पत्र भेजा ।

कुंडलिया - सुनि सुमंत्त मंत्रिय समत । कुमति मंत क्यों मंत ॥
बचन भेद जिहि हम कही । सोइ गही बल तंत ॥
सोइ गहि बल तंत । बल न अप्पन पहिचान्यौ ॥
उदो राग उच्चऱ्यौ । संच तेता करि मान्यौ ॥
उननें कुंवरी [1]बरी । तिनं कु करै तिन गुन्नी ॥
[2]सु बरि एक बुल्ले दुवान । सो सब सह सुन्नी ॥ छं० १३ ॥

पत्र भेज कर अपनी तयारी की आज्ञा दी । सवारी के लिये घोड़ा तय्यार कराया ।

कवित —बर अथवंन सु दीह । आइ चतुरंग सपन्नो ॥
मज्झ महल नृप बोल । बंचि कग्गद कर लिन्नो ॥
निसा मंत उप्पाइ । सहस नव लिषि बर पट्टै ॥
इष्ट भ्रत्त सगपन्न । सु भ्रत बहु फट्टत पट्टै ॥
वज्जित्त त्रिघोष अरि घोष पर । छोरि पंग दिष्षे सु हय ॥
रवि रथ्थ तथ्थ आवहि जु सम । [3]गात गिरव्वर नाग सय ॥ छं० १४ ॥

घोड़े की प्रशंसा वर्णन ।

भुजंगी —[4]तियं फेरियं अश्व दीसैति पंगा । तिनं देषते छांह कंपन अगा ॥
तिनं ओपमा चंद बरदाइ कैसी । दिषै तोर मानों श्रुट्टै अंग तैसी ॥ छं० १५ ॥
पयं मज्झ मंडे तिमं चित्त इच्छं । पयं पातुरं चातुरं तो बिसच्छं ॥
षुरं बज्जतें भुम्मि धुज्जै धसक्कै । फनं फेञि से संमुहं फूंक सक्कै ॥ छं० १६ ॥
द्रुमं सीस दीसै सु केकी पुछंगी । मनो मडियं नील [5]कंठं उछंगी ॥
तिनं भाल संमेलयं घाट सुज्झै । [6]छिलै पूर ऐसें सरित्तान सुज्झै ॥ छं० १७ ॥

---

१. मो०—मुरी । २. कृ०—सुबरन ।
३. ए०—बात । ४. ए०—लियं ।
५. कृ०—बर्हि । ६. मो०—कठी । ७. ए०—बिलै ।

झुलै कंन नाही छुरी कास ग्रीवं। मनो देषियं सीष निर्वात दीवं ॥
दिषै कब्बि चंदं सुरंगं सु सेसी। दुहं पष्ष नाहीं तिनं षोरि कैसी ॥ छं० १८॥
सुभै सालिग्रामं समानंत अंषी। तिनं पूजिजै चित्त चित्तंत नंषी ॥
पियें अंजुली नीर दीसै उपंगा। फिरै कच्छ रच्चीन में रत्त गंगा ॥छं० १९॥
दिसानं दिसानं सबै जाति राकी। कही चंद कब्बो उपंमा सु ताकी ॥छं०२०॥

[1]कवित्त –त्रत्तिय नयन रुद्र कै। उट्ठि घन अगिग तिनंगा ॥
तास मध्य ते प्रगटि। तेजवंता सु तुरंगा ॥
भुअपत्ती संग्रहे। पीठ मंडै पल्लानं ॥
अंबर करत बिहार। देषि कोप्पो मघवानं ॥
प्रगट्टि नषि दिय वज्र सों। गयन गवन तब मिट्टि गय ॥
कहि चंद मनहु [2]पहुपंग तें। फेरि आज पष्षरत [3]हय ॥ छं० २१ ॥

जयचन्द घोड़े पर चढ़ा। तीन हजार डंका निशान और तीस लाख पैदल सजकर झट से तय्यार हुआ।

चढ़न पंग हय सज्जि। सज्जि गजराज सज्जि नर ॥
यों जानी सुर असुर। करै कमधज्ज विया पुर ॥
बजि त्रिघोष त्रिय सहस। मीर बंदा दस लष्षित ॥
तीस लष्ष पाइक्क। सुबक पारंक निअष्षिय ॥
जू मन विराग बल बीर सजि। दल सज्ज्यो गंजन अरिन ॥
पहु पंग बीर परतषि लै। किरन सु सम सज्जो किरन ॥छं०२२॥

जयचन्द ने प्रतिज्ञा की कि जादव और चौहान दोनों को मार कर तब मैं राजसूय यज्ञ करूंगा।

दूहा –इह मता रढुंराजिय। बधि जद्दव चहुआन ॥
जग्य अरंभ जु मंडिहौं। ता पच्छै परवान ॥ छं० २३ ॥

सेना की शोभा वर्णन।

कबित्त—चढ़न पंग मिलि सेन। पूर जिम नदिय मिलन त्रिन ॥
वज्जि बीर वा तूल। जत्य कथ्थहु उड्डै षिन ॥
एकट्ठां फुनि अम्म। तुट्टि जू जू फल लद्धो ॥
दैव क्रम्म करि जोग। आइ एकट्ठ अरुद्धो ॥
बंधेत काल डोरी तनै। छूटि धार घन मिलहि [4]तिम ॥
आवृत्त क्रम्म लिष्षे बिना। मिलै न पंचो [5]पंच [6]जिमि ॥छं०२४॥

---

1. २१ छंद मो०–प्रति में नहीं है। 2. ए०–को०–पहु।
3. ए०–हय। 4. ए०–कृ०–जिम।
5. ए०–को०–पंच। 6. ए०–कृ०–को०–जिम।

जयचन्द्र की स्त्री का बिरह वर्णन ।

दूहा --इह अवस्थ पहु पंग की । बाल अवस्था कौन ॥
जियन आस नहि सांस तन । डरहि देषि [1]अलि जोन्ह ॥ छं०२५ ॥

गाथा - बाले मलयं चंपं । दै दै चंपत उरह [2]उरहीती ॥
तिन बिपरीतं बामं । कामं रस जग्गयौ घनयौ ॥ छं० २६ ॥

भ्रमरावली --बढ़ि बाल वियोग सिगार छुन्यौ ।
सुख कौ अभिराम कि काम लुट्यौ ॥
घन सार सुगंध सु घोरि घनं ।
बनि जानि प्रकीन कृपान बनं ॥ छं० २७ ॥
तल पत्ति तजे नल पत्ति मनो ।
बहु बाढ़िहै अंग अनग घनों ॥
नव चंदन अंग अनंग जरै ।
दिप दीपक भौन में भान बरै ॥ २८ ॥
लगि मोदक से अन मोदकयं ॥
दिसि प्राचिय देषि परी धुकयं ॥
प्रति बृत्ति सरत्ति यपी पयन ।
उमगे तहां अंसुअ द्वै नयनं ॥ २९ ॥
घन ज्यों तन छड्डि न उत्तर [3]देइ ।
लगि कानन नाम पिया अलि लेइ ॥
कछू बर भोंहन उत्तर देत ।
मनों दस [4]वस्थन दंग अचेत ॥ छं० ३० ॥
चषयं सुभि चंचल रंजनयं ।
सु मनो गहि मुत्तिय षंजनयं ॥
बिय भाव सु अंसु अनंदि लता ।
हर नंषिय रब्ब तिगी पतिता ॥ छं० ३१ ॥
तिन अंग अचेतकिता भ्रमयं ।
दुष दूषन भूषन से तनयं ॥
बिषि दिष्षि अली अलिके अकरें ।
लय सास उसासन तानि परे ॥ छं० ३२ ॥
पन प्रान प्रियान प्रयान पुटं ।
लगि साहस एक घटी न घटं ॥

---

१. ए०-कृ०-मो०-अवि । २. ए०-कृ०-को०-उरहीति ।
३. मो०-देत, लेत । ४. ए०-कृ०-को-अवस्थन ।

सु [1]थनं सब तें विमनं मन तें ।
निअ निश्चल [2]रैनि गई गिनतें ॥ छं० ३३ ॥
चलि सीत सुगंध सुमंद्य बात ।
मनों लगि पावक अंभन जात ॥
डुलावत अंचल शीतल काज ।
लगै मनों तीर [3]तरुन्निय आज ॥ छं० ३४ ॥
भुअंगम भोजन अंगम नारि ।
करै करुना रसकी उनिहारि ॥
सबै सु सषी मिलि पूछत ताहि ।
मनों जड़ श्रोत सुने रस जाहि ॥ छं० ३५ ॥
चढ्यो कुटिलं रथ वित्तह धाइ ।
[4]सु जे मरविंद समादक लाइ ॥
इनं रिति नारि न मुक्कहु नाह ।
लगे विहुआनि कुमुद्दिन राह ॥ छं० ३६ ॥
नदीय निवान [5]अपीत सयं ।
नव पंथय सुक्कय बुझ्झ कयं ॥
बजि मारुत तत्त समीत प्रकार ।
उड़ै घन ध्रम्म बहै अनिवार ॥ छं० ३७ ॥
करै तरु तुंग गई सुधि धाम ।
तजी पहु पग नरिंद सु वाम ॥ छं० ३८ ॥

जयचन्द की चढ़ाई का वर्णन ।

पद्धरी– चढ़ि चल्यो पंग कमधज्ज राय । सो छिन्न भिन्न डम्मरित छाइ ॥
पद्धरी छंद बरनो सुरंग । लहु बरन बीच विचि अति सुरंग ॥ छं० ३९ ॥
ढ़लकंत ढाल तरवर प्रमान । हलके हलंन गज नग समान ॥
अपसुकन सुकन [6]वित्तहि न चित्त । [7]न्रिम्मान वत्त गुन धरत तत्त ॥
॥ छं० ४० ॥
कदवत्ति सलिल जहां सलिल पंक । चित चित्त बकं जे करें कंक ॥
चल्ले नरिंद अरि पुब्ब गाव । भुमियां ससंक सब लगत पांव ॥छं०४१॥

---

१. ए० को०–सुथानं २. ए० को०–नैनि । ३. मो०–तरुन्नित ।
४. ए०–सजे । ५. ए० को०–अपीन ।
६. मो०–मत्तहि । ७. ए० निम्मान, निमान ।

गढ़ घेरि पंग किय अप्रमान । मानों कि मेर पारस्स भान ॥
पंगह सुबीर गढ़ करि गिरद्ध । सबंरी परस चंदा सरद्ध ॥ छं० ४२ ॥
चढ़ अमरसीय चढ़ि अमरसिंघ । गहिलौत स नरवर लहु सु बंध ॥
पंगुरा सुभर लगि उंच गत्त । जाने कलंक लंगूर यत्त ॥ छं० ४३ ॥

जयचन्द का दक्षिण की ओर चढ़ चलना ।

कबित्त – दिशि दष्षिन को बलिय । गयौ कमधज्ज चित्त करि ॥
यों फिरंत तहँ सूर । भ्रित्त आगस्ति पान फिरि ॥
पंच तत्त बिय बिरह । छुट्टि लगो सु पथ पथ ॥
तोइ काज हम करें । चरन सेवकह जंपि तथ ॥
तो अंब प्रपी अब जानि बस । जस क्रीड़ा धर दग्गनह ॥
कच्छू सु जोसि बलि जोति तन । हवि सहक भेदै मनह ॥ छं० ४४ ॥

हाथियों की शोभा वर्णन ।

गज्जनेस कमधज्ज । दान बरषंत बीर सजि ॥
नव अंगुर इक बिहथ । सूर तन इक प्रवाह लजि ॥
सिरी सत्त सोभै । बिसाल सिंदूर बिराजै ॥
मनु कज्जल गिरि शिखर । सूर मंगल तन साजै ॥
सज्जिय अनेक न्रप पंग ने । गामी तर गोड़न बियौ ॥
जाने कि अकामह भान दिन । ऐ वसद्दु गिर पय दियौ ॥ छं० ४५ ॥

दूहा – रंभ ऊन तट पंघुरी । लग्गि बघू सित माल ॥
भ्रंग सुना की पंति तें । बढ़ी बिरह बनमाल ॥ छं० ४६ ॥

राजा भान का यह समाचार पृथ्वीराज को लिखना ।

बान पंग पहु पंग परि । मिली क्रंन की कान ॥
इह अपुब्ब बर भान सजि । दै कग्गद चहुआन ॥ छं० ४७ ॥

उक्त समाचार पाकर काम क्रीड़ा प्रवृत्त पृथ्वीराज का वीरता के जोम में आजाना ।

रति पति पत आलुज्झि घन । तिहि कग्गद मुक्कि दूत ॥
तजि सिंगार भो [1]बीर रस । जिमि आयो बर [2]धूत्त ॥ छं० ४८ ॥
बाल कमोदनि पीय ढिग । ससि समान रस पान ॥
बर बिलोकि जो देषियै । तो [3]चहुआनह भान ॥ छं० ४९ ॥

कबित्त – लाज सरस चहुआन । जोम उज्जै जुध मुत्तमं ॥
त्रियन पाइ दिपि काम । बेर दिब्बे सु बीर सम ॥

१. ए०–बार । २. ए० को०–बत ।
३. मो०–चहुवानै ।

परि इक पंग नरिंद । कलंक उननि करि देषै ॥
इत सु अहव राइ । सजन अप्पनौ सु लेषै ॥
सुरतंत स्वामि अभिलाष रिन । प्रथ्थ राज मद्दह नृपति ॥
मार सुर नरिंद संकर भयो । अति निकलंकह चित दिपति ॥५०॥

इधर शहाबुद्दीन की चढ़ाई, उधर जयचन्द की राजा भान से लड़ाई देखकर पृथ्वीराज ने चितौर के रावल समर सिंहजी को सब वृत्तान्त लिख कर सहायता चाही और सम्मति पूछी।

दूहा—घरी एक बंधी सुनी । पै मुक्कलि प्रथिराज ॥
बीय सोम अप्पन चढ़न । लै दीनी रस पाज ॥ छं० ५१ ॥
चढ़त गज प्रथिराज को । चढ़ अवाज सुरतान ॥
समर सिंघ रावर दिशा । दै कग्गद चहुआन ॥ छं० ५२ ॥

कवित—दिल्ली ध्रर गोरी नरिंद । बंध पल्हन प्रपत्तो[1] ।
षां हुसेन कै बैर । अनगपालं सु मिलत्तो ॥
तिर भर जल गंभीर । हमम है गै कमधज्जी ॥
देवगिगरि दिसि भान । बीर पावस जिम सज्जी ॥
घर लई सब्ब साहिब जुरत । भान न उप्पर मुक्कही ॥
चित्रंग राज रावर समर । इह अवसान न चक्कही ॥ ५३ ॥

समर सिंह ने पत्र पढ़कर कहा इस समय पृथ्वीराज को दिल्ली में अकेले न छोड़ना चाहिए। मेरे साथ अपने सावंत और अपनी सेना दें मैं पंग से लड़ लूंगा।

बंचिय कग्गद समर । समर साहस उच्चारिय ॥
तव सुमंत बर न्रपति । मंन जानै न विचारिय ॥
हम सुमंत जो करै । राज दिल्ली मति छंडो ॥
इह गोरी सुरतान । अनगपालह फिर मंडो ॥
सामंत [1]देहु हम संग बर । रन रुंधै पहुपंग नर ॥
आरंभ महन रंभह मतौ । इह [2]सुमंत कुमल्लंत घर ॥ ५४ ॥

समरसिंह की सलाह मान पृथ्वीराज ने अपने सावंत चामुंडराय और रामराय बड़गूजर के साथ अपनी सेना रवाना की।

कुंडलिया—सबुद रूप गोरिय सुबर । पंग ग्रेह भय कीन ॥
चाहुआन तिन बिबध कै । सो ओपम कवि लीन ॥
सो ओपम कवि लीन । समर कग्गद लिय हथ्थं ॥
चिरन पुच्छि बट सुरंग । बंधि चतुरंग रजथ्थं ॥

---

१. ए० कृ० को०—दीहि।   २. ए०—समर्थ।

समर सु मुक्कलि सोर । लोह फुल्यौ जस कुमुदं ॥
रा चावंड जैतसी । रा बड़गुज्जर समुदं ॥ छं० ५५ ॥

रावल समरसिंह ने अपने भाई अमर सिंह को साथ लिया ।
ये लोग देवगिरि की ओर चले ।

दूहा— अमरसिंघ बंधव समर । समर समोकलि दीन ॥
ते सामंतन संग लै । देवगिरि मग लीन ॥ छं० ५६ ॥
[2]हम सु राज चहुआन नें । राखे घेरी राइ ॥
पंग [1]ओट बर कोट ह्वै । देवग्गिरि गढ़ आइ ॥ छं० ५७ ॥

जयचन्द को गढ़ घेरे देख चामुंडराय ने चढ़ाई की ।
इधर राजा भान मिला ।

कवित्त— देवगिरि गढ़ घेरि । लोह मंड्यौ बर पंगं ॥
[7]रन त्रिघोष प्रमान । बीर बाजे रन जंगं ॥
चिहुदिसान उड़ि चक्र । उनैकी झंझर लग्गा ॥
द्वादस दिन रन मंडि । राव चामंड भिरि भग्गा ॥
सामंत पंग बिसे नृपति । छल सज्जे बलहारियां ॥
दाहिम्म राव दाहिर तनय । रत्ति बाह बिच्चारियां ॥ छं० ५८ ॥
मिलि जद्दव चामंड । रत्ति बाहं संपन्नौ ॥
ओड्ज्जै सथ टारि । साथ टारिजै अपन्नौ ॥
अंत साथ सो साथ । और सब साथ [3]सुपन्नौ ॥
कै भर तरकस बंध । बान मन [4]आकन्नौ ॥
जीवंत दान भोगहु समर । मरन तित्थरंभ [5]भिरन गति ॥
ए करै बात उम्मेत नर । ता स राज मंडल [6]मिलति ॥ छं० ५९ ॥

राजा भान और चामंडराय की सेना का वर्णन ।

हथ्थ हथ्थ सुझ्झैन । मेघ डंमरि मडि रज्जी ॥
निसि निसीथ अंतरी । भान उत्तरि सथ सज्जी ॥
बिज्ज बीर झलकंत । [7]पवन पच्छिम दिसि वज्जै ॥
मोर सोर पप्पीह । अवनि सक्रित घन गज्जै ॥
बद्दली जु सिलह निसि सत्त मिलि । [8]छत्रिय पंग दरबार दिसि ॥
चामंड राइ दाहर तनौ । लरन लोह कढ्ढंति रिसि ॥ छं० ६० ॥

राजा भान का मिलना देखकर जयचन्द का कोप करना ।

---

१. ए०—ओर । २. ए०—हम । ३. ए०—सुपंथ ।
४. ए० कृ० को०—आकध्य । ५. ए०—भिरन । ६. मो०—मिलनि ।
७. ए०—पवन । ८. ए० कृ० को०—छत्रिय ।

असि नरिंद चामंड । कूह बज्जी रन जंगं ॥
भर भग्गी चौकी समूह । लग्गा रन जंगं ॥
रन नरिंद [1]वाहन कुआर । सारह हसि झिल्लै ॥
पंग टटी बौछार । जितै भिजे तित मिल्लै ॥
आरिष्ट काल बज्जत घरी । उघरि मेह घन सार जल ॥
जग्गयो जोध कमधज्ज अब । मनों सिघ जुटयो सु छल ॥छं०६१॥
तब [2]रावत उब्बरे । राज जोरी बर पंगं ॥
जिन [3]चंपे बल पुंछ । रोस जग्यो नृप [4]दंगं ॥
नाग पत्ति कोप्ति । अप्प बर कन्ह जगायो ॥
राह सुमनि बित्तए । जम्म जुग राज झुकायो ॥
उब्बरे बीर कुट बार रिन । रन रुंध्या अप डिभरू ॥
संभरे बीर कमधज्ज को । भये रोम गति विम्भरू ॥ छं० ६२ ॥

अमरसिंह ने जयचन्द के हाथी को मार गिराया ।

अमरसिंह आहुट्ठ । नाग [5]मुष्षी बर कढ्ढी ॥
शीश सोभि गजराज । नाग मुष नागिनि चढ्ढी ॥
हाड हटक्की हथ्थि । बीर षच्यो कर सद्दं ॥
कै हथनापुर चन्द । बीर षंचै बलिभद्रं ॥
दंती सुभग्गि धर पर पर्यो । इल घुच्यो दत अद्धकत्रि ॥
सिघ हति भूमि बर सुम्भई । मिलत भूमि हथ्थह तिरव ॥ ६३ ॥

हाथी के मारे जाने पर जयचन्द का क्रोध करना और स्वयं टूट पड़ना ।

हस्ति काल जम जाल । काल रुध्यों चामंडह ॥
सुनत पंग रस भगं । सीस लग्यो ब्रह्मंडह ॥
रन रूंध्यो बछूछरू । मीन गति [6]नीर प्रमानं ॥
जग्गि बीर पहुपंग । तोन पारथ्थ प्रमानं ॥
जग लोह कोह कढ्ढिय सु असि । भिरत न अपु अरि तक्कए ॥
रहि जाम एक निसि पच्छली । चढ़ि विसूर हय नष्षए ॥छं० ६४॥

रसावला —

पंग जंगं घुलं, कूह मच्ची हुलं । सार तुट्टे पलं, षग्ग मच्चे षलं ॥ छं० ६५ ॥
हाल हाला हलं, सोइ चित्यौ तलं । गिद्ध कोलाहलं, अंत हुंती रुलं ॥छं० ६६॥

---

१. कृ०–प्रति में "पंगु पुत्र" भी पाठ ऊपर दिया हुआ है ।
२. ए०–रावत, रावन । ३. ए०–जंपं । ४. ए०–दंसं ।
५. ए०–मूठी मढ्ढी । ६ मो०–हीन ।

उठ्ठपीयं छलं, षर्म असितं तलं । बीर निद्दीचलं, सिद्ध टह्‌ रलं ॥ छं० ६७ ॥
संभु मालं गलं, ब्रह्म चित्ता चलं । भूत बित्ता तलं, पथ्य पारथ्थलं ॥ छं० ६८ ॥
देव देवा नलं, फट्टि फारक्कलं । घाय छज्जे चलं, सूर घुम्मे रलं ॥ छं० ६९ ॥
तारचो सठ्ठलं, बाह भूत सलं । रीति पच्छी षिनं, तार आयासनं ॥ छं० ७० ॥
सूर उग्यो ननं । कोर चढ्ढे फनं ॥............ ॥ छं० ७१ ॥

लड़ाई खतम होने पर जयचन्द का अपने घायलों को उठवाना ।

दूहा—रन मुक्के गो भान चढ़ि । सब सामंतन सथ्थ ॥
भ्रत्त बीर पहु पंग ने । षत सु ढुंढ्यौ तथ्थ ॥ छं० ७२ ॥

इस युद्ध में मारे गए सूर सामंतों के नाम ।

कवित्त—पऱ्यौ बंध गोइंद । नाम हरचन्द प्रमान ॥
पऱ्यौ बंध नरसिंघ । रेह रष्षन चहुआनं ॥
पऱ्यौ कन्ह पुंडीर । बीर जैचन्द सु जायौ ॥
पऱ्यौ सूर बाघेल । हकिक कपि जिम बल घायौ ॥
चतुरंग सब्ब मिल्लिय वही । असिन ढार बड़गुज्जरै ॥
सामंत हथय बर बज्र सम । षेत सु ढुंढहि पंगरै ॥ छं० ७३ ॥

रणभूमि में जयचन्द के घोड़ों की चंचलता और तेजी का वर्णन ।

रिस छुट्यौ कमधज्ज । बोल बंका बर बोले ॥
ज्यों बावन बल रूप । कुहर थानह बल मेल्है ॥
रावन पब्वय समान । काज कैलास झुलावै ॥
कै बलि बंधन पाज । द्रोन हनुमंत जु ल्यावै ॥
गिरिराज काज माइर मथन । कै अमरस मिल्लिय नही ॥
[1]नंषयो अश्व कमधज्ज नै । सो उप्पम कवि भाषही ॥ छं० ७४ ॥

देवगिरि के किले की नाप और जंगी तैयारी का वर्णन ।

मापि पंग गढ़ देखि । कोस द्वादस बर ऊँचौ ॥
दहति कोस विसतार । कोठ मरहथ्थ त्रिपुंचौ ॥
नारिगोरि सा बत्ति । राज मंडी चावद्दिसि ॥
ढोह मंडि पाषान । तीर बरषंत मंत्र असि ॥
पावस्स मास बीती उभै । जुरि कमधज्ज सु छंडयौ ॥
मंत्री सुमंत्र परधान ने । फेरि मंत्र [2]तब मंडयौ ॥ छं० ७५ ॥

जयचन्द का राजा भान को मिलाने का प्रस्ताव करना ।

बल बंध्यौ कमधज्ज । किल्ह भंज्यौ भंभान ॥
लगिग चरन पहु पंग । बंदि लीनौ फुरमानं ॥

---

1. ए०—नंषयो ।   2. ए०—सब ।

दूत भेवयो मंडि । द्रब्ब नंषै चावद्दिसि ॥
कछु सलोभ कछु मोह । मेल्हि पर ध्यान पल्हनिसि ॥
अप्पनी साथ ले सिघ तब । जियत मरन ते उद्दए ॥
जम जीव जार पंजर परै । कोइन कलि महि छुट्टए ॥ छं० ७६ ॥
संवत ग्यार सँजुत्त । अदिस उन लग्गिय पंचं ॥
मरन अग्गि आंनिय न । गोऊ पल्हन जो पंचं ॥
दिन नछित्र रोहिनी । समय च्यालीस बिअग्गल ॥
मत्त बीर जद्दव नरिंद । भग्गी ग्रह मग्गल ॥
जगयो धार धारह धनी । भोज कुंमर रन मंड कै ॥
सा ध्रम्म ध्रम्म छंडै नही । गो अध्रंम छिति छंडि कै ॥ छं० ७७ ॥

इधर अमर सिंह का घोर युद्ध करना ।

बज्जि कूह संमूह । अमर[1] उट्ठं समरं भिरि ॥
पंड मुष्ष भौ कोट । समर बघ सुद्धंजुरि ॥
रा चावंड जैतसी । राव बड़गुज्जर धाए ॥
आहुट्ठे कमधज्ज । सार बज्जै सुरझाए ॥
बर यंग जंग भज्जी सहर । लुथ्थि लुथ्थि आलुथ्थि परि ॥
चहुऑने अरिय संग्राम भिरि । षट्ट सहस सेना गिरी ॥ छं० ७८ ॥

जयचन्द का किले पर सुरंग लगाना ।

परत पंग आरोहि । सुरंग दीनो सुभान गढ़ ॥
नाग[2] समूह द्धरी । ढाहि देवल सुरग मढ ॥
थान थान नर उड़ैं । चद तस उप्पम पाइय ॥
कालबूत [3]कागद्द । पंग इह काज उड़ाइय ॥
अअजैन सषिद्दिय सेन की । दच्छ देव बर बोलही ॥
सामंत सूर संग्राम कल । ताप तुरंग न डोलही ॥ छं० ७९ ॥
चौपाई- बहु परपंच किए पहुपंगं । गढ़े तूटंत भग्ग मन अंगं ॥
गिरि सम्मूह बंक भर ठट्टं । मतो मंडि मुक्यो बर भट्टं ॥छं० ८०॥

जयचन्द का कीर्तिपाल नामक भाट को भीमदेव और चामंड के पास संधि का संदेसा लेकर भेजना ।

कवित्त – कित्तिपाल बर भट्ट । बंधि[4] फुरमान पग रन ॥
जहँ जद्दव चामंड । द्रुग्ग दोय छत्रन जुरन ॥

१. ए०–उठे २. कृ०–समुह धद्धरी ए०–समुहरद्धी, समूरः धरी ।
३. ए०–कागद्द, कागद । ४. ए० कृ० को०–फुरमारस ।

थोज बक्क बहुआन । पन्यो सपपन मिस अट्टी ॥
उह मारत इन मरन । बज्जि बाहुं बिन घट्टी ॥
आतुक्ख-मि-ठौ बंधो त्रियन । जुद्ध मोहि क्यो पूजिहो ॥
श्रृंगार भोग आनन्द रस । सबै बीर रस चुक्किहौं ॥ ८१ ॥

राजा भान को समझा कर जयचन्द के दूत का वश कर लेना।

तब बसीठ नृप पंग । भान एकत्त मंत करि ॥
मिलो पंग कमधज्ज । जंम संसार जंम डरि ॥
तमस भेद नृप एह । बाल उत्तर गढ़ भेदं ॥
अरि अमंत्त जहूय । नरिंद कीनी घर छेदं ॥
लगि कान बात मंत्री कही । आहुट्ठां बल गड्डियां ॥
त्रिय पुत्त हत्त पुत्री लिये । दुज्जत अनम सुवड्ढियां ॥ छं० ८२ ॥

दूहा —बिष घर दुज्जन सिष फुनि । अग्गि अनंग अनेह ॥
ए अपना ना लेषिये । ये परि अप्पै छेह ॥ छं० ८३ ॥

कवित्त -हसि जद्दौ चामंड । पंवार हथ्थें दिय तारी ॥
सुनि बड़गुज्जर राम । मतौ अप्पौ मो भारी ॥
सामि एक बंदी स । प्रीति जल जंतं तक्की ॥
लियो अधर सम रस्स । बात सा दोहमन क्की ॥
क्यों आमन मंत रहंत इत । केह कंत जो मंगयौ ॥
सो मंत पंग कमधज्ज नें । अप्प हेत सो उग्गयौ ॥ छं० ८४ ॥

दूहा -इह उत्तर नृप पंग सों । कहे सु जद्दव राय ॥
दूध विनट्ठौं सुद्ध हिय । किन अप्पन मुष पाइ ॥ छं० ८५ ॥

चौपाई -उठे भट्ट तिहि ठौर बिचारी । ज्यो उठि जोगी कंथा झारी ॥
मन की मतें रही मन माया । ज्यों तरंग जल जलें समाया ॥छं०८६॥

कबित्त —मतौ मंडि न्रप पंग । गट्ट मुक्के घर लीनी ॥
पट्टन पाट नरिंद । थान थानं रचि दीनी ॥
उभै बीर जोजन प्रमान । भारह रचि गाढ़ी ॥
[1]अप्पनगै कमधज्ज । हाम राजसु मन बाढ़ी ॥
कनवज नरिंद अज्ज समन । जोगी मिसि कर कढ्ढयो ॥
दिसि विदिसि पंग जीपन सुबल । रचि चतुरंगी चढ्ढयो ।छं०८७॥

जयचन्द का विचारना कि वह धन छोड़ कर यदि यह धरती मिली भी तो किस काम की।

1. कु०-अपनगी ।

दूहा -कीन हीन कों नीर बिन । को तप भान नरिंद ॥
सह धन धर मुक्की मिलै । लज्ज एह जय चंद ॥ छं० ८८ ॥

इसके परिणाम में चहुआन और राजा भान को यश मिला
और जयचन्द नवमी को कन्नौज को फिर गया ।

जस्स तिलक ग्रह भान को । जोगिन पुत्तर चिन्ह ॥
मोकलिजै आहुट्ट पति । पग्ग पंग करि हीन ॥ छं० ८९ ॥
गयो पंग कनवज्ज दिसि । घन रण्षे घन मास ॥
नव नवमी नव सरद निसि । तिन मुक्की अरि त्रास ॥ छं० ९० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके देवगिरि युद्ध
वर्णनं नाम छाबीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २६ ॥

अथ रेवा तट समयो लिख्यते।

(सत्ताइसवां समय)

देवगिरि से विजय कर चामंडराय का आना।

दूहा—देवग्गिरि जीते सुभट। आयौ चामँडराय॥
जय जय नृप कीरति सकल। कही कव्विजन आय॥ छं० १॥

चामंडराय का पृथ्वीराज से रेवा तट के बन की प्रशंसा करके वहां शिकार के लिये चलने की सलाह देना।

मिलत राज प्रथिराज सों। कही राय चामंड॥
रेवा तट जो मन करो। बन अपुब्ब गज झुंड॥ छं० २॥

उक्त बन के हाथियों की उत्पत्ति और शोभा वर्णन।

कवित्त—बिन्द लिलाट प्रसेद। कन्यो शंकर गज राजं॥
एरापति धरि नाम। दियो चढ़नै सुर राज॥
दानव दल तिहि गंज। रंजि उमया उर अंदर॥
होइ क्रपाल हस्तिनी। संग बगसी रचि सुंदर॥
औलादि तास तनु आय कें। रेवा तट बन विस्तरिय॥
सामंत नाथ सों मिलत इह। दाहिम्मी कथ उच्चरिय॥ छं० ३॥

राजा का चन्द से पूछना कि मुख्य चार जाति में से यह किस जाति के हाथी हैं और स्वर्ग से इस लोक में क्यों आए।

अरिल्ल—च्यारि प्रकार पिष्षि बन वारुन। भद्र मंद मृग जाति सधारन॥
पुच्छि चंद कवि को नरपत्तिय। सुरवाहन किम आइ धरत्तिय॥छं०४॥

चन्द का वर्णन करना कि हेमाचलपर एक वृक्ष था जिसकी शाखें सौ सौ योजन तक फैली हुई थीं मतवाले हाथियों ने उन्हें तोड़ दिया। इस पर क्रोध करके मुनिवर ने शाप दिया कि तुम मनुष्यों की सवारी के लिये पृथ्वी पर जन्म लो।

कवित्त—हेमाचल उपकंठ। एक वट वृष्प [1]उसंगं॥
सौ जोजन परिमान। साष तस भंजि मतंगं॥
बहुरि दुरद मद अंध। ढाहि मुनि बर आरामं॥
दीर्घ [2]तपारी देषि। श्राप दीनौं कुपि तामं॥

---

१. ङ०—उतंग। २. ए० मो०—तपारी।

अंबर बिहार गति [1]मंद हुअ । नर आरूढ़न संग्रहिय ॥
संभरि नरिंद कवि चंद कहि । सुरग इंद इम भुवि रहिय ॥छं०५॥

अंग देश के पूर्व एक सुन्दर वनखंड है वहीं वह गजयूथ बिहार करता था । वहां पालकाव्य नामक एक थोड़ी अवस्था का ऋषीश्वर रहता था उसे इन सभों से बड़ा स्नेह हो गया था परंतु राजा रोमपाद फंदा डालकर हाथियों को चंपापुरी में पकड़ ले गया ।

अंग देस पूरब्ब मद्धि । बन षंड गहब्बरि ॥
उज्जल जल दल कमल । बिपुल लुहिताच्छ सरब्बर ॥
आपति गज को जूथ । करत क्रीड़ा निसि बासर ॥
पालकाव्य लघु बेस । रहत एक तहां रुषेसर ॥
तिन प्रीति बंधि अति परसपर । रोमपाद नृप संभरिय ॥
आखेट आइ फंदनि पकरि । दुरद आनि चंपापुरिय ॥ छं० ६ ॥

पालकाव्य मारे बिरह के मरकर हाथी के रूप में जनमा ।

दूहा - पालकाव्य के बिरह करि । अंग भए अति षीन ॥
मुनि बर तब तहँ आय के । गज चिगच्छग्गु न कीन ॥ छं० ७ ।

गाथा - कोपर पराग पत्रं । [2]छालं डाल फूल फल कंद ॥
फली कली दे जरिय । कुंजर करि थुलय तनय ॥ छं० ८ ॥

उधर ब्रह्मा के तप को भंग करने के लिये इन्द्र ने रंभा को भेजा था उसे शापवश हथिनी होना पड़ा वह भी वहीं आई ।

कवित्त ब्रह्मा रिष तप करत । देषि कंप्यो मघवान ॥
छलन काज पहु पठय । रंभ रुचिरा करि मानं ॥
श्राप दियौ तापसह । अवनि करिनी सु अवत्तरि ॥
क्रम्म बंधि इक जती । लषित हूओ सुपनंतरि ॥
तिहि ठाम आइ उहि हस्तिनी । बीर लियो पोगर सुनमि ॥
उर मुक्र अंस धरि चंद कहि । पालकाव्य मुनिवर जनमि ॥छं० ९॥

पालकाव्य उस के साथ बिहार करने लगा ।

दोहा -तायें तिन मुनि करिम सों । बांध प्रीत अत्यंत ॥
चंद कह्यो नृप पिष्य सम । सकल मंडि बरतंत ॥ छं० १० ॥

---

1. को० ए०—मंड ।
2. ए०—छलं, डालं, छलं ।

चन्द ने उस वन और जन्तुओं की प्रशंसा करके कहा कि
आप अवश्य वहां चलकर शिकार खेलिए।

कवित्त—सुनहि राज प्रथिराज। विपन रवनीय करिय जुथ॥
रेवा तट सुंदर समूह। गजवंत चवन रथ॥
आषेटक आरंभ। पंथ पावर रुकि पिल्लौ॥
सिष वट्ट दिलि समुह। राज षिल्लत दोइ चल्लौ॥
जल जूल कूह कसतूरि मृग। पहुपंगी अरु पर्वतहु॥
चहुआन मान देषें नृपति। कहि न बनत दच्छिन सुरहु॥छं० ११॥

एक तो जयचन्द पर जलन हो रही थी दूसरे अच्छा रमणीक
स्थान सुन पृथ्वीराज से न रहा गया।

दूहा—एक ताप पहु पंग को। अरु रवनीक [1]जु थान॥
चावंडराय बच्चन्न सुनि। चढ़ि चढ्यौ चहुआन॥छं० १२॥

पृथ्वीराज धूम से चला। रास्ते के राजा संग हो गए, स्वयं
रेवानरेश भी साथ हुआ। इस समय सुलतान के भेदुए
(नीतिराय) ने लाहौर से यह समाचार गजनी भेजा।

कवित्त—चढत राज प्रथिराज। बीर अगनेव दिसा कमि॥
सब्ब भूमि नृप नृपति। चरन चहुआन लग्गि ध्रसि॥
मिल्यो भान विस्नरो। मिल्यो षट्टउल गड्डी नृप॥
मिल्लो नंदि पुर राज। मिल्यो रेवा नरिंद अप॥
बन जूथ मृग्ग मिषह रु गज। नृप आषेटक खिल्लई॥
लाहौर थान सुरतान नप। बर कग्गद लिषि सिल्लई॥छं० १३॥

मारूफ खां और तत्तार खां ने दिल्ली पर आक्रमण
करने का ★ बीड़ा उठाया।

दूहा—षां ततार मारूफ षां। लिये पान कर साहि॥
धर चहुआनी उत्तरै। बज्जा बज्जन बाइ॥ छं० १४॥
यह समाचार पा शहाबुद्दीन का चढ़ाई की तय्यारी करना।

साटक—प्रोतं भूरय गोरिय वर भरं, बज्जाइ मज्जाइने
सा मेना चतुरंग बंधि उभयं, ततार मारूफयं

१. मो०—सु।

★प्राचीन समय में यह नियम था कि जब कोई कठिन कार्य्य आ उपस्थित होता था तो दरबार में पान का बीड़ा रख कर अपेक्षित कार्य्य की सूचना दी जाती थी अतएव जो सरदार अपने को उस काम के करने योग्य देखता वह बीड़ा उठा लेता।

तुझ्झी तार स उप्प राव सरसी, पल्लानयं षानयं ।
एकं जीव साहाब साहि ननयं, बीयं स्तयं सेनयं ।। छं० १५ ।।

तातार खां आदि सभों ने कुरान हाथ में लेकर
शपथ करके प्रस्थान किया ।

दूहा-- अहि बेली फल हथ्थ लै । तो ऊपर ततार ।।
मेच्छमसूरति सत्ति कैं । बंध कुरानी बार ।। छं० १६ ।।

ततार खां का कहना कि चन्द पुंडीर को मार कर
एक दिन में दिल्ली ले लूंगा ।

कुंडलिया-- बर [1]मुसाफ ततार खां । मरन किति [2]नन बान ।।
मैं भंजे लाहोर घर । लैंहूं सुनि सु बिहान ।।
लैंहूं सुनि सु बिहान । सुनै ढिल्ली सुरतानं ।।
लुथ्थि पार पुंडीर । भीर परि है चहुआनं ।।
दुचित्त चित्त जिन करहु । राज आवेष [3]उथापं ।।
मक्कनेस आयस्स । चले सब छूप मुसाफं ।। छं० १७ ।।

चन्द पुण्डीर ने पृथ्वीराज को समाचार लिखा । पृथ्वीराज का
छः कोस लौट कर कूच का मुकाम करना ।

दूहा-- षट मुर कोस मुकाम करि । चढ़ि चल्यो चोहान ।।
चंद बीर पुंडीर को । कग्गद करि परिवान ।। छं० १८ ।।

पृथ्वीराज का पंजाब तक सीधे शहाबुद्दीन की सेना के दल पर
आना और उधर से शहाबुद्दीन की सेना का आना ।

गोरी वै दल सुंमुहो । गौ पंजाब प्रमान ।।
पुब्ब रु पच्छिम दुहु दिसा । मिलि चुहान सुरतान ।। छं० १९ ।।

उसी समय कन्नौज के दूतों का यह समाचार जयचन्द से कहना ।

दूत गये कनवज्ज दिसि । ते आए तिन थान ।।
कथा मंड चहुआन की । कहि कमधज्ज प्रमान ।। छं० २० ।।

पृथ्वीराज का रेवा तट आना सुनकर सुलतान
का सेना सजकर चलना ।

रेवा तट आयो सुन्यो । बर गोरी चहुआन ।।
बर अवाज सब मिट्टी कै । सजे सेन सुरतान ।। छं० २१ ।।

---

१. ए०--मु साफ ।
२. ए० कृ० को०--तन ।
३. ना०--उथापं ।

पृथ्वीराज का कहना कि बहुत बड़े शत्रुरूपी अर्नों का समूह शिकार करने को मिला।

दूत बचन संभलि ग्रपति। बर आषेटक षिल्ल।
रेवातट [1]पद्धर धरा। जूह मृगन बर मिल्लि ॥ छं० २२ ॥

राज्य मंत्रियों ने यह सम्मति दी कि अपने आप झगड़ा मोल लेना उचित नहीं किसी नीति द्वारा काम लेना ठीक है।

कवित्त - मिले सब्ब सामत। मत्त मंड्यो सु नरेसुर ॥
दह गूना [2]दल साहि। सज्जि चतुरंग सजी उर ॥
मवन मंत चुक्को न। सोइ बर मंत विचारी ॥
बल घट्यो अप्पनो। सोच पछ्छिलो निहारी ॥
[3]तन सट्टी लीजै मुगति। जुगति बंध गोरी दलह ॥
संग्राम भीर प्रथिराज बल। अप्प मत्ति किज्जे कलह ॥ छं० २३ ॥

यह बात सुन कर सामंतों का मुसका कर कहना कि भारथ का बचन है कि रण में मरने से ही बीर का कल्याण है।

सुनिय बत्त पज्जून। राव परसंग [4]मुसक्यो ॥
देव राव अग्गरी। सेन दे पाव कसक्यो ॥
तन सट्टै [5]सहि मुकति। बोल भारथ्थी बोलै ॥
लोह अंच उड्डंत। पत्त तरवर जिम डोलै ॥
सुरतान चंपि पुष्षां लग्यो। दिल्ली नृप दल बानिबो ॥
भर भीर धीर सामंत पुन। अवै पटंतर जानिबो ॥ छं० २४ ॥

पज्जून राय का कहना कि मैंने सब शत्रुओं को पराजित किया और शहाबुद्दीन को भी पकड़ा। अब भी उस से नहीं डरता।

कहै राव पज्जून। तार कढ्यों तत्तारिय ॥
मैं दष्षिन वै देस। भीर जद्दव पर [6]पारिय ॥
मैं बंध्यो जंगलू। राव चामंड [7]सु मध्थे ॥
बंभन बास विरास। बीर बड़ गुज्जर तथ्थे ॥
भर विभर सेन चहुआन दल। गोरी दल [8]कित्तक गिनो ॥
जानै कि [9]भीम कौरव सुबर। जर समूह तरवर किनो ॥ छं० २५ ॥

---

१. ए०-प्रधार।
२. मो०-बल।
३. मो-सट्टी लीजं, ए०-मद मर्टे।
४. मो०-मुमक्यो।
५. ए०-सट्टि।
६. मो०-परिहरिय।
७. मो०-मु।
८. मो०-कित्ती।
९. ए०-भीम, कौक, कोकं, कौरों।

जैत राव का कहना कि शहाबुद्दीन की सेना से मिलान
होना लाहौर के पास अनुमान किया जाता है अत एव
अपनी सब तैयारी कर लेनी उचित है
आगे जो आप की इच्छा हो ।

कहि जैत पंवार । सुनहु प्रथिराज राज्र मत ।।
जुद्ध साहि गौरी । नरिंद लाहौर कोट गन ।।
सबै सेन अप्पनो । राज एकठ्ठ सु किज्ज ।।
इष्ट भ्रत्य सगपन सु । हित कागद लिषि दिज्जै ।।
सामंत सामि इहि मत है । [1]अरु जु मंत चित्तै नृपति ।।
धन रहै ध्रम्म जसु जोग ह्वै । दिपति दीप दिव लोकानि ।छं०२६।।

रघुबंस राम का कहना कि हम सामंत लोग मंत्र क्या जानें केवल
मरना जानते हैं, पहिले शाह को पकड़ा था अब भी पकड़ेंगे ।

बहु बहु कहि रघुबंश । राम हंकारि सु उठ्यो ।।
सूनो सब्ब सामंत । साहि आए बल [2]छुटयो ।।
गज ह सिंघ सा पुरिष । जही रुंधै तहा मुज्झै ।।
[3]असम समो जानहि न । लज्ज पंकै आलुज्झै ।।
सामंत मंत जानैं नही । मत्त गहैं इक मरन को ।।
सुरतान सेन पहिल्लै बंध्यो । फिर बंधो तो करन को ।। छं० २७ ।।

कविचन्द का कहना कि हे गुज्जर गंवारी बातें न कहो इन्हीं
बातों से राज्य का नाश होता है । हम सब के मरने
पर राजा क्या करेगा ।

रे गुज्जर गांवार । राज लै मंत न होई ।।
अप मर छिज्जै नृपति । कौन कारज यह जोई ।।
सब सेवक चहुआन । देम भग्गै धर षिल्लै ।।
पच्छि काम कहु करै । स्वामि संग्राम इकल्लै ।।
पंडित भट्ट कवि गाइना । नृप सौदागिर वार हुअ ।।
गजराज [4]सीस सोभा वरन । कन उड़ाइ वह सोभ लहु ।।छं०२८।।

पृथ्वीराज का कहना कि जो बात आगे आई है उसके
लिये जुद्ध का सामना करो ।

परी घोर तम दंग [5]गम । अग्ग जुद्ध सुरतान ।।
अब इहु मंत बिचारये । लरन मरन परवान ।। छं० २९ ।।

---

१. ए०—अरु जुद्ध । २. ए०—छटयो ।
३. ए० कृ० कौ०—समो, असमो । ४. मो०—सोस । ५. ए.—मग ।

[1]पखत संग प्रथिराज कै। है दिग्विय परवान ॥
बज्जी पब्बर पंच रै। चाहुआन सुरतान ॥ छं० ३० ॥
ग्यारह अब्बर पंच घट। लहु गुरु होइ समान ॥
कंठ सोभ वर छंद को। नाम कह्यो परवान ॥ छं० ३१ ॥

पृथ्वीराज के घोड़ों की शोभा वर्णन।

छंद कंठशोभा— फिरे हय बब्बर पब्बर से। मने फिर इंदुज पंष कसे ॥
सोई उपमा कविचद कथे। सजे मनों पोंम पवंग रथे ॥ छं० ३२ ॥
उर पुट्टिय [2]सुट्टिय दिट्ठय ता। चपरी पय लंगत ता. धरिता ॥
लग्गे उड़ि छित्तिय [3]चौ नलयं। सुनै षुर केहु अवत्तनयं ॥छं० ३३ ॥
अग बंधि सु हेम हमेल घनं। तब चामर जोति पवंन रुनं ॥
ग्रह अट्ठुस तारक [4]बीत षगे। मनों सुत के उर भान [5]उगे ॥छं०३४॥
पय मंडिहि अंसु धरै उलटा। मना बिटय देषि चली कुलटा ॥
मुष कट्टिन घूंघट अस्सु बली। मनों घुंघट दै कुल बद्धु चली ॥छं०३५॥
तिनं उपमा बरनी न घनं। पुजे नन बग्ग पवंन मनं ॥ छं० ३६ ॥

आधी रात को दूत पृथ्वीराज के पास पहुंचा और समाचार दिया कि अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख सेना के साथ सुलतान लाहौर से चौदह कोस पर आ पहुंचा।

कुंडलिया— नव बज्जी घरियार वर। राज महल उठि आइ ॥
निसा अद्ध बर उत्तरे। दूत संप्ते आइ ॥
दूत संपते आइ। धाइ चहुआन सु जग्गिय ॥
सिष विहथ्थें मुक्कि। साहि साही उर लग्गिय ॥
अट्ठ सहस गजराज। लष्ष अट्ठारह [6]ताजिय ॥
उभै सत्त वर कोस। साहि गोरी नव बाजिय ॥ छं० ३७ ॥

पृथ्वीराज ने दूत से पत्र लेकर पढ़ा-हिन्दुओं के दल में शोर मच गया।

दूहा— बचि कागद चहुआन ने। फिरन चंद सहु थान ॥
मनो बीर तनु अंकुरे। मुगति भोग बनि प्रान ॥ छं० ३८ ॥

---

१. ए०-कृ०-को०-भजन सिम।
२. ए०-कृ०-को०-उर उप्पर पुट्टिप पिट्ठियत। ३. ए०-चो, दो।
४. ए०-कृ०-को०-पीत पगे। ५. ए०-उहे।
६. ए०-कृ०-को०-राजिप। ७. कृ०-बर।

मची कूह दल हिंदु के । [1]कसे सनाह सनाह ॥
बर विराक दस [2]दस भइ । बजि निसान अरिदाह ॥ छं० ३९ ॥

दूत का दरबार में आकर पृथ्वीराज से कहना कि मुसलमान सेना चिनाब के पार आ गई । चन्द पुंडीर ने उसका रास्ता बांध कर मुझे इधर भेजा है ।

*बा बसू नृप मुक्कतें । दूत आइ तिहि बार ॥
सजी सेन गोरी सुभर । उत्तरए नद पार ॥ छं० ४० ॥
पंचासज गोरी नृपति । बंध उतरि नहि पार ॥
चंद बीर पुंडीर नें । [3]थपि मुक्के दरबार ॥ छं० ४१ ॥

सुलतान का अपने सामंतों के साथ युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ।

कवित्त षां मारुफ ततार । षान षिलची बर गट्ठे ॥
चामर छत्र मुजक्क । गोल सेना रचि गट्ठे ॥
नारि गोरि जम्बूर । सुबर कीना गजसार ॥
नूरीं षां हुज्जाब । नूर महमद मिर भार ॥
बज्जीर षान गोरी सुभर । षान षान हजरत्ति षां ॥
थिय सज्जि सैन हरबल करिय । तहां उभो सजरत्ति षा ।छं०४२॥

शाहजादे का सरदारों के साथ सेना हरवल रचना और सेना के मुख्य सरदारों के नाम स्थान और उनका पराक्रम वर्णन ।

रचि हरबल सुरतान । साहिजादा सुरतान ॥
षां पैदा महमूद । बीर बंध्यो सु विहान ॥
षां मंगोल लल्लरी । बीस टंकी बर षचै ॥
चो तेगीसह बाज । बान अरि प्रान सु अचै ॥
जंहगीर षान जह गोर बर । षा हिंदू बर बर बिहर ॥
पच्छिमी षान पट्ठान सह । रचि उभ्भै हरबल गहर ॥ छं० ४३ ॥
रचि हरबल पट्ठान । षान इसमान रु गष्षर ॥
केली षां कुंजरी । साह सारी दल पष्षर ॥
षां भट्टी मह नंग । षान षुरसानी बब्बर ॥
हबस षान हुज्जाब । अब्ब आलम्म जास बर ।

---

१. ए० कृ०–करे सनाह अनाह । २. ए० कृ० को०–दस दस ।
३. ए०–उत्तर भौ नहि पार, मो०–बट मुक्यो दरबार ।
* यह दोहा ए० को० और कृ० प्रति में नहीं है ।

तिन अग्ग अट्ठ गजराज बर । मद सरक्क पट्टे तिना ॥
पंच बिन पिंड जो ऊपजे । जुद्ध होइ लज्जी बिना ॥ छं० ४४ ॥

शहाबुद्दीन का इस पार तीस दूतों को रख कर चिनाब पार करना।

[1]करित माय बहु साहि । तीस तहँ रष्षि फिरस्ते ॥
आलम षान गुमान । षान उजबक्क निरस्ते ॥
लहु मारूफ गुमस्त । षान रुस्तम बजरंगी ॥
हिंदु सेन उप्परें । साहि बज्जै रन जंगी ॥
सह सेन टारि सोरा रच्यो । साहि चिन्हाब सु उतऱ्यो ॥
संभले सूर सामंत नृप । रोस बीर बीरं बुऱ्यो ॥ छं० ४५ ॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का क्रोध करना और दूत का
कहना पुंडरी उसे रोके हुए है।

दूहा — तमसि तमसि सामंत सब । रोस भरिग प्रथिराज ॥
जब लगि हपि पुंडीर नें । रोक्यो गोरी साज ॥ छं० ४६ ॥

जहां पर सुलतान चिनाब उतरने वाला था वहीं पुण्डरी ने
रास्ता रोका। घोर युद्ध हुआ। चन्द पुंडीर घायल हो
कर गिरा। सुलतान चिनाब पार होने लगा।

भुजंगी —
जहां उतऱ्यो साहि चिन्हाब मीरं । तहां नेज गड्ड्यौ ठठुक्के पुंडीरं ।
करी आनि सुहाब सा बंधि सोरी । धके धींग धींगंधकावें सजोरी ॥ छं०४७॥
दोऊ दीन दीनं कढ़ी बंकि अस्सी । किधौं मेघ में बीज कोटि निकस्सी ।
किए सिप्परं कोर ता सेल अग्गी । किधौं बद्दरं कोर नागिन्न नग्गी ॥छं०४८॥
हबक्के जु मेछं भ्रमंतं जु श्रुट्टै । मनों घेरनी घुम्मि पारेव तुट्टै ॥
उरं फुट्टि बरछी बरं छब्बि नासी।मनों जालमें मीन अद्धी निकासी॥छं०४९॥
लटक्के जुरंनं उड़ हंस हल्लै । रसं मीति सूरं चवग्गान षिल्लै ॥
लगे सीस नेजा भ्रमें मेजि तथ्थें । भये वाइसंभात दीपत्ति सथ्थें॥छं०५०॥
करै मार मारं महावीर धीरं । भये मेघ धारा बरष्षंत तीरं ॥
परे पंच पुंडीर सा चंद कढ्यो । तबै साहि गोरी स चिन्हाब चढ्यो ॥छं०५१॥

सुलतान का चिनाब उतरना और चन्द पुंडीर का गिरना
देख कर दूत ने बढ़ कर पृथ्वीराज को समाचार दिया।

कवित्त — उतरि साहि चिन्हाब । घाय पुंडीर लुथ्थि पर ॥
उप्पाऱ्यो बर चंद । पंच बंधव सु पथ्थ धर ॥
चिष्षि दूत बर चरित । पास आयौ चहुआनं ॥
उप्पर गोरी नरिंद । हास बढ्ढी सुरतानं ॥

---

1. ए०—करत माइ बीसाहि।

बर मीर धीर माहफ जुरि । [1]पंच अनी एकठ जुरी ॥
मुर पंच कोस लाहोर तें । मेच्छ मिलानह सो करी ॥ छं० ५२ ॥

पृथ्वीराज ने क्रोध के साथ प्रतिज्ञा की कि तब मैं सोमेश्वर का बेटा जो फिर सुलतान को कैद करूं । पृथ्वीराज ने चन्द्र व्यूह की रचना करके चढ़ाई की ।

दूहा—बीर रोस बर बैर बर । झुकि लग्गै असमान ॥
तौ नंदन सोमेस कौ । फिरि बंधौ सुरतान ॥ छं० ५३ ॥
चन्द्रव्यूह नृप बंधि दल । धनि प्रथिराज नरिंद ॥
साहि बंध सुरतान सौं । सेना बिन विधि कंद ॥ छं० ५४ ॥

पञ्चमी मङ्गलवार को पृथ्वीराज ने चढ़ाई की । (कवि ने उस दिन के ग्रह स्थिति योग आदि का वर्णन किया है)

कवित—बर मंगल पंचमी । दिन सु दीनौ प्रथिराजं ॥
राहु केत जय दीन । दुष्ट टारे सुभ काजं ॥
अष्ट चक्र जोगनी । भोग भरनी सुधि रारी ॥
गुर पंचम रबि पंच । अष्ट मंगल नृप भारी ॥
कै इंद्र बुद्ध भारथ्थ भल । कर त्रिसूल चक्रा बलिय ॥
सुभ घरिय राजा बर लीन बराचनयो उदै क्रूरह बलिय ॥छं०५५॥

दूहा—मो रचि उद्ध अवद्ध अध । [2]उग्गि महब बिप्रि [3]कंद ॥
बर निसेद न्रप बंदयो । को न भाय कबिचंद ॥ छं० ५६ ॥

जिस प्रकार चकवाक, साधु, रोगी, निर्धन, विरह वियोगी लोग रात्रि के अवसान और सूर्य्योदय की इच्छा करते हैं उसी प्रकार पृथ्वीराज भी सूर्य्योदय को चाहता था ।

कवित—प्रात सूर बंछई । चक्क चक्किय रबि बंछै ॥
प्रात सूर बंछई । सुरह बुद्धि बल सो इंछै ॥
प्रात सूर बंछई । प्रात बर बछि बियोगी ॥
प्रात सूर बंछई । ज्यौं सु बंछै बर रोगी ॥
बंछयौ प्रात त्यों ज्यों उनन । बंछै रंक न रत्न बर ॥
बंछयौ प्रात प्रथिराज नें । सती सत्त बंछैति उर ॥ छं० ५७ ॥

पृथ्वीराज की सेना तथा चढ़ाई का वर्णन ।

हमाली भय प्रात रत्तिय, जुरत दीसय, चंद मंदय चंद यो ।
भर तमस तामस, सूर बर भरि, रास तामस छंद यो ॥

---

१. ए०—संच । २. ए०—लगी । ३. ए०—मंहि, कृ०—मंदि मंड ।

बर कज्जियं कीसान सुनि, बल बीर बरनि अँकूरयं ।
धर धरकि धाहर, करषि काहर, रस मिसूर स कूरयं ॥छं०५८॥
गज्ज चंद चनकिय, रत्र [1]भन किय, मनक्कि संकर उहयौ ।
रन नंकि [2]भेरिय, कन्हु होरिय, दंति दान भनं [3]हयौ ॥
सुनि बीर सद्दइ, सबद पद्दइ, सद्द असद्दइ छंडयौ ।
तिह ठौर अद्‌भुत, होत न्रप दल, बंधि दुज्जन षंडयौ ॥छं० ५९॥
सन्नाह सूरज सज्जि घाटं, चंद ओपम राजई ।
मुकर में प्रतिब्यंब राजग, सत्त घन ससि साजई ॥
बर फलिल बंबर, टोप आयो, त रोस सीसत आइए ।
नष्यित्र हुस्त कि, भान चंपक, कमल सूरहि साइए ॥ छं० ६० ॥
बर बीर धा जोगिंद पत्तिय, कब्बि ओपम पाइयं ॥
तजि मोह माया, छोह कल बर, धार तित्थह धाइयं ॥
संमार शंकर बंधि, गज जिम, अप्प बंधन हुथ्ययं ।
उनमत्त गज जिमि, नंख दीनी, मोह माया सथ्थयं ॥ छं० ६१ ॥
सो प्रबल मह जुग, बंधि जोगी, मुनी आरम देवयो ।
सामंत धनि जिम, षित्ति कीनी, पत्त तरु जिम भेवयो ॥छं०६२॥

दूहा—क्रंम गाह इक मुगत की । क्यों करिजे बाषान ॥
मन अनंष सामंत नै । [4]कच कर बति पाषान ॥ छं० ६३ ॥
बाई बिष धुंघरि परिय । बद्दर छाए भान ॥
कुन घर मंगल बज्जही । कै चढि मंगल आन ॥ छं० ६४ ॥

दोनों ओर की सेनाओं के चमकते हुए अस्त्र शस्त्र और निशानों का वर्णन ।

दिष्ट देषि सुरतान दल । लोहा चमकत बान ॥
चहुँकि फेरि उड़गन चले । निसि आगम फिरि [5]जान ॥ छं० ६५
धजा बाइ बंकुर उड़ति । छबि कबिंद इह आइ ॥
उड़गन चंद नरिंद बिय । लगी [6]मनों अइ पाइ ॥ छं० ६६ ॥
मे सनि संकहि बजतहि । बाजे कुहुक सुरंग
मेटे सद्द निसान के । सुने न श्रवनति अग ॥ छं० ६७ ॥

जब दोनों सेनाएं साम्हने हुई तब मेवारपति रावल समरसिंह ने आगे बढ़कर युद्ध आरम्भ किया ।

1. ए०—मनयिय ।
2. ए०—भोरिय ।
3. ए०—धनंजयो ।
4. मो०—ज्यों कुचकर बर्ता ।
5. को० ए०—जाय ।
6. ह० को०—मानों-मानो ।

अनी दोउ बन घोरं ज्यों । [1]धाय मिले कर धाट ॥
चित्रंगी रावर बिना । करै कोन वह वाट ॥ छं० ६८ ॥

कवित्त —पवन रूप परचंड । घालि असु असि वर झारै ॥
मार मार सुर बज्जि । पत्त तरु अरि सिर पारै ॥
फहकि सद्द [2]फेफरा । हड्ड कंकर उच्चारै ॥
कटि भसुंड परि मुंड । भिड़ कंटक उप्पारै ॥
बज्जयौ विषम मेवारपति । रज उडाइ सुरतान दल ॥
समरथ्थ समर [3]सम्मर मिलिय।अनी मुष्ष पिष्षौ सबल॥छं०६९॥

रावल, जैत पँवार, चामंड राय और हुसैन खां का क्रमानुसार हरावल में आक्रमण करना । पीठि सेना का पीछे से बढ़ना ।

रावर उप्पर धाई । पऱ्यौ पांवार जैत षिझि ॥
तिहि उप्पर चांमंड । कऱ्यौ हुस्सेन षान सजि ॥
धक्काई धक्काइ । दोह हरबल बर मझ्झै ॥
पच्छ सेन आहुट्टि । अनी बंधी आलुझ्झै ॥
गजराज विय सु सुरतान दल । दह चतुरंग बर बीर बर ॥
धनि धार धार धारह धनी । बर भट्टी उप्पारि कर ॥ छं० ७० ॥

हिन्दू सेना की चन्द्र व्यूह रचना ।

छत्र मु जीक सु अप्पि । जैत दीनौ सिर छत्रं ॥
चन्द्रव्यूह अंकुरिय । राज [4]दुअ इहां इकत्रं ॥
एक अग्र हुसेन । वीय अग्रह पुंडीरं ॥
मद्धि भाग रघुवंस । राम उम्भौ बर बीरं ॥
सांषलो सूर सारंग दे । उररि षान गोरीय मुष ॥
हथनारि [5]घोर जंबूर घन । दुहूं बांह उम्भंति [6]रष ॥ छं० ७१ ॥

दो पहर के समय चंद पुंडीर का तिरछा रुख दे कर शत्रु सेना को दबाना ।

छुट्टि अद्ध बर घटिय । चढ्यौ मध्यान भान सिर ॥
सूर कंध बर कढ्ढि । मिले काइर कुरंग बर ॥
घरी अद्ध बर अद्ध । लोह सौं लोह जु लक्के ॥
मन अग्गे अरि मिले । चित्त में कैंक धरक्के ॥

---

१. ए० कृ० को०—धाया मिलेक धाट, कर घाट ।
२. ए० कृ० को०—फीफरा । ३. ए० कृ० को०—मममम मिल, मिली, मिल्यौ ॥
४. कृ० को०—दुअ ।   ५. ए० कृ० को० जो, जीरौं ।
६. कृ०—रुख ।

पुंडीर भीर भंजन भिरन । लरन तिरच्छी लग्गयौ ॥
नव बधू जेन संका सुबर । उठो आनि जिम भग्गयो ॥ छं० ७२ ॥

पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन का सन्मुख घोर युद्ध होना ।
योगिनी भैरव आदि का आनन्द से नाचना ।

भुजंगी—

मिले चाह चहुआन सा चंपि गोरी । स्वयं पंच कोरी निसानं अह्योरी ॥
बजे आवद्धं संभरे अद्ध कोसं । घने अग्ग नीसान मिलि मद्धकोसं ॥ छं० ७३ ॥
बरं बंबरं चोर माहीलि साई । हले छत्र पीतं बले यार घाई ॥
बुले सूर हक्के दहक्के पचारं । चले बथ्थ दोऊ धरं जा [१]अघारं ॥ छं० ७४ ॥
उतंमंग तुट्टं परै श्रोन धारी । मनों दंड सुक्की अगीवाइ वारी ॥
नचैं कंध बंधं हकैं सीस भारी।तहां जोग माया [२]जकी सी बिचारी ॥छं० ७५॥
बढ़ी सांग लग्गी बजी धार धारं । तहां सेन दूनूं करै मार मारं ॥
नचै रंग भैरू गहे ताल बीरं । सुरंग अच्छरी बंधि नारद्द तीरं ॥ छं० ७६ ॥
इसी जुद्ध बधं उब्बद्दे उभानं । भिरै गोरियं सेन अरु चाहुवानं ॥
करै कुंडली तेग बग्गी [३]प्रमानं । मनों मंडली रास तं कन्ह वानं ॥ छं० ७७ ॥
फुठी आवधं माहि सामंत सूरं । बजै गोर ओरं मनों बज्ज झूरं ॥
लगै धार धारं तिनै धरह तुट्टं । दुहूं कुंभ भग्गे करंकं अहुट्टं ॥ छं० ७८ ॥
फुटी श्रोन भोमं [४]अपं बिब राजं । मनों मेघ बुद्दें प्रथीमी समाजं ॥
पराक्रम्म राजं प्रथीपत्ति रुध्यो । रनं रुंधि गोरी सहं जंग जुटयो ॥ छं० ७९ ॥

सुलतान का घबराना । तातार खां का धैर्य दिलाना ।

दूहा—तेज छुट्टि गोरी सुबर । दिय धीरज ततार ॥
मो उभ्भै सुरतान को । [५]भीर परी इन बार ॥ छं० ८० ॥

उक्त युद्ध की बसंत ऋतु से उपमा वर्णन ।

मोतीदाम—रतिराज स जोवन राजत ओर । चंप्यौ ससिरं उर शैशव कोर ॥
उनी मधि मधि मधू धुनि होय । तिनं उपमा बरनी कवि [६]जोय ॥छं० ८१॥
सुनी बर आगम [७]जुब्बन बैन । नच्यौ कब्रं न सु उद्दिय मैन ॥
कबहूं दुरि झंनम [८]पुच्छत नैन । कह्यो किन अब्ब दुरी दुरि बैन ॥ छं० ८२ ॥

---

१. ए०—अघारं ।
२. मो०—जुकीय बिचारी ।
३. ए० कृ० पमानी ।
४. कृ० ए०—अपी ।
५. ए० भरी ।
६. ए० कृ० को०—होइ, कोय, होइ ।
७. ए०—जुब्बय ।
८. मो० ए० को०—पुच्छन ।

घधि रोर बसे सब दुंदभि बज्जि । उभै रतिराज [1]सुजोवन सज्जि ॥
कही बर श्रोन सुरंगिय रज्जि । चंपे [2]रन दोउ बनं बन मज्जि ॥ छं० ८३ ॥
हय मीनन लीन भये रत रज्जि । भम विभ्रम भार परी गहि नज्ज ॥
गुर मारुत फौज प्रयंम चलाइ।गति लज्जि सकुच्चि कछे मिलि आइ॥छं०८४॥
दहि सीत मधूप न कंवहि जीव । प्रकटै उर तुच्छ सोऊ उर भीव ॥
बिन पल्लव कोरहि [3]तारहि रंभ । गहना बिन बाल विराजत अंभ॥छं०८५॥
कलि कंठन कंठ सज्यौ अलि पंथ । न उड्डिय भ्रंग नवेलिय अंथ ॥
सजी चतुरंग सज्यौ बन राइ । बजी इन उप्पर सैसब जाइ ॥ छं० ८६ ॥
कवि मत्तिय जूह तिनं बहु घोर । बनं तब संग्रय चंद कठोर ॥ छं० ८७ ॥

रसावला—

बोल धुक्वे घनं, स्वांमि जंपे मनं । रोस लग्गो तनं, सिंघ मदं मनं ॥छं०८८॥
छोह मोहं षिनं, दांन छुट्टे ननं । नाम राजं घनं, ध्रंम सातुक्कनं ॥छं० ८९॥
मेच्छ वाहं बिनं, रत्त कंधं ननं । ढल्ल जा ढाहनं, जीवता सा हनं ॥छं० ९०॥
वान जा संधनं, रंधि जा बंधन । स्यांम सेतं अनी, पीत रत्तं घनी ॥छं०९१॥
कूह मच्ची घरी, रोस दंती फिरी । फौज फट्टी पुनं, सूर ऊभ्भे घनं॥छं०९२॥
लेहु लेहु क्करी, लोह कढ्ढे अरी । कन्ह आ संभरी, पाइ मंडे फिरी॥छं०९३॥
बीर हक्कं करी, नैन रत्तं बरी । षंड जा षोलियं, बीर सा बोलियं॥छं०९४॥
बीर बज्जे घुरं, दंति पट्टे छुरं । झार सं कोरीयं, जावकं ढारियं ।छं०९५ ॥
दंत रुद्धी परे, अग्ग फूलं झरे । हेमयं नारियं, जावकं ढारियं ॥ छं० ९६ ॥
आननं हुंकयं, अंग [4]आनंचयं । सत्त सामंतयं, वांन सा पथ्थयं ॥ छं० ९७ ॥
फौज दोऊ फटी, जांनि जूनी टटी ।··· ··· ··· ॥ छं० ९८ ॥

सोलंकी माधव राय से खिलजी खां से तलवार का युद्ध होने लगा । माधव राव की तलवार टूट गई तब वह कटार से लड़ने लगा । शत्रुओं ने अधर्म युद्ध से उसे मार गिराया ।

कवित्त— सोलंकी माधव । नरिंद षिलची मुष लग्गा ॥
सुबर बीर रस बीर । बीर बीरा रस पग्गा ॥
दुअन बुद्ध जुध तेग । हूह हथ्थन उभ्भारिय ॥
तेग तुट्टि चालुक्क । बथ्थ परि कढ्ढि कटारिय ॥
अग अग्ग हकिक ठिल्ले बलन । अध्रम जुद्ध लग्गे लरन ॥
सारंग बंध बन थाव परि । गोरी बै विश्रो मरन ॥ छं० ९९ ॥

---

1. ए०—सजीवन ।
2. ए० क० को०—मर ।
3. ए०—तारै संभ ।
4. ए०—आनं ।

धीर गति से मरने पर मोक्ष पद पाने की प्रशंसा ।

खग्ग हुटक्कि जुटिक । जमन सेना समुंद गजि ।।
हय गय बर हिल्लोर । गरुअ गोइंद दिष्षि सजि ।।
अनम अठेल अभंग । नीर असि मीर समाहिय ।।
अति दल बल आहुट्टि । पच्छ लज्जी पर बाहिय ।।
रज तज्ज रज्ज मुक्कि न रह्यौ । रज न लगी रज रज भयौ ।।
उच्छंगन अच्छर सो लयौ । देव विमानन चढ़ि गयौ ।।छं० १००।।

जै सिंह की वीरता और उसकी वीर मृत्यु की प्रशंसा ।

परि पतंग जै सिंघ । पतँग अप्पु न तन दझ्झे ।।
नव पतंग गति लीन । करे अरि अरिध्रज ध्रज्जे ।।
तेल ठांम बातीय । [1]अगन्नि एकल बिरझ्झाइय ।।
पंच अप्प अरि पंच । पंच अरि पंथ लगाइय ।।
आरत्ति कूँआरी बर बर्यौ । दै दाहन दुज्जन दवन ।।
जीतेव असुर महि मंडलह । और ताहि पुज्जे कवन ।। छं०१०१ ।।

बीर पुंडीर के भाई की वीरता और उस के कमंध का खड़ा होना ।

रुप्पौ बीर पुंडरी । फिरी पारस सुरतानी ।।
शस्त्र बीर चमकंत । तेज आरुहि सिर ठानी ।।
टोप ओप तुटि करच । सार सारहु जरि भारे ।।
मिलि नच्छित्र रोहनी । सीस ससि उड़गन चारे ।।
उठि परत भिरत भंजत अरिन । जै जै जै सुर लोक हुअ ।।
उठ्यौ कमंध पलपंच चव । कौन भाइ कप्पौ जु ध्रुअ ।।छं० १०२।।

पज्जून राय के भाई पल्हान राय का खुरसान खां के हाथ से मारा जाना ।

दुजन सल कूरंभ । बंध्र पल्हन सक्कारिय ।।
संम्हो षां षुरसान । तेग लंबी उब्भारिय ।।
टोर टुट्टि बर करी । सीस परि तुट्टि कमंधं ।।
मार मार उच्चार । तार तं नंचि कमंधं ।।
तहँ देषि रुद्र [2]ग्रहह [3]हस्यौं । [4]हय हय हय नंदी कह्यौ ।।
कविचंद [5]सैलपुत्री चकित । पिष्षि बीर भारथ भयौ ।।छं०१०३।।

जै सिंह के भाई का मारा जाना ।

सोलंकी सारंग । षान षिलची मुष लग्गा ।।
बहु पंगानी भूंत । इते चहुआन बिलग्गा ।।

---

१. मो०—अगन्नि । २. ए०—तानी ।
३. मो०—भयौ । ४. मो०—हुयं हुयं । ५ ए०—सबल, कु० को०—सयन ।

हू कंध न बिय पाये । कन्ह उत्तरि बिय बाजिय ॥
गज गुंजार हुँकार । घरा गिर कंदर गाजिय ॥
जय जयति देव जी जै करहिं । पहुपंजलि पूजंत रिनह ॥
इक पन्यो षेत सोधै सकल । इक्क रह्यौ बंधे धुनह ॥ १०४ ॥

गोइन्द राय का तत्तार खां के हाथी और फीलवान को मार गिराना ।

करी मुष्ष आहुट्ठ । बीर गोइंद सु अष्षै ॥
कबिल पील अनु कन्ह । दंत दारुन गहि नष्षै ॥
सुंड दंड भये षंड । पीलवानं गज मुक्यो ॥
गिद्धि सिद्धि बेताल । आइ अंषिन पल रुक्यो ॥
बर बीर पन्यो भारथ्थ बर । लोह लहरी लगात मुल्यो ॥
तत्तार षान सम्हो सु क्रत । सिव हक्कि अबर हुल्यो ॥छं० १०५॥

नरसिंह राय के सिर में घाव लगने से उसके गिर जाने
पर चामुंडराय का उसकी रक्षा करना ।

षोकि षग्ग नरसिंह पिष्षि षज सीसह झारिय ॥
तुटि घर धरनि परंत । परत संभरि कट्टारिय ॥
चरन अंत उरझंत । बीर कूरंभ करारो ॥
तेग घाइ चुक्कंत । झरी झर लोह सँभारो ॥
चलि गयो [1]क्रमन क्रम्मन चलं । डुल्यो न [2]डुल्ल तन हथ्थ वर ॥
तिन परत बीर दाहर तनो । चामंडा बज्जी लहर ॥ छं० १०६ ॥

रात हो गई दूसरे दिन सबेरे फिर पृथ्वीराज ने शत्रुओं को आ घेरा ।

भुजंगी -
[3]छुटी छंदनी छंद सीमा प्रमानं । मिली ढालनी माल राही समानं ॥
निसा मान नीसान नीसान धूअं । धुअं धूरिन मूरिनं पूर कुअं ॥ छं० १०७ ॥
सुरत्तान फौजं तिनें [4]पत्ति फेरी । मुषं लग्गि चहुआन पारस्स घेरी ॥
भये प्रात मुज्जात संग्राम षालं । चहुव्वान उट्ठाय सालोषि पाल ॥छं० १०८॥

जैत राय के भाई लक्ष्मण राय के मरते समय अप्सराओं का उसके
पाने की इच्छा करना परंतु उसका सूर्य्य लोक भेद कर मोक्ष पाना ।

कवित्त -जैत बंध तहि पन्यौ । लष्ष लष्षन को जायो ॥
तहं अगरी मह भाय । देषि हुं कारो पायो ॥
हुंकारे हुंकार । जूह गिद्धनि उड्डायो ॥
गिद्धिन तें अपछरा । लियो चाहत नहि पायो ॥

---

1. मो०—न क्रमन क्रमनत । 2. ए०—नर डुलतन ।
3. ए०—छंदानं, कृ०—मो०—छदनी, छंदनीमा । 4. ए० कृ० को०—पाते ।

अव तरन सोइ उतपति भयो । देवबाल विभ्रम [1]लियो ॥
जम लोक न शिवपुर ब्रह्मपुर । भान थान भानै थियो ॥ छं० १०९॥
तन झंझरि पावार । पऱ्यो धर मुच्छि [2]घटिय बिय ॥
बर अच्छर विट्टयो । सुरंग मुक्के सुरंग हिय ॥
[3]तिहित बाल तल काल । सलष बंधिय ढिग आइय ॥
लिखिय अंग बिय अष्य । सोई बर बंध दिवाइय ॥
जनम मरन सह दुह सुगति । नन मिट्टै मिटहू न तुअ ॥
ए बार सुबर बंटहु नहीं । बंधि लेहु सुबकी बधुअ ॥ छं० ११० ॥
महादेव का लक्ष्कन का सिर अपनी माला के लिये लेना ।
दूहा — राम बंध को सीस बरं । ईस गह्यो कर धाइ ॥
[4]अच्छि दरिद्री ज्यों भयो । देषि देषि ललचाइ ॥ छं० १११ ॥
एक पहर दिन चढ़े जंघा योगी ने त्रिशूल लेकर घोर युद्ध मचाया ।
जाम एक दिन चढ़त बर । जंघारी झुकि बीर ॥
तीर जेम तत्तो पऱ्यो । धर अच्चारे मीर ॥ छं० ११२ ॥
कवित्त — जंघारो जोगी । जुगिंद कढ्यो कट्टारी ॥
परस पानि तुंगी । त्रिसूल मच्चर अधिकारो ॥
जटत बांन सिंगी । विभूत हर बर हर सारो ॥
सबर सद्द बह्यो । विषम मद गंधन झारो ॥
आसन सदिट्ठ निज पत्ति में । लिय सिर चद अच्छित अमर ॥
मंडलीक राम [5]रावत भिरत । नभो बीर इत्तो समर ॥ छं० ११३ ॥
शस्त्र लेकर सुलतान का युद्ध में टूटना । लंगरी राय का घोर युद्ध मचाना । लंगरी राय की वीरता की प्रशंसा ।
सिलह सज्जि सुरतान । झुकि बज्जे रन जंगं ॥
सुनें श्रवन लंगरी । बीर लग्गा अनभंगं ॥
बीर धीर सत मध्य । बीर हुंकरि रन आयो ॥
सामंता सत मद्धि । मरन दीनं भय सायो ॥
पारंत धक्क हक्कंत [6]रन । पग प्रवाहु पग पुल्लयो ॥
बिम्भूत चंद अंगन तिलक । बहसि बीर हकि बुल्लयो ॥ छं० ११४ ॥
लंगा लोह उचाइ । पऱ्यो घुंमर घन सज्जै ॥
जुरत तेग सम तेग । कोर बहर कछु सुज्जै ॥

१. मो०—भयो । २. ए०—घटय ।
३. मो०—तिहित काल सतबाल । ४ मो०—मो०—अचिर ।
५. मो०—रावन । ६. ए०—रिन, तरिन ।

यों लग्गो सुरतान । अनल दावानल दग्गं ॥
ज्यों लंगूर लग्गया । अगनि अगै आलग्गं ॥
इक मार उझार अपार मल । एक उझार मुझारयो ॥
इक बार तन्यो दुस्तर रुपे । दूजैं तेग उभारयो ॥ छं० ११५ ॥

कुंडलिया —तेग झारि उझारि बर । [1]फिरि उपमा कवि [2]कथ्य ॥
नैन बान अंकुर [3]बुहुरि । तन तुट्टै बहि हथ्थ ॥
तन तुट्टै बहि हथ्थ । फेरि बर बीर स बीरह ॥
मरन चित्त सिचयो । अनम [4]जिन तजी ज जीरह ॥
हथ्थ बथ्थ आहित्त । फेरि तबके ठर वेगा ॥
लंगा लंगरि राइ । बीर उच्चाइ सु तेगा ॥ छं० ११६ ॥

लोहाने की वीरता का वर्णन । चौसठ खानों का मारा जाना ।

कवित्त— लोहानो मद मुंद । बान मुक्के बहु भारी ॥
फुट्टि सु ठट्टर स्वान । पिट्ट ऊरद्ध निकारी ॥
मनों किवारी लागि । पुट्ठि थिरकी उघ्घारिय ॥
बट्टारी बर कट्टि । बीर अवसान संभारिय ॥
एक झर मीर उरझारि [5]झर । करि सुमेर परि अरि सु फिरि ॥
चवसट्ठि खान गोरी परै । तिन राव्व इक राज परि ।छं०११७॥
मानि लोह मारुफ । रोस विड्डुर गाहक्के ॥
मनु पंचानन बाहि । सद्द [6]सिरहद्द हहक्के ॥
दुहूं मीर बर तेज । सीस इक सिघहु बाही ॥
टोप टुट्टि बहुकरी । चंद [7]ओरमता पाई ॥
मनु सीस बीय भृंग विज्जुलह । रही हेत तुटि भान हति ॥
उतमंग सुहै बिब टूक ह्वै । मनु उड़गन न्रप तेज मति ॥छं० ११८॥

चौसठ खान मारे गए और तेरह हिन्दू सरदार मारे गये । हिन्दू सरदारों के नाम तथा उनका किससे युद्ध हुआ इसका वर्णन ।

भुजंगी —
परे खान चौसट्ठि गोरी नरिंद । परे सुभट तेरहू कहै नाम चंदं ॥
परे लुथ्थिलुथ्थी जु सेना अलुज्झी।लिषे कंक अंकं बिना कौन बुज्झी ॥छं०११९॥

---

१. कु०—फेरि उपम । २. मो०—तत्थ । ३. मो०—परै ।
४. ए०—कृ० को०—तिन । ५. ए०—उब्बार ।
६. ए०—कर । ७. ए० कृ० को०—राइ । ८. मो०—सिरहद्द, सिरहदु ।
९. ए० कृ० को०—उपमा सु, उपमा सुई ।

पऱ्यौ गोर जैतं मंध सेस डारी । जिनें राषियं रेह अजमेर सारी ॥
पऱ्यौ कनक आहुट्ठ गोविंद बंधं । जिने मेछ की पारसं सब्ब षद्धं ॥छं० १२०॥
पऱ्यौं प्रथ्थ बीरं रघूवंस राई । जिनें संधि षंधार गोरी गिराई ॥
पऱ्यौ जैत बंधं सु पावार भानं । जिनें भंजियं मीर बानेति बानं ॥छं० १२१॥
पऱ्यौ जोध संग्राम सो हूंक मोरी । जिनें कट्टियं वैर गोदंत गोरी ॥
पऱ्यौ दाहिमो देव नरसिंघ अंसी । जिनें साहि गोरी मिल्यौ षान गंसी ॥
॥ छं० १२२ ॥
पऱ्यौ बीर बानेत नादंत नादं । जिने साहि गोरी [1]गिल्यौ साहि जादं ॥
पऱ्यौ जावलौ जाल्हते सैन भष्षं।हुए सार मुष्षं [2]निकस्संत नष्षं ॥छं० १२३॥
पऱ्यौ पाल्हनं बंध माल्हन राजी । जिनें अग्ग गोरी क्रमं सत्त भाजी ॥
पऱ्यौ बीर चहुआन सारंग सोरं।बधे दोइ ग्रेहं ज आकास तोरं ॥ छं० १२४ ॥
पऱ्यौ राव भट्टी बरं पंच पंचं । जिनें मुक्ति के पंथ चल्लाइ संचं ॥
पऱ्यौ भान पुंडीर ते सोम कंमं। [3]झिले जुझ्झयं बज्जयो पंच जंमं ॥छं० १२५॥
पऱ्यौ राउ परसंग लहु बंध भाई । तिनं मुक्ति अंसं छिनं मंझि पाई ॥
पऱ्यौ साहि गोरी भिरै चाहुआनं । कुसादे कुसादे चवै मुष्ष षानं ॥छं०१२६॥

दूसरे दिन ततार खाँ का शहाबुद्दीन को विकट व्यूह के मध्य में रख कर युद्ध करना और सामंतों का कोप कर के शाह की तरफ बढ़ना।

कवित्त—दस हथ्थी सु बिहान । साहि गोरी मुष किन्नो ॥
कर अकास बादी । ततार चवकोद स दिन्नौं ॥
नारि गौरि जंबूर । कुहुक बर बान अघातं ॥
गज्जि भग्ग प्रथिराज । चित्त करयो अकुलातं ॥
सो मोह कोह बर बज्जि कें । ब्रज उन धारय ध्रमसि कं ॥
सामंत सूर बर बीर बर । उठे बीर बर हमसि के ॥ छं० १२७ ॥

अद्ध अद्ध जोजनह । मीर उड़ि संगा केरी ॥
तब गोरी सुरतान । रोस सामंतह घेरी ॥
चक्र श्रवन चौंडोल । अग्ग [4]सेषन पंचासो ॥
सूर कोट ह्वै जोट । सार मारनह हुलासी ॥
बर अगनि बानी [5]हल्ली नहीं । पद्दर कोट सुजोट हुअ ॥
बर बीर रास समरह परिय।सार [6]धार बर कोट [7]हुअ ॥छं० १२८॥

---

1 ए०—मिल्यौ । 2. मो०—निसक्कंत ।
3. जिने जुझ्झतें बज्जयो पंच जंमं । 4. ए०—सेषन ।
5. मो०—हुली, हल्ली । 6. ए० कृ० को०—धरि । 7. ए०—हुव ।

रसावला —
मेलि साहू धरं, षग्ग षोले हरं। हिंदु मेछं जुरं, मंत जा जंभरं ॥छं०१२९॥
दंत कढ्ढे करं, उप्पमा उप्परं। केद भीलं जुरं, कोपि कद्दे करं ॥छं०१३०॥
कंध ननं धरं, पंष जष्षं फिरं। तीर नंषे करं, मेघ बुद्दं बरं॥ छं० १३१॥
आबधं संभरं, बंक तेगं करं। चंद बीजं बरं, अद्ध अद्धं धरं॥ छं० १३२॥
बीय बंधं धरं, कित्ति जपै सरं। अस्सु ढुंढे फिर, रंभ बंछै बरं॥ छं० १३३॥
थान थानं नरं, धारधारं तुट। भ्रंम वासं छुटं, ··· ······ ·· ॥ छं० १३४॥
साहू गोरी बरं, षग्ग षोले करं। ··· ··· ··· ··· ॥ छं० १३५॥

षुरासान खाँ का सुलतान के बचन पर तैश में आकर घोर युद्ध मचाना।

कवित्त षां षुरसान ततार। षिझ्झि दुज्जन दल भष्षै॥
बचन स्वामि उर षटकि। हृटकि तसबी कर नषै॥
कज्जल पंति गज विथुरि। मध्य सैन चहुआनी॥
अजै मानि जै रारि। बियम तेरहू चपि प्रानी॥
धामंत फिरस्तन कढ़ि असी। दहृति पिंड सामंत भजि॥
बर बीर भीर बाहुन [1]कहर। परे धाइ चतुरंग सजि॥छं०१३६॥

रघुबंसी के घोर युद्ध का वर्णन।

भुजंगी - पर्यो रघ्घुबंसी अरी सेन झाड़ी। हुतो बाल बेमं संषं लज्ज डाड़ी॥
बिना लज्ज परुषै सची ढुंढि पिष्षो। मनों डिंभरू जानि कै मोन क्रष्षी॥
॥ छं० १३७॥
पर्यो एक रिनवहू अरि सेन माही। मनो एक तेगं झरी नीर दाही॥
फिरें अट्ठबट्टे उपम्मान बढ्ढे। विश्वंक्रम्म बसी कि दारुन्न गढ्ढे। छं० १३८॥
परे हिंदु मेच्छं [2]उलथ्थी पलथ्थी। करै रंभ भैरं ततथ्थे ततथ्थी॥
गहे अंत गिद्धं बरं जे कराली।मनों [3]नाल कट्टे कि सोभै म्रनाली ॥छं०१३९॥
तुटे एकटं गाढ़ि कै षग्ग धायो। मनौं विक्रम राइ गोबिंद पायो॥
गहै हिंदु हथ्थं मलेच्छं भ्रमायो।जनौं भीम हथ्थीन उप्पम्म पायो।॥छं० १४०॥
ननं मानवं जुद्ध दानव्व ऐसो। ननं इंद तारक्क भारथ्थ कैसो॥
झकं बज्जि झंकारयं झपि उट्ठे। बरं लाहू पंचं बध पच छुट्टै॥ छं० १४१॥
मनों सिघ उझ्झै अरुझ्झंत छुट्टै। रनं देव सांई गए आव बुट्टै॥
घनं घोर ढुंढं उतक्कंठ फेरी। लगै झग्गरें हुंस हज्जार एरी॥ छं० १४२॥
तुटे रुंड मुंडं बरं जो करेरी। बरहृ'इ रिसें दुहूं दिस्र भेरी॥ छं० १४३॥

---

१. ए०—करहृ। २. मो०—उलथ्थी।
३. ए०—को०—बाल।

लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तू उदास क्यों है ?
उसने उत्तर दिया कि आज किसी को बरन करने का अवसर नहीं मिला।

कवित्त –पच्छे भो संग्राम। अग्ग अच्छर बिच्चारिय ॥
पुच्छे रंभ मेनिका। अज्ज चित्तं किम भारिय ॥
तब उत्तर दिय फेरि। अज्ज पहुनाई आइय ॥
रथ्थ बैठि ओथांन। सोझतहू कंत न पाइय ॥
भर सुभर परे भारथ्थ भिरि। ठाम ठाम चुप जीत सथ ॥
उथकीय पंथ हल्ले चल्यो। सुथिर म भो देषीय [1]तथ ॥छं०१४४॥

रम्भा ने कहा कि इन वीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या ये
सूर्य में जा समाए।

कुंडलिया—कहैं रंभ सुनि मेंनकनि। ए रहु जिन मत जुथ्थ ॥
अरिय अनंमति जानि करि। जुति आवें ग्रह रथ्थ ॥
जुति आवें ग्रहू रथ्थ। ब्रह्म शिव लोकहू छंडी ॥
बिश्न लोक ग्रहू करै। भान तन सों तन मंडी ॥
रोमंचि तिलक्क बसि बरी। इंद्र बधू पूजन जही ॥
ओपम्म जोग नन हुअ बहुरि। अब तारन बरहै कही ।छं०१४५।

हुसेन खां घोड़े से गिर पड़ा, उजबक खां खेत रहा, मारूफ खां,
तातार खां सब पस्त हो गए, तब दूसरे दिन सबेरे सुलतान
स्वयं तलवार निकाल कर लड़ने लगा।

कवित्त —षां हुसेन ढरि पर्यो। अस्व फुनि पर्यो सार बहि ॥
झुज्झ फेरि मति सीव। षान उजबक्क षेत रहि ॥
षां ततार मारूफ। षान षाना घट घुम्मैं ॥
तब गोरी सु बिहान। आइ दुज्जन मुष झुम्मैं ॥
कर तेग झल्लि [2]मुट्ठिय सुबर। नहि सुल्तानह पन करी ॥
अदि हार दीह पलटे सुबर। तबहि साहि फिरि पुकरी ॥छं०१४६॥

सुलतान ने एक बान से रघुवंस गुसाईं को मारा, दूसरे से भीम भट्टी को,
तीसरा बान हाथ का हाथ ही में रहा कि पृथ्वीराज ने उसे
कमान डालकर पकड़ लिया।

तब साहिब गोरी नरिंद। सतबान समाहिय ॥
पहिल बान बर बीर। हुने रघुवंस गुसांइय ॥
दूजें बानत कंठ। भीम भट्टी बर भजिय ॥
चाहुआन तिय बान। षान अद्धं धरि रज्जिय ॥

---

1. ए०—कृ०—को०—नथ।   2. मो०—मुट्ठिय।

चहुआन कमान सु सधि करि। तीय बान हय हय रहिय ॥
तब लगि चंपि प्रथिराज नें। गोरी वै गुज्जर गहिय ॥छं० १४७॥

सुलतान को पकड़कर और हुसैन खां तातार खां आदि को विजय करके पृथ्वीराज दिल्ली गए। चारों ओर जै जैकार हो गया।

गहि गोरी सुरतान। षान हुस्सैन उपान्यो ॥
षां ततार निसुरत्ति। साहि झारी करि डान्यो ॥
चामर छत्र रषत्त। बषत लुट्टे सुलतानी ॥
जै जै जै चहुआन। बजी रन जुग जुग बानी ॥
गज बंधि बंधि सुरतान कों। गय ढिल्ली ढिल्ली नृपति ॥
नर नाग देव अस्तुति करै।दिपति दीप दिव लोकपति ॥छं०१४८॥

एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया।

दूहा—समै एक बली नृपति। बर छंडयो सुरतान ॥
तपै राज चहुआन यौ। ज्यों ग्रीषम मध्यान ॥ छं० १४९ ॥

एक महीना तीन दिन कैद रखकर नौ हज़ार घोड़े और बहुत से माणिक्य मोती आदि लेकर सुलतान को गज़नी भेज दिया।

मास एक दिन तीन। साहु संकट में रुंद्धो ॥
करिय अरज उमराउ। दंड हय मंगिय सुद्धो ॥
हय अमोल नव सहस। सत्त सै दिन ऐराकी ॥
उज्जल दंतिय अठ्ठ। बीस मुर ढाल सु जक्की ॥
नग मोतिय मानिक नवल। करि सलाह संमेल करि ॥
परि राइ राज मनुहार करि। गज्जन वै पठयो सुघरि ॥छं०१५०॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रास के रेवातट पातिसाह ग्रहनं नांम सप्तवीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २७ ॥

अथ अनंगपाल समयो लिख्यते ।

(अट्ठाइसवां समय)

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप करने चला गया था परंतु उसने पृथ्वीराज से फिर विग्रह क्यों किया, इस कथा का वर्णन ।

दूहा - दिय दिल्ली चहुआन कों । तुंअर बद्री जाइ ॥
कहो दंद क्यों पुक्करिय । फिरि दिल्ली पुर आइ ॥ छं० १ ॥

अनंगपाल के बद्रिकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली का निर्द्वंद्व शासन करना ।

रष्षि बीर प्रथिराज कों । गौ तीरथ्यह राज ॥
व्यास बचन आनंद सजि । तिहुँ पुर बज्जन बाज ॥ छं० २ ॥
जुग्गिनिपुर प्रथिराज लिय । वज्जि त्रिघोष सुदंद ॥
अनंगपाल तूंअर बरन । किय तीरथ्थ अनद ॥ छं० ३ ॥

यह समाचार देश देशान्तर में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली मे निर्द्वन्द्व राज्य करता हुआ स्वजनों को मान देता है और उपकार को न मान कर अनङ्गपाल की प्रजा को बड़ा दुःख देता है ।

पद्धरी— तूअर नरिंद तप तेज जानि।प्रथिराज व्यास बचनह प्रमानि॥छं०६॥
त्रिमान ग्यान मेटै न कोइ । इंद्रादि अंत कलपंत होइ ॥
दस दिसा अमिट धरती अकास । [1]चंद्रादि सूर ग्रह ग्रह प्रकास ॥
ब्रह्मा टरंत टारंत काल । राहूंत पंच भूते बिचाल ॥ छं० ५ ॥
विष्यात बात दस दिसि कहंत । बिथ्थुरी देस देसन तुरंत ॥
अप अप्प आनि दीजै निवास । तूंअर नरिंद परजा निकास ॥ छं० ६ ॥
निरदै नरिंद इन विधि विसास । आनंग लोक हिरदै निरास ॥
उपगार को न मानै बिबेक । संसार माँहि ऐसे अनेक ॥ छं० ७ ॥

अग्नि, पाहुना, विप्र, तस्कर आदि परदुःख नहीं जानते । पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनङ्गपाल पराए की भांति तप करता है ।

कवित्त—तसकर बेलक विप्प । बैद [2]दुरजन अति लोभी ॥
प्राहुन अहि जल ज्वाल । काल न्रिप इन में मोभी ॥

---

1. ए०—क०—को०—चंद्रमा सूर दिन दिन प्रकास ।
2. ए०को०—दुरजन ।

इन पर चिंता नांहि । बहुत करि जोपं कहिये ।।
[1]अप्प सहज चाल्न । चिन की बात न लहिये ।।
प्रथिराज लोक तूअर घरह । अरुवि दिष्ट मंडै तनह ।।
भोगवै धरा जीवत धनिय । संक न कोइ मानै मनह ।। छं० ८ ।।

सोमेश्वर अजमेर में राज्य करता है और पृथ्वीराज को दिल्ली मिली यह सुनकर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा।

दूहा - संभरि वै मो ेस नृप । अनि उतग आचार ।।
ढिल्ली प्रथि तूअर दइय । सुन्यौ षिज्यौ महिपार ।। छं० ९ ।।

मालवापति ने चारों ओर के राजाओं को पत्र लिखकर बुलाया। गक्खर, गुण्ड, भदौड़ और सोरपुर के राजा आए। सलाह हुई कि पहिले सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय।

कवित्त —चदेरी चतुरंग । सेन हय गय पल्लान ।।
ठौर ठौर कग्गदह । दए मालव धरवान ।।
गष्षड़ गुंड भदौड । मोरपुर मूर ममाहे ।।
मिलि आए महिपाल । अप्प बल मेन उमाहे ।।
एकंत मत्त सोमेस पर । धुर सभरि वै ञिज्जिये ।।
प्रथिराज तुँअर ढिल्ली दिमा । फिरि कलहनर किज्जिये।।छं०१०।।

मालवपति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना सहित चंबल नदी पार होना।

बर मालव महिपाल । चढ्यो चहुआन [2]सु उप्पर ।।
सेन सजी चतुरग । दियो मेलानह सो पुर ।।
हय गय पट्ट अघट्ट । घाट चबिल परि आइय ।।
घुरि निसान घमसान । थान थानह हल्लाइय ।।
जादव नरिंद हरिबंस कुल । अति आतुर अजमेर पर ।।
उत्तऱ्यो सरित [3]समित सकल । धुस धरा रावत घर ।।छं० ११।।

शत्रुओं के आने का समाचार सुन कर सोमेश्वर अपने सामंतों को इकट्ठा करके बोला कि पृथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर शत्रु चढ़े हैं, ऐसा न हो कि कायरता का धब्बा लगे और नाम हँसा जाय।

सुनि सोमेसर सूर । चिंति मन मंत उपाइय ।।
बर प्रथिराज नरिंद । अनँगपालह बुल्लाइय ।।

---

१. ए० कृ० कौ०—आप । २. ए० कृ० को०—जु । ३. ए०—समंत ।

रज रजवट रक्खियै । राव रावत्तन कीजै ॥
रहै गल्ह संसार । आव जल अंजुल छीजै ॥
मो बंस अंस आनल अटल । कोइ न कहो काइर कहिय ॥
अप्पान सुब्भ संबोधि नृप । जुद्ध घात [1]पुव्वत लइय ॥छं० १२॥

सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल हैं इससे इनको रात के समय छल करके जीतना चाहिए ।

सिंघ पँवार ब्रसिंघ । गौड़ संजम चहुआनं ॥
बाहन बीर सधीर । राज गुर राम सुजानं ॥
मंत मंनि भर अवर । करे समचित्त अनेकं ॥
तुम लज्जा धर धीर । बीर बीराधि [2]बिवेकं ॥
संभग्गिय सोम पुच्छन बयन । कहिय बत्त सम तत्तफल ॥
छल बल अनेक छत्रिय करन।तुच्छ सत्थ धुज्जै न [3]थल ॥छं०१३॥

दूहा—चंद चंद निमि दंद मति । [4]ऋतु मरद्द गुरवार ॥
तेरसि तकि सज्यौ सयन । रचि [5]रति वाह विचार ॥ छं० १४ ॥

सोमेश्वर ने कहा कि तुम ने नीति ठीक कहा पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी ।

कवित्त—रत्नि वाह छत्र जुद्ध । अधम [6]छित्री परिमानं ॥
[7]क्रूड कपट मारियै । अधम निद्रा गति जानं ॥
मल मोचन रति रवन । सेन पूजन जल न्हानं ॥
मंत्र जाप जप्पंत । करै नह घात सुजानं ॥
तुम मंत तंत संचौ कहिय । इह अध्रम्म ध्रम हारियै ॥
जो गिनइ पुरुष निंदा अपर । लछ रति वाह विचारियै ॥छं०१५॥

सामंतों ने कहा कि सेतु बांधने में श्रीराम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप के मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस के मारने में छल किया, इस में कोई दूषण नहीं है ।

छल तक्यौ श्री राम । सेत साइर तब बंध्यौ ॥
छल तक्यौ सुग्रीव । बालि जिउ ताइह संध्यौ ॥
छल तक्यौ लछिमना । सूर मंडल अरि बेध्यौ ॥
छल तक्यौ नरसिंघ । अग्गकुस नष उर छेद्यौ ॥

1. ए०कृ०को०—पुव्वक ।
2. ए० कृ० को०—बिमेकं ।
3. ए० कृ० को०—पल ।
4. ए० कृ० को०—रित, रति ।
5. मो० रवि ।
6. ए० कृ० को०—छत्रि ।
7. ए० कृ० को०—कूड़ कूड़ ।

छल बल करंत दूषन न कोइ । किरन कलह कंमहु करिय ।।
सोमेस राज तकि अप्प विधि । रनिवाह छल मन धरिय ।।छं०१६।।

दूहा - ससि निम्मल ससि सूर अप । दिय अस अस्त्र उतान ।।
प्रयुक जोग जिन साल [1]धर । मन्नोजन मव्वान ।। छं० १७ ।।

सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तयारी करना ।

भुजंगी
ग्रहे सूर सोमेस सा आयुधेसं । इक सोमई राज जोगिंद भेसं ।।
तजे मोह माया ग्रहन्नी कहन्नो । तजे बध पुत्त हरि चित्त मन्नो ।। छं० १८ ।।
इक मामि ध्रम्मं ग्रहे अग लाजं । *तिनं सस्त्र झल्ले जधं किनि काजं ।।
न काया न कामं धरे राम राजं । हवे हाक सूरा करै काइराज ।। छं० १९ ।।
पत्रं विस्नुकान्ता जलं जान्हवीयं । वपुं उद्धरे कोटि सो पाप कीयं ।।
वरे रभ वामं दुतो साम कामं । मनों दाहिनावृत्त धीरम रामं ।। छं० २० ।।
तिन सस्त्र हल्ले जुधं क्रित्य काज । हुवै हाक सूर करे काइराज ।।
सुर द्वादस आयुध दड धारै । तिनं नाम चद सु छद उच्चारै ।। छं० २१ ।।
नमी नत्र बंम ग्रहे सूल पामं । परस्सं असन्नी सकत्ती त्रिकामं ।।
ग्रहे तून तोमार भल्ली क्रपानं । जुध्र काज नालीक नाराज जानं ।।छं० २२।।
सर चक्र मारंन वजं गदायं । दड मुद्गर भिडिमालं सघाय ।।
हल मूसल सेल सावल्ल षग्गं । ग्रहे सूरना अप्प अप्पन्न बग्गं ।। छं० २३ ।।
छुरिक्का कती कन्न बक्री कुंतायं । [2]फल्लक्क कनीका भसुडी बताय ।
लिय सक [3]दुस्फोटकं पारिघायं । पटीस छत्तीस ग्रहे आयुधायं ।। छं० २४ ।।

पट्टन के यादव राजा ने आकर डेरा डाला । अजमेर जीतने का उत्साह जी मे भरा था ।

दूहा पट्टन जादव आय न्रप । किय डेरा बरवान ।।
मुनि सोमेसर दौरि करि । ज्यो निध्रि रक प्रमान ।। छं० २५ ।।
अति आतुर अजमेर पहु । आइ कुलिगन बाज ।।
यों रस रत्ता सूर भर । मुकति त्रिया धरि साज ।। छं० २६ ।।

चारों ओर खलबली मच गई । रुद्रगण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे ।

कवित्त - अप्प अप्प मुष अरिन । सूर संमुह झल्लारिय ।।
हाइ हाइ उच्चार । धरनि अंबर तुटि डारिय ।।

---

१. मो०—धर । * यह पंक्ति मो० प्रति मे नही है ।
२. ए० कृ० को०—फक्कक । ३. मो०—दुस्फोटं ।

षमकि चित्त त्रिपुरारि । अष्ट गन नारद नंचिय ॥
सेस सटप्पटि सलकि । दिसा दंतिन तन अंचिय ॥
मनों कि जलद तुट्टिय तड़ित । बर पट्टन आहुट्ट भर ॥
रति वाह प्रात हूं ते दियो । अगनि सार बुठ्यो कहर ॥छं०२७॥

योद्धाओं की तयारी तथा उनके उत्साह का वर्णन ।

रसावला —
कट्टि षग्गं लगं, आइ जुट्टे अंग । जानि सूरं उगं, लग्गि षग्गं बगं ॥ छं० २८॥
जानि प्रल्लै जगं, सामि ध्रम्मं मग । षंड षंड अगं, ओन [1]तुट्टे रगं ॥छं० २९॥
पानि वाहे षगं, सूर साधें स्रग । देषि [2]ताली ठगं, ठाम ठाम ठगं ॥छं० ३०॥
डंक्कनीयं डगं, एक एकं दिगं । सूर रोपे पगं, नग्ग मानों नगं ॥ छं० ३१ ॥
सार धारं तमं, जानि ऊकं अगं । बसं जालं दगं, फुट्टि [3]षोपं षगं ॥छं० ३२॥
दद्धि मट्टं भगं, हंस उड्डे मगं । मार मारं रगं, मुष्ष बोले दगं ॥ छं० ३३ ॥
लट्ट चट्टं परं, लथ्थ बथ्थं भरं । अंत ओनं झरं, जानि पब्बै सरं ॥ छं ३४ ॥
कट्टि षंडं गुरं, हथ्थ जंगं जुरं । जानि षित्ति पलं, चंच गिद्धी पलं ॥छं० ३५॥
ईस सीसं झलं, माल मध्ये [4]घलं । सूर जट्टों बलं अभ्भ तुट्यो कलं॥छं०३६॥
भूर भूपं मिलं, आयुध्रं अत्तुलं । ... ... ॥ छं० ३७ ॥
दूहा — सार मार मच्ची कहर । दोउ दलनि सिर मांषि ॥
प्रौढ़ा नायक छयल रमि । प्रात न बंछे छंधि ॥ छं० ३८ ॥

सोमेश्वर नें पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पैर उखड़ गए ।

कवित्त सोमेश्वर भजि सूर । सूर उझ्झारिग झरि झरि ॥
सार फुट्टि चहुआन । भिरिय जट्टों भरि लरि लरि ॥
घरी एक तिन रत्त । सार मैंगल सिर बुट्ठिय ॥
संभर वैर सु आनि । सार भग्गि जु सिर तुट्टिय ॥
भग्गइ सूरमा दुहुं सयन । किहि न कोई बर चंपयो ॥
उप्पारि लियो अजमेर पहु । दागन [5]किहुं दीयो गयो ॥ छं० ३९॥
हथ्यिय ढाल ढलक्कि । घालि लीनो अजमेरी ॥
परि लंगा लंगरो । सेन दुज्जन दल फेरी ॥
भाग बीर प्रथिराज । अरिन उप्पारि स लीनो ॥
इन सोमेसर राव । सत्त हथ्यिन बर कीनो ॥

1. ए० कृ०—बुट्टे । 2. ए० कृ० को०—तागी ।
3. को०—चोपे । 4. ए०—वलं ।
5. को०—किन ।

जिम तिमर सूर भंजै सुभर । गुरु गल्हान न कवि टरै ॥
जब लगी भूमि साइर [1]सुभ्रित।तव लगि कवित सु[2]उब्बरै॥छं०४०॥

संसार में एक मात्र कवि कथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है।

दूहा— रह्यो न को रवि मंडलहू । रहि कवि मुष्ष मु भल्हू ॥
जीरन जुग पाषान ज्यों । पूर रहंदी गल्ह ॥ छं० ४१ ॥

यादव राजा ऐसा घायल होकर गिरा कि मुंह से बोल न सकता था ।

फिरि जद्दव भर देस दिसि । समर घाइ लै सैन ॥
अवर चित्त तें अवर परि । कढ़्ढि न सक्कै बैन ॥ छं० ४२ ॥

सोमेश्वर उसे उठा लाया बड़ा यत्न किया । एक महीना बीस दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया । सोमेश्वर ने बहुत दान दिया ।

ग्रिह सोमेसर आनि तिन । मास एक दिन बीस ॥
रष्षि जतन किय न्हान जब । दियो दान सु जगीस ॥ छं० ४३ ॥

पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना । उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात पाऊँगा शत्रुओं को मजा चखाऊंगा ।

सुनिय [3]बत्त प्रथिराज नृप । चिंति भविष्यत बत्त ॥
अरियन तो आह्लोड़ियै । जो लब्भीजै घत्त ॥ छं० ४४ ॥

इधर दिल्ली की प्रजा ने बद्रिकाश्रम में अनङ्गपाल के पास जाकर पुकारा कि महाराज चोहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए ।

कवित्त—अनंगपाल प्रज लोक । आइ बद्री [4]पुक्कारिय ॥
हम तुम सेवक सामि । छंडि ग्रह राज निकारिय ॥
नहि अदब्ब मन्नयो कूर मच्चो चहुआनं ॥
हो अनगेस नरेस । गई ढिल्ली धर जानं ॥
जा जियत राज धर पर बसिय । नीति न्याय न प्रकासियै ॥
नर नाग देव निंदें सकल । न्रिप करंत तहं बासियै ॥ छं० ४५ ॥

अनङ्गपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मंत्री को बुलाकर समाचार कहा । मंत्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए ।

सुनिय तेज आजुल्य । दूत परधान पठाइय ॥
हम भंडार धर धान । द्रब्ब लब्भहु भरि लाइय ॥

१. मो०—सुघति ।
२. मो०—विस्तरै ।
३. मो०—खबर ।
४. मो०—पुकारय, निकारय ।

ब्यास बचन संभारि । कहि तब मंत्री पुच्छह ॥
देस क्रषी धन आदि । राज ग्रहयो गढ़ सब्बह ॥
न्रिप सेव देव दुज्जन उरग । इन ढिल्लै नन मुक्किये ॥
बर बंध पुत्र अरु तात न्रप । इन बिसास घर चुक्किये ॥छं० ४६॥

राज्य प्राप्त करने के लिये गत ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन ।

घर काजें कौरवन। पंड जानिय न [1]बंध गति ॥
घर काजें [2]दसग्रीव । बंध बंध्यो भभिषन मति ॥
घर काजें नल राइ । बंधवन षेत न अप्पो ॥
घर काजें बलि राइ । देव देवाधि उथप्पो ॥
घर काज मुंज त्रिय के कहै । भोज प्रहारन मत कियो ॥
घर काज कन्ह तूंअर अधम । पुत्तह सै मुष [3]बिष दियो ॥छं०४७॥

तूंअर वंश ने सर्वदा भूल की, पहिले किल्ली को उखाड़ा फिर आपने पृथ्वीराज को राज्य दिला दिया ।

दूहा -तुम तूंअर मति चूकना । करि किल्ली ढिल्लीय ॥
फुनि मत अप्पन ही करिय । प्रथीराज घर दीय ॥ छं० ४८ ॥

राजा हाथी घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परंतु राज्य की सर्प मणि के समान रक्षा करे ।

राज दान गज तुरिय [4]द्रब । देत न लग्गे बार ॥
घरनिय रष्पन यो सुदृढ़ । अहि मनि रष्षन हार ॥ छं० ४९ ॥

अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मंत्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला ।

मंत्रि सु मंतह सीष लै । चलि दिल्लिय चहुआन ॥
आइस कों जोइम का हा । [5]इह ध्रत धम्म प्रमान ॥ छं० ५० ॥

पृथ्वीराज से मिलकर मंत्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रसन्न हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो ।

चंद्रायना – मिल्यो न्रिपह सोमंत बसीठ जु मुक्कल्यो ॥
सा चहुआनह पास नरिंद सु इक्कल्यो ॥
बिज्यो अनंग नरिंद भूमि हमहीं तजो ॥
कै मिलो आइ चहुआन सुबुद्धिय मंत जो ॥ छं० ५१ ॥

---

१. मो०-बेध । २. मो०-दससीस । ३. मो०-असि ।
४. मो०-बर । ५. मो०-ध्रत धम्म सुप्रमान ।

इस पर पृथ्वीराज का कोपित होना।

बोल्यो हंकि नरिंद बसिठ जु दुब्बऱ्यो।
तब कमधज्ज नरिंद न उत्तर सभऱ्यो॥
बात अनंक्रन कीन हीन हुई उठ्यो॥
चंपि लुहट्टिय हथ्थ बीर बर टट्ट्यो। छं० ५२॥

बसीठ का कहना कि जिसका राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं।

दूहा—उठ्यो बीर बसीठ बल। करि जुहार चहुआन॥
धनी उभै घर लुट्टियै। इह अविज्ज परिमान॥ छं० ५३॥

पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते हैं।

कवित—रे बसीठ मति [1]ढीठ। बोल बोलै मतिहीना॥
सनेरात उप्पनं। किनैं सक्कर [2]पय दीना॥
[3]घर कर छुट्टी संगि। हथ्थ चढ्ढं मरदाना॥
फिर बक्कै जो मूढ़। होइ ताही जिय ज्याना॥
सट्ठीय बुद्धि नट्ठिय न्रपति। तुम [4]बिमत्ति दिन लहि कहिय॥
उग्गमै सूर पच्छिम [5]अरक। तौ दिल्ली घर तुम नहिय॥छं०५४॥

मंत्री का यह सुनकर उदास मन हो चला आना।

दूहा—सुनि यह बत्त सी दूत चलि। बिन आदर मन मद॥
हीन दीन दिष्षन इमौ। मनों कि [6]वासर चद॥ छं० ५५॥

मंत्री ने अनङ्गपाल से आकर कहा कि मैंने तो पहिले ही कहा था,
यह दैत्यवंशी चौहान कभी राज्य न लौटावेगा।
पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए।

कवित—[7]तूंअर बीर बसीठ। सामि सदेस सु अष्षिय॥
तुम वृद्धत्तन कुमल। वत्त पहिले हम भष्षिय॥
वह बलिष्ट दैवान। दैत्यबंसी चहुआनं॥
मूज अप्र उप्परै। देय नह तास प्रमानं॥
तुम दई भूमि निज हथ्थ करि। अथ्थ मित्त नन षोइये॥
संभरहि देस देसन नृपति। तौ वृद्धत्त बिगोइये॥ छं० ५६॥

अनङ्गपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया। पृथ्वीराज नाना की मर्याद को सोचने लगा और उसने कैमास को बुला कर पूछा कि मेरी सांप छछूंदर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए।

---

१. ढीठ, डठि, धठि। २. ए०—रर। ३ मो०—घर कर सेगिय बुद्धि।
४. ए० कृ० को०—विपति। ५ ए० कृ० को०—परक।
६. ए० कृ० को०—बासुर। ७. मो०—तोअर।

अनगपाल न न मानि । कूंच किन्नो दिल्लीय दिसि ।।
भूत [1]भविष जानी न । किय रत्तेत नयन [2]रिस ।।
अप्प सेन सजि जूह । आइ ढिल्ली घरवानं ।।
मात पिता मरजाद । चिंत लग्यो चहुआनं ।।
कैमास मंत पुच्छ्यो नृपति । कहो कहा अब किज्जिये ।।
अहि ग्रहिय छछुंदरि जो तजै । नैन जठर भषि छज्जिये ।।छं०५७।।

जो लड़ाई करता हूं तो अपनी मा के पिता (नाना) से लड़ता हूं और जो छोड़ देता हूं तो अपनी हीनता प्रगट होती है, सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो ।

दूहा—जो मारौं तो मातपित । छंडौ तौ बल हानि ।।
कहि मंत्री मत्रं गपति । न्याय रीति विधि जानि ।। छं० ५८ ।।

कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए, इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानें यहीं आकर भिड़े तो फिर लड़ना चाहिए ।

कवित्त—सुनो नृपति चहुआन । न्याय तो कलह न किज्जे ।।
इन दीनी धर अप्प । अप्प तौ इनह न दिज्जे ।।
जो न्रिमान प्रमान । होइहै सोइ नियानं ।।
जब लग्गौ गढ़ आइ । जाइ तब जुद्ध जुरानं ।।
सजि कोट ओट सामत सथ । नारि गोर जंबूर वहि ।।
लग्गं न जोर छिज्जं सुभर । इन सामंत लगंत नहि ।। छं० ५९ ।।

अनंगपाल ने धूमधाम से युद्ध आरम्भ किया । कई दिन तक लड़ाई हुई अन्त में अनंगपाल की हार हुई ।

अनंगपाल बल मंडि । सुभर ढिल्ली गढ़ लग्गा ।।
लेहु लेहु करि दौरि । अप्प बर अप्प विलग्गा ।।
नारि गोरि आतस्स । कोट पारस भर धाइय ।।
जे भर मंडे आइ । सोर करि मोर उठाइय ।।
लग्गै न घात तूंअर नृपति । दिवस च्यार मंडिय ररिय ।।
पुज्यौ न प्रान पानप घटत । दिल्ली धर ढिल्ली करिय ।।छं० ६०।।

हार कर अनंगपाल का फिर बद्रीनाथ लौट आना ।

चौपाई—दीह च्यारि ढिल्ली नृप भारी । बर चहुआनं संमुहै हारी ।।
गोतं धर फिर रावर छंडिय।बद्री छोर सरन ग्रह मंडिय।।छं०६१।।

1. ए० कृ० को०—भवष । 2. मो०—रस ।

आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड़ कर अनंगपाल लौट गया।

अनगपाल पंडिय गयो। सैंन सु बंधिय थट्ट ॥
अद्ध सेन अजमेर पर। [1]टारे हथ्थ सुभट्ट ॥ छं० ६२ ॥

मंत्री सुमन्त की सलाह से अनङ्गपाल ने माधो भाट को सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा।

बीर बसीठ सुमंत मिलि। स्वामि बचन [2]समुझाइ ॥
मतौ मंडि चहुआन को। माधो भट्ट चलाइ ॥ छं० ६३ ॥

माधो भाट जाकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ चला।

माधो भट्ट सु मुक्कल्यो। मिल्यो जाइ सुलतान ॥
चढ्यो साहि गोरी सुबर। मिलि बंधन चहुआन ॥ छं० ६४ ॥
तूअर अरु चहुआन के। घर बज्यो बहु दद ॥
माधो भट्ट सु मुक्कल्यो। बर गज्जनै नरिंद ॥ छं० ६५ ॥

नीतिराव क्षत्री ने अनङ्गपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया।

नीति [3]राव पित्री सुबर। तूंअर निहि परधान ॥
गोरी दिसि नृप अप्प दिसि। भेद दियौ चहुआन ॥ छं० ६६ ॥
अनंगपाल मान्यो नही। बरजिय पंडि नरिंद ॥
तूंअर अरु चहुआन कै। रहै न एकै बंध ॥ छं० ६७ ॥

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आप को पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैलाकर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं?

कवित्त दई भूमि मापित्त। लई हम हथ्थ पसारह ॥
सो पाओ फिर किम सु। बोल बोलहु अविचारह ॥
तुम बिरद्ध तप जोग। राज चाहो सु करन अब ॥
दयो राज तुम हमह। कहा उपजी चित्तह तब ॥
मंगो जु आइ फिरि भूमि तम। सो[4] राज पाओ नहीं ॥
जो गयो जंत चलि ग्रेह जम। कहो सु फिरि आवै कहीं ॥छं०६८॥

---

१. मो०—टारिग। २. मो०—मम काय।
३. कृ०—बर। ४. ए०—तत्त।

जैसे बादल से बूंद गिर कर, हवा से पेड़ के पत्ते गिरकर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं आ सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म में आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में आकर तपस्या कीजिए।

जलद बूंद परि धरनि। कबहुँ जावै न [1]नभ्भ फिर॥
पवन तुट्टि तरु पत्र। तरु न लग्गै सु आइ थिर॥
तुटि तारक आकास। बहुरि आकास न जाऔ॥
मिघ उलंघि सवजहू। सोइ फुनि हुनि नह थाऔं॥
अप्पिअ सु पहुमि तुम उदक सह। सो पाओ दुजै जनम॥
तप्पौ सु जाइ बद्री तपह। मत विचार राजस मनम॥ छं० ६९॥

आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए, उसे तो हमने कई बार बांध बांध कर छोड़ दिया है।

तुम गोरी पतिसाह। कहैं जिन [2]मन भरमावहु॥
सत्त भ्रंम साहस्स। काइ पर कहैं गमावहु॥
सामंतनि सुलतान। बार बहु गहि गहि छंड्यो॥
उन अपत्ति के सथ्थ। सपति तुम मत्त सु मंड्यो॥
तिम लग्गि जह्यं विधवा चरन। अप समान होवन कहे॥
मंगो सु द्रब्य कारन स धम। कछू अप्प चित्तह चहे॥ छं० ७०॥

हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। संदेसा सुनते ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा।

अरिल्ल सुनि सु दूत आयो हरद्वारह। कथ्थि अनग सम सकल विचारह॥
सुनत श्रवन अति रोस [3]झुकिन मनु। जिम सु सिप चुक्कत कुलिग जनु॥
॥ छं० ७१॥

अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिखकर दूत को गजनी की ओर भेजा। पत्र में लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए हम और आप मिलकर दिल्ली को विजय करें।

कवित्त अनँगपाल झुकि आप। दूत ढिग हुंते साह जे॥
तिनह कह्यो तुम जाइ। कहो साहब लिष्षो ते॥
दिय पत्र [4]तिन हथ्थ। धरा देत न चहुआनह॥
तुम आवहु चढ़ि अतुंर। कूंच पर कूंच मिलानह॥
मिलि अप्प एक एकहू सुमँति। लरि सु लहि दिल्लिय धरा॥
तुम मत्त छंडि तप बद्रिवर। अब सु पोह कप्पें धरा॥ छं० ७२॥

---

१ मो० को०—अभ्भ। २. ए० कृ० को०—पन।
३. ए० कृ० को०—झुकन। ४. ए० कृ० को०—तुनि।

दूत ने आकर अनंगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनंगपाल के हरिद्वार आने का समाचा मुलतान को सुनाया मुलतान सुनते ही चढ़ चला।

गए दूत गज्जनै। साहि सम बत्त बदै बर ॥
तप सु छंडि तोंवरह। आइ हरद्वार लियन घर ॥
पहुमि मंडि प्रथिराज।[१] राज अप्पै न इक्क तिल ॥
दैवादर चढ़ि साहि। भूमि लिज्जै सु उभय मिलि ॥
सुनि साह थाव नीमान किय। चढ्यौ सेन चतुरग सजि ॥
हय गय समूह साकति सकल। अनगपाल साहस्स कज ॥ छं० ७३॥

मुलतान शाहबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सरदारों का वर्णन।

चढ़त साहि साहाब। चढ्यो तत्तार खान बर ॥
षान षान [१]षुरसान। षान मारुफ महा भर ॥
कालिम षान कमाम। मीर [२]नासेर अभगह ॥
अलूषान आलीम। चढ़िय हय गय चतुरंगह ॥
मय सयन सकल मारद्ध [३]लष। उभय सहस मत मत्त इभ ॥
नीसान बज्जि नौबति निहसि रहे गज्ज घर पुर सु नभ ॥ छं० ७४॥

छंद लघुनाराच ॥ चढ्यौ सहाब सज्जिय। निमान जोर बज्जिय ॥
मिले [४]सु साह उम्मर। सजें अनूप समर ॥ छं० ७५ ॥
गयंद मद्द गंधयं। सुझै न राह अधयं ॥
पग ठिले पहारयं। नग पर निहारयं ॥ छं० ७६ ॥
सकाज बाज साजयं। कुरग देषि लाजयं ॥
अनूर चाल उज्जवे। मयूर चित्त रिझ्झवें ॥ छं० ७७ ॥
रजोद मोद उप्पली। सपूर सूर पप्पली ॥
रिधें सु साहि आतुरं। कंपे सु अग कातरं ॥ छं० ७८ ॥
लगन्न छीन उल्लहं। षंड़े जु दूरि दुल्लहं ॥
न आन पान जानयं। उड़ान ज्यौं सिचानयं ॥ छं० ७९ ॥
करंत इल्लगारयं। सु आय सिंधु पारयं ॥ छं० ८० ॥

सिन्धु पार उतरकर, बीस हजार सेना साथ देकर सुलतान ने ततार खां को अनंगपाल को लाने के लिये हरिद्वार भेजा। तातार खां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष से उससे मिला।

---

१. ए०—षुरसैम। २. ए० कृ० को०—नासैन।
३. ए०—लष, लक्षि। ४ ए० कृ० को०—जु।

कवित्त — सिंधु उतरि सुरतान। कह्यौ सम षान ततारह ॥
तुम अनगेसह लैन। आहु जेंह तेंह हरिद्वारह ॥
सहस बीस लै सेन। अनँग सम मिलिय सोनपुर ॥
बिलम करहु जिन बहुत। अभँग सजि आव आतुर ॥
करि नवनि षान तत्तार चलि। पहुँच्यो हरद्वारह सहर ॥
करि षवरि तब्ब अति प्रीत तन। मिल्यो राज अनगेस बर। छं० ८१॥

अनंगपाल ने बहुत से घोड़े मोल लिये और सेना भरती करके लड़ाई की तैयारी की।

दूह — तहँ तोंअर अनगेस नृप। लए मोल बहु बाज ॥
उभय सहस सेना सजित। रष्षि सुभर किय साज ॥ छं० ८२ ॥

तीन सौ वीर जो अनंगपाल के साथ बैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने के लिये तयार हुए।

सत्त तीन भर सुभर जे। निज बैराग सरूप ॥
तिन बंधी तरवार फिरि। बदलि भेष बहु रूप ॥ छं० ८३ ॥

तातार खां ने रात भर रहकर सवेरे उठते ही अनंगपाल के साथ कूच किया। अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर आगे से बढ़कर उसने सुलतान को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे।

कवित्त — मिले षान तत्तार। बन मन तत्त रत्त बर ॥
दै निमान पहु फट्टन। चले पुर सोन उभै भर ॥
भए साह दल निकट। रष्षि जोजन जुग अंतर ॥
दई षवरि सुलतान। बढ्यौ साह।ब समंतर ॥
दस कोस अग्ग अनगेस कहूं। मिल्यो जाइ साहिब मुहिन ॥
बैठे सु उतरि अति प्रीति पर। मनहु उभै जन इक चित ॥छं०८४॥

अनंगपाल ने सब वृत्तान्त सुनाया, दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप आकर हाजिर हो जाय तो उसे जीव दान करना चाहिए। सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी है लौटाओ तो आकर युद्ध करो। पृथ्वीराज ने कहा कि एसी कोटि चढ़ाई क्यों न करें अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता।

पद्धरी –सुरतान समिलि नृप अनंगेस । किय अनग समह पतिसाह पेस ॥
गज पंच मत्त पंचास बाज । साकत्ति सज्जि दिय अनगराज ॥छं०८५॥
किरवान [1]तोन कम्मान एक । सिरपाव स्वातसुत माल मेक ॥
दे प्रीति चढ़े निस्सान पाव । आए सु मोनपुर उभै ठाव ॥ छं० ८६ ॥
मिलि साह अनग बैठे सुमत्त । तत्तार पानषाना सुचित्त ॥
कहि अनगपाल नृप पुब्ब कथ्थ । चहुआन मन न मानैं समथ्थ ॥ छं० ८७ ॥
जंपै सु साह चढ़ि चलौ प्रात । भंजे सु जुग्गनियय पुरह जात ॥
जो मिलिहु अप्प चहुआन आनि । दीजै तो उभय मिलि प्रान दान ॥छं०८८॥
मती सु राज अनगेस मन्न । उच्चर्‍यौ तांम तत्तार पन्न ॥
देपो सु अप्प दूतह पठाइय । लिप्यो सुबत्त मम ब्रिषम दाई ॥ छं० ८९ ।
चर चारु चाहि हक्कारि लीन । लिषि तत्त पत्त तिन हथ्थ दीन ॥
अनगेस पुत्रि सुत तुम्म अप्प । तुम ममपि राज गय बद्रि तप्प ॥ छं० ९० ॥
करि तप्प आइ फिरि अनंगेस । दिज्जै सु इनहि हय गय सु देस ॥
आनो न चित्त चहुआन और । जग्गे सु सामि न ब्रिम्म चोर ॥ छं० ९१ ॥
भगई न जाइ पर लेइ बस्त । समपौ सुराइ आनग समस्त ॥
गो चार पहर चारैं सु गोइ । कबहूं न धेन बर धनी होइ ॥ छं० ९२ ॥
थनत्रार अस्व सौंपै सु राज । ना होइ ओय पनि ताम बाज ॥
करमनी कृष्षि रष्षो सुभाय । तिन भोग सुभर रावर [2]सुभाय ॥ छं० ९३ ॥
अप्पौ सु देस अनगेस रस्स । जिन करो अप्प मज्झह बिरस्स ॥
भयें बिरस सुष्ष पावै न कोइ । हम देन सीष तुम हितू होइ ॥ छं० ९४ ॥
भये बीरस सुष्ष कहु भयो पंड । कुल सकल नास भो वप्पु षंड ॥
अप्पौं न भूमि जो जीय सुद्ध । तो सजहु आनि इन समहि जुद्ध ॥ छं० ९५ ॥
दिय पत्र दूत प्रथिराज जाइ । सुनि श्रवन अप्प बहु दुष्प पाइ ॥
अनगेस राज सुलतान जोर । ऐसे जु सजै कोटिक्क ओर ॥ छं० ९६ ॥
पावै न तऊ दिल्ली सु थान । झुकि राव घाव कीनौ निसान ॥ छं० ९७ ॥

पृथ्वीराज ने डङ्कू पर चोट लगा कर सब सरदारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला ।

गाथा—झुकि किय घाव निसानं । चढ़ि प्रथिराज बाज साजेय ॥
सब सामंत समेतं । दिय डेरा सु दोइ जोजनय ॥ छं० ९८ ॥

दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सुलतान से कहा । जो सब सरदार विरक्त हो गए थे वे भी स्वामि के काम के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए ।

---

१. ए०—तीन, कमान, कामान । २. मो०—सुजाय ।

दूहा – देषि दूत गये साहि ढिग । कही षबरि प्रथिराज ॥
चढ्यौ सूर सँभर धनी । हय गय दल बल साज ॥ छं० ९९ ॥
सामत सूर समस्त बर । भय संसार बिरत्त ॥
स्वामि ध्रम्म साधन सु बर । मरन लरन मन रत्त ॥ छं० १०० ॥

सुलतान ने दूत से समाचार सुन कर चढ़ाई का हुक्म दिया।

अरिल्ल—
संभलि बत्त [1]चरं सुलतानं । निहुसे [2]बज्जि सु बीर निसानं ॥
भयौ हुकुम साहाब अमानह । सजहु अमीर उम्मरा षानह ॥ छं० १०१ ॥

पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा।

दूहा चर सु दिष्षि चहुआन कै । साह षबरि कहि राज ॥
सुनत राज प्रथिराज बर । चल्यौ जुद्ध कज साज ॥ छं० १०२ ॥

धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला, जब दोनों सेनाएं एक दूसरे से दो कोस पर रह गईं तब पृथ्वीराज ने डङ्कों पर चोट दी।

त्रोटक -
सजि साज चल्यौ प्रथिराज बरं । सन सामन सूर सपूर भरं ॥
बिरदैत महाब्बर बीर बली । तिन सों किन जान न रार कली ॥ छं० १०३ ॥
[3]पग्गें भिरि भारथ पारथ से । न बढ़े अग ऊपर आनन से ॥
जुध कों तिनके मुष कोंन जुरे । न मुरें मुष धार अनी सुमुरे ॥ छं० १०४ ।
सजि साहन सेंन हजार दस । रह सेर सवान सु बीर रस ॥
गज [4]सत्त दसं मुर मत्त गजै । तिन देषि बंध्याचल पब्ब लजै ॥ छं० १०५ ॥
घमके घन घुघ्घर घंट वनं । भननंकत भौरनि झौर भनं ।
गति देषि तुरंग कुरंग दुरें । तिनके उर अट्ठुन कोट परें ॥ छं० १०६ ॥
चहुआन चढ्यौ चतुरंग दलं । सजि भैरव भूत बिताल बलं ॥
चर चौसठ जुग्गिनि सथ्थ चलीं । किलकें करि भारथ बैर रली ॥ छं० १०७ ॥
चमकंत सनाह सु जोति इमी । सु करं मधि सूरति बिंब जिसी ॥
सजि टोप रंगावलि [5]हथ्थ लयं। बनि राज सु पष्पर सा [6]वलयं ॥ छं० १०८ ॥
दोइ कोस रह्यौ बिच साहि दलं । चहुआन निसान बजे सबलं ॥ छं० १०९ ॥

---

१. ए०—बरं । २. कृ० ए०—सुरतानह, निसानह ।
३. मो० बज्जे । ४ मो०—पसरें ।
५. ए० कृ० को०—सत्त सुरं मयमत्त गजं । ६. ए०—हाथ ।
७. मो०—परकर । ८. मो०—समयं ।

पृथ्वीराज के पहुंचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया।

दूहा सजि आयौ चहुआन जुध। सुन्यौ श्रवन पतिसाहि॥
हुकम षान उमरान हुअ। सज्यौ अंग सन्नाह॥ छं० ११०॥

आगे तातार खां को रक्खा, मारूफ खां को बाईं ओर और खुरासान खां को दाहिनी ओर अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया।

गाथा मुष्ष सु रिष्षी ततार। बाईं दिसा षान मारूफं॥
दाहिन षां षुरसानं। मद्धि अनगेस पुट्ठि साहावं॥ छं० १११॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूहरचना की। आगे कैमास को और पीछे चावंडराय को कर दिया।

सजि ठ्ठ्ठी सुल्तानं। सुनि चहुआन अप्प व्यूहानं॥
मुष कीनौ कैमासं। चावँडराइ पुच्छ सज्जायं॥ छं० ११२॥

अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को को कोई मारे नहीं, जीते ही पकड़ना चाहिए।

दूहा मद्धि फौज प्रथिराज रचि। कह्यौ सु कर करि उंच॥
अनंग राज जीवत [1]गहौ। इह सु रचौ परपंच॥ छं० ११३॥

दोनों दलों का सामना हुआ, कैमास ने युद्धारम्भ किया।

जिन सु हनौ अनगेस जिय। गहौ सु जीयत [2]सास॥
इनें दुदल दिठ्ठाल भय। लई वग्ग कैमास॥ छं० ११४॥

दोनों दल का सामना होते ही घमसान युद्ध होने लगा।

बिहु दल बल सिंधू बजे। उपजत सूर उहास॥
[3]व्योहनि पर नष्षौ षयंग। करि कलकी कैमास॥ छं० ११५॥

कैमास ने शस्त्र संभाल कर युद्धारम्भ किया। युद्ध का वर्णन।

भुजंगी
लई षग्ग कैमास बीरं अमानं। धमंके धरा गोम गज्जे गुमानं॥
उतें उप्पगी वाग ततार षानं। मिले हिंदु मीरं दोऊ दीन मानं॥ छं० ११६॥
[4]वजे राग सिंधू सु मारु अवग्गे। गजे सूर सूरं असूरं सु [5]भग्गे॥
चढ़े व्योम विम्मान देषंत देवं। बढ़े स्वामि कज्जे सु सज्जे [6]उभेवं॥ छं० ११७॥
छुटे नाल गोला हवाई उछंगं। [7]न चित्रंमनों जानि तुट्टे निहंगं॥
करष्षे चलै बान बानं कमानं। भई अंध धुंधं न [8]सुझ्झैति भानं॥ छं० ११८॥

---

१. ए० कृ० को०—गहैं गहै। २. मो०—साह। ३. ए० कृ० को०—वोहनि।
४. ए० कृ० को०—बज्जे। ५. ए० कृ० को०—भज्जे।
६. ए० कृ० को०—नभवं। ७. मो०—ढुट्टे। ८. ए० कृ० को०—सुझ्झैसु।

मिले सेल भेलं समेलं अपारं । सनाहं फटें हीय होवत्त पारं ॥
मदं मत्त दंतं उषारे मसंदं । मनों भिल्लिया पब्ब उष्षालि कंदं ॥छं० ११९॥
लगै नाग नाग मुषी सूर ऐचैं । हथन्नापुरं जानि बलिभद्र पैचै ॥
झरं ओझरं झार झारं झनंकै । करै गज्ज चिक्कार [1]ताजी किनंकै ॥छं०१२०॥
हूअं पूरनं जाम मध्यान जंत्री । मिले दिठ्ठ तत्तार आनंग मंत्री ॥
चलै मातुलं ओर हक्कं कमासं । हन्यो षान षग्गं पहुँचे वृहासं ॥ छं० १२१॥
तके तूंवरं पै लयौ गज्ज राजं । धपे दाहिमा पागरा छडि वाजं ॥
जरी सेल गाढ़ी विचं [2]पीलवानं।बियो घाव कीयो सु कड्डु क्रपानं ॥छं०१२२॥
कटी दंत लौ सुंड लोही भभक्कं । मनों सारदा कंदरा थी उबक्कं ॥
पऱ्यो कज्जलं कूट ज्यों तूटि हथ्थी।तजे तूंअरं भज्जिगे सब्ब सथ्थी ।छं०१२३॥
भगंदंत वालौ किधौं सु प्रतीकं । महा दिघ्घ कायं अरज्जुन्न झीकं ॥
दबी द्वादसं कोस भू घंट मद्धे । पढ़े बेद बानी पुरानं प्रसिद्धे ॥ छं० १२४ ॥
पऱ्यो दाहिमा भीम ज्यों गोल कूंडे । घटो कल्ल पथ्थं न सथ्थं उमंडे ॥
अलुझ्यो पगं अग्ग में इब्भ राजं । हरी जेम कूदे करी मथ्थ गाजं ।छं०१२५॥
किलावा रह्यौ पग्ग में लग्ग पासी । ग्रह्यौ जीवतौ बद्रिकाश्रम्म बासी ॥
सनद्धं रहि कड्डियं अद्ध विद्धी।चढ़ी हथ्थ दिल्ली न कारज्ज सिद्धी ।छं०१२६॥
उभै मौत मानौं [3]रहे लग्गि छत्ती । पलें भीर सामंत की आइ पत्ती ।
षुरासान मारूफ तत्तार जोरी । करें एक फौजं धप्यौ साहि गोरी छं०१२७॥
इत चहुआनं भुजा के भरोसें । मनों [3]लंघनो सिंघ तुट्टो सरोसें ॥
[4]गढ़ं इंदपथ्थं सु हायं सु कज्जें । उभै दीन जुट्टे करे षग्ग धज्जें ॥छं० १२८॥
रसं लूक लग्गे हुए टूक टूकं । रिनं षत्त पट्टं [5]पुराने अचूकं ॥
घटे जाइ आघाट बैकुंठ थानं । मिट्यो नट्ट गोटा जिसौ आव जानं॥छं०१२९॥
बरं चंग चंगे परी हूर सूरं । रचें रुंडमालं महेसं गरूरं ॥
सिवा श्रोन घप्पी सु कीनो डकारं।करें षचरा भूचरा किल्लकारं ॥छं०१३०॥
उड़ै रेनं गैनं भयौ अंधकारं । पराए न अप्पं न सुझ्झै लगारं ॥
इसी भांति भारथ्थ मंतौ करूरं । घरी च्चार षचे रह्यौ रथ्थ सूरं ॥छं०१३१।
हरद्वार लौं जाइ लायौ सु भग्गो । सबै सेन भग्गो तिनं लार लग्गो ॥
रह्यौ पातिसाहं भुजं लाज झल्ली।षरं पंचि माइक्क छंडे सु भल्ले ॥छं० १३२॥
गनें कोंन नामं अनेकं फवज्जं । लग्यौ दाहिमा के तुरंगम्म कज्जं ॥
बड़ं गुज्जरं कम्मधज्जं पुंडीरं । छलं पारि दौन्यो करे नाहिं सीरं ॥छं०१३३॥

---

१. मो०—बाजी । २. सो० कृ० को०—पति ।
३. ए०—लंघलं, लंघने, लंघनं । ४. मो०—प्रति "हकं एक एकं सहायं सु कज्जे"
५. मो०—ग्रही कैं । ६. ए० कृ० को०—पीलो ।

घरे सिप्परं अट्ठु ह्वं काल भेसं। लियौ संग्रहे चौंडरा गज्जमेसं ॥
फटे पारसं सत्त साहस मीरं। परे पंचसै षेन हिंदू सु बीरं ॥ छं० १३४ ॥
उभै पाहुने कीन चंदं प्रकासे। ढले मुष्ष मंगे प्रथीपत्ति पासे ॥ छं० १३५ ॥

शहाबुद्दीन को चावंड राय ने पकड़ लिया, पृथ्वीराज की जय हुई, सात हजार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए।

कवित्त—बंधि साहि साहाब। लियौ चावड राय बर ॥
हय कंधह लै डारि। गयौ निज सथ्थ सेन नर ॥
नीर उतरि पति असुर। षेत ढुंढ्यौ प्रथिराजं ॥
मुसलमान सत सहस। परे सामथ करि काजं ॥
पंच सै सुभर हिंदू सु परि। उभै सत्ति झोरी सु जगि ॥
जित्यौ सु राज सोमेस सुअ। [1]घनै जैत बज्जै बजिग ॥ छं० १३६ ॥

पृथ्वीराज का सुलतान को कैद में भेज कर अनंगपाल को आदर सहित दरबार में बुला कर उनके पैर पड़ना।

मुसलमान धर गहि। दाग निज सुभर दिवायौ ॥
लियें जीति प्रथिराज। समह सामंत घर आयौ ॥
सभा बैठ भर सुभर। कह्यौ कैमास राइ गुर ॥
अनगेसह लै आउ। चल्यौ मत्री सु लेन घर ॥
आन्यौ सु राज अनगेस तेंह। प्रथीराज लग्यौ सु पय ॥
सनमान प्रान अति प्रीति मो। भाव भगत राजन करय ॥ छं० १३७ ॥

दाहिम राव को हुक्म देकर सुलतान को दरबार में बुलाना, उसके आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बड़े बुद्धिमान हैं आप इस शाह के बहकाने में क्यों आ गए ?

दियौ हुकम दाहिम्म। ल्याउ दीवान साह कहु ॥
सब देषें सामंत। मुक्कि आनन अपत्ति बहु ॥
आन्यौ साहि हजूर। मिल्यौ प्रथिराज राज बर ॥
बैठि साह साहाब। मुष्ष देषें जु [2]सुभर भर ॥
बाल्यौ जु राज प्रथिराज बर। अनँगराइ तुम अति सुमति ॥
भरमौ सु केम कहि साहि के। इह तो [3]पति उत्तरि अपति ॥ छं० १३८ ॥

दूहा—कहै राज प्रथिराज गुर। सुभर बोलि बर अग्ग ॥
अनँग सीस उंच न करैं। नाग दमन सिर नग्ग ॥ छं० १३९ ॥

---

१. ए० कृ० को०—बजै। २. मो०—सुर सुभर।
३. ए० कृ० को०—गति।

सरदार गहलौत ने कहा इसमें महाराज अनंगपाल का दोष नहीं है यह सब प्रपंच दीवान का रचा हुआ है।

कवित्त -कहै [1]गज्जि गहिलौत। कछ्छ सामंत सुनौ सहु ॥
अप्प अनी [2]एकंत। [3]असुर सुरतान बही कहु ॥
समुद सजल जल षार। ससी लग्गौ सु कलंकह ॥
सूर गिलै रम राहु। पंथ लुट्टाइ गोय बहु ॥
दसरथ्थ श्राप काक सु विक्रम। दइ दिवान विपरीत गति ॥
पतिसाह कही सुनतें सकल। अनगपाल नठ्ठी सुमति ॥ छं० १४० ॥

चामुंड राय का कहना कि कुसंग का यही फल होता है।

दूहा—बदै राइ चामड बर। इह अवस्थ होइ अंग ॥
जब सु मानसर तजि करै। हंस काग कौ संग ॥ छं० १४१ ॥

सामंतों ने जितनी बातें कहीं, सब अनङ्गपाल नीचा सिर किए सुनता रहा, कुछ न बोला।

जिते वचन सामंत कहे। तिते सहे अनगीस ॥
षील चील्ह सम सुनि रह्यौ। उठ्यौ न ऊरध सीस ॥ छं० १४२ ॥

पृथ्वीराज का शाह को एक घोड़ा और सिरोपाव (खिल्लत) देकर छोड़ देना।

भाव भगति प्रथिराज ने। कीनी अति महिमान ॥
इक्क बाज सिरपाव दै। छंडि दियौ सुरतान ॥ छं० १४३ ॥

शहाबुद्दीन का घोड़े हाथी और दो लाख मुद्रा दंड देना और पृथ्वीराज का उसे सामंतों में बांट देना।

कवित्त—छौंड़ि दियौ सुरतान। डंड [4]कब्बूल कियौ सिर ॥
बीस [5]हस्ति सत बाज। [6]उंच जाति गातहु मिर ॥
उभै लष्ष बर द्रव्य। दियौ साहाब सु डंडं ॥
सो प्रथिराज नरिंद। अद्ध दीनौ चामंडं ॥
अध दंड सब्ब सामंत कहुं। बंटि दियौ चहुआन बर ॥
दै दंड षत्त नर बर सुभर। प्रथीराज छीवै न कर ॥ छं० १४४ ॥

म्लेच्छ को जीत कर पृथ्वीराज दिल्ली आया।

दूहा—मेच्छ बंध्र चहुआन ने। लिये हयग्गय भार ॥
फिरि प्रसन्न प्रथिराज किय। दिल्ली कोटहु बार ॥ छं० १४५ ॥

---

१. कृ०—षाजि। २. मो०—एकंग।
३. ए० कृ० को०—असुरन नं मिबही कहं। ४. मो०—कबू लै।
५. ए०—हस्ति। ६. ए०—ऊंच जाति सुतहि मिर।

बरष एक पछ्छै न्रपति। तब लगि भर सबलान ॥
समी हयगय दल सजे। चतुरंगी चहुआन ॥ छं० १४६ ॥

राजा से राव पज्जून, गोयन्द राय आदि सामंत आकर मिले।

कवित्त -मिल्यौ राव पज्जून। मिल्यौ मोरी महनसिय ॥
मिले राव पुंडीर। गए [1]दुज्जन वल नसिय ॥
मिले निडर रठ्यौर। मिल गोईंद गहिलौत ॥
मिलि षीची पज्जून। जाम जद्दौं पहिलौतं ॥
आरंभ राव कनकू मिल्यौ। रघुबंसी हय जा रही ॥
कविचंद मिल्यौ जयचंद कों। नाम सभट्टा भारही ॥ छं० १४७ ॥

अनंगपाल का मंत्री से पूछना कि अब मुझे क्या करना उचित है।

अरिल्ल -तब सुमंत परधानह पुच्छिय। कहौ मंत मंत्री मत अच्छिय ॥
किंहि विधि क्रम्म ध्रम्म जस रष्षै।मुनि परधान एह विधि अष्षै ॥छं० १४८॥

मंत्री ने कहा कि महाराज आप अब बूढ़े हुए मृत्यु समय निकट है और पृथ्वीराज को दिल्ली आप दे चुके हैं अब इसका मोह छोड़ कर धर्म कर्म कीजिए।

दूहा -अनगपाल तिन पावि अङ। अरु बर बंधव साल ॥
वृद्ध जोग वपुजोग धरि। चपि जरा अरि काल ॥ छं० १४९ ॥
जोगिनपुर प्रथिराज को। दैव दियौ दिन बित्त ॥
मोह बध बंधन तजे। ध्रम क्रम कीजै चित्त ॥ छं० १५० ॥

मंत्री का कहना कि संसार के सब पदार्थ नाशमान हैं इस की चिन्ता न कीजिए।

कवित्त -न रहै सर वापीय। अनुर गढ़ मंडप बहुज्जं ॥
न रहैं धन वन तरुनि। कूप प्रवन फिरि छज्जं ॥
न रहै ससि रबि भोम। जाइ [2]थावर अरु जगम ॥
न रहै सात समंद। धरै भंजय सोइ अगम ॥
जानहु न प्रलै चतुरंग तम। प्रलै इहै सो दिष्पियै ॥
राषौ न चित आचितका। जीमन मरन विसिष्पियै ॥छं० १५१ ॥

रानी का सलाह देना कि पृथ्वीराज से आधा पंजाब का राज्य ले लो अथवा जो व्यास जो कहैं सो करो।

पुनि बरज्यौ नृप त्रीय। जीय तिय [3]तीय उतारिय ॥
तजिय मान घरबार। पुच्छयौ व्यास हँकारिय ॥
चाहुआन अरि भज्जि। होइ धर अनग नरेसं ॥
पंच नदी करि अद्ध। बँटि अप्पै अध देसं ॥

---

१. मो०—बल। २. ए०—अबर अंबर। ३. मो०—मीस।

तुम कह्यौ जोति [1]अग जोति बिय। इह अपुब्ब कथ मंडिकैं ॥
कै ग्रहौ पंथ बद्री सरन। धरा काम कलि छंडि कैं ॥ छं०१५२ ॥

व्यास जी का कहना कि बलवान पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य करने दीजिए। आप गुरु का ध्यान करके तप कीजिए।

कहै व्यास अनगेस। तपै ढिल्ली चहुआनं ॥
बहु बर बल छज्जि है। बंध मोषन सुलतानं ॥
तुम बद्री तप जाहु। धरा संदेस न आनहु ॥
इह न्रिम्मान प्रमान। पुब्ब संबंधन जानहु ॥
न्रिम्मलो ध्यान गुर ग्यान करि। हरि भजि न्रिम्मल [2]होइहै ॥
नन करो चित्त दुविधा न्रपति। अत्त पुरत्तन षोइहै ॥ छं० १५३॥

राज्य धन सम्मान मांगने से नहीं मिलता और न बल से स्नेह होता है।

न लहै मांग्यो देस। बेस पुनि मांग्यो न लहै ॥
न लहै मंग्यो मान। पान फुनि मांग्यो म लहै ॥
न लहै धन मंगत्त। गत्त फुनि रूप [3]बिनानं ॥
पुब्ब निबध्यो बंध। लहै सोई परिमानं ॥
तुम जान ग्यान मतिमान गुर। नेह न लब्भै जोर बर ॥
आतम्म चित्त अनचिंत तजि। इहै मत्त तुम सत्त करि ॥छं०१५४॥

मेरा मत मानो कि बद्रीनाथ जी की शरण में जाकर कन्दमूल फल खाकर तप करो।

अरिल्ल— मानि मंत तुम तूवर छडिय। जाइ सरन बद्री तप मडिय ॥
कंद मूल आहार अचानिय। कै बन फल तन धारन पानिय ॥छं०१५५॥

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल की बड़ी सेवा की। जब तेरह महीने बीत गए तब अनङ्गपाल ने दौहित्र (पृथ्वीराज) से कहा कि अब मुझे बद्रीनाथ पहुंचा दो वहां बैठा कर तप और भगवान का भजन करूं, पृथ्वीराज ने कहा कि आप यहीं बैठकर तप भजन कर सकते हैं।

कवित्त— अनगराइ अति सेव। करै प्रथिराज राज अति ॥
मास एक वृष वित्त। बहुरि उपजी सु राज मति ॥
कह्यौ पुत्रि सुत सभह। मोहि मुक्कलि बद्री दिस ॥
तहां [4]बपु साधन करौ। धरौं [5]हरि ध्यान अहो निसि ॥

---

1. ए०—सम, कृ०—मम। 2. मो०—षोइये, होइये। 3. ए०—निनानं।
4. मो०—तप। 5. ए०—अहि।

बोल्यों सु राज चहुआन बर । रहौ इहां साधन करौ ॥
तप तुला दान धर्मह बिबिध । ध्यान ग्यान हिरदै धरौ ॥छं०१५६॥

पृथ्वीराज ने बहुत समझाया पर अनङ्गपाल ने एक न माना । उसे बद्रीनाथ जाने की लौ लगी रही । तब पृथ्वीराज ने बड़े आदर के साथ दस लाख रुपया सात नौकर और दस ब्राह्मण साथ देकर उन्हें बद्रीनाथ पहुंचा दिया । अनङ्गपाल वहां जाकर तपस्या करने लगा ।

कही सुत सोमेस । राज अनगेस न मानी ॥
बपु साधन तप काज । बद्रि दिसि मनसा ठानी ॥
तब पुत्री बर पुत्र । लष्ष दह द्रव्य सु अप्पौं ॥
सत अनुचर इक जान । बिप्र दस एक समप्पो ।
चल्यौ अनंग बद्री सरन । पहुँचायौ प्रथिराज नृप ॥
तह आइ राज तोंवर सुबर । तपै राज उग्रह सु तप ॥ छं०१५७॥

पृथ्वीराज की सहानुभूति दयालुता और बीरता की प्रशंसा ।

धनि सु चित्त प्रथिराज । करुन रस आप उपन्नो ॥
द्रब्ब दरक सत अद्ध । पुन्य कारन भरि दिन्नौं ॥
सबै सुभर अनगान । आनि आदर ग्रह बासिय ॥
धनि धनि जंपै लोइ । किति भू मडल भासिय ॥
आषेट दुष्ट दुज्जन दलन । करै केलि सामंत सथ ॥
कबि चंद छंद वंधिय कवित । प्रथ्थिराज भारथ्थ कथ ॥छं०१५८॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल दिल्ली आगमन फिरि प्रथिराज जुरन बद्री तप सरन नाम अठाविसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २८ ॥

अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते।

(उन्तीसवां समय)

पृथ्वीराज साठ हज़ार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार गज़नी में पहुंचा।

कवित्त—दिल्लियपति प्रथिराज। अवनि आखेटक [1]षिल्लय॥
साठ सहस असवार। जाइ लग्गा घर ढिल्लय॥
धूनि धरा पतिसाह। रहे पेसोर [2]सुथनाय॥
सथ्थ लिये सामंत। दिली कैमास सु [3]जानय॥
आगया सु रमय प्रथिराज बर। गज्जन वै घर धूसियै॥
दूसरो इंद्र दिल्लेस बर। सुभर सरस ढिग सुब्भियै॥ १॥

दूतों ने जाकर गज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है।

दूहा—गई षबर ध्रम्मान की। उट्ठ चढ़े असवार॥
ढिल्ली धर लिजै तषत। दिसि गज्जनै पुकार॥ छं० २॥
प्रथीराज साजत पवँग। है गै नर भर भार॥
दिल्लपति आषेट चढ़ि। कुहकबान हथनारि॥ छं० ३॥
डेरा करि पेसोर नृप। सहस सट्ठि सुभ बाज॥
सोन[4] पंथ बिच पंथ दोइ। गल ग्रज्जे अग्राज॥ छं० ४॥

शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्तचर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर गज़नी में जाहिर किया।

कवित्त—गोरी पठए दूत। चले च्यारों चतुरन्नर॥
लीय षबरि प्रथिराज। चले पच्छे गज्जन घर॥
किय सलाम जब दूत। तबहि तत्तार सु बुज्झिय॥
कहा करंत दिलेस। चढ़त गिरबर घर धुज्जिय॥
सँग [5]सत्त षट्ट सामंत चलि। तीन पाव लष्षह तुरी॥
अनि सूर बीर नरवर सकल। उड़ी षेह धर उप्परी॥ छं० ५॥

---

१. ए०—पिल्लिय, ढिल्लिय।
२. ए० कृ० का०—धरसिय।
३. ए० कृ० को०—मतिय।
४. ए०—पंथ।
५. कृ० को० ए०—सित्त।

आषेटक दिन रमय । संग स्वानं घन चीते ॥
नावक पावक बिपुल । जक्कि दिन जामह् जीते ॥
सहस तुरी बघ्घह् सु । लंब सिरषां मिर [1]पुट्टिय ॥
जुर्रा [2]रु बाज कूही गुहा । धानुक्की दारू धरा ॥
वहु काल भाल वदकं बिला । जम भय तत्र जितिय धरा॥छं० ६॥

सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा ।

रमै राज आषेट । सत्त एकल बल भंजै ॥
पंच पथ्थ परिगाह् । रंग अप्पन मन रंजै ॥
सहस एक बाजित्र । सूर किरनह् सपेषै ॥
सुनि गोरी साहाब । दाह् दिल्ल महन क्रिमेषै ॥
जित्तौंब जब्ब प्रथिराज कों । तब तसबी कर मडिहौं ॥
टामंक सद्द् नद्दह् करों । जुगति साह तत्र [3]छंडिहौ ॥ छं० ७ ॥

खुरासान, रूम, हबश और बलख आदि देशों मे सुलतान का सहायता के लिये पत्र भेजना ।

दूहा देस देस कग्गद फटे । पेसंगी पुरसान ॥
रोम हबस अरु बलक में । फट्टे पहु अप्पान ॥ छं० ८ ॥

पांच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना ।

कवित्त - सिलह् लोह सज्जंत । लप्प पचह् मिलि पप्पर ॥
कूंच कूंच षरि षंर । गुरज धारी लष गप्पर ॥
कोस दहं दह कूच । आइ गिरवान मनत्तो ॥
दौरि दूत दिल्लेम । जाम कर त्रय दिन वित्तो ॥
मुक्काम कियो प्रथिराज नृप । तहा षबरि कहि दूत सब ॥
गोरी नरिंद है गै सुभर । सजि आयो उप्पर सु अप ॥ छं० ९ ॥

चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घघ्घर नदी पहुंचा ।

चैत मास रबि तीज । सेत पप्पह् कल चदह् ॥
भयो सुदिन मध्यान । चढ्यौ प्रथिराज नरिंदह् ॥
कटक सबर हिल्लोर । भार सेसह् करि भग्गय ॥
चढ़ि सामंत सकज्ज । नद्द् सुर [4]अंमर जग्गिय ॥

---

१. मो० को० कृ० पुच्छिय ।
२. ए० कृ० को०—जु ।
३. मो०—ठंडिहौं ।
४. मो०—अमर सु जग्गिय

गज रोर सोर बंधे घटा । सिलह् बीज सिलकावलिय ॥
[1]पप्पीह चीह् सहनाइ सुर । नदि घग्घर मेलान विय ॥ छं०१० ॥

शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन ।

दूहा —आयौ आतुर उप्परह् । पैसंगी पतिसाह् ॥
[2]पच्छांई बादल प्रबल । भग्गे राह् विराह् ॥ छं० ११ ॥
बरन बरन तहां देषियै । घंटा रव गजराज ॥
सन्नाहा सन्नाह् रजि । पष्षर सष्षर साज ॥ छं० १२ ॥
भई हलोहल सेन सब । पान व्यूह बर षेत ॥
लष्ष एक भर अंग मैं । छत्र धऱ्यौ सिर जैत ॥ छं० १३ ॥
हुअ टामंक सु दिसि बिदिसि । हुअ संनाह् सनाह् ॥
हूअ हलोहल सुब्भरन । दोऊ दिन इक राह् ॥ छं० १४ ॥

सेना का वर्णन ।

त्रोटक —हुअ सद्द सु सद्दह नद्द भरं । घन घेरिक कीय सु फौज बरं ॥
लष लष्ष मिले दल संमिलयं । नर भद्दव बाहल संमिलयं ॥ छं० १५ ॥
सु अग्गे हथनारि अपार सजं । तिन देषत काइर दूरि भजं ॥
तिन पिट्ठ हजार उमत्त चले । छह् रित्त [3]झरंत करी तिहले ॥ छं० १६ ॥
तिन पिट्ठह फौज गहब्बरयं । धरि गोरिय मुट्ठ करं धरियं ॥
कमनैत अभूल सु लष्ष लियं । तिन मध्य ततारह छत्र दियं ॥ छं० १७ ॥
लष दोय गुरज्ज स गब्बरियं । पुरसान दियं दल पष्षरियं ॥
बलकी उमराव सु सत्त सयं । निसुरत्तह लष्ष हुकम्म भयं ॥ छं० १८ ॥
षुरसान तनं दल उप्पटयं । मनुं साइर सत्त उलट्ट भयं ॥
[4]जल त्रानिय [5]पानिय अद्ध मरं । लोहानिय पानिय षेत षरं ॥ छं० १९ ॥
हबसी उजबक्क हमीर भरं । कलबानिय रुम्मिय अग्ग धरं ॥
सरबानि ऐराकि मुगल्ल कनी । बहु जाति अनेक अनेक भती ॥ छं० २० ॥

मुसलमान सेना का व्यूहबद्ध होकर नदी पार करना ।

कवित्त —फौज बंधि सुरतान मुष्ष अग्गे तत्तारिय ॥
मधि नायक सुरतान । नील पुरसान सु भारिय ॥
मोती निसुरति षान । लाल हबसी कोलंजर ॥
पाचि पीठि रुस्तम । पना बहु भांति अवर नर ॥
उत्तरिय नद्द गोरीस पहुं । बज्जा दस दिसि बज्जिया ॥
मानों कि भद्द उलटी मही । साइर [6]अंबु गरज्जिया ॥ छं०२१ ॥

---

१. ए०—पापीह । २. कृ०—पच्छाही । ३. ए०—करंत ।
४. ए०—जब । ५. ए०—ध्यानिय । ६. ए०—अंबर ।

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना सज्जित कर चामंडराव को आगे किया ।

दूहा —दिल्लीपति फौजह रची । दियो जैत सिर छत्र ॥
चामंड रा अग्गै भयौ । मनों सु गिरवर गत्त ॥ छं० २२ ॥

पृथ्वीराज नें अपनी सेना की गरुड़व्यूहाकार रचना की ।

कवित्त - फौज रची सामंत । गरुड़व्यूहं रचि गढ्ढिय ॥
पंष भाग प्रथिराज । चंच चावंड सु गड्डिय ॥
गाबरि अत्ताताइ । पांइ गोइंद सु ठढ्ढिय ॥
पुच्छ कन्ह चौहान । पेट पम्मारह पढ्ढिय ॥
मुंडाल काल अग्गो धरे । [1]कढे बोइ कलहन्न किय ॥
चालंत बान गोरै प्रबल । मानहु अधकि मार दिय ॥ छं० २३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना । एक हजार मीरों का कैमास को घेरना ।

तत्तारह उप्परह । चित्त चावंड चलायो ॥
दुहू फौज अग्गंज । दुहूं भुज भार भलायो ॥
मीर बान बरषंत । धार धारा हर लग्गो ॥
बाही चामँडराइ । भूमि तत्तारह भग्गो ॥
उत्तरे मीर सै पच दुइ । दाहिम्मै किन्नो दहन ॥
पहिलै जु झुझ्झ दिन पहिल कै । मच्चो जुद्ध जानें महन॥छं०२४॥

तत्तार खां का घायल होना । मीरों की बीरता ।

भूमि पर्यो तत्तार । मारि कमनेत प्रहारै ॥
एक घाव दोइ ट्क । परे धारन मुहु धारै ॥
[2]षुर बज्जै पुरतार । चमकि चामड चलायो ॥
भरै बथ्थ सिर हथ्थ । एक बहु लष्षन धायो ॥
जब परै बूंद तब बीर हुअ । सत्त घरी साहस धरै ॥
तिनमा [3]कटक्क त्रिबिधी घड़ा । एक एक पग अनुसरै ॥छं०२५॥

कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़कर उसे बचाना ।

षान षान आषूंद । अठ्ठ सहसं बहु गब्बर ॥
परिय पंति अवनेस । पारि बहु [4]अब्बर गब्बर ॥
[5]हयौ नेज चामंड । बीर दो सहस लरै भर ॥
हस्ति एक बिन दंत । तमह तिन मथो सहस कर ॥

---

१. ए०–कढ्ढे दोई कल कियं ।　　२. ए०–पुर ।
३. ए०–कमंक ।　　४. मो०–परिकर, कृ०–उब्बर ।
५. कृ०–पयौ, ए०–मथौ ।

दाहिम्म राव मुरछयो पऱ्यो । दोन्यो जैत महाबलिय ॥
मानों कि अग्ग जज्जर बही।कलि मझ्झे रिन बट कलिय॥छं०२६॥

चावंडराय ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुलतान की सेना में कहर मच गया।

धपी [1]सेन सुरतान । [2]मुठ्ठि छुट्टी चावद्दिसि ॥
मनु कपाट उघऱ्यो । कूह फुट्टिय दिस विद्दिसि ॥
मार मार मुष किन्न । लिन्न चावंड [3]उपारे ।
पर सेन सुरतान । जाम इक्कह परि धारे ॥
गल बथ्थ घत गाढ़ो ग्रह्यो । जानि सनेही भिटयो ॥
चामंडराइ करि वर कहर । गोरी दल बल [4]कुट्टयो ॥ छं० २७ ॥

जैतराव के युद्ध का वर्णन।

जैत राइ जडधार । लियों कर दंत मुष्ष कर ॥
परे बज्र सिर धार । मनों मेना सिर उप्पर ॥
षुरसानी बंगाल । मनहु [5]डंडूर रमावै ॥
भरै पत्र जोगिनी । डक्क नारद्द बजावै ॥
अपछरा गीत गावत इला । तुंबर तंत बजावहीं ॥
सुरतान सेन दिल्लेस वर । [6]मग्ग मग्ग जम गावहीं ॥ छं० २८ ॥

युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव और खुरासान खां का तुमुल युद्ध हुआ।

सिर धूनत पतिसाह । धाह सुनि सेना सथ्थिय ॥
लुथ्थि लुथ्थि मुह धार । परे बथ्थन सो बथ्थिय ॥
जम सों जम आहुरै । सूर जुट्टै दोउ घुट्टै ॥
नई गंठि तन जोग । सूर मुंडावलि घुट्टै ॥
षुरसान जैत अब्भूतनिय । धार धार मुह कट्टिया ॥
ऐसो न जुद्ध दिष्षो सुन्यो । दारुन मेछ दवट्टिया ॥ छं० २९ ॥

मनु द्वादस सूरज्ज । हथ्थ चंद्रमा महा सर ॥
जिन उप्पर झलमलै । ताहि घर गोरिय सुब्भर ॥
कटक कूह किलकार । सार परमार बजायो ॥
भिरि भंज्यो सुरतान । एक एकह मुष घायो ॥
सिर सार धार बुढयो प्रहर । तब दोन्यो पज्जून भर ॥
निसुरत्ति षान लष्षह बली । लष्ष एक पाइल सुभर ॥ छं० ३० ॥

1. मो०—मुठ्ठि ।
2. मो०—मुठ्ठि ।
3. ए०—उपारे ।
4. ए० कृ० को०—छुट्टयो ।
5. ए०—कृ०—को०—दंडूक ।
6. ए०—बाग ।

घोर युद्ध हुआ। निसुरत खां मारा गया। दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई।

भुजंगी—

मचे [1]कूह कूहं, बहै सार [2]सारं। चमक्कं चमक्कं, करारं मु धारं॥
भभक्कं भभक्कं, बहै रत्त धारं। सनक्कं सनक्कं, बहै बान भारं॥छं०३१॥
हवक्कं हवक्कं, बहैं सेल भेलं। हलक्कं हलक्कं मची ठेल ठेलं॥
कुकं कूक फूटी, सुरत्तान ठानं। बकी जोग माया सूर अप्पथानं॥छं०३२॥
बहै चट्ट पट्ट, उघट्ट उलट्टं। कुलट्टा [3]धरै अप्प, अप्प उहट्टं॥
दडक्कं बजै सथ्थ, मथ्थ सुटट्टं। कडक्क बजै सैन, सेना सुघट्ट॥ छं० ३३॥
बहै हथ्थ परमार, सिरदार सारं। परि सेन गोरी, बहै रत्त [4]धारं॥
पन्योषान निरसुरत्ति सेना महित्तं हुओ सूर मध्यान, दिल्लेस जित्त॥
॥ छं० ३४॥

एक लाख कालंजरों का धावा, कान्ह चौहान के आंख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना।

कवित्त कालंजर इक लष्ष। मार सिंधुरह गुड़ावै।
मार भार सुष चवैं। सिघ्र सिघा सुष धावै॥
दौरि कन्ह नरनाह। पटी छुट्टी [5]अंषिन पर॥
हथ्थ आइ [6]किरवान। रुंड माला किन्निय हर॥
बिहु बाह लष्ष लोहै परिय। जानि करिव्वर दाह किय॥
उच्छारि पारि धरि उपरें। कन्ह कियौ कि उघान किय। छं०३५॥

भुजंगी--

छुटी अषि पट्टी, मनो उग्गि सूरं। गिरे काइर सूर बद्धे सनूर॥
लियं हथ्थकरिवार, भंजे कपारं। पियै जोगनी पत्र, कीयै डकारं॥छं० ३६॥
बहै अच्छरी हथ्थ, अन्नेक सथ्थं। करं सूर सम्हालियै घल्लि बथ्थं॥
करै कज्ज माईं, समप्पै सुघट्टं। लिय कन्ह गोरी, तन मारि थट्टं॥छं० ३७॥

कालञ्जर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना। कन्ह चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना।

कवित्त कालंजर जब परिय। भगिय सेना पातसाहिय॥
पंच फौज एकट्ठ। कन्ह करवारि [8]सम्हारिय।

---

१. ए०—कृ०—को०—हूक हूकं। २. ए०—कृ०—को०—धोरं।
३ मो०—धरं। ४. ए०—धरा।
५. मो०—षारं। ६. ए०—अषनि।
७. ए०—कृ०—को०—करिवार। ८. कृ०—सम्माहिय।

धर पारे बहु मीर। सथ्य जब सेना भग्गिय ॥
गर घत्ती कंमान। लियौ गोरीय उछंगिय ॥
उत्तरे मीर पच्छे फिरे। हाय हाय मुष हुंकर्‌यौ ॥
पज्जून झेलि मुष मीर कौ। कन्ह लेइ गोरी बर्‌यौ ॥ छं० ३८ ॥

पज्जूनराव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना।

कन्ह का सुलतान को पकड़ कर अपने घर ले आना।

जनु उद्यान हलाइ। पवन चल्लै ज्यौं बांधै ॥
त्यों पज्जून नरिंद। जमदड्ढै सांधै ॥
परे मीर सै सत्त। बिए रन छंडिय भज्जे ॥
चामर छत्र रषत्त। तषत लुट्टे ज्यों सज्जे ॥
कन्हा नरिंद पतिसाह ले। गयौ थान अप्पन बलिय ॥
पंमार सिंघ लग्यौ सु पय। चाव भाव कीरति चलिय ॥ छं० ३९ ॥

कन्ह का सुलतान को अजमेर लेजाना और उसे वहां किले में रखना।

[1]रहै कन्ह अजमेर। *गयौ चहुआन जैत लिय ॥
धरि अग्गोरी नरिंद। दौरि प्रथिराज सुद्ध दिय ॥
गयौ अप्प अजमेर। †लिय पतिसाह नरिंदह ॥
दिन किज्जै महिमान। पास ठड्ढा रहै वृंदह ॥
बैठारि तषत सिर छत्र दिय। सभा बिराजे सु पहुंभर ॥
सिर फेरि षेर दिज्जै दुनी। यों रष्षे पतिसाह दर ॥ छं० ४० ॥

पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की संख्या।

एक लष्ष बाजित्र। सहस तीनह मय मत्तह ॥
लष्प एक तोषार। तेज ऐराकी तत्तह।
आराबा हथ्थिनी। सत्त सै सत्त सु भारिय ॥
चामर छत्र रषत्त। साहि लिन्निय धर सारिय ॥
सामंत सूर बहुविधि भरिग। पट्टे घाव सु बंधियै ॥
रन जैत सोधि संभर धनी। बज्जै अनत सु बज्जियै ॥ छं० ४१ ॥

पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अबकी बार शहाबुद्दीन को प्राण दंड दिया जाय।

[2]रची सभा प्रथिराज। सूर सामंत बुलाए ॥
गोयंद निढ्ढुर सलष। कन्ह पतिसाह पठाए ॥

---

१. ए०–को०–हरै   * ए०–कृ०–को०–किए पतिसाह नरिंद हिय।
† ए०–कृ०–को०–तहां चहुआन जैत लिह।   २. ए०–कृ०–को०–करिय।

करी दंड सिर छत्र। राम प्रोहित पुंडीरह ॥
रा पज्जून प्रसंग। राव ह्राहुलि हंमीरह ॥
इत्तने मत्त मझ्झह मिले। हम मारैं छोरैं न अब ॥
ह्लैहै न हास्य अबकें हमें। फिर न आइहै इह सु कब ॥ छं० ४२॥

कन्ह का कहना कि इसकी पंजाब देश ले कर इसे छोड़ दिया जाय।

दिए देस पंधार। दिए पछिबानं सारं ॥
कासमीर कबिलास। दिए घरटिला पहारं ॥
गज्जन रष्पै देस। बियो समपं प्रथिराजह ॥
ना तरु छुट्टै नांहि। कर हम उप्पर काजह ॥
बोलयो कन्ह नरनाह सुनि। अबकैं मारै कोइ नह ॥
पंजाब दियौ छुट्टै सु अब। यह हमीर दिज्जे हमहि ॥ छं० ४३॥

पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ दे कर शाह को घर भेज देना।

तब बुल्यो प्रथिराज। कहै काका त्यों किज्जिय ॥
जेता रंजक होइ। तिता लादा भरि लिज्जिय ॥
जग्य कियो पंडवन। हेम काचो [1]उन आन्यौ ॥
त्यों लभ्यो पतिसाहि। लष्ष लोहा हम मान्यौ ॥
करि दंड कन्ह पतिसाह को। लोहानो सथ्थं दियो ॥
असवार सहस मथ्थें चलें। कर सिर कन्ह इतो कियो ॥ छं० ४४॥

कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना। शाह का कन्ह को एक मणि और राजा को अपनी तलवार नजर दे कर घर जाना।

करि जुहार तब कन्ह। गयो अजमेर दुरग्गह ॥
तज्यो कन्ह पतिसाह। बत्त सब जंपी अप्पह ॥
ह्लै पुसाल गजनेस। दई इक लाल सहित मनि ॥
कन्ह लेइ पतिसाह। गयो दिली सु ततच्छन ॥
मनुहार करिय सामंत सब। तेग दई दिल्लेस बर ॥
दो अश्व करी दोइ देय करि। [2]साहि चलायो अप्प घर॥छं०४५॥

सुलतान का कुरान बीच में दे कर कसम खाना कि अब कभी आप से विग्रह न करूंगा।

करि सलाम गजनेस। करिय नव निह दिल्लेसर ॥
तम रषियो हम प्रीति। बरष मन सत्तह केसर ॥

---

१. ए०-कृ०-को०-तुम। २. ए० को०-षाहि, षाह।

पेसंगी घर सीम । बीच पौरान कुरानं ॥
जा तक्कौं ्म अबे । तबै तुम कढ़ियौ प्रानं ॥
उत्तरौं अटक तो मैं अवर । मुसलमान नाही धरौं ॥
तुम हम सु प्रीत चलिहै बहुत । हूंन अबै ऐसी करौं ॥छं० ४६ ॥

सुलतान के अटक पार पहुंचने पर उधर से तत्तार खां का आकर मिलना ।

पहु चल्यौ सुरतान । दियौ लोहानौ सथ्थं ॥
दूत च्यारि अनुसार । काल छुटयौ सें हथ्थै ॥
गयौ बीस म्होलान । अटक उत्तरि इन पारं ॥
सोवन पथ मेलान । सहस सन्हे असवारं ॥
निूरत्ति सुतन दरिया सुतन । आइ कियौ सल्लाम तहां ॥
आजान बाह महिमान किय । चल्यौ अप्पगज्जन रहां ॥ छं०४७॥

रयसल कों दूतों का समाचार देना उसका सेना ले कर अटक उतर रास्ते में रोकना ।

रयमल्ल हरी नवट्ट । सहस अठ्ठारह सथ्थें ॥
हे ौ करि पतसाह । पुले लग्गा इन पथ्थें ॥
दूत च्यार अनुसार । कटक देष्यौ असवारह ॥
कह्यौ चरन सब सथ्थ । सहस दोइ सेना मारह ॥
तिन बार बज्जि त्रंबाल बहु । सिलह सज्जि सिरदार सहु ॥
उत्तर्यौ कटक छोरिय अटक । नद्दि हुओ उग्गंत पहु ॥ छं० ४८ ॥

गाथा—बज्जै ुडि त्रंबालं । हथ्थिय नेत्रं मु उप्पारं फहरं ॥
जानि समुद्द उहालं । किय गजनेस मीरं ॥ छं ४९ ॥

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना ।

कवित्त—कह्यौ साह लोहान । कौंन बज्जा बज्जा ॥
दौरि दूत तिन बेर । धनी पछिवानह धाए ॥
कूच कूच पर कूच । कौन पछिवान धनी कहि ॥
सब जान्यौ रयसल्ल । सेन आजान बन्यौ सह ॥
पतिसाह चलौ हौं पछि रहौं । सहस डेढ़ असवार दिय ॥
बंधेय फौज लोहान बर । दुहूं फौज टापंक किय ॥ छं० ५० ॥

सबेरा होते ही रयसल्ल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा ।

अरुन किरन परसंत । आइ पहुंच्यौ रयसल्लं ॥
बज्जै बान बिहुंग । जानि जुट्टा दोइ मल्लं ॥

संमाह्णी आजान । तेग मानहु हवि दिट्ठिय ।।
जानि सिषर मझि बीज । कंध रैमल्लह बुट्टिय ।।
लोहान तनी बज्जै लहरि । कोउ हल्लै कोउ उत्तरै ।।
परनाल रुधिर चल्लै प्रबल । एक घाव एकह मरै ।। छं० ५१ ।।

दूहा मुह मुह चमकै दामिनी । लोह बज्यौ लोहान ।।
इक उप्पर इक इक्क तर । लुथ्थें लुथ्थ समान ।। छं० ५२ ।।

रयमल्ल का मारा जाना, सुलतान का निर्भय गज़नी पहुंचना ।

परयौ लुथ्थि रयमल्ल तहं । ढुंढि षेत लोहान ।।
सुबर साह गोरी न्रिभय । गयौ सु गज्जन थान ।। छं० ५३ ।।

तातार खां खुरासान खां आदि मुसाहबों का सेना सहित सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना ।

कवित्त तत्तारिय षुरसान । सुतन गोरी पय लग्गा ।।
न्योछाबर करि षेर । बहुत मनसा भय भग्गा ।।
लष्ष एक असवार । मिल्यौ गोरी दल पष्पर ।।
लष्ष भये दरवेस । आइ पइ लग्गे गष्षर ।।
उछ्छाह भयौ गज्जन इला । गयौ मझ्झि गोरी धनिय ।।
दरबार भीर भीरन्न घन । मिलत आइ अग अप्पनिय ।।छं० ५४।।

दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया ।

डेरा दिय लोहान । करिय मनुहारि रोज दस ।।
करिय सत्त आजान । तुरिय पत्रास अप्प बस ।।
इह दिन्नौ लोहान । बियौ भेजयौ नृप राजं ।।
लाठे दाइ हजार । सत्त मैं तोला साजं ।।
इक इक्क तुरी हथ्थी सु इक्क । सामंतन दीनो सबै ।।
मुह करिय किति अन्नेक बिधि । सुबर सूर फेरिय जबै ।।छं०५५।।

लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला । पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी ।

सीष दई लोहान चल्यौ दिल्लीय पंथानं ।।
संग सहस असवार । अप्प रिध वासव यानं ।।
दिल्लीपति सामंत । कली छत्तीसह दष्षे ।।
मिल्यौ बाहु आजान । बत्त सुरतान सु अष्षे ।।

इक इक्क तुरिय हथ्थी सु इक । सामंतन पठए घरें ॥
सोवन्न रासि रंजक बहुर । मुक्कलिये चित्रंगपुरे ॥ छं० ५६ ॥

चन्द कवि ने चित्तौर में आकर सब सेना आदि रावल को भेंट की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया ।

गढ़ [1]चीतोड़ [2]दुरग्ग । भट्ट पठयो परिमानं ॥
लादे सिस्त सुरंग । सिस्त ले [3]तुला प्रमानं ॥
दोइ हथ्थी मय मत्त । सत्त हैवर कुल ताकिय ॥
छत्र लियो पतिसाह । जड़ित मनि मानिक साकिय ॥
लै चंद चल्यो चित्तोर गढ़ । जाइ समप्यो रावरह ॥
बहु दान दियो रावर समर । चल्यो भट्ट अप्पन घरह ॥ छं० ५७ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके घघर नदी की लड़ाई कन्ह पतिसाहग्रहनं नाम ओगनतीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २९ ॥



---

१. ए० कृ० को०—चित्रकोट ।
२. ए० कृ० को०—दुरगा ।
३. ए० कृ० को०—तोल, तोला ।

अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते

(तीसवां समय)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से आकर कहना।

दूहा – दूत चरित दिल्ली तनौ। देषि गयौ [1]कनवज्ज ॥
चढत पंग सम्हौ मिल्यौ। सुबर बीर कमधज्ज ॥ छं० १ ॥
करि षलषट सुरतान सौं। दल भग्गै सु विहान ॥
अब करनाटी देस पर। चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० २ ॥

यद्दव की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना।
करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेश्या का
पृथ्वीराज को नजर करके संधि करना।

कवित्त – चढयौ सुबर चहुआन। बीर क्रन्नाट देस पर ॥
मिलि जद्दव बर सेन। तारि कढयौ सु तुग नर ॥
दष्षिन दछिन नरिंद। सबै प्रथिराज सु गाही ॥
तिन राजन इक पात्र। पठय नाइक घर थाही ॥
बर बीर जुद्ध कमधज्ज करि। भीर भगी बर बीर [2]अचि ॥
तिहि दिनां बीर पज्जून पर। षग्ग मार बोहिथ्थ [3]मचि॥छं० ३॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना।

दूहा लै आयौ नाइक्क सथ। करनाटी प्रथिराज ॥
जत्र तत्र एकठ भये। [4]सबै साज संमाज ॥ छं० ४ ॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में
आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत विद्वान
केल्हन नायक को सौंप देना।

कवित्त – संवत इकतालीस। दिवस प्रथिराज राज भर ॥
अति सामंत उभार। आइ अति ध्रम्म ढिल्लि घर ॥
दिय थानक नाइक्क। नाम केल्हन गुन देयं ॥
अति संगीत सु बिद्य। कला सजुत्त सुनेयं ॥

---

१. ए०–कसधज्ज। २. ए० कृ० को०–अगि।
३. ए० कृ० को०–मार्ग। ४. मो०–सब कमधज्जहि सात्र।

ता सध्य श्रीय रतिरूव तन । बर चवद् चातुर सकल ॥
दुव तीस सु लच्छित मति विमल । अति मति अगनित बिद्यबल ॥
॥ छं० ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंसा सुनकर पृथ्वीराज का उस के लिये कामातुर होना ।

गाथा—संभलि बत्त सुयं प्रथिराजं । अति अंगनि विद्याबल साजं ॥
कला सपूरन पूरन चंदं । पूरन हाटक बरन बिबंदं ॥ छं० ६ ॥
बानी जेम बीन कल सारं । स्वर जनु पंचम मझ्झ गुंजारं ॥
नष सिष रूप रूपगति उत्तं । सुभ सामंत प्रसंस प्रमुत्तं ॥ छं० ७ ॥
दरसन ताहि अवर नन दिष्षै । बासन महल मंझ तन दिष्षै ॥
सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि । जग्यो काम नृपति [२]उर अंदरि ॥ छं० ८ ॥
अनि सनमान सु नाइक दीनो । बहुर प्रसंसन साध्रक कीनो ॥ छं० ९ ॥

पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन ।

दूहा—संझ समय अंदर महल । किय सुराज ग्रह धाम ॥
अप्प बयट्ठो राज तहं । अनत सजग्गित काम ॥ छं० १० ॥

पृथ्वीराज के सभामंडप की प्रशंसा वर्णन ।

नराज—जयं सु अत्ति जग्गियं । सु धाम तेज तग्गियं ॥
सजे सुभाल आसनं । अमोल रोहि बासनं ॥ छं० ११ ॥
सु दीप साम सोभयं । सुगंध्र गध्र ओभयं ॥
कपूर पूर जंभरं । मृगज्ज बास अंगरं ॥ छं० १२ ॥
सु सज्जि सिघ आसनं । समोल रोहि वासनं ॥
कनक्क छत्र दंडयं । सु रंग रंग मंडयं ॥ छं० १३ ॥
अबीर [३]जष्प कर्दमं । सरोहि ग्रेह सदंमं ॥
अभूत साप लोभयं । अबीर भूर ओभयं ॥ छं० १४ ॥
अयास धूम घोमरं । प्रसार वास ओमरं ॥
प्रसून ब्रन्न वन्नयं । स भूषनं स भ्रम्मयं ॥ छं० १५ ॥
घनं सु सार सम्मरं । अभूत वास अम्मरं ॥
ध्रुअं कुसम्म केसरं । सुरं अभूत जे सुरं ॥ छं० १६ ॥
तहां सु राज आसनं । सरोहि सिघ सासनं ॥
सुपाय अंग रप्पियं । कला जु काम लष्षियं ॥ छं० १७ ॥
प्रवीन भाव पायसं । विचित्र चित्र पासयं ॥
भवंति क्रति भूषनं । सुबुद्धिये वि[?]षनं ॥ छं० १८ ॥

---

१. ए०—वैस । २. मो०—प्रति । ३. कृ० ए०—यच्छ, जच्छ ।

प्रसून [1]विद्धि बासनं । अभूत [2]सिद्धि आसनं ॥
बरष्ष षोडसं समं । अदोस रूपयं [3]रमं ॥ छं० १९ ॥
कला विग्यान विद्धयं । सु पास भूप सिद्धयं ॥
सिगार सार सारयं । अभूषनं स धारयं ॥ छं० २० ॥
ग्रहे विद्दुन चामरं । सु विप्र राज सामरं ॥
धरंत कब्बि पन्नयं । सु कंठ थान सन्नयं ॥ छं० २१ ॥
सु धन्नसार पानयं । सु सगंध विद्ध मानयं ॥
करैं सु [4]द्रप्पकं करं । सु सष्षि [5]अद्धि संमरं ॥ छं० २२ ॥
शृंगार ग्रेह सोमयं । अभूत दुत्ति ओमयं ॥
समोभ धामयं सज । सुबास वासवं लजं ॥ छं० २३ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम ।

कवित —रब्बि धाम अभिराम । राज हरि थान बयट्ठो ॥
दिपत [6]दीह सुम लीह । तेज उब्भर तप जिट्ठो ॥
बोलि [7]चंद चंडीस । बोलि जद्दव रा जामं ॥
निड्डुर बोलि कमधज्ज । अत्ति जामनि बल सामं ॥
बलिभद्र बोलि कूरंभ भर । लोहानो आजानभुअ ॥
बैठक्क बैठि आसन्न सजि । ताप सतप्पै तेज धुअ ॥ छं० २४ ॥

कल्हन नट का करनाटी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना ।

बोल्लि ताम नाइक्क । सथ्थ मथ्थह सब साजं ॥
बोलि पात्र कर्नाटि । बैठि गानं बर वाज ॥
नाटक भेद निबंध बुझि राजन बर बत्तं ॥
कवन कलाक्रत पात्र । कहो नाइक निज मत्त ॥
नाइक्क कहै प्रथिराज सुनि । एह पात्र देष्यो सु पय ॥
इह रूप रंग जोवन सु वय । कला मनोहर चिंति मय ॥छं० २५॥

कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिस में निड्डुर राय प्रसन्न हों ।

पद्धरी —उच्चर्‍यो ताम कविचंद बानि । नायक्क अहोमति मरम जानि ॥
मो धरी कला विच्चार साज । निड्डुरह बयट्ठो पास राज ॥ छं० २६ ॥

---

१. मो०—बिद्ध । २. मो०—मद्धि । ३. को० ए०—समं ।
४. कृ०—दर्प, ए०—द्रप्प । ५. मो० अठ्ठ ।
६. मो०—देह । ७. कृ०चंद पुंडिर ।

नाटक्क बिबिध बुल्ली बिनान । बिच्चार चार सुर तान गान ॥

नाइक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं।

नाइक्क जंपि हो चंद भट्ट । नृप पास बयट्ठो को सुभट्ट ॥ छं० २७ ॥

कविचंद का निढ्ढुरराय का इतिहास कहना।

उच्चर्‍यो चंद नायक सरीस । कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥
ता अनुज बंध बरसिंघ देव । ता सुअन कमध निढ्ढुरह एव ॥ छं० २८ ॥
नायक्क कहैं हय बत्त सच्च । आवन्न केम हुअ दिली तच्च ॥
बरदाइ कहै नायक्क चित । आवन्न क्रित्त करन्नमित्त ॥ छं० २९ ॥
जैं सिंघ कियो तहां उद्ध काज । अति तेज अप्प जैंचंद राज ॥
लघु बेस उभय बंधव सरूप । श्रुत थान उभय षेलंत भूप ॥ छं० ३० ॥
आइयो महल निढ्ढुर समेक । कहि कुमर राज सद्धो सु एक ॥
उच्चर्‍यो ताम निढ्ढुरह देव । कर कमर हंम मिच्छंत सेव ॥ छं० ३१ ॥
जयचंद समुष निरषेत ताम । कल [1]कलिय लग्ग चामट्ठ धाम ॥
करि सभा सु निढ्ढुर आइ ग्रेह । सुष धाम काम बिलसंत देह ॥ छं० ३२ ॥

निढ्ढुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग
के बगीचे में गोठ रचना।

कबित्त—समय एक निढ्ढुर । कमंध आषेट सपत्तो ॥
बिधि कुरंग दुअ तीन । उभय एकल निज घत्तो ॥
आइ बग्ग सारंग । सुवन सोवंत प्रधानह ॥
करिय गोठि उच्चार । सथ्थ संभरे सवानह ॥
ता अग्ग गोठि सारंग सजि । घन पकवान असान रस ॥
ग्रिह गये बाग आगम सकल । लह्यो निढ्ढुर भेव तस ॥ छं० ३३ ॥

यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर
निढ्ढुर के रंग में भंग करना।

मुरिल्ल—निढ्ढुर ताम [2]गोठिलिय अप्पं । तर सेवक सारंग सु दप्पं ॥
घन पकवान सरस गति सारं । रच्चे मंस बिबहु बिमवारं ॥ छं० ३४ ॥
करि क्रीडा सो गोठि अहारे । [3]त्रपतो सथ्थ सबै बिधि भारे ॥
सुमनह द्राव सुमन सब सोहैं । कासमीर चंदन सुर रोहै ॥ छं० ३५ ॥
आहारे तंमोल [4]सुगंधं । मादक आइ अगिग जहां जग्गं ॥
सुनी श्रवन सारंग सुवत्तं । आयो आतुर [5]बग्ग सुरत्तं ॥ छं० ३६ ॥

---

१. ए० कृ० को०—कलिय । २. ए०—गोगिय । ३. मो०—नृप तो ।
४. मो०—सुरंग । ५. मो०—बेगि ।

[1]कठिन वाच निढ्ढुर सम वाचे। तरस्यौ निढ्ढुर तामंत राचे ॥
गयौ अग्र जैचंद सु रावं। लुट्टी बस्त गोठि मनि सावं ॥ छं० ३७ ॥

निढ्ढुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और
जैचंद का सारंग का पक्ष करना।

संभलि वचन कुप्यौ रा पंगं। कलमलि कोप रोस सब अंगं ॥
निसा महल निढ्ढुर संपत्तौ। फेरे सुष जैचंद बिरत्तौ ॥ छं० ३८ ॥
न संग्रह्यौ रस बसि सिर नायौ। निढ्ढुर ताम अप्प ग्रह आयौ ॥
सजि सु सथ्थ जुग्गनिपुर आयौ। अति आदर करि पिथ्थ बधायौ ॥छं० ३९॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही
नाटय कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो।

दूहा—सुनि नाइक हरष्यौ सुमन। धनि धनि बैंन उचार ॥
लहै सुविद्या अर्थ गुन। जै जै अर्थ उचार ॥ छं० ४० ॥

गाथा—राजनीति गति रुवं। गुन संपूर त्रीस एकंगं ॥
बे रंजे रज छ्यानं। सुनि कविराज सद्ध संपूरं ॥ छं० ४१ ॥

राजाओं के स्वाभाविक गुणों का वर्णन।

साटक—विद्या विनय बिबेक [2]वानि विमलं वर्णो कुवेरप्रभा ॥
[3]सुबिचारो सु विचक्षणे रु सुमनं सोजन्य सौदंर्य्यता ॥
[4]भाग्यं रूपं अनूपयं रस रसं संजोग विभ्भोगयं ॥
मांगल्यं संपूर सौम्य कलसं जानंत केली कला ॥ छं० ४२ ॥
मृदु तत्वं मृदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं ॥
[5]उद्दायं उद्दार दाव उछहं एते गुना राजयं ॥
सोयं जान विचार चारु चतुरं विव्वेक विच्चारयं ॥
सोयं [6]नीति सनीत किति अनुलं प्राप्तं जयं [7]जोरयं ॥ छं० ४३ ॥

दूहा—फुनि नाइक जंपै सु नमि। अहो चंद बरदाइ ॥
राग विनोदह त्रीसषट। कहौं सुनौ विधिसाय ॥ छं० ४४ ॥

१. ए०—कनिक।
२. ए०—कृ० को० को०—मार मलयं, विव्वेक विव्वारयं।
३. ए० कृ० को०—विव्वारं मसु तप्प सोप सुमनं सौजन्य सौभाग्ययं।
४. ए० कृ० को०—भाग्यं। ५. ए०—उद्दायं।
६. मो०—तीन। ७. ए०—को०—चोवरं।

★दंडमाली—दरसन नाद बिनोदयं । सुरंबंध नृत्य समोदयं ॥
गीताद्य अधि नव वादयं । अभिलाष अर्थ पदादयं ॥ छं० ४५ ॥
¹बक्रात जग्यपवीतयं । प्रासस्र प्रभुत प्रनीतयं ॥
पंडीत पालक तल्पयं । ते पढ्य तर्क विजल्पयं ॥ छं० ४६ ॥
प्रंमान सरन प्रमोदयं । प्रातापयंष प्रमोदयं ॥
प्रारंभ परिछद संग्रहं । निग्राह पुष्टित तुष्टिहं ॥ छं० ४७ ॥
प्रासंस प्रीति स प्रापयं । प्रातिग्र यासु प्रतिष्टयं ॥
धीरज धीर जुधं बरं । सो रज्जएव सतं नरं ॥ छं० ४८ ॥

राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना ।

दूहा— सुनि नायक राजन्न मति । जंपहि दिली नरेस ॥
पात्र प्रगट गुन सकल विधि । विद्या भाव विसेस ॥ छं० ४९ ॥

कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना ।

प्रथम गान सुरतान गुन । वादी नेक विनान ॥
पाछें नृत्य प्रचार भर । प्रगट करहु परिमान ॥ छं० ५० ॥

नाटक का क्रम वर्णन ।

भुजंगी—
तबै बोलियं अप्प नाइकअग्गं । मुषं पात्र आरोहु उच्चार जग्गं ॥
धरै आप बीना सुरंसाज सारे । सुरं पंच घोरं धरे थान भारे ॥ छं० ५१ ॥
धुनि रूप रागं सुहानं उपाए । रचे च्यार राहं सुभा सुभ्भ भाए ॥
गियं गान अप्पं सुरं तंति मानं । रचे मंडली राय आयास थानं ॥ छं० ५२ ॥
मनं सर्ब मोहे अति राग रूपं । तनं लग्गए तार आरंग भूपं ॥
तनं षेद रोमंच उच्छाहु अंगं । बयं विस्मयं बेपथं मोद रंगं ॥ छं० ५३ ॥
दया दीन चित्तं अभिलाष जग्गं । गुनं रूप रागं जितें चित्त लग्गं ॥
नषं सिप्प जग्यो तनं मीनकेतं । चढ़ी मत्त बेली चितं पत्र हेतं ॥ छं० ५४ ॥

कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न होकर राजा का नाइक से मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आप से क्या मोल कहूं ।

तबै बोलि नाइक्क राजन्न तामं । कहा मोल पात्रं कहो द्रव्य नामं ॥
कहै नाम नाइक्क पात्रं सरीसं । कहा मोल पात्रं नृपं जोग जीसं ॥ छं० ५५ ॥

★ ए० कृ० को०—में यह छंद गीता मालथी नाम से लिखा है ।

१. कृ० ए०—बक्यत, बक्मत ।

पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर वेश्या को महलों में रखना।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं। ग्रिहं रष्षियं अप्प पात्रं सुभासं ॥
बिसज्जे मिहल्लं करे अप्प उट्ठे। कला काम क्रत्यं निसा पात्र तुट्टे ॥छं० ५६॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना।

दूहा- काम कला तुट्ठिय नृपति। सु ग्रह पवारी द्वार ॥
तिन अवास दासी सघन। रम निस रह रषवार ॥ छं० ५७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रामके कर्नाटी पात्र वर्णनं नाम तीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ ३० ॥



अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय)

प्रातःकाल होते ही पृथ्वीराज का और चामंडराय आदि सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना ।

कवित्त — महल भयो नृप प्रात । आइ सामंत सूर भर ।।
ठट्टा दिसि [1]उच्चारिय । राय चामंड बीर बर ।।
बंभन वास जु राज । [2]कोइ मुक्कलि इन काजं ।।
चावद्दिसि अरि नन्ह । सीम कहै नह आजं ।।
कैमास बोलि मंत्री तहां । मंत्र लाज जिहिं लाज भर ।।
सिर नाइ आइ बैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इंद्र नर ।। छं० १ ।।

सभा जम आने पर राज्यकार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना ।

पद्धरी - बैठे सु राज आरंभ गुझ्झ । पद्धरी छंद बरनेति मझ्झ ।।
बुल्लिय नरिंद जै मत्त धीर । सद्दै सु जुद्ध संग्राम धीर ।। छं० २ ।।
दिसि मत्त मत्त उज्जैन काम । बचाइ राज कग्गद सु ताम ।।
सामंत सूर तपि तोन बंधि । आवर्त्त रोस चलि सेन संधि ।। छं० ३ ।।
दिन सुद्ध राज चलियै सु आज । सम बैर बीर बंकान साज ।।
जैचंद सेन दुस्सह प्रमान । षुरसान सैन सुलतान भान ।। छं० ४ ।।
चालुक्क बीर गुज्जर नरेस । क्रित करै जुद्ध करनी विसेस ।।
थल बटिय बीर मझ्झिय हुजाव । रणपंति सूर तिन मध्य आव ।।छं० ५।।
सब सबर अरी चहुं दिस नरिंद । तिन मध्य चन्द पृथिराज इन्द ।।
सौ बरन बीर उज्जेन ठाम । मद्धि मंह काल सुमथान ताम ।।छं० ६।।
तिन बरन ठाम देवास तीय । संग्राम राज मंडन सु बीय ।।
बंध्यौ सु राज कग्गद प्रमान । धर धनुह धार अर्जुन समान ।।छं०७।।

---

१. ए० कृ० को०—उत्तरिय ।
२. ए० कृ० को०—कोदक ।

पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है।

द्रिग करन धरन धर धरनि पाल। सामंत सूर तिन मध्य लाल ॥
देवास धीय देवास ब्याह। मंड्यौ सु राज संभरि उछाह ॥ छं० ८ ॥
जैचंद करहु अप्पर निधान। कलि काल वत्त चल्लै प्रमान ॥
सा पुरस जीवतं विय प्रकार। संभरै एक कित्ती सँसार ॥ छं० ९ ॥
जीरन सु जुग्ग इह चलै वत्त। संसार सार गल्हां निरत्त ॥
इह कच्च पिंड [1]संवी सु बत्त। जैहै सुजोग जोगाधि तत्त ॥छं० १०॥
जैहै सु भान सब ग्रह प्रकार। दिष्टिये मान सो बिनसि सार ॥
वापी विरष्ष सर मढ प्रमान।मिलिहै सु मवं अगतिस्न जान॥छं०११॥
छंडो न बीर देवा सु मुष्ष। रष्षौ सुमंन गल्हां [2]पुरुष्ष ॥ छं० १२ ॥

राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच ने अपनी अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए।

कवित्त गल्हां काज सु देव। अस्ति दधीच दीय बर ॥
गल्हां काज मरुष्ष। बज्र किन्नो सु इंद्र जुर ॥
गल्हां काज नरिंद। बंस दुरजोध मान रषि ॥
गल्हां काज सु धात। मान अवृत्ति भूमि लषि ॥
रष्षिहैं नरन गल्हां सुबर। गल्हां रष्षै नृपति उष ॥
जयचंद बंध दल बल सकल। सबर [3]सांइ किज्जै सरुप ॥छं०१३॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोधार्य करना।

दूहा - इह [4]परतग्या नरिंद मन। करै बनै प्रथिराज ॥
सकल सूर सामंत ज्यो। मुहि अग्या सिरताज ॥ छं० १४ ॥

सभा में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन।

त्रोटक –इति सामँत सूर प्रमान धरं। दरबार बिराजत राज भरं ॥
चढ़ि चच्चर चंद पुंडीर कियं। सोइ देह धरै फिरि आनँदियं ॥ छं० १५ ॥
नर लज्ज नृपनिय सारँ गयं। सभ पुज्जिन सामँत ता बरयं ॥
अतताइय अंग उतंग भरं। सिव सेव कियें तन फेरि धरं ॥ छं० १६ ॥
नर निढ्ढुर एक नरिंद समं। कनवज्ज उपज्जिय जास जमं ॥
गहिलौत गरिष्ट गोइंद बली। प्रथिराज समान सु देह कली ॥ छं० १७ ॥

---

१. मो०–सच्ची, ए०–संवी। २. ए० कृ० को०–पुरिष्ष।
३. ए० कृ० को०–साइ। ४. ए० कृ० को–परंत ग्याम।

छिति रष्षन छित्ति पजून भरं । तिन पुत्र बली बलिभद्र नरं ॥
परमार सलष्ष अलष्ष गती । तिन पुज्ज न सामत सूर रती ॥ छं० १८ ॥
कयमास सु मंत्रिय राज दरं । अरि अंग [1]उछाहन बीर बरं ॥
अचलेस उतंग नरिंद धरं । रन मझ्झ विराजत पंग भरं ॥ छं० १९ ॥
चावंड नरिंद सु षग्ग बली । नरसिंघ सु दंद अरिंद कली ॥
बर लंगरिराइ उतंग षलं । बय देहिय जानि सुबाहु बलं ॥ छं० २० ॥
[2]इक रंग सु अंग करंत रनं । कर गाइ सु अंषय हृथ्थ तनं ॥
लरि लोह लुहानय किति करं । अरि वाइव धूर ज्यों पत्त [3]हरं ॥ छं० २१ ॥
भजि भोंह चंदेल सु षल षगं । धर धूसन भुंमिय जपि जगं ॥
दिवराज सु बग्गरि बंध बियं । जिन कित्तिय जित्ति जगत्त लियं ॥ छं० २२ ॥
उदि उद्दिग बाहु पगार बली । हरि तेज ज्यों रोर फटंत षली ॥
नरनाहु सु कन्ह का कित्ति करों । भर भीषम भारथ सुद्धि धरों ॥ छं० २३ ॥
भय भट्टिय भान जिहान जपै । तिहि नाम सुने अरि अंग कपै ॥
सुन नाहर नाहर के क्रमयं । तिन कंकन बंक बियं श्रमयं ॥ छं० २४ ॥
रज राम गुरं षग ध्रम्म बली । जिन कित्ति दिसा दस बढ्ढि चली ॥
बड़ गुज्जर राम नरिंद समं । जिन [4]कंदल रुद्धि उठंत भ्रमं ॥ छं० २५ ॥
कविचंद हुकारि सु अग्ग लियो । भर भट्टिय भान भयंक बियो ॥
रघुबंसिय राम सुरग बली । कनकू जिन नाम नरिंद कली ॥ छं० २६ ॥
बर राम नरिंद नरिंद समं । तिहि कंदल उट्ठि रुधं मु जमं ॥
जिहि वस्त्र सु सस्त्रय अंग करं । धरि द्वै भर उट्ठिज बूंद भरं ॥ छं० २७ ॥
भगवत्ति अराधन न्याय करै । रघुबंसिय किल्हु नरिंद बरै ॥
जिन जित्तिय जाइ पंजाब धरं । ... ... ॥ छं० २८ ॥
जिन [5]पंडिय रावर जुद्ध जित्यो । धर मंडव मुड चका बरत्यो ॥
पांवार सलष्ष सु पुत्र बली । नृप जैत सजैत कि कित्ति कली ॥ छं० २९ ॥
सु चलै बर भाइ [6]दुभाइ भरं । तिन सीस सु जंगल देस धरं ॥
धनवंन धनू नृप [7]धात्ररयं । जित तित्त नहीं मन सावरयं ॥ छं० ३० ॥
परताप प्रथीपति नाम बरं । उपज्यो कुल पंडव जोति गुरं ॥
तन [8]तूंअर नेन त्रिनेत बरं । परिहार पहार सु नाम धरं ॥ छं० ३१ ॥

१. ए० कृ० को०-उछाहन ।
२. ए० कृ० को०-इकरंग सुरंग ।
३. ए० कृ० को०-धरं ।
४. कृ०-ककमि ।
५. ए०-मंडिय ।
६. मो० सुभाइ ।
७. मो०-धीबरयं ।
८. ए० कृ० को० तूंअर ।

सजयो जय सद्द पुंडीर बली । जिनके भुज जंगल देस कली ॥
परसंग सु षीचिय षग्ग बली । चमरालिय कि कित्ति नन्यंद हली ॥ छं० ३२ ॥
नव कित्ति नरिंद सु अल्हनय । भजि भारथ कुंभज किल्हनय ॥
सारग सुरंगिय कित्ति बली । बर चाल्लुक चार नक्षत्र हली ॥ छं० ३३ ॥
परि पारथ कन्ह कुंवार नृपं । तिहि पारथ पूजय जुद्ध जपं ॥
षग षंडिय [1]छित्रिय छित्त रनं । सब सामंत सूर समोह तनं ॥ छं० ३४ ॥
हहकारि उभै न्रप पास लिए । समतम्मि सु मत्रिय मंत्र त्रिए ॥
जित जोध विरोधत राज करै । तिन मैं मुष भारथ नाउ सरै ॥ छं० ३५ ॥
कविचंद सु नामय जाति क्रमी । तिनके गुन चंपि नरिंद भ्रमी ॥
सिर अंतय आतप छत्र धन्यो । कमकाव्रलि मंडिय मडि हन्यो ॥ छं० ३६ ॥
कवि कित्ति प्रमोश्रय राज चली । प्रथिराज विराजत देह बली ॥
बर मंगल बुद्ध गुरं सु धरं । सुक सक्रय बक्रय बुद्धि नरं ॥ छं० ३७ ॥
तिन माहि विराजत राज तरं । सु मनों छबि मेरय भान फिरं ॥
बर सेंगर सूर कल्यान नमं । जिहि भारथ कों प्रथिराज समं ॥ छं० ३८ ॥
जयचंद जंघारय नाहरयं । न्रप राज सु रष्षन साहरय ॥
मकवान महीपति मीर बली । प्रथिराज सु जानत जोति छली ॥ छं० ३९ ॥
कठ हेरिय सारंग सूर बली । प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली ।
जग जंबुअ राव हमीर बरं । छिति पत्ति कंगुरह सूर गुरं ॥ छं० ४० ॥
नर रूप नराइन राज भरं । भर भारथ जुग्गिनि पात्र करं ।
गुरराज सु कन्हय जम्म जिसो । मग बेद चलंतह ब्रह्म इसो ॥ छं० ४१ ॥
गुर ग्यारह मैं सकसैन बरं । प्रथिराज चढ़ंतह बाज धरं ॥
चलि सेन मिली करि एकठयं । बजि बंब कि अंबर घुम्मरय ॥ छं० ४२ ॥
झननंकत षग्ग फरी धरयं । भजि हंक ज्यों डक्कन भून भय ॥
गहरात गजिंद सुरिंद समं । जनु छुट्टि जलद्द विहद्द भ्रम ॥ छं० ४३ ॥
चलि मल्लन हल्ल ज्यों रोस रसै । जमजूथ मनों दन्न दद्द ग्रसे ॥
हयनारि सुधारि कें कंक षगी । धरि सिष्ट सु दिष्ट कि इष्ट लगी ॥ छं० ४४ ॥
कमनैत बनैत कि नेत धरं । मंडि मुष्टि मही जनु रूप करं ॥
कहराति सु बैरष वाइ बरं । सु मनों घन फुट्टिय अग्गि झरं ॥ छं० ४५ ॥
सब सेन सभा इह ब्रह्म कहै । बरषा रुव संत द्वै छब्बि लहै ॥ छं० ४६ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना ।

दोहा—जो बुलै सामंत सथ । तो [2]चल्लै प्रथिराज ॥
करि उप्पर जैचंद को । अरि बंधो सिरताज ॥ छं० ४७ ॥

---

1. ए० कृ० को०—छत्रिय । 2. मो०—मो ।

सामंतों का राजाज्ञा मानना ।

कवित्त —जो अग्या सामंत । स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥
ज्यों मंत्रह गुन ग्यान । धीय मानंत तंत लिय ॥
ज्यों सु ध्रम्म [1]उब्बरत्त । बीर चढ्ढी परिमानं ॥
ज्यों गुरु बलहुअ विदुष । तत्त सोई करआनं ॥
साध्रम्म त्रिया अग्या नृपति । मान मोह जानै न अंग ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम । सबल बीर चल्लेत सँग ॥ छं० ४८ ॥

जैचंद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना ।

दूहा -अति आतुर आरंभ वल । गिनी न तिन गति काज ॥
तिन उप्पर जैचंद को । सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छं० ४९ ॥

कमधज्ज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के बीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन ।

त्रोटक —सोइ सज्जिय सूर नरिंद बलं । छिति धारन को छिति छत्र कलं ॥
मति मंत्र बरष्षय सूर बरं । धर पर्वत ज्यों भर कन्ह करं ॥ छं० ५० ॥
आवृत्त अहीर करै बलयं सुरष्यो गिर एक हरी छलयं ॥
सु करै बलत्रीय अबृत्त भरं । न्रप राज सु कंठिय कंठ गुरं ॥ छं० ५१ ॥
हरसिंघ महाबल बंधु बियो । बरसिंघ बली अरि छत्र लियो ॥
बर जद्दव जाम जुवान नरं । जिन [2]कंधय ढिल्लिय राज गुरं ॥ छं० ५२ ॥
नर नाहर टांक नरिंद नमं । तिहि कंठ अरि ध्रम्म तम ॥
[3]पंचम्म पवाँर सु पुंज बरं । मद मोष बिछुट्टिय काल [4]भरं ॥ छं० ५३ ॥
परषत्त सु पल्हन अल्हनय । भुज रष्षिय भारथ ढिल्लनयं ॥
बर तूंअर रावति बान बली । जिन कित्ति कलाधर ध्रम्म छली ॥ छं० ५४ ॥
बर बीर कँठी षुरसान रनं । हय त्रीय अहुट्ठपती सुमनं ॥
कंठीर कलंकृत जैत बली । जिहि ओटत जंगल देस भली ॥ छं० ५५ ॥
नृप रूप नरिंदति वाहनयं । षुरसान दलंषिति सा हनयं ॥
जसरत्ति सुरत्ति सुरत्त गुरं । षित की षित कंध परै न धरं ॥ छं० ५६ ॥
जनएस गुरेस सबंध्र बली । जिहि निढ्ढुर उप्पर पंष [5]पुली ॥
परसंग पवित्र पवित्र छती । षुरसान दलं जिन जुद्ध मती ॥ छं० ५७ ॥
अवनीस उमाह तुरंग [6]तुरं । जिहि बंधन वास उगाहि घरं ॥
जिन गुज्जर ताप तिरं तिरनं । कयमासय उप्पर कीध घनं ॥ छं० ५८ ॥

---

१. मो०—उरबत्त ।　　२. ए० कृ० को०—कंठय ।
३. ए० कृ० को०—पंचमुष्षब बार ।　　४. ए० कृ० को०—नरं ।
५. मो०—हूली ।　　६. मो०—मुरं ।

महनंग महा मुर नैंन समं । तिन राज सु रष्षिय जित्ति क्रमं ॥
बरदावलि चंद नरिंद पढ़ी । सु मनों कल जोति सरीर बढ़ी ॥ छं० ५९ ॥
सभ सोहत सित्त रु पंच इकं । जिन जानत [1]मोद मयं करिकं ॥
कवि नामति जित्तिय जानि तिनं । तिनकी विरदावलि जपि फुनं ॥छं० ६०॥
सत में षट राजत राज समं । तिनके जुव नाम कहोति क्रमं ॥ छं० ६१ ॥

उन छः सामंतों के नाम जो सामंतों में सबसे अधिक मान्य थे।

कवित्त— निढ्ढुर सूर नरिंद । कन्ह चहुआन सपूरं ॥
जिपड़ जैत जैसिंघ । सलष पावारति सूरं ॥
जामदेव जद्दव जुवान । भारथ्थ पत्ति सिर ॥
बर रघुबंसी राम । द्रग्ग महिं कौन तास बर ॥
बर बीर्य रक्त [2]पच्छै सुनिय । रुधिर बूंद कदल परहि ॥
मधि मद्धि मुहूरत इक्क बर । अरि बर पन रुंधहि भिरहि ॥छं० ६२ ॥

उक्त छः सामंतों का पराक्रम वर्णन।

सौ सामंत प्रमान । [3]उग्गि अंकूर बीर रस ॥
सद्धि भली नकपत्त । अंग लग्गे सुभत तस ॥
[3]राजस तम सातुक्क । साष अग्गे अधिकारिय ॥
जथ्थ कथ्थ आरुहिय । रत्ति ढिल्लीपति धारिय ॥
जंगलू देस जंगल न्रपति । जग लेवै बर सूर षट ॥
पुरसान षान उप्पर चढ़िय । बर बीर रस बीर पट ॥ छं० ६३ ॥

सामंतों का जैचंदपर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना।

अनल दंग अरि लग्गि । उग्गि अगिवान बीर रस ॥
सामंता सतभाव । पंग उप्पर कीजै कस ॥
पंच घटी सौ कोस । राज अग्गं ढिल्ली तंह ॥
साम दान अरु भेद । दंड निर्नय [5]साधौ जंह ॥
मन बच क्रम कहू कहू कल्यौ । अलप न सुर सह्य सुघट ॥
दुजराज संधि गुरराज कौ । सद्धि महूरत चट्टिपट ॥ छं० ६४ ॥

प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था।

त्रोटक प्रति प्रीति प्रत्य प्रतिबिंब नृपं । ससि राज इकं प्रति ब्यंब पथं ॥
प्रतिब्यंबहु मझ्झ इकंत उभै । चहुआनरु सामंत मर सुभै ॥ छं० ६५ ॥
दिस राकय अर्कय थान बियौ । तम भजित तेज सु राज लियौ ॥
सोइ लच्छि हयग्गय मंत धुली । रवि की किरनावलि तेज डुली ॥ छं०६६ ॥

---

१. ए० कृ० को०–मोह।   २. ए० कृ० को०–परै।
३. ए० कृ० को०– "रौद्र भयानकं रस"
४. मो०– राजत।   ५. मो०साधै।

पर पष्षर स्याह तुरंग रनं । सु मनों घन सोभत नैर तनं ॥
सु बिचें बिच राजत राज रती । सु मनों प्रतिबिंब क्रिदेव किती ॥ छं०६७ ॥

पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मंत्र ठहरा ।

दूहा—इत्ते मंतन इक्क मुष । न्रप सेवक अरु इष्ट ॥
एक मंत्र एकह बुले । बियो न जंपै जिष्ट ॥ छं० ६८ ॥

चढ़ाई के लिये बैसाख सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सबका अपने अपने घर जाना ।

तिते सूर तिहि रति बर । ग्रेह सपत्तें बीर ॥
पंचमि बर बैसाष धुर । लैजु वचन ते धीर ॥ छं० ६९ ॥

मरने के लिये मुहूर्त साध कर सब बीरों का आनन्द में मतवाला होना ।

अरिल्ल—अप्प अप्प गय ग्रहे ससूरं । मरन महूरत मरन न पूरं ॥
चढ़े बीर चावद्दिसि रंगं । मनों [1]घलह लिय मेघ असंगं ॥ छं० ७० ॥

प्रातः काल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़कर जुड़ना ।

दूहा - मेघ पंति वद्दल विषम । बल दंतिय सजि सूर ॥
चढ़ि जिहाज पर दिष्षियै । धर नहिं परै करूर ॥ छं० ७१ ॥
धरनीधर तिय गुननि बर । लिय कारन परिमान ॥
सूर उगै सत यत्र ज्यौ । ज्यों भद्दव बल भान ॥ छं० ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन ।

त्रोटक—सुअं बर बीर सु त्रोटक छंद । छिनी छिति मत्त हयग्गय इंद ॥
रनं किय बीर नफीर रवद्द । ढलक्किय ढाल सु ढिल्लिय भद्द ॥ छं० ७३ ॥
घनं किय सक्कर अंदुन अंद । जग्यौ मनु भारत बीरय कंद ॥
छिनी छितिपूर हयग्गय भार।दिसो दिसि दिष्षहि ज्यौ जल धार ॥छं० ७४॥
डरै दिगपाल सु अट्ठय मेर । भये भयभीत भयानक भेर ॥
सुनै स्तुति छत्रिय सद्द निमान । दिसा पुरमान सु बद्दहम पान ॥ छं० ७५ ॥
मंडे मय मत्त [2]गहुम्महराज । उठै वर अंकुर मुच्छ विराज ॥
कहै कबिचंद सु उप्पम ताहि । मनों सुर लग्गिय चंद कलाहि ॥ छं० ७६ ॥
[3]अपं प्रथिराज समप्पय बाज । तिनें दिषि पंतिय प्रब्बत लाज ॥
दुअं दुअ बंधि रकेबन जोर । चढ़े बर छत्रिय सूर झकोर ॥ छं० ७७ ॥
हयद्दल पंति सुभंतिय ठांनि । मनों बगपंति घनी घट बांनि ॥
मयं मय रुद्र सु रुद्दर सार । भयो जनु अंत प्रलै दुति वार ॥ छं० ७८ ॥

१. ए० कृ० को०-घहह । २. मो०-गहुम्मग ।
३. कृ० को०-अपं ।

डहडुह बज्जय डक्कय मात । डलै तिन बीर गिरव्वर गात ॥
सु दिष्षन बांम फुरक्कय नैन । चढयौ जनु बीर परब्बत बैन ॥ छं० ७९ ॥
इमे दोउ बीर विराजत रिंष । गुफा इक मज्झ मनों दुअ सिंघ ॥
चले ग्रह छंडि ग्रहग्रह सूर । कही कविचंद सु उप्पम पूर ॥ छं० ८० ॥
कहै करुना रस कंतहि चीर । उठ्यौ तहां जित्त भयानक बीर ॥
लिषो लिष चित्रय दंपति बैन । मनों पलटै दिन चात्रिग नैन ॥ छं० ८१ ॥
छिता छिप होम प्रमान प्रमान । किधों चकई सुपमुक्कय मान ॥
भयो मन बीरन बीर प्रमान । भयौ करुना रस तीय प्रमान ॥ छं० ८२ ॥
दुहूं दिसि चित्त अचित्त अलोल । मनों दुअ पास हुलंत हिंडोल ॥
दोऊ मझ रष्षय सूर सनूर । भजै करुना रस काइर पूर ॥ छं० ८३ ॥
मिल्ले न्रिप आइ सु ढिल्लिय थान । कहै कविचंद बषान बषान ॥ छं० ८४ ॥

सामंतों की सर्प से उपमा वर्णन ।

दूहा –स्वामि ध्रम्म सों [1]सुद्ध मन । ज्यों [2]बांबी दिसि [3]सप्प ॥
ध्रग बिषांन ज्यों अरिन बर । जगि बीरा रस जप्प ॥ छं० ८५ ॥

सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त –जगति जग्य जनु बीर । जग्गि त्रयनेत अग्गि सिव ॥
कै मचकुंद प्रमान । गुफा बारुन सु देत्य लिव ॥
कै [4]जग्यौ भसमास । दैत्य भग्गा गोरीसं ॥
इसे सूर सामंत । बीर चावद्दिसि दीस ॥
दीनी न नृपति किन निरति बर । किहु न सुनी जैचद क्रम ॥
बग्गं उपारि धाए बलिय । अभिलाषह भारथ्थ श्रम ॥ ८६ ॥

शूर बीर सामंतों का उत्साह वर्णन ।

अभिलाषह श्रम गर्व । भयौ किल किंचित सूरं ॥
ज्यों नल मति दमयंत । सेन सज्जी रन पूर ॥
भवर सद्द सम सुमन । प्रेम रस छुट्टिय जग ॥
सुवर राज चहुआन । करन उप्पर बर पंगं ॥
माधुरत मधुर बानी तजी । रजिय सूर रंजित सुभर ॥
छिति मत्त [5]लितौ छित्रिय [6]छित्रिग । दिपति दीप दिवलोक धर ॥
॥ छं० ८७ ॥

१. ए० कृ० को०–जुद्ध । २. को०–बाबी ।
३. ए० कृ० को०–सपे । ४. ए० कृ० को०–जग्गा ।
५. ए० कृ० को–छित्त । ६. मो०–छिपय ।

फौज की शोभा वर्णन।

मोतीदाम—दसं दिसि पूरग [1]मत्तय भार। चढ़यो जनु इंद्र धनुष्षय धार॥
तुरंगन तुंग हरष्षय ईस। षरक्किय नारद सारद रीस॥ छं० ८८॥
छहंमित छोहय शंकर हथ्थ। कहै कबिचंद सु ओपम कथ्थ॥
गए गजनेस सुसथ्थय बीर। रहै लगि भौर तिनै लगि नीर॥ छं० ८९॥
मनों कुत कुंतय बारय षुल्लि। गए मनु आरद शकर भुल्लि॥
करुना रस केलि क्रमीनह बीर। नच्यौ अदबुद्द स रुद्र डकीर॥ छं० ९०॥
इकं इक रस्स सु संतिय सूर। दिषे मुख मत्त महा मति नूर॥
सुलतानरु हिंदुअ बैर प्रमान। सुभादय जुद्ध निदान निदान॥ छं० ९१॥
दया बर हीन सगप्पन नथ्थि। ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···॥
उमा क्रत काज प्रजापति दच्छि। तज्यौ नन मात उरग्गिय लच्छि॥छं०९२॥
षिझे सिर ईस पटक्किय जट्ट। भयो तहां जन्म सु बीरय भट्ट॥
भिरी भिरि नंदिय दंद प्रकार। पछं दछि दच्छिय दष्षि डचार॥ छं० ९३॥
इतं मिति मंत सु कंतिय राज। भयो बर बीर भयानक साज॥
दिसो दिसि पच्छिम हिंदुअ मेछ। बज्यौ रनतूर रवद्दय एछ॥ छं० ९४॥
मली जनु जंगम जो गवरीस। दसकंधु डुलावत प्रब्बत रीस॥
तज्यौ उहां मान लगी पिय कंध। नयौ रस संत सु मंतिय संघ॥ छं० ९५॥
सु जाति जरा नृप हक्कि प्रमान। चढ़यो तिन बेर बली चहुआन॥छं० ९६॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीबद्ध करना।

कबित्त—चाहुआन बर बलिय। भार भारथ रस भिन्नौ॥
मधुर सुघर सिंधुरस। अंग चावद्दिसि छिन्नौ॥
सुबर सेन सामंत। सुबर बल बीर निनारे॥
मझ मझ्झह आवृत। देव जनु जुद्ध हकारे॥
कुसमिस्त जुद्ध देवह करन। रथ सुरत्थ हय हयति नर॥
सामंत सूर पुज्जे नहीं। बर कंदल [2]उठ्ठंति धर॥ छं० ९७॥

सामंतों की बीरता का वर्णन।

उरग विंद रवि उठे। सीस हक्कै धर नंचै॥
देवासुर संग्राम। देव पूजा देवंचै॥
इंद्र जुद्ध तारकक। सोइ तत्तह अधिकारी॥
पंच पंच पंडव सु। भीम दुर्जोधन भारी॥
गज मंत दंत कट्टै सु भ्रत। दैवत्त जुध सामंत रत॥
उद्दयो जुद्ध आवृत मिति। नहिन मेच्छ हिंन्दू छपन॥ छं० ९८॥

---

1. ए० कृ० को०—मध्यय। 2. मो०—उठंति।

युद्ध के लिये प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित निड्डुर का वीर-मत वर्णन।

मिले सूर सामंत मत मज्जिय निड्डुर बर ॥
कहां सु प्रान संग्रहै। पंच किहि जाइ मिलै घर ॥
कोन क्रम्म संग्रहै। क्रम्म को करे सु देहं ॥
कोन जीव संग्रहै। कोन भ्रिमवै सु छेहं ॥
जैचंद आनि सुरतान बर। अधर राहु लग्यो अवर ॥
षिन मत्ति दान दिय विप्र बर।रहसि राह लग्यो सु घर। छं० ९९॥

कह निड्डुर रट्ठौर। सुनहु सामंत प्रकारं ॥
कहौ देव को ध्रम्म। किति संग्रहौ सु सारं ॥
बारि बूंद बुदबुद्द। हत्थ वारी सु आव इत ॥
ज्यों बद्दलवै छांहि। घास अग्गी सु मत्ति भ्रिति ॥
इत्तनिय देह की गत्ति वर। तीय ठाम चिंतै सु नर ॥
मस्सान पुरान रु काम के। अंत चित्त सदगत्ति घर ॥ छं० १००॥

अंत मत्ति सो गत्ति। अंतजा मत्ति अमत्तिय ॥
पुब्ब ध्रम्म संग्रहै। पुब्ब गत्तिय सुइ गत्तिय ॥
देव भाव संग्रहै। काल केवल गुन वत्तिय ॥
सिंचिये वेलि जंजं बधै। तंतं बुद्धि पुरान बर ॥
भ्रिघ्घात घात पत्तिय सु वर।सु बृत काल निब्बरि सु नर।।छं०१०१॥

स्वामि निंद जिन सुनो। स्वामि निंदा न प्रगासो ॥
अह निसि वंछौ मरन। भीर संकरें निवासो ॥
तब बुल्यौ महनंग। छड्डि इह मंत्र सस्त्रगह ॥
अस्ति काज दद्धीचि। दिए सुरपत्त मत्त बहु ॥
सुरपत्ति मत्त किन्नो सु बर। निवर अंग को अंग मय ॥
जैचंद भूमि उब्बैलि कैं। चढ़हु भूमि घर सुर्ग मय ॥ छं० १०२ ॥

गाथा- के के न गया गुर ग्रेहं। के के न काल संग्रहे हंतं ॥
मंत्री जा प्रथिराजं। रघ्घे जा वीर सो सस्त्रं ॥ छं० १०३ ॥

साटक- जाता जा मनसा समस्त गुरयं, मानस्थ ग्गा सुंदरी ॥
[1]ता भग्गा मन सूर काइर बरं, [2]किल किंचि किंचित रसै ॥
अभिलाषं छिति गर्व ताडन विधे, संसार सहकारयं ॥

---

1. मो०—ना। 2. ए० कृ० को०—ल।

बारं आ पारंग दिव्यत गुरं, दीसंति देवानयं ॥ छं० १०४ ॥

घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन ।

भुजंगी--प्रवाहंत वाहं उचारै पवंगा । तिनै धावतें होइ मारुत्त पंगा ॥
झमै झुंम अग्गै सुमं तीन संधे । मनों ब्रह्म विधि गंठि लै वाइ बंधै ॥छं०१०५॥
पुजै पंष अंषी मनं षीन धावै । तिनं उप्पमा कौन कविचंद लावै ॥
किधौं कैसपष्षं चलै चित्त भारी।किधौ चक्करी हथ्थ 'आवत्त तारी ॥१०६॥
किधो वाय छुट्टै नहीं चाइ पावै । म्रगंराज कैसे उपम्माति लावै ॥
अर्गपाइ दीसे मुषं मेह कारे । मनों दिव्य वानी पढै कव्वि भारे ॥ छं० १०७॥
धरे पाइ बाजी दुढंतं निभारे । मनों तार सौं तार बज्जै हकारे ॥
तिनं दूरि तें अंग ओपंम ऐसे । मनों तार छुट्टै अकासं सु जैसे ॥ छं० १०८ ॥
इसे बाजि सज्जे समप्पेति राजं । दिषै सूर सामंत हथ्थें सुपाजं ॥ छं० १०९ ।

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना ।

दूहा—बाज राज नृप 'राज दिय । बिलसि विधान विधान ॥
तिन उप्पम कबिचंद कहि । का दिज्जै धपबान ॥ छं० ११० ॥

घोड़ो की शोभा वर्णन ।

रसावला—
धपै बान भारे, हकारे निनारे।दुरे अप्प छाया, तते अग्गि ताया ॥छं० १११॥
धबै 'अंठ भारी, मुक्रोटं निनारी । बरं नैन ऐसें, हरी देव जैसें ॥ छं० ११२ ॥
महा मत्त ग्रीवा, विना वाइ दे वा । उरं पुठ्ठ भारी, 'सु मासं निनारी ॥११३॥
तुला जानि षंभं, पला जानि अंभं । नष झंड इद्दं, मनो झंड सिद्धं ॥छं०११४॥
द्रुमं वीर डुल्लै, कवी किंत्ति पुल्लै।मनों वाय कांडं, परी मझ्झ होडं ।छं०११५॥
कचोलंत नीरं, पिय वाज जीरं।अवत्तें निनारे, मनों स्वामि सारे ।।छं० ११६॥
इसे राज राजी, दिए वाज राजी । सु द्वै द्वै रकेबं, चढ़े बीर बेबं ॥
सुरत्तान पासं, चढ्यो बीर भासं । ... ... ॥ छं० ११७ ॥

शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा ।

दूहा- बिना हेत सगपन बिना । इष्टपना बिन राज ॥
धन्नि राज प्रथिराज को । षग गोरी किय साज ॥ छं० ११८ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना ।

कवित्त- चल गोरी सुरतान । जाइ रुंध्या रन अग्गै ॥
हय गय रथ नर सज्जि । बीर पावस घट जग्गै ॥
महन रंभ अग्गरंभ । रत्त अरुनोदय ढारिय ॥
चाहुआन सुरतान । बीर जंपत्त करारिय ॥

---

१ ए० कृ० को०—दीसंत । २. ए० गज ।
३. मो०—अम्बु । ४. मो०—समसं । ५. ए० कृ० को०—बेबं ।

डमरु डहकिक जुग्गिनि हंसै । जिम जिम बंबर ब्रज लसै ॥
सामंत सूर चहुआन सों । बीर बिदुरि सस्त्रह कमै ॥ छं० ११९ ॥

राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना ।

मेछ मसूरति सत्ति । मत्ति कीनी रत भारी ॥
वीरा रस बिद्दुरिय । लोह लग्गी अधिकारी ॥
छित्ति भित्ति छिति सोभ । अंषि आवै न अंषि षिन ॥
ज्यां नद्दव वन दिष्ट । चपि चूवंत मंत घन ॥
रन हरषि वरच्छिय मुक्ति जिहि । घप्पि लोह कोहां करसि ॥
चावंडराइ दाहर तनो । न्रप अग्या विन अग्र ध्रसि ॥ छं० १२० ॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानबाहु का पांच कोस आगे बढ़
कर तत्तार खां खुरसान खां पर आक्रमण करना ।

रा चावंड जैतसी । लोह आजानबाह बर ॥
रष्षे रन सुरतान । [1]मत्त अग्गे सुबीर भर ॥
पंच कोस न्रप छड्डि । आप रुंध्या सुरतानं ॥
वज्ज घाट वज्जीय । आइ लग्गा सु विहानं ॥
छुट्टा कि सिंघ पल काज वर । उरसि लोह लग्गा लरन ॥
तत्तार षान षुरसानपति । अप्प मसूरति मरन मन ॥ छं० १२१ ॥

उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुसलमानों का कमान पर
बाण चढ़ाकर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना ।

भुजंगी - षुरासान षानं सु तत्तार बीरं । मनों वज्र देष सु वज्रं सरीरं ॥
महा बाहु बज्जी कढ़े बज्र हथ्थें । लगे अंग अगं निरथ्थे निरथ्थें ॥छं० १२२॥
छुल्लिक्का सु बानं कमानेन साही । इसे सूर बेगं चलंलै [2]त्रिबाही ॥
उरं मत्त मत्ते विमत्ते निनारे । मनौं देषियै बीर रत्ते प्रकारे ॥ छं० १२३ ॥
उरं काल काली जमंदड्ढ कड्ढी । किधौ दंड्ढ जम दड्ढु जम कर विडड्ढी॥
उरं मत मत विमत्तं सु मत्ती । परे रंग चंगं छके जानि गत्ती ॥ छं० १२४ ॥
दुवं हिंदु मेच्छं तसब्बीति नंषी । सरै सट्ठि हज्जार आवृत लष्षी ॥
तिनें हथ्थ हथ्थं मुकत्तो प्रमानं । मनों देषि देवंत देवाधि थानं ॥ छं० १२५ ॥
विन्रं विद्धि रूपं प्रमानंत न्यारे । भए अंग अंगं तहीं तथ्य सारे ॥
नचै कंध्र बंध्रं कबंध्रं दुरंगी । मनों बीर आवृत भारथ्थ रंगी ॥ छं० १२६ ॥ -
इनो जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे।घुमं सार घुम्मैं मनो मतवारे॥छं० १२७॥

---

1. मो०—मनह ।
2. मो०—नैनिबाही ।

पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जयचंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन का राह छेकना।

*दूहा—चल्यौ राज सब सेन सजि। दिसि उज्जनिय रंग ॥
आइ साहि जग हजूरन। लयै सहायक पंग ॥ छं० १२८ ॥
गही गैल देवास की। गहन उपज्ज्यौ मिच्छ ॥
नर चित्तन इच्छै कछू। ईसर औरै इच्छ ॥ छं० १२९ ॥

मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है।

कवित्त— नर करनी कछु और। करै करता कछु औरै ॥
नर चिंतन कर ईस। जिय सु नर औरै दौरै ॥
रचे रचन नर कोटि। जोरि जम पाइ बस्त सह ॥
छिनक मध्य हर हरै। केल फिर तष्ष क्रम्म इह ॥
प्रथिराज गमन देवास दिसि। व्याह विनोद सु मंडि जिय ॥
अनचित्ति जग्गि गजन्न बलिय। आनि उतंग सु कंक किय ॥
॥ छं० १३० ॥

पृथ्वीराज का राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन।

ज्यों बावन बलि पास। आनि अनचित्य छलन किय ॥
उन धर ले उन [1]दीन। [2]इन सु सुर बंधि छंडि जिय ॥
दसों दिसा दल उमड़ि। घुमड़ि घनघोर आइ जनु ॥
मीर मसंद ससंद। बान बहु बूंद बरषि घन ॥
दोउ दीन दंद दनु देव सम। भ्रम लग्गे लग्गे लरन ॥
प्रलैकाल हाल पिष्षिय निजरि। मनों मित्र वृत्ती करन ॥ छं० १३१ ॥

युद्ध प्रारंभ होना।

रसावला—

कोह लग्गे षलं, सार उड्डै पलं। अंत तुट्टै रुलं, पग्ग बेली [illegible]लं ॥ छं० १३२ ॥
नैन रत्ते झलं, जुट्टि जाल षलं। मिट्टि मोहै मलं, कोह कै केवलं ॥ छं० १३३ ॥
रुंड नच्चै दलं, मुंड बक्कै बलं। गिद्धि सिद्धी कलं, बज्जि कोलाहलं ॥ छं० १३४ ॥
छिछ उड्डै ललं, जानि तिंदू झलं। हथ्थ तुट्टै नलं, वृष्ष साषा ढलं ॥ छं० १३५ ॥
पंष पंषी बलं, ईस आसावरं। माल सोभै गरं, रुद्धि बुंदै झरं ॥ छं० १३६ ॥
आनि नग्गं परं, चढि पत्र [3]भरं। मंति डक्क डरं, भूत नच्चै घरं ॥ छं० १३७ ॥
उब्भयं चिक्करं, बक्कि नैरु रुरं। कपि स्यारंनरं, सूर बढ्ढै बरं ॥ छं० १३८ ॥
झार झारै करं, ... ॥ छं० १३९ ॥

*मो०-प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है।
१. ए० कृ० को०—दीय। २. ए० कृ० को०—दन सुरन बंधि छंडिय प्रिय।
३. ए० कृ० को०—बरं। ४. ए० कृ० को०—मंत्रि।

स्वामिधर्म रत शूर बीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे।

दूहा—सार मंत मत्ते सुभट। षग ढिल्लै गज ठट्ट॥
स्वामि ध्रम्म सद्धै रनह। मुकति सु झारै वट्ट॥ छं० १४०॥

दोनों ओर के शूर बीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन।

कवित्त- कोह छोह रस पान। बीर मत्ते चावद्दिसि॥
बलि उतंग सजि जंग। अंग जनु पंग कप्पि जिमि॥
हय दल बल उछ्छार। कढ्ढि गज दंत नडारै॥
ज्नु माली महि मध्य। कठ्ठि मूला करि धारै॥
भय सीतभीत काइर कपहि। बहुत सूर मामंत रिन॥
कलि कहर कंक बक्कहि विहसि। गहन गोम मत्तौ महन॥छं०१४१॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अतत्ताई की बीरता और उनके पराक्रम से मुस्लमानों की फौज का विचलाना, हासब खां खुरसान खां का मारा जाना।

भुजंगी—परी भीर मेच्छं [1]तसब्बी तनष्षं। कले कंक बक हीन जीवं मु लष्षं॥
षलं कंन्ह गोइंद कोका प्रमानं। मनो देषिये देवयं दुंद [2]थानं॥ छं० १४२॥
बढ़े बीर रूपं प्रमानं निनारै। अरी अग्ग चेतं न वित्तं धरारै॥
नचे कंध बंधं असंधं धरंगी। मनों बीर भारथ्थ आवृत्त रंगी॥ छं० १४३॥
लग्यो लंगरी लोह लंगा प्रमानं। षगे षेत षंड्यो षुरासान षानं॥
उड़ै अत्तताई हयं पाइ तेजं। दलं दिष्पिये पेट पष्षे करेजं॥ छं० १४४॥
हन्यो हासबं षान सीसं गुरज्जं। गयं उड्डि गेनं मु षोपरि पुरज्जं॥
इतो जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे। घुमे सार घुम्मे मनों मत्त वारे॥छं०१४५॥

दूहा - रत्त मत्तवारे सुभट। विधि विनान उनमान॥
तहन सुष्ष दुष्षं निजहि। मोह कोह रस पान॥ छं० १४६॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना। शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना।

कवित्त -मोह कोह रसपान। बीर मत्ते चावद्दिसि॥
तबल तुंग बजि जंग। बीर लग्गे सु बीर कसि॥
जा दिल्ली सुरतान। नैन बड़वानल धारी॥
प्रलय करन करवान। प्रलय इन षग्ग हकारी॥
सुभि लोह मोह अरुनय तनह। अति उदार चिन्हय रनह॥
प्रथिराज राज राजिंद गुर। गहन गज्जि लीनों पनह॥छं०१४७॥

१. मो—तसब्बीनि।
२. मो०—पार्थ।

युद्ध की पावस से उपमा वर्णन ।

साहन बाहन बिरद । साहु गोरी सयन्न सम ॥
हय गय दल बिच्छुरहि । रोस उच्छुरहि बीर भ्रम ॥
बज्जहि षग्ग आवृत्त । जूथ उड्डहि असमानं ॥
मनहु सिष गुर गज्ज । हुक्कि कारिय सिर भानं ॥
दल जोरी विहसि साहाब भर । भर भर भिरि असिबर बजिय ॥
जानेकि मेघ मत्ते दिसा।निसा नभ्भ विज्जुल [1]लसिय ॥छं०१४८॥

घोर युद्ध वर्णन ।

त्रोटक –इति तोटक छंद प्रमान धरं । सुनि नागकला तिहि कित्ति गुरं ॥
भिरि भारथ पारथ से उचरं । मय मंत कला कलि से बिहुरे ॥छं० १४९ ॥
रननंकय नागय बीर सुरं । मनों बीर जगावत बीर उरं ॥
छिति छत्र दुहाइय छत्र धरं । सु मनों बरबा हुवि बज्ज भरं ॥ छं० १५० ॥
छिति सोहत श्रोन अपुब्ब रनं । मनों भारत पूर चली सुभनं ॥
दोउ दीन विराजत दीन उभै । रँग रत्त रमै छिति छत्र सुभै ॥ छं० १५१ ॥
सुमनों मधु माधव रीति इलै । सुजनो कृत कंकर बीर फुलै ॥
इक अंग विमंगन हथ्थ चरै । सु मनों कल बीर कला दुसरै ॥ छं० १५२ ॥
मिति मत्त अवृत्तन धाइ घटं । सु नचै जनु पारथ बीर भटं ॥ छं० १५३ ॥
कवित्त बक्कि बीर भट सुभट । झुम्मि हुकै चावद्दिसि ।
इक्क इक्क आवृत्त । बीर बरषंत मंत असि ॥
मचि नारद किलकंत । जग्गि जुग्गनि हुक्कारिहि ॥
सार ताल वेताल । नंचि रन बीर डकारहि ॥
अंमरिय रहसि दल दुअ विहँसि । करसि बीर लग्गे सु बर ॥
चहुआन चान सुरतान दल।करहि केलि समरस अडर ॥छं०१५४॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन ।

नव बाजी नव हथ्थ । रथ्थ नव नवति सुभ्र भर ॥
इन बज्जै असि बरह । सार बुज्जै प्रहार धर ॥
केक अंत जमकंत । कढ़ढी जमदाढ़ निनारी ॥
मनु कढ़्ढी जम दढ्ढ । हथ्थ सामंत सुभारी ॥
चालुक्क चंपि बब्बर कियो । सार धार सम उत्तऱ्यो ॥
इह करी कोइ करि है न कोइ।करो सु कोगुन बिस्तऱ्यो॥छं०१५५॥
दूहा :–जंमति जमकिय जंम सम । जम प्रमना दोउ सेन ॥
मिले बीर उत्तर दिसा । आवृतह तिन नैन ॥ छं० १५६ ॥

---

[1] ए० मो०–लजिय ।

कामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त—अद्ध कोस नूर अग्ग। सूर रोपे पग गड्डै॥
सद्द मद्द गजराज। चंडि पढ्ढै बल चड्डै॥
लज्ज बंध संकरिय। वीर अंकुरिय दिष्ट रन॥
सार धार बज्जी कपाट। निघात घुमत रन॥
कलमलिय कंक इम मिच्छ सह। जनु लुअ लग्गत जेठ महि॥
जद्दव सु जाम धरि इक्कलों। जनु बडवानल चंद कहि॥छं०१५७॥

गाथा - दिष्षे पुष्षय मच्छरयं। अरज दुवं सग्राम श्रवनयं॥
अछ्छरि वर कर इच्छं। भ्रमत [1]फिरंत [2]गौन मग्गाइं॥ छं०१५८॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना।

कवित्त मोरव्यूह रचि राज। सज्जि सब सेन सुद्ध करि॥
चंच पीप परिहार। कन्ह गोइंद नयन सरि॥
कंठ चंद पुंडीर। पांव जुग जैत सलष सजि॥
निढ्ढुर भर बलिभद्र। पंष बजि बाय तेज गति॥
सम पुंछ और और सम पुंछ मन। बरन बरन छबि सिलह तन॥
रन रोहि रह्यौ प्रथिराज महि। गिलन श्रप्प सुरतान रिन॥छं० १५९॥

गाथा —मुछ्छीजं वर मछ्छरं। तं वटे अछरी अंगं॥
सोयं साध्र प्रमानं। सा पूजी सूर सामंतं॥ छं० १६०॥

न्याजी खां, तत्तार खां और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हरावल सम्हालना।

कवित्त— कर बल षान ततार। षान न्याजी षां गोरी॥
हरवल [3]पीप नरिंद। माहि बधी बिय जोरी॥
मोरव्यूह चहुआन। मार धारह संधारै॥
गिलन अप्प सुरतान। बोल बड्डा उच्चारै॥
कृत अकृत सीस धारन भिरवि। जै जै जै चारन सु धुअ॥
सुरतान सूर आवृत्त वर। धन्नि सुबर सामंत भुअ॥ छं० १६१॥
तन तरफत धर मिच्छ। वला छबि आनि नटक्कें॥
मत्त दन्ति आरुहैं। दंत सौ दंत कटक्कें॥
समर अमर करि बंदि। भये विस्मत पल[4] चारिय॥
जहँ तहँ चंद पुंडीर। चंद ज्यौं रैनि उजारिय॥

---

1 ए०—फरत। 2. ए० कृ० को०—गैन।
3. ए० कृ० को —अप्प। 4. ए० कृ० को हारिय।

तन ग्रेह नेह मन अंत सम । भ्रम छंडयौ दल दलि सुभर ॥
संभरिय सूर सुरतान दल । महुन रंभ मच्चौ सु [1]धर॥छं०१६२॥

युद्ध होते होते रात्रि हो जाना ।

हनूफाल इति हनूफालय छंद । कल विकल कल कृत चंद ॥
भय निसा उदित प्रमान । चहुआन सेन सुथान ॥ छं० १६२ ॥
कर हथ्थ बथ्थन थाक । मनों मंडि बंधि चिराक ॥ छं० १६४ ॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना ।

कवित्त करि चिराक छह सहस । सेन उभ्भै चावद्दिस ॥
रतिवाह सम जुद्ध । बीर धावंत बीर रस ॥
तेज चिराक रु सम्त्र । रत्त द्रिग तेज प्रमानं ॥
सार धार निरधार । बेद छेदन गुन जानं ॥
सारूक करक्के रं5 पल । निसा जुद्ध किन्नौ न किहिं ॥
सामंत सूर इम उच्चरें । सुबर बीर भारथ्थ नहिं ॥ छं० १६५ ॥

आधी रात हो जाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन पर आक्रमण करना और मुसलमान फौज का पैर उखड़ना ।

अद्ध होत बर रत्ति । साहि गोरी धररुंध्यो ॥
तोंअर बर पाहार । कित्ति सा सिंधुह संध्यो ॥
सेत बंध बंध्योति । सूर बंध्यो रिन पाजं ॥
जै जै जै उच्चार । धन्नि सामंत सु लाजं ॥
सुरतान सेन भग्गा सुभर । तीन बान पुंजान गय ॥
गज घंट न घंट न मत्त सुनि।सुनि जंपे बर हयति हय ॥छं०१६६॥

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना ।

दोत होत मध्यान । पीप नें पन मन मंडयो ॥
प्रबल पानि परचंड । साहि गोरी गहि बंध्यो ॥
सेत बंधि ज्यो राम । चंद सुर भान सूर सधि ॥
यों लिन्नों परिहार । बालि दस कंध कंष मधि ॥
रन छंडि हुंडि धर मच्छि हुअ।लाजवंत कै फिरि भरिय ॥
जय जय सु जंपें सुष धर अमर।सु मविचंद कवितह भरिय॥छं०१६७॥

प्रसंगराय खीची, पज्जूनराय के पुत्र, बीरभान, आमदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना ।

भुजंगी –
पर्यौ राव तिन वेर खीची प्रसंगं । जिने षड्यिं पिसवल षग्ग अंगं ॥
पर्यौ राव पज्जून पुत्रंति राजं । गयं सुग्ग लोगं करे देव गाजं ॥ छं० १६८ ॥

---

१ ए० कृ० को०–भर ।

धुक्यौ धार धक्कै अजमेर राई । दुअं सेन जंपी मुषं क्रित्ति चाई ॥
बधं आमदेवं बधों बीरभानं । लरी अच्छरी मज्झ बीरं बरानं ॥ छं० १६९ ॥
पर्यौ धाइ षेतं अतताइ तातं । मनो देषियै भूमि कंदर्प गातं ॥
पर्यौ सेन हुज्जाब गोरीस बंधं । हयं अट्ठ भग्गे मु उठ्ठे कमंधं ॥ छं० १७० ॥
परे ताहि दीनै परे साहि भारे । दिषे यान थानं मिळं प्रात तारे ॥ छं०१७१॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना ।

दूहा इन परंत सुरतान गहि । ग्रह निग्रह घट बीर ॥
तिन जस जंपत का कबी । जिन करि जज्जर श्रीर ॥ छं० १७२ ॥

कवित्त -जज्जर पंजर प्रान । साहि गोरी गहि बध्यौ ॥
बिन सेवा बिन दान । पान पग्गह षल संध्यौ ॥
फिरि ग्रह पत्तौ राज । लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
डोला तेरह तीस । मद्धि साहाब सुभत्तिय ॥
ग्रह गयौ लियैं सुरतान सँग । जै जै जै जस लद्धयौ ॥
जयचंद कनाइत चिंति जिय । मान प्रसंसन सिद्धयौ ॥ छं०१७३ ॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन ।

कवित्त -मान भंजि सुरतान । मान भंज्यौ सुरतानं ॥
उन उप्पर नन कियौ । हुनौ वर बैर निदानं ॥
पंग लज्ज उच्चरै । सुनौ मंत्री अधिकारिय ॥
करिय षेत चहुआन । इद पहुं पथह वारिय ॥
मुह मुच्छ सुच्छ सोमेस सुअ । ध्रुअ समान सनरि धनिय ॥
पद्धरै दीह जस चद्दुई । धर पद्धर करि अप्पनिय ॥ छं० १७४ ॥

दूहा -धन्य राज अवसान मन । रन संध्यौ सुरतान ॥
लच्छि लई चतुरंग जित्ति । बर बज्जे नीसान ॥ छं० १७५ ॥

कवित्त -छत्र मुजीक निसान । जीति लीने सुरतानं ॥
गो घर ढिल्लिय ईस । बज्जि निरघात निसानं ॥
दिसा दिसा जय क्रित्ति । जित्ति गावै प्रथिराजं ॥
बाल वृद्ध भर जुवन । जंग जंपै धनि लाजं ॥
सा ध्रम्म धारि छत्री नृपति।दिपति दीप भुअलोक पति ॥
पुज्जै न कोइ सुरतान कों । मुष अयस पारध्थ गति ॥ छं०१७६ ॥

दूहा -हालाहल विसे सुभर । कोलाहल अरि गान ॥
सुबर राज प्रथिराज कौं । तपय बीर बहु जान ॥ छं० १७७ ॥

सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन।

कवित्त — छंडिदियौ सुरतान। सुजस पहु पीप मंडि सिर ॥
जित्ति जंग राजान। इच्छि पूजा इच्छी थिर ॥
भूमिय मिलि इक आइ। इक्क बंधे बस किज्जिय ॥
इक्क अप्प पहराइ। मान भजि रूमन दिज्जय ॥
आवै [1]न पार लच्छी सहज। षट्ट बरन सुष्षहू रगन ॥
चहुआन सूर संभरि धनी। तपै तेज सोमह सुअन ॥ छं० १७८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके मोरव्यूह
पीपा पातिसाह ग्रहनं नाम एकतीसमो
प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ३१ ॥



1. ए० कृ० को०—अपार।

अथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते।

(बत्तीसवां समय)

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना।

दूहा —[1]कितक दिवस बित्ते न्रप्रति। मारंगोगुर साज॥
धर मालव मंड्यौ नृपति। आषेटक प्रथिराज॥ छं० १॥

पृथ्वीराज का ६४ सामंतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना।

कवित्त— चौअग्गानी सट्ठि। सूर सामंत सु मथ्थं॥
मालव धर प्रथिराज। सज्जि आषेटक तथ्थं॥
बर उज्जेनी राव। जीति पांवार सु भीमं॥
वल संमर जो गट्ट। गाहि चहुआंन [2]जु सीमं॥
सगपन सु जोनि संभरि धनिय। ग्रहन जोंग सम बर न्रपति॥
संभाग समर सुनयौ समर। समर बीर मंडन दिपति॥ छं० २॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना।

दूहा —सुबर बीर चिंतै न्रपति। बद बरनी दुति काज॥
बर इंद्रावति सुंदरी। बरन तकै प्रथिराज॥ छं० ३॥

इन्द्रावती की छवि वर्णन।

कवित्त इंद सुंदरी नाम। बीय इंद्रावति मोहै॥
वर समुंद पांवार। धरिग अति सम सग लोभै॥
मनमथ मथन नरिंद। हाइ करि भाइह गाढ़ी॥
[4]रूप तरंग अंकुरित। तुंग दोऊ करि काढ़ी॥
ज्यों छिति्त काम जप्यो परित। अति सुदेह न्रिम्मल झलकि॥
संकुच सु काम कर [5]कलिय तिहि। [6]रिपु सुदेखि आयो ललकि॥ छं०४॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना।

दूहा—श्रीफल दुजबर हथ्थ करि। दैन गयौ चहुआन॥
दिन पंचमि बर भोम दिन। लगन [7]करै परमान॥ छं० ५॥

---

१. कृ० ए० को०—कितेक, केनेन, फितेक। २. मो०—जु।
३. मो०—सुसीमं। ४ ए० कृ० को०—रुअत अंग, अंग।
५. मो०—कर लीप। ६. ए० कृ० को०—फेरिपुं देख। ७. मो०—करइ।

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना।

दुज पुच्छै आतुर न्रपति। किहि वय किहि उनहार॥
किहि लच्छिनमति कौन [1]विधि। कहि कहि सुमति विचार॥छं०६॥

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना।

कुंडलिया -बय लच्छन अरु रूप गुन। कहत न बनै सु बाम॥
सारद मुष उच्चारती। साषि भरै जो कांम॥
साषि भरै जो काम। कहै सारद मुष अप्पन॥
साषि चित्त नन [3]धरै। कहिय दिष्षियं सु अप्पन॥
बलि सरूप सज्जी मदन। सुभ सागर गुर मेव॥
सो सज्जिय भज्जिय दिवह। तकि प्रथिराज बलेव॥ छं० ७॥

ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना।

दूहा -बाल सुनत प्रथिराज गुन। [4]ढुरि ढुरि श्रवन सुहित्त॥
जिम जिम दुजबर उच्चरत। तन मन तिम तिम रत्त॥ छं० ८॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन।

हनूफाल—सुनि प्रथम बालिय रूप। बर बाल लच्छन [5]नूप॥
अहि संधि सैसव पाल। अजु अरक राका हाल॥ छं० ९॥
सैसब सु सूर समान। बय चंद [6]चढुन प्रमान॥
सैसद्ध जीवन एल। ज्यों पंथ पंथी मेल॥ छं० १०॥
परि भोंह भँवर प्रमान। वै बुद्धि अच्छरि आन॥
द्रिग स्याम सेत सुभाग। सात्रक्क अग्ग छुटि बाग॥ छं० ११॥
बिय द्रिगन ओपन कोड़। भिस भ्रंग षंजन होड़॥
बर बरन नासिक राज। मनि जोति दीपक लाज॥ छं १२॥
गति सिषा पतँग नसाव। ओपंम दे कवि आव॥
नासिक्क दीपन साल। झँप देत षंजन बाल॥ छं० १३॥
बिय बाल जोवन सेव। ज्वों दंपती हुबलेव॥
वैसंधि संधि अचिंद। ज्यौं मत्त जुरहि गुविंद॥ छं० १४॥
* कहि ओपमा कविचंद। ... ...॥
तुछ रोम राजि विसाल। मनों अग्नि उग्गिय बाल॥ छं० १५॥

---

१. ए०-बुध। २. ए० को०-किहि किहि।
३. ए० कृ० को०-भरै। ४. ए० कृ० को०-दुरि दुरि।
५. ए०-रूप। ६. मो०-चढ़त।
* यह पंक्ति मो०-प्रति के अतरिक्त अन्य किसी प्रति में नहीं है।

कुच तुच्छ तुच्छ समर । मनों काम फल अंकूर ॥
वय रूप ओपम एह । मनों कामद्रप्पन देह ॥ छं० १६ ॥
वर छिन्न थक्कत तेह । जा जनक नृप कर देह ॥
वैसंधि कविवर वधि । ज्यों वृद्ध बाल बिबंधि ॥ छं० १७ ॥
वैसंधि संधि [1]समान । ज्यों सूर ग्रहन प्रमान ॥
वै राह ससि गिलि सूर । चव ग्रहन मत्त करूर ॥ छं० १८ ॥
वर बाल वैसंधि एह । मिश्कार काम करेह ॥
लज करे लज लजि छंडि चित रंक दीन समडि ॥ छं० १९ ॥
कहां लगि कहों बर नाइ । तो जंम अंत मु जाइ ॥
फल हथ्थ लिय परवान । तप तुंग तो चहुआन ॥ छं २० ॥

उज्जैन में इन्द्रावती के ब्याह की जब तयारी हो रही थी उसी समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना ।

कवित्त- वर उज्जेनीराव । रंग वज्जे नीसानं ॥
इंद्रावति सुंदरी । वीर दीनी चहुआनं ॥
राज मंडि आषेट । समर कग्गार बर धाइय ॥
बर गुज्जरवें राव । चपि चित्तौरै आइय ॥
उत्तरे बीर प्रब्बन गुहा । धर पड्डर मेलान किय ॥
जोगिंदराव जग हथ्थ बर । गढ़ उत्तरि [2]किरपान लिय ॥छं०२१॥

पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना ।

दूहा छंडि बीर आषेट बर । गो मेलान नरिंद ॥
छंडि सूर सिंगार रस । मंडि वीर बर नंद ॥ छं० २२ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राव को अपना खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना ।

कवित्त- मतो मंडि चहुआन । सबै सामंत बुलाइय ॥
दै षंडो पज्जून । बीर उज्जेन चलाइय ॥
सथ्थ कन्ह चहुआन । सथ्थ बड़गुज्जर रामं ॥
सथ्थ चंदपुंडीर । सथ्थ दीनों नृप हामं ॥
आवृत अत्तताई सुबर । रा पज्जून सु मुक्कलिय ॥
मुक्कल्यो गोर निढ्ढुर सुबर । मुक्कलि जैसिंघ पष्षलिय ॥छं०२३॥

दूहा - मुक्कल्यो कविचंद सथ । [3]न्रिप मुक्कलि गुरराम ।
मुक्कल्यो कैमास सँग । दाहिम्मों बर ताम ॥ छं० २४ ॥

---

१. ए० कृ० को०—प्रमान । २. ए० कृ० को०—करषान ।
३. ए० कृ० को०—भनृप ।

सब सामंत सुसंग लै । ले चल्यो चहुआन ॥
बरनि चिन्ह उर सल्लई । कहिग कविय [1]बप्पान ॥ छं० २५ ॥

ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन

त्रोटक --प्रथिराज चढ्यो सिर छत्र उपं । ससि कोटि रवी ज्यों नछित्र तपं ॥
गजराज विराजत पंति घनं । घनघोरि घटा जिम गर्जि गनं ॥ छं० २६ ॥
हय पष्षर बष्षर तेज [2]तुनं । किननंकहि [3]धक्कहि सेस धुनं ।
सहनाइ नफेरिय भेरि नदं । घुरवान निसानन मेघ [4]भदं ॥ छं० २७ ॥
घन टोप सु ओप अनेक सरं । मनु भद्दव बीज उपंम धरं ॥
* किरवान कमानन तान करं । हथनारि हवाइ कुहक्क वरं ॥ छं० २८ ॥
सुजयं प्रथिराज सु सारथयं । दुतियं कहि भारथ पारथ यं ॥ छं० २९ ॥
मोतीदाम चढ्यो न्रप बीर अनंदिय चंद । सु मुत्तिवदाम पयं पय छंद ॥
दए न्रप कग्गद भृत्त सु इष्ट । मिले सब आइस जंग न रिष्ठ ॥ छं० ३० ॥
उड़ी घुर धूरि अछादिय भान । दिसा धरि अट्ठ न सुझ्झय [6]सान ॥
बजे घन सद्द निसान सुहद्द । लजे तिन सद्द समुद्दय रद्द ॥ छं० ३१ ।
[7]मुदे सतपत्र कमोदन घेरु । करे चतुरंगय संकिय मेरु ॥
द्रिगपाल पयाल पुरं सरसी । तिनकै बर कन्ह परे धुरसी ॥ छं० ३२ ॥
जु अनंदिय चंद निसाचर यों । किल कंपहि तुड जसं बर यों ॥
बिफुरे बर सूर चिहूं दिसि यों । डरपै सुर पत्ति उरं बसि यों छं० ३३ ॥
फन फूंक फनंपति को बिसरी । धरकें पय बज्जि घुरं दुसरी ॥
जु रहे रुकि चंपि धजा न धजं । तिनसों बर [8]पांति षगं उरझं ॥ छं० ३४ ॥
बर वज्जि तंद्दर तहां तवलं । निमु नंन नवीनय बंस बलं ॥
जु धरें बर गोर [9]उछंग हरं । सु कहै बर कंतिन कंपि डरं ॥ छं० ३५ ॥
जु बजावत [10]डोंरुअ डक्क सुरं । रन नंकहि जोग जुगाधि हरं ॥
सजियं चतुरंग [11]प्रथीपतियं । दुतियं कथि भारथ पारथयं ॥ छं० ३६ ॥

पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना ।

---

१. ए० बषान । २. ए० कृ० को०-मनं ।
३. मो०-तुमं । ४. ए०-धर्काहि । ५. मो०-नदं ।
* यह पंक्ति मो०-प्रति में नहीं है ।
६. मो०-भान । ७. ए० कृ० को०-मुदै ।
८ ए० कृ० को०-पंषिपते । ९. मो०-उबाग ।
१०. मो०-मोरे । ११. ए० कृ० को०-मंडहि बर ।

दूहा—सजी सेन प्रथिराज बर। बीर बरन चहुआन ॥
बरद मौर संमय मिल्यौ। चित्रंगी परधान ॥ छं० ३७ ॥
उत रावर सम्हौ मिल्यौ। चित्रंगी परधान ॥
कहौ समर रावल कहां। पुच्छि कुसल चहुआंन ॥ छं० ३८ ॥

कुंडलिया मिलत राज प्रथिराज बर। समर कुसल पुछि तौर ॥
कहां सेन चालुक्क की। कहां समरंगी बीर ॥
कहां समरंगी बीर। दियौ उत्तर परधानं ॥
करहेरा चित्रंग। राज आहुट्ठ प्रमानं ॥
गुज्जरवै गुरि 'जंम। हक्क उत्तर पद्धर चलि ॥
गढ़ इत्तें दस कोस। समर उभ्भो समरं मिलि ॥ छं० ३९ ॥

प्रधान का उत्तर देना।

कबित्त—कहि चित्र गिय मंत्रि। चंपि आयौ चालुक्कह ॥
तुम नन दीनो भेद। आइ मंडोवर चुक्कह ॥
चित्रंगी चतुरंग। आइ अड्डो करहेरां ॥
जुद्ध रुद्ध चालुक्क। हुए कोऊ दिन भेरां ॥
हम दैन खबर तुम मुक्कलिय। कहौं कहौ मुष मुष्ष रुष ॥
प्रथिराज राज अग्गे विवरि। कही वत्त परधान मुष ॥ छं० ४० ॥

पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूंगा।

नृप बुझ्झै चालुक्क। सेन कित्तक गरमान ॥
आइ ग्रह्यौ चित्रंग। निरत दीनी नन आन ॥
सूर सुवर आवृत्त। रति रष्षी विधि जानं ॥
इन अग्गं चालुक्क। बेर कित्ती भग्गानं ॥
जोगिंद राव जीयन बलिय। कलिय काल छप्पन बिरद ॥
समरंग बीर सम सिंघ बल। चपि लैन चालुक दुरद ॥ छं० ४१ ॥

पृथ्वीराज का आगे बढ़ना।

चौपाई—करि अग्गे लीनी परधानं। आतुर ही चल्यौ चहुआनं ॥
दे गढ़ दक्खिन तच्छिन आनं। समर सजन संमुह उठि धानं ॥ छं ४२ ॥

रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त— पावस रन प्रब्वाह। अम्भ छायौ छिति छाइय ॥
छित्री छिनि प्रमान। अब्भ बदरं उठि धांइय ॥

---

१. मो०—प्रति पत्रियां। २. ए० कृ० को०—जंग।

आलस [1]नींदय षीक्ष । सत्त राजस गहि तामस ॥
धर बुह रन मुत्तनह । करै उद्दिम रन हामस ॥
श्रंगार रंभ ग्रेहं नसह । औ कुलटा सुकबीय हुव ॥
कारक्ष किसि औ काल मिसि । द्रवै इंद्र सूरह सुलव ॥ छं० ४३

चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन ।

ज्यौं गुनाव गारड्ड । सेन चालुक मिसि साही ॥
विषम जोर फुंकयौ । सु फन ब्रह्मंडन वाही ॥
जीभ षग्ग जज्झारि । सेन सज्जे चतुरंगी ॥
बान मंत्र मने न । रमन कुंनन आवग्गी ॥
मन धीर बीर तामस तमसि । निधि चल्ले मन मध्य दिसि ॥
भोरा भुवंग भंजन भिरन । पुब्ब दई चितह सु बसि ॥ छं० ४४ ।

पृथ्वीराज की सेना की पारधि से उपमा वर्णन ।

यह संभरि चहुआन । बीर पारधि षरि आइय ॥
दुहुं निसान बजि समुह । भूमि पुर कपि हल्लाइय ॥
बीर सिंघ आहुट्ठ । बीर चालुक मुष साहिय ॥
पुच्छ मग्ग चहुआन । दुहुन बर बीर समाहिय ॥
उत्तरिय मनों सामुद्द तहि । उदित दीह मगल अरक ॥
जोगिंद जेम जोगिंद कसि । अष्ट कुली बंछे मुरक ॥ छं० ४५ ॥

चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना ।

दुहा – चालुक्कां चहुआन दल । भई सनाह सनाह ॥
दोऊ सेन कविचंद कहि । बरनि बीर गुन चाह ॥ छं० ४६ ॥

दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारंभ होना ।

मोतिदाम सजी बर सेन सु चालुकराइ । परे वर बीर निसानन घाइ ॥
भए दल सोर चिहूं दिसि वक्क । मनों मरु पुत्त हकारहि हक्क ॥ ४७ ॥
अछादि अरुन्न न सूझय भल्ल । करें किधौं सोर कपी बर गल्ह ॥
गहब्बर बैंन उचारत श्रोन । इहै जुधकार प्रकारय द्रोन ॥ छं० ४८ ॥
धरं गज आगम नीम अउद्ध । छुटे बर पाइक फूलय रुद्ध ॥
सुसील अफूल बन्यो हयवान । बिचै गुथि मोति कुहक्क [2]अचान ॥छं०४९॥
दुहूं बिच नग्ग मगं नग पति । परी तहां पट्टनराइ मपंत ॥
जु भाल अंकूर सु सुदप बिंद । धरी हयनारि छतीसय चंद ॥ छं० ५० ॥
कसुंभिल डोरि सु पच्छिम संधि । तिठोहर बंध नरिंद सु बंध ॥
लरं मधि ब्रह्म सु चालुकराव । दिसं कुलि भट्टिय वल्लि न काव ॥ ५१ ॥

१. मो०–नीदल्पीज । २. मो०–अचान ।

दिसि वाम जवाहर मेर अराव । रच्यो अरगंध नरिंदन चाव ॥
रंग स्याम सनेत कमे घर रूप । तिन में बर छीन सुरंग अनूप ॥ छं० ५२ ॥
पसरी बर क्रम्र सनाह न तीर । अवरे उत कालिय के रुचि बीर ॥
सजी चतुरंगन अग्ग बनाइ । चढ़े अरि के उर चालुक राइ ॥ छं० ५३ ॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का
चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ।

दूहा -चालुक्कां चित्रंगपति । मिले दिष्टि दुअ दौरि ॥
मनों पुब्ब पच्छिमह तैं । उड़ि डंबर इल मौर ॥ छं० ५४ ॥
[1]इत चंल्पी चित्रंगपति । उत चुहान प्रथिराव ॥
आइ राज उप्पर करन । बज्जि निसानन घाव । छं० ५५ ॥

कुंडलिया ढाल ढलकि दुअ सेन बर । गज पंती हलि जुथ्थ ॥
मनों मल्ल आसूद दोउ । तारी दै दै हथ्थ ॥
तारी दै दै हथ्थ । राम अवनी अन पिख्ये ॥
दुहुन दिप्ट अकुरिय । पाज बंधन बल दिप्पे ॥
चंपि सेन चालुक्य । बीर भ्रम मो बग मिल्ले ॥
आहुआन [2]बर सेन । ढुरी पच्छिम दिसि ढिल्ले ॥ छं० ५६ ॥

पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज
व्यूह रचना ।

कवित [3]सब सामंत रु समर । और दच्छिन दिसि हंडिय ॥
चाहुआन हूसेन । गज्ज व्यूहं रचि गढ़िडय ॥
एक दंत हूसेन । दंत दच्छिनह ततारी ॥
सुंड गरुअ गोयंद । राज कुंभस्थल भारी ॥
दिसि वाम सबै आकार गज । महन सीह मोरी सुबर ॥
बद्दलनय अंग आहुट्टपति । महन रंभ मच्चै[4] सुभर ॥ छं० ५७ ॥

युद्ध वर्णन ।

पद्धरी - घन घाइ घाइ अघ्घाइ सूर । सिधु औ राग बज्जै करुर ॥
हुंकार हुकरु जोगिनिय डक्क । मुह मार मार [5] बज्जै बबक्क ॥ छं० ५८ ॥
नंचयो ईस गौ दरिद सीस । पप्पर उपट्टि घुटे घुरीस ॥
नाचंत नद्द नारद्द तुंब । अच्छरी अच्छनद जानि लुंब ॥ ५९ ॥
गिद्धिनी सिद्ध बेताल फाल । षेचर षपाल कूदै कराल ॥
श्रोनित्त जानि सरिता प्रवाह । कड़कंत रुंड मुंडह सु वाह ॥ ६० ॥

---

१. मो०-इत   २. मो०-हुसेन
३. को०-सब ।   ४. मो०-सुल्लै ।

चमकंत दंत मध्ये कृपान । मानों कि ऊक लग्यो गिरान ॥
पति चित्रकोट चहुआन सेन । चालुक्क चूर किन्नो सुरेन ॥ छं० ६१ ॥

चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर संग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना ।

दूहा—चालुक्कां परि सूर रन । सहस एक मुर सत्त ॥
चूक चित चूको चितन । अै अचिज्ज विधि बत्त ॥ छं० ६२ ॥
पंच पहर वित्यो समर । दिन अथवंत प्रमान ॥
उभै सत्त रावर [1]समर । प्रथीराज सत आन ॥ छं० ६३ ॥

दूसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना ।

निस बर घटीति [1]सत्तरहि । सेष जाम पल तीन ॥
भिरि भोरा रावर समर । रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ६४ ॥

भोराराय का नदी उतर कर लड़ाई करना ।

नदि उत्तरि चालुक्क बर । चिपि सुभर प्रथिराज ॥
सुभर भीम उप्पर परे । मनो कुलीगन बाज ॥ छं० ६५ ॥

घमासान युद्ध वर्णन ।

भुजगी ·
परे धाइ चहुआन चालुक्क मुष्षं । मनों मोष मद मत्त जुट्टे कुरष्षं ॥
बजे कुंन कुंनं समं सेल साही । परी सार टोपं बजी तं अघाई ॥ छं० ६६ ॥
झरे सार अग्गी दझे टोप दझ्झं । मनों तं अनेतं प्रलैअग्नि सज्जं ॥
फटे गज्ज सीसं सिरं भेदि लोही । घसी भारती कासमीरंति सोही॥छं०६७॥
दिए नागमुष्षं गजे तं तबानं । ठनक्कंत घंटं फटे पीतवानं ॥
बजे बज्र घाई उकत्तीति चिन्हं । बकै जानि भट्टं प्रसंस्ती इन्हं ॥ छं ६८ ॥
गहे दंत सूरं चढ़े कुंभ तंती । फिरै जोगिनी जोग उच्चारवती ॥
लगी हथ्थ गोरी गई अंग भेदी । मनों राहु सूरं बैठे माहि छेदी ॥छं० ६९॥
रुंधी धार मंती सुमंती उछारै । उतक्कंठ भेली जु रंभा विचारै ॥
परैं घुम्मि सूरं महा रोस भीनं । मनों बारुनी मद्द प्रथमं सु पीनं॥छं० ७०॥

समय पाकर रावल समर सिंह जी का तिरछा दल देकर धावा करना ।

दूहा—ओसरि भर पिच्छें परे । समर तिरच्छी आइ ॥
मानहुं पल दुत्तेसनी । भई बीभछ निबाइ ॥ छं० ७१ ॥

---

१. ए० कृ० को०—भर ।

युद्ध लीला कथन ।

त्रिभंगी --नियं बिय अरि मंतं, बहु बत्तंतं, ग्यारह जंतं, अति रंगी ।
त्रिभंगी छंदं, कहि कविचंदं, पढ़त फनिंदं, बर रंगी ।
बिय हुअ नय नालं, बज रिन नालं, असिवर झालं, रन रंगी ।
सामत भर सूरं, दिठु करुरं, मिलि [1]अरिपूरं, अनभंगी ॥छं० ७२॥
मनु भान पयानं, चढ़ि बर वान, मिलि बथ्थानं, असिझारं ।
ओडन कर डारं, बेत करारं, तामस भारं, तन तारं ॥
जुट जुट्टिय जुद्धं, जोवति वृद्ध, अरिनि अरुद्धं, अरि बक्कं ॥
उर धरिचालुक्कं, सूर जहक्कं, [2]मुर आतक्कं, धक धक्कं ।छं०७३।
दल बल पर ओटं, सीस त्रिओटं, रन रस बोटं, परि उट्टं ।
दंतं उब्बारं, कंध्रय मारं, अरि उतार, घ्रत छुट्टं ॥
जोगिन किलकारी, हसिहि ततारी, दै दै भारी, हिलकारी ।
अरि तन नन कालं, परि बेहालं, चालुक झालं, बर सारी ॥ छं० ७४॥

सामंतों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना ।

कवित्त--वीर वीर आरब्भ । चढ़िय बीरं तन हक्के ॥
चावद्दिसि बिहुट्टरे । मोह माया न कसक्के ॥
एक दिनां आहुरे । आदि जुद्धं थिति लग्गे ॥
कै छुट्टे मद मोष । जानि बीरन द्रग जग्गे ॥
घन घाइनि घाइ आघाइ घन । मति सुभाइ बिम्भाइ नरि ॥
कविचंद बीर इम उच्चरै । प्रथम जुद्ध आदीन टरि ॥ छं० ७५ ॥

भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उन का नाम ग्राम कथन ।

दूहा --मंझ सरट्टिय बीर भर । परिग सुभर दस राइ ॥
तिय षवास परिगह नृपनि । सिर घुम्मं घट घाइ ॥ छं० ७६ ॥

कवित्त --पर्‍यौ समर षावास । जित्यौ जिन मम चालुक्किय ॥
परि भट्टी महनंग । छत्र नष्यौ अरि सक्किय ॥
पर्‍यौ गौर केहरी । रेह अजमेरी लग्गिग ॥
परिग बीर पामार । धार धारह तन भग्गिय ॥
रघुबंस पंच पंचौ मिले । बर पंचानन और कवि ॥
चित्रंग राव रावर लरत । टरय दीह अथवंत रवि ॥ छं० ७७ ॥

---

1. मो०--असि ।
2. ए० कृ० को०--सुर ।

आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज से हुसेन खां का चालुक्य पर आक्रमण करना ।

घरी अद्ध दिन रह्यौ । चलिग हुसेन षान भ्रम ।।
चालुक्कां दिसि चल्यौ । मोह छंड्यौ जु क्रमंक्रम ।।
असि प्रहार चढ़ि धार । मन न मोन्यौ तन तोन्यौ ।।
अस्त बस्त वज्जी कपाट । दधीच ज्यों उजोन्यौ ।।
बर रंभ बरन उतकंठती । सूर हूर उत कंठ मिलि ।।
ढिल्लीव ढोल जीरन जुगं । गल्ह बीर जुग जुग्ग चलि ।।छं० ७८।।

एक दिन रात्रि और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना ।

दूहा – निसि दिन घटिय तिसत्त बर । दल चहुआनन चीन्ह ।।
भिरी भोरा रावर रिनह । रत्तिवाह सो दीन ।। छं० ७९ ।।

गुरजर राय भीम देव का भागना ।

भिगि भग्गो सुत भुअंग को । गरुड़ समर गुर राज ।।
फिगि पच्छौ पुंछी पटकि । बिन सु गरब तजि लाज ।। छं० ८० ।।

कवित्त – षेत जीति चित्रंग । हथ्थ चढ्यो चहुआनं ।।
के ओरी भर सुभर । लीन अप्पह पर आनं ।।
के क किए परलोक । मुक्ति लभ्भी[१] जुग जानं ।।
पंच तत्त मिलि पंच । सार धारह लग्गानं ।।
चहुआन समर इकतन्नि मह । तहां सेन उत्तरि सुभर ।।
चालुक्क भीम पट्टन गयो । करी चंद कित्तिय अमर ।। छं० ८१ ।।

कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई ।

चौपाई – अमर कित्ति कविचंद सु अष्षी । जा लगि ससि सूरज नभ सष्षी ।।
इह काया माया जिन रष्षी । अंत काल सोई जम भष्षी ।। छं० ८२ ।।

पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्वल भेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना ।

दूहा – निसि सुग्नंतर राज पै । कित्ति आइ कर जोर ।।
नौतन अति उज्जल तनह । नीद न्रपति मन चोर ।। छं० ८३ ।।

कीर्ति का कहना की हे क्षत्री मैं तुझे दर्शन देने आई हूं ।

अपि जगाइ सोमेस सुअ । मदन भीम चहुआन ।।
देत रूप छत्री प्रकृति । दरसन [२]तवही पान ।। छं० ८४ ।।

---

१. ए० गुर ।
२. ए० कृ० को०—छत्री ।

कोटि लछन सुंदरि सहज । भय सुंदरि तिन प्रेम ॥
सूर सुभर डरपै रनह । तौ सुधीर कहि केम ॥ छं० ८५ ॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन ।

कवित्त— तो कित्ती चहुआन । निदंर संसारह चल्लों ॥
तीन लोक में फिरौं । देव मानौ उर सल्लों ॥
थान थान द्रिगपाल । फिरिव चावद्दिसि रुंध्यो ॥
तन विसाल उज्जल सुरंग । दुज्जन सिर षुंदो ॥
हूं सार अडर डोंरू कहन । जोग प्रमानह उत्तरी ॥
चहुआन सुनौ सोमेम तन । भूत भविष्यत विस्तरी ॥ छं० ८६ ॥

दूहा- तो कित्ती चहुआन हो । तीनौं लोक प्रसिद्ध ॥
धीरज धीरं तन धरै । द्रवै भूमि नव निद्ध ॥ छं० ८७ ॥
हौं सु देवि सुंदरि सहज । तुम गुन गुंथित देह ॥
पुब्ब प्रेम अति आतुरह । लग्यो प्रेमलह नेह ॥ छं० ८८ ॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना ।

कवित्त– जु कछु लिष्यो लिलाट । सुष अरु दुःष समंतह ॥
धन विद्या सुंदरी । अंग आधार अनंतह ॥
कलप कोटि टर जाहि । मिटै नन घटै प्रमानह ॥
जतन जोर जो करै । रंच नन मिटै विनानह ॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि । बुझ्झि चंद गुरराम तरु ॥
बरनी विचित्र राजन बरहि । कही मत्ति मत्ती सु अरु ॥छं० ८९॥

गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये का परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी ।

दूहा—इह सुपनंतर चिततह । कहि सु देब जिम कीम ॥
रत्ति बाहु बर नरिंद सो । दीनों भोरा भीम ॥ छं० ९० ॥

रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिबिर पर सहसा आक्रमण करना ।

कवित्त—चोकी जैत पंवार । सलष नंदन रचि गढ्ढौ ॥
ता सत्थह चामंड । भीम भट्टी रचि ठढ्ढौ ॥
महन सीह बर लरन । मार मारन रन चौकी ॥
उठी दिष्ट अरि भोज । प्रात षिझ्झिय बर सौकी ॥
हज्जार पंच अरि टारि कें । भोरा अरि उप्परि परिय ॥
जाने कि पुराने दंग में । अगि तिनवका झरि परिय ॥ छं० ९१ ॥

रात का युद्ध वर्णन ।

रसावला —

अत्ति अच्छी रनं, तेग कड्ढी घनं । रत्ति अद्धी मनं, बीज कुट्टी घनं ॥
बीर रस्सं तनं, सार भंजे घनं । हक्की मच्ची रनं, बाहु बाहुं तनं ॥छं० ९२॥
रुंड मुंड घनं ईस इच्छे चुनं । धग्ग भग्गं तनं, प्राहु गंगं जनं ॥
संभ रुट्ठी मनं, तार चौसट्ठिनं । भूत प्रेतं तनं, भष्ष दिसौ घनं ॥ छं० ९३ ॥
आनि सीलं रुधी, कव्वि ओपम सुधी । मंन भारथ जलं, भेदि उप्पर चलं ॥
॥ छं० ९४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम ।

कवित्त — दे अरि पच्छो जैत । पर्‍यो पांवार रुघन ॥
पर्‍यो किल्ह चालुक्क । संधि चालुक्क हजूरन ॥
पर्‍यो वीर बग्गरी । भयो अग्गर चहुआनं ॥
परि मोरी जैसिंघ । सिंघ रष्षी षिजवानं ॥
हलमल्यो सबै प्रथिराज दल । दलमलि दल चालुक गयो ॥
तिय सीत अग्गि अंधार पथ । चंद तुच्छ उद्दित भयो ॥ छं० ९५ ॥

दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों का मारा जाना ।

दूहा — चालुक्का चहुआन दल । लुथ्थि स देढ़ हजार ॥
सब घाइल [1]होंड़े परिय । तब मुरि मेर पहार ॥ छं० ९६ ॥

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना ।

कवित्त — जंगी सिर चहुआंन । लुथ्थि [2]ढुंढन उप्पारिय ॥
षेत तिरच्छो मुक्कि । षिझिय लग्गो अरि भारिय ॥
यों आतुर लग्गयो । जान चालुक्क न पायो ॥
[3]कैन्ह बैन [4]संभलियं । फेर बर भीम धसायो ॥
उच्छरिय पानि बर मद्द भिरि । संग लोह हक्कारि दुहुं ॥
गुज्जर नरिंद चहुआन दुहुं । परि पारस भररथ बहुं ॥ छं० ९७ ॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना ।

बर प्रभात बन होत । होड़ चौहान सु लग्गिय ॥
लरत सूर दिनमान । सिरहु चालुक पत षग्गिय ॥
षहु धरि बज्जि निसान । रत्ति आई सु भिरत्तां ॥
लोहु किरन पसरंत । सूर विकसत [5]अथ गत्तां ॥

---

१. मो०—दौड़े ।　　२. ए०—ढकन ।
३. मो०—कैन बनै संभलिय फेरि बर भीम धसायौ ।
४. ए०—समरिलिय ।　　५. ए० कृ० को०—वय रत्ता ।

बर सूर दिष्षि काइर विडुरि । ठटुकि सूर सामंत रन ॥
दिष्षनहु सूर इन काम बर । चढ़ि दिष्षन गौ सूर तन ॥छं० ९८॥

दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना ।

भुजंगी –भिरे सूर चालुक्क चहुआन गत्तं । लरते परंते उठे सूर तत्तं ॥
दिवं दच्छिनं भीप भिरि चित्रकोटं । परे मार ओटे चहूआन जोटं ॥छं०९९॥
किए सूर कोटं न हुल्लैं हुलाए । अमी सेन दूनं रहे हथ्थ पाए ॥
रसं बीर आयौ च°यी मोह प्रानं । जिनै छत्र बंसं धरी ध्यान मानं॥छं०१००॥
भज्यौ चित्त [1]वाहं लजे सूर दिष्षं । तहां चंद कब्बी सु ओपम्म पिष्षं ॥
पियं त्रास पिष्षं सषी पास लग्गी।मनों बाल बद्धू परे [2]पाइ अग्गी॥छं०१०१॥
असब्बार ऐसें सनाहंत कट्टं । मनों [3]बीय सौकी इषी भाग वट्टं ॥
उड़े काइरं हक्क हुरि जीअ त्रासं । उपंमा करुरं फुटे नैन पासं ॥ छं० १०२ ॥
मनों पुत्तली कंठ [4]गढ़ि चित्र लाही । करं जान लग्गी टगं टग्ग चाही ॥
फुटे फेंकरं लेट तारग झल्लै । मनों नाभि तें कोल सारग फुल्लै ॥ छं०१०३ ॥
दिए नाम मुष्षी गजं हड्डु षग्गी । पितं तेज आयौ बरं जत लग्गी ॥
उपंमा न पाई उपंमा न बंची । मनों इद्र हथ्थ करं राम षंची ॥ छं० १०४ ॥
[5]करी फारि फट्टं करं ऐक कोरं । जकं सिंधु भारं जुरं जानु जोरं ॥
पयं जोर ऐसे प्रतंगं चलायौ । भगंदत्त [6]छब्बी तहां सूर पायौ ॥ छं० १०५ ॥
गिरे कंध बंधं कमंधं निनारे । उपंमा तिनं की न ओपम चारे ॥
हकै सीस नीचं धरं उंच धायौ । मनो भंगुरी रूप न्रपती दिषायौ ॥छं०१०६॥
समं पाज घट्टं कितं साम काजं । तिते [7]ऊपरे सूर चढ़ि कित्ति पाजं ॥
बड़ सूर सिद्धं सिधं कोन जोगी । भ्रिगं षल्ल की भति ज्यों षाल ओगी ॥
॥ छं० १०७ ॥

दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते ५ हजार सैनिकों का मारा जाना ।

कवित्त - चढ़त दीह बिप्पहर । परिग हज्जार पंच लुथि ॥
बान बचन भरि नरिंद । झारि उच्चारि देव थपि ॥
षट छह बर हज्जार । रुक्कि मंझे चहुआनं ॥
बर कद्दुन चालुक्क । मत्ति कीनी [8]परिमानं ॥
सह सेन बीर आहुठि तहां । तौ पट्टनवै कढ्ढयौ ॥
उच्चर्‍यौ बंभ भट्टी बिहर । धार धार अपु चढ्ढयौ ॥ छं०१०८ ॥

---

१. मो०–चाहु । २. को०–आइ ।
३. ए० कृ० को०–बियं पियं । ४. मो०–गहि ।
५. ए० कृ० को०–गजं । ६. ए० कृ० को०–छब्बं ।
७. ए० कृ० को०–उत्तरे । ८ मो०–परिवानं ।

पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना।

तब रा निगर राव। मुक्ख धर रावर मंडिय ॥
रुकि सेन चहुआन। षग्ग मग्गह तन षंडिय ॥
परिगहिय सब सथ्थ। गयो चालुक्क बजाइय ॥
षभर षेह षग मिलिय। निरति प्रथिराज न पाइय ॥
बीरंग बीर बज्जर बिहर। भिरत बज्जि निय विप्पहर ॥
बज्जरत बीय बंभन परत। गयो भीम तन वर कुसर ॥छं०१०९॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना।

दूहा—तीस सहस बर तीस अग। गत चालुक रन मंडि ॥
तिन में कोइ न ग्रह गयो। सार धार तन षंडि ॥ छं० ११० ॥
बाव सूर कोइ न भयो। धनि चालुक्की सेन ॥
सामि काज तन तुंग सो। त्रिन करि जान्यो जेन ॥ छं० १११ ॥

पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुंढवा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना।

कवित्त- षेत ढूंढि चहुआन। समर उप्पारि समर में ।
निठ पायो चामड। मिले सब मंस रुधिर में ॥
है गैबर विब्भूत। रंक लुट्टी चालुक्की ॥
किन हय हथ्थिय लुट्टि। गयोप्पति प्रब्बत [1]मुक्की ॥
दिन अट्ठ राज चित्तोर रहि। बहुत भगति राजन करी ।।
जोगिनी न्रपति जुग्गिनि पुरह।जस बेली उर बर धरी॥छं० ११२॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना।

दूहा—ढिल्ली न्र। ढिल्ली गयो। बजि न्रिघात सुदंद ॥
जिम जिम जस ग्रह राज करि। तिम तिम [2]रचित कबिंद॥छं०११३॥
जस धवलो मन उज्जलो। न्रिब्बी पहुमि न होइ ॥
भूत भविच्छति त्रित्त मन। चित्रनहार न कोइ ॥ छं० ११४ ॥

इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को ब्याहना।

षंडो सुनि पठयो सु न्र। बंज्जि निसानन घाइ ॥
बर इंद्रावति सुंदरी। बिय बर करि परनाइ ॥ छं० ११५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके करहे री रावर समरसी राजा प्रथिराज विजय नाम बत्तीसमो प्रस्ताव ॥ ३० ॥

●

---

१. मो०-मुक्की। २. ए० कृ० को०-सचित।

अथ इन्द्रावती व्याह ।

(तैंतीसवां समय)

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा ।

कवित्त - कहै भीम सुनि भट्ट । सूर बंध्यो सुरही [1]रिन ॥
[2]दीना सों प्रति प्रीति । मामि करिहै जु मामि [3]मिन ॥
[4]अमृत रत्त विष होत । अमृत रस रत्त उपज्जै ॥
ग्राव ग्राव सों प्रीति । सार सों सार सपज्जै ॥
[5]कठ्ठ सों कठ्ठ वर बंधियै । नारि नरन सों वाहियै ॥
इह काज राज कविचंद सुनि । त्यों बरनी वर चाहियै ॥ छं० १ ॥

कवि चंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया ।

सुनि भीमंग पँवार । चढ़े प्रथिराज प्रपत्ते ॥
समर दिसा चालुक्क । [6]सजे चतुरंग सपत्ते ॥
अग्नि मगन तन आनि । कित्ति चहुआन सुनिज्ज[7] ॥
साम दान अरु भेद । दंड मुंदरि ग्रह लिज्जै ॥
मो मत्त सुनो [8]घर जाइ तौ । न्रप बर महि कलहत्त भय ॥
गुर गुरह सब्ब सामंत ए । लज्ज बधि नृप हथ्थ [9]दिय ॥ छं० २ ॥

भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ।

कहै जोइ वरदाइ । मंत कविचंद सु आमन ॥
मन वासों मन मिलत । जियत कै कंठ सामन ॥
जो वासुर सुर पंच । [10]?ग्ग मडै चहुआनं ॥
तौ भाविक जिह लेष । तिही ह्वैहै परिमानं ॥
भावी विगत्ति [1]भंजन गढ़न । दइय दुसंकह जानि गति ॥
लिषि बाल सीस दुष सुष्ष दुहु । सत्य होइ परमान मति ॥ छं० ३ ॥

---

१. ए० कृ० को०—सत । २. ए० कृ० को०—तदिनां । ३. ए० कृ० को०—मति ।
४. ए० कृ० को०—रत अरत्त विष होइ अमृत रत जुरत उपज्जै ।
५. मो०—कंठ । ६. मो०—सुजो ।
७. ए० कृ० को०—पर । ८. ए० कृ० को०—दिप ।
९. ए० कृ० को०—मद्धि आयो । १०. ए० कृ० को०—भंजी ।

यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना।

दूहा—सुनि इंद्रावति सुंदरी। धरनि सरन सिर लाइ॥
के धरनी फट्टै कुहर। कै पावक जरि जाइ॥ छं० ४।
इन भव न्रप सोमेस सुअ। जुध बंधन सुरतान॥
कै जलद्धि बूड़वि मरै। अवर न [1]बंछौं प्रान॥ छं० ५॥

सखियों का इन्द्रावती को समझाना।

कवित्त—सषी कहै सुनि बत्त। सुती दानव कुल कहियै॥
अवर जाति अन्नेक। राइ [2]गुर परनह लहियै॥
करे कोन परसंग। पाइ म्रगमद घनसारं॥
कोन करै कुष्टीन। संग लहि कामवतारं॥
तो चित्त अवर बर जो दियै। तो नन जंपै अलिय वच॥
राचियै अप्प राचै तिनह। अनरच्चें रच्चे न सुच॥ छं० ६॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता।

दूहा–तुम दासी दासी सु मति। मो मति न्रप पुत्रीय॥
बोलि बिन चुक्कै न नर। जो वर मुक्कै जीय॥ छं० ७॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते।

कहै भीम कविचंद [3]सुन। स्वामि काम तुंम अट्ठ॥
सेन-सगप्पन रीत नह। तुम दानव कुल चट्ठ॥ छं० ८॥

कवित्त—हौं सु भीम मालव नरिंद। मोहि घर बर अच्छिय॥
सवा लाष मो ग्राम। ठाम संपति बहु लच्छिय॥
विधि विधान न्रिम्मान। कोन मिट्टै इह बत्तिय॥
होनहार होईहै पुरुष। जंपै गति मत्तिय॥
तुम कहो नाम बरदाइ बर। गुरूराज बंदे चरन॥
ओछी सु बत्त बट्ठो कथन। एह सगप्पन विधि बरन॥ छं० ९॥

कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य्य करना ही बुद्धिमत्ता है।

दूहा—अहो भीम [4]सत्तह सुमति। तुम मतिमान प्रमान॥
औसर तकि कीजै [5]जुगत। औसर लहिजै दान॥ छं० १०॥

---

१. ए० कृ० को०–छंरो।
२. ए० कृ० को०–गुन।
३. ए० कृ० को०–कहि।
४. ए० कृ० को०–सतिममत्ति।
५. को० कृ० ए०–जुरन।

भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरबीर ही नहीं जानते।

कबित्त—कहै भीम पज्जून। सुनो पामर मतिहीना॥
[1]अमत कियो तुम मत। बरन बरनी षग लीना॥
तुम सहाव बलि बंधि। गर्व सिर उप्पर लीना॥
गिनों और तिल मत्त। कह्यो न सुन्यो तुम कीना॥
छत्रीन बंस छत्तीस कुल। सम समान गिनियै अवर॥
घरु जाहु राज सुक्को बरन। करन व्याह उछ्छाह नर॥छं०११॥

जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो।

जैतरव जम जैत। नैन लल्ले करि बोलै॥
अहो भीम करि नीम। व्रत्त पहल्ली तुम भोलै॥
बल बलिष्ट केहरिय। स्यार क्यों मुष वर घल्लै॥
लोक भाष बुझ्झी न। न्योंत बैरी को मिल्लै॥
हम कज्ज लज्ज सांई ध्ररम। षयो कढ्ढय मुष बत्तरिय॥
सु विहान बरन थप्पै मरन। आज तुम्हारी रत्तरिय॥छं० १२॥

भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कोन सा धर्म है।

दूहा—तब कहि भीम नरिंद सुनि। अहो सु गुर दुज राम॥
अमत मत्त मंडो मरन। इह सु कोन ध्रम काम॥ छं० १३॥

गुरुराम का ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना।

कबित्त - त्रिया काज सुन भीम। मिल्यो सुग्रीव राम जब॥
[2]कहिय बत्त पय लग्गि। नाथ मो बालि हत्यो अब॥
हरी नारि तारिका। मास षट जुद्ध सु मंड्यो॥
अस्ति वस्थ करि सिथल। म्रतक सम बर करि छंड्यो॥
तुम देव सेव रसनो ग्रहिय। अब सहाय तुम सारयो॥
बंधियो सप्त तारहु सु जिय। बलिय बान इक मारियो॥छं०१४॥

भीम का गुरुराम को मूर्ख बनाकर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ।

दूहा—तुम बंभन बंभन सु मति। पढ़ि पुस्तक कहि सुत्त॥
दो घर मंगल मंडियै। इह घर जानी बत्त॥ छं० १५॥

१. मो०—अमम। २. ए० कृ० को०—कहा।

अहो चंद दंद न करहु । तुम कुल दंद सुभाव ॥
जैतराव [1]मिलि राम गुरु । लै काने समझाव ॥ छं० १६ ॥

कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना ।

कवित –कहै चंद मुनि दंद । त्रीय कज रावन षंड्यो ॥
[2]बैरोचन न्रप नंद । मारि अप्पन ध्रम मंड्यो ॥
कंस कन्ह सिसुपाल । कज्ज रुकमनि जुध्र मंड्यो ॥
ता बंधव रुकमान । बंध मुंडवि सिर छंड्यो ॥
सुर असुर नाग नर पषि पसु । जीव जंत त्रिय कज भिरै ॥
रे भीम सीम चहुआन की । ता बरनी को बर बरै ॥ छं० १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना ।

दूहा –भीम पूछ परधान [4]भर । कहो सु कीजै काम ॥
जुद्ध जुरै चहुआन सों । ज्यों इल रष्षै नाम ॥ छं० १८ ॥

मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को ब्याह दीजिए पर भीम का इस बात को मानकर क्रोध करना ।

कवित –इह सु नाम [5]अन्नाम । जेन नामह घर जाइय ॥
इहै नहीं घर जोग । अगनि दीपक दिष्षाइय ॥
पछ्छैं ही भज्जियै । होइ दुज्जना हसाई ॥
इंद्रावति सुंदरी । देहु चहुआन प्रथाई ॥
सुनि भीम राज तत्तो तमकि । गई बत्त बुझ्झी सु तुम ॥
हक्कारि जैत गुरुराम कवि । षग्ग ब्याहु न न करैं हम ॥छं० १९॥

सामंतों का परस्पर विचार बांधना ।

दूहा –उठि चल्ले सामंत सब । करन दंद मति ठाम ॥
जो बरनी बिन पछि फिरैं । नृपति न मन्नै माम ॥ छं० २० ॥

रघुवंस रामपवार का वचना ।

कवित्त –फिरि जानी पांवार । राम रघुवंस बिचारी ॥
जीवन जो उब्बरै । मरन केवल सधरी ॥
★महंकाल बर तिथ्थ । तिथ्थ धारा उद्धारी ॥
स्वामि ध्रम्म तिय तिथ्थ । मुकति संतो न बिचारी ॥

---

१. मो०–बलि । २. ए०–मैरोचन, बैरोचन । ३. मो०–के बंध्रव रुकमना ।
४. ए० कृ० को०–बर । ५. ए० कृ० को०–सन्नाम ।
★महंका–महाकाल "उज्जैन्याम् महाकाले" इति लिङ्गपुराणोक्त बारह ज्योतिर्लिङ्गों में से एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है ।

पांवार सुबल मालव नृपति । बर समुंद जिम भारयौ ॥
बर नीति किति सुर वर असुर । मुगति मथन संभारयौ॥छं०२१॥
मतौ मंडि सब सथ्थ । मत्त को बित्त बिचारिय ॥
बर पट्टन दक्षिन है । धेन लैहै हक्कारिय ॥
बर बाहर पालिहै । स्वामि षिझिहै पांवारय ॥
बर आतुर घाइहै । अप्प संम्हौ हक्कारिय ॥
घर दहै कोस अधकोस बर । फिरि चावद्दिसि रुधही ॥
करतार हथ्थ केतिय कला । तिहि दुज्जन फिरि बधही ॥छं०२२॥

चहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर पट्टनपुर में खलभल पड़ना।

दूहा - पंच कोस मेलान करि । लिय न्रप पट्टन धेन ॥
कूक कहर बज्जिय बिषम । चढ़िय भीम नृप सेन ॥ छं० २३ ॥
उंच क्रंन अनमिष नयन । प्रफुल्लित पुच्छ सिरेन ॥
रंग गंग गौ निजरि लषि । प्रज्जलि भीम उरेन ॥ छं० २४ ॥

चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम का उसका साम्हना करना।

कवित्त – ओसरि [1]बसि सामंत । धेन लुट्टिय पट्टनवै ॥
बर मंडल उज्जेन । धाक बज्जिय बद्दनवै ॥
ग्राम ग्राम प्रज्जरहि । सूर मानव बर बज्जै ॥
सामंतारी धाक । धार मुविकय बिधि भज्जै ॥
सभरिय बीर बाहर श्रवन । बाहर हर बाहर चढ़िय ॥
चतुरंग सज्जि पांवार बर । अगन हकि ऋगपति बढ़िय ॥छं०२५॥

भीम का का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना।

हय गय रथ चतुरग सज्जि साइक पाइक भर ॥
आइ मिले मुषमेल । दुहुन कढ्ढिय असि बर बर ॥
[2]तेग मार सिर झार । धुंम धुम्मर हर लुक्किय ॥
पर्यौ घोर अंधियार । बिछुरि निसि भ्रम चक चक्किय ॥
को गिनै अपर पर को गिनै । लोह छोह छक्के बरन ॥
सामंत सूर जैतहं बलिय । कहत चंद जुग्गति लरन ॥ छं० २६ ॥

---

१. मो० सब ।
२. ए० कृ० को०–"झिले लोह सामंत धुम्म धुम्मर हर लुट्टिय ।

रघुबंसराय का नाका बांधना और पज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हांकना ।

बर सिप्रा नदि तट्ट । धाइ सामंत जु हक्किय ॥
रोकि मुष्ष रघबंस । धेन पज्जून सु हक्किय ॥
दुतिय बीर बर टिके । भीस भारथ जिम लग्गिय ॥
सूर बिना प्रथिराज । धके जुरि षग्गन षग्गिय ॥
मुकि धेन गठि बंधिय मिलवि । औसर षग कढ्ढिय लरन ॥
अरि सार तिनंगा तुट्टि बर । तिरटू अर लग्यो अरन ॥ छं०२७ ॥

जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन ।

मोतीदाम—

तुरंगम आउ लहू गुर ठाउ । कला [1]ससि संषि जगन्नय पाउ ॥
पयं पिय छंद सु मोतियदाम । कह्यो धर नाग सु पिंगल नाम ॥ छं० २८ ॥
मिले जुध जैतह भीम नरिंद । मच्यो जुध जानि वृतासुर इंद्र ॥
षगें षग मग्ग परे धर मुंड । परे भर बष्ष मरोरत झुंड ॥ छं० २९ ॥
कटक्कहि हड्डहि गूद करक्क । बिछुट्टकि तुट्टहि लुंब लरक्क ॥
भभक्कत बक्कत घाइन छक्क । उरझ्झत अंत सु पाइन तक्क ॥ छं० ३० ॥
करक्कस केम मनों नट भंग । नचे सब सारद नारद संग ॥
रनब्बिय बेस उलथ्थ पलथ्थ । परे धर लुथ्थिय उनें उन जथ्थ ॥ छं० ३१ ॥
करें कर आवध्र दंड छतीस । तके छल सांइय धम्म मतीस ॥
नचे भर अच्छर चोपठि नार । इसो जुध रुद्र अनुद्ध अपार ॥ छं० ३२ ॥
गए भगि सेन संग्राम सिधार । भिरे रवि मंडल सूर सुवार ॥ छं० ३३ ॥

दूहा —आदि सूर पांवार बर । भीम मरन तिन जान ॥
हसमसि हसमसि संम्हो भिरे । षग पन मोषन पान ॥ छं० ३४ ॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि ।

पद्धरी —★अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध सूर । बरि भिरत भंति दीसें करूर ॥
झलमली संगि फुटि परदि तुच्छ । उप्पम। चंद जंपे सु अच्छ ॥ छं० ३५ ॥
बद्दल सु माहि दीसै प्रमान । निक्कस्यो पंचमो भाग भान ॥
†बर सांग फोरि सिप्पर प्रमान । छरि महन चंद सो भासमान ॥छं० ३६॥
मानों कि राहु ससि ग्रहै धाइ । पैठयो सरन बद्दलन जाइ ॥
किरवान बंकि बढ्ढे बिसाल । मनु ससिअ कोर कढ़ि चक्र लाल ॥छं०३७॥

---

१. मो०-सति ।

★ छन्द ३५ से ३८ तक का पाठ मो० प्रति में नहीं है ।

† यह पंक्ति मो० को० कृ०-इत्यादि प्रतियों में नहीं है ।

सिप्पर सुमंत करि तुट भमाइ । मानहु कि चक्र हरि धरि बलाइ ॥
हुहुं सेन तीर छुट्टे समूह । मानों द्रुपंति पंषिय सजूह ॥ छं० ३८ ॥
कढ़ि हसी तेग धाइय पहार । मनु श्रमं इंद्र सज्ज्यो संभारि ॥
विरची जु सूनु बाहै विहथ्थ । दिषि [1]र चढ़्ढि मनमथ्थ रथ्थ ॥ छं० ३९ ॥
भरहरैं सब्ब पाइल सुभार । रिन [2]रूप देव दिसि सूर पार ॥
गुरहरी भेरि वर भार सार । बज्जे सु तबल आकास तार ॥ छं० ४० ॥
झक झक उझक्क बद्दल दिषीव । ओपम्म चंद तिन कहत हीव ॥
कट हित्त सूर जोध्राइ मुक्कि । कढ्ढंत बाल ज्यों बाल रुक्कि ॥ छं० ४१॥
इह सार मुद्ध मिट्टिय डरेन । जानिये त्रीय वयसंधि तेन ॥
परि सहस सत्त दोउ सेन बीर। रवि गयो सिंधु तीरह सु[3]तीर ॥ छं० ४२॥

सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना ।

कवित्त—संझ हेन बहि सार । मार [4]करि तुट्टि सनह रिझ ॥
सो ओपम कविचंद । भ्रंग छुट्टे कि बाल षिझ ॥
टोप [5]ओप उत्तरै । परै विपरीत विराजै ॥
मनों सु भाजन भीम । हथ्थ जोगिनि रुध काजै ॥
यों भन्यौ सेन सम बर सुबर । नन हान्यो जित्यौ न कोइ ॥
दोउ सेन बीच सरिता नदी । निस कढ्ढी बर बीर होइ ॥ छं० ४३॥

दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामंतों का
पान-व्यूह रचकर युद्ध करना ।

होत प्रात सामंत । पान व्यूहं जुध रच्चिय ॥
मोती भर सामंत । पान कूरंभ रा सच्चिय ॥
बर हरिन्य उथ्थट्ट । पत्ति मंडी [6]गुन राजै ॥
[7]लाल रुप कविचंद । मद्धि कनइक दुति साजै ॥
[8]नालीव रुप लीनो बरन । राम सुबर रघुवंस भिरि ॥
कोदनि सुरंग पंती करिय । बंय सहस पुंडीर परि ॥ छं० ४४ ॥

युद्ध वर्णन ।

मालती—तिय पंच गुरु, सत सत्ति चामर, बीय तीय, पयो हरे ॥
मालती छंद, सुचंद जंपय, नाग षग मिलि, चित हरे ॥

---

1. ए० कृ० को०—सूप राव । 2. ए० कृ० को०—नीर ।
3. मो०—कढ़ि । 4. मो०—ओट ।
5. मो०—सुब । 6. ए० कृ० को०—गुर ।
7. ए० कृ० को०—लाव । 8. मो०—नालीव ।

नव सूर सलि ललि, अग्नि अक मिलि, लोह झिक मिल, निकरे ॥
बर सूर तल छुटि, लजन नट्टय, बीर सबदन, बर भरे ॥ छं० ४५ ॥
मिलि सार सार, पहार बजि घट, उघटि [1]नट जिमि, [2]तानयौ ॥
झलमलत तेक, सकत्ति बंकिय, ओपमा कबि, मानयौ ॥
मनों बिट्ठु जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं ॥
घन सूर धार, अधार जन जिन, धार धार, जनेकियं ॥ छं० ४६ ॥
चिहुं दिसा चाहं, सूर बह बह, जूट चल्लं, निद्धयं ॥
मनु रास मंडल, गोप कन्हं, दंप दंपति, बंधियं ॥
बर अरिर सेन, विडारि चिहु दिसि, करषि काइर, भज्जयं ॥
बर बीर धार, पंवार सेना, परे सोम, अलुझ्झयं ॥ छं० ४७ ॥

युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना और इन्द्रावती का चहुआन के साथ ब्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना।

कवित्त -दिन पल्लटयो पांवार। सस्त्र बाहे सस्त्रन पर ॥
चावद्दिसि सामंत। भीम बंठयो सुरंग नर ॥
तन सट्ट अरि सट्ट। बंधि लीने उज्जेनी ॥
बल छुटयो संग्रह्यो। दई बर भंभर नैनी ॥
कविचंद छंडायो बीच परि। बाल सुबर सुंदर बरी ॥
घरि सूर बीर सामंत ही। [3]जुमर जुद्ध इत्तौ करी ॥ छं० ४८ ॥

भीम का सब सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके उनके घायलों को औषधि करना।

दूहा -भीम भयानक भग्रह्यौ। सरन राम कविराज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी। मे दीनी प्रथिराज ॥ छं० ४९ ॥
जो मति पच्छें उप्पजे। सो मति पहिले होइ ॥
काज न विनसे अप्पनो। दुज्जन हँसे न कोइ ॥ छं० ५० ॥
आदर करि आने सु ग्रह। भगति जुगति बहु कीन ॥
जे भर घाइल उप्परे। जतन जिवाइ सु दीन ॥ छं० ५१ ॥
पग विवाह भीमंग रुचि। बाजे बज्जन लग्गि ॥
मंगल मिलि अलि गावहीं। गोष गोष निस जग्गि ॥ छं० ५२ ॥

---

१. ए० कृ० को०—वट।
२. मो०—तीमयौ।
३. मो०—सु बर।

इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने विवाह स्वीकार कर लिया है।

भुजंगी—रची बेदिका बंस सोव्रन्न सोहै। जरे हेम में कुंभ देषंत मोहै॥
लगी बेद विप्रान सों [1]गान झांई। रचे कुंड मंडप्प सेषं न सांई॥ छं० ५३॥
हुसे तर्क वितर्क हासं सुरासं। घसे कुंकमं लाल गुल्लाल वासं॥
उड़े बीर [2]गोधूरकं वास रेनं। करे भेरि भुंकार गज्जत्त गेनं॥ छं० ५४॥
चवै छंद बंदी ननं पार जानं। करे दान हेमं सु विद्या बिनानं॥
भई प्रीति जेतं सुरा कव्विरानं। तिनं लेषियं कग्गदं चाहुआनं॥ छं० ५५॥

दूहा—लिषि कग्गद चहुआन दिसि। दिय पुत्री भीमानि॥
इंद्र घरनि सम सुंदरी। कलह कुमल बर बानि॥ छं० ५६॥

इन्द्रावती का शृङ्गार वर्णन।

नाराच—कन्यो सुन्हांन कामिनी। दिपंत मेघ दामिनी॥
सिंगार षोडसं करे। सु हस्त दर्पनं घरे॥ छं० ५७॥
बसन्न वासि वासनं। तिलक्क भाल [3]भासनं॥
दुनैन ऐन अंजए। चलं चलंत षंजए॥ छं० ५८॥
सुहंत श्रोन कुंडलं। ससी रवी कि मंडलं॥
सु मुत्ति नास सोभई। दसन्न दुत्ति लोभई॥ छं० ५९॥
अनेक जाति जालितं। घरंन पुप्फ मालितं॥
झंकार हार नोपुरं। घमकि घुंघरं घुरं॥ छं० ६०॥
विलेपि लेप चंदनं। कसी सु कंचुकी घनं॥
सु छुद्र घंटि घंट्रिका। तमोल आप अंटिका॥ छं० ६१॥
कनक्क नग्ग कंकनं। जरे जराइ अंकनं॥
बिसाल बानि चातुरी। दिषन्न रंभ आतुरी॥ छं० ६२॥
अनेक दुत्ति अंग की। कहंत जीभ भंग की॥
सहस्स रुप सारदं। सरन्न रुप नारदं॥ छं० ६३॥

इन्द्रावती का मंडप में सखियों सहित आना और पृथ्वीराज के के साथ गठबंधन होना।

दूहा—करि शृंगार अलि अलिन संग। रिम झिम झुंडन मंझ॥
बसन रंग नवरंग रंगे। जानु कि फुल्लिय संझ॥ छं० ६४॥

चौपाई—कर गहि षग्ग मग्ग चहुआनं। बरन इंद्र सुंदरि बर बानं॥
मन षंठे गंठिय प्रिय जानं। जानकि देव विहाह विवानं॥ छं० ६५॥

---

१. मो० गान। २. मो०—केवासु। ३. मो०—तासने।

भीम का चहुआन को भांवरी दान वर्णन।

दूहा—सत हथ्थी हय सहस दिय। साकति साजि अनूप ॥
हथलेवो चहुआन कों। दियो भीम वर भूप ॥ छं० ६६ ॥
नग्ग चरित चौंडोल सो। पुर सत शासिय सथ्थ ॥
दै पहुंचाइय सुंदरी। कही बनै बर गथ्थ ॥ छं० ६७ ॥

गमन समय इन्छावती की माता की इन्छावती के प्रति शिक्षा।

मात पुत्ति परठिय सुमति। विधि विवेक विनयान ॥
पति वृत सेवा मुष धरम। इहै तत्त मति ठान ॥ छं० ६८ ॥
पति लुप्पे [1]लुप्पै जनम। पति बंचे बंचाइ ॥
इहै सीष हम मन धरो। ज्यों सुहाग सचवाइ ॥ छं० ६९ ॥

पृथ्वीराज का बंदियों को दान देना।

बंदिन दान प्रवाह दिय। लिय सुंदरि जुध जीति।
दुहुं जस न्रम्मल छंद [2]गुन। पढ़न कविन इह रीति ॥ छं० ७० ॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त—धनि सामंत समथ्थ। जेन न्रप बिन जुध जित्तिय ॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन जस किद्धि विदित्तिय ॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन बरनी बर संध्यो ॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन भीमंग [3] रन बंध्यो ॥
सामंत धन्नि जिन कित्ति बर। ढिल्ली दिस पायान कर ॥
बैसाष मास अष्टमि सितह। क्रित्ति संचरिय देस पर ॥ छं० ७१ ॥

विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन।

ढिल्लिय पति सिनगार। हट्ट पट्टन की सोभा ॥
गोष गोष जारीन। दिष्षि त्रिय नर सुर लोभा ॥
भूंगल [4]भेरि नफेरि। नद्द नीसान म्रदंगा ॥
नाना करत संगीत। ताल सों ताल उपंगा ॥
गाजंत नभ्भ गज्जिय गुहिर। न्रप प्रवेस सुंदरि करि ॥
सामंत जैत पयलग्गि प्रथ। प्रथक प्रथक परसंस करि ॥ छं० ७२ ॥

दहेज वर्णन।

च्यार अग्ग च्यालीस। मत्त अप्पे गजराजिय ॥
सौ तुरंग तिय अग्ग। बीस चव अप्पि सु पाजिय ॥

1. मो०—छप्पे।
2. मो०—गुर।
3. ए० कृ० को०—बर।
4. ए० कृ० को० फेरि न फेरि।

इक अमोल सुंदरी । सत्त तिय दासिय त्रिटिय ॥
सबै सथ्य सामंत । रहे भर करिय अमिटिय ॥
सामंत करी प्रथिराज बिन । करै न को रबि चक्क तर ॥
सुंदरी सहित अरि जीति कै । गए बीर अष्टमि सु घर ॥ छं० ७३॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना ।

दूहा—बर अष्टमि उज्जल पषह । तिथि अष्टमि रवि [1]भीर ॥
अष्ट कोस दिल्लीय तें । त्रिय मुक्किग तिन बीर ॥ छं० ७४ ॥

उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन
का पत्र देना ।

गय सुंदरि सम्हौ न्नपति । गनन करन चहुआन ॥
लोहानौ सम्हौ मिल्यौ । दे कग्गद [2]सुरतान ॥ छं० ७५ ॥

लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर
दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है ।

कवित्त—मेषग्गाही सेन । दंड पलठयौ सु विहानं ॥
अपुठौ भर चतुरंग । सजे दस गुनौ प्रमानं ॥
बर कमान षुरसान । रोहि रंगे रा गष्षर ॥
हबस हेल षंधार । सज्जि घल्ली फिर पष्पर ॥
पंजाब देस पंचौ नदी । बर नंगे मंग्गी सु बर ॥
चहुआन राह मै [3]मग्गिली । मते मच्छ कट्टन उगर ॥ छं० ७६ ॥

पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना ।

दूहा—सुनिय साहि गोरी सु बर । बर भरयौ चहुआन ॥
लै सुंदरि पच्छौ फिर्‌यौ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ७७ ॥

इन्द्रावती का रहाइस ।

दिस दच्छिन तच्छिन महल । सुंदरि समुद समप्पि ॥
सकल सत्त दासी अनुर । नृप इंद्रावति अप्पि ॥ छं० ७८ ॥

सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों
सहित पृथ्वीराज के पास आना ।

कवित्त—अगर कपूरति महल । सार घनसार सु रम्मिय ॥
धुप दीप सुगंध । दीप दस दिसि वृत [4]अम्मिय ॥

---

१. ए० कृ० को०—बीर । २. ए० कृ० को०—चहुआन ।
३. मो०—मिलकी । ४. ए० कृ० को०—नम्मिय ।

सेज सुरंगति रंग। हेम नग अरे जरानं ॥
दिए भीम भूपाल। भोग साजं सु सवानं ॥
न्रप देषि अचंभ समानि मन। मुष आतुर देषन महल ॥
आनिय सु सेज त्रिय अलिन मिल। अलि गुंजत उप्पर चहिल ॥छं०७९॥

इन्द्रावती की लज्जामय मंद चाल का वर्णन।

दूहा— हंस गवन हंसह सरन। गनि गति मति सारद्द ॥
रूप देषि भूल्यो न्रपति। रचिय विरंचि बिहद्द ॥ छं० ८० ॥

सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना।

कवित्त—रस विलास उप्पज्यो। सषी रस हार सुरत्तिय ॥
ठांम ठांम चढि हुरम। सद्द कहकह तह मत्तिय ॥
सुरत प्रथम संभोग। हुंह हुंह मुष रट्टयि ॥
ना ना ना परि न्रबल। प्रीति संपति रन थट्टिय ॥
श्रृंगार हास्य करुणा सु रुद्र। बीर भयान बिभाछ रस ॥
अदभूत संत उपज्यो सहज। सेज रमत दंपति सरस ॥ छ० ८१ ॥
सुकी सरस सुक उच्चरिग। गंध्रब गति सो ग्यान ॥
इह अपुब्ब गति संभरिय। कहि चरित्त चहुआन ॥ छं० ८२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इन्द्रावती ब्याह सामंत विजे नाम तेतीसमों प्रस्ताव संपूरण: ॥३३॥

अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते ।

(चौंतीसवां समय)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना ।

कवित्त—किहि भेषत प्रथिराज । किहिन भेषन चिहु पास ॥
किहि भेषत दिसि विदिसि । कहो मनया उल्हासं ॥
किहि उमाह उच्छाह । कोन ओपम द्रग राजै ॥
सो उत्तर कविचंद । देव गुरुराज विराजै ॥
सजि मान बीर चतुरंगिनी । कमल गहन सुरतान बर ॥
नव रस विलास जस रस सकल । तरे तुग चहुआन बर ॥छं० १॥

ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्टू बन में शिकार खेलने का जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना ।

नीतराव षित्रीय । भेद लै ग्रह चहुआन ॥
दिल्लि को [1]गृह भेद । लिष्यौ कग्गद सुरतानं ॥
बरष उभै षट मास । फेरि सु विहान पलान्यो ॥
षट्टू बन प्रथिराज । वहुरि आपेटक जान्यौ ॥
सामंत सूर सथ्थहन को । बर बराह बर षिल्लइय ॥
दैवान जोग्य चहुआन बर । भिरि दुज्जन भर ढिल्लइय ॥ छं०२ ॥

पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जंतुओं की गणना और षट्टू बन में शहाबुद्दीन के दूत का आना ।

सत चीता द्वादसति । स्वान अच्छे सु रंग दह ॥
बीय अग्ग च्यालीस । सीह बर गोस कहंदह ॥
सत्त सत्त अग अच्छ । सत्त दह अग्गति [2]पाजी ॥
आपेटक प्रथिराज । बीर ओपम अति राजी ॥
उप्परति राय षट्टूति बर । मिलि बसीठ गोरी सु बर ॥
मंगे हुसेन साहाबदी । पंच देस बंटन सु घर ॥ छं० ३ ॥

---

१. मो०-बर ।
२. ए०-षाजी ।

पृथ्वीराज का सामंतों से सलाह लेना ।

मुक्कि राज आषेट । सूर सामंत [1]बुलाइय ॥
सुबर साह गोरीस । आनि उप्पर षरि आइय ॥
मंगे धर पंजाब । षान हूसेन सु मग्गे ॥
इष्ट भ्रत्त अवसान । दिए कग्गद लिषि अग्गे ॥
संमुहे सूर सामंत बर । दै मिलांन संम्हो षरिय ॥
चालंत जेम लग्गत दिवस । झुकि लग्यो गोरी [2]गुरिय ॥ छं० ४ ॥

दूहा— बेगि सूर सामंत सह । मिले जाइ चहुआन ॥
सिंधु विहथ्थें दूत मिलि । गोरी वै सुरतान ॥ छं० ५ ॥
अनंगपाल तीरथ्थ गय । बंध्यव रण सुरतान ॥
बैर बीर ढिल्लिय [3]तनह । धर मंगै चहुआन ॥ छं० ६ ॥

शहाबुद्दीन के दूत का वचन ।

कवित्त- बर बसीठ उच्चरै । साहि जानो पहिलो ना ॥
अप्पो पहु हुस्सेन । साहि [4]जानो दस गुंना ॥
कंक बंक करतें । नरिंद कबहुक घर छिज्जै ॥
भिर गोरी तिन भरह । रहट घट्टी घट भज्जै ॥
दुप्परह छांह दीसै फिरत । भावी गति दिष्षी किनह ॥
मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर । करहु एक बुद्धी सुनह ॥ छं० ७ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि ऐ ढीठ बसीठ तू नहीं जानता कि अभी कौन जीता और कौन हारा राज्य सुख के लिये कर्तव्य छोड़ना परे है ।

अरे ढीठ वस्सीठ । कौन हार्यो को जित्यो ॥
[5]किन वित्तग वित्तयो । कोन बित्तग अब बित्यो ॥
पंच तत्त पुत्तरी । पंच हथ्थन कर नच्चै ॥
अजै बिजै गुन बंधि । चित्त तामस रस रच्चै ॥
बंछै जु सुष्ष फल राजगति । वह करतार सु नन करै ॥
उच्चरै कित्ति छल ना रहै । तब लग्गै गल बल परै ॥ छं० ८ ॥

कहां गजनी है और कहां दिल्ली और कै बार मैंने उसे बंदी किया ।

दूहा—कै कोसां ढिल्ली धरा । कै कोसा गज्जान ॥
बंधा सो [6]कर बंधिया । चहुआना [7]सुरतान ॥ छं० ९ ॥

---

१. मो०—बुलाये । २. मो०—सुरिय । ३. मो०—तिनह ।
४. मो०—आदी । ५. ए० कृ० को०—बिन ।
६. ए० कृ० को०—बर । ७. ए० कृ० को०—पुरसान ।

मैं रष्षौ *हुस्सेन बर। बर बंध्यौ सुरतान ॥
उट्ठाए बस्सीठ बर। बर बज्जै नीसान ॥ छं० १० ॥

दोनों ओर की सेनाओं की सजावट की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

मोदक—दसमत्त पयो लहु पंच गुरं। षग [illegible] हरे बिष हरे विष पत्त [1]बरं ॥
बर सुद्ध प्रयान हुल्लास छबी। कहि मोदक छंद प्रमान कबी ॥ छं० ११ ॥
जु सजी चतुरंगन दान दियं। कबि दो[3]अ सेन उपम्म कियं ॥
[2]सुत षंजन ज्यों बुधगत्ति रढ़ी। सति सीतल [3]बात प्रमान बढ़ी ॥ छं०१२ ॥
बर रत्त ग्रषत्त सुरत्त बनं। तिन की छबि पावस सज्जि घनं ॥
सु बजे बर बीर निसान बजं। सु मनों घन पावस सज्जि गजं ॥ छं० १३ ॥
बजावत बीर जंजीरन सूर। कँपै सुर बीर पयालनपूर ॥
उड़ि रेन चिहूंदिसि विथ्थुरियं। मुदरी द्रग अट्ठत धुंधरियं ॥ छं० १४ ॥
तिह ठौर रसं अप बंधव से। तिनके मुष बाल भुअंग ग्रसे ॥
बर अग्गत नेन सु मेन मुचें। तहां कूर नमें नर आइ नचें ॥ छं० १५ ॥
श्रम सूर तिनं अभिलाष रिनं। बर ग्रब्ब बलं बर बंमु तनं ॥
कल किंचित संकर सूर दियं। बर बीर अजादन लाज लियं ॥ छं० १६ ॥
सहनाइय सिंधुअ अहरियं। तिन ठौर भयानक संचरियं ॥
बर पंच सु दीह ससी चढ़ियं। बर बीर अवाज दिम वढ़ियं ॥ छं० १७ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना।

गाथा—तं बीरं जल गंभीरं। आव यों उप्पटी सेनं ॥
गोरी दिसि चहुआनं। चहुआनं गोरीयं साहि ॥ छं० १८ ॥

इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना।

कुंडलिया—इह सु राज राज आतुर [4]षरिय। सुरतानह प्रथिराज ॥
भूमि भार कछु [5]बढ्ढयो। सो उत्तारन [6]काज ॥
सो उत्तारन काज। परे आतुर दोउ दीनह ॥
तिन अर बस चर परे। को इन [7]छट्टै मति हीनह ॥

---

१. मो०—हुरं। २. मो०—ग्गत। ३. ए० कृ० को०—बाल।

*हुसेन शब्द से यहां मीर हुसैन से अभिप्राय नहीं है बरन उसके पुत्र से तात्पर्य है जैसा कि समय ३१ में भी दिखाया जा चुका है।

४. ए० कृ० को०—धरिय। ५. मो०—पार।
६. मो०—पार। ७. मो०—छंडै।

अप्पन सुसिह बहुरे [1]सुरह । चक्कई चक मुक्की नहीं ।।
अप्पन सुहथ्य भरही परै । दया न किज्जै मन इही ।। छं० १९ ।।

शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना ।

दूहा —चढ़त सिंध सुरतान [2]दल । दूत सपत्ते आइ ।।
बर चरित चहुआन दल । कहि साह सों जाइ ।। छं० २० ।।

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ।

कवित्त - नहिन इंद्र प्रथिराज । सोम नंदन सिवरं दिसि ।।
बर इंद्रह दीसै न । महल मंडयो सु दुहु निसि ।।
जबहीं हम संचरे । काल तबही दिसि पासं ।।
परत वाह लष्षंत । दिष्ट देवन सुष बासं ।।
लच्छीन [3]ग्रीव बस बीर रस । दह दिसि भिरि दानव मिलिय ।।
मेलान कोस परपंच को । गोरी वै संम्हौ चलिय ।। छं० २१ ।।

चहुआन सेना में शूरवीरों का उत्साह करना और कायरों का भयभीत होना ।

दूहा —इह अवाज चहुआन दल । बंटि सेन सु विहान ।।
काइर भर सह उच्चरै । कहि बंधन सुरतान ।। छं० २२ ।।

कवित्त हाइ हाइ कहि साहि । चरनि वरज्यो सु विहानं ।।
झुज्झ रहे के [4]जाइ । जु कछु पत्तो चहुआनं ।।
बरन मेच्छ बर हिंदु । सुनत रन पन कर हेरी ।।
जय जानी अन पंच । चपं चतुरंग सु भेरी ।।
भुअ बीर रूप गोरी सु बर । मुक्कि भयानक [5]भट्ट जिम ।।
पलटयौ भेष देषत सयन । बर बज्जै नीसान तिम ।। छं० २३ ।।

चलते समय सेना का आतंक वर्णन ।

चंद्रायना - बर बज्जिग नीसान, दिसान पयान हुअ ।
उड्डि उछंगिय रेन, सु मेरनि भान भय ।।
गोरी वै भो राह रयन हुर मिग्गई ।
गज असवारन सूर निव्रत्त सु लग्गई ।। छं० २४ ।।

शाही सेन की सजावट की वर्णन ।

गीतामालवी — गुर पंच सत्तति चामरे कवि, जोग नव गति संधयो ।।
सब पाइ गिगल सावरे लहु, बरन अच्छिर बंधयो ।।

---

१ ए० कृ० को०—सुहर । २ ए० कृ० को०—पुल ।
३. ए० कृ० को०—मीव । ४. मो०—नीव । ५. मो०—सट्ट ।

लगि गीत मालति छंद चंदय, दवरि साहित गोरियं ॥
गज मद्द नद्दय छिरह्‌ भद्दय, अननि दिन दिन जोरयं ॥ छं० २५ ॥
घन चढ्यौ गिरि जनु चले दिस दिस, बीय बग्ग उरब्बरे ॥
तिन देषि मन गति होत पंगुर, दान छुट्टि पटे भरे ॥
गजदंत कलिय झलक्कि उज्जल, पिष्पि पंतन रा इयं ॥
रबि किरनि बद्दल पसरि धावै, वाय पंकति मज्जयं ॥ छं० २६ ॥
गज करत दंत सुमंन ऊरध चंद, उग्गम मंडिकै ॥
मनो बग्ग पंतिय वार, [1]उड्गन मोह दिसि सो छंडिकै ॥
धर मत्त दंतिय सेन वंधिय, इम्भ छबि [2]कवि तामयं ॥
मनों मेघ बरषत विज्ज कोंधन, अभ्भ बुढि गिरि स्यामयं ॥ छं० २७ ॥
गति नाग गिरबर गात दीसैं, कूट कज्जल उज्जले ॥
धर चलत गिरबर बरुन, स्याम बद्दल हलिचले ॥
[3]झटकंत सुंड दिपंत पाइक, बनि समथ पसु पुज्जवै ॥
अति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति [4]लज्जवै ॥ छं० २८ ॥
त्रय लष्ष मीरनि साह गोरिय, भार झुज्झ अलुज्झवै ॥
षुरसान षान अरक्क आरब, सज्जि सेन [5]सझंझवें ॥ छं० २९ ॥

शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि
अब की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय ।

भ्रमरावली —सजे बर साह तुरंगम तुंग । लजे कविचंद उपंम कुरंग ॥
सितं सित चोर गुरैं गज गाह । तिनं उपमा बरनी नन जाइ ॥ छं० ३० ॥
जु सजे हय गोरियसाहि षरे । तिन देषि रवी रथ के विसरे ॥
दिषि सेन तिनं उपमा सु करी । सु मनों नदि पूर छिली दुसरी ॥ छं० ३१ ॥
[6]कहि चंद कविंद इदं कवित । गुरु बक पिष मन मन कै चढ़त ॥
बजि बाज कुहू धर सद्द षुरं । सु मनों कठतार बजंत तुरं ॥ छं० ३२ ॥
गज गाह गुरं सित सोभ षगे । मनों सेत केऊरन भान उगे ॥
नभ कै तिमरं जित के समरं । मनु उट्टि किरन्न सु पाल परं ॥ छं० ३३ ॥
बिय ओपम चंद बनी बनिकैं । सु धर्से मनु गग तरंगनि कैं ॥
जग हृथ्थ बने हय के सिरयं । गलि प्रब्बत हेम द्रुमं बरयं ॥ छं० ३४ ॥
बर पष्षर सोभ करै तनयं । मनु अक्क अरक्क बिचें घनयं ॥
तिनकी हुर बाय फुलिंग सजै । सु कहैं कविचंद कुरंग लजै ॥ छं० ३५ ॥

---

१. ए० कृ० को०-उडन । २. ए० कृ० को०-इम्भ छविद्रता, छविद्र ।
३. मो०-झमकंत । ४. ए०-पुज्जवै
५. ए० कृ० को०-अंबजवें । ६. मो०-कविचंद ।

बुहु रैनन आसन जो डरयं । [1]मग मत्त मनों बहरें बनयं ॥
मन मत्ति तिहां इत असि पढ़ी । हय नष्षत रागन सांस कढ़ी ॥ छं० ३६ ॥
बिय बाय अरक्कन बंध्र चढ़े । कबिचंद पयप्पन बाद बढ़े ॥
सु उड़े नन धावत धूरि षुरं । गतिमान सुसील विसाल उरं ॥ छं० ३७ ॥
पय मंझत अश्वत आतुरयं । विरचे नच पातुर चातुरयं ॥
दुहु पार अषार अबद्ध षरी । मनुं गावहिं इंदुन बंध धरी ॥ छं० ३८ ॥
हय अप्पिय भ्रत्तन साहि बरं । जु गहो चहुआन पयाल पुरं ॥ छं० ३९ ॥

प्रातः काल होते ही जमसोजखां और नवरोजखां का
युद्ध के लिये सेना तैयार करना ।

दूहा - सबै सेन गोरी सु बर । चढ़िग षान जमसोज ॥
प्रात सेन चतुरंग सजि । उट्ठि षान नवरोज ॥ छं० ४० ॥

चहुआन का सेना तैयार करना ।

चौपाई—
ढल [2]मिली ढाल चिहुं दिसि बनाइ । [3]डम्मरी उड्डि आकाम छाइ ॥
अचरनचरन गोरीन [4]साईं । सेंन चहुआन हथ्थें बनाई ॥ छं० ४१ ॥

दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना ।

दूहा – समर सउप्पर समर किय । चानद्दिसि अरुनग्ग ॥
सुष गोरी चहुआन भिरि । ज्यों रावन लगि अग्ग ॥ छं० ४२ ॥

चौपाई—
समह्यो रन चहुआन सपट्ठिय । वजिग वाय सुझ्झिन [5]नदि उट्ठिय ॥
धुंधर अन बद्दर निसि भद्दों । सुझ्झिय न अंष कन्न सुनि नद्दों ॥ छं० ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन ।

कवित्त — अट्ठ अट्ठ जोगिनिय । सुक्र सम्हो सुरतानं ॥
दिसा सूल दिसि बाम । बैर कन्हा चहुआनं ॥
सिव बाम भैरवी । गहक बोली गोरी दिसि ॥
गुर पंचम रवि नवों । राहु ग्यारमो सुरंग मसि ॥
ईसान मध्य देवी पहुकि । गहक मझ्झ घू घू बहक ॥
आकास मद्धि गज्यो गयन । परों बूंद बेबंग हक ॥ छं० ४४ ॥

दूहा—ज्यों जगदीसह कान दै । तकसी रन किहुं कीन ।
मिलि उत्तर पच्छिमहुं तें । भिरन भरत दोउ दीन ॥ छं० ४५ ॥

---

१. ए० कृ० को०—मन । २. मो०—मलो । ३. मो०—मम्मरी ।
४. ए०—समाई । ५. ए० कृ० को०—न दिट्ठिय ।

दोनो सेनाओं में रन वाद्य बजना और उससे सूर बीर लोगों तथा घोड़े इत्यादि का भी प्रसन्न होकर सिंहनाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना।

भुजंगी—

परे धाइ धोइ दीन हीनं न जुद्धे। मुरं मार मारं निनं मान मद्धे ॥
परी आवधं होइ बज्जै निमानं। बजे हक्क सूरं दमामे न जानं ॥ छं॰ ४६ ॥
बढ़े आवधं हथ्थ सामंत सूरं। घुरें त्रै निमानं बजे जैत [1]पूरं ॥
कढ़े बे सनाहं झनक्के उनंगी। मनो आवधं हथ्थ बज्जै विनंगी ॥ छं० ४७ ॥
परे पीलवानं मढं [2]मरक दंती। ढली ढाल ढालं ढलक्क तुरंती ॥
फुरे हथ्थ ऊनं मुरक्की उरक्की। मुरे धार धारं सुधारं मुरक्की ॥ छं० ४८ ॥
तुटे सिप्परं कोर फूलै समती। ग्रस्यौ राह सूर छटे नभ्भ हुंती ॥
परे सार तीरं छनक्कंत वज्जे। सद तीनरं जेम सो पच्छि गज्जै ॥छं० ४९॥
बहे सीर गोरी पछै दै सभानं। भगं पच्छिनी पंति पावै न जानं ॥
तुटे सीस जुझ्झै कमंधंत नच्चं। चलै रुद्धि धार चिहूं पाम गच्छै ॥छं०५०॥
धरा भारती गंग पारथ्थ आई। मनो उप्पठि सो सिंध को मिलन धाई ॥
फटी वारि धारं चली ईस सीस। लगे धार धारं रजं रज्जकीम ॥छं० ५१ ॥
मनो तप्त लोही परे बूंद पानी। ढुंढी लुथ्थि पावै व नद्दी बहानी ॥
मनं मोद लै सोम मुद्राह कीनी।··· ·· ··· ··· ॥ छं ५२ ॥
उठं रुद्ध सीमं उपंमा समूलं। मनो पावकं प्रलय धो श्रोन लल्लं ॥
दोऊ दीन धाए मनें कोप रीसं। तिनक्रोध करि धार आकाससीसं। छं०५३॥
परें लुथ्थि लुथ्थी अलुथ्थी जबै वे। इसो जुद्ध देषो न दानव्व देवै ॥ छं०५४॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

कवित्त— त्रतिय पहुर पर पहुर। बीर घरियार ठनक्किय।
गोरी वै सो हथ्थ। चंपि चहुआन सु [3]तक्किय ॥
धरिय इक्क बनि सेन। सूर सामंत परष्षिय ॥
धरि ओड़न करि बग्ग। बैर सु विहान परिक्कय ॥
कर बार धारि सिप्पिर [4]करह। एक होइ उप्पर तरै ॥
दिसि बाम चंपि दुज्जन दलह। उसरि सेन सम्हो भिरै ॥छं०५५॥

1. मो०—सूरं।
2. ए० कृ० को०—सरक दंती।
3. मो०—चक्किय।
4. ए० कृ० को०—सिष्षर।

पृथ्वीराज का अपनी बीरता से शत्रु सेना को बिडार देना।

षिक्षि नंध्यो है नरिंद। भूमि धुज्जिय षुरतारं॥
मनों बद्दर [1]गज्जयत। सद्द पर सद्द पहारं॥
उड्डि माल चमंकि। मझझ धुंघर छबि लग्गिय॥
रबि ओरम कविचंद। चंद मावस घन उग्गिय॥
अरि सेन भग्गि दिसि बिड्डुरिय। परे मध्य सेना घनिय॥
घनि घनि नरिंद सोमेस सुअ। इहु अरि तें तिन बर गनिय॥छं० ५६॥

इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सरदारों के नाम।

इत्त षान मारूफ। फिरत उसमान षान ढहि॥
इन दुज्जन हय नंषि। बाग आजान बाह गहि॥
इतं दीह अथ्थम्यो। सूर बर सिंधु [2]सपन्नो।
मुकत तट्ट मिलि सूर। स्याम रन अप्प अपन्नो॥
साषला सूर [3]सारंग ढहि। जुरि जुवान पंचाइनो॥
केहरी गौर अजमेरपति। पर्‍यो झुज्झि रन भाइनो॥ छं० ५७॥

सूर्य्योदय के समय की शोभा वर्णन।

दूहा—निसि घट्टिय फट्टिय तिमिर। दिसि रत्तो धवलाइ॥
सैसब में जुब्बन कछू। तुच्छ तुच्छ दरसाइ॥ छं० ५८॥

दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तैयारी होना।

कवित्त—जाम निसा पाछली। सेन सज्जियं दोउ बीरं॥
सामंता चहुआन। आनि गोरी कछमीरं॥
भान पयानन भयो। करे द्रिग रत्तह चढ्ढिय॥
ता पहिले पायान। जोध रन असुरन कढ्ढिय॥
आदिहार बीर गोरी सुबर। चाहुआन दिन सुदिन घन॥
करतार हथ्थ किर्त्ति कला। लरन मरन तकसीर नन॥ छं० ५९॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन।

भुजंगप्रयात—
पर्‍यो साहि गोरी सुरत्तान गाजी। चपी [4]गज्ज सेना क्रमं पंच भाजी॥
तहां बाहुर्‍यो बीर बीरं नरिंदं। लग्यो धार धारं सची किति चंदं॥छं० ६०॥
अनी एक मेकं घरी अद्ध पच्छी। फटी सेन गोरी मुरी सो तिरच्छी॥
दोऊ दीन बाहै दोऊ हथ्थ लोहं। पर्‍यो आनि बाराह पारद्धि रोहं॥छं० ६१॥
कटे कंध बंधं कमंधं निनारे। मनों पत्त रत्तं बसंतं सुढारे॥
ननं अग्ग बल्लैं चलैं हथ्थ रोजं। ननं मित्त बल्लै रबो रथ्थ दोजं॥छं० ६२॥

१. ए० कृ० को०—गज्जंत, गरजंत। २. मो०—सपंत्तो।
३. मो०—प्रागंत। ४. ए० कृ० को०—राज।

घनं अश्व फेरें चलै अश्ववाहं। तिनं की उपंमा कवीचंद गाहं ॥
ग्रहं पत्ति अग्गै रहै ज्यों कुलट्टं। चित्तं वृत्ति चल्लै अगे स्वामि घट्टं ॥छं० ६३॥
बरं कज्ज माला ग्रही रंभ सथ्थं। चढ़ै धार धारं भिदै रव्वि रथ्थं ॥
रही रंभ रंभी टगंटग्ग आई। मनों पुत्तली कट्ट करसी लगाई ॥ छं० ६४ ॥
हहंकार बीरं हहंकार पाई। मनों पातुरं चातुरं सो दिषाई ॥
दोऊ बाह सेना दोऊ बीर ठेलं। मनो डिंभूरू जानि [1]हड्डूड षेल ॥छं० ६५॥
तजे आवधं सब्ब इक तेग साहं। करे भाग बिबं अरी कोप वाह ॥
जबै बिड्डुरी सेन गोरी नरिंदं। दिषे थान थान मनों प्रात चंदं ॥ छं० ६६ ॥
परे षान चौसट्ठि दुहं बाहु राई। दुहूं मुक्कती रास कवि कित्ति गाई ॥छं०६७॥

शहाबुद्दीन का हाथीपर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना।

दूहा—परत साहि गोरी सुधर। है गै भूमि भयान ॥
रन रुंध्यो सुरतान कों। परी बीटि चहुआन ॥ छं० ६८ ॥

शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना।

भुजंगी-परी वींट गोरी मुरे मीर षानं। तबै साहि गोरी गह्यो कोपि वानं ॥
न को कंध कट्टै चाहुआन तिन्नं। पर्यो धाइ पावार भर सलष दिन्नं ॥६९॥
लग्यो सत्त बेनं सुलित्तान साह्यो। तहा मीर मारुफ अग्गं गुरायो ॥
घरी अद्ध झुझ्यो करी छत्र धारं। वहै सब्ब सामंत विचि तीन धारं ॥छं०७०॥
तुटै आवधं सब्ब अरि हथ्थ लाजी। तबै आइ सीसं [2]गुरज्जंत वाजी ॥
गजं गहन प्राहार निट्ठें ढहायो। तबै गज्जनी साह पावार साह्यो ॥छं० ७१॥

जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना।

कवित्त—गहि गोरी सु विहान। हथ्थ आप्पो चहुआनं ॥
चामर छत्त रषत्त। तषत लुट्टे सुरतानं ॥
गोरी वै हुस्सेन। बीर [3]तुट्टे आहुट्टिय ॥
मान तुगं चहुआन। साहि मुष के बल षुट्टिय ॥
मध्यान भान प्रथिराज तप। बर समूह दिन दिन [4]चढ़े ॥
जस जोति मंत संभर धनिय। चंद बीज जिम बर बढ़ै ॥छं० ७२॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेटक मध्ये गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बंधन चौतीसमो प्रस्ताव संपूर्ण ॥ ३४ ॥

१. ए०-हुड्डुड।
२. ए० कृ० को०-गुरं गुरज।
३. ए० कृ० को०-पुटे।
४. मो०-बढ़े।

अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पैंतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगड़ा दुर्ग को आना चाहती हूं और आप इस का वचन भी दे चुके हैं ।

कवित्त--कितक दिवस [1]निस मात । आइ जालंध्रर रानी ॥
कहै राज सों बचन । हूं सु कंगुर दुग जानी ॥
तो तुट्टी कर पान । लेहु में वाचा दष्षिय ॥
भोट भान धुर जीति । पल्हु पच्छैं फिरि अष्षिय ॥
हम्मीर भीर अग्गें करै । दल [2]भज्जै मति सत्ति करि ॥
बरनी सु लच्छ लच्छी सहज । परनि राज आवहु सु घर ॥छं०१॥

पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना ।

दूहा—चलिय राज कंगुर दिसा । [3]दयौ भाट फुरमान ॥
कै आवै हम सेव पय । कै जीतौं नृप भान ॥ छं० २ ॥

दूत के वचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ।

कवित्त—तब सुनि भान नरिंद । सबद उब्भार अतुर बर ॥
रे जंगली जुवान । मोहि पुज्जै अप्पन बर ॥
[4]जो षजुआ अति तेज । तोइ का दिनयर लोपै ॥
[5]जो इवना अति सूर । तोइ का [6]भाठी कोपै ।
हूं नीति जानि अन्नि न करि । तूं लोभी आतुर आतुर ॥
इनि बात मोहि आगे अवन । आई फुनि जंहै सु तुर ॥ छं० ३ ॥

दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना ।

दूहा—सुनि ह दूत पच्छौ फिर्‌यौ । कही राज सौं बत्त ॥
तमकि तोन लीनी न्रपति । मनों सुजोधक पथ्य ॥ छं० ४ ॥

---

1. मो०–मिस ।
2. मो०–भग्गै ।
3. मो०–दियौ ।
4. ए० कृ० को०–षोट ।
5. ए० कृ० को०–जौ षजुआ ।
6. ए, कृ० को०–जौ इवना ।
7. मो०–भाची ।

इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना।

कवित्त –चढ़िग राज प्रथिराज। सथ्य सामंत सूर भर ॥
है गै रथ चतुरंग। गोरि जंबूर नारि सर ॥
कूंच कूंच अरि भान। आइ अड्डो षग बज्यो ॥
जनु कि मेघ में बीज। तमकि तातो होइ रज्यो ॥
आवृत झरत झारत परत। श्रोन धार धर पैर चलि ॥
इत उत्त सूर देषै लरत। घरी पंच रवि रथ न हलि ॥ छं० ५ ॥

युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना।

दूहा –भिरत भान अति छोह करि। जन जन मुष मुष जानि ॥
घोर विछुट्टी दामिनी। सब चकचौंधिय आनि ॥ छं० ६ ॥

कवित्त –पग वाहिय भिरि भान। अरिन अद्धर धर किन्नो ॥
जय जय मुष उच्चार। सीस उम्मापति लिन्नो ॥
रिझरु लिग उत मंग। अमिय विष जंग सु डरयो ॥
ठंडो मंडि असद्ध। नद्दि भो अंग जु परयो ॥
बीभच्छ भनायक भय उमा। रुद्र रुद्र मुष हास हुअ ॥
सिंगार बीर अच्छर बरन। नव रस सुर्नाह नरिंद दुअ ॥ छं० ७ ॥

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना।

दूहा –स्नम भिन्नाष गंधर्व [1]हुअ। नारद तुम्मर गान ॥
संकर कल किंचित भयो। चाहुआन प्रम्मान ॥ छं० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना।

कवित्त –जीति समर भिरिभान। परी अरि मग्ग अरिष्टह ॥
रन मुक्कि न ग्रह [2]गइय। बरत अच्छरि नन दिट्ठह ॥
कहुँ त मंस कहुं अंस। हुंस कहुं सस्त्र बस्त्र कह ॥
ब्रह्मथान शिवथान। थान देषिय न जम्म जह ॥
दीथो न अगनि रवि भेद ननि। तत्व जोति जोतिह मिल्यो ॥
इस दीप चरित प्रथिराज ने। कवित [4]एह जुग जुग चल्यो ॥ छं० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना।

इह परंत चहुआन। मोष लभ्यो सु रथं रबि ॥
दिन पूरन पुनि भयो। मिटे अंकुरन भान छबि ॥

---

१. ए०–उर। २. मो०–भय।
३. मो०–अद्दव ४. मो०–एक।

दिन पूरन पुनि भयो । हुरहु भग्गी [1]उतकंठं ॥
भग्गि मनोरथ रंभ । [2]ब्रह्म भग्गी चित गंठं ॥
झल हूलत नीर काइर मुषन । प्रलय सुभर रनरत्त रह ॥
दिन पति पतझ सह तप्प तन । भान भान भेदंत [3]नह ॥छं० १०॥

राजा भान का शोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का कर कहना कि मैं होनहार नही मेट सकती ।

तब कंगुर पाल्हंन । चित्त चिंता उप्पन्नी ॥
सुनि भोटी भर मरन । सरन कोइ सुद्धि न मन्नी ॥
निसि अंतर करि ध्यान । मात कंगुर आराधी ॥
सो आई न्रप सुपन । कहे सुनि बात अगाधी ॥
[4]सोभति अनेक आनै न को । मो सेवा को परि लहै ।
भावी बिगत्ति हों पकृति हों । तो प्रधान झूठह कहै ॥ छं० ११ ॥

सवेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना ।

चौपाई-
वचनन मात कही समझाइय । निसि पल प्रमित गमत बरु आइय ॥
भोटो न्रप कन्हा [5]पैं आइय । काली कन्ह कि हंकि जगाइय ॥ छं० १२ ॥
तब कन्हा परधान बुलाइय । मात वचन की जुगति सुनाइय ॥
दिल्लीपति दल लै चढ़ि आइय । करो सुनति जिहि होइ भलाइय ॥छं० १३॥

प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिंता न करें मे शत्रु का मान मर्दन करूंगा ।

अरिल्ल -का चिंता सु विहानं । * कन्ह होइ जाके परधानं ॥
स्वामि बचन किन्नी परमानं । लरि भंजो दुज्जय चहुआनं ॥ छं० १४ ॥

भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना ।

कवित्त— सो सुपनंतर राज । रैन दिठ्ठी सु कही रचि ॥
बर बंसी [6]ससिपाल । पल्ह आयौ सु सेन सचि ॥

---

१. मो०—उप कंठं ।
२. ए० कृ० को०—प्रतियों में 'चतुरानन भगि चेत टारि रथ मग्ग मुग्गली" (मुगली) अधिक पाठ है । ३. मो०—यह ।
४. ए० कृ० को मो भति ।   ५. ए० कृ० को०—पै ।
* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम "कन्ह" था ।
६. मो०—सिसुपाल ।

लष्ष एक असवार । लष्ष दह पाइल भारी ॥
अप्प सेन उप्पर्रें । जुगं जुग गहि उच्चारी ॥
घरि अद्ध अद्ध अप सेन मुरि । पच्छि उररि दुज्जन परिय ॥
चढ़ि गयौ बीर परवत गुहा । सामना कुडल फिरिय ॥ छं० १५ ॥

पृथ्वीराज का रघुवंसराय और हाहुलीराय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना ।

बर रघुबंस प्रधान । राज मङ्गौ बिचवारिय ॥
बोलि वीर हम्मीर । भेद जानै घर मारिय ॥
बाट घाट बन जूह । धरा पद्धर नद घाट ॥
अश्व जान ग्रिमान । कौन पद्धर [1]बन बाट ॥
अगवान देहु नारेन वर । कछक मन जग्गौ सु तुम ॥
जालंधराज जंबू घनी । स्वामि ध्रम्म मइहित हम ॥ छं० १६ ॥

हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा ।

सुनि हाहुलि हम्मीर । हथ्थ जोरैं नृप अग्गै ॥
सकल भूमि को भेद । राज जानै ग्रु भग्गै ॥
अति सु बिकट बन जूह । चढ़ै सग्राम न होई ॥
अश्व पाय गज पाइ । चढन किहि ठौर कोई ॥
बन बिकट जूह परबत गुहा । बर बेहर बकम विषम ॥
दारुन भयानक अति मरल । वर प्रस्तर नहि जल सुषम छं० १७।

कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके बिकटपन का वर्णन ।

भुजंगी - बनं जा विषमं विष बाज कन्न । घनं व्याघ्र आघातता नद्द घंटं ॥
षहू जा षजूरी घनं जूथ भोरं । जिनै [3]वाम आम लगे पक मोरं ॥ छं० १८ ॥
घन पामरं जाति बंधै घनंकी । गिर देखने गनि भाजै मनकी ॥
झरै झरनि झोरं सु आघात सोरं । जिने मद्दगा मद्द ता अग मोरं ॥छं० १९॥
हयं तज्जि राजं चलै हथ्थ डोरं । इक इक्क रच्छै बिप जन्न जोरं ॥
बजे सद्द सद्दं परछंद उट्ठै । सुनै क्रन्न सोरं सु धीरज्ज छुट्टै ॥ छं० २० ॥
इकं होइ राजं पथं सत्त [4]रुद्धै । दियै हथ्थ तारं तिनं कोन [5]बद्धै ॥
तबै मुक्कले राज नारेन बीरं । ननं षग्ग मग्गं सधै इक्क तीरं ॥ छं० २१ ॥

---

१. मो०—बर । २. मो०—मइहि न हम ।
३. मो०—जिनें । ४. ना० स० को—रुंधै ।
५. ए० कृ० को०—बंधै ।

ग्रपं काम नाही ¹प्रधानं प्रवानं । दोऊ सेन रघुबंस अरिसेन भानं ॥छं० २२॥

उक्त दोनों बीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसेन खां को सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना।

दूहा— मानि मंत चहुआन को। मुकलि दीय दोइ बीर॥
ताजी तुंग समप्पियै। ²षां हुसेन दिय भीर॥ छं० २३॥

नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना।

कवित्त— तब लगि पान सु पान। हथ्थ नारेन मंडिलिय॥
नमि चरननि कर बाहि। रोस आरोहि अंषि विय॥
ताजी तुंग सु अध्धिय। जेन रुक्के बर बिय करि॥
नीतिराव कुटवार। संग दीनो नरिंद बरिंद बरि॥
बारंग बीर बज्जर बहिर। निघि निसान बज्जे सुभर॥
नेपुरह अप्प बरनी बरा। जस मुकट्ट प्रथिराज बर॥ छं० २४॥

कंगुर द्रुग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन।

बर भग्गियं बर अप्प। लियो फुरमान नरिंदं॥
लाज राज बिटयो। जानि पारस बिच चंदं॥
श्रीय काज श्रीराम। सु छल हनमंतह तैसे॥
स्वामि काज सामंत। बियो घर मझ्झब जैसे।
जस तिलक हथ्थ चहुआन को। दुज्जन दल जित्तन चल्यो॥
रवि वार सुरंग सु सत्त में। गुन प्रमान जंबुअ षुल्यो॥ छं० २५॥

नारे (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना।

पद्धरी—नारेन जंबु गढ बढयो काज। बोलहित वाम कोदहति ताज॥
दाहिने स्याग संमुह फुनिंद। नौरूप बोल बोलहित हद्द॥ छं० २६॥
हुंकरै सिंह कोदहति वाम। उत्तरै ³देबि दाहिन सु ताम॥
दिसि बाम कोद घू घू टहक्क। फुनि करै हक्क केकी पहक्क॥ छं० २७॥
उत्तरै ⁴दार वाराह ⁵सथ्थ। डहकरै सांड़ दिसि वाम तथ्थ॥
⁶बन्नर बिरूर दाहिनै सद्द। सुनियै न क्रम्म नंदनी नद्द॥ छं० २८॥
⁷कुरलंत बाम सारस समूह। मुक्कइ न गिद्धि पच्छै अजूह॥
कुरलेत कग्ग चित्तहत हीन। हंसीय बाम आनंद कीन॥ छं० २९॥

---

१. ए० कृ० को०—प्रयानं। २. ए०—खान। ३. मो०—देव।
४. ए०कृ० को०—डार। ५. ए० कृ० को०—रत्थ, हथ्थ।
६. ए० कृ० को०—बंदर। ७. कृ० कुरलेत।

हां कहत हल्ल करि गढ़ मध्य । चहुआन पिथ्य रिझ्झेव तथ्य ॥
हाहुल्लराव दीनो विरद्द । आनंद बज्जि नीसान नद्द ॥ छं० ३० ॥

सेना का हल्ला करके क्रोध से धावा करना ।

दूहा—हां कहतें ढीलन करिय । हलकारिय अरि मध्य ॥
*तायें विरद हमीर को । हाहुलि राव सु कथ्य ॥ छं० ३१ ॥
चढ़ि चल्ले बंदन [1]सुकन । भागह जे प्रथिराज ॥
बर प्रब्बत बैदेस सधि । बीर वजी रन बाज ॥ छं० ३२ ॥

युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन ।

पद्धरी—आएस लीन जुग्गिन नरेस । सजि सिलह सुभर मंडी सु भेस ॥
सिंगिनी सुथ्थ गो गंठि थाल । अरि अंग पतंग मैं पाति [2]काल ॥ छं० ३३ ॥
नेजा सुरंग बंबरि त्रिपान । अट्ठार टंक षंचै कमान ॥
घन सुरंग रत्त गजराज हालि । जानं कि भमि बद्दलनि चालि ॥ छं० ३४ ॥
अनि छुत्त दहकि धर धरकि हल्लि । चतुरंग सेन चिहुं पास चल्लि ॥
आमंत तीर सब तुंग मानि । गढ़ मुक्कि गढ्ढ ओऊंडि थान ॥ छं० ३५ ॥
आवाज बज्जि दस दिसा मान । भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥
वल्लभ सु बाल गय बाल मुक्कि।रो रथ्थ नारि चक्कि नय सु चक्कि ।छं०३६॥
फट्टै दुकूल नग नगन चढ्ढि । मंगलिक जानि वन्नौर कढ्ढि ॥
[3]फुटि अंमु वास रस गत दिषाहि।नौग्रह सु हेम गिरि मल्ल गाहि ॥छं० ३७॥
नंषंनि हार कहुं बाल नारि । तिन की उपंम बरनी सुभार ॥
तुट्टंन मुत्ति पग पगन मान । नंषंत तीय पिय को निसान ॥ छं० ३८ ॥
के दुरन धाइ चित चित्रसाल । जानंहि सुचित्त पुत्तलिय बाल ॥
ना नष्य जाइ रहै षंचि सास । मानहु कि रच्चि चित्रहु बिलास ॥छं० ३९ ॥
सुर नुकी दीन भइ बाल बाम । अग्गं सुवाल दीसहि सु ताम ॥
कविचंद सु ओपम एक बार । उतर्यो राहु रूपह सवार ॥ छं० ४० ॥
त्रिग्रहुति साल रष्षीति बाल । नह परहि बंदि ते तिहुति काल ॥
दझ्झवै [4]वाहि मंदिरत्ति रिझ्झि । चल्लै न पाइ मानं उलझ्झि ॥ छं० ४१ ॥
देषन सुमन गति भई पंग । रूठुई काम रति कोटि रंग ॥
नठुई उगति तिन देषि बाल । मानो कि रास मझ्झें गुपाल ॥

---

*छंद नं० ३० का आधा और ३१ संपूर्ण मो० प्रति मे नहीं है ।

१. मो०—समुन ।
२. ए० कृ० को०—षाल ।
३. ए० कृ० को०—फेट्टे ।
४. मो०—नाहि ।

अकेले रघुबंस राम का किले पर अधिकार कर लेना।

दूहा— बंस दुजन घर गाहि फिरि। तब लगि कुजति सपन्न ॥
एकल्ले रघुबंस ने। लै गढ़ सबर प्रपन्न ॥ छं० ४३ ॥

सब सामंतों का सलाह करके (रामरेन) राममरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना।

कवित्त— सबै सूर सामंत। पल्ह बंध्यो गढ़ लिन्नो ॥
थप्यो राम नरिंद। हथ्थ फुरमान मु [1]दिन्नो ॥
तुम रहियो इन थान। जाइ कंगुर संपत्तो ॥
मिलो जाइ प्रथिराइ। राज सम्हो प्रापत्तो ॥
आनंद फते तप तुझ्झ बल। धन समह आइय सु धर ॥
सुभ्भर सुधाइ तेरह परे। बिय दाहिम्म नरिंद बर ॥ छं० ४४ ॥

सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुबंस का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री ब्याहना।

सबै भूमि अरि गाहि। आन फेरी चहुआनं ॥
पऱ्यो भान रघुबंस। बीर बचे फुरमानं ॥
माल्हन वास नरिंद। राज रष्यो तिन थानं ॥
बर बंध्या अरि साहि। षून कढ्यो परवानं ॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर। बर रघुबंस बुलाइयो ॥
दिन देव दमनि बर भूमि बर। तदिन सु रंगन पाइयो ॥ छं० ४५ ॥

नियत तिथि पर ब्याह होना।

दूहा— परिनि बीर प्रथिराज बर। बर सुंदरी सु लच्छ ॥
देव ब्याह दुज्जन दवन। दिन पद्धरो सु अच्छ ॥ छं० ४६ ॥

भोटी राज का कन्या के रूप गुण का वर्णन।

कवित्त— [1]दच्छिन कूल सुनाभि। तुंग नासा गज गमनी।
सासनि गंध्र रु पंजु। कुटिल केसं रति तरनी ॥
बर जंघन मृदु पंथ। कुरंग लज्जे छबि हीनं ॥
इह ओपम कविचंद। हथ्थ करतार सु कीनं ॥

---

1. ए० कृ० को०—लिन्नो।

वर बरनि बीर प्रथिराज बर। घन निसान बज्जै सुबर ॥
अंबूअ राव हम्मीर ने धम्म काज दीनौ [1]सुघर ॥ छं० ४७ ॥

भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना।

बर बरनी दै हथ्थ। गुंट अप्पे जु एक सो ॥
चौर मृगंमद मधुर। ञम्म दीनि सु मत्त सो ॥
अठ्ठ सुरंग गजराज। बाज ताजी सौ दासी ॥
बर लच्छी चतुरंग। चद [2]पिष्षिय सोभासी ॥
ढिल्लीव नाथ ढिल्ली दिसा। अरनि जीनि वर परनि कै ॥
संजीव काम बोलिय सु ढिग। बर निसान बर बरनि कै॥छं०४८॥

दूहा—आयौ न्रप ढिल्ली पुरह। वर वज्जे निघोस ॥
डोला पंच नरिंद सँग। मधि सुदरी अदोष ॥ छं० ४९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कांगुरा विजै नाम पैंतोसमों प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥



1. ए० कृ० को०—सु कर।   2. ए०—दिष्षी।

अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिख्यते।

(छत्तीसवां समय)

पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्टूपुर आना।

दूहा—इक तप पंग नरिंद को। सुनि अवाज सुरताद ॥
आषेटक प्रथिराज गय। षट्टूपुर चहुआन ॥ छं० १ ॥

रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुंदर कन्या थी, और चंदेरी में शिशुपाल बंसी पंचाइन नाम राजा राज करता था।

कवित्त—रा जद्दव रिनथंभ। भान पंचाइन भारी ॥
हंसावति तिन नाम। हंसवति गत्ती सारी ॥
[1]अवनि रूप सुंदरी। काम करतार सु कीनी ॥
मन मन्नवै विचार। रूप सिंगार स लीनी।
लष्षन वतीस लच्छी सहस। अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥
अस्तम्म उदै वर [2]बक्र विच। दिष्षि न कहुं चक्रंत रवि॥छं० २।

हंसावती की शोभा वर्णन।

नाग बेनि सुनि पीन। कंति दसनह [3]सोभत सम ॥
अंषि पदम पत्र मनु। भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥
सिषा नाभि गज गत्ति। नाभि दछना वृत सोभै ॥
सिंघ सार कटि चारु। जंघ रंभा जुषि लोभै ॥
सुंदरी सीत सम वरि चरित। चतुर चित्त हरनी बिदुष ॥
सन पत्र गंध मुष ससिय सम। नैनं रंभ आरंभ रुष ॥ छं० ३ ॥

चंदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ को दूत भेजना।

गाथा—बर बंसी [4]ससिपालं। चितं जस संभलं बालं ॥
मन बयनं तन [5]बद्दै। रिनथंभं [6]मुक्कवै दूतं ॥ छं० ४ ॥

---

१. मो०—अवरि।
२. को०—चक्र।
३. मो०—सोभतं।
४. मो०—शिशुपालं।
५. मो०—बद्दे।
६. ए० कृ० को०—मुक्कले, मुकले।

चँदेरी का रणथंभ में आकर पत्र देना।

अरिल्ल—दूत आइ बर बीर सपत्ते। जग्गद हथ्थ दिए बर तत्ते ॥
हंसावति अप्पै बर [1]रंभं। तजो वेग उभ्भो रिन थंभं ॥ छं० ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चंदेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुड़कने से नहीं डरता।

कवित्त—रा जद्दव रिन भान। तमकि कर चंपि लुहट्टी ॥
बर रनथंभ उत्तरी। बीर बस्सी [2]अहुट्टी ॥
बर कग्गद [3]कर फेरि। सुध्धि करियै बर राजन ॥
मतै बैठि कुंडली। धम्म छत्री जिन भाजन ॥
बुल्लई न एन दुज्जन भिरन। तरन तार साध्रन मरन ॥
बर बीर जुद्ध चालुक्क रन। हक्कायो दुज्जन भिरन ॥छं० ६ ॥

कुंडलिया—रिन थंभह बर उप्परे। चढि गट्ठो करि साहि ॥
हंस मरत रा भान को। धसि उप्पर घर धाइ ॥
धसि उप्पर घर जाइ। सुजम जपै सब कोई ॥
जोग मग्ग लभ्भनहु। पग्ग मग्गह मत होई ॥
अलप आव संसार। सिद्ध साधकहु अथंभह ॥
सब्ब जोग सहक्रम्म। सब्ब तीरथ रनथंभह ॥ छं० ७ ॥

चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना।

कवित्त—सुनि बंसी ससिपाल। बीर पंचाइन कोप्यो।
सद्द मद्द गज जेमि। तममि धीरज सम लोप्यो ॥
रिनथंभह दिसि थंभ। दियो बर वीर मिलानं ॥
गय हय दल चतुरंग। सजे तिन वेर प्रमान ॥
बर बीर अग्ग बस्सीठ चलि। राजद्दो संमुह दिसा ॥
परनाइ कुंअरि हंसावती। सु बर कोपि आयो निसा ॥ छं० ८ ॥

चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदद के लिये।

दूहा—अस बेली रिनथंभ न्रप। फल पच्छै न्रप आइ ॥
रा जद्दव सुरतान सौं। कहि बर जाइ सुधाइ ॥ छं० ९ ॥

स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया।

कवित्त—सीय [4]रष्षि रावनहु। लंक तोरन कुल षोयो ॥
कपट रष्षि दुरजोध। पग्ग षोहनि दल [5]गोयो ॥

---

१. ए० कृ० को०—उभ्भं। २ ए०—उठही। ३. ए० कृ० को०—बर।
४. ए०—रषी। ५. मो०—षोयो।

मंतहीन बर चंद । कियो गुरबार सुहिल्लौ ॥
क्रम्म रषि रघुराइ । अजै जान्यौ न पहिल्लौ ॥
रनथंभ मंडि छंडी [1]सरन । भिरन कह्यो बर बीर सब ॥
ससिपाल वीर वंसी [2]बिलस । हम देषै आयो सु अब ॥ छं० १० ॥

जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं ।

जीवन बलह विनोद । अलह नब्बी घन मंगहि ॥
जीवन बलह विनोद । आस आसन्न असुर गहि ॥
जा जीवन सुदर । सुगंध बर बधव लोकै ॥
जा जीवन काजें । कपूर पूरन प्रभु कोकै ॥
जा जियन देव दानव मिलन । किलमन कलि आवन गवन ॥
तिन भवन छंद छंडित गहर । तजित तुंग तन सो भवन॥छं०११॥

भानुराय यद्धव का बसीठ की बात न मानना ।

दूहा – रा जद्दव बर भान नें । वहु मंग्यो बर हट्ट ।
वाजी नार पयानरै । तुंगी तेरह ठट्ट ॥ छं० १२ ॥

बसीठ का लौट कर चंदेरीपति की फौज में जा पहुंचना ।

इह सुनि बीर बसीठ उठि । भानह हल्यो न हल्ल ॥
तीस कोस सम्हो मिल्यो । बर पंचाइन हल्ल ॥ छं० १३ ॥

पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखां हुजावखां आदि सरदारों का आना ।

कवित -अगिवान उजबक्क । धाइ भाई परवानिय ॥
ता पच्छैं साहाब । षान बधे तुरकानिय ॥
ता पच्छैं नूरी हुजाब । सेई सवारिय ॥
केलीषान कुलाह । सब्ब सेनी कुटवारिय ॥
बानिक्क बीर दुल्लह सुजर । भाइ षान रन अंभ बर ॥
ससिपाल बीर बंसी बिलस । बर आयो रनथंभ पर ॥ छं० १४ ॥

दोनों घनघोर सेनाओं सहित चंदेरी के राजा का आगे बढ़ना ।

दूहा - पचाइन बल पष्षरै । [3]थह रनथंभह काज ॥
कंक बंक बर कट्ठनह । चढ़ि चल्ल्यो रन राज ॥ छं० १५ ॥

चंदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन ।

भुजंगी -
ससीपाल बंसी चढ्यो कोरिरथ्थं । मनों बंक चक्रं धस्यो आनि पथ्थं ॥
जऊं जुम्भनं जूथ धावै दुरंगा । करै कूंच उंचं [4]उरज्जै तुरंगा ॥ छं० १६ ॥

---

१. ए० कृ० को०–सरन ।
२. मो०–विमल ।
३. ए० कृ० को०–हुप, हुप्प ।
४. मो०–उग्गी, उरजै ।

कहै बत्त रत्ती मुषं रत्त आहौ। कहैं अश्व आठ रनथंभ ढाहौ ॥
ससीपाल बंसी चंदेरीय रायं। उठ्यौ छत्र सीसं कवी देषि गायं ॥ छं०१७ ॥
नगं पंति मुत्ती सिरं हेम दंडी। ग्रहं अट्ठ मानों ससी मेच्छ मंडी ॥
फिरी पंति राई रिनंथंभ घेर्‍यौ। मनों भावरी भान सुम्मेर फेर्‍यौ ॥छं० १८॥

रनथंभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना।

दूहा घन घेर्‍यो निरथंभ पर। लिषि ढिल्ली परवान ॥
तब जद्दव रा भान ते। दिय कग्गद चहुआन ॥ छं० १९ ॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना।

कवित्त रा जद्दव बीराधि। बीर गुज्जह अनुसर्‍यौ ॥
हयदल पयदल गज। अरोहि रिनथंभ यौ अर्‍यौ ॥
धंधेरा धंधेल। चंद ससिपालह बसिय ॥
अध लष दलहि हिलोर। जोर गरुवत्तं गसिय ॥
हम्मीर राव हाड़ा हठी। षीची राव प्रसग दुह ॥
प्रारंभ करै संभरि धनी। जोरं बंध तुमान सह ॥ छं० २० ॥

उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिंहजी के पास कन्ह को भेजना।

दूहा -सुनि कग्गद चर चित कै। तिथि साते चहुआन ॥
समर सिंघ रावर दिसा। गुर जन मुक्यो कान्ह ॥ छं० २१ ॥

कन्ह का समरसिंह के पास पहुँच कर समाचार कहना।

कवित्त बर पंचाइन सबर। सबर बसी ससिपालं ॥
घेर्‍यौ तिन रनथंभ। सुबर जपे बर कालं ॥
मान बीर पुक्कार। धाइ आई ढिल्लीवै ॥
अद्ध अद्ध पहु पंग। सथ्थ अद्धौ बर है वैं ॥
जोगिंदराव जग हथ्थ बर सहन रंभ उप्पर सबर ॥
कालंक राइ कप्पान बिरद। [1]तुम आओ रचि सेन बर। छं० २२॥

समर सिंह जी का सेना तयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे।

दूहा -चित्रंगी चतुरंग सजि। बर रनथभ सु काज ॥
बर सहेट रावर समर। आवन बदि प्रथिराज ॥ छं० २३ ॥
चलत कन्ह चहुआन बर। कहि चतुरंगी राज ॥
तुम अग्गं हम आइहैं। आवन सुधि प्रथिराज ॥ छं० २४ ॥

---

१. मो०-तुम आओ सेना बरन।

तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम से आगे आ पहुंचेंगे।

पंच कोस बर सट्ठि अग। चीतौरह रनथंभ ॥
तुम अग्गें हम आइहैं। महन रंभ आरंभ ॥ छं० २५ ॥

कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले हैं और राजा भानपर बड़ी विपत्ति है।

कवित्त - महन रंभ आरंभ। कन्ह चालत मन मंडिय ॥
अट्ठ दीह हम अग्ग। राज तेरसि ग्रह छंडिय ॥
बर बंसी ससिपाल। गंज लग्गिय न्रप [1]भानं ॥
घरति घवर [2]तह नाम। सेत मिसि देही दानं ॥
अग्र हून ग्रहून रिनथंभ मति। इह सुमित्र आयौ पढ़न ॥
कालंक राइ कप्पन विरद। महन रंभ बढ्यौ बढ़न ॥ छं० २६ ॥

समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें।

सुनि कन्हा चहुआन। रीति आहुट्ठ ग्रेह कुल ॥
सरन रष्षि कड्ढइन। मिलै जो कोटि देव बल ॥
संग्रामं हरषै न। सुबर षत्री बर धायो ॥
रन रष्षै रजपूत। छत्र छल छांहू नवायो ॥
द्रिग रत बल बंसै सुबर। बेद धम्म बंध्यो चवै ॥
कालंक राइ कप्पन विरद। कित्ति काज नव निधि द्रवै ॥छं०२७॥

समर सिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना।

दूहा - तिय हजार तेरह तुरंग। हस्त मत्त बर तीन ॥
मनि गन मुत्तिय माल दष। रष्षे कन्ह सु बीन ॥ छं० २ ॥
पूज कुलह चहुआन दय। वे सब मनि [3]गनि साह ॥
लच्छिय सब हथ्थिय ग्रहन। दीना सत्थ समाहि ॥ छं० २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध वर्णन

चले कन्ह बर संग नृप। समर सजग्गी आउ ॥
तेरसि त्र्यंबक बज्ज है। घरकि बीर उमराउ ॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिंह जी की यात्रा की मुहूर्त होगा।

कवित्त - घरी पंच बर सोम। देव दसमी ग्रह सारिय ॥
दुष्ट दान करि मंत्र। सुगुर पंचमि बुध [4]चारिय ॥

---

१. ए० कृ० को०-मान। २. ए० कृ० को०-नाहि।
३. ए० कृ० को०-बर साहि, बर साई। ४. ए० कृ० को०-चारिय।

अद्ध चार भय सूर । फेरि नव मीन न भग्गा ॥
असुर सुगुर वक्रयो । छड त्रिय थानति अग्गा ॥
चित्रंग राइ रावर समर । महा जुद्ध संग्राम रजि ॥
दस कोस बीर मेलान दै । सुबर बीर चतुरंग [1]सजि ॥ छं० ३१ ॥

यात्रा के समय समर सिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन ।

पद्धरी - सजि चल्यौ समर रावर सु तथ्थ । जानै कि सरित सागर समथ्थ ॥
बज्जे निसान दिसि दिसि प्रमान । मानो समुद्द गिरि [2]गजिय थान ॥छं०३२॥
सुझ्झै न भान रज मझ्झि मलीव । चक्कीय चक्कवे चलि सु कीव ॥
च तुरंग सेन चल्लिय सुरंग । बहु रुक्कि अभ घन नभ्भ मग ॥ छं० ३३ ॥
सहनाइ भेरि कल कलनि वज्जि । जल होइ थलनि थल जलन रुझ्झ ॥
उन्नयौ मेह हय गय प्रमान । मद [3]चलहि गध गज शिर समान ॥ छं० ३४ ॥
बर रंग नेज कल मिली त हि । बर बरन बीच सोहन जाहि ॥
पाइन पयाल द्रुमपाल हल्लि । चतुरंग सेन चित्रग च लि ॥ छं० ३५ ॥
घन जिम निसान बज्जे विमाल । जोगिंद मत्त जग हथ्थ भाल ॥
पावस समूह रावर नरिंद । भिषजार भट्ट मोरन गिरिंद ॥ छ० ३६ ॥
कोकिल नफेरि पप्पीह चीह । बोलत मद्द कवि मधुर जीह ॥
बरषहति दान गज मद्द मान । फरहरहि ध ज बगाति मान ॥ छं० ३७ ॥
अंकून सद्द झिंगुर झंकार । सुझ्झहि भमद्द बदि श्रवन यार ॥
पावस समूह करि समर चल्लि । रिनथभ दिसा मेलान मल्लि ॥ छं० ३८ ॥

सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के बाएं ओर पृथ्वीराज और दहिने ओर से समर सिंह जी का आना ।

कवित्त बाम कोद प्रथिराज । छडि रनथभ संपत्तो ॥
बर दच्छिन समरंग । बीर जोगिंद प्रपत्तो ॥
दुहुन बीर गढ चंपि । सुकवि ओपम तिन पाई ॥
कुंभ अंब डोलंत । हथ्थ बरनै रस माई ॥
चहुआन सेन चित्रंगपति । चावद्दिसि बर विड्डुरिय ॥
बर दोह छंडि चंदेर नृप । जुग्गिनि [4]ह्वै सम्हो भिरिय ॥ छं० ३९ ॥

दूहा —उत चंपे चहुआन ने । इत चंपे चित्रंग ॥
मूंदि सास अरि सम दरी । जनु [5]चंप्यौ सु प्रदंग ॥ छं० ४० ॥

१. ए० कृ० को०—राजि । २. ए० कृ० को०—गज्जि ।
३. मो०—मधि । ४. मो०—चीह ।
५. मो०—मत्त । ६. ए० कृ० को०—चंपी ।

पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समर सिंह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी।

कवित्त –प्राची दिसि चहुआन। चढ्यो पच्छिम चतुरंगी॥
दुहूं बीच रिनथंभ। बीच अरि फौज सु रंगी॥
दुहूं सेन [2]समकंत। [3]नग्ग मत्ता गज अग्गी॥
मनु राका रवि उदै। अस्त होते रथभग्गी॥
ससिपाल बीर बंसी [4]विमल। दुहुन वीच मन मेर हुअ॥
षह मिलै षेह षग्गह हन्यो। चवै चंद रवि दंद दुअ॥ छं० ४१॥

किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन।

अनल पंष अंकुन्यो। जुद्ध पंचाइन मंड्यो॥
इक सपंष षग वीय। पेट रनथंभ सु छंड्यो॥
पीठि पंड पावार। सु वर हूओ नष पंप॥
एक मुष्ष वन बीर। धीर उभ्भौ विय मुष्षं॥
निम्मान बंभ बर पुंछ कवि। पुच्छ पाइ साधन समर।
दुरु लोह कढ्ढि परियार तें। समर मोह भूल्यो अमर॥ छं० ४२॥

उस युद्ध भूमि को यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन।

भुजंगी मिले आइ धाय सु आहुट्ठ राई। लगे बीर बथ्थं लगे लोह धाई॥
कढी बंक असमी समी बीय गत्ती। बरं ज्वाल सूर मनों हव्वि तत्ती॥छं०४३॥
करै हक्क सीसं महा मार मारं। धरं कित्ति सीसं तुर पार पारं॥
बजे सस्त्र बीसं [6]तुरित्तं बषानं। तिन सद्द अग्गे दुरे वे निसानं॥ छं० ४४॥
धकै आइ सूरं बिधं कन्ह हथ्थं। थकी रंभ उतकंठ मनो पंग तथ्थं॥
लगे धार धारं धरक्कं विवानं। गहै हथ्थ छुट्टं चलै देवथानं॥ छं० ४५॥
कटै सुंड डंडं कथै दंत तथ्थ। मनो ज्यों पुलदी कढ़े कंद हथ्थं॥
धनं धक्क हथ्थं रस रक मत्तं। मनों दंपती सजुधं की सुरत्तं॥ छं० ४६॥
परै ढाल ढीवाल गज ढाहि सूरं। महा दिष्षियं बीर रूपं करूरं॥
कटै कंध सूरं उड़े छिछ भारी। झरे फूल तथ्थं गिरं डुंड झारी॥ छं० ४७।
जगी जोगिनी जुद्ध देषे [7]जरूर। उड़े रेंन रावत्त कच्छे करूरं॥
धराधाव श्रोनी पलं भद्द जानं। गजे सूर जुद्धं विसानं दिसानं॥ छं० ४८॥
तपे तेज तेजं सु नेजं सुरंगं। मनो विज्जमाला चमक्कंत चगं॥
धनुष्षं कमानं धरे मेघ मद्दं। रवै डंड डंडं नफ़ेरी सबद्दं॥ छं० ४९॥

---

१. ए०–चतुरग। २. ए० कृ० को०–चमकंत।
३. ए० को०–नग, नगा। ४. ए० कृ० को०–बिमल।
५. ए० कृ० को०–घाई। ६. मो०–तुरित। ७. ए० कृ० को–करूरं।

बहै षग्ग बानं मनौं बग्ग पानं । रचै चित्त चहुआन षेतं किसानं ॥
भिरै भंति भारी परै जूह राजं । ढरै घाइ धंधेर बंधी सु पाजं ॥ छं० ५० ॥
[1]इलावार पूरं सरित्तान श्रोनं । तिरै रुंड मुंडं मछं जानि तोनं ॥
मुषं मेद पाटं सु घाटं पुमानं । भिरे भौर भारी मु ग्रब्बे उमानं ॥ छं० ५१ ॥
गहै नाग मुष्षी अरी जा उठायौ । मनौं चंद संदेस पच्छै पठायौ ॥
ग्रहै रंभ मालं भरं ग्रीव बालं । रचै ईस सीसं गरै रुडमालं ॥ छं० ५२ ॥
पर्‌यौ षग्ग षीची भरं चित्रकोटं । जलं पष्ष मच्छी घरं जानि लोटं ॥
तहां गत्ति मत्तं न सुष्षं न दुष्षं । थकी जंममालं लरे सूर पिष्षं ॥ छं० ५३ ॥
महादेव जुद्धं दिष्यौ मेस यानं । धनी चित्रकोटं [2]धसी सेन जानं ॥छं० ५४॥

चंदेरी की सेना और रुस्तमखां के बीच में रावल समर सिंह जी का घिर जाना।

कवित्त – उन बंसी सगिराल । इनै रुस्तम्म दुद बल ॥
बिचै समर रावर । नरिंद बीरन गाहरमल ॥
उतै तेग उब्भारि । इनै मिगनि घरि बानं ॥
छंडि निधक अरियान । उग्गि पारी परि तानं ॥
रन तुंग अवर चिने रिपुन । हनि मुष रुप मुक्कै नहीं ॥
भर सुभर दार रप्पन सु बर । समर समर उब्भौ पही ॥छं०५५॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद करना।

सम लरत्त बर समल । दिष्षि चहुआन कियो[3] बल ॥
बांम मुष्ष अरोहि । नंर असि झल्ल मुपह झल ॥
सौ सामंत छै सूर । मध्य प्रथुराज सु धायौ ॥
सार कोट अरि जोट । पग्ग पल पंभ हलायौ ॥
जै जैत देत जं जै करहि । देव बीर आनंद बढ्यौ ॥
तारुन्न तुंग तन तेज बर । असि पहार धर भर चढ्यौ ॥छं० ५६॥

रनथंभ के राजा भान का समर सिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना।

दूहा – रा जदव रिनथंभ तजि । मिलिय राव प्रति मान ।
समरसिंह रावर सु प्रति । चरन चंपि चहुआन ॥ छं० ५७ ॥

---

१. मो०–इलाबार।
२. ए० कृ० को०–मथी।
३. ए० कृ० को०–कीय।

समर सिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

★दिन धवळो धवली दिसा। धवल कंध भारथ्थ ॥
समरसिंघ रावर मिल्यौ। चाहुआन समरथ्थ ॥ छं० ५८ ॥
मद्धि फौज प्रथिराज बल। रा जद्दव दिसि बाम ॥
समरसिंघ दछ्छिन दिसा। चढ़ि संग्राम सु काम ॥ छं० ५९ ॥

चंदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के वीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन।

छंद त्रिभंगी—ससिपालय बंसी, मिलि रन गंसी, बीर प्रसंसी, बर बीरं ॥
सँमुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं ॥
तुरसी रस मंजरि, पति [1]समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, श्रृंग रारी ॥
बर टोप सु कंतिय, सूर सुभंतिय, बद्दर पंतिय, जम रारी ॥ छं० ६० ॥
गोरष्षन पाइय, कंठन लाइय, कढ़ि असि धाइय, विरुझाई ॥
परि जोगह सोकं, दिय दिषि धोकं, बसि सुरलोकं सरसाई ॥
†वीरंग विचारे, डक्क हक्कारे, मंत्रं मारे, उभ्भारे।
अप्फार कि फारं, असि बर तारं, बंसेति मारं, सिर मूरं ॥
बर टोप समेतं, सिप्पर तेतं असि आलेतं, हँसि हूरं।
[2]हारी रउ चिन्हं, हथ्थ न लिन्हं, भयउ ममन्नं, ब्रह्मचारं ॥ छं० ६२ ।
बर दरसि कपालं, बिय जिय मालं, हसि बर बालं किल कालं।
‡नचि नारद पूरं, वजि रन तूरं, बरि बरि मूरं, धरि मालं ॥
कर ब्रम्म सु तुट्टं धर धर लुट्टं, ओपम घट्टं, कविराजं।
ओपम्म विराजं, ज्याजल काजं, मच्छवराजं, सक साजं ॥ छं० ६३ ॥
चष छिछ्छत श्रोनं, लगि घटि कोनं, उप्पम होनं, घन घाई।
कवि ओपम तासं, सूर विलासं, माधव मासं, फिरि आई ॥ छं० ६४ ॥

युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना।

कवित्त—दस क्रम्मन अरि ठेल। मुरिय पंचाइन सेनं ॥
बीर छत्रक उत्तरी। मुक्ति भिरि रन रत नैनं ॥

★ "मो" प्रति छन्द ५८ और ५९, उनके बाद आया है प्रसंग मे यही मिल-मिला ठीक जँचता है।

१. ए०—समनेजरि। † यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है।

२. ए० कृ० को०—हारी चिर चिन्हु।

‡ यह पंक्ति ए० को० कृ० तीनों प्रतियों में है, केवल मो० प्रति में नहीं है, परंतु इस का ठाप गौण मालूम होता है।

मुरस पियो प्रथिराज । प्रगटि अंषिन जल झल्किय ॥
पी अधरा रस पीन । प्रातसो की मुष जक्किय ॥
चहुआन सु बर सोरह परिग । समर सिंघ तेरह त्रिघट ॥
ससिपाल बीर बंसी सुबर । सहस पंच लुथ्थय सुभट ॥ छं० ६५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना ।

दूहा - निग्रह [1]नर बंछत न्रपति । अहि गवन्न सुष वान ॥
पंच अनी करि षेत चढ़ि । षेत अरक चहुआन ॥ छं० ६६ ॥

युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप ।

[2]जिन गुन प्रगटत पिंड । सोई मिघार मूर बल ।
म्रत्त [3]कुलस तन जान । लभ्भ कित्तीति सुभट कल ॥
जिहि मरन्न मन सूर । मरन जेही मन उत्तरि ॥
पंच पंच पथ गोअ । फिर न एक्कु नर नर ।।
घरियार रूपि सु कुठार घट । तत मुक्कि लग्गी नदिय ॥
सिचीय किस्ति तर अमिय में । धुअ थ्यापं लग्गंन दिय ॥ छं० ६७ ॥

हंसावती की घरयार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन ।

दूहा -बाल कुंअर घरियार घ रे । विय तरवर बर छीह ॥
जिम जिम लग्गे तिम अरिय । ढाहन ढाहै दीह ॥ छं० ६८ ॥

सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन ।

कुंडलिया - पंच चिराकन मझ्झ न्रप । सो सोभित जुग्गिद ॥
मुनि ग्रह सत्तह बीस थह । लिय पारस मडि चंद ॥
लिय पारस मंडि चंद । सुभ्रित ससिपाल सु बंसिय ॥
अप्प सामि बर जानि । किन्नि जपै रन धंसिय ॥
सुनिय बेंन बुल्लियै । घोरि ढंकी अरि रंचै ॥
कपट द्रोह करि इक्क । पथ्थ टारै [4]पच पंचै ॥ छं० ६९ ॥

प्रातः काल होते ही समर सिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना ।

दूहा -इम निसि बीर कढिय समर । काल फंद अरि कढ्ढि ॥
होत प्रात षित्रंग [5]पहु । चकाव्यूह रचि ठढ्ढि ॥ छं० ७० ॥

---

१. ए० कृ० को०-निग्रह नबर ।
२. ए० कृ० को०-प्रतियों में यह छन्द दुबारा लिखा हुआ है । पाठ भेद कुछ भी नहीं है ।
३. ए० कृ० को०-कुसल ।
४. मो०-बर बीह ।
५. ए० कृ० को०हय ।
६. ए० कृ० को०-पंच ।
७. ए० कृ० को०-पंग ।

समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन।

कवित्त –समरसिंघ रावर। नरिंद कुंडल अरि घेरिय॥
एक एक असवार। बीच बिच पाइक फेरिय॥
मद सरक्क [1]तिन अग्ग। बीच सिल्लार सु भीरह॥
गोरंधार विहार। सोर छुट्टै कर तीरह॥
रन उदै उदै बर अरुन हुअ। दुहू लोह कढ्ढी बिभर॥
जल उकति लोह हिल्लोरही। कमल हंस नंचै [2]सु सर॥छं०७१॥

युद्ध वर्णन।

रसावला-करं लोह कढ्ढै, रयं रोस बढ्ढै। अंगं अंग गढ्ढै, कथं सूर क्ढ्ढै॥
॥ छं० ७२॥
असी अंच उढ्ढै, थटं थट्ट गढ्ढै। हकं सीच रढ्ढै, षगं सूर कढ्ढै॥ छं०७३॥
गिधं लोल रट्टै, द्रुनं नंच ठट्टै। थनी रंभ पट्टै, अंनं तुट्ट जुट्टै॥ छं० ७४॥
सिरं अंग बढ्ढै, लोहं पच्छ कढ्ढै। करं किति मढ्ढै वकं बीन नढ्ढै॥छं०७५॥
मुषं चंद पढ्ढै, ...। सिंघ सम्भ रंनी, लुध्यि लुथ्थ घन्नी॥छं०७६॥
संधि तुट्टं ऐसे, कंधं बध्य जैसे। .. ..., ...॥ छं० ७७॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे दल पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

दूहा – ससरसिंघ दिष्षत सुबर। उप्पारे स्व भान॥
इह समान दुज्जन दवन। तिरछौ परि चहुआन॥ छं० ७८॥

चंदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना।

रसावला – इसी सेन राई, चंदेरी सुभाई। षगं षोलि धाई, अरी सीस घाई॥
। छं० ७९॥
भिरंतं बजाई, रजं तम्म छाई। बिरुझ्झाई धाइ, असी बंक झाई॥ छं०८०॥
कि रच्चं उढाई, ससी ब्यंव पाई। सुतं [3]राति छाई, कवी किति गाई॥
॥ छं० ८१॥
उमा ज्यों बताई, बरं पंच पाई। चवंसठ्ठि ताई, ...॥ छं० ८२॥
लही मुग्ति रासी,अब्बिअबी नासी॥उपं राज जीतं, सु भारथ्थ बीतं॥छं०८३॥

रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का द्वन्द्व युद्ध और चन्देरी के राजा (बीर पंचाइन) का मारा जाना।

कवित्त—बर बंसी ससिपाल। समर रावर रन [4]जुढे॥
अमर [5]बंध चित्रंग। बीर पंचाइन बढे॥

---

१. ए०—बिन। २. मो०—सु।
३. ए० कृ० को०—रारि। ४. मो० सझे। ५. ए० कृ० को०—बांधे।

सबै सथ्य सामंत । षेत ढोह्यो विरुझाइय ॥
गुरिम गयौ अरि ग्रहन । लद्ध नन लुथ्थि न पाइय ॥
प्रथिराज बीर ओंगिद न्रप । दिष्ट देव अंकुरि रहिय ॥
बंधनह बत्त बंधन दिवन । दिष्टकूट हसि हसि कहिय ॥छं० ८४॥

युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना । हुसेन खां और कन्हराय का घायल होना ।

लुट्टि लच्छि चित्रंग । राज रिनथंभ [1]उवारे ॥
षेत ढुंढि चहुआन । कन्ह चहुआन उपारे ॥
उभै घाइ बर अस्सु । घाइ आट्ठ अठोभिय ॥
पंच घाइ हुस्सेन । षान चौडोल घालि लिय ॥
प्रथिराज बीर बीरंग बलि । निसि सपनंतर अद्ध पहि ॥
[2]यागत्ति जागि देषै न्रपति । तबह कन्ह जलथान लहि ॥छं० ८५॥

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्दवदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना ।

हंस [3]सुगति मानर्नी । चंद जामिनि प्रति घट्टी ॥
इक तरंग सुंदरि सुचंग । [4]हथ नयन प्रगट्टी ॥
हंस कला अवतारी । कुमुद बर फुल्लि समथ्थै ॥
एक चित्त सोइ बाल । मीत संकर अस रथ्थै ॥
तेहि बाल संग मैं पूहुय लिय । बरन बीर संगति जुवह ॥
जाग्रत्त देवि बोलि न कछू । नवह देव नन मान वह ॥ छं०८६ ॥

पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी भविष्य स्त्री हंसावती है कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूं ।

दूहा—★सो सुपनंतर देषि वह । मो तुअ बर बर नारि ॥
बे बर गज्जि नरिंद तूं । हँसि हँसि पुच्छि कुंआरि ॥ छं० ८७ ॥
एन बयन रुपहु रवन । इन गुन इन उनमान ॥
धीरत्तन पूजंत बर । सुनहु तो कहूं प्रमान ॥ छं० ८८ ॥

---

१ मो०—उषारे । २. ए० कृ० को०—मति ।
३. मो० बति । ४. मो०—हुष ।

★इस छन्द में यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किसी का नाम स्पष्ट नहीं है परंतु छन्द के भाव से यह ज्ञात होता है ।

हंसावती के स्वरूप गुण और उसकी वयःसन्धि
अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन ।

हनूफाल –सुनि सुबर बरनी रूप । तिहि चढन बे न्रप भूप ॥
दिन धरत सैसव एह । बालत्त तज्जन देह ॥ छं० ८९ ॥
वय काम दिन पछितान । आवंन दिन सुभ जानि ॥
इन काज असुभ प्रमान । ज्यों महिव तजि अनि ध्यान ॥छं० ९०॥
घन धनक वेदी काम । [1]द्रिग काल गोरभ वाम ॥
जंजीर भौंह चढाइ । देषंत काम बजाइ ॥ छं० ९१ ॥
बरछिन्न उन्नित बाल । बर काम चित चढि साल ॥
चित हरुअ गरुअ सुहंत । गुर गरू होत पढ़त ॥ छं० ९२ ॥
जिम जिम सु विषा आइ । तुच्छ भरत तुछ सरसाइ ॥
मति लघू अलघु प्रमान । [2]अंब निबद समान ॥ छं० ९३ ॥
बर मत्त पिछली जीअ । तहां रसन [3]हीनात पीय ॥
गति हंस चढ़त सुभाइ । सुत बंटि जसु अभिसाइ ॥ छं० ९४ ॥
सैसव सु सुतन सुषाइ । जोवन्न रस सरसाइ ॥
तिसहंत गजगति जानि । .. .. ॥ छं० ९५ ॥
जसु पन्न चित क्रम मान । जिम संधि प्रथम गियान ॥
प्राचीन मुष रंग सूर । प्रगघो सु काम करूर ॥ छं० ९६ ॥
बर बाल महि सरुप । घट धरक कपट अनूप ॥
वय बाल जोवत काज । किप कपट उत्तर लाज ॥ छं० ९७ ॥
मधु मधुर [7]अमृत जानि । बेजियन सीषत बानि ॥
मति मत्ति बरनी षाइ । तहां बाल बेस [8]छिकाइ ॥ छं० ९८ ॥

पृथ्वीराज उक्त बातों को सुनही रहा था कि उसी समय
भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना ।

कवित्त – कहि सुपनंतर [9]नृपति । सु वह श्रोतान बढ़ाइय ॥
तव लगि [4]भान नरिंद । बीर दुजराज पठाइय ॥
[10]वर दुजराज पठाय । रतन उर कीनो अप्पी ॥

१. ए० कृ० को०–द्रग का लगो सुभ बांम । २. मो०–अंब विन्द समान ।
३. मो०–हीनित । ४. मो०–अभि अनु माइ ।
५. ए० कृ० को०–जोवन । ६ ए० कृ० को०–उत्तम ।
७. मो०–छुकाय । ८. मो–उपति ।
९. ए० कृ० को०–भान ।
१०. ए० कृ० को०–"इम हथ्थिय भनि सुत्त रतन उर किन्हो रप्पी" ।

तिथ पंचम रवि भोम। लगन प्रथिराज सु थप्पी ॥
कमधज्ज सुरीज किन्नो कनक। किनि लच्छी दुज्जन वहिय ॥
तप तेज भान मध्यान ज्यों। तिन चौहान चवद्द कहिय ॥ छं० ९९ ॥

और उक्त रनथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन।

बर पंचाइन समर। दंड मुक्किय बर मुक्किय ॥
मथी सेन सम्मूह। रतन कित्ती फल रुक्किय ॥
लच्छि भाग चहुआन। हथ्थ हसावति लद्धिय ॥
अमृत भाग चित्रग। सेन हाला हल सद्धिय ॥
बारुनी बीर अस्सिय सु भर। अग्नि पाइ जस रतन लिय ॥
मह महन रंभ हथ्थह कपट मिभ सीस बर अप्प लिय ॥ छं० १०० ॥

लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का वारू बन
को शिकार खेलने के लिये जाना।

दूहा—तब लगि मंतन लगन दिन। न्रिप आषेटक जाइ ॥
बारू बन उभ्भो न्रपति। मात दरस निस गाइ ॥ छं० १०१ ॥

पृथ्वीराज के बारू बन मे शिकार करते समय सारंग
राय सोलंकी का पितृबैर लेने का विचार करना।

कवित्त—बारु विरल न्रपति। राइ आषेटक सारिय ॥
सारंग चालुक चूक। रूक तिहि बेर विचारिय ॥
समरसिंघ चढ़ि हथ्थ। हथ्थ आवै चहुआन ॥
पिता बैर बहु बध। हुओ कर नार समान ॥
बर बैर सपुत्तन निक्कसै। ज्यो आगम अरि अगयो ॥
बर बीर बैर ससि सनिहु लगि। गुन प्रधान बर मगयो ॥ छं० १०२ ॥

सारंगदेव का कहना कि पितृबैर का लेना वीरों का मुख्य
कर्तव्य है।

दूहा—बैर काज बर नंद सुत। बर बैरोचन हत्त ॥
करि बसीठ माली सुतन। बैर पुब्ब मन जित्त ॥ छं० १०३ ॥

कवित्त—सुनि मंत्रीवर बैर। राम रावन ★सिर सज्जिय ॥
बैर काज ग्रहभेद। करन उरजन सिर भज्जिय ॥
बैर काज सुग्रीव। बाल जान्यो न बंध्रमति ॥
बैर बीति सुर इंद्र। बैर चिंतिजै इसी भंति ॥
चहुआन समर लच्छै जु तत। बैर सूर जिम ग्रेह लिय ॥
बर चूक बाल अग लग्गिहै। किति एक जुग जुग चलिय ॥ छं० १०४ ॥

[1]किस्ति काज परधान । राज राजन सुख चुक्किय ॥
किस्ति काज विक्रम्म । देश देसह धर लुक्किय ॥
किस्ति काज पंवार । सीस जगदेव समप्पो ॥
किस्ति काज बर सिवरि । [2]मध्य कर कट्टि सु अप्पो ॥
‡ रप्पंत [3]अचल गल्हां जियन । कीरति सब जग भल कहै ॥
सकंग एक जुग्गन विरह । रहै तो गुर भल्हा रहै ॥ छं० १०५ ॥

दूहा— केहरि कल केहरी हिरन । करन जोग में ईस ॥
कोइक उत्तर देषिये । गल्ह बोहंथी सीस ॥ छं० १०६ ॥

सारंग राय★ का नागोर के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट मत में बांधना ।

कवित्त— मंगल गढ़ मंगलिय । नयर नामवह मिलंतह ॥
है हाड़ा हम्मीर । नैन बाहू सु-जुरंतह ॥
पारधिरा प्रथीराज । चूक मंड्यो चालुक्कां ॥
हाड़ा सों हथलेव । मूल कढ्ढन [4]सालुक्कां ॥
भंभरी भीर भौनिग तनय । परि पगार उद्दिग तन ॥
पंचारि राइ पट्टनपती । तिवर तेग बत्ते कहन ॥ छं० १०७ ॥

★ सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योता भेजना ।

दूहा— भोजन मिस चालुक्क ने । [5]पाइक पाइक कीन ॥
ग्रेह कपट्ट सु मंडि कै । करि जु निवंतन कीन ॥ छं० १०८ ॥
बरन राव रावन्न ढिग । बर चालुक्क सु थान ॥
समर सिंघ चहुआन कों । न्योतन को बलवान ॥ छं० १०९ ॥

★ "सारंग राय" भीम देव का पुत्र था । यद्यपि यह बात इस छन्द में स्पष्ट नहीं लिखी गई है परंतु इस "पिता बैर बहुबन्ध, हुओ कर नार ममान" पंक्ति से उक्त आशय निकलता है ।

१. ए० कृ० को०—किसी को परधान राज हरिचन्द म मंचिय ।

२. ए० कृ० को०—मंम ।   ३. ए० कृ० को०—अचर ।

‡ ए० कृ० को०—प्रतियों में "किसी काज प्रिय राम राज आभीछन दोनों" पाठ है और दूसरी पंक्ति "किसी काज विक्रम्म जैसे देसह धर लुक्किय" नहीं है ।   ४. ए० कृ० को—चालुक्कां ।

★इस प्रबन्ध में चालुक शब्द से सारंग राव से ही अभिप्राय है ।

५. कों० मो० छाइक ।

यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट-चक्र रचना।

कवित्त—एक ग्रह बिच बीच। सुभर [1]सन्नाहति पंचे ॥
पंच षट्टि पंचाम। बीर अंबी रज संचै ॥
तक्र लोह सह दीन। करै चालुक्क सु चल्लै ॥
आषेटक चहुआन। समर रावर बर मिल्लै ॥
भोजन्न भंति रस बीर बर। बर प्रबोध ग्रह दिसि चल्लिय ॥
मन तन्न मुष्ष मिट्ठे मघन। सुबर बीर संगह हल्लिय ॥ छं० ११०॥

हाड़ा राबा का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर शिष्टाचार करना।

दूहा—आज हनंदे पाप बर। ग्रह बहु बड़राइ ॥
समरसिंघ चहुआन मिलि। दुष्ष हनंदे आइ ॥ छं० १११ ॥

कवि का हाड़ाराव पर कटाक्ष।

बर प्रमान ग्रह ग्रेह कै। भेद चूक तिन जानि ॥
घालि पिटारी उरग कों। मेल्है को ग्रह आनि ॥ छं० ११२ ॥

पृथ्वीराज को नगर में पैठतेही अशकुन होना।

गाम बाम पैसत न्रपति। बन न्रप बोलत सद्द ॥
फेरि बीर दष्षिन भयो। बैरी करन निकंद ॥ छं० ११३ ॥

ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना।

करिय सबर मनुहार न्रिप। चित्त धरं धरकत्त ॥
भोजन विधि विधि सकल भय। अकल अपुरब बत्त ॥ छं० ११४ ॥

उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ।

कवित्त—दै किपाट बिहुंकोद। राज मुक्यो सु मंझ ग्रह ॥
ठाम ठाम सब सथ्थ। सूर सामंत सथ्थ रहि ॥
घोरंधार विहार। विपन बर बर बन मुक्किय ॥
संझ सपत्ते राज। चूक चालुक्क सलुक्किय ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सह। बर षवास लोहान भर ॥
बर बंध उभै सेवक त्रिगट। [2]समर काज उब्भो समर ॥ छं० ११५॥

दूहा—तकि बकि उट्ठे सुभर। चंपे चालुक राइ ॥
हाइ हाइ मच्ची समुष। बकत बीर प्रथिराइ ॥ छं० ११६ ॥

---

१. मो०—सन्नाहित। २. ए० कृ० को०—समर।

सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका साम्हना करना।

कवित्त—चिहूं कोद बर सूर। तेग कढ्ढी सु हक्कि कर ॥
बज्र कढ्ढि कुंडली। करिय मंडली रजं फिरि ॥
लहि न और अवसान। कढी बर [1]अब्भि सु सस्सी ॥
झरि चालुक सब देह। सिरह बढ्ढी मन हस्सी ॥
कैधूं दुबढि बंदर सिर। हलधर हल सिर झारयो ॥
सामंत सट्ठि ग्रह कूदि कै। फिरि पारस अरि पारयौ ॥छं० ११७॥

रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध।

रावगीन बर समर। भीम भट्टी जु कंध परि ॥
तेग हथ्थ झकझोर। बीर लिन्नों सु बथ्थ [2]भरि।
दुतिय घात आघात। घाइ [3]अग्गा बर बाहै ॥
कमल पंति दती। समूह दारुन जल गाहै ॥
घट घाव भंग भेदै नहीं। चीकट जल घट बूंद जिम ॥
बाहुट्ट उग्र साहस करिय। पत्र तरोवत अरिन तिम ॥ छं० ११८॥

पृथ्वीराज का ★ नागफनी से शत्रुओं को मारना।

दूहा—नागमुषी चहुआन लिय। अरिन करन्न सु दाह ॥
हद्द[4] नंषि उच्चाइ अरि। ज्यों कल बंधि बराह ॥ छं० ११९ ॥

घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना।

मोतीदाम—रन बीर रवद्द कहै कवि चंद। सु मोतिय दाम पयं पय छंद ॥
कढै बर आवध बज्जत तूर। उठै परसद्द महल्लन मूर ॥ छं० १२० ॥
नचै बर उट्ठि धरं धर सूर। करैं हक देषि उमस्सि करूर ॥
जु तक्कत अच्छर आलिन मद्धि। रही तिन मज्झ सुकीव समुज्झ ॥छं० १२१॥
दिवी दिषि [5]सुक्किव अच्छरि जुथ्थ। उपावहि [6]मत्त जु सुंदर तथ्थ ॥
उपावत मत्त सु छोड़न घट्ट। चलंत है विद्धि अगम्मनि वट्ट ॥ छं० १२२ ॥
[7]अपज्जस कित्ति तज्यो अस राइ। चल्यौ अप अग्ग छुड़ावत जाइ ॥
बरं कुलटा छंडि छंडि सु केउ। मुभै उल कत्ति तज्यो करि पेउ ॥छं० १२३॥
जु पीय बियोग सह्यो नह जाइ। चली बर नारि अमग्गन धाइ ॥
करंतह भूपति भान कुंआर। करै मनु [8]बज्जद बज्ज प्रहार ॥ छं० १२४ ॥

---

१. क० को०—अति बस्से। २. ए० कृ० को०—परि।
३. मो०—अग्गा। ४ मो०—हट्ठ नंषिइ।
★ 'नगफनी' एक शस्त्रविशेष। ५. मो०—सुकवि, कुक्कवि।
६. ए० को०—मंत। ७. ए०—अयंजस। ८. मो०—बज्जह।

करै बर बालुक चंपत घट्ट । स त्रीरह नारि अगंम सुभट्ट ॥
त्रिगं त्रिग लज्जन दच्छन जाइ । भजै क्रम सूर [1]त्रियं गय पाइ ॥छं०१२५॥
कढ़ी बर तेग लग्यो ग्रह घग्न । उडै बर मग्ग अलग्ग [2]क्रसन्न ॥
सु उज्जल छोह चल्यो रुधि छेदि । मनो जल गग सु भारति भेदि ॥छं०१२६॥
तजै जर जम्म भिदे रवि जाइ । परै घर मुत्ति जु सूरन आइ ॥ छं० १२७ ॥

रामराय बड़ गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना ।

कवित्त—बर बड़ गुज्जर राम । कूह वज्जिग बर धायो ॥
पीलवान अरियान । [3]पील अरि पूर लगायो ॥
नारिगोरि सा बात । तीर जल जोर सु बढ्ढी ॥
मीन रूप रघुवंस । पूर सम्हो अरि चढ्ढी ॥
कल मलिनि कलिनि कलि कलन कल । लोह लहर सम्हो हली ॥
अरि घरा फुट्टि बर [4]धार सो । सुमन लोह उड्डु मिली ॥छं०१२८॥

कविचन्द द्वारा "युद्ध" एवं सारंग देव के कुकृत्य का परिणाम कथन ।

पंच क्रमन दस हथ्थ । लुथ्थि पर लुथ्थिय हुट्टिय ॥
न को जियत सचयो । न को जुझ्झ्यो बिन षुट्टिय ॥
कोन जम सु जुझ्झवै । वैर मगं सु पुव्व अब ॥
ब्याज तत्त अप्पीय । मूल अप्पयो कुटंब सब ॥
अदिहार बीर वालुक्क को । नको षेत बित मुक्कयो ॥
संभाग बीर चहुआन को । सबै सथ्थ झोरी कियो ॥ छं० १२९ ॥

पज्जून राय के पुत्र कूरंभराय का बड़ी वीरता के साथ मारा जाना ।

कवित्त—[5]सुत पज्जून नरिंद । बीर कूरंभ नाम हर ॥
बस्त बस्त अरु सस्त । टूक लभ्भै न ढूढ घर ॥
बिहुत बीच अरु षंड । एक [7]उगरि षेहेक भय ॥
कवि आयो गुर तीय । नभ्भ कहि सहिस अत्ति हय ॥
कुंडल अस्ति न सुझि परै । लोह किरचि रच्यो रह्यो ॥
भेदयो राह रुपह सु रवि । बरन बीर बैकुंठ गयो ॥ छं० १३० ॥

---

१. ए० कृ० को०–त्रियंभग । २ ए० कृ० को०–सक्रन्न । ३. ए०–पीर ।
४. ए०–घरा । ५ मो०–"जोधि पर लोय" ।
६. मो०–सत । ७. ए०–उगरि ।

इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पंद्रह भारी योद्धा काम आए।

कवित्त—तीन राइ रजवार। सु इक्क रायत्तन सोरह ॥
रावत्तन दस पंच। सेन संभरिपति ओरह ॥
नागर चाल नरिंद। रैन [1]रावत पट्टनवै ॥
इते राइ अंगए। चूक एकन ठट्टनवै ॥
उद्दिग दार पांवार पर। पहुर तीन तुट्यो करन ॥
आचिज्ज सूर मंडल सुन्यो। सहु सथ्थं [2]बंध्यौ सुतन ॥छं० १३१॥

रेन पवांर (सामंत) की प्रशंसा।

कुंडलिला—मरन न लद्धो तुंग तिहि। सब सथ्थई पंवार ॥
सोमेसर नंदन [3]छला। गहि गज्जे गंमार ॥
गहि गज्जे गंमार। तेग तोरिन बर जारन ॥
चूक मूकि चालुक्क। स्वामि कढयो बर बारुन ॥
[4]है हलान हथ्थियन। रयन रायत्तन सिद्धे ॥
सह सथ्था तन ताइ। तुंग तिन मरन न लद्धे ॥ छं० १३२ ॥

रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र भाव से पेश आना।

कवित्त—बंध रेन लिय रज्ज। चाइ चालुक छंडायो ॥
ढक्कि सेन संभरी। हेल हम्मीर बढ़ायो ॥
पेल बग्ग पुमान। पान जोरें जल पीनो ॥
सो षीची परसंग। राइ तुल्लें दल लीनो ॥
अंकुन्यो अरिन रिनथंभ सों। सजि जद्दव बीरन बलिय ॥
रवि राहु सस्सि संमुह गहन। जानि छछुंदरि अप्पलिय ।छं०१३३॥

तेरह तोमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए।

भयो भूमि भूचाल। संच समरी आहुट्टै ॥
सजि सद्धे सिंदूर। सिंह पिंडी रवि तुट्टै ॥
तट्टे तेरह [5]तुरैव। सथ्थ बंबर बर भारी ॥
बार बार रावत्त। हुस्त बर बाहूर तारी ॥

---

१. मो०—रावन। २. ए० कृ० को०—मंडयो।
३. ए० कृ० को०—कला। ४. मो०—हेयसथ्थान बंबेरन।
५. ए० कृ० को०—तुररा।

अद्‌भूत जुद्ध चहुआन किय । मिलि षुमान चल्ल्यो षलह ॥
अजहूं सु अजत्र जुग्गिनि जगहि । पत्र संभरि पषिन पलह ॥१३४॥

हुसेनखां का अमरसिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना ।

कुंडलिया — बंधे बर हुस्सेन । षान बल सुबर कुँआरिय ॥
रन जित्ते दुज्जनह । कोइ न मंडै रारिय ॥
कोइ न मंडै रारि । मेछ सुंदरी बषरी ॥
समरसिंह मुनि कूह । त्रियं बंधत फिरि हेरी ॥
[1]धीठ षान दै आन । हद्द अहुरत्तन मंधे ॥
धीठ जमन हंकार । समर हेनु बर बंधे ॥ छं० १३५ ॥

रावल अमरसिंहजी की प्रशंसा और अमरसिंह का उनको अपनी बहिन ब्याह देना ।

दूहा — अमर बंध रष्षी अमर । अगि दीनो बर माल ॥
जस बेली चतुरंग कों । बरन षलिल उर माल ॥ छं० १३६ ॥

चोपाई — जसबेली [2]बरिगो चतुरंगी । चढ़ि चौंडोल ग्रेह अनभंगी ॥
बरन राव रावल संजोगी । सु अर फेरि चालुक्क न भोगी ॥छं० १३७॥

आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है ।

कवित्त — अद्ध रयनि संदेह । सद्द सावद्द कत्र यस ॥
पर्‌यो बीर जद्दव । नरिंद चंदेल [3]छबीयस ॥
गूड़राइ सत्रमलह । जुद्ध लोहं लरि बित्ते ॥
मुर्‌यो सेन पुब्बहि । पसार पच्छिम भरि जित्ते ॥
[4]अप्पाह अप्प बीतक त्रियो । बधि चँदेल सज्जै मुहर ॥
आवद्ध बीर मत्तो कहर । गही गल्ह बंधी सु घर ॥ छं० १३८ ॥

षुमान और "प्रसंगराय" खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना ।

गाथा — जित्ताराय षुमानं । निसानें सद्दयं आयं ॥
छुट्टा रन रनथंभं । षा बग्गे षीचियं रायं ॥ छं० १३९ ॥

चोपाई — षीचीराइ हमीर अवत्निय । दोइ चहुआन घरम्म भवन्निय ॥
चालुक्कां सों षह सवत्निय । दुत्तिय दीपंता निरवत्निय ॥ छं० १४० ॥

---

1. ए०—षीठ ।
2. ए० कृ० को०—बरिगो ।
3. ए० कृ० को०—सबीयस ।
4. कृ०—अप्पांह ।

कवित्त—दूसासन अंग में । राज विहँग गति कीनी ।।
मध्यदेश मालव नरिंद । हंसध्वज भीनी ।।
नीलध्वज कर ग्ररिग । विप्र बंदन संपन्नौ ।।
नालिकेल तरु फूल । अनंद सौंनह सुभ किन्नौ ।।
सत पत्र लगन लभ्भह भरिय । घरिय अट्ठ तेरह तिनह ।।
रनथंभ सेन संचरि न्रपति । करिय अवधि ताकरि रनह ।।

पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने आना ।

दूहा—आगम बीर बसंत को । रन जित्ते जुधवान ।।
बर हंसावति सुन्दरी । चलि ब्याहे चहुआन ।। छं० १४२ ।।

पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन ।

गाथा—रंग सुरंग सुदीहं । ज्यों कुंजिन मेलयं सव्वं ।।
बयं रुष मुष अंकुरियं । सा मिलयं बंकुरी मुच्छं ।। छं० १४३ ।।

दूहा—मुच्छ रबन्निय राजमुष । बर बंधिग सुरतान ।।
तीन दिनन आवन लगन । आय सगंध पुरान ।। छं० १४४ ।।

दोधक—ग्रंथहु ग्रंथ पुरान कुरानय । राज रसं बरुनी बरु आनय ।।
नीति अनीति सुधं सरसानय । लभ्भह किति लही चहुआनय ।। छं० १४५ ।।
संपय राज स कोकिल संठिय । जानि जुवान न जानि सु पुट्ठिय ।।
गायन गाइ सुअथ्थ सु अथ्थिय । संभय गानकला कल सथ्थिय ।। छं०१४६ ।।
छंदह छंद रसे रस जानन । कंठ कला मधुरे मधु आनन ।।
उद्दिम मेन उदार सुधारिय । [1]न्रज्जय रूप सरूप सुरारिय ।। छं० १४७ ।।

दूहा—श्रवन रवन अरु सिष भवन । पवन त्रिविध तन लग्ग ।।
वापी कूप [2]तड़ाक बृष । विधि ग्रंनन कवि लग्ग ।। छं० १४८ ।।

पृथ्वीराज का आगमन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से
हंसावती का झरोखे से झांकना ।

सा सुंदरि हंसावती । सुनि श्रोतान सुरुध्ध ।।
बर दिष्टा नम मानियै । बेला लग्गि गवष्ष ।। छं० १४९ ।।
सुनि आयो चहुआन अप । गुरुजन बंध्यो जानि ।।
तब मति सुंदरि चितवै । भेदक गोष वषान ।। छं० १५० ।।

गोख में से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन ।

कवित्त—पंच बाल पिय झंकि । सुभ्रित बिंदियं सु राजै ।।
मनों चंद उड़गन बिसाल । मेरहु चढ़ि भाजै ।।

---

१. ए० कृ० को०—नृपज्जय, नृपजय । २. ए० कृ० को०—तड़ाक ।

सुनिय श्रवन दै सैन । अलिन अलिमैन सरोजं ॥
रति मच्छर मति काम । जानि अच्छरि सुर सोजं ॥
धावंत वेस अंकुरित वपु । बसि सैसव तिन बेस धुरि ॥
श्रोतान सुष्ष दिष्टान धनि । यह कहि चलि सैसव बहुरि ॥

दूहा—प्रथम बत्त श्रोतान सुनि । सुष पै दिषहि सलोइ ॥
सच्च बात झूठी चवी । तब जिय सुष्ष न होइ । छं० १५२ ॥
सुनि श्रोतान सु मन्त्रिय । दिषि दिष्टांत सचीय ॥
बीज चंद पूरन्न जिम । बधै कला मनि जीय ॥ छं० १५३ ॥

हंसावती के शृंगार की तय्यारी ।

बर बेहरि देषी नृपति । गो त्रिय त्रिपबर थान ॥
बाल सुअंबर काज कौं । बर बज्जे नीसान ॥ छ० १५४ ॥

हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन ।

आभूषन भूषन न्रपति । बैसंधि कहि न कविंद ॥
कवि बनन इह लग्गि त्रिय । ज्यों बूढ़त लघु चंद ॥ छं० १५५ ॥

हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य्य वर्णन ।

कवित्त—बर भूषन तजि बाल । सुबर मज्जन आरंभय ॥
सोइ छबि बर दिष्षनह । कोटि [1]ओपम गारंभिय ॥
बर सैसव बर चंपि । कंपि चिहु कोद अपायो ॥
सो ओपम कविचंद । जोन्ह बूड़त नल धायो ॥
बालपन बीर बर मित्र पन । रबि ससि करि अजुरि भरिय ॥
बय बाल [2]उबीनन प्रीति जल । सैसव तें हरई करिय॥छं०१५६॥

नेत्रों की शोभा वर्णन ।

दूहा—बर सैसव अच्छर नहीं । जोवन जल बर मैन ॥
बाल बरी घरियार ज्यों । नेह नीर बुड़ि नैन ॥ छं० १५७ ॥

हंसावती के स्नान समय की शोभा ।

मोतीदाम—
कि बाल प्रमोद सु मज्जन चंद । सुभुत्तिय दाम पयं पय छंद ॥
लटि भिजि बार रही लपटाइ । मनो दिढ़ सुक्र लग्यो ससि आइ ॥छं०१५७॥
बि ओपम दै बरनै कबिराज । द्रवै ससि रीस दसं मदु आज ॥
बहै जल भेदि सु कुंकम बार । तिनं उपमान लहै कवि चार ॥
जु राहुय ग्रास पियै बिष सोम । द्रवै मुष चंदह मत्तह भोम ॥
करैं बर मज्जन सज्जन नारि । धरैं मन धारत संत सँवारि ॥छं० १५८ ॥

---

1. मो०—उपमा ।   2. ए० कृ० को०—उलीचन ।

हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहो शृंगार और बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन।

नराच—कियं सुरंग मज्जनं। नराच छंद रज्जनं॥
सुगंध केस पासयो। बिहथ्थ हथ्थ भासयो॥ छं० १६१॥
उपम्म जीस साम्रयो। बिरंचि लेष बाध्रयो॥
जु बुद्धि रासि भासयो। गजीवता प्रगासयो॥ छं० १६२॥
[1]जु केस मुत्ति संजुरे। सभी सराह दो लरे॥
मनीस बाल साच ज्यों। कि कन्ह कालि नाच ज्यों॥ छं० १६३॥
षरी नवैन कथ्थयो। जु कन्ह कालि मथ्थयो॥
तिलक्क भाल भासयो। भलक्क काल साचयो॥ छं० १६४॥
बिधार गंग पावयो। जु तिथ्थराज आसयो॥
वसंत सोमता वरं। कलीन भद्र सावरं॥ छं० १६५॥
सुभाव वान [2]बाढ़यो। सुराह कंपि [3]ठाठयो॥
सु पट्टि बाल ठानयो। सु राह रूप जानयो॥ छं० १६६॥
उपम्म नेन ऐनसी। मनों कि मीन मैनसी॥
कवी [4]निसंक जानयो। उपम्म चित्त मानयो॥ छं० १६७॥
भवन्न जीव छंडयो। ससीम रूप मंडयो॥
उपंम बिंब उग्गनं। कमल्ल जासु सुम्मनं॥ छं० १६८॥
रुलंत मुत्ति सोभई। उपम्म अत्ति लोभई॥
अभ्रत्त तार विच्छुरी। दु चंद अग्ग निक्करी॥ छं० १६९॥
सु तारि हंस सामरं। अनेक भेस तामरं॥
विभास रूप जामरं। सु चंद चित्त साहरं॥ छं० १७०॥
रत्तन्न बिन आनयं। सु चंदबी प्रमानयं॥
त्रिवल्लि ग्रीव सोभई। जु पोति पुंज [5]लोभई॥ छं० १७१॥
ससीह राह छंडि कैं। असंन बैठि मंडि कैं॥
डरं हरा विसाल यौ। कि ईस दीप मालयो॥ छं० १७२॥
उरं त्रिअंग जित्तयो। जु सुक्क बग्ग पंतयो॥
कि काम बीर भंजयो। दहत्ति ग्रेह रंचयो॥ छं० १७३॥
उपंम ईस [6]कुच्चयो। अनंग नीति रच्चयो॥
रोमंग तुच्छ राजयं। उम्पम्म ता बिराजयं॥ छं० १७४॥

---

१. मो०—सु। २. मो० बाढ़की। ३. मो०—ठाढ़की।
४. ए० कृ० को०—संक। ५. मो०—लुब्भई। ६. ए०—चक्कयो।

उरज्ज यत्र काम को । लिषै जोवंत वाम को ।।
कटी अलप्क्ता ग्रही । मनों कि रिद्धि रंकई ।। छं० १७५ ।।
कि सीभ ह्वै न्रपं रही । तुला कि दंडिका कही ।।
कलंत छुद्र घंटिका । सदंत सद्द दंडिका ।। छं० १७६ ।।
जु जेहुरी जराइ की । घुरंत नद्द पाइ की ।।
नितंब अद्धं तुंबियं । प्रबाल रंग [1]पुब्बियं ।। छं० १७७ ।।
कि काम रथ्थ चक्रए । चलंत एड़ि वक्रए ।।
उलट्टि रंभ जंघनं । करी सु नाम पिंडन ।। छं० १७८ ।।
उपंम रंग राजही । जलज्ज भांति साजही ।।
बसन्न सेत बन्नयं । उपम्म कव्वि भन्नयं ।। छं० १७९ ।।
मनों कि दीय अंभय । सुभंत मध्य रंभयं ।।
दसन्न जोति दामिनी । मनो अनंग भामिनी ।। छं० १८० ।।
सुगत्ति हंस लीनयं । सिंगार सोभ कीनयं ।।
झंकार झंजनं झनं । मनो कि सोर भद्दनं ।। छं० १८१ ।।
सु काममीर रंगयं । जु एड़ि जावकं लयं ।।
मनों कि हंस सावकं । चलै बिद्रुम्म भावकं ।। छं० १८२ ।।
[2]जरित्त मुद्रका नगं । सु जोति अंगुली लगं ।।
जुवास रास त्रामयं । मनो हुतास पासयं ।। छं० १८३ ।।
[3]दिपति नष्ष बीसयं । रबी ससी सुरीसयं ।।
नव ग्रहीय पुञ्चिया । उपम्म कब्बि बंच्चिया ।। छं० १८४ ।।
जु चंद राहु षेदि कै । कि हुस्त चंद भेदि कै ।।
उभै तिषट्ट भूषनं । सजंत मेटि दूषनं ।। छं० १८५ ।।
चलंत वाम कोड़यं । तजंत हंस होड़यं ।।
उमग्गि प्रिथ्यि देषनं । अलीन मझ्झ पेषनं ।। छं० १८६ ।।
सु सैसवं लगंत रष्षि । मुक्किय दरस्स दिष्षि ।। छं० १८७ ।।

हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन ।

हनूफाल – सुर मनों कोकिल जोइ । अबजघ रंचन होइ ।।
अंबर कमल्ल पुटन्न । रितु देषि सीत वसन्न ।। छं० १८८ ।।
इह संधि रंभ दसन्न । बनि रवनि प्रीत बसन्न ।।
कसि कासमीर सुरंग । झंकार पिंड अभंग ।। छं० १८९ ।।

१. मो०–पुब्बियं, को०–पुब्बियं २. मो०–जरित ।
३. मो०–दिपत्त ।

नग जरित मुद्रिक पानि । रवि परी होइ सुजानि ॥
नो ग्रहिअ पुंचिय हथ्थ । उपम्म चद सु कथ्थ ॥ छं० १९० ॥
सोई चंद उप्पम षेदि । कै हंसत हिमकर भेदि ॥
बर एड़ि मडि सुरंग । जनु प्रभा रवि ससि संग ॥ छं० १९१ ॥
षट दून भूषन मज्जि । सजि सजत सैसव लज्जि ॥
नग मुत्ति जेहर जोड़ । गति हंस तजहित होड़ ॥ छं० १९२ ॥
बर चरन लगि चिपयान । पय परम चलि चहुआन ॥
कर वाम [1]पान सलाइ । वे काज क्रम अगदाइ ॥ छं० १९३ ॥
तब लग्गी सैसव रष्षि । मो [2]कंत दरसन दष्षि ॥ छं० १९४ ॥

हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन ।

कुंडलिया—बर कुंकुम सब सथ्थ रगि । बहु सथ [3]नृप बर सथ्थ ॥
सो ओपम बर राज लहि । कबि बरनन लहि कथ्थ ॥
कवि बरनन लहि कथ्थ । फिरिय गुर राजहि कथ्थें ॥
मन ससिनर काम की । प्रात उग्गत रवि सथ्थै ॥
[4]सुभ्रन रवि ससि रूप । एक असु जीव काम तर ॥
पंचानन तिन होइ । पंच प्रथिराज देव बर ॥ छं० १९५ ॥

पृथ्वीराज का विवाह-मंडप में प्रवेश ।

दूहा—वंदन वर आयौ नृपति । तोरन संभरिवार ॥
प्रीति पुरातन जानि कै । कामिन पूजत मार ॥ छं० १९६ ॥

पृथ्वीराज के रत्नजटित मोर (ब्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन ।

कुंडलिया—नग मग जटित सुमेर सिर । तन तर बर मन सोभ ॥
पंच उभै ग्रह चंद सिर । संग सपत्तो लोभ ॥
संग सपत्तो लोभ । जुद्ध तट वर मन रुक्की ॥
रहे नृपति दे आन । नैन चितवत फिर मुक्की ॥
चंचन पच चिमनिय । ति नर तर्क्षा मन [5]लग्गा ॥
रन रावत जिम रेह । सूर मंगन ग्रह नग्गा ॥ छं० १९७ ॥

हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना ।

चौपाई—सत संग किम अनंत अली । नंचत बर [6]अचित [7]पाय चलि ॥
पिय तन देषि रुप रस [7]सानि । पंषि मनी नव पंजर आनि ॥ छं० १९८ ॥

---

१. ए० कृ० को०—यान ।   २. मो०—कहत ।
३. मो०—उप ।   ४. मो०—कै सुभ्रत ससि रूप ।
५. ए० कृ०को०—लग्गा लग्गा ।   ६. ए० कृ० को०—पिय ।   ७. मो०—मानी ।

पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य देख कर प्रफुलित होना।

कवित्त—बंदि सु बर चहुआन। मझ ग्रह काज सु लिन्नो॥
बाल रूप अवलोकि। महूर महुरं रस पिन्नो॥
द्रिग सौं द्रिव संमुहे। पीय उमगे द्रिग ओरन॥
सो ओपम प्रथिराज। चंद ज्यो चंद चकोरन॥
नव भ्रमर पिठु वर कमल में। कै मकरंद झुलावही॥
आनंद उगनि मगल अभिष। सो कवि वरनन गावहीं॥छं० १९९॥

पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना।

दूहा—बर अंचल सोमेस त्रिन। बध्रि बीर बर नारि॥
देवक्रम दुज क्रम कही। मो बर बीर कुआरि॥ छं० २००॥

हंसावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन।

कवित्त—बैनि नाग लुट्ठयो। बदन ससि राका लट्यो॥
नैन पदम पंषुरिय। कुंभ कुच नारिंग छट्यो॥
मद्धि भाग प्रथिराज। हंस गति [1]सारंग मत्ती॥
जंघ रंभ बिपरीत। कठ कोकिल रस मत्ती॥
ग्रहि लियो साज चंपक बरन। दमन बीज दुज नास बर॥
सेना समग्र एकत करिय। काम राज जीतन सुभ्रर॥छं० २०१॥

दूहा—कवि लघु लघु बत्ती कही। उकति चंद नन छेव॥
मनों जनक बंदन करन जानु कि बद्दै दव॥ छं० २०२॥

इसी समय दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना और ५० सामंतों का उस आक्रमण को रोकना।

कवित्त—चढ्ढिय सब सामंत। चूक सब सेन सु दिष्षिय॥
षट दस बर सामंत। मरन केवल मन लिष्षिय॥
पंत निसुरत्ति समूह। जूह देवान सु धाइय॥
मार मार [2]उच्चरत। मार कहि समर सु माइय॥
इत उतह सब्ब सामंत रजि। तिन अरि नन तिन बर करिय॥
मानव न नाग दिन आइ जुध। सुबर जुद्ध रत्ती करिय॥छं०२०३॥

पृथ्वीराज के सामंतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला—

सूर सम्हें परे, सेन भग्गे लरे। काफरं बिड्डु रे, लोह मच्ची झरे॥छं०२०४॥
पारसं तं फिरं, सूर हक्के करं। कढ्ढियं षंजरं, नंष्षि लोहं करं॥ छं०२०५॥
सूर बध्यं परं, मोह मोहं परं। कूक बज्जी षरं, लोह वड्फरं॥छं०२०६॥

---

१. ए० कृ० को०—सारव। २. मो०—ऊीपन।

* यद्यपि यहां पर दिल्ली का कोई जिक्र नहीं है परंतु यह बात आगे छं० १९० में चुकती है। ३. ए० कृ० को—उचंत, उच्चंत।

अग्ग उट्ठी झरं, बीर बाजं डरं। श्रोन रतं [1]धरं, अंत आलुझ्झरं ।।छं०२०७।।
सूर जा उच्चरं, रारि उग्गं जरं। लज्ज पब्ब परं, लोह लोहं करं।।छं०२०८।।
बास साजं भरं, रेनि अद्धी बरं। बाज कुट्टी झरं, षान झारा झरं।।छं०२०९।।
डाह मीरं धरं, मज्झ रोसं ररं। सानि सामं नरं, षाह घुम्मैं षरं ।।छं० २१०।।
दूहा—कन्ह बंध मझ्झें रह्यौ। रहे सु जैत कुआर ।।
है मुक्किव सामंत गौ। उप्पार मेर पहार ।। छं० २११ ।।

दूसरे दिवस प्रातः काल सुरतान खां का आक्रमण करना।

कवित्त—प्रात षान सुरतान। सेन [2]बंधी अहसारी ।।
बर सोभै कविचंद। चंद अष्टमि आकारी ।।
अर्द्ध चंद्र महमूंदि। अर्द्ध षुरसान षान करि ।।
मध्य भाग रुस्तम्भ। सेन षुरसान जित्ति [3]वरि ।।
दल धरकि भरकि सिप्पार लई। अरुन दीय उद्दिम सुभर ।।
चित्रंग राइ रावर समर। चढि मंग्यो [4]बंधव अमर ।। छं०२१२ ।।

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन।

त्रोटक—सारंग चढ्यौ कविचंद भनं। रन नंकिय बीर नफेरि घनं ।।
छननंकहि घंटन घंटन की। तन नंकहि भेरि भयटन की ।। छं० २१३ ।।
घननंकहि घुग्घर प्पष रनं। ठननंकहि आइ प्रसद्द घनं ।।
[5]बर चिक्किय चकित मिले पलटे। दिषि घुग्घुर रेनिय अस्स घटै। छं० २१४।।
तमके तन तेज पहार उठे। बहुरे किधु पावस अम्भ बुठे ।।
कविचंद सु अंसुय [6]साव धरे। त्रय [7]नैत्त जु गंग समीर षरे ।। छं० २१५ ।।
दोउ दीन आनंदिय तेग छुटी। सु बनै चहुआनय सार टटी ।। छं० २१६ ।।

तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना।

दूहा—उट्टि ढाल चहुआन बर। बढ़ि अवाज परवान ।।
सुनि बरनी सों रत्त तिन। सत छुट्टे बर थान ।। छं० २१७ ।।

थोड़ी देर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड़ गए।

कवित्त—धुअ मुख रावर समर। षान निसुरत्ति षेत तजि ।।
घरी अद्ध बजि लोह। सबै चतुरंग सेन भजि ।।
जुद्ध कंध कुल-नास। षान निसुरत्ति बहुट्टे ।।
चामर छत्र रषत्त। तषत है वै बर छुट्टे ।।
प्रथिराज बीर रावर समर। मिलि [8]नषित्र पति ग्रहन गिरि ।।
धर लज्जि लज्जि आहुट्ठ पति। तीन बार बहुंग गिरि ।छं०२१८।।

---

१. मो०-भरं। २. मो०—बन्धी। ३. ए० कृ० को०-बर।
४. ए० कृ० को०—बंध्यौ। ५. ए० कृ० को०—"बर चक्किय"।
६. मो० साष। ७. मो०—नेत्र। ८. ए० कृ० को०—नक्षिन।

युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का प्रसवान हाथ लगना और पीरोज खां का मारा जाना।

जीत लियौ चतुरंग। चारु चतुरंग समोरी॥
[1]एक लष्ष प्रम्मान। ढाल गोरी ढंढोरी॥
षां पिरोज परि षेत। षेत को का उप्पारी॥
समर सिंघ रावर। नरिंद झोरी करि डारी॥
बज्जे निसान जयपत्त के। बिन सुरतानै[2] लुट्टि दल॥
नीसान नद्द उनमद्द के। चामर छत्र रषत्त तल॥ छं० २१९॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं आपका बहुत ही अनुगृहीत हूं।

मिले आइ चहुआन। सब्बर सामंतन मन्ने॥
उच्च भाव आदर सु। दीन उर चपि सु लिन्ने॥
नैन चैन नन बैन। हीन सुपत्र कढ़ि दोऊ॥
बर समान तुम राज। तेग राजन विधि कोऊ॥
रष्षयौ गाम रतिवाह दै। तुम कधें ढिल्ली नयर॥
चित्रंग राव रावर समर। [3]पाघ सीम बंधी अमर॥ छं० २२०॥

पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुंभा जी को संभर की जागीर का पट्टा लिखना।

दूहा—[4]तेजसिंह सुत समरसी। तिह सुन कुंभ नरेस॥
संभरि संभरि वार दै। दौहित्तो सोमेस॥ छं० २२१॥

समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना।

कवित्त—तब चित्रंग [5]नरेस। पिथ्थत्ति नष्यो बर पट्टौ॥
तुम ढूंढा कुल ढुढ। सु मनि ऐसी मति ठट्टो॥

---

१. मो०—"एक लष्ष पम्मर प्रमांन" ए० कृ० को०—एक लष्ष पष्षर प्रमांन।

२. मो०—"बिन सुरतान सु लुट्टि" छन्द।

३. कृ० पाय।

४. छंद २२१ की प्रथम पंक्ति का पाठ ए० कृ० को०—तीनों प्रतियों मे समान है जिसका अर्थ होता है कि "समरसी का पुत्र तेजसी तिसका पुत्र कुम्भकरन थी कि पृथ्वीराज का भांजा था किन्तु मो०—प्रति में तेज सिंह चित्रंग सुत नाम [illegible] बर वेष" पाठ है, इससे उक्त अर्थ में भेद पड़ता है।

५. मो० कवित्त।

हुथ्थ नीच करतार । हुथ्थ उप्पर गजल गुर ॥
हम आहुट्ठ मझामि । स्वामि कहिजे सु [1]उंच बर ॥
कालंक राइ कप्पन [2]बिरुद्द । कुलह कलंक न लग्गयो ॥
दग्गो न हाथ [3]चित्तौर पति । हम जगत्त सब दग्गयो ॥छं०२२२।

समर सिंह का चित्तौर जाना ।

दूहा—ग्रेह गयो चित्रंग पति । गौ ढिल्लिय न्रप छेह ॥
मास बीय बित्ते न्रपति । मतौ मंडि न्रप एह ॥ छं० २२३ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त हो जाना ।

बिमल बिलोकन कोक रस । सोक हरन सुष मत्त ॥
समुष हंस प्रभु नीलप्रभ । बिभ्रम वर द्रिग मत्त ॥ छं० २२४ ॥

हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन ।

भुजंगी—द्रिगं मंत्र मंत्रं सुमंत्रं प्रमानं । वियंकेलि करनी विधानं सुजानं ॥
निजं नेह नीलं सु कील कलानं । मुषं मूल बिप्पं सु देवं सथानं ॥ छं० २२५॥
मयं मोह मंडं सु बंदीन दानं । हयं हेम हट्टं पताका सु थानं ॥
[4]मु अंषं च सोभा स सोभा स मंत्रं।[5]छयं छंद जोतीय संसाइ तंत्रं ॥छं०२२६॥
पियं पेम तंत्रं सु कंतं सु थान । सुराया बिहंगं सु पुत्री प्रमान ॥
लियं ग्रेह सज्ज्या प्रथमं अलीन । मनों मत्त मातंग [6]बंध्यौ कलीनं ।छं०२२७॥
बचं अंकुसं हेट हेटं चलावै । दुरै देषि जालंतरे फेरि नावै ॥
छुट्यो सैसवं लज्ज तें प्रेम आसं।फिरे जानि बाला तनं प्रेम आस ॥छं०२२८॥
सया हंस हंसावती नील थाह । कवी केलि कंठे थकी सच्च स्याहं ॥
उरं अंत घोरं विवाहं बिरोरं । कला केलि बढ्ढी बिहानं सजोरं ॥छं०२२९॥
दनो देव ज्यौं आनि सद्दान सेजं । सदा स्वेद षेदं हुओ प्रात हेजं ॥
... ... । ... ... ॥ छं० २३० ॥

मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध होकर कामान्ध वृषभ की नांई मस्त होना ।

* कवित्त—अगह गहन रमि रमन । रवन रमि रवन सु छुट्टिय ॥
दहिय [7]वदन सहि रहिय । सरस रस सौर सु लुट्टिय ॥

---

१. मो०—बंच । २. ए० कृ० को०—बिरद्द ।
३. कृ०—चीतौर । ४. कृ० को०—सुषं ।
५. मो०—"छय दुतिय छंग्द छम्माय तंत्रं । ६. मो०—बध्यौ ।
* यह छन्द मो०—प्रति में नहीं है । ७. को०—वयद ।

महिय लहिय नहिं नहिय । ¹हहय हय हयइ यथा ²हइ ॥
सहिय सेज कहु कहिय । चंषि विचनिय सम्र थह ॥
कामंध अंध मुद्धह वृषभ ³भ्रमन भ्रमावहु निलक सन ॥
इह अर्थ सर्थ जानन सु गह । अगहु मुगद्धन मन हसन ॥छं०२३१॥

हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्म्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना ।

दूहा—मन हिय वृत्तन मुगधनिय । रमि राजन निय नेह ॥
नमिय निसा कर ⁴अग रथिय । निसि निम्मल दिय छेह ।छं०२३२॥

शनैः शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना ।

छंद कमंध—निम्मली नेह नासा । दिष्ट एन लग्गी सु त्रासा ॥
छेहंग कामी रसा । संचान भग्गी त्रसा ॥ छं० २३३ ॥
हंसावती संकुची । दासी प्रीति संवची ॥
† पुस्तका पढ़ि विस्तरी । कथा गाथा प्रेम विस्तरी ॥छं० २३४॥
दंत कंडक निस्तरी । हास विलास सुस्तरी । छं० २३५ ॥

हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चद्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना ।

काव्य - गगन सरस हंसं स्याम लोकं प्रदीपं ।
सस ⁴सज बंधू चक्रवाकोवि कीरा ॥
तिमिरगजम्रगेद्रं चन्द्रकांतंप्रमाथी ।
बिकसि अरुन प्राची भास्करं तं नमामी ॥ छं० २३६ ॥
अमृतमय शरीरं सागरा नंद हेतुं ।
कुमुद बन बिकासी रोहीणी जीव तेसं ॥
मनसिज नस बंधु मानिनीमानमर्द्दी ।
रमति रज निरमनं चंद्रमा तं नमामी ॥ छं० २३७ ॥

दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसो चकोर चन्द्र के लिये ।

मुरिल—बंछय चंद चकोरत राजन । ⁵हंसनि हंस उदै भयो साजन ॥
बिहु निसि नेह निसाकर बढ्ढिय । कनक जेम कसि कर ⁶आहुट्टिय॥छं०२३८॥

---

१. ए०—हरय । २. को०—हय
३. मो०—भ्रमविय । ४. मो०—ममं मसं ।
† इस छन्द का पाठ चारों प्रतियों में उलट पलट है ।
५. ए० कृ० को०—हसति, हंमति । ६. ए०—आहुठ्ठिय ।

गाथा—उवनि फलनी फंदा । विसनी पत्त बलाकरे हुप्यं ॥
म रकति मनि भाजन्ने । परठियं पहुप सु तीयं ॥ छं० २३९ ॥

पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और शीत का बढ़ना ।

झिल्ली झिंगुर खरी । गायन पुत्रीय ललित लुब्भरियं ॥
पहुकिय पंथ [1]सु हासं । झलकिय सीताइ मदं मंदाइं ॥ छं० २४० ॥
किय मंडि सु पुक्करियं । मैनं राइ सिरीय बंधायं ॥
पर दार चोर साही । [2]क्कारे जाहु रे जाहु ॥ छं० २४१ ॥

शीत काल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना ।

पंपट करि करतारं । हंसा सयनेव हंस सह पायं ॥
निसि बढ्ढय अंकुरियं । कुक्कडयं [3]कंठ कल्लायं ॥ छं० २४२ ॥
अचलीय नेह ससी हर[3] । [4]रसनहु रंगी सुरंगयं देहं ॥
उवकंठय सदेसं । गावै एकंत चित्त सलाइं ॥ छं० २४३ ॥
हे मोनं करि कोकिलयं । जलधर सम एहु कंठ [5]उंचत ॥
विकसित कर जल बंदे । विकसित रमे कोक सावासी ॥ छं० २४४ ॥
संग्राम गए सूरो [6]संपगे । होइ चंद्रोदए ॥
विविधा काम तीयं । अवसर रत्त [7]काम लब्भाइं ॥ छं० २४५ ॥
गाहा नक्किय तत्ती । सदानं नूपुरें उरवा ॥
[8]जिहु अंकुर पब्भितं । भूतं जुब्भांइ मंग भगुरयं ॥ छं० २४६ ॥
जोई छबिना वेनं । रचया सि महिला न रूप महु कमले ॥
तां नंचिय सु बियोगे । निमहं मुत्तंच जुग्ग जुग्गाए ॥ छं० २४७ ॥

हंसावती पृथ्वीराज की ओर पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहर्निसि मस्त रहते थे ।

पीय आरंभत त्रिययं । त्रिय आरंभ कंतं [9]चितायं ॥
सो तिय पिय पतो । मा पिमं [10]विहुमं श्रामं ॥ छं० २४८ ॥
अजा [11]सत्र ओ होजा । कंठायं पयो हुरं फलयं ॥
दीहुंते सय लब्धं । हसनं रस नाय सा बकियं होइं ॥ छं० २४९ ॥

---

१. ए० कृ० को०—महासं । २. मो०—कंटक ।
३. ए० कृ० को०—"अचलिय नेह से सहिए" । ४. ए० कृ० को०—रसरह ।
५. ए० कृ० को०—उचंती ६. ए०—संप ।
७. ए० कृ० को०—काम । ८. ए० कृ० को०—"जिह अंकुरं ए नित" ।
९. ए० कृ० को०—चितायं । १०. मो०—बंधयं ।
११. ए० कृ० को०—सामंत ।

†जोती अहर सहाओ । उचसिया कील कंतायं ॥
सो तिय अग्ग सुहाई । दिस असनी रसं नायं ॥ छं २५० ॥

कवित्त—रयनि पंच संकुलित । पंच लज्जित दुरि लोइन ॥
भिरत उभय भिरि षग्ग । मग्ग लग्गिय जुर जोइन ॥
[1]मिलत चतुर इक रीय । अतुर ग्रहं [2]दद्दुर बल ॥
कमल कमल मंडिय सु चित्त । नष अष [3]बष्प बल ॥
आरति सोइ दइता विछुरि । पार [4]समुद्र न नेह लहि ॥
इय प्रति पतिवृत प्रथम पहु । नवति चित आचम लहि॥छं०२५१॥

इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन ।

कवित्त—हंसराइ [5]हंसनिय । पानि ग्रहनी ग्रह हल्लिय ॥
मालव दुग्ग देवास । [6]वाम मुद्धत नव वल्लिय ॥
हय गय धुर धर धम्म । क्रम्म कित्ती अति दानह ॥
ता पाछे रनथंभ । प्रीति षीची चोहानह ॥
चित्रंग राइ रावर रमिय । [7]देव राज जद्दव वहिय ॥
वितिय वसंत रिति अब्भरिय । अचल एक कित्ती रहिय ॥ छं० २५२ ॥

समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन ।

दूहा—वत्त कवित्त उगाह करि । चंद छंद [8]कविचंद ॥
समर अठारह बरष दर । दिवस त्रिपंच रविंद ॥ छं० २५३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हंसावति विवाह नाम छत्तीसमो प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ३६ ॥



---

† यह छंद ए० कृ० को०—तीनों प्रतियों मे नहीं है ।

१. मो०—मचित　　२. ए० कृ० को०—दुदुर ।

३. मो०—बष्ब ।　　४. मो०—समुद्रिम ।

५. ए०—संचनिय ।　　६. मो०—वाम मुहंत नवल्लिय ।

७. ए० कृ० को०—देवराज ।　　८. मो०—कवि छंद ।

अथ पहाड़राय सम्यो लिष्यते ।

(सैंतीसवां समय)

कविचंद की स्त्री का पूछना कि पहाड़राय तोंमर ने
शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा ।

दूहा— दुज सम दुजी सु उच्चरिय । ससि निसि उज्जल देस ॥
किम तूंअर पाहार पहु । गहिय सु असुर नरेस ॥ छं० १ ॥

शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का
क्या हाल है ।

कवित्त— संवत सर च्यालीस । मास मधु पष्ष ध्रम्मधुर ॥
त्रतिय दीह अहरुन्न । उदित रवि व्यंब बरन तर ॥
अलिय आल आलोल । गरुअ [1]गज्जे [2]विसम्म गन ॥
रस रसाल मंजरि । तमाल पल्लव कमल्ल मन ॥
साहाब दीन सुरतान भर । आनि द्वार ठढ्ढो सु बर ॥
अष्षै ततार षुरसान षां । कहा षबरि चहुआन घर ॥ छं० २ ॥

तत्तार खां का उत्तर देना ।

गाथा— उच्चरि षान ततारं । अरि वरजोर अतर अत्तारं ॥
सामंत सूर सभारं । मत्त अमित समित जमकारं ॥ छं० ३ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई
करने को सलाह करना ।

भुजंगी—
कही साह साहाब तत्तारषानं । रचो मंडली मंडि दीवान षानं ॥
भरी [3]षान दिष्षी बरं आसमानं । [4]करी कूच सेना प्रकासंत भानं ॥छं० ४॥
दलं लष्ष तीनं गजं बाज पूरं । तिनं तेज तोनं करं कित्ति सूरं ॥
अनंहद्द नीसान नद्दे कि नूरं । नचे भूत बैताल मत्ते मझूरं ॥ छं० ५ ॥
हलाहुम्म झंकार हुंकार झारी । तुटै तेक तानं झरं हुमि धारी ॥
करै सेन मग्गं नचै जोगमाया । घनं निद्दरे घोर नंचै न छाया ॥ छं० ६ ॥

---

1. मो०—गज्ज । 2. ए० कृ० को०—विसंम मन ।
3. ए० कृ० को०—षान । 4. मो—करी कूच सेनाह सासंत भानं ।

सुरं सिदनं सोभ सा भानं लोलं । सजे सेन राजी रसालं सदोलं ।।
रचै रंग रंभा विमानं विमानं । जयं सद्द देवी [1]दिमानं दिमानं ।। छं० ७ ।।
मनों साल मंजीक तेजं प्रकारं । रची स्वामि सची रची मडि रारं ।।
ध्रजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे । रितं राज अग्गे मनूं फूलि [2]दगे ।। छं० ८ ।।
असं बेस कंपी ढुरी चौर मज्जी । चढ़े [3]बाम फजरं पती पीत सज्जी ।।
निहारं विहारं उपं हार हारं । बरें अग्रसेना मध्य [4]ब्रत्त पारं ।। छं० ९ ।।
रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं । सजे ताल वैताल सिद्द सबैनं ।।
बनै अच्छरी कच्छि बिम्मान गैनं । पतं जुग्गिनी पानि इच्छैं त रैनं ।।छं०१०।।
नचै रंग नारद्द मंडै अनूपं । चमू च्यारि भारं भरं सद्दि रुपं ।।
अनी कोर आकार आक्रत्ति नूपं । वढ़ी भाग पथ्थी पथो उंचओपं ।।छं०११।।
मही मंडि माया रही लोपि मालं । षिले [5]षग्ग अग्गं बल बोलि तालं ।।
नवं नद्द नीसान [6]भेरी भयानं । मनों मेघ गज्जे [7]कयानं पयानं ।। छं० १२ ।।

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना ।

दूहा — [8]तब ततार षुरसान षां । सुनौ साह साहाब ।।
अरि अभंग दल सक्क रस । अमित तेज बल आव ।। छं० १३ ।।
अरुन बरुन उद्दित अरुन । बढ़ि प्राची रुचि [9]रुप ।।
मेच्छ सामि चढ़ि सेत अस । रन दिल्ली सम भूप ।। छं० १४ ।।

समस्त सेना का दस कोस पूर्व को बढ़ कर पड़ाव डालना ।

कवित्त — अरुन कोर बर अरुन । बंदि साहाब साहि बढ़ि ।।
दिसि प्राची दच्छिन [10]विपध्थ । पच्छिम उत्तर बढ़ि ।।
सेस भाग भै भाग । भोमि संकुचि कुकपि निल ।।
गमन सेन उड़ि रन । गैंन [10]रवि षत्त धुंध इल ।।
दस कोस थान दल उत्तरिग । घन अवाज घर रिपु [11]परिग ।।
गत मेच्छ मंडि मंडल सुमति । गति सु जंग अगर घरिग ।। छं० १५ ।।
दूहा — रत निसान डग मग अरुन । जिम दीपक बसि बात ।।
सुनिव कंप अति साह मन । तन विकंप अकुलात ।। छं० १६ ।।

---

१. ए० कृ० को०—विमानं विमाने   २. मो०—हुंगे ।
३. मो०—बात ।   ४. मो०—पग्ग ।
५. ए० कृ० को०—भेभी ।   ६. मो०—पयानं कयानं ।
७. ए० कृ० को०—तबि ।   ८. ए० कृ० को०—रुरि ।
९. मो०—विपथ ।   १०. मो०—रचि ।   ११. मो०—परिय ।

अरिल्ल — मिले मेच्छ मंडल भर भीरं। अतुलित पान षान संधीरं ॥
उठत बंयन अप अप्प समीरं। साहि [1]बढ़ो थिर कर कंठीरं ॥ छं०१७ ॥

शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये
उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम।

हनूफाल — घम घम्म बज्जि निसान। चढ़ि सेन कंपि दिसान ॥
पहु ओर [2]गीरति भान। भर मंडि साहि दिवान ॥ छं० १८ ॥
बर मंत्र षान ततार। जुरि जुद्ध सेन करार ॥
षुरसान रुस्तम षान। [3]बाजिद मीर प्रमान ॥ छं० १९ ॥
मनसूर सेर हुजाब। जिन दान षग जम आब ॥
[3]महमंद कम्मन काल। तिन तेज अरि भै चाल ॥ छं० २० ॥
मन ज्यंद जम्मन धीर। तेजम्म षान गँभीर ॥
बेहद्द षान जिहान। निसुरत्ति आजम मान ॥ छं० २१ ॥
ममरेज से रनसिंघ। भजि जात तिन अरिभंग ॥
मुलतान षान मसद्द। भारथ्थ षान सुहद्द ॥ छं० २२ ॥
आमोद जाजन पीन। तिन हक्कि अरि तन छीन ॥
आषेट आतम मीर। सारुफ सेर गँभीर ॥ छं० २३ ॥
सुरतान [4]मंडि दिवान। बर मंच करि परमान ॥ छं० २४ ॥

सभा में ततार खां का नियमित कार्य के लिये प्रस्ताव करना।

दूहा — मिले मीर भर षान सब। रचि दिवान दरबार ॥
मंड मसूरत्ति मत्त बर। तब षुरसान ततार ॥ छं० २५ ॥

वितंड खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना।

कवित्त - मीरषान से रनवितंड। हक्किय हुक्कारिय ॥
सनमुष साहि सहाब। बोलि बह बह बक्कारिय ॥
हनों सेन हिंदवान। ऐन चहुआनह सधौं ॥
अरि अरिन्न अरि भीर। हक्कि हक्कों षग[5]पंधों ॥
गज बाज साजि ऊथल पथल। थल अंडुन भजों [6]भरन ॥
भुअ भाष मिस्त मंकोद रन। कै [7]षोरहु जीवन धरन ॥ छं० २६ ॥

खुरसान खां का राजनीति कथन।

पद्धरी — षुरसान षान कहि सुनि ततार। संचो सु बत्त जंपौ सु ढार ॥
दल ओर तेज हिंदू अकार। बर मंत्र सेन रच्यो [8]विचार ॥ छं० २७ ॥

---

१. ए० कृ० को०—षटो षठ्ठी। २. मो०—गाजीव।
३. ए०—महमूद। ४. ए० मंडि, कृ०—मांडि।
५ ए० कृ० को०—बन्धी। ६. ए० कृ० को०—सरन।
७. ए० कृ० को०—षोरहि। ८. ए० कृ० को०—बिचार।

बुल्ल्यौ वितंड काली तमंकि । तस छत्तें जुद्ध [1]किम साह संकि ॥
संग्रहौ सेनपति हिंदुराज । बंध्यों अषारि षल षग्ग बाज ॥ छं० २८ ॥
निसुरत्ति मीर जंपै सु तब्ब । तम हसे साह किज्जैं न ग्रब्ब ।छं०२९॥

दूहा –रावन ग्रब्ब बिनाश रज । एन सीस हयबीर ॥
अप्पा कोनन उच्छयौ । कालू से रनमीर ॥ छं० ३० ॥

पद्धरी –पुनि अष्षि साहि निसुरत्ति बैंन । सूरतान आन भरकान [2]नैन ॥
कुहि बाज तेन चालंत पब्ब । भीषंग कंपि है ग्रब्ब सब्ब ॥छं० ३१॥
राई सुमेर करते न बार । [3]अल्लह सुआल ऐसी विचार ॥
बिन साह तेज बढ्ढै सु ग्रब्ब।इष्षै न ताहि अल्लह अदब्ब ॥छं०३२॥
मनो न संक चहुआन सूर । बंधव सुमंत्र भर मंत्र पूर ॥
बेलू बिलाइ नदि बंधि वारि।बिन सेन कंक चहुआन च्यारि ॥छं०३३॥
★हिंदू सहस्स दस सामसंद । दल गैन लेस तन तेक कंद ॥
बुल्लाइ बैनपति समर मंड । बंचै विचार सु विहान चंड ॥छं०३४॥

बादशाह का (लोरक राय) खत्री को पत्र देकर धर्म्मायन के पास दिल्ली भेजना ।

गाथा –[4]बुल्लि सु दूत हजूरं । मंडे पत्रीय बीर पठायं ॥
अष्षित पान प्रमानं । कथ्थी गाथाय सूर चहुवानं ॥ छं० ३५ ॥

दूहा –बोलि दूत चव निकट लिय । दिय सु पत्र तिन हथ्थ ॥
कह्यौ जाइ ध्रम्मान सों । सजि चहुआन समथ्थ ॥ छं० ३६ ॥

दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना ।

गाथा –निज के वीसा रुढं । बर साहाब ढिल्लीयं प्रासं ॥
बरति मंत्र मष किन्नं । गज्जंय मद्द भद्द नीसानं ॥ छं० ३७ ॥

दूहा –गए दूत चलि निकट चव । करि सलाम बर साहि[5] ॥
पुर बंकिन कंकन सजन । बलि आतुर बर ताहि ॥ छं० ३८ ॥

दूत का दिल्ली पहुँचना ।

स्याम [6]पष्ष पूरन क्रमिग । पहु जुग्गिनपुर नैर ॥
दिय कग्गर ध्रम्मान कर । बर [7]भ्रिम्मै रिन बेर ॥ छं० ३९ ॥

---

१. मो०–क्यों । २. मो०–दैन । ३. ए० कृ०–अलहसुआल ।
★ ए० कृ० को०–"हिन्दु सु हर सोमेस नंद । लग्गे न लेस तन तेक कंद" ।
४. ए० कृ०–बुल्लवि । ५. मो०–साह ।
६. मो०–पष्ख । ७. ए० कृ० को०–मंत्री ।

दूत का धर्म्मायन से मिलना ।

गाथा—दिय पत्री ध्रम्मानं । पानं गहि पाइ नाइ बर मथ्थं ॥
भर चोहान समथ्थं । सज्जो सम साह कज्जयं बैरं ॥ छं० ४० ॥

धर्म्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना ।

दूहा—कायथ कागर बंचि कर । हायथ [1]हाय सु कीय ॥
साहि काल सुब्भर सभर । आय पहुंच्यो दीय ॥ छं० ४१ ॥

धर्म्मायन का दरबार में आ कर यह पत्री कैमास को देना ।

बचनिका—पत्री ध्रम्मन बाचि कें देहु । बहुरि दरबार गएहु ॥
कैमास कों तसलीम कीनी । पत्री सु हाथ दीनी ॥ छं० ४२ ॥

शहाबुद्दीन की पत्री का लेख ।

चौपाई—हम तुम घरतें सोगंध कीनी । नाते ध्रम्म दुद्ध है चीन्ही ॥
दानव देव आदि भी लग्गे । तातें बैर पुरातन [2]जग्गे ॥ छं० ४३ ॥
ज्यों ज्यों हम तुम बजिहैं [3]धार । त्यों त्यों सुकवि गाइहैं सार ॥
अमर नाम साहिब का सांचा । पानी पिंड षेह का कांचा ॥ छं० ४४ ॥
हम तुम में बंध्या अहंकार । मरदां ध्रम्म पुरातन धार ॥
मरदा अलि भारथ्या बेती । मरद मरै तब निपजै षेती ॥ छं० ४५ ॥

दूहा—मरदां षेती षग मरन । [4]अष्षि समप्पन हथ्थ ॥
सो सच्चा कच्चा अवर । कोइ दिन रहै सु कथ्थ ॥ छं० ४६ ॥
कथा रही पैगंबरा । अरु भारथ्थ पुरान ॥
तातें हठ हजरत्ति है । सुनो राज चहुआन ॥ छं० ४७ ॥

धर्म्मायन का कैमास के हाथ में पत्र देना ।

दिय पत्री इह कहि सु कर । करि सलाम तिय बार ॥
साहिब तुम सन लरन को । आयो सिंधु उतार ॥ छं० ४८ ॥

कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना ।

सुनि मंत्री नृप अष्षि सम । बंचि पत्र तिन बार ॥
कंच कूंच षंधार पति । आयो सिंधु उतार ॥ छं० ४९ ॥

पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना ।

सुनि पत्री चहुआन ने । सम सामंतन राज ॥
बात परट्ठिय सब भरन । अप्प अप्प [5]भरसाज ॥ छं० ५० ॥

---

1. ए० को०—हीय ।　　2 ए० कृ० को०-लग्गो ।
3. ए० को—धारै ।　　4. ए०—हथ्यि ।
5. मो०—बल ।

पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना ।

कवित्त — कहै राज प्रथिराज । सुनो सामंत सूर भर ।।
गज्जनेस चतुरथ्थ । विरथ आयौ सु अप्प पर ।।
साज बाज मय मत्त । षग्ग बर भर उब्भारिय ।।
उतरि वेग नदि सिंधु । सुनिय धुनि अर उत्तारिय ।।
सज्जो समथ्थ सामंत सब । संमर चावर हंब रन ।।
सुरतान खान खुरसानपति । दल बद्दल पावस परन ।। छं० ५१ ।।

सामंतों का उत्तर देना ।

तमकि राज प्रथिराज । कहै ममत सूर भर ।।
चाहुआन समरथ्थ । पथ्थ भारथ्थ चारु चर ।।
सिंधु साहु गज गाह । पग्ग षंडो पल पित्तह ।।
कर अंजुलि रिषि [1]अस्ति । चंद अचवन दल किन्नह ।।
हर हार मार संमुष समर । अमर महो जग्यो अमर ।।
ज्यों मान ब्योम आरुढ़ [2]धरि । दनी चमू चौसर चमर ।।छं०५२।।

पृथ्वीराज का पचीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना ।

अरिल्ल—
चढ्यो राज प्रथिराज सु राजन । [3]पाव लष्ष दल बल गज बाजन ।।
चामर छत्र रषत्त निसानं । मनु घनघोर दिसान दिसानं ।। छं० ५३ ।।

कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन ।

त्रोटक — चढ़ि राज महा भर सन भरं । उडि षेह पुर ढक्कि सूर करं ।।
बनि अच्छरि बच्छरि चारु बरं । किल [4]कौतिग भूत वेताल वरं ।। छं० ५४।।
मुष छंद सु चंद बरं पठियं । [5]मुष जुग्गिनि अंग थियो गहियं ।।
सुर सद्द जयं जयरं [6]कथयं । चल चंचल सूर चढ़े कसियं ।। छं० ५५ ।।
तल ताल करालति कूक करं । ... ... ।।
दोइ आइस दूत ससाहि दलं । तिन अष्षिय सेन निकट्ट कलं ।। छं० ५६ ।।

पृथ्वीराज का पड़ाव डालना ।

दूहा — सुनि अवाज सुरतान दल । हरषि राज प्रथिराज ।।
कोस पंच हुअ संबचिग । हिंदुअ मेच्छ अवाज ।। छं० ५७ ।।

---

१. ए० कृ० को०—लागस्ति, अगस्त ।
२. ए० कृ० को०—ढरि ।
३. मो०—तीन फौज रक्खे गज बाजन ।
४. ए० कृ० को०—कौतिक ।
५. ए०—पयषं ।
६. ए० कृ० को०—मुख ।

अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना।

उदय भान आवी अरुन । चढ़यौ राज सजि सेन ॥
उर पातर कातर [1]हसे । मेच्छ पीर फर सेन ॥ छं० ५८ ॥

गाथा—अच्छरि कच्छिय गैनं । चैनं चवसठ्ठ गैन गोमायं ॥
हर हरषे हारायं । जुद्धं सज्जाइ दो दसा दीनं ॥ छं० ५९ ॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

दूहा—मिलिवि सेन अरुन सु अनी । तनी तनी दुअ [2]दीन ॥
असुर ससुर सज्जे सयन । दोउ बीरां रस भीन ॥ छं० ६० ॥

शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना।

भोटि साहि भर षान सब । पति पुच्छी इह बत्त ॥
अरिय प्रचंड प्रचंड दल । करहु समर सक मत्त ॥ छं० ६१ ॥

सूर्य्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना।

अरिल्ल—प्रगटित भान पयानिति पूरं । वाजिग दुंदभि धुनि सुर कूरं ॥
चढ़यौ साहि संमर करि सूरं । अरुन बरुन मिलि तथ्य [3]मनूरं ॥ छं० ६२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना।

दूहा—ढलकि ढाल बहुरंग बर । [4]गुरुत मत्त गजराज ॥
झलकि नीर वपु दल चढ़िय । मनों पावस गुर राज ॥ छं० ६३ ॥

दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन।

भुजंगी—
ढलकी सु ढालं, हुलक्केति [5]सूरं । धमक्के धरा, नाग नीसान [6]पूरं ॥
किलक्कै सुभेरु, बजे बाज तूरं । झलक्कै सुनेजा धरा [7]धूम धूरं ॥ छं० ६४॥
बरक्के बितालं, बजे तार तालं । करै कूह कूहं, जगी जोग मालं ॥
नचै सठ्ठि चारं, करै राग सिधू । बकैं भूत प्रेतं, कठें तार तिधू ॥ छं० ६५ ॥
मिली सॅन सेनं, टगी लग्गि [8]नैंनं । वढ़ी काल काया, चढ़ी गिद्धि गैनं ॥
भरं भीर भीरं, भिरैं बीर भारं । रची अठ्ठ फौजं, विवै साहि सारं ॥छं०६६॥
मुष अग्ग मंने, षुरासान अग्री । भरं चिम्मनं, वान तेयं दिठग्गी ॥
दिसं वाम मारुफ पीरोज सज्जे । दिसा दच्छनं, चिम्मनं अम्मरज्जे ॥
॥ छं० ६७ ॥

---

१ ए० कृ० को०—हिसे ।
२. ए० कृ० को०—दीस ।
३ ए० कृ० को—न धूरं ।
४. मो०—"घुरतम चढ़ि गजराज" ।
५ ए०—निसानं ।
६. ए०—भेरं, कृ०—भूरं ।
७ मो०—"धरा धूर धूरं" ।
८. मो० नैनं ।

अनी च्यारि पिठ्ठं, अनी दोइ अग्गं । गुरं गोर वारं, फरो पाइ कग्गं ॥
अग्यो अंग जोरं, हुओ बीर सोरं । घनंनद्द नीसान, भद्दं सघोरं ॥ छं० ६८ ॥

दूहा — भर सहाब सज्जिय अनी । जिवन जोर चतुरंग ॥
सुभर प्रफुल्लित वीर मुष । काइर कंपत अंग ॥ छं० ६९ ॥

हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उस के अनी भाग और व्यूह बद्ध होने का वर्णन ।

भुजंगी —
चढ्यो राज चहुआन कुप्यो करूरं । बढ़ी वेद साषी चढ़ी जाग रूरं ॥
ढलक्की मुढालं सु ढालं घमक्कं । करं कृत षग्गं सु पट्टं चमक्के ॥ छं० ७० ॥
घनंआगमं जानि विज्जू दमक्के । घनघोर नीसान नादं घमक्के ॥
रची पंच [1]सेना मधे [2]मंद्धि राजं । गजं वाजि रोहं हथन्नार साजं ॥छं०७१॥
मुषं अग्ग कैमास चावंड सूरं । महस्सं अठं सेन गज बाजि पूरं ॥
[3]भुजा दच्छिनं भीम कन्ह किवारं । सतं तथ्थ सामंत सेनं सवारं ॥छं० ७२॥
दिगं वाम पंम्मार आबू [4]प्रईसं । चमू च्यारी सोभं भिरी आनि सीसं ॥
[5]रसं रौद्र मंड्यो षगं [6]षंडि जीसं । फिरै केक ढाल [7]ढुरै नागरीसं ॥छं०७३॥
पछं जाम जाजं दलं सिंघ साजं । सयं पच पंचास सगी विराजं ॥
दहं तीन पंषं [8]तयं पंच सज्जं । इलं लेप नंद गनं गेन गज्जं ॥ छं० ७४ ॥
घमं घम्म नीसान रीसान वज्जं । सबद्दं [9]मु सद्दं सु सिद्धं सु लज्जं ॥
चढ़े मेच्छ हिंदू मिली जुद्ध अन्नी । कथी व्यास भारथ्थ सा आज वन्नी ॥
॥ छं० ७५ ॥
कुरं पंड बंध्यो बधे आप अंगं । इसे मेच्छ हिंदू भरं षग्ग लग्गे ॥ छं० ७६ ॥

दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना ।

दूहा – जनुकि पथ्थ भारथ्थ भर । लगि कुर पंड प्रचंड ॥
चाहुआन दल मेच्छ दल । हक्कि हय गय झुंड ॥ छं० ७७ ॥
इत हिंदू उत मेच्छ दल । [10]रन चढ्ढे बर धीर ॥
हक्कि तेज असि वेग बढ़ि । लगे सुभर हर भीर ॥ छं० ७८ ॥

---

१. मो०—फौजं । २. ए० कृ० को०—मध्य ।
३. ए० को०—दिसा । ४. मो०—अईसं ।
५. मो०—"रसं छक्कर मद्धि षग षांडे जीसं" । ६. ए० कृ० को०—षंड ।
७. ए० कृ० को—ढलै, ढलैं । ८. ए० कृ० को०—मयं ।
९. ए० कृ० को—सुसव्वं । १०. ए० कृ० को०—चल्ले चढ़ि ।

युद्ध का दृश्य वर्णन ।

दंडमाल—मेछ हिंदु जुद्ध थरहरि । धाइ धाइ अथाय धर हरि ॥
रुंड मुंडन षंड धर हर । गत्त बहुत सुरत्त झरहरि ॥ छं० ७९ ॥
भग्ग काइर जूह भीरम । छंडि जल सूरिज्ज धीरम ॥
रुंड बढ्ढिय रच्चि धर हरि । रक्त जुग्गिनि पत्र पिय भरि॥छं०८०॥
चवत कीरति अच्छ अच्छरि । सुफटि पट्ट सुरट्ट फर हरि ॥
सिद्ध सूरन वीर जुरि जुरि । ... ... ॥ छं० ८१ ॥
प्रबल षीलिय पाल सेनिय । विचलि थल दिग परे ऐनिय ॥
गोम गैंन निसान नंगिय । थान थान बितान संगिय ॥ छं० ८२ ॥
भुअन भिरि भुअधार धारन । श्रोन तुच्छिय हीर झारन ॥
हिंदु मेच्छ अघाइ धाइन । नंचि नारद जुद्ध चायन ॥ छं० ८३ ॥

गाथा—नंचिय नारद मोदं । क्रोधं धन देषि सु भट्टायं ॥
हर हरषिय हारं । पत्तो चंद भानं भा यानं ॥ छं० ८४ ॥

सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना ।

दूहा—थकि झुझ्झत संध्या सपत । सपत भान पायान ॥
पट्ठ प्राची बजि पंचजन । लह सूझत गोयान ॥छं० ८५ ॥

प्रातःकाल होते ही इधर से कैमास का और उधर शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना ।

कुंडलिया—पट्ठलग्गे चामंड सुभर । अरु विमन्न चतुरंग ॥
इंद्रजीत लछिमन रहसि । बहसि बढ़ी [1]सु तुरंग ॥
बहसि बढ्ढि सु तुरंग । पंच साइक भाले भिलि ॥
फुनि गोरी दाहिम्म । सु हय छंडे सु बंधि कलि ॥
जिम रघुपति पतिलकं । बकं कंकन कर अग्गी ॥
तिम गोरी दाहिम्म । सु हय छंडे जुध्र लग्गी ॥ छं० ८६ ॥

सूर्य्योदय होतेही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना ।

कवित्त—उदय भान पाषान । कोर दिष्षिय दल बढ्ढिय ॥
हय गय [2]नर आररिय । सद्ध पर सद्दन बढ्ढिय ॥
अच्छरि तन सच्छरिय । व्योम विम्मानह चढ्ढिय ॥
दिष्षि सूर सामंत । देव जैजै मुख पढ्ढिय ॥
हथ्थिय सुधारि हयनारि धरि । गजनारि करनारि बजि ॥
चढि हिंदु मेछ मुह मिलि अनिय । मनों अभ्भ पावस सु रजि ॥
॥ छं० ८७ ॥

---

१. मो०—चतुरंग ।   २. ए० कृ० को०—भर ।

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करना ॥

दूहा -भर भीषम तीकम अमर। धनुष बान अग्रान ॥
हिंदुअ मीर सुद्दक हुअ। मीरचंद सनमान ॥ छं० ८८ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना।

भुजंगी -मिले हिंदु मेच्छं अनी एक मेकं। [1]बजे षग्ग धारं रजे तोन तेकं ॥
करं पत्र [2]सत्ती चवै [3] मिध नद्दं। श्रवै श्रोन गंडूष षग्गं उनग्गं ॥ छं० ८९ ॥
उठं रत्त पीतं षमं धूम रंगं। मतं [4]सेत नीलं जलं जात संगं ॥
उठं पत्र [5]डंडूर सर सोभ सज्जी। मनों डंड सालं समंडं डरज्जी ॥ छं० ९० ॥
बितालं बितालं रजे ताल प्रेरं। गिरं मेच्छ हिंदू घनं घाइ बेरं ॥
जमं जांम जग्यो जमानं सुजग्गं। तिलं [6]तिज्झ अग्ग बढ़े षग्ग षग्गं ॥ छं० ९१ ॥
जयं अग्गि जग्गी जनू जग्य जूनं। रते अंग अंगं चले संग [7]सूनं ॥
चढ़ी सिद्धि गैनं छयो बान भानं। परे पाइ सामंत सो चंद जानं ॥ छं० ९२ ॥
जिमं पड [8]कैरू परे मज्झि जुद्धं। सही सत्रु कथ्थी षगं द्रढ़्ढ उद्धं ॥
कवीचंद कथ्थी कुरष्षेत हेतं। इसे हिंदु मीरं चढ़े बंदि नेतं ॥ छं० ९३ ॥

युद्ध भूमि में बेताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन।

कवित्त नेत बंधि हिंदू। नरिंदं सामंत मनभर ॥
मीर भार असरार। सबै ढाहे सु सद्धि सर ॥
पथ्थ जेम भारथ्थ। कथ्थ सुक्रमै जिम कथ्थिय ॥
सु कविचंद बरदाइ। एम अथ्थिय रन बत्तिय ॥
घन घाइ आघाइ सुघाई घट। तेक तानि नंचिय करस ॥
चहुआन राइ सुरतान दल। न्रत्य बीर मंड्यो सरस ॥ छं० ९४ ॥

दूहा तेग तार मंडिय समर। नचिय नंच बिन पैर ॥
चाहुआन सुरतान रिन। रचे न्रत्य बर बैर ॥ छं० ९५ ॥

योगिनी भूत बेताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूरबीरों का बीरता के साथ प्राण देना।

भुजंगी - रचे न्रत्य बर बैर [9]हिंदू ह मीरं। अदुंमंदलं तज्ज राजंत धीरं ॥
घनं गज्ज नीसान ईसान सोरं। करैं न्रत्य भूतं रचे ओर कोरं ॥ छं० ९६ ॥

---

१. मो०—"बजे षग्ग धारं जेनो सततेकं"। २ ए० कृ० को०—सट्ठी।
३. मो०—सिद्ध। ४. मो०—सेल।
५. ए०—डैंडूर। ६. ए० कृ० को०—तिल्ल।
७. मो०—सूनं। ८. ए० कृ० को०—केरं। ९. मो०—हिन्दू समीरं।

करंताल भालं बजें रंग रंगं । भ्रमें गिद्धि गैनं नची चारि जंगं ॥
सुरं सुंदरी मंदरी चढ्ढि व्योमं । छवी छब्बि छायं बरं बार सोमं ॥छं० ९७॥
उडैं रत्त गुल्लाल फूले सु फागं । चलं षग्ग कूचं समं माल लागं ॥
उठें गाइनं नंचि तोरंत तानं । लगें षग्ग पत्तं सु पेरंत मानं ॥ छं० ९८ ॥
कटै अद्ध सीसं बहै रक्तजानं । रतं पट्ट बंध्यो मनों रिझ्झ भानं ॥
सुरं सट्ठि नद्दं चबै मुष्ष गानं । फिरैं जुद्ध जोधं बहै मोह बानं ॥ छं० ९९ ॥
बढ़े मांस प्रासाद भूतं असूरं । रतं पानि डारं तकै सूर नूरं ॥
धरे रत्त रूरं कचं कुंच बासं । विधि छित्ति राजी रसं रंग रासं ॥छं० १००॥
नचै प्रेत पानं बिना सीस केलं । मनों अग्ग फागं जगे ग्रत्य षेलं ॥
षगं षंटि नाना कढे रुंड सेषं । इभं रूढ़ सट्ठी निनें नारि देषं ॥ छं० १०१ ॥
बकै मत्त हालाहलं षग्ग षंडे । जिसे राम रन मझ्झ रावन्न मंडे ॥
नवं नारिका बाटिका बीर तुट्टै । घनं घाइ प्रघ्घाइ जुग जोग छुट्टै ॥छं०१०२॥

युद्ध रूपी समुद्र मथन को उक्ति वर्णन ।

कवित्त— नव बढ्ढिय नाटिका । षग्ग कढ्ढी असु हविकय ॥
हिंदु मेच्छ मिलि षेत । अप्प अप्पन चढ़ि कंकिय ॥
रा चावंड रा जैतसी । राइ पज्जून कनक्कह ॥
मीर षान भर पंच । यग्ग बढ्ढए तननंकह ॥
वपु वेद चन्द बानी विमल । विर्दुरि षग्ग षल षेत बढ़ि ॥
केवल सु कढ्ढि सुरतान दल।लिय रतन्न मथि देव दधि ॥छं०१०३॥

कुंडलिया – मथि कढ्यौ सुरतान दल । दधि केवल मन बढ्ढि ॥
मीर षान माकफ दल । बीर बिमानन चढ्ढि ।
बीर बिमानन चढ्ढि । दिष्ट बढ्ढी बारह परि ॥
भर चंदेल विरंम । षेत झोरी सुभोंह भर ॥
गय नंगचंद अमृत झरिग । कुसुम गुच्छ कविचंद पथि ॥
बिम्मान पथ्थ रवि कुंत रथ।षग्ग नेत कढि केल मथि ॥छं० १०४॥

इस युद्ध में जो जो वीर सरदार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन ।

मोतीदाम—मथ्यो सुरतानय सेन पयार । लई जस कीरति चंद सुषार ॥
परे रन मझ्झ चंदेल सुभाइ । परे बहु षान सुभाइ अघाइ ॥ छं० १०५ ॥

---

१. ए० कृ० को०—कर्म ।
२. ए० कृ० को०—कनककह ।
३. को०—सुरतान, पुरतान ।

पर्यो भर बाहर [1]राइति साल धरद्धर षग्गन तुट्टिय ताल ॥
बरें कर अच्छर सुच्छर माल । धकद्धक काइर छत्ति त्रिसाल ॥ छं० १०६ ॥
झुकि झुकि तुंडन अद्ध कमद्ध । मनों हरि चक्कन केतन बद्ध ॥
पर्यो घन [2]घाव सु वीरमदेव । हयग्गय विद्धिय छत्र अनेव ॥ छं० १०७ ॥
बिनों सिर नंचत मीर कमंध । हये हय नाग नरभ्भर सध्ध ॥
लयो भर सीस सुभ्यो असि साइ । हनै लगि पंचय पंचय घाइ ॥ छं०१०८ ॥
[3]हुए लगि पंचल बिम्मन घाइ । ... .
[4]पर्यो पीरोज सु रावन नंद । करे न[5]य कोतिग सूरन चंद ॥ छं० १०९ ॥
चले दल चंचल दो सुरतानं । लगे कर देषि चँदेल परानं ॥
परे मफरद्द सुमंच [6]विमीर । लगे ग्रहलुट्टि क्रषी कर कीर ॥ छं० ११० ॥
गिरे सु पिरोज तिलत्तिल गात । विय छवि छछ बढी हूत्रिपात ॥
[7]रजे रति आगम राव बसंत । नगम्मनि जग परे बर सत ॥ छं० १११ ॥
गही तरवार विपानि सु झारि । नवंनिय वाइस अंत उतारि ॥
पर्यो सम बाज सु हाजमषान । रचे गज इंद्र सु [8]ब्रह्म धियान ॥छं० ११२॥
कर्यो मन सूर तिलत्तिल षग्ग । उड़े रिन [9]पत्तरि तप्पत अग्ग ॥
चढ़े सारूप सु गँवर रूप । छयो सम सीस धरद्धर भूप ॥ छं० ११३ ॥
भिरें भर हिंदुअ मीर अघाइ । गिरे दस पंच सहस्सह छाइ ॥ छं० ११४ ॥

युद्ध होते होते रात्रि हो गई ।

दूहा—गिरे मेच्छ हिंदू सुभर । हय गय घाइ अघाइ ॥
[10]सुंड दंड मुंडन भरत । रत्त झाकि झुकि ताइ ॥ छं० ११५ ॥

उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना ।

भिरि तूंअर लिय बग्ग भरि । हय करि नीर प्रवाह ॥
सघन घाइ संमुष [1] समर । लगे मेच्छ पति थाह ॥ छं० ११६ ॥

पहाड़राय तोमर का बल और पराक्रम वर्णन ।

घाइ घाइ तन छाइ छिति । रत्त छिछ उछरत ॥
भर तोंवर हर जिम तमकि । लगि[11]जमन गज अत ॥ छं० ११७ ॥

---

१. मो०—राव बिसाल ।
२. मो०—घाय ।
३. ए० कृ० को—हुनैं, हने ।
४. ए० कृ० को—"परयो पुं पीरोज;"
५. ए० कृ० को०—अय ।
६. ए० कृ० को०—बिमीर ।
७. मो०—रते ।
८. मो०—ब्रह्म बुधान ।
९. मो०—पातरि ।
१०. ए० कृ० को०—मुंड ।
११. ए—ससन, कृ० को०...सरन ।
१२. मो०—समुन ।

कवित्त—भर तोंअर अभि रत्त । धरत कर कुंत अंत अरि ॥
गअन बाज धर ढारि । धरनि बर रत्त जुथ्थ परि ॥
भगि मीर काइर कनैंग । हिय पत्त [1]मुच्छि [2]द्रह ॥
भगि सेन सुरतान । विथ्थि भर सुभर पानि कढ़ ॥
उब्भारि सिंगि कुंभन छरिय । झरिय श्रोन मद गज ढरिय ॥
हर हरषि हरषि जुगिगनि सकल। जै जै जै सुर उच्चरिय ॥छं० ११८॥

दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना ।

दूहा—प्रदिपद परिपातह पहर । समर सूर चहुआन ॥
दिन दुतिया दल दुअ उरझि । ससि जिम सद्धि विसान ॥ छं० ११९॥

तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी
को पुनः युद्धारंभ हुआ ।

कवित्त—दिन त्रतिया बर तुंग । झुक्कि झारन झुकि झुक्किन ॥
हिंदु मेच्छ हय हक्कि । धक्क बज्जिय भर हक्कन ॥
कटि मंडल घटि घुम्मि । झुम्मि झंझरिन अकालहि ॥
भूत बीर बेताल । मंस तुट्टत भ्रम चालहि ॥
दसकंध कोपि रघुपति रहसि । बिहसि चंद बढ्ढिय बदन ॥
चतुरथ्थ जुद्ध जंगिय जगी । रंगि कंक ढक्किन रदन ॥छं० १२०॥

चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह कोप उत्कर्ष वर्णन और युद्ध
का अलमय बीभत्स दृश्य वर्णन ।

दंडक—चवथि जुद्ध उदोत आरनि । सुभर भीर समुष्ष धारनि ॥
कोपियं चहुआन भरहर । घाइ कुंजर ढाहि धरहर ॥ छं० १२१ ॥
श्रोन द्रोन प्रवाह थरहर । अत अंतन अंत झर हर ॥
[3]तार तान विताल करि करि । तेग खेंचत पाइ परि परि ॥ छं०१२२ ॥
घुम्मि झुम्मि निसान बज्जिय । अगम मेघ असाढ़ गज्जिय ॥
धुनि सु असि असमान रज्जिय । दिष्षि देव विमान छज्जिय॥छं०१२३॥
कंपि कायर लज्जि लज्जिय । [4]बिकल गुष्ष ह्वै [5]निकलि भज्जिय ।
समुष तोंवर साह सज्जिय । [6]विचल अरि कर तेग तज्जिय ॥छं०१२४॥

१. ए० कृ० को०-मुट्ठि ।   २. को०—द्रग ।
३. को०—तार वितान विताल कर कर ।   ४. ए० कृ० को०—बिकल ।
५. ए० कृ० को०—निकरि ।   ६. ए०—बिचल ।

बीर बहुरि विशेष वानय । छुट्टि छाय अकास भानय ॥
रेन सूर दिसान थानय । सोक कोक [1]अलोक आनय ॥ छं० १२५ ॥
झमकि सुर मुष सस्त्र लग्गिय । दमकि दिसि दिसि षग्ग नग्गिय ॥
रत्त पत्त प्रवाह झरि झरि । ईस सीस [2]सजंत गुरि गुरि ॥ छं० १२६ ॥
मच्छ मच्छन कच्छ कच्छिय । दलन दोन कलोन अच्छिय ॥
अंत [3]दंतिय दंत पाइन । गिद्ध जुग लै उड़ी चाइन ॥ छं० १२७ ॥
नषत षित्त मुहत्त फिरि फिरि । मप्पि डोरि पसारि कर घरि ॥
रुहिर सर सम बहन धार स । भँवर पंषिन काक पारस ॥ छं० १२८ ॥

मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी पर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना ।

हनूफाल —रंगिय रदनु जुग्गिन बीर । है गै पारि असि [4]वर मीर ॥
तोंवर राइ दिष्यौ साहि । नंष्यौ बाज सनमुष आइ ॥ छं० १२९ ॥
डारिय तेग सिर करि षीज । ★गिर पर जनु कि करकिय बीज ॥
करि कर वारि गज धर ढाहि। [5]गैंवर गिरत निक्करि साहि॥छं०१३०॥
तोंवर दिष्षि राह पहार । गैंवर दिष्षि है कंध्र डारि ॥
भावरी भग्गि उठ्ठ मेच्छान । जै जै जै जंपिय चहुआन ॥ छं० १३१ ॥

मुसलमान सेना का घबरा कर भाग उठना ।

दूहा —भग्गि सेन सुरतान सब । रव लग्गी मुष तक्कि ॥
गह्यौ साहि तोंवर [6]पुरस । जानि गाह ससि बक्क ॥ छं० १३२ ॥

अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना ।

कवित्त —जुग्गिनि गन गर सिंधु । करत उच्चार सार मुष ॥
अछि अच्छरि बर इच्छ । बिसन श्रक पानि नेन सिष ॥

---

१. ए० कृ० को०—असोक आनय । २. मो०—जंति ।

★ मो०—गिर पर जानु करकिय बीज-पाठ है और ए० कृ० को०—प्रतियों में "गिरि पर किकर कीय बीज" पाठ है किन्तु इन दोनों पाठो मे छन्दोभंग होता है । ३. ए० कृ० को०—दंतिय ।

४. मो०—वर । ५. मो०—गिर वंत गैवर निकर साह ।

६. मो०—पुरिस ।

बज्जि ताल बेताल । रज्जि बर [1]रुंड मंड सँग ।।
श्रोन छोनि छय छंछ । गुंज गन देन रत्ति अंग ।।
[2]मुरि मेच्छ धाइ षट सघन परि । हथ्थ घालि सुरतान लिय ।।
जित्तो जु आनि सोमेस सुअ । अभै सुभै अंगन घटिय ।।छं० १३३ ।।

सुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दंड
लेकर उसे छोड़ देना ।

गहि गोरी सुरतान । अप्प ढिल्ली संपत्तौ ।।
माह सुकल पंचमी । बार भ्रगु बर दिन वित्तौ ।।
किय सु दंड पतिसाह । सहस सत्तह सुभ हैंवर ।।
दुरद षट्ट प्रम्मान । वहै षट रित्त मद्द झर ।।
कोटेक द्रव्य न्रप हेम लिय । घालि सुषासन [3]पठय दिय ।।
कलि काज कित्ति बेली अमर।सुभत सीस चहुआन किय ।। छं० १३४ ।।

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके तोंबर पहाड़
राइ पातिसाह ग्रहन नाम सैंतीसमो
प्रस्ताव संपूर्णम् ।। ३७ ।।



---

१. ए० कृ० को०–संड ।   २. मो०–मुरि मेन धाइ मिछ सघन परी ।
३. मो०– पट्ठ ।

अथ बरुण कथा लिष्यते ।

(अड़तीसवां समय)

"सोमेश्वर" सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे ।

दूहा —सुष लुट्टहि लुट्टहि मयन । अरि घर लुट्टै धाइ ॥
अंग नवनि करि उब्बरै । है पुर पग्गह चाइ ॥ छं० १ ॥

चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना ।

सोम [1]ग्रहन सुनि सोमन्न्रप । कालिंद्री मन आनि ॥
[2]है गै जन सब संग लै । तहां बोले बिप्र ठानि ॥ छं० २ ॥

सोमेश्वर जीके साथ में जाने वाले योद्धाओं के नाम और पराक्रम वर्णन ।

मोती दाम —
जु षोड़स दान बिचारिय राज । रची बिधि ज्यों [3]बुध [4]देवति साज ॥
तहां ढिगोसिघ पँवार पवित्त । [5]सुध्रम्मय ध्रम्म तहां बिपचित्त ॥ छं० ३ ॥
जु गौर गुरंबर सिंह सुसंग । जिनै करि जज्जर देहिय जंग ॥
तहां ढिग संजम राव नरिंदु । धरे जनु इंद्र बिराजत [6]चन्द ॥ छं० ४ ॥
सुबाहुन बीर बली कुनि नथ्थ । तिनै कलि ध्रम्मन दूजि यकथ्थ ॥
तहां गुर राज [7]बिराजत ताम । तिदिष्ट बशिष्ट मनों ढिग राम ॥ छं० ५ ॥
सु और अनेक महाभर मंझ । अमंत क्रमंत [8]सयन्निय संझ ॥ छं० ६ ॥

उक्त समय पर पूर्णमा की शोभा वर्णन ।

साटक —मुँदी मुष्व कमोद हंसति कला, चक्कीय [9]चक्कंचितं ॥
चंदं किरन कढंत पोइन पिमं, भानं कला छीनयं ॥

---

१. ए० कृ० को०—ग्रहनी ।   २. ए० कृ० को०—हाम जय ।
३. ए० कृ० को०—बुध ।   ४. मो०—देवनी ।
५. ए० कृ० को०—सुधर्मय ध्रम नहीं बिपबिन ।
६. ए० कृ० को०—इन्द, इन्द्र ।   ७. मो०—बिरामत ।
८. ए० कृ० को०—सपबिय ।   ९. मो०—चक्कीचितं ।

बानं मन्मथ मत्त रत्त जुगयं, भोग्यं च भोगं भवं ।
[1]निद्रा वस्य [2]अगत्त भक्त अनयं, वा अग्य कामी नरं ॥ छं० ७ ॥
त्रोटक—★चकी चक्क चकिकय चित्त मयं । बिछुरे बिय दिष्यिय संझ मयं ॥
† जु पयो ध्रिम तत्त मझं मुरबी।सु मनों दिसि दिस्सि सिंदूर[3]जबी॥॥छं० ८॥
घन सोर द्रुमं करि पंष घनं । सु मनौं लगि पारसियं पढ़नं ॥
अलि वासिय पंकज कोक नदं । कुलटा बसि छैल रसं [4]किमिदं ॥ छं० ९ ॥
बिरही जन दिष्टि सु धाम दुरी । उलटैं बसि डोरि ज्यौं चंग उरि ॥
बजी बर देवल झल्लर झूर । तिसं षरु सिंगिय सिद्धन पूर ॥ छं० १० ॥
[5]कपी मुग धाषिय केलि कठोर । [6]मुदै हसि प्रोढत सुंदर चोर ॥
छबि दीपक द्वारन जोति जगै । जनु दंपति नैन सुभे उमगै ॥ छं० ११ ॥
जु लगीं घुअ घुंमर रैनन मंडि । चलै क्रम चोर मगं [7]पियं छंडि ॥
‡ जुरसे रस चामर सीस इसे । दिषि दीपक जोति पतंग जिसे ॥ छं० १२ ॥
बिरहा उर झारिय केलि करी । इन दाहिय देहुव प्रीति धरी ॥
बिरही त्रिय मुष्ष सु दुष्ष [4]सदं । कुम्हिलै जनु पंकज कोक नदं ॥ छं० १३ ॥
जु संजोगय भोग सुषं सरसे । सु कमोदिन चंद फुलै दरसे ॥
जु ग्रिहं ग्रह जोवत दीप जुवं । जु वए मनु काम के बीज भुवं ॥ छं० १४ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का
यमुना के किनारे पर आना ।

दूहा—साझ समय ससि उग्गि नभ । गइ जामिनि जुग जाम ॥
ग्रहन समय दिषि होतही । जमुन पधारे ताम ॥ छं० १५ ॥

वरुण के बीरों का जागृत होना ।

स्नानं जंकी नो न्रपति । जल रक्षा जगि बीर ॥
[8]हुवकारे संमुष उठे । मंगन जुद्ध [9]सरीर ॥ छं० १६ ॥

---

१. मो०—निद्रया । २. ए० कृ० को०—अगंत ।
★ ए० कृ० को०—"कवि चक्क सु चक्किय" ।
† ए० कृ० को०—जु पयोध्र पतंत मझं मुरबी । ३. मो०—बधी ।
४. मो०—किमि । ५. ए० कृ० को०—पिम ।
‡ ए० कृ० को०—"जुरसे रस चामर सीदक से" ।
६. ए० कृ० को०—मुदं ।
७. मो०—धाम । ८. ए० कृ० को०—हूहकारे ।
९. ए० कृ० को०—समीर ।

इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अक्षत आदि लिए हुए खड़े थे।

ए बिन वस्त्र रु सस्त्र बिन। हस्त दरभ कुस कोस ॥
तिल तंदुल जव पुहप कर। बरन रत उठि रोस ॥ छं० १७ ॥

वीरों का गहरे जल में शब्द करना।

अति प्रचंड गहराइ गल। गल गज्जे बल बीर ॥
स्याम बरन भय भीत दिषि। धीरन छुट्टै धीर ॥ छं० १८ ॥

जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन।

कवित्त— अति उतंग बज्जंग। उदित उर जोति रत्त द्रिग ॥
अरुन रुधिर नष अधर। बस्त्र नन अस्त्र सस्त्र ढिग ॥
दसन ऊंच सिर केष। वेस भय भग्गिय पासं ॥
अति उनाह जम दाह। कौन मंडै जुध आसं ॥
कल कलह बचन किलकंत सुर। सुर बाजत जनु धुनि धमनि ॥
हम करत केलि जल संचरत। तुम [1]संमुह कोइ [2]मत अवनि ॥
॥ छं० १९ ॥

सांमतो का ग्राव पर चला जाना।

दूहा— सुभट दिष्ष करि क्रोध उर। भये भयानक सूर ॥
सस्त्र हथ्थ दिष्षे नहीं। ★ग्राव ग्रहे जलपूर ॥ छं० २० ॥

जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन।

कवित्त—परत ग्राव जल पूर। झरत जनु रुष्ष फल सुवन ॥
बजत घात आघात। फरत अवसान बीर तन ॥
रावत्तन अवसान। देव दुंदुभि अधिकारी ॥
[3]जोग ग्याल त्रय मान। बनिक बुधि मोहि सुनारी ॥
राजेंद्र दान सिद्धह तपह। भुगति जुगति विधि [4]कोबिदह ॥
इत्तनी बत्त अवसान मिलि। मनहु मंत्र जनु गुन भिदह ॥छं०२१॥

जल के बीच में जल वीरों की आसुरी माया का वर्णन।

आवरि कर वर करह। भिरत भारथ [5]पच्चारिय ॥
अंग अंग संग्रहहि। इक्क इक्कत अधिकारिय ॥

---

१. ए० कृ० को०—सुमुह। २. ए० कृ० को०—मति।

★ ग्राव यह शुद्ध संस्कृत शब्द है यथा-शब्दकल्पद्रुम "पृथ्वी तावत् त्रिकोण विपिन मव नदी ग्रावरुद्धं तदद्धम्"। इसका तात्पर्य डेलटा से है।

३. मो०—ज्यों। ४. मो१-कोबदह।

५. ए० कृ० को०—परचारिय।

अधम जुद्ध जुरि करहि । करहि बल कपट अनंगिय ॥
कबहु धूम वे करहि । करहि कब झार झरन्निय ॥
कब्बहूं मेघ [1]उट्ठं सुजल । कब्बहि करन ग्रावह वरष ॥
उच्चरहि बैन बहु बीर बर । बिरचि कबहु बुल्लैं हरष ॥छं०२२॥

जलबीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामंतों का भयभीत न होना ।

कबहुं सस्त्र सर परहि । कबहुं डक्कें डक्कारिहिं ॥
तीन लोक तन [2]हक्कहि । बक्कहि बीरन बक्कारहिं ॥
अकल कलह बल करहि । समहि संग्राम सुधारहिं ॥
अजुत जंग उद्धरहि । *कलह बल धार उधारहिं ॥
सामंत भूमि भंजहि भिरहिं । गिरहिं परहिं उट्ठहिं लरहि ॥
सोमेस सूर संक न [3]गनहिं।बिरचि गाल गल बल करहि॥छं०२३॥

वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामंतों का भय दिखाना ।

हम सु भयंकर बल अभूत । सुभटन [4]हक्कारिहिं ॥
हम सु [5]प्रवत्त प्रमान । कनिष्ट अंगुरि उप्पारहिं ॥
हम समुद्र प्रम्मान । डोहि जल पहुमि [6]प्रवाहहि ॥
देषी सुनी [7]न कोइ । सोइ ब्रह्म मंडल गावहि ॥
किन काम धाम तजि वाम सुष । आइ सपत्ते जमुनि निसि ॥
बर बेर निसाचर हम फिरहिं । नीर रमें तिल लेइ ग्रसि॥छं०२४॥

वीरों का राजा सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना ।

दूहा —[8]इह कहि के लग्गे लरन । गैन गुंज जल फार ॥
मानहु भारथ अंत को । भार उतारन हार ॥ छं० २५ ॥

सामंतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना ।

कवित्त —काल संक अहुरहि । तार बज्जत प्रहार सुर ॥
जम्मुन [9]जल अंदोल । बीर बोलंत बीर गुर ॥
कलहु केलि सम केलि । ठेलि कढ्ढें झावद्दिसि ॥
एक ग्राब बरषंत । एक फारंत नव्व कलि ॥

---

1. मो०—वुट्ठे । 2. मो०—तक्कहि ।
* कृ० को०—कबहि बीरन बक्कारहि ।
3. मो०—भिरहि । 4. ए० कृ० को०—हक्कारिय ।
5. ए० कृ० को०—पंड प्रब्बत समान । 6. मो०—प्रवाहिहि ।
7. न होइ । 8. मो०—इह कहे । 9. मो०—सचल ।

परि मुच्छि मध्य विक्रम बलिय। जुद्ध निसाचर विषम ¹अषि ॥
बर बीर धीर घप्पे लरन। फट्टु पट्टत न्रा सोम ²लषि ॥ छं०२६ ॥

इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख वीरो का बल कम होना और सामंतों का जोर बढ़ना।

पद्धरी—तिम ³निम सु बीर तामसत थोर। दिन उगन ⁴बढ़े रजपूत जोर ॥
बढ्ढे जु मल्ल मुट्ठी प्रहार। फट्टे कि भूम पट तार तार ॥ छं० २७ ॥
उच्छरत जमुन जल इन प्रकार। क्रीड़त जानि मद गज फुंकार ॥
तरफरहि मध्य अत इन प्रकार। कपि कोर नंषि गिरि ममुद सार ॥छं०२८॥
बर भरहि करहि लननिनि हाइ। *बज्जंत बज्र जनु विषम घाइ ॥
रन रह बहस्सि उच्चार बैन। इतनें भयो ⁶परताप गैन ॥ छं० २९ ॥
निसिचरन दिष्षि जब समय सूर। झलमलत किरन त्रिमल करूर ॥
तमचरह पूर प्रगटी किरन्न। प्रगटी सु दिसा विदिसान अन्न ॥ छं० ३० ॥
तब लगि पंच भर परिय मुच्छ। निसचर उतंग करि जुद्ध गच्छ ॥छं०३१॥

प्रातःकाल के बाल सूर्य्य की प्रतिभा वर्णन।

दूहा—ज्यों संसत्र में जुवन ⁷कम्रु। तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥
यों निसि मध्यह अरुन कर। उद्दित दिसा ⁸लसाइ ॥ छं० ३२ ॥
*रत्ति रही वर विलगि बर। ज्यों ससि कोरह राह ॥
हरि डढ्डै बाराह धर। कै हरि चपत राह ॥ छं० ३३ ॥

सूर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर सहित सब सामंतों का मूर्छित होना।

अरिल्ल—गच्छिय सुद्ध निसाचर बीर। परे धर मुच्छि सु पंच सरीर ॥
किए तन थान प्रमानन जान। सु देवहि दुंदुभि ज्ञानिय गान ॥ छं० ३४ ॥

सब मूर्छित पड़े हुए थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर आना।

दूहा—मृतक समानति मृतक परि। रहिग जीव छिपि छान ॥
तब कगि तहं प्रथिराज रन। आनि सपत्ते ⁹पान ॥ छं० ३५ ॥

---

१ ए० कृ० को०—षिषि।
२ ए० कृ० को०—लिषि।
३. ए० कृ० को० तिमनि।
४. मो०—बढ्छे।
५. मो०—मुषल।
* मो०—बज्ज लेत हथ्थ जम्बू बिथह
६. ए० कृ० को०—परभात।
७. ए० कृ० को०—कम्र।
८. मो०—ललसाइ।
* मो०—"ओं रत्ति ही रविलग बर"
९. ए० कृ० को०—थान।

निज पिता एवं सब सामंतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना।

साटक — [1]सोहिष्षं ग्र र राज तात निजयं। बीभच्छ इच्छा क्रुधं ॥
कालं केलिय छिछ रुद्ध तनयं, रुद्रं[2] सु संरत्तयं ॥
माते तामस रस्स कस्स असुरं, [3]हालाहलं नैनयं ॥
राजं जा प्रथिराज चिति तनयं, पुच्छै गुरं [3]ततगुरं ॥ छं० ३६ ॥

यमुना के सम्मुख हाथ बांधकर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना।

दूहा — जमुन सनंमुष जोर कर। अस्तुति मंडिय मुष्ष ॥
तूं माता दुष भंजनी। रंजन सेवक सुष्ष ॥ छं० ३७ ॥

यमुना जी की स्तुति।

भुजंगी —
नमो मात मातंग [4]सूरज्ज जाया। नमो देवी भग्नी जमं पै [5]कहाया ॥
जगं अंधकूपं सु दीपक्क गम्नी। नदी कौन [6]पुज्जै सु तेरी करम्नी ॥छं० ३८॥
महा ध्रम्म धारन्न तारन्न देही। नि[7]रस्सी सलीलं सु सेलं समेही ॥
बलीभद्र रष्षी हरष्षी हलंदी। तुअं नाम पासं सुभं हो कलंदी ॥ छं० ३९ ॥
त्रयं ताप भंजै जगत्तं जनन्नी। तुयं सेपियं [8]सु नंमं सरन्नी ॥
तुही तारनी जुग्ग हारन्नि पापं। तुहीं मात [9]करनी अघं कष्ट कायं॥छं०४०॥
तुही यांम सूरं जलं मुक्ति धारा। तुही नम्भ मातंग नर लोग सारा ॥
तुहीं साधवी मात नष्षं समानी। तुहो तारनं लोक त्रैलोक रानी ॥छं० ४१॥
तुही बाल बेसं तुही वृद्ध काली। तुवी तापसं ताप आपं सुराली ॥
तुअं तट्ट सेवैं जिते [8]सिद्ध सिद्धं। तिते मुक्ति मुक्ति मनं बंछ दिद्धं ॥छं०४२॥
तुही [9]मद्दनं मथ्थनं तेज धारा। तुहीं देवता देव त्रय लोक हारा ॥
तुही जोगिनी जोग जोगं कपालं। तुही कल्प [10]मैं कंप रांघंत आलं॥छं०४३॥
तुही विस्न रूपं तुहि विस्न माया। तुही तारनं जन्न संसार आया ॥
कियौ अस्वमेधं पुनर्जन्म आवै। नही जन्म मातंग तो ध्यान पावै ॥छं० ४४॥

---

१. ए० कृ० को०—सो दिष्षं। २. ए० कृ० को०—हाली।
३. ए० कृ० को०—सद्गुरं, तद्गुरं। ४. मो०—सुरिज्ज।
५. ए० कृ० को०—कहावै। ६. मो०—पूजै।
७. ए० कृ० को०—कर बत, कर बत्त।
८. ए० कृ० को०—"सिद्ध सिद्धंति"।
९. मो०—माहव। १०. ए० कृ० को—मैं कप्प।

तुअं ध्यान मातंग अस्नान पूरं। करै अर्घ [1]आचार उग्गंत सूरं ॥
तनं तम्मनं नं मयं निर्विकारी। इमी जमन [2]अप्पं सदिष्षी अकारी॥ छं० ४५॥

स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना ।

कवित्त— गंगा मूरति विसन। ब्रह्म मूरति सरसत्तिय ॥
जमुना मूरति ईस। दिव्य देवन मुनि थप्पिय ॥
मिली जाइ [3]झल मंग। गंग सागर अवधारिध ॥
ता सोमेसर रोग। दोष दोषह तन टारिय ॥
अब सुभट सहित देवी सु तन। करि निरमल तन मोह मय ॥
इह कहत जग्गि नृप मूरछा। प्रति बुल्लो प्रथिराज तय ॥ छं० ४६॥

सोमेस की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुन ब्रह्मज्ञान को युक्तिमय स्तुति करना ।

साटक— [4]त्वं मे देह सु भाजनेव [5]सरिसा जीवं धनं प्रनायं ॥
दाहं अग्गि सु क्रम्म दारुन धरे आवस्य [6]बंदं करं ॥
सं रुद्धं जम जोग तिवृत तनै अद्धं पलं मध्ययं ॥
जीवी वारि तरंग चंचल धियं बिस्मत [7]अस्नंतरं ॥ छं० ४७ ॥
आसा अस्य सरोवरीय सलिलंपंषी वरं [8]मुद्धयं ॥
सुष्वं दुष्वय मध्य वच्छ तवयं सावास्य त्रै गुन्नयं ॥
मोहं पत्तय रत्त वृन्नव क्रमे फूलं फलं धारनं ॥
एकश्रय संतोष दोष तिगुना अस्याय वा निर्गनं ॥ छं० ४८ ॥
यों भूतं आभूत बर्ष सु सतं आयुर्बलं अद्मृतं ॥
तेषा अर्द्ध निसा गतं रवि उभै बाल्यैंच वृद्धेगता ॥
प्राप्तं जोवन रत्त मत्तय रस व्याधं कुधं बंधनै ॥
ना भूतं संसार तारन गुने [9]संभार निस्तारयं ॥ छं० ४९ ॥

इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यंत्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना ।

दोहा— ग्यान ध्यान अस्तुति करिय। भयसु प्रसन्नय देव ॥
राज सहित सामंत सब। जगे मूरछा एव ॥ छं० ५० ॥

१. ए०—आचार ।
२. ए० कृ० को०—अप्पं ।
३. ए० कृ० को०—जल बंध ।
४. ए० कृ० को०—त्वमे ।
५. ए०—सरसी ।
६. ए० कृ० को०—सबदं ।
७. ए० कृ० को०—नर ।
८. मो०—सुठयं ।
९. मो०—संसार ।

गंध्रब मंत्र सुइष्ट [1]जिय । आराध्यौ प्रथिराज ॥
[2]बरुन दोष तन ताप गय । उठि निद्रा जनु भाज ॥ छं० ५१ ॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना ।

पद्धरी –प्रथिराज राज सिर नामि आइ । आनंत मरम तुम सकल राइ ॥
सरिता रु ताल वापी अन्हाइ । निसि समय बरुन तन ग्रस्यि पाइ ॥छं० ५२॥
सरवरिय केलि सोइस्त [3]आइ । पाताल ईस क्रीलै सुभाइ ॥
सुमिरै न नाम सन सुद्ध [4]ध्याइ । उपजै सु विघन कै धर्म जाइ ॥ छं० ५३ ॥
भौसेन तब्ब तहँ एक ठाइ । करि वेद पठन तहँ विप्र गाइ ॥
करि होम जाप किस्नह पराइ । भए सुद्ध पाय गए तन [5]पुलाय ॥ छं०५४ ॥

सोमेश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना ।

दूहा बरुन दोष मेंटयो सुप्रथु । ग्रेह संपते आय ॥
देषि पराक्रम सोम नृप । फूल्यौ अंग न माय ॥ छं० ५५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके बरुण कथा नाम
अड़तीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ३८ ॥



---

१. ए० कृ० को०–हुव ।
२. ए० कृ० को०–बरन ।
३. ए० कृ० को०–पाइ ।
४. ए० पाइ, कृ० को०–आइ ।
५. ए० कृ० को०–फुगाइ ।

अथ सोमबध सम्यो लिष्यते ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीमदेव की इच्छा

कवित्त— गुज्जर धर चालुक्क । भीम जिम भीम महाबल ॥
कोइ न चंपै सीम । कित्ति बर रीति अचंगल ॥
सोमेसर संभरिय । तास मन अंतर सल्लै ॥
प्रथीराज ढिल्लीस । रीस तम [1]अंतर नल्लै ॥
मिलि मंत तत्त बुझ्झवि मरम । करिय सेन चतुरंग सज ॥
धर लेउ आज दुज्जन दवटि । एकछत्र मडोति रज ॥ छं० १ ॥

भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ।

पद्धरी— संभरिम राज गुज्जर नरेस । रत्तो जु साम दानह [2]असेम ॥
[3]कालिंद कूल जंगलिय जास । प्रथिराज अकस रप्पै इलास ॥ छं० २ ॥
चंपो जु श्रप्प उर रषै डंस । मंन मध्य भीम इम भूमि गंस ॥
हारे जुआरि कलमलिय [4]षेल । चालुक्क चित्त इम [5]मिलन सेल ॥छं०३ ॥
कुलटा छयल्ल जिम मिलव हेत । इम षगन षेत चहुआन चेत ॥
जिम चंद सूर मनि राहु केत । कलभलिय चलिय उर भीम तेत ॥छं० ४ ॥
रानंग देव झाला नरिंद । बुल्यो मु राइ चालुक्क इंद ॥
[6]तमि कह्यो ताम हो इतत रोस । झलहलत अग्गि ज्यों जग्गि कोस
॥ छं० ५ ॥

बुल्लाइ सव्व भर इक्क ठौर । चढ़िवाइ वेगि बर करो दौरि ।
षेलंत नारि नर लेइ गढ्ढ । इम लेउ भूमि षल षग्ग बढ्ढि ॥ छं० ६ ॥
जिम करिब बाल बर मिटत धूरि । तिम इला आउ चहुआन चूरि ॥
भज्जंत षील जिम बर सुहाल । सभरिय भूमि इम करों हाल ॥ ७ ॥

कवित्त— बोलि कन्ह कढ्ढीं नरिंद । रानिग राज बर ॥
धीरा सिम अयसिंघ । बीर धवलग देव धर ॥
धोल हूरै सुरतान । बीर सारंग मकवानं ॥
जूनामढ़ ततार । सार लभ्यो परवानं ॥

---

1. मो०—अंबर ।
2. ए० कृ० को०—अरेस ।
3. मो०—कालंद ।
4. ए० कृ० को०—षेव ।
5. ए० कृ० को०—मलन ।
6. मो०—मत ।

मत मंति सज्जि चालुक्क भर । पुव्व वैर साल्यौ हियैं ।।
केती ८ बरस संभरि धरा । रहै रंग बब्बर कियैं ।। छं० ८ ।।
गाथा—सोमसी रन जिला । केवा किन्न संभरी राजं ।।
[1]तं केलि कलहुंतं । सल्लै सूल षग्ग [2]मग्गायं ।। छं० ९ ।।

सब सरदारों का कहना कि वैर का बदला अवश्य लेना चाहिए ।

कवित्त—बोली राव रानिंग । बोलि चौरासिम भानं ।।
स्यामा स्याम नरिंद । भीर कढ़्ढी रन थानं ।।
अति उदार अति रूप । भूप साईं रन रष्षन ।।
चाहुआन बरसिंह । [3]बिझ्यौ बड़वानल भष्षक ।।
जै जैत क्रित्ति संसै न करि । सुबर वैर कढ़्ढौ विषम ।।
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन । सुभर मुत्ति लब्भै सुषम ।। छं० १० ।।
दूहा—सुगम पिंड संग्रहिय बर । जुग जोम [4]नह लब्भ ।।
हिम ग्रीषम पावस सु तप । करै बीर प्रति अब्भ ।। छं० ११ ।।

भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा ।

भुअंगी—करै बीर बीरं सु बीरं प्रकारं । लगे राह चहुआन सो जुद्ध सारं ।।
सु रावत्त रत्ता अभीरत्त कोनं । करै षेत भीमंग की सोन जोनं ।। छं० १२ ।।
करै कोन जमजोति ओरयं प्रकारं । गनै कोन बेलू सु गंगा प्रकारं ।।
गिनै कोन तारक्क ते [5]तेज भोरै । लरै कोनु चालुक्क सो जुद्ध सोरै
।। छं० १३ ।।

भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना ।

गाथा—फट्टे पुट्टु फुरमानं । धाये धराजित्त जिताइं ।।
इम जुट्टे सब सेनं । ज्यों भू नीर वढ्ढि सरताइं ।। छं० १४ ।।

भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक
ओजस्विता का दृश्य ।

विअष्षरी—जुट्टें दल पहु पंग [6]अपारं । हैगं बर भर लब्भि न सारं ।।
बनै हयं नय पंष समानं । पहू भूमी जनु पंष उड़ानं ।।छं० १५ ।।
गज गज्जैं गज्यौ जनु नीरं । मद्दव बद्दल आनि समीरं ।।
दिषियै सूर नूर बहु पूरं । संध्या सागर [7]नूर करूरं ।।छं०१६।।
चल्लै मल्ल मंग मल्हारे । धावैं धर पग पाहर कारे ।।
कच्छे कच्छे बंधे डोरी । चंदन चोरि चिढि जनु होरी ।।छं०१७।।

---

१. ए० कृ० को०, "तंकेलि कुलहंत" । २. ए० कृ० को०—मग्गाई ।
३. मो०—बिझ्झो । ४. ए० कृ० को०—नहि ।
५. मो०—तेज । ६. ए० कृ० को०—अपारं ।
७. ए० कृ० को०—सूर ।

जिन पय भूमि न ढिल्लैं कोई। तिवरै लरै जानि जम दोई ॥
पाइक पग पिन्नै जनु नठ्ठं। बंडा कढ्ढि वढ़े गज दढ्ढं ॥छं० १८ ॥
गोरी बिन तिन लोह न छिज्जै। धार अनी कर बर ठेलिज्जै ॥
चंचळ अस्वह [१]नंषत सूरं। सूर तेज जिन मुष्ष सनूरं ॥ छं० १९ ॥
बंकी भोंह भयंकर नैनं। फूली बंबर लग्गे गैनं।
रत्ते [२]स्वामि ध्रम्मं रस रंगं। जोग जुगति मनचढ्ढत जंगं ॥छं०२०॥
नेहू न देहू न माया ग्रेहं। चितत सदा ब्रह्म मन लेहं ॥
तेग त्याग मन मंड न अंगं। सुब्भत सेन मनों सुभ्र गंगं ॥ छं० २१ ॥
गढ्ढ परे न्रप गाहत गढ्ढं। जिम वाराह मोथ रस दढ्ढं ॥
औगुन अंग न स्वामित जंगं। ज्यों सह गोन दुहागिल रंगं ॥छं०२२॥
यों आतुर रत्ते षग मग्गं। ज्यों कुलटान छैल मन लग्गं ॥
दसहूं दिसि दारुन दल वढ्ढं। ज्यों धुर बद्दल भद्दव चढ्ढं ॥छं०२३॥
सिलह सज्जि बढ्ढे बल बंकं। रीछ लंगूर मनों कपि लंकं ॥
विष्षत सेनहू नैन भुलाई। मानहु साइर पार डुलाई ॥ छं० २४ ॥
अमरसिंह सेवर परिमानं। भैरू भट्ट तत्त बुधि जानं ॥
बंभन लीला लच्छिन मंडें। देव क्रंम मब बंधि रु छंडे ॥ छं० २५ ॥
सांम रूप सेवर परिमानं। दान रूप बर भट्ट सुजानं ॥
भेद रूप दुज राज वकारं। डंड रूप चारन आकारं ॥ छं० २६ ॥
लीने भीम संग चव मंत्री। दुष्ट अरिष्ट रमे जिन [३]जंत्री ॥
सुर्गं मृत्यु पाताल सुसंकं। अस आडंबर मंडत कंकं ॥ छं० २७ ॥

भोलाराय भीम का साम दाम दंड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना।

दूहा—साम दाम अरु भेद करि। निरनै दंड रु सार ॥
[४]च्यारि [५]दूत चतुरंग मन। बर सिषंन आकार ॥ छं० २८ ॥
ए बुलाइ चालुक्क बर। मंत्री भोरा राज ॥
अमरसिंह सेवर प्रसन। मंत्र जंत्र गुन काज ॥ छं० २९ ॥
[६]इनहिं समीप बुलाइ करि। बोलिय भीम नरिंद ॥
ज्यों तुम जंपो [७]त्यों करों। तुम [८]छत मो सुख [९]निंद ॥ छं० ३० ॥

---

१. मो०—वढ्ढं, वढ्ठं। २. मो०—जनुंषत।
३. मो०—साम। ४. ए० को०—पाइ।
५. ए०—मंत्री। ६. मो०—इनह।
७. ए० कृ० को० ज्यौ। ८. मो०—बत।
९. ए० कृ० को०—ग्यंद।

मंत्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए।

जंपि सु मंत्री मंत्र तव। सुनि भीमंग सुदेव ॥
धरती वर पर अप्पनी। लेत न कीजै [1]छेव ॥ छं० ३१ ॥

राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतहासिक उदाहरण।

साटज—भूमीनं धर धम्म क्रम्म [2]निरतं, बंध्यो बधें पाडवं ॥
भूमी काज दधीच आस मृगया, नित्तं बज्रं कारनं ॥
केऽइयं भुअ काज रामय बनं, दसरथ्थ मंगे बरं ॥
सा भूमी क्रित कारनेव सरसा, लेहाययं भूमय ॥ छं० ३२ ॥

पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना।

कवित्त—जा जीवन जग पाइ। आइ अवनी रस रंगह ॥
जो जा जीवन वलह। विनोद रवह मन पंगह ॥
जा जीवन कज्जह। कपूर पूरन प्रभु कोकह ॥
जा जीवन आरंभ। कित्ति सा धम्म सु रोपह ॥
जिहि काज जियन तप जप करहि। भमर गुफा साधहि अवस ॥
तिहि जियन [3]त्यागि मंडय कलह। तो भूमिय लभ्भै सु [4]रस ॥छं० ३३॥

दूहा—सो जीवन इम पहुनि करि। अच्छित सती समान ॥
चावद्दिसि नथ्थै निढिर। यों लभ्भै [5]भिम पान ॥ छं० ३४ ॥

भोलाराय का सेन सज कर तय्यारी करना।

सुनत मंत चल्लिय न्रपति। सज्जि सेन चतुरंग ॥
अनु बद्दल बहु उम्मए। दिट्ठु न परत [6]नभंग ॥छं० ३५ ॥

सेना के जुड़ाव का वर्णन।

अरिल्ल—हाला हलं मिलत्तं सेनं। [7]ज्वाला मलि [8]ज्वालाहू क्रत्तेनं ॥
दैवत देव बंधि चतुरंगी। है हिलम्र हिंदू दल [9]नंगी ॥ छं० ३६ ॥

गाथा—सो चतुरंगय सेनं। हय गय सज्जि बीर उर रेवं ॥
अरुनोदय गुन मंतं। जानिज्जे सूरतं बीरं ॥ छं० ३७ ॥

भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना।

दूहा—उठ्यो छत्र छिति राज सिर। त्रिपत बीर रस पान ॥
यों सब सेना रज्जियै। ज्यों जोगिंद जुआन ॥ छं० ३८ ॥

---

१. ए० कृ० को०—सेव। २. मो०—सग्गं।
३. मो०—काव। ४. मो०—सर।
५. ए० कृ० को०—त्रिम। ६. ए० कृ० को०—नर्भग।
७. मो०—भाला। ८. मो०—भालाहू। ९. ए० कृ० को०—लंगी।

कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते।

कहहि मंत्र मंत्रिय सुमति। विधि विधि सुविधि न जान॥
कै भंजे कै रंजई। कै [1]दिवत्त प्रमान॥ छं० ३९॥

सेना का श्रेणीबद्ध खड़ा होना।

आनिअ [2]अल्लित साल गुन। विधि चालुक्क सयन्न॥
पुब्ब बैर सोभित्ति को। भिरि भंजे रिन तन्न॥ छं० ४०॥
पंच सहस पंचौ सुक्रत। पंचौ पंच प्रकृत्त॥
पंच रष्षि पंचौ ग्रहै। तो भारथ्थ सु जित्त॥ छं० ४१॥

सेना समूह का क्रम वर्णन।

दूहा—सली मिली कज्जल वन्न। भेक भयानक भंति॥
तिन अग्गें घर मँडे। तिन अग्गें गज पंति॥ छं० ४२॥

उक्त सभासमूह की सजावट के आतंक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

माधुर्य—गज पंति चल्लिय जलद हल्लिय गरज नग घन भुल्लियं॥
हल हलन घंटन घोर घुंघर नाग दुम्मर डुल्लियं॥
गत लग्गि गिरवर पुरहि तरवर हलहि घरवर धाहही॥
झलकंत दंत कि पंत बग घन धाम कल सति गावही॥ छं० ४३॥
गज बहुत मदहद [3]मनहुँघन मद छुट्टि [4]छछन उम्भरे॥
पग जोरि मोरि मरोरि मुर जनु दिष्षि सुरपति लुम्भरे॥
बसि पीलवाननि ढाल हालनि बनिय बैरष साजही॥
मनुं सिषर गिरि वर काम अंगन छत्र चमर कि राजही॥छं०४४॥
अंध धुंधन चलत मग्गन सुनत बज्जन चल्लही॥
वै कोट ओटन अगड़ मग्गत सिषर गिर रद झल्लही॥
दल मुष मंडिय मेंघ छंडिय मनहु सुरपति वज्जयं॥
सुर सोम सोमह मझ्झ मोमह ग्रेह तजि प्रज भज्जयं॥ छं० ४५॥
परि देस देसन रौरि दौरिय सुनिय संभरि रज्जयं॥
बर मंगि बाजिय सिलह संचिम [1]वहै भोरा अज्जयं॥ छं० ४६॥

---

१. ए० कृ० कौ०—दैवत्त।   २. मो०—अनति।
३. मो०—मनक।   ४. मो०—वहीं।

इसी अवसर में मुख्य सामंतों सहित पृथ्वीराज का उत्तर
की तरफ आना और कैमास के संग कुछ सामंतों को
पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना

कवित्त— उत्तर वै विजयंत । रोहु रत्तौ प्रथिराजं ॥
सोमेसर ढिल्लीस । संग सामंत सुराजं ॥
षीची राव प्रसंग । आम जहाँ घट भारिय ॥
देवराज बग्गरिय । भान पट्टी षल हारिय ॥
उद्दिग्ग बाहु [1]पम्मार भर । बलिय राव बलिभद्द सम ॥
इत्तनें रष्षि कैमास संग । कलहु कूच किन्नौ सुक्रम ॥ छं० ४७ ॥

पृथ्वीराज के चले आने पर उन सब सामंतों का भी चला
आना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था ।

दूहा—जिन कंठन ढिल्ली नयर । ते रष्प प्रथिराज ॥
रसित स्वामि अभ्यंतरहु । कलहु न [2]इच्छन काज ॥ छं० ४८ ॥
सुनत पुकारहु छोहु छकि । सत्तिय सत्त प्रमान ॥
चढ़त सोम चढ़्ढे हयन । विटि नछिन्न भान ॥ छं० ४९ ॥
रन बन घन सोमेस सुत । सज्जि सेन चतुरंग ॥
को विद गुन मन ज्यों रमत । ज्यों भर जानत जंग ॥ छं० ५० ॥

उसी समय पूर्व बैर का बदला लेनें के लिये भीमदेव का अजमेर
पर चढ़ आना, प्रातःकाल की उसकी तैयारी का वर्णन ।

कवित्त— नाग कलं मलि भार । सार सज्जत रन रज्जन ॥
दै दुवाहु चालुक्क । भीम भारथ सों लग्गन ॥
सोझत्ती बर बैर । बहुरि हालाहल मच्च्यौ ॥
भरन पहुंचिय [3]आव । लेष लंघै को रच्यौ ॥
करि [4]न्हान दान इष्टं सु जप । भट अभंग सज्जे समुद ॥
विगसंत नयन दिय बयन । मनों प्रात फुल्ले कुमुद ॥ छं० ५१ ॥

इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के
सम्मुख युद्ध करने के लिये तैयार होना ।

कुसुम जुद्ध कुसुमेक । कुसुम संग्राम कुसुमेकहु ॥
आदि जुद्ध संपनो । दैव बढ्यौ दुति देकहु ॥
संभरि वै संभरिय । राज सोमेसह कज्ज ॥
उत्तर दिसि प्रथिराज । गयौ उत्तर दिसि भज्ज ॥

---

१. ए० कृ० को०—पम्मार ।
२. ए० कृ० को०—इच्छत ।
३. ए० कृ० को—आउ ।
४. को०—न्हानु ।

जै सिंह देव जै सिंह सुअ। सुअ प्रमान पय [1]डड घरी ॥
इल अचल अचल लग्गन नदिय। गरिल ग्गागर उभ्भरी॥छं०५२॥

सोमेश्वर की सेना की तैयारी वर्णन।

हनुफाल —सजि सेन सोम अगार। सुनि सज्ज सेन प्रकार॥
सोमेस सूर बिचार। सजि चढ़े बीर जुझार॥ छं० ५३॥
*धरा धरा कंपिय भार। ... ... ॥
चढ़ि राइ वालुक पान। धर धरिय दिल्लि सुथान॥ छं० ५४॥
सुनि श्रवन संभरि राज। बर बज्जि [2]विजयत बाज॥
तन [3]त्रविधि तूर तरंग। विधि मंडि बीर विजंग॥ छं० ५५॥
दल देषि सूर सुसंग। उर होत अरियन पंग॥
ढलकंत ढिल्लिय ढाल। मधु माघ नूत तमाल॥ छं० ५६॥
छुटि अचंग अच्छनुपार। पाहार फारि प्रहारि॥
उड्डि बृत्त तिड्डिय सेन। मनों राम लंका लेन॥ छं० ५७॥

सैनिकों का उत्साह सोमेश्वर की वीरता और
कन्हराय का बल वर्णन।

कवित्त —त्रिविध साज बज्जिय। अवाज भेरी कोकिल सुर॥
भवर झुंड झंकार। चीर मोरह दुरंत बर॥
बर बसंत मम वीर। नच्चि तोपार त्रिभंगिय॥
[4]रन रत्तो सोमेस। भीम भारथ अनभंगिय॥
दल धरकि भरकि काइर सरकि। हरषि सूर बज्जिय करम॥
कन्हा नरिंद प्रथिराज बिन। सुभर कक माडिय सरम॥ छं०५८॥

युद्ध प्रारंभ होना।

दूहा —सुबर बीर मंड्यो समर। रन उतंग सोमेस॥
दै दुबाह [5]दुज्जन घरी। घरी सु अक्क तरेस॥ छं० ५९॥

---

१. कृ० को० मो०—इंड।
* यद्यपि यह पाठ मो०-प्रति में ५३ छंद का चतुर्थ चरण करके दिया हुआ है किंतु अन्य तीनों ए० कृ० को० प्रतियों में छं० ५३ के चतुर्थ चरण का "सजि चढ़े बीर जुझार" पाठ है। अतएव यह पाठ भेद नहीं होसकता, आगे चलकर छंद भंग भी है-इससे मालूम होता है कि इसके साथ का दूसरा चरण लेखक की भूल से छूट गया है।
२. मो०—विजयतु।
३. ए० कृ० को०—विधि।
४. को० कृ०—मर, ए०—मर।
५. ए० कृ०—दुर्ज्जन।

कन्ह का वीरभेस और तदनुसार सेनापति उसका व्याख्यान।

कवित्त—जा दिन जीव द जम्म। क्रम्मता दिय जंम पच्छी॥
सुष्ष दुष्ष जय अजय। लोभ माया नन सुच्छी॥
काल कलह संग्रही। मोह पंजर आरुढी॥
[1]मुगति मग्ग सुझी न। ग्यानं अंतहु किन सुढी॥
प्रतिब्यंब अंब अंबहु जुगति। मुगति क्रम्म सहु उद्धरै॥
केवल सु ध्रम्म [2]षिग्गिय तनहु। कन्ह कंक जो सुद्धरै॥ छं० ६०॥

दूहा—वीर गज्जि गज्जिय विवुध। * नर निरदोष सघोष॥
संभरवे [3]संमर सुमति। नृप लगि सुमत अमोष॥ छं० ६१॥

कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना।

कवित्त—सजिय सकल सन्नाह। दाह जनु दंगल पट्टिय॥
सुमरि साह इक देव। दुबन दल देषि [4]दपट्टिय॥
छुट्टिय पट्टिय नयन। भइ दुंदभी गयन्ना॥
नेज वेग भ्रम भ्रमिय। मच्छ आरीठ भयन्ना॥
फूलहु सु धार धर कन्ह वर। कर पर छुट्टिय छह परिय॥
पग सट्ठि नट्ठि भीमंग दल। बल अभूत कन्हा करिय॥ छं० ६२॥

दोनों हिंदू सेनाओं की परस्पर ओजस्विता का वर्णन।

दूहा—काल चंपि वर चंपि कल। नर निर्घोष निसान॥
[5]सुवर वीर हिंदुअ सयन। वर वीरा रस पान॥ छं० ६३॥

कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन।

† कलाकल—कलहंतय केलि सु कन्ह कियं। जु अनंदिय नंदिय ईस बियं॥
नचि [5]नौ रसमं इक कन्ह भरं। मय मंषि भयानक अंत करं॥छं०६४॥
झमकंत सु दंतन अस्सि झरी। जनु विज्जुलि पष्षत मेघ परी॥
उड़ि घुंघरियं निय छाइ जनं। जनु सज्जिय [6]जुग्ग जुगद्दि पनं॥छं०६५॥

---

1. कृ० को०—मुकति, ए०—मुकति। 2. ए० कृ० को०—छवी
3. ए०—संमर। * ए० कृ० को०—नर निर बोस बोष।
4. ए०—दुपट्टिय, मो० को०—लपट्टिय। 5. मो०—नौ रस मैं।
6. मो०—सज्जि।
† इस छंद को "को" प्रति में मधुराकल करके लिखा है और "मो" प्रति में भ्रमरावली करके लिखा है परंतु भ्रमरावली छंद यह है नहीं। भ्रमरावली अथवा नलिनी छन्द ५ सगन का होता है पर इस छंद में केवल चारही सगन है।

बजि [1]बीरश्र इक्क निसान घुरं। जनु बीर जगावत बीर उरं।
दुअ सेन बलं असियो बरषी। नचि जुग्गनि षप्पर लै हरषी ॥छं० ६६॥
[2]जिनके सिर मार दुआर झरै। वहुन्यो नन पंजर आय परै ॥छं० ६७॥

कवित्त – कहर मगर जिम षेल। ठेल सेलन सम ठिल्लहि ॥
इक्क धुकत धर तुट्टि। * इक्क वल्लन गल मिल्लहि ॥
इक्क कमंध उठंत। इक्क अंतन आलुझ्झहि ॥
इक्क हथ्थ [3]पग झरहि। टिक्कि षग [4]पग बिन झुझ्झहि ॥
[5]तरफरत इक्क धर मीन जनु। रन रवन्न [6]छित्रिन कन्यो ॥
घन घाइ घुम्मि घट धुकि [7]धर। इम सु जुद्ध कन्हह [8]भिन्यो ॥छं०६८॥

कन्ह राय का कोप।

किन्न दंति बिन दंत। सुभट सीसन बिन किन्निय ॥
हय किन्निय बिन नरनि। सेन भीमह करि झिन्निय ॥
[8]बुद्धा बिन किय काल। बाल बर बिगरिन दिष्षिय ॥
पल हारिय पल पूर। सूर कन्हा भय भिष्षिय ॥
कीनी सुकित्ति भूमी अचल। सबल सस्त्र सह झंझरिय ॥
मदमत्त गंध महियों [9]दुरिय। मनों वाय वृच्छह गुरिय ॥ छं० ६९ ॥

दूहा – सत्तह [10]आराधिय सुमहि। हरि दाढा ग्रन जान ॥
[11]सो संमरि सोमेस बर। सो कीनी पहिचान ॥ छं० ७० ॥

अपनी सेना को छितर बितर देख कर भीम देव का
रोस में आकर स्वयं युद्ध करना।

कवित्त - मध्य रूप मध्यंत। मध्य [12]धम्मन तन मोचन ॥
सिद्ध सुरध अनुरद्ध। वृद्ध वय कामति सोचन ॥
[13]पुत्र बिना बिन बंध। बन्न सु बंध्यो भीमंदे ॥
सार सुक्रत आरद्ध। सुष्ष लष्षं तंमंदे ॥
बंभनिय बिनै सद्धी सयन। ★नय तरत्त रत्ती सुगति ॥
सोमेस सूर सोमेस सों। सार लग्गि बीरह सुभति ॥ छं० ७१ ॥

---

१. ए० कृ० को०—इक्क।
२. मो०—जिन।
* मो०—इक्क बुल भग्गल मिहकहि।
३ ए० कृ० को०—षग।
४. मो०—षग।
५. ए० कृ० को०—तरफंत।
६. ए० कृ० को०—छत्री।
७ ए० कृ० को—लन्यो।
८. ए० बुधा, कृ०—बुधवा।
९. मो०—दुरत।
१०. ए० कृ० को—आआरिय।
११. ए० कृ० को०—से मरिबै सोमेस बर।
१२. मो०—धूम्र।
१३. ए० कृ० को०—पुत्रि।
★ मो०—"नयन तरत्त तरती सुगति"।

कन्ह और भीम देव का परस्पर घोर युद्ध होना।

रसावला—

रसं बीर मत्ते, लरै लोह तत्ते। धुरा कन्ह मत्ते, रनं [1]रोस दत्ते ॥ छं० ७२ ॥
मनों काल [2]दंते, रसं रुद्र रत्ते। झरै फुल्ल पत्ते, विमानं बिहत्ते ॥ छं० ७३ ॥
बगंगे बिहत्ती, उड़ै गज्ज मुत्ती। असं मंस कत्ती, बही धार रत्ती ॥ छं० ७४॥
उमा हाथ कत्ती, उछारंत छत्ती। महा भीम मत्ती, हसी रुद्र रत्ती ॥ छं० ७५॥
तजै मोह बंसं, मिलै हंस हंसं। झरै अंत झूमी, मनों मेघ भूमी ॥ छं० ७६ ॥

कवि की उक्ति।

कवित्त—सघन घाय निघाइ। † मच्यौ को मरन अहुट्टिय ॥
सूरबीर संग्राम। धीर भारथ्थ स जुट्टिय ॥
कोन खेत तजि गयो। कोन हन्यौ को जित्तो ॥
लिषं अंक बिन कंक। कोन माया रस बित्तो ॥
छह घरी श्रोन असिवर उभयो। धार मार रुधि धार चलि ॥
संजुत्त अग्गि धूमह संजुत। [3]छलि बलि बीर बलिष्ट बलि ॥
॥ छं० ७७ ॥

युद्ध स्थल की उपमा वर्णन।

सिद्धि रिद्ध विष्फुरिय। लुथ्थि पूर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
श्रोन सलिल बढ़ि चलिय। मरन मन किक्कन जुट्टिय ॥
कलमल सिर बहि गुरिय। नयन अलि बास सु बासिय ॥
जंघ [4]मगर कर मीन। कच्छ धुप्परि षग चासिय ॥
पोइनी अंत सेवाल कच। अंगुलि पग करि भिंग झरि ॥
सोमेस सूर चहुआन रन। भीम भयानक जुद्ध करि ॥ छं० ७८ ॥

दूहा—हय गय जुद्ध अनुद्ध परि। बहुत सार असरार ॥
★मानों आलुग अंत को। आनि सँपत्तो पार ॥ छं० ७९ ।

कन्हराय का भीमदेव के हाथी को मार गिराना।

कवित्त—सोमेसर अरि सूर। ताहि [5]दीनै [6]बरि वानै ॥
नल कूबर मनि ग्रीव। जमल भग्गा [7]तह कान्है ॥

---

1. मो०—रोष। 2. ए० कृ० को०—बत्ते।
† मो०—मुच्यो कौमर आहुट्टिय"।
3. ए० कृ० को०—बलि। 4. ए० कृ० को०—मकर।
★ ए० कृ० को०—मनों जोग जुगति को। 5. ए० कृ० को०—दीनो।
6. ए० कृ० को०—वर। 7. मो०—तर।

वे सराव नारद प्रमान । दरसन हर लद्धिय ॥
इन तमंग उत्तरै । सार कड्ढे बर बढ्ढिय ॥
त्रिष्वात माल मत्तौ कलह । असुर सुरन मत्तौ [1]महन ॥
कड्ढै सुरत्त कित्तिय सुभट । सु कविचंद [2]कित्ती कहन ॥छं०८०॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध ।

भुजंगी — बजे बीर बीरं सु सारं षनक्कं । महा मुक्ति बत्ते सु बीरं रनक्के ॥
गजे बीर बहं करभाल सद्दं । सनाहं ससूरं बहै सार हद्दं ॥ छं० ८१ ॥
नचै अंग रंगं ततथ्थे तथंगं । [3]लचै रंक चित्तं मनं सूर [4]पंगं ॥
बढै बंक कंकं ससंकी घरानं । नगं नग्ग जुट्टे अभग्गं परानं ॥ छं० ८२ ॥
ठनक्कंत घंटं रनक्के नफेरी । भया मोह दोषन्न सूरन्न [5]नेरी ॥
धरं धार ढोरैं ढंढोरैं सु ढालं । मनों चक्र फेरैं कि पंकं कुलालं ॥ छं० ८३ ॥

आमराय यद्दव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना,
दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन ।

कवित्त — समर समुद भीमंग । मध्य बड़वानल राजं ॥
चाहुआन चालुक्क । रोस जुट्टे बल साजं ॥
दल दष्षिन जदु जाम । कलप अंती कर कुप्पो ॥
[6]ता मुष्षहू षंगार । झार अग्गी झर रुप्पो ॥
बिरचे कि [7]महिष बलबंड बल । दल [8]चमूह चवदंत हुअ ॥
न्रप काम जाम इक जहर झर । बहुर रूप पिष्षेति दुव ॥छं०८४॥

रसावला —
जदू जाम जोधं, षंगारं सरोधं । भरं भार क्रुद्धं, रमै रोस उद्धं ॥छं० ८५ ॥
करें केलि कंकी, घुले लज्ज पंकी । कररं करारे, मनों मत्तवारे ॥ छं० ८६ ॥
पियें लोहू छक्कं, बकै मार हुक्कं । धरा धीर घूनें, फिरं अश्व सूनें ॥छं० ८७॥
विना दंत दंती, किए क्रुद्धवंती । गिरे कूट कारे, झरें रत्त धारे ॥ छं० ८८ ॥
परें [9]सार मारे, भयानं निनारे । हयं पाइ एकं, फिरे षेत केकं ॥छं० ८९ ॥
दुअं मुष्ष लग्गें, डिगै नाति डिग्गें । परें लोह पूरं, गिनै नाति सूरं ॥छं०९०॥
बहे श्रोन धारं, झरें [10]झिन्न तारं । ... ... ॥ छं० ९१ ॥

१. ए०—महन । २. मो०—कीरति ।
३. ए० कृ० को०—लंग । ४. ए० कृ० को०पले ।
५. ए० कृ० को०—मेरी । ६. मो०—तमु ।
७. ए० कृ० को०—मयव । ८. ए० कृ० को०—समूह ।
९. मो०—भार । १०. ए०—फिरन, कृ० को० मो०—झिरन ।

उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैल से उपमा वर्णन ।

गाथा—यों लग्गे रन सूरं । ज्यों मत्तं [1]वृषभ रोस रंगाइं ॥
गरजें घर पुर धुंदे । तक्कें घाइ अप्प अंगाइं ॥ छं० ९२ ॥

इन वीरों का युद्ध देखकर देवताओं का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना ।

दूहा—अंमर घर पन्नग असुर । पिषि सहु रष्षित नैन ॥
सुमन ससंभ्रम पिष्षि क्रम । सुमन स[2] वृष्टिय गैन ॥ छं० ९३ ॥
सघन घाइ घूमत विघट । षिलै कि पन्नग मंत्र ॥
विस भोए डंविस सबल । [3]सगति नही जुग [4]जंत्र ॥ छं० ९४ ॥

सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त—वाम अंग सजि संग । बलिय बलिभद्र बिरचि रन ॥
सेत चमर गज सेत । सेत गज झंप करनि गन ॥
सेत हयन गज गाह । घंट घूंघर घनघोरं ॥
वष्षर पष्षर जीन । सार दद्दुर दल रोरं ॥
गज गाज बाजि नीसान धुनि । अति उब्भर दल जोर वर ॥
बजि लाग राग सिंधू स धुनि।करन सु उयल्ल[5]पल्थल्लधर।।छं०९५॥

भीम देव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान छूट कर आगे बढ़ना ।

दूहा—पावस मावस निसि धुनिय । सजि सारंगी आइ ॥
तिमिर षेत घन धाइ मिलि । जानिक लग्गी लाइ ॥ छं० ९६ ॥

सोमेश्वर जी की तरफ के बहुत से ★कछवाहे वीरों का मारा जाना ।

भुजंगी—मिले सेन [6]क्रूरं कहरं करारे । छुटे बान कम्मान करि वार धारे ॥
परैं कत्तियं घात निरघात वीरं । फिरं रुंड मुंडं तनं तच्छ [7]नीरं ॥छं० ९७॥
उड़ैं दंत सुंडं भसुंडं निनारे । मनों कज्जलं कूट अहि चंद वारे ॥
उड़ै टोप टूकं गुरज्जं प्रहारे । मनों सूर सीसं वसे चंद तारे ॥ छं० ९. ॥

---

१. मो०—मनयं रोसं ।
२. मो०—प्रष्टिय ।
३. मो०—सकति, ।
४. ए०—तंत्र ।
५. मो०—पथ्य ।

★ कछवाहा क्षत्रियों की एक जाति विशेष को कहते हैं । वर्तमान जैपुर राज्य उसी वंश में है । कवि ने इस कछवाहा शब्द के लिये प्रायः कूरंभ शब्द प्रयोग किया है जो कि कूर्म (कच्छप, कछुआ) शब्द का अपभ्रंश है ।

६. ए० कृ० को०—क्रूर ।
७. मो० नीरं ।

भई तीरयं भीर अप्रेव मानं। सरं पंजरं पथ्य थंडेव आनं ॥
मिले सेल भेलं भएकं भयंती। कुटे धान मानों घनं कूटकंती ॥ छं० ९९ ॥
रजं रज्ज रज्जे सुरज्जे अनूपं। रमैं जानि वासंत भूपाल भूपं ॥
जिनं कच्छ वच्छं धरं धम्म धारे। तिनं झल्लियं षग्ग अरि सस्त्र झारे ॥
॥ छं० १०० ॥
जिते काछवाचं जितं धम्म धारी। तिनं ठिल्लियं भार भर भीर फारी ॥
धरं धुक्कियं धार कूरंभदेवं। सुभै सस्त्र सज्या मनों संत नेवं ॥ छं० १०१ ॥

भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना।

दूहा - दच्छिन पच्छिम वाम दल। वृत्त अनुद्धिय मार ॥
गोल गहुर गाजी अनी। सोमेसर अरि भार ॥ छं० १०२ ॥

उस समय चहुआन बीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना।

गाथा - बज्जे रन रनतूरं। गज्जे गहर सूर पल चूरं ॥
मंडे निजर करुरं। छंडे मरन मोह गासूरं ॥ छं० १०३ ॥

सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना।

साटक - पिष्षेयं सोमेस गुज्जर धनी, मचकंदु निद्रा तयं ॥
जलधेयं गंजाल कोपित वलं, हालाहलं नैनयं ॥
जो बंडं करवान कणित दलं, अज्जेन आयातयं ॥
श्री बीरं चहुआन वानति वलं, चालुक्क संघातयं ॥ छं० १०४ ॥

भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना।

भुजंगी - बढ़े वान चहुआन चालुक्क षेतं। महा मंत्र विद्या गुरं मुक्र जेतं ॥
घने घोर नीसान गज्जे गहारं। उठे जानि प्रासाद वर्षा [1]प्रहारं ॥छं०१०५॥
बजी भेरि झंकार नफ्फेरि नादं। तड़क्कंत बिज्जू करभ्भाल सादं ॥
छुटी बान जंत्री उड़ी गेन अग्गी। [2]महादेव बीरं चषं निद्र भग्गी ॥छं०१०६॥
सहन्नाइ सिंधू सुरं हर्ष वीरं। नचें ताल संभाल वेताल श्रीरं ॥
नचें नृत्य नीसान नारद्द वाई। चढ़ी व्योम त्रिम्मान अपछरि सुहाई ॥
॥ छं० १०७ ॥
जके अष्ष गंध्रर्व कोतिग्ग हारी। प्रलैकालयं ष्वाल [3]ष्याल विचारी ॥
दुवं दिग्गपालं दुवं छत्रधारी। दुवं ढाल ढिंचाल मल्लं करारी ॥छं० १०८॥
दुअं [4]तबल हारं दुवं बिरद बानं। दुअं भूमि संघार हिं१ हृदानं ॥
दुअं सूर पूतं दुअं [5]कस्य पाए। दुअं दंद दारुन्न बाजे बजाए ॥ छं० १०९ ॥

---

१ मो०—पहारं। २. ए० कृ० को०—महावीर देवं।
३. को०—चषी, ए० कृ० को०—अषी। ४. ए०—तम, कृ० को०—तल्व।
५. को०—कुस्य, ए० कृ०—भस्य।

दुबं लोह मेवाड़ मंडूर मानं । दुबं हूंकि हुंकार बड़ुदेव रानं ॥
हुवं सैन स्याही अलं बह्लानं । दुअ' गञ्ज गुम्मानयं तेज भानं ॥ छं० ११० ॥
रची चच्चरी लोह डंडं करारी । प्रवृत्तीय बेरा अचंती करारी ॥
[1]सरं बाल भालं भिदे अंग जीवं । हुयं हीस मढे गरज्जे करीवं ॥ छं०१११॥
तुटै हड्ड मंसं धरंगं अचंती । गहे अंत गिद्धी गयंनं भमंती ॥
उठं छीछ तारं अपारं उतंगं । सुरं वृष्ट बंधूक पुजं [2]जुतंगं ॥ छं० ११२ ॥
छटं मझ्झ सझ्झं नरं केक कच्चे । लरें अंग हथ्यं बिना केक रच्चे ॥
उड़े खुप्परी षग्ग झारं करारी । मनों चंद सूरं दधी पूज धारी ॥ छं० ११३ ॥
किते घाइ अघ्घाइ घट घूम लुट्टैं । [3]तिनं जम्म जनं क्रमं बंध छुट्टैं ॥
किते लोह छक्के रनं भूमि घूमें । तिनं वास बैकुंठ कै ठाम घूमें ॥छं० ११४॥
जिते अंगं अंगं परे टूटि न्यारे । तिनं उप्पजी मुक्ति कै भूम त्यारे ॥
कहै कब्बि बष्षान कि बनि तेनं । फलै [4]कष्षि पच्छं मरंनं जितेनं॥छं०११५॥
कवित्त—हालाहल बित्तयौ । सार मत्तौ झोलाहल ॥
जुग्गिनि जय जय जपहिं । पस्सु पंषिन कोलहल ॥
धर परंत धुरि धरनि । उत्त मंगत्तिहिं कारहिं ॥
झर झरंत षग्गाह । बीर डंकिनि डक्कारहिं ॥
महि मच्चि महूरत मरन रन । सद्द आइ जय सूर करिय ॥
चहुआन सूर सोमेस रन । षंड षंड तन झरि परिय ॥ छं०११६ ॥

अपना मरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अतुलित वीरता
से युद्ध करना और उसका मारा जाना ।

हय गय नर भर परिय । भिरिय भारथ सम्मानं ॥
सोमेसर संचयो । मरन निहचै उनमग्नं ॥
रत्त रंग सबरंग । जंग सारह उझ्झारे ॥
हुक्कि मार धकि सार । झुम्मि झग सार [5]सु रारे ॥
कलहंत कंक अनभूत हुअ । उडहि हंस हंसन मिलहिं ॥
तन तुट्टि रुधिर पल हड्ड सन।कै कमंध उठि रन भिलहिं॥छं०११७॥

सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एवं रावत
सामंतों की संख्या कथन ।

बाजि नंषि सोमेस । सहस बर इक्क प्रमानं ॥
[6]तिन मझ्झ कहिं पंचास । बीर भारथ भरि पानं ॥

१. ए० कृ० को०—रसं ।
२. ए० कृ० को०—भुतंगं ।
३. मो०—तनं ।
४. ए०—ष्षिष्ष ।
५. मो०—मुरारे ।
६. मो०—तिन मझ्झ सु पंचास ।

तीन तीस षट परे । पर्‍यौ सोमेसर षेतं ॥
गिद्धि सिद्धि बेताल । कंक बंध्यौ सिर नेतं ॥
लच्छी सु मुगति अदभुत जुगति । हंस हकि हंसह मिल्यौ ॥
सोमेस करी सोमेस गति । पंच तत्त पंचह मिल्यौ ॥ छं० ११८ ॥

सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना ।

दूहा—जुज्झि पर्‍यौ सोमेस घर । डोला चालुक राय ॥
दुहुं सेन झरि घर परे । बजी बत्त षग चाइ ॥ छं० ११९ ॥
नए भृत्य नृप रिष्षि के । ज्यों फिरि करिहैं झुज्झ ॥
चतुरानन चिंता भई । नर भारथ्य अबुज्झ ॥ छं० १२० ॥

सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली ।

गाथा—जा [1]मुक्कि जोगिंद । कालं काह भ्रम्म भ्रमाइं ॥
सा मुत्ती सोमेसं । इक्क छिने लब्भियं राजा ॥ छं० १२१ ॥
भूमी भरंत भरयं । कलयं कर कथ्थि कथ्थेवं ॥
जै जै जंपि जगत्तं । है है नभ्भ सद्द सुर यायं ॥ छं० १२२ ॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्युकर्म्म करना ।

कवित्त—सुन्यौ राज प्रथिराज । भूमि सिज्जा अवधारिय ॥
तात काज तिन पिंड । दान षोडस विच्चारिय ॥
भट्ट मट्ट सद्दयौ । राज गति श्रब्ब प्रकारं ॥
द्वादस दिन प्रथिराज । भूमि सज्या संथारं ॥
बिन भोग भोज इक टंक करि।सुहथ दान दिय राज बर ॥
दिन्नौ न कोइ देहै न कोइ । इनौ दान अनमंत नर ॥छं० १२३॥

पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बांधूंगा न घी खाऊंगा ।

अट्ठ सहस दिय धेन । । *तब प्रथ्थी विधि धारिय ॥
हेम श्रृंग षुर हेम । तौल द्वादस हिमसारिय ॥
जुगति जुगति विधि नान । दान षोड़स विस्तारं ॥
तात बैर संग्रहन । लेन प्रथिराज विचारं ॥
घृत मुक्कि पाघ बंधन तजिय । सुवृत बीर लीनो विषम ॥
चालुक्क भीम भर गंजिके । कढ़ौ तात उदरह सुषम ॥छं० १२४॥

---

1. ए० कृ० को०—मुत्ति, मुक्ति ।
* मो०—"तब प्रथिराज मुधारिय" पाठ है ।

अरिल्ल -धिग ताहि ताहि जीवन प्रमान । सध्यो न तात बैरहु बिनाव ॥
राजिदु दृष्टि रग तेत नेन । बढ्यो सु रोसु बर उमड़ि गेन ॥छं०१२५॥

पृथ्वीराज का भोलाराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना ।

दूहा -सजन सेन चाहै न्रपति । बैर तात प्रथिराज ॥
पाठ पुब्ब बैठन मतौ । पच्छ सु जुद्धह काज ॥ छं० १२६ ॥

पृथ्वीराज का राज्याभिषेक ।

कवित -बोलि विप्र प्रथिराज । तस बुद्धी अधिकारिय ॥
राज क्रंम सब आन । ध्रम्म क्रम्मह तन धारिय ॥
जग्य आप मति जोग । क्रम्म बंधन बल बधन ॥
दिषत [1]मुष्ष जनु [2]ब्रह्म । पाप भंजन जन सज्जन ॥
जोगिंद जोग पुज्जै नहीं । काल त्रिदस आनै सुभति ॥
सासींति सूर सोमहु करन । सुविधि सूर मंत्री सुमति ॥छं०१२७॥

दूहा--राज विप्र सुवृत । जजन सुजग्य पवित्र ॥
तन्न कोइ पुज्जै नहै । क्रम बारन बर मित्र ॥ छं० १२८ ॥

पृथ्वीराज का दरबार में बैठना और विप्रों का स्वस्तयन पढ़ कर तिलक करना ।

पद्धरी -आएसु विप्र दरबार बार । [3]साधंत जोग मति सिद्ध [4]सार ॥
मतिवंत [5]रत्ति प्रथमीत जोग । जुग जगति सेव तिम [6]देन भोग ॥छं०१२९॥
पूजै प्रकार [7]साधन अनेव । तिन प्रसन होइ तन मद्धि देव ॥
देषेति विप्र इन विधि प्रकार । आनंत बुद्धि तसी प्रचार ॥ छं० १३० ॥
महि मगन मंडि नहीं निकट फंद । दिष्षंत देहु आनंद कंद ॥
प्रथिराज इंद्र राजिंद जोग । अप्पै सु मुक्ति अरु भुक्ति भोग ॥ छं० १३१ ॥
धर धरनि भिरन दै दान राज । सोवन्न भुमि मंडी विराज ॥
पर सहस सहस बर हेम इक्क । अप्पै सु दान मानहु विसिक्क ॥ छं०१३२ ॥
[8]जोगिंद [9]मत्ति प्रथिराज किन्न । बर बीर धीर साधंत जिन्न ॥ छं० १३३ ॥

---

१. मो०—मुष्य
२. मो०—ब्रिम्ह ।
३. कृ०—साधक्त ।
४. ए० कृ० को०—धार ।
५ ए० कृ० को०—रत्त ।
६. कृ० ए०—मीन ।
७. को० मो०—साधन ।
८. ए० कृ० को० जोगिंद ।
९. मो०—मंति ।

पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरबार में नृत्य गान होना।

दूहा—विविध दान परिमान करि। निगमबोध सुभ थान॥
लिय विष्षा जहां ध्रम्म सुत। करि अभिषेक नृपान॥ छं० १३४॥

भ्रमरावली—नव बीर नवं रस बीर नच्यौ। भ्रमरावलि छंद सु चंद रच्यौ॥
सिधि बुद्धिय विप्र समान घरं। मति जानत तत्त सुमत्ति गुरं॥ छं० १३५॥
गुर आनन गो विध तत्त सुरं। मनु बिंब सु बिंबर रंभ डरं॥
त्रिय दिष्षिय रंभति रंभ गती। ... ... ॥ छं० १३६॥
बय स्याम सषी गुन गौर धरं। कविचंद मु व्रनन कित्ति करं॥
तमकी तम तेज किरंन [1]रजं। तिन देषत चंद कलाति लजं॥ छं० १३७॥
गुर सत्त बुधं गुरमत्त ग्रसं। तिन कै उर काम ककश नसं॥
चहुकें नग ज्यों गज मग्ग फिरे। तुटि वार प्रहारत धार धरे॥ छं० १३८॥
.. .. । मनु तारक तेज ससी उचारै॥
छलकै छिति मत्ति अराइ जलं। झलकै जनु मुत्तिय मुत्ति गसं॥ छं० १३९॥
गुर च्यार ग्रहं गुरु जीव रवी। प्रगटी जनु जोति सु तेज हवी॥ छं० १४०॥

दर्बार में सब सामंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित्त—प्रगटि राज दर जोति। रंग रवनी रस गावहि॥
पाट बैठि प्रथिराज। सब्ब सामंत सु भावहि॥
दधि तंदुल हरि दूब। सुम्भ रोचन कसमीरं॥
मनों भान में भान। प्रगटि कल [2]किरन सगीरं॥
दिष्षियै बाल गावत सरन। सपत सुरस [3]षट राग [4]मति॥
संसार भेद आभेद [5]रत।पत्ति [6]प्रकृति साधत [7]सुरति॥छं०१४१॥

भुजंगी—कुरंगीं सु चंगी द्रपंगं ति वाले। इकं मोल अमोल लोलंत भाले॥
गरे पुप्फ माला बिसालाति धारें। मयंका मुषी कंठ[8]कलयठ सारें॥छं०१४२॥

दूहा—चित मति गति सारंत विधि। न्रप जै जै प्रथिराज॥
मनों इंदु सुरपुर गहन। उदै करै मनु साज॥ छं० १४३॥
लोइ स पते तिन महल। जहं सामंत नरिंद॥
इच्छिनि अंचल गंठ जुरि। मनों इंद्रानी इंद्र॥ छं० १४४॥

---

१. ए०—बरं। २. ए० कृ० को० किरति।
३. ए० कृ० को०—षट। ४. ए० कृ० को०—गति।
५. मो०—रम। ६. ए० कृ० को० प्रगति।
७. मो०—सुरति। ८. मो०—कलकंठ।

भुजंगी —
नृपं इंछिनी गंठि बंधी प्रकारे । मनों कामता काम की बुद्धि तारें ॥
दुहूं रंग रंगी सु रंगीति साधी । मानों जीव गुर राहु एकंत बाधी॥छं० १४५॥
सही सत्त मंतं प्रकारे निनारे । मनों मेनिका रंभ आवे अधारे ॥
वरं देषि असमान अभिमान जानै।बने कौन वृप्रं त ता बुद्धि दानै॥छं० १४६॥
दूहा —चोअग्गानी लच्छि दै । सब सामंतन सथ्थ ॥
जस जा हथ्थन विप्प के । भौ कामिनिति समथ्थ ॥ छं० १४७ ॥
गाथा —उभै राम बर सूरं । सामंतं सत्त षट दूनं ॥
ता अप्पन प्रथिराजं । चौ अग्गा लच्छि संग्रामं ॥ छं० १४८ ॥

इंछनी से गठबन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचर संबन्धी पूजन विधान करना ।

भुजंगी—
भई,कामना काम कामित्त राजं । दियो कन्ह चहुआन हथ्थी विराजं ॥
उभै राज राजंग जोगिंदु मित्तं । मनो देवता जीव के जग्य जत्तं॥छं० १४९॥

पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना । पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामंतों का टीका करना ।

दूहा—प्रथम तिलक सिर कन्ह किय । दुत्तिय निड्डर रठौर ॥
इन अग्गह सुभ संत करि । तापछ सुम्भर ओर ॥ छं० १५० ॥

कवित्त—कियो तिलक वर कन्ह । पाट प्रथिराज विराजहि ॥
मनों इंद्र अरधंग । हथ्थ इंदीवर राजहि ॥
चमर सेत सोभंत । ढुरत चावद्दिसि मीसं ॥
चमर सेत सोभंत । ढुरत चावद्दिसि मीसं ॥
मनों भान पर धरिय । किरनि ससि की प्रति रीसं ॥
अवनीस इंद्र लग्यो तपन । ध्रुअ सुतेज तप उद्धरन ॥
सुरतान गहन मोषन करन । बहु बीरां रस संविग्रन ॥छं० १५१॥

पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन ।

कनक दंड सिर छत्र । सुभत चोहान सीस पर ॥
कै तरत्त ससि भान । तेज मंगल जंगल गुर ॥
ग्रह सुसंत संग्रहन । पंच पंचो अधिकारिय ॥
चावद्दिसि चहुआन । दिष्टि नवग्रह बल टारिय ॥
प्रज मिलिय आनि बढ्यो अनंद । चंद छंद चातिग रटहि ॥
प्रथिराज सु बर दुज्जन मनहु।काल ब्याल कारन ठटहि॥छं०१५२॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोला भीम विजय सोमेस बंधनो नाम उन चालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ३९ ॥

अथ पज्जून छौंगा नाम प्रस्ताव लिष्यते★ ।

(चालीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना ।

दूहा –† सुनि कगद प्रथिराज जब । बध्यो भीम सोमेस ॥
आतुर धरि आयो जहां । दिल्ली देस नरेस ॥ छं० १ ॥

पज्जून राय कछवाहे की पट्टन के संग्राम में वीरता वर्णन ।

दूहा -कित्ति कला कूरंभ बल । कहत चंद बरदाय ॥
ज्यों पट्टन संग्राम किय । जाइ सु भोग राइ ॥ छं० २ ॥
सुनी राज प्रथिराज ने । झाला रानिंग सूय ॥
बिरद बुलावे महबली । छौंगा सज्यो सभूय ॥ छं० ३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय के सिर पर छौंगा‡ बांध कर
लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना ।

कवित्त छौंगा ला सिर छत्र । सीस बंध्यो पज्जून ॥
जस जयपत्त जु आनि । करं परसन मह [१]ऊनं ॥
अप्पातें घर रैठि । रीस कीनी चालुक्का ॥
हीय घटक्के साल । बान संभरि बालुक्का ॥
पुच्छेव पल्ह कुरंभ कों । अप्पानो दल टरियो ॥
पज्जून मलयसी वीर वर । करन कूच उच्चारयो ॥ छं० ४ ॥

दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय
सोनिगर के किले में है और यहां पर पज्जूनराय
का चढ़ाई करना ।

दल भोला भीमंग । साल चितिउ सोनिगर ॥
किये कूच पर कूच । काल घेन्यो कि कूट गिर ॥

★ मो० प्रति में "पज्जून कछवाहा छौंगा नाम प्रस्ताव" ऐसा पाठ है ।

† यह दोहा मो० प्रति में नहीं है और पाठ से भी क्षेपक ज्ञात होता है ।

१. ए० कृ० को०–दूनं ।

‡ एक प्रकार का राजसी या सरदारी चिन्ह जो पगड़ी के ऊपर बांधा जाता है जिसे कांगी भी कहते हैं । सपुरेच, कलगी तुर्रा इत्यादि का एक भेद है ।

चंद मंहि ओपम्म । सरद राका परिमानं ॥
उदधि मद्धि जिम अनिल । अलधि लंका गढ़ आनं ॥
दल दूत राज पिथ्थहु कहिय । हक्कार्‍यौ पज्जून बल ॥
तुम जाइ जुरो [1]ऊपम करो । हनो राज भीमंग बल ॥ छं० ५ ॥

दूहा—सकल सूर कूरंभ वर । सथ लिन्नी अप [2]अत्ति ॥
समर धीर बीरत सबर । लज्जी परै न [3]भत्ति ॥ छं० ६ ॥

पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन ।

पद्धरी—

चढ़यो बीर पज्जून कूरंभ सथ्थं । मनों कच्छियं जोग जोगी समथ्थं ॥
दुअं तोन बंधे दुअं लै कमानं । * मनों उत्तरा पथ्थ पारथ्थ जानं ॥छं० ७ ॥
दुअं असं बंसं रचे रथ्थ ओरं । लगे पाइ छत्री उठी भोमि भोरं ॥
कियो पट्टनं कूच चालुक्क थानं । अपं सथ्थ बीरं सु लीए जुवानं ॥ छं० ८ ॥
पुछै पंथ पंथी तनं सच्च जंपै । सुनै दुष्ट बैरी तितं तेज कंपै ॥
इकं चित्त इष्टं [4]निजा साइ मानें । इसे बीर कूरंभ रैवान जानें ॥ छं० ९ ॥
तहा घेरियं ग्राम चालुक्क रायं । अचानक बीरं दरब्बार आयं ॥ छं० १० ॥

दूहा—★चौकी भीमानी चढ़ै । झाला रानिग सथ्थ ॥
छौंगा बीर महाबली । बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ११ ॥

पज्जूनराय का घेरा डालना । मलय सिंह का मुकाबला करना ।

कवित्त—चंपि काल पज्जून । बीरा भोरा भीमंदे ॥
कै आयो उप्परै । फुट्टि पायाल सबद्दे ॥
सकल सेन चमक्यो । बीर भोरा उठि जग्यो ॥
मलैसीह मुषकाल । हाल सम [5]व्याल सु [6]भग्यो ॥
[7]बक्कार बीर छौंगा गह्यो । सिर मंडन लिय हथ्थ धरि ॥
आए सु सीस पज्जून करि । समर बाल बीरं सुबरि ॥ छं० १२ ॥

पज्जूनराय का चाबुक भूल जाना और फिर सात कोस से लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले आना ।

दूहा—लै छौंगा बर [8]बीर बलि । चावक भूल्यौ हथ्थ ॥
सात कोस ते बाहुर्‍यौ । बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० १३ ॥

---

१. ए० कृ० को०—ऊमर । २. ए० कृ० को०—जित्ति ।
३. ए० कृ० को०—मित्ति । ★ मो०—मनों उत्त पारथ्थ जानं ।
४. ए० कृ० को०—निज ।
★ ए० कृ० को०—"चिठ्ठी चिमान चिट्ठवी" । ५. ए० कृ० को०—व्यालह ।
६. ए० कृ० को०—जग्गी । ७. ए०—चक्कार । ८. ए०—वलि ।

पट्टन हट्टन मझ्झ ते । लै आयौ फिरि धीर ॥
ता पाछें बाहर चढ़यो । दल चालुक्की बीर ॥ छं० १४ ॥

चालुक सेना का पीछा करना और पज्जून राय का उसे परास्त करना।

भुजंगी—चढ़े पच्छ चालुक्क सो सज्जि सेनं । हकारे नरिंदं सु कूरंभ तेनं ॥
सुने सद्द क्रम्मं फिरे तथ्थ बीरं । छुटै तीर तीरं मनों सिंधु नीरं ॥ छं० १५ ॥
बजै घाइ अध्घाइ गज्जै हवाई । बजे आवधं मझ्झ आवद्ध झाई ॥
मिले बीर बीरं स्वयं सूर भारे । परे रंग जंगं मनों मत्तवारे ॥ छं० १६ ॥
झरै सार सारं बिनंगीस उठ्ठे । मनो सिगनं भद्दवं रेनि वुठ्ठे ॥
घनं रत्त घंटै उमा बीर रत्तं । परे अठ्ठदह बीर कूरंभ पत्तं ॥ छं० १७ ॥
परे सहस चालुक्क द्वैबान बीरं । तहां इत्तनें भान अस्तंम नीरं ॥ छं० १८ ॥

छौंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय सिंह और पज्जून राय की कीर्ति का स्थापित होना।

दूहा मलैसीह पज्जून रा । दस दिसि किनि अवाज ॥
दे छौंगा भोरा फिर्यो । गयो सुपट्टन राज ॥ छं० १९ ॥

पज्जून राय का पृथ्वीराज को छौंगा नजर करना।

गयो सुचालुक ग्रेह तजि । रही करै गिरि [1]लाज ॥
छौंगा कूरंभ रावलै । [2]कर दीनो [3]प्रथिराज ॥ छं० २० ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को ही छौंगा दे देना और एक घोड़ा और देना।

राज सु छौंगा फेरि दिय । बर है वर आरोहि ॥
घटि चालुक [4]बढ़ि कूरमा । अयुत पराक्रम [5]तोहि ॥ छं० २१ ॥
मलैंसिंह रानिग सुत । सुभ्भर भोरा राज ॥
कूर्म अचानक यों पर्यो । ज्यो तीतर पर बाज ॥ छं० २२ ॥
★पज्जून राइ महाबली । मलैंसिह धर पारि ॥
छौंगा लै पाछे फिर्यो । सुनि चालुक्क पुकार ॥ छं० २३ ॥

चन्द कवि की उक्ति से पज्जून राय के वीरशिरोमणि होने की प्रशंसा।

बहुत जुद्ध कीनो सुबर । सुभर तेज प्रथिराज ॥
भट्ट चंद कीरति तबै । कूरंभह सिरताज ॥ छं० २४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून कछवाहा छौंगा नाम च्यालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४० ॥

---

१. ए० कृ० को०—लज्ज । २ मो०—कर दानो ।
३ ए० कृ० को—प्रभु हृष्य । ४ मो०—बधि । ५. ए० कृ० को०—तवी ।
★ छन्द २१ और २२ मो०—प्रति में नहीं है । इन छन्दों में पुनरुक्ति है इस से इनके क्षेपक होने का भी सन्देह हो सकता है ।

अथ पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(एकतालीसवां समय।)

जै चंद के उभाड़ने से बालुका राय सोलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना।

दूहा —[1]बालुक्का हिंदू कमध। और सु गोरी साहि॥
सामभेद जैचंद किय। पति दोली सम ताहि॥ छं० १॥

दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना।

कवित्त—आइ षबरि चहुआन। [2]सु दल बालुक्कराइ सजि॥
आइम पंग नरेस। साह साहाब बैर कजि॥
लष्ष दोइ भर दोइ। पुरह षोषंद सुआइय॥
दिषि है गै अनमत्त। दूत ढिल्ली दिसि धाइय॥
प्रथिराज रुधिरु कारी कढ़िय। समह राम [3]प्रोहित्त रढ़िय॥
सुरतान समध बालुक कमध। [4]कहैं कौन चम्मू चढ़िय॥छं० २॥

पृथ्वीराज का विचार करना की पज्जून राय से यह कार्य्य होना संभव है।

चालुक्का परि राइ। बीर बज्जे नीसानं॥
सकल सूर सामंत। षग्ग मग्गं किय पानं॥
सबर सेन सुरतान। राज प्रथिराज बिचारिय॥
बिन कूरंभ को दलै। नृपति इह तथ्थ उच्चारिय॥
जो त्रियन बस्य नन द्रव्य बसि। मरनसु तिन जिम तन मनैं॥
सिर धरै काम चहुआन को। बियो काम चित्त न गनै॥ छं० ३॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को [5]बुलाना।

दूहा —बोलि राज प्रथिराज तब। पान हथ्थ दिय साज॥
कहौ जाइ कूरंभ [6]कौं। इह किज्जै हम काज॥ छं० ४॥

पृथ्वीराज का सभा में बीड़ा रखना और किसी का बीड़ा न उठाना, सबका पज्जूनराय की प्रशंसा करना।

कवित्त—सुनि सुबत्त कूरंभ। कोइ झिल्लै न पान बर॥
बड़गुज्जर दाहिम्म। सूर चालुक्क चंपि धर॥

---

१. मो०—चालुक्का। २. मो०—"सुबर चालुक्का राइ सजं।
३. ए० कृ० को—प्रोहि। ४. मो०—कहौ काम चढ़ै।
५. ए० कृ० को—बाब। ६. ए० कृ० को—कौं।

परमारह कमधज्ज । बीर परिहारय भट्टिय ॥
सकल सूर बर नटे । काल चपे मति षट्टिय ॥
पज्जूनराइ षग अग्गरो । करै नाम निरमऊ सु धर ॥
इन सम न कोइ रजपूत रन । डरहि काल [1]दिष्षिय [2]निजर ॥छं० ५॥

पज्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं का ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना ।

ए कूरंभह बीर । धीर आवृन धनुद्धर ॥
* ओ मह नह पूजंत । जोग पल षंडन सब्बर ॥
इनह अप्प बल दोरि । जाइ असि असि अरि झारिय ॥
एकल्लै पज्जून सिंघ । परि पिसुन पछारिय ॥
लै पान सीस कूरंभ धरि । सकल सूर सामन नटि ॥
बालुककराइ हिं दुमह । विषम काल व्यालह सु जुटि ॥ छं० ६ ॥

मुलतान और कमधज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊँट से उपमा वर्णन ।

दूहा --कालव्याल सुरतान दल । कमध सु पपय कूट ॥
हरि बाहन पज्जून दल । ते सजि धाए [3]ऊँट ॥ छं० ७ ॥

पज्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा में आनन्द ध्वनि होना ।

भुजंगी --लियौ पान पज्जून कूरंभराइं । स्वय जानने मोइ कीनी सु भाइं ॥
मिलि अग्गि कूरंभ पोषित जान । गई टुट्ट चहुआन सुरतान मान ॥छं०८॥
बजे दुदुभी देव देवं सु थानं । भयौ सुष्ष कूरंभ चित स भान ॥ छं० ९ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोड़ा देना ।

दूहा --लरन हथ्थ लिय तेग बर । बगसि राज नव बाज ॥
लिए कूरंभ कुल उज्जले । सीस नवाइ समाज ॥ छं० १० ॥

चढ़ाई के लिये तय्यार होकर पज्जूनराय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पांचों भाइयों का साथ होना ।

कवित्त --[4]षग्ग बंधि कूरंभ । आइ पज्जन अप्पन भर ॥
सुभर बीर बलिभद्र । तात पज्जन सथ्थ वर ॥
कन्ह बीर बर बीर । सिंघ पाल्हन सुधार ॥
मलयसिंह सब हथ्थ । संग लीने भर मार ॥
चित स्वामिध्रंम सो अरि भिरन । लरन मरन तकसीर नन ॥
सुनि राग बीर काइर धरकि । बजिग बीर नीसान घन ॥छं०११॥

---

१. ए० कृ० को०--दिष्षै । २. ए० कृ०--नजरि ।

* मो०--प्रति--प्रोसम पुज्जै जोग पल षडन बीर ।

३. ए० कृ० को०--ऊँट । ४. कृ० को०--षगा ।

पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन ।

दूहा—बजिग बीर नीसान घन । पावस सक्र समीर ॥
चढ़िग जोध पज्जून भर । सज्जि हयगय बीर ॥ छं० १२ ॥

भुजंगी—
चढ़्यो बीर बलिभद्र कूरंभ रायं । कला पथ्थ कोटं सुजोटं दिषायं ॥
छबी तेज मुष्षं सु सोभंत बीरं । मनों केवलं अंग बीरं सरीरं ॥ छं० १३ ॥
चढ़्यो बीर संगं नरं सिंग रायं । दिठी दिट्ठ दिट्ठी मनों बेद गायं ।
चढ़्यो राइ पज्जून छत्रं सुधारे । बदै जाहि स्वामी रवी रत्त भारे ॥छं०१४॥
द्रुमं सीस फेरै पज्जूनं सहेतं । मनो बाज राजं परं बंधि नेतं ॥
चढ़े सेत बंधी सयं सज्जि सारं । तिथं पंचमी पूर आदीत बारं ॥ छं० १५ ॥

पज्जून राय के कूच की तिथि वर्णन ।

दूहा - तिथि पंचमि रवि बार बर । छंडि पंच भर आस ॥
चढ़े जोध है गै परिय । [2]मुगति सु लूटन रासि ॥ छं० १६ ॥

पज्जून राय का कृत वीरताओं का वर्णन ।

साटक—[3]धीरंजं धर धीर कूरम बली, पज्जून रायं बरं ॥
जित्तेतं सुरतान मान सरसं, आवृत्त बानं बिषं ॥
भूयो बाल भुआल भारथ कृतं, कृष्णों घ।।ा घट्टियं ॥
तं काजं बर बीर धीर धरयं, संसार मुक्तं बरं॥ छं० १७ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

पद्धरी—चढ़ि चल्यो सेन कूरंभ बीर । झपटीय जानि साइर गंभीर ॥
बंधिय सुतीन कूरंभ मंत । जाने कि जोग जोगाधि अंत ॥ छं० १८ ॥
तहां हुए सगुन ए सुभ्र रूप । दाहारसिंघ रवि रथ्थ जूप ॥
दाहिनैं पूठ मृग मृगिय जाय । बामह सुग्रीव सारस सुभाय ॥ छं० १९ ॥
उत्तरै तार देवीति वार । हहकंत सद्द जुगिनिय भार ॥
मृगराज मिल्यो दंतह प्रमान । [4]बंदे सुराज पज्जून आन ॥ छं० २० ॥

पज्जून राय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुंचना ।

दूहा—सकल सूर कूरंभ बर । भान भयन मुष बीर ॥
तबै राइ चालुक्क बर । आइ [5]संपत्तो तीर ॥ छं० २१ ॥

---

१. मो०—परि । २. ए० कृ० को०—मुकति ।
३. ए० कृ० को०—धीरज्जं । ४. ए०—बद्दी, कृ०—बंदै ।
५. ए० कृ० को०—संपत्तौ ।

कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जून राय का साम्हना होना।

आइ संपत्ते सूर भर। सुरताना कमधज्ज ॥
कूरंभह पज्जून सम। चढ़े जोध गुर गज्ज ॥ छं० २२ ॥

दोनों प्रतिपक्षी सेनाओं का आतंक वर्णन।

पद्धरी—दुअ दीन हिंदु ममुहु प्रमान। चालुक्क राइ अरि मलन भान ॥
चहुआन सूर रबि जेम बीर। पट्टन सु राइ अरि ग्रमन धीर॥छं०२३॥
कूरंम दान षग रूप दीन। असान जान रज रूप कीन ॥ छं० २४ ॥

दूहा—करिण मेन ममुष मुबर। गरूड़ ब्यूह किय बीर ॥
लरन मरन भारथ्थ क्रत। जज्जर करन सरीर ॥ छं० २५ ॥
[1]ग्रिद्ध ब्यूह कूरभ करि। नाग ब्यूह सुरतान ॥
षा ततार षुरसान पति। मडि फौज मैदान ॥ छं० २६ ॥

पज्जून सेना के व्यूहबध्य होने का स्पष्टीकरण।

कवित्त—[2]पग जद्दव परिहार। पुच्छ पामार सुधारिय ॥
भट्टी सेन बिषम्म। पिंड पावं अधिकारिय ॥
जानु होइ पुंडीर। नष्ष उर मंस अंस करि ॥
पंच अंष सुभ जीह। बीर कूरंभ [3]पयद्धरि ॥
[4]ग्रीवा सुजोति गज गाह गहि। [5]लहि लोहानो [6]ठौर बर ॥
छत्रह [7]मुजीक पज्जून सह। दौरि पर्यो बलिभद्र बर ॥छं० २७॥

युद्ध की तिथि।

घरिय सत्त दिन रह्यो। बार नोमीति मुक बर ॥
पंच बीस आवट्टि। ★षट्टि लोथ सुबधि धर ॥
कूरंमह षग झारि। सार भारथ्थ सु किन्नौं ॥
सार बज्ज घरियार। टोप टकार सु भिन्नो ॥
आचार चाह राजन बरे। मरे बीर रजपूत वर ॥
संग्राम सूर कूरंभ सम। नर न नाग दानव्व [8]सुर ॥ छं० २८ ॥

श्लोक—मानवं दानवं नैव। देवानां कुरु पांडवो ॥
कूरम्म राइ समो बीरं। न भूतो न भविष्यते ॥ छं० २९ ॥

---

१. मो०—गद्ध। २. मो०—पग।
३. ए० कृ० को०—राइ धरि। ४. ए० कृ० को०—ग्रीवह।
५. ए० करि। ६. मो०—मिठि।
७. मो०—मुनीक। ★ ए० कृ० को०—"लुथ्थि पर लुथ्थि बंधि धर"।
८. मो०—असुर।

पज्जून राय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना ।

कवित्त—हाइ हाइ कहि घृष्ट । इष्ट बलिभद्र अंमरिय ॥
बलिय तप्प कूरंम । सार साहित्त सुम्मरिय ॥
यों पजून दल मल्यो । सोइ ओपम कवि भाइय ॥
कमल पंति गजराज । सरित मझ्झह झुकि ग्राहिय ॥
घन घाइ अघाइ सुघाइ घट । करिय एम कूरंभ घट ॥
सुघ्घाट आइ कुघ्घाट किय । सुभट घाइ भारथ्थ [1]घट ॥ छं० ३० ॥

दूहा—सुभट घाइ भारथ्थ भिरि । ते अंगन दिष्षाइ ॥
रुधि सुक्कै कद्दम हुए । हय तरंग सुम्भाइ ॥ छं० ३१ ॥

इस युद्ध में पज्जून राय के भाइयों का मारा जाना ।

जुद्ध सुचालुक राइ तहँ । च्यार बंधि परि षेत ॥
पंच भ्रात कूरंभ बर । उप्पारे सु अचेत ॥ छं० ३२ ॥

पज्जून राय की जीत होना और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना ।

कवित्त—उप्पारिग पज्जून । बीर बलिभद्र उपारिग ॥
उप्पारिग पाल्हन नरिंदु । घाव [2]सठु तन धारिग ॥
परि पंचाइन कन्ह । जैत जैतसिंह जुवानं ॥
हिंदु बीर दससान । मेच्छ गड्डुन परिमानं ॥
लुट्टि दरब्ब गज बाजि रथ । रिंघ राव उप्पारयो ॥
जस जैत लियो कूरंभ [3]रन । जीवन अवनि सु धारयो ॥ छं० ३३ ॥

पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा ।

दूहा—★ आज भाग चहुआन घर । आज भाग हिंदवान ॥
इन जीवत दिल्ली धरा । गंज न सक्कै आनि ॥ छं० ३४ ॥

पज्जून राय का भाइयों की क्रिया करना और
२५ दिन गमी मना कर दान देना ।

कोस षट्ट चहुआन बर । संमुष गय बर बीर ॥
उभै बीस अरु पंच दिन । न्हाइ दाम दिय धीर ॥ छं० ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासाके चालुक
समागम पज्जून विजय नाम इकतालीसमो
प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४१ ॥



---

१. ए०—नट । २. ए० कृ० को०—सठे ।
३. ए० कृ० को०—नर । ★ छन्द ३४ मो०—प्रति में नहीं है ।

अथ चंद द्वारका समयो लिष्यते ।

(बयालीसवां समय ।)

कविचंद का द्वारिका को जाना ।

दूहा—चलन [1]चित चंदह कर्‌यो । चलि द्वारिका सु चित्त ॥
मंगि सीष प्रथिराज [2]पहु । सजिय सकल अप सथ्थ ॥ छं० १ ॥

कविचंद का यात्रा समय का साज सामन और उसके साथियों का वर्णन ।

कवित्त—दोइ सहस है बर [3]बिसाल । सत [4]बरुन [5]सथ्थह ॥
सत गयंद रथ रूढ़ । साज आसन प्रथि रज्जह ॥
पलक बेद जोजन प्रमान । थटे * संबल्ल क्रत पाइय ॥
साज लष्ष तन लष्ष । सकल बल कोरि सजाइय ॥
मानुक्क धार सत अट्ठ चलि । करन तिथ्थ जात्रह चल्लिय ॥
सत सुभट दान दिय तुरिय गज । मनहु जमन सागर मिलिय॥छं०२॥

चंद का चित्तौर के पास पहुंचना ।

[6]गज घंट्टन त्रंबाल भेरि सहनाइय बज्जिय ॥
चलत आइ चित्रकोट । पुरन त्रियलोक [7]सुरज्जिय ॥
कन्ह मान लेय न कविंद । जोजन दुअ दिष्षिय ॥
शृंगारिय गढ़ हट्ट । [8]मनों इंद्रासन पिष्षिय ॥
बजि त्रंब बंब बज्जन बहुल । मन उच्छाह भिष दान दिय ॥
गढ़ मद्धि धाम मनु राम पुर । कवि सु [10]तथ्थ डेरा करिय ॥ छं० ३ ॥

चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन ।

दूहा—†गिरवर डूंगर गहर बन । प्रबल पेषि जल ठौर ॥
चित्रंगद मोरी बसिय । दै गढ़ नाम चितौर ॥ छं० ४ ॥

---

१. मो०—चित्त ।
२. मो०—पै ।
३. ए० कृ० को०—त्रिलास ।
४. ए० कृ० को०—बारुनह ।
५. मो०—समथ्थह ।
* पाठ अधिक है ।
७. मो०—बज ।
८. ए० कृ० को०—परषिय ।
९. मो०—मनों इन्द्र थान बिसिष्यिय ।
१०. ए० कृ० को०—सथ्थ ।
† छंद ४ से लेकर छंद १५ पर्यंत मो०—प्रति मे नहीं है और पाठ से भी यह अंश क्षेपक मालूम होता है ।

चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा।

कवित्त – चित्रकोट दिय नाम। बंधि चित्रंगद सर बर॥
पंषि असंष निवास। सघन छाया तट तरवर॥
बुरज कोट कंगुरा। गोष जारी चित्रसारी॥
महलायत चहुवचा। झिरन कारंज किनारी॥
पागार पोरि आगार करि। थान सदेवत पिष्षयौ॥
छतीस बंस महिचंद कहि। मोरी नाम सुरष्षयौ॥ छं० ५॥

उक्त मोरी का गोमुष कुंड बनवाना।

अरिल्ल गोमुष कुंड बंधि फुनि मोरिय। सुर पति विपन सोभ सब चोरिय॥
भार पठार उगी बन राइब। देषि कैं रीझ रह्यौ बरदाइय॥ छं० ६॥

एक सिहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना।

कोरि कढ़्ढि पाषान महि। गिरि कंदर इक रिष्ष॥
मुहु अग्गे सिघनि भषत। हनि बालक तिहि सिष्ष॥ छं० ७॥

सिहनी की पूर्व कथा।

कवित्त – नगर अजोध्या नृपति। नाम कीरत्ति प्रबल्लं॥
सर ऊसुरि तातट्ट। रमत सिक्कार सयल्लं॥
तानि बान कम्मान। हनिय हिरनी ग्रभ बत्तिय॥
तरफंरत अवलोकि। श्रोन घन द्वार श्रवतिय॥
उतपन्न ग्यान बैराग लिय कुंवर स कोसल संजुगत॥
अड़ सट्ठि करे तीरथ अटन। चित्रकोट महि तप तपत॥ छं० ८॥

पद्धरी – तप तपत आइ चित्रकोट मद्धि। सहचरिय आइ इह करिय सुद्धि॥
सूनि कान बानि रानी प्रफुल्लि। उतरन महल्ल सोपानि भुल्लि॥ छं० ९॥
अनुराग सुत्तपति को हरष्ष। उठि चलिय मिलन मारग गवष्ष॥
चकचूर भइय परि पहुमि आइ। तड़िता कि तेज तारक दिषाइ॥ छं० १०॥
जल अलनि विष्ष गिरि झंप पात। पावहि न गत्ति इह सत्ति बात॥
जप तप्प तित्थ अस्नान दान। कोटिक्क पढहु पंडित पुरान॥ छं० ११॥
अंतह सुमत्ति गति होइ सोइ। अहंकार उमर जिन करहु कोइ॥ छं० १२॥

कवित्त – बघिनि होइ बिकराल। आइ गिरि कंदर प्यासिय॥
प्रगटि पुब्ब तामस्स। भजि अँग जंगल प्रासिय।
दंत कंति चमकंत। अरित कुंदन मय मेषं॥
ईहा [1]मोह करंत। जनम पछिलो संपेषं॥
असराल चष्ष अंसू ढरत। पंसुरहि तुच मंस गलि॥
इक मास लगि अनस्रन करि। गय नंगन उड़े हंस चलि॥ छं० १३॥

---

1. छ०—मोह।

दूहा—किति धवल धीरज्ज धरि। श्रवन आइ उपकंठ ॥
राम नाम सभलाइ सुर। कुंअर पाइ बैकुंठ ॥ छं० १४ ॥
रघुवंसी राजिंद नें। मन हटक्कि तब्ब ॥
प्रभवंती हिरनी हनी। तिहि वदलो लिय अब्ब ॥ छं० १५ ॥

कविचंद का आना सुन कर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना।

कवित्त - कवि सु सथ्थ मति प्रबल। बोलि सहचरी मत्ति बर ॥
नव नव रस भोइन। अनंत इंद्रानि इंद्र घर ॥
रूप माल सु विसाल। मेघ माला सुभ मंजरि ॥
मदन बेलि मालति। विसाल मन अट्ठ अनंबर ॥
नरकंध रथ्थ के आरुहिय। ढकि छब्बि मनों अंब जल ॥
प्रति चलिय भट्ट कट्टन दरिद। मोघ निरखि अनुराज थल ॥ छं० १६ ॥
कितक छब्बि वत्त्रंग। मद्धि माला मुत्तिय मनि ॥
सीतारामी सहस। कनक थारी मत बीजनि ॥
अगर पान अड़सट्ठ। रजक पालिका पठाइय ॥
सुवन इक्क पुत्तरिय। कर सु सारंग [1]मुह गाइय ॥
मुक्कलिय प्रथा कवि थान कहुं। भरन भार अभ्रन भरिय ॥
प्रति प्रति सु दान मानहु प्रबल। कवि सषियन आदर करिय ॥छं० १७॥

कवि का चित्तौर जाना।

दूहा दिय बहोरि न्रप नगर को। प्रिथ आसीस पढ़ाइ ॥
प्रति सुनंत मति दति प्रबल। करिस [2]कूप कन्ह नाइ।.छं० १८।
नील कंठ सिव दरस करि। मात भवानी भेटि ॥
फुनि नरिंद चित्रंग मिलि। चद दंद तन मेटि ॥ छं० १९ ॥

कवि का किले में भोजन करने जाना। पृथा का उसे भोजन परोसना।

अरिल्ल --प्रतिहारन रावन पधराइय। बोलि मंत्र भोजन बुलवाइय ॥
करन प्रथा जेवन परिमानं। उड़ि घुम्मर अम्मर सु प्रमानं ॥छं० २०॥
[3]लोह कुंड रच्चे सुर सच्ची। कुरछन झारि दियंत सु षिच्ची।
मनों ओपमा में छबि रच्ची। जेवे बरन अठारह जच्ची ॥छं० २१॥
एकलिंग अवतार सु धारिय। नारि केल पुज्जे नर नारिय ॥
कलिनि कलंक काल कटि भारिय। जेंवे सब परिगह परिवारिय ॥छं० २२॥
केसर अगर बीरि सब किद्धिय। पान सु पारि कपूर प्रसिद्धिय ॥
हथ्थी है मोती नग बिद्धिय। दान मान रावर कर दिद्धिय ॥ छं० २३ ॥

---

१. ए०—मुह। २. ए० कृ० को-कूप, कूर।
३. मो०—कही। ४. मो०-देख ते रची।

कन्ह अमरसिंहादि सामंतों का पृथा कुमारी को उपहार देना।

कनक साज है तुरी रठाइय। कन्ह एक गज मुत्तिय गाहिय॥
अमरसिंघ गज मुत्ति सुभाइय। जो चित्रंग भ्रत्य सम राइय॥छं० २४॥
मोरी रामप्रताप महाभर। सुष्पासन आरोहिय उप्पर॥
मोती जिरित मोल घन सज्जर। दीय सु दान मान अपरंपर॥छं० २५॥

चन्द का चित्तोर से चलना

दूहा—चलिय चंद पट्टन १रह। अहि सिर पर धरि पीर॥
पंथ एक पष्षह चलिय। द्रिग सागर दिषि नीर॥ छं० २६॥

द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना।

कबित्त—उत्तरि हथ्थिय बाजि। ★पाइ प्रति मिले सु मंगन॥
दिट्ठिय देवल धज्ज। पाप परहरि अंग अंगन॥
गजत पिट्ठ गोमत्तिय। भान तप तेज बिराजिय।
सागर जल उच्छले। पाप भंजन पाराजिय॥
रिनछोर राइ दरसन करिय। परिय मोह मानुष्ष पर॥
सुरथान मान इतनी सुचित। देवलोक कैलास दर॥ छं० २७॥

दूहा—हाटक मंडप छत्र लहि। मुत्तिय १पंतिन माल॥
मनों चंद बहु भान मम। कल मप कट्टत काल॥ छं० २८॥
फिरि परदछ दरसन करिय। हुअ परतष्षि प्रमान।
तब अस्तुति सु प्रनाम करि। प्रभा बिराजिय भान॥ छं० २९॥

कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति।

रसावला—
तुअं देह हट्टी, तुअं मान बट्टी। तुअं बीर दट्टी, तुअं थान थट्टी॥ छं० ३०॥
तुअं लोक पालं, तुअं जालमालं। तुअं भाल बालं, तुअं द्रिग्गपालं॥छं० ३१॥
तुअं देस दष्षी, तुअं भीर भष्षी। तुअं द्रोप रष्षी, तुअं सर्व सष्षी॥छं० ३२॥
तुअं तीन रष्षी, तुअं ब्रह्म लष्षी। तुअं पंच रोही, तुअं गोप मोही॥छं० ३३॥
तुअं सत्रु द्रोही, तुअं सत्र सोही। तुअं सिद्धि तूं ही, तुअं रिद्धि सोही॥छं० ३४॥
तुअं सर्व अंडं, तुअं तीन कुंडं। तुअं पिस १घंडं, तुअं चार मुंडं॥छं० ३५॥
तुअं ग्यान गट्ठं, तुअं रंभ घट्ठं। कवीचंद पट्ठं, गयो दूर हट्ठं॥छं० ३६॥

दूहा—हरिहर बच सब बारि बर। धुर धरि सिर पर इंद॥
मनु गुर तद कर चार नमि। झलमलि हलि गोविंद॥छं० ३७॥

★ मो०—पाइ प्रति चले सु मंगन।

१. ए०—पंतिय, पंतिय।   १. ए० कृ० को०—पंडं।

देवी की स्तुति ।

भुजंगी— नमो तु नमो तुं नमो तु कुमारी । नमो तुं नमो तुज संसार सारी ॥
नमो तुं अभष्वी नमो बीज भष्वी । नमो रिष्व पूजत सज्जतं सष्वी॥छं०३८॥
नमो तुं रटै राज राजं रजाई । नमो [1]तुंज संसार तें सिद्ध पाई ॥
नमो तंत जाल विकालंत राई । नमो विश्वथान [2]गिरजा गिराई ॥छं ३९॥
★नमो सस्सिपाल अकाल अभष्वी । नमो काल जन्म न काल न सष्वी ॥
नमो एक भग्नी भरत्तार पचं । नमो कोरि कोर करत्तार मचं ॥छं० ४०॥
नमो सिद्ध तुं रिद्ध तुं दद्धि पानी । नमो काल तु भाल तु साल रानी ॥
नमो किस्ति तुं मंत्र तुं गीत गानी । नमो आदि तु अत तु जोग जानी ॥
॥ छं० ४१ ॥
नमो विश्व तु भिस्त तु भार भारी । नमो जोग तु जीव तु जुग्ग चारी ॥
नमो भूमि तुं धूम तुं अब पानी । नमो तप्प तु ताष तु अट्ठरानी ॥छं०४२॥
नमो बाल तुं वृद्ध तूं हाल चाली । नमो भान तु मान तु मुक्ति माली ॥
नमो व्याघ्र तुं सार तु वाग वद्दं । नमो भुड मुड तुही पारि मद्द ॥ छं० ४३ ॥
नमो पत्र तुं छत्र तु छित्ति धारी । नमो वृद्ध तु वृक्ष तु अघ्र हारी ॥
नमो रूपतुं रग तु राग रत्ती । नमो भील तु भाव तु मील मत्ती ॥
॥ छं० ४४ ॥
नमो प्रत्त तुं वृत्त तु वारु बानी । नमो चद चडी सदा चारु मानी ॥छं०४५॥

कवि का होम कर के ब्राह्मण भोजनादि कराना ।

दूहा— करि असतुति ससतुति सुबर । होम हवन हरि नाम ।
सीवन तुला सु माज बर । करि सुभट्ट सुचि काम ॥ छं० ४६ ॥
हय हथ्थी सत दान दिय । रथ रथ्थिय [6]द्रब दिद्ध ॥
हाटक चीर [5]वसुंधरा । कवि घर दीन सु निद्ध ॥ छं० ४७ ॥

द्वारिकापुरी में छाप लगवाने का महात्म्य ।

कवित्त— † जे द्वारामति जाइ । छाप भुज नाहिं दिवावहिं ॥
ते दरबारह चढ्ढि । न्याय हय पिठ्ठ दगावहिं ॥

1. ए० कृ० को०—तूष, तुझ, तुझे । 2. ए० कृ० को०- गिरज्जा ।
★ मो०—नमो ससि पाल अकालंत राई । नमो काल जमस काल नसाई ॥
3. ए० कृ० को०—रंगी । 4. ए० कृ० को०—संगी ।
5. ए० कृ० को०—धर । 6. ए० कृ० को०—अनत अनि ।
† छन्द ४८ और ४९ दोनों मो०—प्रति मे नही है तथा क्षेपक जान पड़ते हैं ।

हरि चरन करि सेव। रहि न उन्मी जुरि करि वर ॥
ते वागुरि अवतरे। अधोमुष [1]मूलत तर वर।
दीनी न जिनहि परदच्छिना। दंडवृत्त करि सुद्ध उर ॥
★ कविचंद कहत ते वृषभ होइ। अरहट जु [2]पेरिरंत नर ॥ छं० ४८ ॥
भद्र भेषनह हुए। आइ गोमत्ति न न्हावै।
तजै न ध्रम सेवरा। होइ करि केस लुचावै ॥
मुष पावन हन करै। वस्त्र धोवै न विवेकं ॥
आसू अंष परंत। करत उपवास अनेकं ॥
दरसन्न देव मानै नहीं। गंगा गया न श्राद्ध क्रम ॥
कविचंद कहत इन कहा गति। किहि मारग लग्गे सु भ्रम ॥ छं० ४९ ॥

द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना।

बंदि देव द्वारिका। करिय अति दान अचग्गल ॥
पट्टन पत्ति भीमंग। मनो चंदन मिलि अग्गर ॥
वास भट्ट गरलंत। लपटि लग्गा मन [3]डाहर ॥
तिन सेवर बदि बद्द। चंद मावस उग्गा बर ॥
तिन नग्गर पहुच्यो चंद कवि। मनों कैलास समाप लहि ॥
उपकंठ महल सागर प्रवल। सघन साह [4]चाहन चलहि ॥ छं० ५० ॥

पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन।

सहर दिष्षि अंषियन। मनहु बद्दर वाहनु दुति ॥
इक चलंत आवंत। इक्क ठलवंत नवनि भति ॥
मन दंतन दंतियन। इला उप्पर इल भारं ॥
बिप भारथ परि दंति। किए एकठ व्यापारं ॥
रजकंब लष दस बीस बहु। दोइ गंजन बाद्दह पन्यो ॥
अन्नेक चीर सूपक फिरंग। मनों मेर कंठै भन्यो ॥ छं० ५१ ॥
घलक विविध धन भार। रतन मुत्तिय द्रिग रंजत ॥
गज भरि लिज्जै कोरि। दान चुक्कत मति मंजत ॥

---

१. ए०—मूमत, को०—मूम्मत।
२. ए० कृ० को०—फिरत। ३. ए० कृ० को०—दाहह।
★ "कविचन्द कहत" ऐसा पाठ कहीं भी नहीं पाया जाता है कथाक्रम, काव्य, भाषा आदि ४८ और ४९ छन्दों की बहुत कुछ भिन्न है अत एव इन दोनों छन्दों के क्षेपक होने का सन्देह है।
४. ए० कृ० को०—वाहन।

मनों गुल फूलिय धरनि । किद्ध नवग्रह ताराइन ॥
लेय न इव हिम दान । रज्ज साला हिम भाइन ॥
भाषन सु भाष कढ़्ढै मुषह । सिर स्वानह तरु धरु धवल ॥
प्रतिबिंब बसहु द्रय मानि मन । कबि मोहन दिष्षीय बल ॥छं० ५२॥

पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहां की सुन्दरी
स्त्रियों की शोभा वर्णन ।

अर्द्धनराच - बजान बज्जयं घनं । सुरा सुरं अनंगनं ॥
सदान सद्द सागरं । समुद्दयं पटा झरं ॥ छं० ५३ ॥
[1]अग्गयंद के गजं बरं । ... ... ॥
हलं मलं हयं गयं । नरा नरं नरिंदयं ॥ छं० ५४ ॥
गिरं वरं [2]सुरा घरं । सबद्ध सागरं पुरं ॥
अनेक रिद्धि मानयं । नवं निधं सु जानयं ॥ छं० ५५ ॥
भरे जु कुंभयं घनं । इला सु पानि गंगनं ॥
असा अनेक कुंडनं । ... ... ॥ छं० ५६ ॥
सरोवरं समानयं । परीम रंभ जानयं ॥
बतक्क सार संमयं । अनेक हंस क्रम्मयं ॥ छं० ५७ ॥
भरे सु नीर कुंभयं । ... ... ॥
अरुढ़ काम रथ्थयं । सु उत्तरी समथ्थय ॥ छं० ५८ ॥

राज्य उपवन में चंद का डेरा दिया जाना ।

दूहा — दिय डेरा कुंदन सुढिग । जे लीने सुरतान ॥
तर ते बर तंबू तनिय । मनंहु कलस के भान ॥ छं० ५९ ॥
गज बंधे गज साल मे । हय बंधे हयसाल ॥
अद्ध कोस बिस्तार अति । भई भीर भर चाल ॥ छं० ६० ॥
किनक आन भोरा कह्यो । दिल्लीपति दानेस ॥
अंबाई बर दान इन । नाम चंद ब्रह्म बेस ॥ छं० ६१ ॥

भीमदेव का कविचंद के पास अपने भाट जगदेव को भेजना ।

कवित्त - कहै भीम जगदेव । जाहु तुम चंद [3]समप्पन ॥
नग मनि मुत्तिय माल । परसपर बाद सऩप्पन ॥
दियो सु हथ्थिय एक । मत्त हय इक ऐराकिय ॥
लै सु जाहु तुम लच्छि । भट्ट पुच्छो [4]मनुहाकिय ॥
बल दुष्ट भट्ट आयो बरै । करि मुक्कौ मग्गह सुपरि ॥
आरंभ डंभ सुनियं बहुत । कर पिछानि मन बेद करि ॥छं० ६२

---

१. ए० कृ० को०—मुगदं बम्मजं गरं ।
२. मो०—सुधा ।
३. मो०—समप्पन ।
४. मो०—मनुहारिय ।

जगदेव का कविचंद से मिलना।

दूहा घर लग्गा दिसि कवि वरा। आयौ भोरा भट्ट॥
  करिय अनूपम रूप दुरि। वेस अचंभम ^१नट्ट॥ छं० ६३॥
  दीवी जाल कुदाल छिग। अंकुस पैरी हथ्थ॥
  पूछे भोरा भट्ट इह। किन समान इह कथ्थ॥ छं० ६४॥

जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना।

कवित्त—सोमेसर किन बधिय। चंद आनौ वह गत्तिय॥
  आबू गढ़ किन लीन। भीम चालुक जुध मत्तिय॥
  इह दरिया को राव। सिद्ध पट्टनवै नदन॥
  इह सु जुद्ध तें बड़ो। गाम धामह गति गमन॥
  कवि जुगति जानि अधिको कहों। बुझ्झो नाहिन मरम गति॥
  इह पंच दीह में जानिहो। इह तुम इह हम जुद्ध मति॥छं० ६५॥

दूहा—मिलिय परसपर रसन रहि। मिलि नाहर इक ठौर॥
  बत्त घत्त भर मत्त मिलि। ^२सइ अछिय द्रब कौर॥ छं० ६६॥
  साज बाज सब फेरि दिय। प्रथ किय किति अपार॥
  जगदेवह भोरा भनिय। ^३काहु सु कवित्त उचार॥ छं० ६७॥

कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना।

सोमेसर किन वधिय। सार संमुह किन सज्जिय॥
कन्ह पीर क्यों सहिय। किद्ध किन आबू कज्जिय॥
इह गुज्जरी नरेस। वह सु दिल्ली विरदा मै।
कूप पीर आदरै। धाम उदरे वृत धामै॥
वागुरिन वृत्त अवतार गनि। भिरि भुअंग भोरा सुबर॥
अवतार लियो कलि उप्परो। कलि प्रगटिय मनु सहस कर॥छं० ६८॥
पुहमि राइ हस्तिनी। च्यार हंडी ^४रंधानिय॥
इक गज्जनी सहाव। सुइ सूंपी तुर ^५तानिय॥
इक्क राइ परमार। सधर सिर वानग जित्यो॥
करन मंद चालुक्क। दई तिहुवार विधुत्तो॥
मेल्ही जु तीन तिहु राइ घर। सु इह बत्त जुग सब करिय॥
इम चन्द कहै जगदेव सुनि। एक राइ तुम उद्धरिय॥ छं० ६९॥

१. ए कृ० को०-सन भट्ट, भट्ट। २. मो०-"सइ अच्छिय द्रब कौर"
३. को०-कवि। ४. ए० कृ० को०-रंधानिग।
५. ए० कृ० को०-सुरतानिय।

दूहा—दस लष्षन भष्षन करै। प्रथु सामत कुमार ।।
भोरा उठि गोरा गयन। तब सिर छत्र उभार ।। छं० ७० ।।
चढ़ि भोरा तुम उप्परें। दरियापति दस लष्ष ।।
[1]खग्ग साहि भंजे सुभर। सित्त सूर पति भष्ष ।। छं० ७१ ।।

जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ।

कवित्त—दइय सीष जगदेव। जाहु तुम लै आओ प्रभु ।।
जद्दिन सूर सामंत। तद्दिन रिष्षो सुरत्ति सुभ ।।
नाम करिग तुम सुथिर। पाव चंचल होइ जैहैं ।।
मेछ मिलै पट पंड। परम [2]उतमंग जुध जुरहै।
रन षुध संपूरन भग्गिहै। जब महिमानी हम करै।।
जगदेव भट्ट मंत्री चवै। चंद भट्ट इम उच्चरै।। छं० ७२ ।।

भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना।

दूहा—आइ सु भोर चंद यह। हय गय नर भर भार ।।
अथ्थ सपन्नो तथ्थ सब। बज्जा वज्जिय मार ।। छं० ७३ ।।
देषिय डेरा भीम नृप। उच्चै थह आवास ।।
गोव पट्टिका बनि गरुअ। देषिय बादर [3]राम ।। छं० ७४ ।।

कविचन्द का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना।

आदर करि आसीस दिय। भुअ भोरा भीमग ।।
सिद्ध दिद्ध जै सिघ तुअ। तिन पहु पुज्जि पवग। छं० ७५ ।।

कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना।

पद्धरी—जिन सिद्ध दिद्ध लिद्धी विषंड। अन्ने[4]क दीप वाहन उतंड ।।
जिन धर मनुष्य पहिरे न चीर। कलि कूट रूप देषन बीर ।। छं० ७६ ।।
गिर धरै कंध उप्पारि नंष। पहिरे सु एक ओट सुपष ।।
प्रति तिरें मच्छ सागर पयाल। बहु लिए रतन अन्ने[5]क माल ।। छं० ७७ ।।
तिन जीति लिए बहु रिद्धि देस। सब दीप मज्झ गुज्जर नरेस ।।
मझि दीप रोम राहब कुसाब। संजाल दीप प्रति काल आव ।। छं० ७८ ।।
गिरवान दीव कंचन सुहीर। तिन मुज्झ दक्खि आसिष्ष बीर ।।
हय मुष्ष आहु चर अब एक। तिन जीत लिए जल जानि देक ।। छं० ७९ ।।

---

१. ए० कृ०—खाग।
२. ए० कृ० को०—उतकंठ।
३. को०—राव० ए०—रान।
४. ए० कृ० को०—जिन।
५. ए० कृ० को—टेक।

बाहन अरोहि लीने असंव । प्रति पान पुरातन लद्ध पंथ ॥
अवतार सेस लीनो अवज्जि । इन भंति चंद्र कवि करि तबज्जि ॥ छं० ८० ॥

कविचन्द और अमर सिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना ।

कवित्त—तब पुच्छिय भीमंग । तुम बरदान सु दिद्धिय ॥
बाद [1]बहि देवंग । सुपन पिष्षिय मन सिद्धिय ॥
चंद देव किय सेव । तिन सु अमरा बुल्लाइय ॥
धूल रथ्थ आरूढ़ । चंद असमान चलाइय ॥
तरवर सुपत्त बैठो तिनह । फिरि न बाद कीनो बलिय ॥
नट्टी जु सषी उपजी अनल । सुरस बंचि नंषो कलिय ॥ छं०८१ ॥

अरिल्ल—जीता वे जीता चंदानं । परि पिष्षिय रष्षिय रंभानं ॥
मुष बुल्लै जै जै चहुआनं । नाटिक करि नच्चै निरवानं ॥छं०८२॥
हूल हुलंत तंबू हल हिलियं । बंदि भ्रत्त है गै पति चलियं ॥
चंद मंत्र पट्टन चल चलियं । मनो अंब ताराइन तुलिय ॥छं०८३॥

भीमदेव का अपने महल को लौट जाना ।

दूहा—आरोहिय असु उप्परह । उड्डी रेन धुर षेह ॥
भोरा चढ़ि सोरा भयौ । गयौ अप्पने ग्रेह ॥ छं० ८४ ॥

कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना ।

प्रथु कागद चंदह पढ़िय । आयो चरि गजनेस ॥
कूच कूच मग चंद चरि । पहुंच्यो घर दानेस ॥ छं० ८५ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके चंद
द्वारिकागमन देव मिलन परस्पर वादजुरन
नाम बयालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४२ ॥



---

[1] मो०—छंद ।

परिशिष्ट १



हिन्दी का आदि कवि

(बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० लिखित)

आज कल प्रायः सभी प्राचीन विषयों के अनुसंधान की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हो रहा है और प्राय सभी पढ़े लिखे लोग इन विषयों में अपना अनुराग प्रगट करते हैं। इसलिये ऐसे अवसर पर हिन्दी भाषा का, जो इस समय उन्नति के चिह्न दिखा रही और अपनी ओर लोगों को आकर्षित कर रही है, कुछ तत्त्वानुसंधान करना कदाचित अनुपयुक्त न हो।

यह बात सर्वसम्मत है कि ईस्वी सन् के २५० वर्ष पहिले भारतवर्ष के उत्तर में एक भाषा बोली जाती थी जिसकी उत्पत्ति प्राचीन काल की वैदिक संस्कृत से हुई और जो समय पाकर नित्य प्रति के व्यवहार की साधारण भाषा हो गई। इस भाषा का नाम प्राकृत था। इसके साथ ही साथ एक दूसरी परिष्कृत और संस्कारयुक्त भाषा का पढ़े लिखे लोगों में प्रचार था। यह संस्कृत नाम से प्रसिद्ध थी और अब तक उसी नाम से प्रसिद्ध है।

इस प्राकृत भाषा में ही राजा अशोक के आज्ञा पत्र जो अबलों चट्टानों पर खुदे हुये पाए जाते हैं लिखे हुए हैं। उनके देखने और अध्ययन करने से यह स्पष्ट विदित होता है कि उस समय प्राकृत भाषा दो मुख्य भागों में विभक्त थी—एक पश्चिमी और दूसरी पूर्वी। पश्चिमी प्राकृत का दूसरा नाम सौरसेनी था। इस से गुर्जरी, अवन्ती, सौरसेनी और महाराष्ट्री इन भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस सौरसेनी से ही हमारी हिन्दी भाषा ने जन्म ग्रहण किया पर यह जन्म किस वर्ष में हुआ इसका निर्णय करना बड़ा कठिन है। शिवसिंह सरोज के अनुसार तो हिन्दी का आदि कवि पुष्य है पर न तो उसके किसी ग्रन्थ का और न उसकी भाषा का ही कहीं कुछ पता लगता है। दूसरा ग्रन्थ खुमान रासा है जो सन् ८३० में लिखा गया था पर इस ग्रन्थ की जो प्रतियाँ अब विद्यमान हैं उनमें महाराणा प्रताप सिंह का भी वृत्तान्त सम्मिलित है जिससे यह मानना पड़ता है कि इसकी भाषा, जैसा कि अब यह वर्तमान है नौवीं शताब्दी की नहीं मानी जा सकती। तीसरा प्रसिद्ध कवि जिसके विषय में हमें कुछ वास्तविक वृत्तान्त विदित है चन्द बरदाई है। इसने एक ऐसी भाषा में ग्रन्थ लिखा है जो प्राकृत के अन्तिम रूप और हिन्दी के आदि रूप से बहुत कुछ मिलती है। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय भाषा का रूपान्तर हो

रहा था। इसके अतिरिक्त प्राकृत का अन्तिम वैयाकरण हेमचन्द्र भी ११५० के लगभग वर्तमान था। इसलिये जहां तक अभी पता चला है चन्द को ही हिन्दी का आदि कवि मानना पड़ता है और हिन्दी भाषा की उत्पत्ति का काल ११ वीं शताब्दी नियत करना पड़ता है। यदि अनुसंधान करने पर और ग्रन्थों का पता लग गया तो इस मत को छोड़ना पड़ेगा परन्तु जब तक यह न हो, इसी सिद्धान्त को स्थिर मानना चाहिए—

अस्तु चन्द बरदाई का नाम हिन्दी और ऐतिहासिक समाज में प्रसिद्ध है—यह लाहोर का रहने वाला था और अन्तिम हिन्दूपति पृथ्वीराज चौहान का राज्य कवि और प्रधान मन्त्री था। ऐसा कहा जाता है कि जिस दिन पृथ्वीराज का जन्म हुआ उसी दिन चन्द भी जनमा और दोनो एक साथ ही परलोक को भी सिधारे।

पृथ्वीराज का नाम भारत वर्ष के इतिहास मे सदा स्मरणीय बना रहेगा। हिन्दू राज्य का अन्त इसी के साथ हुआ। आपस की कलह और परस्पर के बैर विरोध ने भारतवर्ष का नाश किया। पृथ्वीराज सोमेश्वर राज का पुत्र था—सोमेश्वर राज का बिवाह दिल्ली के राजा अनंगपाल की कन्या से हुआ। अनंगपाल को कोई पुत्र न होने के कारण उसने अपने नाती पृथ्वीराज को गोंद लिया। इससे अजमेर और दिल्ली का राज्य एक हो गया। यह बात कन्नौज के राजा जयचन्द को न भाई क्योंकि वह कहता था कि दिल्ली के सिंहासन पर मुझे बैठना चाहिये न कि पृथ्वीराज को। निदान इसी डाह और ईर्षा में पड़ कर जयचन्द ने राजसूय यज्ञ किया और भिन्न-भिन्न स्थानों के राजाओं को यज्ञ का सब कार्य करने के लिये नेवता भेजा। पृथ्वीराज भी निमन्त्रित हुये पर उन्होने जयचन्द के घर आकर दासकृत्व करना स्वीकार नहीं किया। जयचन्द ने अपनी कन्या का स्वयम्बर भी इन दिनो मे रच दिया कि जिसमे उसके पाणिग्रहण की आकांक्षा से अनेक राजे आवें। पृथ्वीराज से और जयचन्द की इस कन्या से आन्तरिक प्रेम था पर इन सब बातो के होते भी पृथ्वीराज उस यज्ञ में न गया। हाँ वह छिपा हुआ कन्नौज पहुंच गया कि जिसमे समय पर अपना काम करके चलता बने। जयचन्द ने जब यह देखा कि सब राजे तो आये पर पृथ्वीराज नही आया तो उसे बड़ा क्रोध आया और उसने पृथ्वीराज की एक स्वर्णमूर्ति बनवा कर द्वार पर रखवा दी। ऐसा करने से उसका आशय यह प्रगट करने का था कि यद्यपि पृथ्वीराज नहीं आया पर उसकी प्रतिष्ठा ऐसी है कि वह आकर इस यज्ञ के समय द्वारपाल का काम करता। निदान जब स्वयम्बर का समय आया तो जयचन्द की कन्या जयमाल लेकर निकली। सब राजाओं को देखते-देखते उसने अन्त में आकर पृथ्वीराज की स्वर्ण प्रतिमा के गले मे माला डाल दी और इस प्रकार अपने गाढ़ तथा गूढ़ प्रेम का पूर्ण परिचय दिया। पृथ्वीराज तो कन्नौज मे पहिले से ही उपस्थित था। झट अवसर पाकर उसी समय वहां का

पहुँचा और घोड़े पर अपनी प्राणप्यारी को बैठा दिल्ली की ओर भाग चला। जयचन्द ने बहुत कुछ उद्योग किया, सेना भी पीछे दौड़ाई पर पृथ्वीराज किसी के हाथ न आया। यह अप्रतिष्ठा जयचन्द न सह सका पर अकेला कुछ कर भी नहीं सकता था इसलिये उसने अफगानिस्तान के अधिपति शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी को कहला भेजा कि यह समय है कि तुम दिल्ली पर आक्रमण करो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। इन यवनों को अपने मनोरथ की सिद्धि के लिये बहाना ढूंढ निकालना कोई बड़ी बात है ही नहीं। शहाबुद्दीन एक नवयौवना सुन्दरी पर आसक्त था पर वह उसे नहीं चाहती थी। शहाबुद्दीन के उसे और उसके प्रेमी को बहुत दिक्क करने पर वे दोनों भाग कर पृथ्वीराज के पास चले आये और उससे शरण माँगी। उस उस समय तक हिन्दुओं मे इतनी वीरता और इतना आतिथ्य-धर्म वर्तमान था कि शरणागत के साथ कभी विश्वासघात न करके सदा उनकी रक्षा करते थे। अब शहाबुद्दीन को यह प्रकट हुआ तो उसने पृथ्वीराज को कहला भेजा कि वह उस स्त्री और उसके प्रेमी को अपने देश से निकाल दे। पृथ्वीराज ने यह उत्तर भेजा कि शरणागत की रक्षा करना मेरा धर्म्म है, उन्हे निकालना तो दूर रहा मैं सदा उनकी रक्षा करूँगा —बस अब क्या था शहाबुद्दीन दिल्ली पर चढ़ दौड़ा। कई युद्ध हुए जिनका वर्णन पढ़ कर इस समय भी हिन्दू-हृदय रोमांचित और वीररस पूर्ण हो जाता है। निदान अन्तिम युद्ध मे पृथ्वीराज पकड़े गए और गोर लेजाकर वहाँ मारे गए। साथ ही चन्द बरदाई भी इस संसार को छोड़ परलोक मे भी अपने स्वामी का साथ देने गया।

इन्हीं कथित ऐतिहासिक घटनाओं को चन्द ने अपने पृथ्वीराज रासो नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में वर्णन किया है —हिन्दी भाषा में यह ग्रन्थ अपनी समता नहीं रखता पर जब इस अमूल्य रत्न पर भी लोग बिना समझे बूझे अथवा ईर्षा या द्वेष से आक्षेप करने बैठते हैं तो हृदय को दुःख होता है। अभी नागरीप्रचारिणी सभा के अधिवेशन में जोधपुर के मुंशी देवीप्रसाद का एक लेख पढ़ा गया था जिसमें उन्होने पृथ्वीराज रासो का खण्डन किया था। मुझे इस बात के लिखते बड़ा दुःख है कि मैं एक बात में भी मुंशी देवीप्रसाद से सहमत नहीं हो सकता। सबसे पहिले इस रासो का खण्डन उदयपुर के कविराजा श्यामलदास जी ने किया था, उनके पीछे तो हिन्दू भेड़ियाधसान की उक्ति के अनुसार सब लोग वही राग अलापने लगे। किसी ने यह न सोचा कि वास्तव मे क्या बात है उसका पता लगावें। अस्तु, कविराजा श्यामलदास जी का कथन था कि रासो मे जितने संवत् दिये हैं सब झूठे है। इसी बात को मुंशी देवी प्रसाद भी कहते हैं। आज इस लेख द्वारा हम यह दिखाया चाहते हैं कि पृथ्वीराज रासो के संवत् झूठे नहीं हैं पर सब ठीक हैं—यह लोगों का भ्रम है कि उनको ऐसा समझते हैं।

पृथ्वीराज का राजत्वकाल तीन मुख्य घटनाओं के लिये प्रसिद्ध है (१) पृथ्वीराज और जयचन्द का युद्ध (२) कालिंजर के परमारदिदेव का पराजय (३) और शहाबुद्दीन और पृथ्वीराज का युद्ध जिसमें पृथ्वीराज बन्दी बने और अन्त में मारे गये। इस स्थान पर यह उचित होगा कि पृथ्वीराज, जयचन्द, परमारदिदेव और शहाबुद्दीन का समय ठीक-ठीक जान लिया जाय और इस बात का निर्णय दान पत्रों और शिलालेखों से हो तो अति ही उत्तम है क्योंकि इनसे बढ़ कर दूसरा कोई विश्वासदायक मार्ग इस बात के जानने का नहीं है।

(१) अब तक ऐसे चार दानपत्रों और शिलालेखों का पता लगता है जिन पर पृथ्वीराज का नाम पाया जाता है। इनका समय विक्रम संवत १२२४ और १२४४ के बीच मे है।

(२) जयचन्द के सम्बन्ध के १२ दान पत्रों का पता लगा है इनमें दो पर जो विक्रम संवत १२२४ और १२२५ के हैं इसे युवराज करके लिखा है। शेष १० पर महाराजाधिराज जयचन्द यह नाम लिखा है। इनका समय विक्रम संवत १२२६ से १२४३ के बीच में है।

(३) कालिंजर के राजा परमारदिदेवा के जिनको पृथ्वीराज ने पराजित किया था, ६ दानपत्र और शिलालेख वर्तमान हैं, जिनका समय विक्रम संवत १२२३ से १२५८ तक है। इनमें से एक पर जो विक्रम संवत १२३९ का खुदा हुआ है पृथ्वीराज और परमारदिदेव के युद्ध का वर्णन है।

(४) शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी का समय फारसी के इतिहासों से सिद्ध है और उसके विषय में किसी का मतभेद नहीं है। मेजर रेवर्टी "तपकाते नासरी" के अनुवाद के पृष्ठ ४५६ में लिखते है कि "५८७ हिजरी (ईस्वी ११९०) में उन सब ग्रन्थकारों के अनुसार जिनसे मैं उद्धृत कर रहा हूं तथा अन्य अनेक ग्रंथकारों के अनुसार जिनमें इस ग्रंथ का कर्त्ता भी सम्मिलित है, राय पिथोरा के साथ (शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी का) पहिला युद्ध और उसका दूसरा युद्ध जिसमें राय पिथोरा पराजित हुआ और (मुसलमान लेखकों के अनुसार) मारा गया निःसन्देह हिजरी सन् ५८८ (ईस्वी ११९१ विक्रम १२४८) में हुआ।

ऊपर जिन सन् संवतों का वर्णन किया जा चुका है वे पृथ्वीराज, जयचन्द और परमारदिदेव के दानपत्रों और शिलालेखों से लिए गए हैं और एक दूसरे को शुद्ध और प्रामाणिक सिद्ध करते हैं। निदान इन सबसे अब यह सिद्धान्त निकलता है कि पृथ्वीराज विक्रम तेरहवीं शताब्दी के प्रथमार्द्ध और ईस्वी बारहवीं शताब्दी के द्वितीयार्द्ध में जीवित था और उसका अन्तिम युद्ध विक्रम संवत १२४८ (ईस्वी ११९१) में हुआ।

जिन शिलालेखों का ऊपर उल्लेख हो चुका है उनके अतिरिक्त अर्णोराज और सोमेश्वर के भी शिलालेख और दानपत्रादि मिलते हैं जो ऊपर दिए हुए सन् संवतों की प्रामाणिकता और ऐतिहासिक सत्यता को सिद्ध करते हैं।

अब हम रासे के सन संवतों पर विचार करेंगे। चार भिन्न-भिन्न संवतों पर विचार करने से यह स्पष्ट विदित हो जायगा कि वे अन्य इतिहासों में दिए हुए संवतों से कहां तक मिलते हैं। चंद ने पृथ्वीराज का जन्म काल संवत ११११ में, दिल्ली गोद जाना ११२२ में, कन्नौज जाना ११५१ में और शहाबुद्दीन के साथ युद्ध ११५८ में लिखता है। तबकाते नासरी में अन्तिम युद्ध का समय, जिसमें पृथ्वीराज पराजित हुआ और बन्दी बनाया गया, हिजरी ५८८ दिया है। अब यदि १२४८ में से ११५८ बाकी निकाल दिया जाय तो ९० बाकी बचता है। इसके अतिरिक्त इन चार भिन्न-भिन्न अवसरों पर पृथ्वीराज के वयक्रम का हम ध्यान करें तो यह सिद्ध होता है कि उपरोक्त घटनाएं १२०५, १२१२, १२४१ और १२४८ में हुई न कि ११११, ११२२, ११५१ और ११५८ में जैसा कि रासो में किया है—यह भेद नीचे दिए विवरण से स्पष्ट हो जायगा—

घटनाएं	रासे का संवत्	पृथ्वीराज की उस समय वय	अन्य पुस्तकों का ठीक संवत्	अन्तर
जन्म	१११५-१६	●	१२०५-०६	९०-९१
गोद जाना	११२२-२३	७	१२१२-१३	९०-९१
कन्नौज गमन	११५१-५२	३६	१२४१-४२	९०-९१
अन्तिम युद्ध	११५८-५९	४३	१२४८-४९	९०-९१

अब यदि प्रत्येक घटना के संवत् मे पृथ्वीराज के जीवन के शेष वर्ष जोड़ दिये जायं तो सबका समय १२४८ हो जाता है। जो कुछ ऊपर लिखा जा चुका है उससे स्पष्ट है कि चन्द ने अपनी पुस्तक में ९०-९१ की भूल की है परन्तु सब स्थानों में समभेद का रहना भूल की गिनती में नहीं आ सकता। चन्द ने ९० वर्ष का अन्तर अपने ग्रन्थ की वर्णित समस्त घटनाओं में क्यों रखा इसका कोई उपयुक्त कारण अवश्य होगा।

हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों के अनुसंधान में मुझे पण्डित मोहनलाल विष्णु लाल पंड्या से ९ प्राचीन परवानों और पट्टों की नकल मिली जिनका सम्बन्ध रासो में वर्णित घटनाओं से है। हम पहिले इन परवानों और पट्टों की नकल और उनका अनुवाद देकर तब इनके विषय में कुछ कहेंगे।

(१)

(नकल)

स्वस्ती श्री श्री चीत्रकोट महाराजाधीराज तपोराज श्री श्री रावल जी श्री समरसी जी बचनातु दाअमा आचारज ठाकुर रूसीकेष कस्य थाने दलीसु डायजे लाया अणी राज में ओषद थारी लेवेगा ओषद ऊपरे माल की थाकी है जो जनना में थारा बंसरा टाल वो दुजो आवेगा नहीं ओर थारी बेठक दली में ही जी प्रमाणे परधान बरोबर कारण रेवेगा ओर थारा बंस क सपून कपूत वेगा जी ने गाम गोगो अणो राज में थाय्या पाय्या जायगा और थारा चाकर घोड़ा को नामो कोठार सू मला जायेगा ओर थूं जमाखातरी रीजो मोई में राजथान बाद जो अणी परवाना री कोई उलंघण करेगा जो ने श्री एक लींग जी की आण है। दुवे पंचोली जानकी दास सं० ११३९ काती बीद ३।

(अनुवाद)

स्वस्ति श्री चितौड़ से महाराजाधिराज तपेराज श्री रावल समर सिंह जी की आज्ञा से आचारज ठाकुर ऋषिकेश को लिखा। हम तुम्हें दिल्ली से दहेज में लाए। इस राज में तुम्हारी औषधि ली जायगी और राज्य के औषधि विभाग पर तुम्हारा अधिकार रहेगा। जनाने में तुम्हारे बंस के लोगों को छोड़ दूसरा न जायगा। दर्बार में तुम्हारा स्थान, जैसा कि दिल्ली में मंत्री के निकट था, रहेगा, तुम्हारे वंशज चाहे कपूत या सपूत हों गांव और घोड़ा पावेंगे और उन्हें भोगेंगे और तुम्हारे नौकरों और घोड़ों के लिये राज से प्रबन्ध होगा। निश्चय रक्खो, मोई ग्राम में घर बनवाओ। इस परवाने को कोई उल्लंघन न करे क्योंकि इसमें श्री एकलिंग जी की आन है। दुबे पंचोली जानकी दास द्वारा संवत ११३९ मिति कार्तिक बदि ३ को लिखा गया।

(२)

स्वती श्री उदैपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री भीमसींघ जी आदेसातु आचारज संबुसीव सदासीव राव स्य अप्रं थां तीरे महारावल जी श्री समरसी जी की सही को पंडानो पंचोली जानकी दास के दुवे कीय्यों संवत ११३९ काती बीद ३ की मती को आचारज ठाकुर रुसीकेस का नाम को दली की राजा प्रथीराजो

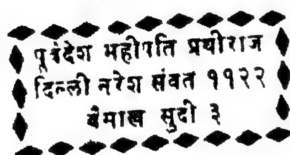
कना यी हाथवे लाया जीरो परवानो के बगस्यो जो मे लीषी है के अणी राज में औषद थारो लेवेगा ओषद ऊपरे मालकी थाकी है और जनाना में थारा बंसरा टाल ओ दुजो आवेगा नहीं और थारी बेठक दली मे ही जी प्रमाणे परधान बरोबर कारग रेवेगा और थारा बंस का सपुत कपुत वेगा जीने गाम गोडी अणी राज मे पावता पावगा जायेगा और थारा चाकर गोडा को गामो कोठार मों मलगा जावेगा और थु जवापावो रेजो मोई मे रावयान बाद जी अणी प्रवाना हे कोई ऊलंगण करेगा जी ने श्री येक लिंग जी की आण है.......
परवानगो पाडेरी येकलीग दास संमत १८५८ वर्षे जेठ सुद ३ गुरे।

(अनुवाद)

स्वस्ति श्री उदयपुर सुथानि महाराजाधिराज श्री भीमसिंह जी की आज्ञा मे सदासिव के पुत्र आचारज पत्रुरीव को लिखा। आगे तुम्हारे पास महारावल जी श्री समरसी जी की सही का एक परवाना है जो पत्रोजो बालकी दास का संवत १९३९ कार्तिक वदी ३ का आचारज ऋषीकेश के नाम का लिखा है जिसमें लिखा है कि दिल्ली के राजा पृथ्वीराज के यहां से तुम्हें दहेज मे लाए। यह परवाना तुम्हारे पास था। बहुत जीर्ण हो जाने मे एक नया हमने दिया। उसने लिखा है कि इस राज मे तुम्हारी औषधि ली जायगी। औषधिविभाग पर तुम्हारी मालकी रहेगी। जनाने मे तुम्हारे बंसवालों की टाल और कोई नहीं जायेगा—तुम्हारी बेठक जैसी कि दिल्ली मे मंत्री के निकट थी, यहां रहेगी और तुम्हारे कपूत या सपूत वंश वाले गांव और घोडा पावे और भोगेंगे और तुम्हारे नौकर और घोडे के लिये राज मे प्रबन्ध होगा। तुम जवाबानरो रखना। मोई ग्राम मे घर बनवाओ। कोई इस परवाने का उल्लंघन न करे क्योंकि इसमें एकलिंग जी की आन है।

पानगो एकलिंग दास द्वारा संवत १८५८ जेठ सुदी ३ बृहस्पति वार को दिया गया।

(२)



(सही)

श्री श्री दलीनं मंडूनं राजानं धीराजनं हटुमयानं राजप्रानं संभरी नरेश पुरब दली तषत श्री श्री महानं राजं धीराजनं श्री प्रथीराजी सुमयानं आचारज बरीकेश ब्रुंवंवनं अग्रन तम को बाह श्री प्रभु कवरन की साथ हतलेवे बीमकोठ

को दीया तुम्हारा हक चहुआन के रव में साबीत हे तुमारी ओलाद का सपुत कपुत होगा जो चहान की पील आवेगा जीन की भाई सी तरे समजेगा तुमारा कारंम नही घटेगा तुम जमधार्च से बाई के आ तुमरी ओ हुवे श्री मुख दुवे पंचोली हडमंराअ के संमत ११४३ बषे आसाड सुद १३ ।

(अनुवाद)

श्री श्री दिल्ली स्थान से जो महाराजाधिराज पूर्वीय भारत वर्ष के साकम्भरी राजाओं की राजधानी है, श्री महाराजाधिराज पृथ्वीराज की आज्ञा से आचारज ऋषिकेश धन्वन्तरि को। आगे दहेज में तुमको श्री पृथु कुंअरि के साथ चित्रकोट (चितौर) दिया। चहुआन के राज्य में तुम्हारा हक साबित है और तुम्हारे वंशजों में से कपूत अथवा सपूत जो चहुवानों के द्वार आवेगा वह भाई माना जायगा। तुम्हारी प्रतिष्ठा नहीं घटेगी जमाखात्री से तुम बाई के यहां रहना। श्रीमुख दुवे पंचोली हडमंराय द्वारा संवत ११४३ मिती आषाढ़ सुदी १३ को दिया गया।

(४)

श्री रामहरी

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆
॥ श्री ॥
पूर्वदेश महीपति प्रथीराज दली
नरेस संवत ११२२ बैसाख सुदी ३
◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

(सही)

श्री श्री दलीन महाराजनं घीराजं श्री श्री प्रथोराजंनं की आगना पोछे आचारज भ० रुषी केस ने चत्रकोट पोछे आहा श्री काकाजीनं महा......हुई छै सो थाम रुको बांचने अठा हाजर बीजे संमत ११४५ चेत बीद ७ ।

(अनुवाद)

श्री श्री दिल्ली महाराजाधिराज महाराज श्री श्री पृथ्वीराज की आज्ञा आचारज भाई ऋषिकेश को चित्रकोट (चितौड) पहुंचे। यहां काकाजी को महा...... हुआ है सो इस खास रुक्के को बांचते यहां चले आओ। संवत ११४५ मिती चेत बदी ७ ।

(५)

श्री हरी एकलिंगी जयति

श्री श्री चीत्रकोट बाई साहब श्री प्रथु कुंवर बाई का चारण गाम मोड़ी आचारज भायी रुखीकेस जी बांच जो अप्रन श्री दली सुं थाही लंमरी राजी आ आ है जो श्री दलीसुं श्री हजुर को श्री खास रुका आयो है जी मारो श्री

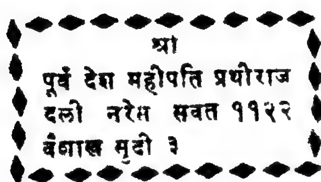
पधारवा की सीखवी है ने दली काका जी रे खेद है जो कागद बाचत चलत आव जो थाने मा आगे आंणो पडेगा थांके वास्ते डाक बेठी है श्री हजूर ·· हुकम बी वेगीयो है जो ये ताकीद सू आव जो थारे संदर को ब्याव का मारथ अबार करांगा दली सु आ पीछ करागा ओ— रथे सवेरे दन अठे आंथसी संवत ११··· चेत सुदी १३ ।

(अनुवाद)

श्री श्री चित्रकोट (चित्तौर) से बाई साहिबा श्री प्रथा कुंवर बाई का बारण (प्रणाम) आचारज भाई ऋषिकेश जी मोई गाम मे बांचे। आगे दिल्ली से भाई श्री लंगरी राई आए है और दिल्ली से श्री हजूर का भी खास रुका आया है और हमारे भी दिल्ली जाने की आज्ञा हो गई है। दिल्ली मे काका जी को खेद है सो कागज बाचते चले आओ क्योंकि तुम्हे हमारे आगे जाना पड़ेगा। तुम्हारे लिये डाक बैठी है। श्री हजूर का भी हुकुम हो गया है इसलिये ताकीद से आओ। जो तुम्हारे मन्दिर की प्रतिष्ठा का मुहुर्त है तो दिल्ली से आने पर करेंगे। ऐसा करो कि सवेरा वहां हो और संध्या यहा। सवत ११......चैत सुदी १३।

(६)

श्री राम हरी



सही

श्री श्री दली महाराजं धीराजन हिंदुसथानं राजधानं संभरी नरेस पुरब दली तखत श्री श्री महानं राजं धीराजंनं श्री प्रथीराजो सुसाथनं आचारज हवीकेष धनंत्रि अप्रन तमने काका जीन के दुवा की आराम थओ जीन के रीजं मे राकड रुपीआ ५००० तुमरे अहाती गोडे का बरचा सीवाअ आवेंगे षजानं मे इनं को कोही माफ करेंगे। जीन को नेर को के अधंकारी होवेंगे सही दुवे हुकम के हडमंत राअ संमत ११४५ वर्षे असाड १३ सुदी।

(अनुवाद)

श्री श्री दिल्ली स्थान मे जो महाराजाधिराज पूर्वीय भारतवर्ष के साकम्भरी राजाओं की राजधानी है, श्री महाराजाधिराज श्री पृथ्वीराज की आज्ञा से आचारज ऋषीकेश धन्वन्तरि को-आगे तुमने काका जी को दवा से आराम किया जिसमे

पुरस्कार में ५०००) रु० नगद और हाथी घोड़ा खरचे सहित खजाने से जायगा। जो कोई इसे न होने देगा वह नरक का अधिकारी होगा। हनुमंतराय के आज्ञा से संवत ११४५ मिती आषाढ़ सुदी १३ को लिखा।

(७)

सही

श्री श्री चीत्रकोट महाराजधीराज तपेराज श्री रावर जी श्री श्री समरसी जी वचनातु दाअमा आचारज ठाकुर रसीकेस कस्य गाम मोही रो खेडो वाले मभा को दो लोग भोग सुदीया आवा दानकर जो जमा थाची सो आबां दान करजे थारे हे दुबे धरा मुक्त नाथ''' संमत ११४५ जेठ सुदी १३।

(अनुवाद)

श्री श्री चित्रकोट महाराजाधिराज तपे राज श्री रावल जी श्री श्री समरसी जी की आज्ञा से दायमा आचारज ठाकुर ऋषिकेश को गांव मोई का खेडा तुमको दान में दिया जाता है उसे बसाओ निस्सन्देह उसे बसाओ। वह तुम्हारा है। दुबे धवा मुक्तनाथ द्वारा संवत ११४५ जेठ सुदी १३ को लिखा गया।

(८)

चीत्रकोट महा सुभ सुथाने श्री''''''मी पास तीरे मामाब चबाण श्री परथु'' ''की आसीस बाचजो श्री दली का''''''सु अप्रन अठे श्री हजुर माआसुद १२ क'''गाडां में वेकु पदारी आने आचारज सीकेस बी श्री हजुर की लार काम आ आ''''''श्री हजुर की लारे जावागा वेकुट ने पछे''''''सीकेस रा मनवा की चात्री राखजो मारा''''''रा का मनवा की चात्री राख जो ही मारा थारी''''''नव मारा जीवका चाकर हे होवासु राज''' ''हरामखोर नीवेगा दुवे नदुरराव के''''—११५७ माह्रा सुद १२ दसगत रामरान बेन''''''रका भं—मा साब श्री—पुत्राही का वेकुट''''''

यह पत्र बहुत ही जीर्ण हो गया और इससे स्पष्ट नहीं पढ़ा जा सकता। बड़ी कठिनता से जो कुछ ऊपर दिया गया है वह पढ़ा जा सका है। ऐसा जान पड़ता है कि इस पत्र को महारानी पृथा बाई ने अपने पुत्र को चितौर लिखा था—इसमें उन्होंने निज पति के परलोकवास और साथ ही आचारज ऋषिकेश की मृत्यु की भी सूचना देकर यह लिखा था कि उन चार घरों के लोगों को जो दिल्ली से दहेज में उनके साथ आए थे प्रतिष्ठा से रखना क्योंकि वे राज्य के विश्वासी नौकर होंगे। महारानी ने निजपति के साथ स्वर्ग जाने की इच्छा से सती होने की भी सूचना इसी पत्र में दी थी—इस पट्टे को महाराज नरसिंह ने संवत् १७५१ में फिर से नयाकर दे दिया था जिसकी नकल आगे दी है।

(९)

श्री गणेशप्रसादात् श्री रामो जयति । श्री अकलीग प्रसादात् ।

सही

स्वस्ति श्री ऊदैपुर सुथाने महाराजा धीराजमहाराणा श्री जैसीघ जी आदेसात् आचारज अषेराम रगुनाथ रा कस्य ३ अप्र थारे पास मा साहेब चवाण जी श्री प्रथुबाई बेकुंट रावल जी श्री समरसी जी दली काम आया जरी सारा पदारता श्री चीत्रकोट लषी के आचारज भाई रुसीकेस ता रावली श्री हजुर की लोर कामा आध्या ने पाछे मारा च्यारी गरा का मनषा की षात्री राष जोडी मारा जीव का चाकर है जो थासु कही हराम षोर नीवेगा । मो लष्यो हो जो देपेन नवी करा देवाणो जो थे अणी राज का स्यामषोर हो दुवे पंचोली जगमोहन संमत १७५१ वर्ष माहा वीद १० ।

(अनुवाद)

स्वस्ति श्री उदयपुर शुभ स्थान से महाराजाधिराज महाराणा श्री जयसिंह जी की आज्ञा से रघुनाथ के पुत्र आचारज अषेराम को लिखा । आगे तुम्हारे पास माजी श्री चौहान पृथू बाई जी का (एक परवाना) है जिसमे उन्होंने श्री रावल श्री समरसी जी के दिल्ली काम आने पर चित्रकोट लिखा था कि आचारज भाई ऋषीकेश भी रावल श्री हजूर जी के साथ काम आया । हमारे पीछे हमारे चारों घर के लोगों को खातिर रखना क्योंकि वे हमारे जीवन के चाकर हैं और तुम्हें कभी धोखा न देंगे । यह उसमे लिखा था सो नया करके दिया । अब तुम इस राज्य के स्यामखोर (हरामखोर का उलटा हलाल खोर) होवो । दुवे पचोली जगमोहन दास के द्वारा सवत १७५१ माघ बदी १० को दिया गया ।

अब इन पट्टो और परवानो[१] से जिनकी नकल और जिनका अनुवाद ऊपर दिया जा चुका है और जिनका समय ११३५ से १९५७ के बीच में है, निम्नलिखित बातें प्रमाणित होती हैं ।

(१) ऋषीकेश कोई बडा वैद्य था जिसका बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध मेवार और दिल्ली के राज घरानो मे था और जो पृथा बाई के विवाह समय चित्तोर

---

(१) इनके लिये मैं पण्डित माह 'लाल विष्णु लाल पड्या' का अत्यन्त अनुगृहीत हूँ । इन सब परवानों को उन्होंने उदयपुर मे ऋषीकेश के वंशजो के अधिकार में पाया और उनकी फोटो ले ली । इससे मैं इनको यहां प्रकाशित करने मे समर्थ हुआ । मुझे इस बात के लिखने मे विशेष सन्तोष होता है कि पंड्या जी की सहायता ही से मैं इनके पढ़ने और अनुवाद करने मे भी समर्थ हुआ ।

के महाराज श्री रावल समरसी जी को दहेज में दिया गया था। यह घटना इन परवानों के अनुसार संवत ११४५ में हुई...महारानी पृथाबाई ने जो अन्तिम पत्र अपने पुत्र को लिखा था उसमें उन चार घर के लोगों का उल्लेख था जो उनके साथ चित्तौर से आए थे और जिन्हें सम्मान पूर्वक रखने के लिये उसने अपने पुत्र को लिखा था। "पृथ्वीराज रासो" के "पृथा विवाह समो" के निम्न लिखित उद्धृत खंड से यह कथा स्पष्ट हो जायगी।

श्रीपत साहु सुजान देश थम्भह संग दिन्नो

अरु प्रोहित गुरुराम ताहि अग्या नृप किन्नो

रिषीकेष दिय ब्रह्म ताहि अनंतर पष सोहे

चंद सुतन कवि जल्ह असुर सुर नर मन मोहे

कविचंद कहे वरदाय वर फिर सुराज अग्या करिय

करि जोर कह्यो पीथल नृपति तब रावर सत भांवर फिरिय

निगम बोध बोतम रिषि, थिर जेहि बल्ली थान

दास भगवती नाम दे पृथी राज चौहान

रिषीकेस अरु राम रिषि बहु विधि देकर मान

पृथा कुंअरि परनाइ के संग चलाये जान"

इससे अब यह स्पष्ट है कि जिन घरों का वर्णन पृथा बाई ने अपने पत्र में किया है उनके विषय में चन्द का कथन है कि वे दहेज में रावल समरसिंह को दिए गए थे। श्रीपत साह "देपुरा महाजन" वंश का, गुरुराम प्रोहित "सनावढ़ ब्राह्मणों" का, "रीषीकेश", अचारज (दायमा) ब्राह्मणों का और चन्द का ज्येष्ठ पुत्र जल्ह "राजोरा राय वंश" का आदि पुरुष था। ये चारो लोग पृथाबाई के साथ चित्तोर गए और अब तक इनके वंशजों की मेवार दर्बार में विशेष प्रतिष्ठा है।

(२) पृथीराज का अन्तिम युद्ध जिसमें चित्तोर के रावल समर सिंह (या समरसी) मारे गए संवत ११५७ के माघ शुक्ल पक्ष में हुआ था जो समय चन्द के दिए हुए समय से अर्थात ११५८ से मिलता है।

(३) कविराज श्यामलदास जी और उनके अनुयायी लोगों के न मानने पर भी यह बात सिद्ध है कि पृथाबाई का विवाह समरसिंह के साथ हुआ—जो वंशवृत्त मेवार वंश का उस दर्बार से प्रगट किया जाता है वह ठीक नहीं माना जा सकता। मुहम्मद अबदुल्ला लिखित "तारीख तुहफे राजस्थान" में जो मेवार दर्बार की ओर से छापी गई थी और जिसे स्वयं महाराणा और कविराजा

श्यामलदास जी ने सुना और स्वीकार किया था (उसकी भूमिका देखो) उदयपुर वंश की नामावली है जिसमे से दो नाम जान बूझ कर निकाल दिए गए हैं— एक तो उदित सिंह का और दूसरे बनवीर का। यद्यपि आगे चल कर यह लिखा गया है कि वे दोनो उदयपुर की गद्दी पर बैठे थे। इस स्पष्ट पूर्वापर विरोध का कारण भी खोजने पर उसी ग्रन्थ से मिल सकता है क्योंकि उसमे लिखा है कि इन दोनों मे से एक तो दासीपुत्र था और दूसरे ने अपनी कन्या को एक मुसलमान को देने को कहा था। अतएव एक ऐसे वंश ने जो बहुत दिनों से राजपूताने के सब वंशो मे प्रसिद्ध चला आता है यह उचित न समझा कि ऐसे दो नाम उनके वंश में बने रहे। जिनके कारण उनके निर्मल यश मे कलंक लगता हो। बस फिर क्या था झट कलम से दो नाम काट दिए गए। यद्यपि वंश के विचार से यह कार्य किसी प्रकार से प्रशंसनीय हो सकता है पर इतिहास के लिये इससे बढ़ कर दूसरा कोई घोर पाप नही है। इस बात से यह स्पष्ट है कि जो वंश इस प्रकार का कार्य कर सकता है वह यदि यह बात कहे कि पृथाबाई का विवाह समर सिंह के साथ हुआ ही नही और समर सिंह पृथ्वीराज की पताका के अधीन होकर न लड़े और न मारे गए तो इतिहासवेत्ता विज्ञ पाठक गण उन पत्रों और वर्णनो पर जो ऊपर दिए जा चुके हैं ध्यान देकर स्वयं विचार और न्याय कर सकते हैं कि यह बात कहा तक सत्य मानी जा सकती है।

इस सम्बन्ध में एक ऐतिहासिक घटना ऐसी है जिस पर विचार कर लेना आवश्यक है। यदि समरसी पृथ्वीराज के समकालीन थे तो उनके पुत्र रतनसी का युद्ध अलाउद्दीन खिलजी के साथ १३०२-३ ई० मे कैसे हुआ। सादडी के जैनी शिलालेख मे जिस पर १४९६ विक्रम संवत खुदा है और जो राणा कुम्भ करन के राजत्व का काल है, वाप्पारावल से लेकर कुम्भकरन तक के राजाओं की नामावली दी है। उसमे लिखा है कि भुवन सिंह ने जिसका नाम समरसिंह के पीछे दिया है, अलाउद्दीन को हराया। तुहर्फ राजस्थान ने जो नामावली दी है उसमें समर सिंह और भुवनसिंह के बीच मे ९ राजाओं के नाम और दिए हैं—वे हैं (१) समरसी (२) रत्नसी (३) करनसी (४) राहुत (५) नरपत (६) दिनकर (७) जसकरण (८) नागपाल (९) पूर्णपाल (१०) पृथ्वीपाल (११) भुवनसिंह। भुवनसिंह के पीछे भीमसिंह प्रथम, जै सिंह प्रथम और लक्ष्मण सिंह ये तीन नाम दिए हैं। कर्नल टाड लिखते हैं कि राहुप से लक्ष्मणसिंह तक के बीच मे नो राजे चित्तौर की गद्दी पर बैठे और थोड़े थोड़े दिनों तक राज करके सब सुरधाम को सिधारे। इन राजाओं मे से ६ लड़ाई मे मारे गए। इन सभों ने क्या को मुसलमानों से रक्षित रखने के लिये अपने प्राण दिए। पृथ्वीपाल ने इन मुसलमानों को डरा दिया और अलाउद्दीन के पूर्व मे अपने जघन्य कर्म से पराङ्मुख रहे।

अब इससे भुवनसिंह का समय १२८० ई० के लगभग होता है और लक्ष्मणसेन का उससे कुछ पीछे इससे यह सम्भव जान पड़ता है कि वह रत्नसी नहीं था जिसकी स्त्री प्रसिद्ध सुन्दरी पद्मावती के लिये अलाउद्दीन ने चित्तौर का नाश किया बरन वह लक्ष्मणसिंह था जिसका नाम अब तक इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध चला आता है। कविराजा श्यामलदासजी जिस शिलालेख को अपने पक्ष में उपस्थित करते हैं वह ठीक नहीं माना जा सकता। पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या उसकी पोल भली भाँति खोल चुके हैं और मैं इन शिलालेखों पर पूर्णतया विश्वास कदापि नहीं कर सकता जब तक उनकी फोटो न छापी जाय क्यों कि ऐसा कहा जाता है कि किसी अन्ध पक्षपाती महाशय ने उनमें २ के स्थान पर ३ बनवा दिया है।

(४) पृथ्वीराज के परवानों पर जो मोहर है उससे उसके सिंहासन पर बैठाने का समय ११२२ विदित होता है। यह भी चन्द के दिए हुए समय से मिलता है। रासो के "दिल्ली दान समो" मे यह लिखा है—

एकादस संवत: अट्ठ अग्ग हत तीस भने।

प्रथ सुरित तहां हेम सुद्ध मर्गसिर सुमास गने।

सेत पक्ख पंचमीय सकल गुर पूरन।

सुदि मृगसिर सम इन्द जोग सद्दहि सिद्ध चूरन।

पहु अनंगपाल अप्पिय पहुमि। पुत्तिय पुत्त पवित्त मन।

छंड्यो सुमोह सुख तन बदनि। पत्ती बद्री सजे सरन।

तो अब चन्द के अनुसार अनंगपाल ने राजसिंहासन अपने दोहित्र को शुद्धमन से ११३०-८=११२२ की मार्गसीर्ष सुदी ५ को दिया। इससे यह सम्भव है कि पृथ्वीराज गद्दी पर बैशाख ३ संवत ११२२ को बैठा हो।

इन पर्वानों और चिट्ठियों की सत्यता मे किसी प्रकार का सन्देह नही किया जा सकता क्योंकि वे एक दूसरे की सत्यता को प्रमाणित करते है। कुछ फारसी शब्दों के प्रयोग से सन्देह हो सकता है पर यह जान लेने से संदेह का कारण दूर हो जाता है कि पृथाबाई दिल्ली से आई थी जहां एक सेना मुसल्मानी योद्धाओं की सदा रहती थी और जहां लाहौर के मुसल्मानी दर्बार से दूतों का आना जाना सदा लगा रहता था क्योंकि दोनों राज्यों की सीमा मिली हुई थी और पृथ्वीराज के १०० वर्ष पहिले से मुसल्मानी राज्य पंजाब में स्थापित हो चुका था। इस अवस्था में क्या यह आश्चर्य की बात है कि दिल्ली के रहने वालों की भाषा में कुछ फारसी के शब्द मिल गए हों?

जो कुछ ऊपर कहा जा चुका है उससे स्पष्ट है कि चन्द ने निज "रासो" में जो सब सन संवत दिये हैं वे अशुद्ध नहीं हैं वरन् वे उस अब्द से ठीक मिलते हैं जो उस समय दर्बार के कागजों मे प्रचलित था और जो प्रचलित विक्रम संवत् से ९०-९१ पूर्व था। इसी अब्द से हम यह बात स्पष्ट सिद्ध कर सकते हैं कि शिलालेख और परवनि तथा पट्टे दोनों सत्य हैं। पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या का कथन है कि इस नवीन संवत् का आभास वे आदि पर्व के ३५६ वें रूपक (१) में ही पाते हैं जिसमें चन्द लिखता है कि जैसे युधिष्ठर के ११०० वर्ष पीछे विक्रम का संवत चला वैसे विक्रम के ११०० वर्ष पीछे मैं पृथ्वीराज का संवत चलाता हूं। आदि पर्व के ३५५ वें रूपक में पुनः चन्द इस नवीन अब्द को स्पष्ट कर देता है (२)। अब तक मेवाड़ मे यह बात प्रसिद्ध है कि पूर्वकाल मे दो विक्रम संवत थे। कर्नल टाड भी हारावती के वर्णन मे इस बात का उल्लेख करते हैं। अब तक "आनन्द" शब्द का अर्थ "आनन्द" "शुभ" लगाया जाता था परन्तु पण्डित मोहनलाल जी का कथन है कि इसका अर्थ है "नन्द रहित" और नन्द के अर्थ नौ के हैं क्योंकि "नव नन्दा प्रकीर्तिताः" यह भागवत मे लिखा है। अ का अर्थ है शून्य—अंकानां वामतो गति" के अनुसार अब आनन्द का अर्थ हुआ है ९० और इसे घटा देने से चन्द का दिया हुआ समय सब ठीक मिल जाता है। दूसरा अर्थ अनन्द का यह है। मौर्य वंश का आदि राजा चन्द्रगुप्त हुआ जो महानन्द का पुत्र था और इस वंश के राजा नन्दवंशीय कहलाते थे। मेवाड़ के राजपूतों ने जानबूझ कर इन राजाओं के काल की गणना न करने के उद्देश्य से प्रचलित विक्रम संवत में से उनका राजत्वकाल घटा दिया और इस "अनन्द विक्रम संवत" का प्रचार किया हो। इन अर्थों के अतिरिक्त सबसे उपयुक्त एक दूसरी ही बात सूझती है जिसे मैं यहां लिख देना उचित समझता हूं। यह बात इतिहास मे प्रसिद्ध है कि कनौज का राजा जयचन्द अपने को अंगपाल का उत्तराधिकारी बताता था और कहता था कि गद्दी पर बैठने का अधिकार मेरा है और न कि पृथ्वीराज का। इस कारण पृथ्वीराज और जयचन्द दोनों मे परस्पर विवाद रहा और अन्त मे दोनों का नाश हुआ। कनौज के राजाओं ने जयचन्द तक केवल ९०-९१ वर्ष राज्य किया था अतएव आश्चर्य नहीं कि उनके राजत्वकाल को न गिनने के प्रयोजन से और उन्हे नन्दवंशियो के तुल्य मानने के अभिप्राय से इस नवीन संवत का प्रचार किया गया हो (३)।

(१) एकादस सै पंच दह। विक्रम साक अनन्द
तिहि रिपु जयपुर हरन को। भय प्रिथिराज नरिंद

(२) एकादस से पंचदह। विक्रम जिमि ध्रम सुत। त्रतिय साक प्रथिराज को
लिख्यो विप्र गुन गुप्त।

(३) इस विचित्र कथा मात्र ही अत्यन्त उपयुक्त सम्मति के लिए मैं अपने परम प्रिय मित्र बाबू राधा कृष्णदास का अनुगृहीत हूं।

जो कुछ ऊपर लिखा जा चुका है उससे स्पष्ट है कि चन्द के संवत मनोकल्पित और असत्य नहीं हैं और रासो में जो बातें लिखी हैं वे निरी गप्प नहीं हैं। यह भी सिद्ध कर दिया गया है कि १२वीं शताब्दी में मेवाड़ में दो संवतों का प्रचार था एक सनन्द और दूसरा अनन्द और उनमें ९०–९१ वर्ष का अन्तर था। अब यह स्वतः सिद्ध है कि चन्द का रासो वास्तविक सत्य घटनाओं से पूरित ग्रन्थ है जैसे कि उस काल के ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रायः सब देशों में मिलते हैं और अब इसे झूठा सिद्ध करने का उद्योग केवल निरर्थक, निष्प्रयोजनीय और द्वेषपूर्ण माना जायगा। इसमें सन्देह नहीं है कि यह ग्रन्थ सहस्रों मनुष्यों के हाथों में गया है और सैकड़ों ने इसे लिखा है। इससे यदि आज हमको इसके पाठ में दोष वा कहीं-कहीं गड़बड़ मिले तो इसमें आश्चर्य ही क्या है। इससे उस ग्रन्थ के गुण और आदर में किसी प्रकार की क्षति न होनी चाहिये।

अन्त में अब मुझे केवल इतना ही कहना है कि यदि पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या जी अपने कर्तव्यपालन से पराङ्मुख न होते, यदि पृथ्वीराज रासो अब तक छप कर प्रकाशित हो गया होता तो आज मुझे इतना लिखने तथा अन्य लोगों को व्यर्थ आक्षेप करने का अवसर न प्राप्त होता। आशा है कि अब वे इस अमूल्य रत्न को चिथड़ों में न लपेट कर उस आसन पर इसे सुशोभित करेंगे जिसके यह योग्य है और जो अब तक इसे मिलना उचित था—यदि पण्डित मोहनलाल जी अब भी मौन साधे बैठ रहें तो हमें केवल देश का दुर्भाग्य मानने के और कोई चारा नहीं है।





परिशिष्ट २



पृथ्वीराज रासो

(मुन्शी देवी प्रसाद लिखित)

पृथ्वीराज रासे के न छपने से जो खेदमयी सूचना नागरीप्रचारिणी सभा की पिछली रिपोर्ट में प्रकाशित की गई है उससे मैं भी सहमत हूँ क्योंकि हिन्दी भाषा के साहित्य में यह बड़ा भारी ग्रंथ एक महाभारत के समान है। सबसे पहिले एशियाटिक सोसाइटी बंगाल में इसके छापने का प्रबन्ध हुआ था परन्तु दो तीन अंकों से अधिक नहीं निकले, फिर पण्डया मोहनलाल जी ने उद्योग किया किंतु वह भी पूरा न हुआ। उसके पीछे सुना था कि अजमेर के छापेखाने में छपा परंतु यह बात झूठी ही निकली। अब कहीं से भी सुनने में नहीं आता कि इसके छापने का उद्योग हो रहा हो। हां उदयपुर में अवश्य एक महाशय ने इसका साराश प्रकाशित किया है परंतु महा कवि चंद बरदाई के कवितारस पान करने के उत्सुक जनों की प्यास इससे नहीं बुझती, हां इतिहास के भूखों की तृप्ति तो शीघ्र ही हो जाती है क्योंकि उसमें जो इतिहास है वह अधिकांश कल्पित, बहुत ही असंगत और असत्य है तथा विचार करने से ऐसा ज्ञात होता है कि पृथ्वीराज जी के बहुत पीछे चंद या किसी दूसरे कवि ने चंद के नाम से अटकल पच्चू इतिहास की भरती करके यह काव्य रचा है। इसी कारण यदि एशियाटिक सोसाइटी वालों ने इसका छपना बन्द कर दिया हो तो आश्चर्य नहीं है और पण्डया जी के बाबत यह सुना गया है कि जब उदयपुर के कविराज श्यामलदासजी ने पृथ्वीराज रासो का खण्डन छापा था तो यह बात वहाँ के चौहान ठाकुर बेदलेराव जी को बहुत बुरी लगी थी और उन्होंने पण्डया जी को सहायता देकर पृथ्वीराज रासे का संरक्षण भी छपाया था और रासे का छापना भी प्रारम्भ कराया था परन्तु वह बहुत बड़ा काम था इसलिए पूरी सहायता न मिलने से आगे न चला।

अब रासे का छपना कठिन है, इसके अनेक कारण हैं प्रथम तो कठिन ग्रंथ फिर क्षेपकों की भरमार, दो प्रतियां परस्पर मेल नहीं खातीं तीसरे आजकल पठित समाज की काव्य में रुचि कम और इतिहास में अधिक है और रासे के इतिहास से विचारवान् विद्वानों की अरुचि हो चुकी है। इसलिए जो काव्य के रसिक ही कुछ सहाय करेंगे तो यह ग्रन्थ छपेगा। नागरीप्रचारिणी सभा पंड्या जी से १०० ग्रन्थ लेना चाहती है तो भी पूरी आशा छपने की नहीं होती क्योंकि यह बड़े खर्च और परिश्रम का काम है।

जब तक यह ग्रंथ मेरे देखने में नहीं आया था तब तक मुझे भी इसका बड़ा चाव था परन्तु देखे पीछे चौहानों के शुद्ध और यथार्थ इतिहास मिलने की जो आशा थी वह पूरी नहीं हुई किन्तु उल्टी अरुचि हो गई क्योंकि कपोलकल्पित और मनमानी कथाएं इसमें बहुत देख पड़ीं जिनका इतिहास से कुछ भी सम्बन्ध नहीं पाया गया। उनमें से बहुत सी तो मेरे ही संशोधन और निर्णय से असत्य सिद्ध हो गईं।

कविराज श्यामलदास जी ने रासे का एक खण्डन छापा था। उससे १०/१२ वर्ष पहिले ही मुझे रासे की ऐतिहासिक और सामयिक अशुद्धियां विदित हो गईं थीं जब कि मैंने संवत १९२७ में उदयपुर राज्य अन्तर्गत राज समुद्र तलाव की पाज के शिलालेखों की उर्दू में उल्था की थी और उसके एक नोट में छाप दिया था कि पृथ्वीराज रासे के संवतों में यथार्थ समय से १०० वर्ष का अन्तर है और इस बात को न मानने वालों के परितोषार्थ मुसल्मानों के विशुद्ध और अखण्डित इतिहासों के अतिरिक्त पृथ्वीराज जी के समय का शिलालेख ढूंढ कर प्रकाशित कर दिया था। यह प्रत्यक्ष प्रमाण बहुत द्रव्य व्यय करने पर जयपुर राज्य बीसलपुर ग्राम से प्राप्त हुआ था जो कि बिनास नदी के तट पर राजमहल के समीप गोकर्णेश्वर महादेव से कुछ दूर पर बसा है। उसके एक सूने मन्दिर की प्रशस्ति मे संवत् १२४४ और पृथ्वीराज का नाम परम भट्टारक महाराजाधिराज परमैश्वर्यादि विशेषणों से संयुक्त खुदा है और यह गांव भी पृथ्वीराज के दादा बीसलदेव जी का ही बसाया हुआ माना जाता है जिनका दूसरा नाम विग्रहराज देव था। और एक शिलालेख इनका भी मैंने अजमेर में ढाई दिन के झोपड़े से २/३ वर्ष पहिले ढूंढ़ निकाला है जिसमें विग्रहराज नाम और संवत् १२१० खुदा है। फिर इसी पर लिखी प्रशस्ति में भी बिसलपुर का नाम "विग्रहपुर" लिखा है।

इन शिलालेखों, मुसल्मानी इतिहासों, और पृथ्वीराज विजय ग्रन्थ में, जो पृथ्वीराज के समय का बना हुआ है रासे की गलतियां खूब पकड़ी जाती हैं। रासे में जिन राजों और वृत्तान्तों का संवत ११००—१२०० में होना लिखा है वे १०० वर्ष पीछे १२००—१३०० के बीच में हुए थे।

(२) रासे में लिखे राजों में से कई तो उस समय से पहिले भी हो गये थे जैसे मंडोर महीपनाह राव प्रतिहार जिसकी ८वीं पीढ़ी में राजा कक्कुक प्रतिहार संवत् ९२२ में हुआ था। इसका प्रमाण उस प्रकृत शिलालेख में है जो मैं अपनी पुस्तक "प्राचीन लेख संग्रह" में प्रकाशित कर चुका हूं।

(३) कई राजों के झूठे नाम ही लिख दिए हैं—जैसे आबू पहाड़ के राजा जैत और सलख—जिनके नाम वहां के शिलालेखों में कहीं नहीं हैं। आबू पर तो उस समय धारावर्ष प्रमार ही राज करता था जो पृथ्वीराज के पीछे तक जीता रहा।

(४) कई राजों का झूठे ही पृथ्वीराज के हाथ से मारा जाना लिख मारा है। उन मे एक गुजरात के राजाधिराज भीमदेव ही को लीजिए कि रासे में तो उनका पृथ्वीराज जी के हाथ से मारा जाना लिखा है और मुसल्मानी इतिहासों तथा शिलालेखों के अनुसार संवत् १२७२ तक उनका जीवित समय निश्चित होता है।

इसी भांति शहाबुद्दीन गोरी का भी पृथ्वीराज जी के तीर से मारा जाना सच नहीं है जो पृथ्वीराज जी को मार कर १० वर्ष पीछे संवत् १२६० मे गक्कड़ों के हाथ से मारा गया था।

(५) पृथ्वीराज जी से १०० पीछे होने वाले राजो को भी उनका समकालीन और सम्बन्धी लिख दिया है। दृष्टांत के लिए चित्तौड के रावल समरसी जी को ही लीजिए जिनका विवाह, चन्द तो पृथ्वीराज जी की बहिन पृथा से करता है और उनके शिलालेख संवत् १३३० से १३४२ के मिलते हैं।

(६) ऐसे ही पृथ्वीराज जी का शहाबुद्दीन को सात बेर पकड़-पकड़ कर छोड़ देना भी असत्य है केवल एक बेर हरा दिया था पकड़ा नही। दूसरी बेर संवत् १२४९ मे शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज को मार कर दिल्ली और अजमेर का राज्य ले लिया। चन्द ने जो पृथ्वीराज रासे के अन्तिम प्रकरण मे बादशाह का पृथ्वीराज को अन्धा करके पकड़ ले जाना, अपना उनके पास पहुंच कर बादशाह से उनके शब्दवेधी बाण चलाने की प्रशंसा करके उनको राजसभा मे बुलाना, बादशाह का शब्द सुना कर बादशाही बैठक को मांप बताना जिसके परिमाण पर पृथ्वीराज जी का बाण द्वारा सुल्तान को मार गिराना, फिर चन्द और पृथ्वीराज का परस्पर कट मरना इत्यादि लिखा है जो कि सर्वथा निर्मूल है। ये तथा अन्यान्य बातें भी उसने केवल आत्म श्लाघा और पृथ्वीराज जी की वीरता के वर्णन का धर्म निभाने के लिये लिखी हैं जिसका प्रारम्भ बड़ी धूमधाम से किया गया था, और आश्चर्य यह है कि इस कल्पित रासे को प्रमाण समझ कर जयपुर, जोधपुर, उदेपुरादि पिछले अल्पबुद्धि इतिहास लिखने वालों ने अपने पुराने यथार्थ इतिहासो को बिगाड़ कर उसके अनुकूल कर दिया है। अतएव यह रासा इतिहास विषय मे तो कुछ उपयोगी नही है, हां काव्य तो अति अनुपम है और वीर रस से भरा पड़ा है।

